विश्वासी
की
बाइबल टीका

विलियम मैकडोनाल्ड

सम्पादक: आर्ट फारस्टड

Operation Barnabas
(For Project Ezra)

Believer's Bible Commentary (NT Part -I)

As

Vishwasi ki Bible Teeka (Naya Niyam Bhag Ek)

William MacDonald

Edited by Art Farstad

Unless otherwise noted, all charts and photographs in the photo insert are Thomas Nelson Publishers, Inc., Nashville, Tennessee, Copyright © 1980, 1983, 1985, 1985, 1990.

Copyright: Christian Missions in Many Lands, Inc.
P.O. Box 13, Spring Lake, NJ 07762, USA.

This Hindi Edition is brought out with the kind permission granted by the copyright owners.

First Hindi Print 2016: 3000 copies

Published by
Operation Barnabas (For Project Ezra)
'Benaiah' Kalkeri Road, Ramamurthy Nagar, P.O. Box 1633
Bangalore 560016 India, Tel: (080) 25654427, Fax: (80) 25651166

Translated and Coordinated by
Project Ezra
C/o Nishant Sidh
Near Khan Nursing Home, Stadium Road, Rajnandgaon, 491441, (C.G.) India,
Tel: 07744 224713, 9406330075, projectezra@rediffmail.com

Project Coordinator
Atulya Prashant Masih
Rehoboth Christian Assembly, "Anugrah Nilayam", AB-2 Nehru Nagar
Rajnandgaon, 491441, (C.G.) India, 07744224720, 9301726085.

Acknowledgement
Atulya Prashant Masih, Nishant Sidh & Harbhushan Ravna (Translators)

With Love and Sincere Prayers
Project Ezra Committee
Dr. Johnson C. Philip, Dr. Matthew Varghese, Dr. Babu Varghese, Bro. Roy T. Daniel, Bro. Babu Thomas, Dr. Shalu T. Nainan, Bro. Rabbi John, Bro. Sam Siju Philip, Bro. Atulya Prashant Masih.

विषय सूची

लेखक की ओर से दो शब्द.......... 5

सम्पादक द्वारा टीका का परिचय.......... 7

संक्षिप्त रूप.......... 9

लिप्यन्तरण 11

नया नियम का परिचय.......... 13

सुसमाचारों का परिचय.......... 17

मत्ती.......... 23

- स्वर्ग का राज्य.......... 33
- सुसमाचार.......... 41
- विश्वासी के साथ व्यवस्था का सम्बन्ध.......... 45
- तलाक और पुनर्विवाह.......... 49
- उपवास.......... 54
- सब्त.......... 85

मरकुस.......... 173

लूका.......... 237

यूहन्ना.......... 359

परिशिष्ठ.......... 499

लेखक की ओर से दो शब्द...

विश्वासी की बाइबल टीका का उद्‌देश्य एक सामान्य मसीही पाठक को इस बात का बुनियादी ज्ञान प्रदान करना है कि पवित्र बाइबल क्या कहती है।

इस टीका पुस्तक का उद्‌देश्य यह भी है कि बाइबल के प्रति विश्वासी के जीवन में प्रेम और रूचि को बढ़ावा दिया जाए ताकि वह अधिक गहराई में खोद कर इसमें छिपे अपार खजानों को पा सके। यद्यपि इस टीका पुस्तक में विद्वानों को उनकी आत्मा के लिए भोजन मिलेगा, हम उनसे ऐसी आशा रखते हैं कि वे अनुग्रहपूर्वक हमें क्षमा करेंगे कि यह पुस्तक प्राथमिक रूप से उनके स्तर के अनुरूप तैयार नहीं की गई है।

सभी पुस्तकों में, पुस्तक का परिचय, टिप्पणियाँ, और प्रयोग में लाई गई पुस्तकों की सूचियाँ दी गईं हैं।

पुराना नियम टीका में भजन सहिंता, नीतिवचन, और सभोपदेशक के एक एक पद को स्पष्ट करते हुए इन पर टिप्पणी दी गई है, जबकि शेष पुस्तकों के हर पैराग्राफ को सारांश में समझाया गया है। वहीं नया नियम की हर एक पुस्तक के हर एक पद पर टिप्पणी की गई है। पदों पर टिप्पणियाँ आत्मिक सच्चाइयों को व्यावहारिक रूप से लागू करते हुए और प्रतीकात्मक भावों का अध्ययन करते हुए दी गईं हैं।

जिन स्थलों में उद्धारकर्ता के आने का संकेत पाया जाता है उन पर विशेष रूप से जोर दिया गया है और अधिक विस्तार से चर्चा की गई है।

भजन संहिता, नीतिवचन, और सभोपदेशक की पुस्तकों के एक एक पद को स्पष्ट किया गया है क्योंकि उन्हें सक्षिप्त में समझाया जाना पर्याप्त नहीं है और इसलिए भी क्योंकि पाठक इन पुस्तकों का अध्ययन गहराई से करना चाहते हैं। नया नियम की हर पुस्तक के हर पद पर टिप्पणी दी गई है।

हमने प्रयास किया है कि विवादास्पद स्थलों पर भी चर्चा करें और जहाँ कहीं सम्भव हो एक वैकल्पिक अर्थ सामने रखें। बाइबल में अनेक ऐसे स्थल पाए जाते हैं जो टीकाकारों के सामने समस्या खड़ी कर देते हैं, और इसलिए हम यह स्वीकार करते हैं कि इन पदों के सम्बन्ध में 'अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है।'

किसी भी टीका पुस्तक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण *परमेश्वर का वचन* होता है, जिस पर परमेश्वर का पवित्र आत्मा प्रकाश डालता है। इसके बिना कोई जीवन नहीं है, कोई उन्नति नहीं है, कोई पवित्रता नहीं है, और न कोई ग्रहणयोग्य सेवा है। हमें इसे पढ़ना चाहिए, इसका अध्ययन करना चाहिए, इसे कंठस्थ करना चाहिए, इस पर मनन करना चाहिए, और सबसे बढ़ कर इसका पालन करना चाहिए। जैसा कि किसी ने कहा है, ''आज्ञाकारिता आत्मिक ज्ञान का अंग है।''

सम्पादक द्वारा टीका का परिचय

''टीका पुस्तकों के महत्व को कम न आँकिए!'' यह सुझाव 1950 के दशक के अन्तिम भाग में इम्माउस बाइबल स्कूल (अब कॉलेज) के एक बाइबल शिक्षक ने अपनी कक्षा में दिया था। कम से कम एक छात्र ने तीन दशकों तक उन शब्दों को अपने स्मरण में बनाए रखा। शिक्षक विलियम मैकडोनाल्ड थे, जो *विश्वासी की बाइबल टीका* के लेखक हैं। छात्र इसके सम्पादक, आर्थर फारस्टड थे, जो उस समय एक अपरिपक्व नवसिखिया थे। तब तक उन्होंने अपने जीवन में सिर्फ एक टीका पुस्तक पढ़ी थी – *इन द हेवनलिज़* (इफिसियों) जिसे हैरी ए. आइरनसाइड ने लिखा था। अपनी किशोरावस्था में एक ग्रीष्मऋतु के दौरान हर रात इस टीका पुस्तक को पढ़ने के बाद उन्होंने जाना कि एक टीका पुस्तक या *कॉमेंट्री* क्या होती है।

टीका पुस्तक क्या होती है?

एक टीका पुस्तक आखिर होती क्या है और हमें इसे महत्व देना क्यों आवश्यक है? कुछ ही समय पहले, एक विख्यात मसीही प्रकाशक ने बाइबल से सम्बन्धित *पन्द्रह* प्रकार के पुस्तकों की एक सूची तैयार की। यदि कुछ लोगों को यह नहीं पता कि एक टीका पुस्तक और एक अध्ययन बाइबल के बीच में क्या अन्तर होता है, या एक अनुक्रमणिका (कनकॉर्डेन्स), एटलस, इन्टरलिनियर, बाइबल शब्दकोष आपस में एक दूसरे से किस तरह से भिन्न हैं – तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

एक टीका पुस्तक में टीका पाई जाती है, या इसमें एक एक पद या एक एक पैराग्राफ पर ऐसी सहायक टिप्पणियाँ पाई जाती हैं जिनकी सहायता से उन पदों या स्थलों को समझा जा सकता है। कुछ मसीही बाइबल के टीकाकारों पर ताना मारते हुए कहते हैं, ''मैं सिर्फ परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन को सुनना चाहता हूँ और बाइबल को ही पढ़ना चाहता हूँ!'' यह बात काफी धार्मिक सुनाई देती है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। किसी टीका पुस्तक में सिर्फ सर्वोत्तम (और सबसे कठिन तरह की) व्याख्याओं को छापा जाता है – किसी पद पर शिक्षा और उपदेश प्रस्तुत किया जाता है। कुछ टीका पुस्तकें (जैसे आइरनसाइड की टीका) में तो सीधे सीधे उपदेशों को छाप दिया गया है। अंग्रेजी में, सब समयों और सब भाषाओं में की गई बाइबल की व्याख्याएं उपलब्ध हैं। परन्तु, यह दुखद है कि उन में से अनेक इतनी लम्बी चौड़ी, इतनी पुरानी, और इतनी कठिन हैं कि सामान्य मसीही इन्हें पढ़ना बोझिल या हताशापूर्ण समझने लगता है। इसी कारण से, *विश्वासी की बाइबल टीका* को तैयार किया है।

टीका पुस्तकों के प्रकार

सैद्धान्तिक दृष्टि से, कोई भी व्यक्ति जो बाइबल में रुचि रखता है एक टीका पुस्तक लिख सकता है। इसी कारण से, टीका पुस्तकों की श्रेणियाँ अति उदारवादी से लेकर अति पुरातनपंथ तक विस्तारित हैं – और इसलिए सब मिलाकर विचारों का एक एक पहलू इनमें पाया जा सकता है। *विश्वासी की बाइबल टीका* अत्यंत पुरातनपंथी या संरक्षणवादी टीका है क्योंकि इस विचारधारा का विश्वास यह है कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखित उसका वचन है, यह पूरी तरह से त्रुटिहीन है, और विश्वास और व्यवहार के लिए पूरी तरह से पर्याप्त है।

एक टीका पुस्तक में इब्रानी और यूनानी की वाक्य रचना की उच्च तकनीकी विवरणों से ले कर बहुत ही हल्की फुल्की रूपरेखा तक को भी शामिल किया जा सकता है। *विश्वासी की बाइबल टीका* इन दोनों छोर के बीच एक संतुलन कायम रखती है। आवश्यक तकनीकी विवरणों को अन्त्य टिप्पणियों में स्पष्ट किया गया है, परन्तु जिन विषयों पर गहन चर्चा आवश्यक है उन्हें कठिन स्थलों को छोड़े बिना और विश्वसनीय व्यावहारिकता कायम रखते हुए प्रस्तुत किया गया है। विलियम मैकडोनाल्ड के लेख अर्थों को स्पष्ट करने के मामले में जबर्दस्त होते हैं। इनका उद्देश्य दिखावटी, औसत दर्जे के मसीही नहीं, बल्कि ''चेले'' तैयार करना होता है।

टीका पुस्तकों के बीच के अन्तर धर्मविज्ञान की अलग अलग विचारधाराओं पर भी आधारित होते हैं – संरक्षणवादी या उदारवादी, प्रोटेस्टेंट या रोमन कैथोलिक, पूर्वसहस्राब्दिवादी (यह विश्वास कि मसीह का द्वितीय आगमन उसके हजार वर्ष के राज्य से पहले होगा) या असहस्राब्दिवादी (मसीह के इस पृथ्वी पर एक हजार वर्ष

के भौतिक राज्य की धारणा पर विश्वास न करने वाले)।

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें?

विश्वासी की बाइबल टीका को अनेक तरीकों से प्रयोग में लाया जा सकता है। हम इसके लिए निम्नलिखित सुझाव देते हैं, जो इस क्रम में हैं:

पृष्ठ उलटना – यदि आप बाइबल में रुचि रखते हैं और इससे प्रेम करते हैं तो आपको इस टीका पुस्तक के पन्नों को पलटने में आनन्द आएगा, पन्नों को पलटते हुए यहाँ वहाँ थोड़ा थोड़ा पढ़ते हुए आगे बढ़ते जाएं ताकि आप इस पूरी टीका पुस्तक का स्वाद चख सकें।

कोई खास स्थल – शायद आप के मन में किसी पद या किसी स्थल के विषय में कोई प्रश्न हो जिसका उत्तर पाने के लिए आप को सहायता की आवश्यकता हो। उस स्थल पर जा कर सन्दर्भ के प्रकाश में इस टीका पुस्तक में से पढ़ें और निश्चय ही आप को संतोषजनक उत्तर मिलेगा।

कोई बाइबल सिद्धान्त – यदि आप सृष्टि, सब्त, वाचाएं, कालखण्ड, या उद्धार के सिद्धान्त के विषय पर अध्ययन कर रहे हैं, तो इस टीका पुस्तक में उन स्थलों को जा कर पढ़ें जहाँ इन विषयों पर चर्चा की गई है। विषय–सूची में इन विषयों से सम्बन्धित अनेक लेखों[1] का उल्लेख है। जिन विषयों पर लेखों को यहाँ सूचीबद्ध नहीं किया गया है उन विषयों से सम्बन्धित प्रमुख स्थलों को ढूंढ़ने के लिए अनुक्रमणिका *(कनकॉर्डेन्स)* की सहायता लें।

बाइबल की पुस्तक – हो सकता है कि आप के सण्डे स्कूल की कक्षा या आप की मण्डली बाइबल की किसी पुस्तक का अध्ययन कर रही हो। यदि आप हर सप्ताह पहले से उस स्थल का अध्ययन कर लें तो कक्षा में अध्ययन करते समय आप को अत्यंत लाभ होगा (और यदि इस विषय पर चर्चा होती है तो आप अपनी ओर से काफी योगदान दे सकेंगे)। यदि आप का अगुवा भी बाइबल अध्ययन के लिए मुख्य रूप से विश्वासी की बाइबल टीका का ही अध्ययन कर रहा हो, तो आप दो अलग अलग टीका पुस्तक रखना पसन्द करेंगे।

सम्पूर्ण बाइबल – अनन्त: हर एक मसीही को सम्पूर्ण बाइबल को पढ़ना चाहिए। बाइबल में इधर उधर अनेक कठिन स्थल भरे पड़े हैं, और ऐसी स्थिति में *विश्वासी की बाइबल टीका* जैसी एक सचेत और संरक्षणवादी पुस्तक आप के अध्ययन में अत्यंत सहायक होगी।

हो सकता है कि बाइबल का अध्ययन आरम्भ में नीरस लगे, जैसे कि सूखा गेहूँ जो बेस्वाद किन्तु पोषक होता है, परन्तु धीरे धीरे यह चाकलेट की तरह स्वादिष्ट लगने लगता है।

श्री मैकडोनाल्ड ने कई वर्षों पूर्व मुझे यह सुझाव दिया था, ''टीका पुस्तकों का महत्व कम न आँकिए।'' पुराना नियम और नया नियम की पुस्तकों पर उनकी टीका का *न्यू किंग्स जेम्स वर्शन* के अनुरूप सम्पादन करते हुए मैंने सावधानीपूर्वक इसका अध्ययन किया है, और इसलिए मैं एक कदम और आगे बढ़ कर आपको यह सुझाव दे सकता हूँ: ''आनन्द उठाइये!''

अन्त्य टिप्पणियाँ

[1] तकनीकी अर्थ में टीका पुस्तक में की गई एक ऐसी चर्चा जो स्थल में दिए गए विषय पर एक निबन्ध या लेख के रूप में अधिक विस्तार से की गई है।

संक्षिप्त रूप

बाइबल की पुस्तकों के नामों के संक्षिप्त रूप

पुराना नियम की पुस्तकें

उत्प.	उत्पति	2 इति.	2 इतिहास	दानि.	दानिय्येल
निर्ग.	निर्गमन	एज्रा	एज्रा	होशे.	होशे
लैव्य.	लैव्यव्यवस्था	नहे.	नहेम्याह	योएल	योएल
गिन.	गिनती	एस्तेर	एस्तेर	आमोस	आमोस
व्य.वि.	व्यवस्थाविवरण	अय्यू.	अय्यूब	ओब.	ओबद्याह
यहो.	यहोशू	भजन.	भजन संहिता	योना	योना
न्या.	न्यायियों	नीति.	नीतिवचन	मीका	मीका
रूत	रूत	सभो.	सभोपदेशक	नहू.	नहूम
1 शमू.	1 शमूएल	श्रेष्ठ.	श्रेष्ठगीत	हब.	हबक्कूक
2 शमू.	2 शमूएल	यशा.	यशायाह	सप.	सपन्याह
1 राजा	1 राजा	यिर्म.	यिर्मयाह	हाग्गै	हाग्गै
2 राजा	2 राजा	विलाप.	विलापगीत	जक.	जकर्याह
1 इति.	1 इतिहास	यहे.	यहेजकेल	मला.	मलाकी

नया नियम की पुस्तकें

मत्ती	मत्ती	इफि.	इफिसियों	इब्रा.	इब्रानियों
मर.	मरकुस	फिलि.	फिलिप्पियों	याकूब	याकूब
लूका	लूका	कुलु.	कुलुस्सियों	1 पत.	1 पतरस
यूह.	यूहन्ना	1 थिस्स.	1 थिस्सलुनीकियों	2 पत.	2 पतरस
प्रेरित	प्रेरितों के काम	2 थिस्स.	2 थिस्सलुनीकियों	1 यूह.	1 यूहन्ना
रोमि.	रोमियों	1 तीमु.	1 तीमुथियुस	2 यूह.	2 यूहन्ना
1 कुरि.	1 कुरिन्थियों	2 तीमु.	2 तीमुथियुस	3 यूह.	3 यूहन्ना
2 कुरि.	2 कुरिन्थियों	तीतुस	तीतुस	यहूदा	यहूदा
गला.	गलातियों	फिले.	फिलेमोन	प्रका.	प्रकाशितवाक्य

अंग्रेजी बाइबल अनुवादों का संक्षिप्त रूप

एएसवी	अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन	एनइबी	न्यू इंग्लिश बाइबल
एफडब्ल्यूजी	एफ.डब्ल्यू. ग्रॉंट्स *न्यूमेरिकल बाइबल*	एनआइवी	न्यू इन्टरनेशनल वर्शन
		एनकेजेवी	न्यू किंग्स जेम्स वर्शन
जेएनडी	जॉन नेल्सन डार्बिज़ न्यू ट्राँसलेशन	एनआरएसवी	न्यू रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्शन
केजेवी	किंग्स जेम्स वर्शन	आरएसवी	रिवाइज़्ड स्टैडर्ड वर्शन
–	नॉक्स ट्राँसलेशन	आरवी	रिवाइज़्ड वर्शन (इग्लैंण्ड)
एलबी	लिविंग बाइबल	–	*द होली स्क्रिपचर्स* (ज्यूइश पब्लिकेशन सोसाइटी)
–	मोफ्फत ट्राँसलेशन		
एनएएसबी	न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल	टीइवी	टुडेज़ इंग्लिश वर्शन

अन्य संक्षिप्त रूप

ईस्वी	हमारे प्रभु यीशु का वर्ष; मसीह के जन्म के बाद से तिथियों के आगे लिखा जाता है।
ई.पू.	ईसा पूर्व; मसीह के जन्म के पहले की तिथियों के आगे लिखा जाता है।
तु.की.	तुलना कीजिए।
अध्या.	अध्याय
सम्पा.	सम्पादन, सम्पादक, संस्करण
उदा.	उदाहरण
तत्रैव	समान स्थान पर
लग.	लगभग
एमएस, एमएसएस	हस्तलिपि(याँ)
एम	मेजोरिटी मूलपाठ
एमटी	मेसोरेटिक मूलपाठ
एनआईसी	*न्यू इन्टरनेशनल कॉमेन्ट्री*
एनटी	न्यू टेस्टामेंट (नया नियम)
एनयू	नेस्ले–एलेंड/यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी का यूनानी नया नियम
ओटी	ओल्ड टेस्टामेंट (पुराना नियम)
पृ.	पृष्ठ

इब्रानी अक्षरों का लिप्यन्तरण

विश्वासी की बाइबल टीका में, जो सामान्य मसीहियों को ध्यान में रख कर तैयार की गई है, कुछ ही इब्रानी शब्दों का प्रयोग किया गया है।

इब्रानी व्यंजन

इब्रानी व्यंजन	*हिन्दी समकक्ष*	*इब्रानी व्यंजन*	*हिन्दी समकक्ष*
आलेफ	(मौन)	मेम	म
बेथ	ब	नून	न
गिमेल	ग	सामेख	स
दालेथ	ड, द	आइन	(मौन)
हे	ह	पे	प
वाव	व	त्सादे	ट्स
ज़ाइन	ज़	कोफ	क
हेथ	हेथ	रेश	र
टेथ	च	सीन	स
योद	य	शीन	श
काफ	क	ताव	त, थ
लामेद	ल		

व्यंजन

पुराना नियम इब्रानी में बाइस वर्ण है, और ये सभी व्यंजन हैं; बाइबल के आरम्भिक लेखपत्रों *(स्क्रोल्स)* में स्वर नहीं हुआ करते थे। इन स्वरों को ''बिन्दु'' नाम दिया गया है, और सातवीं शताब्दी ईस्वी में इनका अविष्कार कर वर्णों में इनकी पूर्ति की गई। इब्रानी अक्षर दाएं से बाएं लिखे जाते हैं, यह हिन्दी और अंग्रेजी के ठीक विपरीत है।

हमने लिप्यन्तरण के बहुत ही सरल तरीके का प्रयोग किया है।

यूनानी अक्षरों का लिप्यन्तरण

यूनानी नाम	*हिन्दी समकक्ष*	*यूनानी नाम*	*हिन्दी समकक्ष*
अलफा	अ	क्साय	क्स
बीटा	ब	ओमिक्रॉन	ओ
गामा	ग	पाई	प
डेल्टा	ड, द	रोह	र
इप्सिलॉन	इ.	सिगमा	स
ज़ीटा	ज	ताव	त
इटा	ई	उप्सिलॉन	उ
थिटा	थ	फाय	फ
कापा	क	चाय	च
लैमडा	ल	साय	फ्स
मु	म	ओमेगा	ओमेगा
नू	न		

नया नियम का परिचय

''इन लेखों का ऐतिहासिक और आत्मिक दोनों मूल्य, उनकी संख्या और लम्बाई के अनुपात से कहीं अधिक है, तथा जीवन और इतिहास पर इनका प्रभाव अनुमान लगाए जाने से भी बाहर है। जिस दिन का भोर अदन में हुआ था उसी दिन का यह दोपहर (चरम बिन्दु) है। पुराना नियम में जो मसीह भविष्यवाणियों का केन्द्र था, वही मसीह सुसमाचार की पुस्तकों में इतिहास का केन्द्र; पत्रियों में अनुभव का केन्द्र; और प्रकाशितवाक्य में महिमा का केन्द्र बन गया।''

– डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोज़ी

I. ''नया नियम'' (नई वाचा) नाम कैसे पड़ा?

नया नियम अध्ययन के गहरे सागर में गोता लगाने से पहले, या इसकी तुलना में काफी कम, नया नियम की किसी एक पुस्तक का अध्ययन करने से पहले, हमारे लिए यह सहायक होगा कि हम ''नया नियम'' नामक इस पवित्र पुस्तक के बारे में कुछ सामान्य सच्चाइयों की संक्षिप्त रूपरेखा पर ध्यान दें।

''वाचा'' शब्द यूनानी भाषा के *डिडाक्खे* शब्द का अनुवाद है। यह विचार करने का विषय हो सकता है कि बाइबल के इस भाग का बेहतर नाम ''नया नियम'' होगा या फिर ''नई वाचा।''नया नियम परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में एक समझौता, एक संधि, या एक *वाचा* के विषय में बताती है।

नया नियम को पुराना (पुरानी वाचा) से अन्तर बताने के उद्देश्य से नया नियम नाम दिया गया है।

बाइबल के दोनों ही भाग परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए हैं और इसलिए सब मसीहियों के लिए लाभदायक हैं। परन्तु यह स्वाभाविक है कि मसीह पर विश्वास करने वाला विश्वासी अक्सर उसी भाग में अधिक रूचि रखेगा जो भाग विशेष रूप से हमारे प्रभु और उसकी कलीसिया के बारे में बताता है, औरयह भी बताता है कि वह अपने चेलों से किस प्रकार जीवन जीने की अपेक्षा करता है।

चर्च फ़ादर अगस्टीन ने पुराना नियम और नया नियम के बीच के सम्बन्ध को बहुत ही सुन्दर तरीके से व्यक्त किया है:

द न्यू इज़ इन द ओल्ड कनसील्ड;
द ओल्ड इज़ इन द न्यू रिवील्ड।
(नया पुराने में छिपा हुआ है, पुराना नये में प्रगट हुआ है।)

II. नया नियम प्रामाणिक संग्रह *(न्यू टेस्टामेन्ट केनन)*

केनन शब्द यूनानी भाषा से आया है जिसके मूल शब्द का अर्थ ''नियम,'' होता है जिसकी सहायता से किसी चीज़ को मापा जाता है या मूल्यांकन किया जाता है। नया नियम का प्रामाणिक संग्रह *(केनन)* प्रेरणा से रची गई पुस्तकों का संग्रह है। यह हम कैसे जान सकते हैं *सिर्फ* ये ही वे पुस्तकें हैं जिन्हें प्रामाणिक संग्रह में रहना चाहिए या इन सत्ताइस पुस्तकों को ही इस प्रामाणिक संग्रह में होना चाहिए? चूंकि उस समय अन्य मसीही पत्रियां और लेख भी थे (कुछ झूठी शिक्षा देने वाली पत्रियां और लेख भी), हम निश्चित तौर पर यह कैसे कह सकते हैं कि प्रामाणिक संग्रह में सही पुस्तकों को ही स्थान मिला है?

अक्सर कहा जाता है कि एक कलीसिया की महासभा ने सन् 300 में प्रामाणिक संग्रह की सूची तैयार की।

वास्तविकता तो यह है कि, जिस समय ये पुस्तकें लिखी गईं उसी समय ये *प्रमाणिक* हो चुकी थीं। परमेश्वर के भक्तों और समझ रखने वाले शिष्यों ने प्रेरणा से रचे गए लेखों को आरम्भ में ही पहचान लिया था, जैसा कि पतरस ने पौलुस के लेखों को पहचाना था (2 पतरस 3:15,16)। किन्तु, कुछ कलीसियाओं में कभी-कभी इनमें से कुछ पुस्तकों को लेकर कुछ विवाद भी हुए (उदाहरण के लिए, यहूदा, 2 और 3 यूहन्ना)।

सामान्यत: यदि एक पुस्तक मत्ती, पतरस, यूहन्ना, या पौलुस, या प्रेरितों के झुण्ड के प्रेरित, जैसे मरकुस या लूका के द्वारा लिखी गई हो, तो उस पुस्तक की प्रामाणिकता के विषय में कभी कोई शंका नहीं थी।

जिस महासभा ने हमारे प्रामाणिक संग्रह को अधिकृत रूप से मान्यता प्रदान की वह वास्तव में उस संग्रह की *पुष्टि* कर रही थी जिसे सामान्यत: अनेकानेक वर्षों पूर्व स्वीकार कर लिया गया था। महासभा ने परमेश्वर की प्रेरणा से पुस्तकों की एक सूची नहीं निकाली, परन्तु *प्रेरणा से रची गई पुस्तकों* की एक सूची निकाली।

III. लेखक

पवित्रआत्मा नया नियम का ईश्वरीय लेखक है। उसने मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, पौलुस, याकूब, पतरस, यहूदा, और इब्रानियों की पत्री के अज्ञात लेखक (इब्रानियों की पत्री की प्रस्तावना देखें) को लिखने के लिए प्रेरणा दी। नया नियम की पुस्तकें किस प्रकार से तैयार की गईं; इस प्रश्न का सबसे अच्छा उत्तर यह है, ''दोहरी लेखनकारिता'' के द्वारा। नया नियम आधा मानवीय लेखकों द्वारा और आधा परमेश्वर द्वारा नहीं लिखा गया है, परन्तु यह पूरी तरह से मानवीय लेखकों द्वारा और पूरी तरह से परमेश्वर द्वारा साथ-साथ लिखा गया है। ईश्वरीय नियंत्रण ने मानवीय योगदान को किसी भी प्रकार की गलती करने से बचाए रखा। इसके परिणामस्वरूप अपने मूलरूप में एक निभ्रान्त (बिना गलती) और त्रुटिहीन पुस्तक तैयार हुई।

लिखित वचन के सादृश्य (मिलता जुलता उदाहरण) जीवित वचन, हमारे प्रभु यीशु मसीह, का दोहरा स्वभाव है। वह आधा मानव और आधा ईश्वर नहीं है (यूनानी पौराणिक कथाओं में ऐसा ही था) परन्तु वह एक साथ सम्पूर्ण मानव और सम्पूर्ण ईश्वर है। ईश्वरीय स्वभाव ने मानवीय स्वभाव के लिए किसी भी प्रकार की गलती या पाप करने की सम्भावना को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

IV. तिथियां

पुराना नियम से भिन्न, जिसे पूरा होने में हजार वर्ष लगे (लगभग 1400-400 ई.पू.), नया नियम को लिखे जाने के लिए सिर्फ पचास वर्ष (लगभग 50-100 ईस्वी) ही लगे।

नया नियम की पुस्तकें वर्तमान में जिस क्रम में रखी गई हैं वह क्रम सभी समयों की कलीसिया के लिए सबसे उपयुक्त है। नया नियम प्रभु यीशु मसीह की जीवनी से आरम्भ होता है, उसके बाद यह कलीसिया के विषय में हमें बताता है, फिर उस कलीसिया के लिए शिक्षाएं और निर्देश प्रस्तुत करता है, और अन्त में कलीसिया और संसार के भविष्य की बातों को प्रगट करता है। इसकी पुस्तकों को इसी क्रम में नहीं लिखा गया था, किन्तु उन्हें आवश्यकता के अनुसार लिखा गया था।

नया नियम की सबसे पहले लिखी गई पुस्तकें ''तरुण कलीसियाओं को लिखी पत्रियाँ'' थीं, यह नाम मसीही विद्वान फिलिप्स ने पत्रियों को दिया है। याकूब, गलातियों, और थिस्सलुनीकियों की पत्रियाँ नया नियम की सबसे पहली लिखी पुस्तकें हैं जो हमारी पहली मसीही शताब्दी के मध्य में लिखी गईं।

लेखन क्रम में इसके बाद सुसमाचार आते हैं। इनमें मत्ती या मरकुस को पहले, उसके बाद लूका को, और अन्त में यूहन्ना को लिखा गया। अन्त में, शायद पहली शताब्दी ईस्वी के लगभग अन्त में प्रकाशितवाक्य को लिखा गया।

V. विषय वस्तु

नया नियम की विषय वस्तु को संक्षेप में इस प्रकार से रखा जा सकता है:

ऐतिहासिक पुस्तकें
- सुसमाचार की पुस्तकें
- प्रेरितों के काम

पत्रियां
- पौलुस की पत्रियां
- सामान्य पत्रियां

भविष्यद्वाणी सम्बन्धी

प्रकाशितवाक्य

जो मसीही इन पुस्तकों की अच्छी समझ प्राप्त कर लेता है वह ''हर एक भले काम के लिए तत्पर'' हो जाएगा।

हमारी यह प्रार्थना है कि इस उद्देश्य को पूरा करने में यह टीका पुस्तक अनेक विश्वासियों के लिए सहायक सिद्ध हो।

VI. भाषा

नया नियम को *प्रतिदिन की भाषा* (जिसे *कोइने,* या सामान्य यूनानी कहा जाता था) में लिखा गया। मसीही विश्वास की पहली शताब्दी में यह लगभग दूसरे नम्बर की विश्वव्यापी भाषा थी, और उन दिनों में वैसे ही चिरपरिचित और प्रचलित थी, जैसे कि वर्तमान में अंग्रेजी भाषा।

जिस तरह से इब्रानी भाषा की आकर्षक और सजीव शैली पुराना नियम की भविष्यद्वाणी, काव्य, और वृत्तान्तों के लिए पूरी तरह से उपयुक्त है, ठीक उसी तरह परमेश्वर ने यूनानी भाषा को नया नियम का अद्भुत माध्यम बनने के लिए पहले से ही तैयार किया था। यूनानी भाषा सिकंदर महान के विजय अभियान के माध्यम से संसार के दूर दूर स्थानों तक फैल गई थी, और उसके सैनिकों ने लोगों के बीच इस भाषा को लोकप्रिय और सरल बना दिया था।

यूनानी क्रियाओं के काल, कारक, और शब्दावली, और अन्य विवरणों की सुस्पष्टता यूनानी भाषा को, पत्रियों में पाए जाने वाली महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक सच्चाइयों को व्यक्त करने के लिए (विशेष कर जिस तरह की सैद्धान्तिक सच्चाइयां रोमियों की पत्री जैसी पत्रियों में पाई जाती हैं), एक आदर्श भाषा बनाती है।

यद्यपि *कोइने* यूनानी कुलीन साहित्य भाषा नहीं है, यह ''गली-कूचे की भाषा'' या हल्की-फुल्की यूनानी भाषा भी नहीं है। नया नियम के कुछ भाग - इब्रानियों, याकूब, 2 पतरस - अवश्य ही साहित्यिक स्तर के काफी करीब हैं। साथ ही, कहीं कहीं लूका ने भी साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है और यहाँ तक कि पौलुस ने भी कुछ अवसरों पर बहुत ही सुन्दर शैली में लिखा है (1 कुरि. 13, 15)।

VII. अनुवाद

अंग्रेजी भाषा में बाइबल के अनेक अनुवाद पाए जाते हैं। ये अनुवाद सामान्यत: चार वर्गों के अन्तर्गत आते हैं:

1. पूरी तरह से शब्दश:

जे. एन. डार्बी का *''न्यू''* (1871) *ट्रांसलेशन* और *इंग्लिश रिवाइ़्ड वर्शन* (1881) और इसका अमरीकी रूपान्तर, *द अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन* (1901) एकदम शब्दश: है। यह अध्ययन के दृष्टिकोण से सहायक परन्तु आराधना, सार्वजनिक पठन, और कंठस्थ करने के दृष्टिकोण से कमजोर है। अधिकांश मसीहियों ने *किंग जेम्स वर्ज़न (केजेवी*) अनुवाद की तेजस्विता और मनोहरता के कारण इसे नहीं छोड़ा तथा अन्य दूसरे अनुवादों को भी नहीं अपनाया।

2. पूरी तरह से पर्यायवाची

ऐसे अनुवाद जो काफी शब्दश: हैं, औरअंग्रेजी में सम्भव होने पर, इब्रानी और यूनानी मूलपाठ के काफी नज़दीक हैं, तौभी अच्छी शैली और मुहावरे की मांग पर अधिक स्वतंत्र अनुवाद की अनुमति दे देते हैं, उनमें *केजेवी, आरएसवी, एनएएसबी,* और *एनकेजेवी* शामिल हैं। यह दु:खद है कि यद्यपि *आरएसवी* के नया नियम अनुवाद पर भरोसा किया जा सकता है, परन्तु इसका पुराना नियम अनुवाद मसीह सम्बंधी अनेक भविष्यद्वाणियों को कम महत्व देता है। यह खतरनाक प्रवृत्ति वर्तमान में ऐसे विद्वानों में भी दिखाई देने लगी है जो पहले खरी शिक्षा पर विश्वास करते थे। इस टीका पुस्तक को *एनकेजेवी* (मूल रूप से यह टीका पुस्तक *एनकेजेवी* पर आधारित है) के अनुरूप बनाने के लिए इसमें कुछ संशोधन किया गया है। *एनकेजेवी* अनुवाद बेहतरीन (परन्तु पुरानी भाषा) अनुवाद *केजेवी* और वर्तमान प्रचलित भाषा का एक सुन्दर मेल है, जिसमें पुराने अप्रचलित शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। इसमें उन अनेक पदों और शब्दों को भी कायम रखा गया है जिन्हें अधिकांश आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों में हटा दिया गया है (इस टीका पुस्तक में आपको इससे सम्बन्धित अनेक टिप्पणियां मिलेंगी)।

3. गतिशील पर्यायवाची

इस प्रकार के अनुवाद में पूरी तरह से पर्यायवाची अनुवाद की तुलना अधिक स्वतंत्र होती है, और यह कभी कभी भावानुवाद *(पैराफ्रेज़)* का भी सहारा लेता है, भावानुवाद अनुवाद की एक वैध तकनीक है यदि पाठक को इससे अवगत रखा जाए। *मोफ्फत ट्रांसलेशन*, *एनएबी*, *एनआईवी*, और *ज़ेरूशलेम बाइबल* सभी इस वर्ग में आते हैं। इन अनुवादों में बाइबल के विचारों को एक ऐसी रचना के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है मानों बाइबल के लेखक वर्तमान में – और अग्रेंजी में लिख रहे हों। जब ऐसा संुतलित रीति से किया जाता है, तो यह विधि सहायक सिद्ध होगी।

4. भावानुवाद

भावानुवाद में मूलपाठ के विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है, तौभी अक्सर इसमें कुछ *जोड़ने* के लिए बहुत उदारता की आवश्यकता होती है। चूंकि इस प्रकार के अनुवाद के शब्द मूल पाठ से काफी अलग होते हैं इसलिए पाठ के आशय से बाहर जाकर *व्याख्या करने* का खतरा हमेशा बना रहता है। उदाहरण के लिए, *लिविंग बाइबल* में यद्यपि सुसमाचारीय (*ईव्हेंजलिकल*) विचारधारा का अनुवाद है, तौभी यह अनेक स्थानों पर ऐसी व्याख्याओं के आधार पर अनुवाद करती है, जिन पर अच्छी खासी बहस की जा सकती है।

जे. बी. फिलिप्स का भावनुवाद (वह इसे अनुवाद कहते हैं) साहित्यिक दृष्टिकोण से काफी अच्छे से किया गया है। वे प्राय: *अपने* शब्दों में वह कहते हैं जैसा उनके विचार से बाइबल के लेखकों के शब्दों का अर्थ था।

तुलना कर के अध्ययन करने के उद्देश्य से इन चारों वर्गों की बाइबल अपने पास रखना अच्छा है। किन्तु, हमारा मानना है कि पूरी तरह से पर्यायवाची अनुवाद विस्तृत बाइबल अध्ययन के दृष्टिकोण से सबसे सुरक्षित है, ऐसा ही बाइबल अध्ययन इस टीका पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

सुसमाचारों का परिचय

''सुसमाचार की पुस्तकें सारे लेखों का पहला फल हैं।'' – ओरिगन

I. हमारा महिमामय सुसमाचार

साहित्य का हर एक छात्र कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य, जीवनी, और साथ ही साथ साहित्य के अन्य रूपों से परिचित रहता है। परन्तु जब हमारा प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आया, तब साहित्य के एक पूर्णत: नए वर्ग की आवश्यकता पड़ी – *सुसमाचार।* सुसमाचार की पुस्तकें जीवनियां नहीं हैं, यद्यपि उनमें प्रभु यीशु की जीवनी के सम्बन्ध में काफी बातें पाई जाती हैं। ये कहानियाँ भी नहीं हैं, यद्यपि इनमें हमें उड़ाऊ पुत्र और दयालु सामरी जैसे अनेक दृष्टांत मिलते हैं, जो साहित्य की अन्य कहानियों के समान रोचक हैं। कुछ दृष्टांतों को उपन्यास और लघुकहानियों का रूप भी दे दिया गया है। सुसमाचार की पुस्तकें दस्तावेजी रिर्पोट भी नहीं हैं, तौभी उनमें हमारे प्रभु के उपदेशों के सटीक, परन्तु संक्षिप्त, लेखा पाए जाते हैं।

''सुसमाचार'' न सिर्फ साहित्य का एक विशिष्ठ वर्ग है, परन्तु चार सुसमाचार लेखकों मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना द्वारा सुसमाचार लिखे जाने के बाद प्रामाणिक संग्रह का ढांचा (*केनोनिकल मोल्ड*) टूट गया। रूढ़िवादी मसीहियों के द्वारा चार सुसमाचारों को ही लगभग 2000 वर्षो तक मान्यता दी गई है। झूठे शिक्षकों के द्वारा लिखी गई विभिन्न पुस्तकों को भी उनके लेखकों ने सुसमाचार कहा, परन्तु ऐसी पुस्तकें ज्ञानवाद जैसे झूठे मतों को बढ़ावा देने वाली घटिया माध्यम थीं।

परन्तु हमारे पास चार सुसमाचार ही क्यों हैं, मूसा की पाँच पुस्तकों की जोड़ी बनाकर पाँच सुसमाचार रख कर उन्हें मसीही पंचग्रथ के रूप में प्रस्तुत क्यों नहीं किया गया? या फिर बार बार दोहराई गई बातों को हटा कर सिर्फ एक ही लम्बा सुसमाचार तैयार क्यों नहीं किया गया, जिससे और भी आश्चर्यकर्मों और दृष्टान्तों को स्थान मिल सकता था? वास्तव में, ''सामंजस्य बैठाने'' का प्रयास, या सभी चार सुसमाचारों को साथ रखे जाने का इतिहास ताति (टेशियन) की दूसरी शताब्दी कृति *डियाटेस्सारोन* (*'चार से '* के लिए यूनानी शब्द) तक पीछे जाता है।

इरेनियस ने यह सिद्धान्त दिया कि चार सुससाचार संसार के चार चौथाई और चार वायुवों के अनुरूप हैं, जैसा कि *चार* की संख्या विश्वव्यापकता की संख्या है।

II. चार चिन्ह

अनेक लोग, विशेष कर कला में रूचि रखने वाले, चार सुसमाचारों तथा यहेजकेल और प्रकाशितवाक्य के चार चिन्हों के बीच की सुझाई गई समानान्तरता को अधिक पसन्द करते हैं, ये चार चिन्ह इस प्रकार से हैं: सिंह, बैल, मनुष्य, और चील। किन्तु, अलग अलग मसीही चार सुसमाचारों के साथ चार चिन्हों की जोड़ी अलग अलग तरह से बनाते हैं। यदि इस प्रकार की बातों को हम वैध ठहराएं, तब सिंह मत्ती के साथ, जो यहूदा के सिंह का शाही सुसमाचार है, सबसे अधिक मेल खाएगा। बैल, भार उठाने वाले पशु के रूप में, मरकुस से अधिक मेल खाएगा। निश्चय ही, मनुष्य लूका का प्रमुखपात्र है, जो कि मनुष्य के पुत्र का सुसमाचार है। यहाँ तक कि *स्टैंडर्ड हैन्डबुक ऑफ सिनॉनिम्स, एन्टोनिम्स, एण्ड प्रिपोज़िशन* कहती है कि ''चील की जोड़ी सन्त यूहन्ना के साथ बनती है, जो कि अतिउच्च स्थान के आत्मिक दर्शनों का *प्रतीक* है।''[1]

III. चार पाठकवर्ग

चार सुसमाचार होने का सबसे उत्तम स्पष्टीकरण

शायद यह होगा कि पवित्र आत्मा चार भिन्न प्रकार के लोगों तक पहुँचना चाह रहा था – चार प्राचीन प्रकार, जिनके अब भी स्पष्ट वर्तमान प्रतिरूप पाए जाते हैं।

हर कोई इस बात से सहमत है कि मत्ती रचित सुसमाचार यहूदियों को सबसे अधिक ध्यान देकर लिखा गया है। पुराना नियम के उद्धरण, विस्तृत उपदेश, हमारे प्रभु यीशु की वंशावली, और शेमवंशी भाव की ओर हर एक नए पाठक का ध्यान जाता है।

मरकुस जो शायद साम्राज्य की राजधानी से इस सुसमाचार को लिख रहा था, रोमी लोगों को, और उनके ही समान सोच रखने वाले लाखों लोगों को अपने ध्यान में रख कर लिख रहा था जो विचारों से अधिक कार्यों को पसन्द करते थे। इसलिए उसके सुसमाचार में आश्चर्यकर्मों को अधिक और दृष्टांतों को कम स्थान दिया गया है। इस सुसमाचार में वंशावली की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि कोई भी रोमी व्यक्ति एक सक्रिय (कार्य करने वाला; उन्हें सिर्फ कार्य में रुचि हैं) सेवक की यहूदी वंशावली की परवाह नहीं करेगा।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लूका रचित सुसमाचार यूनानियों और ऐसे अनेक रोमी लोगों के लिए लिखा गया था जो यूनानी साहित्य और कला को पसन्द करते और उनका अनुकरण करते थे। ऐसे लोग सुन्दरता, मानवता, सांस्कृतिक शैली, और साहित्य उत्कृष्टता को पसन्द करते थे। डॉ. लूका इन्हें इन सारी बातों को उनके समक्ष अपने सुसमाचार में प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय के यूनानियों के साथ साथ, फ्रांसिसी लोग भी इसी वर्ग में आते हैं। इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि एक *फ्रांसिसी* ने ही यह कहा था कि लूका की पुस्तक, ''संसार की सबसे सुन्दर पुस्तक है'' (लूका का परिचय देखें)।

फिर यूहन्ना के लिए कौन बच गए? यूहन्ना का सुसमाचार सब लोगों के लिए है। यह सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से (यूहन्ना 20:30, 31) लिखा गया है (आरंभिक स्तर की पुस्तक), तौभी अनेक गम्भीर मसीही विचारक इसे पसन्द करते हैं। शायद इस वाक्य में कुंजी पाई जाती है– यूहन्ना रचित सुसमाचार ''तीसरी जाति'' के लिए है – यह नाम मूर्तिपूजकों द्वारा आरम्भिक मसीहियों को दिया गया था जैसा कि वे अब न ही यहूदी और न अन्यजाति रह गए थे।

IV. अन्य चौहरे अभिप्राय

पुराना नियम में कुछ अन्य चौहरे अभिप्राय हैं जो चार सुसमाचारों में जोर दी गई बातों से बहुत ही सुन्दर मेल खाते हैं।

''शाख'' (शाखा/डाली) के रूप में हमारे प्रभु यीशु का उल्लेख निम्नलिखित सन्दर्भों में आया है:

''दाऊद के . . . एक . . . अंकुर (अंग्रेजी *एनकेजेवी* ''अंकुर'' शब्द के लिये प्रयोग किए गए शब्द का अनुवाद ''शाखा'' होगा) में. . . राजा''
(यिर्म 23:5,6)

''मैं अपने दास शाख''
(जक. 3:8)

''उस पुरुष . . . शाख''
(जक. 6:12)

''यहोवा का पल्लव'' (अंग्रेजी *एनकेजेवी* में ''पल्लव'' के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है, उसका अनुवाद ''शाखा'' भी किया जा सकता है
(यशा. 4:2)

पुराना नियम में चार बार ''देखो'' शब्द का उपयोग आया है जिनसे जुड़े शब्द सुसमाचारों के प्रमुख विषय से बिल्कुल ठीक ठीक मेल खाते हैं :

''तेरा राजा'' (जक. 9:9) अंग्रेजी *एनकेजेवी* के अनुसार इसका अनुवाद ''देख, तेरा राजा''या ''देखो, तुम्हारा राजा'' होगा।

''मेरे दास को देखो'' (यशा. 42:1)

''उस पुरुष (मनुष्य) को देखो'' (जक. 6:12)।

''अपने परमेश्वर को देखो'' (यशा. 40:9)।

अन्तिम समानान्तरता कुछ कम स्पष्ट है परन्तु यह अनेक लोगों के लिए आशीष का कारण सिद्ध हुई है। पवित्रस्थान में सामग्रियों के चार रंग अपने प्रतीकात्मक अर्थों के साथ सुसमाचार लेखकों द्वारा हमारे प्रभु यीशु मसीह के गुणों की प्रस्तुति के चार पहलुओं से भी मेल खाते प्रतीत होते हैं:

बैंजनी रंग *मत्ती* की स्पष्टतया पसन्द थी, मत्ती रचित सुसमाचार राजा का सुसमाचार है। न्यायियों 8:26 में इस रंग के शाही स्वभाव को दर्शाया गया है।

लाल डाई प्राचीन समय में एक किरमिज कीड़े को

मसल कर तैयार किया जाता था। यह मरकुस को दर्शाता है, जो कि एक बन्धुए गुलाम (''कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं'' भजन 22:6) का सुसमाचार है।

सफेद रंग पवित्र लोगों के धर्मी कार्यों को दर्शाता है (प्रका. 19:8)। *लूका* मसीह के सिद्ध मनुष्यत्व पर जोर देता है।

नीला रंग साफीर के उस गुम्बद को दर्शाता है जिसे हम स्वर्ग कहते हैं (निर्ग. 24:10), यह मसीह के ईश्वरत्व का एक आकर्षक प्रस्तुतीकरण है, और *यूहन्ना* का एक मूल स्वर है।

V. क्रम और बल
(किस बात पर जोर दिया गया है?)

सुसमाचारों में, हम पाते हैं कि घटनाओं का वर्णन उनके घटित होने के क्रम से नहीं किया गया है। इस अध्ययन के आरम्भ में यह बात जान लेना अच्छा होगा कि पवित्र आत्मा अक्सर घटनाओं को उनमें पाई जाने वाली नैतिक/आत्मिक शिक्षा के क्रम से जमाता है। केली का कहना है:

जैसे जैसे हम आगे अध्ययन करेंगे, यह सिद्ध हो जाएगा कि लूका रचित सुसमाचार अनिवार्यत: उनमें पाई जाने वाली नैतिक/आत्मिक शिक्षा के क्रम में लिखा हुआ है, और वह तथ्यों, वार्तालापों, प्रश्नों, उत्तरों, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के उपदेशों को उनके बीच की आन्तरिक कड़ी के आधार पर जमाता है, घटनाओं के क्रम के बाहरी कड़ी के आधार पर नहीं जो लेखों (रिकार्ड) का कच्चा और प्रारंभिक रूप है। परन्तु घटनाओं को उनके कारणों और परिणामों के साथ उनमें पाई जाने वाली नैतिक/आत्मिक शिक्षा के क्रम में जमाना लेखक के लिए अपेक्षाकृत काफी कठिन है, वह मात्र इतिहास नहीं लिख रहा है। परमेश्वर लूका का प्रयोग कर सकता था कि वह इस कार्य को सिद्धता से पूरी कर सके।[2]

ये भिन्न भिन्न बातें जिन पर जोर दिया गया है और उन्हें प्रस्तुत करने के भिन्न तरीके सुसमाचारों में पाई जाने वाली विविधता का कारण है। पहले तीन सुसमाचार, जिन्हें समदर्शी (जिसका अर्थ होता है, ''समान दृष्टिकोण'') सुसमाचार कहा जाता है, प्रभु यीशु के जीवन को प्रस्तुत करने का मिलता जुलता तरीका अपनाते हैं, परन्तु यूहन्ना का तरीका अलग है। उसने अपने सुसमाचार को बाद में लिखा और वह उन बातों को नहीं दोहराना चाहता था जिन्हें पहले से ही काफी अच्छे से समझाया जा चुका था। वह हमारे प्रभु यीशु के जीवन और वचनों को अधिक चिन्तनशील और आध्यात्मिक/सैद्धान्तिक तरीके से प्रस्तुत करता है।

VI. समदर्शी सुसमाचार से सम्बन्धित समस्या

प्रथम तीन सुसमाचारों में इतनी अधिक *समानताएं* क्यों हैं – यहाँ तक कि लम्बे लम्बे स्थल होने के बाद भी समान शब्दों का उपयोग किया गया है – और उसके बाद भी इन तीनों के मध्य काफी *भिन्नताएं* हैं: इस प्रश्न को सामान्यत: ''समदर्शी समस्या'' कहा जाता है। यह बात संरक्षणवादी (*कंज़र्वेटिव्ह*) मसीहियों की तुलना में उन लोगों के लिए अधिक बड़ी समस्या है जो इस बात का इंकार करते हैं कि पवित्रशास्त्र को परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। अनेक जटिल सिद्धान्त प्रतिपादित किये गए हैं। ये प्राय: काल्पनिक खोए हुए दस्तावेजों से संबंध रखते हैं, जिनके पाण्डुलिपि रूप की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इनमें से कुछ विचार लूका 1:1 में ठीक बैठते हैं और सन्तुलनवादी दृष्टिकोण से इनकी *सम्भावना* न्यूनतम है। किन्तु इन में से कुछ सिद्धान्त इस बात पर जोर देने की हद तक चले गए कि पहली शताब्दी की कलीसिया ने यीशु मसीह से सम्बन्धित ''मनगढ़न्त कथाओं'' के टुकड़ों को एक साथ जोड़ दिया। इन तथाकथित ''विधा समीक्षक'' (*फार्म क्रिटिकल*) सिद्धान्तों द्वारा सम्पूर्ण मसीही पवित्रशास्त्र और कलीसिया इतिहास के प्रति व्यक्त किए जाने वाले अविश्वास और नास्तिकता से अलग हटकर, इस बात की ओर ध्यान देना उचित होगा कि इन आलोचकों के पास कोई भी दस्तावेज़ी प्रमाण नहीं है। साथ ही ये तथाकथित विद्वान स्वयं आपस में एक बात पर सहमत नहीं हो पाते कि वे समदर्शी ससमाचारों को कैसे वर्गीकृत और विभाजित करेंगे।

यूहन्ना 14:26 में हमारे प्रभु यीशु के शब्दों में इस समस्या का एक बेहतर समाधान पाया जाता है: ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।''

यह बात इस बात का समर्थन करती है कि मत्ती और यूहन्ना ने अपनी आँखों देखी बातों को स्मरण करते हुए

अपने अपने सुसमाचारों को लिखा, और संभवत: मरकुस ने भी। ऐसा माना जाता है कि मरकुस ने पतरस द्वारा याद रखी गई बातों के आधार पर अपना सुसमाचार लिखा था, जैसा कि कलीसियाई इतिहास बताता है। पवित्र आत्मा के इस प्रत्यक्ष सहयोग को लूका 1:1 में उल्लेखित लिखित दस्तावेजों और शेमवंशियों की अद्भुत और बिल्कुल ठीक ठीक *मौखित परम्परा* के साथ जोड़ कर देखने पर, हमें समदर्शी समस्या का उत्तर मिल जाता है। इनके परे और दूसरी आवश्यक सच्चाइयां, विवरण या व्याख्याएं ''आत्मा की सिखाई गई बातों में'' (1 कुरि. 2:13) सीधे सीधे प्रकाशित की गई होंगी।

इस प्रकार से, जब हमें समदर्शी सुसमाचारों में कोई विरोधाभासी बात या विवरण में भिन्नता दिखाई देती है तो हमारा यह प्रश्न करना उचित है, ''*यह* सुसमाचार इस घटना या उपदेश का वर्णन क्यों कर रहा है, या क्यों नहीं कर रहा है, या इन पर जोर क्यों दे रहा है, या क्यों नहीं दे रहा है?'' उदाहरण के लिए, मत्ती दो बार दो लोगों के चंगा होने का वर्णन करता है (अन्धेपन से और दुष्टात्मा से), जबकि मरकुस और लूका सिर्फ एक व्यक्ति का उल्लेख करते हैं। कुछ लोग इसे विरोधाभास मानते हैं। बेहतर होगा कि हम ध्यान रखें कि मत्ती ने अपना सुसमाचार यहूदियों के दृष्टिकोण से लिखते हुए दो व्यक्तियों का उल्लेख किया था, क्योंकि व्यवस्था दो या तीन गवाहों की मांग करती थी, जबकि दूसरे सुसमाचार लेखकों ने सिर्फ प्रमुख पात्र, का *नाम* लेते हुए (जैसे अन्धे बरतुल्मैं) का उल्लेख किया था।

निम्नलिखित उदाहरण यह दर्शाते हैं कि सुसमाचारों में दोहराव की तरह प्रतीत होने वाली बातें दरअसल महत्वपूर्ण अन्तरों को सामने ला रही हैं:

लूका 6:20–23 में ऐसा लगता है कि पहाड़ी उपदेश को दोहराया जा रहा है, परन्तु यह चौरस जगह में खड़े होकर दिया गया उपदेश है (लूका 6:17)। मत्ती के धन्य वचनों में परमेश्वर के राज्य के आदर्श नागरिकों के चरित्रों का वर्णन किया गया है, जबकि लूका ने मसीह के शिष्यों की जीवनशैली को सामने रखा है।

लूका 6:40 को देख कर ऐसा लगता है कि यह मत्ती 10:24 के समान है। परन्तु मत्ती में, यीशु गुरु है, और उसके शिष्य हम हैं। लूका में, चेले बनाने वाला गुरु है, और जिस व्यक्ति को वह चेला बना रहा है वह शिष्य है। मत्ती 7:22 में राजा के प्रति सेवा पर जोर दिया गया है; जबकि लूका 13:25–27 में स्वामी के साथ संगति का वर्णन किया गया है।

जहाँ लूका 15:4–7 में फरीसियों की तीखी निन्दा की गई है, वहीं मत्ती 18:12,13 बच्चों और उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में है।

जिस समय सिर्फ विश्वासी लोग यूहन्ना के पास खड़े थे, उस समय उसने कहा था, ''वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा'' (मरकुस 1:8; यूहन्ना 1:33)। जब एक मिली जुड़ी भीड़ उसके पास खड़ी थी, जिसमें फरीसी लोग भी शामिल थे, उस समय यूहन्ना ने कहा, ''वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (न्याय का बपतिस्मा) (मत्ती 3:11; लूका 3:16)।

मत्ती 7:2 में ''जिस माप से तुम मापते हो . . .'' दूसरों के प्रति हमारे *दोष लगाने वाले रवैये* पर, मरकुस 4:24 में *वचन को* हमारे द्वारा *ग्रहण किए जाने* पर, और लूका 6:38 में हमारी *उदारता* पर लागू होता है।

इस प्रकार से, ये भिन्नताएं विरोधाभासी नहीं हैं, परन्तु जानबूझ कर विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रख कर लाई गई हैं, और मननशील विश्वासी को उसके विचार–मनन के लिए आत्मिक भोजन प्रदान करती हैं।

VII. लेखक

जब इस विषय पर चर्चा की जाती है कि सुसमाचारों को किसने लिखा – बल्कि बाइबल की सारी पुस्तकों को किसने लिखा – तब प्रमाणों को *बाहरी* और *आन्तरिक* तथ्यों में बांटना आदर्श होता है। हमारा मानना है कि नया नियम की सभी सत्ताइस पुस्तकों के साथ भी ऐसा ही किया जाना चाहिए। *आन्तरिक* प्रमाणों के अन्तर्गत लेखक जो उन दिनों में रहा करते थे जब पुस्तकों में वर्णित घटनाओं को घटे कुछ ही समय बीता था – सामान्यत: दूसरी और तीसरी शताब्दी के ''चर्च फादर्स'' और कुछ झूठे शिक्षक या अप्रमाणिक मत का प्रचार करने वालों – का सन्दर्भ दिया जाता है। इन व्यक्तियों ने उन पुस्तकों और लेखकों का उद्धरण और उल्लेख किया है और कभी कभी विशेष रूप से उनके विषय में बताया, जिन में हमें रूचि है। उदाहरण के लिए, यदि रोम के क्लेमेन्ट ने पहली शताब्दी के अन्त में 1 कुरिन्थियों को उद्धरित किया, तो यह स्पष्ट

हो जाता है कि यह पुस्तक पौलुस के छद्‌म नाम को लेकर दूसरी शताब्दी में लिखी गई पुस्तक नहीं हो सकती। *आन्तरिक* प्रमाणों के अन्तर्गत हम शैली, शब्दावली, इतिहास, और पुस्तक की विषयवस्तु को ध्यान से देखते हैं ताकि हम जाँच कर सकें कि यह बाहरी दस्तावेजों और लेखकों के दावों का समर्थन करती हैं या फिर यह विरोधाभासी हैं। उदाहरण के लिए, लूका और प्रेरितों के काम की शैली इस मत का समर्थन करती है कि इनका लेखक एक संस्कारी अन्यजाति वैद्य था।

अनेक पुस्तकों में ''केनन'' या दूसरी शताब्दी के झूठे शिक्षक मार्सीओन द्वारा तैयार प्रामाणिक पुस्तकों की सूची को उद्धरित किया गया है। उसने सिर्फ लूका के एक कांट छांट किए गए सुसमाचार और पौलुस की दस पत्रियों को ही अपने प्रामाणिक संग्रह में शामिल किया था, परन्तु तौभी मार्सीओन उसके समय में मानक पर खरी उतरी पुस्तकों का एक उपयोगी गवाह था। मुराटोरी केनन (मुराटोरी का प्रामाणिक संग्रह, जिसे यह नाम इटली के कार्डीनल मुराटोरी से मिला, जिसे यह दस्तावेज प्राप्त हुआ था) रूढ़ीवादी है, यद्यपि कुछ अवसरों पर यह मसीही पुस्तकों की खण्डित प्रामाणिक सूची रही है।

अन्त्यसूची

[1]जेम्स सी. फेरनाल्ड, सम्पा., ''एमब्लम,'' *फंक एण्ड वागनाल्स स्टैण्डर्ड हैण्डबुक ऑफ सिनोनिम्स, एन्टोनिम्स, एण्ड प्रिपोज़िशन्स,* पृष्ठ. 175।

[2]विलियम केली, *एन एक्पोज़िशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ लूक,* पृष्ठ. 16।

मत्ती रचित सुसमाचार

पुस्तक का परिचय

''शानदार संकल्पना और ढेर सारी बातों को महान विचारों के रूप में जिस सामर्थ से ढाला गया है, पुराना या नया नियम दोनों में ही, ऐतिहासिक विषय पर केन्द्रित किसी भी पुस्तक की तुलना मत्ती से नहीं जा सकती।''

– थियोडोर ज़ाह्न

I. बाइबल प्रामाणिक संग्रह में विशिष्ठ स्थान

मत्ती का सुसमाचार पुराना नियम और नया नियम के बीच में एक आदर्श सेतु है। इसके आरम्भिक शब्द ही हमें पुराना नियम के लोगों के पूर्वज अब्राहम तथा इस्राएल के *महान* राजा दाऊद की ओर ले जाते हैं। इस पुस्तक में जिन बातों को महत्व दिया गया है, अर्थात्, इसमें पाए जाने वाले यहूदी रस, इब्रानी पवित्रशास्त्र से लिए गए अनेक उद्धरण, और नया नियम के पुस्तकों में इसके सबसे पहले स्थान के कारण, यह पुस्तक संसार के लिए मसीही संदेश देने की शुरूआत करने का तर्कसंगत स्थान है।

मत्ती काफी समय से चारों सुसमाचार के क्रम में सबसे पहला स्थान कायम रखे हुए है। इसका कारण यह है कि आधुनिक समय में भी काफी समय तक ऐसा माना जाता रहा कि यह सबसे पहला *लिखित* सुसमाचार है। साथ ही, मत्ती की स्पष्ट और क्रमबद्ध शैली के कारण कलीसिया में सामुहिक पठन की दृष्टि से यह सबसे उपयुक्त पुस्तक बन गई। इस तरह से यह सबसे लोकप्रिय सुसमाचार था, और इसकी यूहन्ना के सुसमाचार के साथ लोकप्रियता के मामले में प्रतिस्पर्धा भी होती थी।

संतुलनवादी/संरक्षणवादी मसीही कहलाने के लिए यह मानना आवश्यक नहीं है कि मत्ती सुसमाचारों के क्रम में सबसे पहले लिखा गया सुसमाचार है। किन्तु, आरम्भिक मसीही लगभग यहूदी वंश के ही थे, और इनकी संख्या हजारों में थी। प्रथम मसीहियों की आवश्यकताओं की पूर्ति *पहले* करना तर्कसंगत प्रतीत होता है।

II. लेखनकारिता

यह *बाह्य प्रमाण* काफी प्राचीन और विश्वव्यापी है कि चुंगी लेनेवाला मत्ती, जो लेवी भी कहलाता था, इस पहले सुसमाचार का लेखक है। यदि मत्ती का कोई संबंध इस सुसमाचार से नहीं होता, तो प्रेरितों के दल का एक प्रमुख सदस्य न होने के कारण उसे इस पहले सुसमाचार का लेखक मानना काफी विचित्र प्रतीत होता।

''डिडाक्खे'' *(बारह प्रेरितों की शिक्षाएं)* कहलाए जाने वाले प्राचीन दस्तावेज के अलावा, जस्टिन मार्टियर, कुरिन्थुस के डायनिसियस, अन्ताकिया के थियोफिलस, और अथेने का अथेनागोरस इस सुसमाचार को अधिकृत बता कर उद्धरित करते हैं। कलीसियाई इतिहासकार यूसेबियस यह कहते हुए पापियास को उद्धरित करता है, ''मत्ती ने *लॉगिया* की रचना इब्रानी भाषा में की, और प्रत्येक ने अपने क्षमतानुसार इसकी व्याख्या की।'' इरेनियस, पेन्टाइनस, और ओरिगन बुनियादी रूप से इस बात से सहमत हैं। व्यापक रूप से ''इब्रानी'' को अरामी भाषा की एक बोली समझा जाता था जो कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के समय के इब्रानियों द्वारा बोली जाती थी, जैसा कि यह शब्द नया नियम में प्रयोग किया गया है। परन्तु *''लॉगिया''* क्या है? सामान्यत: इस यूनानी शब्द का अर्थ ''गूढ़ वचन (भारी वचन)'' होता है, जैसा कि

पुराना नियम में यहोवा का भारी वचन पाया जाता है। पापियास के कथन में इसका अर्थ ऐसा नहीं हो सकता। पापियास के कथन से सम्बन्धित तीन मत हैं: (1) यह *मत्ती* के सुसमाचार के लिए उपयोग किया गया है। अर्थात्, मत्ती ने अपने सुसमाचार का अरामी संस्करण विशेष रूप से इसलिये लिखा ताकि वह यहूदियों को मसीह के लिए जीत ले और इब्रानी मसीहियों को उनके विश्वास में बढ़ा सके, और फिर इसके बाद ही एक यूनानी संस्करण रूप में आया। (2) यह यीशु के सिर्फ *वचनों* के लिए उपयोग में लाया गया है, जिन्हें बाद में उसके सुसमाचार में शामिल कर लिया गया। (3) यह *टेस्टेमोनिया* के लिए प्रयोग किया गया है, अर्थात्, पवित्रशास्त्र के वे उल्लेख जो यह दर्शाते हैं कि यीशु ही मसीह है। इस अंतिम मत की तुलना में प्रथम और द्वितीय मत अधिक सही प्रतीत होते हैं।

मत्ती की यूनानी भाषा को देखने से यह एक अनुवाद की तरह दिखाई नहीं देता, परन्तु व्यापक रूप से फैली ऐसी परम्परा का (जिस पर पूर्व में कोई असहमति नहीं है) कोई न कोई तथ्यपरक आधार अवश्य होगा। परम्परा बताती है कि मत्ती ने पलस्तीन में पन्द्रह वर्षों तक प्रचार किया और फिर उसके बाद वह दूसरे देश के हिस्सों में सुसमाचार प्रचार करने को चला गया। ऐसी सम्भावना है कि लगभग 45 ईस्वी में उसने उन यहूदियों के लिए जिन्होंने यीशु को अपने मसीह के रूप में स्वीकार कर लिया था, अरामी भाषा में अपने सुसमाचार का पहला पाण्डुलेख (या फिर यीशु मसीह के सिर्फ *उपदेशों* को) छोड़ा, और उसके बाद सब के उपयोग के लिए एक *यूनानी* संस्करण तैयार किया। ऐसा ही कुछ मत्ती के समकालीन जोसीफस के द्वारा भी किया गया था। इस यहूदी इतिहासकार ने अपने *यहूदी लड़ाइयों* का पहला पाण्डुलेख आरामी भाषा में तैयार किया और फिर यूनानी में इस पुस्तक को अन्तिम रूप दिया।

मत्ती की लेखनकारिता के सम्बन्ध में *आन्तरिक प्रमाण* के अनुसार इसके लेखक के रूप में एक ऐसा भक्त यहूदी उपयुक्त बैठता है जो पुराना नियम से प्रेम रखता था और जिसे एक सचेत लेखक और सम्पादक होने का वरदान मिला था। रोमी शासन का सरकारी कर्मचारी होने के कारण, मत्ती अपने लोगों की भाषा (अरामी) और शासकवर्ग की भाषा (रोमी लोग पूर्वी देशों में लैटिन नहीं, परन्तु यूनानी भाषा का प्रयोग करते थे) दोनों में ही निपुण रहा होगा। सांख्यिक विवरण, पैसे से सम्बन्धित दृष्टांत, और धन से सम्बन्धित शब्दावलियां सभी एक चुंगी लेनेवाले की भाषा से पूरी तरह मेल खाते हैं। उसकी ठोस और व्यवस्थित शैली पर भी यह बात लागू होती है। यहाँ तक कि एक गैरसंरक्षणवादी (*नॉनकंर्जव्हेटिव*) विद्वान, गुडस्पीड द्वारा भी मत्ती को इस पुस्तक का लेखक मान लिये जाने का काफी कुछ आधार ये आन्तरिक प्रमाण ही थे।

इन व्यापक बाह्य प्रमाणों और इन अनुकूल आन्तरिक प्रमाणों के बाद भी, अधिकांश गैरसंरक्षणवादी विद्वान हमारे पारम्परिक मत का *इंकार* कर देते हैं कि चुंगी लेनेवाले मत्ती ने इस पुस्तक को लिखा था। उनके इंकार के दो प्रमुख कारण हैं।

सबसे पहले, यदि हम यह *मान लें* कि मरकुस का सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया (अनेक मसीही शिक्षकों द्वारा ''गॉस्पल ट्रूथ'' के रूप में ऐसा सिखाया जाता है), तो फिर एक प्रेरित और यीशु का चश्मदीद गवाह, मरकुस में लिखी गई बातों का उपयोग अपने सुसमाचार में कैसे कर सकता है (मरकुस के सुसमाचार की 93% बातें अन्य सुसमाचारों में भी आई हैं)? इसका उत्तर देने के लिए, सबसे पहली बात यह है, कि अब तक यह *प्रमाणित* नहीं किया जा सका है कि मरकुस का सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया था। प्राचीन समय के साक्षी कहते हैं कि मत्ती का सुसमाचार सबसे पहले लिखा गया, और इसलिए कि लगभग सभी आरम्भिक मसीही यहूदी थे, इस बात में काफी वजन है। परन्तु यदि हम इस बात को स्वीकार कर भी लें कि मरकुस को पहले लिखा गया (अनेक संरक्षणवादी मसीही इसे स्वीकार करते हैं), तो मत्ती इस बात को पहचान सकता था कि मरकुस में लिखी गई बातें मत्ती के संगी–प्रेरित शिमौन पतरस को स्मरण रही बातों से ली गई होंगी, आरम्भिक मसीही परम्परा का ऐसा ही मानना है (मरकुस के सुसमाचार का परिचय देखें)।

मत्ती (या किसी भी व्यक्ति द्वारा जो इन घटनाओं का चश्मदीद गवाह है) का इस सुसमाचार का लेखक न होने के पक्ष में दूसरा तर्क यह है कि इसके विवरण में सजीवता की कमी है। मरकुस, जिसके लिए कोई भी दावा नहीं करता कि वह यीशु की सेवकाई का आँखों देखा गवाह है, अपने सुसमाचार में ऐसा सजीव विवरण देता है मानों सब कुछ उसका आँखों देखा है। तो फिर एक

आँखों देखा गवाह इस प्रकार रूखेपन से कैसे लिख सकता है? यदि हम एक चुंगी लेने वाले के व्यक्तित्व पर ध्यान दें, तो शायद इस प्रश्न का उत्तर हमें मिल जाएगा। प्रभु के और अधिक उपदेशों को शामिल करने के उद्देश्य से लेवी ने अनावश्यक विवरणों को हटा दिया होगा। विशेष कर ऐसा तब होगा जब मरकुस ने पहले अपना सुसमाचार लिखा होगा और मत्ती ने देखा होगा कि पतरस द्वारा बताई गई बातों को मरकुस ने काफी अच्छे से प्रस्तुत किया है।

III. लेखनतिथि

यदि यह व्यापक धारणा सही है कि मत्ती ने अपने सुसमाचार का (या कम से यीशु के उपदेशों का) पहले एक अरामी संस्करण तैयार किया था, तब स्वर्गारोहण के पन्द्रह वर्ष बाद 45 ईस्वी की तिथि, प्राचीन मान्यता के साथ मेल खाएगी। उसने सम्पूर्ण और प्रामाणिक सुसमाचार यूनानी भाषा में सन् 50 या 55, या उसके बाद तैयार किया होगा।

यह मत कि यह सुसमाचार *अवश्य* ही यरूशलेम के सर्वनाश के बाद (70 ईस्वी) लिखा गया होगा, प्रभु द्वारा स्पष्ट विवरण देते हुए भविष्यद्वाणी कर पाने की क्षमता पर अविश्वास, और उन अन्य तर्कवादी सिद्धान्तों पर टिका हुआ है जो यह नहीं मानते कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।

IV. पृष्ठभूमि और प्रमुख विषय

जब यीशु ने मत्ती को बुलाया उस समय मत्ती जवान था। वह जन्म से ही यहूदी था। वह चुंगी लेने के कार्य में निपुण था और वह चुंगी वसूलने का कार्य करता था, परन्तु उसने यीशु के पीछे चलने के लिए यह सब कुछ त्याग दिया। उसने यह जो सांसारिक हानि उठायी थी उसके बदले उसे जो क्षतिपूर्ति मिली उनमें से एक यह थी कि वह यीशु के बारह चेलों में से एक बन गया। दूसरा यह कि उसे पहले सुसमाचार का लेखक होने के लिए चुना गया। सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि मत्ती और लेवी एक ही व्यक्ति थे (मरकुस 2:14; लूका 5:27)।

अपने सुसमाचार में, मत्ती यह दर्शाता है कि यीशु ही इस्राएल का बहुप्रतीक्षित मसीहा है, जो दाऊद के सिंहासन का एकमात्र वैध उत्तराधिकारी है।

यह पुस्तक दावा नहीं करती कि इसमें यीशु मसीह के जीवन का सम्पूर्ण वर्णन किया गया है। इसकी शुरूआत यीशु मसीह की वंशावली और उसके आरम्भिक वर्षों से होती है, और फिर यह एकदम से उछल कर उसकी सार्वजनिक सेवकाई की शुरूआत के विषय बताने लगती है, जब यीशु मसीह 30 वर्ष का हो चुका था। पवित्रआत्मा की अगुवाई में मत्ती उद्धारकर्ता के जीवन और उसकी सेवकाई के उन पहलुओं को चुनता है जो उसे परमेश्वर के *अभिषिक्त जन के* रूप में (जिसका अर्थ *मसीह* या *ख्रीष्ट* होता है) सत्यापित करते हैं। यह पुस्तक क्रमिक रूप से चरम बिन्दु की ओर बढ़ती है: यीशु पर मुकद्दमा, उसकी मृत्यु, उसका गाड़ा जाना, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण। और नि:सन्देह, इस चरम बिन्दु पर, मसीह के उद्धार की नींव डाली गई है। इसीलिए इस पुस्तक को एक सुसमाचार कहा जाता है – सिर्फ इसलिए नहीं कि यह उस मार्ग को बताती है जिसके द्वारा पापी लोग उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि इससे भी अधिक इसलिए क्योंकि यह मसीह के उस बलिदानी कार्य का वर्णन करती है जिसके द्वारा उद्धार सम्भव किया गया।

यह टीका पुस्तक बहुत अधिक विस्तारपूर्ण या तकनीकी नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्तिगत अध्ययन और मनन करने के लिए उत्साहित करना है। और इसका सबसे बड़ा लक्ष्य पाठकों के हृदय में राजा की वापसी के लिए एक तीव्र लालसा उत्पन्न करना है।

इसलिए मैं,
और अधिक जलते हुए हृदय के साथ,
इसलिए मैं,
और अधिक मधुर आशा के साथ,
उस घड़ी के लिए कराहता हूँ,
जो हे प्रभु तेरे वापसी की घड़ी है;
और तेरे ज्वालामय चरणों के आगमन के लिए
मूर्छित हुआ जाता हूं।

– एफ.डब्ल्यू.एच. मेयर्स द्वारा लिखित सेंट पॉल पुस्तक से उद्धरित

पुस्तक की रूपरेखा

I. मसीह–राजा की वंशावली और उसका जन्म (अध्याय 1)

II. मसीह–राजा के आरम्भिक वर्ष (अध्याय 2)

III. मसीह की सेवकाई के लिए तैयारी और उसकी सेवा का आरम्भ (3–4 अध्यायों में)

IV. राज्य का संविधान (5–7 अध्यायों में)

V. सामर्थ और अनुग्रह से किए गए मसीह के आश्चर्यकर्म, और उन पर विभिन्न प्रतिक्रियाएं (8:1–9:34)

VI. मसीह–राजा के प्रेरितों को इस्राएल में प्रचार करने के लिए भेजा गया (9:35–10:42)

VII. विरोध और इंकार का बढ़ना (11,12 अध्यायों में)

VIII. इस्राएल के द्वारा उसे मसीह मानने से इंकार कर दिए जाने के कारण राजा के द्वारा एक अन्तरिम प्रकार के राज्य की घोषणा (अध्याय 13)

IX. मसीह के अथक अनुग्रह का बढ़ते हुए बैरभाव से सामना (14:1–16:12)

X. राजा अपने चेलों को तैयार करता है (16:13–17:27)

XI. राजा अपने चेलों को शिक्षा/निर्देश देता है (18–20 अध्यायों में)

XII. राजा का अपने आप को प्रस्तुत किया जाना और राजा का इंकार कर दिया जाना (21–23 अध्यायों में)

XIII. राजा द्वारा जैतून पर्वत पर उपदेश (24, 25 अध्यायों में)

XIV. राजा का दु:ख–भोग और उसकी मृत्यु (26, 27 अध्यायों में)

XV. राजा की विजय (अध्याय 28)

टीका

I. मसीह–राजा की वंशावली और उसका जन्म (अध्याय 1)

अ. यीशु मसीह की वंशावली (1:1–17)

नया नियम को सरसरी तौर पर पढ़ने वाला एक व्यक्ति अचरज में पड़ सकता है कि इसका आरम्भ वंशावली जैसे नीरस विषय से क्यों किया जा रहा है। ऐसा पाठक यह सोच कर कि नामों की इस सूची का शायद ही कोई अधिक महत्व हो, इसे छोड़ कर आगे लिखी बातों को पढ़ने लगेगा जहाँ उसे उसके काम की बात दिखाई दे रही हो।

किन्तु, यह वंशावली अनिवार्य है। यह इसके बाद की सारी बातों की नींव है। जब तक यह दर्शाया नहीं जाता कि यीशु राजकीय वंशरेखा में दाऊद का वैध वशंज है, तब तक यह प्रमाणित करना असम्भव है कि यीशु इस्राएल का मसीहा–राजा है। मत्ती अपने लेख की शुरूआत वहीं से कर रहा है जहाँ से उसे करना अनिवार्य है – इस दस्तावेजी प्रमाण से कि यीशु अपने सांसारिक (जन्म देनेवाला नहीं परन्तु गोद लेनेवाला) पिता यूसुफ के माध्यम से दाऊद के सिंहासन का वैध उत्तराधिकारी है।

यह वंशावली इस्राएल के राजा के रूप में यीशु की *वैध* वंशरेखा खींचती है; लूका के सुसमाचार में दी गई

वंशावली दाऊद की सन्तान के रूप में उसके वंशक्रम की वंशावली को खींचती है। मत्ती में दी गई वंशावली *राजकीय* वंशरेखा को दाऊद से लेकर उसके पुत्र और अगले राजा सुलैमान से लेते हुए आगे बढ़ती है; लूका की वंशावली दाऊद से उसके एक दूसरे पुत्र नातान से होते हुए शारीरिक वंश के क्रम में आगे बढ़ती है। यह वंशावली यूसुफ तक जाती है, जिसका यीशु *गोद लिया हुआ* पुत्र था; लूका 3 की वंशावली शायद मरियम के पूर्वजों की रेखा को खींच रही है, जिसका यीशु *वास्तविक* पुत्र था।

एक शताब्दी पहले, परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक नि:शर्त वाचा बान्धी थी, और उसे एक ऐसा राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी जो सदा बना रहेगा और उसके राजवंश की कड़ी बीच से कभी नहीं टूटेगी (भजन 89:4, 36, 37)। यह वाचा अब मसीह में पूरी हुई: वह यूसुफ के माध्यम से दाऊद के सिंहासन का वैध उत्तराधिकारी है और मरियम के माध्यम से दाऊद का असली वंश है। इसलिए कि वह सदा जीवित है, उसका राज्य भी सदा बना रहेगा और वह दाऊद के महान पुत्र के रूप में सदा राज्य करता रहेगा। यीशु ने अपने व्यक्तित्व में इस्राएल के सिंहासन पर दावा करने के दोनों आधारों को एक किया (वैध उत्तराधिकारी और असली वंश); चूंकि वह अब भी जीवित है, इसलिए और कोई दूसरा दावेदार नहीं हो सकता।

1:1–15 यह सूत्र **इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली** उत्पत्ति 5:1 के वाक्य से मिलता जुलता है: ''आदम की वंशावली यह है।'' उत्पत्ति हमारा परिचय पहले आदम से कराती है; वहीं मत्ती हमारा परिचय अन्तिम आदम से कराता है। पहला आदम पहली, या भौतिक सृष्टि का सिर था। मसीह, जो अन्तिम आदम है, नई, या आत्मिक सृष्टि का सिर है।

इस सुसमाचार का विषय **यीशु मसीह** है। **यीशु** नाम उसे यहोवा–उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है;[1] उसकी पदवी **मसीह** (''अभिषिक्त'') उसे इस्राएल के बहुप्रतीक्षित मसीहा के रूप में प्रस्तुत करती है। **दाऊद की सन्तान** के रूप में उसकी पदवी पुराना नियम में मसीह और राजा दोनों के रूप में उसकी भूमिका से सम्बन्धित है। **इब्राहीम की सन्तान** के रूप में उसकी पदवी हमारे प्रभु को उन प्रतिज्ञाओं की अन्तिम और निर्णायक पूर्णता के रूप में प्रस्तुत करती है जो इब्रानी लोगों के पूर्वज से की गई थी।

यह वंशावली तीन ऐतिहासिक खण्डों में विभाजित है: इब्राहीम से यिशै तक, दाऊद से योशिय्याह तक, यकुन्याह से यूसुफ तक। पहला खण्ड दाऊद की ओर ले जाता है; दूसरा खण्ड राजतंत्र की अवधि का है; तीसरे खण्ड में बन्धुआई (586 ई.पू. और उसके बाद) के दौरान की बहुत ही सम्भाल कर रखी गई शाही वंशरेखा का उल्लेख किया गया है।

इस सूची में बहुत ही रोचक विशेषताएं पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, इस खण्ड में, चार स्त्रियों के नामों का उल्लेख किया गया है: **तामार**, **राहाब**, **रूत**, और बेतशीबा **(उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहले उरिय्याह की पत्नी थी)**। चूंकि पूर्वी देशों की वंशावली में स्त्रियों के नाम का उल्लेख मुश्किल से किया जाता था, इन चार स्त्रियों का यहाँ शामिल किया जाना बड़े आश्चर्य की बात है, और उस पर भी दो स्त्रियां (तामार और राहाब) वेश्याएं थीं, एक के साथ व्यभिचार किया गया था (बेतशीबा), और दो अन्यजाति थीं (राहाब और रूत)। मत्ती अपने सुसमाचार की प्रस्तावना में इन्हें शामिल करके शायद यह संकेत दे रहा है कि आने वाला मसीह पापियों के लिए उद्धार और अन्यजातियों के लिए अनुग्रह लेकर आएगा, और मसीह में जाति और लिंग के बन्धन तोड़ दिए जाएंगे।

यकुन्याह नामक राजा का उल्लेख भी रोचक है। यिर्मयाह 22:30 में परमेश्वर ने इस मनुष्य को शाप दिया था:

> यहोवा यो कहता है:
> ''इस पुरुष को निर्वंश लिखो,
> उसका जीवनकाल कुशल से न बीतेगा; और न उसके
> वंश में से कोई भाग्यवान होकर
> दाऊद की गद्दी पर विराजमान
> वा यहूदियों पर प्रभुता करनेवाला होगा।''

यदि यीशु यूसुफ का *वास्तविक* पुत्र होता, तो वह इस शाप के आधीन आ जाता। तौभी दाऊद की राजगद्दी का उत्तराधिकारी होने के लिए उसे यूसुफ का वैधानिक पुत्र होना आवश्यक था। इस समस्या का समाधान कुंवारी के माध्यम से जन्म के द्वारा सुलझाया गया: यीशु यूसुफ के कारण सिंहासन का *वैधानिक* उत्तराधिकारी था। मरियम

के कारण वह दाऊद का *वास्तविक* पुत्र था। यकुन्याह को दिए गए शाप का प्रभाव मरियम या उसके बच्चों पर नहीं हुआ क्योंकि वह यकुन्याह की वंशरेखा की नहीं थी।

1:16 अंग्रेजी में **जिस से** मरियम और यूसुफ दोनों पर लागू हो सकता है। किन्तु, मूल यूनानी भाषा में (और हमारे हिन्दी अनुवाद में भी) **जिस** एकवचन और स्त्रीलिंग में है, इस प्रकार से यहाँ पर यह संकेत देने का प्रयास किया जा रहा है कि यीशु **मरियम** से उत्पन्न हुआ, **यूसुफ** से नहीं। परन्तु वंशावली के इन रोचक तथ्यों के अलावा हमें उन समस्याओं का भी उल्लेख करना आवश्यक होगा जो इस वंशावली में सामने आती हैं।

1:17 मत्ती ने इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान खींचा है कि यहाँ पर तीन खण्ड हैं और प्रत्येक में **चौदह पीढ़ी** हैं। किन्तु, पुराना नियम से हमें यह मालूम होता है कि उसकी इस सूची में से कुछ नाम गायब हैं। उदाहरण के लिए, योराम और उजिय्याह के बीच में (पद 8) अहजिय्याह, योआश और अमस्याह ने राजा के रूप में राज्य किया (2 राजा 8–14; 2 इतिहास 21–25 देखें)।

दो ऐसे नाम हैं जो मत्ती और लूका दोनों की वंशावलियों में आए हैं: शालतिएल और जरुब्बाबिल (मत्ती 1:12, 13; लूका 3:27)। यह विचित्र बात है कि यूसुफ और मरियम की अलग अलग वंशरेखा के बीच में अचानक इन दोनों का नाम आ जाता है और फिर से दोनों वंशरेखाएं अलग–अलग हो जाती हैं। यह समस्या और अधिक बढ़ जाती है जब हमारा ध्यान इस ओर जाता है कि दोनों ही सुसमाचार के लेखकों ने एज्रा 3:2 के अनुसार जरुब्बाबिल को शालतिएल के पुत्र के रूप में सूची में रखा है, जबकि 1 इतिहास 3:19 में वह पदायाह के पुत्र के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

एक तीसरी समस्या यह है कि मत्ती दाऊद से यीशु तक सत्ताइस पीढ़ी गिनता है, जबकि लूका के अनुसार यह संख्या बयालीस है। यद्यपि दोनों सुसमाचार लेखक अलग अलग वंशरेखा को प्रस्तुत कर रहे हैं, तौभी यह देख कर अटपटा लगता है कि पीढ़ियों की संख्या में इतना बड़ा अन्तर कैसे आ सकता है।

इस प्रकार की समस्याओं और विरोधाभासी प्रतीत होने वाली उलझनों के प्रति बाइबल का अध्ययन करने वाले का रवैया किस प्रकार का होना चाहिए? सबसे पहली बात, हमारा आधार–तर्क यह है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। इसलिए इसमें गलतियां नहीं हो सकतीं। दूसरी बात, यह असीमित है क्योंकि यह परमेश्वर की असीमितता को परिलक्षित करती है। हम वचन की बुनियादी सच्चाइयों को समझ सकते हैं, परन्तु हम इस में दी गई सारी बातों को पूरी रीति से कभी भी नहीं समझ सकते।

इसलिए ऐसा मानकर चलने से इन समस्याओं के सम्बन्ध में हम इस निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं कि समस्या बाइबल की निभ्रान्तता में नहीं, परन्तु हमारे ज्ञान की कमी में है। बाइबल में प्रतीत होने वाली समस्याओं को हमें एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए कि हम इसके उत्तरों की खोज के लिए अध्ययन करें। ''परमेश्वर की महिमा गुप्त रखने में है, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है'' (नीति. 25:2)।

इतिहासकारों के द्वारासावधानीपूर्वक किए गए शोध और पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा किए गए उत्खनन से भी यह कभी सिद्ध नहीं हो पाया है कि बाइबल में दी गई बातें झूठी हैं। हमें ऐसा लगता है कि ऐसी समस्याओं और विरोधाभासों के तर्कसंगत स्पष्टीकरण अवश्य ही हैं, और ये स्पष्टीकरण आत्मिक महत्व और लाभ से परिपूर्ण हैं।

ब. यीशु मसीह मरियम से उत्पन्न हुआ (1:18–25)

1:18 **यीशु मसीह का जन्म** वंशावली में उल्लेखित अन्य किसी के भी जन्म से अलग था। वंशावली में यह सूत्र बार–बार दोहराया गया है: ''अ से ब उत्पन्न हुआ।'' परन्तु यहाँ पर हम एक ऐसे जन्म का उल्लेख पाते हैं जो बिना एक मानव–पिता के हुआ। इस आश्यर्चजनक गर्भधारण से जुड़ी सच्चाइयों को सम्मान और साधारण भाव से व्यक्त किया गया है। **मरियम** की मंगनी **यूसुफ से** हुई थी, परन्तु विवाह अब तक सम्पन्न नहीं हुआ था। नया नियम समय में मंगनी बात पक्की करने का/सगाई का एक तरीका था (परन्तु वर्तमान में होने वाली सगाई से अधिक बाध्यकारी था) और इसलिए सिर्फ तलाक देकर ही तोड़ा जा सकता था। यद्यपि सगाई करने के बाद युगल विवाह समारोह तक एक साथ नहीं रह सकते थे, परन्तु किसी भी पक्ष के द्वारा सम्बन्धों में विश्वासघात किया जाना व्यभिचार माना जाता था और इसकी सजा मृत्यु थी।

अपनी मंगनी के बाद की अवधि के दौरान कुंवारी मरियम **पवित्र आत्मा** के द्वारा एक आश्चर्यकर्म से गर्भवती हो गई। एक स्वर्गदूत ने पहले ही इस रहस्यमयी घटना की घोषणा मरियम को कर दी थी: ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी'' (लूका 1:35)। मरियम सन्देह और कलंक के घेरे में आ गई। सारे मानव इतिहास में कभी भी बिना पुरुष से सम्बन्ध बनाए किसी भी कुंवारी के द्वारा किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया गया है। जब लोगों ने एक अविवाहित कन्या को गर्भवती देखा, तो इसका एक ही अर्थ हो सकता था।

1:19 यहाँ तक कि **यूसुफ** भी मरियम की इस दशा के वास्तविक कारण को नहीं जानता था। वह दो कारणों से अपनी मंगेतर पर अतिक्रोधित हो गया होगा: पहला कारण, उसे लगा होगा कि मरियम ने उसके साथ विश्वासघात किया है; और दूसरा कारण, यद्यपि यूसुफ निर्दोष था तौभी उसे इस मामले में सहापराधी माना जाएगा। मरियम के प्रति उसके प्रेम और न्याय की चाह के कारण उसने इस मंगनी को चुपचाप तोड़ देने का निर्णय लिया। वह सार्वजनिक लज्जा को टालना चाहता था जो अक्सर इस प्रकार के कृत्य से जुड़ी होती है।

1:20 जब यह सज्जन और विवेकशील व्यक्ति मरियम को बचाने की रणनीति बना रहा था, **प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई** दिया। **हे यूसुफ दाऊद की सन्तान** कह कर अभिवादन किया जाना, नि:सन्देह यूसुफ के भीतर उसकी शाही वंशावली के प्रति चेतना उत्पन्न करना और इस्राएल के मसीह–राजा के असाधारण आगमन के लिए तैयार करना था। यूसुफ के मन में **मरियम** के प्रति कोई सन्देह नहीं होना चाहिए। उसकी शुचिता के प्रति किसी भी प्रकार की शंका आधारहीन थी। उसका गर्भवती होना **पवित्र आत्मा** का एक आश्चर्यकर्म था।

1:21 फिर स्वर्गदूत ने बच्चे का लिंग, उसका नाम, और उसके जीवन के मिशन को प्रगट किया। मरियम एक **पुत्र** जनेगी। उसका नाम **यीशु** होगा, (यीशु का अर्थ होता है, ''यहोवा उद्धार है'' या ''उद्धारकर्ता यहोवा'')। अपने नाम को सही ठहराते हुए, वह **अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा**। यह बालक स्वयं यहोवा था, जो अपने लोगों को पाप के दण्ड, पाप की सामर्थ, और अन्तत: पाप के प्रभाव से बचाने के लिए पृथ्वी पर आ रहा था।

1:22 जब मत्ती ने इन घटनाओं को लिखा, तब उसने जान लिया कि परमेश्वर के साथ मनुष्य जाति के सम्बन्ध (व्यवहार) में एक नए युग का भोर हो चुका है। मसीहा सम्बन्धी भविष्यद्वाणी के शब्द, और एक लम्बी निष्क्रियता में एक नया जीवन फूट निकला। यशायाह की रहस्यमयी भविष्यद्वाणी अब मरियम के बालक में पूर्ण हुई: **यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो**। यशायाह के वचनों को मत्ती ईश्वरीय प्रेरणा से रचे गए वचन होने का दावा करता है – यहोवा ने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से मसीह से कम से कम 7000 वर्ष पूर्व यह वचन कहा था।

1:23 यशायाह 7:14 की भविष्यद्वाणी में अद्वितीय जन्म (''सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी''), बच्चे का लिंग (''और पुत्र जनेगी''), और बच्चे का नाम (''और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी'') शामिल था। मत्ती अपनी ओर से जोड़ते हुए स्पष्ट करता है कि **इम्मानुएल** का अर्थ होता है, **परमेश्वर हमारे साथ**। इस बात का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता कि जब यीशु मसीह इस संसार में था, तब कभी वह ''इम्मानुएल'' कहलाया हो। उसे हमेशा ''यीशु'' कहा गया। किन्तु *यीशु* नाम का अर्थ (पद 21 की टिप्पणी में देखें) **हमारे साथ . . . परमेश्वर** की उपस्थिति को दर्शाता है। इम्मानुएल मसीह की एक पदवी भी हो सकती है जो उसके दूसरे आगमन के समय उपयोग में लाई जाए।

1:24 स्वर्गदूत के हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप, यूसुफ ने मरियम को तलाक देने की अपनी योजना को त्याग दिया। उसने यीशु का जन्म होते तक अपनी मंगनी को कायम रखा, उसके बाद उसने उससे विवाह कर लिया।

1:25 यह शिक्षा कि मरियम अपने जीवन भर कुंवारी बनी रही इस पद में उनके वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित होने के उल्लेख के साथ ही गलत प्रमाणित हो जाती है। मत्ती 12:46; 13:55,56; मरकुस 6:3; यूहन्ना 7:3,5; प्रेरितों के काम 1:14; 1 कुरिन्थियों 9:5; और गलातियों 1:19 में भी यह उल्लेख किया गया है कि यूसुफ से मरियम के बच्चे हुए।

मरियम को अपनी पत्नी बनाने के साथ साथ यूसुफ ने यीशु को भी अपने पुत्र के रूप में गोद लिया। इसी तरह से यीशु दाऊद के सिंहासन का वैधानिक उत्तराधिकारी

बना। स्वर्गदूत की आज्ञानुसार **उसने** उस बच्चे का **नाम यीशु** रखा।

इस प्रकार से मसीह–राजा का जन्म हुआ। इस अनन्त जन ने समय की धारा (समय सीमा) में प्रवेश कर लिया। सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक नाज़ुक नवजात बन गया। महिमा के प्रभु ने उस महिमा के ऊपर मानवीय देह को ओढ़ लिया, और ''उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलु. 2:9)।

II. मसीह–राजा के आरम्भिक वर्ष (अध्याय 2)

अ. ज्योतिषी, राजा की आराधना करने आते हैं (2:1–12)

2:1,2 यीशु मसीह के जन्म के आसपास की घटनाओं के कालक्रम को देखने से उलझन में पड़ना स्वाभाविक है। जबकि पद 1 को पढ़ कर ऐसा लगता है कि हेरोदेस यीशु को उस समय मारना चाहता था जिस समय मरियम और यूसुफ बैतलेहम के गौशाले में थे, सारे तथ्यों को एकसाथ देखने पर, ये एक ऐसे समय की ओर संकेत करते हैं जो एक–दो वर्ष के बाद का है। पद 11 में मत्ती कहता है कि ज्योतिषियों ने यीशु का दर्शन एक घर में किया। दो वर्ष से कम के बालकों को मरवा डालने का हेरोदेस का आदेश (पद 16) भी शाही जन्म के समय के बाद की एक अनिश्चित अवधि की ओर संकेत करता है।

हेरोदेस महान एसाव का वंशज था, और इसलिए वह यहूदियों का चिर–शुत्र था। उसने धर्म परिवर्तन कर यहूदी धर्म को स्वीकार कर लिया था, परन्तु उसका परिवर्तन शायद राजनीति से प्रेरित था। उसके शासनकाल के अन्तिम समयों में **पूर्व से कई ज्योतिषी** ढूंढ़ने आए कि **यहूदियों का राजा** कहां है। ये ज्योतिषी शायद मूर्तिपूजक पुरोहित रहे होंगे जिनकी रीतिविधियां प्रकृति के वस्तुओं के आसपास केन्द्रित थी। अपने ज्ञान और आगे की बातों को जान लेने की क्षमता के कारण अक्सर उन्हें राजा के परामर्शदाता के रूप में चुना जाता था। हमें यह नहीं मालूम है कि वे पूर्व में कहां रहा करते थे, उनकी संख्या कितनी थी, न ही यह कि उन्होंने कितने दिनों तक यात्रा की।

पूर्व का एक **तारा** उन्हें किसी तरह से यह संकेत देता है कि एक राजा का जन्म हुआ है जिसे वे प्रणाम करना चाहते थे। शायद वे पुराना नियम में मसीह के आगमन से सम्बन्धित की गई भविष्यद्वाणियों से परिचित थे। शायद वे बालाम की भविष्यद्वाणी को जानते थे कि याकूब से एक तारे का उदय होगा (गिनती 24:17) और उन्होंने इसे सत्तर सप्ताहों की भविष्यद्वाणी से जोड़ दिया जिसमें मसीह के आगमन के समय को पहले से बता दिया गया है (दानि. 9:24, 25)। परन्तु यह बात अधिक सम्भव लगती है कि यह जानकारी उन्हें अलौकिक रीति से प्राप्त हुई थी।

इस तारे के सम्बन्ध में अनेक वैज्ञानिक–स्पष्टीकरण दिए गए हैं। उदारहण के लिए, कुछ लोग कहते हैं कि यह ग्रहों का एक संयोग था। परन्तु नि:सन्देह यह तारा काफी अलग था; यह ज्योतिषियों के आगे आगे चला, और यरूशलेम में उन्हें उस घर तक पहुँचाया जहाँ यीशु रहता था (पद 9)। उसके बाद यह ठहर गया। वास्तव में, यह इतना अलग था कि हम इसे एक आश्चर्यकर्म ही कह सकते हैं।

2:3 यह सुनकर हेरोदेस राजा . . . घबरा गया कि एक बालक का जन्म हुआ है जो यहूदियों का राजा बनेगा। इस प्रकार के किसी भी बालक का जन्म होना उसके राजपद के लिए खतरा था। **उसके साथ सारा यरूशलेम** घबरा गया। जिस नगर को यह सन्देश बड़े आनन्द से ग्रहण करना चाहिए था वही नगर एक ऐसे समाचार को सुन कर परेशान हो गया जो उसकी यथास्थिति को गड़बड़ा सकता था, या रोमी शासक की, जो नापसन्द किए जाते थे, अप्रसन्नता का कारण बन सकता था।

2:4–6 हेरोदेस ने यहूदी धार्मिक अगुवों को यह जानने के लिए एकत्रित किया कि **मसीह का जन्म कहां होना चाहिए। महायाजकों** शब्द यहाँ पर महायाजक और उसके पुत्रों (और शायद उसके परिवार के अन्य सदस्यों) के लिए उपयोग किया गया है। मूसा की व्यवस्था के आम जानकारों को **लोगों के . . . शास्त्रियों** कहा गया है। वे व्यवस्था को सम्भाले हुए थे और उसकी शिक्षा देते थे तथा यहूदी सभाओं (सिनहेड्रिन) में न्यायधीशों की भूमिका पूरी करते थे। इन महायाजकों ने तुरन्त ही मीका 5:2 को उद्धरित किया जिसमें इस राजा के जन्मस्थान की पहचान **यहूदिया के बैतलहम** के रूप में की गई थी। मीका की पुस्तक की भविष्यद्वाणी में इस

स्थान को ''बैतलहम एप्राता'' कहा गया है। चूंकि पलस्तीन में बेतलहम नाम के एक से अधिक नगर हैं, यह बेतलहम यहूदा की गोत्रिय सीमा के भीतर के एप्राता जिला के एक नगर के रूप में पहचाना गया।

2:7,8 हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर जानना चाहा कि तारा सबसे पहले किस समय दिखाई दिया। इस तरह से गुप्त रूप से पूछताछ करना उसके निष्ठुर अभिप्राय को प्रगट करता है: यदि वह उसी बच्चे को ढूंढ़ न सका तो उसे इस जानकारी की आवश्यकता पड़ेगी। अपने वास्तविक अभिप्राय को छिपाने के उद्देश्य से उसने ज्योतिषियों को उनकी खोज में आगे जाने दिया और उनसे निवेदन किया कि यदि वे उस बालक को ढूंढ़ पाने में सफल होते हैं तो उसे खबर करें।

2:9 जब ज्योतिषी आगे बढ़ गए तब **जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था** फिर से उन्हें दिखाई दिया। इससे यह पता चलता है कि तारा पूर्व से सारे रास्ते तक उनकी अगुवाई करता हुआ नहीं आया था। परन्तु अब यह उस घर तक उनकी अगुवाई अवश्य कर रहा है **जहाँ बालक था।**

2:10 उस तारे को देखकर ज्योतिषियों के **अतिआनन्दित** होने का विशेष उल्लेख किया गया है। ये अन्यजाति लोग यत्न से मसीह को ढूंढ़ रहे थे; हेरोदेस ने उसे मार डालने की योजना बनाई थी; महायाजक और शास्त्री उदासीन थे; यरूशलेम के लोग घबरा गए थे। इन प्रकार की भावनाएं इस बात का लक्षण थीं कि मसीह का स्वागत किन किन तरीकों से होगा।

2:11 जब ज्योतिषी घर के भीतर गए तब उन्होंने **उस बालक को उसकी माता मरियम** के साथ देखा। उन्होंने **मुँह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया**, और उसे **सोना**, **लोबान**, और **गन्धरस** की भेटें चढ़ाईं। ध्यान दें कि उन्होंने उस बालक को उसकी माता के साथ देखा। सामान्यत: पहले माता का, और फिर माता के बाद उसके बच्चे का उल्लेख किया जाता है, परन्तु यह बच्चा अद्वितीय है और उसे प्रथम स्थान देना आवश्यक है (13, 14, 20, 21 पदों को भी देखें)। ज्योतिषियों ने यीशु को प्रणाम किया, मरियम या यूसुफ को *नहीं*। (इस स्थल में यूसुफ का उल्लेख तक नहीं किया गया है; शीघ्र ही वह इस सुसमाचार से ही लुप्त हो जाएगा)। सिर्फ यीशु ही हमारी स्तुति और आराधना के योग्य है, मरियम या यूसुफ नहीं।

वे जिन भेंटों को लेकर आए उनके बहुत बड़े अर्थ हैं: **सोना** ईश्वरत्व और महिमा का प्रतीक है; यह उसके ईश्वरीय व्यक्तित्व की चमकदार सिद्धता को दर्शाता है। **लोबान** एक मलहम या सुगन्धित द्रव्य है; यह पापरहित सिद्धता के जीवन की सुगन्ध को दर्शाता है। **गन्धरस** एक कड़वा पौधा है; यह उस दु:ख की भविष्यद्वाणी कर रहा है जिसे संसार के पापों को अपने ऊपर लेते समय प्रभु उठाने वाला था। अन्यजातियों के द्वारा भेंटें लाया जाना यशायाह 60:6 की भाषा को स्मरण दिलाता है। यशायाह ने यह पहले से ही बता दिया था कि अन्यजाति लोग मसीह के पास भेंट लेकर आएंगे, परन्तु उसने सिर्फ सोना और लोबान का उल्लेख किया था: ''सब लोग आकर सोना और लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का गुणानुवाद आनन्द से सुनाएंगे।'' यहाँ पर गन्धरस का उल्लेख क्यों नहीं किया गया था? क्योंकि यशायाह मसीह के दूसरे आगमन के विषय में भविष्यद्वाणी कर रहा है – जब मसीह अपनी सामर्थ और बड़ी महिमा में होकर आएगा। गन्धरस का उल्लेख इसलिए नहीं किया गया है क्योंकि यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन के समय दु:ख नहीं उठाएगा। परन्तु मत्ती में गन्धरस का उल्लेख शामिल किया गया है क्योंकि यहाँ पर उसके पहले आगमन पर जोर दिया जा रहा है। मत्ती में हम मसीह के दु:ख के विषय में देखते हैं; यशायाह के इस स्थल में, हम उस महिमा के विषय में देखते हैं जो इस दु:ख के बाद आने वाली थी।

2:12 ज्योतिषियों को ईश्वरीय **स्वप्न में** यह चेतावनी दी गई कि वे **हेरोदेस** के पास वापस न जाएं, और आज्ञापालन करते हुए वे दूसरे मार्ग से अपने अपने घरों को लौट गए। कोई भी व्यक्ति जिसकी मुलाकात सच्चे दिल से मसीह यीशु के साथ होती है, वह दोबारा अपने पुराने मार्ग से वापस नहीं जाता। मसीह के साथ सच्ची मुलाकात सारे जीवन को पूरी तरह से बदल देती है।

ब. यूसुफ, मरियम, और यीशु मिस्र को भाग जाते हैं (2:13–15)

2:13, 14 नवजात अवस्था से ही मृत्यु हमारे प्रभु के पीछे पड़ी थी। यह बात स्पष्ट है कि उसने मरने के लिए ही जन्म लिया था, परन्तु उसकी मृत्यु ठहराए हुए समय

पर ही होने वाली थी। जो कोई, परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतीत करता है वह तब तक नहीं मरेगा जब तक उसका काम पूरा नहीं होता। **प्रभु के स्वर्गदूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर** अपने परिवार के साथ **मिस्र देश को भाग** जाने के लिए कहा। हेरोदेस उसे ढूंढ़ कर मार डालने के अपने अभियान की शुरूआत करने के लिए बिल्कुल तैयार था। हेरोदेस के कोप के कारण यह परिवार शरणार्थी बन गया। हम यह नहीं जानते कि वे कितने दिनों तक वहाँ ठहरे रहे, परन्तु हेरोदेस की मृत्यु के साथ ही उनके देश लौटने का रास्ता साफ हो गया।

2:15 इस प्रकार से पुराना नियम की एक अन्य भविष्यद्वाणी को नया अर्थ पहना दिया गया। परमेश्वर ने होशे **भविष्यद्वक्ता के द्वारा** कहा था: ''**मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया**'' (होशे 11:1)। होशे ने अपने मूल सन्दर्भ में यह बात निर्गमन के समय मिस्र से इस्राएल के छुटकारे के विषय में कही थी। परन्तु इस कथन के दो अर्थ हो सकते हैं – मसीह का इतिहास इस्राएल के इतिहास के काफी सामानान्तर रहेगा। यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह के मिस्र से इस्राएल लौटने पर उसके जीवन में पूरी हुई।

जब प्रभु धार्मिकता का राज्य करने के लिए लौटेगा, तब मिस्र भी हजार वर्ष के राज्य की आशीषों का भागीदार होगा (यशा. 19:21–25; सप. 3:9, 10; भजन 68:31)। इस्राएल के इस परम्परागत शत्रु पर इतनी दया क्यों की जानी चाहिए? क्या यह हमारे प्रभु यीशु मसीह को आश्रय देने के लिए ईश्वरीय कृतज्ञता है?

स. हेरोदेस बेतलहम के बच्चों का नरसंहार करता है (2:16–18)

2:16 जब ज्योतिषी लोग वापस नहीं लौटे, तो **हेरोदेस** समझ गया कि बालक राजा को खोज निकालने के अपने षड्यंत्र में वह स्वयं छला गया है। बिना सोचे समझे अत्यंत रोष में आकर, उसने **बैतलहम और उसके आसपास के सब लड़कों को जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला**। मारे गए बच्चों की संख्या के विषय में अलग अलग लोगों द्वारा अलग अलग अनुमान लगाए गए हैं; एक लेखक का मानना है कि छब्बीस बच्चों को मरवा डाला गया। ऐसा नहीं लगता कि सैकड़ों बच्चों को मरवाया गया हो।

2:17, 18 बच्चों को मारे जाने के बाद हुआ **विलाप . . . यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता** के वचनों की पूर्णता थी:

> यहोवा यह भी कहता है:
> ''सुन रामा नगर में विलाप और बिलक बिलक कर रोने
> का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने लड़कों के लिए
> रो रही है: और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं
> होती, क्योंकि वे जाते रहे''
> (यिर्म.31:15)।

इस भविष्यद्वाणी में **राहेल** इस्राएल जाति का प्रतिनिधित्व करती है। जाति के शोक को राहेल के शोक का नाम दिया गया है, जिसे **रामा** (बैतलहम के पास, जहाँ नरसंहार हुआ था) में मिट्टी दी गई थी। जब शोकित माता– पिता उसकी कब्र से होकर जाते थे, तो उसे उन के साथ **विलाप** करते चित्रित किया गया है। अपने छोटे प्रतिद्वंदी को समाप्त करने के प्रयास में हेरोदेस को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ, बल्कि उसका नाम महापाप के इतिहास में निरादर पूर्ण ढंग से दर्ज हो गया।

द. यूसुफ, मरियम, और यीशु नासरत में बस जाते हैं (2:19–23)

हेरोदेस की मृत्यु के बाद, **प्रभु के दूत** ने यूसुफ को आश्वस्त किया कि अब उनका वापस लौटना सुरक्षित है। किन्तु, जब वह **इस्राएल के देश** पहुँचा तो उसने सुना कि हेरोदेस का पुत्र **अरखिलाउस** अपने पिता के स्थान पर **यहूदिया** का राजा बन गया है। यूसुफ इस क्षेत्र में जाने का इच्छुक नहीं था, इसलिए जब, **स्वप्न में चितौनी पाकर** उसका भय सही सिद्ध हुआ, वह उत्तर की ओर **गलील देश** को गया और **नासरत** में बस गया।

इस अध्याय में चौथी बार मत्ती हमें यह स्मरण दिलाता है कि भविष्यद्वाणी पूरी हुई। वह किसी भी भविष्यद्वक्ता का नाम लेकर उल्लेख नहीं करता, परन्तु कहता है कि भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से ही यह बता दिया था कि मसीहा **नासरी कहलाएगा**। पुराना नियम का कोई भी पद यह बात सीधे सीधे नहीं कहता। अनेक विद्वानों का मानना है कि मत्ती का संकेत यशायाह 11:1 की ओर है: ''तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और

उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी।'' जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद ''डाली'' किया गया है वह शब्द *नट्ज़र* है, परन्तु इसके अनुवाद से इसका सम्बन्ध थोड़ा दूर है। एक अधिक बेहतर स्पष्टीकरण यह होगा कि ''नासरी'' वह कहलाता है जो नासरत में रहता है, इस नगर को दूसरे स्थानों के लोग तुच्छ दृष्टि से देखते थे। नतनएल एक मुहावरे के माध्यम से इस बात को व्यक्त करता है, ''क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?'' (यूहन्ना 1:46)। इस ''अमहत्वपूर्ण'' नगर पर थोप दिया गया यह ''तिरस्कार'' इसके निवासियों पर भी लागू होता था। इसलिए जब पद 23 में कहा गया कि **वह नासरी कहलाएगा**, तो इसका अर्थ है कि उसे तुच्छ जाना जाएगा। यद्यपि हम ऐसी किसी भविष्यद्वाणी को नहीं जानते कि यीशु ''नासरी'' कहलाएगा, परन्तु हमें एक भविष्यद्वाणी मिलती है जिसमें उसे ''तुच्छ . . . और मनुष्य का त्यागा हुआ'' कहा गया है। एक अन्य भविष्यद्वाणी में कहा गया है कि वह एक कीड़ा होगा मनुष्य नहीं, और लोगों में उसकी नामधराई और अपमान होगा (भजन 22:6)। अत: यद्यपि भविष्यद्वाक्ताओं ने हूबहू शब्दों को उपयोग नहीं किया, परन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अनेक भविष्यद्वाणियों का भाव यही था।

यह बहुत ही अनोखी बात है कि जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर पृथ्वी पर आया, तो उसे एक तुच्छ उपनाम दिया गया। जो उसके पीछे चलते हैं, उनका यह सौभाग्य है कि वे उसके इस तिरस्कार के भागीदार बनें (इब्रा. 13:13)।

III. मसीह की सेवकाई के लिए तैयारी और उसकी सेवा का आरम्भ (3–4 अध्यायों में)

अ. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मार्ग तैयार करता है (3:1–12)

अध्याय 2 और 3 के बीच में लगभग 28 या 29 साल का अन्तर है, इस बीच क्या हुआ इसका उल्लेख मत्ती नहीं करता। इस समय के दौरान, यीशु नासरत में था, और उसके लिए जो कार्य निर्धारित किया गया था उसकी वह तैयारी कर रहा था। इन वर्षों में उसने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया, तौभी परमेश्वर उससे प्रसन्न था (मत्ती 3:17)। इस अध्याय के साथ ही हम उसकी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में पहुँच जाते हैं।

3:1, 2 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपने मौसेरे भाई यीशु से छ: महीने बड़ा था (लूका 1:26, 36)। उसने इस्राएल के राजा के अग्रदूत की भूमिका निभाने के लिए इतिहास के मंच पर कदम रखा। वह **यहूदिया के जंगल में** रहता था – यह एक मरूभूमि थी जो यरूशलेम से यरदन तक फैली हुई थी। यूहन्ना का सन्देश यह था, ''**मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है!**'' राजा शीघ्र ही प्रगट होने वाला था, परन्तु वह ऐसे लोगों के जीवन में राज्य नहीं कर सकता या नहीं करेगा जो अपने पापों में पड़े रहना पसन्द करते हैं। उन्हें अपनी दिशा बदलनी होगी, अपने पापों का अंगीकार कर उन्हें छोड़ना होगा। परमेश्वर उन्हें अंधकार के राज्य से बाहर निकल कर **स्वर्ग** के **राज्य** में प्रवेश करने के लिए बुला रहा था।

स्वर्ग का राज्य

पद 2 में हम पहली बार ''स्वर्ग का राज्य'' का उल्लेख पाते हैं, यह वाक्यांश इस सुसमाचार में बत्तीस बार आया है। इसलिए कि इस विषय को समझे बिना मत्ती की पुस्तक को समझना किसी के लिए भी सम्भव नहीं है, हम इस वाक्यांश की परिभाषा और वर्णन यहाँ पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वर्ग का राज्य वह क्षेत्र है जहाँ पर परमेश्वर के शासन को स्वीकार किया जाता है। ''स्वर्ग'' शब्द यहाँ पर परमेश्वर के लिए उपयोग में लाया गया है। दानिय्येल 4:25 में यह बात दर्शायी गई है जहाँ दानिय्येल कहता है कि मनुष्यों के राज्य में ''परमप्रधान'' ही प्रभुता करता है। अगले पद में वह कहता है कि जगत का प्रभु ''स्वर्ग'' ही है। जहाँ कहीं लोग अपने आप को परमेश्वर के शासन के आधीन कर देते हैं, वहाँ पर स्वर्ग का राज्य पाया जाता है।

स्वर्ग के राज्य के दो पहलू हैं। अपने वृहद अर्थों में, स्वर्ग के राज्य में हर एक वह व्यक्ति शामिल है जो *मुँह से अंगीकार* करता है कि वह परमेश्वर को सर्वोच्च शासक मानता है। संकीर्ण अर्थों में, स्वर्ग के राज्य में सिर्फ वे ही लोग शामिल हैं जिन्होंने सचमुच में *मन फिराया* है। हम अगले पृष्ठ पर दिए गए इस बात को दो संकेन्द्रित (समान केन्द्र वाले) वृतों से चित्रित कर सकते हैं।

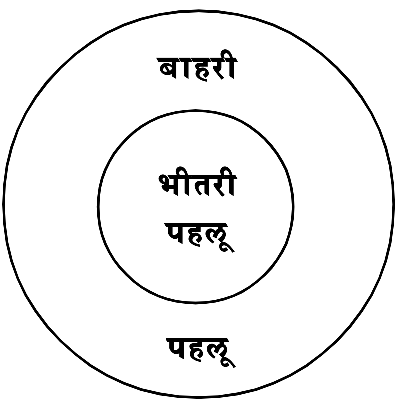

बड़ा वृत्त *मुँह से अंगीकार* किए जाने वाला क्षेत्र है; इसमें वे सब शामिल हैं जो राजा की निष्ठावान प्रजा हैं, और वे भी जो सिर्फ मुँह से कहते हैं कि वे उसके प्रति निष्ठावान हैं। हम इस बात को बीज बोने वाले (मत्ती 13:3-9), राई के दाने (मत्ती 13:31, 32), और खमीर (मत्ती 13:33) के दृष्टान्तों में देखते हैं। छोटे वृत्त में सिर्फ वे ही लोग हैं जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा नया जन्म पाया है। स्वर्ग के राज्य के भीतरी पहलू में सिर्फ वे ही प्रवेश कर सकते हैं जिन्होंने मन फिराया है (मत्ती 18:3)।

बाइबल में स्वर्ग के राज्य के विषय में पाई जाने वाली सारी बातों को एक साथ रखने पर, हम इस धारणा के ऐतिहासिक विकास को पाँच विशिष्ठ चरणों में बांट सकते हैं:

पहला, इस राज्य की *भविष्यद्वाणी* नया नियम में की गई थी। दानिय्येल ने पहले से ही बता दिया था कि परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नाश नहीं होगा, न ही किसी दूसरी जाति के हाथ में जाएगा (दानि. 2:44)। उसने पहले से ही यह देख लिया कि मसीह एक विश्वव्यापी और अनन्त राज्य में शासन करने के लिए आ रहा है (दानि.7:13,14; साथ ही यिर्म. 23:5,6 भी देखें)।

दूसरा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, यीशु मसीह, और उसके चेलों ने इस राज्य का वर्णन करते हुए कहा था कि यह *निकट* या *वर्तमान में* आ चुका है (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7)। मत्ती 12:28 में, यीशु ने कहा, ''. . . यदि मैं परमेश्वर की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।'' लूका 17:21 में, उसने कहा, ''. . . परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है'' या तुममें है। स्वर्ग का राज्य राजा के व्यक्तित्व में उपस्थित था। हम बाद में यह देखेंगे कि ''स्वर्ग का राज्य'' और ''परमेश्वर का राज्य'' एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए गए हैं।

तीसरा, राज्य को एक *अन्तरिम* रूप में वर्णन किया गया है। जब इस्राएली जाति ने उसका तिरिस्कार कर दिया, तो राजा स्वर्ग में लौट गया। यद्यपि राजा अनुपस्थित है, राज्य वर्तमान में उन सभों के हृदयों में उपस्थित है, जो उसे राजा मानते हैं, तथा इस राज्य के नैतिक सिद्धान्त जिनमें पहाड़ी उपदेश भी शामिल है, वर्तमान में भी हम पर लागू होते हैं। राज्य के इस अन्तरिम चरण का वर्णन मत्ती 13 के दृष्टांत में किया गया है।

राज्य के चौंथे चरण को हम *प्रगटीकरण* कह सकते हैं। यह पृथ्वी पर मसीह के राज्य के हजार वर्ष का शासन है जिसे मसीह के रूपान्तरण के समय चित्रित किया गया था जब वह अपने आने वाले राज्य की महिमा में देखा गया था (मत्ती 17:1-8)। यीशु ने इस पक्ष के बारे में मत्ती 8:11 में बताया जब उसने कहा, ''. . .बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।''

इस राज्य का अन्तिम पक्ष *अनन्त* राज्य है। इसका वर्णन 2 पतरस 1:11 में ''हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य'' किया गया है।

''स्वर्ग का राज्य'' वाक्यांश सिर्फ मत्ती के सुसमाचार में पाया गया है, परन्तु ''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश चारों सुसमाचारों में पाया जाता है। इन दोनों के बीच में कोई भी व्यवहारिक अन्तर नहीं है – दोनों के बारे में समान बातें कहीं गई हैं। उदाहरण के लिए, मत्ती 19:23 में यीशु ने कहा कि *स्वर्ग* के राज्य में एक धनवान का प्रवेश करना बहुत कठिन है। मरकुस (10:23) और लूका (18:24) दोनों ने यह उल्लेख किया है कि यीशु ने यह बात *परमेश्वर* के राज्य के विषय में कही है (मत्ती 19:24 भी देखें जहाँ ''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश का उपयोग किया गया है और समान सच्चाई को बताया गया है)।

हमने उल्लेख किया था कि स्वर्ग के राज्य का एक बाहरी पहलू है और एक भीतरी वास्तविकता है। यही बात परमेश्वर के राज्य पर भी लागू होती है, और यह इस बात

का एक और प्रमाण है कि दोनों ही वाक्यांश एक ही अर्थ को प्रगट करते हैं। परमेश्वर के राज्य में भी सच्चा और झूठा दोनों शामिल हैं। इस बात को हम बीज बोनेवाले (लूका 8:4–10), राई के दाने (13:18,19), और खमीर (लूका 13:20, 21) के दृष्टांतों में देख सकते हैं। इस सच्चे और भीतरी वास्तविकता में, सिर्फ वे ही लोग प्रवेश कर सकते हैं जो नए सिरे से जन्में हैं (3:3,5)।

एक अन्तिम बात: स्वर्ग/परमेश्वर का राज्य और कलीसिया एक ही चीज़ नहीं हैं। स्वर्ग/परमेश्वर का राज्य का आरम्भ तब हुआ जब प्रभु यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई आरम्भ की, कलीसिया का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन में हुआ (प्रेरित 2)। स्वर्ग/परमेश्वर का राज्य तब तक जारी रहेगा जब तक पृथ्वी नाश नहीं हो जाएगी; कलीसिया पृथ्वी पर मेघारोहण/*रेप्चर* (कलीसिया का पृथ्वी पर से उठा लिया जाना जब मसीह स्वर्ग से उतरेगा और सभी विश्वासियों को अपने साथ वापस अपने घर ले जाएगा – 1 थिस्स. 4:13–18) तक पृथ्वी में रहेगी। मसीह के दूसरे आगमन पर कलीसिया उसकी दुल्हिन के रूप में राज्य करने के लिए लौटेगी। वर्तमान में जो लोग राज्य में, इसके यथार्थ, आन्तरिक वास्तविकता की परिधि में हैं, वे कलीसिया में भी हैं।

3:3 मत्ती के तीसरे अध्याय की व्याख्या में फिर से वापस लौटते हुए, ध्यान दें कि यूहन्ना द्वारा प्रभु के आगमन की तैयारी करने की सेवकाई किए जाने के बारे में **यशायाह** ने सात सौ वर्ष पूर्व ही भविष्यद्वाणी कर दी थी:

किसी की पुकार (शब्द) सुनाई देती है,
''जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो,
हमारे परमेश्वर के लिए अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो।''
(40:3)।

यह यूहन्ना का **शब्द** था। इस्राएल को आत्मिक अर्थ में **जंगल** कहा गया है – सूखा और निर्जल। यूहन्ना लोगों से आव्हान कर रहा है कि वे मन फिराने के द्वारा, और अपने पापों को त्यागने के द्वारा **प्रभु का मार्ग तैयार** करें, तथा अपने जीवन से उस प्रत्येक चीज़ को दूर करने के द्वारा जो हमें अपने आप को पूरी तरह से उसके आधीन करने के मार्ग में एक बाधा है, **उसकी सड़कें सीधी** करें।

3:4 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के वस्त्र **ऊँट के रोम** के बने हुए थे – आज के समय में मिलने वाले ऊंट के रोंए के मुलायम वस्त्र नहीं, परन्तु घुमक्कडों के द्वारा पहने जाने वाले कठोर खुरदरे वस्त्र। वह **चमड़े का पटुका** भी पहनता था। एलिय्याह की वेशभूषा भी ऐसी ही थी (2 राजा 1:8) और शायद यूहन्ना की ऐसी वेशभूषा विश्वासी यहूदियों को यूहन्ना के मिशन के साथ एलिय्याह के मिशन के बीच की समानता की ओर ध्यान दिलाने में सहायक थी (मला. 4:5; लूका 1:17; मत्ती 11:14; 17:10–12)। यूहन्ना **टिड्डियां और वनमधु** खाया करता था, वह अपनी सेवा के धुन में इतना मग्न था कि वह सिर्फ उतना ही आहार लिया करता था जितना कि जीवन-निर्वाह करने के लिए आवश्यक था, और इस तरह से उसने जीवन की सामान्य सुख-सुविधाओं के प्रति भी अपने आप को सीमित कर लिया था।

अवश्य ही यूहन्ना से मुलाकात करना एक बाध्य कर देने वाला, और एक उत्तेजक अनुभव रहा होगा – एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसी किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करता था जिसके लिए सामान्यत: दूसरे लोग अपना जीवन व्यतीत करते हैं। आत्मिक वास्तविकताओं के प्रति उसकी तल्लीनता से अवश्य ही दूसरे लोगों को यह बोध हुआ होगा कि वे आत्मिक रूप से कितने गरीब हैं। उसका त्याग उसके दिनों की सांसारिकता के मुँह पर एक तमाचा था।

3:5,6 यरूशलेम, सारे यहूदिया, और यरदन पार के क्षेत्र से लोग भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो लिए। कुछ लोगों ने उसके सन्देश को स्वीकार किया और उन्होंने **यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया**, और इसके द्वारा वे यह प्रगट कर रहे थे कि वे उस आने वाले राजा के प्रति पूरी तरह से निष्ठावान रहने के लिए तैयार हैं।

3:7 परन्तु **फरीसियों और सदूकियों** के साथ कहानी कुछ और ही थी। यूहन्ना जानता था कि वे मन के सच्चे नहीं हैं। वह उनके वास्तविक स्वभाव को पहचान गया: **फरीसियों** द्वारा दावा किया जाता था कि वे व्यवस्था के प्रति कड़ाई से समर्पित हैं, परन्तु भीतर से वे भ्रष्ट, मतान्ध और पाखण्डी थे, तथा अपने आप को धर्मी बताते थे; **सदूकियों** का वर्ग समाज का अभिजात वर्ग था तथा वे धार्मिक दृष्टिकोण से सन्देहवादी लोग थे जो शरीर के पुनरूत्थान, स्वर्गदूतों के अस्तित्व, आत्मा की अमरता, और अनन्त दण्ड जैसे बुनियादी सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं करते थे। इसलिए यूहन्ना ने दोनों ही मतों

की निन्दा करते हुए उन्हें **सांप के** ऐसे बच्चे कहा, जो **आनेवाले क्रोध** से बचने की इच्छा करने का दिखावा कर रहे हैं, परन्तु उनकी जीवन में सच्चे मनफिराव का कोई चिन्ह दिखाई नहीं दे रहा है।

3:8 उसने उन्हें **मनफिराव के योग्य फल** लाकर उनकी सच्चाई सिद्ध करने की चुनौती दी। जे. आर. मिलर कहते हैं, ''थोड़े आँसू निकल आना, पछतावे और डर की हल्की तरंग उठ जाना सच्चा मन फिराव नहीं कहलाएगा। जिन पापों से हम मन फिराते हैं हमें उन्हें छोड़ना और पवित्रता के एक नए, और स्वच्छ मार्ग पर चलना आवश्यक है।''

3:9 यहूदियों को यह चेतावनी दी जा रही है कि वे यह समझना छोड़ दें कि **इब्राहीम** की सन्तान होना उनके स्वर्ग में प्रवेश मिल जाने की गारंटी है। अनुग्रह से मिलने वाला उद्धार शारीरिक जन्म के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक नहीं पहुँचता। परमेश्वर यरदन के **पत्थरों** को **इब्राहीम** की सन्तान के रूप में बदल सकता है, यह प्रक्रिया फरीसियों और सदूकियों के मन फिराव से अधिक सरल प्रक्रिया होगी।

3:10 कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है कहने के द्वारा यूहन्ना यह बताना चाह रहा है कि ईश्वरीय न्याय का कार्य अब आरम्भ होने ही वाला है। मसीह का आगमन और उसकी उपस्थिति सारे मनुष्यों के लिए एक परीक्षा होगी। जो लोग फलहीन पाए जाएंगे वे वैसे ही नाश कर दिए जाएंगे जैसे फलहीन **पेड़. . . काटा और आग में झोंका जाता है**।

3:11, 12 7–10 पदों में, यूहन्ना सिर्फ फरीसियों और सदूकियों से अपनी बात कह रहा था (पद 7 देखें), परन्तु अब वह वहां सब सुननेवालों को सम्बोधित करता है, जिनमें सच्चे और झूठे दोनों तरह के लोग शामिल हैं। वह यह स्पष्ट करता है कि उसकी सेवकाई और शीघ्र ही आने वाले मसीह की सेवकाई के बीच में एक महत्वपूर्ण अन्तर है। यूहन्ना **पानी से मनफिराव** का बपतिस्मा देता था: **पानी** सिर्फ संस्कारपूर्ति के लिए था, और इसमें शुद्ध करने की कोई सामर्थ नहीं थी; **मनफिराव**, चाहे सच्चा क्यों न हो, मनुष्य को पूर्ण उद्धार नहीं दिला सकता। यूहन्ना अपनी इस सेवकाई को सिर्फ आंशिक और एक तैयारी बताता है। मसीह पूरी तरह से यूहन्ना के व्यक्तित्व पर हावी हो जाएगा। वह उस **से शक्तिशाली** होगा, वह उस से अधिक योग्य होगा, उसके कार्य का विस्तार अधिक होगा, क्योंकि वह **पवित्र आत्मा और आग** से बपतिस्मा देगा।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा **आग** के बपतिस्मा से अलग है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आशीष का बपतिस्मा है जबकि **आग** का बपतिस्मा न्याय किए जाने का बपतिस्मा है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन दिया गया, जबकि आग का बपतिस्मा अभी दिया जाना शेष है। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का लाभ प्रभु यीशु मसीह में सारे सच्चे विश्वासियों को प्राप्त होता है। आग का बपतिस्मा अविश्वासियों की नियति है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उन इस्राएलियों के लिए होगा जिनका बपतिस्मा भीतरी मनफिराव का बाहरी चिन्ह था, आग का बपतिस्मा उन फरीसियों और सदूकियों के लिए, और उन सब लोगों के लिए होगा जिन्होंने सच्चे मनफिराव को कोई प्रमाण नहीं दर्शाया।

कुछ लोगों का मानना है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग का बपतिस्मा एक ही है, अर्थात्, क्या आग का बपतिस्मा आग की उन जीभों की ओर संकेत नहीं कर रहा है जो पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के दिए जाने के समय प्रगट हुईं थीं? पद 12 के प्रकाश में, जिसमें आग को दण्ड के समकक्ष रखा गया है, इस प्रश्न का उत्तर नहीं में होगा।

आग का बपतिस्मा दिए जाने का उल्लेख करने के तुरन्त बाद, यूहन्ना न्याय/दण्ड के विषय में कहता है। प्रभु को एक **सूप** लिए हुए चित्रित किया गया है कि वह अन्न को वायु में पटके। **गेहूँ** (सच्चे विश्वासी) सीधे भूमि पर गिरते हैं और **खत्ते** में ले जाए जाते हैं। **भूसी** (अविश्वासी) को वायु थोड़ी दूर तक उड़ा कर ले जाती है और फिर उसे एकत्रित कर **उस आग में जो बुझने की नहीं** जला दिया जाता है। पद 12 में आग का अर्थ दण्ड से है, और इसलिए कि इस पद में पद 11 को स्पष्ट किया गया है, यह निष्कर्ष तर्कसंगत है कि आग का बपतिस्मा दण्ड का बपतिस्मा है।

ब. यीशु को यूहन्ना बपतिस्मा देता है (3:13–17)

3:13 यूहन्ना से **बपतिस्मा लेने** के लिए प्रभु यीशु ने **गलील से** लेकर निचले **यरदन** तक लगभग साठ मील

की यात्रा की। इससे हमें यह पता चलता है कि इस संस्कार को प्रभु ने कितना अधिक महत्व दिया था और साथ ही हमें यह भी पता चलता कि वर्तमान में उसके अनुयायियों द्वारा बपतिस्मा को कितना महत्व दिया जाना चाहिए।

3:14, 15 यूहन्ना ने यह जानकर कि यीशु ने कोई पाप नहीं किया है कि उसे मन फिराना पड़े, उसे बपतिस्मा देने से मना किया। उसके भीतर से निकली यह भावना बिल्कुल सही थी कि यीशु द्वारा यूहन्ना को बपतिस्मा दिया जाना सही क्रम होगा। प्रभु यीशु ने इस बात से इंकार नहीं किया; उसने बपतिस्मा को **धार्मिकता को पूरा** करने के लिए **उचित** बताते हुए सीधे सीधे बपतिस्मा दिये जाने का आग्रह किया। उसे यह उचित जान पड़ा कि बपतिस्मा के द्वारा वह अपनी गिनती इन विश्वासयोग्य इस्राएलियों के साथ करे जो मन फिरा कर बपतिस्मा लेने के लिए आ रहे हैं।

परन्तु यहाँ पर इससे भी अधिक गहरा अर्थ पाया जाता है। बपतिस्मा उसके लिए एक ऐसा संस्कार था जो उस तरीके का सूचक था जिस तरीके से वह मनुष्य के पाप के विरुद्ध परमेश्वर की धार्मिकता की सारी मांगों को पूरी करेगा। उसका डूबना कलवरी पर परमेश्वर के दण्ड के पानी में उसके बपतिस्मा का सूचक था। पानी से उसका बाहर निकलना उसके पुनरूत्थान का सूचक था। मरने, गाड़े जाने, और फिर से जी उठने के द्वारा, वह ईश्वरीय धार्मिकता (न्याय) की मांगों को पूरी करेगा और एक ऐसा न्यायसम्मत आधार प्रदान करेगा जिससे पापियों को निर्दोष करार किया जा सके।

3:16, 17 जैसे ही यीशु **पानी में से** बाहर आया, उसने **परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई** स्वर्ग से उतरते हुए और **अपने ऊपर आते देखा**। जिस तरह से पुराना नियम में व्यक्तियों और वस्तुओं का पवित्र कार्यों के लिए ''अभिषेक के पवित्र तेल'' के द्वारा अभिषेक किया जाता था, ठीक उसी तरह से वह पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक किया हुआ मसीह है।

यह एक पवित्र अवसर था, जब त्रिएकत्व के तीनों सदस्य प्रकट थे। **प्रिय पुत्र** वहां था। पवित्र **आत्मा** वहाँ पर **कबूतर** के रूप में था। पिता की आवाज स्वर्ग से **आकाशवाणी** के रूप में सुनाई दी जो यीशु पर आशीष की घोषणा कर रहा था। यह एक विस्मरणीय घटना थी क्योंकि पिता की आवाज पवित्रशास्त्र का उद्धरण करती हुई सुनाई दी: ''**यह मेरा प्रिय पुत्र है** (भजन 2:7) **जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ** (यशा. 42:1)।'' यह उन तीन अवसरों में से एक था जब पिता ने अपने अद्वितीय पुत्र के प्रति अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए आकाशवाणी की (अन्य दो अवसरों का उल्लेख मत्ती 17:5 और यूहन्ना 2:28 में मिलता है)।

स. शैतान यीशु की परीक्षा लेता है (4:1–11)

4:1 यह बड़ा विचित्र लग सकता है कि यीशु को **आत्मा** परीक्षा में डालने के लिए **ले गया**। पवित्र आत्मा भला परीक्षा की ऐसी स्थिति से सामना क्यों करवाएगा? इसका उत्तर यह है कि वह जिस कार्य को करने के लिए इस संसार में आया था उसके कार्य को करने के लिए आवश्यक नैतिक उपयुक्तता का प्रदर्शन करने के लिए यह परीक्षा आवश्यक थी। प्रथम आदम की मुलाकात अदन की वाटिका में जब उसके शत्रु से हुई तब वह सब कुछ अपने वश में रख पाने में नैतिक रूप से अनुपयुक्त सिद्ध हुआ। यहाँ पर अन्तिम आदम का शैतान से जोरदार संघर्ष हुआ परन्तु अन्तिम आदम साफ बच गया।

''परीक्षा'' या ''परखने'' के लिए यहाँ पर जिस यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है उसके दो अर्थ हो सकते हैं: (1) परखना या सिद्ध करना (यूहन्ना 6:6; 2 कुरि. 13:5; इब्रा. 11:7); (2) बुराई में पड़ने के लिए प्रलोभन देना। पवित्र आत्मा ने यीशु को परखा या उसे सिद्ध प्रमाणित किया। शैतान ने उसे बुराई करने के लिए प्रलोभन देने का प्रयास किया।

हमारे प्रभु की परीक्षा से एक गहरा रहस्य जुड़ा हुआ है। हमारे सामने एक प्रश्न अनिवार्य रूप से आ जाता है, ''क्या वह पाप कर सकता था?'' यदि इसका उत्तर ''नहीं'' में है, तो फिर हमारे सामने एक प्रश्न और आ जाता है, ''यदि वह परीक्षा में गिर नहीं सकता तो फिर यह असली परीक्षा कैसे हो सकती है?'' यदि हमारा उत्तर ''हाँ'' में है, तब हमारे सामने यह प्रश्न आ जाता है कि देहधारी परमेश्वर कैसे पाप कर सकता है।

हमें सबसे पहले यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु मसीह परमेश्वर है और परमेश्वर पाप नहीं कर सकता। यह सत्य है कि वह एक मनुष्य भी था; किन्तु, यदि हम

यह कहते हैं कि वह मनुष्य रूप में पाप कर सकता था और परमेश्वर रूप में नहीं, तो बाईबल में इसका कोई आधार नहीं है। नया नियम के लेखकों ने अनेक स्थलों में निष्पाप मसीह के बारे में लिखा है। पौलुस लिखता है कि वह ''पाप से अज्ञात'' था (2 कुरि. 5:21); पतरस कहता है कि ''न तो उसने पाप किया'' (1 पतरस 2:22); और यूहन्ना कहता है, ''उसके स्वभाव में पाप नहीं'' (1 यहून्ना 3:5)।

हमारे समान, बाहर से यीशु की परीक्षा की जा सकती थी: शैतान उसके पास एक ऐसा सुझाव लेकर आया जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था। परन्तु हमसे भिन्न, वह भीतर से परीक्षा में नहीं पड़ सकता – उसके भीतर कोई भी पापमय अभिलाषा या लालसा उत्पन्न नहीं हो सकती। साथ ही साथ, उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो शैतान के प्रलोभनों के सामने झुक जाए (यूहन्ना 14:30)।

यीशु द्वारा पाप करना सम्भव नहीं होने के बाद भी, यह परीक्षा पूरी तरह से वास्तविक थी। यह सम्भव था कि पाप में गिरने की परीक्षा से उसका सामना हो, परन्तु पाप में गिर जाना नैतिक रूप से उसके लिए असम्भव था। वह सिर्फ वही काम कर सकता था जो काम उसने पिता को करते हुए देखा था (यूहन्ना 5:19), और यह बात स्वीकार करने योग्य नहीं है कि उसने पिता को कभी पाप करते देखा हो। वह अपने अधिकार से कुछ नहीं कर सकता था (यूहन्ना 5:30), और पिता उसे परीक्षा के सामने झुक जाने का अधिकार कभी नहीं देगा।

इस परीक्षा का उद्‌देश्य यह परखना नहीं था कि क्या वह पाप करेगा, परन्तु यह सिद्ध करना था कि अत्याधिक दबाव के सामने भी वह परमेश्वर के वचन का पालन करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता।

यदि मानव रूप में यीशु मसीह के द्वारा पाप करना सम्भव होता, तब हमारे सामने एक और प्रश्न आता है कि वह अब भी स्वर्ग में मानव के रूप में है। क्या वह अब भी पाप कर सकता है? इसका स्पष्ट उत्तर है, नहीं।

4:2, 3 चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद यीशु को **भूख** लगी। (चालीस की संख्या पवित्रशास्त्र में बार बार परखे जाने या परीवीक्षा अवधि के सन्दर्भ में आई है।) इस स्वाभाविक भूख ने **परखनेवाले** को एक बढ़िया अवसर दे दिया जिसमें वह बहुत से लोगों को भ्रष्ट कर सकता है। उसने यीशु को सुझाव दिया कि वह आश्चर्यकर्म करने की अपनी सामर्थ का उपयोग करते हुए मरूस्थल के **पत्थर** को **रोटियां** बना दे। शैतान के आरम्भिक वाक्य ''**यदि तू परमेश्वर का पुत्र है**'' में सन्देह नहीं जताया जा रहा है। वास्तव में इसका अर्थ यह है ''इसलिए कि तू परमेश्वर का पुत्र है।'' शैतान बपतिस्मा के लिए पिता द्वारा कहे गए शब्द की ओर संकेत कर रहा है, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है।'' वह ऐसी यूनानी वाक्य-रचना[2] का उपयोग करता है जिसमें इस वाक्य को सच मान कर कहा गया है, और इस आधार पर वह यीशु से कहता है कि वह अपनी भूख मिटाने के लिए अपनी सामर्थ का उपयोग करे।

अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए शैतान की बात मानकर अपनी ईश्वरीय शक्ति का उपयोग करना परमेश्वर के विरूद्ध सीधी सीधी अनाज्ञाकारिता है। शैतान के इस सुझाव के पीछे हमें उत्पत्ति 3:6 की प्रतिध्वनि सुनाई देती है (''खाने में अच्छा'' या भोजन के रूप में अच्छा)। यूहन्ना इस परीक्षा को ''शरीर की अभिलाषा'' कहता है (1 यूह. 2:16)। हमारे सामने भी यह परीक्षा आती है कि हम अपनी शारीरिक अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए अपना जीवन व्यतीत करें, हम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करने की बजाय आरामदायक रास्ते ढूढ़ते हैं। शैतान हमसे कहता है, ''तुम्हें तो अपना गुजारा करना है ना?''

4:4 यीशु ने परमेश्वर के वचन को उद्धरित करते हुए इस परीक्षा का **उत्तर** दिया। हमारे प्रभु द्वारा रखा गया यह उदाहरण हमें यह सिखाता है कि हमें गुजारा करने के उद्‌देश्य से *नहीं* जीना है, परन्तु हमें परमेश्वर की आज्ञानुसार जीवन जीना *आवश्यक* है! **रोटी** पा लेना ही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य नहीं है। परन्तु **परमेश्वर** के **हर एक वचन** के प्रति आज्ञाकारिता हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए कि पत्थरों को रोटियों में बदलने के लिए यीशु को पिता की ओर से कोई आदेश नहीं मिला था, इसलिए वह अधिकार को अपने हाथ में लेकर अपनी इच्छानुसार, और इस प्रकार से शैतान की इच्छानुसार यह कार्य नहीं करेगा, चाहे उसकी भूख कितनी ही तीव्र क्यों न हो।

4:5, 6 दूसरी परीक्षा से यीशु का सामना यरूशलेम में **मन्दिर के कंगूरे पर** हुआ। **इबलीस** ने यीशु को चुनौती देते हुए कहा कि वह ईश्वर का पुत्र होने का प्रदर्शन करते हुए अपने आप को नीचे **गिरा दे**। एक बार फिर से

आरम्भिक शब्द ''**यदि**'' में सन्देह व्यक्त नहीं किया गया है, जैसा कि भजन 91:11, 12 में परमेश्वर द्वारा मसीह को सुरक्षा देने की प्रतिज्ञा को शैतान के उद्धरण में देखा गया है।

यीशु के सामने यह परीक्षा लाई गई कि वह एक सनसनीखेज करतब (स्टंट) करते हुए यह दिखा दे कि वह मसीह है। इस तरह से वह बिना दु:ख उठाए महिमा को प्राप्त कर सकता था; वह क्रूस की पीड़ा को टालकर भी सिंहासन तक पहुँच सकता था। परन्तु यह कार्य परमेश्वर की इच्छा से बाहर का कार्य था। यूहन्ना इस प्रकार की अपील को ''जीविका का घमण्ड'' कहता है (1 यूहन्ना 2:16)। यह अदन की वाटिका के ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य'' फल के समानुरूप है (उत्प. 3:6), क्योंकि दोनों ही स्थलों में परमेश्वर की इच्छा की अवहेलना कर महिमा पाने का तरीका बताया गया है। यह परीक्षा हमारे सामने भी आती है जब हम उसके दु:खों में सहभागी हुए बिना ही धार्मिक प्रतिष्ठा को पाने की लालसा करते हैं। हम अपने लिए बड़ी बड़ी चीज़ों को पाने का प्रयास करते हैं, और जब हमारे रास्ते में मुश्किलें आती हैं तो हम भाग कर छिप जाते हैं। जब हम परमेश्वर की इच्छा को अनदेखा कर अपने आप को ऊँचा उठाते हैं, तब हम परमेश्वर की परीक्षा करते हैं।

4:7 एक बार फिर से **यीशु** ने पवित्रशास्त्र को उद्धरित करते हुए इस आक्रमण का प्रतिरोध किया: ''**तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर**'' (व्य.वि. 6:16)। परमेश्वर ने मसीह को सुरक्षित बचाए रखने की प्रतिज्ञा की है, परन्तु इस गारंटी की शर्त यह है कि मसीह परमेश्वर की इच्छानुसार जीए। अनाज्ञाकारिता के साथ इस प्रतिज्ञा पर दावा करना परमेश्वर की परीक्षा करने के समान होता। वह समय आएगा जब यीशु मसीह, मसीह के रूप में प्रगट किया जाएगा, परन्तु उससे पहले क्रूस उठाना आवश्यक है। सिंहासन पर बैठने से पहले बलिदान की वेदी पर अपने आप को बलिदान चढ़ाना आवश्यक है। महिमा का मुकुट पहनने से पहले कांटों का मुकुट पहनना आवश्यक है। यीशु मसीह परमेश्वर द्वारा ठहराए गए समय के लिये रूकने को तैयार था और वह परमेश्वर की इच्छा को पूरी करता।

4:8, 9 तीसरी परीक्षा में, **शैतान** यीशु को **एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव** दिखाया। शैतान ने यीशु के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि वह शैतान को **प्रणाम** करेगा तो वह यह सब उसे दे देगा। यद्यपि यह परीक्षा **प्रणाम** करने या आराधना करने से सम्बन्धित है, जो एक आत्मिक अभ्यास है, यह हमारे प्रभु के समाने शैतान के द्वारा लाया गया प्रलोभन था कि वह शैतान की आराधना करने के द्वारा संसार की सत्ता को प्राप्त कर ले। **सारे जगत के राज्य** और उनका वैभव देने के इस प्रस्ताव में ''आँखों की अभिलाषा'' (1 यूह. 2:16) को उकसाने का प्रयास किया गया है।

एक तरह से, संसार का राज्य वर्तमान में शैतान के आधीन है। उसे ''इस संसार का ईश्वर'' कहा गया है (2 कुरि. 4:4), तथा यूहन्ना बताता है कि ''सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है'' (1 यूहन्ना 5:19)। जब यीशु अपने द्वितीय आगमन पर राजाओं के राजा के रूप में प्रगट होगा (प्रका. 19:16), तब ''इस जगत का राज्य'' उसका होगा (प्रका. 11:15)। यीशु मसीह ईश्वरीय समय–सारिणी का उल्लंघन नहीं करेगा, और निश्चय ही वह शैतान की आराधना कभी भी नहीं करेगा!

हमारे लिए इस परीक्षा के दो पहलू हैं: इस सांसारिक महिमा के बदले जो लुप्त हो जाएगी अपने आत्मिक पहिलौठेपन के अधिकार को बेच देना, और सृष्टिकर्ता के स्थान पर सृष्टि की आराधना और सेवा करना।

4:10 प्रभु यीशु ने इस परीक्षा का सामना करते हुए तीसरी बार पुराना नियम का उपयोग किया: ''**तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर**।'' उपासना और सेवा पर सिर्फ परमेश्वर का अधिकार है। शैतान को प्रणाम करना उसे परमेश्वर मानने के तुल्य है।

मत्ती द्वारा प्रस्तुत परीक्षाओं का क्रम लूका (4:1–13) के क्रम से भिन्न है। कुछ लोगों का मानना है कि मत्ती ने परीक्षाओं को उस क्रम से प्रस्तुत किया है जिस क्रम से इस्राएल ने जंगल में परीक्षाओं का सामना किया था (निर्ग. 16; 17; 32)। इस्राएल ने इन विपरीत परिस्थितियों में जिस तरह का प्रत्युत्तर दिया था यीशु की प्रतिक्रियाएं इसके ठीक विपरीत थीं।

4:11 जब यीशु शैतान की परीक्षाओं का सफलतापूर्वक सामना कर चुका, **तब शैतान उसके पास से चला गया**। शैतान लगातार बहती धाराओं में नहीं

परन्तु लहरों में आता है। ''क्योंकि जब शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा खड़ा करेगा'' (यशा. 59:19)। परमेश्वर के परखे हुए पवित्र लोगों के लिए यह क्या ही ढ़ाढ़स की बात है!

यहाँ बताया गया है कि **स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे,** परन्तु इस अलौकिक सेवा के सम्बन्ध में कोई बात विस्तार से नहीं बताई गई है। इसका अर्थ शायद यह है कि उन्होंने उसके लिए भोजन का प्रबन्ध किया जिसे उसने शैतान के सुझाव के अनुसार प्राप्त करने से मना कर दिया था।

यीशु की परीक्षा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो पवित्र आत्मा के नियंत्रण में अपना जीवन बिताते हैं उन पर शैतान आक्रमण कर सकता है, परन्तु जो परमेश्वर के वचन की सहायता से उसका सामना करते हैं, वह उनके सामने बलहीन सिद्ध हो जाता है।

द. यीशु गलील में अपनी सेवकाई आरम्भ करता है (4:12–17)

यीशु ने यहूदिया में लगभग एक वर्ष तक सेवकाई की, जिसका वर्णन मत्ती ने नहीं किया है। इस एक वर्ष की अवधि का वर्णन यूहन्ना 1–4 में किया गया है और यह मत्ती 4:11 और 4:12 के बीच में ठीक बैठता है। परीक्षा के वर्णन के बाद मत्ती सीधे गलील की सेवकाई का वर्णन करता है।

4:12 **जब** यीशु ने **यह सुना कि यूहन्ना** बपतिस्मा देने वाला **पकड़वा दिया गया** है, तो वह समझ गया कि यह मसीह के तिरिस्कार की एक पूर्वसूचना है। राजा के अग्रदूत का तिरिस्कार करने के द्वारा लोग राजा का भी तिरिस्कार कर रहे थे। परन्तु उसने इस डर के कारण उत्तर की ओर **गलील** में पलायन नहीं किया। बल्कि वह तो अब हेरोदेस के राज्य के केन्द्र में जा रहा था – यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को जेल में डलवाया था। अन्यजातियों के गलील में जाने के द्वारा वह इस बात को दर्शा रहा था कि यहूदियों द्वारा उसे तिरिस्कार किए जाने का परिणाम यह होगा कि सुसमाचार अब यहूदियों से बाहर जाकर अन्यजातियों के बीच में पहुँचेगा।

4:13 यीशु उस समय तक **नासरत** में ही रहा जब तक लोगों ने उसे अन्यजातियों के लिए उद्धार का प्रचार करने के कारण मार डालने का प्रयास नहीं किया था (लूका 4:16–30 देखें)। उसके बाद वह गलील की झील के पास **कफरनहूम** को चला गया, यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें मूल रूप से **जबूलून और नप्ताली** का गोत्र बसा हुआ था। इस समय से, कफरनहूम उसका मुख्यालय बन गया।

4:14–16 यीशु द्वारा गलील को चले जाना **यशायाह** 9:1, 2 की भविष्यद्वाणी थी। **गलील** में रहने वाले अनभिज्ञ, अन्ध–विश्वासी **अन्यजातियों** ने एक **बड़ी ज्योति** देखी – अर्थात्, मसीह को, जो संसार की **ज्योति** है।

4:17 उसके बाद से **यीशु** ने उस सुसमाचार का प्रचार करने की जिम्मेदारी ले ली जिसका प्रचार यूहन्ना ने किया था:''**मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।**''

इ. यीशु चार मछुआरों को अपना चेला बनाने के लिए बुलाता है (4:18, 19)

4:18, 19 वास्तव में यह दूसरी बार है जब यीशु ने **पतरस** और **अन्द्रिआस** को बुलाया। यूहन्ना 1:35–42 में उन्हें उद्धार देने के लिए बुलाया गया था; यहाँ पर उन्हें सेवा के लिए बुलाया जा रहा है। उद्धार देने के लिए उन्हें यहूदिया में बुलाया गया था; सेवा के लिए अब उन्हें गलील में बुलाया जा रहा है। पतरस और अन्द्रिआस **मछवे** थे, परन्तु यीशु ने उन्हें **मनुष्यों के पकड़नेवाले** बनाने के लिए बुलाया। मसीह के **पीछे** चलना उनकी जिम्मेदारी थी। मसीह की जिम्मेदारी थी कि वह उन्हें **मनुष्यों को पकड़नेवाले** सफल मछुवे बनाए। मसीह के पीछे चलना सिर्फ भौतिक रूप से नजदीक रहकर पीछे पीछे चलने तक सीमित नहीं था। इसमें यीशु के गुणों का अनुसरण करना भी शामिल था। वे क्या थे, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह था, कि उन्होंने क्या कहा या क्या किया। पतरस और अन्द्रिआस के समान, हमें इस परीक्षा से बचना है कि हम वाकपटुता, व्यक्तित्व, या चतुराईपूर्ण तर्कों को सच्ची आत्मिकता का स्थान न दें। मसीह का अनुसरण करने में, एक चेला उस स्थान पर जाना सीखता है जहाँ मछलियां तैर रही हों, वह सही चारे का उपयोग करना सीखता है, असुविधाओं और तकलीफों को झेलना सीखता है, धीरज धरना, और आँखों के सामने से दूर रहना सीखता है।

4:20 पतरस और अन्द्रिआस ने बुलाहट को सुना

और उन्होंने **तुरन्त** प्रत्युत्तर दिया। सच्चे विश्वास के साथ, उन्होंने अपने **जालों** को छोड़ दिया। सच्चे समर्पण और भक्ति के साथ, वे यीशु के **पीछे** हो लिए।

4:21, 22 उसके बाद यीशु ने **याकूब** और **यूहन्ना** को बुलाया। वे भी तुरन्त ही यीशु के चेले बन गए। उन्होंने न सिर्फ अपनी जीविका के साधन को, परन्तु **अपने पिता** को भी छोड़ दिया, उन्होंने यीशु को सारे सांसारिक रिश्तों से अधिक प्राथमिकता दी।

यीशु मसीह की बुलाहट का सकारात्मक प्रत्युत्तर देने के द्वारा, ये मछुवारे संसार में सुसमाचार प्रचार करने के कार्य के प्रमुख माध्यम बन गए। यदि उन्होंने अपने जालों को छोड़ा नहीं होता, तो हम उन के बारे में कुछ भी जान नहीं पाते। मसीह को अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करने से सब कुछ बदल जाता है।

फ. यीशु एक बड़ी भीड़ को चंगा करते हैं (4:23–25)

प्रभु यीशु की सेवकाई के तीन पहलू थे: वह यहूदी **सभाओं** (*सिनेगाग*) में परमेश्वर के वचन का प्रचार करता था; वह परमेश्वर के **राज्य** के **सुसमाचार** का प्रचार करता था; और वह बीमारों को चंगा करता था। आश्चर्यकर्म के द्वारा चंगा करने का एक उद्देश्य अपने व्यक्तित्व व सेवकाई की सच्चाई को प्रमाणित करना था (इब्रा. 2:3, 4)। 5–7 अध्यायों में शिक्षा देने की उसकी सेवकाई का वर्णन है जबकि 8–9 अध्यायों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन है।

4:23 पद 23 में **सुसमाचार** शब्द का नया नियम में सबसे पहली बार प्रयोग किया गया है। इस शब्द का अर्थ है, ''उद्धार का शुभ–सन्देश।'' संसार के इतिहास में हर युग के लिए सिर्फ एक ही सुसमाचार है, उद्धार का सिर्फ एक ही मार्ग है।

सुसमाचार

सुसमाचार परमेश्वर के अनुग्रह से उत्पन्न हुआ है (इफि. 2:8)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर पापी लोगों को सेंतमेंत में अनन्त जीवन देता है जो इसे पाने के योग्य नहीं हैं।

इस सुसमाचार का आधार क्रूस पर मसीह द्वारा पूरा किया गया कार्य है (1 कुरि. 15:1–4)। हमारे उद्धारकर्ता ने ईश्वरीय न्याय की सारी मांगों को पूरा किया, और परमेश्वर के लिए मार्ग प्रशस्त किया कि वह पूरी तरह से अपनी निष्पक्षता को कायम रखते हुए विश्वास करने वाले पापियों को निर्दोष करार दे। पुराना नियम के विश्वासियों ने मसीह के कार्य के द्वारा उद्धार पाया, यद्यपि उस समय तक मसीह का कार्य पूरा नहीं हुआ था। वे शायद मसीह के बारे में अधिक नहीं जानते थे, परन्तु परमेश्वर जानता था – उसने मसीह के कार्य के मूल्य को उसके लेखे में पहले ही लिख दिया। एक प्रकार से, वे ''उधार'' में बचाए गए थे। हमने भी मसीह के कार्य के द्वारा उद्धार पाया है, परन्तु हमारे मामले में, यह कार्य पूर्ण किया जा चुका था।

सुसमाचार सिर्फ विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाता है (इफि. 2:8)। पुराना नियम में, लोगों को उद्धार परमेश्वर द्वारा कही गई बातों पर विश्वास लाने से होता था। इस युग में, लोगों का उद्धार यीशु को उद्धार का एकमात्र मार्ग बताने वाली परमेश्वर की गवाही पर विश्वास लाने से होता है (1 यूह. 5:9, 11, 12)। सुसमाचार का अन्तिम लक्ष्य स्वर्ग है। हमारे पास अनन्तकाल तक स्वर्ग में रहने की आशा है (2 कुरि. 5:6, 10), ठीक जैसा पुराना नियम के पवित्र लोगों के पास थी (इब्रा. 11:10, 14–16)।

यद्यपि हमारे पास सिर्फ एक ही सुसमाचार है, परन्तु विभिन्न समयों में सुसमाचार की विभिन्न विशेषताएं रही हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार और परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार के बीच अलग अलग बातों पर जोर दिया गया है। परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार कहता है, ''मन फिराओ, और मसीह को ग्रहण करो; तब तुम उसके राज्य में प्रवेश करोगे जब यह पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा।'' अनुग्रह का सुसमाचार यह कहता है कि ''मन फिराओ और मसीह को ग्रहण करो; तब तुम उससे मिलने के लिए उठा लिए जाओगे और सदा उसके साथ रहोगे।'' बुनियादी रूप से दोनों ही सुसमाचार एक ही हैं – विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से उद्धार – परन्तु ये दर्शाते हैं कि अलग अलग समयों या कालखण्डों (*डिस्पेन्सेशन)* के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार अलग अलग रूप से ये उपयोग में लाए जाते हैं।

जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया, तब वह यहूदियों के राजा के रूप में अपने आगमन की घोषणा करते हुए उसके राज्य में प्रवेश की

शर्तों को समझा रहा था। उसके आश्चर्यकर्म परमेश्वर के राज्य के हितकारी (स्वास्थ प्रदान करने वाले) स्वभाव को दर्शाते हैं।[3]

4:24, 25 उसका यश . . . सारे सूरिया में (इस्राएल के उत्तर और उत्तरपूर्व का क्षेत्र) फैल गया। **सब बीमारों** ने, और उन सब ने **जिनमें दुष्टात्माएं थीं**, और जो असमर्थ थे, चंगाई देने वाले उसके स्पर्श का अनुभव किया। **गलील**, **दिकापुलिस** (उत्तरपूर्व पलस्तीन में दस अन्यजातीय नगरों का एक संघ), **यरूशलेम**, **यहूदिया**, और **यरदन** के पूर्वी क्षेत्र से भीड़ की भीड़ उसके पीछे चली आती थी। जैसे कि बी. बी. वारफील्ड ने लिखा है: "इस क्षेत्र से कुछ समय के लिए मृत्यु और बीमारियाँ लगभग समाप्त कर दी गई होंगी।" इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि गलील से आ रही खबरों को सुन कर जनता अचम्भित थी!

IV. राज्य का संविधान (5–7 अध्यायों में)

पहाड़ी उपदेश को नया नियम के आरम्भ में रखना कोई संयोग मात्र नहीं है। इसे यह स्थान दिया जाना उसके महत्व को दर्शाता है। इस उपदेश में राजा ने अपनी प्रजा से अपेक्षित चरित्र और आचरण का सार दिया है।

यह उपदेश उद्धार की योजना का प्रस्तुतीकरण *नहीं* है; न ही इसकी शिक्षाएं उद्धार नहीं पाए हुए लोगों के लिए हैं। यह उपदेश चेलों को सम्बोधित करते हुए दिया गया था (5:1, 2), और इसे उस संविधान, या नियमों और सिद्धान्तों की व्यवस्था के रूप में दिया गया था, जिनका पालन राजा के शासन में उसकी प्रजा द्वारा किया जाना था। यह सब समय की सारी प्रजा के लिए था – भूलकाल, वर्तमानकाल, और भविष्यकाल – जो मसीह को राजा के रूप में स्वीकार करती है। जब मसीह इस पृथ्वी पर था, तब यह सीधे सीधे उसके चेलों पर लागू होती थी। अब, जबकि हमारा प्रभु स्वर्ग में राज्य कर रहा है, यह उन सभों पर लागू होती है जो उसे अपने जीवन का राजा बनाते हैं। अन्त में, यह क्लेशकाल के दौरान और पृथ्वी पर मसीह के राज्य के दौरान के अनुयायियों के लिए आचरण संहिता होगी।

इस उपदेश में यहूदी रस का विशेष प्रयोग किया गया है, जैसा कि 5:22 में महासभा *(सेनहेड्रीन)*, वेदी (5:23, 24), और यरूशलेम (5:35) के उल्लेख से हम जान सकते हैं। तौभी यह कहना गलत होगा कि इसकी शिक्षा भूतकाल और भविष्यकाल के सिर्फ विश्वासी इस्राएलियों पर लागू होती है; यह शिक्षा हर समय के उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जो यीशु मसीह को अपने राजा के रूप में स्वीकार करता है।

अ. धन्य वचन (5:1–12)

5:1, 2 यह उपदेश धन्य वचन, या आशीष के साथ आरम्भ होता है। ये धन्य वचन मसीह के राज्य के आदर्श नागरिकों को सामने लाते हैं। इन में जिन मूल्यों का वर्णन और अनुमोदन किया गया है वे सांसारिक मूल्यों के विपरीत हैं। ए.डब्ल्यू. टोज़र इसका वर्णन इस तरह से करते हैं, "मानवजाति की दशा का एक ठीक ठीक विवरण तैयार किया जा सकता है, हम पहाड़ी उपदेश को लें, उसे उल्टा कर दें, और 'मानवजाति की स्थिति हूबहू हमारे सामने आ जाएगी।'"

5:3 पहली आशीष की घोषणा **मन के दीन** लोगों पर की गई है। यहाँ पर किसी की दीन–हीन हालत के बारे में नहीं, परन्तु एक व्यक्ति के द्वारा अपनी इच्छा से दीन बनने और अनुशासित रहने के बारे में कहा जा रहा है। **मन के दीन** वे हैं जो अपने आप को परमेश्वर के बिना असहाय मान लेते हैं और हर बात के लिए परमेश्वर की सर्वशक्तिमत्ता पर निर्भर रहते हैं। उन्हें अपनी आत्मिक आवश्यकता का बोध होता है और वे इसे प्रभु की ओर से पूरी होने देते हैं। **स्वर्ग का राज्य**, जहाँ आत्मनिर्भरता एक सद्‌गुण नहीं माना जाता और आत्मप्रशंसा एक अवगुण है, मन के दीन लोगों का है।

5:4 जो शोक करते हैं वे **धन्य** (आशीषित) हैं; उन्हें शान्ति आराम देने वाला दिन आने वाला है। यह सांसारिक उतार–चढ़ाव के कारण विलाप करने वालों के बारे में नहीं कह रहा है। यह ऐसा शोक है जिसका अनुभव एक व्यक्ति प्रभु यीशु के साथ अपनी संगति के कारण करता है। यह संसार के जख्मों और पापों के प्रति यीशु की भावनाओं के साथ एक सहभागिता है। इसलिए इसमें न सिर्फ अपने पापों के कारण दु:खी होना शामिल है, परन्तु संसार की भयंकर दशा, संसार के द्वारा सच्चे उद्धारकर्ता का तिरिस्कार किये जाने, और उसकी दया का इंकार

करने वालों के दुखद अन्त के प्रति दु:ख भी शामिल है। इस प्रकार का शोक करने वाले लोग आने वाले दिन में **शान्ति पाएंगे** जब परमेश्वर ''उन की आंखों से आंसू पोंछ डालेगा'' (प्रका. 21:4)। विश्वासी लोग सिर्फ इसी जीवन में सारा शोक कर लेते हैं; अविश्वासी लोगों के लिए, वर्तमान का शोक अनन्त विलाप का एक पहिले से लिया जाने वाला हल्का स्वाद ही है।

5:5 आशीष की तीसरी घोषणा **नम्र** लोगों पर की गई है: **वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे**। हो सकता है कि स्वभाव से ये लोग चंचल, तुनकमिजाज, या रूखे हों। परन्तु दृढ़ होकर मसीह के आत्मा को अपने में लेने के द्वारा वे **नम्र** बन जाते हैं (मत्ती 11:29 से तु.की.)। नम्रता का अर्थ होता है अपने स्थान को दीनतापूर्वक पहचान लेना। **नम्र** व्यक्ति अपने हित के मामले में सज्जन और शान्त बना रहता हो, यद्यपि वह परमेश्वर के हित या दूसरों का पक्ष रखने के मामले में एक सिंह की नाई आक्रमक हो सकता है।

नम्र लोग *अब* पृथ्वी के अधिकारी नहीं होते; बल्कि वे दुर्व्यवहार झेलते और अपने पद से बेदखल कर दिए जाते हैं। परन्तु जब मसीह, राजा के रूप में एक हजार वर्ष तक शान्ति और समृद्धि का शासन करेगा, तब नम्र लोग **पृथ्वी के अधिकारी** होंगे।

5:6 अगली आशीष की घोषणा ऐसे लोगों पर की गई है **जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं:** उन्हें तृप्त किए जाने की प्रतिज्ञा की गई है। ऐसे लोग अपने स्वयं के जीवन में **धर्म के** (निष्पक्ष और न्यायसम्मत) काम चाहते हैं; वे समाज में ईमानदारी, खराई, और न्याय देखने की तीव्र लालसा करते हैं; वे कलीसिया के व्यवहार में पवित्रता देखना चाहते हैं। उन लोगों के समान जिन के बारे में गेमलीएल ब्राडफोर्ड ने लिखा है कि उनमें ''एक ऐसी प्यास है जिसे पृथ्वी की धारा तृप्त नहीं कर सकती, ऐसी भूख है जिसे मसीह ही तृप्त कर सकता है, अन्यथा वे मर जाएंगे।'' ऐसे लोग मसीह के आने वाले राज्य में भरपूरी से तृप्त किए जाएंगे: **वे तृप्त किए जाएंगे** क्योंकि धर्म राज्य करेगा और भ्रष्टाचार का स्थान उच्च नैतिक मूल्य ले लेंगे।

5:7 हमारे प्रभु के राज्य में, **दयावन्त** लोग **धन्य** हैं **क्योंकि उन पर दया की जाएगी**। **दयावन्त** होने का अर्थ होता है तरस खा कर लोगों की सहायता करने में सक्रिय रहना। एक अर्थ में, इसका तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति को दण्ड देने से क्षमा कर देना जिसने दण्ड दिए जाने योग्य कृत्य किया है। व्यापक अर्थों में इसका अर्थ ऐसे लोगों की सहायता करना है जो अपनी सहायता कर पाने में सक्षम नहीं है। परमेश्वर ने हमें उस दण्ड से बचाने के द्वारा जो हमें हमारे पापों के कारण भोगना था, और मसीह के उद्धार दिलानेवाले कार्य के द्वारा हम पर भलाई करने के द्वारा हम पर अपनी दया दिखाई है। जब हम दूसरों पर तरस खाते हैं तब हम ऐसा करने के द्वारा परमेश्वर का अनुसरण करते हैं।

जो दयावन्त हैं, उन पर **दया की जाएगी**। यहाँ पर यीशु उस दया की बात नहीं कर रहा है जिसे परमेश्वर एक विश्वासी पापी पर उसे उद्धार देने के रूप में दिखाता है; *उस प्रकार* की दया एक व्यक्ति के दयावन्त होने पर निर्भर नहीं करती – वह दया सेंतमेंत, नि:शर्त भेंट है। बल्कि प्रभु उस **दया** की बात कर रहा है जिसकी आवश्यकता प्रतिदिन के मसीही जीवन के लिए होती है और उस **दया** की बात कर रहा है जो एक व्यक्ति पर उस आने वाले दिन में दिखाई जाएगी जब उसके कार्यों का हिसाब किया जाएगा (1 कुरि. 3:12–15)। यदि एक व्यक्ति दया नहीं दिखाएगा, उस व्यक्ति पर दया नहीं की जाएगी; अर्थात्, इस अनुपात से एक व्यक्ति को मिलने वाला प्रतिफल घटता जाएगा।

5:8 जो मन के शुद्ध हैं उन्हें यह आश्वासन दिया गया है कि वे **परमेश्वर को देखेंगे**। शुद्ध मन का व्यक्ति वह होता है जिसकी मंशा में कोई बात छिपी नहीं होती, जिसके विचार पवित्र होते हैं, जिसका विवेक स्वच्छ होता है। **वे परमेश्वर को देखेंगे** वाक्यांश को विभिन्न तरीकों से समझा जा सकता है। पहला, **मन के दीन . . . परमेश्वर को** वर्तमान में उसके वचन और उसके आत्मा की सहभागिता करने के द्वारा **देखेंगे**। दूसरा, कभी–कभी वे परमेश्वर की उपस्थिति का अलौकिक प्रकटीकरण या दर्शन देखेंगे। तीसरा, **वे परमेश्वर को** यीशु मसीह के व्यक्तित्व में **देखेंगे** जब वह दुबारा आएगा। चौथा, **वे** अन्तकाल में **परमेश्वर को देखेंगे**।

5:9 जो **मेल करवाने वाले** हैं उन पर आशीष की घोषणा की गई है। **वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे**। ध्यान दें कि प्रभु ऐसे लोगों की बात नहीं कर रहा है जो शान्तचित्त या शान्तिप्रिय लोग हैं। वह उन लोगों के बारे में

बात कर रहा है जो शान्ति बनाए रखने के कार्य में सक्रिय रहते हैं। मनुष्य का यह स्वभाव होता है कि वह लड़ाई झगड़ा होते देख चुपचाप दूर खड़ा हो कर देखता रहता है। जिस व्यक्ति में ईश्वरीय स्वभाव होता है वह **मेल** करवाने के लिए सकारात्मक कदम उठाता है, चाहे उसे इसके लिए दुर्व्यवहार झेलना या गाली सुननी पड़े।

मेल करवाने वालों को **परमेश्वर के पुत्र** कहा गया है। परन्तु हमें इस बात को ध्यान में रखना है कि वे मेल करवाने के द्वारा परमेश्वर के पुत्र नहीं बनते – सिर्फ यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने पर ही एक व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र बनता है (यूह. 1:12)। मेल करवाने के द्वारा विश्वासी लोग अपने आप को **परमेश्वर के पुत्र** के रूप में प्रगट करते हैं, और एक दिन परमेश्वर उन्हें ऐसे लोगों के रूप में स्वीकार करेगा जो उसके परिवार के गुणों को प्रगट करते हैं।

5:10 अगला धन्य वचन ऐसे लोगों के विषय में है जो **सताए जाते हैं**, अपनी किसी गलती के कारण नहीं, परन्तु **धर्म** (बेहतर अनुवाद – धार्मिकता) **के कारण**। **स्वर्ग के राज्य** की प्रतिज्ञा उन लोगों के लिए की गई है जो सही कार्य करने के कारण सताए जाते हैं। उनकी खराई संसार के अधर्म का विरोध करती है और इसके कारण उन्हें बैरभाव का सामना करना पड़ता है। लोग धार्मिकता के जीवन से बैर रखते हैं क्योंकि यह उनकी अपनी अधार्मिकता की पोल खोल देता है।

5:11 अन्तिम धन्य वचन पिछले धन्य वचन का दोहराव लगता है। परन्तु, यहाँ पर एक भिन्नता है। पिछले पद में, सताए जाने का कारण धर्म (धार्मिकता) था; यहाँ पर सताए जाने का **कारण** मसीह है। प्रभु जानता था कि उसके चेलों को सताया जाएगा क्योंकि वे उससे जुड़े हुए हैं और उसके प्रति निष्ठावान हैं। इतिहास ने इस बात की पुष्टि कर दी है: आरम्भ से ही संसार ने यीशु के अनुयायियों को सताया, जेल में डाला, और यहाँ तक कि उन्हें जान से भी मार डाला गया है।

5:12 यीशु मसीह के कारण सताया जाना एक ऐसा सुअवसर और विशेष सौभाग्य है जिससे आनन्द उत्पन्न होना चाहिए। क्लेश में **भविष्यद्वक्ताओं** के समान सताए जाने वाले लोगों के लिए एक **बड़ा फल** है। पुराना नियम के परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता लोग सताव के बाद भी परमेश्वर के प्रति निष्ठावान बने रहे। वे सभी जो इन भविष्यद्वक्ताओं के निष्ठावान साहस का अनुसरण करेंगे, वर्तमान में उनके आनन्द और भविष्य में उनकी महिमा में सहभागी बनेंगे।

इन धन्य वचनों में मसीह के राज्य के आदर्श नागरिक का चित्रण किया गया है। *धर्म* (पद 6), *मेल* (पद 9), और *आनन्द* (पद 12) पर जिस प्रकार से जोर दिया गया है, उस पर ध्यान दें। यही स्थल पौलुस के ध्यान में रहा होगा जब उसने यह लिखा: ‘‘क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है’’ (रोमि. 14:17)।

ब. विश्वासी लोग नमक और ज्योति हैं (5:13–16)

5:13 यीशु ने अपने चेलों को **नमक** के समान बताया है। दिन प्रतिदिन के जीवन में जो भूमिका नमक की है वैसी ही भूमिका संसार के लिए चेलों की भी हो: नमक से भोजन को नमकीन किया जाता है; यह सड़ाहट फैलने से बचाव करता है; यह प्यास जगाता है; यह स्वाद को उभारता है। इसी प्रकार से उसके चेले भी मानव समाज में स्वाद लाते हैं, समाज को भ्रष्टाचार से बचाते हैं, और अन्य लोगों में उस धार्मिकता के प्रति लालसा जगाते हैं जिसका वर्णन पिछले पदों में किया गया है।

यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो फिर किस चीज़ से उसके स्वाद को दोबारा लौटाया जा सकता है। वास्तविक और प्राकृतिक स्वाद को फिर से लौटा लाने का कोई उपाय नहीं है। एक बार यह अपना स्वाद खो दे, तो फिर नमक **किसी काम का नहीं**। यह रास्ते में फेंक दिया जाता है। अलबर्ट बार्नेस द्वारा इस स्थल पर की गई टिप्पणी हमारी समझ पर प्रकाश डालती है:

> हमारे (अमेरीका) देश में उपयोग किया जाने वाला नमक एक रासायनिक मिश्रण है – और यदि *इसका नमकीनपन* चला जाए, या इसका *स्वाद* चला जाए, तो फिर इसमें कुछ भी नहीं रह जाएगा। किन्तु पूर्वी (एशियाई) देशों में उपयोग किया जाने वाला नमक शुद्ध नहीं होता था और इसमें सब्जी और पृथ्वी के पदार्थ घुले मिले रहते थे; तो इसका नमकीनपन तो चला जाता था परन्तु फिर भी काफी मात्रा में नमक (बिना नमकीनपन वाला नमक) रह जाता था। यह किसी काम का नहीं सिवाय इसके कि जैसा कहा गया है इसे रास्ते पर वैसा ही डाल दिया जाता जिस प्रकार से हम कंकड़ बजरी डालते हैं।[4]

चेले की एक बहुत बड़ी भूमिका है – वह धन्य वचनों और शेष पहाड़ी उपदेश में दी गई शिष्यता की शर्तों के अनुसार जीवन व्यतीत करते हुए **पृथ्वी** का **नमक** बने। यदि वह इस आत्मिक वास्तविकता को प्रगट करने में असफल हो जाता है, जो लोग उसकी गवाही को अपने पैरों तले रौंद देंगे। एक असमर्पित विश्वासी को संसार का सिर्फ तिरस्कार ही मिलेगा।

5:14 प्रभु यीशु, मसीहियों को **जगत की ज्योति** भी कहता है। उसने अपने आप को भी ''जगत की ज्योति'' कहा है (यूहन्ना 8:12; 12:35, 36, 46)। इन दोनों वाक्यों के बीच यह सम्बन्ध है कि यीशु मसीह ज्योति का स्त्रोत है; मसीह लोग उस प्रकाश को परिलक्षित करते हैं। उनकी भूमिका यह है कि वे लोग उसके लिए उसकी ज्योति में वैसे ही चमकें जिस प्रकार से सूर्य की ज्योति से चन्द्रमा चमकता है।

एक मसीही एक ऐसे **नगर** के समान है **जो . . . पहाड़ पर बसा हुआ है:** यह अपने चारों ओर के स्थान से अधिक ऊँचाई पर होता है और यह अन्धकार में चमकता है। जो मसीह की शिक्षा के अनुसार अपना जीवन बिताता है वह **छिप नहीं सकता।**

5:15, 16 लोग **दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं** रखते। परन्तु वे इसे **दीवट** (स्टैंड) **पर** रखते हैं, तब इससे **घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है**। प्रभु ने यह नहीं चाहा कि उसकी शिक्षा की ज्योति को अपने तक ही सीमित कर दे, परन्तु इसे हमें दूसरो तक बांटना है। हमें अपना **उजियाला** इस प्रकार से चमकने देना है कि लोग हमारे **भले कामों को देख कर हमारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें**। यहाँ पर मसीही चरित्र की सेवकाई पर जोर दिया गया है। यीशु मसीह जिन जीवनों में दिखाई देता है उन जीवनों की मनोहरता शब्दों की मनोहरता से अधिक प्रभावशाली होती है।

स. मसीह व्यवस्था को पूरी करता है (5:17–20)

5:17, 18 अधिकांश क्रान्तिकारी अगुवे अतीत के साथ सारे सम्बन्धों से अलग हो जाते हैं और वर्तमान में विद्यमान पारम्परिक व्यवस्था का खण्डन करते हैं। परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने ऐसा नहीं किया। उसने मूसा की व्यवस्था का समर्थन किया और इस बात पर जोर दिया कि इसे पूरा करना आवश्यक है। यीशु मसीह **व्यवस्था** को समाप्त करने के लिए नहीं आया था, परन्तु इसे **पूरा करने** आया। उसने स्पष्ट रूप से इस बात पर जोर दिया कि जब तक व्यवस्था पूर्ण रूप से पूरी नहीं हो जाती, इसकी **एक मात्रा या एक बिन्दु** भी **नहीं टलेगा। मात्रा** का मूल इब्रानी शब्द *योद* है जो इब्रानी वर्णमाला का सबसे छोटा वर्ण है; **बिन्दु** के लिए जो मूल इब्रानी शब्द उपयोग में लाया गया है वह एक छोटा चिन्ह या संकेत है जो दो अक्षरों के बीच अन्तर करता है, वैसे ही जैसे ''ब'' में बीच वाली लकीर ''व'' से ''ब'' के अन्तर को स्पष्ट करती है। यीशु मसीह मानते थे कि बाइबल (मूल वचन) परमेश्वर की प्रेरणा से अक्षरश: लिखी गई है, यहाँ तक कि इसकी छोटी से छोटी और मामूली से मामूली लगने वाली चीज़ें भी। पवित्रशास्त्र में कुछ भी, यहाँ तक कि एक बिन्दु भी बिना महत्व के नहीं है।

इस बात को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभु यीशु ने यह कभी *नहीं* कहा कि व्यवस्था *कभी नहीं* टलेगी। उसने कहा कि यह तब तक नहीं टलेगी **जब तक** यह पूर्णत: **पूरी** नहीं होती। इस अन्तर का वर्तमान विश्वासियों के लिए एक बड़ा महत्व है, और इसलिए कि एक विश्वासी और व्यवस्था के बीच का सम्बन्ध काफी जटिल है हम इस विषय पर बाइबल की शिक्षा का सार देखेंगे।

विश्वासी के साथ व्यवस्था का सम्बन्ध

व्यवस्था परमेश्वर द्वारा मूसा के माध्यम से इस्राएली जाति को दिए गए संविधान का तंत्र है। व्यवस्था का पूरा भाग निर्गमन 20–31, लैव्यव्यवस्था, और व्यवस्थाविवरण में पाया जाता है, यद्यपि इसका सार दस आज्ञाओं में पाया जाता है।

व्यवस्था को उद्धार पाने के एक माध्यम के रूप में नहीं दिया गया था (प्रेरित 13:39; रोमियों. 3:20अ; गला. 2:16, 21; 3:11); व्यवस्था को इस प्रकार से तैयार किया गया था कि यह लोगों को उनके पाप दिखाए (रोमि. 3:20ब; 5:20; 7:7; 1 कुरि. 15:56; गला. 3:19) और उसके बाद उन्हें परमेश्वर की ओर अनुग्रहकारी उद्धार पाने हेतु जाने के लिए प्रेरित करे। यह व्यवस्था

इस्राएली जाति को दी गई थी, यद्यपि इसमें पाए जाने वाले कुछ नैतिक सिद्धान्त हर समय के लोगों पर लागू होते हैं (रोमि. 2:14, 15)। परमेश्वर ने इस्राएल को मानवजाति के एक नमूना *(सैंपल)* के रूप में लेते हुए उसे व्यवस्था के आधीन परखा, और इस्राएल के दोष ने संसार के दोष की पुष्टि कर दी (रोमि. 3:19)।

व्यवस्था के साथ मृत्यु दण्ड भी जुड़ा हुआ है (गला. 3:10); और एक आज्ञा को तोड़ देने से सारी व्यवस्था के विरूद्ध दोषी माना जाता था (याकूब 2:10)। इसलिए कि लोगों ने व्यवस्था को तोड़ दिया, वे मृत्यु के शाप के आधीन आ गए। परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता की यह मांग/अनिवार्यता थी कि यह दण्ड चुकाया जाए। इसी कारण से प्रभु यीशु इस संसार में आया: अपनी मृत्यु के द्वारा इस दण्ड को चुकाने के लिए। वह व्यवस्था को तोड़ने वाले दोषी के स्थान पर मर गया, यद्यपि वह स्वयं पापरहित था। उसने व्यवस्था को अलग हटा नहीं दिया; बल्कि अपने जीवन और अपनी मृत्यु के द्वारा व्यवस्था की सख्त शर्तों को पूरी करके उसकी सारी मांगों को उसने पूरा किया। इसलिए, सुसमाचार व्यवस्था को उठा कर अलग फेंक नहीं देती; यह व्यवस्था को सम्भालती है और यह दर्शाती है कि मसीह के छुटकारा प्रदान करने वाले कार्य के द्वारा किस प्रकार से व्यवस्था की मांगें पूरी की गईं।

इसलिए, जो व्यक्ति प्रभु यीशु पर भरोसा रखता है वह अब व्यवस्था के आधीन नहीं रहा; वह अनुग्रह के आधीन है (रोमि. 6:14)। वह मसीह के कार्य के कारण व्यवस्था के लिए मर चुका है। व्यवस्था में जिस दण्ड की मांग की गई थी वह सिर्फ एक ही बार चुकाया जाना था; चूंकि मसीह ने इस दण्ड को चुका दिया, विश्वासी को अब यह दण्ड चुकाने की आवश्यकता नहीं है। यह वह अर्थ है जिसमें व्यवस्था मसीही के लिए लोप हो चुकी है (2 कुरि. 3:7–11)। मसीह जब तक नहीं आया था तब तक व्यवस्था एक शिक्षक की भूमिका में थी, परन्तु उद्धार के बाद, इस शिक्षक की अब कोई आवश्यकता नहीं है (गला. 3:24–25)।

तौभी, यद्यपि एक मसीही व्यवस्था के आधीन नहीं है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यवस्थाहीन या अराजक है। वह व्यवस्था से भी अधिक मजबूत जंजीरों से बन्धा हुआ है क्योंकि वह अब मसीह की व्यवस्था के आधीन है (1 कुरि. 9:21)। अब उसका आचरण, किसी दण्ड के भय से नहीं, परन्तु अपने उद्धारकर्ता को प्रसन्न करने की स्नेही लालसा के कारण बदलता है। मसीह अब उसके जीवन का नियम बन गया है (यूहन्ना 13:15; 15:12; इफि. 5:1, 2; 1 यूहन्ना 2:6; 3:16)।

जब हम विश्वासी के साथ व्यवस्था के सम्बन्ध के विषय पर चर्चा करते हैं तब एक प्रश्न सामान्यत: हमारे सामने आता है, ''क्या मुझे दस आज्ञाओं का पालन करना चाहिए?'' इसका उत्तर यह है कि व्यवस्था में कुछ ऐसे सिद्धान्त पाए जाते हैं जो सदा तक लागू होते हैं। चोरी करना, लालच करना, या हत्या करना गलत है और यह सिद्धान्त हमेशा बना रहेगा। दस आज्ञाओं में से नौ आज्ञाएं नया नियम में दोहराई गईं हैं, परन्तु इसमें एक महत्वपूर्ण अन्तर है – इन्हें व्यवस्था के रूप में नहीं दिया गया है (जिसके साथ दण्ड जुड़ा हो), परन्तु ये परमेश्वर के लोगों को धार्मिकता में निपुण करने के प्रशिक्षण के रूप में दी गईं हैं (2 तीमु. 3:16ब)। दस आज्ञाओं में से जिस आज्ञा को दोहराया नहीं गया है वह है सब्त के दिन से सम्बन्धित आज्ञा: मसीहियों को सब्त का पालन करने की आज्ञा *कभी भी नहीं* दी गई है (सब्त सप्ताह का सातवां दिन अर्थात्, शनिवार के दिन को कहा जाता है)।

उद्धार न पाए हुए लोगों के लिए व्यवस्था की सेवकाई का अन्त नहीं हुआ है: ''पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है'' (1 तीमु. 1:8)।

जिस धार्मिकता की मांग व्यवस्था द्वारा की जाती है वह ऐसे लोगों में पूरी होती है ''जो शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं .... (और वे) आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं'' (रोमि. 8:4)। वास्तव में, पहाड़ी उपदेश में हमारे प्रभु यीशु द्वारा दी गई शिक्षा व्यवस्था द्वारा तय किए गए आदर्श से ऊँचा आदर्श तय करती है। उदाहरण के लिए, व्यवस्था में कहा गया है, ''तू हत्या न करना''; परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, ''किसी पर क्रोध भी मत करना।'' इस तरह से पहाड़ी उपदेश में न सिर्फ व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को सम्भाला गया है परन्तु विस्तार से इसका गहरा अर्थ भी समझाया गया है।

5:19 पहाड़ी उपदेश में, हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने (लोगों द्वारा) परमेश्वर की आज्ञाओं को शिथिल बनाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति को पहले से ही जान लिया था।

इसलिए कि ये आज्ञाएं अलौकिक प्रवृत्ति की हैं, लोग इसके अर्थ से अलौकिकता को हटा कर समझाने लगते थे। परन्तु **जो कोई** व्यवस्था के **एक** भाग को भी तोड़ता, और दूसरे लोगों को भी ;ऐसा ही करने के लिए कहता है, **वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा।** आश्चर्य की बात यह है कि ऐसे लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने दे दिया जाएगा – परन्तु हमें यह ध्यान रखना है कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए मसीह पर *विश्वास* ही पर्याप्त माध्यम है। परमेश्वर के राज्य में एक व्यक्ति का स्थान संसार में रहते हुए उसकी आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता के आधार पर निर्धारित किया जाता है। जो व्यक्ति परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था का पालन करता है – वह व्यक्ति **स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।**

5:20 स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए, हमारी **धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता** से (जो ऐसी धार्मिक रीति–विधियों का पालन करके संन्तुष्ट थे जिससे उन्हें एक बाहरी, विधिसम्मत शुद्धता ही मिलती थी, परन्तु इससे उनका मन कभी भी परिवर्तित नहीं होता था) बढ़कर होना आवश्यक है। प्रभु यीशु ने इस सच्चाई पर जोर देने के लिए अतिश्योक्ति का प्रयोग किया कि बाहरी धार्मिकता आन्तरिक सच्चाई के बिना स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं दिला सकती। परमेश्वर सिर्फ उस धार्मिकता को मान्य करेगा जिसे वह स्वयं उन लोगों को देता है जो उसके पुत्र को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं (2 कुरि. 5:21)। नि:सन्देह, जहाँ मसीह पर सच्चा विश्वास होता है, वहाँ ऐसी व्यवहारिक धार्मिकता भी उत्पन्न होती है जिसके बारे में प्रभु यीशु मसीह ने पहाड़ी उपदेश के शेष भाग में बताया है।

द. यीशु ने क्रोध करने के विरूद्ध सचेत किया (5:21–26)

5:21 प्रभु यीशु मसीह के समय के यहूदी लोग यह जानते थे कि परमेश्वर ने हत्या करने से मना किया है और हत्या करने वाला व्यक्ति दण्ड के योग्य होता है। यह बात व्यवस्था के दिए जाने से पहले भी लागू होती थी (उत्प. 9:6) और इसके बाद यह नियम व्यवस्था में भी शामिल कर लिया गया (निर्ग. 20:13; व्य. वि. 5:17)। अपने इन शब्दों के साथ, ''**परन्तु मैं तुम से कहता हूँ,**'' प्रभु यीशु ने हत्या से सम्बन्धित नियम में एक संशोधन किया। अब एक व्यक्ति कभी यह कह कर गर्व नहीं कर सकता कि उसने हत्या नहीं की। अब यीशु का कहना है, ''मेरे राज्य में, तुम्हारे विचारों में हत्या करने के सम्बन्ध में विचार भी नहीं आना चाहिए।'' वह हत्या के कृत्य के स्त्रोत को सामने लाता है और तीन प्रकार के अधर्मी क्रोध के विरूद्ध सचेत करता है।

5:22 क्रोध का पहला मामला एक ऐसे व्यक्ति का है **जो . . . अपने भाई पर क्रोध करे।**[5] जो इस अपराध का दोषी होगा वह **दण्ड के योग्य होता** – अर्थात्, उसे कचहरी में ले जाया जा सकता है। अधिकांश लोग अपने क्रोध करने के पीछे कोई न कोई ऐसा कारण बताने लगते हैं जो उनके अनुसार उनके क्रोध का उचित कारण है, परन्तु क्रोध करना तभी उचित है जब परमेश्वर की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो या किसी दूसरे व्यक्ति के साथ अन्याय किया जा रहा हो। क्रोध करना कभी भी सही नहीं माना जा सकता यदि यह हमारी व्यक्तिगत हानि का बदला लेने की भावना से प्रेरित हो।

अपने भाई का अपमान करना इससे भी भंयकर पाप है। प्रभु यीशु मसीह के दिनों में, लोग *'राका'* (**निकम्मा**) शब्द का उपयोग एक गाली या एक अपमानसूचक शब्द के रूप में किया करते थे। जो लोग इस अपशब्द का प्रयोग करते थे उन्हें **महासभा में दण्ड** के योग्य ठहराया गया है, अर्थात्, *सेनहेड्रिन* में,जो उस देश की सबसे बड़ी कचहरी है, उन पर मुकद्दमा चलाया जाएगा।

किसी को **मूर्ख** कहना तीसरे प्रकार का अधार्मिक क्रोध है जिसकी निन्दा यीशु मसीह कर रहा है। यहाँ पर **मूर्ख** शब्द का अर्थ सिर्फ मन्दमति होने तक सीमित नहीं है। इसका आशय एक ऐसे नैतिक मूर्ख से है जो मर जाने के लायक है और इस शब्द का प्रयोग करने का अर्थ यह दुष्कामना करना है कि काश,वह मरा हुआ होता। हमने अनेक बार लोगों को यह कहते हुए शाप देते सुना होगा, ''भगवान तुझे नरक भेजे!'' वह परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि वह उस व्यक्ति को नरक में डाले। प्रभु यीशु कहता है जो इस प्रकार से किसी को शाप देगा वह **नरक की आग के दण्ड के योग्य** होगा। उन दिनों में जब अपराधियों को मृत्यु दण्ड देते हुए वध किया जाता था तो उनके शरीर को यरूशलेम से बाहर जलते हुए कूड़े के ढेर में फेंक दिया जाता था, इस स्थान को हिन्नोम की तराई

या गेहन्ना कहा जाता था। यह नरक की उस आग का एक चित्रण था जो कभी नहीं बुझती।

हमारे उद्धारकर्ता के वचनों की कठोरता को दूसरे अर्थों में नहीं लिया जा सकता। वह यहाँ पर यह सिखा रहा है कि क्रोध में ही हत्या का बीज पाया जाता है, अपशब्दों में हत्या की भावना पाई जाती है, और शाप के शब्दों में हत्या की दुष्कामना का आशय छिपा हुआ होता है। इन अपराधों की गम्भीरता के क्रम में बढ़ते हुए तीन स्तरों के दण्ड की मांग की गई है: *कचहरी में दण्ड, महासभा में दण्ड,* और *नरक की आग*। परमेश्वर के राज्य में प्रभु यीशु मसीह पापों की गम्भीरता के अनुरूप कठोरता लागू करता है।

5:23, 24 यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को चोट पहुँचाता है, चाहे क्रोध करने के द्वारा या फिर किसी और रीति से, तो उसके द्वारा परमेश्वर के सामने भेंट चढ़ाना व्यर्थ है। परमेश्वर उससे प्रसन्न नहीं होगा। चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को पहले जाकर अपनी गलती को सुधारना आवश्यक है। उसके बाद ही उसकी भेंट स्वीकार की जाएगी।

यद्यपि इन पदों को यहूदी सन्दर्भ में लिखा गया है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान में यह लागू नहीं होता। पौलुस इस शिक्षा को प्रभु-भोज के सन्दर्भ में प्रयोग करता है (1 कुरि. 11 देखें)। परमेश्वर ऐसे किसी भी विश्वासी की भेंट ग्रहण नहीं करता जिसकी किसी के साथ बातचीत बन्द हो।

5:25, 26 यीशु मसीह यहाँ पर एक वादप्रिय और अपने गलती को स्वीकार करने में ढिलाई करने वाली आत्मा के विरूद्ध चेतावनी दे रहा है। दोष लगाने वाले के साथ कचहरी में मुकद्‌दमा लड़ने का जोखिम उठाने की बजाए तुरन्त ही आपसी समाधान निकाल लेना बेहतर है। यदि हम मुकद्‌दमा लड़ते हैं तो हमारी हार निश्चित है। यद्यपि इस दृष्टांत में पात्रों की पहचान को लेकर विद्वानों के अलग अलग मत हैं परन्तु इसमें पाई जाने वाली शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट है: यदि हमने गलती की है, तो इसे स्वीकार करने और सुधारने में फुर्ती करें। यदि हम अपने मार्ग से फिरने की बजाए अपनी जिद पर अड़े रहते हैं तो पाप न सिर्फ हमें पकड़वा देगा और फिर हमें न सिर्फ अपने किए की भरपाई करनी होगी बल्कि अतिरिक्त दण्ड भी चुकाना होगा। कचहरी जाने में हड़बड़ी न करें। यदि हम कचहरी जाएंगे, तो हम कानून की गिरफ्फत में आ जाएंगे, और हमें पाई पाई चुकाना पड़ेगा।

इ. यीशु व्यभिचार की निन्दा करता है (5:27-30)

5:27, 28 मूसा की व्यवस्था में स्पष्ट रूप से व्यभिचार को वर्जित किया गया है (निर्ग. 20:14; व्य. वि. 5:18)। शायद एक व्यक्ति यह कह कर घमण्ड करे कि उसने इस आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं किया है, तौभी उसकी ''आँख में व्यभिचार बसी हुई'' हो (2 पतरस 2:14)। यद्यपि वह बाहरी रूप से एक सम्मानजनक जीवन जी रहा हो परन्तु उसके विचार लगातार अशुद्धता की भूलभुलैया में भटकते हैं। इसलिए यीशु अपने चेलों को यह स्मरण दिलाते हैं कि व्यभिचार के शारीरिक कृत्य से बचे रहना पर्याप्त नहीं है – भीतरी शुद्धता आवश्यक है। व्यवस्था में व्यभिचार का कृत्य करने की मनाही है; प्रभु यीशु ने व्यभिचार की अभिलाषा करने के लिए भी मना किया: **जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका**। इ. स्टेनली जोन्स ने इस पद के अभिप्राय को सही समझते हुए इस प्रकार से लिखा है: ''यदि हम व्यभिचार करते हैं या व्यभिचार करने के बारे में सोचते हैं, तो ऐसा करने के द्वारा हम अपनी यौन इच्छा को संतुष्ट नहीं करते; हम आग बुझाने के लिए आग में तेल डालते हैं।''पाप विचारों से आरम्भ होता है, और यदि हम इन विचारों को बढ़ावा देते हैं, तो अन्तत: उस पाप को कर बैठते हैं।

5:29, 30 अशुद्ध विचारों से रहित जीवन जीने के लिए कड़े आत्म अनुशासन की आवश्यकता है। इस प्रकार से, प्रभु यीशु ने यहाँ यह सिखाया है कि यदि हमारे शरीर को कोई भी अंग हमारे पाप करने का कारण बनता है, तो उस अंग को अपने जीवन काल में ही खो देना बेहतर होगा बजाए इसके कि अनन्तकाल के लिए अपनी आत्मा को खो दें। क्या हमें यीशु के इन शब्दों को शब्दश: लेने की आवश्यकता है? क्या वह सचमुच में हमें अपने शरीर के अंगों को काट कर अलग कर देने के लिए कह रहा है? ये शब्द इस हद तक शब्दश: लागू होते हैं: *यदि आवश्यक हुआ* कि हमें आत्मा के बदले में किसी अंग को खोना पड़े तो हमें खुशी खुशी इस अंग को अपने से अलग कर देना चाहिए। *यह हमारा सौभाग्य है कि इसकी आवश्यकता*

कभी नहीं होगी, क्योंकि पवित्र आत्मा विश्वासी को पवित्र जीवन जीने के लिए सामर्थ प्रदान करता है। किन्तु, यह आवश्यक है कि विश्वासी अपनी ओर से पवित्र आत्मा का सहयोग करे और सख्त अनुशासन बनाए रखे।

फ. यीशु मसीह तलाक की निन्दा करता है (5:31, 32)

5:31 पुराना नियम की व्यवस्था के अन्तर्गत, व्यवस्थाविवरण 24:1–4 के आधार पर तलाक की अनुमति दी गई थी। यह स्थल एक व्यभिचारिणी पत्नी के मामले से सम्बन्धित नहीं है (व्यभिचार का दण्ड मृत्यु था, व्य. वि. 22:22 देखें)। बल्कि व्यवस्थाविवरण 24:1–4 में नापसन्द या ''किसी कमी'' के कारण तालाक दिए जाने के सम्बन्ध में लिखा गया है।

5:32 किन्तु, मसीह के राज्य में, **जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा और किसी कारण छोड़ दे तो वह उससे व्यभिचार करवाता है**। इसका अर्थ यह नहीं हैं वह अपने आप व्यभिचारिणी बन जाती है; यह बात यह मान कर कही गई है कि जीविका का कोई साधन न होने के कारण वह स्त्री किसी दूसरे व्यक्ति के साथ रहने के लिए बाध्य हो जाती है। ऐसा करने के द्वारा वह व्यभिचारिणी हो जाती है। न सिर्फ यह त्यागी हुई स्त्री व्यभिचारिणी कहलाएगी परन्तु **जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है**।

तलाक और पुनर्विवाह का विषय बाइबल के सबसे जटिल विषयों में से एक है। इस सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाले अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया जाना असम्भव है, परन्तु पवित्रशास्त्र में इस सम्बन्ध में पाई जाने वाली बातों को एक साथ रख कर उसका सार निकालना हमारे लिए उपयोगी होगा।

तलाक और पुनर्विवाह

परमेश्वर ने कभी भी मनुष्य के लिए तलाक को नहीं चाहा है। उसने यह आदर्श तय किया है कि एक पुरुष और एक स्त्री तब तक विवाहित बने रहें जब तक उनके मेल को मृत्यु द्वारा तोड़ा नहीं जाता (रोमि. 7:2, 3)। प्रभु यीशु ने सृष्टि के समय परमेश्वर द्वारा ठहराए गए नियम की दोहाई देते हुए यह बात फरीसियों को साफ साफ कह दी (मत्ती 19:4–6)।

परमेश्वर तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:16), अर्थात्, पवित्रशास्त्र की शिक्षा से बाहर जा कर तलाक लेने से। वह सब प्रकार के तलाक से घृणा नहीं करता क्योंकि उसने स्वयं इस्राएल को तलाक देने की बात कही है (यिर्म. 3:8)। इसका कारण यह था कि इस्राएली जाति परमेश्वर को त्याग कर मूर्तिपूजा करने लगी थी। इस्राएल ने विश्वासघात किया था।

मत्ती 5:31, 31 और 19:9 में, यीशु ने यह शिक्षा दी है कि तलाक न दिया जाए जब तक पति–पत्नी में से कोई एक अनैतिक यौन सम्बन्धों को दोषी न हो। मरकुस 10:11, 12 और लूका 16:18 में, यह अपवाद भी हटा दिया गया है।

इन दोनों वर्णनों के अन्तर का कारण शायद इस तरह से समझाया जा सकता है कि न ही मरकुस और न ही लूका ने यीशु के कथन को पूरा पूरा लिखा है। इसलिए, यद्यपि तलाक देना आदर्शों के विरुद्ध है, इसकी अनुमति दी जा सकती है यदि पति–पत्नी में से कोई एक विश्वासघात करता है। प्रभु यीशु ने इस मामले में तलाक देने की छूट दी है, परन्तु वह तलाक देने की *आज्ञा* नहीं देता।

कुछ विद्वानों ने 1 कुरिन्थियों 7:12–16 को ऐसा समझा है कि तलाक देना उचित होगा यदि एक विश्वासी से एक अविश्वासी अलग होता है। पौलुस कहता है कि ''ऐसी दशा में कोई भाई या बहिन बन्धन में नहीं,'' अर्थात्, वह भाई या वह बहन तलाक लेने के लिए स्वतंत्र है। इस टीका पुस्तक के लेखक का यह मानना है कि इस मामले में भी वही छूट दी गई है जो मत्ती 5 और 19 में दी गई है; और वह यह है कि अविश्वासी किसी दूसरे के साथ रहने के लिए अलग हो जाता है। इसलिए, विश्वासी को तलाक देने की अनुमति तभी दी जा सकती है जब उसका जीवनसाथी व्यभिचार करे।

अक्सर ऐसा दावा किया जाता है कि, यद्यपि नया नियम में तलाक की अनुमति दी गई है, पुनर्विवाह के बारे में कोई भी विचार नहीं रखा गया है। किन्तु इस तर्क के आगे प्रश्न चिन्ह लगा है। पुनर्विवाह निर्दोष पक्ष के लिए मना नहीं किया गया है – सिर्फ गलती करने वाले व्यक्ति के लिए यह मना किया गया है। साथ ही, पवित्रशास्त्र के अनुसार तलाक देने का एक प्रमुख उद्देश्य पुनर्विवाह को

अनुमति देना है; अन्यथा, अलगाव होना भी इस उद्देश्य की पूर्ति अच्छे से कर सकता है।

इस विषय पर किसी भी प्रकार की चर्चा करने पर, यह प्रश्न अनिवार्य रूप से हमारे सामने आता है, "उन लोगों का क्या जो उद्धार का अनुभव प्राप्त करने से पहले तलाक ले लेते हैं?" इस बात में कोई भी सन्देह नहीं होना चाहिए कि मन फिराने से पहले अवैध रीति से दिए गए तलाक और पुनर्विवाह किया जाना ऐसे पाप हैं जो पूरी तरह से क्षमा कर दिए गए (उदाहरण के लिए, 1 कुरि. 6:11 देखें जहाँ पौलुस ने व्यभिचार को उन पापों की सूची में शामिल किया था जिनमें कुरिन्थुस के विश्वासी पहले लिप्त थे)। मन फिराने से पहले किए गए पाप विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया के पूर्ण सहभागी बनने के रूकावट नहीं बनते।

ऐसे मसीही जिन्होंने पवित्रशास्त्र की शिक्षा से विपरीत जाकर तलाक लिया है और फिर पुनर्विवाह किया है उनको लेकर एक और कठिन प्रश्न सामने आता है। क्या उन्हें कलीसिया की सहभागिता में वापस लिया जा सकता है? इसका उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि क्या व्यभिचार शारीरिक सम्बन्धों का शुरूआती कृत्य है या फिर यही स्थिति लगातार बनी हुई है। यदि ये लोग व्यभिचार की दशा में बने हुए हैं, तो उन्हें न सिर्फ अपने पापों को अंगीकार करना पड़ेगा परन्तु अपने वर्तमान साथी को भी छोड़ना पड़ेगा। परन्तु परमेश्वर किसी भी समस्या का ऐसा हल नहीं निकालता जिससे और भी बदतर समस्याएं सामने आ जाएं। किसी वैवाहिक फन्दे से बाहर आने के लिए स्त्री या पुरुष को पाप करने को प्रेरित किया जाता है, या स्त्री और बच्चे बेघर या धनहीन हो जाते हैं, तो फिर इलाज बीमारी से भी बदतर है।

इस लेखक का दृष्टिकोण यह है, जिन मसीहियों ने पवित्रशास्त्र की शिक्षा को ध्यान में न रखते हुए तलाक लिया है और फिर पुनर्विवाह किया है वे अपने पाप से सच्चा पश्चाताप कर सकते हैं और फिर से प्रभु और कलीसिया की संगति में आ सकते हैं। तलाक के मामलों में, ऐसा लगता है कि हर मामले एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। इसलिए स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों को प्रत्येक मामले की जाँच करनी चाहिए और परमेश्वर के वचन के अनुसार निर्णय लेना चाहिए। यदि अनुशासनात्मक कार्यवाही करनी पड़े, तो सम्बन्धित व्यक्तियों को प्राचीनों के निर्णय का सम्मान करना चाहिए।

ग. यीशु शपथ खाने की निन्दा करता है (5:33–37)

5:33–36 मूसा की व्यवस्था में परमेश्वर के नाम की **झूठी** शपथ खाने के विरूद्ध अनेक मनाहियां थीं (लैव्य. 19:12; गिनती. 30:2; व्य. वि. 23:21)। परमेश्वर के नाम की शपथ लेने का अर्थ था कि वह हमारा गवाह है कि हम सच बोल रहे हैं। यहूदी लोग परमेश्वर के नाम की झूठी शपथ खाने की अनुचितता से बचने के लिए शपथ खाते समय परमेश्वर के नाम के स्थान पर **स्वर्ग**, **धरती**, **यरूशलेम**, या अपने **सिर** के बालों की शपथ खाया करते थे।

प्रभु यीशु व्यवस्था को इस प्रकार धोखा दिए जाने की निन्दा करते हुए इसे कोरा पाखण्ड बताता है और साधारण बातचीत करते समय किसी प्रकार की शपथ या कसम खाने से मना करता है। यह न सिर्फ पाखण्ड है, बल्कि उसके नाम के लिए अन्य सर्वनामों का उपयोग करते हुए उसके नाम की शपथ खाने से बचने का प्रयास करना भी व्यर्थ है। **स्वर्ग की** शपथ खाने का अर्थ **परमेश्वर** के **सिंहासन** की शपथ खाना है। **धरती की** शपथ खाने का अर्थ **उसके पाँवों की चौकी** की शपथ खाना है। **यरूशलेम** की शपथ खाने का अर्थ उसकी शाही राजधानी की शपथ खाना है। अपने स्वयं के **सिर** की शपथ खाना भी परमेश्वर से सम्बन्धित है क्योंकि वह सारी वस्तुओं का सृष्टिकर्ता है।

5:37 एक मसीही के लिए, शपथ खाना अनावश्यक नहीं है। उसके **हाँ** का अर्थ **हाँ**, और उसके **नहीं** का अर्थ **नहीं** होना चाहिए। अधिक जोर देने वाली भाषा का उपयोग करने का अर्थ होगा कि हम यह स्वीकार कर रहे हैं कि शैतान – **बुराई** – हमारे जीवन पर राज्य करता है। किसी भी परिस्थिति में एक मसीही द्वारा झूठ बोला जाना उचित नहीं है।

इस स्थल में सच को किसी भी तरह से छिपाए जाने या छल करने के लिए मना किया गया है। किन्तु, यह कानून की कचहरी में शपथ खाने से मना नहीं करता। स्वयं प्रभु यीशु ने महायाजक के सामने अपने आप को शपथ के आधीन करते हुए अपनी बात कही थी (मत्ती 26:63 से आगे)। पौलुस ने भी शपथ का उपयोग करते हुए परमेश्वर की दोहाई दी कि वह इस बात का गवाह हो कि वह सच लिख रहा है (2 कुरि. 1:23; गला. 1:20)।

ह. दो मील साथ जाना (5:38–42)

5:38 व्यवस्था में यह कहा गया था, ‘‘**आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत**’’ (निर्ग. 21:24; लैव्य. 24:20; व्य. वि. 19:21)। यह दण्ड देने की आज्ञा और दण्ड पर लगाम लगाने की आज्ञा दोनों थी – दण्ड अपराध से अधिक नहीं दिया जाना चाहिए। किन्तु, पुराना नियम के अनुसार, दण्ड देने का अधिकार सरकार के पास था, किसी व्यक्ति के पास या व्यक्तिगत *नहीं।*

5:39–41 प्रभु यीशु व्यवस्था को पार कर उससे आगे बढ़ गया और पलटा लेने के नियम को पूरी तरह से समाप्त करते हुए धार्मिकता को अधिक ऊँचे स्तर पर ले गया। उसने अपने चेलों को यह शिक्षा दी कि, जहाँ पलटा लेने के लिए व्यवस्था में अनुमति थी, अब अनुग्रह के कारण पलटा न लेना सम्भव हो गया है। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को यह शिक्षा दी कि वे किसी **बुरे** व्यक्ति का प्रतिरोध न करें। यदि उन्हें एक **गाल** पर कोई थप्पड़ मारे, तो वे **उसकी ओर दूसरा** गाल **भी फेर** दें। यदि कोई उनका **कुरता** (भीतरी वस्त्र) ले लें, तो वे उन्हें अपना **दोहर** (एक बाहरी वस्त्र जो रात को ओढ़ने के लिए उपयोग में लाया जाता था) भी दे दें। यदि कोई व्यक्ति उनसे अपना सामान उठवा कर **कोस भर** ले जाना चाहे, तो उन्हें स्वेच्छा से **दो** मील तक उसके साथ जाना चाहिए।

5:42 इस स्थल में प्रभु यीशु द्वारा दी गई अन्तिम आज्ञा वर्तमान समय के लिए काफी अव्यवहारिक लगती है। **जो कोई तुझसे मांगे, उसे दे, और जो तुझसे उधार लेना चाहे, उस से मुँह न मोड़।** भौतिक वस्तुओं और सम्पत्तियों के प्रति हमारे मोह के कारण हम उन वस्तुओं को किसी को भी देना नहीं चाहते जिन्हें हमने कमाया या प्राप्त किया है। किन्तु, यदि हम स्वर्ग के धन को पाने के लिए अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं और सिर्फ आवश्यक भोजन और वस्त्र पाकर सन्तुष्ट रहते हैं, तो हम इन शब्दों को शब्दश: और खुशी खुशी ग्रहण करेंगे। प्रभु यीशु ने यह कथन यह मान कर दिया है कि मांगने वाला व्यक्ति सचमुच आवश्यकता में है। इसलिए कि बहुत से मामलों में यह जान पाना सम्भव नहीं है कि मांगने वाला सचमुच में आवश्यकता में है या नहीं, बेहतर होगा, (जैसा कि किसी ने कहा है) ‘‘कि हम एक मदद मांगने वाले धोखेबाज की भी मदद करें ताकि हम सच्ची आवश्यकता में पड़े किसी व्यक्ति की सहायता करने से वंचित होने के जोखिम में न पड़ें।’’

मानवीय सोच के अनुसार, प्रभु यहाँ पर हमें जिस प्रकार का व्यवहार करने के लिए कह रहा है वह असम्भव है। परन्तु यदि हम एक ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है तभी हम एक त्याग का जीवन व्यतीत कर सकते हैं। अपमान (पद 39), अन्याय (पद 40), और असुविधा (पद 41) के बदले भी हम तभी प्रेम रख सकते हैं जब हम अपने जीवन में अपने उद्धारकर्ता को जीने देते हैं। इसे हम ‘‘दो कोस का सुसमाचार’’ कह सकते हैं।

ई. अपने शत्रुओं से प्रेम करें (5:43–48)

5:43 परमेश्वर के राज्य में धार्मिकता के जिस उच्चतर स्तर की मांग की गई है उसका हमारे प्रभु द्वारा दिया गया अन्तिम उदाहरण शत्रु के साथ हमारे व्यवहार से सम्बन्धित है, यह एक ऐसा विषय है जो पिछले पैराग्राफ से स्वाभाविक रूप से विकसित हो जाता है। व्यवस्था में इस्राएलियों को यह सिखाया गया था कि वे अपने **पड़ोसी** से **प्रेम** रखें (लैव्य. 19:18)। यद्यपि उन्हें व्यवस्था में कहीं भी साफ़ साफ़ यह नहीं कहा गया है कि वे अपने **बैरी** से **बैर** रखें, उनके सिद्धान्त में यह भावना अन्तर्निहित थी। परमेश्वर के लोगों को सताने वालों के प्रति पुराना नियम के दृष्टिकोण से ऐसा ही रवैया रखा जाता था (भजन 139:21, 22)। परमेश्वर के शत्रुओं के प्रति इस प्रकार के बैरभाव को धार्मिकतापूर्ण (न्यायसम्मत) माना जाता था।

5:44–47 परन्तु अब प्रभु यीशु यह घोषणा कर रहा है कि हमें अपने **बैरियों** से **प्रेम** रखना चाहिए और **सतानेवालों के लिए** हमें **प्रार्थना** करनी चाहिए। यहाँ पर **प्रेम** करने के लिए आदेश दिया जा रहा है, इससे हमें यह पता चलता है कि प्रेम करना इच्छा पर निर्भर करता है, भावुकता पर नहीं। यह स्वाभाविक अनुराग के समान नहीं है क्योंकि जो हमें हानि पहुँचाते हैं और हमसे बैर रखते हैं उनसे प्रेम रखना हमारे लिए स्वाभाविक नहीं है। यह एक अलौकिक अनुग्रह है और इस प्रकार का प्रेम वे ही लोग प्रगट कर सकते हैं जिनके पास ईश्वरीय जीवन है।

अपने प्रेम करने वालों से ही प्रेम करने पर हमारे लिए कोई प्रतिफल नहीं है; प्रभु यीशु कहता है कि यहाँ तक मन न फिराये हुए **महसूल लेने वाले** भी ऐसा करते हैं! इस प्रकार के प्रेम के लिए ईश्वरीय सामर्थ की कोई

आवश्यकता नहीं है। न ही अपने **भाईयों ही को** (अपने रिश्तेदारों और मित्रों को) नमस्कार कहना कोई सद्गुण है। उद्धार न पाए हुए लोग भी ऐसा करने में सक्षम हैं; इसमें कोई भी मसीही विशेषता नहीं है। यदि हमारे आदर्श संसार के आदर्शों से ऊँचे नहीं है, तो यह निश्चित है कि हम संसार पर कभी भी किसी तरह से छाप नहीं छोड़ पाएगे।

प्रभु यीशु ने कहा है कि उसके अनुयायी बुराई के बदले में भलाई करें ताकि वे अपने **स्वर्गीय पिता** की **सन्तान** ठहरें। वह यह नहीं कह रहा है कि यह स्वर्गीय पिता की सन्तान *बनने* का तरीका है; बल्कि यह कि ऐसा करने के द्वारा हम यह *दर्शाते* हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। चूंकि परमेश्वर न तो **धर्मियों** के साथ ना ही **अधर्मियों** के साथ किसी प्रकार का पक्षपात करता है (दोनों ही उसकी ओर से **सूर्य** और **मेंह** का लाभ लेते हैं), इसलिए हमें दूसरों के साथ अनुग्रह से और निष्पक्ष होकर सबके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

5:48 प्रभु यीशु इस शिक्षा के साथ इस खण्ड को समाप्त करता है: **इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। सिद्ध** शब्द को इस सन्दर्भ के प्रकाश में समझा जाना आवश्यक है। इसका अर्थ निष्पाप या त्रुटिहीन होना नहीं है। पिछले पदों के आधार पर सिद्ध बनने का अर्थ होता है अपने बैरियों से प्रेम रखना, अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करना, और मित्रों व शत्रुओं दोनों के प्रति भलाई का व्यवहार करना। यहाँ पर सिद्धता का अर्थ वह आत्मिक परिपक्वता है जो एक मसीही को समर्थ करती है कि वह बिना पक्षपात किए सब को आशीष बांटने में परमेश्वर का अनुसरण कर सके।

ज. निष्ठा के साथ दें (6:1–4)

6:1 इस अध्याय के प्रथम अर्ध– भाग में प्रभु यीशु मसीह एक व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिक धार्मिकता के तीन विशेष क्षेत्रों के विषय में बातचीत कर रहा है: परोपकारी कार्य (1–4 पदों में), प्रार्थना (5–15 पदों में), तथा उपवास (16–18 पदों में)। **पिता** शब्द इन अठ्ठारह पदों में दस बार आया है और इन पदों को समझने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण शब्द है। धार्मिकता के व्यवहारिक कार्य परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए किए जाने हैं, लोगों को प्रसन्न करने के लिए नहीं।

वह अपने उपदेश के इस भाग का आरम्भ इस चेतावनी के साथ करता है कि **धर्म के काम** (परोपकारी कार्य) करने के द्वारा अपनी भक्ति का दिखावा करने की परीक्षा में नहीं पड़ना है। वह इस कार्य करने के लिए निन्दा नहीं कर रहा है, परन्तु उद्देश्य की निन्दा कर रहा है। यदि लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना ही एकमात्र उद्देश्य है तो हमारा प्रतिफल यहीं तक सिमट कर रह जाएगा, क्योंकि परमेश्वर पाखण्डियों को प्रतिफल नहीं देता।

6:2 यह बात अविश्वसनीय लगती है कि **कपटी** लोग जब **सभाओं** *(सिनेगाग)* में भेंट चढ़ाते हैं, या जब **गलियों** में भिखारियों को भीख देते हैं तो हल्ला मचा कर सबका ध्यान अपनी बड़ी बड़ी भेंटों या भीख की ओर आकर्षित करते हैं। प्रभु यीशु इस स्पष्ट टिप्पणी के द्वारा उनके इस रवैये को नकार देता है: "**वे अपना प्रतिफल पा चुके**" (अर्थात्, पृथ्वी पर कमाई गई प्रतिष्ठा ही उनका एकमात्र प्रतिफल है)।

6:3, 4 जब मसीह का एक अनुयायी **दान** करता है, तो वह ऐसा **गुप्त** रूप से करता है। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि यह इतनी गुप्त रीति से किया जाना चाहिए कि "**जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न जानने पाए।**" प्रभु यीशु इस चित्रण का उपयोग करते हुए यह दर्शाते हैं कि हमारे **दान** (परोपकारी कार्य) **पिता** के लिए किए जाने चाहिए, देने वाले के लिए प्रतिष्ठा कमाने हेतु नहीं।

इस स्थल की शिक्षा का उपयोग हमें इस बात पर जोर देने के लिए नहीं करना है कि कोई भी ऐसी भेंट न दी जाए जो दूसरों के द्वारा देखी जा सकती है, क्योंकि पूरी तरह से अनाम होकर हमेशा इस प्रकार का योगदान दे पाना लगभग असम्भव है। इस स्थल में अपनी उदारता का ढिढ़ोरा पीटे जाने के लिए ही मना किया गया है।

क. सच्चे मन से प्रार्थना करें (6:5–8)

6:5 तब प्रभु यीशु अपने चेलों को **प्रार्थना** करते समय पाखण्ड करने के विरूद्ध सचेत करता है। उन्हें जानबूझ कर ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर प्रार्थना करने के लिए खड़े नहीं होना चाहिए जहाँ से हम लोगों को प्रार्थना करते हुए दिख सकें और भक्ति का दिखावा कर उन्हें प्रभावित कर सकें। यदि प्रतिष्ठा पाना ही प्रार्थना करने

का एकमात्र उद्देश्य है, तब, प्रभु यीशु कहता है कि हमारा **प्रतिफल** भी सांसारिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाएगा।

6:6 पद 5 और 7 में, **तू** के लिए उपयोग में लाया गया यूनानी शब्द बहुवचन है। परन्तु पद 6 में, परमेश्वर के साथ निजी संगति पर जोर देने के उद्देश्य से, *तू* एकवचन में परिवर्तित हो जाता है। प्रार्थना का उत्तर पाने की कुंजी यह है कि प्रार्थना **गुप्त** में की जाए (अर्थात्, **अपनी कोठरी में जा** और **द्वार बन्द कर**)। यदि परमेश्वर तक हमारी प्रार्थना पहुँचाना हमारा वास्तविक उद्देश्य है, तो वह अवश्य ही सुन कर उत्तर देगा।

इस स्थल में यह नहीं कहा गया है कि सार्वजनिक प्रार्थना नहीं की जानी चाहिए। आरम्भिक कलीसिया सामूहिक प्रार्थना करने के लिए एकत्रित हुआ करती थी (प्रेरित 2:42; 12:12; 13:3; 14:23; 20:36)। बात यह नहीं है कि हम प्रार्थना *कहाँ* करते हैं, बल्कि यह कि हम प्रार्थना *क्यों* करते हैं – लोगों को दिखाने के लिए या फिर परमेश्वर के द्वारा सुने जाने के लिए।

6:7 प्रार्थना में **बक बक** नहीं करना चाहिए, अर्थात्, किसी बात को बार बार नहीं दोहराना चाहिए, अर्थात्, घिसे पिटे वाक्य या खोखले वाक्यांशों का प्रयोग करने के लिए मना किया गया है। उद्धार न पाए हुए लोग ऐसा करते हैं, परन्तु परमेश्वर शब्दों की बहुतायत मात्र से प्रभावित नहीं होता। वह हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति को सुनना चाहता है।

6:8 चूंकि हमारा **पिता** हमारे **मांगने से पहले ही जानता है कि** हमारी **आवश्यकता क्या क्या** है, तब यह प्रश्न उठना तर्कसंगत है, "प्रार्थना की आवश्यकता ही क्या है?" प्रार्थना करने का कारण यह है कि, प्रार्थना करने के द्वारा हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि हम उस पर निर्भर हैं। यह परमेश्वर के साथ हमारे संवाद का आधार है। साथ ही परमेश्वर प्रार्थना के उत्तर में ऐसे कार्य करता है जो वह अन्यथा नहीं करता (याकूब 4:2)।

ल. यीशु एक आदर्श प्रार्थना सिखाता है (6:9–15)

6:9 9–13 पदों में जो प्रार्थना सिखाई गई है उसे हम सामान्यत: "प्रभु की प्रार्थना" कहते हैं। इस प्रार्थना को यह नाम देने से पहले हमें यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि प्रभु ने स्वयं यह प्रार्थना कभी नहीं की। प्रार्थना का यह प्रारूप चेलों को दिया गया ताकि वे इसके आधार पर प्रार्थना कर सकें। यह प्रारूप इसलिए नहीं दिया गया है कि चेले हूबहू इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रार्थना करें (पद 7 इसे नकारता प्रतीत होता है), क्योंकि रट कर ढेर सारे शब्दों का उपयोग करने से हमारे वाक्य खोखले हो जाते हैं।

हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है. हमें परमेश्वर पिता को सम्बोधित करते हुए और उसे विश्व के प्रभु के रूप में स्वीकार करते हुए प्रार्थना करनी चाहिए।

तेरा नाम पवित्र माना जाए. हमें स्तुति करते हुए, उसे प्रंशसा और आदर देते हुए (वह इसके योग्य है) अपनी प्रार्थना का आरम्भ करना चाहिए।

6:10 **तेरा राज्य आए**. स्तुति प्रंशसा करने के बाद, हमें परमेश्वर के उद्देश्य की बढ़ती के लिए और उसके हित को प्राथमिकता देते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। विशेष कर के हमें उस दिन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जब हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह, अपना राज्य पृथ्वी पर स्थापित कर धार्मिकता के साथ राज्य करेगा।

तेरी इच्छा . . . पूरी हो. इस याचना के माध्यम से हम यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर यह जानता है कि हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है और यह कि हम अपने आप को उसकी इच्छा पर सौंप देते हैं। इसमें यह कामना भी व्यक्त की गई है कि उसकी इच्छा को सारे संसार में स्वीकार किया जाए।

जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो. इस वाक्यांश में पिछली सभी तीन याचनाओं का रूपान्तर किया गया है। परमेश्वर की स्तुति, परमेश्वर की प्रभुसत्ता, और उसकी **इच्छा** पूरी होना, तीनों बातें **स्वर्ग** में वास्तव में पूरी होती हैं। यहाँ यह प्रार्थना की गई है कि जैसे यह स्वर्ग में होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।

6:11 **हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे**। परमेश्वर के हित को सबसे पहले रखने के बाद, हमें अनुमति है कि हम स्वयं की वर्तमान आवश्यकताओं को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करें। इस याचना में हमारे प्रतिदिन के भोजन, आत्मिक और शारीरिक दोनों, के लिए परमेश्वर पर हमारी निर्भरता को स्वीकार किया गया है।

6:12 **और जिस प्रकार हम ने अपने**

अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर. इसमें हमारे पापों के लिए ठहराए गए दण्ड से क्षमा किए जाने की बात नहीं की जा रही है (यह क्षमा सिर्फ परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास लाने के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है)। बल्कि यह पिता द्वारा सन्तान को क्षमा किए जाने की प्रार्थना है जो कि हमारे पिता के साथ संगति को कायम रखने हेतु हमारे लिए आवश्यक है। यदि विश्वासी लोग ऐसे लोगों को क्षमा करने से मना कर देते हैं जिन्होंने उनके विरूद्ध कुछ गलत किया हो, तो फिर वे उस पिता के साथ संगति करने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं जिन्होंने उनके साथ गलत करने वालों को सेंतमेंत क्षमा कर दिया।

6:13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा. यह निवेदन याकूब 1:13 का विरोधाभासी लगता है, जो यह कहता है कि परमेश्वर किसी की परीक्षा नहीं करता। किन्तु, परमेश्वर अपने लोगों को परखे जाने या परीक्षा में पड़ने देता है। यह याचना परीक्षा का सामना करने या परीक्षा में स्थिर रह पाने में हमारी क्षमता पर भरोसा न होने की बात को व्यक्त करता है। इस वाक्य में हमारी सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर सम्पूर्ण निर्भरता को स्वीकार किया गया है।

परन्तु बुराई से बचा. यह उन सब लोगों की प्रार्थना है जो परमेश्वर की सामर्थ से पाप से अपने आप को दूर रखने की तीव्र अभिलाषा रखते हैं। यह एक व्यक्ति के हृदय की पुकार है कि वह अपने जीवन में प्रतिदिन पाप और शैतान की सामर्थ से छुटकारा मिले।

क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन। इस प्रार्थना का अन्तिम वाक्य रोमन कैथोलिक और अति आधुनिक बाइबलों से हटा दिया गया है क्योंकि यह वाक्य अनेक प्राचीन मूल पाण्डुलिपियों में नहीं पाया जाता। किन्तु, इस प्रकार का महिमागान प्रार्थना का आदर्श समापन होगा और यह अधिकांश मूल पाण्डुलिपियों में पाया जाता है।[8] जैसे कि जॉन केल्विन कहते हैं, यह आवश्यक है कि ''प्रार्थना न सिर्फ हमारे हृदयों में गर्माहट उत्पन्न करे, . . . बल्कि हमें यह भी बताए कि हमारी सारी प्रार्थनाओं का आधार परमेश्वर को छोड़ और कुछ नहीं है।''

6:14, 15 इन पदों में पद 12 को समझाया गया है। यह इस प्रार्थना का हिस्सा नहीं है, परन्तु इस बात पर जोर देने के लिए यहाँ पर बताया गया है कि पद 12 में जिस क्षमा का उल्लेख किया गया है वह सशर्त है।

म. यीशु सिखाता है कि उपवास कैसे रखना चाहिए (6:16–18)

6:16 यीशु ने धार्मिक पाखण्ड के जिस तीसरे प्रकार की आलोचना की वह है **उपवास** करने का दिखावा करने के लिए जानबूझ कर माहौल बनाना। पाखण्डी लोग उपवास के समय **अपना मुँह** उतार लेते थे ताकि वे दुखी, खिन्न, और कमजोर दिखाई दें। परन्तु प्रभु यीशु कहता है कि अपने आप को पवित्र दिखाने का प्रयास करना बेतुका और हास्यपद है।

6:17, 18 सच्चे विश्वासियों को गुप्त में **उपवास** करना चाहिए, और किसी भी प्रकार का बाहरी दिखावा नहीं करना चाहिए। **अपने सिर पर तेल** मलना **और मुँह** धोना सामान्य दिखने का एक तरीका है। यह पर्याप्त है कि **पिता** जानता है कि हम उपवास कर रहे हैं; उसके द्वारा हमें दिया जाने वाला **प्रतिफल** लोगों की प्रंशसा से बेहतर होगा।

उपवास

उपवास का अर्थ होता है, किसी भी शारीरिक भूख को तृप्त करने से अपने आप को वंचित रखना। यह स्वेच्छा से किया जा सकता है, जैसा कि इस स्थल में हम पाते हैं, या नियम का पालन करने के उद्‌देश्य से भी किया जा सकता है (जैसा कि प्रेरित 27:33 या 2 कुरि. 11:27 में हम पाते हैं)। नया नियम में यह विलाप (मत्ती 9:14, 15) और प्रार्थना (लूका 2:37; प्रेरित 14:23) से जुड़ा हुआ है। इन स्थलों के अनुसार उपवास के साथ प्रार्थना करना परमेश्वर की इच्छा को पहचानने के प्रति हमारी गम्भीरता को दर्शाता है।

जहाँ तक हमारे उद्धार की बात है उपवास से कोई लाभ नहीं है; न ही परमेश्वर के सामने यह हमारे मसीही जीवन को खास बनाता है। एक बार एक फरीसी ने गर्व से कहा था कि वह सप्ताह में दो बार उपवास रखता है; किन्तु, उसका उपवास उसे वह धार्मिकता नहीं दिला पाया जिसे वह पाना चाहता था (लूका 18:12, 14)। परन्तु

जब एक मसीही उपवास को एक आत्मिक अनुशासन के रूप स्वीकार करते हुए गुप्त रूप से उपवास रखता है, तब परमेश्वर यह देख कर उसे इसका प्रतिफल देता है। यद्यपि नया नियम में उपवास करने की आज्ञा नहीं दी गई है, परन्तु प्रतिफल की प्रतिज्ञा देते हुए इसके लिए *उत्साहित* किया गया है। यह नीरस और उबाऊपन को हटा कर हमारे प्रार्थना के जीवन में सहायक हो सकता है। यह संकट के समयों में अत्यंत बहुमूल्य होता है जब एक व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवन में पहचानने की कामना करता है। यह हमारे भीतर आत्म अनुशासन का विकास करने में सहायक होता है। उपवास करना परमेश्वर और व्यक्ति के बीच का एक व्यक्तिगत विषय है और उपवास हमें सिर्फ परमेश्वर को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए। यह अपना मूल्य खो देता है जब यह बाहर प्रगट हो जाता है या फिर किसी गलत उद्देश्य से किया जाता है।

न. स्वर्ग में धन इकट्ठा करना (6:19–21)

इस स्थल में हमारे प्रभु की कुछ अत्यंत क्रान्तिकारी शिक्षाएं पाई जाती हैं – इनमें से कुछ को हम सबसे ज्यादा अनदेखा भी करते हैं। शेष अध्याय का प्रमुख विषय यह है कि भविष्य के लिए सुरक्षा कैसे प्राप्त करें।

6:19, 20 19 से 21 पदों में प्रभु यीशु ने उन सभी सुझावों का खण्डन कर दिया है जो एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य का प्रबन्ध करने के सम्बन्ध में मनुष्यों द्वारा सुझाए जाते हैं। जब यीशु ने कहा, ''**अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो,**'' तो वह यह कहना चाहता है कि भौतिक वस्तुओं से हमें किसी भी प्रकार की सुरक्षा नहीं मिलती। **पृथ्वी पर** एकत्रित किया गया भौतिक धन या तो प्राकृतिक तत्वों (**कीड़ा और काई**) के द्वारा नष्ट किया जा सकता है या फिर कोई इसे चोरी कर सकता है। यीशु कहता है कि **स्वर्ग में धन** जमा करना ही एकमात्र ऐसा निवेश है जिसमें हमें कभी भी हानि नहीं उठानी पड़ेगी।

6:21 यीशु द्वारा बताई गई वित्तीय नीति इस सिद्धान्त पर आधारित है कि ''**जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।**'' यदि हमारा धन सुरक्षित समझे जाने वाले किसी लॉकर में रखा है तो हमारा हृदय और हमारी अभिलाषा भी उसी ओर होगी। यदि हमारा धन स्वर्ग में है तो हमारा ध्यान भी वहीं केन्द्रित रहेगा। यह शिक्षा हमें निर्णय लेने के लिए बाध्य करती है कि प्रभु यीशु ने जो कुछ कहा क्या उसके कहने का यही तात्पर्य था। यदि उसने वही कहा जो वह कहना चाह रहा था तो हमारे सामने यह प्रश्न आता है, ''हम अपने सांसारिक धन के साथ क्या करेंगे?'' यदि उसके कहने का तात्पर्य कुछ दूसरा था, तब हमारे सामने यह प्रश्न आता है, ''हम अपनी बाइबल के साथ क्या करेंगे?''

ओ. शरीर का दिया (6:22, 23)

प्रभु यीशु इस बात को समझता था कि उसने भविष्य की सुरक्षा के सम्बन्ध में जो अपारम्परिक शिक्षा दी है उसके पालन की सम्भावना उसके अनुयायियों को कठिन प्रतीत हो सकती है। इसलिए उसने मनुष्य की **आँख** का उदाहरण देते हुए इस आत्मिक शिक्षा को समझाया। उसने कहा कि **आँख . . . शरीर का दिया है**। आँख के माध्यम से ही सारा शरीर प्रकाश ग्रहण कर सब कुछ देख पाता है। **यदि आँख निर्मल है,** तो **सारा शरीर** ज्योति से परिपूर्ण हो जाएगा। **परन्तु यदि . . . आँख बुरी हो,** तब दृष्टि खराब हो जाएगी। और प्रकाश के स्थान पर **अन्धकार** हो जाएगा।

इस बात को इस तरह से लागू करना अच्छा होगा: निर्मल आँख एक ऐसे व्यक्ति की आँख है, जिसके अभिप्राय शुद्ध हैं, और जो सिर्फ परमेश्वर के हित की बढ़ोत्तरी की चिन्ता करता है, और जो मसीह की शिक्षाओं को खुशी खुशी हूबहू स्वीकार कर लेता है। उसका सारा जीवन प्रकाश से भर जाता है। वह यीशु के शब्दों पर विश्वास करता है, वह सांसारिक धन को त्याग देता है, वह स्वर्ग में धन इकट्ठा करता है, और वह जानता है कि सच्ची सुरक्षा इसी में पाई जाती है। दूसरी ओर, बुरी आँख उस व्यक्ति की आँख है जो दो संसारों के लिए जीने का प्रयास कर रहा है। वह अपने सांसारिक धन को खोना नहीं चाहता, परन्तु वह स्वर्ग में भी धन एकत्रित करना चाहता है। ऐसे व्यक्ति को प्रभु यीशु की शिक्षा अव्यवहारिक और असम्भव जान पड़ती है। उसे एक स्पष्ट अगुवाई नहीं मिल पाती क्योंकि वह अन्धकार से भरा हुआ है।

यीशु मसीह इस वाक्य को आगे जोड़ते हुए कहते हैं **इस कारण वह उजियाला जो तुम में हैं यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा!** दूसरे शब्दों में, यदि हम जानते हैं कि यीशु ने सुरक्षा के लिए सांसारिक धन पर भरोसा रखने के लिए मना किया है, और उसके बाद भी हम उस पर भरोसा रखते हैं, तो जिस शिक्षा का पालन करने में हम असफल हो जाते हैं वही हमारे लिये अन्धकार बन जाती है– एक बहुत ही गंभीर तरह का आत्मिक अन्धापन। हम वास्तविक धनरूपी आशीषों को उनके सही दृष्टिकोण में नहीं देख पाते।

प. हम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते (6:24)

इस बात को समझाने के लिए कि **परमेश्वर** और धन दोनों के लिए साथ साथ जीना असम्भव है, **स्वामियों** और दासों के उदाहरण का प्रयोग किया जा रहा है। **कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।** अनिवार्यत: उसकी निष्ठा और आज्ञाकारिता एक स्वामी की तुलना में दूसरे स्वामी के पक्ष में अधिक हो जाएगी। **परमेश्वर और धन** के साथ भी यही बात लागू होती है। दोनों ही एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी की तरह हम पर अपना दावा करते हैं और हमें एक निर्णय लेना आवश्यक होता है। या तो हम परमेश्वर को प्राथमिकता दें और भौतिकतावाद को नकार दें या हम क्षणिक वस्तुओं के लिए जीवन बिताएं और अपने जीवनों पर परमेश्वर के दावे को नकार दें।

क. किसी भी बात की चिन्ता न करें (6:25–34)

6:25 इस स्थल में यीशु मसीह उस प्रवृत्ति पर वार कर रहा है जिसमें हम अपना जीवन रोटी और कपड़ा के आसपास केन्द्रित कर देते हैं, और ऐसा करने के द्वारा अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य से भटक जाते हैं। समस्या यह नहीं है कि हम *आज* क्या खाएंगे और पहनेंगे, परन्तु यह है कि हम आज से दस, बीस, या तीस साल बाद क्या खाएंगे या क्या पहनेंगे। भविष्य के बारे में इस प्रकार की चिन्ता करना पाप है क्योंकि ऐसा करने के द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम, उसकी बुद्धि, और उसकी सामर्थ का तिरिस्कार कर देते हैं। भविष्य के बारे में चिन्ता करने के द्वारा हम यह जताते हैं कि उसे हमारी चिन्ता नहीं है और इस तरह से उसके प्रेम का तिरिस्कार कर देते हैं। हम यह भी जताते हैं कि वह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है और इस तरह से हम उसकी बुद्धि का तिरिस्कार कर देते हैं। हम यह जताते हैं कि वह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं है और इस तरह से उसकी सामर्थ का तिरिस्कार कर देते हैं।

इस प्रकार की चिन्ता करने के कारण हम अपनी सबसे उत्तम ऊर्जा को इस बात को निश्चित करने में खपा देते हैं कि भविष्य में हमारे जीवन व्यापन के लिए पर्याप्त साधन रहे। तब, इससे पहले कि हम समझ पाएं, हमारा जीवन बीत जाता है, और हम उस प्रमुख उद्देश्य से चूक जाते हैं जिसके लिए हम बनाए गए हैं। परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में इसलिए बनाया है कि हमारे जीवन का लक्ष्य खाने पीने तक सीमित न रहे परन्तु उससे कहीं अधिक ऊँचाई को प्राप्त करे। हम यहाँ पर परमेश्वर से प्रेम करने, उसकी आराधना करने, उसकी सेवा करने, और इस पृथ्वी पर उसके हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए रखे गए हैं। हमारे शरीर हमारे सेवक हैं, स्वामी नहीं।

6:26 आकाश के पक्षियों का उदाहरण परमेश्वर की सृष्टि के प्रति परमेश्वर की चिन्ता को दर्शाने के लिए दिया गया है। पक्षी अपने जीवन के द्वारा हमारे सामने यह प्रचार कर रहे हैं कि चिन्ता करना एक अनावश्यक बात है। वे **न बोते हैं न काटते हैं,** तौभी परमेश्वर उन्हें **खिलाता है**। चूंकि, परमेश्वर ने अपने सृष्टि में जो पदक्रम निर्धारित किया है, उसमें हम पक्षियों **से अधिक मूल्य** रखते हैं, और इसलिए हम निश्चित रूप से परमेश्वर से यह आशा कर सकते हैं कि वह हमारी आवश्यकताओं का ध्यान रखेगा।

परन्तु यहाँ पर यह नहीं कहा जा रहा है कि हमें अपनी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य नहीं करना है। पौलुस हमें यह स्मरण दिलाता है: ''यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए'' (2 थिस्स. 3:10)। न ही हमें यह समझना है कि एक किसान का बीज बोना, लवना, और काटना गलत है। ये गतिविधियाँ उसकी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए आवश्यक

हैं। यीशु मसीह यहाँ पर जिस बात के लिए मना कर रहे हैं वह यह है कि अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहने की बजाए हमें अपनी सुरक्षा के लिए अपने भण्डारों को भरने में नहीं लगे रहना है (लूका 12:16–21 में धनी किसान के बारे में बताए गए दृष्टांत में उसने ऐसा करने वालों की आलोचना की है)। *डेली नोट्स ऑन स्क्रिप्चर यूनियन* में पद 26 का सारांश इस प्रकार से दिया गया है:

> तर्क यह है कि यदि परमेश्वर सृष्टि के छोटे क्रम के प्राणियों का पालन–पोषण बिना उनके चैतन्य सहयोग के करता है, तो वह उन लोगों का जो सक्रिय रहते हैं और जिनके लिए यह सृष्टि बनाई गई, पालन–पोषण क्यों न करेगा।

6:27 भविष्य की चिन्ता करना न सिर्फ परमेश्वर का अपमान है – परन्तु यह व्यर्थ भी है। प्रभु इस सच्चाई को एक प्रश्न के माध्यम से हमारे सामने रखते हैं: ''**तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी** (यूनानी में, एक हाथ) **भी बढ़ा सकता है।**'' एक नाटा व्यक्ति चिन्ता करके अपनी ऊँचाई एक हाथ भी नहीं बढ़ा सकता। तौभी यदि हम तुलना करें, तो ऐसा करना उसके लिए अधिक सरल होगा बजाए इसके कि वह अपने भविष्य की सारी आवश्यकता की पूर्ति चिन्ता करने के द्वारा पूरी करे।

6:28–30 उसके बाद प्रभु इस अकारण चिन्ता के विषय में चर्चा करते हैं कि भविष्य में हमारे पास पर्याप्त **वस्त्र** नहीं रहेंगे। यदि हम **जंगली सोसनों** को देखें तो पाएंगे कि वे **न तो परिश्रम करते, न कातते हैं**, तौभी उनकी सुन्दरता सुलैमान के राजशाही वस्त्रों को भी मात दे देती है। यदि परमेश्वर जंगली फूलों के लिये, जिनका अल्प अस्तित्व होता है और फिर इसके बाद वे **भट्टी** में डाल कर जला दिए जाते हैं, इतने शानदार पहिनावे का प्रबन्ध कर सकता है, तो फिर वह अपने लोगों की चिन्ता अवश्य करेगा जो उसकी आराधना और सेवा करते हैं।

6:31, 32 इन बातों का निष्कर्ष यह है कि हमें अपने भविष्य के लिए भोजन, पानी, और कपड़े का प्रबन्ध करने के लिए भाग दौड़ नहीं करना है। मन न फिराए हुए **अन्यजाति** लोगों पर भौतिक वस्तुओं को जमा करने की सनक सवार रहती है, मानों भोजन और वस्त्र ही जीवन में सब कुछ है। परन्तु मसीहियों को ऐसा नहीं करना चाहिए, जिनके पास पहले से ही एक **स्वर्गीय पिता** है जो उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को जानता है।

यदि मसीहियों को अपने भविष्य की सुविधाओं के लिए पहले से प्रबन्ध करने का लक्ष्य दिया गया होता, तो उनका समय और उनकी ऊर्जा वित्तीय संसाधनों को एकत्रित करने में ही खप जाती। वे कभी भी यह निश्चित नहीं कर पाते कि उन्होंने पर्याप्त जमा कर लिया है, क्योंकि बाजार के गिर जाने, मंहगाई, संकट, लम्बी बीमारी, अंपग बना देने वाली दुर्घटनाओं इत्यादि का खतरा हमेशा बना रहता है। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर को उसके लोगों की सेवा से वंचित कर दिया जाता है। जिस वास्तविक उद्देश्य से हमें बनाया गया है और हमारा उद्धार किया गया है वह चूक जाता। ईश्वर के स्वरूप में बनाए गए स्त्री और पुरुष इस पृथ्वी पर एक अनिश्चित भविष्य को लेकर जीवन बिताते, जबकि उन्हें अनन्त मूल्य की बातों को ध्यान में रख कर अपना जीवन व्यतीत करना है।

6:33 इसलिए परमेश्वर अपने अनुयायियों के साथ एक वाचा बान्धता है। वह मानों यह कहता है, ''यदि तुम अपने जीवन में परमेश्वर के हितों को प्राथमिकता दोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की गारंटी देता हूँ। यदि **पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो**, तब मैं इस बात का निश्चय ही ध्यान रखूंगा कि तुम्हें जीवन में किसी भी आवश्यक वस्तु की घटी न हो।''

6:34 यह परमेश्वर की ''सामाजिक सुरक्षा'' योजना है। विश्वासी का यह कर्तव्य है कि वह परमेश्वर के लिए जीये, अडिग विश्वास के साथ अपने भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखे। एक विश्वासी का पेशा उसकी चालू आवश्यकताओं की पूर्ति करने का ही साधन होता है; इससे ऊपर जो आता है उसे परमेश्वर के कार्य के लिए निवेश करने की आवश्यकता है। हमें एक बार में एक दिन के बारे में ही सोचना है: **कल** का दिन अपनी **चिन्ता आप कर लेगा।**

र. दोष न लगाएं (7:1–6)

दोष न लगाने की यह शिक्षा हमारे प्रभु द्वारा सांसारिक धन के विषय में दी गई प्रेरक शिक्षा के ठीक बाद दी गई है। इन दोनों विषयों के बीच के सम्बन्ध की ओर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। धनवान मसीहियों की आलोचना करना उस मसीही के लिये सरल है जिसने प्रभु के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया है । इसके विपरीत, जो मसीही अपने परिवारों के भविष्य के लिए प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी को गम्भीरतापूर्वक लेते हैं वे पिछले अध्याय में यीशु के वचनों के हूबहू अर्थ को दूसरा अर्थ देने का प्रयास करते हैं। चूंकि कोई भी पूरी तरह से विश्वास का जीवन व्यतीत नहीं करता, इसलिये इस प्रकार की आलोचनाएं तर्कहीन हैं।

इस आज्ञा में, निम्नलिखित क्षेत्रों में दूसरों पर दोष न लगाने के लिए कहा गया है: हमें किसी के अभिप्राय का न्याय नहीं करना चाहिये; किसी के भी अभिप्राय को सिर्फ परमेश्वर ही जान सकता है; हमें प्रतीत होने वाली बातों के आधार पर न्याय नहीं करना चाहिए (यूहन्ना 7:24; याकूब 2:1–4); हमें उन लोगों का न्याय नहीं करना चाहिये जो ईमानदारी से उन बातों के विषय में शंका में हैं जो बातें अपने आप में न तो सही हैं और न गलत (रोमि. 14:1–5) ; हमें अन्य मसीही की सेवकाई का न्याय नहीं करना चाहिए (1 कुरि. 4:1–5); और हमें अपने किसी विश्वासी भाई के विषय में बुरी बातें कर उस का न्याय नहीं करना चाहिये (याकूब 4:11, 12)।

7:1 कभी कभी लोग हमारे प्रभु के इन वचनों का गलत अर्थ बताते हुए सभी प्रकार के न्याय की मनाही करते हैं। वे बड़े धर्मी बनते हुए कहते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाए, **''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।''** परन्तु यीशु मसीह यहाँ पर यह नहीं कह रहे हैं कि हम ऐसे मसीही बनें जो भले बुरे की परख न करें। उसके कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि हम भले बुरे की परख करने वाली या समालोचक इन्द्रिय को उपयोग में न लाएं। नया नियम में अनेक ऐसे उदाहरण पाए जाते हैं जो हमें किसी स्थिति, किसी के आचरण, या दूसरों की शिक्षा की सही परख करने से सम्बन्धित हैं। इसके अतिरिक्त, ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिसमें एक मसीही को किसी निर्णय पर आने का आदेश दिया गया है, अच्छे और बुरे या अच्छे या बेहतर के बीच अन्तर करने के लिए कहा गया है: इन में से कुछ निम्नलिखित हैं:

1. जब विश्वासियों के बीच में किसी तरह का विवाद उभर कर सामने आता है, तो इस प्रकार के विवादों को कलीसिया के ऐसे सदस्यों के साथ मिलकर सुलझाया जाना चाहिए जो ऐसे मामलों में कुछ निर्णय ले सकें (1 कुरि. 6:1–8)।
2. स्थानीय कलीसिया का यह कार्य है कि वह अपने सदस्यों के गम्भीर पापों की जाँच परख करे और उपयुक्त कदम उठाए (मत्ती 18:17; 1 कुरि.5:9–13)।
3. यह आवश्यक है कि विश्वासी लोग शिक्षकों और प्रचारकों की सैद्धान्तिक शिक्षाओं को परमेश्वर के वचन के प्रकाश में परखें (मत्ती 7:15–20; 1 कुरि. 14:29; 1 यूह. 4:1)।
4. पौलुस द्वारा 2 कुरिन्थियों 6:14 में दी गई आज्ञा का पालन करते हुए विश्वासियों को इस बात को परखना है कि दूसरे लोग विश्वासी हैं या नहीं।
5. कलीसिया के लोगों को इस बात को परखना है कि प्राचीन और सेवक (डीकन) बनने की योग्यता किन किन व्यक्तियों में है (1 तीमु. 3:1–13)।
6. हमें इस बात को परखना है कि कौन कौन उपद्रवी, शिथिल, निर्बल, इत्यादि हैं, तथा बाइबल की शिक्षा के अनुसार इनके साथ व्यवहार करना है (उदा. 1 थिस्स. 5:14)।

7:2 यीशु ने चेतावनी दी है कि जो गलत दोष लगाएगा या दूसरों को गलत तरीके से जाँचेगा उसके साथ भी वैसा ही किया जायेगा: **''क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा।''** 'जैसा बोओगे, वैसा काटोगे' का सिद्धान्त मानव के सारे जीवन और गतिविधियों पर लागू होता है। मरकुस इस शिक्षा को वचन के सुने और ग्रहण किए जाने पर लागू करता है (4:24) और लूका इसे दान देने में हमारी उदारता के सम्बन्ध में लागू करता है (6:38)।

7:3–5 यीशु ने हमारी इस प्रवृत्ति की पोल खोल दी कि हमें दूसरों की छोटी सी गलती भी दिख जाती है जबकि हम अपने भीतर उसी त्रुटि को अनदेखा कर देते हैं। उसने इस बात को सामने लाने के लिए जानबूझ कर अतिश्योक्ति का प्रयोग किया। एक ऐसे व्यक्ति को,

जिसकी **आँख** में एक पूरा का पूरा **लट्ठा** हो, दूसरे की आँख का इतना छोटा **तिनका** भी दिख जाता है, जो यदि उसके स्वयं की आँख में होता तो उसे पता भी नहीं चलता। यह मानना पाखण्ड का सूचक है कि हम किसी की गलती सुधारने में उसकी सहायता कर सकते हैं, यदि स्वयं हमारे भीतर उससे भी बड़ी त्रुटि है। दूसरों की गलती के लिए उनकी आलोचना करने से पहले हमें उन गलतियों को अपने भीतर से दूर करना है।

7:6 पद 6 से यह सिद्ध हो जाता है कि प्रभु ने *हर* प्रकार के दोष लगाने या न्याय करने से मना नहीं किया है। उसने अपने चेलों को सचेत किया कि पवित्र वस्तुएं **कुत्तों** को न दी जाए न ही **मोती सूअरों के आगे** डाली जाए। मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत सूअरों को अशुद्ध पशुओं की श्रेणी में रखा गया था और यहाँ पर सूअर शब्द का प्रयोग दुष्ट व्यक्ति का चित्रण करने के लिए किया गया है। जब हमारा सामना ऐसे बदतमीज़ लोगों से होता है जो ईश्वरीय सत्यों की घोर अवहेलना करते हैं और मसीह के विषय में हमारे प्रचार का उत्तर गाली और हिंसा से देते हैं, हम उन्हें सुसमाचार सुनाना जारी रखने के लिए बाध्य नहीं हैं। इस मामले को आगे बढ़ाने से दोषियों पर दण्ड की आज्ञा की ही बढ़ती होगी।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है, कि ऐसे लोगों को पहचानने के लिए आत्मिक समझ (आत्मिक इन्द्रिय) की आवश्यकता होती है। शायद इसीलिए आगे के पदों में प्रार्थना के विषय पर बताया गया है, जिसके द्वारा हम बुद्धि मांग सकते हैं।

स. मांगते रहो, ढूंढ़ते रहो, खटखटाते रहो (7:7–12)

7:7, 8 यदि हम ऐसा मानते हैं कि हम पहाड़ी उपदेश की शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन अपनी सामर्थ से जी सकते हैं, इसका अर्थ यह है कि हम उस जीवन के अलौकिक चरित्र को पहचानने में असफल रहे जिसे जीने के लिए उद्धारकर्ता हमें बुलाता है। इस प्रकार के जीवन की बुद्धि या सामर्थ ऊपर से मिलना आवश्यक है। इसलिए हमें यहाँ पर मांगने और लगातार मांगते रहने; ढूंढ़ने और लगातार ढूंढ़ते रहने; खटखटाने और लगातार खटखटाते रहने का न्यौता दिया जा रहा है। मसीही जीवन जीने के लिए बुद्धि और सामर्थ उन सभों को दिया जाएगा जो यत्न से और लगातार इसके लिए प्रार्थना करते हैं।

यदि हम सन्दर्भ को अपने ध्यान में न रखें, तो पद 7 और 8 विश्वासियों के लिए एक ब्लैंक चेक के समान दिखाई देता है; ऐसा लगता है कि इसमें यह कहा जा रहा है कि हम चाहे जो भी मांगे, हमें वह दे दिया जाएगा। परन्तु ऐसा नहीं है। इन पदों को इसके तात्कालिक सन्दर्भ में और प्रार्थना के विषय में सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में दी गई शिक्षाओं के प्रकाश में समझना आवश्यक है। इसलिए, जो प्रतिज्ञाएं यहाँ पर नि:शर्त प्रतीत हो रहीं हैं, उन प्रतिज्ञाओं से जुड़ी शर्तें हमें अन्य पदों में मिलती हैं। उदाहरण के लिए, भजन 66:18 से हमें यह ज्ञात होता है कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के जीवन में कोई भी ऐसा पाप नहीं होना चाहिए जिसका उसने अंगीकार नहीं किया है। एक मसीही को विश्वास के साथ (याकूब 1:6–8) और परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप (1 यूहन्ना 5:14) प्रार्थना करना आवश्यक है। हमें लगातार (लूका 18:1–8) और सच्चे मन (इब्रा. 10:22अ) से प्रार्थना करना आवश्यक है।

7:9, 10 जब हम प्रार्थना करने की शर्तों को पूरी करते हैं, तब हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर प्रार्थना को सुनेगा और उसका उत्तर देगा। यह आश्वासन हमारे पिता, परमेश्वर के चरित्र पर आधारित है। मानवीय स्तर पर, हम यह जानते हैं कि यदि एक **पुत्र** अपने पिता से **रोटी** मांगे, तो उसका पिता **उसे पत्थर** नहीं देगा। न ही वह **उसे साँप** देगा यदि वह एक **मछली** मांगे। एक सांसारिक पिता अपने भूखे पिता को कभी भी धोखा नहीं देगा न ही उसे कुछ ऐसा देगा जिससे उसे पीड़ा पहुँचे।

7:11 प्रभु अपने तर्क को नीचे से ऊपर ले जाता है। यदि मानवीय माता–पिता अपने बच्चों द्वारा मांगे जाने पर उन्हें अच्छी से अच्छी चीजें देते हैं, तो हमारा **स्वर्गीय पिता** हमारे मांगने पर हमें उससे भी **अच्छी वस्तुएं** क्यों न देगा।

7:12 पिछले पदों के साथ पद 12 का सम्बन्ध यह हो सकता है: इसलिए कि हमारा पिता हमें अच्छी अच्छी वस्तुओं को देता है, हमें दूसरों के प्रति भलाई करने में उसका अनुसरण करना चाहिए। यह जानने के लिए कौन सा काम दूसरों के लिए हितकारी होगा, हमें पहले यह

विचार करना होगा कि क्या यह हम अपने लिए भी चाहते हैं। ''बुनियादी सिद्धान्त'' इस समय से लगभग सौ वर्ष पूर्व हिलेल रब्बी के द्वारा नकारात्मक भाषा में व्यक्त किया गया था। किन्तु, इस सिद्धान्त को सकारात्मक भाषा में व्यक्त करते हुए, यीशु ने अकर्मण्य सहनशीलता से ऊपर उठकर उसे हितकर कर्मण्यता में बदल दिया। सिर्फ पाप से दूर रहना ही मसीही जीवन नहीं है; सकारात्मक भलाई करना मसीही जीवन में आवश्यक है।

प्रभु यीशु द्वारा कही गई यह बात **व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा** है, अर्थात्, इसमें प्रभु यीशु ने मूसा की **व्यवस्था** की नैतिक शिक्षाओं और इस्राएल के **भविष्यद्वक्ताओं** के लेखों का सार दिया। पुराना नियम में जिस धार्मिकता की मांग की गई है वह उन मन फिराए विश्वासियों में पूरी की गई जो आत्मा के अनुसार चलते हैं (रोमि. 8:4)। यदि इस पद का पालन सारे विश्व में किया जाए, तो यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, राष्ट्रीय राजनीति, पारिवारिक जीवन, और कलीसियाई जीवन के सारे क्षेत्रों को पूरी तरह से बदल कर रख देगा।

ट. सकरा मार्ग (7:13, 14)

प्रभु अब यह चेतावनी दे रहा है कि मसीही शिष्यता का **फाटक . . . सकेत** है और **मार्ग . . . सकरा** (कठिन)[9] है। परन्तु जो प्रभु की शिक्षाओं का पालन विश्वासयोग्यता से करते हैं, उन्हें भरपूर जीवन दिया जाता है। दूसरी ओर, एक **चौड़ा . . . फाटक** भी है – यह असंयम और भोग-विलास का जीवन है। इस प्रकार के जीवन का अन्त **विनाश** है। यहाँ पर आत्मा के नाश होने के विषय में नहीं, परन्तु अपने अस्तित्व के उद्‌देश्य को पूरा कर पाने में असफल होने के विषय में कहा जा रहा है।

इन पदों को सुसमाचार प्रचार पर लागू मानवजाति के दो मार्गों और दो नियतियों का चित्रण करने के द्वारा किया जा सकता है। चौड़ा फाटक और चाकल मार्ग विनाश को पहुँचाता है (नीति. 16:25)। सकरा फाटक और कठिन मार्ग जीवन को पहुँचाता है। प्रभु यीशु फाटक (यूहन्ना 10:9) और मार्ग (यूह. 14:6) दोनों है। यद्यपि इस स्थल पर इसे लागू करना सही है, परन्तु प्राथमिक अर्थ व्याख्या विश्वासियों के लिए है। प्रभु यीशु कह रहा है कि उसका अनुसरण करने के लिए विश्वास, अनुशासन, और धीरज की आवश्यकता है। परन्तु यह **सकरा** (कठिन) जीवन ही जीने योग्य जीवन है। यदि हम सरल मार्ग का चुनाव करते हैं, तो हमारे पास ढेर सारे मित्र होंगे, परन्तु हम उस उत्तम भाग को पाने से चूक जाएंगे जिसे परमेश्वर हमें देना चाहता है।

य. उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे (7:15-20)

7:15 जहाँ कहीं सच्ची शिष्यता के लिए कठिन मांगों की शिक्षा दी जाती है, **झूठे भविष्यद्वक्ता** उठ खड़े होते हैं और चौड़े फाटक और सरल मार्ग की वकालत करने लगते हैं। वे सच्चाई में पानी मिला मिला कर उसे तब तक पतला करते हैं, जब तक कि, स्पर्जन के अनुसार, ''एक बीमार टिड्डी के पीने लायक यह पतला सूप बन कर न रह जाए।'' ये लोग जो दावा करते हैं कि वे परमेश्वर की ओर से बोल रहे हैं, **भेड़ों के भेष में** आते हैं, और ऐसा दिखावा करते हैं मानों वे सच्चे विश्वासी हैं। परन्तु **अन्तर में फाड़ने वाले भेड़िये हैं**, अर्थात्, वे दुष्ट अविश्वासी हैं जो अपरिपक्व, अस्थिर, और भोले भाले लोगों को अपना शिकार बनाते हैं।

7:16, 18 पद 16-18 में बताया गया है कि किस तरह से झूठे भविष्य- द्वक्ताओं की पहचान हो सकती है: **उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे**। एक पेड़ या पौधे में उसकी प्रजाति के गुणों के अनुसार **फल** लगते हैं। **झाड़ियों** में **अंगूर** और **ऊँटकटारों** में **अंजीर** नहीं लगते। **एक अच्छा पेड़ अच्छा फल** लाता है और **निकम्मा पेड़ बुरा फल** लाता है। यह सिद्धान्त न सिर्फ प्राकृतिक संसार में बल्कि आत्मिक संसार पर भी लागू होता है। जो लोग यह दावा करते हैं कि वे परमेश्वर की ओर से बोल रहे हैं उन्हें परमेश्वर के वचन के प्रकाश में परखना चाहिए: ''यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिए पौ न फूटेगी'' (यशा. 8:20)।

7:19, 20 झूठे भविष्यद्वक्ताओं का अन्त **आग की झील** है। झूठे शिक्षकों और भविष्यद्वक्ताओं का अन्त ''शीघ्र विनाश'' होगा (2 पत. 2:1)। उन्हें उनके फलों से पहचाना जा सकता है।

व. मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना (7:21–23)

7:21 प्रभु यीशु इसके बाद ऐसे लोगों के विरुद्ध चेतावनी देते हैं जो यह झूठा दावा करते हैं कि उन्होंने उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है, परन्तु कभी मन नहीं फिराया। **हर एक** जो यीशु को **"प्रभु, प्रभु"** कहता है वह **स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा।** सिर्फ वे ही जो परमेश्वर की **इच्छा** के अनुसार चलते हैं परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाना परमेश्वर की इच्छा का पालन करने की पहली सीढ़ी है (यूह. 6:29)।

7:22, 23 न्याय के **दिन** जब अविश्वासी लोग मसीह के सामने खड़े होंगे (प्रका. 20:11–15),तब **बहुतेरे** उसे स्मरण दिलाएंगे कि उन्होंने **भविष्यद्वाणी** की, या **दुष्टात्माओं को** निकाला, या **बहुत अचम्भे के काम** किए – और यह सब कुछ उन्होंने उसके **नाम** से किया। परन्तु अपने पक्ष में उनका यह विरोध व्यर्थ जाएगा। प्रभु यीशु उन्हें यह **खुलकर कह** देगा कि उसने उन्हें **कभी नहीं जाना** या उसने उन्हें कभी भी अपने अपनों के रूप में स्वीकार नहीं किया।

इन पदों के द्वारा हम यह सीखते हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि सारे आश्चर्यकर्म परमेश्वर की ओर से हों और सारे आश्चर्यकर्म करने वाले परमेश्वर की ओर से हों। आश्चर्यकर्म का सीधा सीधा अर्थ होता है कि एक अलौकिक शक्ति सक्रिय है। यह शक्ति ईश्वरीय या शैतानी दोनों ही हो सकती है। शैतान अपने लोगों को शक्ति दे सकता है कि वे *अस्थायी* रूप से दुष्टात्माओं को निकालें, ताकि लोगों में यह भ्रम उत्पन्न हो कि यह आश्चर्यकर्म ईश्वरीय है। ऐसे मामलों में वह अपने राज्य में भीतरी फूट नहीं डाल रहा है, परन्तु भविष्य में दुष्टात्माओं द्वारा वश में किए जाने के लिए एक और बदतर परिस्थिति के लिए षड्यंत्र रच रहा है।

ड. चट्टान पर नींव (7:24–29)

7:24–27 प्रभु यीशु अपने उपदेश का समापन एक दृष्टांत के साथ करता है जिसमें आज्ञाकारिता के महत्व पर जोर दिया गया है। **ये बातें** सुन लेना ही पर्याप्त नहीं है; हमें इन पर चलना आवश्यक है। जो चेला यीशु की आज्ञाओं को **सुनकर** उन्हें **मानता** है वह उस **बुद्धिमान मनुष्य** के समान है **जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।** उसका घर (जीवन) एक मजबूत नींव है और, जब **मेंह** और **आंधियाँ** चलती और उसे टक्कर मारती हैं तब वह नहीं गिरता।

7:26–27 जो मनुष्य प्रभु यीशु की **बातें सुनता है,** परन्तु **उन पर नहीं चलता** वह **उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया।** ऐसा मनुष्य आँधियों के सामने स्थिर नहीं रह पाएगा: जब **मेंह** बरसेगा और **आँधियां** चलेंगी, तब घर गिर जाएगा क्योंकि ऐसे घर की नींव मजबूत नहीं होती।

यदि एक व्यक्ति पहाड़ी उपदेश के सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है, तो संसार उसे मूर्ख कहता है; प्रभु यीशु उसे **बुद्धिमान मनुष्य** कहता है। संसार की समझ के अनुसार बुद्धिमान व्यक्ति वह होता है जो देखी हुई बातों के अनुसार जीता है, जो वर्तमान के लिए जीता है, और जो अपने लिए जीता है; प्रभु यीशु ऐसे व्यक्ति को मूर्ख कहता है। उद्धार का सुसमाचार सुनाते समय घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख व्यक्ति का उदाहरण देना गलत नहीं है। बुद्धिमान व्यक्ति अपना पूरा भरोसा चट्टान, अर्थात्, हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह पर रखता है। मूर्ख व्यक्ति मन फिराने से मना कर देता है और इस बात से इंकार कर देता है कि यीशु ही उसके उद्धार की एकमात्र आशा है। परन्तु प्राथमिक व्याख्या के अनुसार यह दृष्टान्त उद्धार के बाद के हमारे व्यवहारिक मसीही जीवन में लागू किए जाने के लिए है।

7: 28, 29 हमारा प्रभु जब अपनी बात **कह चुका,** तो **भीड़** उसके सन्देश को सुनकर **चकित** हुई। यदि हम पहाड़ी उपदेश को पढ़ कर इसके क्रान्तिकारी गुण पर चकित नहीं होते, तो इसका अर्थ यह है कि हम इसके अर्थ को समझने में असफल हो गए।

लोगों ने प्रभु यीशु और शास्त्रियों द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं के अन्तर को पहचान लिया। प्रभु यीशु अधिकार के साथ बोलता था; शास्त्रियों के वचन सामर्थहीन थे। प्रभु यीशु की आवाज़ में मौलिकता थी; शास्त्रियों की आवाजें एक प्रतिध्वनि थी। जैमीसन, फाऊसेट और ब्राऊन इस विषय पर यह कहते हैं:

> एक व्यवस्थापक, व्याख्याकार और न्यायी के रूप में, ईश्वरीय अधिकार की चेतना की ऐसी किरण

उसकी शिक्षाओं से फूटती थी, कि शास्त्रियों की शिक्षाएं उसके सामने सिर्फ बकबक ही लगती थीं।[10]

V. सामर्थ और अनुग्रह से किए गए मसीह के आश्चर्यकर्म, और उन पर विभिन्न प्रतिक्रियाएं (8:1–9:34)

8–12 अध्यायों में प्रभु यीशु ने इस बात के ठोस और सटीक प्रमाण प्रस्तुत किए कि सचमुच में वह वही मसीहा है जिसके बारे में भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी। उदाहरण के लिए, यशायाह ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह अन्धों की आँखे खोलेगा, लंगड़ों को चंगा करेगा, बहरों के कानों को खोल देगा, और गूंगों को गीत गाने के लिए आवाज देगा (35:5, 6)। इन भविष्यद्वाणियों को पूरी करने के द्वारा यीशु ने यह सिद्ध कर दिया कि वही मसीह है। इस्राएल, पवित्रशास्त्र की बात को ध्यान में रखता, तो मसीह के रूप में यीशु को पहचानने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती। परन्तु जो यीशु को मसीह के रूप में नहीं देख पाए उनके समान अन्धा और कोई नहीं हो सकता।

इन अध्यायों में जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है, वे कालक्रम के अनुसार नहीं, परन्तु विषय के अनुसार जमाई गई हैं। यह प्रभु की सेवकाई का पूरा ब्यौरा नहीं है, परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा चुनी गई उन घटनाओं का प्रस्तुतीकरण है कि उद्धारकर्ता के जीवन के कुछ अभिप्रायों (उद्देश्यों) को चित्रित किया जा सके। इस प्रस्तुतीकरण में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं:

1. बीमारियों, दुष्टात्माओं, मृत्यु, और प्रकृति के तत्वों पर मसीह का परमाधिकार।
2. जो लोग उसके पीछे चलेंगे उनके जीवन का सर्वोच्च प्रभु होने का दावा।
3. अधिसंख्य इस्राएली जाति के द्वारा, विशेष कर धार्मिक अगुवों के द्वारा यीशु को मसीह मानने से इंकार।
4. अन्यजातियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में खुशी खुशी स्वीकार करना।

अ. कोढ़ पर अधिकार (8:1–4)

8:1 यद्यपि यीशु की शिक्षा सुधारवादी और अत्यंत कठिन थी, तौभी इसमें एक आकर्षण शक्ति थी – इसमें इतनी शक्ति थी कि **बड़ी भीड़** उसके **पीछे** हो ली। सत्य अपने आप में ही एक प्रमाण है, यद्यपि लोग इसे शायद पसन्द न करें, पर वे इसे कभी भूल नहीं सकते।

8:2 **एक कोढ़ी** यीशु के पास आया और चंगाई के लिए उसने एक करुण निवेदन किया। इस कोढ़ी को विश्वास था कि प्रभु उसे चंगा कर सकता है, प्रभु सच्चे विश्वास को कभी हताश नहीं करता। कोढ़ पाप का एक उपयुक्त चित्रण है क्योंकि यह घृणित, विनाशकारी, संक्रामक, और कुछ रूपों में मानवों द्वारा असाध्य है।[11]

8:3 कोढ़ी लोग अछूत थे। उसके साथ शारीरिक सम्पर्क होने से एक व्यक्ति संक्रमित होने के खतरे में पड़ सकता था। यदि यह व्यक्ति यहूदी हो, तो कोढ़ी से शारीरिक सम्पर्क होने पर वह अपवित्र हो जाता था, अर्थात्, वह इस्राएल की सभा में आराधना करने के अयोग्य ठहरता था। परन्तु जब यीशु ने कोढ़ी को **छुआ** और चंगाई देने वाले वचन कहे, तो **कोढ़ . . . तुरन्त** गायब हो गया।

8:4 मत्ती के सुसमाचार में यह पहला उदाहरण है जहाँ यह अंकित किया गया है कि यीशु ने किसी को आदेश दिया कि इस आश्चर्यकर्म के विषय में या जो कुछ उन्होंने देखा है उसके विषय में वे **किसी से** कुछ **न** कहे (9:30; 12:16; मरकुस 5:43; 7:36; 8:26)। इसका कारण शायद यह था कि वह जानता था कि कुछ लोग सिर्फ रोमी साम्राज्य की आधीनता से छुटकारा पाने में ही रूचि रखते हैं। परन्तु वह जानता था कि इस्राएल ने अब तक मन नहीं फिराया है, और इस्राएली जाति उसके आत्मिक नेतृत्व का इंकार कर देगी, और उसे पहले क्रूस पर चढ़ना आवश्यक है।

मूसा की व्यवस्था के आधीन, **याजक** लोग वैद्य की भूमिका भी पूरी करते थे। जब एक कोढ़ी शुद्ध हो जाता था, तो यह आवश्यक था कि वह भेंट लेकर आए और याजक के सामने उपस्थित हो ताकि वह उसे शुद्ध घोषित करे (लैव्य. 14:4–6)। इस बात पर कोई शंका नहीं है कि यह एक कोढ़ी के शुद्ध होने की एक दुर्लभ घटना थी, और इसलिए यह एक असाधारण बात थी, बल्कि इस घटना से इस याजक को भी सचेत हो जाना था कि अन्ततः मसीह प्रगट हो चुका है। परन्तु हमें यहाँ पर इस प्रकार की किसी भी प्रतिक्रिया के बारे में पढ़ने को नहीं मिलता। यीशु ने कोढ़ी से कहा कि वह इससे सम्बन्धित व्यवस्था को पूरी करे।

इस आश्चर्यकर्म के आत्मिक संकेत स्पष्ट हैं: मसीहा इस्राएल में आ चुका है कि वह इस्राएली जाति को उसके रोग से चंगाई प्रदान करे। प्रभु ने इस आश्चर्यकर्म को अपने मसीह होने के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया। परन्तु इस्राएली जाति अपने छुटकारा देने वाले को स्वीकार करने के लिए अब तक तैयार नहीं हुई थी।

ब. लकवे पर अधिकार (8:5–13)

8:5, 6 अन्यजाति **सूबेदार** के विश्वास को यहूदियों द्वारा अस्वीकार किए जाने की प्रवृत्ति के विपरीत बताते हुए प्रस्तुत किया गया है। यदि इस्राएल अपने राजा को स्वीकार नहीं करेगा, तो तुच्छ समझे जाने वाले अन्यजाति उसे स्वीकार कर लेंगे। सूबेदार एक रोमी अधिकारी था जो लगभग सौ पुरुषों के ऊपर अधिकारी था, और वह कफरनहूम या इसके आसपास नियुक्त किया गया था। वह यीशु के पास अपने **सेवक** की चंगाई के लिए प्रार्थना करने **आया**, उसका सेवक एक भयानक और पीड़ादायक लकवे से गम्भीर रूप से ग्रसित था। यह तरस का एक असामान्य प्रदर्शन था – अधिकांश अधिकारी अपने सेवक के प्रति इस प्रकार की चिन्ता नहीं दिखाते।

8:7–9 जब प्रभु **यीशु** ने बीमार व्यक्ति से मुलाकात करने के लिए जाना चाहा, तब **सूबेदार** ने सचमुच में अपने विश्वास की वास्तविकता और गहराई को प्रदर्शित किया। उसने कुछ इस प्रकार से कहा, ''**हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू** मेरे घर में आए। ऐसे भी, इसकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तेरे **कह** देने से ही मेरा दास आसानी से चंगा हो जाएगा। मैं जानता हूँ कि अधिकार क्या होता है। मैं एक **पराधीन** व्यक्ति हूँ। मैं अपने अधिकारियों के आदेशों का पालन करता हूँ, और जो मेरे आधीन हैं उन्हें आदेश देता हूँ। मेरे आदेशों का पूरी तरह से पालन किया जाता है। तो फिर मेरे सेवक की बीमारी पर तेरे वचनों का अधिकार और कितना अधिक न होगा!''

8:10–12 यीशु ने इस अन्यजाति व्यक्ति के विश्वास को देखकर **अचम्भा** किया। यह उन दो अवसरों में से एक है जब यीशु ने अचम्भा किया हो; दूसरी बार उसने यहूदियों के अविश्वास को देखकर अचम्भा किया था (मरकुस 6:6)। उसने परमेश्वर के चुने हुए लोगों, **इस्राएल**, के बीच में कभी भी **ऐसा विश्वास नहीं देखा** था। इस बात से प्रेरित हो कर उसने यह बताया कि उसके आने वाले राज्य में सारे संसार से अन्यजाति लोग यहूदी कुलपिताओं के साथ सहभागिता का आनन्द लेने के लिए भीड़ की भीड़ उमड़ पड़ेंगे जबकि इस्राएली **राज्य की सन्तान बाहर अन्धियारे में डाल दिए जाएंगे** जहाँ वे विलाप करेंगे और अपने **दाँतों** को पीसेंगे। **राज्य के सन्तान** उन्हें कहा गया है जो जन्म से यहूदी हैं, जो अपने मुँह से तो दावा करते हैं कि परमेश्वर उनका राजा है, परन्तु उन्होंने सचमुच में अपना मन कभी नहीं फिराया। परन्तु यह सिद्धान्त आज भी लागू होता है। अनेक बच्चे जिन्हें मसीही परिवारों में जन्म लेने और पलने बढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है, वे नरक में नाश हो जाएंगे क्योंकि उन्होंने यीशु का इंकार कर दिया, जबकि जंगली और असभ्य समझे जाने वाले लोग स्वर्ग की अनन्त महिमा का आनन्द लेंगे क्योंकि उन्होंने सुसमाचार के सन्देश पर विश्वास किया।

8:13 यीशु ने सूबेदार से कहा, ''जा जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो।'' परमेश्वर के गुणों पर जिस अनुपात से भरोसा किया जाता है उसी अनुपात से विश्वास को प्रतिफल दिया जाता है। **उसका सेवक** उसी समय **चंगा** हो गया, यद्यपि उस समय यीशु मसीह सेवक से दूर था। हम इसे मसीह की वर्तमान की सेवकाई के रूप में देख सकते हैं; विशेषाधिकारों से वंचित अन्यजातियों को पाप के लकवे से वह चंगा करता है, यद्यपि वह स्वयं शारीरिक रूप से यहाँ उपस्थित नहीं है।

स. ज्वर पर अधिकार (8:14, 15)

पतरस के घर में भीतर प्रवेश करते ही यीशु ने उसकी **सास को ज्वर में पड़ा** पाया। **उसने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर** गायब हो गया। सामान्यत:, जब एक व्यक्ति का ज्वर उतरता है, उसके बाद कुछ समय तक वह व्यक्ति कमजोरी महसूस करता है, परन्तु यह चंगाई तत्काल मिली और पूरी तरह से मिली कि वह अपने बिस्तर से उठ सकी और उनकी **सेवा** करने लगी – उद्धारकर्ता ने उसे चंगाई देने के द्वारा उसके साथ जो किया उसके प्रति कृतज्ञता जताने की यह एक उपयुक्त अभिव्यक्ति थी। जब कभी हमें भी चंगाई प्राप्त होती है,

तब एक नई स्फूर्ति और समर्पण के साथ उसकी सेवा करने के द्वारा, हमें पतरस की सास के जीवन से मिली इस शिक्षा का अनुसरण करना चाहिए।

द. दुष्टात्माओं और विभिन्न प्रकार की बीमारियों पर अधिकार (8:16,17)

संध्या के समय, जब सब्त बीत चुका था (मरकुस 1:21–34), लोग **बहुत** से दुष्टात्माग्रसित लोगों को लेकर उसके पास आए। इन दयनीय व्यक्तियों के भीतर दुष्टात्माएं वास कर रही थीं और इनके जीवन को अपने वश में कर चुकी थीं। ऐसे लोग अक्सर ज्ञान और सामर्थ का ऐसा प्रदर्शन करते थे जो मनुष्य की क्षमता से बाहर की बात है; दूसरी ओर उन्हें घोर यातनाएं दी जा रही थीं। कभी कभी उनका व्यवहार पागल व्यक्तियों की तरह होता था, परन्तु इसका कारण उनकी शारीरिक या मानसिक अवस्था नहीं, परन्तु दुष्टात्माएं थीं। यीशु ने **उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया**।

उसने **सब बीमारों को चंगा किया**, और इस तरह से उसने यशायाह 53:4 में दी गई भविष्यद्वाणी को पूरा किया, ‘‘**उसने हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया**।’’ पद 17 का प्रयोग अक्सर विश्वास से चंगा करने वालों द्वारा यह जताने के लिए किया जाता है कि प्रभु द्वारा क्रूस पर चुकाए गए प्रायश्चित में हमारी चंगाई है, और एक विश्वासी विश्वास के आधार पर चंगाई की मांग कर सकता है। परन्तु यहाँ पर परमेश्वर का आत्मा इस भविष्यद्वाणी को हमारे उद्धारकर्ता की सांसारिक चंगाई सेवकाई पर लागू कर रहा है, क्रूस पर किए गए उसके कार्य पर *नहीं*।

अब तक हमने इस अध्याय में निम्नलिखित चार आश्चर्यकर्मों को देखा है:

1. यहूदी कोढ़ी को चंगा करना, चंगाई के समय मसीह उसी स्थान पर उपस्थित था।
2. सूबेदार के सेवक को चंगा करना, चंगाई के समय इस समय मसीह उस स्थान से कुछ दूरी पर था।
3. पतरस की सास को चंगा करना, चंगाई के समय यीशु उसी घर में था।
4. सब दुष्टात्माग्रसित और बीमारों को चंगा करना, चंगाई के समय यीशु उसी स्थान पर उपस्थित था।

गेबेलिन नामक बाइबल के एक विद्वान का यह मानना है कि ऊपर दी गई चार बातें हमारे प्रभु की सेवकाई के चार चरणों के सूचक हैं:

1. मसीह अपने प्रथम आगमन पर, अपनी प्रजा इस्राएल की सेवा करता है।
2. अन्यजातियों के बीच सेवा का समय, जिसमें यहूदी लोग नदारद हैं।
3. उसका दूसरा आगमन, जब वह घर में प्रवेश करेगा, और इस्राएल के साथ सम्बन्ध को फिर से जोड़ेगा और सिय्योन की बीमार बेटी को चंगा करेगा।
4. हजार वर्ष का राज्य, जब सारे दुष्टात्माग्रसित और बीमार चंगे किए जाएंगे।[12]

यह आश्चर्यकर्मों में पाई गई शिक्षा की प्रगति का एक रोचक विश्लेषण है, और इससे हमें अपने आप को पवित्रशास्त्र के छिपे हुए गहरे अर्थों के प्रति सचेत करना चाहिए। किन्तु, हमें इस बात को लेकर सावधान रहना है, कि हम इस विधि को ऐसे चरम बिन्दुओं तक जा कर लागू न करें जहाँ से ऐसा करना हास्यपद प्रतीत हो।

इ. मानवीय इंकार का आश्चर्यकर्म (8:18–22)

हमने मसीह को बीमारियों और दुष्टात्माओं पर अधिकार का प्रयोग करते हुए देखा। परन्तु जब वह स्त्री और पुरुषों से सीधे सम्पर्क में आता है तब उसे विरोध का सामना करना पड़ता है – इसे मानवीय इंकार का आश्चर्यकर्म कहा गया है।

8:18–20 जब **यीशु** कफरनहूम से गलील की झील को पार कर पूर्व की ओर जाने के लिए तैयार हुआ, तब एक अति–आत्मविश्वास से भरा हुआ **शास्त्री** उसके सामने आया और उससे प्रतिज्ञा करने लगा कि वह यीशु के ‘‘पीछे कहीं भी’’ जाने को तैयार है। प्रभु ने उत्तर देते हुए उसे इसके लिए चुकाई जाने वाली कीमत के बारे में सोचने की चुनौती दी – अपने आप का इंकार करने वाला जीवन। **लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की भी जगह नहीं है।** अपनी सार्वजनिक सेवकाई के समय, उसके पास उसका कोई अपना घर नहीं था;

किन्तु, कुछ ऐसे परिवार थे, जहाँ एक अतिथि के रूप में उसका स्वागत होता था और सामान्यत: उसके सोने के लिए स्थान होता था। उसके ये शब्द आत्मिक अर्थों में कहे गए अधिक प्रतीत होते हैं: यह संसार उसके लिए सच्चे, और स्थायी विश्राम का प्रबन्ध नहीं कर सकता। उसके पास एक काम है जिसे पूरा किए बिना वह विश्राम नहीं कर सकता। यही बात उसके अनुयायियों पर भी लागू होती है; यह संसार उनके लिए विश्राम करने का स्थान नहीं है – या ऐसा कहना चाहिए कि यह संसार उनके लिए विश्राम करने का स्थान न हो।

8:21 **एक और** अच्छे विचारों वाला अनुयायी उसके पीछे चलने की इच्छा प्रगट करता है, परन्तु उसकी प्राथमिकता कुछ और थी: **''हे प्रभु, मुझे पहले, जाने दे कि अपने पिता को गाढ़ दूं।''** उसने अपने आप को मसीह से पहले रखा। यद्यपि यह पूर्णत: उचित है कि एक व्यक्ति अपने पिता को ससम्मान मिट्टी दे, परन्तु यह तब गलत हो जाता है जब ऐसा उचित कार्य उद्धारकर्ता की बुलाहट के उपर प्राथमिकता लेने लगे।

यीशु ने उसे कुछ इस प्रकार से उत्तर दिया, ''तेरा पहला कर्तव्य यह है कि तू **मेरे पीछे हो ले**। आत्मिक **मुरदों को** शारीरिक **मुरदे गाड़ने दे**। एक उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति इस प्रकार का कार्य करे। परन्तु तेरे लिए एक ऐसा कार्य है जिसे सिर्फ तू ही कर सकता है। अपने जीवन की उत्तम चीज़ों को उन बातों को समर्पित कर जिनके लिए ये उत्तम बातें तुझ में पाई जाती हैं। इन्हें हल्की फुल्की बातों के लिए पीछे व्यर्थ न कर।'' यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि इन दोनों चेलों का प्रत्युत्तर क्या था। परन्तु इस बात के सशक्त संकेत हैं कि उन्होंने संसार में एक आरामदायक स्थान का प्रबन्ध करने के लिए और हल्की बातों के लिए अपना जीवन व्यतीत करने के लिए यीशु को छोड़ दिया। इससे पहले कि हम उन दोनों व्यक्तियों की आलोचना करें, यीशु द्वारा इस स्थल में शिष्यता के विषय में बताई गई दो बातों के प्रकाश में स्वयं को परखना है।

फ. प्रकृति पर अधिकार (8:23–27)

गलील की झील अचानक आने वाले ऐसे भयानक तूफान के लिए जानी जाती है जो उसमें पूरी तरह से उथल–पुथल मचा देती है। हवा उत्तर की ओर से यरदन की घाटी से बह कर आती है, और तंग घाटी में आते आते काफी तेज़ हो जाती है। जब वह गलील की झील को टक्कर मारती है, तो उसमें नाव चलाना अत्यंत असुरक्षित हो जाता है।

इस समय, यीशु पश्चिम की ओर से पूर्व की ओर झील पार कर रहा था। जब तूफान उठा, तब **वह** नाव में **सो रहा था**। भयभीत चेलों ने उसे जगाया और उत्तेजित हो कर उस से सहायता के लिए विनती करने लगे। उन्हें इस बात का श्रेय मिलना चाहिए कि वे सही व्यक्ति के पास गए। उनके अदने विश्वास के लिए उन्हें फटकार लगाने के बाद, उसने **आँधी और पानी को डाँटा**। जब **सब शान्त** हो गया, तो लोग **अचम्भा** करने लगे कि प्रकृति भी उनके इस दीन सहयात्री की आज्ञा का पालन करती है। वे यह कितना कम समझ पाए कि विश्व का सृष्टिकर्ता और पालनहार उस दिन उनके साथ नाव पर था!

यीशु के सभी अनुयायियों के जीवन में कभी न कभी तूफान आता है। अनेक बार हमें लगता है कि ऊँची उठती लहरें हमें बहा ले जाएंगी। यह जानना हमारे लिए क्या ही सुखद है कि यीशु भी हमारी नाव में हमारे साथ है। ''कोई भी जल उस जहाज को डूबा नहीं सकता जिसमें महासागर, पृथ्वी, और आकाश का स्वामी सो रहा है।'' और कोई दूसरा, प्रभु यीशु के समान जीवन के तूफानों को शान्त नहीं कर सकता।

ग. यीशु ने दुष्टात्माग्रसित दोव्यक्तियों को चंगा किया (8:28–34)

8:28 गलील की झील के पूर्वी ओर **गदरेनियों** का **देश** था।[13] जब यीशु वहाँ पहुँचा, तो उसका सामना दुष्टात्मा से ग्रसित **दो** अत्यंत हिंसक हो चुके व्यक्तियों से हुआ। दुष्टात्माग्रसित दोनों व्यक्ति गुफानुमा **कब्रों** में रहते थे और वे इतने **प्रचण्ड** (हिंसक) हो चुके थे कि दूसरों के लिए उस क्षेत्र में आना असुरक्षित हो गया था।

8:29–31 जब यीशु उनके पास आया, तो दुष्टात्माओं ने **चिल्लाकर कहा, ''हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दु:ख देने यहाँ आया है?''** वे जानती थीं

कि यीशु कौन है, और यह भी जानती थीं कि वह एक दिन उन्हें पूरी तरह से नाश कर देगा। इस मामले में उनका आध्यात्मज्ञान वर्तमान समय के अनेक उदारवादी आध्यात्मज्ञानियों की तुलना में काफी सटीक था। वे समझ गए कि यीशु अब उन्हें इन मनुष्यों के भीतर से बाहर निकाल देगा, उन्होंने उससे विनती की कि उन्हें पास ही चर रहे **बहुत से सूअरों** के **एक झुण्ड** में भेज दिया जाए।

8:32 यह बात हमें काफी विचित्र लगती है कि यीशु ने उनकी विनती स्वीकार कर ली। परन्तु सर्वसत्ताधारी प्रभु को दुष्टात्माओं की विनती क्यों माननी चाहिए? यीशु के द्वारा उठाए गए इस कदम को समझने से पहले हमें दो बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। पहली बात, दुष्टात्माएं देहरहित अवस्था में रहने से बचना चाहती हैं; वे मानव शरीर में वास करना चाहती हैं, या, यदि ऐसा सम्भव न हो, तो पशुओं या अन्य प्राणियों में वास करना चाहती हैं। दूसरी बात, दुष्टात्माओं का एकमात्र उद्देश्य विनाश करना ही होता है। यदि यीशु ने उन्हें इन दोनों व्यक्तियों से सीधे सीधे निकाल कर बाहर कर दिया होता, तो ये दुष्टात्माएं उस क्षेत्र के दूसरे लोगों के लिए खतरा बन जातीं। उन्हें सूअरों के झुण्ड में जाने की अनुमति देने के द्वारा, यीशु ने उन्हें मनुष्यों के भीतर घुसने से रोका और उनकी विनाशकारी ताकत को पशुओं तक ही सीमित कर दिया। जैसे ही वे उन व्यक्तियों से बाहर निकल कर सूअरों में जा घुसीं, तो सूअरों का **सारा झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा पड़ा** और डूब गया।

इस घटना से यह प्रगट होता है कि दुष्टात्माओं का अन्तिम लक्ष्य विनाश करना ही होता है, और इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि दो मनुष्यों के भीतर इतनी दुष्टात्माएं समा सकती हैं जितनी से दो हजार सूअर नाश हो जाएं (मर. 5:13)।

8:33, 34 सूअरों के चरवाहे दौड़ कर नगर को वापस गए और जो कुछ हुआ था कह सुनाया। इसे सुनकर भड़के हुए नागरिक यीशु के पास आए और उससे **विनती की** कि वह उस क्षेत्र को छोड़ कहीं और चला जाए। तब से सूअरों का अकारण वध करने के लिए यीशु की आलोचना की जाती है और उसे कहीं और चले जाने के लिए कहा जाता है क्योंकि वह सूअरों की तुलना में मनुष्यों को अधिक मूल्य देता है। यदि ये गदरेनी लोग यहूदी थे, तो उनके लिए सूअर पालना अपवित्र कार्य था। परन्तु चाहे वे यहूदी रहे हों या न रहे हों उनका दोष यह है कि उन्होंने दुष्टात्माग्रसित दो लोगों की तुलना में सूअरों के झुण्ड को अधिक महत्व दिया।

ह. पाप क्षमा करने का अधिकार (9:1–8)

9:1 गदरेनियों के द्वारा तिरस्कार कर दिए जाने के बाद, उद्धारकर्ता ने फिर से गलील की झील को पार किया और कफरनहूम में आया, जो नासरत के लोगों द्वारा उसे मार डालने का प्रयास किए जाने (लूका 4:29–31) के बाद से उसका अपना **नगर** बन चुका था। इसी स्थान पर उसने अपने सबसे महान आश्चर्यकर्मों में से कुछ किए थे।

9:2 चार मनुष्य **एक झोले के मारे हुए** व्यक्ति को एक कामचलाऊ बिस्तर या दरी पर डाल कर उसके पास लाए। मरकुस अपने सुसमाचार में इस घटना का वर्णन करते हुए यह बताता है कि भीड़ के कारण, उन्हें उस मनुष्य को छत के खपरे हटा कर ऊपर से नीचे यीशु के सामने उतारना पड़ा (मर. 2:1–12)। जब **यीशु** ने **उनका विश्वास देखा**, तो उसने **उस झोले के मारे हुए से कहा, "हे पुत्र, ढ़ाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।"** ध्यान दें कि उसने *उनका* विश्वास देखा। उन मनुष्यों के विश्वास ने ही उन्हें प्रेरित किया कि वे उस दुर्बल को यीशु के पास लेकर आएं, और उस रोगी का विश्वास चंगाई के लिए यीशु पर प्रगट हुआ। हमारे प्रभु ने पहले उसे **पाप क्षमा** की घोषणा करते हुए इस विश्वास का प्रतिफल दिया। इस महान वैद्य ने बीमारी के लक्षण का इलाज करने से पहले बीमारी के मूल कारण को दूर किया; उसने बड़ी आशीष को पहले दिया। इससे यह प्रश्न सामने आता है कि क्या मसीह ने कभी किसी व्यक्ति को उसे उद्धार दिए बिना भी चंगा किया।

9:3–5 जब **कई शास्त्रियों ने** यीशु को झोले के मारे के पाप क्षमा की घोषणा करते हुए सुना, तो अपने मन में ही उसे परमेश्वर की निन्दा करने का दोषी मानने लगे। आखिर, पाप क्षमा करने का अधिकार सिर्फ परमेश्वर को है – और निश्चय ही वे उसे परमेश्वर के रूप में स्वीकार नहीं करने वाले थे! सर्वज्ञानी प्रभु यीशु ने उनके विचारों को जान लिया, और उनके अविश्वासी **मन** के बुरे विचार के लिए उन्हें फटकारा, और फिर उन से पूछा कि क्या यह

कहना **सहज** है, ''**तेरे पाप क्षमा हुए,**'' **या यह कि** ''**उठ और चल फिर।**'' वास्तव में दोनों ही बातें कहना उतना ही सहज है, परन्तु इनमें से कौन सा काम *करने में* कठिन है? मानवीय प्रयास द्वारा दोनों ही कार्य कर पाना असम्भव है, परन्तु पहली आज्ञा का परिणाम देखा नहीं जा सकता जबकि दूसरी आज्ञा के प्रभाव को तुरन्त ही देखा जा सकता है।

9:6, 7 शास्त्रियों को यह दर्शाने के लिए कि उसे **पृथ्वी पर पाप क्षमा** करने का अधिकार है (और इसलिए उसका आदर परमेश्वर के रूप में करना चाहिए), यीशु ने अपने आप को नीचे करते हुए (दीन बनाते हुए) एक ऐसा आश्चर्यकर्म किया जिसे वे *देख* सकते थे। उस **झोले के मारे हुए** से उसने कहा, ''**उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।**''

9:8 जब भीड़ ने उस व्यक्ति को अपना बोरिया बिस्तर उठाकर चलते हुए देखा, तो वे भयभीत और अचम्भित हुए। वे एक अलौकिक उपस्थिति और सक्रियता से भयभीत थे। वे **परमेश्वर की महिमा** करने लगे कि उसने **मनुष्य को ऐसा अधिकार** दिया। परन्तु वे आश्चर्यकर्म के महत्व को समझने से पूरी तरह से चूक गए। उस झोले के मारे को *देखी जा सकने वाली* शारीरिक चंगाई इसलिए दी गई थी ताकि इस *अनदेखे* आश्चर्यकर्म की पुष्टि की जा सके कि उस मनुष्य के पाप क्षमा किए जा चुके हैं। यह देखकर उन्हें यह समझ जाना था कि उन्होंने जो कुछ देखा वह इस बात को नहीं दर्शाता कि परमेश्वर द्वारा किसी मनुष्य को अधिकार दिया गया है, परन्तु यह कि प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में उनके बीच में स्वयं परमेश्वर उपस्थित है। परन्तु उन्होंने इस बात को नहीं समझा।

फरीसियों के विषय में, बाद की घटनाओं से हमें यह ज्ञात होता है कि उनका अविश्वास और विद्वेश और अधिक बढ़ता गया।

ई. यीशु महसूल लेने वाले मत्ती को बुलाता है (9:9–13)

9:9 उद्धारकर्ता के आसपास निर्मित हो रहे तनावपूर्ण वातावरण के वर्णन के मध्य मत्ती अपनी बुलाहट का साधारण और दीनतापूर्ण वर्णन करते हुए पाठकों को कुछ अस्थायी राहत देता है। एक महसूल लेने वाले या एक कर वसूलने वाले व्यक्ति, और उसके सहकर्मियों से यहूदी लोग अत्यंत घृणा करते थे क्योंकि उनके व्यवहार में टेढ़ापन रहता था, वे कर वसूल कर शोषण करते थे, और सबसे बड़ी बात, कि वे उस रोमी साम्राज्य के हितों के लिए कार्य करते थे जो इस्राएलियों को अपने आधीन किए हुए था। जब **यीशु** चुंगी की चौकी के पास से होकर निकला, उसने मत्ती से **कहा,** ''**मेरे पीछे हो ले।**'' मत्ती ने तुरन्त ही प्रत्युत्तर दिया; वह **उठ कर उसके पीछे हो लिया;** और यीशु का चेला बनने के लिए पारम्परिक रूप से बेईमानी का धंधा समझी जाने वाली इस नौकरी को त्याग दिया। जैसा कि किसी ने कहा है, ''उसने एक पक्की और आरामदायक नौकरी को छोड़ दिया, परन्तु उसे एक मंजिल मिल गई। उसने एक अच्छी आय खो दी परन्तु उसने आदर पा लिया। उसने एक आरामदायक सुरक्षित जीवन को खो दिया, परन्तु उसने एक ऐसे रोमांच को पा लिया जिसके बारे में उसने सपना भी नहीं देखा था।'' उसके महत्वपूर्ण प्रतिफलों में यीशु के बारह चेलों में से एक बनना और मत्ती रचित सुसमाचार का लेखक बनने का सम्मान पाना शामिल है।

9:10 यहाँ पर जिस भोज का वर्णन किया गया है वह यीशु के सम्मान में मत्ती के द्वारा आयोजित किया गया था (लूका 5:29)। यीशु को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने का और अपने सहकर्मियों को उद्धारकर्ता से परिचित कराने का उसका अपना तरीका था। इसलिए, जो अतिथि उस भोज में आए थे वे **महसूल लेनेवाले** थे जो सामान्यत: **पापियों** में गिने जाते थे!

9:11 उन दिनों की एक प्रथा थी कि मेज की तरफ मुँह करके पलंगनुमा बेन्च में टेक कर भोजन किया जाता था। **फरीसियों ने . . . यह देखकर** कि यीशु इस तरीके से इस असामाजिक तत्वों के साथ सम्बन्ध बना रहा है, उसके चेलों के पास गए और ''असामाजिक तत्वों के साथ सम्पर्क रखने'' का उसे दोषी बताया; निश्चय ही कोई भी सच्चा भविष्यद्वक्ता **पापियों** के साथ भोजन नहीं करेगा!

9:12 यीशु ने उन्हें ऐसा कहते सुन लिया और उत्तर दिया, ''**वैद्य भले चंगों को नहीं, परन्तु बीमारों को अवश्य है।**'' फरीसी लोग अपने आप को स्वस्थ समझते थे और यह स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक थे

कि उन्हें यीशु की आवश्यकता है। (वास्तव में वे आत्मिक रूप से अत्याधिक बीमार थे, और उन्हें चंगाई की अत्यंत आवश्यकता थी।) इसके विपरीत, महसूल लेने वाले और पापी अपनी वास्तविक अवस्था को स्वीकार करने और यीशु के उद्धार देने वाले अनुग्रह को खोजने के लिए अधिक इच्छुक थे। इसलिए यीशु पर लगाया गया दोष सही था! यीशु ने *अवश्य ही* पापियों के साथ भोजन किया। यदि उसने फरीसियों के साथ भोजन किया होता, तब भी यह दोष सही होता – शायद इसमें अधिक सत्यता होती! यदि यीशु ने हमारे इस संसार में पापियों के साथ भोजन नहीं किया होता, तो उसे हमेशा अकेले ही भोजन करना पड़ता। परन्तु यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि जब वह पापियों के साथ भोजन करता था, तब वह कभी भी उनके बुरे कार्यों में उनके साथ लिप्त नहीं होता था न ही वह अपनी गवाही के साथ किसी तरह से कोई समझौता करता था। उसने इस अवसर का लाभ उठाते हुए लोगों को सत्य और पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाहट दी।

9:13 फरीसियों के साथ यह समस्या थी कि यद्यपि वे यहूदी धर्म की रीतिविधियों का पालन बड़ी कड़ाई से करते थे, परन्तु हृदय कठोर, ठण्डे, और दयाहीन थे। इसलिए यीशु ने उन्हें यह चुनौती देकर चुप कर दिया कि वे यहोवा के इन वचनों के अर्थ को **सीख** लें, ''**मैं बलिदान नहीं, परन्तु दया चाहता हूँ**'' (होशे 6:6 से उद्धरित)। यद्यपि परमेश्वर ने बलिदान की व्यवस्था की स्थापना की, परन्तु वह नहीं चाहता था कि रीति विधियां भीतरी धार्मिकता का स्थान ले लें। परमेश्वर रीति विधि पसन्द करने वाला नहीं है, वह व्यक्तिगत भक्ति से रहित रीतिवधियों से प्रसन्न नहीं होता – जबकि फरीसी लोग बिल्कुल ऐसा ही कर रहे थे। वे व्यवस्था की छोटी से छोटी बातों का पालन करते थे परन्तु उन लोगों के प्रति कोई तरस नहीं दिखाते थे जिन्हें आत्मिक सहायता की आवश्यकता थी। वे सिर्फ स्वयं को अपने समान धर्मी जताने वाले लोगों के साथ सम्बन्ध रखना पसन्द करते थे।

इसके विपरीत, प्रभु यीशु ने बिल्कुल स्पष्ट रूप से उनसे कह दिया, ''**मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ**।'' प्रभु यीशु ने दया और बलिदान के लिए परमेश्वर की इच्छा को सिद्धता से पूर्ण किया। एक अर्थ में, संसार में कोई भी धर्मी नहीं है, इसलिए उसने सब लोगों को पश्चताप करने के लिए बुलाया। परन्तु यहाँ पर वह यह कह रहा है कि उसकी बुलाहट सिर्फ उन लोगों पर प्रभावी होती है जो अपने आप को पापियों के रूप में स्वीकार करते हैं। वह उन लोगों को चंगाई नहीं दे सकता जो घमण्डी, अपने आप को धर्मी समझने वाले, और मन न फिराने वाले लोग हैं – जैसा कि फरीसी लोग थे।

ज. यीशु से उपवास के विषय में प्रश्न पूछा जाता है (9:14–17)

9:14–17 इस समय तक **यूहन्ना** बपतिस्मा देने वाला शायद जेलखाने में डाल दिया गया था। उसके चेले यीशु के **पास आकर** उससे एक प्रश्न करते हैं। वे स्वयं **इतना** उपवास करते हैं, **पर** यीशु के **चेले** ऐसा **नहीं** करते। यीशु के चेले उपवास क्यों नहीं करते?

9:15 प्रभु ने एक उदाहरण देते हुए इसका उत्तर दिया। इस उदाहरण में वह अपने आप को **दूल्हा** बनाता है और अपने चेलों को विवाह के अतिथि। **जब तक** वह **उन के साथ** है, शोक का चिन्ह प्रगट करते हुए उपवास करने का कोई कारण नहीं है। परन्तु जब वह **उन से** ले लिया जाएगा; **उस समय** उसके चेले **उपवास** करेंगे। वह उन से ले लिया *गया* – मृत्यु और गाड़े जाने में, और चूंकि अपने स्वर्गारोहण के समय से शरीर रूप में अपने चेलों के पास नहीं रहा। यद्यपि यीशु के शब्दों में उपवास करने की *आज्ञा* नहीं दी गई है, परन्तु निश्चय ही उपवास को उसने उन लोगों के लिए एक उपयुक्त अभ्यास बताते हुए सही ठहराया है जो दूल्हे की वापसी की बाट जोह रहे हैं।

9:16 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेलों के द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रेरित होकर यीशु ने इस बात को सबके सामने रखा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अनुग्रह के एक नए युग की घोषणा करते हुए एक आत्मिक युग का समापन कर दिया, और वह यह दर्शाता है कि दोनों के अलग अलग सिद्धान्तों का मिश्रण नहीं किया जा सकता। व्यवस्था और अनुग्रह का मिश्रण करना वैसा ही होगा जैसे **पुराने पहिरावन** पर पैबन्द लगाने के लिए **कोरे कपड़े** (बिल्कुल नए कपड़े) का उपयोग करना। जब इस प्रकार का पैबन्द लगे कपड़ों को धोया जाता है, तो पैबन्द नए कपड़े का होने के कारण सिकुड़ जाता है, और इससे पुराना कपड़ा उघड़ने लगता है। उसे फिर से अलग करने

पर वस्त्र और अधिक बदतर हो जाता है। गिबेनिन की यह शिकायत बिल्कुल सही है:

> यहूदीवादी मसीहत जो, अनुग्रह और सुसमाचार का अंगीकार करती है, व्यवस्था का पालन करने और व्यवस्था पर आधारित धार्मिकता को बढ़ावा देने का प्रयास करती है, यह परमेश्वर की दृष्टि में मूरतों की पूजा करते हुए परमेश्वर को अपना प्रभु मानने का दावा करने वाले इस्राएलसे भी अधिक घृणित है।[14]

9:17 या फिर इस प्रकार की मिलावट **नया दाखरस पुरानी मशकों में** भरने जैसी होगी। नई दाखरस के सड़ने से उठने वाले फेन के दबाव में चमड़े की पुरानी मशकें फट जाएंगी क्योंकि पुरानी मशकों में लचीलापन कम रहता है। सुसमाचार से मिला जीवन और सुसमाचार से मिली स्वतंत्रता रीतिविधिवाद की मशकों को नष्ट कर देते हैं।

मसीही युग के आरम्भ के परिणामस्वरूप निश्चय ही तनाव उत्पन्न होने वाला था। जिस आनन्द को मसीह लेकर आया था वह आनन्द पुराना नियम के तौर तरीके और रीतिविधियों में नहीं समा सकता। इस आनन्द के लिए पूरी तरह से एक नई व्यवस्था की आवश्यकता थी। पेटींगिल इस बात को स्पष्ट करते हैं:

> इसलिए राजा अपने चेलों को पुराने . . . और नये . . . की मिलावट के विरुद्ध चेतावनी देता है . . . और तौभी मसीही संसार में यही किया जाता रहा है। यहूदी धर्म पर लगा पैबन्द हर जगह कलीसियाओं में अपनाया गया है और इस पुराने पहिरावन पर ''मसीहत'' का ठप्पा लगा दिया गया है। इसका परिणाम एक उलझा देने वाली मिलावट के रूप में सामने आया, जो न ही यहूदी धर्म था, न मसीहत, परन्तु मरे हुए कामों का एक विधिवादी रूप जिसने जीवते परमेश्वर पर भरोसे का स्थान हथिया लियाथा। सेंतमेंत मिले उद्धार के नए दाखरस को विधिवाद कीपुरानी मशक में उण्डेल दिया गया, और इसका परिणाम क्या हुआ? क्यों, चमड़े की थैलियाँ (मशकें) फट कर बर्बाद हो जाती हैं और दाखरस बह जाता है, और जीवन देने वाली अधिकांश बहुमूल्य खुराक नष्ट हो जाती है। व्यवस्था का भय नष्ट हो गया, क्योंकि इसमें अनुग्रह की मिलावट कर दी गई, और अनुग्रह की सुन्दरता और अनुग्रहकारी स्वभाव नष्ट हो गया, क्योंकि इसमें व्यवस्था के कामों की मिलावट कर दी गई।[15]

क. असाध्य रोगों को चंगा करने और मरे हुओं को जिलाने का अधिकार (9:18–26)

9:18, 19 कालखण्ड *(डिस्पेन्सेशन)* में परिवर्तन के सम्बन्ध में उपदेश के समय एक अवरोध उत्पन्न हो जाता है जब यहूदी आराधनालय का एक परेशान **सरदार** यीशु के पास आता है जिसकी **पुत्री** बिल्कुल अभी **अभी मरी** थी। उसने यीशु को प्रणाम किया, और उससे निवेदन करने लगा कि वह चल कर उसकी पुत्री को फिर से जीवित कर दे। यह एक अपवाद था कि आराधनालय का यह सरदार यीशु से सहायता मांग रहा था; अधिकांश यहूदी अगुवे डरते थे कि यीशु से सहायता मांगने पर उसके साथी उनसे घृणा कर उनका तिरिस्कार कर देंगे। **यीशु** ने अपने चेलों के साथ उस सरदार के घर की ओर जाने के लिए बढ़ने के द्वारा उस के विश्वास का सम्मान किया।

9:20 एक और विघ्न उत्पन्न हो जाता है! इस बार **एक** ऐसी **स्त्री** के द्वारा यह विघ्न उत्पन्न होता है जो **बारह वर्ष से** लोहू बहने के रोग से पीड़ित थी। यीशु इस प्रकार के विघ्नों से कभी भी नाराज नहीं होता था; वह एक सधा हुआ व्यक्ति था और उसके पास कभी भी पहुँचा जा सकता था।

9:21, 22 चिकित्सा विज्ञान इस स्त्री को चंगा कर पाने में असफल हो गया था; बल्कि उसकी स्थिति और भी बिगड़ती जा रही थी (मरकुस 5:26)। जब उसकी हालत बिल्कुल खराब हो गई तो वह यीशु से मिलने गई – या कह सकते हैं कि उसने भीड़ से घिरे यीशु को देखा। यह विश्वास करते हुए कि वह उसे चंगा कर सकता है और उसे चंगा करने को तैयार है वह भीड़ को चीरते हुए उसके पास गई और **उसके वस्त्र के** आँचल को छू लिया। सच्चा विश्वास यीशु के द्वारा कभी अनदेखा नहीं किया जाता। वह उसकी ओर मुड़ा और उसे उसने चंगा घोषित कर दिया; तुरन्त ही **वह स्त्री** बारह वर्ष में पहली बार **चंगी हो गई**।

9:23, 24 एक बार फिर से मत्ती हमारा ध्यान आराधनालय के सरदार के ओर ले जाता है जिसकी पुत्री अभी अभी मर गई थी। **जब यीशु** उसके **घर** पहुँचा, तब भाड़े के शोक करने वाले विलाप कर रहे थे, इस प्रकार के विलाप को किसी ने *''सिन्थेटिक ग्रीफ़''* (कृत्रिम शोक)

नाम दिया है। उसने आदेश दिया कि उस कमरे से सारे मुलाकातियों को बाहर निकाला जाए, और उसने यह घोषणा भी की कि यह **लड़की मरी नहीं, पर सोती है**। बाइबल के अधिकांश विद्वानों का ऐसा मानना है कि प्रभु यहाँ पर *सोने* को मृत्यु के लिए एक सांकेतिक भाषा के रूप में प्रयोग कर रहे थे। किन्तु, कुछ लोगों का मानना है, कि वह लड़की कोमा में थी। यह व्याख्या इस बात से इंकार नहीं करती कि यदि वह मर गई होती तो यीशु उसे जीवित नहीं कर पाता, परन्तु इस व्याख्या में इस बात पर जोर दिया गया है कि यदि वह लड़की वास्तव में नहीं मरी थी तो यीशु अपनी ईमानदारी के कारण मरे हुओं को जिलाने का श्रेय नहीं लेना चाहता था। सर राबर्ट एन्डरसन इसी मत को मानते हैं। वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि लड़की के पिता और अन्य सभी ने कहा कि वह मर चुकी है, परन्तु **यीशु** ने कहा कि वह **मरी नहीं** है।

9:25, 26 चाहे जो भी हो, प्रभु ने उस लड़की का **हाथ पकड़ा** और एक आश्चर्यकर्म हुआ – वह उठ गई। इस आश्चर्यकर्म की खबर को सारे नगर में फैलने में समय नहीं लगा।

ल. दृष्टि देने का अधिकार (9:27–31)

9:27,28 जब यीशु आराधनालय के सरदार की बस्ती **से आगे बढ़ा**, तब **दो अन्धे उसके पीछे** चले आए, और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें दृष्टि प्रदान करे। यद्यपि इन व्यक्तियों के पास दृष्टि क्षमता नहीं थी, परन्तु उनकी आत्मिक दृष्टि अत्यंत तीक्ष्ण थी। यीशु को **दाऊद की सन्तान** कह कर सम्बोधित करने के द्वारा, उन्होंने उसे इस्राएल के बहुप्रतीक्षित मसीह और अधिकारिक राजा के रूप में पहचान लिया। और वे इस बात को जानते थे कि जब मसीह आएगा, तो उसकी योग्यताओं में से एक यह होगी कि वह अन्धों को आँखे देगा (यशा. 61:1, *आर.एस.वी. मार्जिन*)। जब यीशु ने उनसे यह पूछते हुए उनके विश्वास को परखा कि क्या वे यह विश्वास करते हैं कि वह **यह कर सकता है** (उन्हें दृष्टि दे सकता है), तब उन्होंने बेहिचक उत्तर दिया, "**हाँ, प्रभु।**"

9:29,30 उसके बाद महान वैद्य ने उनकी आँखों को छुआ और उन्हें आश्वस्त किया कि इसलिए कि वे यह विश्वास करते हैं, वे देखेंगे। तुरन्त ही उनकी आँखे खुल गईं और वे पूरी तरह से सामान्य हो गए।

मनुष्य कहता है, "देख कर ही विश्वास किया जा सकता है।" परमेश्वर कहता है, "विश्वास कर के ही देखा जा सकता है।" यीशु ने मार्था से पूछा, "क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?" (यूहन्ना 11:40)। प्रेरित यूहन्ना कहता है, "मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो इसलिए लिखा है . . . कि तुम जानो . . ." (1 यूहन्ना 5:13)। परमेश्वर उस प्रकार के विश्वास से प्रसन्न नहीं होता जो विश्वास करने से पहले आश्चर्यकर्म देखना चाहते हैं। वह चाहता है कि हम सीधे सीधे उस पर इस आधार पर विश्वास कर लें कि वह परमेश्वर है।

यीशु ने चंगे किए गए व्यक्तियों को सख्त रूप से क्यों चिताया कि वे यह बात किसी को न बताएं? 8:4 पर दी गई टिप्पणी में, हमारा यह मानना है कि शायद वह नहीं चाहता था कि समय से पहले उसे राजा के रूप में सिंहासन पर बैठाने के लिए मुहिम छेड़ दी जाए। लोगों ने अब तक मन नहीं फिराया था; वह उन पर तब तक राज्य नहीं कर सकता था जब तक वे नया जन्म न लें। साथ ही, यीशु के पक्ष में क्रान्तिकारी मुहिम के कारण रोमी साम्राज्य की ओर से यहूदियों को घोर प्रतिहिंसा का सामना करना पड़ता। इन सब के साथ साथ, राजा के रूप में राज्य करने से पहले यीशु को क्रूस पर चढ़ना आवश्यक था; कलवरी के मार्ग पर आने वाली हर एक रूकावट परमेश्वर की पहले से ठहराई गई योजना से अलग थी।

9:31 दृष्टि पाने के बाद अतिउल्लास से अपनी कृतज्ञता जताते हुए दोनों व्यक्तियों ने इस आश्चर्यजनक चंगाई के बारे में सब को बताते हुए **उसका यश फैला दिया**। यद्यपि शायद हम उनके प्रति सहानुभूति जताएं, यहाँ तक कि उनकी इस उल्लासपूर्ण गवाही की सराहना भी करें, परन्तु दु:ख की बात यह है कि उन्होंने बुद्धिहीनों की तरह यीशु की आज्ञा का उल्लंघन किया, और भलाई की तुलना में अधिक हानि कर डाला, इससे शायद उथली जिज्ञासा ही जाग पाई, बजाए इसके कि आत्मा से प्रेरित रूचि। कृतज्ञता भी अनाज्ञाकारिता के लिए एक उचित बहाना नहीं है।

म. बोल सकने की क्षमता देने का अधिकार (9:32–34)

9:32 पहले यीशु ने मुर्दे को जीवन दिया; उसके बाद उसने अन्धों को दृष्टि प्रदान की; अब वह गूंगे को बोलने की क्षमता प्रदान करता है। आश्चर्यकर्मों के क्रम में हमें एक आत्मिक क्रम भी दिखाई देता है – जीवन पहले, फिर समझ, और उसके बाद गवाही।

एक दुष्टात्मा के कारण यह व्यक्ति गूंगा हो गया था। किसी ने उसकी चिन्ता करते हुए उसे यीशु के पास ला दिया। परमेश्वर उन अनाम लोगों को आशीष दे जो दूसरों को यीशु के पास लाने के लिए परमेश्वर का माध्यम बनते हैं!

9:33 जैसे ही **दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा**। निश्चय ही हम ऐसा मान सकते हैं उसे बोलने की जो क्षमता दी गई उसे उसने उस व्यक्ति की आराधना करने और उसकी गवाही देने में उपयोग किया जिसने उस पर अनुग्रह दिखा कर उसे चंगा किया। आम लोगों ने यह मान लिया कि **इस्राएल** अद्वितीय आश्चर्यकर्मों का गवाह बन रहा है।

9:34 परन्तु फरीसियों ने उन्हें यह कहते हुए उत्तर दिया कि यीशु **दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है**। यही वह बात थी जिसे बाद में यीशु ने अक्षम्य (क्षमा न किया जा सकने वाला) पाप बताया (12:32)। जिन आश्चर्यकर्मों को यीशु पवित्र आत्मा की सहायता से कर रहा था, उन आश्चर्यकर्मों का श्रेय शैतान की शक्ति को देना पवित्र आत्मा की निन्दा थी। जबकि अन्य लोग यीशु के चंगाई देने वाले स्पर्श से आशीष पा रहे थे, फरीसी लोग आत्मिक रूप से मृत, अन्धे, और गूंगे बने रहे।

VI. मसीह-राजा के प्रेरितों को इस्राएल में प्रचार करने के लिए भेजा गया (9:35–10:42)

अ. खेत काटने के लिए मजदूरों की आवश्यकता (9:35–38)

9:35 इस पद में ''गलील की तीसरी परिक्रमा'' का आरम्भ पाया जाता है। **यीशु सब नगरों और गाँवों** में यात्रा कर के परमेश्वर के **राज्य** का सुसमाचार प्रचार करता गया, **राज्य** का सुसमाचार यह था कि यीशु इस्राएल का राजा है, और यदि इस्राएली जाति मन फिरा कर उसे अपना राजा स्वीकार करती है, तो वह उन पर राज्य करेगा। इस समय इस्राएल को इस राज्य का भागी बनने के लिए एक प्रमाणिक और निष्कपट प्रस्ताव दिया गया था। तब क्या होता, यदि इस्राएल ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया होता? बाइबल हमें इस प्रश्न का उत्तर नहीं देती। परन्तु हम अवश्य ही यह जानते हैं कि तब भी यीशु को मरना ही पड़ता ताकि वह एक धर्मी (न्यायोचित) आधार प्रदान कर सके जिसके द्वारा परमेश्वर सब समयों के पापियों को धर्मी (निर्दोष) ठहराता (या बाईज्जत बरी करता)।

जब यीशु शिक्षा देता और प्रचार करता था, तब वह सब प्रकार की बीमारियों से लोगो को चंगा करता था। जिस प्रकार से आश्चर्यकर्म, मसीह के दीनतापूर्व अनुग्रह में, उसके पहले आगमन की विशेषता थे, उसी तरह ये आश्चर्यकर्म सामर्थ और भव्य महिमा में उसके दूसरे आगमन की पहचान ठहरेंगे (इब्रा. 6:5 से तुलना कीजिए: ''आने वाले युग की सामर्थों'')।

9:36 जब वह इस्राएल की **भीड़** को निहार रहा था, जो व्याकुल और भटकी हुई थी, तो उसे यह भीड़ उन **भेड़ों** के समान दिखाई दी जिनका कोई **रखवाला** नहीं था। उसका **तरस** से भरा हुआ हृदय उन्हें देख कर तड़प उठा। काश, हम उस तड़प को और अच्छे से महसूस कर सकें जो खोए हुए और मरते हुए लोगों के आत्मिक हित के लिये है। ओह, हमें लगातार प्रार्थना करने की कितनी आवश्यकता है:

> मैं भी भीड़ को वैसे ही देखूं,जैसे मेरे उद्धारकर्ता ने देखा,
> जब तक कि मेरी आँखे आँसुओं से धुंधली न पड़ जाएं;
> मैं भी भटकी हुई भेड़ों को तरस से देखूं,
> और प्रभु के प्रेम के कारण मैं उनसे भी प्रेम करूं।

9:37 आत्मिक कटनी का एक बहुत बड़ा कार्य किए जाने की आवश्यकता थी, **पर मजदूर थोड़े** थे। ऐसा लगता है, यह समस्या आज तक बनी हुई है; मजदूरों की तुलना में कार्य हमेशा ही काफी अधिक रहता है।

9:38 प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे **खेत के स्वामी से बिनती करें कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे**। ध्यान रखें कि आवश्यकता के कारण बुलाहट निर्मित नहीं होती। मजदूरों को तब तक नहीं *जाना* है, जब तक कि उन्हें *भेजा* न जाए।

परमेश्वर के पुत्र, मसीह ने मुझे,
घोर अन्धकार से भरे हुए स्थानों में भेजा है,
उसने अपने छिदे हुए हाथों से,
मेरा महाभिषेक किया है।
– *गेरहार्ड टेर्स्टीज़ेन*

यीशु ने **खेत के स्वामी** की पहचान नहीं बताया। कुछ लोगों को मानना है कि यह पवित्र आत्मा है। 10:5 में, यीशु स्वयं चेलों को भेजता है, इसलिए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह स्वयं वह व्यक्ति है जिससे हमें संसार में सुसमाचार फैलाने से सम्बन्धित इस विषय पर प्रार्थना करनी चाहिए।

ब. बारह चेलों को बुलाया गया (10:1–4)

10:1 अध्याय 9 के अन्तिम पद में, प्रभु ने अपने चेलों को निर्देश दिया कि वे और मजदूर भेजे जाने के लिए प्रार्थना करें। इस प्रार्थना को सच्चे मन से करने के लिए आवश्यक है कि विश्वासी स्वयं जाने के लिए तैयार रहें। इसलिए यहाँ पर हम पाते हैं कि प्रभु **अपने बारह चेलों** को बुला रहा है। उसने पहले ही उन्हें चुन लिया था, परन्तु अब वह उन्हें यहाँ पर इस्राएली जाति को सुसमाचार प्रचार करने की विशेष सेवकाई के लिए बुला रहा है। इस बुलाहट के साथ वह उन्हें अशुद्ध आत्माओं को निकालने का और सब प्रकार की बीमारियों को चंगा करने का अधिकार भी देता है। हम यहाँ पर यह देख सकते हैं कि यीशु मसीह के समान और कोई दूसरा नहीं है। दूसरे लोगों ने अवश्य ही आश्चर्यकर्म किए हों, परन्तु किसी भी अन्य व्यक्ति ने कभी भी अपनी इस सामर्थ को दूसरों को नहीं सौंपा था।

10:2–4 बारह चेलों का परिचय इस प्रकार से है:

1. **शमौन, जो पतरस कहलाता है.** शमौन एक उतावला, उदार–हृदय वाला, और स्नेही व्यक्ति था, उसमें अगुवे के गुण जन्मजात पाए जाते थे।
2. **उसका भाई, अन्द्रियास.** अन्द्रियास से यीशु का परिचय यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने करवाया था (यूहन्ना 1:36,40), उसके बाद वह अपने भाई पतरस को लेकर यीशु के पास आया। उसके बाद से दूसरों को यीशु के पास लाना अन्द्रियास की एक आदत बन गई।
3. **जब्दी का पुत्र, याकूब.** याकूब को बाद में हेरोदेस ने मरवा दिया था (प्रेरित 12:2) – वह बारहों में सब से पहला शहीद था।
4. **उसका भाई यूहन्ना.** वह भी जब्दी का पुत्र था, यूहन्ना वह चेला था जिससे यीशु प्रेम रखता था। हम उसके आभारी हैं कि उसने हमारे लिए चौथा सुसमाचार, तीन पत्रियां, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा।
5. **फिलिप्पुस.** वह बैतसैदा का निवासी था, उसी ने नतनएल को यीशु के पास लाया था। यह फिलिप्पुस उस फिलिप्पुस से अलग है जिसका उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक सुसमाचार प्रचारक (इव्हेंजलिस्ट) के रूप में किया गया है।
6. **बरतुल्मै.** ऐसा माना जाता है कि नतनएल ही बरतुल्मै था, जिसे यीशु ने एक ऐसे इस्राएली के रूप में पहचाना जिसमें कोई कपट नहीं (यूहन्ना1:47)।
7. **थोमा.** दिदमुस भी कहलाता था, जिसका अर्थ होता है, ''जुड़वां।'' सामान्यत: उसे ''सन्देही थोमा'' के रूप में जाना जाता है, उसके सन्देहों ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं कि वह अद्भुत रीति से मसीह का अंगीकार कर सका (यूहन्ना 20:28)।
8. **मत्ती.** पहले एक महसूल लेने वाला था। मत्ती रचित सुसमाचार को उसी ने लिखा।
9. **हलफै का पुत्र याकूब.** उसके विषय में और अधिक ठोस जानकारी नहीं पाई जाती।
10. **तद्दै.** वह याकूब के पुत्र यहूदा के रूप में भी जाना जाता था (लूका 6:16)। उसके द्वारा कुछ कहे जाने का एकमात्र उल्लेख यूहन्ना 14:22 में पाया जाता है।
11. **शमौन कनानी.** लूका ने उसे जेलोतेस कहा है (6:15)।
12. **यहूदा इस्कारियोति.** जिसने हमारे प्रभु को पकड़वा दिया था।

इस समय इन चेलों की आयु बीस से तीस वर्ष के बीच की रही होगी। वे विभिन्न पृष्ठभूमि से आए हुए थे और सम्भवत: साधारण क्षमता वाले नवयुवक थे, उनकी

सच्ची महानता यीशु के साथ उनके सम्बन्ध में पाई जाती थी।

स. इस्राएल के बीच सेवकाई (10:5–33)

10:5,6 अध्याय के शेष भाग में **इस्राएल के घराने** के बीच एक विशेष प्रचार यात्रा के सम्बन्ध में यीशु के निर्देश पाए जाते हैं। इस वर्णन को, बाद में सत्तर लोगों को सेवा करने के लिए भेजे जाने की घटना (लूका 10:1) या महान आज्ञा (मत्ती 28:19,20) समझने की भूल करने से बचना है। यह एक अस्थायी सेवकाई थी जिसका एक विशेष उद्देश्य इस बात की घोषणा करना था कि **स्वर्ग का राज्य** निकट आ गया है। जबकि इनमें दिए गए कुछ सिद्धान्त समस्त समय के, परमेश्वर के सभी लोगों पर लागू होते हैं, परन्तु बाद में कुछ सिद्धान्तों को यीशु के द्वारा रद्द कर दिया जाना यह सिद्ध करता है कि इन निर्देशों को स्थायी रूप से नहीं दिया गया था (लूका 22:35,36)।

सबसे पहले *यात्रा मार्ग* बताया गया है। उन्हें **अन्यजातियों** या **सामरियों** के पास नहीं जाना है, सामरी जाति यहूदी–मिश्रित एक जाति थी जिनसे यहूदी लोग घृणा करते थे। इस समय चेलों की सेवकाई सिर्फ **इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों** तक सीमित थी।

10:7 *सन्देश* यह प्रचार किया जाना था कि **स्वर्ग का राज्य निकट** आ गया है। यदि इस्राएल इसे मानने से इंकार कर दे, तो उनके बचाव का कोई बहाना नहीं चलेगा क्योंकि यह एक ऐसी औपचारिक घोषणा थी जो विशेष रूप से उन्हीं के लिये की जा रही थी। स्वर्ग का राज्य राजा के व्यक्तित्व में निकट आया था। इस्राएल को यह निर्णय लेना है कि वह राजा को स्वीकार करे या उसे अस्वीकार करे।

10:8 चेलों को उनके सन्देश की पुष्टि के लिए उन्हें कुछ अधिकार दिए गए। उन्हें **बीमारों को चंगा** करने का, **मरे हुओं को** जिलाने का, **कोढ़ियों को शुद्ध** करने का, और **दुष्टात्माओं को** निकालने का अधिकार दिया गया। यहूदी लोग चिन्ह चाहते थे (1 कुरि. 1:22) इसलिए परमेश्वर ने उन्हें चिन्ह देने के लिये अनुग्रहपूर्वक अपने आप दीन कर दिया।

मजदूरी के विषय में प्रभु ने उनसे कहा कि वे अपनी सेवा के लिए कोई मजदूरी न लें। उन्हें बिना कोई कीमत चुकाए आशीष मिली है और इस आशीष को उन्हें इसी आधार पर बांटना है।

10:9, 10 उन्हें अपनी यात्रा की आवश्यकताओं के लिए पहले से कोई भी *प्रबन्ध* न करने के लिए कहा गया था। आखिर, वे इस्राएली थे और वे इस्राएलियों के मध्य प्रचार करने के लिए जा रहे थे, और यहूदियों के बीच में यह सिद्धान्त मान्य था कि मजदूर को उसकी मजदूरी मिलनी चाहिए। इसलिए उनके लिए आवश्यक नहीं था कि वे अपने साथ **सोना, रूपा, तांबा, झोली, दो कुरते, जूते**, या **लाठी** साथ रखें। शायद ऐसा कहा जा रहा था कि वे अपने साथ *अतिरिक्त* जूते या *अतिरिक्त* लाठी न रखें; यदि उनके पास पहले से ही लाठी है, तो वे उसे अपने साथ ले जा सकते हैं (मरकुस 6:8)। यहाँ पर इस बात पर जोर दिया गया है कि उनकी प्रतिदिन की आवश्यकता की पूर्ति प्रतिदिन की जाएगी।

10:11 उन्हें *ठहरने* के लिए क्या प्रबन्ध करना था? जब वे किसी **नगर** में प्रवेश करें, उन्हें एक **योग्य** मेजबान की खोज करनी थी – एक ऐसा मेजबान जो उन्हें प्रभु के चेलों के रूप में स्वीकार कर उनका स्वागत करे और उनके सन्देश को ग्रहण करे। एक बार उन्हें ऐसा मेजबान मिल जाए, तो उन्हें उसके घर में तब तक ठहरे रहना है जब तक कि वे उस नगर में रहें, बजाए इसके कि वहाँ से निकल कर किसी ऐसे घर में चले जाएं जो उन्हें अधिक सुविधाजनक लगे।

10:12–14 यदि कोई **घर** (परिवार) उनका स्वागत कर उन्हें अपने घर में ग्रहण करता है, तो चेले यह अतिथि–सत्कार स्वीकार करने के लिए उन्हें आशीष देते हुए अपनी शिष्टाचार और कृतज्ञता प्रगट करें। दूसरी ओर, यदि कोई परिवार प्रभु के इन सन्देशवाहकों को अपने घर में अतिथि के रूप में स्वीकार करने से मना कर दे, तो चेले उनके लिए परमेश्वर की ओर से **कल्याण** की प्रार्थना करने के लिए बाध्य नहीं होंगे, अर्थात्, उन्हें ऐसे परिवार को आशीर्वाद नहीं देना है। न सिर्फ इतना ही, उन्हें उस घर में अपने **पाँवों** की **धूल** तक झाड़ कर परमेश्वर की अप्रसन्नता को जाहिर करना है। मसीह के चेलों को अस्वीकार करने के द्वारा वह परिवार मसीह को अस्वीकार कर रहा है।

10:15 उसने चेतावनी दी कि इस प्रकार का तिरिस्कार के लिये **न्याय के दिन** में **सदोम और अमोरा**

की दशा से भी अधिक भयानक दण्ड दिया जाएगा। इससे यह सिद्ध होता है कि नरक में अलग अलग अनुपात में दण्ड दिए जाएंगे; अन्यथा यह दूसरों की तुलना में कुछ के लिए **अधिक सहनेयोग्य** किस प्रकार से होगी।

10:16 इस खण्ड में प्रभु यीशु अपने बारह चेलों को परामर्श दे रहा है कि *सताव के समय उनका आचरण* किस प्रकार का होना चाहिए। वे उन्हें नाश करने को उतारू दुष्ट व्यक्तियों के बीच घिर जाने पर **भेड़ियों के बीच** में **भेड़ों की नाई** बने। वे **साँपों की नाई बुद्धिमान** बनें, और अनावश्यक आक्रमण झेलने या स्थिति से समझौता करने से बचें। वे धर्मी चरित्र और निष्कपट विश्वास से सुसज्जित हो कर **कबूतरों की नाई भोले** बनें।

10:17 उन्हें उन अविश्वासी यहूदियों से सावधान रहना होगा जो उन्हें दण्ड–न्यायालय में ले जाएंगे और **महासभाओं** में घसीटेंगे। उनके विरूद्ध किया गया आक्रमण घरेलु और धार्मिक दोनों ही प्रकार का होगा।

10:18 वे **हाकिमों और राजाओं के सामने** मसीह के कारण घसीटे जाएंगे। परन्तु परमेश्वर का उद्देश्य मनुष्य की बुराईयों पर प्रबल होगा। ''मनुष्य की दुष्टता अपनी जगह है परन्तु परमेश्वर के पास अपना कार्य करने के अपने उपाय हैं।'' ऐसी घड़ी में जब ऐसा लगे कि पराजय सामने है, तब चेलों को शासकों और **अन्यजातियों** के सामने गवाही देने का अतुल्य अवसर प्राप्त होगा। परमेश्वर सब बातों को मिलाकर भलाई को उत्पन्न करने के लिए कार्य करता रहेगा। मसीहत को प्रशासनिक अधिकारियों की ओर से काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा है, तथापि ''कोई भी सिद्धान्त कभी भी उनके लिये इतना सहायक नहीं रहा जो शासन करने के लिए नियुक्त किए गए हैं।''

10:19,20 उन्हें इस बात को पहले से सोच कर रखने की आवश्यकता नहीं है कि मुकद्दमें के समय वे क्या कहेंगे। जब ऐसा समय आएगा तो परमेश्वर का **आत्मा** उन्हें ईश्वरीय बुद्धि प्रदान करेगा कि वे ऐसा उत्तर दे सकें जिसके द्वारा मसीह की महिमा हो और दोष लगाने वाले बुरी तरह से उलझन में पड़ कर हताश हो जाएं। पद 19 की व्याख्या करते समय हमें दो हदों (चरम विचारों) तक जाने से बचना है। पहला, सहज ही यह मान लेना कि एक मसीही को पहले से कभी भी सन्देश तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। दूसरा, यह मानना कि वर्तमान में इस पद की कोई उपयोगिता नहीं है। एक उपदेशक के लिए यह उचित और आवश्यक है कि वह हर एक अवसर को ध्यान में रखते हुए प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर से वचन पाने के लिए देखता रहे। परन्तु यह भी सत्य है कि आपातकालीन परिस्थितियों और संकट के समय, सभी विश्वासी परमेश्वर की प्रतिज्ञा के आधार पर उससे बुद्धि मांग सकते हैं कि वह उन्हें ईश्वरीय अन्तर्ज्ञान से बोलने के लिए बुद्धि प्रदान करे। वे अपने पिता के आत्मा के मुँह बन जाते हैं।

10:21 यीशु ने अपने चेलों को पहले से ही सचेत कर दिया था कि उन्हें विश्वासघात और धोखे का सामना करना पड़ेगा। **भाई** के विरुद्ध **भाई** दोष लगाएगा। **पिता** अपने **पुत्र** को पकड़वा देगा। **लड़केवाले** (बच्चे) अपने **माता पिता** के विरुद्ध मुखबिर बन जाएंगे, और उनके मारे जाने का कारण बनेंगे।

जे.सी. मेकाऊले ने इस बात को काफी अच्छे से व्यक्त किया है:

> संसार के बैरभाव को सहने के लिए हमारे पास अच्छे साथी हैं . . .। सेवक को शत्रु की ओर से बुरा व्यवहार झेलने में यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उससे मसीह की तुलना में बेहतर व्यवहार किया जाएगा। यदि संसार के पास यीशु को देने के लिए क्रूस से बेहतर और कुछ नहीं था, तो फिर उसके अनुयायियों को यह संसार शाही पालकी में नहीं बैठाएगा: यदि यीशु के लिए सिर्फ कांटे थे, तो हमारे लिए फूलों का हार नहीं होगा . . .। हमें सिर्फ यह देखना है कि हमारे प्रति संसार का बैरभाव वास्तव में ''मसीह के कारण'' है, इसलिए नहीं कि हमारे भीतर बैर रखे जाने योग्य और अनुग्रहकारी परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाली कोई बात है।[17]

10:22,23 सब लोग चेलों **से बैर करेंगे** – सब लोगों के कुछ अपवाद भी होंगे, पर सारी सभ्यताओं, सारी जातियों, सब वर्ग, इत्यादि के लोग यीशु के चेलों से बैर करेंगे। ''**पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।**'' इस वाक्य को पढ़ने से ऐसा लगता है कि हम धीरज के द्वारा अपने लिए उद्धार कमा कर सकते हैं। हम यह जानते हैं कि इसका यह अर्थ नहीं हो सकता क्योंकि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह की एक सेंतमेंत भेंट के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो विश्वास करने के द्वारा मिलता है (इफि. 2:8, 9)। न ही इस पद का अर्थ यह हो सकता है कि जो मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे वे शारीरिक मृत्यु से बचाए

जाएंगे; पिछले पद में कुछ विश्वासयोग्य चेलों की मृत्यु की भविष्यद्वाणी की गई है। इस पद का सबसे सरल स्पष्टीकरण यह है कि धीरज हमारे उद्धार की वास्तविकता की छाप है। जो सताव के समय अन्त तक सहते रहेंगे अपने धीरज के द्वारा इस बात को प्रदर्शित करेंगे कि वे सच्चे विश्वासी हैं। बिल्कुल यही वाक्य मत्ती 24:13 में भी पाया जाता है जहाँ यह उस विश्वासयोग्य यहूदी झुण्ड के लिए कहा गया है जो क्लेशकाल के दौरान प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा के साथ किसी भी तरह का कोई समझौता करने से मना कर देंगे। उनका धीरज उन्हें सच्चे चेलों के रूप में प्रगट करेगा।

बाइबल के जिन स्थलों में भविष्य सम्बन्धी बातें बताई गई हैं, उन स्थलों में परमेश्वर का आत्मा अक्सर निकट भविष्य के विषय से हट कर हमें दूरस्थ भविष्य की बातों की ओर ले जाता है। एक भविष्यद्वाणी आंशिक रूप से पूरी होने के लिए और तात्कालिक समय में पूर्ण होने के लिए की जा सकती है और साथ ही पूर्ण रूप से पूरी होने के लिए और अधिक समय बाद पूर्ण होने के लिए की जा सकती है। उदाहरण के लिए, मसीह के दो आगमनों की भविष्यद्वाणी एक ही स्थल में बिना किसी स्पष्टीकरण के दी जा सकती है (यशा. 52:14, 15; मीका 5:2-4)। पद 22 और 23 में प्रभु यीशु इसी प्रकार से पहले निकट भविष्य के विषय में भविष्यद्वाणी करता है, और फिर अचानक ही दूरस्थ भविष्य सम्बन्धित बातों पर भविष्यद्वाणी कर रहा है। वह अपने बारह चेलों को उन सतावों के विषय में सावधान करता है जो उन्हें मसीह के कारण सहना पड़ेगा, और उसके लिए वह उन चेलों को क्लेशकाल के समय के अपने भक्त यहूदियों के प्रतिरूप के रूप में देखते हैं। वह प्रथम मसीहियों के क्लेश से कूद कर उसके दूसरे आगमन से ठीक पहले के विश्वासियों के बारे में कहने लगता है।

पद 23 का पहला भाग बारह चेलों के लिए कहा गया होगा: परन्तु ''**जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना . . .**।'' उन्हें अपने शत्रुओं के अत्याचार सहते हुए वहीं ठहरे रहने की आवश्यकता नहीं है यदि उस स्थिति से बाहर निकलने का दूसरा विकल्प हाजिर है। ''खतरों से बच निकलना गलत नहीं है – परन्तु अपने कर्तव्य से भागना गलत है।''

पद 23 का बाद वाला भाग हमें उन दिनों की ओर ले जाता है जिनके बाद मसीह राज्य करने के लिए आयेगा: ''**तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा**।'' यह बारह चेलों की सेवकाई के सम्बन्ध में नहीं कहा जा सकता क्योंकि मनुष्य का पुत्र तब तक आ चुका था। बाइबल के कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि यह 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के सम्बन्ध में कहा गया है। किन्तु, यह समझ पाना कठिन है कि इस विध्वंस को ''मनुष्य के पुत्र का आगमन'' कैसे कहा जा सकता है। यह काफी सत्य प्रतीत होता है इस स्थल में उसके दूसरे आगमन के बारे में कहा गया है। महाक्लेशकाल के समय, मसीह के विश्वासयोग्य यहूदी भाई उसके राज्य का सुसमाचार का प्रचार करेंगे। उन्हें सताया जाएगा और उन पर अत्याचार किया जाएगा। इससे पहले कि वे इस्राएल के सारे नगरों में पहुँच पाएं, प्रभु यीशु अपने शत्रुओं को दण्ड देने और अपना राज्य स्थापित करने के लिए लौट आएगा।

पद 23 और मत्ती 24:14 आपस में विरोधाभासी प्रतीत हो सकते हैं। यहाँ पर ऐसा कहा गया है कि **इस्राएल के** सारे **नगर** में सुसमाचार सुनाना पूरा नहीं हुआ रहेगा कि **मनुष्य का पुत्र आ जाएगा**। जबकि मत्ती 24:14 में बताया गया है कि उसके दूसरे आगमन से पहले राज्य के सुसमाचार प्रचार का कार्य सारे संसार में पूरा हो जाएगा। किन्तु, यहाँ पर कोई विरोधाभास नहीं है। सुसमाचार सारी जातियों और सब राष्ट्रों में सुनाया जा चुका होगा यद्यपि आवश्यक नहीं है कि एक-एक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से। परन्तु सुसमाचार के इस सन्देश को कड़े विरोध का सामना करना पड़ेगा, और इस्राएल में सुसमाचार प्रचार करने वालों को बुरी तरह से सताया जाएगा और उन्हें प्रचार करने से रोका जाएगा। इसलिए, इस्राएल के कुछ नगरों में सुसमाचार का प्रचार नहीं होगा।

10:24,25 प्रभु के चेलों के मन में बार बार यह विचार आता कि उन्हें इतना बुरा व्यवहार क्यों झेलना चाहिए। यदि प्रभु यीशु, मसीहा है तो उसके चेले राज्य करने की बजाए कष्ट क्यों सहेंगे? पद 24 और पद 25 में, वह उनके उलझनों को पहले से ही जानकर उन्हें अपने साथ उनके सम्बन्ध के बारे में स्मरण दिला कर उनको उत्तर देता है। वे उसके चेले थे; वह उनका स्वामी था। वे घराने के सदस्य थे; वह उस घराने का मुखिया था। शिष्यता का अर्थ होता है गुरू का अनुसरण करना, उससे बड़ा

बनना नहीं। सेवकों को यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि उन्हें स्वामी से अधिक आदर मिले और उनसे उसकी तुलना में अधिक अच्छा व्यवहार किया जाए। यदि लोग घर के योग्य मुखिया को ''बालजबूल'' (''मक्खियों का देवता,'' जिसके नाम का उपयोग यहूदियों द्वारा **शैतान** के लिए किया जाता था) कह सकते हैं, तो फिर वे उसके **घर** के सदस्यों को और अधिक अपमानजनक बात क्यों न कहेंगे। स्वामी के तिरस्कार में सहभागी होना शिष्यता का एक गुण होता है।

10:26,27 प्रभु ने तीन बार अपने अनुयायियों को डरने से मना किया (26, 28, 31 पदों में)। सबसे पहले उनसे कहा गया कि जब उन्हें ऐसा लगे कि उनके शत्रु विजयी हो रहे हैं तो वे न डरें; आने वाले दिनों में उसके चेलों पर अनुग्रह किया जाएगा और उनका बदला लिया जाएगा। इस समय तक सुसमाचार अपेक्षाकृत **ढपा** हुआ था और यीशु की शिक्षाएं छिपी हुई थीं। परन्तु शीघ्र ही आवश्यक है कि चेले मसीही सन्देश का निर्भीकता से प्रचार करें जिसे अब तक उन्हें गुप्त रूप से अर्थात्, निजी रूप से बताया गया था।

10:28 दूसरा, चेलों को सतानेवाले लोगों के हिंसक क्रोधोन्माद से उन्हें न डरने के लिए कहा गया है। ऐसे लोग अधिक से अधिक **शरीर को घात** कर सकते हैं। एक मसीही के लिए शारीरिक मृत्यु सबसे बड़ी त्रासदी नहीं है। मरने का अर्थ होता है मसीह के साथ रहना और इसलिए यह कहीं अधिक बेहतर है। शारीरिक मृत्यु पाप, दु:ख, बीमारी, कष्ट, और मृत्यु से छुटकारा है; यह हमें अनन्त महिमा में पहुँचा देती है। इसलिए मनुष्य जो हमारे लिए सबसे बुरा कर सकता है, वह वास्तव में, सबसे उत्तम बात है जो परमेश्वर की सन्तान के साथ हो सकती है।

चेलों को मनुष्यों से नहीं डरना चाहिए परन्तु श्रद्धापूर्ण भय के भाव से **उसी से** डरना चाहिए **जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है**। यह सबसे बड़ी हानि है – परमेश्वर, मसीह, और आशा से अनन्त अलगाव। आत्मिक मृत्यु एक ऐसी हानि है जिसका अनुमान तक नहीं लगाया जा सकता और यह एक ऐसा विनाश है जिससे हर हाल में बचा जाना चाहिए।

पद 28 में दिए गए यीशु के वचन हमें परमेश्वर के भक्त जॉन नॉक्स का स्मरण कराते हैं जिनकी कब्र पर लिखा है, ''यहाँ पर वह व्यक्ति सोया हुआ है जो परमेश्वर से इतना डरता था कि किसी भी मनुष्य से नहीं डरता था।''

10:29 भयानक परीक्षाओं के समय चेले पूरी तरह से आवश्स्त रह सकते हैं कि परमेश्वर ऐसे समय में उनकी चिन्ता करेगा। प्रभु यह शिक्षा देने के लिए गोरैयों का उदाहरण देता है जो सब जगह देखी जा सकती हैं। इन महत्वहीन पक्षियों को कौड़ी के दाम बेचा जाता था। तौभी **उनमें से एक भी . . . पिता की इच्छा**, या जानकारी के बिना भूमि पर नहीं गिर सकती। जैसा कि किसी ने कहा है, ''परमेश्वर हर एक गौरियाँ की मौत–मिट्टी में शामिल होता है।''

10:30, 31 वही परमेश्वर जो छोटी सी गोरैया में व्यक्तिगत रूप से इतनी रूचि लेता है, वह अपनी एक एक सन्तान के **सिर के बाल** तक का बिल्कुल ठीक ठीक हिसाब भी रखता है। बालों का एक गुच्छा गोरैये की मूल्य की तुलना में कम होता है। इससे यह प्रगट होता है उसकी दृष्टि में उसके लोगों का मूल्य **बहुत से गोरैयों से बढ़कर** है, इसलिए उसके लोगों को क्यों डरना चाहिए?

10:32 पिछले पदों में दी गई बातों को ध्यान में रखते हुए, इससे अधिक तर्कसंगत बात और क्या हो सकती है कि मसीह के अनुयायियों को **मनुष्यों के सामने** उसे **मान लेना** चाहिए? इसके कारण उन्हें इस संसार में जितनी भी शर्म या बदनामी सहनी पड़े, स्वर्ग में इसके बदले में बहुतायत से प्रतिफल दिया जाएगा जब प्रभु यीशु उन्हें अपने **पिता** के सामने मान लेगा। यहाँ पर मसीह को मान लेने का अर्थ है उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान कर उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित हो जाना और इसके परिणामस्वरूप अपने मुँह से उसे स्वीकार करने और उसके लिए जीवन व्यतीत करने के द्वारा उसे अपना मान लेना। यदि हम इस मामले में चेलों के जीवन को देखें, तो उन्होंने शहीद होने के द्वारा अपने जीवन से यह दिखा दिया कि उन्होंने प्रभु यीशु को सचमुच में मान लिया है।

10:33 यदि पृथ्वी में कोई प्रभु यीशु को मान लेने से इंकार करेगा तो इसके बदले में स्वर्ग में यीशु परमेश्वर के **सामने** उसका इंकार कर देगा। इस अर्थ में यीशु का इंकार करने का अर्थ है अपने जीवन में उसके किसी भी अधिकार का इंकार करना। जो अपने जीवन के द्वारा उसे यह कहते हैं, ''मैं तुझे नहीं जानता'' उन्हें भी अन्त में यह सुनना पड़ेगा, ''मैं तुम्हें नहीं जानता।'' प्रभु यहाँ पर उस

अस्थायी इंकार के बारे में नहीं कह रहा है जो दबाव में आकर हो जाता है, जैसा कि पतरस के साथ हुआ था, परन्तु उस प्रकार के इंकार के बारे में कह रहा है जो आदतन और निर्णायक होता है।

द. मेल नहीं परन्तु तलवार (10:34–39)

10:34 हमारे प्रभु के इन शब्दों को सांकेतिक भाषा के अर्थ में समझा जाना चाहिए जिसमें उसके आने के प्रत्यक्ष परिणाम उसके आने के स्पष्ट उद्देश्य के रूप में यहाँ पर घोषित किये गए हैं। वह कहता है कि वह **मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया**। वास्तव में वह मेल करवाने ही आया था (इफि. 2:14–17); वह इसलिए आया कि उसके माध्यम से संसार का उद्धार हो (यूहन्ना 3:17)।

10:35–37 परन्तु यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि जब एक व्यक्ति यीशु के पीछे चलने लगता है, तो उसका परिवार उसका विरोधी हो जाता है। एक मन फिराए हुए पिता को अपने अविश्वासी पुत्र की ओर से, एक मसीही माँ को उसकी उद्धार न पाई हुई बेटी की ओर से विरोध का सामना करना पड़ेगा। नया जन्म पाई हुई एक सास से नया जन्म न पाई हुई उसकी बहू बैर करेगी। इसलिए मसीह और परिवार के बीच में से किसे चुनें, इसका निर्णय लेना आवश्यक होगा। प्रकृति के किसी भी रिश्ते को अनुमति नहीं दी जा सकती कि इसके कारण प्रभु के प्रति पूर्णनिष्ठा से एक चेला भटक जाए। यह आवश्यक है कि पिता, माता, पुत्र, या पुत्री की तुलना में उद्धारकर्ता को प्राथमिकता दी जाए। शिष्य बनने पर चुकाई जाने वाली एक कीमत यह है कि इससे एक व्यक्ति को अपने ही परिवार के भीतर तनाव और विरोध का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार का पारिवारिक विद्वेश बाहरी विरोध की तुलना में काफी अधिक कड़ुवा होता है।

10:38 परन्तु इससे भी बढ़कर एक प्रवृत्ति ऐसी भी है जो कि अपने परिवार की तुलना में मसीह को उसका सही स्थान देने से रोकती है – वह है, स्वयं के जीवन (प्राण) से प्रेम। इसलिए यीशु ने आगे कहा, ''**और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योय नहीं**।'' क्रूस, नि:सन्देह, मृत्युदण्ड का माध्यम था। क्रूस उठाकर उसके पीछे चलने का अर्थ है: उसके लिए इतने समर्पण और त्याग का जीवन व्यतीत करना कि मर जाना भी इसके सामने कोई बड़ी बात न लगे। यह अनिवार्य नहीं है कि हर एक चेले को प्रभु के लिए मर जाना है, परन्तु हर एक बुलाया गया है कि वह प्रभु को इतना महत्व दे कि वह अपने लिए अपने जीवन को प्रभु से अधिक मूल्यवान न समझे।

10:39 यह आवश्यक है कि अपने आप को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति पर मसीह का प्रेम प्रबल हो। **जो अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा और जो** मसीह के **कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।** हमारे सामने यह परीक्षा आती है कि हम पूर्ण समर्पण का जीवन बिताने पर हम पर आने वाली पीड़ा और हानि से बचने के लिए अपने जीवन को गले लगाना अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु ऐसा करना जीवन की सबसे बड़ी बर्बादी है – अपने आप को सन्तुष्ट करने में जीवन गंवा देना। जीवन का सबसे सही उपयोग इसे मसीह की सेवा में लगा देने में है। **जो** व्यक्ति प्रभु के प्रति अपने समर्पण के कारण **अपना प्राण खोता है** वही **उसे** सच्ची भरपूरी में **पाएगा।**

इ. एक कटोरा ठन्डा पानी (10:40–42)

10:40 ऐसा नहीं है कि हर व्यक्ति चेलों के सन्देश को मानने से मना कर देगा। कुछ लोग उन्हें मसीह के प्रतिनिधियों के रूप में मान लेंगे और आदरपूर्वक उनका स्वागत करेंगे। इस प्रकार की भलाई का बदला देने के लिए चेलों के पास अधिक क्षमता नहीं होगी, परन्तु उन्हें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है; चेलों के साथ जो कुछ भी भलाई की जाएगी वह मसीह के प्रति की गई भलाई के रूप में गिनी जाएगी और इसी के अनुसार उन्हें इसका प्रतिफल भी दिया जाएगा।

मसीह के चेलों को स्वीकार करना स्वयं मसीह को स्वीकार करने के बराबर होगा, और मसीह को स्वीकार करना उसे **भेजने वाले** पिता को स्वीकार करने के बराबर होगा, क्योंकि भेजा गया व्यक्ति भेजने वाले का प्रतिनिधि होता है। एक राजदूत को स्वीकार करना, जो उसे भेजने वाली सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहा है, उस राजदूत के देश के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध का व्यवहार करने के बराबर होता है।

10:41 जो कोई भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला (प्रतिफल) **पाएगा**। ए.टी. पियरसन ने इस विषय पर यह कहा है:

> यहूदी लोग ऐसा मानते थे कि भविष्यद्वक्ता को मिलने वाला प्रतिफल सबसे बड़ा प्रतिफल है; क्योंकि, जबकि राजा लोग प्रभु के द्वारा दिए गए अधिकार के कारण उसके नाम से राज्य करते थे, और याजक प्रभु के नाम से सेवा करते थे, भविष्यद्वक्ता प्रभु की ओर से याजक और राजा दोनों को शिक्षा देने के लिए आता था। मसीह कहता है कि यदि तुम एक भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता समझ कर ग्रहण करते हो, तो तुम्हें भी वही प्रतिफल मिलेगा जो भविष्यद्वक्ता को दिया जाता है, यदि तुम उस भविष्यद्वक्ता को उसके कार्य में सहयोग करो। विचार करें जब हम एक उपदेशक की आलोचना करने लगते हैं! यदि हम परमेश्वर के लिए बोलने में उसकी सहायता करते हैं, और उसे प्रोत्साहन देते हैं तो हमें उसके प्रतिफल का भाग मिलेगा; परन्तु यदि हम उसके कर्तव्यों को पूरा करने में उसके सामने कठिनाई उत्पन्न करते हैं, तो हम अपने प्रतिफल से वंचित हो जाएंगे। एक ऐसे व्यक्ति की सहायता करना, जो भला करना चाहता है, एक बहुत अच्छी बात है। हमें उसके पहिनावे, उसके हावभाव, उसकी आदतों या उसकी आवाज के कारण उसे आदर नहीं देना है; परन्तु हमें इन सब से ऊपर उठते हुए यह तय करना है कि, ''क्या यह मेरे लिए परमेश्वर का सन्देश है? क्या यह व्यक्ति परमेश्वर द्वारा मेरी आत्मा के लिए भविष्यद्वक्ता के रूप में भेजा गया है?'' यदि आपके प्रश्नों का उत्तर हाँ में है, तो उसे ग्रहण करें, उसके वचनों और कार्यों को बढ़ावा दें, और उसके प्रतिफल का भाग पाएं।[18]

जो कोई धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करेगा वह धर्मी का बदला (प्रतिफल) **पाएगा**। जो दूसरों को उनके बाहरी रूप और उनकी भौतिक वस्तुओं से प्रभावित होकर जाँचते हैं वे यह समझ पाने में असफल रहते हैं कि सच्चा नैतिक मूल्य अक्सर बहुत ही दीन रूप और वेश में ढंपा पाया जाता है। एक व्यक्ति प्रभु के एक सीधे साधे चेले के साथ जिस तरह का व्यवहार करता है उसी तरीके से वह स्वयं प्रभु के साथ भी व्यवहार करता है।

10:42 प्रभु यीशु के एक अनुयायी के प्रति दिखाई गई किसी भी प्रकार की भलाई को अनेदेखा नहीं किया जाएगा। यहाँ तक कि **एक कटोरा ठन्डा पानी** पिलाए जाने पर भी उसका शानदार प्रतिफल मिलेगा, यदि यह एक अनुयायी को इसलिए पिलाया गया है क्योंकि वह यीशु का अनुयायी है।

इस तरह प्रभु अपने चेलों को शाही अधिकार प्रदान करते हुए इस विशेष सेवकाई के लिए दिए जा रहे इन निर्देशों का समापन करता है। यह सत्य है कि उनका विरोध और तिरिस्कार किया जाएगा, उन्हें बन्दी बनाया जाएगा, उन पर मुकद्दमा चलाया जाएगा, और शायद उन्हें मार तक डाला जाएगा। परन्तु उन्हें यह नहीं भूलना है कि वे राजा के प्रतिनिधि हैं और उसके लिए बोलना और कार्य करना उनका एक महिमामय विशेषाधिकार है।

VII. विरोध और इंकार का बढ़ना (11,12 अध्यायों में)

अ. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बन्दीगृह में डलवाया गया (11:1–19)

11:1 इस्राएल के घराने के पास बारह चेलों को विशेष अस्थायी सेवकाई के लिए भेजने के बाद, यीशु गलील के **नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहाँ से चला गया**, जहाँ पहले उसके चेले रहा करते थे।

11:2, 3 अब तक **यूहन्ना** को हेरोदेस ने जेलखाने में डाल दिया था। वह हतोत्साहित हो गया था तथा अकेलापन महसूस कर रहा था, इसलिए वह सोचने लगा। यदि यीशु सचमुच में मसीहा है, तो वह अपने अग्रदूत को जेलखाने में क्यों पड़ा रहने दे रहा है? परमेश्वर के अन्य महान जनों के समान ही यूहन्ना भी कुछ समय तक अस्थायी रूप से अपने विश्वास में कमजोर हो गया था। इसलिए उसने **चेलों को उससे यह पूछने भेजा** कि क्या यीशु सचमुच में वही भविष्यद्वक्ता है जिसके आने की प्रतिज्ञा की गई थी, या अब भी उन्हें तब तक ठहरे रहना है जब तक कि वह अभिषिक्त जन न आ जाए।

11:4,5 यीशु ने यूहन्ना को यह स्मरण दिलाते हुए **उत्तर दिया** कि वह उन आश्चर्यकर्मों को कर रहा है जिन आश्चर्यकर्मों के विषय में भविष्यद्वाणी की गई थी कि ये मसीहा द्वारा किए जाएंगे: **अन्धे देखते हैं** (यशा. 35:5); **लंगड़े चलते हैं** (यशा. 35:6); **कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं** (यशा. 53:4), मत्ती 8:16, 17); **बहिरे**

सुनते हैं (यशा. 35:5); **मुर्दे जिलाए जाते हैं** (मसीह द्वारा इस आश्चर्यकर्म को किए जाने की भविष्यद्वाणी नहीं की गई थी; यह भविष्यद्वाणी किए गए आश्चर्यकर्मों से भी महान आश्चर्यकर्म था)। यीशु ने यूहन्ना को यह भी बताया कि **कंगालों** को **सुसमाचार सुनाया जाता है** जो कि यशायाह 61:1 में मसीह के सम्बन्ध में की गई भविष्यद्वाणी की पूर्णता है। आम धार्मिक अगुवे अपना ध्यान अक्सर धनी और अभिजात वर्ग की ओर लगाते हैं। मसीह **कंगालों** के लिए सुसमाचार ले कर आया।

11:6 उसके बाद उद्धारकर्ता ने आगे कहा, "**धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए।**" किसी दूसरे के मुँह से यह बात सुनने पर ऐसा लगेगा कि कोई अति अंहकारी व्यक्ति बोल रहा है। परन्तु जब यह बात यीशु के मुँह से निकलती है, जो यह उसकी व्यक्तिगत सिद्धता की एक उचित अभिव्यक्ति है। रौबदार पहिरावे में एक सैन्य जनरल के रूप में न आकर वह एक दीन बढ़ाई के रूप में इस संसार में आया। उसकी सज्जनता, दीनता, और नम्रता ऐसे गुण थे जो सैन्य अगुवे के रूप में अपेक्षित मसीह की छवि से बिल्कुल अलग थे। जो लोग सांसारिक अभिलाषाओं के अनुरूप चलते थे वे मसीह होने के उसके दावे को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। परन्तु परमेश्वर की आशीष ऐसे लोगों पर आएगी, जो आत्मिक दृष्टि से देखने के द्वारा, नासरत के बढ़ाई को उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए मसीह के रूप में स्वीकार करेंगे।

हमें ऐसा नहीं समझना है कि पद 6 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को फटकार लगाई जा रही है। हर एक व्यक्ति के विश्वास को समय समय पर दृढ़ और मजबूत किए जाने की आवश्यकता होती है। कुछ समय के अस्थायी तौर पर अपने विश्वास में डगमगा जाना अलग बात है और स्थायी रूप से विश्वास से हट कर प्रभु यीशु की सच्ची पहचान न कर पाना उससे काफी अलग बात है। एक अकेला अध्याय ही मनुष्य के जीवन की कहानी नहीं होता। यदि हम यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के सम्पूर्ण जीवन को देखें तो हम पाएंगे कि उसने अपने जीवन के द्वारा विश्वासयोग्यता और धीरज को प्रदर्शित किया।

11:7,8 जब यूहन्ना के चेले यीशु से पुन:आश्वासन लेकर वहाँ से **चल दिए** तो प्रभु **लोगों** से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में प्रशंसा भरे शब्द कहने लगा। यही भीड़ जंगल में उमड़ पड़ी थी जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला वहाँ प्रचार कर रहा था। क्यों? किसी कमजोर, डगमगाते **सरकण्डे** के समान मनुष्य को, जो मनुष्य के मतों की हर एक **हवा** से हिल जाता है? निश्चय ही नहीं! यूहन्ना एक निडर प्रचारक था, जो अपने विवेक के अनुसार चलता था, और जो चुप रहने की बजाए कष्ट झेलना और झूठ बोलने की बजाए मरना पसन्द करता। क्या वे राजभवन में रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति को देखने गए थे जो सुन्दर व्यवस्थित वस्त्र पहनता है, और सुख विलास के साथ चैन की जिन्दगी जीता है? निश्चय ही नहीं! यूहन्ना परमेश्वर का एक साधारण जन था जिसका अतिसंयमी जीवन लोगों की अतिसांसारिकता के लिये एक कड़ी फटकार है।

11:9 क्या वे **किसी भविष्यद्वक्ता** को देखने गए थे? यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक भविष्यद्वक्ता था, बल्कि वह सबसे महान भविष्यद्वक्ता था। प्रभु यहाँ पर यह नहीं कह रहा है कि यूहन्ना अपने व्यक्तिगत चरित्र, वाकपटुता, या लोगों को विश्वास करने के लिए सहमत कर पाने के गुण के कारण महान था; वह इसलिए महान था क्योंकि वह मसीह राजा का अग्रदूत (मार्ग तैयार करने वाला) था।

11:10 यह बात पद 10 में स्पष्ट की गई है; यूहन्ना में ही मलाकी 3:1 की भविष्यद्वाणी पूरी हुई थी – वह **दूत** जो प्रभु से पहले आएगा और उसके आगमन के लिए मार्ग **तैयार** करेगा। दूसरे भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की थी, परन्तु यूहन्ना वह भविष्यद्वक्ता था जो उसके वास्तविक आगमन की घोषणा करने के लिए चुना गया था। किसी ने बिल्कुल सही कहा है, "यूहन्ना ने मसीह के लिए *मार्ग खोला* और फिर वह मसीह के लिए *उस रास्ते से हट गया।*"

11:11 यह वाक्य कि "**जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है**" यह सिद्ध करता है कि यीशु यूहन्ना के विशेषाधिकार के बारे में बात कर रहा था, उसके चरित्र के बारे में नहीं। जो व्यक्ति **स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है** आवश्यक नहीं कि उसका चरित्र यूहन्ना से बेहतर हो, परन्तु अवश्य ही उसे यूहन्ना से अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं। स्वर्ग के राज्य का नागरिक बनना उसके आगमन की घोषणा करने से भी महान बात है। प्रभु के लिए मार्ग तैयार करने का बड़ा विशेषाधिकार यूहन्ना को मिला, परन्तु वह स्वर्ग के राज्य की आशीषों का आनन्द लेने के लिए जीवित नहीं रहा।

11:12 यूहन्ना की सेवकाई के आरम्भ से बन्दीगृह में उसके जीवन तक, **स्वर्ग के राज्य** के साथ **जोर** (हिंसा) होता रहा है। फरीसियों और शास्त्रियों ने बलपूर्वक इसका विरोध किया है। हेरोदेस राजा ने स्वर्ग के राज्य के अग्रदूत (उद्‌घोषक) को छीन कर स्वर्ग के राज्य को अपनी ओर से तमाचा मारा।

"**. . . बलवान उसे छीन लेते हैं।**" इस वाक्य को दो तरह से समझा जा सकता है। पहला, स्वर्ग के राज्य के शत्रुओं ने स्वर्ग के राज्य को छीन कर इसे नाश कर देने के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयास किया। उनके द्वारा यूहन्ना का इंकार किया जाना स्वयं राजा और इस तरह से राज्य के तिरिस्कार की पूर्वसूचना थी। परन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जो राजा के आगमन के लिए तैयार थे उन्होंने बलपूर्वक या पूरे जोश से इस घोषणा का प्रत्युत्तर दिया और इसमें प्रवेश करने के लिए अपना सारा प्रयास लगा दिया। लूका 16:16 में यही अर्थ है: "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है।" यहाँ परमेश्वर का राज्य एक घेरे हुए नगर के रूप में चित्रित किया गया है, जिसकी शहरपनाह पर हर प्रकार के लोग बाहर से हथौड़े बरसा रहे हैं, ताकि वे उसके भीतर प्रवेश कर सकें। एक प्रकार का आत्मिक जोर लगाया जाना आवश्यक है।

हम जिस भी अर्थ को अपनाएं, यहाँ पर यह विचार पाया जाता है कि यूहन्ना के प्रचार से एक बलपूर्वक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई, जिसके व्यापक और गहरे प्रभाव हुए।

11:13 "**यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे।**" उत्पत्ति से लेकर मलाकी तक सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र मसीह के आने की भविष्यद्वाणी करता है। जब यूहन्ना ने इतिहास के मंच पर कदम रखा, तो उसकी अद्वितीय भूमिका सिर्फ भविष्यद्वाणी करनी नहीं थी; उसकी भूमिका यह थी कि वह मसीह के प्रथम आगमन से सम्बन्धित सारी भविष्यद्वाणियों की पूर्णता की घोषणा करे।

11:14 मलाकी ने भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह के आगमन से पहले, एलिय्याह उसके अग्रदूत के रूप में उसके लिए मार्ग तैयार करने को आएगा (मलाकी 4:5, 6)। यदि लोग यीशु को मसीह के रूप में मानने के लिए इच्छुक होते, तो यूहन्ना **एलिय्याह** की भूमिका को पूरी करता। एलिय्याह ने यूहन्ना के रूप में पुन:देहधारण नहीं किया था – उसने यूहन्ना 1:21 में इंकार किया कि वह एलिय्याह है। परन्तु वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यीशु के आगे आगे आया (लूका 1:17)।

11:15 बहुत से लोगों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवकाई को नहीं सराहा या उसकी सेवकाई के गहरे महत्व को नहीं समझा। इसलिए प्रभु ने आगे यह कहा, "**जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले!**" दूसरे शब्दों में, ध्यान देकर सुनें। जो तुम सुन रहे हो उसके महत्व को समझने से चूक न जाओ। यदि यूहन्ना ने एलिय्याह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणी को पूरा किया, तो यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह था! इस तरह से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मान्यता देने के द्वारा, यीशु इस दावे की फिर से पुष्टि कर रहा था कि वह परमेश्वर के द्वारा भेजा गया मसीह है। यदि कोई एक को स्वीकार करता है तो उसे स्वीकार करने के द्वारा वह दूसरे को भी स्वीकार करने की ओर आगे बढ़ता है।

11:16,17 परन्तु यीशु जिस **समय के लोगों** से बात कर रहा था वे दोनों में से किसी को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। उस समय के यहूदी, जिन्हें अपने मसीह राजा के आगमन को देख पाने का सुअवसर दिया गया था, उन्होंने मसीह राजा या उसके अग्रदूत के प्रति कोई रूचि नहीं दिखाई। वे एक पहेली के समान थे। यीशु उनकी तुलना उन रूठे हुए **बालकों** से करते हैं **जो बाजारों में बैठे हुए** हैं वे किसी भी शर्त पर सन्तुष्ट होने को तैयार नहीं हैं। उनके मित्र उनके लिए बांसुली बजाने के लिए तैयार थे कि वे **नाचें**, पर वे नहीं माने। उनके मित्र मिट्टी देने का खेल खेलना चाहते थे, पर उन्होंने **विलाप** करने से मना कर दिया।

11:18,19 **यूहन्ना** एक बैरागी के रूप में **आया**, और उन्होंने उस पर दुष्टात्माग्रसित होने का दोष लगा दिया। दूसरी ओर, **मनुष्य का पुत्र** सामान्य रूप से खाते पीते हुए इस संसार में रहा। यदि यूहन्ना के बैरागी जीवन के कारण उसे स्वीकार करना असुविधाजनक था, तब निश्चय ही उन्हें मसीह के सामान्य भोजन करने की आदत से वे प्रसन्न होते। परन्तु नहीं, उन्होंने उसे **पेटू**, पियक्कड़ और **महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र** कहा। बेशक, यीशु ने कभी भी आवश्यकता से अधिक न खाया

न पीया; उनके दोष पूरी तरह से एक छलरचना थे। यह सत्य है कि वह **महसूल लेनेवालों और पापियों का मित्र** था, परन्तु उन अर्थों में नहीं, जैसा वे समझ रहे थे। उसने पापियों को इसलिए मित्र बनाया कि वह उन्हें पाप से बचा ले, परन्तु वह कभी भी उनके पाप का भागी नहीं हुआ, न ही उसने उनके पाप का समर्थन किया।

''**परन्तु ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया।**'' नि:सन्देह, प्रभु यीशु ज्ञान का मानवीकरण है (1 कुरि.1:30)। यद्यपि अविश्वासी मनुष्य उसकी झूठी निन्दा करें, वह अपने कामों के द्वारा और अपने अनुयायियों के जीवन के द्वारा सच्चा ठहराया जाता है। यद्यपि अधिसंख्य यहूदी उसे अपना मसीह राजा मानने से मना कर दें, यीशु के दावे उसके आश्चर्यकर्मों और उसके समर्पित चेलों के आत्मिक परिवर्तन से पूरी तरह से प्रमाणिक ठहराए जाते हैं।

ब. गलील के मन न फिराए हुए नगरों को उलाहना (11:20–24)

11:20 बड़े विशेषाधिकार या सुअवसर बड़ी जिम्मेदारियाँ भी लेकर आते हैं। खुराजीन, बैतसैदा, और कफरनहूम के जैसा सुअवसर किसी अन्य नगर को नहीं मिला। परमेश्वर का देहधारी पुत्र उनकी धूलभरी सड़कों पर चला, उनके लोगों को शिक्षा दी, और शहरपनाह के भीतर अपने **सामर्थ के** सबसे बड़े **कामों** को किया। इन जबर्दस्त प्रमाणों के बाद भी उन्होंने मन फिराने से हठपूर्वक इंकार कर दिया। इस बात पर अधिक आश्चर्य नहीं होना चाहिए, कि इसी लिए प्रभु ने उन के नाश की सबसे अधिक गम्भीर घोषणा की।

11:21,22 उसने **खुराजीन** और **बैतसैदा** से आरम्भ किया। इन नगरों ने अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के अनुग्रह निवेदनों को सुना था। तौभी वे जानबूझ कर उससे दूर चले गए। उसका मन वहाँ से हट कर **सूर और सैदा** के नगरों की ओर गया जो अपनी मूर्तिपूजा और दुष्टता के कारण परमेश्वर के दण्ड के आधीन आ गए थे। यदि उन्हें यीशु के आश्चर्यकर्मों को देखने का अवसर मिला होता, तो उन्होंने अपने आप को दीन बना कर अपना मन फिरा लिया होता। इसलिए **न्याय के दिन, सूर और सैदा** की दशा खुराजीन और बैतसैदा के नगरों से बेहतर होगी। ''**न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी**'' का अर्थ है कि नरक में कोई कम और कोई अधिक दण्ड भोगेगा, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ग में हर एक के लिए उसके कामों के अनुसार प्रतिफल दिया जाएगा (1 कुरि. 3:12–15)। एकमात्र पाप जो मनुष्य को नरक जाने के योग्य बना देता है वह है यीशु मसीह को स्वीकार करने से इंकार कर देना (यूहन्ना 3:36ब)। परन्तु नरक में कौन कितना कष्ट भोगेगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि किसने कितने अवसरों का तिरिस्कार किया और कौन कितने पापों में किस गहराई तक जा कर लिप्त हुआ।

11:23–24 कुछ ही नगरों पर **कफरनहूम** के समान ही अनुग्रह किया गया था। यह नासरत में यीशु का तिरिस्कार कर दिये जाने के बाद से यीशु का गृहनगर बन गया (9:1 देखिए, और मरकुस 2:1–12 से तुलना कीजिए), और उसके सबसे अद्‌भुत आश्चर्यकर्म – जो उसके मसीह होने के अकाट्य प्रमाणों के रूप में किए गए थे – कफरनहूम में ही किए गए थे। यदि सदोम जैसे बिल्कुल नीच नगर को, जो समलैंगिकता का बहुत बड़ा अड्डा था, ऐसा सौभाग्य मिला होता, तो यह नगर मन फिराकर बच जाता। परन्तु कफरनहूम इस नगर की तुलना में अधिक सौभाग्यशाली था। कफरनहूम के नागरिकों को मन फिरा कर खुशी खुशी प्रभु को स्वीकार कर लेना था। परन्तु कफरनहूम ने इस सुअवसर को खो दिया। सदोम का पाप बहुत बड़ा था। परन्तु कफरनहूम ने परमेश्वर के पवित्र पुत्र का तिरिस्कार करने के द्वारा जो पाप किया, उससे बड़ा पाप और कोई दूसरा नहीं हो सकता। इसलिए, न्याय के दिन सदोम को उतना कठोर दण्ड नहीं मिलेगा जितना कफरनहूम को। जिस कफरनहूम को सुअवसर देकर **स्वर्ग** जितना ऊँचा उठाया गया था, उसी कफरनहूम को दण्ड देकर **अधोलोक तक नीचे किया जाएगा।** यदि यह सिद्धान्त कफरनहूम पर लागू होता है तो उन स्थानों पर कितना अधिक लागू होगा, जहाँ बाइबल बहुतायत में पाई जाती है, जहाँ सुसमाचार का प्रचार और प्रसार किया जाता है, और जहाँ प्रभु को स्वीकार न करने के लिए कोई बहाना नहीं है। हमारे प्रभु के दिनों में, गलील में चार प्रमुख नगर थे: खुराज़ीन, बैतसैदा, कफरनहूम, और तिबिरियास। उसने पहले तीन नगरों को उलाहना दिया,

परन्तु तिबिरियास को नहीं। इन उलाहनाओं का क्या परिणाम निकला? खुराज़ीन और बैतसैदा इस तरह से नाश हो गए कि अब यह भी नहीं मालूम कि वे भूगोल में वास्तव में कहाँ पाए जाते थे। कफरनहूम की स्थिति के बारे में कोई सकारात्मक जानकारी नहीं है। तिबिरियास आज भी अस्तित्व में है। इस भविष्यद्वाणी की यह उल्लेखनीय पूर्णता हमारे उद्धारकर्ता की सर्वज्ञता और बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे जाने का एक और प्रमाण है।

स. तिरिस्कार किए जाने पर उद्धारकर्ता की प्रतिक्रिया (11:25-30)

11:25-30 गलील के तीन नगरों के पास परमेश्वर द्वारा भेजे गए मसीह को पहचानने के लिए न तो आँखें थीं, न ही उससे प्रेम करने के लिए हृदय। वह जानता था कि उनका यह रवैया एक व्यापक वर्ग द्वारा उसका तिरिस्कार किए जाने का एक पूर्वसूचक है। उसने उनकी इस पश्चतापहीनता के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया दिखाई? कड़वाहट के साथ नहीं, अपनी निराशा व्यक्त करने के द्वारा नहीं, और न ही बदला लेने की कोई भावना प्रगट करने के द्वारा। बल्कि, उसने अपनी आवाज उठाकर परमेश्वर को धन्यवाद दिया कि कोई भी बात उसके सम्प्रभुत्व-उद्देश्यों को असफल नहीं कर सकती।''**हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा है और बालकों पर प्रगट किया है।**''

यहाँ पर हमारे भीतर दो प्रकार की गलत समझ उत्पन्न हो सकती जिससे हमें बचना है। पहली, यीशु गलील के नगरों को मिलने वाले निश्चित दण्ड के प्रति प्रसन्नता व्यक्त नहीं कर रहा है। दूसरी, वह यहाँ पर यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर ने मनमाने ढंग से (जिस तरह से एक तानाशाह) ज्ञानवानों और समझदार लोगों से ज्योति को छिपा रखा है।

इन नगरों को प्रभु यीशु को स्वीकार करने का हर एक अवसर मिला। उन्होंने उसे स्वीकार करने से हठपूर्वक मना कर दिया। जब उन्होंने ज्योति का इंकार कर दिया तो परमेश्वर ने उन्हें ज्योति से वंचित कर दिया। परन्तु परमेश्वर की योजना निष्फल नहीं होगी। यदि बुद्धिमान लोग विश्वास नहीं लाएंगे तो परमेश्वर अपने आप को दीन लोगों पर प्रगट करेगा। वह भूखे लोगों को भली वस्तुओं से तृप्त करता है और धनी को खाली हाथ भेज देता है (लूका 1:53)।

जो ज्ञानवान और समझदार अपने ज्ञान और समझ के आगे अपने जीवन में मसीह की आवश्यकता को महसूस नहीं करते वे आत्मिक अन्धेपन से ग्रस्त हो जाएंगे। परन्तु जो अपने भीतर बुद्धि की कमी को स्वीकार करते हैं वे उस परमेश्वर की ज्योति पाएंगे ''जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (कुलु. 2:3)। यीशु ने परमेश्वर पिता को धन्यवाद दिया कि उस ने ऐसा ठहराया है कि यदि कुछ लोग उसे ग्रहण न भी करें, तो दूसरे लोग उसे ग्रहण करेंगे। इस घोर अविश्वास का सामना करते समय वह परमेश्वर की प्रबल योजनाओं और उद्देश्यों के द्वारा अपने लिए शान्ति पाता है।

11:27 सब कुछ उसके **पिता** के द्वारा मसीह को **सौंपा** गया है। यदि कोई दूसरा इस प्रकार का दावा करता है तो यह धृष्टता समझी जाएगी, परन्तु यदि यीशु ऐसा कहता है तो उसके लिए यह एक सामान्य सत्य है। उस समय, जब उस के विरूद्ध विरोध बढ़ता जा रहा था, तब ऐसा लग रहा था कि कुछ भी उसके नियंत्रण में नहीं है; तौभी यह बात सत्य थी। उसके जीवन की योजना निर्बाध गति से निर्णायक विजय की ओर आगे बढ़ रही थी। ''**कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता।**'' मसीह के व्यक्तित्व में बारे में यहाँ पर एक ऐसा रहस्य पाया जाता है जिसे हम समझ नहीं सकते। एक व्यक्ति में ईश्वरत्व और मनुष्यत्व का मेल पाया जाना एक ऐसा प्रश्न उत्पन्न करता है जो मानवीय बुद्धि को उलझन में डाल देता है। उदाहरण के लिए, उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में एक प्रश्न उत्पन्न हो जाता है। परमेश्वर मर नहीं सकता। परमेश्वर होने के बावज़ूद भी यीशु मसीह की मृत्यु हुई। और तौभी उसके ईश्वरीय और मानवीय स्वभाव को अलग अलग नहीं किया जा सकता। *(उसने ईश-मानव के रूप में अपना प्राण दिया)*। इसलिए यद्यपि हम उसे जान सकते हैं और उससे प्रेम कर सकते हैं और उस पर भरोसा रख सकते हैं, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिससे सिर्फ पिता ही यीशु को समझ सकता है।

परन्तु तेरे नाम के गहरे भेद,
तेरी सृष्टि की समझ के बाहर हैं;
केवल पिता (महिमामय दावा!),
पुत्र को समझ सकता है।
हे परमेश्वर के मेम्ने, तू अतियोग्य है,
कि हर एक घुटना तेरे आगे झुके!

– जोसिय्याह कोन्डर

"और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।" परमेश्वर को भी समझा नहीं जा सकता। वास्तव में, सिर्फ परमेश्वर ही परमेश्वर को समझ सकता है। मनुष्य अपनी शक्ति या बुद्धि से उसे नहीं जान सकता। परन्तु प्रभु यीशु उसे जान सकता है और उसे उन पर प्रगट कर सकता है जिन पर वह उसे प्रगट करना चाहता है। जो कोई पुत्र को जान जाता है वह पिता को भी जान जाता है (यूहन्ना 14:7)।

तौभी, यह सब कहने के बाद, हम अवश्य ही यह स्वीकार करते हैं कि पद 27 को समझाने का प्रयास करने के द्वारा, हम ऐसे सत्यों को समझने का प्रयास कर रहे हैं जो हमारे लिए काफी कठिन हैं। हम दर्पण में धुंधला ही देख पा रहे हैं। अनन्तकाल तक भी हमारी सीमित समझ परमेश्वर की महानता को पूरी तरह से समझ नहीं पाएगी, न ही उसके देहधारण के रहस्य को समझ पाएगी। जब हम यह पढ़ते हैं कि पिता को सिर्फ उन पर प्रगट किया जाता है जिन्हें पुत्र चुनता है, तो शायद हम ऐसा सोचने की परीक्षा में पड़ जाएं कि यहाँ पर कुछ ही लोगों को चुन कर मनमाना या पक्षपात किया जा रहा है। इसके बाद के पद में इस प्रकार की समझ के विरूद्ध सचेत किया जा रहा है। प्रभु यीशु विश्व के सारे थके और बोझ से दबे हुए लोगों को यह निमंत्रण दे रहा है कि वे उसके पास आकर विश्राम पाएं। दूसरे शब्दों में, वह उन लोगों को चुन रहा है कि पिता को उन पर प्रगट करे जो उस पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं। जब हम असीमित स्नेह से भरे इस निमंत्रण के बारे में ध्यान से विचार करते हैं, तो हम यह स्मरण करें कि यह निमंत्रण यीशु ने गलील के सौभाग्यशाली नगरों द्वारा उसका घोर तिरिस्कार किए जाने के तुरन्त बाद दिया था। मनुष्य का बैरभाव और उसकी जिद भी प्रभु के प्रेम और अनुग्रह को समाप्त नहीं कर सकी। ए. जे. मैक क्लेन इस विषय पर कहते हैं:

> यद्यपि इस्राएली जाति ईश्वरीय न्याय की अग्निपरीक्षाकी ओर बढ़ रही है, राजा अपने अन्तिम वचन कहते हुए व्यक्तिगत उद्धार का एक द्वार खोल देता है। और इस तरह से वह प्रमाणित कर देता है कि वह अनुग्रह का परमेश्वर है, चाहे वह न्याय की दहलीज पर ही क्यों न खड़ा हो।[19]

11:28 आओ. आने का अर्थ होता है विश्वास करना (प्रेरित 16:31); ग्रहण करना (यहून्ना 1:12); खाना (यूहन्ना 6:35); पीना (यूहन्ना 7:37); देखना (यशा. 45:22); मान लेना (1 यूहन्ना 4:2); सुनना (यूहन्ना 5:24,25); द्वार से प्रवेश करना (प्रका. 3:20); उसके वस्त्र के छोर को छू लेना (मत्ती 9:20, 21); और हमारे प्रभु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन की भेंट को स्वीकार कर लेना (रोमि. 6:23)।

मेरे पास. विश्वास का विषय कलीसिया, मत, या कोई अगुवा नहीं, परन्तु जीवित मसीह है। उद्धार (मसीह के) व्यक्तित्व में है। उद्धार एक व्यक्ति के द्वारा ही है। जिनके पास मसीह है वे ऐसा उद्धार पाए हुए लोग हैं, जैसा परमेश्वर उन्हें बना सकता है।

सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे लोगो. यीशु के पास सचमुच में आने के लिए, एक व्यक्ति को यह स्वीकार करना आवश्यक है कि वह पाप के बोझ से दबा हुआ है। सिर्फ वे ही जो यह मानते हैं कि वे खोए हुए हैं वे उद्धार पा सकते हैं। मसीह पर विश्वास लाने से पहले परमेश्वर के प्रति पश्चतापी मन प्रगट किया जाता है।

मैं तुम्हें विश्राम दूंगा. ध्यान दें कि **विश्राम** यहाँ पर एक भेंट है; इसे कोई मूल्य देकर अर्जित नहीं किया जा सकता, न ही हमारी कोई योग्यता के कारण यह हमें दिया जाता है। यह *उद्धार का विश्राम* है जो इस बात का बोध करने के बाद आता है कि मसीह ने कलवरी के क्रूस पर छुटकारे के काम को पूरा कर दिया है। यह *विवेक का विश्राम* है जो इस बोध के बाद मिलता है कि एक व्यक्ति के पापों का पूरा दण्ड एक ही बार में चुका दिया गया है, और अब परमेश्वर इसे दोबारा चुकाने के लिए नहीं कहेगा।

11:29 पद 29 और 30 में, उद्धार का निमंत्रण अब सेवा करने के लिए निमंत्रण बन जाता है।

मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो. इसका अर्थ है उसकी इच्छा के प्रति समर्पण करने के लिए तैयार हो जाओ, और अपने जीवन का नियंत्रण अपने पास न रख कर, उसे सौंप दो (रोमि. 12:1,2)।

और मुझ से सीखो. जब हम उसे अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं तो वह हमें अपने मार्गों की शिक्षा देता है।

क्योंकि मैं नम्र और दीन हूँ. फरीसियों के विपरीत जो कठोर और घमण्डी थे, सच्चा शिक्षक नम्र और **दीन** है। जो उसका जूआ अपने ऊपर ले लेते हैं वे सबसे नीचा स्थान स्वीकार करना सीख जाएंगे।

और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे. यहाँ पर 'विवेक का विश्राम' के बारे में नहीं, परन्तु हृदय में विश्राम पाने के विषय में कहा जा रहा है जो परमेश्वर और मनुष्य के सामने सबसे छोटा स्थान स्वीकार करने से मिलता है। यह एक ऐसा विश्राम भी है जो एक व्यक्ति को परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा तब मिलता है जब वह अपने आप को बड़ा बनाने का प्रयास करना बन्द कर देता है।

11:30 ''**क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।**'' एक बार फिर से यहाँ पर फरीसियों के आचरण से बिल्कुल विपरीत बात कही गई है। यीशु ने कहा, ''वे ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते'' (मत्ती 23:4)। यीशु का बोझ हल्का है; इससे कंधा नहीं छिलता। किसी ने कहा है कि यदि यीशु ने अपने 'बढ़ाई कारखाना' के सामने कोई बोर्ड लगाया होता तो उसमें उसने लिखा होता, ''मेरा जूआ बिल्कुल ठीक बैठता है।''

उसका **बोझ हल्का है.** इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही जीवन में कोई भी समस्याएं, परीक्षाएं, परिश्रम, या तनाव नहीं होते। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि इन्हें हमें अकेले ढोना नहीं पड़ता। मसीही जीवन में जब हम जूआ अपने कांधे पर लेते हैं तो दूसरी ओर हमारा जोड़ीदार वह होता है जो हर आवश्यकता के समय पर्याप्त अनुग्रह प्रदान करता है। उसकी सेवा करना गुलामी नहीं परन्तु एक पूर्ण स्वतंत्रता है। जे. एच. ज़ोवेट इस विषय पर यह कहते हैं:

> यदि जीवन के भार को विश्वासी एक ही गर्दन के सहारे उठाना चाहेगा तो यह उसकी एक घातक भूल होगी। परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा है कि मनुष्य अपना भार अकेला उठाए। *इसलिए मसीह हमारे साथ सिर्फ जूआ के माध्यम से काम करता है*। जूआ को जोतने के लिए दो गर्दनों की आवश्यकता होती है, और प्रभु स्वयं यह विनती करता है कि उन दो में से एक गर्दन उसका हो। कार्य चाहे कितना ही खिजाने वाला क्यों न हो वह हमारे परिश्रम में हाँथ बंटाना चाहता है। मसीही जीवन में शान्ति और विजय का रहस्य ''स्वयं'' के भारी बोझ को उतार कर स्वामी के विश्राम देने वाले ''जूए'' को उठा लेने में पाया जाता है।[20]

द. यीशु सब्त का प्रभु है (12:1–8)

12:1 इस अध्याय में तिरिस्कार के संकट के अत्याधिक बढ़ जाने का उल्लेख किया गया है। फरीसियों के मन में जो दुर्भाव और विद्वेष बढ़ता जा रहा था वह अब फट पड़ने की स्थिति में आ गया है। बाढ़ का पानी बान्ध के जिन दरवाजों को बन्द कर रोका गया था, वह सब्त के प्रश्न के मामले में खुल जाता है।

इस सब्त के दिन, **यीशु** और उसके चेले **खेतों में से होकर** जा रहे थे। **उसके चेले** भूख के कारण **बालें तोड़ कर खाने लगे**। व्यवस्था में भूख लगने पर अपने संगी यहूदी के खेतों का अनाज तोड़ कर खाने की छूट थी, बशर्ते अनाज को पौधों से अलग करने के लिए वे हंसिया का उपयोग न करें (व्य. वि. 23:25)।

12: 2 परन्तु **फरीसियों ने**, जिनको दोष निकालने का कानूनन अधिकार था, यह दोष लगाया कि **सब्त** के नियम का उल्लंघन किया गया है। यद्यपि यह नहीं बताया गया है कि उन्होंने चेलों पर क्या क्या दोष लगाए परन्तु बहुत कर के उन्होंने चेलों पर (1) कटनी करने का (अन्न को तोड़ा); (2) मिंजाई करने का (अपने हाँथों से मसला); (3) फटकने का (अन्न को छिलके से अलग किया) दोष लगाया होगा।

12:3, 4 यीशु ने उन्हें **दाऊद** के जीवन से जुड़ी एक घटना का स्मरण दिलाने के लिए उनकी हास्यपद शिकायत का उत्तर दिया। एक बार, जब दाऊद देश से बाहर भगोड़े की तरह जी रहा था, तब वह और उसके साथी जंगल में गए और उन्होंने **भेंट की रोटियां खाईं;** ये विशेष प्रकार की बारह रोटियां याजक के सिवाय और दूसरे को खाने के लिए वर्जित थी। न तो दाऊद और न ही उसके साथ याजक थे, तौभी परमेश्वर ने ऐसा करने पर उन्हें किसी भी प्रकार से दोषी नहीं ठहराया। परमेश्वर ने ऐसा क्यों नहीं किया?

इसका कारण यह है कि परमेश्वर की व्यवस्था उसके

विश्वासयोग्य लोगों पर कठोरता या भार डालने के उद्देश्य से नहीं दी गई थी। यह दाऊद की गलती नहीं थी कि वह निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहा था। पाप में पड़े हुए एक राष्ट्र ने उसका तिरस्कार कर दिया था। यदि उसे उसके अधिकार का स्थान दिया गया होता तो उसे और उसके साथियों को भेंट की रोटियां खानी नहीं पड़ती। चूंकि इस्राएल में पाप था, इसलिए परमेश्वर ने इस वर्जित कार्य को करने की अनुमति दी।

यह समरूपता स्पष्ट है। प्रभु यीशु इस्राएल का राजा होने का अधिकार रखता था, परन्तु इस्राएली जाति ने उसे प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं किया। यदि उसे उसका उचित स्थान दिया जाता, तो उसके चेलों को इतनी छोटी हरकत करते हुए सब्त के दिन या सप्ताह के किसी और दिन इस प्रकार से अन्न खाना नहीं पड़ता। इतिहास अपने आप को दोहरा रहा था। प्रभु ने अपने चेलों को नहीं डाँटा क्योंकि उन्होंने कोई गलती नहीं की थी।

12:5 यीशु ने फरीसियों को यह स्मरण दिलाया कि सब्त के दिन बलिदान के पशुओं का वध करके (गिनती 28:9, 10) और अनेक दूसरे कार्यों को करके **याजक . . . सब्त के दिन की विधि को** तोड़ते हैं, तौभी वे **निर्दोष** ठहरते हैं क्योंकि वे यह परमेश्वर की सेवा के रूप में करते हैं।

12:6 फरीसी लोग यह जानते थे कि याजक मन्दिर में प्रत्येक सब्त के दिन कार्य करते हैं और तौभी सब्त अपवित्र नहीं होता। तब फिर उन्हें चेलों की आलोचना क्यों करनी चाहिए जब कि वे *किसी ऐसे* की उपस्थिति में यह कर रहे हैं जो **मन्दिर से भी बड़ा है**? *किसी ऐसे* शब्द को शायद *कुछ ऐसे* पढ़ना बेहतर होगा: *कुछ ऐसी* चीज़ यहाँ उपस्थित है जो मन्दिर से भी बड़ी है। ''कुछ ऐसी'' परमेश्वर का राज्य है, जो राजा के व्यक्तित्व में उपस्थित है।

12:7 फरीसियों ने कभी भी परमेश्वर के हृदय को नहीं समझा था। होशे 6:6 में उसने कहा, ''**क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम (दया) से प्रसन्न होता हूँ**।'' परमेश्वर रीतिविधि से पहले दया को प्राथमिकता देता है। वह सब्त के दिन अपने लोगों को भूखे रख कर सब्त के दिन का पालन करते हुए देखने की बजाए सब्त के दिन अन्न तोड़ कर खाने के द्वारा अपनी भूख तृप्त करते देखना अधिक पसन्द करेगा। यदि यह बात फरीसियों की समझ में आ गई होती तो वे यीशु के चेलों पर दोष नहीं लगाते। परन्तु वे फरीसी; तो मानवीय कल्याण की बजाए बाहरी अत्यौपचारिकता को अधिक महत्व देते थे।

12:8 उसके बाद उद्धारकर्ता ने कहा, ''**मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है**।'' यह वही था जिसने सबसे पहले व्यवस्था की स्थापना की थी, और इसलिए व्यवस्था के सच्चे अर्थ की व्याख्या करने की सबसे अधिक योग्यता सिर्फ उसी के पास है। इ. डब्ल्यू रोजर्स कहते हैं:

> ऐसा लगता है मानों मत्ती, यहाँ पर आत्मा के द्वारा सिखाए जाने पर, जल्दी जल्दी प्रभु यीशु के अनेक नामों और उसकी पदवियों को दोहराता जाता है: वह मनुष्य का पुत्र है; सब्त के दिन का प्रभु है; मेरा सेवक है; मेरा प्रिय है; दाऊद की सन्तान है; मन्दिर से भी बड़ा है; योना से भी बड़ा है; सुलैमान से भी बड़ा है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि यीशु को स्वीकार करने से इंकार करने और उसके अधिकारों के अनुरूप कार्य करने से मना करने के पाप की भयंकरता को दर्शा सके।[21]

अगली घटना की ओर आगे बढ़ने से पहले – यीशु ने सब्त के दिन सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया – हम थोड़ा सा रूक कर सब्त के सम्बन्ध में पवित्रशास्त्र में दी गई शिक्षाओं का दोहराव करेंगे।

सब्त

सब्त का दिन सप्ताह का सातवाँ दिन (शनिवार) था, है, और हमेशा रहेगा।

छ: दिनों तक सृष्टि की रचना करने के बाद, परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया (उत्प. 2:2)। उसने उस समय मनुष्य को सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा नहीं दी, यद्यपि उस दिन उसने इस सिद्धान्त का अविष्कार किया हो – प्रत्येक सात दिन में एक दिन विश्राम – कि बाद में उसका पालन किया जाए।

इस्राएली जाति को सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा तब दी गई जब दस आज्ञाएं दी गई थीं (निर्ग. 20:8–21)। सब्त के दिन की आज्ञा अन्य नौ आज्ञाओं से भिन्न थी; सब्त के दिन का नियम रीति विधि से सम्बन्धित नियम था जबकि अन्य नौ नियम नैतिक जीवन से सम्बन्धित

नियम थे। सब्त के दिन काम करना गलत सिर्फ इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा करने से मना किया था। अन्य नौ आज्ञाएं उन बातों से सम्बन्धित थीं जो मूलभूत रूप से ही गलत थीं।

सब्त के दिन काम करने की मनाही इन बातों पर लागू किए जाने के उद्देश्य से कभी नहीं दी गई थीं: परमेश्वर की सेवकाई (मत्ती 12:5), आवश्यकता के कार्य (मत्ती 12:3,4) या दया के कार्य (मत्ती 12:11,12)। नया नियम में दस में से नौ आज्ञाओं को दोहराया गया है, व्यवस्था के रूप में नहीं, परन्तु अनुग्रह के आधीन होकर जीवन बिताने वाले मसीहियों के लिए शिक्षा के रूप में। एकमात्र आज्ञा जिसका पालन करने के लिए मसीहियों से नहीं कहा गया है वह सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा है। बल्कि, पौलुस यह सिखाता है कि सब्त के दिन का पालन करने में असफल होने पर मसीहियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता (कुलु. 2:16)।

मसीहत में सबसे खास दिन सप्ताह का पहला दिन होता है। प्रभु यीशु मसीह उस दिन मृतकों में से जी उठा था (यूहन्ना 20:1), जो इस बात का प्रमाण था कि छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका है और उसे ईश्वरीय अनुमोदन प्राप्त हो चुका है। अगले दो 'प्रभु के दिनों' में, वह अपने चेलों से मिला (यूहन्ना 20:19,26)। पवित्र आत्मा सप्ताह के पहले दिन दिया गया था (प्रेरित 2:1 देखिये; लैव्य. 23:15,16 से तुलना कीजिये)। आरम्भिक विश्वासी सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होकर और रोटी तोड़ कर, मसीह की मृत्यु को दर्शाते थे (प्रेरित 20:7)। परमेश्वर के द्वारा यह स्पष्ट रूप से नियुक्त कर दिया गया है कि प्रभु के कार्य के लिए किस दिन भेंट को अलग कर के रखना है (1 कुरि. 16:1, 2)।

सब्त या सातवां दिन सप्ताह भर के परिश्रम के अन्त में आता है; प्रभु का दिन या रविवार, सप्ताह का आरम्भ इस चैन का अनुभव करते हुए होता है कि छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका है। सब्त प्रथम सृष्टि की यादगारी थी; प्रभु का दिन नई सृष्टि की यादगारी है। सब्त का दिन एक जिम्मेदारी का दिन था; प्रभु का दिन सौभाग्य का एक दिन है।

मसीही लोग प्रभु के दिन का ''पालन'' उद्धार अर्जित करने या पवित्रता हासिल करने के उद्देश्य से, या दण्ड के भय से नहीं करते। वे इसे इसलिए पवित्र मानते हैं क्योंकि वे इसके द्वारा उस व्यक्ति के प्रति अपनी भक्ति और अपना समर्पण व्यक्त करते हैं, जिसने अपने आप को उनके लिए दे दिया। इसलिए कि इस दिन हम अपनी दिनचर्या, गैर धार्मिक गतिविधियों इत्यादि से मुक्त रहते हैं, हम इस दिन को मसीह की आराधना और सेवा एक विशेष रीति से करने के लिए अलग कर सकते हैं।

ऐसा कहना सही नहीं होगा कि सब्त का दिन प्रभु के दिन में बदल गया। सब्त का दिन शनिवार का दिन है और प्रभु का दिन रविवार का दिन है। सब्त का दिन एक प्रतिबिम्ब को दर्शाता था; जिस वास्तविकता का यह प्रतिबिम्ब था वह वास्तविकता तो मसीह है (कुलु. 2:16,17)। मसीह के पुनरूत्थान के साथ ही एक नई शुरूआत हुई, और प्रभु का दिन इस शुरूआत का सूचक है।

व्यवस्था के आधीन रहते हुए एक विश्वासयोग्य यहूदी की तरह यीशु ने सब्त के दिन का पालन किया (फरीसियों द्वारा इसके विपरीत बातें कर दोष लगाने के बावजूद भी)। सब्त के दिन के प्रभु के रूप में, उसने सब्त के दिन को गलत नियमों और कायदों से मुक्त कर दिया जिनके कारण से इसमें पपड़ी जम गई थी।

इ. यीशु सब्त के दिन चंगा करता है (12:9-14)

12:9 खेतों से निकलकर यीशु **सभा के घर** (सिनेगॉग) को गया। लूका हमें बताता है कि शास्त्री और फरीसी उस पर ताक लगा कर बैठे थे कि वे उस पर कोई दोष लगा सकें (लूका 6:6,7)।

12:10 सभा के घर के भीतर **एक मनुष्य था जिसका हाथ सूखा हुआ था** - फरीसियों द्वारा उसकी सहायता कर पाने में असमर्थ रहने की एक मूक गवाही - अब तक उन्होंने उसे कोई महत्व नहीं दिया था। परन्तु अचानक वह उनके लिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे उसके माध्यम से यीशु को फँसा सकें। वे जानते थे कि उद्धारकर्ता मानव को उसकी दुर्दशा से आराम देने के लिए हमेशा तैयार रहता है। उन्होंने सोचा, यदि वह सब्त के दिन इस मनुष्य को चंगा करेगा, तो वह उसे एक दण्डनीय अपराध का दोषी बताकर फँसा सकते हैं। इसलिए उन्होंने अपनी इस कुयोजना का आरम्भ एक कानूनी छलवाक्य

से किया, ''**क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?**''

12:11 उद्धारकर्ता ने यह प्रश्न करते हुए उत्तर दिया कि यदि उनके पास एक ही **भेड़** हो, और वह **सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए**, तो क्या वे उसे नहीं निकालेंगे। वे अवश्य ही अपनी भेड़ को गड़हे में से बाहर निकालेंगे! परन्तु क्यों? शायद उनका यह बहाना होगा कि यह एक दया का काम है – परन्तु इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि भेड़ की एक कीमत होती है जो पैसे के रूप में प्राप्त होती है और वे सब्त के दिन भी, किसी तरह की वित्तीय हानि सहने के लिए तैयार नहीं होंगे।

12:12 हमारे प्रभु ने हमें यह ध्यान दिलाया कि मनुष्य का **मूल्य** एक भेड़ के मूल्य से अधिक है। यदि एक पशु के प्रति दया दिखाना उचित है तो फिर **सब्त के दिन** एक मनुष्य के साथ **भलाई करना** अधिक उचित क्यों नहीं होगा!

12:13,14 यहूदी अगुवों को उनके ही लोभ के गड़हे में फँसाने के बाद, यीशु ने सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया। उस मनुष्य को **हाथ** बढ़ाने के लिए कहने के द्वारा यीशु ने उसे विश्वास करने और उसकी इच्छा प्रगट करने का अवसर दिया। उस मनुष्य की आज्ञाकारिता का प्रतिफल उसकी चंगाई के रूप में दिया गया। हमारे अद्‌भुत सृष्टिकर्ता द्वारा उस मनुष्य का सूखा हाथ **दूसरे हाथ की नाईं चंगा** कर दिया गया। शायद हम ऐसा सोचें कि फरीसी यह सोच कर खुश हुए होंगे कि जिस व्यक्ति की वे सहायता नहीं कर पा रहे थे, वह अब चंगा हो गया है। परन्तु इसके बदले फरीसी अत्यंत क्रोधित होकर यीशु को मार डालने की **सम्मति** करने लगे। यदि उनका एक हाथ सूखा होता, तो वे सप्ताह के किसी भी दिन उसके ठीक हो जाने पर खुश हो जाते।

फ. सब के लिए चंगाई (12:15–21)

12:15,16 अपने शत्रुओं के इन विचारों को **जानकर यीशु वहां से चला गया**। तौभी वह जहाँ कहीं भी जाता भीड़ उसके पास इकट्ठी हो जाती थी; और जहाँ कहीं बीमार उसके पास इकट्ठा हुए, उसने उन **सब को चंगा** कर दिया। परन्तु साथ ही उन्हें यह भी चिताया कि वे अपनी चमत्कारिक चंगाई के बारे में सब को न बताएं, यीशु ने ऐसा अपने आप को खतरे से बचाने के लिए नहीं, परन्तु उसे प्रचलित नायक बनाने की किसी भी क्षणिक क्रान्ति को टालने के लिए किया। ईश्वर के ठहराए हुए समय का पालन करना आवश्यक था। उसकी क्रान्ति आएगी, परन्तु रोमी लोहू बहाने के द्वारा नहीं, परन्तु उसके स्वयं का लोहू बहाने के द्वारा।

12:17,18 उसकी शालीन सेवकाई **यशायाह** 41:9; 42:1–4 की भविष्यद्वाणी की पूर्णता थी। **भविष्यद्वक्ता** ने मसीह को एक शालीन विजेता के रूप में देखा था। वह यीशु को एक ऐसे **सेवक** के रूप में प्रस्तुत करता है **जिस से** परमेश्वर का **मन** प्रसन्न था। परमेश्वर अपना **आत्मा उस पर** डालेगा – यह भविष्यद्वाणी यीशु के बपतिस्मा के समय पूरी हुई। और उसकी सेवकाई का विस्तार इस्राएल की सीमाओं के बाहर तक होगा; **वह अन्यजातियों को न्याय का सुसमाचार देगा**। जब इस्राएल द्वारा मसीह का तिरिस्कार बढ़ने लगता है तो यह बात तथा भविष्यद्वाणी और अधिक प्रबल हो जाती है।

12:19 यशायाह आगे यह भविष्यद्वाणी करता है कि मसीह **धूम** नहीं **मचाएगा**, न ही **बाजारों** में **उसका शब्द** सुनाई देगा। दूसरे शब्दों में वह भीड़ को उकसाने वाला राजनेता नहीं होगा, जो जनता को भड़का देगा। मसीही लेखक मैक क्लेन इस विषय पर लिखते हैं:

> राजा जो परमेश्वर का 'सेवक' है अपने अधिकार के पद पर पहुँचने के लिए किसी तरह के गलत रास्ते या बलप्रयोग का इस्तेमाल नहीं करेगा, न ही राजनीति को भड़काएगा; वह इसके लिए अपनी आलौकिक शक्ति का भी इस्तेमाल नहीं करेगा।[22]

12:20 वह **कुचले हुए सरकण्डे** को नहीं तोड़ेगा न ही **धुंआ देती बत्ती** को **बुझाएगा**। वह अपने लक्ष्य को पाने के लिए किसी कमजोर या दलित का शोषण नहीं करेगा या उसका लाभ नहीं उठाएगा। वह टूटे मनवाले शोषितों को उत्साहित करेगा और उन्हें सामर्थ देगा। वह विश्वास की एक छोटी सी चिंगारी को भी हवा देगा कि वह एक ज्वाला का रूप ले ले। उसकी सेवकाई तब तक जारी रहेगी जब तक वह **न्याय को प्रबल** (हावी) न कर दे। मनुष्यों का बैर और उनकी कृतघ्नता दूसरों के प्रति यीशु की दीन, स्नेही चिन्ता को समाप्त नहीं कर पाएंगे।

12:21 और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी। यशायाह की पुस्तक में यह इन शब्दों में लिखा हुआ है, ''और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बाट जोहेंगे,'' परन्तु इसका अर्थ वही है। द्वीप शब्द का उपयोग अन्यजातियों के लिए किया गया है। उन्हें उसके शासनकाल की प्रतीक्षा करते हुए चित्रित किया गया है ताकि वे उसकी निष्ठावान प्रजा बन कर रहें। सहीही लेखक क्लेईस्ट और लिली यशायाह के इस उद्धरण की सराहना करते हुए लिखते हैं:

> . . . यह सुसमाचार का एक रत्न है, मसीह की सुन्दरता का महान चित्र . . . यशायाह पिता के साथ मसीह के मेल, मानवीय कष्ट का समाधान करने में उसकी शालीनता, और उसकी निर्णायक विजय का चित्रण कर रहा है: उसके नाम के सिवाय संसार के पास और कोई दूसरी आशा नहीं है। मसीह – संसार का उद्धारकर्ता – रूखे, विद्वतापूर्ण शब्दों में नहीं, परन्तु पूर्वी देशों में प्रचलित चित्रण की विविध शैली में व्यक्त किया गया है।[23]

ग. क्षमा न किया जाने वाला पाप (12:22–32)

12:22–24 जब यीशु ने **अन्धे-गूंगे** दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति को चंगा किया, तो सामान्य लोग गम्भीरता से यह विचार करने लगे कि यीशु जो **दाऊद की सन्तान** है, इस्राएल का मसीहा हो सकता है। फरीसी लोग, जो यीशु के प्रति किसी भी सहानुभूति को सहन नहीं कर सकते थे, इससे भड़क गए, वे यह दोष लगाते हुए फट पड़े कि यीशु **दुष्टात्माओं के सरदार शैतान** की सामर्थ से आश्चर्यकर्म करता है। यह अनिष्टसूचक अभियोग पहला सर्वजनिक दोषारोपण था कि यीशु में दुष्टात्मा की सामर्थ है।

12:25,26 जब **यीशु** ने **उन के मन की बात** जान ली, तब **उस** ने उनकी मूर्खता को उसके सामने रख दिया। उसने यह संकेत दिया कि कोई भी **राज्य**, **नगर** या **घराना जिस में फूट होती है,** सतत् सफल होकर बना नहीं रह सकता। यदि वह शैतान की सामर्थ से शैतान के दुष्टात्माओं को निकाल रहा है, तो इसका अर्थ यह है कि शैतान स्वयं **अपना ही विरोधी** बन कर कार्य कर रहा है। यह बात बिल्कुल असंगत और हास्यास्पद है।

12:27 हमारा प्रभु अब फरीसियों को दूसरा विध्वंसक उत्तर दे रहा है। फरीसियों के कुछ यहूदी मित्र, जो भूतसिद्धि के लिए जाने जाते थे, दावा करते हैं कि उनमें दुष्टात्मा निकालने की सामर्थ है। यीशु ने उनके दावों को न ही सच माना, और न ही उन्हें झुठलाया, परन्तु इन दावों का उपयोग इस बात को सामने लाने के लिए किया कि **यदि** वह **शैतान** की **सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है**, तो फरीसियों के **वंश** (अर्थात्, भूतसिद्धि करने वाले ये लोग) भी ऐसा ही करते हैं। फरीसी इस बात को कभी स्वीकार नहीं कर सकते थे, परन्तु वे इस तर्क में फँसने से अपने आप को बचा नहीं सके। उनके स्वयं के मित्र उन पर दोष लगाएंगे कि फरीसी लोग ऐसा संकेत दे रहे हैं कि वे भी शैतान की ओर से दुष्टात्माओं को निकाल रहे हैं। स्कोफील्ड ने कहा है:

> फरीसी लोगों के वंश पर शैतानिक सामर्थ होने की कोई भी बात फरीसियों के कुढ़ने के लिए काफी थी, परन्तु वे जिस आधार पर यीशु पर दोष लगा रहे थे, कि मसीह शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है, फरीसियों की सन्तानें ही फरीसियों को असंगत ठहराएंगी; क्योंकि यदि दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ शैतान की ओर से प्राप्त होती है, तो जो भी इस सामर्थ का प्रयोग करता है वह उस सामर्थ के स्रोत के दल का ही कहलाता है।[24]

वे दो समान प्रभावों के दो अलग अलग कारण बता कर तर्कसंगत नहीं हो सकते।

12:28 अवश्य ही, सच्चाई यह है कि यीशु **परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है**। पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में उसका सम्पूर्ण जीवन उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ से व्यतीत किया। वह आत्मा से परिपूर्ण मसीह था जिसके बारे में यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी (यशा. 11:2; 42:1; 61:1–3)। इसलिए उसने फरीसियों से कहा, ''. . . **यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है**।'' यह घोषणा अवश्य ही एक चूर चूर कर देने वाला प्रहार रहा होगा। वे अपने आध्यात्मज्ञान पर घमण्ड करते थे, तौभी **परमेश्वर का राज्य** उनके पास **आ पहुँचा है** क्योंकि राजा उनके बीच में था और वे इस बात को पहचान नहीं पाए कि वह वहाँ उपस्थित है!

12:29 शैतान के दल में यीशु का होना तो दूर की बात है, प्रभु यीशु शैतान को हरानेवाला विजेता था। इस बात को वह **बलवन्त** मनुष्य का उदाहरण देकर चित्रित करता है। **बलवन्त** मनुष्य शैतान है। उसका **घर** वह सारा क्षेत्र है जहाँ उसका नियंत्रण बना रहता है। **उसका माल** उसकी दुष्टात्माएं हैं। यीशु वह जन है जो **बलवन्त** को **बान्ध** देता है, **घर** में घुसता है, और **उसका माल** लूट लेता है। वास्तव में, शैतान को विभिन्न चरणों में बान्धा जाता है। यह यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के दौरान आरम्भ हुआ। यह मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के द्वारा निर्णायक तौर पर निश्चित हो गया। यह राजा के हजार वर्ष के शासन के दौरान और भी उल्लेखनीय तौर पर होगा (प्रका. 20:2)। अन्तत:, यह अनन्तकाल के लिए पूर्ण हो जाएगा जब वह आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रका. 20:10)। वर्तमान समय में, ऐसा नहीं लगता कि शैतान बन्धा हुआ है; वह अब भी अपनी सामर्थ का काफी उपयोग करता है। परन्तु उसका अन्त निर्धारित कर दिया गया है और उसके पास अब बहुत कम समय है।

12:30 उसके बाद यीशु ने कहा, ''**जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिथराता है।**'' फरीसियों का ईशनिन्दा करने वाला रवैया यह दर्शाता था कि वे यीशु के **साथ** नहीं थे; इसलिए वे उसके **विरोध** में थे। उसके साथ कटनी काटने के लिए मना करने के द्वारा, वे अनाज को बिखरा दे रहे थे। उन्होंने यीशु पर दोष लगाया था कि वह शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकाल रहा है जबकि वास्तव में वे स्वयं शैतान के दास थे, जो परमेश्वर के कार्य को निष्फल करने का प्रयास कर रहे थे।

मरकुस 9:20 में, यीशु ने कहा, ''. . . जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।'' यह मत्ती 12:30 में दिए गए वाक्य का बिल्कुल उलट वाक्य प्रतीत होता है। यह समस्या तब हल हो जाती है जब हम मत्ती में यह पाते हैं कि यह *उद्धार* के विषय में कहा गया है। एक व्यक्ति या तो मसीह की ओर होता है या फिर उसके विरूद्ध होता है; दो पाटों के बीच में रहने का कोई प्रावधान नहीं है। मरकुस में *सेवा* के सन्दर्भ में यह वाक्य कहा गया है। यीशु के शिष्यों के मध्य गहरे मतभेद रहते हैं – स्थानीय कलीसियाई संगति के सम्बन्ध में मतभेद, विधियों पर मतभेद, सिद्धान्तों की व्याख्या पर मतभेद। परन्तु यहाँ पर यह सिद्धान्त लागू होता है कि यदि एक मनुष्य प्रभु के विरोध में नहीं है तो फिर वह उसके साथ है और इसके अनुरूप उसका आदर करना चाहिए।

12:31,32 इन पदों में इस्राएल के अगुवों और प्रभु यीशु के बीच रिश्ते में संकट का उल्लेख पाया जाता है। पवित्र आत्मा की निन्दा करने के कारण वह उन पर ऐसे अक्षम्य पाप करने का दोष लगाता है। फरीसियों का यह दोषारोपण कि यीशु पवित्रआत्मा की सहायता से नहीं,परन्तु शैतान की सामर्थ से अपने आश्यर्चकर्म दिखाता है, एक अक्षम्य पाप था। इस तरह से पवित्र आत्मा को दुष्टात्माओं का सरदार शैतान कहा जा रहा था।

पाप और निन्दा के अन्य सभी प्रकारों की क्षमा दी जा सकती है। चाहे कोई **मनुष्य के पुत्र के विरोध में** भी कुछ कह दे वह भी क्षमा कर दिया जाएगा। परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा करना एक ऐसा पाप है जिसकी क्षमा न तो **इस लोक में,** और **न** ही आनेवाले **परलोक** (सहस्त्राब्दिक राज्य) **में** दी जाएगी। जब यीशु ने कहा **इस लोक में**, तो वह उन दिनों की बात कर रहा है जिन दिनों में वह पृथ्वी पर अपनी सार्वजनिक सेवकाई कर रहा था। यहां पर एक तर्कसंगत सन्देह उत्पन्न हो सकता है कि यह अक्षम्य पाप वर्तमान में करना सम्भव है या नहीं, क्योंकि वर्तमान में यीशु इस पृथ्वी पर देहरूप में होकर आश्चर्यकर्म करते हुए उपस्थित नहीं है।

क्षमा न किया जाने वाला यह पाप और सुसमाचार का तिरिस्कार किया जाना एक ही बात नहीं है; एक व्यक्ति वर्षों उद्धारकर्ता का तिरिस्कार कर सकता है, तौभी वह मन फिराकर, विश्वास करने के द्वारा उद्धार पा सकता है। (नि:सन्देह, यदि वह अविश्वासी दशा में ही मर जाता है तो वह बिना क्षमा के ही रह जाएगा)। न ही अक्षम्य पाप और एक विश्वासी का फिर से भटक जाना समान बात है; एक विश्वासी परमेश्वर से दूर जा कर भटक सकता है, तौभी वह परमेश्वर के घराने की संगति में फिर से मिलाया जा सकता है।

अनेक लोग चिन्तित हो जाते हैं कि उन्होंने क्षमा न किया जाने वाला पाप कर दिया है। यदि वर्तमान यह पाप करना सम्भव भी हो, तो उस व्यक्ति का इस बात को लेकर चिन्तित होना इस बात का प्रमाण है कि वह इस पाप का दोषी नहीं है। जिन्होंने इस पाप को किया था वे कठोर लोग थे और मसीह का विरोध करने में कायम रहे।

पवित्र आत्मा का अपमान करते हुए किसी भी प्रकार की ग्लानि नहीं थी और पुत्र के मृत्यु का षड़यंत्र रचते हुए उन्हें कोई हिचक नहीं थी।

ह. एक पेड़ अपने फलों से पहचाना जाता है (12:33-37)

12:33 फरीसियों को भी यह स्वीकार करना था कि प्रभु ने दुष्टात्माओं को बाहर निकालने के द्वारा अच्छा काम किया है। तौभी उन्होंने उस पर बुराई करने का दोष लगाया। यहाँ पर वह उनके दोहरे मापदण्ड की पोल खोल देता है और कुछ इस प्रकार से कहता है, ''अपने विचारों को ठीक करो। यदि एक **पेड़ . . . अच्छा** है तो उसका **फल** भी अच्छा होगा और यदि एक पेड़ बुरा है तो उसका फल भी बुरा होगा।'' फल पेड़ के गुण को दर्शाता है जिससे यह उत्पन्न होता है। यीशु की सेवकाई का फल अच्छा था। उसने बीमारों, अन्धों, बहरों, और गूंगों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला, और मुर्दों को जिलाया। क्या एक खराब पेड़ इस प्रकार का फल ला सकता है? यह पूरी तरह से असम्भव है! तो फिर उन्होंने इतनी ढिठाई दिखाते हुए उसे स्वीकार करने से इंकार क्यों कर दिया?

12:34,35 इसका कारण यह है कि वे **साँप के** बच्चे थे। मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध उनका दुर्भाव, जो उनके जहरीले शब्दों से प्रमाणित होता है, उनके बुरे हृदय से बाहर आता है।[25] भलाई से भरा हुआ हृदय अनुग्रह और धार्मिकता की बातें कहता है। एक दुष्ट हृदय से ईशनिन्दा, कड़वाहट, और गाली निकलती है।

12:36 यीशु ने गम्भीर हो कर उन्हें (और हमें भी) चेतावनी दी कि लोगों को **हर एक बात का,** जो उनके मुँह से निकलती है, **लेखा** देना होगा। चूंकि लोगों द्वारा कहे गए वचनों से उनके जीवन को बिल्कुल ठीक ठीक आंका जा सकता है, इसलिए वे उन्हें दोषी या निर्दोष ठहराने के लिए एक उपयुक्त आधार हैं। फरीसियों ने परमेश्वर के पवित्र पुत्र के विरुद्ध जो नीचता और अपमान से भरे शब्द कहे उनके लिए उन्हें कितना अधिक दोषी ठहराया जाएगा!

12:37 **''क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही कारण दोषी ठहरेगा।''** विश्वासियों के मामले में, लापरवाही भरे शब्द का दण्ड मसीह की मृत्यु के द्वारा चुका दिया गया है; किन्तु, हमारे लापरवाही से भरे शब्दों के परिणामस्वरूप, जिनके विषय में हमने अंगीकार नहीं किया है, या उनके विषय में हमने क्षमा प्राप्त नहीं की है, मसीह के न्याय सिंहासन के सामने हमारे प्रतिफल की हानि होगी।

इ. योना भविष्यद्वक्ता का चिन्ह (12:38-42)

12:38 यीशु के सारे आश्चर्यकर्मों के बाद भी, **शास्त्रियों और फरीसियों** ने उससे एक **चिन्ह** मांगने की धृष्टता की, और ऐसा जताने लगे कि यदि वह अपने आप को मसीहा प्रमाणित कर दे तो वे उस पर विश्वास *कर लेंगे।* परन्तु उनका पाखण्ड साफ साफ दिखाई दे रहा था। यदि उन्होंने इतने ढेर सारे आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद भी विश्वास नहीं किया, तो फिर एक और देख लेने से वे कैसे कायल हो जाएंगे? विश्वास करने की शर्त के रूप में चमत्कारिक चिन्ह मांगने वाले रवैये से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। जैसे कि यीशु ने थोमा से कहा, ''धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया'' (यूहन्ना 20:29)। परमेश्वर के नियम के अनुसार देखने की बारी विश्वास करने के बाद आती है।

12:39 प्रभु ने उन्हें **बुरे और व्यभिचारी लोग** कहा; उन्हें इसलिए **बुरे** कहा गया क्योंकि उन्होंने जानबूझकर अपने मसीहा को देखने से अपने आप को अन्धा कर लिया था, उन्हें **व्यभिचारी** इसलिए कहा गया क्योंकि वे अपने परमेश्वर के प्रति आत्मिक रूप से वफादार नहीं थे। उनका सृष्टिकर्ता परमेश्वर, एक अद्वितीय व्यक्ति जिसमें पूर्ण ईश्वरत्व और सिद्ध मानवता समाई हुई थी, उनके सामने उनसे बातें करता खड़ा है, तौभी वे उससे चिन्ह मांगने का दुस्साहस कर रहे हैं।

12:40 उसने उन्हें सीधे सीधे कह दिया कि **यूनुस (योना) भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़** उन्हें और कोई **चिन्ह** नहीं **दिया जाएगा। यूनुस भविष्यद्वक्ता** के **चिन्ह** का उल्लेख कर वह अपनी मृत्यु, अपने गाड़े जाने, और अपने जी उठने की ओर संकेत कर रहा था। मछली द्वारा निगल लिये जाने और फिर उगल दिये जाने का योना भविष्यद्वक्ता का अनुभव (योना 1:17; 2:10) प्रभु के दु:ख उठाने और पुनरुत्थान का एक पूर्वचित्रण

था। मृतकों में से प्रभु का जी उठना इस्राएली जाति के सामने उसका अन्तिम और निर्णायक चिन्ह होगा।

जिस तरह से **यूनुस तीन रात दिन जल जन्तु के पेट में रहा,** हमारे प्रभु ने भविष्यद्वाणी की कि, **वैसे ही** वह **तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा**। यहाँ पर एक प्रश्न सामने आता है। यदि, जैसा कि सामान्यत: विश्वास किया जाता है, यीशु को शुक्रवार की दोपहर गाड़ा गया और वह रविवार की सुबह जी उठा, तो यह कैसे कहा जाता है कि वह तीन दिन और तीन रात कब्र में रहा? इसका उत्तर यह है कि यहूदी समझ के अनुसार, दिन और रात का कोई भी भाग पूर्ण दिन या पूर्ण रात माना जाता है। ''एक दिन और एक रात मिलकर *ओनाह* कहलाते हैं, और *ओनाह* का एक भाग पूरे ओनाह के बराबर है'' (यहूदी कहावत)।

12:41 यीशु ने यहूदी अगुवों के दोष को दो विपरीत उदाहरणों का उपयोग करते हुए चित्रित किया। पहला, **नीनवे** के अन्यजाति इनकी तुलना में बहुत कम सौभाग्यशाली थे, तौभी जब उन्होंने भटके हुए भविष्यद्वक्ता **यूनुस** के **प्रचार** को सुना, तो **उन्होंने** गहरा शोक प्रगट करते हुए **मन फिराया**। वे **न्याय के दिन . . . उठ कर** यीशु के समय के लोगों पर दोष लगाएंगे कि ये लोग **यूनुस से भी** बड़े व्यक्ति – परमेश्वर के देहधारी पुत्र – को ग्रहण करने में असफल रहे।

12:42 दूसरा, शीबा की **रानी**, जो यहूदियों के जैसा सौभाग्य पाने से वंचित थी, सुलैमान से साक्षात्कार लेने के लिए बहुत खर्च करके और बहुत तकलीफ उठाकर **दक्खिन** से यात्रा करके आई। यीशु के समय के यहूदियों को यीशु को देखने आने के लिए अधिक यात्रा करने की आवश्यकता नहीं थी; वह स्वर्ग से यात्रा करके उनकी छोटी सी बस्ती में आया था कि उनका मसीहा–राजा बने। तौभी उनके जीवनों में उसके लिए कोई स्थान नहीं था – उसके लिए जो **सुलैमान से भी** इतना बड़ा था जिसे किसी सीमा से नहीं बांधा जा सकता। एक अन्यजाति रानी भी इस अनुशासनहीन लापरवाही के लिए न्याय के दिन उन पर दोष लगाएगी।

इस अध्याय में हमारे प्रभु को *मन्दिर* से भी बड़ा (पद 6); *यूनुस* से भी बड़ा (पद 41); और *सुलैमान* से भी बड़ा (पद 42) प्रस्तुत किया गया है। वह ''बड़ों से भी बड़ा और उत्तम से भी बहुत बेहतर है।''

ज. एक अशुद्ध आत्मा वापस लौटती है (12:43–45)

12:43,44 अब यीशु दृष्टान्त के रूप में विश्वास न करने वाली इस्राएल जाति के भूतकाल, वर्तमानकाल, और भविष्यकाल का एक सारांश बताता है। **मनुष्य** यहूदी जाति को दर्शाता है, **अशुद्ध आत्मा** मूर्तिपूजा को दर्शाती है जो मिस्र की गुलामी से लेकर बाबुल की बन्धुआई (इस बन्धुआई ने इस्राएल को मूर्तिपूजा के रोग से अस्थायी तौर पर चंगा किया था) तक इस्राएली जाति की पहचान बनी रही। यह ऐसा था मानो अशुद्ध आत्मा **मनुष्य में से निकल** गई थी। बन्धुआई के अन्त से लेकर वर्तमान समय तक इस्राएलियों ने मूर्तिपूजा नहीं की। वे उस घर के समान हैं जो **सूना, झाड़ा बुहारा, और सजा सजाया** है।

आज से दो हजार साल पहले उद्धारकर्ता ने इस सूने घर में प्रवेश करना चाहा। वह इस घर में रहने का सच्चा अधिकारी, और इस घर का स्वामी था, परन्तु लोगों ने ढिठाई दिखाते हुए उसे भीतर आने देने से मना कर दिया। यद्यपि वे अब मूर्तिपूजा नहीं करते, परन्तु वे सच्चे परमेश्वर की आराधना भी नहीं करते।

सूना घर आत्मिक खालीपन को दर्शाता है – यह एक खतरनाक अवस्था है, जैसे कि यहाँ के क्रम से मालूम होता है। धर्मसुधार पर्याप्त नहीं है। उद्धारकर्ता को सच्चे मन से स्वीकार करना आवश्यक है।

12:45 आने वाले दिनों में, मूर्तिपूजा की आत्मा **अपने से** भी **बुरी . . .और सात . . .आत्माओं** को साथ लेकर वापस लौटने का निर्णय लेगी। चूंकि सात की संख्या सिद्धता या पूर्णता को दर्शाने वाली संख्या है, यह शायद मूर्तिपूजा के पूर्ण विकसित रूप की ओर संकेत करता है। यह क्लेशकाल के समय होगा जब परमेश्वर को त्याग कर दूर चली गई इस्राएली जाति ख्रीष्टविरोधी की उपासना करेगी। पाप के मनुष्य के सामने घुटने टेकना और उसे परमेश्वर मान कर उसकी आराधना करना इस्राएल द्वारा अब तक की गई मूर्तिपूजा की तुलना में मूर्तिपूजा का सबसे भयानक रूप है। इसलिए **मनुष्य की पिछली दशा** (बाद वाली दशा) **पहले से भी बुरी** हो जाती है। विश्वास न करने वाली इस्राएली जाति महाक्लेशकाल में भयानक दण्ड झेलेगी, और उनका कष्ट बाबुल की बन्धुआई में झेले गए कष्ट से कही अधिक पीड़ादायक होगा। इस्राएली जाति का मूर्तिपूजक खेमा मसीह के दूसरे

आगमन पर पूरी तरह से नाश कर दिया जाएगा।

"**इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।**" परमेश्वर को त्याग कर दूर चले जाने वाले लोग, जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र के प्रथम आगमन पर उसका तिरिस्कार किया था, उसके दूसरे आगमन पर भयानक दण्ड भोगेंगे।

क. यीशु की माता और यीशु के भाई (12:46–50)

इन पदों में ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पर एक सामान्य घटना का वर्णन दिया गया है जिसमें यीशु का परिवार उससे कुछ कहने के लिए आया हुआ है। वे क्यों आएं थे? यह जानने के लिए मरकुस से हमें कुछ सहायता मिल सकती है। यीशु के कुछ मित्रों का यह मानना था कि यीशु का दिमाग फिर गया है (मरकुस 3:21, 31–35), और शायद उसका परिवार उसे चुपचाप अपने साथ ले जाना चाहता था (यूहन्ना 7:5 भी देखें)। जब उसे बताया गया कि उसकी **माता और भाई बाहर खड़े थे** कि **उससे** कुछ **बातें** करें, तो प्रभु ने उन्हें यह कहते हुए उत्तर दिया, "**कौन है मेरी माता, और कौन हैं मेरे भाई?**" और फिर उसने **अपने चेलों** की ओर इशारा करते हुए कहा, "**जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन है।**"

यह चौंकाने वाली घोषणा के गर्भ में एक आत्मिक अर्थ छिपा हुआ है; यह इस्राएल के साथ यीशु के रिश्ते में एक अलग मोड़ को तय करता है। मरियम और उसके बेटे इस्राएल को दर्शाते हैं, जिसका यीशु के साथ खून का रिश्ता है। अब तक उसने अपनी अधिकांश सेवकाई इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ तक ही सीमित रखी थी। परन्तु यह स्पष्ट होता जा रहा था कि उसके स्वयं के लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे। अपने मसीहा के सामने घुटने टेकने की बजाय, फरीसियों ने उस पर दोष लगाया कि वह शैतान के नियंत्रण में है।

इसलिए अब यीशु एक नए क्रम की घोषणा करता है। अब से, इस्राएल के साथ उसके बन्धन सुसमाचार की उसकी सेवा में हावी नहीं होंगे। यद्यपि प्रभु का तरस से भरा हृदय इस्राएल के लोगों के लिए विनती करना जारी रखेगा जो शरीर के भाव से उसके अपने हैं, परन्तु अध्याय 12 हमें इस्राएल के साथ उसके एक त्रुटिहीन सम्बन्ध विच्छेदन की ओर संकेत करता है। इसका परिणाम अब स्पष्ट है। इस्राएल अब उसे स्वीकार नहीं करेगा, इसलिए वह उन लोगों की ओर मुड़ जाएगा जो उसे स्वीकार करेंगे। खून के रिश्ते पर अब आत्मिक समझ को प्रधानता मिलेगी। जो भी व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेगा, चाहे वह यहूदी हो या फिर अन्यजाति, वह उसके साथ एक सजीव रिश्ता स्थापित करेगा।

इस घटना से आगे बढ़ने से पहले यीशु की माता के बारे में दो बातों का उल्लेख करना आवश्यक होगा। पहली बात, यह स्पष्ट है कि मरियम को यीशु के सामने उपस्थित होने या उसके पास पहुँच पाने के लिए कोई विशेष सुविधा या अधिकार प्राप्त नहीं था।

दूसरी बात, यीशु के भाईयों का उल्लेख इस शिक्षा पर कड़ा प्रहार करता है कि मरियम जीवन भर कुंवारी रही। यहाँ पर इस बात के सशक्त संकेत पाए जाते हैं कि ये लोग मरियम के वास्तविक पुत्र थे, और मरियम की ओर से हमारे प्रभु के भाई थे। भजन 69:8; मत्ती 13:55; मरकुस 3:31; 6:3; यूहन्ना 7:3,5; प्रेरित 1:14; 1 कुरि. 9:5; गला. 1:19।

VIII. इस्राएल के द्वारा उसे मसीहा मानने से इंकार कर दिए जाने के कारण राजा ने एक अन्तरिम प्रकार के राज्य की घोषणा की (अध्याय 13)

राज्य के दृष्टांत

मत्ती रचित सुसमाचार में अब हम इस संकट के बिन्दु पर आ पहुँचे हैं। प्रभु ने यह संकेत दे दिया है कि अब सांसारिक सम्बन्धों पर आत्मिक सम्बन्धों को प्रधानता दी जाएगी, अर्थात्, अब यहूदी के रूप में जन्म लेना नहीं, परन्तु परमेश्वर पिता के प्रति आज्ञाकारिता प्रमुख मुद्दा होगा। राजा का तिरिस्कार करने के द्वारा, शास्त्री और फरीसियों ने राज्य का भी तिरिस्कार कर दिया था। अब दृष्टान्तों की एक श्रृंखला के माध्यम से, प्रभु यीशु राज्य के उस नए रूप का पूर्वदर्शन कराता है, जो रूप उसके तिरिस्कार और राजाओं के राजा तथा प्रभु के प्रभुओं के

रूप में उसके निर्णायक प्रगटीकरण के बीच के समय में होगा। इन में से छ: दृष्टान्तों का आरम्भ इन शब्दों के साथ होता है: ''स्वर्ग का राज्य . . . के समान है।''

इन दृष्टान्तों को उचित दृष्टिकोण से देखने के लिए, आइए हम राज्य के विषय पर दोहराव कर लें जिस पर हमने अध्याय 3 में चर्चा की थी। स्वर्ग का राज्य वह क्षेत्र (मण्डल) है, जहाँ परमेश्वर के शासन को स्वीकार किया जाता है। इसके दो पहलू हैं: (1) *मुँह से बोल कर बाहरी रूप से दावा करना,* जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जो मुँह से दावा करते हैं कि वे परमेश्वर के शासन को स्वीकार करते हैं; और (2) *आन्तरिक सच्चाई,* जिसमें सिर्फ वे लोग ही शामिल हैं जिन्होंने मन फिराकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है। परमेश्वर का राज्य पाँच चरणों में रूप लेता है: (1) पुराना नियम का चरण जिसमें इसकी भविष्यद्वाणी की गई थी; (2) वह चरण जिसमें वह ''निकट था'' या राज्य के व्यक्तित्व में होकर इस संसार में हाजिर था; (3) अन्तरिम चरण, जिसमें पृथ्वी के वे लोग शामिल हैं जो राजा के तिरिस्कार और उसके स्वर्ग में लौटने के बाद यह स्वीकार करते हैं कि वे उसकी प्रजा हैं; (4) हजार वर्ष के दौरान राज्य का प्रगटीकरण; (5) अन्तिम, अनन्त राज्य। राज्य के सम्बन्ध में बाइबल में आया हर एक उल्लेख इन पाँच चरणों में से किसी न किसी के अन्तर्गत आता है। तीसरा चरण, जो अन्तरिम चरण कहलाता है, 13 अध्याय की चर्चा का विषय है। इस चरण में राज्य आन्तरिक सच्चाई (सच्चे विश्वासी) वाले पहलू के अन्तर्गत आता है, और इसका विस्तार पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर कलीसिया के उठाए जाने के दिन तक है, इसमें पाए जाने वाले लोग और कलीसिया में पाए जाने वाले लोग एक ही हैं। राज्य और कलीसिया के मध्य सिर्फ यही एक पहचान है; कलीसिया और राज्य एक ही चीज़ नहीं है।

इस पृष्ठभूमि को अपने ध्यान में रखते हुए, आइये हम दृष्टान्तों का अध्ययन करें।

अ. बीच बोने वाले का दृष्टान्त (13:1–9)

13:1 **यीशु** उस **घर से निकलकर**, जहाँ उसने दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति को चंगा किया था, गलील की **झील के किनारे जा बैठा**। बाइबल के अनेक विद्वान ऐसा मानते हैं कि यह घर इस्राएल के घराने को दर्शाता है और गलील की झील अन्यजातियों को दर्शाती है। इस प्रकार से यीशु का इस घर से निकल कर गलील की झील को जाना इस्राएल के साथ उसके सम्बन्ध विच्छेदन का सूचक है; अपने अन्तरिम रूप में, राज्य का सुसमाचार अन्यजातियों को सुनाया जाएगा।

13:2 जब झील के किनारे एक **बड़ी भीड़ इकट्ठी** हो गई, तब वह **नाव पर चढ़ गया**, और **दृष्टांतों** में लोगों को शिक्षा देने लगा। दृष्टान्त एक ऐसी कहानी होती है जिसमें ऐसी आत्मिक या नैतिक शिक्षा छिपी होती है जो तुरन्त ही स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आती। इन सात दृष्टान्तों में यह बताया गया है कि यीशु के प्रथम आगमन और द्वितीय आगमन के बीच के समय के दौरान राज्य किसके समान होगा।

पहले चार दृष्टान्त भीड़ को कहे गए; अन्तिम तीन दृष्टान्त सिर्फ चेलों को कहे गए। प्रभु ने पहले दो और सातवें दृष्टान्त का अर्थ चेलों को समझाया, और बाकी को छोड़ दिया ताकि वे स्वयं इसकी व्याख्या उसके द्वारा पहले ही दी गई कुंजी के आधार पर करें।

13:3 पहला दृष्टान्त एक बीज **बोनेवाले** के सम्बन्ध में है जिसने चार अलग अलग प्रकार की भूमियों में अपने बीज बोए। जैसा कि अपेक्षित है, प्रत्येक भूमि में बीज बोने के अलग अलग परिणाम आए।

13:4–8

मिट्टी	*परिणाम*
1. ठोस, कड़ा **मार्ग**	1. बीज को पक्षियों ने चुग लिया।
2. पथरीली जमीन पर मिट्टी की पतली सतह	2. बीज जल्दी अंकुरित हुए, परन्तु जड़ नहीं पकड़ पाने के कारण **सूरज निकलने पर वे जल गए** और **सूख गए।**
3. **झाड़ियों** वाली भूमि	3. बीज अंकुरित हुए, परन्तु झाड़ियों के कारण उनका बढ़ना सम्भव नहीं था।
4. **अच्छी भूमि**	4. बीज अंकुरित हुए, बढ़े, **फल लाए; कोई सौं गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।**

13:9 यीशु ने इस दृष्टान्त का समापन एक गुप्त चेतावनी के साथ किया, **''जिस के कान हों वह सुन ले!''** इस दृष्टान्त में वह भीड़ को एक महत्वपूर्ण सन्देश दे रहा है, और चेलों को एक अलग सन्देश देना चाह रहा है। दोनों में से कोई भी उसके वचनों के महत्व को समझने से न चूकें।

चूंकि प्रभु ने स्वयं 18–23 पदों में इस दृष्टान्त की व्याख्या की है, हम अपनी जिज्ञासा को रोक कर रखे रहें जब तक हम उस स्थल तक नहीं पहुँचते।

ब. दृष्टान्तों में बातें करने का उद्देश्य (13:10–17)

13:10 चेले समझ नहीं पा रहे थे कि यीशु लोगों से **दृष्टान्तों** के द्वारा गुप्त भाषा में क्यों बातें कर रहा है। इसलिए उन्होंने उससे उसकी इस विधि के बारे में स्पष्टीकरण चाहा।

13:11 अपने उत्तर में, यीशु ने विश्वास न करने वाली भीड़ और विश्वासी अनुयायियों के बीच में अन्तर को बताया। भीड़, जो इस्राएली जाति की प्रतिनिधिक अंश थी, स्पष्टत: उसका तिरिस्कार कर रही थी, यद्यपि उनका तिरिस्कार क्रूस पर चढ़ाए जाने पर ही पूर्ण होगा। उन्हें **स्वर्ग के राज्य के भेदों** को जानने नहीं दिया जाएगा, जबकि उसके सच्चे अनुयायियों की सहायता की जाएगी कि वे इसे समझ सकें।

नया नियम का भेद वह सच्चाई है जिसे इसके पहले मनुष्य ने नहीं जाना था, जिसे मनुष्य ईश्वरीय प्रगटीकरण के बिना कभी नहीं जान सकता था, परन्तु अब इसे प्रगट कर दिया गया है। **स्वर्ग के राज्य के** भेद स्वर्ग के राज्य के अन्तरिम रूप में अब तक अज्ञात हैं। यह सच्चाई, कि राज्य का एक अन्तरिम रूप होगा, अब तक एक रहस्य थी। दृष्टान्तों में उस समय के स्वर्ग के राज्य की विशेषताओं को बताया गया है जब राजा हमारे बीच नहीं रहेगा। इसलिए कुछ लोग इसे ''राज्य का रहस्यमय रूप'' कहते हैं – ऐसा नहीं है कि इसमें कोई रहस्यमयी बात छिपी हुई है परन्तु यह कि यह उस समय से पहले तक ज्ञात नहीं थी।

13:12 यह पक्षपातपूर्ण प्रतीत हो सकता है कि इन रहस्यों को भीड़ से छिपाया जाए और चेलों पर प्रगट किया जाए। परन्तु प्रभु इसका कारण भी बताते हैं: **''क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा, पर जिसके पास नहीं है उस से जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।''** चेलों को यीशु मसीह पर विश्वास था; इसलिए उन्हें अधिक विश्वास करने की क्षमता दी जाएगी। उन्होंने ज्योति को स्वीकार कर लिया था; इसलिए वे और अधिक ज्योति प्राप्त करेंगे। दूसरी ओर यहूदी जाति ने संसार की ज्योति को ग्रहण नहीं किया था; इसलिए उन्हें न सिर्फ और अधिक ज्योति प्राप्त करने से वंचित किया जाएगा, परन्तु उनके पास जो थोड़ा है उसे भी उनसे छीन लिया जाएगा। ज्योति को ग्रहण न करने पर ज्योति से वंचित कर दिया गया।

13:13 मैथ्यू हेनरी **दृष्टान्तों** की तुलना बादल और आग के उस खम्भे से करते हैं जिसने इस्राएलियों का मार्गदर्शन किया परन्तु मिस्रियों को उलझा दिया। दृष्टान्तों को उन लोगों पर प्रगट किया जाएगा जो सचमुच में उसमें रूचि रखते हैं परन्तु ''जो यीशु के प्रति विद्वेष रखते हैं उनके लिए यह खीज का एक विषय होगा।''

इसलिए यह यीशु की सनक नहीं थी, परन्तु एक ऐसे सिद्धान्त का पालन हो रहा था जो जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है – जानबूझ कर आँख बन्द कर लेने से कानून भी अपनी आँख बन्द कर लेता है। इसीलिए उसने यहूदियों से दृष्टान्तों के माध्यम से बातें की। एच. सी. वुडरिंग इसे इस प्रकार से समझाते हैं: ''इसलिए कि वे सत्य से प्रेम नहीं रखते थे, उन्हें सत्य का प्रकाश नहीं दिया जाएगा।''[26] वे दावा करते थे कि वे देख सकते हैं, अर्थात्, यह कि वे ईश्वरीय सत्य से परिचित हैं, परन्तु सत्य देहधारी रूप में उनके सामने खड़ा था और उन्होंने ढिठाई करते हुए उसे देखने से मना कर दिया। वे दावा करते थे कि वे परमेश्वर के वचन सुनते हैं, परन्तु परमेश्वर का जीवित वचन उनके बीच में था और उन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी। वे देहधारण की अद्भुत सच्चाई को समझने की इच्छा नहीं रखते थे; इसलिए, उनके समझने की क्षमता उनसे ले ली गई।

13:14,15 वे लोग, यशायाह 6:9, 10 की भविष्यद्वाणी की जीती जागती पूर्णता थे। इस्राएल का हृदय **मोटा हो गया** था और उनके कान परमेश्वर के वचन के प्रति बहरे हो गए थे। उन्होंने अपनी **आँखों से** देखने से जानबूझ कर मना कर दिया। वे जानते थे कि यदि वे सुनते, समझते, और मन फिराते हैं, तो परमेश्वर

उन्हें चंगा कर देगा। परन्तु अपनी इस बीमारी और आवश्यकता में उन्होंने उसकी सहायता लेने से मना कर दिया। इसलिए उनका यह दण्ड था कि वे सुनेंगे पर समझेंगे **नहीं**, और देखेंगे परन्तु उन्हें कुछ भी **न सूझेगा**।

13:16, 17 चेले अत्यंत ही सौभाग्यशाली थे, क्योंकि वे जो देख रहे थे उसे किसी ने पहले नहीं देखा था। पुराना नियम के भविष्यद्वक्ता और धर्मी लोगों की यह तीव्र इच्छा थी कि वे मसीह के आने तक जीवित रहें, परन्तु उनकी यह अभिलाषा पूरी नहीं हुई। चेलों को इतिहास के इस निर्णायक क्षण को देखने का अवसर मिला, कि वे उस मसीहा को देख सकें, उसके आश्चर्यकर्मों के गवाह बन सकें, और उस अतुलनीय शिक्षा को सुन सकें जो उसके मुँह से निकलती थी।

स. बोनेवाले के दृष्टान्त का अर्थ (13:18–23)

13:18 यह समझाने के बाद कि उसने दृष्टान्तों का उपयोग क्यों किया, प्रभु अब चार प्रकार की भूमि के दृष्टान्त को समझाना आरम्भ करता है। वह **बोनेवाले** की पहचान नहीं करता परन्तु हम निश्चित तौर पर यह कह सकते हैं कि बोने वाला वह स्वयं (पद 37) या वे हैं जो राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (पद 19)। भूमि उन लोगों को कहा गया है जिन्हें सुसमाचार सुनाया जाता है।

13:19 कड़ी और ठोस सड़क उन लोगों को दर्शाती है जो उसके सन्देश को सुनने से मना कर देते हैं। वे सुसमाचार को सुनते हैं परन्तु **नहीं** समझते – इसलिए नहीं कि वे समझ नहीं सकते परन्तु इसलिए क्योंकि वे समझना ही नहीं चाहते। पक्षी यहाँ पर शैतान को दर्शाते हैं; वह सुननेवालों के हृदय से बीज को **छीन ले जाता है**। वह उनके द्वारा चुने गए बांझपन के जीवन का समर्थन करते हुए उसे बढ़ावा देता है। फरीसी लोग सुनने में कड़ी मिट्टी के समान थे।

13:20,21 जब यीशु ने पथरीली भूमि के बारे में कहा, तो वह एक चट्टान के बारे में कह रहा था जिस पर मिट्टी की एक बिल्कुल पतली परत चढ़ जाती है। यह उन लोगों को दर्शाता है जो वचन को सुनते और **आनन्द के साथ** प्रत्युत्तर देते हैं। शुरू शुरू में प्रचारक गर्व कर सकता है कि उसका प्रचार बहुत सफल रहा। परन्तु शीघ्र ही एक गहरी शिक्षा उसके समझ में आ जाती है, कि जब मुस्कुराहट और तरीफ के साथ वचन को ग्रहण किया जाता है तो यह अच्छा नहीं है। पहले, पाप के प्रति कायल होना, उसके लिए पश्चताप करना, और मन फिराना आवश्यक है। सुननेवाले एक व्यक्ति को भावनाओं में बह कर और दिल में हल्का महसूस करते हुए टहलता हुआ देखने से अधिक आशाजनक बात यह है कि वह अपने मन को जांचते हुए और रोते हुए कलवरी की ओर जाए। सतही भूमि का अंगीकार भी सतही होता है; उसकी जड़ों में कोई गहराई नहीं होती। परन्तु जब उसके इस अंगीकार को **क्लेश या उपद्रव** के झुलसा देने वाले सूर्य की तपन में परखा जाता है, तो वह इस निर्णय पर पहुँचता है कि इसमें कोई लाभ नहीं और वह मसीह के प्रति अपने समर्पण के प्रत्येक अंगीकार को त्याग देता है।

13:22 कटीली झाड़ियों से दबी जमीन एक और वर्ग को दर्शाती है जो दिखावटी रूप से वचन को सुनते हैं। वे बाहरी रूप से तो राज्य के सच्चे नागरिक प्रतीत होते हैं परन्तु **इस संसार की चिन्ता** और **धन** से मिलने वाला सुख उनकी रूचि को दबा देता है। उनके जीवन में परमेश्वर के लिए कोई फल नहीं लगता। इसे समझाने के लिए मसीही लेखक लैंग एक ऐसे पुत्र की कहानी बताते हैं जिसका पिता धन से बहुत प्रेम रखता है और जिसके पास एक विशाल व्यवसाय था। इस पुत्र ने परमेश्वर के वचन को अपनी जवानी में सुना परन्तु अपने व्यवसाय में लिप्त हो गया।

> शीघ्र ही उसके सामने यह निर्णय लेने की स्थिति आ गई कि वह अपने पिता और अपने प्रभु दोनों में से किसी एक को चुन ले कि वह किसे प्रसन्न करना चाहता है। जब बीज बोए गए थे तभी से भूमि में कटीली झाड़ियां थीं; इस जीवन की चिन्ता और धन का छली आकर्षण पहले से ही उसकी पृष्ठभूमि में था। वह अपने पिता की इच्छाओं के सामने झुक गया, उसने अपने आप को पूरी तरह से व्यवसाय के लिए समर्पित कर दिया, अपने विभाग का प्रमुख बन गया, और जीवन में काफी आगे जाकर उसे इस बात को स्वीकार करना पड़ा कि उसने अनेक स्वर्गीय वस्तुओं को अनदेखा किया है। जब वह सेवानिवृत्ति की आयु में पहुँचने लगा तो उसने यह इच्छा जताई कि वह आत्मिक बातों की ओर अधिक गम्भीरता से ध्यान केन्द्रित करना चाहता है। परन्तु परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया

> जाता। यह व्यक्ति सेवानिवृत्त हो गया और कुछ ही महिनों में अचानक उसकी मृत्यु हो गई। अपने पीछे वह नब्बे हजार पौण्ड छोड़ गया और अपने आत्मिक जीवन को पूरी तरह से व्यर्थ जाने दिया। कटीली झाड़ियों ने वचन को दबा दिया और यह फल न ला सका।[27]

13:23 **अच्छी भूमि** सच्चे विश्वासी को दर्शाती है। वह **वचन को** सुनता और स्वीकार करता है और जो कुछ उसने सुना है उसका पालन करने के द्वारा वह उसे समझता है। यद्यपि ये विश्वासी अलग अलग मात्रा में फल लाते हैं, पर वे अपने फलों के द्वारा यह प्रदर्शित करते हैं कि उनमें ईश्वरीय जीवन पाया जाता है। यहाँ पर **फल** शायद मसीही स्वभाव को दर्शाता है मसीह के लिए जीती गई आत्माओं को नहीं। नया नियम में जहाँ जहाँ *फल* शब्द का प्रयोग किया गया है, यह सामान्यत: आत्मा के फलों के सन्दर्भ में कहा गया है (गला. 5:22,23)।

इस दृष्टान्त के द्वारा प्रभु भीड़ से क्या कहना चाहता था? स्पष्टत:, यह दृष्टान्त सुनकर भी पालन न किए जाने से आने वाले संकट के विरुद्ध यह उन्हें सचेत कर रहा है। यह लोगों को व्यक्तिगत रूप से इस बात के लिए उत्साहित करने के उद्देश्य से भी कहा गया था कि वे वचन को सच्चाई से स्वीकार करें, और फिर परमेश्वर के लिये फल लाने के द्वारा अपनी असलियत को सिद्ध करें। जहाँ तक चेलों की बात है, उनके साथ साथ यीशु अपने भावी अनुयायियों को भी इस दृष्टान्त के माध्यम से इस बात के लिए तैयार कर रहा है कि वे इस सच्चाई से हतोत्साहित न हों कि जितने लोगों को सुसमाचार सुनाया जाता है उनमें से काफी कम लोग ही सचमुच में उद्धार पाते हैं। इस दृष्टान्त में यह अर्थ भी पाया जाता है कि मसीह की निष्ठावान प्रजा इस भ्रम में पड़ने से बचे कि सुसमाचार सुनाने से सारा संसार बचाया जाएगा। इस दृष्टान्त में चेलों को सुसमाचार के तीन विरोधियों से भी सचेत किया गया है: (1) शैतान (पक्षी–दुष्ट); (2) शरीर (झुलसा देने वाला सूरज – क्लेश या सताव); और (3) संसार (कटीली झाड़ियां – संसार की चिन्ताएं और धन का धोखा)।

अन्त में चेलों को यह दर्शन दिया जाता है कि यदि हम मनुष्यों के जीवन में प्रभु का काम करने के लिये अपना जीवन लगाएं तो इससे बहुत बड़ा लाभदायक प्रतिफ़ल प्राप्त होता है। तीसगुणा का अर्थ है 3,000 प्रतिशत लाभ, साठगुणा का अर्थ है 6,000 प्रतिशत लाभ, और सौ गुणा का अर्थ है 10,000 प्रतिशत लाभ। वास्तव में, एक व्यक्ति के ही सच्चे मनफिराव के परिणाम को नाप सकने का कोई उपाय नहीं है। एक अज्ञात सण्डे स्कूल शिक्षक ने महान प्रचारक डी.एल. मूडी के जीवन में प्रभु का काम करने के लिए अपना जीवन लगाया। मूडी ने अनेक अन्य लोगों को प्रभु के लिए जीता। इसके बाद, मूडी द्वारा जीते गए लोगों ने और अन्य लोगों को प्रभु के लिए जीता। सण्डे स्कूल शिक्षक ने एक ऐसी श्रृखंला की शुरूआत की जो कभी भी नहीं रूकेगी।

द. गेहूं और जंगली बीज का दृष्टान्त (13:24–30)

पिछला दृष्टान्त इस सच्चाई का सजीव चित्रण था कि स्वर्ग के राज्य में वे लोग शामिल हैं जो राजा का सिर्फ मुँह से अंगीकार करते हैं, और साथ ही वे लोग भी जो उसके सच्चे अनुयायी हैं। पहले तीन प्रकार की भूमि स्वर्ग के राज्य के बाहरी घेरे को दर्शाती हैं – बाहरी तौर पर अंगीकार। चौथी भूमि स्वर्ग के राज्य के छोटे घेरे को दर्शाती है – जिन्होंने सचमुच में मन फिराया है।

13:24–26 दूसरा **दृष्टान्त** – गेहूं और जंगली बीज – भी राज्य के इन्हीं दो पहलुओं को हमारे सामने रखता है। गेहूं सच्चे विश्वासी को दर्शाता है, और जंगली बीज ऊपरी तौर पर अंगीकार करने वालों को दर्शाता है। प्रभु यीशु **स्वर्ग** के **राज्य** की तुलना **उस मनुष्य** के साथ करता है **जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।** बाइबल टीकाकार मेरिल अंगर बताते हैं कि इस्राएल के खेतों में सामान्यत: उगने वाला जंगली पौधा एक जहरीली घास थी जो गेहूं के पौधे से इतनी मिलती जुलती थी कि जब तक बालियां न लग जाएं दोनों के बीच में अन्तर करना काफी कठिन होता था। परन्तु जब बालियां आ जाती थीं तब दोनों के बीच में अन्तर करने में कोई कठिनाई नहीं आती थी।[28]

13:27,28 जब **दासों** ने गेहूं के बीच में जंगली दानों को देखा तो उन्होंने खेत के स्वामी से पूछा कि यह कैसे हुआ। उसने तुरन्त ही पहचान लिया कि यह **बैरी** का

काम है। **दासों** ने तुरन्त ही उन जंगली दानों को उखाड़ना चाहा।

13:29,30 परन्तु स्वामी ने उन्हें आदेश दिया कि वे **कटनी तक** ठहर जाएं। तक काटने वाले दोनों को अलग अलग करेंगे। गेहूं को इकट्ठा करके खलिहान में रखा जाएगा और जंगली पौधों को जला दिया जाएगा। स्वामी ने इन दोनों को अलग अलग करने के लिए इतना समय क्यों लिया? गेहूं के पौधे और जंगली पौधों के जड़ आपस में ऐसे जकड़े हुए होते हैं कि एक को निकालते समय दूसरे को उखड़ने न देना असम्भव है।

हमारे प्रभु के द्वारा इस दृष्टान्त को 37–43 पदों में समझाया गया है, इसलिए तब तक के लिए हम इस विषय पर चर्चा को यहीं पर रोकते हैं।

इ. राई के दाने का दृष्टान्त (13:31, 32)

इसके बाद हमारा उद्धारकर्ता **राज्य** की तुलना **राई के एक दाने** से करता है जिसे वह **बीजों** में सबसे छोटा बताता है, अर्थात्, सुनने वालों के अनुभव में सबसे छोटा। जब एक मनुष्य एक ऐसे ही बीज को बोया, तो यह कुछ समय बाद एक बड़ा पेड़ बन गया, इस प्रकार से पेड़ का इतना बड़ा हो जाना चमत्कारिक है। सामान्यत: राई का पौधा पेड़ के समान कम और झाड़ी के समान ज्यादा होता है। यह **पेड़** इतना बड़ा था कि **पक्षी** भी **उस की डालियों पर** बसेरा करने लगे।

दाना राज्य के सादगीपूर्ण आरम्भ को दर्शाता है। आरम्भ में राज्य अपेक्षाकृत छोटा और शुद्ध था। परन्तु साम्राज्य द्वारा संरक्षण और सुरक्षा दिए जाने के कारण, इसमें असाधारण वृद्धि हो गई। उसके बाद पक्षी आए और उन्होंने उस पेड़ पर अपने घोसले बना लिए। इस पद में भी पक्षियों के लिए उसी यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है जिस शब्द का प्रयोग पद 4 में किया गया था; यीशु ने स्पष्ट किया कि पक्षी शैतान को दर्शाते हैं (पद 19)। राज्य शैतान और उसके दूतों के लिए एक बसेरा बन गया। वर्तमान में मसीहत के झण्डे के नीचे एकेश्वरवाद (यह मत त्रिएकत्व को झुठलाते हुए यह दावा करता है कि परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व नहीं, परन्तु एक ही व्यक्तित्व है), क्रिश्चन साइन्स (चर्च ऑफ ख्राइस्ट की शिक्षा यह कहती है कि परमेश्वर और मन ही एकमात्र परम सत्य हैं, भौतिक तत्वों और बुराई का कोई अस्तित्व नहीं है, पाप और बीमारी सिर्फ एक भ्रम है जिसे प्रार्थना के द्वारा दूर किया जा सकता है, और इसलिए इस मत को मानने वाले लोग दवाइयां नहीं लेते), मोर्मोनवाद (यह मत दावा करता है कि इन्होंने परमेश्वर से प्रकाशन के रूप में ''मोर्मोन की पुस्तक'' को पाया और अनुवाद किया; वे दावा करते हैं कि उन्हें बहुविवाह की स्थापना करने के लिए ईश्वरीय प्रकाशन प्राप्त हुआ), *जेहोवा विटनेस* (अनेक आधारभूत मसीही शिक्षाओं को मानने से इंकार करते हैं) और यूनिफिकेशन चर्च (पवित्र आत्मा में सारे मसीहियों को एक साथ करने का प्रयास करनेवाला एक कोरियाई कुपंथ, जिसका संस्थापक यह दावा करता है कि उसे ''मसीह'' के समान दर्जा प्राप्त है), जैसे मसीह का इंकार करने वाले कुपंथों ने बसेरा बना लिया है।

इसलिए प्रभु ने यहाँ पर अपने चेलों को पहले से ही सचेत कर दिया कि उसकी अनुपस्थिति में राज्य में एक असाधारण बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। वे इससे धोखा न खाएं न ही इस बढ़ोत्तरी को अपनी सफलता समझें। यह एक अस्वस्थ बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि यह छोटा सा दाना असाधारण रूप से एक बड़ा पेड़ बन जाएगा, परन्तु इसकी विशालता ''दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया'' (प्रका. 18:2)।

फ. खमीर का दृष्टान्त (13:33)

उसके बाद प्रभु यीशु ने **राज्य** को उस **खमीर के समान** बताया **जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया।** इसके कारण सारा आटा **खमीर** बन गया। सामान्यत: इसकी व्याख्या करते हुए आटे को संसार और खमीर को सुसमाचार बताया जाता है जो सारे संसार में तब तक सुनाया जाएगा जब तक एक एक व्यक्ति बचा न लिया जाए। परन्तु यह व्याख्या पवित्रशास्त्र, बाइबल के इतिहास, और वर्तमान की घटनाओं की पृष्ठभूमि में विरोधाभासी है।

खमीर को बाइबल में हमेशा ही बुराई का सूचक माना गया है। जब परमेश्वर ने अपनी प्रजा को आदेश दिया कि वे अपने अपने घरों से खमीर हटा लें (निर्ग. 12:15), तब उनके लिए खमीर का अर्थ बुराई ही था।

यदि कोई भी व्यक्ति किसी खमीरयुक्त वस्तु को इस अखमीरी रोटी के पर्व के पहले से लेकर सातवें दिन में एक बार भी खा लेता, तो उसे इस्राएल से निर्वासित कर दिया जाता था। यीशु ने फरीसियों और सदूकियों (मत्ती 16:6,12) और हेरोदेस (मरकुस 8:15) के खमीर के विरूद्ध भी सचेत किया था। 1 कुरिन्थियों 5:6–8 में खमीर को बुराई और दुष्टता का पर्याय बताया गया है, और गलातियों 5:9 के सन्दर्भ में इसका अर्थ झूठी शिक्षा है। सामान्यत:, खमीर का अर्थ बुराई की शिक्षा या बुराई का आचरण होता है।

इस तरह से इस दृष्टान्त में प्रभु **स्वर्ग** के **राज्य** में बुराई की भेदने वाली सामर्थ की सक्रियता के विरूद्ध चेतावनी देता है। राई के दाने का दृष्टान्त राज्य के बाहरी पहलू की बुराई को दर्शाता है; खमीर का दृष्टान्त उस भीतरी भ्रष्टता के बारे में बताता है जो घटित होने को है।

हम ऐसा मानते हैं कि इस दृष्टान्त में आटा परमेश्वर के लोगों के लिये बाइबल में पाए जाने वाले भोजन को दर्शाता है। **खमीर,** बुरी और झूठी शिक्षा को दर्शाता है। **स्त्री** एक झूठी भविष्यद्वक्तिन है जो गलत (झूठी) शिक्षा देकर लोगों का जी बहलाती है (प्रका. 2:20)। क्या विशेष अर्थपूर्ण नहीं है कि अनेक कुपंथों को स्त्रियों ने आरम्भ किया है? बाइबल की सुस्पष्ट आज्ञा के अनुसार, कलीसिया में उपदेश न करने के लिए मना किए जाने के बाद भी (1 कुरि. 14:34; 1 तीमु. 2:12), कुछ स्त्रियों ने इसकी अवज्ञा करते हुए कलीसिया में बाइबल–सिद्धान्त की शिक्षा देने का अधिकार अपने हाथों में लेकर विनाशकारी झूठी शिक्षाओं के द्वारा परमेश्वर के लोगों के भोजन को मिलावटी बना दिया है।

जे.एच. ब्रुक्स कहते हैं:

> यदि कोई इस बात पर आपत्ति व्यक्त करते हुए कहता है कि यीशु स्वर्ग के राज्य को किसी ऐसी चीज़ के समान नहीं बताएगा जो बुराई का सूचक हो, तो यह उत्तर दे देना ही पर्याप्त होगा कि वह राज्य की तुलना किसी ऐसी चीज़ से करता है जिसमें जंगली बीज और गेहूं दोनों हैं, जिसमें अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की मछलियां समाती हैं, जो एक दुष्ट सेवक तक विस्तारित है (मत्ती 18:23–32), जिसमें एक ऐसा व्यक्ति प्रवेश कर सकता है जिसके पास विवाह का वस्त्र नहीं है, और जो खो चुका है (मत्ती 22:1–13)।[29]

ग. दृष्टान्तों का प्रयोग करना भविष्यद्वाणियों की पूर्णता को दर्शाता है (13:34,35)

यीशु ने पहले चार दृष्टान्त **लोगों** के लिए कहे। प्रभु द्वारा इस तरह से शिक्षा देना भजन 78:2 में आसाप द्वारा की गई भविष्यद्वाणी को पूर्ण करता है कि मसीह **दृष्टान्तों** में बातें करेगा, और ऐसी बातें बोलेगा जो **जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं**। अपने अन्तरिम रूप में स्वर्ग के राज्य की यह विशेषता जो अब तक गुप्त थी, अब प्रगट की जा रही है।

ह. जंगली बीज के दृष्टान्त का अर्थ (13:36–43)

13:36–43 प्रभु के उपदेश के शेष भाग **चेलों** से **घर** के भीतर कहे गए। यहाँ पर चेलों को इस्राएल के छोटे विश्वासयोग्य झुण्ड के प्रतिनिधि के रूप में समझा जा सकता है। घर का नए सिरे से उल्लेख किया जाना हमें यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल, जिसे उसने पहले से जाना था, त्यागा नहीं है (रोमियों 11:12)।

13:37 गेहूं और जंगली बीज के दृष्टान्त में यीशु ने अपने आप को बोनेवाले के रूप में प्रस्तुत किया। उसने इस पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान सीधे सीधे बीज बोया, और उसके बाद से वह अपने सेवकों के माध्यम से बीज बोता जा रहा है।

13:38 खेत का अर्थ यहाँ पर संसार है। इस बात पर जोर देना महत्वपूर्ण है कि खेत का अर्थ संसार है, *कलीसिया* नहीं। **अच्छा बीज** का अर्थ **राज्य के सन्तान** है। जीवित मनुष्यों को भूमि में पौधों की तरह लगाने की बात करना बकवास और असंगत प्रतीत हो सकता है। परन्तु यहाँ पर यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि राज्य की इन सन्तानों को संसार में बोया गया था। प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी में अपनी सेवकाई के दौरान संसार में अपने चेलों को, जो उसके राज्य के निष्ठावान नागरिक थे, बीज के रूप में बोया। **जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं**। शैतान ने प्रत्येक ईश्वरीय सच्चाई का एक–एक छद्‌मरूप (नकली रूप) तैयार कर रखा है। उसने संसार में ऐसे

लोगों को रोपित कर के रखा है जो यीशु के अनुयायियों की तरह दिखते हैं, उनकी तरह बातें करते हैं, और कुछ हद तक चलते भी हैं। परन्तु वे राजा के सच्चे अनुयायी नहीं हैं।

13:39 शत्रु यहाँ पर शैतान को कहा गया है, जो परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों का शत्रु है। **कटनी जगत का अन्त है**, यह स्वर्ग के राज्य के अन्तरिम रूप का समापन होगा, जो तब होगा जब यीशु राजा के रूप में राज्य करने के लिए सामर्थ और महिमा के साथ लौटेगा। प्रभु यहाँ पर कलीसियाई युग के अन्त की बात नहीं कर रहा है; यहाँ पर कलीसिया को प्रस्तुत करना उलझन ही उत्पन्न करेगा।

13:40-42 लवनेवालों का अर्थ स्वर्गदूत है (प्रका.14:14-20)। राज्य के वर्तमान चरण में, गेहूं और जंगली दानों को अलग-अलग करने के लिए जोर नहीं लगाया जाएगा। उन्हें एक साथ बढ़ने दिया जाता है। परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर, स्वर्गदूत पाप के सारे कारणों और बुराई करने वाले सब लोगों को अपने वश में करके **उन्हें आग के कुण्ड में** डाल देंगे, जहाँ वे रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

13:43 राज्य की धर्मी प्रजा जो क्लेशकाल के समय पृथ्वी पर होगी मसीह के हजार वर्ष के शासन का आनन्द लेने के लिए **अपने पिता के राज्य में** प्रवेश करेगी। वहाँ वे **सूर्य की नाई चमकेंगे**; अर्थात्, वे महिमा के तेज में चमकदार हो जाएंगे।

एक बार फिर से प्रभु यीशु गुप्त चेतावनी देता है, ''**जिसके कान हों वह सुन ले!**''

यह दृष्टान्त एक स्थानीय मसीही कलीसिया में अधर्मी लोगों को सहन करने के रवैये को सही नहीं ठहराता, जैसा कि कुछ लोगों की गलत समझ है। स्मरण रखें कि खेत संसार को कहा गया है, कलीसिया को नहीं। स्थानीय कलीसियाओं को स्पष्ट आदेश दिया गया है कि वे उन लोगों को अपनी सहभागिता से अलग रखें जो कुछ विशेष प्रकार के अधर्म के दोषी पाए जाते हैं (1 कुरि. 5:9-13)। यह दृष्टान्त सिर्फ यह सिखा रहा है कि अपने रहस्यमयी रूप में स्वर्ग के राज्य में वास्तविक और बनावटी, सच्चे और छद्मवेशी (नकली), दोनों ही प्रकार के लोग पाएं जाएंगे, और ऐसी अवस्था इस समय के अन्त तक बनी रहेगी। परमेश्वर के स्वर्गदूत झूठों को सच्चों से अलग करेंगे, झूठों को दण्ड देने के लिए ले जाएंगे और सच्चे लोग पृथ्वी पर मसीह के महिमामय शासन का आनन्द उठाएंगे।

इ. छिपे हुए धन का दृष्टान्त (13:44)

अब तक बताए गए सारे दृष्टान्तों में यह शिक्षा दी गई है कि स्वर्ग के राज्य में अच्छा और बुरा दोनों ही पाया जाएगा। अगले दो दृष्टान्तों में यह बताया गया है कि धर्मी प्रजा के दो प्रकार होंगे: (1) कलीसियाई युग से पहले और बाद के यहूदी लोग; (2) वर्तमान युग के यहूदी और गैरयहूदी (अन्यजाति) विश्वासी।

धन के दृष्टान्त में, यीशु **राज्य** की तुलना **खेत में छिपे हुए धन** से करता है। यह धन एक **मनुष्य** को मिल जाता है, वह इसे छिपा देता है और **अपना सब कुछ बेच कर उस खेत को मोल** ले लेता है।

हमारा मानना है कि यहाँ पर यह **मनुष्य** स्वयं यीशु मसीह है (गेंहू और जंगली दानों के दृष्टान्त में भी यीशु उसमें उल्लेखित मनुष्य था, पद 37)। **धन** उन विश्वासी यहूदियों के छोटे से झुण्ड को कहा गया है जो पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के समय थे और जो कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद इस पृथ्वी पर पाए जाएंगे (भजन 135:4 देखें जहाँ इस्राएल को परमेश्वर का निज धन कहा गया है)। वे इस अर्थ में खेत में छिपाए गए हैं कि वे संसार भर में तितर-बितर हो गए हैं, और वास्तव में उन्हें परमेश्वर के छोड़ और कोई नहीं जानता। यीशु को इस धन की खोज कर लेते हुए और फिर संसार, जहाँ सारा धन छिपा है, को मोल लेने के लिए क्रूस पर जाकर अपना सब कुछ दे देते हुए चित्रित किया गया है (2 कुरि. 5:19; 1 यूह. 2:2)। छुटकारा प्राप्त इस्राएल जो अब तक छिपा हुआ है बाहर निकाला जाएगा जब उसका छुटकारा देने वाला सिय्योन से आकर बहुप्रतीक्षित मसीहाई राज्य की स्थापना करेगा।

कुछ लोग इस दृष्टान्त को एक पापी पर लागू करते हैं, जो सबसे बड़े धन मसीह को पाने के लिए अपना सब कुछ दे देता है। परन्तु इस प्रकार की व्याख्या अनुग्रह की इस सच्चाई को झुठलाती है जो यह कहती है कि उद्धार बिना दाम मिलता है (यशा. 55:1; इफि. 2:8,9)।

ज. बहुमूल्य मोती का दृष्टान्त (13:45, 46)

राज्य की तुलना **एक व्योपारी** से की गई है जो **अच्छे मोतियों की खोज में था**। जब उसे ऐसा एक **बहुमूल्य मोती** मिल गया, तो उसने उसे खरीदने के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। एक भजन में जिसके बोल इस प्रकार हैं, ''मैंने सबसे बहुमूल्य मोती पा लिया है,'' पाने वाला पापी है और मोती उद्धारकर्ता है। परन्तु एक बार फिर से हम इस बात का विरोध करते हैं कि पापी को कुछ भी बेचने की और यीशु को खरीदने की आवश्यकता नहीं है।

बल्कि हमारा मानना है कि **व्योपारी** प्रभु यीशु है। **बहुमूल्य मोती** कलीसिया को कहा गया है। कलवरी में प्रभु ने अपना सब कुछ बेच कर इस मोती को खरीदा। जिस तरह से एक सीप के भीतर बाहरी तत्व के आ जाने से उत्पन्न जलन से उपजी तकलीफ के कारण मोती का निर्माण होता है, उसी तरह से उद्धारकर्ता के छिदे हुए और घायल शरीर से कलीसिया का निर्माण हुआ है।

यह बात रोचक है कि धन के दृष्टान्त में , राज्य को धन के समान बताया गया है। परन्तु यहाँ पर राज्य का संबंध मोती के साथ नहीं, परन्तु व्योपारी के साथ प्रयुक्त हुआ है। दोनों में क्या भिन्नता है?

पिछले दृष्टान्त में, धन पर जोर दिया गया था – मोल देकर छुड़ाया हुआ इस्राएल। राज्य इस्राएल जाति से काफी निकटता से जुड़ा हुआ है। इसमें मूलत: इसी जाति को प्रस्तावित किया गया था, और राज्य के आने वाले रूप में, यहूदी जाति ही इस राज्य की प्रमुख प्रजा होगी।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, कलीसिया और राज्य एक ही चीज़ नहीं हैं। जो कोई कलीसिया में है वह राज्य के अन्तरिम रूप में राज्य में है, परन्तु आवश्यक नहीं कि राज्य के सब लोग कलीसिया में हैं। *राज्य के आने वाले रूप में कलीसिया राज्य में नहीं रहेगी परन्तु नई पृथ्वी पर मसीह के साथ राज्य करेगी*। दूसरे दृष्टान्त में स्वयं राजा पर और उस अत्याधिक मूल्य पर जोर दिया गया है जिसे राजा ने एक दुल्हिन को अपने प्रेम के वश में कर के जीत के चुकाया था जो उसके प्रगट होने के दिन में उसकी महिमा की सहभागी होगी।

जिस तरह से एक मोती समुद्र से बाहर आता है, उसी तरह से कलीसिया, जिसे मसीह की गैरयहूदी दुल्हन भी कहा जाता है, अधिकांशत: गैरयहूदियों के बीच से निकलती है। यहाँ पर इस बात को अनदेखा नहीं किया जा रहा है कि मन फिराए हुए यहूदी भी इसमें शामिल हैं, परन्तु सिर्फ इस बात को बताया जा रहा है कि कलीसिया की प्रमुख विशेषता यह है कि यह मसीह के नाम के लिए गैरयहूदियों में से बुलाई गई है। प्रेरित 15:14 में याकूब ने इसे वर्तमान समय के लिए परमेश्वर की एक महान योजना बताते हुए इसकी पुष्टि की थी।

क. बड़े जाल का दृष्टान्त (13:47–50)

13:47,48 इस श्रृंखला के अन्तिम दृष्टान्त में **राज्य** की तुलना एक ऐसे **जाल** से की गई है **जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया**। मछुआरों ने मछलियों को अलग–अलग छांटा, और **अच्छी** मछलियों को एक बर्तन में रखा और **निकम्मी** मछलियों को फेंक दिया।

13:49,50 हमारे प्रभु ने इस दृष्टान्त की व्याख्या की है। यह समय **जगत के अन्त** का समय है; अर्थात्, क्लेशकाल के अन्त का समय। यह मसीह के दूसरे आगमन का समय है। मछुवे **स्वर्गदूत** को कहा गया है। अच्छी मछलियां धर्मी लोग हैं; अर्थात्, उद्धारपाए हुए लोग, जिसमें यहूदी और गैरयहूदी दोनों शामिल हैं। निकम्मी मछलियां अधर्मी लोगों को कहा गया है; जिसमें हर जाति के अविश्वासी लोग शामिल हैं। यहाँ पर भी दो प्रकार के लोगों को अलग अलग किया गया है जैसे कि हमने गेहूं और जंगली दानों के दृष्टान्तों में भी देखा था (30, 39–43 पदों में)। धर्मी लोग अपने पिता के राज्य में प्रवेश करेंगे, जबकि अधर्मी लोगों को उस आग में डाल दिया जाएगा जहाँ **रोना और दांत पीसना होगा**। किन्तु, यह अन्तिम न्याय नहीं होगा, यह न्याय हजार वर्ष के आरम्भ में हो रहा है; अन्तिम न्याय हजार वर्ष की समाप्ति के बाद होगा (प्रका. 20:7–15)।

गेबेलियन ने इस दृष्टान्त पर इस प्रकार से टिप्पणी की है:

> जाल को समुद्र में डाला गया, जहाँ कि हमने पहले भी देखा कि समुद्र गैरयहूदियों को दर्शाता है। यह दृष्टान्त उस सनातन सुसमाचार के प्रचार की ओर संकेत कर रहा है जो महाक्लेशकाल के समय में

किया जाएगा (प्रका. 14:6, 7)। अच्छे और बुरे को स्वर्गदूतों द्वारा अलग अलग किया जाएगा। यह सारी बातें वर्तमान समय या कलीसिया के सम्बन्ध में नहीं कही गई हैं, परन्तु उस समय के सम्बन्ध में कही गई हैं जब राज्य स्थापित किया जाने वाला होगा। स्वर्गदूतों से काम लिया जाएगा, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्पष्ट देखा जा सकता है। दुष्ट लोग आग की भट्ठी में फेंक दिए जाएंगे और धर्मी लोग हजार वर्ष के राज्य के लिए पृथ्वी पर बने रहेंगे।[30]

ल. सत्य का भण्डार (13:51–52)

13:51 जब वह दृष्टान्तों को कह चुका, तब इस महान शिक्षक ने अपने चेलों से पूछा कि उन्होंने इन दृष्टान्तों को समझा या नहीं। उन्होंने उत्तर दिया, ''**हां**।'' उनके इस उत्तर को सुनकर हमें आश्चर्य हो सकता है, या हमारे मन में उनके प्रति हल्की सी ईर्ष्या भी उत्पन्न हो सकती है। शायद हम इतने विश्वास से इसका उत्तर ''हाँ'' में नहीं दे पाएं।

13:52 इसलिए कि उन्होंने इन बातों को समझ लिया इसलिए दूसरों को इसे बांटना उनका कर्तव्य है। चेलों को आशीष का माध्यम बनना है, स्त्रोत नहीं। ये बारह चेले अब **स्वर्ग के राज्य** के लिए शास्त्रियों की तरह प्रशिक्षित कर दिए गए; अर्थात्, उन्हें सत्य के शिक्षकों और व्याख्याकारों के रूप में प्रशिक्षित कर दिया गया था। वे उस **गृहस्थ के समान हैं जो अपने भण्डार में नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है**। पुराना नियम में, **पुरानी** सच्चाइयां प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। मसीह के द्वारा दृष्टान्तों के माध्यम से दी गई शिक्षाओं में उन्हें अभी अभी ऐसी चीज़ प्राप्त हुई है जो पूरी तरह से **नई** है। ज्ञान के इस विशाल भण्डार से उन्हें अब दूसरों को महिमामय सत्यों को बाटंना है।

म. यीशु का नासरत में अस्वीकार किया जाना (13:53–58)

13:53–56 जब यीशु **ये सब दृष्टान्त कह चुका**, तो वह गलील के किनारे से चला गया और नासरत को अन्तिम बार जाने के लिए निकल पड़ा। जब वह **उन की सभा में उन्हें** उपदेश देता था तो लोग उसके **ज्ञान** और उसके आश्चर्यकर्मों से **चकित** हो जाते थे। उनके लिए वह मात्र एक **बढ़ई को बेटा** था। वे जानते थे कि **उसकी माता . . . मरियम** थी और **भाइयों के नाम याकूब, यूसुफ, शमौन, और यहूदा** थे – वे अब भी नासरत में ही निवास कर रहे थे! उनके गांव का एक लड़का ऐसी ऐसी बातें कैसे कह सकता है और ऐसे ऐसे काम कैसे कर सकता है जिनके लिए वह इतना विख्यात हो गया है? इन बातों को सोच कर वे उलझन में पड़ गए और उन्हें सत्य को ग्रहण करने की तुलना में अपनी अज्ञानता में बने रहना सरल लगा।

13:57,58 सो उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई। इससे यीशु को यह कहने का अवसर मिला कि एक सच्चे **भविष्यद्वक्ता** को सामान्यत: अपने घर से बाहर अधिक सराहना मिलती है। उसके स्वयं के नगर और उसके स्वयं के सम्बन्धियों ने उसके साथ अपनी जान पहचान को उसकी अवहेलना का कारण बनने दिया। अविश्वास ने नासरत में उद्धारकर्ता की सेवा में बाधा पहुँचाई। उसने वहाँ कुछ ही रोगियों को चंगा किया (मरकुस 6:5 से तुलना कीजिए)। इसका कारण यह नहीं था कि वह सामर्थ के कामों को कर पाने में *सक्षम* नहीं था; मनुष्य की दुष्टता परमेश्वर की सामर्थ का प्रतिरोध नहीं कर सकती। परन्तु वह उन लोगों को आशीष देता जो आशीष पाने के लिए लालायित नहीं थे, वह उन लोगों की आवश्यकताओं को पूरी करता जिन्हें अपनी आवश्यकता का बोध नहीं था, वह उन लोगों को चंगा करता जो लोग यह सुनना पसन्द नहीं करते थे कि वे बीमार हैं।

IX. मसीह के अथक अनुग्रह का बढ़ते हुए बैरभाव से सामना (14:1–16:12)

अ. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला का सिर कटवाया जाना (14:1–12)

14:1,2 यीशु की सेवकाई का समाचार **चौथाई देश** (देश का चौथा हिस्सा) **के राजा हेरोदेस** तक पहुँचा। हेरोदेस महान के इस कुख्यात पुत्र को हेरोदेस अन्तिपास के नाम से भी जाना जाता था। इसी ने यूहन्ना

बपतिस्मा देनेवाले की हत्या करने का आदेश दिया था। जब उसने मसीह के आश्चर्यकर्मों के विषय में सुना, तो उसका विवेक उसने कचोटने लगा। उसने जिस भविष्यद्वक्ता का सिर कटवा दिया था उसे याद कर वह परेशान हो उठा। उसने अपने सेवकों को बताया, ''यह **यूहन्ना** है। वह **मरे हुओं में से** जी उठा है। यह इन आश्चर्यकर्मों का स्पष्टीकरण है।''

14:3 3–12 पदों में जिस प्रकार का वर्णन दिया गया है उस प्रकार के वर्णन को साहित्यिक पूर्वदृश्य *(लिटररी फ्लैशबैक)* कहा जाता है। मत्ती अपने वर्णन के क्रम को रोक कर बीच में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की मृत्यु से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख कर रहा है।

14:4,5 हेरोदेस ने अपनी पत्नी को त्याग दिया था और **अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी** के साथ कौटुम्बिक व्यभिचार के सम्बन्ध में पड़ गया था। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के रूप में यूहन्ना उसे फटकारने से नहीं चूका। उसने क्रोधित और निडर होकर हेरोदेस पर उंगली उठाई और उसकी अनैतिकता के लिए उसे लताड़ा।

राजा इतना क्रोधित हो गया कि वह उसे मार डालना चाहता था परन्तु यह राजनैतिक दृष्टि से समयोचित नहीं था। लोग यूहन्ना को एक **भविष्यद्वक्ता** मानते थे, और यदि यूहन्ना को मृत्युदण्ड दिया जाता तो इसके परिणामस्वरूप वे हिंसक होकर विरोध जताते। इसलिए तानाशाह ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को बन्दी बना कर अपने क्रोध को अस्थायी रूप से शान्त कर लिया। ''भक्तिहीन लोग धर्म को कुछ वैसा ही देखना पसन्द करते हैं जैसे वे एक मरे हुए या पिजड़े में कैद शेर को देखना पसन्द करते हैं; जब धर्म स्वतंत्र हो जाता है और उनके विवेक को चुनौती देने लगता है तब वे धर्म से डरते हैं।''[31]

14:6–11 **हेरोदेस** के **जन्मदिन** पर **हेरोदियास की बेटी** ने अपने नाच से राजा को इतना प्रसन्न कर दिया कि उसने उतावली में यह कह दिया कि वह जो चाहे उससे मांग ले। अपनी कुलटा मां के द्वारा उसकाए जाने पर उसने निर्लज्जता से **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल** में मांग लिया! इस समय तक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रति राजा का क्रोध काफी हद तक शान्त हो चुका था; शायद वह भविष्यद्वक्ता के साहस और अखण्डता की सराहना भी करता था। परन्तु यद्यपि वह दु:खी था, उसने महसूस किया, कि उसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी ही पड़ेगी। उसने आदेश दे दिया। यूहन्ना का सिर **कटवा दिया** गया और इस नाचने वाली लड़की का यह विभत्स निवेदन मान लिया गया।

14:12 यूहन्ना के **चेलों** ने अपने गुरू की **लोथ** को ससम्मान दफन किया, और उसके बाद **यीशु को** इसका **समाचार दिया**। अपने शोक और रोष को उण्डेलने के लिये यीशु के पास जाने से बेहतर और कोई दूसरा उपाय नहीं हो सकता। न ही वे हमारे सामने इससे बेहतर उदाहरण रख सकते थे। सताव, अत्याचार, कष्ट, और दु:ख के समय, हमें भी यीशु के पास जा कर अपनी बातों को उससे कहना चाहिए।

जहाँ तक हेरोदेस की बात है, वह अपना अपराध कर चुका परन्तु इसकी यादें अब भी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थीं। जब उसने यीशु की गतिविधियों के बारे में सुना, तो यूहन्ना की मृत्यु से सम्बन्धित सारी घटना मानों लौट कर उसे परेशान करने लगी।

ब. पाँच हजार लोगों को भोजन कराना (14:13–21)

14:13,14 **जब यीशु ने यह सुना** कि हेरोदेस उसके आश्चर्यकर्मों के समाचारों को सुनकर व्याकुल है, तो वह **नाव पर** गलील की झील के किनारे के किसी एकान्त स्थान को चला गया। हम निश्चय ही यह कह सकते हैं कि वह डर कर वहाँ से नहीं गया; वह जानता था कि समय से पहले उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। हम उसके वहां से चले जाने का वास्तविक कारण नहीं जान सकते, परन्तु एक कारण यह हो सकता है कि उसके चेले अभी अभी प्रचार करके लौटे थे (मरकुस 6:30; लूका 9:10) और कुछ समय उन्हें विश्राम और शान्ति की आवश्यकता थी।

किन्तु, नगर से बड़ी भीड़ **पैदल उसके पीछे** चलते हुए आ गई। जब वह किनारे गया, तो भीड़ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। इस तरह भीड़ के घुस आने से चिड़चिड़ा उठने की बजाए, तरस खाने वाला हमारा प्रभु तुरन्त ही अपने काम पर लग गया और उसने **उन के बीमारों को चंगा किया**।

14:15 जब **सांझ** हुई, अर्थात्, शाम 3 बजे,

उसके चेलों को लगा कि एक संकट की स्थिति निर्मित होने लगी है। वहाँ बहुत बड़ी भीड़ थी और उनके खाने के लिए कुछ भी नहीं था! उन्होंने यीशु से **भोजन** खरीदने के लिए कुछ लोगों को पास की **बस्तियों** में भेजने के लिए पूछा। उन्होंने मसीह के हृदय को बहुत छोटा जाना और उसकी सामर्थ को बहुत कम आंका!

14:16-18 प्रभु ने उन्हें आश्वस्त किया कि ऐसा करना **आवश्यक** नहीं है। लोग ऐसे व्यक्ति को क्यों छोड़ दें जो अपने हाथ को खोल देता है और प्रत्येक जीवित प्राणी की इच्छा की पूर्ति करता है? उसके बाद अपने चेलों से अचानक कह दिया, ''**तुम ही इन्हें खाने को दो**।'' वे चौंक गए। ''उन्हें खाने के लिए दो? हमारे पास **पाँच रोटी और दो मछलियों** के सिवाय और कुछ नहीं है।'' वे यह भूल गए कि उनके पास यीशु भी है। उद्धारकर्ता ने बहुत ही धीरज के साथ कहा, ''**उनको यहां मेरे पास लाओ**।'' उन्हें सिर्फ इतना ही काम करना था।

14:19-21 हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं कि प्रभु **लोगों को घास पर बैठने** के लिए निर्देश दे रहा है। **पाँच रोटियों और दो मछलियों को** अपने हाथ में लेकर, उसने धन्यवाद दिया, रोटियों को **तोड़ तोड़** कर बांटने के लिए **चेलों को** दिया। सब के लिए भरपूर भोजन हो गया। जब **सब** तृप्त हो गए तो चेलों ने बचे खुचे भोजन को एकत्रित किया जिससे **बारह टोकरियां** भर गईं। जितना भोजन यीशु के बांटने से पहले नहीं था उससे अधिक भोजन खाने के बाद बच गया। चेलों पर कटाक्ष करते हुए यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक अविश्वासी चेले के लिए एक-एक टोकरी बच गई। और शायद 10,000 से 15,000 लोगों की भीड़ तृप्त हुई (5000 पुरुष में स्त्रियों और बच्चों की संख्या को जोड़ कर)।

यह आश्चर्यकर्म प्रत्येक पीढ़ी के चेलों के लिए एक आत्मिक पाठ है। भूखी भीड़ हमेशा हमारे सामने रहती है। हमेशा ही चेलों का एक छोटा सा झुण्ड होता है जिनके पास बहुत ही कम दिखाई देने वाले संसाधन होते हैं। और हमेशा तरस खाने वाला हमारा उद्धारकर्ता उपस्थित रहता है। जब चेले अपने पास उपलब्ध बहुत थोड़े में से सब कुछ दे देते हैं तो वह उसे इतना बढ़ा देता है कि यह हजारों भूखे लोगों के लिए पर्याप्त हो जाता है। यहाँ पर ध्यान देने योग्य अन्तर यह है कि जिन **पाँच हजार पुरुषों** को गलील के किनारे तृप्त किया गया उनकी भूख कुछ समय के लिए ही शान्त की गई; आज जो मसीह के जीवित वचन से तृप्त होते हैं वे सदा के लिए तृप्त किए जाते हैं (यूहन्ना 6:35)।

स. यीशु झील पर चलता है (14:22-33)

पिछले आश्चर्यकर्म ने चेलों को आश्वस्त कर दिया कि वे एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हैं जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति भरपूरी से कर सकता है। अब वे यह सीखेंगे कि यह व्यक्ति उन्हें आश्रय दे सकता है और उन्हें सामर्थ भी प्रदान कर सकता है।

14:22,23 जब **यीशु** भीड़ को विदा कर रहा था, तब उसने **चेलों** से कहा कि वे **नाव पर** चढ़ कर झील के **पार** चलें। उसके बाद वह **प्रार्थना** करने के लिए ऊपर एक पहाड़ी पर चला गया। जब **सांझ** हुई, अर्थात्, सूर्यास्त के बाद, वह **वहाँ अकेला था** (यहूदी समझ के अनुसार दो ''सांझ'' हुआ करती थी, निर्गमन 12:6 *आरएसवी मार्जिन* देखें। एक सांझ, जिसका उल्लेख पद 15 में किया गया है, बीच दोपहर को आरम्भ होती थी, और दूसरी सांझ, जिसका उल्लेख यहाँ पर किया गया है, सूर्यास्त पर होती थी।)

14:24-27 अब तक, **नाव झील के बीच** भूमि से काफी दूर पहुँच चुकी थी और वह **सामने** से आ रही हवा से जूझ रही थी। जब हवाओं ने नाव को टक्करें मारी, तो यीशु ने चेलों की दुदर्शा को देखा। **रात के चौथे पहर** (3:00 से 6:00 बजे सुबह के बीच), वह **झील पर चलते हुए** उनके पास गया। चेले यह सोच कर कि वह कोई **भूत** है घबरा गए। परन्तु तुरन्त ही उन्होंने अपने स्वामी और मित्र की आश्वासन भरी आवाज को सुना। ''**ढाढ़स बान्धों, मैं हूँ, डरो मत**।''

सचमुच यह हमारे अनुभव से पूरी तरह से मेल खाता है! हम भी अक्सर तूफानों की मार झेलते, हताश हो जाते, और संकट में पड़ जाते हैं। ऐसा लगता है कि उद्धारकर्ता हमसे काफी दूर है। परन्तु पूरे समय वह हमारे लिए प्रार्थना करता रहता है। जब ऐसा लगता है कि घोर अंधकार छा गया है, वह हमारे पास ही होता है। तब भी हम उसे सही रीति से समझ नहीं पाते और घबराने लगते हैं। उसके बाद

हमें ढाढ़स देने वाली उसकी आवाज सुनाई देती है और हम स्मरण करते हैं कि जिस तूफान के कारण हम घबरा रहे थे, वह उसके पाँव के नीचे है।

14:28 जब **पतरस** ने इस चिरपरिचित और अत्यंत प्रिय आवाज़ को सुना, तो उसका उत्साह और स्नेह उमड़ पड़ा। **"हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।"** "यदि" की ओर ध्यान देकर उसे अल्पविश्वासी समझने की बजाय, हमें उसके इस निर्भीक निवेदन पर ध्यान देते हुए उसके बड़े भरोसे से शिक्षा लेनी चाहिए। पतरस का मानना था कि प्रभु की आज्ञा उसके लिए एक अधिकार है, क्योंकि वह जो भी आज्ञा देता है उसके लिए अधिकार (और सामर्थ) भी प्रदान करता है।

14:29–33 जैसे ही यीशु ने **कहा**, **"आ,"** **पतरस** नाव से कूद पड़ा और पानी पर चल कर यीशु के पास आने लगा। जब तक उसकी दृष्टि यीशु की ओर थी, तब तक वह असम्भव कार्य को भी कर पा रहा था; परन्तु जिस क्षण उसका ध्यान प्रचण्ड **हवा** की ओर गया, वह डूबने लगा। वह डर कर चिल्ला उठा, **"हे प्रभु, मुझे बचा।"** प्रभु ने उसका हाथ पकड़ा, उसके **अल्प** विश्वास के लिए उसे हल्की डांट लगाई, और उसे नाव में ले आया। जैसे ही यीशु नाव पर चढ़ा, **हवा थम गई**। नाव में चेलों ने यह कहते हुए यीशु की आराधना की, **"सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।"**

मसीही जीवन जीना भी उतना ही असम्भव है जितना कि पानी में चलना। इसे हम सिर्फ पवित्र आत्मा की सामर्थ से ही जी सकते हैं। जब तक दूसरी सारी वस्तुओं से ध्यान हटा कर यीशु को देखते रहेंगे (इब्रा. 12:2) तब तक हम एक आलौकिक जीवन का अनुभव कर सकते हैं। परन्तु जिस क्षण हम अपने आप की ओर या अपनी परिस्थितियों की ओर ध्यान देते हैं, हम डूबने लगते हैं। तब हमें बचाए जाने और ईश्वरीय सामर्थ पाने के लिए मसीह को पुकारने की आवश्यकता है।

ड. यीशु गन्नेरेत के एक व्यक्ति को चंगा करता है (14:34–36)

नाव गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी छोर पर, **गन्नेरेत** में जाकर रूकी। जैसे ही वहाँ के लोगों ने यीशु को पहचाना, वे सारे क्षेत्र में खबर फैलाकर वहाँ के **सब बीमारों** को यीशु के पास ले आए कि **वह उन्हें अपने वस्त्र के आँचल ही को छूने दे** कि वे चंगे हो जाएं; **जितनों ने** उसे छुआ, **वे** पूरी तरह से **चंगे हो गए**। और इसलिए उस क्षेत्र के चिकित्सकों को छुट्टी मिल गई। कम से कम, अब कुछ दिनों के लिए, वहाँ कोई बीमार नहीं रहा। इस महान वैद्य के आगमन से उस क्षेत्र के लोगों ने स्वास्थ और चंगाई का अनुभव किया।

इ. अशुद्धता/अपवित्रता भीतर से आती है (15:1–20)

अक्सर इस बात पर जोर दिया जाता है कि मत्ती के वर्णन आरम्भिक अध्यायों में कालक्रम के अनुसार नहीं हैं। परन्तु अध्याय 14 से लेकर अन्त तक, घटनाओं का वर्णन उसी क्रम से दिया गया है जिस क्रम से ये घटित हुए हैं।

अध्याय 15 में कालखण्ड *(डिस्पेन्सेशन)* का एक क्रम भी सामने आता है। पहला, शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा लगातार तोल-मोल और तर्क वितर्क करना (1–20 पदों में) इस्राएल द्वारा मसीह का तिरिस्कार किए जाने की एक पूर्व झलक दिखा देता है। दूसरा, कनानी स्त्री का विश्वास (21–28 पदों में) इस वर्तमान युग में सुसमाचार का अन्यजातियों (गैर यहूदियों) के पास जाने का चित्रण करता है। और अन्त में, बड़ी भीड़ का चंगा होना (29–31 पदों में) और 4,000 लोगों को भोजन दिया जाना (32–39 पदों में) आने वाले हजार वर्ष (सहस्राब्दिक राज्य) और इसके विश्वव्यापी स्वास्थ्य और समृद्धि की ओर इशारा करता है।

15:1,2 शास्त्री और फरीसी लोग उद्धारकर्ता को अपने जाल में फँसाने के प्रयास में लगातार लगे हुए थे। उनका एक प्रतिनिधिमण्डल **यरूशलेम** से आया, और उसके चेलों पर अशुद्ध होने का दोष लगाया क्योंकि वे बिना हाथ धोए खाना खाते थे, और ऐसा करके शास्त्रियों और फरीसियों के अनुसार **पुरनियों की रीतों** का उल्लंघन कर रहे थे।

इस घटना को सही रीति से समझने के लिए हमें शुद्ध और अशुद्ध के अर्थ को समझने की, और यह जानने की आवश्यकता है कि फरीसियों के लिए धोने का अर्थ क्या

था। शुद्ध और अशुद्ध को समझने के लिए हमें पुराना नियम में जाने की आवश्यकता है। जिस अशुद्धता का दोष चेलों पर लगाया गया था वह पूरी तरह से रीति विधि से सम्बन्धित था। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति किसी लोथ को छू लेता था, या यदि किसी वस्तु को खा लेता था, जबकि वह अशुद्धता की रीति–विधि से अनुबन्धित होता था – तो वह परमेश्वर की आराधना करने के लिए रीति विधि के अनुसार अयोग्य माना जाता था। इससे पहले कि वह परमेश्वर तक पहुँचे, परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार यह अनिवार्य था कि वह रीति विधि की दृष्टि से पहले शुद्ध हो।

परन्तु पुरनियों ने शुद्ध करने वाली रीतियों में परम्परा को जोड़ दिया था। उदाहरण के लिए, वे इस बात पर जोर देते थे कि इससे पहले कि एक यहूदी भोजन करे, वह अपने हाथ को शुद्ध करने की एक पूरी लम्बी प्रक्रिया को पूरी करे, सिर्फ हाथ धोने से काम नहीं चलेगा परन्तु उसे अपनी कुहनी तक धोना पड़ेगा। यदि वह चौक से होकर आया हो, तो उसे स्नान का संस्कार पूरा करना पड़ता था। इसलिए फरीसी लोग चेलों की आलोचना कर रहे हैं कि वे यहूदी परम्परा में बताए गए जटिल नियमों का पालन करने में असफल हैं।

15:3–6 प्रभु यीशु ने अपने आलोचकों को स्मरण दिलाया कि वे **परमेश्वर** के **वचन** का उल्लंघन कर रहे हैं, सिर्फ पुरनियों की **रीतों** का नहीं। व्यवस्था में लोगों को अपने माता पिता का **आदर** करने की आज्ञा दी गई है, जिसके तहत उन्हें आवश्यकता पड़ने पर उनकी आर्थिक सहायता भी करनी थी। परन्तु शास्त्री और फरीसी (और बहुत से दूसरे) लोग अपने बूढ़े माता–पिता को सहयोग करने के लिए पैसे खर्च नहीं करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक ऐसी परम्परा शुरू कर दी जिसके बहाने वे अपने माता–पिता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरी करने से बच सकते थे। जब भी **पिता और . . . माता** उनसे सहायता मांगा करते थे, तो उन्हें सिर्फ इन शब्दों का उच्चारण एक सूत्र की तरह करना होता था, ''जो भी पैसा मेरे पास है और जिसका उपयोग आपकी सहायता करने के लिए किया जा सकता था, उसे मैंने परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, और इसलिए मैं उसे आप को नहीं दे सकता।'' और इस सूत्र का उच्चारण करने के बाद वे माता–पिता के प्रति अपनी आर्थिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते थे। इस छली परम्परा का पालन करने के द्वारा वे **परमेश्वर** के वचन को शून्य कर देते थे जिसमें माता–पिता की चिन्ता करने की आज्ञा दी गई है।

15:7–9 उनके द्वारा वचन को छलपूर्वक तोड़ मरोड़ किए जाने से **यशायाह** 29:13 की भविष्यद्वाणी पूरी हुई। ये लोग मुँह से तो मेरा **आदर** करते हुए समीप आते हैं परन्तु अपना **मन** मुझ से **दूर** रखते हैं। उनकी आराधना व्यर्थ थी क्योंकि वे परमेश्वर के वचन से अधिक प्राथमिकता लोगों द्वारा स्थापित परम्पराओं को देते थे।

15:10,11 ***लोगों*** की ओर देख कर यीशु ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण घोषणा की। उसने कहा कि **जो मुँह से जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुँह से निकलता है** वही उसे अशुद्ध करता है। हम इस कथन के इस क्रान्तिकारी स्वभाव को शायद ही पसन्द करें। लैवीय संहिता के अनुसार, जो कुछ मनुष्य के भीतर जाता था वह मनुष्य को अशुद्ध *करता* था। यहूदियों को किसी भी ऐसे पशु को खाने से मना किया गया था जो पागुर कर नहीं खाता और जिसके फटे खुर होते हैं। वे किसी भी ऐसी मछली को नहीं खा सकते थे यदि उसमें छिलके और मीनपंख न हों। परमेश्वर ने बहुत ही बारीकी से इस बात को स्पष्ट किया था कि कौन कौन सा भोजन शुद्ध है और कौन कौन सा अशुद्ध।

अब व्यवस्था को देने वाला स्वयं संस्कारिक अशुद्धता के सारे नियम कायदों को रद्द करने का मार्ग प्रशस्त करता है। उसने कहा कि जिस भोजन को वह और चेले बिना हाथ धोए खाते हैं वह उन्हें अशुद्ध नहीं करता। परन्तु शास्त्रियों और फरीसियों का पाखण्ड उनको अशुद्ध करता है।

15:12–14 जब उसके **चेलों** ने उसे बताया कि **फरीसियों** ने यीशु द्वारा की गई इस भर्त्सना से **ठोकर** खाई है, तो यीशु ने उत्तर देते हुए उनकी तुलना ऐसे पौधों से की जिन्हें ईश्वर द्वारा नहीं रोपा गया है। वे गेहूँ के दाने नहीं परन्तु जंगली बीज हैं। वे और उनकी शिक्षाएं एक दिन अन्तत: उखाड़ दी जाएंगी; अर्थात्, नाश कर दी जाएंगी। इसके आगे उसने यह भी कहा, ''**उन को जाने दो, वे अन्धे मार्ग दिखाने वाले हैं**।'' यद्यपि वे आत्मिक मामलों के अधिकृत व्यक्ति होने का दावा करते थे, परन्तु वे आत्मिक सच्चाइयों के प्रति अन्धे थे, और वे लोग भी उन्हीं के समान अन्धे थे जिनकी वे अगुवाई करते थे। इस

बात को कोई नहीं टाल सकता है कि अन्धे अगुवे और उनके अनुयायी **गड़हे में न गिर पड़ें**।

15:15 शुद्ध और अशुद्ध भोजन के सम्बन्ध में चेलों को जो शिक्षा दी गई थी उसकी बिल्कुल विपरीत शिक्षा सुन कर चेले नि:सन्देह हिल गए। यह बात उनके लिए एक **दृष्टांत** के समान थी, अर्थात्, अस्पष्ट, और ढंपी हुई बात थी। उनकी असहजता को व्यक्त करते हुए **पतरस** इसका स्पष्टीकरण चाहता है।

15:16,17 प्रभु ने पहले इस बात पर आश्चर्य किया कि वे इन बातों को समझने में इतने धीमे हैं, उसके बाद उन्हें समझाया कि वास्तव में व्यक्ति शारीरिक रूप से नहीं परन्तु नैतिक रूप से अशुद्ध होता है। भोजन अपने आप में अशुद्ध या शुद्ध नहीं होता। बल्कि, कोई भी भौतिक वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं होती; किसी भी वस्तु का दुरूपयोग करना गलत होता है। मनुष्य जो भोजन करता है वह **पेट में पड़ता है** और वहाँ पच कर **सण्डास** में निकल जाता है। उसका नैतिक पक्ष इससे प्रभावित नहीं होता – इससे सिर्फ उसके शरीर पर प्रभाव पड़ता है। आज हमें यह मालूम हो गया है कि ''परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए। क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है'' (1 तीमु. 4:4,5)। नि:सन्देह, इस स्थल में किसी जहरीले पौधे को खाने के लिए नहीं कहा जा रहा है, परन्तु खाने की उन वस्तुओं के विषय में कहा जा रहा है जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य के खाने के लिए बनाया है। सब भोजन अच्छा है और इसे धन्यवाद के साथ खाया जाना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को किसी खाद्य पदार्थ से एलर्जी है या वह उसे पचा नहीं सकता, तो वह उसे न खाए, परन्तु सामान्य रूप से हम भोजन को इस आश्वासन के साथ खा सकते हैं कि परमेश्वर इस भोजन का उपयोग हमारे पोषण के लिए करेगा।

15:18 यदि भोजन अशुद्ध नहीं करता, तो *फिर क्या अशुद्ध करता है?* यीशु ने उत्तर दिया, ''**पर जो कुछ मुँह से निकलता है वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है**।'' यहाँ पर **मन** मनुष्य के अभिप्रायों और अभिलाषाओं के भ्रष्ट स्त्रोत को कहा गया है। मनुष्य के नैतिक स्वभाव का यह पक्ष अशुद्ध विचारों, और फिर उससे उत्पन्न बुरे शब्दों और फिर बुरे कार्यों से प्रगट होता है।

15:19,20 मनुष्य को अशुद्ध करने वाली वस्तुओं में **कुचिन्ता**, **हत्या**, **परस्त्रीगमन**, **व्यभिचार**, **चोरी**, **झूठी गवाही** और **निन्दा** शामिल हैं।

फरीसी और शास्त्री लोग हाथ धोने के दिखावटी और अत्यौपचारिक संस्कार के पालन का अत्यंत सावधानीपूर्वक ध्यान रखते थे। परन्तु उनका भीतरी जीवन दूषित हो गया था। वे तुच्छ बातों को बहुत महत्व देते थे और वास्तविक महत्व की बातों को अनदेखा कर देते थे। वे ऐसी परम्पराओं का पालन न करने पर दूसरों की आलोचना किया करते थे जो परमेश्वर की प्रेरणा से नहीं रची गई हैं, परन्तु तौभी उन्होंने परमेश्वर के पुत्र को मारने का षड़यंत्र रचा और पद 19 में सूचीबद्ध पापों के दोषी ठहरे।

फ. एक अन्यजाति स्त्री को उसके विश्वास के लिए आशीष दी गई (15:21–28)

15:21–28 यीशु भूमध्यसागर के तट पर स्थित **सूर और सैदा के देशों की ओर** चला गया। जहाँ तक हमारी जानकारी की बात है, यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के दौरान यह एकमात्र ऐसा अवसर था जब वह यहूदी क्षेत्र से बाहर गया हो। यहाँ फीनीके में, एक कनानी स्त्री ने उससे विनती की कि वह उसकी **बेटी** को चंगा करे जिसे **दुष्टात्मा बहुत सता रहा** था।

इस बात को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यह स्त्री यहूदिनी नहीं, परन्तु एक अन्यजाति थी। वह कनानी मूल की थी, यह एक पथभ्रष्ट जाति थी जिसे परमेश्वर ने इस संसार से लोप करने के लिए चिन्हित किया था। इस्राएल की अनाज्ञाकारिता के कारण, इस जाति के कुछ लोग यहोशू द्वारा कनान को वश में किए जाने के समय जीवित बच गए थे, और यह स्त्री उन्हीं जीवित बच गए लोगों की वंशज थी। अन्यजाति होने के कारण, वह परमेश्वर द्वारा इस संसार में चुने गए लोगों के लिए ठहराये गये विशेषाधिकार की भागी नहीं थी। वह इस विशेषाधिकार से अलग–थलग थी, और उसके जीवन में कोई आशा नहीं थी। अपनी जाति के कारण वह परमेश्वर या मसीह से किसी भी प्रकार की मांग करने के अधिकार से वंचित थी।

यीशु से निवेदन करते समय वह उसे **प्रभु, दाऊद की सन्तान** कह कर सम्बोधित करती है, **दाऊद की सन्तान** एक ऐसा पदनाम है जिसका उपयोग यहूदी लोग प्रभु को सम्बोधित करने के लिए किया करते थे। यद्यपि यीशु **दाऊद की सन्तान** था, परन्तु किसी भी अन्यजाति को अधिकार नहीं था कि वह इसका वास्ता देते हुए प्रभु के पास जाए। यही कारण था कि शुरू में प्रभु ने उस स्त्री को कोई उत्तर नहीं दिया।

15:23 उसके चेलों ने आकर उससे विनती करके कहा कि वह उसे **विदा** करे; चेले उसे अनावश्यक खीज का कारण समझ रहे थे। परन्तु प्रभु के लिए वह विश्वास का एक सुखद उदाहरण और एक ऐसी पात्र थी जिस पर उसका अनुग्रह होने पर था। परन्तु पहले यह आवश्यक था कि वह उसके विश्वास की परख कर उसे सिखाए।

15:24,25 उसने उसे याद दिलाया कि वह **इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों** के लिए भेजा गया है, अन्यजातियों, और विशेष कर कनानियों के लिए तो बिल्कुल नहीं। प्रभु द्वारा इंकार किए जाने पर भी यह स्त्री हतोत्साहित नहीं हुई। इस बार वह *दाऊद की सन्तान* पदनाम का उपयोग न करते हुए यह कहते हुए यीशु की आराधना करती है, "**हे प्रभु मेरी सहायता कर**!" यदि वह एक यहूदी के रूप में अपने मसीह के पास नहीं आ सकती, तो फिर वह एक सृजित प्राणी के रूप में अपने सृष्टिकर्ता के पास आएगी।

15:26 इस स्त्री के विश्वास की वास्तविकता की और गहराई से परख करने के लिए, यीशु ने उससे कहा कि उसके लिये यह **अच्छा नहीं** होगा कि वह अपना ध्यान यहूदी बच्चों को रोटी खिलाने से हटाकर अन्यजाति (रूपी) **कुत्तों** को रोटी देने में लगाए। यदि यह बात कठोर सुनाई देती है, तो हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए, कि शल्य चिकित्सक के चाकू के जैसे ही, यह बात आहत करने के लिए नहीं, परन्तु चंगाई देने के उद्देश्य से कही गई थी। वह एक अन्यजाति स्त्री *थी*। यहूदी लोग अन्यजातियों को ऐसे आवारा मुरदाखोर कुत्तों की तरह समझते थे, जो भोजन के टुकड़ों के लिए गलियों में फिरते रहते हैं। परन्तु यहाँ पर यीशु ने कुत्तों के लिए जिस यूनानी शब्द का प्रयोग किया वह छोटे पालतू पिल्लों के लिए उपयोग में लाया जाता है। यीशु का प्रश्न यह था, कि "क्या वह प्रभु की दया के छोटे से छोटे से भाग को ग्रहण करने के लिए अपनी अयोग्यता को स्वीकार करेगी?"

15:27 उसका उत्तर सचमुच में शानदार था। वह प्रभु द्वारा दिए गए चित्रण से पूरी तरह सहमत थी। उसने एक अयोग्य अन्यजाति के स्थान को दीनतापूर्वक स्वीकार करते हुए, अपने आप को उसकी दया, उसके प्रेम और उसके अनुग्रह के आधीन कर दिया। उसने मानों कुछ इस तरह से कहा, "प्रभु! तेरी बात सत्य है! मैं मेज के नीचे बैठे एक छोटे कुत्ते से अधिक और कुछ नहीं हूँ। परन्तु प्रभु, मैंने देखा है कि **चूरचार** कभी कभी **मेज से गिरते हैं**। क्या तू इस चूरचार को मुझे नहीं देगा? मैं इस योग्य नहीं हूं कि तू मेरी बेटी को चंगा करे, परन्तु मैं तुझसे बिनती करती हूँ तू अपनी इस अयोग्य सृष्टि के लिए ऐसा कर दे।"

15:28 यीशु ने उसके इस महान **विश्वास** के लिए उसकी सराहना की। जहाँ एक ओर अविश्वासी बच्चों (इस्राएलियों) को रोटी (प्रभु की दया) की कोई भूख नहीं थी, वहीं अपने आप को कुत्ता मान लेने वाली अन्यजाति इसके लिए तरस रही है। विश्वास का प्रतिफल दिया गया; उसकी बेटी तुरन्त **चंगी** हो गई। हमारे प्रभु द्वारा इस अन्यजाति बेटी को दूर से ही चंगा कर दिया जाना वर्तमान में उसके द्वारा की जा रही सेवकाई की ओर संकेत करता है, जबकि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हुए इस युग में अन्यजातियों को आत्मिक आशीषें प्रदान कर रहा है, जब उसके द्वारा चुने हुए लोग एक जाति के रूप में किनारे कर दिए गए हैं।

ग. यीशु बहुत से लोगों को चंगा करता है (15:29–31)

मरकुस 7:31 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु सूर से निकलकर उत्तर दिशा में सैदा की ओर चल पड़ा, उसके बाद वह यरदन पार पूर्व दिशा की ओर, दिकापुलिस के क्षेत्र में दक्षिण की ओर गया। वहां, गलील की झील के किनारे, उसने **लगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों और बहुत औरों** को चंगा किया। अचंभित भीड़ ने **इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई** की। इस बात का प्रबल अनुमान है कि यह एक अन्यजाति क्षेत्र में हुआ। लोगों का, जो यीशु और उसके चेलों को इस्राएल के साथ जोड़ कर देख रहे थे, निष्कर्ष सही था कि **इस्राएल** का **परमेश्वर** उनके मध्य में काम कर रहा है।

ह. चार हजार लोगों को भोजन कराना (15:32-39)

15:32 लापरवाह (या आलोचक) पाठकों ने, इस घटना और पाँच हजार लोगों को भोजन कराए जाने की घटना को एक ही घटना समझ कर बाइबल पर यह दोष मढ़ दिया कि बाइबल में विरोधाभासी और भ्रामक जानकारियां पाई जाती हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि दोनों ही घटनाएं पूरी तरह से अलग अलग घटनाएं हैं, और एक दूसरे की विरोधाभासी नहीं परन्तु पूरक हैं।

तीन दिन तक प्रभु के पीछे पीछे चलते रहने के कारण, **भीड़** के पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा। प्रभु उन्हें भूखा नहीं छोड़ सकता था; उसे चिन्ता थी कि वे **मार्ग** में ही निढाल हो जाएंगे।

15:33,34 एक बार फिर से उसके चेले इतनी बड़ी भीड़ को भोजन कराने के असम्भव कार्य पर खीज उठे; इस बार उनके पास सिर्फ **सात** रोटी **और थोड़ी सी छोटी मछलियां** थीं।

15:35,36 पाँच हजार लोगों को भोजन कराते समय जैसा प्रभु ने किया था, वैसा ही इस बार भी उसने लोगों को बैठाया, **धन्यवाद करके** रोटी और मछली **को तोड़ा** और **अपने चेलों को** दिया कि वे लोगों को बांट दें। वह अपने चेलों से अपेक्षा करता है कि उनसे जितना भी हो सकता है वे उतना करें; उसके बाद वह स्वयं आता है और जो कार्य उसके चेले नहीं कर सकते उसे वह स्वयं पूरा करता है।

15:37-39 जब लोग **तृप्त हो गए**, तो **भरे हुए सात टोकरे** बच गए। भोजन करने वालों की संख्या **स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार** पुरुषों की थी।

अगले अध्याय में हम देखेंगे कि भोजन खिलाने सम्बन्धी दोनों आश्चर्यकर्मों में दी गई संख्याओं का एक महत्व है (16:8-12)। बाइबल में दिए गए प्रत्येक विवरणों में कोई न कोई अर्थ पाया जाता है। भीड़ को विदा करने के बाद, हमारा प्रभु **नाव** पर गलील की झील के तट पर स्थित **मगदन** नामक स्थान को चला गया।

ई. फरीसियों और सदूकियों का खमीर (16:1-12)

16:1 **फरीसियों और सदूकियों** को धर्मविज्ञान के मामलों में पारम्परिक प्रतिद्वंदी माना जाता है, दोनों एक सिद्धान्त के दो अलग अलग किनारे थे। परन्तु उनके बीच की प्रतिद्वंदिता आपसी सहयोग में बदल गई जो वे प्रभु यीशु को अपने जाल में फंसाने के उद्देश्य से आपस में एक हो गए। उसे परखने के लिए उन्होंने उससे **कहा** कि वह **आकाश का कोई चिन्ह** दिखाए। यद्यपि स्पष्ट रूप से बताया नहीं गया है परन्तु वे किसी तरह से उसे समझौता की स्थिति में फंसाने का प्रयास कर रहे थे। **आकाश का कोई चिन्ह** दिखाने की मांग करने के द्वारा, शायद वे यह जताने का प्रयास कर रहे थे कि प्रभु द्वारा अब तक किए गए आश्चर्यकर्मों का कोई दूसरा ही (आकाश/परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु इसके विपरीत पृथ्वी/शैतान की ओर से) स्रोत था। या शायद वे आकाश से कोई चमत्कारिक चिन्ह देखना चाहते थे। प्रभु यीशु ने अपने सारे आश्चर्यकर्म पृथ्वी पर ही किए थे। क्या वह आकाश में भी आश्चर्यकर्म कर सकता था?

16:2,3 **उस ने . . . आकाश** के विषय को जारी रखते हुए **उन को उत्तर दिया,** जब वे **सांझ** को **लाल** आकाश देखते हैं, तो पूर्वानुमान लगा लेते हैं कि अगले दिन आकाश **खुला** रहेगा। वे यह भी अनुमान लगा लेते हैं कि **भोर** को **लाल और धुमला** आकाश रहने पर उस दिन आंधी आएगी। वे आकाश को देख कर मौमस की व्याख्या करने में तो निपुण हैं, परन्तु वे **समयों के चिन्हों** की व्याख्या नहीं कर सकते।

ये चिन्ह क्या हैं? जिस भविष्यद्वक्ता ने मसीह के आगमन की पूर्वसूचना दी थी, वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के रूप में प्रगट हुआ। आश्चर्यकर्मों ने प्रभु यीशु मसीह के विषय में भविष्यद्वाणी की - वे काम जो कोई भी मनुष्य कभी नहीं कर पाया - उनकी उपस्थिति में किए गए। यहूदियों द्वारा मसीह का साक्षात इंकार किया जाना और सुसमाचार का अन्यजातियों की ओर मोड़ दिया जाना, समयों का एक और चिन्ह था, ये सभी बातें भविष्यद्वाणी की पूर्णता थीं। फिर भी इस अकाट्य प्रमाण के बावजूद इन लोगों में इतनी

भी समझ नहीं थी कि वे इतिहास को रूप देते या भविष्यद्वाणी को पूरी होते हुए देख पाते।

16:4 जबकि प्रभु स्वयं फरीसियों और सदूकियों के मध्य उपस्थित था, उससे चिन्ह मांगने के द्वारा उन्होंने बुरे और आत्मिक रूप से **व्यभिचारी** लोगों के रूप में अपनी पोल खोल दी। **यूनुस के चिन्ह को छोड़** उन्हें अब और कोई **चिन्ह** नहीं **दिया** जाएगा। जैसा कि 12:39 की टिप्पणी में समझाया गया है, यह तीसरे दिन यीशु के जी उठने के विषय में कहा गया है। **बुरे और व्यभिचारी लोग** मसीह को क्रूस पर चढ़ा देंगे, परन्तु परमेश्वर उसे मरे हुओं में से जिला देगा। यह उन सब लोगों के नाश का चिन्ह होगा जो उसे अपना प्रभु मानने से और उसके सामने झुकने से इंकार कर देंगे।

यह पैराग्राफ एक अनिष्टसूचक वाक्य से समाप्त होता है, ''**वह उन्हें छोड़कर चला गया**।'' इन शब्दों का आत्मिक अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है।

16:5,6 जब उसके **चेले** झील के पूर्वी पार पर उससे फिर से मिले, तो उन्होंने पाया कि वे अपने साथ भोजन रखना **भूल गए** थे। इसलिए जब यीशु ने उन्हें यह चेतावनी देते हुए उनका अभिवादन किया, ''**फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना**,'' तो उन्हों ने सोचा कि वह कह रहा है, ''भोजन के लिए यहूदी अगुवों के पास मत जाओ!'' भोजन के बारे में उनकी चिन्ता के कारण प्रभु के वाक्य में निहित आत्मिक शिक्षा को समझने की बजाए वे उसके शाब्दिक अर्थ पर चले गए।

16:7-10 वे अब भी भोजन की कमी को लेकर चिन्तित हो रहे थे जबकि 5000 और 4000 लोगों को गिनती की रोटियों और थोड़ी से मछलियों से भोजन करा देनेवाला व्यक्ति उनके साथ था। इसलिए उसने इन दोनों आश्चर्यकर्मों के बारे में उन्हें फिर से स्मरण दिलाया। इन दोनों आश्चर्यकर्मों से मिली शिक्षा ईश्वरीय गणित और ईश्वरीय स्त्रोत की भरपूरी के विषय में बताती है, क्योंकि *यीशु ने कम से कम भोजन से, अधिक से अधिक लोगों को तृप्त किया, और उससे भी अधिक भोजन बच गया।* जब उन के पास सिर्फ पाँच रोटी और दो मछली थी, तब उसने 5,000 से भी अधिक लोगों को भोजन से तृप्त किया और बारह टोकरों में भोजन बच गए। इससे अधिक रोटी और मछलियों से उसने सिर्फ 4,000 से अधिक लोगों को भोजन से तृप्त किया, और सिर्फ सात टोकरों में भोजन बचा। यदि हम अपने सीमित स्त्रोतों को उसके कामों में लगाते हैं, तो वह उसे व्युत्क्रमानुपात में कई गुणा बढ़ा सकता है। ''थोड़ा भी बहुत है यदि उसमें परमेश्वर (का नियंत्रण) है।''

टोकरियों के लिए यहाँ पर अलग यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है[33] जबकि 5,000 लोगों को भोजन कराये जाने के समय टोकरियों के लिए अलग शब्द का उपयोग किया गया था। समझा जाता है कि इस घटना में उपयोग में लाई गई सात टोकरियां 5,000 लोगों के समय उपयोग में लाई गई टोकरियों से बड़ी थीं। परन्तु इसमें पाई जाने वाली शिक्षा वही है: हम भूख और घटियों को लेकर चिन्तित क्यों रहें जबकि हमारे साथ वह व्यक्ति है जिसके पास असीमित सामर्थ और स्त्रोत है?

16:11,12 फरीसियों और सदूकियों के खमीर के बारे में बात करते हुए, प्रभु रोटी की बात नहीं कर रहा है परन्तु बुरी शिक्षाओं और आचरणों के बारे में कह रहा है। लूका 12:1 में फरीसियों के खमीर की व्याख्या पाखण्ड के रूप में की गई है। वे परमेश्वर के वचन की बारीक से बारीक बातों का पालन करने का दावा करते हैं, तौभी उनकी आज्ञाकारिता बाहरी और खोखली है। भीतर से वे बुरे और भ्रष्ट हैं।

सदूकियों के खमीर की व्याख्या तर्कवाद के रूप में की गई है। उन दिनों के स्वच्छन्द विचारों के इन लोगों ने, आज के उदारवादियों के समान, सन्देहों और इंकारों से युक्त एक तंत्र बना लिया था। वे स्वर्गदूतों और आत्माओं के अस्तित्व का, शरीर के फिर से जी उठने का, आत्मा की अनश्वरता का, और आन्तरिक दण्ड का इंकार करते थे। सन्देहवाद का खमीर, यदि दूर हटाया नहीं जाता है, तो यह भी उसी तरह से पूरी तरह फैल जाता है जैसे भोजन में खमीर।

X. राजा अपने चेलों को तैयार करता है (16:13-17:27)

अ. पतरस द्वारा महान अंगीकार (16:13-20)

16:13,14 कैसरिया फिलिप्पी गलील की झील से उत्तर की ओर लगभग पच्चीस मील की दूरी पर और यरदन से उत्तर की ओर पाँच मील की दूरी पर स्थित

था। जब यीशु इसके आसपास के गाँवों में आया (मरकुस 8:27), तब एक ऐसी घटना घटी जो सामान्यत:, शिक्षा देने की उसकी सेवकाई का चरमोत्कर्ष माना जाता है। इस समय तक वह अपने चेलों को तैयार कर रहा था कि वे उसके व्यक्तित्व की वास्तविक पहचान कर सकें। इसमें सफल होने के बाद अब वह संकल्पित भाव से क्रूस की ओर जाने के लिए अपना रास्ता पकड़ लेता है।

वह **अपने चेलों** से पूछना आरम्भ करता है, लोग उसकी पहचान किस रूप में करते हैं। उत्तर में **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले** से लेकर **एलिय्याह**, **यिर्मयाह**, और **भविष्यद्वक्ताओं** में से एक शामिल थे। एक सामान्य व्यक्ति के लिए वह परमेश्वर के लोगों में से एक था। लोग उसे अच्छा मानते थे उत्तम नहीं। महान मानते थे महानतम नहीं। भविष्यद्वक्ता मानते थे पर *''वह भविष्यद्वक्ता''* नहीं। ऐसा दृष्टिकोण किसी काम का नहीं है। उसकी यह फीकी प्रशंसा तो उसके लिये निंदा के बराबर थी। यदि वह दूसरों के समान ही एक व्यक्ति होता तो इसका अर्थ है कि वह धोखेबाज है, क्योंकि वह परमेश्वर पिता के बराबर होने का दावा करता था।

16:15,16 इसलिए उसने अपने चेलों से पूछा कि वे उसे क्या समझते हैं। इस पर **शमौन पतरस** ने ऐतिहासिक अंगीकार करते हुए कहा, ''**तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है**।'' दूसरे शब्दों में, वह इस्राएल का मसीह और परमेश्वर का पुत्र है।

16:17,18 हमारे प्रभु ने **योना** के पुत्र **शमौन** को एक आशीष दी। इस मछुआरे को प्रभु यीशु मसीह के बारे में यह समझ उसकी बुद्धि से या सांसारिक ज्ञान से नहीं आई; यह बात परमेश्वर **पिता** के द्वारा अलौकिक रीति से उस पर **प्रगट** की गई। परन्तु परमेश्वर पुत्र के पास भी पतरस से कहने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बात थी। इसलिए यीशु ने आगे कहा, ''**और मैं भी तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे**।'' हम सब यह जानते हैं कि सुसमाचार के अन्य पदों की तुलना में यह पद सबसे अधिक विवादित रहा है। हमारे सामने प्रश्न यह है कि **पत्थर** कौन या क्या है? समस्या का एक कारण यह भी है कि यूनानी में पतरस और पत्थर के लिए प्रयोग में लाए शब्द मिलते जुलते हैं, परन्तु उनके अर्थ भिन्न हैं। पहला, *पेट्रोस* का अर्थ एक पत्थर या अलग पड़ा हुआ चट्टान होता है; दूसरा, *पेट्रा* का अर्थ चट्टान होता है, जैसे चट्टान तलशिला। इसलिए वास्तव में यीशु ने यह कहा, ''**तू पतरस** (पत्थर) **है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा**।'' उसने यह नहीं कहा कि वह अपनी कलीसिया *पेट्रोस* पर बनाएगा, परन्तु उसने कहा, ''मैं अपनी कलीसिया *पेट्रा* पर बनाऊंगा।''

यदि पतरस वह पत्थर नहीं है, तब फिर पत्थर क्या है? यदि हम इस सन्दर्भ में ही रह कर देखें, तो इसका विदित उत्तर यह है कि पतरस का यह अंगीकार ही, कि मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र है, वह पत्थर है, और इसी सत्य पर कलीसिया की स्थापना हुई है। इफिसियों 2:20 में यह बताया गया है कि कलीसिया यीशु मसीह पर बनाई गई है, जो उसके कोने (सिरे) का पत्थर है। इसमें दिया गया कथन कि हम प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के नींव पर बनाए गए हैं उनकी ओर संकेत नहीं कर रहा है परन्तु प्रभु यीशु मसीह के बारे में उनकी शिक्षाओं के द्वारा डाली गई नींव के बारे में कहा जा रहा है।

1 कुरिन्थियों 10:4 में मसीह को चट्टान कहा गया है। इस सम्बन्ध में टीकाकार मोर्गन की टिप्पणी की ओर ध्यान देना हमारे लिए सहायक होगा:

> ध्यान रखें, कि वह यहूदियों से बात कर रहा था, यदि हम चट्टान शब्द का प्रतीकात्मक प्रयोग इब्रानी पवित्रशास्त्र में खोजने का प्रयास करें, तो हम पाएंगे कि इसका उपयोग कभी भी प्रतीकात्मक रूप से मनुष्य के लिए नहीं, परन्तु हमेशा परमेश्वर के लिए किया किया गया है। इसलिए यहाँ कैसरिया फिलिप्पी में, कलीसिया को पतरस के ऊपर नहीं बनाया गया। यीशु यहाँ पर शब्दों से नहीं खेल रहा है। उसने उनके पुराने इब्रानी उदाहरण – चट्टान – का प्रयोग किया – चट्टान हमेशा ईश्वरत्व का प्रतीक रहा है – और कहा, ''स्वयं परमेश्वर पर – मसीह , जीवते परमेश्वर का पुत्र – मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।''[34]

पतरस ने कभी भी अपने लिए यह नहीं कही कि वह कलीसिया की नींव है। दो बार उसने मसीह को पत्थर कहा (प्रेरित 4:11,12; 1 पतरस 2:4–8), परन्तु वहाँ का चित्र भिन्न है; यह पत्थर कोने का सिर, नींव नहीं।

''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।'' यहाँ पर

बाइबल में **कलीसिया** शब्द का प्रथम बार उल्लेख आया है। पुराना नियम में इसका अस्तित्व नहीं था। यीशु ने जब ये बातें कही, तो उस समय कलीसिया भविष्य का एक विषय था, और कलीसिया की स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन हुई और यह मसीह के सभी सच्चे विश्वासियों, यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से मिल कर बनी हुई है। यह एक विशिष्ठ समाज है जो मसीह की देह और उसकी दुल्हन के रूप में जानी जाती है, इसे एक अद्वितीय स्वर्गीय बुलाहट और नियति दी गई है।

मत्ती के सुसमाचार में कलीसिया के आरम्भ के उल्लेख की अपेक्षा हममें से कोई नहीं करता, क्योंकि इस सुसमाचार में इस्राएल और परमेश्वर के राज्य जैसे विषयों को प्रमुखता दी गई है। किन्तु, इस्राएल द्वारा मसीह का इंकार किए जाने के परिणामस्वरूप, एक निक्षेप काल (बीच में डाली गई अवधि) – कलीसिया का युग – आता है और यह मेघारोहण (कलीसिया के बादलों पर यीशु से मिलन के लिए उठा लिए जाने) तक जारी रहेगा। फिर परमेश्वर इस्राएल को एक राष्ट्र में रूप में लेकर उसके साथ अपने व्यवहार को पुन: आरम्भ करेगा। इसलिए यह उपयुक्त है कि इस्राएल के इंकार के बाद परमेश्वर अपने कालखण्डीय कार्यक्रम के अगले चरण के रूप में कलीसिया को प्रस्तुत करे।

‘‘**अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे**’’ को दो तरह से समझा जा सकता है। प्रथम, **अधोलोक के फाटक** को कलीसिया के विरुद्ध एक असफल आक्रमण के रूप में चित्रित किया गया है – कलीसिया अपने ऊपर होने वाले हर एक आक्रमण को झेल लेगी। या कलीसिया को आक्रमण कर विजेता होते हुए चित्रित किया जा सकता है। दोनों ही मामलों में, मृत्यु की शक्ति जीवित विश्वासियों की देह के बदल जाने और मसीह में मरे हुओं के फिर से जी उठने के द्वारा पराजित की जाएगी।

16:19 ‘‘मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा’’ का अर्थ यह नहीं है कि पतरस को अधिकार दिया गया है कि वह लोगों को स्वर्ग में प्रवेश दे। यह *पृथ्वी पर* **स्वर्ग के राज्य** के सम्बन्ध में कहा गया है – इस क्षेत्र में वे सब लोग आते हैं जो दावा करते हैं कि वे राजा के प्रति निष्ठावान हैं, वे सब जो अपने आप को मसीही कहते हैं। **कुंजियां** पहुँच या प्रवेश को दर्शाते हैं। जो कुंजियां दावों (मुँह से अंगीकार) के क्षेत्र के द्वार को खोलती हैं उनका संकेत महान आज्ञा में पाया जाता है (मत्ती 28:19) – चेले बनाना, बपतिस्मा देना, और सिखाना। (बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है परन्तु यह एक दीक्षात्मक संस्कार है जिसके द्वारा मनुष्य सार्वजनिक रूप से राजा के प्रति अपनी निष्ठा का अंगीकार करता है।) पतरस ने सबसे पहली बार कुंजियों का प्रयोग पिन्तेकुस्त के दिन किया। ये कुंजियां सिर्फ पतरस के लिए ही नहीं दी गई थीं, परन्तु सब चेलों के लिए पतरस को दी गई थी। (मत्ती 18:18 देखें जहाँ यही प्रतिज्ञा सब को दी गई है)।

‘‘**जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।**’’ यह पद और इससे सम्बन्धित यूहन्ना 20:23 का उपयोग कभी कभी यह शिक्षा देने के लिए किया जाता है कि पतरस और उसके भावी उत्तराधिकारियों को पाप क्षमा करने का अधिकार दिया गया है। हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता; सिर्फ परमेश्वर पापों को क्षमा कर सकता है।

इस पद को दो तरह से समझा जा सकता है। पहला, इसका अर्थ यह हो सकता है कि प्रेरितों को बान्धने और खोलने का अधिकार दिया गया था, जो आज हमारे पास नहीं है। उदाहरण के लिए, पतरस ने हनन्याह और सफीरा पर उनके पाप को बान्ध दिया जिससे तुरन्त दण्ड स्वरूप उनकी मृत्यु हो गई (प्रेरित 5:1-10), जबकि पौलुस ने अनुशासित किए गए व्यक्ति को उसके पापों के परिणाम से खोल (मुक्त कर) दिया क्योंकि उस मनुष्य ने पश्चाताप कर लिया (2 कुरि. 2:10)।

या इस पद का अर्थ यह हो सकता है कि प्रेरितों ने पृथ्वी पर जो कुछ बान्धा या खोला वह अवश्य ही *पहले से* ही स्वर्ग में बान्धा या खोला गया होगा (*एन.के.जे.वी. मार्जिन* देखें)। इसलिए डॉ. चार्ल्स रायरी कहते हैं, ‘‘प्रेरित नहीं, परन्तु स्वर्ग बान्धने और खोलने का सब काम करता है, जबकि प्रेरित इन बातों की घोषणा करते हैं।’’[35]

वर्तमान में यह पद सिर्फ एक ही अर्थ में लागू होता है और वह *घोषणात्मक* अर्थ में है। जब एक पापी सचमुच में अपने पापों से पश्चाताप कर यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करता है, तब एक मसीही उस व्यक्ति के पाप की क्षमा की *घोषणा* कर सकता है। जब एक पापी उद्धारकर्ता का इंकार करता है, तब एक मसीह सेवक उसके पापों के बने रहने की *घोषणा* कर

सकता है। विलियम केरी लिखते हैं, ''जब कभी कलीसिया प्रभु के नाम से कार्य करती है और सचमुच में उसकी इच्छा को पूरा करती है, तो परमेश्वर की मुहर उनके कार्यों पर लग जाती है।''

16:20 एक बार हम फिर से पाते हैं कि प्रभु यीशु अपने **चेलों** को आज्ञा दे रहे हैं कि वे **किसी से न** कहें कि वह मसीह है। इस्राएल के अविश्वास के कारण, इस महत्वपूर्ण भेद के खुलने का कुछ अच्छा परिणाम नहीं मिल पाया। इससे एक हानि यह हो सकती थी कि जन समूह उसे राजा बनाने के लिए आंदोलन आरम्भ कर देता; ऐसे गलत समय पर चलाया गया आंदोलन आसानी से रोमी शासन के द्वारा कुचला जा सकता था।

स्टीवर्ट, जो इस खण्ड को यीशु की सेवकाई का निर्णायक मोड़ कहते हैं इस प्रकार से लिखते हैं:

> कैसरिया फिलिप्पी में यह दिन सुसमाचारों के लिए एक जलविभाजक (निर्णायक मोड़) था। इस मोड़ से आगे धारा दूसरी दिशा में बहने लगती है। यीशु की सेवकाई के आरम्भिक दिनों में लोकप्रियता का प्रवाह जो उसे राजा बनाने की ओर बढ़ रहा था, अब पीछे छूट चुका था। तरंगें अब क्रूस की ओर केन्द्रित थीं . . .। कैसरिया में यीशु इस प्रकार खड़ा था, मानों वह एक विभाजन की रेखा पर खड़ा है। यह एक पहाड़ की ऊँचाई पर खड़े होने के समान था जहाँ से वह पीछे उन सारे रास्तों को देख सकता था जिन पर वह चल कर यहाँ तक पहुँचा था, और साथ ही आगे के अन्धकारमय और भयंकर मार्ग को देख सकता था जिस पर उसे चलना था। वह एक नज़र पीछे देखता है जहाँ अभी भी उसे अपने खुशहाल दिनों की चमक दिखाई दे रही थी, और फिर वह अपना मुख आगे की ओर घुमा लेता है और परछाईयों की ओर चल पड़ता है। उसका मार्ग अब क्रूस की ओर केन्द्रित है।[36]

ब. यीशु अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के लिए चेलों को तैयार करता है (16:21–23)

16:21–23 अब जबकि चेले यह पहचान चुके हैं कि यीशु ही जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो वे उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के सम्बन्ध में उसकी पहली प्रत्यक्ष भविष्यद्वाणी को सुनने के लिए तैयार हो चुके हैं। वे अब जान गए हैं कि यीशु अपने उद्‌देश्य में किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता; वे यह जान चुके हैं कि वे विजयी पक्ष की ओर हैं; और चाहे जो भी हो जाए, विजय सुनिश्चित है। इसलिए परमेश्वर ने इन तैयार हृदयों के सामने यह ताज़ा खबर सुनाई। ''**मुझे अवश्य है कि यरूशलेम को जाऊं**, और धार्मिक अगुवों के हाथों **बहुत दु:ख उठाऊं, मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं।**'' यह खबर किसी भी आंदोलन का अन्त तय करने के लिए पर्याप्त थी – सिर्फ अन्तिम बात को छोड़ – **अवश्य है कि . . . तीसरे दिन जी उठूं।** यही बात सारा अन्तर उत्पन्न करती है।

16:22 पतरस यह सोच कर अत्यंत क्रोधित हो गया कि उसका स्वामी इतना बुरा बर्ताव झेलेगा। मानों वह उसके रास्ते पर खड़ा हो गया, और यीशु को पकड़ते हुए उसने विरोध किया, ''**हे प्रभु, परमेश्वर न करे, तुझ पर ऐसा कभी न होगा!**''

16:23 इस पर यीशु ने उसे फटकार लगाई। वह इस संसार में पापियों के लिए अपना प्राण देने के लिए आया है। जो भी वस्तु या जो भी व्यक्ति उसे इस उद्‌देश्य से डिगाना चाहता है वह परमेश्वर की इच्छा के बाहर जा कर ऐसा करता है। इसलिए उसने पतरस से कहा, ''**हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो: तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।**'' पतरस को **शैतान** कह कर, यीशु यह नहीं कहना चाह रहा है कि पतरस में दुष्टात्मा है या वह शैतान के वश में है। वह सिर्फ इतना कहना चाहता है कि पतरस के कार्य और शब्द ऐसे हैं जैसे शैतान (जिसके नाम का अर्थ *बैरी* होता है) के। कलवरी का विरोध कर पतरस उद्धारकर्ता के लिए एक बाधा बन रहा था।

प्रत्येक मसीही के लिये यह बुलाहट है कि वह अपना क्रूस उठाए और यीशु के पीछे चले, परन्तु जब आगे मार्ग में धुंधला क्रूस दिखाई देने लगता है, तो भीतर से एक आवाज़ आती है, ''तेरे साथ ऐसा कभी न हो, अपने आप को बचा।'' या शायद हमसे प्रेम करने वालों की आवाज हमें आज्ञाकारिता के हमारे मार्ग से विचलित करती है। ऐसे समयों में, हमें भी अवश्य ही ऐसा कहना है, ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है।''

स. यीशु चेलों को सच्ची शिष्यता के लिए तैयार करता है (16:24–28)

16:24 अब प्रभु यीशु स्पष्ट रूप से यह बताता है कि उसके शिष्य बनने के लिए किन–किन बातों की आवश्यकता है: अपने आप का इंकार, क्रूस उठाना, और उसके पीछे चलना। अपने आप का **इंकार** करना आत्म–त्याग के समान नहीं है; इसका अर्थ होता है अपने आप को पूरी तरह से उसके नियंत्रण में इस तरह से सौंप देना कि हमारा अपने ऊपर कोई अधिकार न रह जाए। **क्रूस** उठाने का अर्थ है कि प्रभु के हित के लिए लज्जा, कष्ट, और यहाँ तक कि शहीद हो जाने के लिए भी तैयार रहना; पाप के लिए, स्वयं के लिए, और संसार के लिए मर जाना। उसके **पीछे हो** लेने का अर्थ है, वैसा ही जीवन व्यतीत करना जिस प्रकार का जीवन यीशु ने व्यतीत किया जिसमें दीनता, गरीबी, तरस, प्रेम, अनुग्रह, और प्रत्येक अन्य ईश्वरीय सद्गुण शामिल हैं।

16:25 प्रभु पहले से ही अपने चेलों को आने वाली दो बाधाओं के बारे में बता देता है। पहली, अपने आप को तकलीफ, दर्द, अकेलेपन, या हानि से बचाने की स्वाभाविक परीक्षा। दूसरी, धनी बनने की परीक्षा। पहली बात के बारे में चेतावनी देते हुए यीशु कहता है कि जो स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए अपने जीवन को गले लगाए रहते हैं वे कभी भी सन्तुष्टि को नहीं पाएंगे; जो उसके लिए बेहिचक अपने प्राण को त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं, और अपनी हानि की चिन्ता नहीं करते, वे अपने जीवन के सही उद्देश्यों को पा लेंगे।

16:26 दूसरी परीक्षा – धनी बनने की – विवेकहीन है। यीशु ने कहा, ''मान लो, एक **मनुष्य** अपने व्यवसाय में इतना सफल हो गया कि उसने **सारे जगत** को अपना कर लिया। यह पागलपन उसका इतना समय और उसकी इतनी ऊर्जा ले लेगा कि वह अपने प्रमुख लक्ष्य (उद्देश्य) से चूक जाएगा। इतना सारा पैसा कमा कर, मर जाना, और सब कुछ छोड़ जाना, और अनन्तकाल तक छूछे हाथ रहने में क्या भलाई है?'' मनुष्य के पास इस संसार में पैसा कमाने से भी बड़ा काम है। वह अपने राजा के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाया गया है। यदि वह इससे चूक जाता है, तो वह सब कुछ खो देता है।

पद 24 में, यीशु ने उन्हें सबसे कठिन बात बताई। यह मसीही जीवन की विशेषता है; हम जानते हैं कि इससे हमारी सांसारिक स्थिति बदतर हो जाएगी। परन्तु इससे मिलने वाली आशीषों और धन को गिनते गिनते हम थक जाएंगे। मसीही लेखक बार्नहाऊस ने इस बात को बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया है:

> जब कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र में मना की गई सारी बातों को देख लेता है, तो ऐसा कुछ भी छिपा नहीं रह जाता कि वह आश्चर्य के रूप में बाहर आए। प्रत्येक नई बात जो हम इस जीवन या आने वाले जीवन में सीखेंगे, वह हमारे लिए एक आनन्ददायक बात होगी।[37]

16:27 अब प्रभु अपने स्वयं की **महिमा** की ओर ध्यान ले जाता है जो दु:ख सहने के बाद उसे मिलेगी। वह अपने दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है जब वह पृथ्वी पर **अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की** अलौकिक **महिमा** में आएगा। **और उस समय** उन सब को **प्रतिफल** देगा जो उसके लिए जीते हैं। सफल जीवन जीने का एकमात्र मार्ग यह है कि हम उस महिमामय समय को अपना लक्ष्य बना कर जीवन व्यतीत करें और यह निर्णय लें कि उस समय के दृष्टिकोण से सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात क्या है, और फिर उसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति से पूरी करें।

16:28 उसके बाद वह एक चौंकानेवाली बात कहता है कि वहां कुछ ऐसे लोग **खड़े हैं** जो जब तक उसे **उसके राज्य में आते हुए** न देखेंगे तब तक **मृत्यु का स्वाद** न चखेंगे। नि:सन्देह, समस्या यह है कि अब उन सारे चेलों की मृत्यु हो चुकी है, तौभी यीशु अपना राज्य स्थापित करने के लिए अभी तक अपनी सामर्थ और महिमा में नहीं आया है। इस समस्या का हल हमें मिल जाता है यदि हम अध्याय के समापन को अनदेखा करते हुए पद 28 में ही न रूक जाएं परन्तु अगले अध्याय के प्रथम आठ पदों को इस पहेली के स्पष्टीकरण के रूप में देखें। इन पदों में रूपान्तरण के पर्वत पर की घटना का वर्णन किया गया है। यहाँ पर पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने मसीह के रूपान्तरण को देखा। वास्तव में यह उनका सौभाग्य था कि वे मसीह के आने वाले राज्य में उसकी महिमा की एक झलक देख सके।

मसीह के रूपान्तरण को उसके आने वाले राज्य में मसीह का पूर्वचित्र समझना सही है। पतरस ने इस घटना

को ''अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ . . . और आगमन'' कहा है (2 पतरस 1:6)। प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ और आगमन उसके दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है। और यूहन्ना, पहाड़ पर हुए इस अनुभव को एक ऐसे समय के रूप में प्रस्तुत करता है जब ''हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)। मसीह का पहला आगमन दीनता (अपमान) में हुआ; उसका दूसरा आगमन महिमा में होगा। इस तरह से, पद 28 की भविष्यद्वाणी पहाड़ पर पूरी हुई; पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने, मनुष्य के पुत्र को, एक दीन नासरी के रूप में नहीं, परन्तु महिमामय राजा के रूप में देखा।

द. यीशु अपने चेलों को महिमा के लिए तैयार करता है: रूपान्तरण (17:1–8)

17:1, 2 कैसरिया फिलिप्पी की घटना के **छः दिन** बाद, **यीशु ने पतरस और याकूब और . . . यूहन्ना** को अपने साथ लिया और एक **ऊंचे पहाड़** पर ले गया, जो गलील में किसी स्थान पर था। बाइबल के अनेक विद्वान इन छः दिनों को काफी महत्व देते हैं। उदाहरण के लिए, टीकाकार गेबेलिन कहते हैं: ''छः अंक मनुष्य का अंक है, यह संख्या कार्य के दिनों को दर्शाती है। छः दिन के बाद – जब कार्य और मनुष्य का दिन समाप्त हो जाएगा तब प्रभु का दिन या उसका राज्य आएगा।''

जब लूका यह कहता है कि रूपान्तरण ''कोई आठ दिन'' बाद हुआ (लूका 9:28), तो स्पष्ट है कि वह रूपान्तरण वाले दिन और छः दिन के बाद वाले दिन को भी गिन रहा है। चूंकि आठ की संख्या पुनरूत्थान और एक नए आरम्भ की संख्या है, यह उपयुक्त है कि लूका राज्य की पहचान एक नए आरम्भ के रूप में करे।

पतरस, याकूब, और यूहन्ना को, जिन्हें उद्धारकर्ता के विशेष रूप से नजदीक रहने का सौभाग्य प्राप्त था, प्रभु यीशु को इस रूप में देखने का सुअवसर मिला। अब तक उसकी महिमा मांस की देह से ढंपी हुई थी। परन्तु अब **उसका मुँह** और **वस्त्र . . . सूर्य की नाईं** चमकीला और उजला हो गया, यह उसके ईश्वरत्व का दृश्यमान–प्रगटीकरण था, जिस प्रकार से पुराना नियम में महिमा का बादल या *शेकेना* (ग्लोरी) परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतीक थे। यह दृश्य इस बात का पूर्वचित्रण था कि प्रभु यीशु जब अपना राज्य स्थापित करने के लिए आएगा तब वह किस तरह दिखाई देगा। उस समय वह बलिदान के मेम्ने की तरह नहीं परन्तु यहूदा के गोत्र के सिंह की तरह प्रगट होगा। सभी जो उसे देखेंगे तुरन्त ही परमेश्वर के पुत्र, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में पहचान लेंगे।

17:3 मूसा और एलिय्याह पहाड़ पर प्रगट हुए और उन्होंने मसीह की मृत्यु के विषय में चर्चा की जो कुछ ही समय बाद यरूशलेम में घटित होने पर थी (लूका 9:30, 31)। मूसा और एलिय्याह पुराना नियम के पवित्र लोगों के प्रतिनिधि हो सकते हैं। या, यदि हम यह समझें कि मूसा व्यवस्था का प्रतिनिधित्व कर रहा है, और एलिय्याह भविष्यद्वक्ताओं का, तो यहाँ हम देखेंगे कि पुराना नियम के दोनों खण्ड मसीह के दु:खभोग और उसके बाद आने वाली महिमा की ओर संकेत कर रहे हैं। तीसरी सम्भावना यह है कि मूसा, जो मृत्यु के द्वारा स्वर्ग को गया, उन सारे लोगों को दर्शाता है जो मसीह के हजार वर्ष में प्रवेश करने के लिए मृतकों में से जी उठेंगे, जबकि एलिय्याह, जो जीते जी स्वर्ग में उठा लिया गया था, उन लोगों का चित्रण करता है जो राज्य में रूपान्तरण की प्रक्रिया के द्वारा प्रवेश करेंगे।

तीनों चेले पतरस, याकूब, और यूहन्ना सामान्यत: नया नियम के पवित्र लोगों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। वे उस बचे हुए विश्वासयोग्य यहूदी झुण्ड की भी पूर्वछाया हो सकते हैं जो मसीह के द्वितीय आगमन के समय जीवित बचे रहेंगे और मसीह के राज्य में उसके साथ प्रवेश करेंगे।

पहाड़ के नीचे की भीड़ (पद 14 देखें, लूका 9:37 से तुलना करें) अन्यजातीय राष्ट हैं जो मसीह के हजार वर्ष के राज्य की आशीषों के भागीदार होंगे।

17:4,5 पतरस इस अवसर के अनुभव से बहुत अधिक भावविभोर हो गया; उसने इतिहास के वास्तविक अर्थ समझ लिया था। वह इस भव्यता को कायम रखना चाहता था, इसलिए उसने उतावली में **तीन** स्मारक **मण्डप** या तम्बू स्थापित करने का सुझाव दे डाला – **एक** यीशु के लिए, **एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए**। उसने यीशु को पहले रख कर सही किया, परन्तु

उसकी श्रेष्ठता का ध्यान न रखकर गलत किया। यीशु मसीह किसी के बराबर नहीं है परन्तु वह सब के ऊपर प्रभु है। इस पाठ को पढ़ाने के लिए, परमेश्वर पिता ने उन्हें एक उजले चमकदार **बादल** से ढंक दिया, और फिर उसके बाद उसने यह घोषणा की, ‘‘**यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ, इसकी सुनो!**’’ मसीह के हजार वर्ष के राज्य में, मसीह अद्वितीय, सर्वोच्च सम्राट होगा जिसका आदेश अन्तिम और सर्वमान्य होगा। ऐसा ही वर्तमान में उसके अनुयायियों के हृदय में भी होना चाहिए।

17:6–8 महिमा के बादल और परमेश्वर की आवाज से भौचक्के होकर, **चेले . . . मुँह के बल गिर गए**। परन्तु यीशु ने उन्हें उठने और न डरने के लिए कहा। जब वे उठे, तब **उन्होंने . . . यीशु को छोड़ और किसी को न देखा**। ऐसा ही हजार वर्ष के राज्य में भी होगा – प्रभु यीशु ‘‘इम्मानुएल के देश की सम्पूर्ण महिमा’’ होगा।

इ. अग्रदूत के सम्बन्ध में (17:9–13)

17:9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने चेलों को **यह आज्ञा दी** कि जब तक वह **मरे हुओं में से न जी उठे** तब तक जो कुछ उन्होंने देखा है उसे किसी को भी न बताएं। यहूदी लोग, जो किसी भी ऐसे व्यक्ति को लेकर अतिउत्सुक थे जो उन्हें रोमी गुलामी से छुटकारा दे, उसे *रोम* से छुटकारा देने वाले के रूप में खुशी खुशी स्वीकार करते, परन्तु वे उसे *पाप* से उद्धार देने वाले के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते। हर एक व्यवहारिक कारणों से इस्राएल ने अपने मसीह का इंकार कर दिया था, और इस मसीहाई महिमा के दर्शन के बारे में यहूदियों से चर्चा करना निरर्थक था। पुनरूत्थान के बाद यह सन्देश सारे संसार में फैला दिया जाएगा।

17:10–13 चेलों ने अभी अभी मसीह का पूर्वदर्शन उसकी आने वाली महिमा और सामर्थ में किया था। परन्तु उसका अग्रदूत प्रगट नहीं हुआ था। मलाकी ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि **एलिय्याह का** मसीह के आगमन से **पहले आना अवश्य है** (मला. 4:5, 6)। इसलिए **उसके चेलों ने** यीशु से इसके विषय में **पूछा**। प्रभु इस बात से सहमत था कि वास्तव में **एलिय्याह** का एक सुधारक के रूप में **पहले** आना अवश्य है, परन्तु उसने समझाया कि **एलिय्याह आ चुका** था। स्पष्ट है कि वह **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले** की ओर संकेत कर रहा था (पद 13 देखें)। यूहन्ना एलिय्याह नहीं था (यूहन्ना 1:21), परन्तु वह ‘‘एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में होकर’’ आया था (लूका 1:17)। यदि इस्राएल ने यूहन्ना और उसके सन्देश को स्वीकार कर लिया होता तो उसने एलिय्याह की उस भूमिका को पूरी कर लेता जिसके विषय में भविष्यद्वाणी की गई थी (मत्ती 11:14)। परन्तु इस्राएली जाति ने यूहन्ना के अभियान के महत्व को नहीं पहचाना और उसके साथ मनमाना व्यवहार किया। यूहन्ना की मृत्यु इस बात का अग्रिम टोकन था कि वे मनुष्य के पुत्र के साथ क्या करने वाले थे। उन्होंने अग्रदूत का इंकार कर दिया; वह राजा का भी इंकार करेंगे। जब यीशु ने यह बात समझाई, तो चेले जान गए कि वह **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले** के बारे में कह रहा है।

यह विश्वास करने के लिए ठोस कारण है कि मसीह के दूसरे आगमन से पहले, इस्राएल को आने वाले राजा के लिए तैयार करने हेतु एक भविष्यद्वक्ता खड़ा होगा। वह व्यक्तिगत रूप से एलिय्याह ही होगा या उसी से मिलती जुलती सेवकाई करने वाला कोई और जन हो यह बता पाना लगभग असम्भव है।

फ. प्रार्थना और उपवास के द्वारा चेलों को सेवकाई के लिए तैयार करना (17:14–21)

जीवन हमेशा पहाड़ की चोटी पर खड़े रहने तक ही सीमित नहीं है। आत्मिक उल्लास के क्षणों के बाद परिश्रम और ऊर्जा खपाने का समय भी आता है। एक समय आता है जब हमें पहाड़ से नीचे उतर कर मानवीय आवश्यकताओं की तराई में सेवा करनी होती है।

17:14,15 पहाड़ के नीचे, एक परेशान पिता उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके सामने **घुटने टेक कर** उसने आवेगपूर्ण विनती की कि उसका दुष्टात्माग्रसित पुत्र चंगा हो जाए। उसके पुत्र को **मिर्गी** का भयानक दौरा पड़ता था जिसके कारण वह कभी अपने आप को **आग में और बार बार पानी** में फेंक देता था, इसलिए जल जल कर और डूब डूब कर उसकी बुरी हालत हो गई थी। वह शैतान के द्वारा कष्ट पहुँचाए जाने का एक उपयुक्त उदाहरण था, शैतान सब से अधिक निर्दयी

तानाशाह है।

17:16 पिता सहायता के लिए **चेलों** के पास गया था, और उसने सिर्फ यही पाया कि ''मनुष्य से सहायता की अपेक्षा करनी व्यर्थ है।'' वे उसे चंगा करने में असमर्थ सिद्ध हुए।

17:17 हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? यह बात चेलों को कही गई है। उनके पास मिर्गी पीड़ित को चंगा करने के लिए विश्वास नहीं था, परन्तु इस अर्थ में वे यहूदी लोगों के एक समूह – जो विश्वासहीन और टेढ़े थे – के प्रतिनिधि थे।

17:18 जैसे ही मिर्गी पीड़ित व्यक्ति **यीशु** के पास लाया गया, उसने दुष्टात्मा को घुड़का और वह **उसी घड़ी अच्छा हो गया।**

17:19,20 चेले अपनी असमर्थता को लेकर उलझन में पड़ गए और उन्होंने एकान्त में यीशु से इसका कारण पूछा। उसका उत्तर बिल्कुल स्पष्ट था: **विश्वास की घटी**। यदि उनके पास **राई के दाने** (बीजों/दानों में सब से छोटा) के बराबर भी **विश्वास** होता तो यदि वे एक **पहाड़** को भी आदेश दें कि वह उखड़ कर समुद्र में डूब जाए तो यह हो जाता। नि:सन्देह, इसे ऐसे समझा जाना चाहिए कि सच्चे विश्वास को परमेश्वर के किसी आदेश या प्रतिज्ञा पर आधारित होना चाहिए। व्यक्तिगत सनक की तुष्टि के लिए किसी आकर्षक दिखने वाले असाधारण कार्य को करने की अपेक्षा करना विश्वास नहीं परन्तु अंहकार होता है। परन्तु यदि परमेश्वर एक निश्चित दिशा की ओर एक विश्वासी का मार्गदर्शन करता है या कोई आदेश देता है, तो मसीही पूरी तरह से आश्वस्त हो सकता है कि पहाड़ सी दिखने वाली कठिनाइयां भी आश्चर्यजनक रीति से दूर हो सकती हैं। विश्वास करने वालों के लिए कोई भी बात असम्भव नहीं है।

ग. यीशु चेलों को उसके पकड़वाए जाने के लिए तैयार करता है (17:22–23)

एक बार फिर से यीशु सीधे सीधे अपने चेलों को पहले से ही चेतावनी दे देता है कि वह मार डाला जाएगा। परन्तु फिर से उसने स्थिति के पलट जाने और विजय के शब्द भी कहे – वह **तीसरे दिन जी उठेगा**। यदि उसने पहले से ही उन्हें अपनी मृत्यु के विषय में बताया नहीं होता, तो नि:सन्देह उसके मरने पर उससे उनका पूरी तरह मोहभंग हो जाता। वे ऐसे मसीहा की अपेक्षा नहीं कर रहे थे जो लज्जा और दु:ख सहते हुए मर जाएगा।

वे यह जान कर बुरी तरह से व्याकुल हो गए कि वह उन्हें छोड़ कर जाने वाला है और उसे मार डाला जाएगा। उन्होंने उसके दुखभोग की भविष्यद्वाणी को सुना परन्तु ऐसा लगता है कि वे पुनरूत्थान की उसकी प्रतिज्ञा की ओर ध्यान देने से चूक गए।

ह. पतरस और उसका स्वामी अपना कर चुकाते हैं (17:24,25)

17:24,25 कफरनहूम में मन्दिर का कर इकट्ठा करने वालों ने पतरस से पूछा कि क्या उनके **गुरू** ने आधा शकेल कर (टैक्स) चुकाया है जो मन्दिर की महंगी सेवाओं के लिए काम में लाया जाता है। पतरस ने उत्तर दिया, ''**हाँ**।'' शायद गुमराह चेला मसीह को लज्जित होने से बचाना चाहता था।

इसके बाद जो कुछ हुआ उसमें प्रभु की सर्वज्ञता दिखाई देती है। जब पतरस घर आया, तो यीशु ने पहले होकर उससे बात की – इससे पहले कि पतरस यीशु को बताता कि क्या हुआ। ''**हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?**'' इस प्रश्न को, उन दिनों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए समझना आवश्यक है। एक शासक अपने राज्य और अपने परिवार के खर्च के लिए अपनी प्रजा से कर वसूलता है, परन्तु वह अपने स्वयं के परिवार से कर नहीं वसूलता। हमारे समय के सरकारी प्रशासन में हर एक से कर वसूला जाता है, जिसमें स्वयं शासक और उसका परिवार भी शामिल होता है।

17:26 पतरस का उत्तर सही था कि शासक **परायों से** कर वसूलता है। उसके बाद यीशु ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि **पुत्र** कर देने से **बच** जाते हैं। यीशु के लिए, जो परमेश्वर का पुत्र था, इस मन्दिर में कर देना वैसा ही होता जैसा स्वयं को कर देना।

17:27 किन्तु, अनावश्यक रूप से ठोकर खिलाने से बचते हुए, प्रभु कर चुकाने के लिए तैयार हो गया। परन्तु वह पैसों का प्रबन्ध किस प्रकार से करेगा? इस बात

का कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता कि यीशु व्यक्तिगत रूप से कभी पैसे रखता था। उसने पतरस को गलील की **झील** में भेजा और उससे कहा कि जो भी मछली वह सबसे पहले पकड़े उसे लेकर आए। मछली के मुँह में **एक सिक्का** था जिसे निकालकर पतरस ने कर चुकाया – आधा प्रभु यीशु के लिए और आधा अपने लिए।

यह विस्मयकारी आश्चर्यकर्म जिसका वर्णन बहुत ही सावधानी से किया गया है, स्पष्ट रूप से यीशु की सर्वज्ञता को दर्शाता है। वह जानता था कि गलील की झील की किस मछली में मुँह में सिक्का है। वह यह भी जानता था कि यह मछली कहां पर है। और वह यह भी जानता था कि यही वह मछली होगी जिसे पतरस सबसे पहले पकड़ेगा।

यदि यहाँ पर कोई ईश्वरीय सिद्धान्त निहित होता, तो यीशु ने कर (टैक्स) नहीं चुकाया होता। यह उसके लिए नैतिक समानता का विषय था, और वह किसी को ठोकर पहुँचाने की बजाए, कर चुकाने के लिए तैयार था। हम विश्वासी लोग व्यवस्था से स्वतंत्र हैं, तौभी गैरनैतिक मामलों में हमें दूसरों के विवेक का आदर करना चाहिए, और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो किसी के लिए ठोकर का कारण बने।

XI. राजा अपने चेलों को शिक्षा/निर्देश देता है (18–20 अध्यायों में)

अ. दीनता के विषय में (18:1–6)

अध्याय 18 को महानता और क्षमाशीलता पर दिया गया उपदेश कहा गया है। इसमें ऐसे आचरणों की रूपरेखा दी गई है जो उन लोगों के लिए उपयुक्त हैं जो अपने आप को मसीह राजा की प्रजा होने का दावा करते हैं।

18:1 चेलों ने हमेशा ही यह सोचा था कि स्वर्ग का राज्य शान्ति और समृद्धि का स्वर्णिम युग होगा। अब वे इसमें अधिक से अधिक महत्वपूर्ण पदों को हासिल करने के लालच में पड़ गए। उनकी स्वार्थपूर्ण आत्मा इस प्रश्न में दिखाई देती है, "**स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?**"

18:2,3 यीशु ने एक जीता जागता उदाहरण देते हुए इसका उत्तर दिया। उनके बीच में **एक बालक** को खड़ा करते हुए, उसने कहा कि मनुष्य को मन फिरा कर **बालक के समान** बनना आवश्यक है यदि वह **स्वर्ग के राज्य में प्रवेश** करना चाहता है। वह स्वर्ग के राज्य के आन्तरिक पहलु के बारे में कह रहा था; एक सच्चा विश्वासी बनने के लिए एक मनुष्य को अपने आप को व्यक्तिगत रूप से महान समझने के विचार को त्याग कर छोटे बच्चे के समान दीन स्थान को स्वीकार करना चाहिए। इसका आरम्भ तब होता है जब वह अपनी पापमयता और अयोग्यता को मान करके प्रभु यीशु को अपनी एकमात्र आशा के रूप में स्वीकार करता है। ऐसा रवैया उसके जीवन भर कायम रहना चाहिए। यीशु मसीह यह नहीं कह रहा था कि उसके चेलों ने उद्धार नहीं पाया है। यहूदा को छोड़ बाकी सभी उस पर सच्चा विश्वास रखते थे , और इसलिए उन्हें धर्मी ठहराया गया था। परन्तु उन्होंने अब तक पवित्र आत्मा को उनमें वास करने वाले व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार नहीं किया था, और इसलिए उनमें *सच्ची दीनता* के लिए आवश्यक सामर्थ की कमी थी जो वर्तमान में हमारे पास है (परन्तु हम उसका प्रयोग उस प्रकार से नहीं करते जैसा कि हमें करना चाहिए)। साथ ही उन्हें इस अर्थ में भी मन फिराना था कि वे अपने सारे गलत विचारों को बदल कर उन्हें स्वर्ग के राज्य के अनुरूप बनाएं।

18:4 स्वर्ग के राज्य में सबसे महान व्यक्ति वह है **जो . . . अपने आप को** एक **बालक के समान छोटा** बनाता है। स्पष्ट है कि स्वर्ग के राज्य के आदर्श और मूल्य संसार के आदर्श और मूल्यों के बिल्कुल विपरीत हैं। विचार करने के हमारे पूरे तरीके को ही पलट दिया जाना आवश्यक है; हमें मसीह के विचारों के अनुरूप विचार करना चाहिए (फिलि. 2:5–8)।

18:5 यहाँ पर प्रभु यीशु एक भौतिक बालक के विषय से आगे बढ़ कर एक आत्मिक **बालक** के विषय में कहने लगता है। जो कोई उसके दीन अनुयायियों को उसके **नाम** से ग्रहण करता है उसे यह मानकर प्रतिफल लिया जाएगा कि उसने स्वयं प्रभु को ग्रहण किया। यीशु के अनुयायियों के साथ जो कुछ किया जाता है वह ऐसा माना जाता कि मानों यह प्रभु के साथ किया गया।

18:6 दूसरी ओर, जो कोई एक विश्वासी को पाप करने के लिए बहकाता है वह अपने ऊपर बहुत बड़ा दोष लाता है; **उसके लिए भला होता** कि वह अपने **गले में** एक चक्की बान्ध लेता और अपने आप को सागर की

गहराइयों में डुबो देता। (यहाँ पर जिस चक्की का उल्लेख किया गया है वह एक बहुत बड़ी चक्की है जिसे घुमाने के लिए एक पशु की आवश्यकता होती थी; छोटी चक्की को हाथ से घुमाया जा सकता है।) स्वयं पाप करना बहुत बुरी बात है परन्तु किसी विश्वासी के पाप का कारण बनने का अर्थ है उसकी निर्दोषिता को नाश करना, उसके मन को भ्रष्ट करना, और उसकी प्रतिष्ठा पर दाग लगाना। दूसरों की पवित्रता के साथ खिलवाड़ करने से अच्छा यह है कि ऐसा व्यक्ति एक भयानक मौत से मर जाए!

ब. ठोकरों से सम्बन्धित (18:7–14)

18:7 यीशु ने आगे समझाते हुए कहा कि **ठोकरों** से सामना होना निश्चित है। **संसार,** शरीर, और शैतान मिलकर लोगों को बहकाने और बिगाड़ने में जुटे हुए हैं। परन्तु यदि एक व्यक्ति बुराई की ताकतों का माध्यम बन जाता है, तो उसका दोष बहुत भयानक माना जाएगा। इसलिए उद्धारकर्ता ने लोगों को चेतावनी दी कि अपने आप को अनुशासित करने के लिए कड़े कदम उठाएं और परमेश्वर की किसी भी सन्तान को परीक्षा में डालें।

18:8,9 हमारा पाप चाहे हमारे **हाथ या** हमारे **पांव** या हमारी **आँख** के द्वारा किया गया हो, तो बेहतर होगा कि दूसरे व्यक्ति के जीवन में होने वाले परमेश्वर के कार्य को नाश करने की बजाय हम इन अंगों को काट डालें। शरीर के सभी अंगों के ठीक रहते हुए नरक में जाने से बेहतर है कि बिना पैर या बिना आँखों के **जीवन में प्रवेश** करें। हमारा प्रभु यह नहीं कह रहा है कि स्वर्ग में हमारे शरीर में पैर नहीं होगा, परन्तु वह उस समय की अवस्था की बात कर रहा है जिस समय एक विश्वासी आने वाले जीवन में प्रवेश करने के लिए इस जीवन से विदा होता है। इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि पुनरूत्थित देह सम्पूर्ण और पूरी तरह से आदर्श होगी।

18:10 इसके बाद परमेश्वर का पुत्र चेतावनी देता है कि कोई भी **छोटों में से किसी को** भी – चाहे कोई बच्चा हो या स्वर्ग के राज्य के भागीदारों में से एक – तुच्छ या कम न जाने। इस प्रकार के लोगों के महत्व पर जोर देने के लिए उसने आगे कहा कि **उन के** स्वर्ग–**दूत** निरन्तर परमेश्वर के समक्ष उसकी उपस्थिति में उसके मुख को देखते हुए खड़े रहते हैं। **दूत** का आशय यहाँ पर शायद सेवा–टहल करनेवाले स्वर्गदूतों से है (इब्रा. 1:14 भी देखें)।

18:11 हिन्दी के प्रमुख संस्करणों में यह पद नहीं आया है। अंग्रेजी के *एनकेजेवी* संस्करण में यह पद पाया जाता है, जो कहता है कि मनुष्य का पुत्र खोए हुए ढूंढ़ने के लिए आया है। *बिलिवर्स बाइबल कॉमेन्ट्री* के टीकाकार विलियम मैकडोनाल्ड के अनुसार उद्धारकर्ता के मिशन से सम्बन्धित यह पद इस खण्ड का एक उपयुक्त चरमोत्कर्ष है, और इस पद के अस्तित्व को काफी व्यापक समर्थन प्राप्त है।[38]

18:12,13 ये छोटे लोग चरवाहे की बचाने वाली स्नेहिल सेवकाई के भी पात्र हैं। **सौ** में से चाहे एक भेड़ भी भटक जाती है, तो वह **निन्यानवे** को छोड़कर एक खोई हुई भेड़ को तब तक खोजता रहता है जब तक कि वह उस खोई हुई भेड़ को पा न ले। भटकी हुई एक भेड़ को पाने पर चरवाहे को मिलने वाले आनन्द से हमें यह शिक्षा मिलनी चाहिए कि हम परमेश्वर के राज्य के छोटे से छोटे जन के महत्व को स्वीकार करें और उनका आदर करें।

18:14 वे न सिर्फ स्वर्गदूतों और चरवाहे के लिए महत्वपूर्ण है, परन्तु परमेश्वर **पिता** की दृष्टि में भी वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। उसकी **यह इच्छा नहीं** कि उन में से **एक भी नाश** हो। यदि वे दूतों, प्रभु यीशु और परमेश्वर पिता की दृष्टि में इतना महत्व रखते हैं, तो फिर यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हम उन्हें तुच्छ न जानें, चाहे वे कितने ही अदने और अप्रिय ही क्यों न प्रतीत हों।

स. ठोकर खिलाने वालों को अनुशासित करने के सम्बन्ध में (18:15–20)

इस अध्याय का शेष भाग कलीसिया के सदस्यों के बीच के मतभेदों को सुलझाने, और असीमित क्षमा प्रदान करने से सम्बन्धित है।

18:15 जब कोई दूसरा विश्वासी हमारे साथ गलत व्यवहार करे तो एक मसीही के रूप में हमारे उत्तरदायित्व से सम्बन्धित सुस्पष्ट निर्देश दिए गए हैं। पहला, मामले को दोनों पक्षों के बीच आपस में निजी तौर पर निपटाना चाहिए। यदि ठोकर खिलाने वाला अपने दोष को स्वीकार कर लेता है, तो मेलमिलाप हो जाता है। परन्तु समस्या यह है कि हम ऐसा नहीं करते। हम दूसरे पक्ष को छोड़ बाकी सब के पास जा जा कर बात का बतंगड़ बनाते हैं। इसके बाद यह सारा मामला जंगल के आग की तरह फैल जाता

है और आपसी संघर्ष कई गुणा अधिक बढ़ जाता है। हमें इस बात को ध्यान में रखना है कि पहला कदम यह है: ''**तो जा अकेले में बातचीत कर उसे समझा।**''

18:16 यदि दोषी भाई नहीं सुनता, तब तो ठोकर खाया हुआ व्यक्ति **एक दो जन** को अपने साथ लेकर उसके पास जाए, और उसके साथ मेलमिलाप करने का प्रयास करे। यहाँ पर लगातार गम्भीरता से मेलमिलाप के प्रयास में बने रहने पर जोर दिया गया है। परन्तु इससे भी अधिक, यहाँ पर एक वैध गवाही की आवश्यकता पर बल दिया गया है जिसकी मांग पवित्रशास्त्र में की गई है: ''**हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से ठहराई जाए**'' (व्य.वि. 19:15)। अन्य व्यक्ति पर लगाए गए दोष को दो या तीन अन्य लोगों की गवाही द्वारा प्रमाणित किए जाने सम्बन्धी साधारण नियम का पालन कर पाने की असफलता ने कलीसिया पर इतनी विपत्तियां लाईं हैं कि उनका अनुमान तक लगाया नहीं जा सकता। इस मामले में, सांसारिक अदालतें मसीही कलीसियाओं या झुण्डों की तुलना में अधिक न्यायसंगत व्यवहार करती हैं।

18:17 यदि दोषी तब भी **न माने** और क्षमा मांगने से इंकार करे, तो यह मामला स्थानीय **कलीसिया** में ले जाया जाना चाहिए। यह बात ध्यान में रखना आवश्यक है कि स्थानीय कलीसिया ही वह सभा है जो मामले की सुनवाई करने के लिए जिम्मेदार है, दीवानी अदालत नहीं। एक मसीही को दूसरे मसीही के विरूद्ध अदालत में जाने से मना किया गया है (1 कुरि. 6:1–8)।

यदि दोषी व्यक्ति कलीसिया के सामने भी अपनी गलती स्वीकार करने से मना कर देता है, तो फिर उसे **अन्यजाति और महसूल लेने वाले** के संग गिना जाए। इस वाक्य का सबसे स्पष्ट अर्थ यह है कि उसे कलीसिया से बाहर का व्यक्ति समझा जाए। यद्यपि वह एक सच्चा विश्वासी हो सकता है, परन्तु वह एक सच्चे विश्वास के अनुरूप जीवन व्यतीत नहीं कर रहा है, और उसके साथ इसी के अनुसार व्यवहार किए जाने की आवश्यकता है। यद्यपि वह विश्वव्यापी (ख्रिस्तियानी कलीसिया) का अंग बना रहेगा, परन्तु वह स्थानीय कलीसिया में मिलने वाले विशेषाधिकारों से वंचित हो जाएगा। इस प्रकार का अनुशासन एक गम्भीर कदम होता है; यह अस्थायी तौर पर एक विश्वासी को शैतान के हाथ में सौंप देता है जैसा कि पौलुस कहता है कि ऐसा मनुष्य ''शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु के दिन में उद्धार पाए'' (1 कुरि. 5:5)। इसका उद्देश्य उसका दिमाग ठिकाने लगाना और उसके पापों का अंगीकार करने के लिए बाध्य करना होता है। इस दौरान अन्य विश्वासी उसके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें परन्तु अपने रवैये के द्वारा यह भी दर्शायें कि वे उसके पाप की सराहना नहीं करते और वे उसे एक संगी विश्वासी न मानते हुए उसके साथ संगति नहीं कर सकते। परन्तु जैसे ही उस व्यक्ति में सच्चे पश्चताप के प्रमाण दिखाई दें तो कलीसिया को उसे वापस संगति में ग्रहण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

18:18 पद 18 आगे के पदों से जुड़ा हुआ है। जब एक कलीसिया, प्रार्थनापूर्वक और परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी रहते हुए एक व्यक्ति पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करती है, तो इस प्रकार के कदम का **स्वर्ग** में आदर किया जाता है। जब अनुशासित किया गया व्यक्ति पश्चताप करता है और अपने पापों को अंगीकार करता है, और फिर कलीसिया उसे अपनी संगति में फिर से शामिल कर लेती है, तो परमेश्वर इस खोलने वाले कदम का भी अनुसमर्थन करता है (यूहन्ना 20:23 देखें)।

18:19 एक प्रश्न हमारे समाने आता है, ''जैसा कि उपर वर्णन किया गया है, बान्धने और खोलने से पहले एक कलीसिया को कितनी बड़ी होना अनिवार्य है?'' इसका उत्तर यह है कि **दो** विश्वासी ऐसे मामलों को प्रार्थना में पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के सामने ले कर आएं। जबकि पद 19 को प्रार्थना के उत्तर के लिए एक सामान्य प्रतिज्ञा माना जा सकता है, इस *सन्दर्भ* में यह कलीसिया अनुशासन से सम्बन्धित प्रार्थना के बारे में है। जब सामान्य रूप से सामूहिक प्रार्थना के सन्दर्भ में इसे लागू किया जाता है, तो इसे प्रार्थना पर दी गई अन्य सभी शिक्षाओं के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, हमारी प्रार्थनाएं इस प्रकार की होनी चाहिए:

1. परमेश्वर द्वारा प्रगट की गई इच्छा के अनुरूप (1 यूहन्ना 5:14,15)
2. विश्वास से (याकूब 1:6–8)
3. मन की सच्चाई से (इब्रा. 10:22अ), इत्यादि।

18:20 पद 20 की व्याख्या इसके सन्दर्भ को

ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए। प्राथमिक रूप से यह भाग न तो अपने सरलतम रूप में नया नियम कलीसियाई संरचना, और न ही एक सामान्य प्रार्थना सभा की ओर संकेत करता है, परन्तु यहां पर एक ऐसी सभा के विषय में कहा गया है जिसमें कलीसिया किसी पाप के कारण अलग हुए दो मसीहियों के बीच मेलमिलाप के लिये इकट्ठी होती है। यह बात विश्वासियों की हर प्रकार की सभा पर लागू की जा सकती है जिस का केन्द्र मसीह होता है, परन्तु यहाँ पर एक विशेष प्रकार की सभा को ध्यान में रखा गया है।

''उसके नाम से'' इकट्ठे होने का अर्थ है, उसे पूरी तरह से प्रभु मानते हुए, और उसके वचन के प्रति आज्ञाकारी बने रहते हुए इकट्ठे होना। कोई भी समूह यह दावा नहीं कर सकता कि सिर्फ वे ही एकमात्र ऐसे समूह हैं जो उसके नाम से इकट्ठे होते हैं; यदि ऐसा होता, तो उसकी उपस्थिति पृथ्वी पर उसकी देह के एक छोटे से भाग तक ही सीमित रह जाती। जहाँ कहीं **दो या तीन** उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हुए उसके **नाम पर इकट्ठे होते हैं** वह **उन के बीच में** होता है।

द. असीमित क्षमा से सम्बन्धित (18:21-35)

18:21,22 इसी बीच, **पतरस** ने एक प्रश्न किया कि यदि कोई **भाई** उसके विरूद्ध कोई पाप करे, तो उसे **कितनी बार** क्षमा किया जाना चाहिए। शायद उसने सोचा कि **सात** बार क्षमा करने की बात कर वह कुछ ज्यादा ही अनुग्रह जता रहा है। **यीशु** ने उत्तर दिया, ''**सात बार . . . नहीं वरन सात बार के सत्तर गुणे तक**।'' प्रभु यीशु यह नहीं कह रहा है कि शब्दश: 490 बार क्षमा किया जाए; यह ''असीमित'' बार क्षमा करने के लिए एक प्रतीकात्मक तरीका है।

इस पर कोई कह सकता है, ''इससे पहले बताए गए क्रमों की चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है। पहले दोषी व्यक्ति के पास अकेले क्यों जाएं, उसके पास एक या दो अन्य के साथ जाने, और फिर उसे कलीसिया में ले जाने की क्या आवश्यकता है? उसे सीधे सीधे क्षमा कर दिया जाए, और यहीं पर सारा मामला समाप्त कर दिया जाए?''

इसका उत्तर यह है कि क्षमा दिए जाने की एक क्रमवार प्रक्रिया है, जो इस प्रकार से है:

1. जब कोई भाई मेरे साथ कुछ गलत करता है या मेरे विरुद्ध पाप करता है, तो मुझे उसे अपने हृदय में तुरन्त ही क्षमा कर देना चाहिए (इफि. 4:32)। इससे मैं उस कड़वे और अक्षमाशील आत्मा से मुक्त हो जाता हूँ, और गेंद को *उसके* पाले में डाल देता हूँ।

2. जबकि मैंने उसे अपने हृदय में क्षमा कर दिया है, तो मैं उसे अब भी नहीं बताता हूँ कि मैंने उसे क्षमा कर दिया है। सार्वजनिक रूप से उसे क्षमा करना न्यायोचित्त नहीं होगा यदि उसने पश्चताप नहीं किया है। इसलिए यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उसके पास जाऊं और प्रेम भाव में होकर उसे अंगीकार करने के लिए प्रेरित करने की आशा में उसे सुधारूं (लूका 17:3)।

3. जैसे ही वह क्षमा मांगे और अपने पाप का अंगीकार करे, मैं उसे बता दूं कि मैंने उसे क्षमा कर दी है (लूका 17:4)।

18:23-27 उसके बाद यीशु मसीह **स्वर्ग** के **राज्य** के सम्बन्ध में एक दृष्टान्त बताता है जिसमें ऐसे लोगों द्वारा जो स्वयं दूसरों के द्वारा क्षमा कर दिए गए हैं, क्षमाशीलता न दिखाए जाने के परिणामों के बारे में बताया गया है।

यह कहानी एक ऐसे राजा के विषय में है जो अपने द्वारा दिए गए सारे कर्जों को वसूलना चाहता था। एक सेवक जो **दस हजार तोड़े धारता था**, दिवालिया हो गया, इसलिए उसके स्वामी ने आदेश दिया कि उसे और उसके परिवार को गुलाम बना कर बेच दिया जाए और उससे मिले पैसे से कर्ज चुकाया जाए। परेशान सेवक ने समय के लिए विनय अनुनय किया, और उससे प्रतिज्ञा की कि यदि उसे समय दिया जाए तो वह सारा कर्ज चुका देगा।

> अनेक कर्जदारों की तरह, वह भी अत्यंत आशावादी हो गया था कि यदि उसे समय मिले तो वह सब कर सकता है (पद 26)। गलील का कुल राजस्व सिर्फ 300 तोड़े था, और इस मनुष्य पर 10,000 तोड़े उधार थे। इस विशाल धन की राशि का उल्लेख जानबूझ कर किया गया है। यह सुनने वालों को अचम्भित कर उनका ध्यान खींचने के लिए कहा गया है, और परमेश्वर के प्रति हम पर अपार कर्ज पर जोर देने के लिए कहा गया है। मार्टिन लूथर यह कहा करते थे कि हम सब

उसके सामने भिखारी हैं। हम उसे चुकाने की आशा नहीं कर सकते (*डेली नोट्स ऑफ द स्क्रिप्चर यूनियन*)।

जब **स्वामी** ने अपने **दास** की दीन हीन दशा को देखा तो उसने पूरे के पूरे 10,000 तोड़े माफ कर दिए। यह न्याय का नहीं, परन्तु अनुग्रह का महाप्रदर्शन था।

18:28-30 अब उस दास का एक संगी दास भी था जिस पर पहले वाले दास के **सौ दीनार** (कुछ हजार) उधार थे। उसे क्षमा करने की बजाए उसने उसका **गला घोंटा** और पूरी राशि चुकाने के लिए कहा। इस अभागे कर्जदार ने कुछ और समय के लिए निवेदन किया, परन्तु इसका कोई लाभ न हुआ। वह **बन्दीगृह में डाल दिया गया . . . जब तक** कि वह अपना **कर्ज** न उतार दे – यह उसके लिए और भी कठिन हो गया, क्योंकि जब तक कि वह बन्दीगृह में है, पैसे कमाने की उसकी सारी सम्भावना समाप्त हो गई।

18:31-34 दूसरे **दास** इस असंगत आचरण से अत्यंत क्रोधित हो गए, और उन्होंने **अपने स्वामी** को इसके विषय में **बता दिया**। स्वामी यह सुनकर इस निर्दयी दास से अति क्रोधित हुआ। स्वयं का बहुत बड़ा कर्ज माफ कर दिए जाने के बाद भी यह दास अपने छोटे कर्जदार को माफ करने के लिए तैयार नहीं था। इसलिए उसे बन्दीगृह में डाल दिया गया जब तक कि वह अपना कर्ज न चुका दे।

18:35 इसमें दी गई व्यवहारिक शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट है। परमेश्वर वह राजा है। उसके सभी दासों पर पाप का एक बहुत बड़ा कर्ज है जिसे वे देने में असमर्थ हैं। प्रभु ने अद्भुत अनुग्रह और करुणा दर्शाते हुए इस कर्ज को चुका दिया और पूरी तरह से सेतमेंत क्षमा प्रदान कर दी। अब मान लें, कि कोई मसीही किसी दूसरे मसीही के विरुद्ध कोई अपराध करता है। जब उसे फटकारा जाता है, तो वह अपनी गलती मानते हुए क्षमा मांग लेता है। परन्तु आहत हुआ विश्वासी उसे क्षमा करने से मना कर देता है। उसके स्वयं के करोड़ों रूपये माफ कर दिए गए, परन्तु वह दूसरे के कुछ सौ रूपये माफ करने के लिए तैयार नहीं है। क्या राजा इस प्रकार के आचरण के लिए उसे बिना दण्ड दिए छोड़ देगा? निश्चय ही नहीं! इस दोषी व्यक्ति को इस जीवन में ताड़ना दी जाएगी और मसीह के न्याय सिंहासन के सामने उसे हानि उठानी पड़ेगी।

इ. विवाह, तलाक, और अविवाहित जीवन के सम्बन्ध में शिक्षा (19:1-12)

19:1,2 **गलील** में अपनी सेवकाई पूरी करने के बाद, प्रभु दक्षिण को यरूशलेम की ओर चला पड़ा। यद्यपि यह ज्ञात नहीं है कि वह ठीक ठीक किस मार्ग से होकर गया, परन्तु यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह यरदन के पूर्वी ओर पिरिया से होकर गया। इस क्षेत्र को मत्ती **यहूदिया के देश में यरदन के पार** कहता है। पिरिया में की गई सेवकाई का वर्णन 19:1 से 20:16 या 20:28 तक दिया गया है; यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है कि वह कब यरदन पार कर यहूदिया को गया।

19:3 चंगाई पाने के लिए यीशु के पीछे चल रही बड़ी भीड़ को देख कर शायद **फरीसी** चौंकन्ने हो गए और उससे पूछताछ करने लगे। आवारा कुत्तों के झुण्ड के समान, उन्होंने उसे घेर लिया, और उसे उसके ही वचनों में फंसाने का प्रयास करने लगे। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि क्या किसी परिस्थिति में या हर परिस्थिति में अपनी पत्नी को **त्यागना** (तलाक देना) वैधानिक है। चाहे यीशु जैसा भी उत्तर देता, यहूदियों के एक झुण्ड का क्रोधित होना तय था। यहूदियों का एक झुण्ड तलाक के प्रति अत्यंत उदारवादी दृष्टिकोण रखता था; दूसरा झुण्ड इस पर बहुत सख्त था।

19:4-6 हमारे प्रभु ने यह समझाया कि परमेश्वर ने मूल रूप से यह चाहा है कि एक मनुष्य की सिर्फ एक जीवित पत्नी हो। परमेश्वर जिसने **नर और नारी** की सृष्टि की, यह ठहराया कि वैवाहिक जोड़े का एक दूसरे के साथ सम्बन्ध उनके माता-पिता के साथ सम्बन्धों से अधिक महत्वपूर्ण हो। उसने यह भी कहा कि विवाह व्यक्तियों का मेल है। परमेश्वर ने यह आदर्श तय किया है कि परमेश्वर द्वारा ठहराए गए इस मेल को मनुष्य के कार्य या मनुष्य की आज्ञा से न तोड़ा जाए।

19:7 फरीसियों ने सोचा कि उन्होंने यीशु के मुँह से पुराना नियम के विपरीत बातें स्पष्ट रूप से कहलवा कर उसे फँसा दिया है। क्या **मूसा** ने **त्यागपत्र** का प्रावधान नहीं रखा था? एक मनुष्य सीधे सीधे अपनी पत्नी को एक लिखित त्यागपत्र दे सकता है और उसे अपने घर से बाहर कर सकता है (व्य.वि. 24:1-4)।

19:8 यीशु इस बात से सहमत था कि **मूसा** ने तलाक की **आज्ञा** दी थी, मनुष्य के लिए परमेश्वर की ओर से एक उत्तम प्रबन्ध के रूप में नहीं, परन्तु इस्राएल की पतित अवस्था के कारण: **''मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।''** परमेश्वर ने यह आदर्श तय किया था कि कोई भी तलाक न हो। परन्तु परमेश्वर अनेक बार कुछ बातों को सहन कर उनकी अनुमति दे देता है, परन्तु यह उसकी इच्छा से दी गई आज्ञाएं नहीं होतीं।

19:9 उसके बाद प्रभु ने पूरे अधिकार के साथ यह कहा कि तलाक पर बीते समय दी गई छूट अब से पूरी तरह से रोक दी जाती है। आगे से तालाक के लिए सिर्फ एक ही वैधानिक आधार होगा – व्यभिचार। यदि कोई व्यक्ति इसे छोड़ किसी अन्य कारण से तलाक देगा और फिर से दूसरा विवाह करेगा, तो वह **व्यभिचार** का दोषी ठहरेगा।

यद्यपि प्रभु ने सीधे सीधे नहीं कहा, परन्तु हमारे प्रभु के शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि जब व्यभिचार के आधार पर तलाक लिया जाता है, तो निर्दोष पक्ष फिर से विवाह करने के लिए स्वतंत्र है। अन्यथा तलाक का कोई मतलब ही नहीं होगा, तथा अलगाव और तलाक के बीच कोई फर्क नहीं रह जाएगा।

व्यभिचार एक यौन अनैतिकता है। किन्तु बाइबल के अनेक विद्वानों का यह मानना है कि यहाँ विवाह के पहले कायम रहे अनैतिक सम्बन्धों के बारे में कहा गया है जिसके बारे में विवाह के बाद पता चलता हो (व्य. वि. 22:13–21)। कुछ अन्य यह मानते हैं कि यह सिर्फ यहूदी विवाहों पर लागू होता है और इसलिए यह ''अपवाद वाक्य'' सिर्फ मत्ती में पाया जाता है, जो कि यहूदियों के दृष्टिकोण से लिखा गया सुसमाचार है।

तलाक पर अधिक विस्तृत चर्चा के लिए 5:31,32 पर टिप्पणी देखें।

19:10 जब **चेलों** ने तलाक के विषय पर प्रभु की शिक्षा को सुना, तो उन्होंने अपने आप को अतिवादी जताते हुए एक बेतुकी धारणा कायम कर ली कि यदि तलाक का सिर्फ एक ही आधार है, तो विवाहित अवस्था में पाप करने से बचने के लिए **ब्याह करना अच्छा नहीं**। परन्तु विवाह न करने के द्वारा वे अकेले रह कर पाप करने से बच नहीं सकते।

19:11 इसलिए उद्धारकर्ता ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि अविवाहित बने रहने की क्षमता एक स्वभाविक नियम नहीं है; सिर्फ वे ही जिन पर परमेश्वर का विशेष अनुग्रह होता है वे अविवाहित रह पाते हैं। यह कथन, **''सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है,''** का अर्थ यह नहीं है कि प्रभु जो कह रहा है उसे सब समझ नहीं सकते, परन्तु यह कि वे अविवाहित नहीं रह सकते यदि वे इसके लिए बुलाए नहीं गए हैं।

19:12 प्रभु यीशु ने यह स्पष्ट किया कि **नपुंसक** तीन प्रकार के होते हैं। कुछ मनुष्य बिना सन्तानोत्पत्ति क्षमता के **जन्में** होने के कारण **नंपुसक** कहलाते हैं। दूसरे इसलिए नंपुसक कहलाते हैं क्योंकि वे मनुष्यों द्वारा नंपुसक बना (बधिया कर) दिए जाते हैं; पूर्वी देशों के शासक प्राय: रनवास में रहने वाले सेवकों को बधिया कर नंपुसक बना देते थे। परन्तु यीशु इस समय ऐसे लोगों को अपने विचार में रख कर बातें कर रहा है **जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आप को नंपुसक बनाया**। ये मनुष्य विवाहित भी हो सकते हैं, और इनमें कोई शारीरिक कमी नहीं है। तौभी राजा और उसके राज्य के प्रति अपने समर्पण के कारण, उन्होंने जानबूझ कर विवाह नहीं किया ताकि वे बिना किसी रूकावट के अपने आप को मसीह के कार्य के लिए दे सकें। जैसा कि बाद में पौलुस ने यह लिखा, ''अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता में रहता है, कि प्रभु को क्योंकर (कैसे) प्रसन्न रखे'' (1 कुरि. 7:32)। उनका विवाहित होना शारीरिक कारण से नहीं है, परन्तु वे स्वेच्छा से इससे अलग रहते हैं।

हर व्यक्ति इस प्रकार का जीवन व्यतीत नहीं कर पाता; परन्तु सिर्फ वे ही जिन्हें परमेश्वर द्वारा इस हेतु समर्थ बनाया गया है: ''परन्तु हर एक को परमेश्वर की ओर से विशेष विशेष बरदान मिले हैं, किसी को किसी प्रकार का, और किसी को किसी और प्रकार का'' (1 कुरि. 7:7)।

फ. बच्चों के सम्बन्ध में शिक्षा (19:13–15)

यह रोचक है कि तलाक पर शिक्षा देने के कुछ ही देर बाद बच्चों के बारे में बातचीत की गई (मत्ती 10:1–16); प्राय: घरों के टूटने पर बच्चों पर ही सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है।

माता-पिता अपने **बालकों** को लेकर यीशु के पास लाए कि यह शिक्षक-चरवाहा उन्हें आशीष दे। **चेलों** ने इसे एक अनावश्यक विघ्न समझा, और माता-पिता को **डांटा**। परन्तु **यीशु** ने हस्तक्षेप करते हुए जो वचन कहे उन वचनों ने उसे हर युग के बच्चों का प्रिय बना दिया, **''बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।''**

इन वचनों से अनेक महत्वपूर्ण शिक्षाएं सामने आती हैं। पहली, बच्चों का मन बहुत जल्दी किसी बात को स्वीकार कर लेता है इसलिए प्रभु के सेवक बच्चों तक पहुँच कर उन तक प्रभु का वचन पहुँचाने के महत्व को समझें। दूसरी, जो बच्चे प्रभु यीशु मसीह पर अपने विश्वास का अंगीकार करना चाहते हैं उन्हें उत्साहित किया जाना चाहिए, रोके नहीं रखना चाहिए। कोई भी यह नहीं जानता कि नरक में सबसे कम आयु का व्यक्ति कौन होगा। यदि एक बच्चा सचमुच में उद्धार पाने की इच्छा प्रगट करता है, तो उसे यह नहीं कहना चाहिए कि वह इसके लिए अभी छोटा है। साथ ही साथ, बच्चों पर जबर्दस्ती नहीं करना चाहिए कि वे विश्वास का अंगीकार करें। चूंकि वे भावुक निवेदनों के प्रति संवेदनशील होते हैं, उन्हें सुसमाचार प्रचार के बहुत अधिक दबाव डालने वाले तरीकों से बचा कर रखना चाहिए। बच्चों को उद्धार पाने के लिए वयस्क बनना आवश्यक नहीं है, परन्तु वयस्कों को बच्चों के समान बनना है (18:3, 4; मरकुस 10:15)।

तीसरी, हमारे प्रभु के इन वचनों ने इस प्रश्न का उत्तर दे दिया है, ''उन बच्चों का क्या होता है जो समझदारी/उत्तरदायित्व की उम्र तक पहुँचने से पहले ही मर जाते हैं।'' यीशु ने कहा, **''स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।''** यह बात माता-पिता के आश्वासन के लिए पर्याप्त है जिन्होंने अपने छोटे बच्चों को खोने के दु:ख का अनुभव किया है।

कभी कभी इस स्थल का उपयोग छोटे बच्चों को बपतिस्मा देकर उन्हें मसीह की देह का अंग और राज्य के उत्तराधिकारी बनाने के समर्थन के लिए किया जाता है। यदि हम बारीकी से इस स्थल का अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि माता पिता अपने बच्चों को यीशु के पास लाए, बपतिस्मा कक्ष में नहीं। हम पाएंगे कि बच्चे पहले से ही स्वर्ग के राज्य के अधिकारी हैं। और हम पाएंगे कि इस स्थल में पानी की एक बूंद तक का कोई वर्णन नहीं है।

ग. धनी लोगों के सम्बन्ध में शिक्षा: धनी युवा (19:16-26)

19:16 यह घटना हमारे लिए एक तुलनात्मक अध्ययन उपलब्ध कराती है। अभी अभी हमने यह देखा कि स्वर्ग का राज्य छोटे बच्चों का है, अब हम यह देखेंगे कि वयस्कों के लिए इसमें प्रवेश कर पाना कितना कठिन है।

एक धनी व्यक्ति प्रभु के पास पहुँचा और उसने उससे एक सच्चा प्रतीत होने वाला प्रश्न किया। यीशु को **''गुरु''** कह कर सम्बोधित करते हुए उसने पूछा कि **अनन्त जीवन** पाने के लिए उसे **कौन सा भला** काम करना चाहिए। इस प्रश्न से यह भेद खुल जाता है कि वह यीशु की सच्ची पहचान और उद्धार के मार्ग से परिचित नहीं था। उसने यीशु को **''गुरु''** (समानान्तर स्थल मरकुस 10:17-27 में ''उत्तम गुरु'' लिखा है) कहा, ऐसा कहते हुए उसने यीशु को दूसरे महान मनुष्यों की बराबरी पर रख दिया। और उसने **अनन्त जीवन** को एक भेंट की बजाए अर्जित करने की वस्तु समझा।

19:17 हमारे प्रभु ने उसे दो बिन्दुओं पर परखा। यह पूछने के द्वारा कि, **''तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है;''** यीशु अपनी ईश्वरीय पहचान का इंकार नहीं कर रहा था, परन्तु उस व्यक्ति को यह कहने का एक अवसर प्रदान कर रहा था, ''इसी कारण मैंने तुझे उत्तम गुरु कहा है - तू परमेश्वर है।''

उद्धार के बिन्दु पर उसे परखने के लिए यीशु ने उससे कहा, **''पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।''** उद्धारकर्ता के कहने का अर्थ यह नहीं है कि आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा उद्धार पाया जा सकता है। बल्कि, वह व्यवस्था का उपयोग मनुष्य के हृदय में पाप का अहसास करवाने के लिए कर रहा था। यह व्यक्ति अब भी इस भ्रम में था कि वह *कर्म* के आधार पर स्वर्ग के राज्य का अधिकारी बन सकता है। इसलिए, वह उसी व्यवस्था का पालन करे जिसने उसे बताया है कि उसे क्या *करना* है।

19:18-20 हमारे प्रभु ने पाँच आज्ञाओं को उद्धरित किया जो प्राथमिक रूप से हमारे संगी भाई के साथ हमारे व्यवहार से सम्बन्धित है, वह इन आज्ञाओं को उनके उत्कर्ष तक पहुँचाते हुए कहता है, **''अपने पड़ोसी**

से अपने समान प्रेम रखना।'' अपने स्वार्थ को अनदेखा करते हुए यह व्यक्ति घमण्ड कर रहा था कि उसने इन आज्ञाओं को हमेशा से माना है।

19:21 उसके बाद हमारे प्रभु ने इस व्यक्ति द्वारा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखने की असफलता की पोल खोलते हुए कहा कि वह अपनी सारी सम्पत्ति **बेच** दे और उससे प्राप्त धन को **कंगालों को दे** दे। उसके बाद वह यीशु के पास **आकर** उसके **पीछे हो ले**।

प्रभु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि यह व्यक्ति अपनी सम्पत्ति बेच कर और उससे मिले धन को दान कर उद्धार पा सकता है। उद्धार पाने का सिर्फ एक ही उपाय है – प्रभु यीशु पर विश्वास।

परन्तु उद्धार पाने के लिए, एक व्यक्ति को यह स्वीकार करना आवश्यक है कि उसने पाप किया है और परमेश्वर की पवित्रता की मांगों को पूरा कर पाने से वह काफी दूर है। धनी व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति दूसरों के साथ बांटने की अनिच्छा से यह प्रगट हो गया कि वह अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम नहीं रखता था। उसे यह कहना चाहिए था, ''प्रभु, यदि यह कार्य अनिवार्य है, तब मैं एक पापी हूँ। मैं अपने आप को अपने स्वयं के प्रयासों से नहीं बचा सकता। इसलिए, मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ, कि तू अपने अनुग्रह के द्वारा मेरा उद्धार कर।'' यदि उसने उद्धारकर्ता के निर्देशों का पालन किया होता तो उसे उद्धार का मार्ग बताया जाता।

19:22 इसकी बजाए, वह **उदास होकर चला गया।**

19:23–24 धनी व्यक्ति के इस प्रत्युत्तर ने **यीशु** को यह कहने का अवसर दिया कि **धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है**। हमारा धन हमारे लिए देवता बन जाता है। यह बहुत कठिन है कि हमारे पास धन हो और हम उस पर भरोसा न रखें। हमारे प्रभु ने यह कहा, **''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके से निकल जाना सहज है।''** वह एक वाक्यअलंकार का उपयोग कर रहा था जिसे अतिश्योक्ति कहा जाता है – एक प्रकार का कथन जिसे अतिशयबोधक रूप में व्यक्त किया गया है ताकि एक सजीव और अविस्मरणीय प्रभाव छोड़ा जा सके।

ऊँट के लिए यह पूरी तरह से असम्भव है कि वह सुई की नोंक में से पार हो सके! ''सुई की नोंक'' को अक्सर नगर के फाटक में एक छोटे दरवाजे के रूप में समझाया जाता है। एक ऊँट अपने घुटनों के बल होकर सरकते हुए इससे पार हो सकता है, परन्तु बड़ी मुश्किल से। किन्तु, लूका में इस स्थल के समान्तर स्थल में ''सुई'' के लिए जिस शब्द का उपयोग किया गया है, यह वही शब्द है जिसे चिकित्सकों द्वारा उपयोग की जाने वाली सुई के लिए प्रयोग में लाया जाता है। सन्दर्भ से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रभु यह नहीं कह रहा था कि यह कठिन है परन्तु वह कहता है कि यह असम्भव है। मानवीय दृष्टिकोण से, एक धनी व्यक्ति का उद्धार ऐसे ही अपने आप *नहीं हो सकता।*

19:25 जब **चेलों** ने इन बातों को सुना तो वे **चकित** हुए। वे यहूदी थे और इसलिए मूसा की व्यवस्था के आधीन थे, जिसमें परमेश्वर ने उन्हें यह प्रतिज्ञा दी थी कि जो उसकी आज्ञा का पालन करेगा उसे वह समृद्ध बनाएगा। वे धन सम्पत्ति को परमेश्वर की आशीषों के चिन्ह के रूप में देखते थे। यदि वह जो परमेश्वर की आशीषों के भागी हैं, उद्धार नहीं पा सकते, तो फिर कौन *पा सकता* है?

19:26 प्रभु ने उत्तर दिया, **''मनुष्यों से तो यह हो नहीं सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।''** मनुष्य के दृष्टिकोण से, किसी का भी **उद्धार हो नहीं सकता,** सिर्फ परमेश्वर आत्मा का उद्धार कर सकता है। परन्तु एक निर्धन की तुलना में धनी व्यक्ति के लिए मसीह की इच्छा के आगे समर्पण करना अधिक कठिन हो जाता है, इस बात का प्रमाण यह है कि बहुत कम धनी अपना मन फिराते हैं। उनके लिए यह लगभग असम्भव होता है कि वे अपनी जीविका के दृश्य माध्यमों से अपना भरोसा हटाकर एक अदृश्य उद्धारकर्ता पर विश्वास कर सकें। सिर्फ परमेश्वर इस प्रकार का परिवर्तन ला सकता है।

टीकाकार और प्रचारक लगातार यहाँ पर इस बात को बीच में डालते रहे हैं कि मसीहियों का धनी होना गलत नहीं है। यह विचित्र बात है कि वे सांसारिक धनोपार्जन को सही सिद्ध करने के लिए एक ऐसे स्थल का उपयोग करते हैं जिसमें प्रभु ने धन की भर्त्सना करते हुए उसे मनुष्य के अनन्त कल्याण के लिए एक रूकावट बताया है! यह समझ पाना काफी कठिन है कि हर जगह दिखाई दे रही भंयकर आवश्यकताओं, मसीही के आगमन की निकटता, और प्रभु द्वारा पृथ्वी पर धन एकत्रित करने के

लिए मना किए जाने को ध्यान में रखते हुए एक मसीही कैसे धन से चिपका रह सकता है। धन जमा करना हम पर यह दोष लाता है कि हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम नहीं रखते।

ह. त्याग का जीवन जीने पर मिलने वाले प्रतिफल के सम्बन्ध में शिक्षा (19:27–30)

19:27 पतरस ने उद्धारकर्ता की शिक्षा के अभिप्राय को समझ लिया। यह समझते हुए कि यीशु यह कह रहा है, ''सब कुछ त्याग कर मेरे पीछे आ जाओ,'' पतरस इठलाने लगा कि उसने और अन्य चेलों ने ठीक ऐसा ही किया है; उसके बाद उसने आगे पूछा, **''तो हमें क्या मिलेगा?''** पतरस का स्वार्थ यह दर्शा रहा था कि पुराना मनुष्यत्व उस पर हावी हो रहा है। इस प्रकार की आत्मा से हम सब को अपने आप को बचा कर रखना है। वह परमेश्वर के साथ मोलभाव कर रहा था।

19:28, 29 प्रभु ने पतरस को आश्वस्त किया कि प्रभु के लिए जिसने भी जो कुछ किया है उसे एक एक चीज़ के लिए भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा। विशेष कर के बारह चेलों को, मसीह के हजार वर्ष के राज्य में अधिकार के पद दिए जाएंगे। यहाँ पर **अनन्त जीवन** पृथ्वी पर मसीह के आने वाले राज्य को कहा गया है; यह इस कथन के माध्यम से समझाया गया है, **''जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा।''** हमने पूर्व में राज्य के इस चरण (पहलू) को *प्रगटीकरण* में राज्य कहा है। उस समय बारह चेले **बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेंगे।** नया नियम में जिन प्रतिफलों के विषय में कहा गया है, वे हजार वर्ष के राज्य में प्रशासन करने से काफी निकटता से जुड़े हुए है (लूका 19:17,19)। उन्हें मसीह के न्याय सिंहासन के सामने *प्रतिफल* दिया जाएगा, परन्तु इसका *प्रगटीकरण* तब होगा जब प्रभु पृथ्वी पर राज्य करने के लिए लौटेगा।

जहाँ तक विश्वासियों की सामान्य बात है, यीशु ने कहा कि जितनों ने **घरों या भाइयों, या बहनों या पिता या लड़केबालों या खेतों को** उसके **नाम के लिए छोड़ दिया है** उनको **सौ गुणा मिलगा।** इस जीवन में, वे विश्वासियों की विश्वव्यापी सहभागिता का आनन्द उठाते हैं जिससे पृथ्वी पर उनके द्वारा छोड़ी गई चीजों की पर्याप्त क्षतिपूर्ति हो जाती है। यदि वे एक घर छोड़ते हैं, तो उन्हें सैकड़ों मसीही परिवार मिलते हैं जहाँ उन्हें गर्मजोशी से स्वीकार किया जाता है। यदि वे अपनी भूमि या धन का त्याग करते हैं, तो उन्हें बेहिसाब आत्मिक धन प्राप्त होता है।

सारे विश्वासियों के लिए भविष्य का प्रतिफल **अनन्त जीवन** होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम सब कुछ छोड़ देने या त्याग करने के द्वारा अनन्त जीवन को अर्जित करते हैं। अनन्त जीवन एक ऐसा ईनाम है जिसे हम अर्जित नहीं कर सकते। यहाँ पर यह कहा गया है कि जो अपना सब कुछ त्याग देते हैं उन्हें प्रतिफल के रूप में स्वर्ग में अनन्त जीवन का आनन्द लेने के लिए अधिक क्षमता प्रदान की जाती है। सारे विश्वासियों को अनन्त जीवन प्राप्त होगा, परन्तु हर एक इसका आनन्द अलग–अलग अंश में लेगा।

19:30 प्रभु ने मोलभाव करने की आत्मा के विरुद्ध चेतावनी देते हुए अपनी टिप्पणी समाप्त की। उसने पतरस से कुछ इस प्रकार कहा, ''तुम मेरे नाम से जो कुछ करते हो उसके लिए तुम्हें प्रतिफल दिया जाएगा, परन्तु सावधान रहो कि स्वार्थ तुम पर हावी न हो जाए; क्योंकि ऐसा होने पर, **बहुतेरे जो पहले हैं, पिछले होंगे, और जो पिछले हैं, पहिले होंगे।**'' यह चेतावनी अगले अध्याय में एक दृष्टान्त के माध्यम से चित्रित की गई है। यह कथन इस बात के प्रति भी सचेत करती है कि चेलेपन के मार्ग पर अच्छी शुरुआत करना ही पर्याप्त नहीं है; महत्वपूर्ण यह है कि हमारा अन्त कैसा है।

परन्तु इस खण्ड का समापन करने से पहले हमें यह ध्यान देना चाहिए कि ''स्वर्ग का राज्य'' और ''परमेश्वर का राज्य'' पद 23 और 24 में एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए गए हैं; इसलिए ये दोनों सामानार्थी शब्द हैं।

ई. दाख की बारी में मजदूरी करने का प्रतिफल (20:1–16)

20:1,2 यह दृष्टान्त, जो कि अध्याय 19 के अन्त में दिए गए उपदेश का ही हिस्सा है, इस सच्चाई को चित्रित करता है कि यद्यपि सारे सच्चे चेलों को प्रतिफल

दिया जाएगा, प्रतिफल का क्रम इस आधार पर निर्धारित किया जाएगा कि किस चेले ने किस आत्मा (किस भावना) में होकर सेवा की है।

इस दृष्टान्त में **एक गृहस्थ** का वर्णन किया गया है **जो सबेरे निकला कि अपनी दाख की बारी में मजदूरों को लगाए** कि वे उसके दाख की बारी में मजदूरी करें। इन मजदूरों को **एक दीनार** की रोजी पर रखा गया, उस समय यह एक अच्छी रकम थी। हम मान कर चलें कि उन्होंने 6:00 बजे सुबह से अपना कार्य आरम्भ किया।

20:3,4 सुबह नौ बजे गृहस्थ ने पाया कि कुछ और बेरोजगार मजदूर **बाजार में** खड़े हुए हैं। उसने उन्हें भी काम पर रख लिया, परन्तु उनसे उसने मजदूरी के बारे में कोई बात नहीं की, वे उसके कहने मात्र से काम पर आ गए, और वह उन्हें **जो कुछ ठीक है** देगा।

20:5–7 दोपहर को तीन बजे किसान ने कुछ और लोगों को इस आधार पर भेजा कि वह उन्हें एक अच्छी मजदूरी देगा। शाम को पाँच बजे उसने कुछ और बेरोजगारों को देखा। वे आलसी नहीं थे; वे कार्य करना चाहते थे परन्तु उन्हें काम नहीं मिल रहा था। इसलिए उसने उन्हें भी मजदूरी की कोई चर्चा किए बिना ही **दाख की बारी** में भेज दिया।

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सबसे पहले उसने जिन मजदूरों को रखा था उनके साथ उसने बातचीत कर आपसी सहमति से मजदूरी तय की थी; शेष सभी मजदूरों ने अपनी मजदूरी को गृहस्थ पर छोड़ दिया था।

20:8 दिन की समाप्ति पर, गृहस्थ ने अपने मुंशियों को निर्देश दिया कि वे **पिछलों से** आरम्भ कर **पहिलों तक** मजदूरों का भुगतान करें। (इस तरह से पहले आए हुए व्यक्तियों ने देखा कि बाद में आए हुए मजूदरों को कितनी मजदूरी दी गई है।)

20:9,12 सभी को एक बराबर मजदूरी दी गई थी – एक **दीनार**। छः बजे सुबह आए हुए व्यक्तियों ने सोचा था कि उन्हें अधिक दिया जाएगा, परन्तु ऐसा नहीं हुआ – उन्हें भी एक दीनार ही दिया गया। वे कड़वाहट से भर गए; आखिर, उन्होंने अधिक समय काम किया था और **दिन भर का घाम** सहा था।

20:13,14 गृहस्थ द्वारा उनमें से एक को दिए गए उत्तर में हमें इस दृष्टान्त की शिक्षाएं मिलती हैं जिनका हमें सदा पालन करना है। पहली शिक्षा, उसने कहा, **''हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया? जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं।''** पहले आए लोगों ने मोलभाव किया और एक दीनार पर सहमत हुए थे और उन्हें इसके अनुसार मजूदरी दे दी गई। दूसरे मजदूरों ने अपने आप को गृहस्थ के अनुग्रह पर छोड़ दिया था और उन्होंने अनुग्रह पाया। न्याय से बेहतर अनुग्रह होता है। हमारे लिए यह बेहतर होगा कि हम अपना प्रतिफल प्रभु पर छोड़ दें बजाए इसके कि उसके साथ मोलभाव करें।

20:15 दूसरी शिक्षा, गृहस्थ ने आगे कहा, **''क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं?''** निःसन्देह, इस कथन में यह शिक्षा पाई जाती है कि परमेश्वर सर्वाधिकारी है। वह जैसा चाहेगा वैसा करेगा। और वह जो चाहता है वह हमेशा सही, न्यायसंगत, और उचित होता है। गृहस्थ ने आगे कहा, **''क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है।''** यह प्रश्न मानवीय स्वभाव के स्वार्थी प्रवृत्ति की पोल खोल देता है। छः बजे सुबह आए हुए मजदूरों को ठीक वही मिला जिसे पाने की वे पात्रता रखते थे, तौभी उन्हें ईर्ष्या हो रही थी क्योंकि जिन मजदूरों ने कम समय काम किया था उन्हें भी बराबर की मजदूरी दी गई। हम में से अनेक भी यह स्वीकार करेंगे कि हमें भी यह बात कुछ अनुचित जान पड़ती है। इससे यह प्रमाणित होता है कि स्वर्ग के राज्य में हमें पूरी तरह से एक नए प्रकार की सोच को अपनाने की आवश्यकता है। हमें अपनी लालची, और प्रतिस्पर्धी आत्मा को त्यागना है, और प्रभु के समान सोचना है।

किसान जानता था कि इन सभी लोगों को धन की आवश्यकता है, इसलिए उसने उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार भुगतान किया, उनकी लालसा के अनुसार नहीं। जिसे जितना मिलना चाहिए था उससे कम किसी को भी नहीं दिया गया, परन्तु सभी को वह दिया गया जिसकी उन्हें और उनके परिवारों के लिए आवश्यकता थी। जेम्स स्टीवर्ट के अनुसार, यहाँ पर यह शिक्षा दी गई है कि जो व्यक्ति ''अन्तिम प्रतिफल के लिए मोलभाव करने के बारे में सोचता है वह हमेशा गलत होगा, और परमेश्वर की करुणा ही अन्तिम निर्णय लेगी जो कि अटल होगा।''[39] इस दृष्टिकोण से इस दृष्टान्त पर जितना अधिक

अध्ययन करेंगे, हम उतना ही अधिक यह समझ पाएंगे कि यह न सिर्फ उचित है, परन्तु सर्वाधिक मनोहर भी। जो लोग सुबह छ: बजे आए थे उन्हें अपना इसे अतिरिक्त प्रतिफल जानना था कि उन्हें ऐसे अद्‌भुत स्वामी के आधीन दिन भर काम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

20:16 यीशु ने इस दृष्टान्त को इन शब्दों के साथ समाप्त किया, **"जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे"** (19:30 देखें)। प्रतिफल को देख कर चौंकाने वाली अनेक बातें सामने आएंगी। जो लोग समझते हैं कि जो पहले होंगे वे पीछे कर दिए जाएंगे क्योंकि उनकी सेवा अहंकार और स्वार्थीपूर्ण महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित थी। दूसरे लोग, जिन्होंने प्रेम और कृतज्ञता में होकर सेवा की है, उन्हें बहुत सम्मान दिया जाएगा।

> जिन बातों को हमने अपनी योग्यता समझी,
> प्रभु हमें बताएगा कि ये और कुछ नहीं बल्कि पाप थे;
> जिन छोटे कार्यों को करके हम भूल गए थे,
> प्रभु हमें बताएगा कि ये उसी के लिए किए गए थे।
>
> – अज्ञात

ज. प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में शिक्षा (20:17–19)

ऐसा लगता है कि प्रभु पिरिया से निकल कर यरीहो होते हुए **यरूशलेम** को जा रहा था (पद 29 देखें)। एक बार फिर से वह **बारह चेलों को एकान्त में ले गया** कि उन्हें यह समझाए कि पवित्र नगर में पहुँचने पर क्या होने वाला है। उसे **महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा** – यहूदा के विश्वासघात की ओर संकेत। वह यहूदी अगुवों द्वारा **घात** करने के लिए दोषी ठहराया जाएगा। चूंकि यहूदी अगुवों के पास मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था, इसलिए **उसको अन्यजातियों** (रोमी लोगों) को सौंप दिया जाएगा। उसका ठट्ठा किया जाएगा, उसे कोड़ों से मारा जाएगा, और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। परन्तु मृत्यु अपने शिकार को वश में नहीं रख पाएगी – **वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।**

क. स्वर्ग के राज्य में अधिकार के पद के सम्बन्ध में शिक्षा (20:20–28)

यह मानवीय स्वभाव पर दुखद टिप्पणी है कि प्रभु द्वारा अपने दु:खभोग की तीसरी भविष्यद्वाणी करने के तुरन्त बाद, उसके चेले उसके दुखों से अधिक अपने स्वयं की महिमा के बारे में सोच रहे थे।

> मसीह के दुखों की पहली भविष्यद्वाणी ने पतरस की आपत्ति को जन्म दिया (16:22); दूसरी भविष्यद्वाणी के शीघ्र बाद चेलों ने यह प्रश्न किया, "सबसे बड़ा कौन है . . . ?" इसलिए यहाँ पर, हम तीसरी भविष्यद्वाणी के बाद याकूब और यूहन्ना के स्वार्थपूर्ण महत्वाकांक्षी निवेदन को पाते हैं। उन्होंने लगातार आने वाले संकट की चेतावनी के प्रति अपनी आँखों को बन्द किया, और महिमा की प्रतिज्ञा के लिए ही उन्हें खोला – इस तरह से उन्होंने स्वर्ग के राज्य को एक गलत, भौतिकतावादी दृष्टिकोण से समझा *(डेली नोट्स ऑन स्क्रिप्चर यूनियन)*।

20:20,21 याकूब की **माता** और यूहन्ना प्रभु के पास यह **मांगने** के लिए आए कि उनके पुत्र उसके **राज्य में** उसके अगल–बगल बैठें। उसे इस बात का श्रेय देना चाहिए कि वह अपने पुत्रों को यीशु के पास देखना चाहती थी, और वह उसके आने वाले राज्य को लेकर हताश नहीं थी। परन्तु उसने उन सिद्धान्तों को नहीं समझा जिनके आधार पर स्वर्ग के राज्य में आदर प्रदान किए जाएंगे।

मरकुस कहता है कि पुत्रों ने स्वयं यह निवेदन किया था (मरकुस 10:35); शायद उन्होंने अपनी माता के कहने पर ऐसा किया हो, या फिर तीनों एक साथ मिलकर यीशु के पास गए हों। यहाँ पर कोई विरोधाभास नहीं है।

20:22 **यीशु ने** स्पष्ट रूप से **उत्तर दिया** कि वे यह नहीं जानते कि क्या मांग रहे हैं। वे बिना क्रूस उठाए एक मुकुट चाह रहे थे, बलिदान की वेदी के बिना एक सिंहासन चाह रहे थे, बिना कष्ट उठाए, वे महिमा चाह रहे थे जो कष्ट उठाने पर ही मिलती है। इसलिए उसने उनसे सीधे सीधे पूछा, **"जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो?"** हमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है कि **कटोरा** से उसका आशय क्या था; उसने अभी अभी पद 18 और 19 में इसका वर्णन किया था। उसे दु:ख उठाना और मरना आवश्यक था।

याकूब और यूहन्ना ने उसके दुखों में सहभागी होने के लिए अपनी इच्छा प्रगट कर दी, यद्यपि उनका आत्मविश्वास ज्ञान पर कम और उत्साह पर अधिक टिका हुआ था।

20:23 यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे सचमुच में उसके कटोरे में से पीएंगे। याकूब शहीद होगा और यूहन्ना को पतमुस टापू पर निर्वासित किया जाएगा। रॉबर्ट लिटिन ने कहा है, ''याकूब शहीद की मौत मरा; यूहन्ना ने शहीद का जीवन जिया।''

उसके बाद यीशु ने यह समझाया कि राज्य में अधिकार का पद प्रदान करना उसके हाथ में नहीं है; **पिता** ने एक विशेष आधार तय किया है जिस के अनुसार इन पदों पर नियुक्ति की जाएगी। उन्होंने इसे राजनैतिक संरक्षण का एक विषय समझते हुए ऐसा सोचा था कि इसलिए कि वे यीशु से इतने निकट हैं, प्राथमिक स्थानों पर उनका एक विशेष दावा है। परन्तु यह व्यक्तिगत पक्षपात का मामला नहीं था। परमेश्वर की सम्मति में, दाहिने और बाएं हाथ के पद उसके लिए दु:ख उठाए जाने के आधार पर दिए जाएंगे। इसका अर्थ यह है कि राज्य के प्रमुख सम्माननीय पद प्रथम शताब्दी के मसीहियों तक सीमित नहीं हैं; आज के समय के मसीही भी इस पद को प्राप्त कर सकते हैं – कष्ट उठाने के द्वारा।

20:24 अन्य **दसों** चेले जब्दी के पुत्रों से अत्यंत **क्रुद्ध हुए** कि उन्होंने इस प्रकार का निवेदन किया। वे शायद इसलिए इतने क्रोधित थे क्योंकि वे स्वयं सबसे महान बनना चाहते थे और याकूब और यूहन्ना द्वारा पहले से कर दिए गए इस दावे से कुढ़ गए थे!

20:25–27 इस घटना से हमारे प्रभु को यह अवसर मिला कि वह अपने राज्य में महानता के सम्बन्ध में एक क्रान्तिकारी कथन व्यक्त करे। **अन्यजातियों** में महानता को प्रभुता और शासन के अर्थों में समझा जाता है। मसीह के राज्य में, महानता सेवा में प्रगट होती है। जो कोई महान होने की अभिलाषा रखता है उसे **सेवक** बनना आवश्यक है, और जो **प्रधान होना** चाहता है, उसे पहले **दास** बनना आवश्यक है।

20:28 **मनुष्य का पुत्र** दीन सेवकाई का एक आदर्श उदाहरण है। वह इस संसार में इसलिए नहीं आया कि **उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दें।** देहधारण के सम्पूर्ण उद्देश्य का सारांश दो शब्दों में दिया जा सकता है – **सेवा-टहल करे** और **दे**। यह विचार करना अद्‌भुत बात है कि ऊँचा उठाए गए प्रभु ने अपने आप को चरणी से लेकर क्रूस तक दीन किया। उसकी महानता उसकी दीनता की गहराइयों में प्रगट हुई। और इसलिए हमें भी उसका अनुसरण करना है।

उसने **बहुतों की छुड़ौती** के लिए अपना प्राण दिया। उसकी मृत्यु ने पाप के विरुद्ध परमेश्वर की धार्मिकता की सारी मांगों को संतुष्ट कर दिया। उसकी मृत्यु सारे संसार के पापों को दूर करने के लिए काफी थी। परन्तु यह सिर्फ उन पर प्रभावशील है जो उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। क्या आप ने कभी ऐसा किया है?

ल. दो अन्धों का चंगा किया जाना (20:29–34)

20:29:34 अब तक यीशु पिरिया से होते हुए यरदन को पार कर **यरीहो** पहुँच चुका था। जब वह उस नगर से बाहर जा रहा था, तो **दो अन्धे** व्यक्तियों ने उसे पुकारा, **''हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!''** उनके द्वारा **''दाऊद की सन्तान''** पदवी का उपयोग किए जाने का अर्थ यह था, कि यद्यपि वे शारीरिक रूप से अन्धे थे, परन्तु उनकी आत्मिक दृष्टि इतनी तीक्ष्ण थी कि वे यीशु को मसीह के रूप में पहचान गए। वे शायद उस विश्वास करने वाले छोटे झुण्ड का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जो उसे मसीह के रूप में पहचान लेगा जब वह राज्य करने को लौटेगा (यशा. 35–5; 42:7; रोमि. 11:25; 26; 2 कुरि. 3:16; प्रका. 1:7)।

20:31–34 भीड़ ने शान्त कराना चाहा, **पर वे** पहले से भी अधिक **चिल्लाकर** पुकारने लगे। जब यीशु ने उनसे पूछा कि उन्हें क्या चाहिए, तो उन्होंने सामान्य बात करने में अपना समय नहीं बिताया जैसा कि हम अक्सर प्रार्थना करते हुए करने लगते हैं। वे सीधे सीधे अपनी बात कहते हैं, **''हे प्रभु, यह कि हमारी आँखें खुल जाएं।''** उनके सीधे निवेदन का

सीधा उत्तर दिया गया। **यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखे छुई, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।**

प्रभु द्वारा उन्हें छूने के सम्बन्ध में मसीही समीक्षक गायवेलिन ने एक उपयोगी बात की ओर हमारा ध्यान दिलाया है।

> हमने इस सुसमाचार में पहले छूने के द्वारा चंगाई के विशिष्ठ अर्थ को देखा है। जब भी प्रभु ने छूने के द्वारा चंगा किया है, कालखण्ड (*डिस्पेन्सेशन)* के दृष्टिकोण से, यह पृथ्वी पर उसके व्यक्तित्व की उपस्थिति और इस्राएल के प्रति उसके दयालु व्यवहार की ओर संकेत करता है। जब वह अपने वचन के द्वारा चंगा करता है, तो व्यक्तिगत रूप से वहाँ उपस्थित न हो कर ... या यदि विश्वास से कोई उसे छूता है, तो यह उस समय की ओर संकेत करता है जब वह पृथ्वी से देहरूप में अनुपस्थित है, और विश्वास के द्वारा उसके पास आने वाले अन्यजाति उसके द्वारा चंगे किए जाते हैं।[40]

इस घटना का मत्ती द्वारा किए गए वर्णन के साथ मरकुस 10:46–52 और लूका 18:35–43; 19:1 में दिए गए वर्णनों का मेल बिठाने में कुछ कठिनाइयां आती हैं। मत्ती में *दो* अन्धे व्यक्तियों का वर्णन है; मरकुस और लूका में सिर्फ एक का ही वर्णन है। ऐसा माना जाता है कि मरकुस और लूका ने उस अन्धे व्यक्ति का उल्लेख किया जिसे लोग अच्छे से जानते थे, बरतिमाई; और मत्ती जो अपना सुसमाचार विशेष कर के यहूदियों के लिए लिख रहा था, *दो* अन्धों का उल्लेख करता है क्योंकि यहूदियों में किसी भी वैध गवाही के लिए कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती है (2 कुरि. 13:1)। मत्ती और मरकुस में, ऐसा बताया गया है कि यह घटना उस समय घटी जब यीशु यरीहो से निकल रहा था; लूका में, ऐसा बताया गया है कि यह घटना उस समय घटी जब वह यरीहो के निकट आया। वास्तव में वहाँ दो यरीहो थे, एक पुराना यरीहो और एक नया यरीहो, और चंगाई का यह आश्चर्यकर्म शायद तब हुआ जब यीशु एक यरीहो से निकल कर दूसरे यरीहो में जा रहा था।

XII. राजा का अपने आप को प्रस्तुत किया जाना और राजा का इंकार कर दिया जाना (21–23 अध्यायों में)

अ. विजयी प्रवेश (21–23 अध्यायों में)

21:3 यरीहो से निकल कर अपने मार्ग पर बढ़ते हुए, यीशु **जैतून पहाड़** की पूर्वी ओर आया जहाँ बैतनिय्याह और **बैतफगे** स्थित थे। वहाँ से रास्ता जैतून पहाड़ के किनारे किनारे बढ़ता है, नीचे यहोशापात की तराई में जाता है, किद्रोन के नाले को पार कर ऊपर **यरूशलेम** को चढ़ जाता है।

उसने **दो चेलों को** पहले से ही यह जानते हुए **भेजा** कि उन्हें एक **गदही ... और उसके साथ बच्चा** मिलेगा। उन्हें इन दोनों पशुओं को खोलना है और **उन्हें** यीशु के पास लाना है। यदि कोई इसके लिए उन्हें कुछ कहे, तो उन्हें यह बताना है कि **प्रभु** को इन पशुओं की आवश्यकता है। तब इन पशुओं का मालिक उन्हें ले जाने की अनुमति दे देगा। शायद मालिक यीशु को जानता रहा हो और पहले यीशु को उसने सहायता करने का प्रस्ताव दिया हो। या फिर इस घटना के द्वारा से प्रभु की सर्वज्ञता और सर्वोच्च अधिकार को दर्शाया गया है। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यीशु ने पहले से बताया था।

21:4, 5 पशुओं को काम में लाने के द्वारा यशायाह और जकर्याह के द्वारा की गई यह भविष्यद्वाणियाँ पूरी हुईं:

''सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गदहे पर बैठा है, वरन लादू के बच्चे पर।''

21:6 चेलों के द्वारा पशुओं के ऊपर अपने वस्त्र फैला देने के बाद, यीशु गदहे के बच्चे पर बैठ गया (मरकुस 11:7) और उसकी सवारी करते हुए यरूशलेम की ओर बढ़ चला। यह एक ऐतिहासिक क्षण था। सर राबर्ट एन्डरसन के अनुसार, दानिय्येल की भविष्यद्वाणी के उन्हत्तर सप्ताह पूरे हो चुके हैं (उनकी पुस्तक *द कमिंग प्रिन्स* में उनके द्वारा की गई गणना को देखें)। और अब मसीह काटा जाएगा (दानिय्येल 9:26)।

इस तरीके से यरूशलेम की ओर सवारी करते हुए, प्रभु ने जानबूझ कर, मसीह होने का एक खुला दावा किया। मसीही टीकाकार लैंज ने इस पर यह टिप्पणी की है:

> वह जानबूझ कर एक भविष्यद्वाणी को पूरी करता है जिसे उसके समय में निर्विवाद रूप से मसीह के विषय भविष्यद्वाणी करके व्याख्या की जाएगी। यदि उसने अपनी प्रतिष्ठा की घोषणा करना खतरनाक माना था, तो अब वह मौन को निरर्थक मानता है . . .। इसके बाद से यह कहना कभी सम्भव नहीं था कि उसने अपने विषय में पूरी तरह से सुस्पष्ट रीति से घोषणा नहीं की। जब बाद में यरूशलेम पर मसीह की हत्या करने का दोष लगाया गया, तो यरूशलेम को यह कहने का अवसर न मिले कि मसीह ने सब के समझने लायक एक चिन्ह नहीं दिया।[41]

21:7,8 प्रभु **कपड़े** और **डालियाँ** बिछा कर बनाए गए कालीन पर होकर नगर को गया, लोगों के उल्लासपूर्ण ऊँचे स्वर उसके कानों में गूंज रहे थे। एक क्षण के लिए, कम से कम, उसे राजा के रूप में स्वीकार किया गया था।

21:9 भीड़ ने चिल्लाकर कहा, **''दाऊद के सन्तान को होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।''** भजन संहिता 118:25, 26 से लिया गया यह उद्धरण स्पष्टत: मसीह के आगमन पर लागू होता है। **होशाना** का मूल अर्थ होता है, ''हमारे रोमी शोषकों से हमें छुटकारा दो।'' बाद में यह शब्द स्तुति का एक उद्‌गार बन गया। **''दाऊद के सन्तान''** और **''धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है,''** दोनों ही वाक्यांश स्पष्ट रूप से यह संकेत देते हैं कि यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार कर लिया गया था। वही वह धन्य जन है जो यहोवा के द्वारा दिए गए अधिकार से उसकी इच्छा पूरी करने को आता है।

मरकुस ने भीड़ द्वारा लगाए गए नारे को इस तरह से लिखा है, ''हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है: आकाश में होशाना'' (मरकुस 11:10)। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि लोगों ने सोचा कि मसीह के दाऊद के सिंहासन पर बैठने के द्वारा राज्य अब स्थापित होने ही वाला है। **''आकाश में होशाना''** के नारे लगाने के द्वारा, भीड़ आकाश को बुला रही थी कि वह पृथ्वी के साथ मिल कर मसीह की प्रशंसा करे, और शायद प्रभु को पुकार रही थी कि वह स्वर्ग में से उन्हें छुटकारा दे।

मरकुस 11:11 में यह वर्णन किया गया है कि एक बार यरूशलेम में, यीशु मन्दिर को गया – मन्दिर के भीतर नहीं परन्तु आँगन में। उसे परमेश्वर का घर माना जाता था, परन्तु वह इस मन्दिर में सहज महसूस नहीं कर रहा था, क्योंकि महायाजकों और लोगों ने उसे उसका सही स्थान देने से मना कर दिया था। कुछ समय तक चारों ओर देखने के बाद, उद्धारकर्ता वहाँ से निकल कर बारह चेलों के साथ बैतनिय्याह चला गया। यह रविवार के दिन संध्या के समय की घटना है।

21:10,11 इस दौरान, **नगर** के भीतर, उसकी पहचान को लेकर सब हक्के बक्के हो गए। जिन्होंने पूछा उन्हें यह बताया गया कि वह **गलील के नासरस का भविष्यद्वक्ता यीशु** है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ ही लोग वास्तव में यह समझ पाए थे कि वह मसीह है। एक सप्ताह से भी कम समय के भीतर यह चंचल भीड़ यह चिल्लाने लगेगी, ''उसे क्रूस पर चढ़ाओ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ!''

ब. मन्दिर का शुद्ध किया जाना (21:12, 13)

21:12 अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में, यीशु ने मन्दिर परिसर से व्यवसायिकतावाद को खदेड़ा था (यूहन्ना 2:13–16)। परन्तु अतिरिक्त शुल्क लेकर लाभ कमाने का धन्धा एक बार फिर से मन्दिर के बाहरी आँगन में पनपने लगा। बलिदान के पशु और पक्षी महंगे दामों में बेचे जा रहे थे। सर्राफ (मुद्रा विनियम करने वाले) दूसरी मुद्राओं को आधे शकेल में बदलते थे; यहूदी पुरुषों को मन्दिर के कर (टैक्स) के रूप में आधा शेकेल चुकाना होता था। अब, जबकि उसकी सेवकाई समापन की ओर है, **यीशु** ने एक बार फिर से उन लोगों को बाहर **निकाल दिया** जो पवित्र गतिविधियों का गलत फायदा उठा रहे थे।

21:13 यशायाह और यिर्मयाह के उद्धरणों को एक बना कर, उसने अपवित्रीकरण, व्यवसायवाद, और अपवर्जिता की भर्त्सना की। यशायाह 56:7 को उद्धरित करते हुए, उसने यह स्मरण दिलाया कि परमेश्वर चाहता

है कि मन्दिर **प्रार्थना का घर** बने। उन्होंने उसे **डाकुओं** की खोह बना लिया था (यिर्म. 7:11)।

मन्दिर को पवित्र किया जाना यरूशलेम में प्रवेश करने के बाद का उसका पहला अधिकारिक काम था। ऐसा करने के द्वारा उसने मन्दिर पर अपने निर्विवाद दावे को पुख्ता किया।

इस घटना में वर्तमान समय के लिए दो सन्देश हैं। हमारे कलीसियाई जीवन में, हमें उसकी उस शुद्ध करने वाली सामर्थ की आवश्यकता है जिसके द्वारा हम कलीसिया से बाजारीकरण, खाना-पीना, और धन कमाने की कुयुक्तियों को बाहर खदेड़ सकें। हमारे व्यक्तिगत जीवन में, हमारे शरीरों को, जो पवित्र आत्मा का मन्दिर है, निरन्तर प्रभु के द्वारा शुद्ध किए जाने की आवश्यकता है।

स. याजकों और शास्त्रियों का रोष (21:14-17)

21:14 अगले दृश्य में हम अपने प्रभु को मन्दिर के आँगन में **अन्धे और लंगड़े** को चंगा करते हुए देखते हैं। वह जहाँ कहीं जाता था, आवश्यकतामंद लोग उसकी ओर आकर्षित हो जाते थे, और वह कभी भी उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति किए बिना उन्हें नहीं भेजता था।

21:15, 16+ परन्तु बैरी आँखे सब कुछ ताक रही थीं। और जब **महायाजकों और शास्त्रियों ने** सुना कि बच्चे यीशु को **दाऊद के सन्तान** कह कर नारे लगा रहे हैं, तो वे क्रुद्ध हो उठे।

उन्होंने कहा, **''क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?''** - मानों वे उससे यह अपेक्षा कर रहे थे कि वह बच्चों को उसे मसीह कहने से रोके! यदि ज्ञानवान माने जाने वाले महायाजक और शास्त्री उसे मसीह मान कर उसकी स्तुति नहीं करेंगे, तब प्रभु की आराधना छोटे बच्चों के द्वारा की जाएगी। प्राय: बच्चों में अपनी आयु के परे एक आत्मिक समझ होती है, और विश्वास और प्रेम के उनके शब्द प्रभु के नाम की असाधारण महिमा लेकर आते हैं।

21:17 इस सच्चाई पर चिन्तन करने के लिए धार्मिक अगुवों को छोड़ कर, यीशु **अंजीर के एक पेड़ के पास गया**, वह अपनी भूख मिटाने के लिए उसमें फल पाने की आशा से गया था। **पत्तों को छोड़ उसमें** और कुछ न पाकर, उसने कहा, **''अब से तुझ में फिर कभी फल न लगें,''** और **अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया।**

मरकुस द्वारा किए गए वर्णन में (11:12-14) यह टिप्पणी की गई है कि उस समय फल का मौसम नहीं था। इसलिए, फल न होने के कारण इस पेड़ को शाप दिया जाना उद्धारकर्ता को अविवेकी और बदमिजाज के रूप में चित्रित करता प्रतीत होता है। यह जानते हुए कि प्रभु ऐसा नहीं है, इस समस्या को कैसे सुलझाया जा सकता है?

बाइबल के देश (पूर्वीय देशों) के अंजीर के पेड़ों में पत्तियां लगने से पहले शुरुआती, खानेयोग्य फल लगते थे। यह नियमित फल के आने की सूचना देने वाले फल थे। यदि शुरुआती फल न दिखें, जैसा कि इस पेड़ के साथ हुआ, तो यह इस बात का सूचक था कि बाद में भी इसमें नियमित फल कभी नहीं आएंगे।

यही एकमात्र ऐसा आश्चर्यकर्म है जिसमें मसीह ने आशीष न देकर शाप दिया हो- जीवन न देकर नाश किया हो। इसे भी एक समस्या के रूप में सामने लाया गया है। इस प्रकार की आलोचनाएं मसीह के व्यक्तित्व के बारे में अज्ञानता की पोल खोल देती हैं। वह परमेश्वर है, वह विश्व का प्रभु है। उसके कुछ कार्य हमारे लिए भेद हैं, परन्तु हमें यह मान कर चलना है, कि वे हमारे भले के लिए हैं। इस मामले में, प्रभु यह जानता था कि यह अंजीर का पेड़ फिर कभी नहीं फलेगा और उसने इस तरह से अभिनय किया जिस तरह से एक किसान एक फलहीन वृक्ष को अपने फलोद्यान से हटाते समय कहेगा।

वे भी जो इस वृक्ष को शाप दिए जाने पर हमारे प्रभु की आलोचना करते हैं यह मानते हैं कि यह एक प्रतीकात्मक अभिनय था। यह घटना हमारे उद्धारकर्ता द्वारा उसके उस गर्मागर्म स्वागत की व्याख्या है जो अभी अभी यरूशलेम में किया गया था। दाखलता और जैतून के पेड़ की तरह, अंजीर का पेड़ इस्राएल जाति का प्रतिनिधित्व करता है। जब यीशु इस्राएली जाति के पास आया तब उसमें पत्तियां थीं, जो मुँह से उसे प्रभु मानने को दर्शाती हैं, परन्तु उसमें परमेश्वर के लिए कोई फल नहीं था। यीशु इस्राएली जाति से फल पाने के लिए भूखा था।

चूंकि उनमें शुरुआती फल नहीं थे, वह जानता था कि बाद में भी अविश्वासी लोगों से कोई फल प्राप्त नहीं होगा, और इसलिए उसने अंजीर के वृक्ष को शाप दिया।

यह उस दण्ड का चित्रण था जो इस्राएली जाति को ईस्वी 70 में दिया गया।

हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यद्यपि *अविश्वासी* इस्राएल हमेशा के लिए फलहीन रहेगा, इस्राएली जाति का एक *विश्वासयोग्य झुण्ड* कलीसिया के उठाए जाने (मेघारोहण) के बाद मसीह के पास लौटेगा। वे क्लेशकाल के दौरान और मसीह के हजार वर्ष के शासन के दौरान उसके लिए फल लाएंगे।

यद्यपि इस स्थल की प्राथमिक व्याख्या इस्राएली जाति पर लागू होती है, परन्तु यह सब समयों के उन सब लोगों पर भी लागू होती है जो ऊँची ऊँची बात करते हैं और नीच काम करते हैं।

21:20-22 जब **चेलों** ने अंजीर के पेड़ के अचानक सूख जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया, तो प्रभु ने उन्हें बताया कि वे इससे भी बड़े आश्चर्यकर्म कर सकते हैं, यदि उनमें **विश्वास** हो। उदाहरण के लिए, यदि वे एक पहाड़ को कहें, **''उखड़ जा; और समुद्र में जा पड़,''** तो ऐसा हो जाएगा। **''और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा।''**

एक बार फिर से हमें यह स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि प्रार्थना के सम्बन्ध में पक्की प्रतीत होने वाली इन प्रतिज्ञाओं को उन सारी बातों के प्रकाश में समझना आवश्यक है जो बाइबल इस विषय पर सिखाती है। पद 22 का अर्थ यह नहीं है कि कोई भी मसीही जो चाहे वह मांग सकता है और उसे पाने की अपेक्षा कर सकता है। उसे बाइबल में दी गई शर्तों के आधार पर प्रार्थना करना आवश्यक है।

इ. यीशु के अधिकार पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाना (21:23-27)

21:23-27 जब यीशु **मन्दिर** से बाहर आँगन में आया, तब **महायाजक और लोगों के पुरनिये** उसके शिक्षा देने के कार्य में हस्तक्षेप करते हुए उससे पूछने लगे कि उसे शिक्षा देने, आश्चर्यकर्म करने, और मन्दिर को शुद्ध करने का अधिकार किसने दिया। उन्होंने सोचा था कि वह चाहे जो भी उत्तर दे उसका उसकी बातों में फँसना तय है। यदि वह दावा करता है कि परमेश्वर का पुत्र होने के कारण अपने आप में ही उसे इसका अधिकार है, तो वे उस पर ईशनिन्दा का दोष लगा सकते हैं। यदि वह दावा करे कि उसे परमेश्वर ने अधिकार दिया है, तो वे उसे चुनौती देंगे। वे अपने आप को विश्वास के संरक्षक, ऐसे पेशेवर जिन्होंने औपचारिक रूप से प्रशिक्षण देने के द्वारा और मनुष्यों द्वारा नियुक्त किए जाकर लोगों के धार्मिक जीवनों का मार्गदर्शन देने के लिए अधिकृत किए गए समझते थे। यीशु ने किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा नहीं ग्रहण की थी और निःसन्देह इस्राएली शासकों की ओर से उसे किसी भी प्रकार से अधिकृत नहीं किया गया था। उनकी चुनौती ईश्वरीय सामर्थ से अभिषेक किए गए लोगों के विरुद्ध पेशेवर धर्मवादियों के वर्षों से चले आ रहे विद्वेष को परिलक्षित करती है।

21:24,25 प्रभु ने प्रस्ताव रखा कि यदि वे उसके प्रश्न का उत्तर दें तो वह उन्हें अपने अधिकार के विषय में स्पष्टीकरण देगा। प्रभु का प्रश्न था, ''यूहन्ना का बपतिस्मा **स्वर्ग की ओर से** था **या मनुष्यों की ओर से**?'' यूहन्ना के **बपतिस्मा** को यूहन्ना की सेवकाई के रूप में समझना चाहिए। इसलिए प्रश्न यह था कि, ''किसने यूहन्ना को सेवकाई करने के लिए अधिकृत किया था?'' क्या उसे मनुष्यों ने ठहराया था या ईश्वर ने? उसे इस्राएल के अगुवों की ओर से क्या अधिकार पत्र दिए गए थे? इसका उत्तर विदित है: यूहन्ना परमेश्वर के द्वारा भेजा गया जन था। उसकी सामर्थ *ईश्वरीय प्रदत्त* थी, *मानवीय अनुमोदन* नहीं।

याजक और पुरनिये दुविधा में फँस गए। यदि वे यह कहते कि यूहन्ना को परमेश्वर ने भेजा था, तो वे फँस जाते। यूहन्ना ने मनुष्यों को यीशु की ओर इशारा करते हुए उसे मसीह के रूप में बताया था। यदि यूहन्ना का अधिकार ईश्वरीय था, तो फिर उन्होंने मन फिराकर मसीह पर विश्वास क्यों नहीं किया?

21:26 दूसरी ओर, यदि वे यह कहते कि यूहन्ना परमेश्वर की ओर से नहीं भेजा गया था, तो वे अपने आप को लोगों द्वारा ठट्ठा करने का विषय बना लेते, क्योंकि अधिकांश लोग इस बात से सहमत थे कि **यूहन्ना** परमेश्वर के द्वारा भेजा गया एक **भविष्यद्वक्ता** था। यदि उन्होंने सही उत्तर दिया होता कि यूहन्ना परमेश्वर के द्वारा भेजा गया है, तो उन्हें उनके ही प्रश्न का उत्तर मिल जाता: यीशु ही वह मसीह है जिसके आने का मार्ग यूहन्ना ने तैयार किया था।

21:27 परन्तु उन्होंने सच्चाई का सामना करने से इंकार कर दिया, और अपनी अज्ञानता की दोहाई देने लगे। वे यूहन्ना की सामर्थ का स्त्रोत नहीं बता सके। तब यीशु ने कहा, **''तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ।''** वह उन्हें यह क्यों बताए जो वे पहले से ही जानते हों परन्तु जिसे स्वीकार करने के इच्छुक न हों?

फ. दो पुत्रों का दृष्टान्त (21:28-32)

21:28-30 यह दृष्टान्त महायाजकों और पुरनियों के लिये एक कड़ी फटकार थी क्योंकि वे मन फिरा कर विश्वास लाने के लिए दी गई यूहन्ना की बुलाहट के प्रति आज्ञाकारिता दिखाने में असफल रहे। यह **किसी मनुष्य** के सम्बन्ध में दृष्टान्त है जिसने अपने **दो** पुत्रों को **दाख की बारी** में जाकर **काम** करने को कहा। एक ने मना कर दिया, लेकिन बाद में उसका मन बदल गया और वह काम करने चला गया। दूसरा जाने के लिए तैयार हो गया परन्तु वह नहीं गया।

21:31,32 जब धार्मिक अगुवों से यह पूछा गया कि **किस** पुत्र **ने पिता की इच्छा पूरी की**, तो उन्होंने अनजाने में ही अपने आप को दोषी ठहराते हुए उत्तर दिया, **''पहिले ने।''**

प्रभु ने तब इस दृष्टान्त का अर्थ बताया। **महसूल लेने वाले और वेश्या** पहले पुत्र के समान थे। उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की बात तुरन्त मानने का कोई ढोंग नहीं किया, परन्तु अनन्त: उनमें से अनेक लोगों ने मन फिराया और यीशु पर विश्वास लाया। धार्मिक अगुवे दूसरे पुत्र के समान थे। वे मुँह से तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की शिक्षाओं को मानने का दावा करते थे, परन्तु उन्होंने कभी भी अपने पापों का अंगीकार कर उद्धारकर्ता पर विश्वास नहीं लाया। इसलिए घोर पापी लोगों ने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर लिया जबकि आत्मसन्तुष्ट धार्मिक अगुवे बाहर ही रहे। वर्तमान में भी ऐसा ही हो रहा है। अपने आप को पापी के रूप में स्वीकार करने वाले लोगों ने सुसमाचार को भक्ति की परत ओढ़े लोगों की तुलना में शीघ्रता से स्वीकार किया।

''यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया'' का अर्थ है कि वह मन फिराव व विश्वास के माध्यम से मिलने वाली धार्मिकता की आवश्यकता का प्रचार करते हुए आया।

ग. दुष्ट किसानों का दृष्टान्त (21:33-46)

21:33-39 अधिकार के बारे में किए गए प्रश्न का आगे उत्तर देते हुए, यीशु ने **एक गृहस्थ** के बारे में एक **दृष्टान्त** बताया **जिस ने दाख की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा; और उसमें रसकुण्ड खोदा**, एक **गुम्मट बनाया**, और ठेके पर **किसानों** को दे दिया, और दूर **परदेस** चला गया। **जब फल का समय आया** तो उसने अपना हिस्सा पाने के लिए **अपने दासों को** किसानों के पास भेजा, परन्तु **किसानों ने किसी को पीटा, किसी मार डाला, और किसी को पत्थरवाह किया**। जब **उसने और दासों को भेजा**, तब भी, उन्होंने उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया। तीसरी बार **उसने अपने पुत्र को** यह सोच कर **भेजा** कि वे उसका **आदर** करेंगे। वे यह अच्छी तरह से जानते थे, कि पुत्र ही **वारिस** है, इसलिए उसे **मार डाला** क्योंकि वे **मीरास** को हड़पना चाहते थे।

21:40,41 इस समय प्रभु ने याजकों और पुरनियों से पूछा कि स्वामी **उन किसानों के साथ क्या करेगा।** उन्होंने उत्तर दिया, **''वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।''**

इस दृष्टान्त की व्याख्या करना कठिन नहीं है। परमेश्वर को गृहस्थ के रूप में चित्रित किया गया है, इस्राएल दाख की बारी है (भजन 80:8; यशा. 5-1-7; यिर्म. 2:21)। बाड़ा मूसा की व्यवस्था को कहा गया है जो इस्राएल को अन्यजातियों से अलग प्रभु के लिए एक विशेष जाति के रूप में सुरक्षित बचा कर रखती थी। रसकुण्ड, लाक्षणिक रूप से, उस फल की ओर संकेत करता है जिसे इस्राएल द्वारा परमेश्वर के लिए उत्पन्न करना चाहिए था। गुम्मट यहोवा द्वारा सचेत होकर अपने लोगों की चिन्ता किए जाने को दर्शाता है। महायाजकों और शास्त्रियों को किसान के रूप में चित्रित किया गया है।

परमेश्वर ने बार-बार अपने सेवकों, भविष्यद्वक्ताओं, को इस्राएल के लोगों के पास दाख की बारी से संगति, पवित्रता, और प्रेम का फल पाने की इच्छा से भेजा। परन्तु लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं को सताया और उनमें से कुछ को मार डाला। अन्त में, परमेश्वर ने यह सोच कर अपने

पुत्र को भेजा कि, ''वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।'' महायाजकों और शास्त्रियों ने कहा, ''यह तो वारिस है'' – एक घातक स्वीकारोक्ति। वे गुप्त रूप से सहमत थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यद्यपि सार्वजनिक रूप से इसका इंकार करते थे) और इस तरह से उन्होंने उसके अधिकार के सम्बन्ध में अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं दे दिया था। उसके अधिकार का स्रोत यह सच्चाई है कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

इस दृष्टान्त में उन्हें यह कहते हुए उद्धरित किया गया है, ''यह तो वारिस है, आओ, उसे मार डालें: और उस की मीरास ले लें'' (पद 38)। वास्तविक जीवन में वे यह कहते थे, ''यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे'' (यूहन्ना 11:28)। और इसलिए उन्होंने उसे ठुकरा दिया, उसे बाहर फेंक दिया, और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया।

21:42 जब उद्धारकर्ता ने पूछा कि दाख की बारी का स्वामी अब क्या करेगा, तो उनके उत्तर ने उन्हें ही दोषी ठहरा दिया, जैसा कि वह पद 42 और पद 43 में दर्शाता है। उसने भजन 118:22 को उद्धरित किया: **''जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया। यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारे देखने में अद्भुत है।''** जब मसीह ने, जो पत्थर है, अपने आप को राजमिस्त्रियों – इस्राएल के अगुवों – के सामने प्रस्तुत किया, तो उनके नक्शे में इसका कोई स्थान नहीं था। उन्होंने उसे बेकार समझ कर किनारे फेंक दिया। परन्तु अपनी मृत्यु के बाद वह मरे हुओं में से जी उठा और उसे परमेश्वर के द्वारा सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। उसे परमेश्वर के भवन का सबसे ऊँचा पत्थर बना दिया गया: ''परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है'' (फिलि. 2:9)।

21:43 यीशु ने तब स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर दी कि **परमेश्वर का राज्य** इस्राएल से **ले लिया जाएगा** और **ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।** और ऐसा ही हुआ। इस्राएल को परमेश्वर की चुनी हुई जाति के रूप में एक किनारे कर दिया गया है, और उसकी निर्णय क्षमता अन्धी कर दी गई है। मसीह का तिरिस्कार करने वाली जाति को कठोर कर दिया गया। यह भविष्यद्वाणी कि **परमेश्वर का राज्य** एक **ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा** को समझा जाता है कि यह (1) कलीसिया, जो विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों दोनों से मिल कर बनी है – ''पवित्र लोग, परमेश्वर की निज प्रजा'' (1 पतरस 2:9); या (2) इस्राएल का विश्वासी झुण्ड जो उसके दूसरे आगमन के समय जीवित रहेगा; की ओर संकेत कर रहा है। छुटकारा प्राप्त इस्राएल परमेश्वर के लिए फल लाएगा।

21:44 ''जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।'' इस पद के प्रथम भाग में, **पत्थर** जमीन पर है; दूसरे भाग में यह ऊपर से गिर रहा है। जब वह पहली बार आया, तब यहूदी अगुवे ठोकर खाकर उस पर गिर पड़े और उनके टुकड़े टुकड़े हो गए। जब वह फिर से आएगा, तो वह दण्ड लेकर नीचे आएगा, और अपने शत्रुओं को धूल के समान उड़ा देगा।

21:45,46 महायाजक और फरीसी यह समझ गए कि इन **दृष्टान्तों** को उसने उन्हीं को निशाने पर रखते हुए उसके अधिकार के विषय में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में दिया है। वे उसे वहीं उसी समय घात कर देना चाहते थे, परन्तु वे **लोगों से डर गए**, जो अब भी **यीशु** को **भविष्यद्वक्ता जानते थे**।

ह. ब्याह के भोज का दृष्टान्त (22:1–14)

22:1–6 यीशु ने अब भी महायाजकों और फरीसियों का पीछा नहीं छोड़ा था। ब्याह के **भोज** के दृष्टांत में एक बार फिर से उसने चुने हुए इस्राएल को किनारे हटा कर तुच्छ माने जाने वाले अन्यजातियों को अतिथियों के रूप में मेज़ पर बैठे चित्रित किया है। उसने **स्वर्ग के राज्य** को **उस राजा** के समान बताया है **जिसने अपने पुत्र** के **ब्याह** के भोज का आयोजन किया। निमंत्रण दो चरणों में भेजे गए। सबसे पहला निमंत्रण व्यक्तिगत रूप से सेवकों के द्वारा भेजा गया जिन्हें सीधे सीधे मना कर दिया गया। दूसरे निमंत्रण में यह घोषणा करवाई गई कि विवाह का भोज तैयार है। कुछ लोगों ने इसे अनसुनी कर दी, क्योंकि वे अपने खेतों या व्यवसाय

में अति व्यस्त थे, कुछ लोगों ने हिंसक हो कर इस निमंत्रण के प्रति प्रतिक्रिया दी, उन्होंने सेवकों को **पकड़कर** उनका **अनादर** किया और उन्हें **मार डाला**।

22:7-10 राजा **क्रोध** से ऐसा भर गया कि उसने **उन हत्यारों को नाश किया और उनके नगर फूंक डाले**। उसने अतिथियों की पहली सूची को निरस्त करते हुए, एक और न्यौता जारी किया जिसमें सभी लोग आमंत्रित थे। इस बार **ब्याह का घर** पूरी तरह से भर गया।

22:11-13 किन्तु, **जेवनहारों** के मध्य, एक व्यक्ति था **जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था**। जब उसकी उपस्थिति पर आपत्ति व्यक्त की गई तो **उसका मुँह बन्द हो गया**। राजा ने आदेश दिया कि उसे अंधकार में डाल दिया जाए, जहाँ **रोना और दांत पीसना** होगा। पद 13 के सेवक पद 3 के दासों से अलग हैं।

22:14 हमारे प्रभु ने इस दृष्टान्त का समापन इन वचनों के साथ किया: ''**क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।**''

इस दृष्टान्त का अर्थ इस प्रकार है: परमेश्वर को राजा और प्रभु यीशु को राजा के पुत्र के रूप में चित्रित किया गया है। ब्याह का भोज उत्सव के उस आनन्द का उपयुक्त चित्रण है जो स्वर्ग के राज्य की विशेषता होगी। कलीसिया को मसीह की दुल्हन के रूप में प्रस्तुत करने पर यह दृष्टान्त अनावश्यक रूप से चित्रण को जटिल बना देगा। यहाँ पर इस्राएल को किनारे कर दिए जाने पर जोर दिया गया है – कलीसिया की विशेष बुलाहट और उसके विशेष गंतव्य को नहीं।

निमंत्रण का पहला चरण यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और बारह चेलों को चित्रित करता है जिन्होंने अनुग्रह में इस्राएल को ब्याह के भोज का निमंत्रण दिया। परन्तु इस्राएली जाति ने इस निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। ''उन्होंने आना न चाहा'' (पद 3) अभिव्यक्ति का चरम क्रूसीकरण में अभिनित किया गया।

निमंत्रण का दूसरा चरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में यहूदियों को सुसमाचार सुनाए जाने की ओर संकेत करता है। कुछ लोगों ने इस सन्देश की अवहेलना की। कुछ ने सन्देशवाहकों के साथ हिंसक व्यवहार किया; अधिकांश प्रेरित शहीद हो गए।

राजा का क्रोधित होना स्वाभाविक था, उसने ''उसकी सेना'' भेजी, अर्थात्, तीतुस और उसकी रोमी सेना को भेजा कि यरूशलेम और उसके अधिकांश लोगों को नाश कर दे (सन् 70)। ये सेना इस अर्थ में ''उसकी सेना'' थी कि उसने इस सेना का उपयोग इस्राएल को नाश करने के माध्यम के रूप में किया। अधिकारिक रूप से भी यह उसी की सेना थी, यद्यपि वे व्यक्तिगत रूप से इस बात को नहीं जानते थे।

अब इस्राएल जाति को एक किनारे कर दिया गया है और सुसमाचार बाहर अच्छे और बुरे अन्यजातियों तक पहुँचता है (प्रेरित 13:45,46; 28:28)। परन्तु हर एक आने वाले व्यक्ति की वास्तविकता को परखा जाता है। जो व्यक्ति ब्याह के वस्त्र पहने बिना आया था वह एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो दावा करता है कि वह राज्य के लिए तैयार है परन्तु उसे प्रभु यीशु में धार्मिकता का वस्त्र कभी नहीं पहनाया गया था (2 कुरि. 5:21)। वास्तव में ब्याह का वस्त्र न पहने हुए व्यक्ति के लिए कोई छूट नहीं होती थी। जैसा कि रायरी लिखते हैं, उन दिनों में यह परम्परा थी कि यदि अतिथियों के पास वस्त्र न हो तो उन्हें वस्त्र उपलब्ध कराए जाते थे। स्पष्ट है कि इस व्यक्ति ने इस प्रबन्ध का लाभ नहीं लिया। यीशु के बिना, स्वर्ग के राज्य में एक व्यक्ति कैसे प्रवेश कर सकता है, इसके उत्तर में यीशु के बिना व्यक्ति का मुँह बन्द हो जाता है (रोमियों 3:19)। उसका स्थान बाहर अंधकार में है जहाँ रोना और दांतों का पीसना है। विलाप का अर्थ नरक का क्लेश है। कुछ लोगों का मानना है कि दांतों का पीसना परमेश्वर के विरुद्ध लगातार बैर और विद्रोह करने को दर्शाता है। यदि ऐसा है, तो यह धारणा गलत सिद्ध होती है कि नरक की आग में शुद्ध करने वाला प्रभाव है।

पद 14 में पूरे दृष्टान्त की ओर संकेत किया गया है सिर्फ उस व्यक्ति की ओर नहीं जिसने ब्याह का वस्त्र नहीं पहना था। **बुलाए हुए तो बहुत हैं**, अर्थात्, सुसमाचार का निमंत्रण सब लोगों के पास जाता है। परन्तु **चुने हुए थोड़े हैं**। कुछ लोग निमंत्रण को अस्वीकार कर देते हैं, और यहाँ तक कि उनमें से कुछ जो इसके प्रति अनुकूल प्रत्युत्तर देते हैं, झूठे दावा करने वालों के रूप में सामने लाए जाते हैं। वे सभी जो सुसमाचार का ठीक प्रत्युत्तर देते हैं वे चुने हुए हैं। एक व्यक्ति चुना हुआ है या नहीं, यह जानने का एक ही तरीका है। वह यह है कि वह प्रभु यीशु के साथ क्या करता है। जैसे कि जेनिंग्स कहते हैं, ''सभों को जेवनार का आनन्द उठाने के लिए बुलाया गया है,

परन्तु हर एक तैयार नहीं है कि देने वाले पर उस वस्त्र के लिए भरोसा रखे जो भोज के लिए उपयुक्त है।''

ई. कैसर को देना और परमेश्वर को देना (22:15-22)

अध्याय 22 प्रश्नों से भरा है, इस अध्याय में तीन अलग-अलग दलों के प्रयासों का वर्णन किया गया है, जो परमेश्वर के पुत्र को फँसाने के लिए भेजे गए थे।

22:15,16 यहाँ पर **फरीसियों** और **हेरोदियों** के एक प्रयास का वर्णन किया गया है। ये दोनों समूह एक दूसरे के कट्टर बैरी थे और अस्थायी तौर पर इस आधार पर एक हुए थे कि ये दोनों उद्धारकर्ता से बैर रखते थे। उनका लक्ष्य था कि वे मसीह के मुँह से कोई ऐसा राजनैतिक कथन निकलवाए जिसके भयंकर परिणाम हों। उन्होंने कैसर के प्रति निष्ठा को लेकर यहूदियों के आपसी विभाजन का फायदा उठाया। कुछ यहूदी अन्यजाति सम्राट के आगे समर्पण करने के विरुद्ध थे। अन्य, जैसे हेरोदी, अधिक उदार दृष्टिकोण रखते थे।

22:17 सबसे पहले, कपट भाव से उन्होंने उसके चरित्र की पवित्रता, उसकी सत्यवादिता, और उसकी निडरता की झूठी सराहना की। उसके बाद उन्होंने बारुद से भरा प्रश्न निशाने की ओर मारा, **''कैसर को कर देना उचित है या नहीं?''**

यदि यीशु यह कहता, ''नहीं,'' तो वह न सिर्फ हेरोदियों का विरोध अपने ऊपर लेता, बल्कि उस पर रोमी शासन के विरुद्ध विद्रोह का भी दोष लगाया जाता। फरीसी उसे धकिया देते और उसके विरुद्ध दोष लगाते। यदि वह कहता, ''हाँ,'' तो वह यहूदियों की जातिवादी विचारधारा के भंवर में फँस जाता। वह सामान्य लोगों के मध्य भी काफी समर्थन खो देता - वह समर्थन जो यीशु को खत्म करने के यहूदी अगुवों के प्रयास में एक बाधा था।

22:18,19 यीशु ने सीधे सीधे उनकी भर्त्सना करते हुए उन्हें कपटी कहा जो उसे फँसाने का प्रयास कर रहे थे। उसके बाद उसने उनसे एक **दीनार** मांगा, यह वह सिक्का था जिसका उपयोग रोमी शासन को कर देने के लिए किया जाता था। जितनी बार यहूदी लोग सिक्के पर कैसर का नाम और उसकी छाप देखते, तो वे याद कर खीज उठते थे कि वे अन्यजातियों की आधीनता में हैं और उन्हें कर चुकाते हैं। दीनार देख कर उन्हें यह याद करना चाहिए था कि उनका यह दासत्व उनके पाप का परिणाम है। यदि वे यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य रहते, तो कैसर को कर देने का प्रश्न ही नहीं उठता।

22:25,28 यीशु ने उनसे पूछा, **''यह मूर्ति और नाम किसका है?''** वे यह उत्तर देने के लिए बाध्य थे, **''कैसर का।''** उसके बाद प्रभु ने उन्हें बताया, **''जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।''**

उनका प्रश्न पलट कर उन्हीं पर वार करता है। उन्होंने सोचा था कि वे कैसर को कर देने के विषय पर यीशु को फँसा लेंगे। यीशु ने परमेश्वर को भेंट देने में उनकी असफलता की पोल खोल दी। यह उनके साथ एक तरह की छेड़खानी थी, वे कर (टैक्स) तो कैसर को देते थे, परन्तु अपने जीवनों में परमेश्वर के अधिकार की अवहेलना करते थे। और जो उनके सामने खड़ा था, वह परमेश्वर के व्यक्तित्व की छाप था (इब्रा. 1:3) और वे उसका सही स्थान उसे देने में असफल रहे।

यीशु के उत्तर से यह प्रगट होता है कि विश्वासी की दोहरी नागरिकता होती है। मानवीय प्रशासन का आज्ञापालन करना और उसे आर्थिक योगदान देना उसकी जिम्मेदारी है। उसे अपने ऊपर शासन करने वालों के विषय बुरी बात नहीं बोलनी चाहिए, न ही उनके प्रशासन को उखाड़ फेंकने का प्रयास करना चाहिए। उसे अधिकार के पद पर बैठे लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। स्वर्ग के नागरिकों के रूप में, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना उसकी जिम्मेदारी है। यदि कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो कि उसे दोनों के बीच किसी एक को चुनना पड़े, तो उसे परमेश्वर के प्रति निष्ठा दिखाना है (प्रेरित 5:29)।

पद 21 को उद्धरित करते हुए, हम में से अधिकांश लोग कैसर से सम्बन्धित भाग पर अधिक जोर देते हैं और परमेश्वर से सम्बन्धित भाग को हल्के से छूते हुए निकल जाते हैं - इसी त्रुटि के लिए यीशु ने फरीसियों को फटकार लगाई थी।

22:22 उसके उत्तर को **सुनकर** फरीसी यह जान गए कि वे हार चुके हैं। उनके पास चकित होकर वहाँ से चले जाने के सिवाय और कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

ज. पुनरुत्थान के सम्बन्ध में फरीसियों की पहेली (22:23-33)

22:23,24 जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, सदूकी लोग उन दिनों के उदारवादी धर्मज्ञानी थे, वे देह के पुनरूत्थान, स्वर्गदूतों के अस्तित्व, और आश्चर्यकर्मों पर विश्वास नहीं करते थे। बल्कि, वे जितनी बातों पर विश्वास नहीं करते थे, उससे अधिक बातों का इंकार करते थे।

सदूकियों का एक दल यीशु के पास आया और यीशु को अपने द्वारा गढ़ी गई एक कहानी इस तरह से बताने लगा कि पुनरूत्थान का सिद्धान्त हास्यास्पद प्रतीत हो। उन्होंने उसे देवर-ब्याह की व्यवस्था के बारे में याद दिलाया (व्य.वि. 25:5)। व्यवस्था कहती थी, कि यदि एक इस्राएली पुरुष **सन्तान** उत्पन्न किए बिना मर जाए तो यह अपेक्षित था कि **उसका भाई** उस विधवा (अपनी भाभी) से ब्याह करे ताकि इस्राएल में परिवार का नाम बना रहे और परिवार की सम्पत्ति परिवार में ही रहे।

22:25-28 उनकी पहेली में उन्होंने एक स्त्री के बारे में बताया जिसके पति की मृत्यु हो गई, उस स्त्री ने अपने पति के एक भाई से विवाह कर लिया। यह भाई भी मर गया, तो उसने अपने पहले पति के तीसरे भाई से विवाह किया - और इसी तरह से, उसने सातों भाइयों से विवाह कर लिया। सभी भाई मर गए, और अन्त में, **वह स्त्री भी मर गई**। उसके बाद फरीसियों ने वह प्रश्न दागा जिसे उन्होंने उस व्यक्ति को नीचा दिखाने के उद्देश्य से गढ़ा था जो स्वयं पुनरूत्थान है (यूहन्ना 11:25): **"सो जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी।"**

22:29 बुनियादी तौर पर, उनका यह तर्क था कि पुनरूत्थान का सिद्धान्त ऐसी समस्याएं खड़ी कर देता है जिनका हल सम्भव नहीं है, चूंकि यह सिद्धान्त तर्कसंगत नहीं है, यह सही सिद्धान्त नहीं है। यीशु ने उत्तर दिया कि समस्या पुनरूत्थान के सिद्धान्त में नहीं बल्कि उनके दिमागों में है; वे **पवित्रशास्त्र** और **परमेश्वर की सामर्थ** को नहीं जानते।

सबसे पहली बात, वे **पवित्रशास्त्र** को नहीं जानते। बाइबल में यह कहीं नहीं कहा गया है कि पति-पत्नी का सम्बन्ध स्वर्ग में भी बना रहेगा। यद्यपि पुरुष लोग पुरुष, और स्त्रियां स्त्रियों के रूप में ही पहिचाने जाएंगे, वे सभी इस अर्थ में स्वर्गदूतों के समान होंगे कि उनके बीच शादी-ब्याह नहीं होंगे।

दूसरी बात, वे **परमेश्वर की सामर्थ** को नहीं जानते थे। यदि परमेश्वर मिट्टी से मनुष्य की सृष्टि कर सकता है, तो क्या वह मिट्टी में बदल गए मृतकों को फिर से जीवित नहीं कर सकता और उन्हें महिमा की देह का रूप नहीं दे सकता?

22:30-32 उसके बाद प्रभु यीशु ने पवित्रशास्त्र से तर्क देते हुए यह दर्शाया कि पुनरूत्थान एक परम अनिवार्यता है। निर्गमन 3:6 में परमेश्वर ने अपने आप को **इब्राहीम . . . इसहाक, और याकूब का परमेश्वर** कहा है। तौभी यीशु ने यह ध्यान दिलाया, **"वह तो मरे हुओं का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।"** परमेश्वर ने इन तीनों के साथ वाचा बान्धी, परन्तु वे वाचा के पूर्ण रूप से पूरी होने से पहले ही मर गए। परमेश्वर अपने आप को इन तीन व्यक्तियों का परमेश्वर कैसे कह सकता है जिनकी देह कब्र में हैं? वह, जो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में कभी भी असफल नहीं होता इन तीनों से जो मर चुके हैं, की गई प्रतिज्ञाओं को कैसे पूरी करेगा? इसका सिर्फ एक ही उत्तर है - पुनरूत्थान।

22:33 इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि **लोग उसके उपदेश से चकित हुए:** हम स्वयं चकित हैं!

क. महान आज्ञा (22:34-40)

22:34-36 **जब फरीसियों ने सुना कि** यीशु ने **सदूकियों का** (जो फरीसियों के प्रतिद्वंदी थे) **मुँह बन्द कर दिया** है, तो वे उससे साक्षात्कार लेने के लिए आए। उनका प्रवक्ता एक **व्यवस्थापक** था, जिसने यीशु से पूछा कि **व्यवस्था में कौन सी बड़ी आज्ञा है।**

22:37,38 प्रभु यीशु ने निपुणता से परमेश्वर के प्रति मनुष्य के कर्तव्य का सारांश दिया और उसे सबसे **बड़ी और मुख्य आज्ञा** कही: **"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्ध के साथ प्रेम रख।"** मरकुस ने अपने वर्णन में इस वाक्य को भी जोड़ा है: "अपनी सारी शक्ति से" (मरकुस 12:30)। इसका अर्थ है कि मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि वह अपने अस्तित्व की सम्पूर्णता

से परमेश्वर के साथ प्रेम रखे। जैसा कि ध्यान दिलाया गया है: हृदय भावनात्मक स्वभाव को दर्शाता है, प्राण/आत्मा सांकल्पिक (संकल्प/इच्छाशक्ति सम्बन्धी) स्वभाव को, मन बौद्धिक स्वभाव को, और शक्ति शारीरिक स्वभाव को दर्शाता है।

22:39,40 उसके बाद यीशु ने आगे कहा कि मनुष्य का दूसरा कर्तव्य यह है कि वह अपने **पड़ोसी** से अपने समान **प्रेम** रखे। मसीही लेखक बार्नस् ने कहा है, ''परमेश्वर और मनुष्य से प्रेम रखना ही मसीही विश्वास का सार है: और इसका निर्माण करना ही मूसा, भविष्यद्वक्ताओं, उद्धारकर्ता, और प्रेरितों का कार्य रहा है।'' हमें बार बार इन शब्दों पर विचार करना चाहिए, **''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।''** हमें यह सोचना चाहिए कि हम अपने आप से कितना प्रेम रखते हैं, और हमारी कितनी गतिविधियां हमारे स्वयं की चिन्ता करने में और अपनी सुखसुविधाओं का प्रबन्ध करने के आसपास केन्द्रित रहती हैं। उसके बाद हमें यह कल्पना करने का प्रयास करना चाहिए कि यदि हमें इसी प्रेम को अपने पड़ोसियों (दूसरों पर) पर बरसा दें तो क्या होगा। उसके बाद हमें यह कर डालना चाहिए। इस प्रकार का आचरण स्वाभाविक नहीं है; यह ईश्वरीय स्वभाव है। सिर्फ वे ही जिन्होंने नए जन्म का अनुभव किया है ऐसा कर सकते हैं, और तभी ऐसा कर सकते हैं जब वे यह कार्य अपने द्वारा मसीह को करने दें।

ल. दाऊद का पुत्र दाऊद का प्रभु है (22:41-46)

22:41,42 **जब फरीसी** लोग व्यवस्थापक को यीशु द्वारा दिए गए उत्तर पर अचम्भा कर ही रहे थे, तो उसने उनके सामने एक उकसाने वाली समस्या ला दी। उसने उनसे पूछा, ''**मसीह के विषय में** वे **क्या समझते** हैं? **वह किसका सन्तान है**?''

अधिकांश फरीसी यह विश्वास नहीं करते थे कि यीशु ही मसीह है; वे अब भी मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसलिए यीशु उनसे यह नहीं पूछ रहा था कि ''तुम मेरे विषय में क्या समझते हो?'' (यद्यपि अवश्य ही यह प्रश्न भी इसमें निहित था)। वह सामान्य प्रश्न पूछ रहा था कि जब मसीह प्रगट होगा तो वह किसका पुत्र होगा।

उन्होंने सही उत्तर देते हुए बताया कि मसीह **दाऊद** का सन्तान होगा।

22:43,44 उसके बाद प्रभु यीशु ने भजन 110:1 को उद्धरित किया जहाँ दाऊद ने कहा था, **''प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं मेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूं।''** ''प्रभु'' शब्द का पहला उपयोग परमेश्वर पिता के लिए किया गया, और दूसरा उपयोग मसीह के लिए किया गया। इसलिए दाऊद ने मसीह को अपना प्रभु कहा।

22:45 अब यीशु ने प्रश्न को सामने लाया, **''भला जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा?''** इसका उत्तर यह है कि मसीह दाऊद का प्रभु भी है और उसका पुत्र भी है – वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है। परमेश्वर के रूप में, वह दाऊद का प्रभु है; और मनुष्य के रूप में, वह दाऊद का पुत्र है।

यदि फरीसियों में सीखने की आत्मा होती, तो वे यह समझ जाते कि यीशु ही मसीह है – दाऊद का पुत्र मरियम की वंश रेखा से, और परमेश्वर का पुत्र जैसे कि उसके वचन, कार्यों, और तौर-तरीकों से प्रगट होता था।

22:46 परन्तु उन्होंने इस तरह से समझना न चाहा। वे उसकी बुद्धि से पूरी तरह से चकरा गए, और प्रश्नों के द्वारा उसे उलझाने का प्रयास छोड़ दिया। इसके बाद से वे दूसरा तरीका अपनाएंगे – *हिंसा।*

म. बड़ी बड़ी बात करने और नीचा आचरण करने के सम्बन्ध में (23:1-12)

23:1-4 इस अध्याय में आरम्भिक पदों में, उद्धारकर्ता ने लोगों को **अपने चेलों** को **शास्त्री और फरीसी** लोगों के विरुद्ध सचेत किया। शास्त्री और फरीसी **मूसा की गद्दी** पर बैठते थे, अर्थात्, मूसा की व्यवस्था लोगों को सिखाते थे। सामान्यत:, उनकी शिक्षाएं विश्वसनीय थीं, परन्तु उनका चालचलन नहीं। उसका मत उनके आचरण से बेहतर था। वे बड़ी बड़ी बाते करते थे और नीचा आचरण करते थे। इसलिए यीशु ने कहा, **''. . . वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उनके से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।''**

वे लोगों पर व्यवस्था की कठिन कठिन मांगे थोपते थे (शायद व्यवस्था के वचनों की उनके द्वारा व्याख्या अतिश्योक्ति रहती थी), परन्तु स्वयं इन असहनीय भारीपन को उठाने में किसी की सहायता नहीं करते थे।

23:5 वे लोगों को दिखाने के लिए धार्मिक रीति-रिवाजों को पूरा करते थे, परन्तु उनके भीतर सच्चाई नहीं थी। उनके द्वारा व्यवस्था के वचनों को चमड़े की छोटी छोटी थैलियों में रख कर इन थैलियों को अपने माथे या बांह पर बान्धा जाना इसका एक उदाहरण था। परमेश्वर ने जब इस्राएलियों को यह आदेश दिया था कि वे उसके वचनों को अपने हाथों और आँखों के बीच में माथे पर एक चिन्ह के रूप में बान्धें (निर्ग. 13:9, 16; व्य.वि. 6:8; 11:18), तब परमेश्वर का आशय यह था कि व्यवस्था हमेशा उनके सामने रह कर उनकी गतिविधियों में उनका मार्गदर्शन करती रहे। उन्होंने इस आत्मिक आज्ञा को शाब्दिक और शारीरिक अर्थों में घटा कर रख दिया। चमड़े की छोटी छोटी थैलियों में पवित्रशास्त्र के स्थलों को बन्द कर, वे उसे अपने माथे और बांहों पर बान्ध लेते थे। उन्हें व्यवस्था का पालन करने की कोई परवाह नहीं थी जब तक, हास्यजनक दिखाई देने वाली इन थैलियों को पहन कर वे अति आत्मिक दिखाई देते हैं। व्यवस्था में यहूदियों को यह आदेश भी दिया गया था कि वे अपने वस्त्रों की छोर पर झालर लगाएं और उसमें नीला फीता बान्धें (गिनती 15:37-41; व्य.वि. 22:21)। इस प्रकार की विशेष सजावट का उद्देश्य यह था कि इसके द्वारा उन्हें यह स्मरण रहे कि वे विशेष जाति हैं, और उनका चालचलन अन्यजातियों से अलग होना चाहिए। फरीसियों ने आत्मिक शिक्षा को अनदेखा कर दिया और वे बड़े बड़े झब्बेदार वस्त्र पहन कर सन्तुष्ट थे।

23:6-8 वे अपना आत्ममहत्व **जेवनारों** में और **सभा में** आदर का स्थान पाने के लिए हाथ पैर मारने के द्वारा दर्शाते हैं। वे अपने अंहकार की तुष्टि **बाजारों में नमस्कार** कहलवाने और विशेषकर **रब्बी** (जिसका अर्थ होता है, ''मेरा महान गुरु'') कहलाने के द्वारा करते हैं।

23:9, 10 यहाँ पर प्रभु ने अपने चेलों को सचेत किया है कि वे उन विशिष्ठ पदनामों का अपने लिए प्रयोग न करें जिन पर सिर्फ परमेश्वर का अधिकार है। हमें रब्बी नहीं कहलवाना है क्योंकि **गुरु** सिर्फ एक ही है - मसीह। हमें किसी भी मनुष्य को **पिता** (आत्मिक अर्थ में - परमेश्वर पिता) नहीं कहना है; परमेश्वर हमारा **पिता** है। वेस्टोन ने इस संबंध पर बहुत ही गहरी टिप्पणी की है:

> मनुष्य का परमेश्वर के साथ सारभूत सम्बन्ध की यह एक घोषणा है। एक मसीही तीन बातों से मिलकर बनता है - वह क्या है, वह क्या विश्वास करता है, वह क्या करता है; सिद्धान्त, अनुभव, और व्यवहार। मनुष्य को अपने आत्मिक अस्तित्व के लिए तीन बातों की आवश्यकता होती है - जीवन, निर्देश, मार्गदर्शन; हमारे प्रभु ने सुसमाचार के इन सात शब्दों में यही बताया है - ''मैं ही मार्ग, सत्य, और जीवन हूँ'' . . .किसी भी व्यक्ति को पिता (आत्मिक अर्थ में- परमेश्वर पिता) के रूप में स्वीकार न करें, क्योंकि कोई भी मनुष्य आत्मिक जीवन नहीं दे सकता, न ही आत्मिक जीवन का पोषण कर सकता है; किसी भी व्यक्ति को निर्भ्रान्त शिक्षक के रूप में मान्य न करें; किसी भी व्यक्ति को आत्मिक निर्देशक का पद न दें; परमेश्वर और मसीह के साथ आपका सम्बन्ध उतना ही निकट है जितना कि किसी अन्य व्यक्ति के साथ होता है।[42]

उद्धारकर्ता के इन वचनों का अर्थ यह है कि परमेश्वर के राज्य में सारे विश्वासी भाईचारे के साथ बराबरी के सम्बन्ध में रहेंगे और कोई भी विशिष्ठ पदनाम के आधार पर किसी से बड़ा नहीं होगा। मसीही जगत में पाए जाने वाले आदरसूचक पदनामों की ओर ध्यान दें: रेव्हरेन्ड (आदरणीय), राइट रेव्हरेन्ड, फॉदर, और ऐसे ही अनगिनत नाम। यद्यपि ''डॉक्टर'' में कोई बुराई नहीं दिखाई देती परन्तु इसका अर्थ शिक्षक होता है (यह चेतावनी *आत्मिक* सम्बन्धों में स्पष्ट रूप से लागू होती है, बजाए इसके कि पेशेवर या शैक्षणिक सम्बन्धों के। उदाहरण के लिए, इस स्थल में यह नहीं कहा गया है कि एक बच्चा अपने पिता को पिता न कहे, न ही यह कहा गया है कि एक मरीज अपने चिकित्सक को डॉक्टर न कहे)। जहाँ तक सांसारिक सम्बन्धों की बात है, इसमें ''जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो'' का सिद्धान्त लागू होता है (रोमियों 13:7)।

23:11,12 एक बार फिर से इस सच्चाई में स्वर्ग के राज्य का क्रान्तिकारी चरित्र सामने आता है कि लोग जिसे महानता समझते हैं, सच्ची महानता ठीक इसके विपरीत है। यीशु ने कहा, **''जो तुम में बड़ा हो, वह**

तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।'' सच्ची महानता सेवा करने के लिए झुक जाती है। फरीसी जो अपने आप को ऊँचा उठाते हैं, वे नीचे किए जाएंगे। सच्चे चेले जो अपने आप को दीन करते हैं वे समय आने पर ऊपर उठाए जाएंगे।

न. शास्त्रियों और फरीसियों पर हाय (23:13–36)

प्रभु यीशु ने इसके बाद अपने दिनों के घमण्डी धार्मिक पाखण्डियों को दस बार हाय कहा। उनसे ऐसा करने के द्वारा उन्हें शाप नहीं दिया, परन्तु उनकी नियति पर दु:ख जताया है।

पहली **हाय** उनके हठीलेपन और अड़ंगामार–नीति के विरुद्ध कही गई है। उन्होंने **राज्य** में प्रवेश करने से स्वयं इंकार कर दिया, और उग्र होकर दूसरों के **प्रवेश** करने पर अड़ंगा डालते थे। यह विचित्र बात है, कि प्राय: धार्मिक अगुवे अनुग्रह के सुसमाचार के सबसे सक्रिय विरोधी होते हैं। वे हर एक बात को सह लेते हैं परन्तु उद्धार के सुसमाचार को सहन नहीं कर पाते। सांसारिक व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह का पात्र नहीं बनना चाहता और यह भी नहीं चाहता कि परमेश्वर दूसरों पर अनुग्रह करे।

23:14 दूसरी हाय[43] में उनके द्वारा **विधवाओ के घरों** को हथिया लेने और फिर **बड़ी देर** देर **तक प्रार्थना** कर इस पर परदा डालने के लिए उन्हें खरी खोटी सुनाई गई है। कुछ आधुनिक अप्रमाणिक मत (झूठी शिक्षा देने वाले) भी कुछ ऐसा ही तरीका अपनाते हैं, वे बूढ़ी विधवाओं को, या नासमझ विश्वासियों को अपने जाल में फँसा कर, उनकी सम्पत्ति ''कलीसिया'' के नाम करवा लेते हैं। भक्ति का दिखावा करने वाले ऐसे लोगों को **अधिक दण्ड मिलेगा।**

23:15 उनके विरुद्ध तीसरी हाय उनके द्वारा गलत दिशा में उत्साह दिखाने के लिए की गई है। वे किसी व्यक्ति को अपने मत में शामिल करने के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं, परन्तु एक बार जब वह उनके **मत में आ जाता है**, तो वे उसे अपने से **दूना** दुष्ट बना देते हैं। इसका आधुनिक उदाहरण अप्रमाणिक मतों का उत्साह है। एक ऐसा समूह जो अपने मत में एक व्यक्ति को शामिल करने के लिए 700 दरवाजे खटखटाने के लिए तैयार है; परन्तु इसका अन्तिम परिणाम बुराई है। जैसा कि किसी ने कहा है, ''सबसे अधिक मन फिराया हुआ व्यक्ति प्राय: सबसे अधिक टेढ़ा व्यक्ति बन जाता है।''

23:16–22 चौथी हाय, प्रभु उनके वाक्छल, या जानबूझ कर कपटपूर्ण तर्क देने के लिए उनकी निन्दा करता है। मन्नत पूरा करने से बचने के लिए उन्होंने तर्क देने का एक कपटपूर्ण तरीका गढ़ लिया था। उदाहरण के लिए, वे यह सिखाते थे कि यदि कोई व्यक्ति **मन्दिर** की शपथ खाता है, तो वह उस शपथ को पूरी करने के लिए बाध्य नहीं है, परन्तु यदि कोई व्यक्ति **मन्दिर के सोने की** शपथ खाता है, तो उसे वह मन्नत पूरी करना अनिवार्य है। वे यह भी कहते थे कि वेदी पर चढ़ाई गई भेंट की शपथ खाने पर हम उसे पूरा करने के लिए बाध्य हैं, जबकि सिर्फ वेदी की शपथ खाने से हम शपथ पूरी करने के लिए बाध्य नहीं हैं। इस तरह से वे सोने को परमेश्वर (मन्दिर परमेश्वर का निवासस्थान था) से और वेदी पर चढ़ाई गई भेंट (किसी प्रकार के धन) को वेदी से ऊँचा स्थान देते थे। वे आत्मिक बातों की तुलना में भौतिक बातों में अधिक रूचि रखते थे। वे देने (वेदी देने का स्थान है) की तुलना में लेने (भेंट) में अधिक रूचि लेते थे।

उन्हें **अन्धे अगुवे** सम्बोधित करते हुए यीशु ने उनके कुतर्कों की पोल खोल दी। मन्दिर का सोना तभी विशेष महत्व हासिल करता था जब यह परमेश्वर के निवासस्थान से जोड़ कर देखा जाता था। यह वेदी ही थी जो उस पर रखी वस्तुओं को मूल्यवान बनाती थी। जो लोग यह सोचते हैं कि सोना अपने आप में मूल्यवान है वे लोग अन्धे हैं; यह तभी मूल्यवान बनता है जब यह परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग में लाया जाता है। सांसारिक अभिप्रायों के लिए चढ़ाए गए भेंट मूल्यहीन होते हैं; जो भेंट प्रभु को या प्रभु के नाम से दिए जाते हैं उनमें अनन्त मूल्य होता है।

सच्चाई यह है कि ये फरीसी लोग जिस भी चीज़ की शपथ खाएं, इसमें परमेश्वर का नाम शामिल था, और वे उसे पूरी करने के लिए बाध्य थे। मनुष्य ऊपर से सही प्रतीत होने वाले तर्क देकर अपनी बाध्यताओं से नहीं बच सकता। शपथ खाने पर उसे पूरी करना आवश्यक है। बाध्यता से बचने के लिए तकनीकी बातों का हवाला देना व्यर्थ है।

23:23,24 पाँचवी **हाय** खोखले रीति-विधियों के विरुद्ध है। शास्त्री और फरीसी लोग अपने द्वारा उगाए जाने वाले सबसे सस्ते पौधों का दसवांश देने के प्रति अतिसावधान रहते थे। छोटी छोटी बातों में बारीकी से आज्ञाकारिता दिखाए जाने के लिए यीशु ने उनकी निन्दा नहीं की, परन्तु **न्याय**, **क्षमा** और विश्वासयोग्यता दर्शाने के समय घोर बेइमानी किए जाने पर उसने उनकी कड़ी भर्त्सना की। अपनी बात व्यक्त करने के लिए एक सटीक वाक्यालंकार का प्रयोग करते हुए, यीशु ने उनके विषय में कहा कि वे **मच्छर** को तो छानते हैं परन्तु **ऊँट** को निगल जाते हैं। मच्छर एक छोटा सा कीड़ा होता है जो अक्सर मीठे दाखमधु में गिर जाता है, दाखमधु को दातों के बीच में से चूसते हुए मच्छर को छाना जाता है। यह कितना हास्यपद है कि इतने महत्वहीन कीड़े को लेकर तो अतिसावधानी बरती जाती है, परन्तु पलस्तीन के सबसे बड़े अशुद्ध पशु को निगल लिया जाता है! फरीसी लोग छोटी छोटी बारीकियों के प्रति अतिचिन्तित रहते थे, परन्तु पाखण्ड, बेईमानी, क्रूरता, और लालच जैसे घोर पापों को पूरी तरह से अनदेखा कर देते थे। उन्होंने अपना सन्तुलन खो दिया था।

23:25,26 छठवीं **हाय** बाहरीपन से सम्बन्धित है। फरीसी लोग धार्मिकता और नैतिकता का बाहरी दिखावा करने से कभी नहीं चूकते थे, परन्तु उनके हृदय में **अन्धेर** और **असंयम** भरा था।[44] उन्हें **पहिले कटोरे और थाली को भीतर से** मांजना चाहिए, अर्थात्, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका हृदय मनफिराव और विश्वास के माध्यम से धोया गया है। तभी, और सिर्फ तभी, उनका बाहरी आचरण स्वीकारयोग्य होगा। व्यक्ति और व्यक्तित्व के बीच में एक अन्तर रहता है। हम व्यक्तित्व पर बल देने को प्रवृत्त होते हैं – हम लोगों को यह दिखाना चाहते हैं कि हम क्या हैं। परमेश्वर व्यक्ति पर बल देता है – हम वास्तव में क्या हैं। वह हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है (भजन 51:6)।

23:27,28 सातवीं **हाय** में भी बाहरीपन पर प्रहार किया गया है। छठवीं और सातवीं हाय के बीच में अन्तर यह है कि छठवीं हाय में प्रभु ने धनलोलुपता को छिपाने के लिए फटकार लगाई है, जबकि सातवीं हाय में **कपट और अधर्म** को छिपाने के लिए लताड़ा है।

कब्रों पर इसलिए चूना फेरा जाता है ताकि यहूदी लोग अनजाने में उसके सम्पर्क में आकर अशुद्ध न हो जाएं। यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों को **चूनी फिरी हुई कब्रों** के समान बताया, जो बाहर से तो स्वच्छ दिखाई देती हैं परन्तु भीतर सड़ान्ध भरी है। मनुष्यों का विचार था कि इन धार्मिक अगुवों के साथ सम्पर्क में आने से व्यक्ति पवित्र बनता जाता है, परन्तु वास्तव में वे अशुद्ध हो जाते थे क्योंकि ये लोग पाखण्ड और अधर्म से भरे हुए थे।

23:29-30 अन्तिम **हाय** एक ऐसे रवैये के लिए कही गई है जिसे हम 'बाहर से श्रद्धा और भीतर से हत्या' कह सकते हैं। शास्त्री और फरीसी ऐसा दिखावा करते थे कि वे पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं** की **कब्रें** निर्मित करने या उनकी मरम्मत करने के द्वारा उन भविष्यद्वक्तओं का आदर करेंगे, और साथ ही उनके स्मारकों में फूल-माला अर्पित करेंगे। यादगारी के भाषणों में वे कहा करते थे कि वे **भविष्यद्वक्ताओं** की हत्या में अपने पूर्वजों के भागीदार **न होते**।

23:31 यीशु ने उनसे कहा, **''इस से तो तुम अपने पर आप की गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों की सन्तान हो।''** परन्तु वे यह गवाही किस तरह से दे रहे हैं? पिछले पद को पढ़ कर लगभग साफ-साफ ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने आप को अपने उन पूर्वजों से पृथक कर लिया जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की। पहली बात, उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि उनके पूर्वजों ने, जिनके वे शारीरिक सन्तान हैं, भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाया। परन्तु यीशु ने **सन्तान** शब्द का उपयोग उन लोगों के लिए किया जो चरित्र में एक दूसरे के समान हैं। वह जानता था कि यद्यपि वे भविष्यद्वक्ताओं की कब्रों को सजा रहे हैं, परन्तु उसकी हत्या का षड्यंत्र रच रहे हैं। दूसरी बात, मृत भविष्यद्वक्ताओं के प्रति इस प्रकार का सम्मान दर्शाने के द्वारा, वे यह जता रहे हैं, ''हम सिर्फ मृत भविष्यद्वक्ताओं को पसन्द करते हैं।'' इस अर्थ में भी वे अपने पूर्वजों के सन्तान थे।

23:32 उसके बाद हमारे प्रभु ने आगे कहा, **''सो तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो।''** पूर्वजों ने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या करने के द्वारा घड़े को आधा भर दिया है, शास्त्री और फरीसी शीघ्र ही यीशु और उसके अनुयायियों की हत्या कर उसे मुँह तक भर देंगे, और इस तरह से उनके पूर्वजों ने जो कुछ आरम्भ किया था, उसे वे उसके चरमोत्कर्ष तक ले जाएंगे।

23:33 इस बिन्दु पर परमेश्वर का मसीह गरजते हुए कहता है, **''हे साँपों, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे?''** क्या देहधारी प्रेम इस तरह के अत्यंत कटु वचन बोल सकता है? जी हाँ, क्योंकि सच्चे प्रेम को न्यायसंगत और पवित्र होना आवश्यक है। यीशु के विषय में यह आम धारणा कि वह अहानिकर सुधारक था जिसके भीतर प्रेम के सिवाय और कोई भावना नहीं थी, बाइबल के अनुसार नहीं है। प्रेम दृढ़ रहे, और अवश्य ही न्यायसंगत रहे।

इस बात की ओर ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा कि भर्त्सना के इन शब्दों को धार्मिक अगुवों के लिए कहा गया था, पियक्कड़ों और पापियों को नहीं। इस सार्वभौमिक युग में *(इक्यूमैंनिकल एज़)* जब अनेक सुसमाचारवादी लोग मसीह के क्रूस के प्रकट शत्रुओं के साथ मिल कर काम कर रहे हैं, यीशु के इस उदाहरण पर चिन्तन करना, और यहोशापात द्वारा येहू को कहे गए वचनों की ओर ध्यान देना उपयुक्त होगा, ''क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिए?'' (2 इतिहास 19:2)।

23:34,35 यीशु ने न सिर्फ अपनी मृत्यु को पहले से देख लिया; बल्कि उसने शास्त्रियों और फरीसियों को स्पष्ट रूप से यह बता भी दिया कि वे कुछ ऐसे सन्देशवाहकों की भी हत्या कर देंगे जिन्हें वह भेजनेवाला है – **भविष्यद्वक्ताओं, और बुद्धिमानों और शास्त्रियों** को। कुछ लोग जो शहीद होने से बच जाएंगे उन्हें **सभाओं** में कोड़ा लगाया जाएगा और **एक नगर से दूसरे नगर** उन्हें सताया जाएगा। इस प्रकार के इस्राएल के धार्मिक अगुवे शहादत के इतिहास में अपने विरुद्ध दोषों का पहाड़ खड़ा कर लेंगे। उन पर **हाबील से लेकर . . . जकरयाह तक** (जकरयाह का नाम 2 इतिहास 24:20,21 में उल्लेखित है जो कि इब्रानी बाइबल के क्रम में पुराना नियम की अन्तिम पुस्तक है, यह वह जकरयाह नहीं है जो पुराना नियम की जर्कयाह की पुस्तक का लेखक है) **जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया** उन के लोहू का दोष पड़ेगा।

23:36 भूतकाल के सारे दोष **इस समय के लोगों** (यीशु के समय की पीढ़ी) पर आएगा, मानों पहले बहाए गए निर्दोषों का सारा लोहू किसी तरह से हमारे निष्पाप उद्धारकर्ता की मृत्यु में मिल जाता है और इस मृत्यु में अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचता है। जिस जाति ने अपने मसीह से बैर किया और उसे बिना कारण एक अपराधी के क्रूस पर कीलों से जड़ दिया उस जाति पर एक प्रचण्ड दण्ड उण्डेला जाएगा।

ओ. यीशु यरूशलेम के लिए विलाप करता है (23:37–39)

23:37 यह अत्यंत अर्थपूर्ण है कि जिस अध्याय में, दूसरे अन्य अध्यायों की तुलना में, यीशु द्वारा सबसे अधिक हाय कहा गया है, उसी अध्याय का समापन यीशु के आँसुओं के साथ होता है! फरीसियों की घोर निन्दा करने के बाद, वह अवसर खो चुके नगर के लिए करुण विलाप करता है। नाम के दोहराव – **''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम''** – में ऐसी भावनाएं निहित हैं जिन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता। उसने **भविष्यद्वक्ताओं** को मार डाला और परमेश्वर के सन्देशवाहकों को पत्थरवाह किया, तौभी प्रभु ने उससे प्रेम किया, और उसके बच्चों को सुरक्षा और प्रेम के साथ एकत्रित किया – **जैसे मुर्गी बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है।**

23:38 अपने विलाप का समापन करते हुए, प्रभु यीशु ने कहा, **''देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है।''** घर प्राथमिक रूप से यहाँ पर मन्दिर को कहा गया है, परन्तु इसमें यरूशलेम और इस्राएली राष्ट्र का अर्थ भी निहित हो सकता है। उसकी मृत्यु और उसके दूसरे आगमन के बीच के समय में अविश्वासी इस्राएल उसे न देखेगा (उसके पुनरूत्थान के बाद सिर्फ विश्वासियों ने उसे देखा)।

23:39 पद 39 में दूसरे आगमन की ओर संकेत किया गया है जब इस्राएल का एक विश्वासी भाग उसे अपने मसीह–राजा के रूप में स्वीकार करेगा। यह स्वीकारोक्ति इन वचनों में पाई जाती है, **''धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।''**

इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि जिन्होंने मसीह की हत्या की उन्हें दूसरा मौका मिलेगा या नहीं। वह यरूशलेम के बारे में बोल रहा था और इस तरह से, लाक्षणिक शब्दों में, यरुशलेम के निवासियों और सामान्य रूप से इस्राएल के विषय में बोल रहा है। अगली बार यरूशलेम के निवासी उसे उसकी मृत्यु के बाद तब देखेंगे

जब वे उसे इस तरह से ताकेंगे, अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिए ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते पीटते हैं (जक. 12:10)। यहूदी समझ के अनुसार एकलौते पुत्र की मृत्यु पर होने वाले शोक से भयानक और कोई शोक नहीं होता।

XIII. राजा द्वारा जैतून पर्वत पर उपदेश (24, 25 अध्यायों में)

24 और 25 अध्याय में जैतून पर्वत पर दिया गया उपदेश पाया जाता है, प्रभु यीशु ने जैतून पर्वत पर से इस महत्वपूर्ण उपदेश को दिया था। यह उपदेश पूरी तरह से भविष्य की बातों से सम्बन्धित है; यह क्लेशकाल और प्रभु के दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है। प्राथमिक रूप से, यह इस्राएली जाति से सम्बन्धित है, यद्यपि यह इस्राएल मात्र के लिए नहीं है। भविष्य में होने वाली जिन घटनाओं के बारे में इसमें वर्णन है वे घटनाएं स्पष्टत: पलस्तीन में ही घटेंगी; उदाहरण के लिए, ''तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं'' (24:16)। इसकी पृष्ठभूमि यहूदी है; उदाहरण के लिए, ''और प्रार्थना किया करो: कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े'' (24:20)। चुने हुए (24:22) *चुने हुए यहूदियों* को कहा गया है, कलीसिया को नहीं। कलीसिया का उल्लेख इस उपदेश की न तो भविष्यद्वाणी में पाया जाता है और न ही इसके दृष्टान्तों में, इस बात को हम आगे समझाने की कोशिश करेंगे।

अ. यीशु ने मन्दिर के विनाश की भविष्यद्वाणी की (24:1,2)

इस खण्ड का आरम्भ इस अर्थपूर्ण वाक्य से होता है कि **यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था**। यीशु का जाना विशेष कर उसके उन शब्दों के प्रकाश में काफी अर्थपूर्ण था जो उसने अभी अभी कहा था, ''. . .तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है'' (23:38)। यह यहेजकेल द्वारा वर्णित यरूशलेम मन्दिर से यहोवा के तेज के उठ जाने के वर्णन की याद दिलाता है (यहेजकेल 9:3; 10:4; 11:23)।

चेले चाहते थे कि प्रभु उनके समान मन्दिर निर्माण की कलाकारी की सराहना करे। उन पर अनन्त सुन्दरता की बजाए क्षणिक सुन्दरता हावी थी, वे वस्तु की बजाए वस्तु की छाया में अधिक रूचि ले रहे थे। यीशु ने यह चेतावनी दी कि यह भवन पूरी तरह से नाश कर दिया जाएगा और इसका एक **पत्थर** भी दूसरे **पत्थर** पर रखा हुआ नहीं पाया जाएगा। रोमी जनरल तीतुस ने मन्दिर को बचाने का असफल प्रयास किया था, परन्तु उसके सैनिकों ने इसमें आग लगा दी थी, और इस तरह से मसीह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई थी। जब सोने से की गई सजावट आग में पिघल गई तो सोना पत्थरों के बीच से रिसने लगा। इस सोने को निकालने के लिए सैनिकों ने एक एक कर के पत्थरों को हटा दिया, ठीक उसी तरह जैसे हमारे प्रभु ने भविष्यद्वाणी की थी। यह दण्ड सन् 70 में दिया गया जब तीतुस के आधीन रोमी लोगों ने यरूशलेम को नाश कर दिया था।

ब. क्लेशकाल का पूर्वार्द्ध (24:3–14)

24:3 जब यीशु **जैतून पहाड़ पर** बैठा था, तो उसके **चेलों ने अलग उसके पास आकर** उससे तीन प्रश्न पूछा:

1. **ये बातें कब** घटेंगी, अर्थात्, मन्दिर कब नाश किया जाएगा?

2. प्रभु के **आने** का **क्या चिन्ह** होगा; अर्थात्, जब वह पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए आएगा तो उसके पहले कौन कौन सी अलौकिक घटनाएं घटेंगी?

3. **जगत के अन्त** का क्या चिन्ह होगा; अर्थात्, उसके महिमामय राज्य के ठीक पहले कौन सी चीज़ इस जगत के अन्त की घोषणा करेगी? (दूसरा और तीसरा प्रश्न मूल रूप से एक ही है।)

हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि इन यहूदी चेलों की सोच पृथ्वी पर मसीह के महिमामय युग के आसपास ही घूम रही थी। वे मसीह द्वारा कलीसिया को लेने के लिए आने के बारे में नहीं सोच रहे थे; वे उसके आगमन के इस पहलू के बारे में शायद ही थोड़ा बहुत जानते रहे हों। वे यह अपेक्षा कर रहे थे कि वह सामर्थ और महिमा के साथ अपने शत्रुओं को नाश करने और संसार पर राज्य करने के लिए आएगा।

साथ ही हमें यह बात भी स्पष्ट रूप से समझ लेना है कि वे *जगत* के अन्त के बारे में बात नहीं कर रहे थे, परन्तु **युग की समाप्ति** के बारे में बात कर रहे थे (यूनानी; *आयोन*)।

उनके पहले प्रश्न का उत्तर सीधे सीधे नहीं दिया गया। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि उद्धारकर्ता ने यरूशलेम पर सन् 70 के आक्रमण (लूका 21:20–24) और आने वाले दिनों में इससे मिलते जुलते एक अन्य आक्रमण को एक साथ मिला कर बताया। भविष्यद्वाणी के अध्ययन में, हम प्राय: यह देखते हैं कि प्रभु एक आरम्भिक, आंशिक पूर्णता के बारे में बात करते करते एकदम से अन्तिम पूर्णता की ओर कुछ इस तरह से बढ़ता है कि समझ में नहीं आता कि कब वह एक चरण से दूसरे पर गया।

दूसरे और तीसरे प्रश्न का उत्तर अध्याय 24 के 4–44 पदों में दिया गया है। इन पदों में क्लेशकाल के सात वर्षों का वर्णन किया गया है जो मसीह के महिमामय आगमन से पहले आएंगे। पहले साढ़े तीन वर्ष का वर्णन 4–14 पदों में किया गया है। अन्तिम साढ़े तीन वर्ष का वर्णन, जिसे महाक्लेशकाल और याकूब के संकट का समय (यिर्म. 30:7) कहा गया है, पृथ्वी पर के लोगों के लिए अभूतपूर्व क्लेश का समय होगा।

क्लेशकाल के पूर्वार्द्ध में जो परिस्थितियां निर्मित होंगी वे एक हद तक मानवीय इतिहास में हमेशा से बनी रही हैं, परन्तु इस अवधि के दौरान इसकी तीव्रता बहुत अधिक बढ़ जाएगी। कलीसिया के लोगों पर भी क्लेश आने के बारे में कहा गया है (यूहन्ना 16:33), परन्तु यह क्लेश उस क्लेश से बहुत अलग होगा जो उस संसार पर उण्डेला जाएगा जिसने परमेश्वर के पुत्र को ठुकरा दिया।

हम ऐसा विश्वास करते हैं कि इससे पहले कि परमेश्वर के क्रोध का दिन आरम्भ हो (1 थिस्स. 1:10; 5:9; 2 थिस्स. 2:1–12; प्रका. 3:10), कलीसिया इस संसार से उठा ली जाएगी (1 थिस्स. 4:13–18)।

24:4,5 क्लेशकाल के पूर्वार्द्ध के दौरान, झूठे मसीहा प्रगट होंगे जो लोगों को बहकाने में सफल हो जाएंगे। वर्तमान में बहुत से अप्रमाणिक मतों का उभरना इसका पूर्वसंकेत हो सकता है, परन्तु यह इसकी पूर्णता नहीं है। ये झूठे धार्मिक अगुवे वे यहूदी होंगे जो यह दावा करेंगे कि वे ही **मसीह** हैं।

24:6,7 उस समय **लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा** सुनाई देगी। **जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा**। ऐसा सोचना सहज है कि हम आज इन बातों को पूर्ण होते हुए देख रहें हैं, परन्तु जो होने वाला है उसकी तुलना में, आज जो हम देख रहे हैं, वह मात्र एक झलक ही है। वास्तव में परमेश्वर की समय-सारणी के अनुसार अगली घटना कलीसिया का बादलों में उठाया जाना होगा (यूहन्ना 14:1–6; 1 कुरि. 15:51–57)। इससे पहले और कोई भविष्यद्वाणी पूरी नहीं होगी। जब कलीसिया इस संसार से बादलों पर प्रभु से अपने मिलन के लिए उठा ली जाएगी, उसके बाद परमेश्वर की भविष्यद्वाणी की घड़ी चलने लगेगी और शीघ्र ही ये चिन्ह प्रगट होने लगेंगे। **जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईंडोल होंगे**। आज भी संसार के अगुवे जनसंख्या के लगातार बढ़ने के कारण अकाल की आशंका को लेकर चिंतित हैं। परन्तु यह लड़ाइयों के कारण उत्पन्न आपूर्ति में कमी से अत्यंत भयानक हो जाएगा।

भुईंडोल लगातार तेजी से हमारा ध्यान अपनी ओर खींचते जा रहे हैं – न सिर्फ ऐसे भुईंडोल जो वर्तमान में आ रहे हैं, परन्तु ऐसे भुईंडोल भी जिनकी भविष्य में आने की प्रबल आशंका है। एक बार फिर से हम यह ध्यान दिलाना चाहेंगे कि आज हम जिन भुईंडोलों के विषय में सुनते और जानते हैं, वे प्रभु यीशु की भविष्यद्वाणी की पूर्णता के रूप में आने वाले भुईंडोलों की तुलना में हवा में उड़ रही भूसी के समान ही हैं।

24:8 पद 8 में इस अवधि को स्पष्ट रूप से **पीड़ाओं का आरम्भ** के रूप में पहचाना गया है – जच्चाओं की पीड़ा का आरम्भ जो इस्राएल के मसीह-राजा के नेतृत्व में एक नए तंत्र को सामने लाएगा।

24:9,10 क्लेशकाल के दौरान विश्वासयोग्य विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से कठिन परीक्षा का अनुभव करना पड़ेगा। राष्ट्र-राष्ट्र के लोग परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के विरुद्ध में कड़वाहट और घृणा का अभियान चलाएंगे। न सिर्फ विश्वासियों को दीवानी *(सिविल)* और धार्मिक कचहरियों में मुकद्दमों का सामना करना पड़ेगा (मरकुस 13:9), बल्कि अनेक लोग यीशु का इंकार न करने के कारण शहीद हो जाएंगे। यद्यपि इस प्रकार की परीक्षाएं मसीही गवाही के इतिहास में हमेशा से ही आती रहीं हैं, परन्तु यहाँ पर विशेष रूप से उन 1,44,000 यहूदी विश्वासियों को ध्यान में रखकर ये बातें कही गई हैं जो इस अवधि में एक विशेष सेवकाई को

पूरी करेंगे।

अनेक लोग कष्ट या मृत्यु स्वीकार करने की बजाए प्रभु को त्याग देंगे। परिवार के सदस्य अपने ही रिश्तेदारों का भेद खोल देंगे और उन्हें सताने वाले क्रूर लोगों के हाथों पकड़वा देंगे।

24:11 बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और लोगों को झुण्ड के झुण्ड **भरमाएंगे**। उन्हें झूठे मसीह समझने से बचना है जिनका उल्लेख पद 5 में किया गया है। **झूठे भविष्यद्वक्ता** यह दावा करेंगे कि वे परमेश्वर की ओर से बोल रहे हैं। उन्हें दो तरीकों से पहचाना जा सकता है: उनकी भविष्यद्वाणियां हमेशा पूरी नहीं होंगी, और उनकी शिक्षाएं मनुष्य को हमेशा सच्चे परमेश्वर से दूर ले जाएंगी। झूठे भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख हमारे इस कथन की पुष्टि करता है कि क्लेशकाल प्राथमिक रूप से यहूदियों के लिए होगा। **झूठे भविष्यद्वक्ता** इस्राएली जाति से सम्बन्धित हैं; कलीसिया को झूठे शिक्षकों से खतरा रहता है (2 पतरस 2:1)।

24:12 दुष्टता इतनी अनियंत्रित हो जाएगी कि आपसी मानवीय स्नेह लगातार कम होता जाएगा। प्रेमहीनता के कार्य आम बात हो जाएगी।

24:13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। स्पष्टत:, इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य की आत्मा उस समय उनके धीरज के द्वारा बचाई जाएगी; बाइबल में हमेशा यही बताया गया है कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान के रूप में मिलता है, और हमारे बदले मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान पर विश्वास लाने के माध्यम से हमें प्राप्त होता है। न ही इसका अर्थ यह है कि जितने लोग धीरज धरेंगे वे भौतिक हानि से बच जाएंगे; हम पहले ही यह देख चुके हैं कि अनेक विश्वासी शहीद हो जाएंगे (पद 9)। यह एक सामान्य कथन है कि जितने लोग सताव सहते हुए भी अपने विश्वास को नहीं त्यागेंगे, वे मसीह के दूसरे आगमन के समय छुड़ाए जाएंगे। हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि विश्वास त्याग देने से हम बच जाएंगे या हम सुरक्षित रहेंगे। सिर्फ **उनका उद्धार** होगा जिनका विश्वास सच्चा है। यद्यपि जिस तरह के विश्वास के माध्यम से हमारा उद्धार होता है वह विश्वास भी बीच बीच में डगमगाता है परन्तु इस विश्वास में स्थायी विश्वास के गुण होते हैं।

24:14 इस अवधि के दौरान **राज्य के सुसमाचार** का प्रचार संसार भर में किया जाएगा **कि सब जातियों पर गवाही हो**। जैसा कि 4:23 की टिप्पणी में यह समझाया गया है, **राज्य का यह सुसमाचार** इस बात का एक सुखद सुसमाचार है कि मसीह अपना राज्य स्थापित करने के लिए आ रहा है, और क्लेशकाल के दौरान जो उस पर विश्वास करेगा वह मसीह के हजार वर्ष के शासन की आशीषों का भागीदार बनेगा।

पद 14 को प्राय: यह दर्शाने के लिए गलत उपयोग किया जाता है कि यीशु मसीह अपनी कलीसिया को लेने के लिए वर्तमान समय में किसी भी क्षण नहीं आ सकता क्योंकि अभी तक बहुत से लोगों ने सुसमाचार नहीं सुना है। इस समस्या का समाधान हो जाता है जब हम यह ध्यान देते हैं कि यह बात उसके पवित्र लोगों *के साथ* उसके आने के सन्दर्भ में कही गई है, उसके पवित्र लोगों *के लिए* नहीं। और यह *राज्य* के सुसमाचार के सन्दर्भ में कहा गया है *परमेश्वर के अनुग्रह* के सुसमाचार के विषय में नहीं (4:31 पर टिप्पणी देखें)।

3–14 पदों और प्रकाशितवाक्य 6:1–11 में दी गई घटनाओं के बीच में एक ध्यान देनेयोग्य समानान्तरता है। *श्वेत* घोड़े पर सवार – **झूठे मसीह**; *लाल* घोड़े पर सवार –**लड़ाइयां**; *काले* घोड़े पर सवार – **अकाल**; *पीले* घोड़े पर सवार – **मार डालेंगे** (मृत्यु)। वेदी के नीचे की आत्माएं शहीदों की हैं। प्रकाशितवाक्य 6:12–17 में जिन घटनाओं का वर्णन है वे मत्ती 24:19–31 में दी गई घटनाओं से जुड़ी हुई हैं।

स. महाक्लेशकाल (24:15–28)

24:15 इस बिन्दु पर हम क्लेशकाल के बीच के समय के विषय देखते हैं। पद 15 की तुलना दानिय्येल 9:27 के साथ करने से हमें यह ज्ञात होता है। दानिय्येल ने यह भविष्यद्वाणी की है कि सत्तर सप्ताहों के बीच में, अर्थात्, प्रथम साढ़े तीन वर्ष के अन्त में, पवित्रस्थान, अर्थात्, यरूशलेम में एक मूर्ति की स्थापना की जाएगी। सभी लोगों को आदेश दिया जाएगा कि वे इस घृणित मूर्ति की उपासना करें। इस आदेश का पालन न किए जाने पर मृत्यु दण्ड दिया जाएगा (प्रका. 13:15)।

सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के

द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे) . . .। मूर्ति की स्थापना किया जाना परमेश्वर का वचन जानने वालों के लिए इस बात का संकेत होगा कि महाक्लेशकाल आरम्भ हो चुका है। ध्यान दें कि प्रभु चाहता है कि जो भविष्यद्वाणी को **पढ़े** वह इसे **समझे**।

24:16 जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं; यरूशलेम के आसपास रहने से, उनके द्वारा मूर्ति के आगे झुकने से किया गया इंकार, आसानी से पकड़ में आ जाएगा।

24:17–19 शीघ्रता करना अनिवार्य होगा। यदि एक व्यक्ति **कोठे** पर बैठा हो, तो वह अपनी सारी सम्पत्ति पीछे छोड़ दे। अपनी सम्पत्ति बटोरने में समय गंवा देने का प्रयास जीवन के बदले मृत्यु का कारण बन जाएगा। जो मनुष्य **खेत** में काम कर रहा हो वह **अपना वस्त्र उठाने** के लिए वहां तक भी न लौटे, जहाँ उसने अपने कपड़ों को उतार कर रखा है। **गर्भवती** स्त्रियां और **दूधपिलाती** माताओं के लिए यह विशेष रूप से अधिक हानिकारक होगा – उनके लिए तेजी से भाग कर बचना कठिन होगा।

24:20 विश्वासी लोग यह प्रार्थना करें कि यह संकट **जाड़े** के समय में न आए जो कि यात्रा की कठिनाइयों को और बढ़ा देता है, क्योंकि वे व्यवस्था के द्वारा तय की गई दूरी तक सीमित होकर यात्रा कर पाएंगे (निर्ग. 16:29)। सब्त के दिन जितनी दूरी तय करने के लिए अनुमति है, उतनी दूरी तय कर अपने आप को खतरे के क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

24:21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। यह वर्णन बताता है कि अब तक इतिहास में जितनी भी परीक्षाएं, सामूहिक हत्याकाण्ड, नरसंहार, और जातिसंहार हुए हैं, वे इस क्लेश में शामिल नहीं हैं। इस भविष्यद्वाणी की पूर्णता इससे पहले के किसी भी सताव में पूर्ण नहीं हो सकती क्योंकि यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि इसका अन्त मसीह के दूसरे आगमन के साथ होगा।

24:22 क्लेशकाल की तीव्रता इतनी अधिक होगी कि **यदि वे दिन घटाए न जाते** तो किसी का भी बचना सम्भव नहीं होगा। इसका अर्थ शायद यह है कि परमेश्वर आश्चर्यजनक रीति से दिन के घण्टों को कम कर देगा – क्योंकि दिन के समय ही अधिकांश लड़ाइयां और नरसंहार होते हैं। **चुने हुओं के कारण**, (जिन्होंने क्लेशकाल के दौरान प्रभु यीशु को ग्रहण किया है) प्रभु समय से पहले अन्धेरा कर राहत देगा।

24:23–26 पद 23 से 24 में **झूठे** मसीह और **झूठे भविष्यद्वक्ता**(ओं) के विरुद्ध में नए सिरे से चेतावनी दी गई है। संकट के वातावरण में, यह अफवाहें फैलेंगी कि मसीह किसी गुप्त स्थान पर है। इस प्रकार की अफवाहों का उपयोग उन लोगों को फँसाने के लिए किया जा सकता है जो निष्ठा और स्नेह के साथ मसीह की बाट जोह रहे हैं। इसलिए प्रभु अपने सारे अनुयायियों को यह चेतावनी देता है कि वे स्थानीय स्तर पर या गुप्त रूप से मसीह के प्रगट होने की अफवाह पर ध्यान न दें। यहाँ तक कि वे भी आश्चर्यकर्म दिखाएंगे, आवश्यक नहीं है कि परमेश्वर की ओर से हों; आश्चर्यकर्म शैतानी शक्तिओं की ओर से किए जा सकते हैं। पाप के मनुष्य को शैतानी शक्तियां दी जाएंगी कि वह आश्चर्यकर्म करे (2 थिस्स. 2:9–10)।

24:27 मसीह के आगमन के विषय में सब कुछ सुस्पष्ट है: यह अचानक होगा, या सार्वजनिक होगा, यह विश्वव्यापी होगा, और यह महिमामय होगा। **बिजली** की तरह यह तुरन्त हो जाएगा और इसे स्पष्ट रूप से सब लोग देख सकेंगे।

24:28 और कोई भी नैतिक भ्रष्टाचार उसके कोप और दण्ड से नहीं बच पाएगा। **जहाँ लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे**। लोथ यीशु का इंकार कर देने वाले यहूदियों, 'मसीहियों', और संसार के सारे तंत्र को दर्शाता है जो परमेश्वर और मसीह के विरुद्ध लामबन्ध हैं। **गिद्ध** परमेश्वर के दण्ड का सूचक है, मसीह के प्रगट होने के साथ खुलकर दण्ड दिया जाएगा।

द. दूसरा आगमन (24:29–31)

24:29 महाक्लेशकाल के समापन पर आकाश में भयानक खलबली मचेगी। **सूर्य अंधियारा हो जाएगा**, और चूंकि चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य के प्रकाश का परावर्तन मात्र है, **चान्द** भी **प्रकाश** देना बन्द कर देगा। तारे आकाश से गिरने लगेंगे और ग्रह अपने पथ से हटा दिये जाएंगे। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि, आकाश में ऐसी भयानक खलबली मचने से पृथ्वी के मौसम, ज्वारभाटाओं, और ऋतुओं पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

वेलिकोवस्की ने इस बात का वर्णन करने का प्रयास किया है कि यदि एक आकाशमण्डल की किसी चीज़ के पृथ्वी के पास आने के कारण पृथ्वी अपनी धुरी से झुकने लगे तो क्या हो सकता है। यह इस बात की एक हल्की झलक के समान है कि आकाश में महाक्लेशकाल के समापन के समय खलबली मचने से क्या हो सकता है:

> उस क्षण एक भूकम्प से पृथ्वी थरथरा जाएगी। हवा और पानी जड़त्व के द्वारा लगातार गतिमान रहेंगे; तूफान पृथ्वी भर में सब कुछ उड़ा देगा, और समुद्र का जल महाद्वीपों में आ जाएगा, और अपने साथ कंकड़, रेत, और समुद्री जीव जन्तुओं को भूमि पर लाकर फेंक देगा। गर्मी बढ़ने लगेगी, चट्टानें पिघलने लगेंगी, ज्वालामुखी फूट पड़ेंगे। फूटी हुई धरती की दरारों में लावा बहने लगेगा और यह एक बहुत विशाल क्षेत्र में फैल जाएगा। समतल मैदानों में पहाड़ बन जाएंगे और पहाड़ों पर भी पहाड़ बन जाएंगे, जिससे भ्रंश और दरारें बन जाएंगी। झीलें उलट कर खाली हो जाएंगी, नदियां अपने तल से हट जाएंगी; भूमि के विशाल क्षेत्र अपने सारे निवासियों के साथ समुद्र के नीचे चले जाएंगे। जंगलों में आग लग जाएगी और तूफान तथा उफनते हुए समुद्र पेड़ों की शाखाओं और जड़ों को जमीन से झटके से खींच कर बड़े बड़े ढेर बना देंगे। समुद्र मरूस्थलों में परिवर्तित हो जाएंगे, और उनका जल इधर उधर बहने लगेगा।[45]

24:30 तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देखा। हमें यह नहीं बताया गया है कि यह **चिन्ह** क्या होगा। उसके पहले आगमन के समय आकाश में एक चिन्ह दिखाई दिया था – तारा। शायद आश्चर्यकर्म के रूप में एक तारे के चिन्ह के द्वारा उसके दूसरे आगमन की घोषणा भी की जाएगी। कुछ लोगों का मानना है कि **मनुष्य का पुत्र** स्वयं यह चिन्ह होगा। इसका अर्थ चाहे जो भी हो, जब यह प्रगट होगा तो सब लोगों को यह स्पष्ट हो जाएगा। **पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे** – नि:सन्देह इसलिए क्योंकि उन्होंने उसे ठुकरा दिया था। परन्तु प्राथमिक रूप से *भूमि*[46] के गोत्र विलाप करेंगे – इस्राएल के बारह गोत्र। ''तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्हों ने बेधा है, और उसके लिए ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते–पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिए करते हैं'' (जक. 12:10)।

तब **''मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।''** यह क्या ही अद्‌भुत क्षण होगा! जिस व्यक्ति पर थूका गया था और जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था उसे जीवन और महिमा के प्रभु के रूप में ऊँचा उठाया जाएगा। नम्र और दीन यीशु स्वयं यहोवा के रूप में प्रगट होगा। बलिदान का मेम्ना विजयी सिंह की नाई उतरेगा। नासरत का तुच्छ जाना गया बढ़ई राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में आएगा। आकाश के बादल उसके रथ होंगे। वह शाही सामर्थ और वैभव लिए हुए आएगा – यह वह क्षण होगा जिसके लिए सृष्टि हजारों वर्ष से कराह रही है।

24:31 जब वह नीचे उतरेगा, तब **वह . . .अपने दूतों को** सारी पृथ्वी भर में **भेजेगा** कि वे **उसके चुने हुओं** – विश्‍वासी इस्राएल – **को** पलस्तीन देश में **इकट्ठे करे।** वे सारी पृथ्वी से इकट्ठे होंगे कि अपने मसीह का अभिवादन करें और उसके महिमामय राज्य का आनन्द उठाएं।

इ. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त (24:32–35)

24:32 ''अंजीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो।'' एक बार फिर से प्रभु ने प्रकृति का उदाहरण देते हुए एक आत्मिक शिक्षा दी। जब अंजीर के पेड़ की शाखाएं हरी और **कोमल** हो जाती हैं **तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है**। हमने यह देखा है कि अंजीर का पेड़ इस्राएल जाति का चित्रण है (21:18–22)। सैकड़ों वर्ष से इस्राएल निष्क्रिय रहा, उसके स्वयं की सरकार नहीं थी, कोई देश नहीं था, मन्दिर नहीं था, याजकपद नहीं था – राष्ट्रीय जीवन का कोई चिन्ह नहीं दिखाई देता था। यहूदी लोग संसार भर में तितर–बितर हो गए थे।

तब, 1948 में, इस्राएल एक राष्ट्र बना, उसे स्वयं का एक देश, एक सरकार, एक मुद्रा, और डाक टिकिटें इत्यादि मिलीं। आत्मिक रूप से, यह राष्ट्र आज भी बांझ और ठण्डा है; परमेश्‍वर के योग्य कोई फल नहीं है। परन्तु राष्ट्र के रूप में, हम यह कह सकते हैं कि इसकी शाखाएं हरी और **कोमल** हैं।

''मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।'' ''यह पीढ़ी'' उस पीढ़ी को नहीं कहा गया है जो उस समय जीवित थी जब यीशु इस पृथ्वी पर था; वे सब मर चुके हैं, परन्तु अध्याय 24 में दी गई घटनाएं अब तक नहीं घटी हैं। तब फिर प्रभु यीशु **''इस पीढ़ी''** किस पीढ़ी को कह रहा है? इसके दो अर्थ हो सकते हैं।

एफ. डब्ल्यू. ग्रान्ट और कुछ अन्य लोगों का मानना है: ''वे ही लोग जो इन बातों को आरम्भ होते हुए देखेंगे, इसका अन्त भी देखेंगे।''[47] जो लोग इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में उभरता हुआ देखेंगे (या जो क्लेशकाल के आरम्भ को देखेंगे), वे प्रभु यीशु को आकाश के बादलों में होकर राज्य करने के लिए आते हुए देखेंगे।

इसका दूसरा स्पष्टीकरण यह है कि **''पीढ़ी''** का अर्थ *जाति* समझना चाहिए। पीढ़ी के लिए जिस यूनानी शब्द का उपयोग मूल रूप से किया गया है उसका अनुवाद *जाति* भी किया जा सकता है; इस यूनानी शब्द का अर्थ होता है, एक ही नस्ल, जाति, या वंश के लोग (मत्ती 12:45; 23:35,36)। इसलिए प्रभु यीशु यह भविष्यद्वाणी कर रहा था कि यहूदी जाति इन सारी बातों को पूरी होते देखने के लिए जीवित रहेगी। अत्याचार और सताव के बाद भी इस जाति का जीवित बचे रहना, इतिहास का एक आश्चर्यकर्म है।

परन्तु मेरे विचार में इसका एक और अर्थ हो सकता है। यीशु के दिनों में, ''यह पीढ़ी'' वह जाति थी जिसने यीशु को मसीह मानने से लगातार इंकार किया। मेरा विचार है कि वह यह भविष्यद्वाणी कर रहा है कि इस्राएली जाति प्रभु का इंकार करने वाली अपनी दशा में उसके दूसरे आगमन तक बनी रहेगी। उसके बाद सारे विद्रोह को कुचल दिया जाएगा, और सिर्फ वे जो अपनी इच्छा से उसके शासन के आगे समर्पण करेंगे, हजार वर्ष के राज्य में प्रवेश करने के लिए बच पाएंगे।

24:35 इस भविष्यद्वाणी के असफल न हो सकने वाले गुण पर बल देने के लिए, यीशु ने आगे कहा कि **आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु** उसकी **बातें कभी न टलेंगी। आकाश** के टल जाने की बात करते हुए, वह उस आकाशमण्डल की बात कर रहा था जो हमें ऊपर नीले रंग का दिखाई देता है – स्वर्ग के विषय में नहीं जो परमेश्वर का निवासस्थान है (2 कुरि. 12:2–4)। आकाश और पृथ्वी के समाप्त होने के बारे में 2 पतरस 3:10–13 में दिया गया है और प्रकाशितवाक्य 20:11 में फिर से इसका उल्लेख किया गया है।

फ.वह दिन और घड़ी अज्ञात है (24:36–44)

24:36 जहाँ तक उस **दिन और घड़ी** की बात है, ठीक ठीक **कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता**। इस पद से हमें सावधान हो जाना चाहिए कि हम उस दिन और घड़ी की गणना करने की परीक्षा में न पड़ें, न ही ऐसे लोगों पर विश्वास करें जो ऐसा करते हैं। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि स्वर्गदूतों को भी इसके विषय में नहीं मालूम; वे सीमित ज्ञान वाले सीमित प्राणी हैं।

जबकि वे लोग जो यीशु के दुबारा आगमन से पहले के लोग हैं उस *दिन* या *घड़ी* को नहीं जान पाएंगे, ऐसा प्रतीत होता है जो इस भविष्यद्वाणी से अवगत हैं वे उस *वर्ष* को जान सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे यह जान जाएंगे, कि यरूशलेम के मन्दिर में उस मूर्ति की स्थापना के लगभग साढ़े तीन वर्ष बाद यह होगा (दानि. 9:27; साथ ही दानिय्येल 7:25; 12:7, 11; प्रका. 11:2,3; 12:14; 13:5 भी देखें)।

24:37–39 किन्तु, उन दिनों में अधिकांश लोग इसकी ओर ध्यान नहीं देंगे, जैसा कि **नूह के दिन** में हुआ था। यद्यपि जलप्रलय से पहले के लोग बहुत दुष्ट थे, यहाँ पर इस बात पर जोर नहीं दिया जा रहा है। लोग खाते, पीते, शादी–ब्याह करते थे; दूसरे शब्दों में, वे अपनी दिनचर्या में वैसे ही आगे बढ़ रहे थे मानों वह सदाकाल तक जीवित रहेंगे। यद्यपि उन्हें यह चेतावनी दी गई थी कि एक जलप्रलय आने वाला है, वे इस प्रकार का जीवन जी रहे थे, मानों वे बाढ़ से पूरी तरह सुरक्षित हैं। जब जलप्रलय आया, तब वे तैयार नहीं थे, वे एकमात्र सुरक्षित स्थान से बाहर थे। जब मसीह दुबारा आएगा, तब ठीक ऐसा ही होगा। सिर्फ वे ही जो मसीह में हैं (सुरक्षा का जहाज), छुटकारा प्राप्त करेंगे।

24:40, 41 दो जन खेत में होंगे; एक ले लिया जाएगा कि उसका न्याय हो और दूसरा हजार वर्ष के शासन के लिए छोड़ दिया जाएगा। **दो स्त्रियां चक्की**

पीसती रहेंगी; उसी समय वे अलग अलग कर दी जाएंगी। एक न्याय के जलप्रलय में बह जाएगी; दूसरी मसीह के राज्य की आशीषों का आनन्द लेने के लिए छोड़ दी जाएगी। (40 और 41 पदों का प्रयोग प्राय: कलीसिया के बादलों पर उठा लिए जाने (मेघारोहण) के सन्दर्भ में, उद्धार न पाए हुए लोगों को चेतावनी देने के लिए किया जाता है। मेघारोहण मसीह के आगमन का पहला चरण होगा जब वह (कलीसियाई युग के) सब विश्वासियों को स्वर्ग ले जाएगा और सारे अविश्वासियों को न्याय के लिए छोड़ देगा। यद्यपि यह चेतावनी इस स्थल पर भी *लागू* की जा सकती है, परन्तु सन्दर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी *व्याख्या* हमें (क्लेशकाल की समाप्ति के पश्चात्) मसीह द्वारा राज्य करने के लिए आने के सन्दर्भ में करना है, कलीसिया के बादलों पर उठाए जाने के सन्दर्भ में नहीं।

24:42–44 उस दिन और घड़ी की अनिश्चितता को ध्यान में रखते हुए, हमें **जागते** रहना है। यदि कोई जानता है कि उसके घर में सेंध लगने वाली है, तो वह उसके लिए तैयार रहेगा, यद्यपि वह यह नहीं जानता कि ऐसा ठीक ठीक किस समय होगा। मनुष्य का पुत्र उस समय आएगा, जब लोग उसके आने की सबसे कम अपेक्षा कर रहे होंगे। इसलिए उसके लोगों को हमेशा अपनी एड़ी उठा उठा कर उसके आने की बाट जोहनी चाहिए।

ग. बुद्धिमान और बुरे दासों के विषय में दृष्टान्त (24:45–51)

24:45–47 इस अध्याय के समापन खण्ड में, प्रभु यीशु ने यह दर्शाया है कि एक **दास** का वास्तविक चरित्र इस बात से प्रगट होगा कि वह अपने स्वामी के दूसरे आगमन को ध्यान में रखते हुए किस प्रकार का आचरण करता है। सभी दासों से अपेक्षित है कि वे उचित समय पर घराने को भोजन कराएं। परन्तु आवश्यक नहीं है कि अपने आप को मसीह का दास कहने वाले सभी लोग सच्चे हों।

बुद्धिमान दास वह है जो परमेश्वर के लोगों की चिन्ता करते हुए पाया जाएगा। ऐसे व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य में बहुत बड़ी जिम्मेदारी देने के द्वारा सम्मानित किया जाएगा। स्वामी उसे **अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार ठहराएगा।**

24:48–51 **दुष्ट दास** एक नामधारी विश्वासी को दर्शाता है जो अपने स्वामी के शीघ्र वापसी की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए भी अपने आचरण में किसी तरह का कोई परिवर्तन नहीं लाता। वह **अपने साथी को** पीटता **है, और पियक्कड़ों के साथ** खाता-पीता है। इस प्रकार का आचरण यह प्रदर्शित करता है कि वह परमेश्वर के राज्य के लिए तैयार नहीं है। जब राजा आएगा, तो वह उसे दण्ड देगा और **उसका भाग कपटियों के समान ठहरेगा**, जहाँ लोग रोते और दांत पीसते हैं।

यह दृष्टान्त मसीह के उस दृश्य आगमन की ओर संकेत करता है जब वह मसीह-राजा के रूप में आएगा। परन्तु यह सिद्धान्त कलीसिया के बादलों पर उठाए जाने पर भी उतना ही लागू होता है। अनेक लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं वे परमेश्वर के लोगों के प्रति बैर का भाव रखने और परमेश्वर के विरोधियों के प्रति भाईचारा दिखाने के द्वारा यह दर्शाएंगे कि वे मसीह के आगमन की बाट नहीं जोह रहे हैं। उनके लिए, मसीह का आगमन आशीष नहीं परन्तु दण्ड लेकर आएगा।

ह. दस कुंवारियों का दृष्टान्त (25:1–13)

25:1–5 पहला शब्द, **तब**, पिछले अध्याय (24) का सन्दर्भ देते हुए, स्पष्ट रूप से इस दृष्टान्त को राजा के पृथ्वी पर लौटने और उसके ठीक पहले के समय पर स्थान देता है। यीशु ने **स्वर्ग के राज्य** को **उन दस कुंवारियों के समान** बताया है जो **अपनी मशालें लेकर दूलहे से भेंट करने को निकलीं। उन में से पाँच . . . समझदार थीं** और उन्होंने अपनी मशालों के लिए **तेल** ले लिया था; अन्य पाँच कुंवारियों ने अपने लिए तेल नहीं रखा था। प्रतीक्षा करते करते, सभी दस कुंवारियां सो गईं।

पाँच **बुद्धिमान** कुंवारियां क्लेशकाल के समय मसीह के सच्चे अनुयायियों को दर्शाती हैं। **मशालें** अंगीकार (मसीही होने का दावा) को दर्शाती हैं, और **तेल** सामान्यत: पवित्र आत्मा के प्रतीक के रूप में माना जाता है। **मूर्ख** कुंवारियां उन लोगों को दर्शाती हैं जो यह दावा करते हैं कि वे मसीह के आगमन की धन्य आशा को थामे हुए हैं परन्तु वास्तव में उन्होंने कभी भी मन नहीं फिराया है, और इसलिए उनमें पवित्र आत्मा नहीं है। दूलहा मसीह है, जो राजा है; उसके आने में विलम्ब उसके दो आगमनों के बीच की अवधि को दर्शाता है। यह बात कि सभी दस

कुंवारियां **सो गईं** यह दर्शाती है कि बाहर के रूप को देखकर उनके बीच अधिक अन्तर दिखाई नहीं देता।

25:6 मध्यरात्रि के समय यह घोषणा की गई कि **दूलहा आ रहा है**। पिछले अध्याय में हमने देखा था कि अद्‌भुत चिन्हों के माध्यम से उसके आगमन का सुसमाचार पहले से दे दिया जाएगा।

25:7-9 कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं – सभी तैयार दिखाई देना चाहते थे। मूर्ख कुंवारियों ने, जिनके पास तेल नहीं था, बुद्धिमान कुंवारियों से कुछ तेल मांगा, परन्तु उन्होंने उन्हें तेल **मोल** लेने के लिए भेज दिया। बुद्धिमान कुंवारियों द्वारा मना किया जाना स्वार्थपूर्ण प्रतीत होता है, परन्तु आत्मिक जीवन में, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को आत्मा नहीं दे सकता। नि:सन्देह पवित्र आत्मा को खरीदा नहीं जा सकता, परन्तु बाइबल अवश्य ही उद्धार को बिना धन और बिना मोल के खरीदने की अलंकारिक भाषा का प्रयोग करती है।

25:10-12 जब वे जा चुकीं तभी **दूलहा आ पहुँचा**। बाइबल के सिरियाई और लैटिन संस्करणों में लिखा है वह अपनी *दुल्हिन के साथ आया*।यह वाक्यांश भविष्यद्वाणी के चित्र में बिल्कुल ठीक बैठती है। प्रभु यीशु विवाह के बाद अपनी दुल्हन के साथ, अर्थात् अपनी कलीसिया के साथ लौटेगा (1 थिस्स. 3:13)। (विवाह मेघारोहण के बाद स्वर्ग में होगा (इफि. 5:27))। क्लेशकाल के समय के पवित्र लोगों का विश्वासयोग्य झुण्ड उसके साथ विवाह के भोज में भीतर प्रवेश करेगा। विवाह का भोज मसीह के पृथ्वी पर के राज्य के आनन्द और आशीषों का एक उपयुक्त चित्रण है। बुद्धिमान कुंवारियां **उसके साथ ब्याह के घर** (विवाह के भोज में) **चली गईं; और द्वार बन्द हो गया**। अब किसी और के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए काफी देर हो चुकी होगी। जब **दूसरी कुंवारियां** भी आकर भीतर आने के लिए निवेदन करने लगीं, तो दूलहे ने उन्हें पहचानने से मना कर दिया – यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि उनका नया जन्म हुआ ही नहीं था।

25:13 यीशु ने यह शिक्षा दी कि **जागते** रहो, क्योंकि उसके आगमन के **दिन** और **घड़ी** को कोई नहीं जानता। विश्वासियों को इस प्रकार से जीवन व्यतीत करना है मानों वह किसी भी क्षण आ सकता है। क्या हमारी मशालें तैयार हैं और उसमें तेल भरा है?

ई. तोड़ों का दृष्टान्त (25:14-30)

25:14-18 इस दृष्टान्त में यह शिक्षा भी पाई जाती है कि जब प्रभु वापस आएगा, तब वह कुछ सच्चे और कुछ झूठे सेवकों को पाएगा। यह दृष्टान्त **उस मनुष्य** पर केन्द्रित है जिसने, एक बार एक लम्बी यात्रा पर जाने से पहले **अपने दासों** को एक साथ बुलाया, और **हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार** अलग अलग राशि दी। **एक** को **पाँच तोड़े** दिया, **दूसरे** को **दो**, और अन्तिम दास को **एक** तोड़ा दिया। उन्हें इस पैसे का उपयोग अपने स्वामी के लिए आय अर्जित करने को करना था। जिस दास को **पाँच** तोड़े दिए गए थे उसने **पाँच तोड़े और** कमाए। जिस दास को **दो** तोड़े दिए गए थे, उसने भी दूना कमा लिया। परन्तु जिस व्यक्ति को **एक** तोड़ा मिला था उसने **एक** गड़हा खोदा, और उस तोड़े को उसमें गाड़ दिया।

इस दृष्टान्त में यह सरलता से समझा जा सकता है कि प्रभु यीशु वह स्वामी है, तथा लम्बी यात्रा उसके दोनों आगमनों के बीच की अवधि है। तीन दास क्लेशकाल के समय के इस्राएली हैं, जिन्हें प्रभु की अनुपस्थिति में उसके हित की देखभाल करनी है। उन्हें उनकी व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर जिम्मेदारियां दी गई हैं।

25:19-23 बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उनसे लेखा लेने लगा। यह दूसरे आगमन को दर्शाता है। पहले दो दासों की सराहना के लिए उसने समान शब्द कहे: **''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।''**

उनकी सेवा की परख इस आधार पर नहीं की गई कि उन्होंने कितना कमाया, परन्तु इससे कि उन्होंने कितना परिश्रम किया। प्रत्येक ने अपनी क्षमता का पूरा उपयोग किया और सौ प्रतिशत लाभ अर्जित किया। ये दोनों दास उन सच्चे विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका प्रतिफल यह होगा कि वे मसीह के हजार वर्ष की आशीषों के भागीदार बनेंगे।

25:24, 25 तीसरे दास के पास अपने स्वामी का अनादर करने और बहाना बनाने के सिवाय और कुछ नहीं था। उसने अपने स्वामी पर दोष लगाया कि वह **कठोर**

और अन्यायी है, तथा **वहां काटता** है जहाँ वह **नहीं बोता** और **वहां से बटोरता** है जहाँ **नहीं छींटता**। उसने यह बहाना बनाते हुए अपना बचाव किया कि डर के मारे उसने अपना **तोड़ा** जमीन में गाड़ दिया। नि:सन्देह, यह दास अविश्वासी था; कोई भी सच्चा सेवक अपने स्वामी के बारे में ऐसा विचार नहीं रखेगा।

25:26,27 उसके स्वामी ने उसे **दुष्ट और आलसी** कहते हुए फटकारा। यदि वह अपने स्वामी के बारे में ऐसा विचार रखता था तो उसने अपना **रूपया सर्राफों को** क्यों नहीं दे दिया कि उससे ब्याज कमाया जा सके? ध्यान दें, कि पद 26 में स्वामी उस पर लगाए गए आरोपों से सहमत नहीं है। बल्कि वह यह कह रहा है, ''यदि तू समझता है कि मैं इस प्रकार का स्वामी हूँ, तो इस रूपये को काम में लगाने के लिए यह एक अधिक ठोस कारण था। तेरे शब्द तुझी पर दोष लगाते हैं, तेरा बचाव नहीं करते।''

25:28,29 यदि इस व्यक्ति ने अपने स्वामी के लिए एक तोड़ा कमा लिया होता, तो उसे भी दूसरों के समान सराहना मिलती। इसकी बजाए, उसने जमीन में एक गड़हा दिखाने के सिवाय और कुछ नहीं किया। उसका **तोड़ा** उससे ले लिया गया और उस दास को दे दिया गया जिसके पास **दस तोड़े** थे। इसके बाद आत्मिक जीवन का एक अटल नियम दिया गया है: ''**क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।**'' जो लोग परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल होने की इच्छा रखते हैं, उन्हें उस बात के लिए साधन भी उपलब्ध कराए जाते हैं। वे जितना अधिक कार्य करते हैं, उन्हें उतनी अधिक क्षमता प्रदान की जाती है। इसके ठीक विपरीत, हम जिसे उपयोग में नहीं लाते उसे खो देते हैं। आलस्य का प्रतिफल क्षीणता है।

पद 27 में **सर्राफ़ों** का उल्लेख यह संकेत देता है कि यदि हम अपनी धन-सम्पत्ति का उपयोग नहीं कर सकते, तो उसे हमें दूसरों को दे देना चाहिए, जो यह काम कर *सकते* हैं। यहाँ पर सर्राफ हम मिश्नरियों, बाइबल संस्थाओं, मसीही प्रकाशकों, रेडियों द्वारा सुसमाचार प्रचार योजनाओं इत्यादि के रूप में समझ सकते हैं। हम जिस तरह से संसार में रहते हैं, कोई भी बहाना नहीं चलेगा कि हम अपने धन को ऐसे ही पड़े रहने दें। पियरसन का यह सुझाव काफी उपयोगी है:

> संकोची लोग, जो बेधड़क और स्वतंत्र होकर स्वर्ग के राज्य की सेवा नहीं कर पाते, उन्हें अपनी अक्षमताओं को ऐसे लोगों की क्षमताओं और दर्शन के साथ जोड़ देना चाहिए जो अपने वरदानों और धनसम्पत्तियों का उपयोग स्वामी और उसकी कलीसिया के लिए करेंगे . . .। भण्डारी के पास धन है, या कोई अन्य वरदान है, जिसका वह उपयोग कर सकता है, परन्तु उसमें विश्वास और दर्शन, तथा व्यवहारिक ऊर्जा और बुद्धि की कमी है। प्रभु के ''सर्राफ'' उसे यह बता सकते हैं कि स्वामी के लिए लाभ किस प्रकार से अर्जित करना है . . .। कलीसिया के अस्तित्व का एक उद्देश्य यह भी है कि एक सदस्य दूसरे की निर्बलता में उसकी सहायता कर सके, और सब लोगों के योगदान के द्वारा, कमजोर और निर्बलों की सामर्थ को बढ़ाया जा सके।[49]

25:30 निकम्मे दास को बाहर डाल दिया गया – उसे राज्य से बाहर कर दिया गया। वह दुष्टों की वेदनादायक नियति का भागी होगा। उसके द्वारा तोड़े का निवेश न कर पाने की असफलता ने उसे दोषी नहीं ठहराया; बल्कि उसके जीवन में भले कामों का दिखाई न देना यह प्रमाणित करता है कि उसमें वह विश्वास नहीं था जिसके माध्यम से उद्धार मिलता है।

ज. राजा जातियों का न्याय करेगा (25:31-46)

25:31 इस खण्ड में जातियों के न्याय का वर्णन किया गया है, इस न्याय को उस मसीह के न्याय सिंहासन (*बेमा* न्याय) और बड़े श्वेत सिंहासन से जोड़ कर नहीं देखना है।

मसीह के न्याय का सिंहासन (*बेमा* न्याय) सिर्फ मसीही विश्वासियों के आंकलन और उन्हें प्रतिफल देने के लिए है, और यह कलीसिया के बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के बाद होगा (रोमि. 14:10; 1 कुरि. 3:1-15; 2 कुरि. 5:9, 10)। बड़े श्वेत सिंहासन का न्याय अनन्तकाल की बात है, जो मसीह के हजार वर्ष के राज्य के बाद आएगा। दुष्ट मृतकों का न्याय किया

जाएगा और उन्हें आग की झील में भेज दिया जाएगा (प्रका. 20:11–15)।

जातियों का न्याय, या अन्यजातियों का न्याय मसीह के पृथ्वी पर राज्य करने के लिए आने के बाद होगा, जैसा कि पद 31 में स्पष्ट रूप से बताया गया है: ''**जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे।**'' यदि योएल 3 के साथ इसे जोड़ना सही होगा, तो यह यरूशलेम के बाहर, यहोशापात की तराई में घटेगा (3:2)। अन्यजातियों का न्याय इस आधार पर होगा कि उन्होंने मसीह के यहूदी भाइयों के साथ क्लेशकाल के समय कैसा बर्ताव किया (योएल 3:1,2; 12–14; मत्ती 25:31–46)।

25:32 यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि उनके वर्गों का उल्लेख किया गया है – **भेड़ों**, **बकरियों**, और मसीह के भाइयों। पहले दो वर्ग, जिनका न्याय मसीह करेगा, वे क्लेशकाल के दौरान के अन्यजाति हैं। तीसरा वर्ग मसीह के विश्वासयोग्य यहूदी भाई हैं जिन्होंने घोर सताव के बाद भी क्लेशकाल के दौरान मसीह के नाम का इंकार करने से मना कर दिया था।

25:33–40 राजा **भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बांई ओर खड़ी करेगा।** उसके बाद वह भेड़ों को आमंत्रित करेगा कि वे उस महिमामय **राज्य** में प्रवेश करें जो **जगत के आदि से** उनके लिए **तैयार किया हुआ है**। इसका कारण यह दिया गया है कि जब वह **भूखा** था तब उन्होंने उसे भोजन खिलाया, जब वह **पियासा** था तब उसे पानी **पिलाया**, जब वह **परदेशी** था तो उसकी पहुनाई की, जब वह नंगा था तो उसे **कपड़े पहिनाए**, जब वह बीमार था तो उसकी सुधि ली, जब **बन्दीगृह** में था तो उससे मिलने आए। तब **धर्मी** भेड़ें इस बात के प्रति अनभिज्ञता प्रगट करेंगी कि उन्होंने कभी राजा को इस हाल में देखा और उसके प्रति कोई भलाई प्रगट की हो; वह तो उनके समय में पृथ्वी पर था ही नहीं। तब वह उन्हें बताएगा कि उसके **भाइयों** में से **छोटे से छोटे** के साथ की गई भलाइयों को राजा के साथ की गई भलाई के रूप में माना गया है। उसके अनुयायियों में से किसी एक के साथ भी की गई भलाई का प्रतिफल यह मान कर दिया जाएगा कि यह भलाई राजा के साथ की गई है।

25:41–45 अधर्मी बकरियों से कहा जाएगा कि वे उसके सामने से निकल कर उस **अनन्त आग में चले** जाएं **जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है** क्योंकि याकूब के संकट के भयानक समय में वे उसकी देखभाल करने असफल रहे। जब वे यह कहते हुए अपना बचाव करने का प्रयास करेंगे कि उन्होंने इस हाल में उसे कभी नहीं देखा, तो वह उन्हें यह स्मरण दिलाएगा कि उसके अनुयायियों को अनदेखा किए जाने का अर्थ है उसे अनदेखा करना।

25:46 इसलिए बकरियों को **अनन्त दण्ड** देने के लिये भेज दिया जाएगा परन्तु भेड़ों को **अनन्त जीवन** में प्रवेश दिया जाएगा। परन्तु यहाँ पर दो समस्याएं उभर कर सामने आती हैं। पहली समस्या यह है कि, यह स्थल यह शिक्षा देता प्रतीत होता है कि अन्यजातियों का उद्धार या उनका खो जाना सामूहिक रूप से हो रहा है। दूसरी समस्या यह है कि, इस वर्णन को पढ़ने से ऐसा लगता है कि भेड़ों का उद्धार भले कामों के कारण हो रहा है, जबकि बकरियां भले काम कर पाने की असफलता के कारण दोषी ठहराई जा रही हैं। जहाँ तक पहली समस्या की बात है, हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि जातियों के साथ परमेश्वर इस प्रकार से करता रहा है। पुराना नियम के इतिहास में ऐसे ऐसे उदाहरण भरे हुए हैं, जो यह बताते हैं कि जातियों को उनके पापों के कारण दण्ड दिया गया है (यशा. 10:12–19; 47:5–15; यहेज. 25:6, 7; आमोस 1:3, 6, 9, 11, 13; 2:1, 4, 6; ओबद्याह 10; जक. 14:1–5)। यह विश्वास करना बेतुका नहीं होगा कि अन्यजातियों को ईश्वरीय दण्ड मिलना जारी रहेगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्यजातियों के एक एक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से दण्ड दिया जाएगा, परन्तु ईश्वरीय न्याय का सिद्धान्त राष्ट्रीय और व्यक्तिगत दोनों आधार पर लागू होगा।

एथने शब्द का अनुवाद, इस स्थल में ''जातियां'' किया गया है, इसका अनुवाद ''अन्यजातियां'' भी किया जा सकता है। कुछ लोगों का मानना है कि यह स्थल अन्यजातियों का व्यक्तिगत रूप से न्याय किए जाने का वर्णन कर रहा है। चाहे यह जातिगत हो या फिर व्यक्तिगत, एक समस्या यह है कि इतनी बड़ी भीड़ पलस्तीन में प्रभु के सामने किस तरह से खड़ी हो सकती है। शायद ऐसा समझना बेहतर होगा कि न्याय के लिए जातियों या व्यक्ति–समुहों के प्रतिनिधि एकत्रित होंगे।

जहाँ तक दूसरी समस्या की बात है, इस स्थल का

उपयोग यह सिखाने के लिए नहीं किया जा सकता कि भले कामों के द्वारा उद्धार हो सकता है। बाइबल की एकीकृत घोषणा यह है कि उद्धार मात्र विश्वास के द्वारा ही प्राप्त होता है कार्यों के द्वारा नहीं (इफि. 2:8,9)। परन्तु बाइबल इस बात पर भी उतना ही जोर देती है कि सच्चा विश्वास भले कार्यों को उत्पन्न करता है। यदि कोई भला कार्य नहीं करता है तो यह इस बात का संकेत हैं कि उस व्यक्ति का उद्धार नहीं हुआ है। इसलिए हमें यह समझना आवश्यक है कि अन्यजातियों का उद्धार यहूदियों के प्रति भलाई दिखाने के कारण नहीं हो रहा है, परन्तु हमें यह समझना है कि इस भलाई के द्वारा प्रभु के प्रति उनका प्रेम झलक रहा है।

तीन और बातों का उल्लेख किया जाना चाहिए। पहली बात, ऐसा कहा गया है कि राज्य को धर्मियों के लिए जगत की नींव से पहले तैयार कर लिया गया है (पद 34), जबकि नरक को शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया गया है (पद 41)।परमेश्वर की इच्छा यह है कि मनुष्य आशीषित हो; नरक को मनुष्य जाति के लिए तैयार नहीं किया गया था। परन्तु यदि लोग जानबूझ कर जीवन को ठुकराते रहेंगे, तो वे स्वत: ही मृत्यु को चुन लेते हैं।

दूसरी बात यह है कि प्रभु यीशु ने अनन्त (''सदा बने रहने वाला'') आग (पद 41), अनन्त दण्ड (पद 46), और अनन्त जीवन (पद 46) के बारे में कहा है। जिस व्यक्ति ने अनन्त जीवन की शिक्षा दी है उसी ने अनन्त दण्ड की सच्चाई के बारे में बताया है। चूंकिइन तीनों का वर्णन करने के लिए समान शब्द *अनन्त* का उपयोग किया गया है, इसलिए किसी एक बात को स्वीकार करना और दूसरी बात को अस्वीकार करना असंगत होगा। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद *अनन्त* किया गया है उसका अर्थ *सदा बने रहने वाला* यदि नहीं है, तो इस शब्द के सिवाय और कोई दूसरा यूनानी शब्द नहीं है जो इस अर्थ को प्रगट करे। परन्तु हम जानते हैं कि इसका अर्थ सदा बने रहने वाला है क्योंकि यह परमेश्वर की अनन्तता का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है (1 तीमु. 1:17)।

अन्तिम बात, अन्यजातियों का न्याय हमें प्रबलता से यह स्मरण दिलाता है कि मसीह और उसके लोग दोनों एक हैं; जो बात उसके लोगों को प्रभावित करती है, वही बात उसे भी प्रभावित करती है। उसके प्रति भलाई दर्शाने के लिए हमारे सामने अपार सम्भावनाएं और अवसर होते हैं, क्योंकि हम उससे प्रेम करने वाले लोगों के प्रति भलाई करने के द्वारा उसके साथ भलाई करते हैं।

XIV. राजा का बोझ (दुखभोग) और उसकी मृत्यु (26,27 अध्यायों में)

अ. यीशु को मार डालने का षड्यंत्र (26:1–5)

26:1,2 इस सुसमाचार में चौथी और अन्तिम बार हमारे प्रभु ने अपने चेलों को पहले से सचेत किया है कि उसका मरना अवश्य है (16:21; 17:23; 20:18)। उसकी घोषणा से यह संकेत मिलता है कि फसह के पर्व और उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय के बीच एक बहुत ही निकट सम्बन्ध होगा: ''**तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्ब्ब होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा।**'' इस वर्ष फसह के पर्व को उसका सच्चा अर्थ मिलने वाला था। फसह के मेम्ने का अन्तत: आगमन हो चुका है और शीघ्र ही वह बध होने वाला है।

26:3–5 जिस समय वह यह बात कह रहा था, **महायाजक** और **प्रजा के पुरनिये काइफा** नामक **महायाजक के आँगन में इकट्ठे हुए**, ताकि यीशु के विरुद्ध रणनीति तैयार कर सकें। वे उसे चुपचाप पकड़ कर मार डालना चाहते थे, परन्तु **पर्व के समय** ऐसा करना उन्हें बुद्धिमानी नहीं लगी; उसकी हत्या के विरुद्ध **लोगों** के उग्र हो जाने की आशंका थी। यह अविश्वसनीय है कि इस्राएल के धार्मिक अगुवों ने अपने मसीह की मृत्यु का षड्यंत्र रचने में पहल की। चाहिए था कि वे सबसे पहले उसे स्वीकार करते और उसे अपना राजा बनाते। इसकी बजाए, वे उसके शत्रुओं के अग्रणी नेता बन गए।

ब. यीशु का बैतनिय्याह में अभिषेक (26:6–13)

26:6, 7 महायाजकों के कपट, चेलों की संकीर्णता, और यहूदा के विश्वासघात के दस्तकों के मध्य यह घटना एक सुखद राहत प्रदान करती है। **जब यीशु**

बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था, तो एक स्त्री बहुत ही मूल्यवान इत्र से भरा **पात्र** लेकर आई और उसे यीशु के **सिर पर** उण्डेल दिया। उसके बलिदान का मंहगा मूल्य प्रभु यीशु के प्रति उसके समर्पण की गहराई को व्यक्त करता है, मानों वह कह रही हो, प्रभु के लिए चाहे जो भी किया जाए कम है।

26:8,9 उसके चेले, और विशेष करके यहूदा (यूहन्ना 12:4,5) ने उस स्त्री के इस कार्य को एक बहुत बड़ा **सत्यानाश** (बर्बादी) समझा। उनका विचार था कि बेहतर होता यदि इसे बेचकर पैसों को **कंगालों में बांटा** जाता।

26:10-12 यीशु ने उनके विचारों की विकृति को सुधारा। उस स्त्री का यह कार्य बर्बादी नहीं, परन्तु बहुत सुन्दर था। न सिर्फ इतना ही, उसने बिल्कुल ठीक समय पर यह कार्य किया था। कंगालों की सहायता कभी भी की जा सकती है। परन्तु उद्धारकर्ता के गाड़े जाने के लिए संसार के इतिहास में सिर्फ एक ही बार तैयारी की जा सकती थी। वह क्षण आ चुका था और एक अकेली **स्त्री** की आत्मिक समझ ने इस अवसर को भुना लिया। प्रभु की मृत्यु के सम्बन्ध में उसकी भविष्यद्वाणी पर विश्वास करते हुए स्त्री अवश्य ही समझ गई रही होगी कि अभी नहीं तो कभी नहीं। और जब उसने यह कार्य किया, तो वह बिल्कुल सही निकली। जिन स्त्रियों ने उसकी मृत्यु के बाद उस पर सुगन्धित द्रव्य लगाना चाहा उनकी योजनाओं को पुनरुत्थान ने निष्फल कर दिया (मरकुस 16:1-6)।

26:13 प्रभु यीशु ने प्रेम के उसके इस साधारण कार्य को अमर बना दिया: ''**मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके कामों का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।**'' सच्ची आराधना का कोई भी कार्य स्वर्ग के दरबार को सुगन्ध से भर देता है और यह प्रभु की स्मरणशक्ति में कभी न मिटने के लिए दर्ज हो जाता है।

स. यहूदा का विश्वासघात (26:14-16)

26:14,15 बारह चेलों में से एक - चेलों में से एक जो यीशु के साथ रहता था, उसके साथ हर जगह जाता था, जिसने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था, उसकी अतुलनीय शिक्षाओं को सुना था, और एक निष्पाप जीवन के आश्चर्य को देखा था - जिसे यीशु ने ''मेरा परम मित्र . . . जो मेरी रोटी खाता था'' कहा (भजन 41:9) - उसी व्यक्ति ने परमेश्वर के पुत्र के विरुद्ध अपनी लात उठाई। **यहूदा इस्कारियोति . . . महायाजकों के पास** गया और उसने अपने प्रभु को **तीस चाँदी के** सिक्कों में बेचने का सौदा कर लिया। महायाजकों ने उसी समय उसे पैसे चुका दिए - यह लगभग 700 रूपयों की एक तुच्छ राशि थी।

शिमौन के घर में यीशु पर सुगन्धित इत्र उण्डेलने वाली स्त्री और यहूदा के बीच का अन्तर उल्लेखनीय है। उस स्त्री ने उद्धारकर्ता का मोल बहुत अधिक आंका था। यहूदा ने उसका मोल बहुत तुच्छ आंका।

26:16 इसलिए जिस व्यक्ति के साथ यीशु भलाई के सिवाय और कुछ नहीं किया, वही व्यक्ति अब एक घातक तोलमोल कर अपने लिए हिस्से का प्रबन्ध कर रहा है।

द. अन्तिम भोज/प्रभु भोज (26:17-25)

26:17 अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहले दिन की बात है - इस समय यहूदी परिवारों से सारे खमीर को हटा दिया जाता था। जब यीशु ने अपने चेलों को **फसह . . . की तैयारी** करने के लिए यरूशलेम भेजा तब उसके मन में क्या विचार आते रहे होंगे। भोज से सम्बन्धित एक एक चीज़ का एक मार्मिक अर्थ होगा।

26:18-20 यीशु ने अपने चेलों को एक विशेष व्यक्ति के पास भेजा जो उन्हें उस घर को ले जाएगा जहाँ उन्हें इस भोज में शामिल होना है। यीशु ने इस प्रकार के अस्पष्ट निर्देश शायद इसलिए दिए ताकि षड़यंत्रकारी निष्फल हो जाएं। चाहे इसका कारण जो भी रहा हो, हम यहाँ पर यह पाते हैं कि यीशु को हर व्यक्ति के बारे में सारी जानकारी रहती है, वह जानता है कि एक व्यक्ति किस समय कहाँ पर होगा, और कौन उसका सहयोग करने के लिए इच्छुक होगा। इन वचनों की ओर ध्यान दें: **''गुरु कहता है, 'कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहाँ पर्ब्ब मनाऊंगा।'''** उसने अपनी मृत्यु को आते देख उसका सामना बहुत ही सधे अंदाज में किया। बहुत ही सुन्दर रीति से, उसने इस भोज का प्रबन्ध किया। इस अनाम व्यक्ति को क्या ही सुअवसर मिला कि उसने इस अन्तिम भोज के लिए अपना घर प्रभु को उपलब्ध कराया!

26:21-24 जब वे खा रहे थे, यीशु ने एक चौंकाने वाली घोषणा करते हुए कहा कि बारह चेलों में **से एक** उसे **पकड़वाएगा**। चेले दु:ख, खीज़, और हीनभावना से घिर गए। एक के बाद एक वे यीशु से यह पूछने लगे, "**हे गुरु, क्या वह मैं हूं?**" जब यहूदा छोड़ बाकी सब यह पूछ चुके, तो यीशु ने उन्हें बताया कि उसे वह चेला पकड़वाएगा **जिस ने** उसके साथ **थाली में** हाथ डाला है। प्रभु ने रोटी का एक टुकड़ा लिया, उसे डुबोकर यहूदा को दिया (यूहन्ना 13:26) - यह विशेष स्नेह और मित्रता का एक चिन्ह था। उसने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि आगे जो होने वाला है वह एक प्रकार से अटल है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि विश्वासघाती को उसकी करनी से छुटकारा मिल जाएगा; उसके लिए बेहतर होगा कि **यदि** वह कभी **जन्म** ही न लेता। यहूदा ने जानबूझ कर उद्धारकर्ता को बेचने का निर्णय लिया था और इसलिए इसके लिए वह व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार है।

26:25 जब अन्त में यहूदा ने सीधे सीधे पूछा कि क्या वह उसे पकड़वाने वाला है, तो यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ।"

इ. पहला प्रभु भोज (26:26-29)

यूहन्ना 13:30 से हमें यह ज्ञात होता है कि जैसे ही यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया, वह बाहर चला गया, और यह रात का समय था। इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जिस समय प्रभु भोज की स्थापना हुई, उस समय यहूदा वहाँ उपस्थित नहीं था (यद्यपि इस बात पर काफी असहमति है)।

26:26 फसह का अपना अन्तिम भोज खाने के बाद, यीशु ने प्रभु भोज की विधि की स्थापना की। सारभूत अंग - रोटी और दासरस - पहले से ही फसह के भोज के भाग के रूप में मेज़ पर रखे हुए थे; यीशु ने उन्हें नया अर्थ प्रदान किया। पहले उसने **रोटी ली, और आशीष मांग कर चेलों को देकर कहा, लो खाओ, यह मेरी देह है**। चूंकि उसका शरीर अब तक क्रूस पर बलिदान नहीं किया गया था, यह स्पष्ट है कि वह प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग कर रहा था, और अपने शरीर के चिन्ह के रूप में रोटी का उपयोग कर रहा था।

26:27, 28 **कटोरा** के साथ भी यही बात लागू होती है; पात्र का उपयोग इसके भीतर समाई हुई चीज को व्यक्त करने के लिए किया गया। कटोरे में दाखरस था, जो **वाचा का . . .लोहू** था। अनुग्रह की इस नई, नि:शर्त **वाचा** की पुष्टि, बहुतों के पापों की क्षमा के लिए उसके बहुमूल्य **लोहू** के बहाए जाने के द्वारा होगी। उसका लोहू सब को क्षमा दिलाने के लिए *पर्याप्त* था। परन्तु यहाँ पर यह **बहुतों के निमित्त . . . बहाया** गया, अर्थात्, यह सिर्फ उन लोगों के पापों की क्षमा के लिए प्रभावी है जो उस पर विश्वास करते हैं।

26:29 उसके बाद उद्धारकर्ता ने अपने चेलों को स्मरण दिलाया कि वह उनके साथ **दाख का यह रस उस दिन तक** नहीं पीएगा जब तक वह पृथ्वी पर राज्य करने के लिए नहीं आएगा। तब दाखरस का एक नया अर्थ होगा; यह उसके **पिता के राज्य** के आनन्द और आशीष को व्यक्त करेगा।

यह प्रश्न अक्सर सामने लाया जाता है कि हमें प्रभु भोज के समय खमीरयुक्त रोटी का उपयोग करना चाहिए या फिर अखमीरी रोटी का, तथा खमीरयुक्त दाखरस का उपयोग करना चाहिए या साधारण दाखरस का। इस बात पर थोड़ा सन्देह है कि प्रभु ने अखमीरी रोटी और बिना खमीर वाले दाखरस का उपयोग किया हो (उन दिनों में सारे दाखरस खमीरयुक्त/सड़ाए हुए होते थे)। जो लोग यह तर्क देते हैं कि खमीरयुक्त रोटी की बात को स्वीकार करने से प्रतीकात्मक अर्थ गड़बड़ा जाता है (खमीर पाप का प्रतीक है) उन्हें यह ध्यान देना आवश्यक है कि खमीरयुक्त दासरस पर भी यह लागू होता है। यह एक त्रासदी है कि हम प्रभु भोज के *अंगों* को इतना महत्व देते हैं कि *स्वयं* प्रभु की ओर ध्यान नहीं लगा पाते। पौलुस इस बात पर जोर देता है कि रोटी नहीं, परन्तु रोटी के पीछे निहित आत्मिक अर्थ महत्वपूर्ण है। "हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। सो आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से" (1 कुरि. 5:7,8)। *रोटी* में खमीर का होना या न होना महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु हमारे *जीवनों* में खमीर का होना या न होना मायने रखता है!

फ. आत्म-विश्वासी चेले (26:30-35)

26:30 प्रभु भोज के बाद, इस छोटे गायनदल ने एक **भजन** गाया, शायद यह भजन 113-118 (महा-स्तुति भजन) से लिया गया था। तब वे यरूशलेम से चले गए, उन्होंने किद्रोन के नाले को पार किया, और जैतून पहाड़ के पश्चिमी ढलान पर चढ़ कर गतसमनी के बाग को गए।

26:31 पृथ्वी में अपनी सेवकाई के दौरान पूरे समय प्रभु यीशु ने अपने चेलों को आगे के रास्ते के बारे में विश्वासयोग्यता से सचेत किया था। अब वह उन्हें बताता है कि उस **रात** वे सभी उसे त्याग देंगे। जब वे तूफान की भयावहता को देखेंगे तो उन पर डर हावी हो जाएगा। अपने प्राण बचाने के लिए, वे अपने प्रभु को त्याग देंगे। जकर्याह की यह भविष्यद्वाणी पूरी हो जाएगी: ''तू उस चरवाहे का काट, तब भेड़ तितर-बितर हो जाएंगी'' (जक. 13:7)।

26:32 परन्तु उसने उन्हें बिना आशा दिए नहीं छोड़ा। यद्यपि वे उसके साथ अपने सम्बन्ध को लेकर शर्मिंदा होंगे, परन्तु वह उन्हें कभी नहीं त्यागेगा। मृतकों से जी उठने के बाद, वह उनसे मुलाकात करेगा, वह **गलील** में उनसे मुलाकात करेगा। वह क्या ही अद्‌भुत और कभी भी न छोड़ने वाला मित्र है!

26:33,34 पतरस उतावली में हस्तक्षेप करते हुए प्रभु को यह आश्वासन देने लगा कि चाहे सब चेले उसे छोड़ दें परन्तु वह उसे **कभी भी . . . न** छोड़ेगा। यीशु ने उसे सुधारते हुए कहा कि वह **आज रात** ही **तीन बार** ऐसा करने वाला है। **मुर्गे** के बांग देने से पहले, यह उतावला चेला अपने स्वामी का **तीन बार** इंकार करेगा।

26:35 पतरस अब अपनी निष्ठा का दावा करते हुए अड़ा रहा कि वह मसीह का इंकार करने की बजाए मसीह के साथ **मरना** पसन्द करेगा। **सब चेलों** ने उसके सुर में अपना सुर मिलाया। वे सच बोल रहे थे; वे जो कह रहे थे उसके प्रति वे गम्भीर थे। फर्क सिर्फ यह था कि वे यह नहीं जानते थे कि उनके मन में क्या है।

ग. गतसमनी में व्याकुलता (26:36-46)

कोई भी गतसमनी की घटना के इस वर्णन को समझने की हिम्मत तब तक नहीं कर सकता जब तक उसे इस बात का बोध न हो कि वह पवित्र भूमि पर चल रहा है। कोई भी व्यक्ति जो इसकी व्याख्या करने का प्रयास करता है वह विस्मय और मौन रहने की भावना से भर जाता है। जैसा कि मसीही लेखक गायकिंग ने लिखा है, ''इस घटना का सर्वश्रेष्ठ चरित्र एक व्यक्ति के भीतर भय उत्पन्न कर देता है, कहीं ऐसा न हो कि वह इसे छू कर बिगाड़ दे।''

26:36-38 **गतसमनी** (जैतून का कुण्ड) में प्रवेश करने के बाद **यीशु** ने अपने साथ के ग्यारह में से आठ चेलों से कहा कि वे वहाँ उसके लिए ठहरे रहें, उसके बाद वह **पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को** बगीचे में और भीतर ले गया। क्या इसका अर्थ यह हो सकता है कि अलग अलग चेलों में उद्धारकर्ता की इस वेदना में उसके साथ सहानुभूति रखने की क्षमता भी अलग अलग थी?

वह उदास . . . और व्याकुल होने लगा। उसने पतरस, याकूब, और यूहन्ना को सीधे सीधे बता दिया कि वह **बहुत उदास है** और **यहाँ तक कि** उसका **प्राण निकला चाहता है**। नि:सन्देह यह उसके पवित्र प्राण के भीतर के वर्णन से बाहर घोर प्रतिक्रिया थी जबकि वह हमारे लिए एक पाप-बलि बनने पर था। जो लोग पापमय हैं वे इस बात को समझ नहीं सकते कि यह उसके लिए कितनी बड़ी बात थी, निष्पाप जन हमारे लिए पाप बनने वाला था (2 कुरि. 5:21)।

26:39 इस बात पर कोई आश्यर्च नहीं होना चाहिए कि उसने इन तीन चेलों को भी वहीं छोड़ दिया और बगीचे में **थोड़ा और आगे** बढ़ गया। उसके सिवाय और कोई उसके इस दु:ख का भागीदार नहीं बन सकता था, न ही उसकी यह प्रार्थना कर सकता था: **''हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।''**

हम यह न सोचें कि ऐसी प्रार्थना करने के द्वारा वह पीछे हटने की इच्छा या गैरजिम्मेदार रवैया प्रगट कर रहा है, हमें यूहन्ना 12:27, 28 को भी स्मरण रखने की आवश्यकता है, जहाँ उसने कहा: ''अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैंने उसकी महिमा की है, और फिर करुंगा।'' इसलिए जब यीशु यह प्रार्थना कर रहा था कि यह **कटोरा**

उसके सामने से **टल जाए**, तो वह क्रूस से बचने की प्रार्थना *नहीं* कर रहा था। संसार में उसके आने का उद्‌देश्य ही यही था!

यह प्रार्थना इसका उत्तर पाने के उद्‌देश्य से नहीं, परन्तु हमें एक पाठ पढ़ाने के उद्‌देश्य से की गई है। यीशु कुछ इस प्रकार से कह रहा था, ''हे मेरे पिता, हे पिता, यदि कोई ऐसा मार्ग है कि क्रूस पर मेरे चढ़े बिना पापी लोग उद्धार पा सकें, तो उसे अभी प्रगट कर! परन्तु इन सारी बातों में, मैं ऐसा कुछ भी नहीं चाहता जो तेरी इच्छा के विपरीत है।''

इसका उत्तर क्या मिला? इसका कोई उत्तर नहीं मिला; किसी तरह की कोई आकाशवाणी नहीं हुई। इस अर्थपूर्ण मौन से हम यह जान जाते हैं कि कोई दूसरा मार्ग नहीं था जिसके द्वारा परमेश्वर दोषी पापियों को निर्दोष ठहरा सके, सिवाय इसके कि मसीह, जो निष्पाप उद्धारकर्ता है, हमारे बदले में अपना प्राण दे।

26:40,41 **चेलों के** पास लौटकर यीशु ने **उन्हें सोते पाया**। उनकी आत्मा तो **तैयार** थी, परन्तु उनका **शरीर दुर्बल** था। हम उन्हें दोषी ठहराने की हिम्मत न करें और अपने स्वयं के प्रार्थना के जीवन के बारे में विचार करें; हम प्रार्थना करने की बजाए सोते अधिक हैं, और हमारा मन इधर उधर भटकते रहता है जब कि इसे जागृत रहना चाहिए। प्रभु हमसे कितनी बार यह कहता है, जैसा कि उसने पतरस से कहा, ''**क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाए सके? जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो।**''

26:42 **फिर उस ने दूसरी बार जाकर . . . प्रार्थना की** जिसमें उसने अपने आप को पिता की इच्छा के आगे समर्पित कर दिया। वह दु:ख और मृत्यु के कटोरे को तलछट तक (पूरी तरह से) पी जाएगा।

उसने अपने जीवन में हमेशा अकेले प्रार्थना की थी। उसने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया था, और उसने उनकी उपस्थिति में प्रार्थना की थी, परन्तु उसने उनके *साथ मिलकर* कभी प्रार्थना नहीं की थी। उसके व्यक्तित्व और कार्य की अद्वितीयता के कारण वह अपना प्रार्थनामय जीवन दूसरों के साथ नहीं बांटता था।

26:43–45 जब वह दूसरी बार अपने चेलों के पास आया, तो फिर से उन्हें **सोते पाया**। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ: वह प्रार्थना करता रहा, वे सोते रहे। इस पर उसने कहा, ''**अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुँची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।**''

26:46 उसके साथ जागते रह कर सचेत रहने का अवसर अब जा चुका था। विश्वासघाती के पदचाप अब सुने जा सकते थे। यीशु ने उनसे कहा, ''**उठो चलें**'' – भागें नहीं परन्तु शत्रुओं के सामने जाएं।

इससे पहले कि हम गतसमनी से बाहर जाएं, आइये हम एक बार फिर से कुछ क्षण रूक कर उसकी सिसकियों को सुनें, उसके दु:खों पर चिन्तन करें, और अपने सारे हृदय से उसे धन्यवाद दें।

XV. राजा की विजय (अध्याय 28)

अपनी ही एक सृष्टि के हाथों निष्पाप उद्धारकर्ता का पकड़वाया जाना इतिहास के सबसे विचित्र अनियमितताओं में से एक है। यह जानते हुए भी कि मानवजाति भ्रष्ट हो चुकी है, यहूदा के इस नीच, और अक्षम्य विश्वासघात के बारे में कुछ कहने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं।

26:47 जब यीशु ग्यारह चेलों से अपनी बात **कह ही रहा** था, तभी **यहूदा** एक भीड़ के साथ वहाँ पहुँचा जो **तलवारें और लाठियां लिए** हुए थी। हम निश्चित तौर पर यह कह सकते हैं कि हथियार लाना यहूदा के दिमाग की उपज नहीं थी, क्योंकि उसने कभी भी उद्धारकर्ता को प्रतिरोध करते या जवाबी आक्रमण करते हुए नहीं देखा था। हथियारों का लाया जाना शायद महायाजकों और पुरनियों की प्रतिबद्धता को दर्शाता है कि वे यीशु को किसी भी हालत में बच कर जाने नहीं देना चाहते थे।

26:48 यहूदा ने चूमा का उपयोग एक चिन्ह के रूप में किया कि भीड़ चेलों के बीच में यीशु को पहचान सके। प्रेम के विश्वव्यापी प्रतीक का इस हद तक दुरुपयोग किया गया।

26:49 जब यहूदा प्रभु के पास पहुँचा, तो उसने कहा, ''**हे रब्बी, नमस्कार!**'' और फिर उसे बहुत **चूमा**। इस स्थल में *चूमा* के लिए दो अलग अलग यूनानी शब्दों का उपयोग किया गया है। पहला शब्द, पद 48 में पाया जाता है, वह चूमा के उपयोग में लाया जाने वाला

सामान्य शब्द है। परन्तु पद 49 में एक अधिक सशक्त शब्द का प्रयोग किया गया है, यह यूनानी शब्द बार बार चूमे जाने या इस प्रकार चूमे जाने को प्रगट करता है कि यह दिख सके।

26:50 यीशु ने बहुत ही सधे हुए अन्दाज में और पूरे निश्चय से उससे कहा, "**हे मित्र, जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर ले।**" नि:सन्देह यीशु की इस बात से यहूदा को लगा होगा कि उस पर किसी ने गरम पानी उण्डेल दिया हो, परन्तु सारी घटनाएं बहुत ही तेजी से घटती जा रही थीं। भीड़ तुरन्त आ गई और बिना देर किये उन्होंने यीशु को घेर लिया।

26:51 चेलों में से एक ने – यूहन्ना 18:10 से हमें यह ज्ञात होता है कि यह चेला पतरस था – **अपनी तलवार खींच ली** और महायाजक के **दास** के कान काट लिए। ऐसा नहीं लगता कि पतरस ने कान काटने के उद्देश्य से तलवार चलाई थी; नि:सन्देह वह घातक प्रहार करना चाहता था। उसका प्रहार (निशाना) उसके निर्णय जैसा ही कमजोर था, इस बात का श्रेय ईश्वरीय प्रावधान को दिया जाना चाहिए।

26:52 प्रभु की नैतिक महिमा यहाँ पर चमक उठती है। पहले उसने पतरस को डांटते हुए कहा, "**अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।**" मसीह के राज्य में, सांसारिक तरीकों से लड़ाइयां नहीं जीती जातीं। आत्मिक युद्ध में शस्त्र बल का उपयोग करना आपदा को आमंत्रण देना है। परमेश्वर के राज्य के शत्रुओं को तलवार का उपयोग करने दें; अन्ततः उनकी पराजय होगी। मसीह के सैनिक प्रार्थना, परमेश्वर के वचन, और आत्मा से परिपूर्ण जीवन की सामर्थ पर भरोसा रखें।

लूका वैद्य अपने सुसमाचार में हमें यह बताता है कि यीशु ने मलखुस के कान को चंगा कर दिया – जिस व्यक्ति का कान पतरस ने काट दिया था उसका नाम मलखुस था (लूका 22:51; यूहन्ना 18:10)। क्या यह अनुग्रह का अद्भुत प्रदर्शन नहीं है? उसने उनसे प्रेम किया जो उससे बैर रखते थे, और जो उसके प्राण के पीछे पड़े थे उनके प्रति उसने भलाई का व्यवहार किया।

26:53–54 यदि यीशु इस भीड़ का प्रतिरोध करना चाहता, तो वह पतरस के अदने से तलवार तक सीमित नहीं रहता। एक ही क्षण में वह **स्वर्गदूतों के बारह पलटन से अधिक** (36,000 से 72,000 स्वर्गदूतों तक) की मांग कर उन्हें प्राप्त कर सकता था। परन्तु इससे ईश्वरीय योजना निष्फल हो जाती। **पवित्रशास्त्र** में उसके पकड़वाए जाने, उसके दु:ख,उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, और उसके पुनरूत्थान की भविष्यद्वाणी की गई थी जिनका पूरा होना आवश्यक था।

26:55 उसके बाद **यीशु** ने भीड़ को स्मरण दिलाया कि हथियार लेकर उसके पीछे आना कितना बेतुका है। उन्होंने कभी भी उसे हिंसा का सहारा लेते या हिंसा करते नहीं देखा था। बल्कि, वह एक शान्त शिक्षक था, जो **हर दिन मन्दिर** में बैठ कर शिक्षा देता था। वे उस समय उसे आसानी से पकड़ सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। अब वे **तलवारें और लाठियां** लेकर क्यों आए हैं? यह कहना उचित है कि उनका यह आचरण बेतुका था।

26:56 तौभी उद्धारकर्ता यह समझता था कि मनुष्य की दुष्टता परमेश्वर की निश्चित योजना को पूरा करने की ओर ही बढ़ रही है। "**यह सब इसलिए हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों।**" जब चेलों को यह समझ में आ गया कि उनके प्रभु का बच पाना अब सम्भव नहीं है, **तब सब चेले** डर कर **उसे छोड़कर भाग गए**। उनकी इस कायरता का कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता, हमारी कायरता का तो और कोई बहाना नहीं हो सकता। अब तक चेलों को पवित्र आत्मा नहीं दिया गया था; हमें यह दिया जा चुका है।

ई. काइफा के सामने यीशु (26:57–68)

26:57 यीशु पर मुख्य रूप से दो मुकद्दमे चलाए गए: एक धार्मिक मुकद्दमा था जो यहूदी अगुवों के सामने चलाया गया, और एक दीवानी *(सिविल)* मुकद्दमा था जो रोमी शासकों के सामने चलाया गया। चारों सुसमाचार में यीशु के मुकद्दमों के विषय में दी गई जानकारियों को एक साथ रखने पर यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक मुकद्दमे के तीन चरण थे। यहूदी अगुवों के सामने चलाए गए मुकद्दमें के विषय में यूहन्ना के वर्णन के अनुसार यीशु को पहले काइफा के ससुर हन्ना के सामने लाया गया। मत्ती अपने वर्णन का आरम्भ दूसरे चरण से करता है जब यीशु को **काइफा . . .महायाजक** के घर पर लाया गया। यहूदी सभा (सेन्हेड्रिन) वहाँ एकत्रित हुई थी।

सामान्यत:, एक दोषी व्यक्ति को अवसर दिया जाता है कि वह अपने बचाव के लिए तैयारी करे। परन्तु दुस्साहसी और उतावले धार्मिक अगुवों ने फुर्ती से यीशु को हवालात और न्याय से दूर रखा (यशा. 53:8), और हर प्रकार से उसे एक न्यायोचित्त मुकद्दमा से वंचित रखा।

इसी रात, फरीसी, सूदकी, **शास्त्री** और **पुरनिये** , जिन से मिलकर यहूदी सभा (सेन्हेड्रिन) का गठन होता था, उन नियमों की घोर अवहेलना करते हैं जिनका पालन करते हुए उन्हें इन सारी गतिविधियों का संचालन करना चाहिए था। उन्हें रात के समय और किसी भी यहूदी पर्ब्ब के समय सभा के रूप में एकत्रित होने की अनुमति नहीं थी। उन्हें गवाहों को झूठी शपथ खाने के लिए घूस नहीं देना चाहिए था। एक रात बीत जाने से पहले मृत्यु दण्ड की सजा नहीं सुनाई जा सकती थी। और जब तक वे, मन्दिर परिसर में गढ़े हुए पत्थर के सभागार में एकत्रित न हों, तब तक उनके द्वारा लिया गया कोई भी फैसला मान्य नहीं होता था। यीशु से पीछा छुड़ाने की उतावली में, यहूदी अगुवों ने अपने ही नियमों का उल्लंघन करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

26:58 काइफा न्यायधीश के आसन पर बैठा था। यहूदी सभा सुनवाई भी कर रही थी और दोष भी लगा रही थी। यह एक अनियमिततापूर्ण मेल था। यीशु प्रतिवादी (बचाव पक्ष) था। और **पतरस** दर्शक था– एक सुरक्षित दूरी से; वह पहरेदारों के **साथ बैठ** कर **अन्त देखने** लगा।

26:59–61 यहूदी अगुवों को **यीशु** के **विरोध में झूठी गवाही** ढूंढने में काफी कठिनाई हुई। यदि उन्होंने न्यायिक प्रक्रिया के शुरुआती बाध्यताओं को पूरा किया होता और उसकी निर्दोषिता का प्रमाण मांगा होता हो तो वे अधिक सफल होते। अन्तत:, **दो जनों** ने यीशु के इन शब्दों का गलत अर्थ निकाला: ''इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा'' (यूहन्ना 2:19–21)। गवाहों का कहना था कि उसने धमकी दी है कि वह यरूशलेम के **मन्दिर को ढा** देगा और उसके बाद फिर से बनाएगा। वास्तव में, यीशु ने अपनी मृत्यु और उसके बाद जी उठने की भविष्यद्वाणी करते हुए ऐसा कहा था। यहूदी लोग अब इस भविष्यद्वाणी का उपयोग उसे मार डालने के एक कारण के रूप में कर रहे हैं।

26:62–63 जब यीशु पर ये दोष लगाए जा रहे थे उस समय वह चुपचाप रहा: ''जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी उन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह न खोला'' (यशा. 53:7)। महायाजक उसकी चुप्पी से खीज उठा, और उस पर कुछ कहने के लिए जोर डाला; तौभी उद्धारकर्ता उत्तर देने से चुप रहा। महायाजक ने तब **उससे कहा, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे!''** मूसा की व्यवस्था के अनुसार यदि महायाजक एक यहूदी को शपथ के आधीन लाए तो उसे गवाही देना अनिवार्य था (लैव्य. 5:1)।

26:64 यीशु एक आज्ञाकारी यहूदी था जिसने व्यवस्था की आधीनता को स्वीकार किया था, इसलिए उसने उत्तर दिया: ''**तू ने आप ही कह दिया।**'' उसके बाद उसने अपने मसीहत्व और ईश्वरत्व की और प्रबल पुष्टि करते हुए कहा: ''**बरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।**'' उसके कहने का सार यह था, ''मैं परमेश्वर का पुत्र, मसीह हूं, जैसा कि तू ने कहा। मेरी महिमा इस समय मानवीय देह से ढंपी हुई हैं; मैं इस समय दूसरे मनुष्यों के ही समान दिखाई देता हूं। तुम मुझे मेरी दीनता के दिनों में देख रहे हो। परन्तु वह दिन आने वाला है जब तुम यहूदी लोग मुझे महिमामय मसीह के रूप में देखोगे, जो हर पहलू से परमेश्वर के बराबर होगा, उसके दाहिने हाथ पर बैठा हुआ, और बादलों पर आता हुआ तुम्हें दिखाई देगा।''

पद 64 में **तू** [50] एकवचन में है, जो कैफा के लिए उपयोग में लाया गया है। इसी पद में **तुम** दो बार आया है जो बहुवचन में हैं, और यह उन यहूदियों के लिये कहा गया है जो मसीह के उसकी महिमा में आने के समय के उन इस्राएलियों के प्रतिनिधि हैं, जो स्पष्ट रूप से यह देखेंगे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

लेनस्की ने लिखा है, ''कभी कभी इस बात पर जोर दिया जाता है कि परमेश्वर ने अपने आप को कभी भी 'परमेश्वर का पुत्र' नहीं कहा। यहाँ (पद 64 में) उसने यह *शपथ ली* कि वह उससे कम नहीं था।''[51]

26:65–67 कैफा इस बात को समझने से नहीं चूका। यीशु ने मसीह के सम्बन्ध में दानिय्येल द्वारा की गई

एक भविष्यद्वाणी का उल्लेख किया था: ''मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अतिप्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए'' (दानि. 7:13)। महायाजक की प्रतिक्रिया से यह सिद्ध हो जाता है कि उसने यह समझ लिया था कि यीशु यह दावा कर रहा है कि वह परमेश्वर के बराबर है (यूहन्ना 5:18 देखें)। उसने **अपने** महायाजकीय **वस्त्र** फाड़ दिये, यह इस बात का चिन्ह है कि गवाह ने ईशनिन्दा की है। महायाजक के भड़काऊ शब्दों को सुनकर यहूदी सभा ने यह मान लिया कि यीशु दोषी है। जब सभा से फैसला सुनाने के लिए कहा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया, ''**यह बध होने के योग्य है।**''

26:68 मुकद्दमें के दूसरे चरण का समापन फैसला सुनानेवालों द्वारा दोषी को मारने और उस पर थूकने के द्वारा हुआ, साथ ही उस पर कटाक्ष भी किया गया कि वह उस पर आक्रमण करने वालों को पहचानने के लिए **मसीह** की अपनी सामर्थ का उपयोग करे। सारी कार्यवाही न सिर्फ अन्यायिक थी, बल्कि एक कलंक थी।

ज. पतरस यीशु का इंकार करता है और फूट फूट कर रोता है (26:69–75)

26:69–72 पतरस के जीवन का सबसे अंधकारमय समय अब आ चुका था। जब वह **बाहर आँगन में बैठा** हुआ था, तब एक युवती उसके पास आई और उस पर दोष लगाने लगी कि वह यीशु का एक साथी है। पतरस ने जोर से और तुरन्त उत्तर दिया, ''**मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।**'' वह **बाहर डेवढ़ी** में शायद इसलिए गया कि और कोई दूसरा उसे पहचान न ले। परन्तु वहां एक **दूसरी** युवती ने सब लोगों के सामने उसे पहचान लिया कि वह **यीशु नासरी के साथ** था। इस बार उसने शपथ खाई कि वह **उस मनुष्य** को नहीं जानता। यह ''**उस मनुष्य**'' उसका प्रभु था।

26:73,74 **थोड़ी देर के बाद** वहाँ खड़े हुए और भी लोग उसके पास आ गए और कहने लगे, ''**सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।**'' अब सामान्य रूप से इंकार करना पर्याप्त नहीं था; इस बार उसने अपने इंकार की पुष्टि शपथ और धिक्कार के साथ की। ''**मैं उस मनुष्य को नहीं जानता!**'' इस बेचैन समय में, **मुर्ग ने बांग दी।**

26:75 इस चिरपरिचित आवाज ने न सिर्फ भोर के मौन को, परन्तु पतरस के हृदय को भी बेधा। पस्त हो चुके इस चेले को जब प्रभु की बात स्मरण आई, तो वह **बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।**

ऐसा प्रतीत होता है कि सुसमाचारों में इंकार की संख्या और समय को लेकर कुछ विरोधाभास है। मत्ती, लूका, और यूहन्ना के अनुसार, यीशु ने कहा, ''मुर्गे के बांग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा'' (मत्ती 26:34; साथ ही लूका 22:34; यूहन्ना 13:38 भी देखें)। मरकुस के अनुसार यीशु ने यह कहा था, ''मुर्गे के दो बार बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा'' (मरकुस 14:30)।

यह सम्भव है कि शायद एक से अधिक मुर्गें बांग दे रहे थे, एक रात के समय और दूसरा भोर के समय। साथ ही यह भी सम्भव है कि सुसमाचारों में पतरस के कम से कम छ: अलग अलग इंकार का वर्णन किया गया है। उसने मसीह का इंकार: (1) एक लौण्डी के सामने (मत्ती 26:69, 70; मरकुस 14:66–68); (2) दूसरी लौण्डी के सामने (मत्ती 26:71– 72; मरकुस 14:69–70); (3) वहां खड़े लोगों के सामने (मत्ती 26:73, 74; मरकुस 14:70, 71); (4) एक मनुष्य के सामने (लूका 22:58); (5) एक अन्य मनुष्य के सामने (लूका 22:59, 60); और (6) महायाजक के दास के सामने (यूहन्ना 18:26, 27) किया। हम ऐसा मानते हैं कि यह अन्तिम व्यक्ति दूसरों से अलग था क्योंकि उसने कहा, ''क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?'' दूसरों के बारे में ऐसा नहीं बताया गया है कि उन्हों ने ऐसा कहा।

क. यहूदी सभा के समक्ष भोर के समय मुकद्दमा (27:1,2)

धार्मिक मुकद्दमें का तीसरा चरण सेन्हेड्रिन के समक्ष **भोर** के समय हुआ। कोई भी मामला उसी दिन समाप्त नहीं किया जा सकता था जिस दिन यह शुरू हुआ हो, जब तक प्रतिवादी दोषमुक्त करार नहीं दिया गया हो। फैसला सुनाए जाने से पहले एक रात बीतना आवश्यक

था "ताकि दया की भावना उत्पन्न होने के लिए समय मिले।" इस मामले में ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक अगुवों का अभिप्राय दया की हर एक भावना को दबा देने का था। किन्तु, चूंकि रात्रि के समय चला मुकद्‌दमा अवैधानिक था, उन्होंने सुबह का सत्र बुलाया ताकि अपने फैसले को अधिकारिक वैधता प्रदान कर सकें।

रोमी शासन के आधीन होने के कारण यहूदी अगुवों को यह अधिकार नहीं था कि वे किसी को मृत्यु–दण्ड दें। इसलिए हम देखते हैं कि अब वे फुर्ती से **पीलातुस** नामक रोमी **हाकिम** के पास जाते हैं। यद्यपि वे रोमी शासन से जुड़ी हर एक चीज़ से अत्यंत बैर रखते थे, तौभी वे इस शासन का "उपयोग" करने के लिए तैयार थे ताकि वे अपनी *और बड़े* बैर की तुष्टि कर सकें।

ल. यहूदा का पछतावा और उसकी मृत्यु (27:3–10)

27:3,4 निर्दोष को घात करने के अपने पाप का बोध होने पर, **यहूदा** ने **महायाजकों और शास्त्रियों** के सामने प्रस्ताव रखा कि वे उसे दिए पैसे को वापस ले लें। इन प्रमुख षड्‌यंत्रकारियों ने, जो कुछ समय पहले इतनी तत्परता से यहूदा के साथ सहयोग करने के लिए तैयार थे, अब इस मामले में और कुछ करने से मना कर दिया। विश्वासघात का यह एक फल है। यहूदा को पछतावा हो रहा था, परन्तु यह वह मन–फिराव नहीं था जो उद्धार की ओर ले जाता है। उसके पापों से उस पर जो प्रभाव हुआ वह दुखद है, वह अब भी यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था।

27:5 हताशा में यहूदा **सिक्कों को मन्दिर में फेंक कर चला गया** जहाँ सिर्फ याजक लोग जा सकते थे, उसके बाद बाहर आकर उसने आत्महत्या कर ली। इस वर्णन की तुलना प्रेरित 1:18 के साथ करने पर, हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि उसने अपने आप को एक पेड़ पर फाँसी से लटका लिया, उसके बाद रस्सी या शाखा टूट गई, और उसका शरीर जोर से एक धारदार पत्थर पर गिर पड़ा, जिससे उसकी आंते बाहर आ गईं।

27:6 महायाजकों ने, पैसे को मन्दिर के **भण्डार में** रखने के लिए अति "आत्मिकता" दिखाई, क्योंकि यह **लोहू का दाम** था, जबकि वे ही वास्तविक दोषी थे क्योंकि उन्होंने ही वह पैसा यहूदा को दिया था कि वह मसीह को उनके हाथों पकड़वा दे। उन्हें वास्तव में इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। जैसा कि प्रभु ने कहा है, वे कटोरे को बाहर से मांजते हैं, परन्तु भीतर छल, विश्वासघात और हत्या जैसी बुराइयों से मैंला रहता है।

27:7–10 उन्होंने इस पैसे का उपयोग एक **कुम्हार का खेत** मोल लेने के लिए किया जहाँ पर अशुद्ध अन्यजातियों को दफनाया जा सके, उन्हें इस बात का कोई अनुमान नहीं था कि अन्यजातियों के कितने समूह उनके देश को अपने वश में कर लेंगे और उनकी सड़कों को खून से रंग देंगे। उस समय से लेकर आज तक यह उस दोषी जाति के लिए **लोहू का खेत** है।

महायाजकों ने अनजाने में ही जकर्याह की यह भविष्यद्वाणी पूरी कर दी कि इस धन का उपयोग कुम्हार का खेत खरीदने के लिए किया जाएगा (जक.11:12,13)। आश्चर्य की बात है कि जकर्याह के इस भाग का अनुवाद आर.एस.व्ही. बाइबल में, "कुम्हार" के लिये "भण्डार" पाया जाता है।

लोहू के पैसों को भण्डार में रखने के विषय में महायाजकों को नैतिक संकोच था, इसलिये कुम्हार के खेत के लिए उन सिक्कों को देकर उन्होंने आर.एस.व्ही. बाइबल में लिखी गई भविष्यद्वाणी को पूरी कर दिया। (स्क्रिप्चर यूनियन के दैनिक पाठ से)।

मत्ती कहता है कि यह भविष्यद्वाणी **यिर्मयाह** के द्वारा की गई है, जबकि हम पाते हैं कि यह जकर्याह की पुस्तक से ली गई है। वह शायद यहाँ पर यिर्मयाह का नाम इसलिए ले रहा है क्योंकि इब्रानी मूल लेख और तालमुड परम्परा के अनुसार यिर्मयाह का नाम उस स्क्रोल में सबसे पहले और प्रमुख रूप से आता था जिसका मत्ती उपयोग करता था। लूका 24:44 में भी इसका एक उदाहरण पाया जाता है जहाँ इब्रानी बाइबल संग्रह के तीसरे खण्ड के सम्पूर्ण भाग को भजन संहिता का नाम दिया गया है।

म. यीशु का पीलातुस के समक्ष पहली बार उपस्थित होना (27:11–14)

यीशु के विरुद्ध यहूदियों की शिकायत वास्तव में *धार्मिक* थी, और वे इसी आधार पर उस पर मुकद्‌दमा

चला रहे थे। परन्तु रोमी कचहरी में धार्मिक आरोपों का कोई वजन नहीं था। वे इस बात को जानते थे, इसलिए जब वे उसे पीलातुस के पास लेकर आए तो उसके विरूद्ध तीन *राजनैतिक* आरोप लगाए (लूका 23:2): (1) वह एक क्रान्तिकारी है जो साम्राज्य के लिए एक खतरा है; (2) वह लोगों को कर न देने के लिए भड़काता है, इसलिए वह साम्राज्य की समृद्धि को क्षति पहुँचा रहा है; (3) वह राजा होने का दावा करता है, इसलिए सम्राट की सत्ता व पद के लिए एक खतरा है।

मत्ती के सुसमाचार में हम देखते हैं कि पीलातुस ने तीसरे आरोप के विषय में उससे पूछताछ की। जब उसने उससे पूछा कि क्या वह **यहूदियों का राजा** है, तब यीशु ने उत्तर दिया कि वह है। यह सुनकर यहूदी अगुवे बुरी तरह से उसका ठट्ठा करने और उसकी निन्दा करने लगे। प्रतिवादी के मौन रहने पर पीलातुस को **बड़ा आश्चर्य** हुआ; उसने उनके आरोपों को महत्व न देते हुए एक का भी उत्तर नहीं दिया। शायद हाकिम ने इससे पहले कभी नहीं देखा हो कि कोई ऐसे आक्रमण के बीच में इस प्रकार से मौन रह सकता है।

न. यीशु या बरअब्बा (27:15–26)

27:15–18 रोमी शासन की यह परम्परा थी कि वे यहूदियों को तुष्ट करने के लिए फसह के पर्ब्ब के समय एक यहूदी **बन्धुए** को **छोड़** देते थे। ऐसा ही एक दावेदार अपराधी **बरअब्बा** था, जिसे देशद्रोह और हत्या का दोषी ठहराया गया था (मरकुस 15:7)। रोमी शासन के विरूद्ध विद्रोह करने के कारण, वह शायद अपने लोगों में काफी लोकप्रिय था। इसलिए जब पीलातुस ने उन्हें **यीशु** और **बरअब्बा** में से किसी एक को चुनने का अवसर दिया, तो उन्होंने बरअब्बा का पक्ष लिया। हाकिम को इस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ; वह जानता था कि जनता के मत को उन याजकों ने प्रेरित किया है, जो यीशु से ईर्ष्या करते थे।

27:19 कार्यवाही में कुछ देर के लिए अस्थायी तौर पर अवरोध उत्पन्न हुआ जब पीलातुस की **पत्नी** का एक सन्देशवाहक वहाँ पहुँचा। पीलातुस की पत्नी ने अपने पति से यह आग्रह किया वह यीशु के मामले में हाथ न डाले; उसने यीशु के विषय में एक बहुत ही परेशान कर देने वाला **स्वप्न** देखा था।

27:20–23 पर्दे के पीछे से **महायाजकों और पुरनियों** के द्वारा **बरअब्बा** को छोड़ने और यीशु को मार डालने के लिए लोगों को भड़काया जा रहा था। इसलिए जब **पीलातुस** ने एक बार फिर लोगों से यह पूछा कि वे किसे मुक्त करवाना चाहते हैं, तो उन्होंने हत्यारे के पक्ष में आवाज उठाई। अनिर्णय के अपने जाल में स्वयं फंस कर, पीलातुस ने उनसे पूछा, "**फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?**" उन्होंने एकमत होकर उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने की मांग की, यह एक ऐसा रवैया था जो हाकिम की समझ से परे था। उसे क्रूस पर क्यों चढ़ाया जाए? उसने क्या अपराध किया है? परन्तु अब शान्ति से कोई चर्चा करने के लिए निवेदन करने में काफी देर हो चुकी थी, भीड़ उन्मादी हो चुकी थी। वह चीखने लगी, "**वह क्रूस पर चढ़ाया जाए**!"

27:24 **पीलातुस** को समझ में आ चुका था कि लोग कठोर हो चुके हैं और एक हंगामें की शुरुवात हो चुकी है। इसलिए उसने भीड़ के सामने ही **अपने हाथ धोए**, और अपने आप को उसका **लोहू** बहाने के दोष से निर्दोष घोषित कर दिया। परन्तु न्याय की इस हत्या में पीलातुस के इस दोष को यह जल निरापराध नहीं ठहरा सकता।

27:25 भीड़ इतनी उन्मत (पागलों की तरह) हो चुकी थी, कि वह दोष को अपने ऊपर लेने के लिए तैयार थी: "**इस का लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो।**" तब से लेकर आज तक इस्राएल के लोग झुग्गी–झोपड़ी से लेकर सामूहिक हत्याकाण्ड, नज़रबन्दी शिविर से लेकर गैस चैम्बर में बन्द किए जाने जैसे कष्टों का सामना करते हुए आ रहे हैं, और अपने द्वारा ठुकराए गए मसीह के लोहू के दोष को उठाए चल रहे हैं। उन्हें आने वाले समय में याकूब के संकट के भयानक समय का भी सामना करना है – मत्ती 24 और प्रकाशितवाक्य 6–19 में पाए जाने वाले क्लेशकाल के वे सात वर्ष। यह शाप तब तक बना रहेगा जब तक वे अपने द्वारा ठुकराए गए मसीहा को अपने मसीह–राजा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे।

27:26 पीलातुस ने भीड़ के लिए **बरअब्बा को . . . छोड़ दिया**, और तब से लेकर आज तक बरअब्बा की आत्मा संसार पर भारी पड़ रही है। हत्यारे को आज भी सिंहासन पर बैठाया जाता है; धर्मी राजा का तिरिस्कार किया जाता है। उसके बाद, जैसा कि उस समय की परम्परा

थी, दोषी ठहराए गए व्यक्ति को **कोड़े** लगाए जाते थे। चमड़े का एक बड़ा चाबुक, जिस पर तेज धातुओं के छोटे छोटे टुकड़े जड़े रहते थे, उसके पीठ पर मारा गया, प्रत्येक प्रहार से उसकी चमड़ी उखड़ जाती और खून की धाराएं बह उठतीं। अब इस रीढ़विहीन हाकिम के पास यह करने के सिवाय और कुछ न रहा कि वह यीशु को **क्रूस पर** चढ़ाए जाने के लिए सैनिकों के हाथों सौंप दे।

ओ. सैनिक यीशु का ठट्ठा करते हैं (27:27-31)

27:27,28 तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को हाकिम के महल में ले जाकर **सारी पलटन उसके चहुं ओर इकट्ठी की** – सैकड़ों सैनिक। उसके बाद जो कुछ हुआ उसकी कल्पना भी कर पाना कठिन है! विश्व के सृष्टिकर्ता ने निर्दयी, और अश्लील सैनिकों – उसकी अयोग्य पापी सृष्टि के हाथों ऐसा अपमान झेला जिसका वर्णन तक नहीं किया जा सकता। उन्होंने **उसके कपड़े उतार कर उसे किरमिजी बागा पहिनाया** और उसे राजा के पहिनावे का रूप देकर उसका उपहास करने लगे। परन्तु इस पहिनावे में हमारे लिए एक सन्देश है। चूंकि लाल (किरमिजी) रंग पाप का प्रतीक है (यशा 1:18), मेरा यह विचार है कि मेरे पापों को यीशु पर डाल दिया गया ताकि परमेश्वर की धार्मिकता का वस्त्र मुझे पहनाया जा सके (2 कुरि. 5:21)।

27:29-30 उन्होंने **कांटों का मुकुट गूंथकर** उसे उसके **सिर पर** घुसा दिया। परन्तु उनकी इस अशिष्ट मसखरी के पार जाकर, हम ऐसा समझते हैं कि उसने *कांटों का एक ताज* पहना कि हम *महिमा का मुकुट* पहन सकें। उन्होंने उसे पाप का राजा बना कर उसका ठट्ठा उड़ाया; हम उसे पापियों का उद्धारकर्ता जान कर उसकी आराधना करते हैं।

उन्होंने उसके हाथ में एक **सरकण्डा** भी दिया – उन्होंने मसखरी करते हुए इस सरकण्डे को उसका राजदण्ड कहा। वे यह नहीं जानते थे कि जिस हाथ ने इस सरकण्डे को पकड़ा वह इस संसार पर राज्य करता है। कीलों से छिदे यीशु के ये हाथ अब विश्व पर प्रभुता का राजदण्ड थामें हुए हैं।

वे **उसके आगे** घुटने टेकते थे और उसे **यहूदियों के राजा** के रूप में सम्बोधित करते थे। वे इतने में ही सन्तुष्ट नहीं हुए, उन्होंने इस संसार के एकमात्र आदर्श व्यक्ति के मुँह पर **थूका**, और उसके बाद उसके हाथ से **वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।**

यीशु ने इन सारे अपमानों को बहुत ही धीरज के साथ सहा; उसने एक भी शब्द नहीं कहा। ''इसलिए उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो'' (इब्रानियों 12:3)।

27:31 अन्तिम बात, उन्होंने **फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले।**

प. राजा को क्रूस पर चढ़ाया जाना (27:32-44)

27:32 हमारे प्रभु ने अपना **क्रूस** आधे रास्ते तक उठाया (यूहन्ना 19:17)। उसके बाद सैनिकों ने **शमौन** नामक एक **कुरेनी** (उत्तरी अफ्रीका का निवासी) व्यक्ति को **बेगार** पर बाध्य किया कि वह यीशु के बदले क्रूस उठा कर चले। कुछ लोगों का मानना है कि शमौन एक यहूदी था; अन्य लोग ऐसा मानते हैं कि वह एक अश्वेत व्यक्ति था। महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे प्रभु का क्रूस उठाने का अद्भुत अवसर मिला।

27:33 गुलगुत्ता ''खोपड़ी'' का आरामी शब्द है। कलवरी नाम यूनानी शब्द *क्रानियोन* का लैटिन अनुवाद का अंग्रेजी रूप है। शायद इस क्षेत्र का आकार खोपड़ी की तरह था या इसे ऐसा नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह वध किए जाने का स्थान था। इस स्थल की भोगौलिक स्थिति अज्ञात है।

27:34 क्रूस पर चढ़ाने से पहले सैनिकों ने यीशु को **पित्त मिलाया हुआ दाखरस** देना चाहा, इसे क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले अपराधियों को दिया जाता था ताकि इसे पीकर उन्हें पीड़ा का अहसास कम हो। यीशु ने इसे पीने से मना कर दिया। उसके लिए यह अनिवार्य था कि वह मनुष्य के पापों के पूर्ण भार को अपने पूरे होशो हवास में ले, ताकि उसकी पीड़ा किसी भी तरह से कम न लगे।

27:35 मत्ती क्रूस पर चढ़ाए जाने का वर्णन सरल

और भावशून्य तरीके से करता है। वह नाटकीय ढंग से इसे प्रस्तुत करने से बचता है, और खबर को सनसनीखेज नहीं बताता, न ही घिनौने विवरणों पर जोर देता है। वह सीधे सीधे तथ्य को प्रस्तुत करता है: **तब उन्होंने ने उसे क्रूस पर चढ़ाया**। तौभी अनन्तता भी इन शब्दों की गहराई की थाह नहीं पा सकेगी।

जैसे कि, भजन 22:18 में भविष्यद्वाणी की गई है, सैनिकों ने **चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए**। पृथ्वी पर उसके पास सिर्फ यही सम्पत्ति थी। मसीही लेखक डेन्नी ने कहा है, ''एकमात्र सिद्ध जीवन जो इस संसार में रहा, उस व्यक्ति का जीवन है जिसके पास कुछ नहीं था और जिसने अपने पीछे, पहिने हुए कपड़ों के सिवाय और कुछ नहीं छोड़ा।''

27:36 ये सैनिक छोटे लोगों के संसार के प्रतिनिधि थे। उन्हें इस बात का जरा भी बोध नहीं था कि एक इतिहास रूप ले रहा है। यदि वे यह जानते, तो वे *बैठ* कर **पहरा** देते नहीं रह जाते; वे *घुटने टेक* कर उसकी आराधना करते।

27:37 मसीह के **सिर के ऊपर** उन्होंने यह लिखा, **यह यहूदियों का राजा यीशु है**। क्रूस के ऊपर ठीक ठीक क्या लिखा हुआ था, यह चारों सुसमाचारों में अलग अलग पाया जाता है।[52] मरकुस कहता है ''यहूदियों का राजा'' (मरकुस 15:26); लूका: ''यह यहूदियों का राजा है'' (23:38); और यूहन्ना: ''यीशु नासरी यहूदियों का राजा'' (19:19)। महायाजकों ने विरोध करते हुए कहा, कि यह एक तथ्यात्मक वाक्य के रूप में नहीं, परन्तु यीशु के दावे के रूप में लिखा जाए। किन्तु, पीलातुस ने उनकी बात नहीं सुनी; सच्चाई वहाँ लिखी रही ताकि सब उसे देख सकें – यह इब्रानी, लाटिनी, और यूनानी भाषा में लिखी गई थी (यूहन्ना 19:19–22)।

27:38 परमेश्वर के निष्पाप सन्तान के अगल–बगल **दो डाकू** लटकाए गए थे, क्योंकि यशायाह ने इस घटना के लगभग 700 वर्ष पहले यह भविष्यद्वाणी की थी कि वह अपराधियों के संग गिना जाएगा (53:12)। पहले, दोनों डाकू यीशु का अपमान और निन्दा कर रहे थे (पद 44)। परन्तु एक ने मन फिरा लिया और समय की नोक पर उसने उद्धार पा लिया; कुछ ही घण्टों में वह यीशु के साथ स्वर्गलोक में था (लूका 23:42, 43)।

27:39,40 यदि क्रूस परमेश्वर के प्रेम का प्रगट करता है, तो यह मनुष्य की भ्रष्टता को भी प्रगट करता है। वहाँ से पार होने वाले लोग देर तक वहां रूक कर उस चरवाहे को जो अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण दे रहा था, यह कहते हुए ताना मार रहे थे: ''हे मन्दिर के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।'' यह तर्कवादी अविश्वास की भाषा है। ''हम देख कर ही विश्वास करेंगे।'' यह उदारवादियों की भी भाषा है। ''क्रूस पर से उतर आ – दूसरे शब्दों में, क्रूस की ठोकर को हटा दे और हम विश्वास कर लेंगे।'' विलियम बूथ ने कहा, ''वे दावा कर रहे थे कि यदि वह नीचे आ जाए, तो वे उस पर विश्वास कर लेंगे; हम इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि वह क्रूस पर ही रहा।''

27:41–44 महायाजक . . . शास्त्रियों और पुरनियों ने भी राग में राग मिलाया। अनजाने में ही उन्होंने सच्चाई कह दी, ''**इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता**।'' उन्होंने इसे एक ताने के रूप में कहा; हम इसे स्तुति के एक भजन के रूप में अपनाते हैं:

वह अपने आप को नहीं बचा सका,
क्रूस पर उसका मरना अवश्य था,
अन्यथा हम नाश हो चुके पापियों पर,
दया नहीं हो सकती थी,
हाँ, परमेश्वर के पुत्र मसीह का
रक्त बहना अवश्य था,
ताकि पापियों का पाप से छुटकारा हो सके।
– *अल्बर्ट मिडलाने*

यह बात प्रभु के जीवन में पूरी तरह से लागू होती थी, और यह हमारे जीवन के लिए भी सत्य है। हम यदि अपने आप को बचाते हैं, तो दूसरों को नहीं बचा सकते।

धार्मिक अगुवों ने उद्धारकर्ता होने के, और **इस्राएल का राजा** होने के प्रभु के दावे का उपहास किया। **इसी प्रकार से डाकू भी** उसे कोसने में उनके साथ हो लिए। धार्मिक अगुवे अपने परमेश्वर की झूठी निन्दा करने के लिए अपराधियों के साथ मिल गए।

क्यू. अंधकार के तीन घण्टे (27:45–50)

27:45 अब तक उसने मनुष्यों के हाथों जितना भी अपमान और कष्ट सहा था वह उन सारी बातों के सामने

कुछ भी नहीं था जो कि अब वह झेलेगा। **दोपहर से लेकर तीसरे पहर** (3 बजे उपरान्ह) **तक** न सिर्फ पलस्तीन के **सारे देश में** बल्कि उसके पवित्र प्राण में भी **अन्धेरा छाया रहा**। यही वह समय था जब उसने हमारे पाप के अवर्णनीय बोझ को अपने ऊपर ले लिया था। इन तीन घण्टों में वह उस नरक में समा गया था जिसके हम योग्य थे – हमारे सारे अपराधों के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध। हम इसे बहुत ही धुंधले रूप में देख पाते हैं; हम यह समझ ही नहीं सकते कि पाप के विरुद्ध परमेश्वर की धार्मिक मांगों को पूरा करने के लिए उसे क्या करना पड़ा था। हम सिर्फ इतना जानते हैं कि उन तीन घण्टों में उसने उस मूल्य का भुगतान कर दिया, कर्ज़ को चुका दिया, और मनुष्य के छुटकारे के लिए आवश्यक कार्य को पूरा किया।

27:46 लगभग 3:00 बजे अपरान्ह, उसने **बड़े शब्द से पुकार कहा**, . . .''**हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया**?'' इसका उत्तर भजन 22:3 में पाया जाता है, ''. . . तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।'' इसलिए कि परमेश्वर पवित्र है, वह पाप को अनदेखा नहीं कर सकता। बल्कि, यह अवश्य है कि वह उसका दण्ड दे। प्रभु यीशु में कोई पाप नहीं था, परन्तु उसने हमारे पापों का दोष अपने ऊपर ले लिया था। जब परमेश्वर ने, एक न्यायी के रूप में, नीचे देखा और हमारे पापों को निष्पाप स्थानापन्न के ऊपर देखा, तो उसने अपने प्रिय पुत्र से नाता तोड़ लिया। यही वह अलगाव था जिसने हमारे प्रभु के हृदय को मरोड़ दिया, इसे मिसिस ब्राऊनिंग ने बहुत ही सुन्दर नाम देते हुए ''इम्मानुएल की अनाथ पुकार'' कहा है:

त्याग दिया गया! परमेश्वर ने अपने ही सार से
अपने आप को अलग कर लिया;
और आदम का पाप
धर्मी पुत्र और पिता के बीच में आ गया:
जी हाँ, एक बार, इम्मानुएल की अनाथ पुकार ने उसके
विश्व को हिला कर रख दिया –
यह अकेलेपन की प्रतिध्वनिहीन पुकार थी,
''हे मेरे परमेश्वर, मैं त्याग दिया गया हूँ!''

– एलिज़ाबेथ बैरेट ब्राऊनिंग

27:47, 48 जब यीशु ने पुकार कर कहा, ''**एली, एली . . .**,'' **जो वहां खड़े थे**, कहने लगे कि वह एलिय्याह को **पुकारता है**। यह स्पष्ट नहीं है कि वे नाम को समझने में गड़बड़ा गए या फिर उन्होंने जानबूझ कर उसका उपहास किया। एक ने एक लम्बे **सरकण्डे** को लेकर **सिरके** में डूबे एक **स्पंज** को उठाया और उसे उसके मुँह के पास ले गया। भजन 69:21 के प्रकाश में हम यह समझ सकते हैं, कि ऐसा उस पर दया दिखाते हुए नहीं, परन्तु उसकी पीड़ा को बढ़ाने के लिए किया गया था।

27:49 उस समय लोगों का भाव यह था कि ठहर कर **देखें** कि क्या इस समय **एलिय्याह** उस भूमिका का निर्वहन करने के लिए आएगा जो यहूदी परम्परा ने उसके लिए निर्धारित किया था – धर्मी जन की सहायता करने के लिए। परन्तु यह एलिय्याह के आने का समय नहीं था (मला. 4:5); यह मसीह के मरने का समय था।

27:50 फिर से बड़े शब्द से चिल्लाकर, यीशु ने अपने **प्राण छोड़ दिए**। **बड़े शब्द से** चिल्लाना यह दर्शाता है कि उसने निर्बल होकर नहीं, परन्तु शक्ति में होकर प्राण छोड़ा। यह सच्चाई कि उसने **प्राण छोड़** दिया उसकी मृत्यु को दूसरों की मृत्यु से अलग बनाती है। हम इसलिए मरते हैं क्योंकि हमारा मरना अवश्य है; वह इसलिए मरा क्योंकि उसने मरना चाहा। क्या उसने यह नहीं कहा था, ''मैं अपने प्राण देता हूँ, कि उसे फिर से ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है'' (यूहन्ना 10:17–18)।

विश्व का सृष्टिकर्ता मनुष्य रूप में,
मनुष्य के बदले शाप ठहरा;
अपने द्वारा बनाए गए नियमों की मांगों को,
उसने पूरी तरह से पूर्ण किया।
उसके पवित्र हाथों ने ही उस शाखा की सृष्टि की थी,
जिसमें वे कांटे उगे
जिसका मुकुट उसके माथों पर चुभाया गया।
जिन कीलों से उसकी हाथों को छेदा गया,
उन्हें उसी ने उन खदानों में छिपाया था;
उसी ने उन जंगलों को बनाया जहां,
वह पेड़ उगा जिसमें उसकी देह को टांगा गया।
वह लकड़ी के एक क्रूस पर मरा,

तौभी उसने उस पहाड़ी को बनाया था
जिस पर यह क्रूस गाड़ा गया।
उसके सिर के ऊपर का आकाश
जो अंधकारमय हो गया था,
उसी के द्वारा पृथ्वी के ऊपर ताना गया था;
जिस सूर्य ने उससे अपना मुख छिपा लिया था,
वह उसी की आज्ञा से अंतरिक्ष में स्थापित हुआ था;
जिस भाले ने उसके पवित्र लोहू को बहाया,
वह परमेश्वर द्वारा बनाई गई आग में ही
तपाया गया था।
जिस कब्र में उसकी काया को रखा गया,
वह उसी चट्टान को खोद कर बनाई गई थी
जिसे उसने अपने हाथों से बनाया था।
जिस सिंहासन पर अब वह दिखाई देता है,
वह अनन्तकाल से उसका है;
परन्तु अब महिमा का एक नया मुकुट
उसके माथे पर रखा गया है,
और हर एक घुटना उसके सामने झुकेगा।

– *एफ. डब्ल्यू पिट्ट*

र. फटा हुआ परदा (27:51–54)

27:51 जिस समय उसने अपने प्राण त्यागे, वह भारी, सिवन वाला परदा, जो मन्दिर के दो प्रमुख कक्षों को विभाजित करता था, एक अदृश्य हाथ के द्वारा ऊपर से नीचे तक फाड़ दिया गया। उस समय तक वह **परदा** महायाजक के छोड़ प्रत्येक व्यक्ति को उस परमपवित्र स्थान में जाने से रोकता था जिसमें परमेश्वर का वास था। भीतरी वेदी में सिर्फ एक ही व्यक्ति प्रवेश कर सकता था, और वह भी वर्ष में सिर्फ एक दिन।

इब्रानियों की पत्री से हमें यह ज्ञात होता है कि परदा मसीह की देह को दर्शाता है। इसका फटना यह दर्शाता है कि उसने अपनी देह को मृत्यु के लिए दे दिया। उसकी मृत्यु के द्वारा से, हमें ‘‘उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर हमारे लिए अभिषेक किया है’’ (इब्रा. 10:19–20)। अब दीन से दीन विश्वासी भी प्रार्थना और स्तुति के द्वारा कभी भी परमेश्वर की स्तुति में प्रवेश कर सकता है। परन्तु हमें यह कभी नहीं भूलना है कि यह विशेषाधिकार हमारे लिए एक बहुत ही बड़ा मूल्य चुकाकर खरीदा गया है – प्रभु यीशु का लोहू।

परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु से प्रकृति में भी भयानक उथल–पुथल मच गई – मानो निष्प्राण सृष्टि और उसके सृष्टिकर्ता के बीच एक भावनात्मक सम्बन्ध हो। एक भूकम्प से बड़ी बड़ी **चट्टानें** तड़क गईं जिससे अनेक **कब्रें** खुल गईं।

27:52,53 परन्तु ध्यान दें कि यीशु के **जी उठने के बाद** ही इन कब्रों में गाड़े गए लोगों की लोथें **जी उठीं** और वे यरूशलेम **में गए** और **बहुतों को दिखाई दिए**। बाइबल यह नहीं बताती कि जी उठे ये पवित्र लोग फिर से मर गए या फिर प्रभु के साथ स्वर्ग गए।

27:54 प्रकृति में मची विचित्र उथल–पुथल से रोमी **सूबेदार** और उसके सिपाहियों को निश्चय हो गया कि यीशु **परमेश्वर का पुत्र** था (यूनानी में इसकी वाक्य–रचना के आधार पर यह अनुवाद किया जा सकता: ‘यीशु ही परमेश्वर का पुत्र था’)[53] **सूबेदार** के कहने का क्या अर्थ था? क्या उसने प्रभु यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में अंगीकार किया, या सिर्फ यह स्वीकार किया कि यीशु मनुष्य से कुछ अधिक था? हम निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकते। अवश्य ही उसके इस भाव में विस्मय और श्रद्धा का भाव छिपा हुआ है, और साथ ही एक बोध भी है कि प्रकृति में मची उथल–पुथल किसी न किसी तरह से यीशु की मृत्यु से जुड़ी हुई हैं, उन लोगों की मृत्यु से नहीं जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं।

स. विश्वासयोग्य स्त्रियां (27:55–56)

स्त्रियों का विशेष करके उल्लेख किया गया है जिन्होंने विश्वासयोग्यता से प्रभु की सेवा की, और जो **गलील** से यरूशलेम तक उसके साथ **साथ आई** थीं। **मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की माता मरियम** और जब्दी की पत्नी सलोमी वहां थीं। इन स्त्रियों की निडर भक्ति में एक अलग ही चमक दिखाई देती है। वे ऐसे समय में भी मसीह के साथ ही रहीं जब सारे पुरुष चेले अपनी जान बचा कर भाग गए थे!

ट. यूसुफ की कब्र में गाड़ा जाना (27:57–61)

27:57,58 **अरमतियाह** का **यूसुफ** एक **धनी मनुष्य** था और वह यहूदी सभा सेन्हेड्रिन का सदस्य था, वह यहूदी सभा द्वारा यीशु को पीलातुस के हाथों सौंपे

जाने से प्रसन्न नहीं था (लूका 23:51)। यदि वह अब तक यीशु का गुप्त **चेला** था, तो समय आ चुका था कि वह सावधानी के इस लिबास को उतार फेंके। वह निडर होकर **पीलातुस के पास** गया और अपने प्रभु को गाड़ने की अनुमति मांगी। हम कल्पना करने का प्रयास करें कि यूसुफ के इस कदम से पीलातुस किस प्रकार से आश्चर्यचकित हुआ होगा, और यहूदी लोग किस प्रकार से भड़क गए होंगे, कि यहूदी सभा का एक व्यक्ति सार्वजनिक रूप से क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु का पक्ष ले रहा है। जब यूसुफ ने यीशु को दफन किया उस समय उसने अपने आप को आर्थिक, सामाजिक, और धार्मिक रूप से दफन कर दिया। इस कार्य से वह हमेशा के लिए उस तंत्र से अलग हो गया जिसने प्रभु यीशु को मार डाला था।

27:59, 60 **पीलातुस** ने **यूसुफ** को अनुमति दे दी और यूसुफ ने बड़े स्नेह से **लोथ** को **उज्जवल चादर से लपेटा**, और बीच बीच में सुगन्धित मसाले डाले। उसके बाद उसने उस लोथ को **अपनी नई कब्र** में रखा, जो एक ठोस **चट्टान** को खोद कर बनाई गई थी। कब्र का मुँह बन्द करने के लिए उसके सामने एक **बड़ा पत्थर** रख दिया गया, यह पत्थर चक्की के पाट के आकार का था और कब्र की मुँह पर खांचे पर रखा गया था, यह खांचा भी पत्थर को खोद कर बनाया गया था।

शताब्दियों पहले, यशायाह ने यह भविष्यद्वाणी की थी, ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ'' (यशा. 53:9)। नि:सन्देह उसके शत्रुओं ने उसके शरीर को हिन्नोम की तराई में फेंकने की पूरी योजना बना ली होगी ताकि उसकी लोथ कूड़े की आग से जल कर राख हो जाए, या सियारों के द्वारा खा ली जाए। परन्तु परमेश्वर ने उनकी योजनाओं को निष्फल कर दिया और यूसुफ का उपयोग करते हुए यह निश्चित किया कि वह *धनवान* के साथ गाड़ा जाए।

27:61 यूसुफ जब वहां से चला गया, तब **मरियम मगदलीनी** तथा याकूब और योसेस की माता **कब्र के सामने** रतजगा करते बैठी रहीं।

य. कब्र पर पहरा (27:62–66)

27:62–64 फसह के पहले दिन को **तैयारी का दिन** कहा जाता था, इसी दिन प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसके **बाद** वाले दिन **महायाजकों और फरीसियों** को असहजता महसूस होने लगी। जब उन्हें यह स्मरण आया कि प्रभु ने अपने जी उठने से पहले क्या कहा था, तो वे पीलातुस के पास गए और कब्र पर विशेष पहरा बैठाने का आग्रह किया। वे यह बहाना बनाने लगे कि पहरा बैठाने के बाद **उसके चेले** यीशु की लोथ को चुरा नहीं सकेंगे और लोगों के मन में यह छाप नहीं बना पाएंगे कि यीशु जी उठा है। उन्हें डर था कि यदि चेले अपनी योजना में सफल होंगे तो **पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा**; अर्थात्, उसके जी उठने की खबर, उसके इस दावे से भी बदतर होगी कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

27:65,66 पीलातुस ने उत्तर दिया, ''**तुम्हारे पास पहरुए तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो**।'' इसका अर्थ यह हो सकता है कि पहले से ही उन्हें रोमी पहरुए दे दिये गए थे। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि ''तुम्हारा निवेदन स्वीकार किया जाता है। मैं अब तुम्हें पहरुए देता हूँ।'' पीलातुस ने जब कहा, ''**अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो,**'' तब क्या उसकी आवाज में व्यंग्य था? उन्होंने अपनी ओर से सर्वोत्तम सुरक्षा का प्रबन्ध किया। उन्होंने कब्र पर मुहर लगा दी और पहरुओं को वहां नियुक्त कर दिया, परन्तु उनके द्वारा किए गए सर्वोत्तम सुरक्षा उपाय भी पर्याप्त नहीं थे। अंगर कहते हैं:

> उसके शत्रुओं द्वारा ''कब्र को सुरक्षित रखने के सारे प्रयास, उस पर मुहर लगाने, और उस पर पहरा बैठाने का,'' (पद 62–64), एकमात्र परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर ने दुष्टों की योजनाओं को विफल कर दिया और राजा के पुनरुत्थान का अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किया।[34]

XV. राजा की विजय (अध्याय 28)

अ.खाली कब्र और पुनरूत्थित प्रभु (28:1–10)

28:1–4 रविवार को भोर से पहले मरियम नाम की दो स्त्रियां **कब्र को देखने आईं**। जब वे वहाँ पहुँचीं तो **एक बड़ा भुइंडोल हुआ। एक दूत स्वर्ग से उतरा** और उसने **पत्थर को** कब्र के मुँह से **लुढ़का दिया,**

और **उस पर बैठ गया**। रोमी **पहरुए**, चमचमाते हुए श्वेत वस्त्र पहने इस तेजवान अस्तित्व से बुरी तरह डर गए।

28:5,6 स्वर्गदूत ने **स्त्रियों** को फिर से आश्वासन दिया कि डरने की कोई बात नहीं है। वे जिसे ढूंढ़ रहीं हैं, वह अपनी प्रतिज्ञा के **अनुसार जी उठा है**। **''आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।''** पत्थर को लुढ़का दिया गया था, इसलिए नहीं कि प्रभु बाहर आ जाए, परन्तु इसलिए ताकि स्त्रियां भीतर जा कर यह देख सकें कि वह जी उठा है।

28:7-10 उसके बाद स्वर्गदूत ने स्त्रियों को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वे **शीघ्र जाकर** यह महिमामय सुसमाचार **उसके चेलों** को सुनाएं। प्रभु फिर से जी उठा है और वह **गलील में** उनसे मुलाकात करेगा। जब वह चेलों को बताने के लिए जा रहे थे, तो मार्ग में ही यीशु उन्हें दिखाई दिया, और एक शब्द कह कर उनका अभिवादन किया, **''सलाम!''**[55] इस पर उन्होंने उसके **पांव** पर गिर कर उसकी आराधना की। उसके बाद उसने व्यक्तिगत रूप से उन्हें यह जिम्मेदारी दी कि वे चेलों को यह सूचित कर दें कि वह **गलील** में उनसे मिलेगा।

ब. सिपाहियों को झूठ बोलने के लिये घूस दिया गया (28:11-15)

28:11 जैसे ही उन सिपाहियों की चेतना लौटी, उन **में से** कुछ सिपाही किसी तरह **महायाजकों** के पास गए और उन्हें इसकी सूचना दी! वे अपने मिशन में असफल रहे! कब्र खाली है!

28:12,13 इन धार्मिक अगुवों की भयाकुलता का अंदाज लगाना हमारे लिए मुश्किल नहीं है। महायाजकों ने पुरनियों के साथ मिलकर एक गुप्त सभा बुलाई कि वे अपनी रणनीति तैयार कर सकें। हड़बड़ी में उन्होंने **सिपाहियों** को घूस दिया कि वे यह अद्भुत किस्सा सुनाएं कि जब सिपाही **सो रहे थे**, तब **चेले** आकर यीशु की लोथ को **चुरा ले गए**।

इस स्पष्टीकरण से, उत्तरों से अधिक प्रश्न उभर कर सामने आते हैं। सिपाही लोग क्यों सो रहे थे जब उन्हें रखवाली करने के लिए रखा गया था? सिपाहियों के जागे बिना चेले इतने बड़े पत्थर को वहाँ से कैसे लुढ़का सकते थे? सभी सैनिक एक साथ एक ही समय में कैसे सो गए? यदि वे सो रहे थे, तो उन्हें यह कैसे पता चला कि यीशु की लोथ को चेलों ने चुराया है? यदि यह किस्सा सही होता तो फिर इसे बताने के लिए सिपाहियों को घूस क्यों दिया गया? यदि चेलों ने यीशु की लोथ को चुराया, तो उन्होंने लिपटे हुए कपड़े और अंगोछे को उतार कर उसे लपेटने के लिए समय क्यों बर्बाद किया? (लूका 24:12; यूहन्ना 20:6,7)।

28:14 वास्तव में सैनिकों को पैसे दिए गए थे कि वे अपने आप को निर्दोष साबित करने के लिए एक मनगढ़न्त कहानी बताएं; कर्तव्य के दौरान सो जाने पर रोमी शासन मृत्यु दण्ड देता था। इसलिए यहूदी अगुवों ने सिपाहियों को आश्वासन दिया कि यदि यह बात रोमी **हाकिम के कान तक** पहुँचती है, तो वे सिपाहियों की ओर से बीच-बचाव करेंगे।

यहूदी सभा सन्हेड्रिन को यह समझ में आने लगा था कि सच्चाई अपने आप ही सिद्ध हो जाती है, जबकि एक झूठ को सम्भालने के लिए अनगिनत झूठ बोलने पड़ते हैं।

28:15 तौभी **आज तक यहूदियों में**, और अन्यजातियों में भी यह मनगढ़न्त कहानी **प्रचलित** है। साथ ही इस सम्बन्ध में कुछ और मनगढ़न्त कहानियां भी प्रचलित हैं। विल्बर स्मिथ ने ऐसी दो कहानियों को सारांश में इस प्रकार से बताया है:

> 1. सबसे पहले ऐसा बताया जाता है कि स्त्रियां गलत कब्र में चली गई थीं। इस विषय पर थोड़ी देर के लिए विचार करें। क्या आप शुक्रवार की दोपहर को दफनाए गए अपने प्रिय जन की कब्र को रविवार की सुबह ही पहचानने में गलती कर देंगे? साथ ही इस बात की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह अरमतियाह के यूसुफ का कब्रिस्तान नहीं, बल्कि उसका एक निजी बगीचा था, तथा वहाँ और दूसरी कब्रें नहीं थीं।
>
> कुछ देर के लिए आइये हम मान लें, कि वहाँ और भी कब्रें थी, यद्यपि वास्तव में नहीं थीं, और आँखें आँसुओं से भरी होने के कारण स्त्रियां ठीक से नहीं देख पाईं और गलत कब्र पर चली गईं। भावुक स्त्रियों के लिए ऐसा मान भी लिया जाए, परन्तु पतरस और यूहन्ना जो मछुवे और स्त्रियों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक मजबूत थे, और जो नहीं रो रहे थे, वे भी कब्र के भीतर गए और उसे खाली पाया, वहाँ पर उन्होंने एक स्वर्गदूत को देखा जिसने उनसे कहा, ''वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।'' क्या आप को ऐसा लगता है कि स्वर्गदूत भी गलत कब्र पर चला

गया था? तौभी हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि बहुत से बुद्धिमान लोगों ने इस प्रकार की कहानियों को बढ़ावा दिया है। यह वास्तव में एक बकवास है!

2. कुछ लोगों का कहना है कि यीशु की मृत्यु नहीं हुई थी, परन्तु वह मूर्छित हुआ था, उसे किसी तरह से इस दमघोटू कब्र में होश आया, और वह फिर बाहर निकल गया। कब्र के मुँह पर एक बड़ा पत्थर रखा गया था और यह रोमी शासन की मुहर के द्वारा सील कर दिया गया था। कब्र के भीतर से कोई भी व्यक्ति किसी भी हालत में ऐसे पत्थर को लुढ़का नहीं सकता था जो सतह से कुछ नीचे गिर कर एक खांचे में धंसा रहता था। वह कब्र से बाहर एक दुर्बल अशक्त व्यक्ति के रूप में नहीं आया था।

सीधा सीधा सत्य यह है कि प्रभु यीशु का पुनरूत्थान इतिहास की एक पूर्ण-प्रमाणित सच्चाई है। उसने अपनी मृत्यु के बाद अनेक अकाट्य प्रमाण देकर अपने आप को चेलों के सामने जीवित प्रमाणित किया। इन विशेष अवसरों की ओर ध्यान दें जब वह अपने लोगों को दिखाई दिया था:

1. मरियम मगदलीनी (मरकुस 16:9-11)।
2. स्त्रियों को (मत्ती 28:8-10)।
3. पतरस को (लूका 28:8-10)।
4. इम्माऊस के मार्ग में दो चेलों को (लूका 24:13-32)।
5. चेलों को, थोमा को छोड़ कर (यूहन्ना 20:19-25)।
6. चेलों को, थोमा भी शामिल था (यूहन्ना 20:26-31)
7. गलील की झील के किनारे सात चेलों को (यूहन्ना 21)
8. 500 से अधिक विश्वासियों को (1 कुरि. 15:7)
9. याकूब को (1 कुरि. 15:7)
10. जैतून के पर्वत पर चेलों को (प्रेरित 1:3-12)।

हमारे प्रभु यीशु के पुनरूत्थान की ऐतिहासिक सच्चाई हमारे मसीही विश्वास की अटल और स्थिर नींव के बड़े पत्थरों में से एक है। मैं और आप खड़े होकर इस पर विश्वास की लड़ाई लड़ सकते हैं क्योंकि हम जिस अवस्था में है उसमें कोई विरोधाभास नहीं है। इसका इंकार किया जा सकता है, परन्तु इसे गलत प्रमाणित नहीं किया जा सकता।[56]

स. महान आज्ञा (28:16-20)

28:16,17 पुनरूत्थित प्रभु यीशु **गलील** में अपने चेलों को एक अज्ञात पहाड़ पर दिखाई दिया। इसी घटना का उल्लेख मरकुस 16:15-18 और 1 कुरिन्थियों 15:6 में पाया जाता है। यह क्या ही अद्‌भुत पुनर्मिलन है! उसका दु:ख हमेशा के लिए बीत चुका था। इसलिए कि वह जीवित है, वे भी जीवित रहेंगे। वह अपनी महिमामय देह में उनके सम्मुख खड़ा है। उन्होंने जीवित, प्रेमी प्रभु की आराधना की - यद्यपि अभी भी कुछ लोगों के मन में सन्देह छिपा हुआ था।

28:18 प्रभु ने यह स्पष्ट किया कि **स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार** उसे **दिया गया** है। अवश्य ही, एक अर्थ में, सारा अधिकार हमेशा से ही उसका रहा है। परन्तु यहाँ पर वह नई सृष्टि के मुखिया के रूप में अपने अधिकार की बात कर रहा है। उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के समय से, उसके पास अधिकार है कि वह उन सभी को अनन्त जीवन प्रदान करे जिन्हें प्रभु ने उसे दिया है (यूहन्ना 17:2)। सारी सृष्टि के पहिलौठे के रूप में हमेशा से ही उसके पास अधिकार रहा है। परन्तु अब जबकि वह छुटकारे का काम पूरा कर चुका है, तो उसके पास मृतकों में से जी उठने वालों में पहिलौठे का अधिकार है - ''कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (कुलु. 1:15,18)।

28:19-20 नई सृष्टि के मुखिया के रूप में, उसने महान आज्ञा जारी की, जिसमें राज्य के वर्तमान चरण के सारे विश्वासियों के लिए ''स्थायी आदेश'' पाए जाते हैं - राज्य का वर्तमान चरण राजा को ठुकराए जाने से लेकर उसके दूसरे आगमन तक के समय को कहा गया है।

इस आज्ञा में तीन सुझाव नहीं, बल्कि तीन आदेश पाए जाते हैं:

1. **''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।''** यहाँ सम्पूर्ण संसार को मसीही बना डालने की बात नहीं कही गई है। सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा, चेलों को यह सुनिश्चित करना है कि दूसरे लोग उद्धारकर्ता के शिष्य या चेले बनें - हर जाति, गोत्र, जनसमूह, और भाषा के लोग।

2. **''उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''** मसीह के सन्देशवाहक

की यह जिम्मेदारी है कि वह बपतिस्मा के विषय में शिक्षा दे और इसे एक ऐसी आज्ञा के रूप में महत्व दे जिसका पालन किया जाना है। विश्वासियों के बपतिस्मा में, मसीही लोग सार्वजनिक रूप से त्रिएक परमेश्वर के साथ अपनी पहचान जाहिर करते हैं। वे यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर उनका पिता है, यीशु मसीह उनका प्रभु और उद्धारकर्ता है, और पवित्र आत्मा उनके भीतर वास करता है, उन्हें सामर्थ प्रदान करता है, और उन्हें सिखाता है। पद 19 में **नाम** एकवचन में है। एक **नाम** या सार, तौभी तीन व्यक्तित्व – **पिता, पुत्र** और **पवित्र आत्मा**।

3. **''उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।''** यह आदेश सिर्फ सुसमाचार प्रचार तक सीमित नहीं है, परन्तु यह इसके आगे तक जाता है; यह काफी नहीं है कि लोगों के मन–फिराव तक ही उनकी सहायता की जाए, और फिर उन्हें उनके हाल में छोड़ दिया जाए। उन्हें यह सिखाना आवश्यक है कि वे नया नियम में दी गई मसीह की *आज्ञाओं का पालन* करें। गुरु के समान बनना ही चेलेपन का सार है, और ऐसा, वचन की व्यवस्थित शिक्षा और वचन के प्रति समर्पणता से होता है।

उसके बाद उद्धारकर्ता ने एक प्रतिज्ञा जोड़ी कि वह **जगत के** अन्त तक अपने चेलों के साथ रहेगा। वे अकेले और असहाय होकर इस आदेश का पालन करने नहीं जाएंगे। उनकी सारी सेवकाई और यात्राओं में, वे परमेश्वर के पुत्र की सहभागिता का अनुभव करेंगे।

महान आज्ञाओं से जुड़े चार ''सब''/सारा इत्यादि की ओर ध्यान दें: **सारा अधिकार; सब जातियों; सब बातें; सदैव**।

इस प्रकार से सुसमाचार हमारे महिमामय प्रभु के एक आदेश और एक शान्तिदायक आश्वासन के साथ समाप्त होता है। लगभग 20 शताब्दी बाद भी उसके वचन में वही अकाट्यता है, वही प्रासंगिकता है, और वही उपयोगिता है।

उसकी इस अन्तिम आज्ञा का पालन करने के लिए हम क्या कर रहे हैं?

अन्त्य टिप्पणियाँ

(1:1) *यहोवा* इब्रानी नाम *याहवेह* का हिन्दी रूप है, पारम्परिक रूप से इसका अनुवाद ''प्रभु'' किया गया है। ऐसा ही *यीशु* नाम में भी है, यह इब्रानी नाम *येशुआ* का हिन्दी रूप है।

[2](4:2,3) इसे सारांश में ऐसा भी कहा जा सकता है, ''यदि, मैं तुझे अधिकार दूं, तो तू परमेश्वर का पुत्र है'' या ''इसलिए कि तू परमेश्वर का पुत्र है।''

[3](एक्सकर्सस) *डिस्पेन्सेशन* एक प्रशासन या भण्डारीपन होता है, यह उस तरीके का वर्णन करता है जिसके द्वारा इतिहास के एक समय–विशेष में परमेश्वर मानवजाति के साथ व्यवहार करता है। इस शब्द का अर्थ समय की अवधि नहीं, परन्तु किसी युग की ईश्वरीय योजना है। उदारहण के लिए, जब हम पण्डित जवाहर लाल नेहरू के प्रशासन के बारे में बात करते हैं, तब हम उन नीतियों की बात करते हैं जिनका पालन नेहरू जी ने अपने शासनकाल/कार्यकाल में किया था।

[4](5:13) अल्बर्ट बार्नेस, *नोट्स ऑन द न्यू टेस्टामेन्ट, मैथ्यू एण्ड मार्क,* पृष्ठ 47।

[5](5:22) चाहे कोई कारण हो, या न हो, क्रोध करने के लिए मना किया गया है।

[6](5:44–47) कुछ संस्करणों में अन्यजातियों के स्थानपर ''कर वसूलने वाले/चुंगी लेनेवाले'' अनुवाद किया गया है।

[7](5:44–47) कुछ संस्करणों में ''भाइयों'' के स्थान पर ''मित्र'' अनुवाद किया गया है।

[8](6:13) कुछ विद्वानों का यह मानना है कि यह महिमागान आराधना के उद्देश्य से 1 इतिहास 29:11 से लिया गया है। यह एक अनुमान ही है। पारम्परिक प्रोटस्टेंट प्रार्थना का रूप पूरी तरह से उचित है।

[9](7:13,14) अनेक संस्करणों में यह एक विस्मयादीबोधक वाक्य है: ''क्या ही सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं!'' यह भी एक उचित अनुवाद है।

[10](7:28, 29) जैमिसन, फाउस्सेट एण्ड ब्राऊन, *क्रिटिकल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेन्ट,* V:50।

[11](8:2) बाइबल में उल्लेखित कोढ़ के कुछ प्रकार आज के कोढ़ के समान नहीं थे। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था में, किसी घर या वस्त्र में फफूंद या संक्रमण हो जाने को भी कोढ़ कहा गया है।

[12](8:16,17) आर्नो सी. गायबेलिन, *द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* पृष्ठ 193।

[13](8:28) नगर और क्षेत्र का नाम कभी कभी परस्पर प्रयोग किया गया है।

[14](9:26) गायबेलिन, *मत्ती,* पृष्ठ 193।

[15](9:17) डब्ल्यू. एल. पेटिनगिल, *सिम्पल स्टडिज़ इन मैथ्यू,* 111, 112 पृष्ठों में।

[16](10:8) अनेक संस्करणों से ''मरे हुओं को जिलाओ'' हटा दिया गया है।

[17](10:21) जे.सी. मैकाउले, *ओबिडिएन्ट अन टू डैथ: डिवोशनल स्टडिज़ इन जॉन्स गॉस्पल,* II:59।

[18](10:41) आर्थर टी. पीयरसन, ''द वर्क ऑफ ख़्राइस्ट फॉर द बिलिवर,'' *द मिनिस्ट्री ऑफ केसविक, फर्स्ट सीरिज़,* पृष्ठ 114।

[19](11:27) अल्वा जे. गॉस्पल मैंक्कलेन, *द ग्रेटनेस ऑफ द किंगडम,* पृष्ठ 311।

[20](11:30) जे. एच. जोवेट, *अवर डेली ब्रेड* में उद्धरित।

[21](12:8) इ. डब्ल्यू, रोजर्स, *जीज़स द ख़्राइस्ट,* 65, 66 पृष्ठों में।

[22](12:19) मैक्क लेन, *किंगडम,* पृष्ठ 283।

[23](12:21) क्लेस्ट एण्ड लिली, *द न्यू टेस्टामेन्ट रेन्डर्ड फ्रॉम द ओरिजनल ग्रीक विथ एक्सपेंडेड नोट्स,* पृष्ठ 283।

[24](12:27) एला इ. पोहले, *सी. आई. स्कोफील्ड्स क्वोश्चन बॉक्स,* पृष्ठ 97।

[25](12:34,35) कुछ संस्करणों में ''मन के'' या ''उसके मन के'' को हटा दिया गया है, परन्तु इसका अर्थ स्पष्ट है।

[26](13:13) एच. चेस्टर वुडरिंग, अप्रकाशित शिक्षण सामग्रियों से लिया गया, इम्माऊस बाइबल स्कूल, 1961।

[27](13:22) जी. एच. लैंग, *द पैराबोलिक टीचिंग ऑफ स्क्रिप्चर,* पृष्ठ 68।

[28](13:24–26) मेरिल एफ अंगर, *अंगर्स बाइबल डिक्शनरी,* पृष्ठ 1145।

[29](13:33) जे. एच. ब्रूक्स, *आई एम कमिंग,* पृष्ठ 65।

[30](13:49, 50) गायबेलिन, *मैथ्यू,* पृष्ठ 302।

[31](14:4,5) स्त्रोत अज्ञात।

[32](16:2,3) मौसम के ये संकेत इस्राएल की भोगौलिक दशा के अनुसार हैं।

[33](16:7–10) 5000 पुरुषों के खाने के बाद बची बारह *कोफिनाइ* में 4000 पुरुषों के खाने के बाद बचे *स्पुराइड्स* से कम भोजन समाया होगा।

[34](16:17,18) जी. केम्पबेल मोर्गन, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पृष्ठ 211।

[35](16:19) चार्ल्स सी. रायरी, *द रायरी स्टडी बाइबल, न्यू किंग जेम्स वर्ज़न,* पृष्ठ 1471 (हिन्दी संस्करण में)।

[36](16:20) जेम्स एस. स्टीवर्ट, *द लाइफ एण्ड टीचिंग ऑफ जीजस ख़्राइस्ट,* पृष्ठ 106 ।

[37](16:26) डोनाल्ड ग्रे बार्नहाऊस, *वर्ड्स फिटली स्पोकन,* पृष्ठ 53 ।

[38](18:11) यह पद अनेक संस्करणों से हटा दिया गया है।

[39](20:15) जेम्स एस. स्टीवर्ट, *ए मैन इन ख़्राइस्ट,* पृष्ठ 252।

[40](20:31–34) गायबेलिन, *मैथ्यू,* पृष्ठ 420।

[41](21:6) जे.पी. लैंज, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द होली स्क्रिप्चर्स,* 25 संस्करण, पृष्ठांकन अज्ञात।

[42](23:9,10) एच. जी. वेस्टन, *मैथ्यू, द जेनेसिस ऑफ न्यू टेस्टामेन्ट,* पृष्ठ 110)।

[43](23:14) कुछ संस्करणों से यह पद हटा दिया गया है।

[44](23:25,26) अनेक संस्करणों में ''असंयम'' के स्थान पर''दुष्टता'' लिखा गया है।

[45](24:29) आई. वेलिकोवस्काय, *अर्थ इन अपहिवेल,* पृष्ठ 136।

[46](24:30) एक ही यूनानी शब्द के दो अर्थ हो सकते हैं, ''भूमि'' और ''पृथ्वी''।

[47](24:34) एफ. डब्ल्यू ग्रान्ट, ''मैथ्यू,'' *न्यूमेरिकल बाइबल, द गास्पल्स,* पृष्ठ 230।

[48](24:36) एन यू टेक्स्ट में ''न ही पुत्र'' भी जुड़ा हुआ है।

[49](25:28, 29) *अवर लॉर्ड्स टीचिंग अबाउट मनी,* (ट्रैक्ट) पृष्ठ 3,4।

[50](26:64) यूनानी एकवचन सर्वनाम ***सू*** का प्रयोग जोर देकर कहने के उद्देश्य से किया गया है – ''तू''। जबकि दूसरी बार प्रयुक्त ''तुम'' (यूनानी में ***हूमिन***) और तीसरी बार, क्रिया के अन्त में प्रयुक्त ''तुम'' ***(ओप्सीथे)*** बहुवचन में हैं।

[51](26:64) आर. सी. एच. लेन्सकी, *द इन्टरप्रिटेशन*

ऑफ सेन्ट मैथ्यूज़ गॉस्पल, पृष्ठ 1064।

[52](27:37) यदि सभी उद्धरित हिस्सों को एक साथ रख कर देखा जाए, तो यह कुछ इस प्रकार से होगा,

''यह नासरत का यीशु है, यहूदियों का राजा।'' एक अन्य सम्भावना यह है कि प्रत्येक सुसमाचार लेखक ने पूरा पूरा लिखा है, परन्तु उन्होंने अलग अलग भाषाओं से उद्धरित किया है, जिसके कारण भिन्नता हो सकती थी।

[53](27:54) यूनानी में, निश्चयवाचक विधेयात्मक संज्ञाएं जो क्रिया के पहले ;प्रयुक्त की जाती हैं, उनके साथ प्राय: उपपद (आर्टिकल) नहीं होते हैं (कोलवेल के नियम का एक भाग)।

[54](27:65,66) मेरिल एफ. अंगर, *अंगर्स बाइबल हैण्डबुक,* पृष्ठ 491।

[55](28:8) ''सलाम'' एक आम यूनानी अभिवादन था; पुनरूत्थान की इस सुबह के सन्दर्भ में इसका अनुवाद ''आनन्दित रहो'' भी किया जा सकता है।

[56](28:15) विल्बर स्मिथ, ''इन द स्टडी,'' *मूडी मन्थली,* अप्रेल, 1969।

प्रयोग में लाई गईं पुस्तक सूची

बार्नहाऊस, डोनाल्ड ग्रे, *वर्ड्स फिटली स्पोकन,* व्हीटन: टिंडेल हाऊस पब्लिशर्स, 1969।

गायबेलिन, ए.सी. *द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू।* न्यूयार्क: लॉइजॉक्स ब्रदर्स. 1910।

केली, विलियम. *लेक्चर्स ऑन मैथ्यू,* न्यूयार्क: लॉइजॉक्स ब्रदर्स., 1911

लेन्सकी, आर. सी. एच. *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ सेन्ट मैथ्यूज़ गॉस्पल.* मिनियापोलिस: अगस्टबर्ग पब्लिशिंग हाऊस, 1933।

मैकाउले, जे.सी. *बिहोल्ड योर किंग.* शिकागो: द मूडी बाइबल इन्स्टीट्यूट, 1982।

मोर्गन, जी. कैम्पबेल. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू.* न्यूयार्क: फ्लेमिंग एच. रेवेल कम्पनी. 1929।

टास्कर, आर. वी. जी. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेन्ट मैथ्यू, टीबीसी.* ग्रैंड रेपिड्स: विलियम. बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1961।

थॉमस, डब्ल्यू. एच. ग्रिफ्फिथ. *आऊटलाइन स्टडीज़ इन मैथ्यू.* ग्रैंड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1961।

वेस्टन, एच.जी. *मैथ्यू, द जेनेसिस ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट.* फिलाडेलफिया: अमेरिकन बैप्टिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी, अनोल्लेखित।

पत्रिकाएं और अप्रकाशित सामग्रियां

स्मिथ, विल्बर, ''इन द स्टडी,'' *मूडी मंथली,* अप्रेल, 1969।

वुडरिंग, एच. चेस्टर. क्लास नोट्स ऑन मैथ्यू, 1961, इम्माऊस बाइबल स्कूल, ओक पार्क, (अब इम्माऊस बाइबल कॉलेज)।

मरकुस रचित सुसमाचार

पुस्तक का परिचय

"मरकुस में एक ताजगी और ओज है जो मसीही पाठक को मंत्रमुग्ध कर देती है, और उसे अपने धन्य प्रभु के आदर्श का अनुसरण करते हुए उसकी सेवा करने हेतु लालायित करती है।"

– ऑगस्ट वान राईन

I. प्रामाणिक–संग्रह *(केनन)* में अद्वितीय स्थान

जबकि मरकुस का सुसमाचार सबसे छोटा है और उसकी सामग्री का लगभग नब्बे प्रतिशत मत्ती, लूका, या फिर दोनों में मिलता है, तो फिर उसका ऐसा क्या योगदान है कि हम उसके बिना नहीं रह सकते?

सबसे पहले मरकुस की संक्षिप्तता और पत्रकारिक सरलता उसके सुसमाचार को मसीही विश्वास के लिए एक आदर्श प्रस्तावना बनाती है। नए मिशन क्षेत्रों में बहुधा मरकुस पहली पुस्तक होती है जिसका नई भाषा में अनुवाद होता है।

परन्तु इसकी सिर्फ स्पष्ट, क्रमबद्ध और सक्रिय *शैली* – जो रोमी लेखकों और उनके आधुनिक प्रतिस्थानियों (काउंटर–पार्ट्स) के लिए खास तौर पर फबती है, मरकुस के सुसमाचार को विशेष सुसमाचार नहीं बनाती है, परंतु साथ में इसकी *विषय–वस्तु* भी इसे विशेष सुसमाचार बनाती है।

यद्यपि मरकुस कुछ अद्वितीय घटनाओं को छोड़कर अधिकतर मत्ती और लूका में पाए जाने वाली घटनाओं का ही विवरण देता है परंतु वह इनका ऐसा सजीव विस्तृत विवरण देता है जैसा अन्य लेखक नहीं देते हैं। उदाहरण के लिए, वह बताता है कि यीशु ने किस तरह चेलों को देखा, वह कैसे क्रोधित हुआ, और वह कैसे यरूशलेम के मार्ग पर आगे–आगे चला। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ये सभी बातें मरकुस ने पतरस से सीखीं जिसके साथ वह उसके जीवन के अंतिम समय तक जुड़ा हुआ था। परम्परा बताती है, और संभवतः यह सही भी है कि मरकुस का सुसमाचार मुख्य रूप से पतरस के संस्मरण है, जिसने इस पुस्तक के व्यक्तिगत विस्तृत विवरणों, क्रियाओं, और प्रत्यक्षदर्शी प्रभाव के लिए स्पष्टीकरण दिया होगा। एक सामान्य विश्वास यह है कि मरकुस वही जवान है जो नंगा भाग गया था (14:51), और यह कि यह घटना इस पुस्तक पर उसका विनम्र हस्ताक्षर है। (सुसमाचारों के शीर्षक मूल रूप से पुस्तक के भाग नहीं थे।) चूंकि मरकुस जो यूहन्ना कहलाता है यरूशलेम में रहता था, और यदि वह जवान इस सुसमाचार से किसी प्रकार से संबंधित नहीं था तो इस छोटी कहानी को कहने का कोई कारण नहीं है, परम्परा सम्भवतः सही है।

II. लेखक

अधिकांश लेखक कलीसिया के इस प्रारंभिक और सर्वसम्मत अभिमत को स्वीकार करते हैं कि द्वितीय सुसमाचार (क्रमानुसार) मरकुस के द्वारा लिखा गया जो यूहन्ना कहलाता है। वह यरूशलेम में रहने वाली

मरियम का पुत्र था जिसके पास यरूशलेम में स्वयं का घर था तथा जिस घर का उपयोग आरंभिक मसीही विश्वासी मिलन-स्थल के रूप में करते थे। इसके लिए *बाह्य प्रमाण* प्रारंभिक, प्रभावशाली और साम्राज्य के विभिन्न भागों से है। पपीआस ने (लगभग 110 ईसवी) प्राचीन यूहन्ना को (संभवतः प्रेरित यूहन्ना, यद्यपि किसी अन्य प्रारंभिक चेले की संभावना है) यह कहते हुए उद्धरित किया है कि मरकुस ने, जो पतरस का सहयोगी था, इस सुसमाचार को लिखा है। जस्टिन मार्टियर, इरेनियस, टर्टुलियन, सिकन्दरिया का क्लेमेन्ट, ओरीगन, और मरकुस रचित सुसमाचार के लिए *प्रति-मार्सिओन प्रस्तावना* सभी ने सहमति दी है।

यद्यपि मरकुस की लेखनकारिता के लिए *आंतरिक प्रमाण* उतना विस्तृत नहीं है तौभी यह प्रारंभिक मसीहत के इस सार्वभौमिक परम्परा से मेल खाती है।

विदित रूप से लेखक पलस्तीन से - विशेषकर यरूशलेम से भली-भांति परिचित था। (उपरौठी कोठरी के विवरण दूसरे सुसमाचारों की अपेक्षा इसमें अधिक विस्तृत हैं- इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है यदि यह संभाषण उसके लड़कपन के घर में हुआ हो!) यह सुसमाचार कुछ अरामी पृष्ठभूमि (पलस्तीन की भाषा) को दर्शाता है , यहूदी प्रथाएं ज्ञात हैं, वृत्तान्तों के सजीव चित्रण किसी प्रत्यक्षदर्शी के साथ घनिष्ठ संबंध का सुझाव देते हैं। इस पुस्तक की विषय- वस्तु की रूपरेखा प्रेरितों के काम 10 वें अध्याय में पतरस द्वारा दिए गए संदेश के समानान्तर है।

इस परम्परा का स्पष्टीकरण कि मरकुस ने इसे रोम में लिखा, इस सुसमाचार में दूसरे सुसमाचारों की अपेक्षा, लतीनी भाषा के शब्दों की वृहत्तर संख्या से दिया जाता है (जैसे कि *सूबेदार, जनगणना, दीनार, पलटन,* और *प्रीटोरियुन* इत्यादि)।

नया नियम में दस बार हमारे लेखक को उसके अन्यजाति (लातीनी) नाम मरकुस से और तीन बार उसके यहूदी और अन्यजाति संयुक्त नाम मरकुस-यूहन्ना से उल्लेखित किया गया है। पहले पौलुस का, फिर बरनबास का, और (भरोसेमंद परम्परा के अनुसार पतरस की मृत्यु से पूर्व) पतरस का ''सेवक'' या परिचारक मरकुस, ''सिद्ध सेवक के सुसमाचार'' को लिखने के लिए एक आदर्श व्यक्ति था।

III. तिथि

बाइबल पर विश्वास करने वाले विद्वानों, यहां तक कि रुढ़ीवादी विद्वानों के मध्य भी मरकुस रचित सुसमाचार की लेखन-तिथि पर विवाद है। यद्यपि निश्चयता के साथ कोई भी तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती, फिर भी यरूशलेम के विनाश से पहले की तिथि का संकेत मिलता है।

पारम्परिक रूप से इस बात पर मतभेद हैं कि मरकुस ने पतरस द्वारा हमारे प्रभु के जीवन पर दिए गए उपदेश को अपनी कलम से प्रेरित की मृत्यु से *पहले* लिखा (64-68 के बाद) या उसकी मृत्यु के *बाद*।

विशेषकर यदि मरकुस रचित सुसमाचार, चारों सुसमाचारों में, सबसे पहले लिखा गया, जैसा कि अब अधिकांश बाइबल विद्वान सिखाते हैं, तो फिर इससे भी पहले की एक तिथि आवश्यक है ताकि लूका, मरकुस के सुसमाचार की सामग्री का प्रयोग कर सके। कुछ विद्वान मरकुस के लिए 50 के दशक की आरंभिक तिथि निर्धारित करते हैं, परन्तु 57-60 ईसवी के मध्य की तिथि अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है।

IV. पृष्ठभूमि और मूल विषय

इस सुसमाचार में हम परमेश्वर के सिद्ध सेवक, हमारे प्रभु यीशु मसीह की अद्‌भुत कहानी पाते हैं। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने स्वर्ग में अपनी महिमा के बाह्य प्रदर्शन को त्याग दिया और धरती पर एक सेवक का रूप धारण किया (फिलि.2:7)। यह उस व्यक्ति की अद्वितीय कहानी है जो, ''इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे'' (मर. 10:45)।

यदि हम स्मरण रखें कि यह सिद्ध सेवक कोई और नहीं परंतु परमेश्वर का पुत्र था, और यह स्मरण रखें कि उसने स्वेच्छा से स्वयं को एक दास के वस्त्र से सुसज्जित किया, तो यह सुसमाचार सतत् दीप्ति के साथ उद्‌दीप्त होगा। यहां हम परमेश्वर के देहधारी पुत्र को धरती पर एक निर्भर मनुष्य के रूप में निवास करते हुए देखते हैं। उसके द्वारा किए गए समस्त कार्य

उसके पिता की इच्छा के प्रति सिद्ध आज्ञाकारिता में थे, और उसके समस्त सामर्थ के कार्य पवित्र आत्मा के सामर्थ में किए गए।

लेखक मरकुस जो यूहन्ना भी कहलाता है, प्रभु का एक ऐसा सेवक था जिसने शुरुआत अच्छी की, कुछ समय के लिए ग्रहण में चला गया (प्रेरि.15:38), और अंततः उपयोगिता को पुनर्स्थापित किया गया (2 तीमु. 4:11)।

मरकुस की लेखन शैली द्रुत, ओजस्वी, और संक्षिप्त है। वह प्रभु के शब्दों से अधिक प्रभु के कार्यों पर जोर देता है, यह इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि उसने प्रभु के उन्नीस आश्चर्यकर्मों, परंतु सिर्फ चार दृष्टांतों को कलमबद्ध किया है। इस सुसमाचार का अध्ययन करते समय हम तीन बातों को ढूंढेंगे : (1) यह क्या कहता है? (2) इसका क्या अर्थ है? (3) इसमें मेरे लिए क्या शिक्षा है? उन सभी के लिए जो *प्रभु* के सच्चे और विश्वासयोग्य *सेवक* बनने की इच्छा रखते हैं, यह सुसमाचार सेवा की एक बहुमूल्य नियम-पुस्तिका सिद्ध होगी।

पुस्तक की रूपरेखा

I. सेवक की तैयारी (1:1–13)

II. सेवक की गलील में आरंभिक सेवकाई (1:14–3:12)

III. सेवक की बुलाहट और उसके चेलों का प्रशिक्षण (3:13–8:38)

IV. सेवक की यरूशलेम यात्रा (अध्याय 9,10)

V. सेवक की यरूशलेम में सेवकाई (अध्याय 11,12)

VI. सेवक की जैतून पर्वत पर बातचीत (अध्याय 13)

VII. सेवक की वेदना और मृत्यु (अध्याय 14,15)

VIII. सेवक की जीत (अध्याय 16)

टीका

I. सेवक की तैयारी (1:1–13)

अ. सेवक का अग्रदूत सेवक के लिये मार्ग तैयार करता है (1:1–8)

1:1 मरकुस का विषय है, **परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह** के विषय सुसमाचार। चूंकि उसका उद्देश्य प्रभु यीशु मसीह के सेवक की भूमिका पर जोर देना था इसलिए वह वंशावली के साथ नहीं अपितु उद्धारकर्ता की सार्वजनिक सेवकाई के साथ आरम्भ करता है। इसकी घोषणा सुसमाचार के अग्रदूत यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा की गई।

1:2,3 मलाकी और यशायाह[1] दोनों ने ही यह भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह से पहले एक संदेशवाहक आएगा जो लोगों को उसके आगमन के लिए नैतिक और आत्मिक रूप से तैयार होने की बुलाहट देगा (मलाकी 3:1; यशा. 40:3)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने इन भविष्यद्वाणियों को पूर्ण किया। वह ‘‘**संदेशवाहक, ... जंगल**

में एक पुकारनेवाले का शब्द'' था।

1:4 उसका संदेश था कि लोग मन फिराएं (अपने मन को परिवर्तित करें और अपने पापों को त्याग दें) ताकि वे **पाप से छुटकारा** प्राप्त कर सकें। अन्यथा वे प्रभु को स्वीकार करने की अवस्था में नहीं होंगे। सिर्फ पवित्र लोग ही परमेश्वर के पवित्र पुत्र के महत्व को समझने के योग्य हैं।

1:5 जब उसकी बातों को सुनने वालों ने मन फिराया तो यूहन्ना ने उनके रंग बदलने की एक बाह्य अभिव्यक्ति के रूप में उन्हें बपतिस्मा दिया। बपतिस्मा ने उन्हें सार्वजनिक रूप से इस्राएल राष्ट्र के उस जनसमूह से पृथक कर दिया जो प्रभु को त्याग चुके थे। इसने उन्हें उन बचे हुओं के साथ संयुक्त किया जो मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार थे। पद 5 से ऐसा लग सकता है कि यूहन्ना के प्रचार की प्रतिक्रिया व्यापक थी। परंतु ऐसी बात नहीं थी। एक प्रचण्ड प्रचारक को सुनने के लिए मरुस्थल की ओर उमड़ती हुई भीड़ में उत्साह की एक आरंभिक लहर हो सकती है, परंतु अधिकांश लोगों ने वास्तव में अपने पापों को नहीं माना और नहीं त्यागा। वृत्तान्त में आगे बढ़ने पर यह बात स्पष्ट होगी।

1:6 **यूहन्ना** किस प्रकार का मनुष्य था? वर्तमान में वह धर्मोन्मत्त और सन्यासी कहलाएगा। मरुस्थल उसका घर था। एलिय्याह के समान उसके वस्त्र अति निम्न स्तर के और अति साधारण थे। उसका भोजन जीवन और शक्ति बनाए रखने के लिए पर्याप्त परंतु कदाचित ही विलासी था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने मसीह को ज्ञात करवाने के महिमित कार्य के लिए इन सभी वस्तुओं को गौण समझा। संभवत: वह धनवान हो सकता था, परंतु उसने दरिद्र होना चुन लिया। इस प्रकार वह उसका उपयुक्त अग्रदूत बना जिसके पास सिर छिपाने की भी जगह नहीं थी। हम यहां सीखते हैं कि सादगी उन सबकी चारित्रिक विशेषता बननी चाहिए जो प्रभु के सेवक हैं।

1:7 उसका संदेश था, प्रभु यीशु की सर्वश्रेष्ठता। उसने कहा कि यीशु मसीह सामर्थ, व्यक्तिगत विशिष्ठता और सेवकाई में अधिक महान था। यूहन्ना ने स्वयं को उद्धारकर्ता की **जूतियों के बन्ध खोलने** के भी योग्य न समझा – एक दासोचित कार्य। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण प्रचार सदैव प्रभु यीशु को ऊंचा उठाता है और स्वयं को अपदस्थ करता है।

1:8 यूहन्ना का बपतिस्मा **पानी** से था। यह एक बाह्य प्रतीक था, परंतु इस बपतिस्मा ने किसी व्यक्ति के जीवन में कोई परिवर्तन उत्पन्न नहीं किया। यीशु उन्हें **पवित्र आत्मा** से बपतिस्मा देगा; यह बपतिस्मा आत्मिक सामर्थ्य के एक विशाल अन्तर्वाह को उत्पन्न करेगा (प्रेरि.1:8)। इसके साथ ही यह सभी विश्वासियों को मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया में समाविष्ट करेगा (1 कुरि. 12:13)।

ब.सेवक का अग्रदूत सेवक को बपतिस्मा देता है (1:9–11)

1:9 नासरत का तथाकथित तीस वर्षों का शान्त समय अब समापन पर था। प्रभु यीशु अपने सार्वजनिक सेवकाई में प्रवेश करने के लिए तैयार था। पहले उसने **नासरत से** यरीहो के समीप **यरदन** तक साठ मील से कुछ अधिक यात्रा की। वहां उन्हें यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया। नि:संदेह, उसके इस कार्य में मनफिराव जैसी कोई बात नहीं थी क्योंकि ऐसा कुछ भी पाप नहीं था जिसे स्वीकार किया जाता। प्रभु का बपतिस्मा अन्ततोगत्वा क्रूस पर उसकी मृत्यु और मृतकों में से उसके जी उठने के बपतिस्मा को प्रगट करने वाला एक प्रतीकात्मक कार्य था। इस प्रकार यह उसकी सार्वजनिक सेवकाई के बिल्कुल आरंभ में ही क्रूस और खाली कब्र की जीवंत पूर्वछाया थी।

1:10,11 जब वह **पानी से निकलकर ऊपर** आया, **तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाई अपने ऊपर उतरते देखा**। परमेश्वर पिता की **आकाशवाणी** सुनाई दी, जिसमें उसने यीशु को अपने **प्रिय पुत्र** के रूप में स्वीकार किया।

हमारे प्रभु के जीवन में ऐसा कोई भी समय नहीं था जब वह पवित्र **आत्मा** से परिपूर्ण नहीं था। परंतु अब सेवा हेतु उसका अभिषेक करने के लिए और उन्हें सामर्थ्य से सम्पन्न करने के लिए पवित्र आत्मा

उस पर उतरा। आगामी तीन वर्ष की सेवा की तैयारी में यह पवित्र आत्मा की विशेष सेवकाई थी। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य अनिवार्य है। एक व्यक्ति शिक्षित, प्रतिभाशाली, और प्रवाही हो सकता है तौभी उस रहस्यमय योग्यता के बिना जिसे हम ''अभिषेक'' कहते हैं, उसकी सेवकाई निर्जीव और निष्फल है। प्रश्न मौलिक है, ''क्या मुझे प्रभु की सेवकाई के लिए पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ्य मिलने का अनुभव हो चुका है?''

स.शैतान द्वारा सेवक की परीक्षा (1:12–13)

यहोवा का सेवक **जंगल में चालीस दिन** तक शैतान द्वारा परखा गया। **परमेश्वर का आत्मा** उसे इस पूर्वनिश्चित भेंट के लिए ले गया – यह देखने के लिए नहीं कि वह पाप करेगा या नहीं परंतु यह सिद्ध करने के लिए कि वह पाप कर ही नहीं सकता था। यदि यीशु धरती पर एक मनुष्य के रूप में पाप कर सकता था तो हमारे पास क्या निश्चयता है कि अब स्वर्ग में एक मनुष्य के रूप में वह पाप नहीं कर सकता?

मरकुस क्यों कहता है कि वह **वन पशुओं के साथ** था? क्या ये पशु प्रभु को नष्ट करने का प्रयत्न करने के लिए शैतान द्वारा क्रियाशील किए गए थे? या वे अपने सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में आज्ञापरायण थे? हम मात्र प्रश्न ही पूछ सकते हैं।

चालीस दिन की समाप्ति पर स्वर्गदूतों ने उसकी सेवा की (मत्ती 4:11); परीक्षा के समय काल में उसने कुछ नहीं खाया (लूका 4:2)।

परीक्षाएं विश्वासियों के लिए अनिवार्य हैं। एक व्यक्ति जितना प्रभु के समीप चलेगा, परीक्षाएं उसके लिए उतनी ही तीव्र होंगी। शैतान अपने बारूद को नामधारी मसीहियों पर नष्ट नहीं करता है, परंतु अपने बड़े तोपों को उनकी ओर तानता है जो आत्मिक युद्ध में उसके क्षेत्रों को जीत रहे हैं। परखा जाना पाप नहीं है। परंतु पाप उस परीक्षा के सम्मुख *आत्मसमर्पण* करने में छिपा हुआ है। अपने स्वयं की सामर्थ्य में हम परीक्षा का सामना नहीं कर सकते। परंतु अन्तर्निवासित पवित्र आत्मा ही बुरे दुर्वासनाओं को पराजित करने के लिये विश्वासी की सामर्थ्य है।

II. सेवक की गलील में आरंभिक सेवकाई (1:14–3:12)

अ.सेवक अपनी सेवकाई प्रारंभ करता है (1:14,15)

मरकुस अपने सुसमाचार में प्रभु यीशु की यहूदिया प्रदेश में सेवकाई का विवरण नहीं देता है (यूहन्ना 1:1–4:54 देखिए) पर एक वर्ष और नौ महीने के समयकाल की महान गलीली सेवकाई के साथ वृत्तान्त का आरंभ करता है (1:14–9:50)। और इसके पश्चात् वह यरूशलेम में अंतिम सप्ताह में जाने से पूर्व पिरिया की सेवकाई के अन्तिम भाग का संक्षिप्त वर्णन करता है (10:1–10:45)।

यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य[2] **का** सुसमाचार **प्रचार किया**। उसका विशेष संदेश यह था कि :

1. **समय पूरा हुआ है**। भविष्यद्वाणी की समय–सूची के अनुसार राजा के सार्वजनिक प्रकटीकरण की एक तिथि निर्धारित की गई थी। यह समय अबआ चुका था।
2. **परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है;** राजा उपस्थित था और इस्राएल राष्ट्र के सम्मुख राज्य का यथार्थ प्रस्ताव रख रहा था। इस अर्थ में **राज्य निकट** आ गया था कि राजा दृश्य–पटल पर प्रकट हो चुका था।
3. लोगों को **मनफिराने और सुसमाचार पर विश्वास** करने की बुलाहट दी गई। राज्य में प्रवेश पाने के योग्य बनने के लिए उन्हें पाप से फिरना और प्रभु यीशु के विषय में सुसमाचार पर विश्वास करना आवश्यक था।

ब.चार मछुआरों की बुलाहट (1:16–20)

1:16–18 गलील की झील के किनारे–किनारे **जाते हुए,** उसने **शमौन और अन्द्रियास** को जाल डालते हुए देखा। वह उनसे पहले मिल चुका था; वास्तव में वे उसकी सेवकाई के आरंभ में ही उसके चेले बन चुके थे (यूह. 1:40–41)। अब उसने उन्हें अपने साथ रहने के

लिए यह प्रतिज्ञा देते हुए बुलाया कि वह उन्हें **मनुष्यों के मछुवे** बनाएगा। उन्होंने उसके पीछे चलने के लिए तुरन्त मछली पकड़ने के अपने लाभप्रद व्यवसाय को त्याग दिया। उनकी आज्ञाकारिता अविलंबित, त्यागपूर्ण, और सम्पूर्ण थी।

मछली पकड़ना एक कला है, और वैसे ही आत्माओं को जीतना भी एक कला है।

1. इसके लिए *धीरज* की आवश्यकता होती है। इसमें बहुधा अकेले कई घंटों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।
2. इसमें चारा और जाल के उपयोग में *प्रवीणता* की आवश्यकता होती है।
3. इस बात को जानने के लिए कि मछलियां किधर जा रही हैं, *विवेक* और सजह बुद्धि की आवश्यकता होती है।
4. इसमें *दृढ़ता* की आवश्यकता होती है। एक अच्छा मछुआरा आसानी ने हियाव नहीं छोड़ता।
5. इसमें *शांति* की आवश्यकता होती है। शान्तिभंग से बचना और स्वयं को पार्श्व में छिपाना ही सर्वोत्तम नीति है।

मसीह का अनुसरण करके हम **मनुष्यों के मछुवे** बनते हैं। हम जितना अधिक उसके समान होंगे, दूसरों को उसके लिए जीतने में हम उतने ही अधिक सफल होंगे। उसके **पीछे** हो लेना हमारा दायित्व है; शेष बातों को वह पूरा करेगा।

1:19-20 कुछ आगे बढ़कर यीशु ने **जब्दी** के पुत्र **याकूब** और **यूहन्ना** को **जालों को सुधारते** देखा। जैसे ही **उसने उन्हें बुलाया**, वैसे ही उन्होंने **अपने पिता** को अलविदा कह दिया और प्रभु के **पीछे हो लिए।**

प्रभु अभी भी सब कुछ त्यागने और उसके पीछे हो लेने के लिए लोगों को बुलाता है (लूका 14:33)। आज्ञाकारिता में बाधा डालने के लिए न तो धन-सम्पत्ति को और न ही पालकों को अनुमति दी जानी चाहिए।

स.एक दुष्टात्मा का निकाला जाना (1:21-28)

पद 21 से 34, प्रभु के जीवन में एक विशेष दिन का वर्णन करते हैं। जब महान वैद्य ने दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति और बीमारों को चंगा किया तो एक के बाद एक आश्चर्यकर्म होने लगे।

उद्धारकर्ता के द्वारा दी गई चंगाई के आश्चर्यकर्मों ने इस बात को चित्रित किया कि वे पाप के भयानक परिणामों से मनुष्य को कैसे स्वतंत्र करते हैं। यह ऊपर दी गई तालिका में दर्शाया गया है।

यद्यपि सुसमाचार प्रचारक से यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह आज इन शारीरिक चंगाईयों के कार्य को करे, तौभी उससे यह सतत् अपेक्षा की जाती है कि वह इनके आत्मिक प्रतिरूपों पर विचार करे। क्या ये वही बड़े आश्यर्कर्म नहीं हैं जिनका उल्लेख प्रभु यीशु मसीह यूहन्ना 14:12 में करते हैं : ''जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इनसे भी बड़े *काम* करेगा''?

1:21,22 परंतु अब आइए हम मरकुस के वृत्तान्त की ओर वापस चलें। **कफरनहूम** में यीशु **सब्त के दिन आराधनालय में जाकर** उपदेश करने लगा। लोगों ने जान लिया कि वह कोई साधारण शिक्षक नहीं था। प्रभु यीशु मसीह के शब्द उन **शास्त्रियों** के समान नहीं थे जो वाद्य यंत्रों की तरह भिनभिनाते थे, परंतु उसके शब्दों में अकाट्य सामर्थ थी। उनके वाक्य सर्वसामर्थी के तीर थे। उनकी शिक्षाएं बांध लेने वाली, कायल करने वाली, और चुनौती देने वाली थीं। शास्त्री पुराने धर्म को बेचते थे। प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं में कोई अवास्तविकता नहीं थी। उसने जो भी कहा वह कहने का अधिकार उसे था, क्योंकि जो उसने सिखाया उसने उसे अपने जीवन में लागू भी किया।

प्रत्येक व्यक्ति को जो परमेश्वर के वचन की शिक्षा देता है उसे अधिकार के साथ बोलना चाहिए अन्यथा उसे बोलना ही नहीं चाहिए। भजनकार कहता है, ''मैंने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौटी पर कस कर कहा है''(भजन 116:10)। पौलुस ने इन शब्दों को 2 कुरि. 4:13 में प्रतिध्वनित किया। उनके संदेशों का जन्म गहरे विश्वास से हुआ था।

1:23 उनके आराधनालय में एक मनुष्य था जो दुष्टात्माग्रसित था या जिसमें दुष्टात्मा का निवास था। दुष्टात्मा को एक **अशुद्ध आत्मा** कहा गया है। इसका संभवत: यह अर्थ है कि इस आत्मा ने उस मनुष्य को शारीरिक या नैतिक रूप से अशुद्ध बना कर अपनी उपस्थिति का प्रदर्शन किया। हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पागलपन को दुष्टात्माग्रसित समझने की गलती नहीं करनी चाहिए।

आश्चर्यकर्म	छुटकारा किससे?
1. अशुद्ध आत्मा वाले व्यक्ति का चंगा किया जाना (1:23–26)।	1. पाप की अशुद्धता से।
2. पतरस की सास का चंगा किया जाना (1:29–31)।	2. पाप की 'ज्वरता' एवं बेचैनी (व्यग्रता, असहजता) से।
3. एक कोढ़ी का चंगा किया जाना (1:40–45)।	3. पाप की (जुगुप्सा) अनिच्छुकता से।
4. झोले के मारे हुए का चंगा किया जाना (2:1–12)।	4. पाप के कारण लाई गई बेबसी से।
5. सूखे हुए हाथ वाले व्यक्ति का चंगा किया जाना (3:1–5)।	5. पाप के कारण लाई गई अनुपयोगिता से।
6. दुष्टात्माओं की सेना से ग्रसित व्यक्ति का छुटकारा (5:1–20)।	6. पाप की दुर्गति, हिंसा, और उसके आतंक से।
7. लोहू बहने की बीमारी से पीड़ित स्त्री (5:25–34)।	7. जीवन की चेतना को उखाड़ फेंकने की पाप की सामर्थ से।
8. याईर की मृत पुत्री का जिलाया जाना (5:21–24, 35–43)।	8. पाप के कारण आत्मिक मृत्यु से।
9. सुरूफिनीकी स्त्री की पुत्री का चंगा किया जाना (7:24–30)।	9. पाप और शैतान के दासत्व से।
10. बहरे और हकले व्यक्ति का चंगा किया जाना (7:31–37)।	10. परमेश्वर के वचन को सुनने और आत्मिक बातों के बोलने में असमर्थता से।
11. अंधे व्यक्ति का चंगा किया जाना (8:22–26)।	11. सुसमाचार के प्रकाश के प्रति अंधेपन से।
12. दुष्टात्मा से ग्रसित लड़के का चंगा किया जाना (9:14–29)।	12. शैतान के राज्य की क्रूरता से।
13. अंधे बरतिमाई का चंगा किया जाना (10:46–52)।	13. पाप जिस अंधेपन और भीखमंगे की स्थिति तक पंहुचा देता है।

ये दोनों अलग और भिन्न हैं। दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति में एक अशुद्ध आत्मा का वास्तविक रूप से अन्तर्निवास और नियंत्रण होता है। ये व्यक्ति बहुधा अलौकिक असाधारण कार्य करने में समर्थ होते हैं और बहुधा प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य से सामना होने पर हिंसक या ईश–निन्दक बन जाते हैं।

1:24 ध्यान दीजिए कि दुष्टात्मा ने प्रभु **यीशु** को पहचाना और उसे नासरी और **परमेश्वर का पवित्र जन** बताया। बहुवचन से एकवचन में सर्वनाम के परिवर्तन पर भी ध्यान दीजिए : ''**हमें तुझ से क्या काम?... क्या तू हमें नष्ट करने आया है? ... मैं तुझे जानता हूं ...**'' सर्वप्रथम दुष्टात्मा मनुष्य के साथ मिलकर बोलता है; फिर वह अकेले स्वयं के लिए बोलता है।

1:25,26 **यीशु** ने दुष्टात्मा की गवाही को स्वीकार नहीं किया, हालांकि यह सच्ची गवाही थी। अत: उसने दुष्टात्मा को **चुप** रहने को कहा, फिर उसने उसे उस मनुष्य में से **निकल जाने की** आज्ञा दी। ऐंठे हुए व्यक्ति को देखना और अपने द्वारा पीड़ित व्यक्ति को छोड़ते समय दुष्टात्मा की भयानक आवाज को सुनना निश्चित रूप से आश्चर्यजनक रहा होगा।

1: 27,28 इस आश्चर्यकर्म ने विस्मय उत्पन्न किया। लोगों के लिए यह नई और अचंभित कर देने वाली बात थी कि एक मनुष्य मात्र आज्ञा देकर एक दुष्टात्मा को निकाल सका। वे यह सोचते हुए आश्चर्यचकित थे, कि

क्या यह धार्मिक शिक्षा के नए विद्यालय का आरंभ था? इस आश्चर्यकर्म का समाचार **तुरन्त गलील...में फैल गया**। इस भाग को छोड़ने से पहले, आइए तीन बातों पर ध्यान दें:

1. मसीह के प्रथम आगमन ने धरती पर दुष्टात्माओं के कार्य के महाप्रस्फोटन को उत्पन्न किया।
2. इन बुरी आत्माओं पर मसीह की विजयी सामर्थ ने शैतान और उसके प्रतिनिधियों पर उनकी अंतिम विजय का पूर्वाभास कराया।
3. परमेश्वर जहां भी कार्य करता है, वहां शैतान विरोध करता है। उन सबको जो प्रभु की सेवा के लिए नियुक्त किए गए हैं यह अपेक्षा करनी चाहिए कि उनके मार्ग में हर कदम पर उनका विरोध किया जाएगा। ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं'' (इफि. 6:12)।

द.पतरस की सास का चंगा किया जाना (1:29-31)

''तुरन्त'' इस सुसमाचार के प्रमुख शब्दों में से एक है, और यह उस सुसमाचार के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है जो प्रभु यीशु के सेवक-चरित्र पर जोर देता है।

1:29-30 हमारा प्रभु **आराधनालय** से शमौन के घर गया। जैसे ही वह वहां पहुंचा उसे ज्ञात हुआ कि **शमौन की** सास **ज्वर से पीड़ित थी**। पद 30 बताता है कि **उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उससे कहा**। उन्होंने उसकी आवश्यकता को वैद्य के ध्यान में लाने में कुछ भी समय व्यर्थ न गंवाया।

1:31 बिना एक शब्द बोले, प्रभु यीशु ने **उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया** और उसे उसके पैरों पर खड़ा किया। वह तुरन्त चंगी हो गई। साधारणतया ज्वर एक व्यक्ति को कमजोर अवस्था में छोड़ देता है। इस घटना में प्रभु ने न केवल ज्वर को ठीक किया वरन् साथ में सेवा करने के लिए तुरन्त शक्ति भी दी। और वह उनकी सेवा-टहल करने लगी।

जे.आर. मिलर कहते हैं:

> प्रत्येक उस रोगी व्यक्ति को जो साधारण या असाधारण रूप से ठीक किया गया हो, उस जीवन को जो उसे वापस मिला है परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित करने के लिए शीघ्रता दिखानी चाहिए। ... अनेक व्यक्ति यह कल्पना करते हुए मसीह की सेवा के अवसर के लिए सदैव कराहते रहते हैं कि उन्हें कुछ ऐसे उत्कृष्ट और वैभवपूर्ण सेवा मिले जिन्हें वे करना चाहेंगे। इस बीच वे उन बातों को अपने हाथ से फिसल जाने देते हैं, जिनमें मसीह उनकी सेवा चाहता है। अपने प्रतिदिन के कर्तव्यों को सर्वप्रथम और अच्छी रीति से करना ही मसीह के प्रति सच्ची सेवकाई है।[3]

यह ध्यान देने योग्य बात है कि प्रत्येक चंगाई के आश्चर्यकर्म में उद्धारकर्ता की प्रक्रिया भिन्न है। यह हमें स्मरण दिलाती है कि कोई भी दो मन-परिवर्तन बिल्कुल एक समान नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत आधार पर व्यवहार करना चाहिए।

पतरस की सास का होना यह दर्शाता है कि अविवाहित- याजकत्व का विचार उन दिनों पराया (अज्ञात) था। यह मनुष्य की परम्परा है जो परमेश्वर के वचन में कोई समर्थन नहीं पाती है और जो बुराईयों के जमघट को उत्पन्न करती है।

इ. सूर्यास्त के समय चंगाई (1:32-34)

उद्धारकर्ता की उपस्थिति का समाचार दिन के समय फैल चुका था। जब तक सब्त जारी रहा तब तक लोगों को हिम्मत नहीं हुई कि वे आवश्यकता में पड़े हुए लोगों को यीशु के पास लाएं। परंतु **जब सूर्य डूब गया** और सब्त समाप्त हो गया तब पतरस के घर के द्वार पर भीड़ लग गई। वहां बीमारों ने और जिनमें दुष्टात्माएं थीं उन्होंने एक ऐसी सामर्थ का अनुभव किया जो पाप की हर अवस्था और रूप से मुक्त करता है।

फ . सारे गलील में प्रचार (1:35-39)

1:35 प्रभु यीशु **भोर को दिन निकलने से बहुत पहले** उठे और एक ऐसे **स्थान** को **गए** जहां वे व्यवधानों से मुक्त हों और प्रार्थना में समय बिता सकें। यहोवा के सेवक ने दिन भर के लिए परमेश्वर की शिक्षा को ग्रहण

करने के लिए प्रत्येक सुबह अपने कानों को खोला (यशा. 50:4,5)। यदि प्रभु यीशु ने अति भोर को इस ध्यान–मनन के समय की आवश्यकता का अनुभव किया तो फिर हमें इसका और कितना अधिक अनुभव करना चाहिए। उन्होंने तब प्रार्थना की जब उन्हें प्रार्थना की कीमत चुकानी पड़ी; वे उठे और **भोर को दिन निकलने से बहुत पहले** निकल गए। प्रार्थना व्यक्तिगत सुविधा का विषय नहीं होनी चाहिए अपितु यह स्व–अनुशासन और बलिदान का विषय होनी चाहिए। क्या यह इस बात को स्पष्ट नहीं करता है कि क्यों हमारी अधिकतर सेवा प्रभावरहित रहती है?

1:36,37 जिस समय शमौन और अन्य सो कर उठे, उस समय तक घर के बाहर एक बार पुनः भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। चेले प्रभु को उमड़ते हुए सार्वजनिक उन्माद की सूचना देने गए।

1:38 आश्चर्यजनक रूप से, प्रभु यीशु शहर में वापस नहीं गया, परंतु चेलों को आसपास की **बस्तियों** में ले गया, यह समझाते हुए कि उसे **वहां भी प्रचार** करना अवश्य है। वह वापस कफरनहूम क्यों नहीं लौटा?

1. सबसे पहली बात तो यह है कि वह थोड़ी देर पहले ही प्रार्थना से उठा था और यह सीख चुका था कि परमेश्वर उससे उस दिन क्या करवाना चाहता था।
2. दूसरा, उसने यह समझ लिया कि कफरनहूम का जन–आंदोलन उथला था। उद्धारकर्ता कभी भी बड़ी भीड़ से आकर्षित नहीं हुआ। उसने सतह से नीचे देखा यह जानने के लिए कि लोगों के हृदय में क्या था?
3. वह लोकप्रियता के खतरे को जानता था और उसने अपने उदाहरण द्वारा चेलों को यह शिक्षा दी कि जब सब मनुष्य उनके विषय में भला बोलें तो वे सचेत हो जाएं।
4. वह सतत् रूप से ऐसे किसी भी सतही और भावनात्मक प्रदर्शन से बचता रहा जो क्रूस से पहले उन पर मुकुट रख सकता था।
5. वचन के प्रचार पर ही उसका सबसे अधिक जोर था। चंगाई के आश्चर्यकर्म यद्यपि मानव दुखों से राहत दिलाने के प्रयास थे, तौभी ये साथ ही साथ प्रचार के लिए ध्यानाकर्षण अर्जित करने के लिए भी रचे गए थे।

1:39 इस प्रकार प्रभु यीशु **सारे गलील में आराधनालयों में** जा जाकर **प्रचार करता** और **दुष्टात्माओं को निकालता** रहा। उन्होंने प्रचार और अभ्यास को, अर्थात कथनी और करनी को संयुक्त किया। यह देखना रुचिकर है कि कितनी बार उसने आराधनालयों में दुष्टात्माओं को निकाला। क्या आज उदारवादी कलीसियाएं आराधनालयों के सदृश हैं?

ग.एक कोढ़ी का शुद्ध किया जाना (1:40–45)

कोढ़ी का वृत्तान्त हमें उस प्रार्थना का शिक्षाप्रद उदाहरण देता है जिसका उत्तर परमेश्वर देता है:

1. यह मन लगाकर की हुई और अति गम्भीर प्रार्थना थी – **विनती की**।
2. यह श्रद्धायुक्त प्रार्थना थी – **उसके सामने घुटने टेककर**।
3. यह दीन और समर्पित प्रार्थना थी – **"यदि तू चाहे।"**
4. यह विश्वासयुक्त प्रार्थना थी – **"कर सकता है।"**
5. उसने आवश्यकता को जान लिया था – **"मुझे शुद्ध कर।"**
6. यह विशिष्ट प्रार्थना थी – "मुझे आशीष दे" नहीं, अपितु **"मुझे शुद्ध कर।"**
7. यह व्यक्तिगत प्रार्थना थी – **"*मुझे* शुद्ध कर।"**
8. यह संक्षिप्त प्रार्थना थी – मूल भाषा में मात्र पांच शब्द।

जो हुआ इस पर ध्यान दीजिए!

प्रभु ने उस पर तरस खाकर. आइये इन शब्दों को कभी भी बिना विजयोल्लास और बिना आभार के न पढ़ें।

हाथ बढ़ाया. जरा सोचकर देखिए! परमेश्वर का हाथ दीन और विश्वासमय प्रार्थना के उत्तरस्वरूप आगे बढ़ा।

उसने **उसे छूकर**. व्यवस्थानुसार कोई व्यक्ति किसी कोढ़ी को छूने पर औपचारिक रूप से अशुद्ध हो जाता था। निश्चित रूप से इस बीमारी के फैलने का भी भय बना

रहता था। परंतु परमेश्वर के पवित्र पुत्र ने मनुष्य की दुर्दशा से बिना दूषित हुए और पाप के विध्वंसों को दूर करते हुए मनुष्य की दुर्दशा के साथ अपने आप को एकीकृत किया। उसने कहा, **''मैं चाहता हूं।''** हम चंगा होने की जितनी इच्छा रखते हैं उससे कहीं अधिक वह हमें चंगा करने की इच्छा रखता है। **''शुद्ध हो जा।''** क्षण भर में कोढ़ी की त्वचा मुलायम और स्वच्छ हो गई।

याजक को दिखाने से पहले और ठहराई हुए भेंट (लैव्य.14:2 क्रमश:) को चढ़ाने से पहले इस आश्चर्यकर्म को सार्वजनिक करने से इस व्यक्ति को मना किया गया। सर्वप्रथम यह उस मनुष्य की आज्ञाकारिता की परीक्षा थी। क्या उसे जो कहा गया, उसे वह करेगा? उसने ऐसा नहीं किया; उसने अपनी घटना को सार्वजनिक कर दिया, और जिसके परिणामस्वरूप उसने प्रभु के कार्य को बाधित किया (पद 45)। यह याजक के विवेक की भी परीक्षा थी। क्या वह समझेगा कि बहुप्रतीक्षित मसीहा अद्‌भुत चंगाई–आश्चर्यकर्मों को दिखाते हुए आ चुका था? यदि वह इस्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधि होगा तो वह नहीं समझेगा। पुनः हम पाते हैं कि प्रभु यीशु भीड़ से अलग होकर **जंगली स्थानों** में सेवकाई करने लगा। उसने सफलता को संख्याओं के आधार पर नहीं मापा।

ह. एक झोले के मारे हुए को चंगा करना (2:1–12)

2:1–4 कफरनहूम में प्रवेश करने के थोड़े ही देर पश्चात् जिस घर में वह था, उस घर के **द्वार** के पास **कई लोग इकट्ठे हुए**। यह बात शीघ्र ही फैल गई और लोग आश्चर्यकर्म करनेवाले को कार्य करते हुए देखने के लिए उत्सुक हो उठे। जब भी परमेश्वर सामर्थ में होकर कार्य करता है तो लोग आकर्षित होते हैं। जब वे द्वार के चारों ओर इकट्ठे हुए तो उद्धारकर्ता ने विश्वासयोग्यता से **उन्हें वचन सुनाया**। भीड़ के पीछे **एक झोले का मारा हुआ** व्यक्ति था, जिसे **चार** मनुष्य एक कामचलाऊ स्ट्रेचर में **उठाए हुए थे**। भीड़ उसे यीशु मसीह के समीप पहुंचने में बाधा पहुंचा रही थी। सामान्यतः दूसरों को प्रभु यीशु के पास लाने की राह में बाधाएं होती हैं। उसे उठाने वाले चार मनुष्य बाहर की सीढ़ी से चढ़कर छत पर पहुंचे, छत के एक भाग को उधेड़ दिया, और झोले के मारे हुए को परमेश्वर के पुत्र के समीप लाते हुए जमीन पर उतार दिया – संभवतः मध्य में स्थित एक आंगन में। किसी ने इन अच्छे मित्रों को सहानुभूति, सहयोग, मौलिकता, और स्थायित्व नाम दिया है। हममें से प्रत्येक को एक ऐसा मित्र बनने का प्रयत्न करना चाहिए जो इन गुणों को प्रदर्शित कर सके।

2:5 उनके विश्वास से प्रभावित होकर प्रभु **यीशु** ने, ... **झोले के मारे हुए से कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।''** ऐसा कहना आश्चर्यजनक लगता है। यहां समस्या लकवे के रोग की थी, पाप की नहीं, क्या ऐसा ही नहीं था? हां ऐसा ही था, परंतु प्रभु यीशु लक्षणों से बढ़कर कारण तक पहुंचा। वह शरीर को चंगा करके आत्मा को छोड़ नहीं देगा। वह एक अस्थाई अवस्था का ईलाज करके, स्थाई अवस्था को स्पर्शहीन नहीं छोड़ेगा। अतः उसने कहा, **''तेरे पाप क्षमा हुए।''** यह एक अद्‌भुत घोषणा थी। अब – इस धरती पर – इस जीवन में – उस मनुष्य के पाप **क्षमा** किए गए थे। उसे न्याय के दिन तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी। उसे इस वर्तमान समय में ही पाप से क्षमा की निश्चयता प्राप्त थी। इसी प्रकार से वे सब भी जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं इस निश्चयता को पाते हैं।

2:6,7 शास्त्रियों ने इस कथन के महत्व को तुरंत पकड़ लिया। वे इस बात को जानने के लिए बाइबल–सिद्धान्तों में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित थे कि **मात्र परमेश्वर ही पाप को क्षमा कर सकता है**। इसलिए यदि कोई पाप को क्षमा करने की बात करे तो वह परमेश्वर होने का दावा करने वाला ठहरता। इस बिन्दु तक उनका तर्क उचित था। परंतु प्रभु यीशु को परमेश्वर मानने के स्थान पर वे अपने हृदयों में उस पर **परमेश्वर की निन्दा** करने का आरोप लगाते हैं।

2:8,9 प्रभु यीशु ने उनके विचारों को पढ़ा, यह स्वयं में उसके अलौकिक सामर्थ का एक प्रमाण था। उसने उनसे यह प्रेरक प्रश्न पूछा : ''क्या एक मनुष्य के पाप क्षमा हुए कहना **सहज है** या उसका लकवा ठीक हो जाए कहना?'' वास्तव में पहली बात को *कहना* उतना ही सरल है जितना कि दूसरी बात को *कहना।* परंतु मानवीय दृष्टिकोण से कहें तो पहली बात को *करना* दूसरी बात को *करने* के समान ही असंभव है।

2:10–12 प्रभु पहले ही उस मनुष्य के पाप की

क्षमा की घोषणा कर चुका था। हां, परंतु क्या वास्तव में ऐसा हुआ था? शास्त्री उस मनुष्य के पाप क्षमा को नहीं *देख* सकते थे, इसलिए वे विश्वास नहीं करेंगे। इस बात को प्रदर्शित करने के लिए कि उस मनुष्य के पाप वास्तव में क्षमा हो चुके थे, उद्धारकर्ता ने शास्त्रियों को कुछ ऐसी बातें उपलब्ध कराईं जिसे वे देख सके। उन्होंने लकवे के रोगी से कहा कि उठ, खाट उठा, **और चल फिर**। उस मनुष्य ने तुरंत प्रतिक्रिया दिखाई। लोग **चकित** हुए। उन्होंने पहले **ऐसा कभी नहीं** देखा था। परंतु शास्त्रियों ने अत्यन्त अभिभूत कर देने वाले इस प्रमाण के बावजूद विश्वास नहीं किया। विश्वास में इच्छा सम्मिलित होती है और वे विश्वास नहीं करना चाहते थे।

ई. लेवी की बुलाहट (2:13-17)

2:13,14 जब वह **झील के किनारे** उपदेश दे रहा था तो यीशु ने **लेवी** को चुंगी लेते देखा। हम लेवी को मत्ती के रूप में जानते हैं जिसने बाद में पहले सुसमाचार को लिखा। वह एक यहूदी था परंतु इस बात पर ध्यान देते हुए कि वह घृणित रोमी शासन के लिए चुंगी ले रहा था समझा जा सकता है कि उसका व्यवसाय अति अयहूदी था! ऐसे मनुष्यों को सामान्यतः उनकी ईमानदारी के लिए नहीं जाना जाता था- वास्तव में उन्हें वेश्याओं की तरह समाज के कूड़े के रूप में देखा जाता था। तौभी इस बात का अनन्त श्रेय लेवी को जाता है कि जब उसने मसीह की बुलाहट को सुना तो उसने सब कुछ छोड़ दिया और **उसके पीछे हो लिया**। त्वरित और प्रश्नरहित आज्ञाकारिता के संदर्भ में हममें से प्रत्येक उसके समान बन सकें। उस समय यह एक महान त्याग प्रतीत हो सकता है परंतु अनन्तता में ऐसा दिखेगा मानो कुछ भी न त्यागा गया हो। जैसे कि शहीद मिशनरी जिम एलियट ने कहा था, ''वह व्यक्ति मूर्ख नहीं है जो उन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जिसे वह खो नहीं सकता, उन वस्तुओं को दे देता है जिसे वह रख नहीं सकता।''

2:15 **लेवी के घर** में एक भोज का आयोजन किया गया ताकि वह अपने मित्रों का परिचय प्रभु यीशु से करा सके। उसके अधिकांश मित्र उसके ही समान थे- **चुंगी लेने वाले और पापी**। उनके साथ उपस्थित रहने के निमंत्रण को प्रभु यीशु ने स्वीकार किया।

2:16 **शास्त्रियों और फरीसियों** ने सोचा कि उन्होंने प्रभु यीशु को एक गंभीर गलती में पकड़ लिया है। सीधे उसके पास जाने के बदले वे उसके **चेलों के पास** गए और उनके भरोसे और उनकी स्वामिभक्ति को नष्ट करने का प्रयास किया। यह **कैसी** बात थी **कि** उनका गुरु **चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ** खाता था।

2:17 **यीशु ने यह सुनकर** उन्हें स्मरण दिलाया कि स्वस्थ व्यक्तियों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती- मात्र उन्हें वैद्य की आवश्यकता होती है जो बीमार हैं। शास्त्री सोचते थे कि वे **भले चंगे** थे इसलिए उन्होंने उस महान वैद्य की स्वयं के लिए आवश्यकता को स्वीकार नहीं किया। चुंगी लेने वालों ने और पापियों ने अपने अपराधों और स्वयं की सहायता की आवश्यकता को स्वीकार किया। प्रभु यीशु उनके जैसे पापियों को बुलाने आए थे - आत्म-घोषित धर्मियों को नहीं।

इसमें हमारे लिए एक शिक्षा है। हमें अपने आप को मसीही समाज में ही कैद नहीं कर लेना चाहिए। अपितु हमें अभक्तों से मित्रता का प्रयास करना चाहिए ताकि उनका परिचय हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता से करा सकें। पापियों से मित्रता में हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जो हमारी गवाही को संकट में डाल दे और न ही हमें उद्धार न पाए हुए लोगों को यह अनुमति देनी चाहिए कि वे हमें अपने स्तर में नीचे खींच लें। मित्रता की अगुवाई आत्मिक सहायता के सकारात्मक मार्गों में करने के लिए पहल हमें करनी चाहिए। अपने आप को इस दुष्ट संसार से अलग कर लेना आसान होगा, परंतु यीशु ने ऐसा नहीं किया, और न ही उनके अनुयायियों को ऐसा करना चाहिए।

शास्त्रियों ने सोचा कि उन्हें पापियों का मित्र कहकर वे उनके यश को नाश कर देंगे। परंतु उनके द्वारा इच्छित अपमान एक प्रीतिकर प्रशस्ति बन गया। सभी छुड़ाए हुए लोग उसे आनंदपूर्वक पापियों के मित्र के रूप में स्वीकार करते हैं, और इस बात के कारण वे उससे अनन्त काल के लिए प्रेम करेंगे।

ज. उपवास के विषय में विवाद (2:18-22)

2:18 **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेले और**

फरीसियों के चेले एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में **उपवास** को अभ्यास में लाते थे। पुराना नियम में इसकी स्थापना गहरे दु:ख की अभिव्यक्ति के रूप में की गई थी। परंतु यह अपने अर्थ को बहुत कुछ खो चुका था और एक नैत्य रीति बन चुका था। उन्होंने ध्यान दिया कि यीशु के **चेले उपवास नहीं** करते थे, और संभवत: जब उन्होंने प्रभु से इसका कारण पूछा तो उनके हृदयों में ईर्ष्या और आत्म-दया की एक कसक थी।

2:19-20 प्रत्युत्तर में उसने अपने चेलों की तुलना **दूल्हे** के संगियों के साथ की। वह स्वयं दूल्हा था। **जब तक** वह उनके साथ था तब तक दु:ख के बाह्य प्रदर्शन के लिए कोई अवसर नहीं था। **परंतु वे दिन** आ रहे थे जब वह **अलग किया जाएगा, उस समय चेले उपवास** करने का अवसर पाएंगे।

2:21 तुरंत प्रभु ने उस नए युग के आगमन की घोषणा के लिए जो पुराना युग के असंगत था दो उदाहरण दिए। पहला उदाहरण एक ऐसे **कपड़े** से बने पैबन्द का है जो सिकुड़ाया नहीं गया था। यदि यह एक **पुराने वस्त्र** को सुधारने के लिए उपयोग किया जाए तो यह अनिवार्य रूप से सिकुड़ेगा और उसमें से कुछ खींच लेगा। पुराने कपड़े से बना हुआ वस्त्र पैबन्द से कमजोर होगा और जहां कहीं यह पैबन्द वस्त्र से सीला हुआ होगा वहां से वस्त्र पुन: फट जाएगा। प्रभु यीशु पुराने युग की तुलना पुराने वस्त्र से कर रहा था। परमेश्वर ने यहूदी धर्म पर मसीहत का पैबन्द लगाने का विचार कभी नहीं किया; यह एक नया उपक्रम था। उपवास में अभिव्यक्त पुराने युग के दु:ख को नए युग के आनन्द के लिए मार्ग देना अवश्य है।

2:22 दूसरा उदाहरण **पुरानी मशकों** में **नए दाखरस** का था। चमड़े से बनी पुरानी मशकें फैलने की अपनी सामर्थ खो चुकी थीं। यदि उनमें **नये दाखरस** को डाला जाता तो किण्वन के कारण उत्पन्न दबाव के कारण चमड़ा फट जाता। **नया दाखरस** मसीही विश्वास के आनन्द और सामर्थ का प्रतीक है। **पुरानी मशकें** यहूदी धर्म के आडम्बर और अनुष्ठान को चित्रित करती हैं। नए दाखरस के लिए नई मशकों की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार के दुखमय उपवास को अभ्यास में लाया जा रहा था उसके बंधन की आधीनता में प्रभु यीशु के अनुयायियों को लाने में यूहन्ना के चेलों और फरीसियों के चेलों को कोई लाभ नहीं था। नए जीवन के आनन्द और उल्लास को स्वयं को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता अवश्य दी जानी चाहिए। मसीहत ने सदैव मसीहत में कर्मकाण्डवाद को मिश्रित करने के मानवीय प्रयास को भोगा है। प्रभु यीशु ने सिखाया कि ये दोनों असंगत हैं। व्यवस्था और अनुग्रह परस्पर विरोधी सिद्धान्त हैं।

क.सब्त के विषय में विवाद (2:23-28)

2:23,24 यह घटना यहूदी धर्म की परम्परा और सुसमाचार की स्वतंत्रता के मध्य संघर्ष को चित्रित करती है जिसकी शिक्षा कुछ ही समय पहले प्रभु यीशु दे चुका था।

जब **वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, . . . उसके चेलों** ने खाने के लिए कुछ **बालें** तोड़ लीं। यह परमेश्वर की किसी व्यवस्था का उल्लंघन नहीं था। परंतु प्राचीनों के बाल की खाल निकालने वाली परम्पराओं के अनुसार चेलों ने ''काटने'' और यहां तक कि संभवत: ''दांवने'' के द्वारा (छिलका निकालने के लिए दानों को अपने हाथों में मसलने के द्वारा) भी सब्त को तोड़ दिया था!

2:25,26 प्रभु ने उन्हें पुराना नियम की एक घटना का प्रयोग करते हुए उत्तर दिया। यद्यपि **दाऊद** का राजा के रूप में अभिषेक हो चुका था तौभी वह तिरस्कृत था और राज्य करने के बदले एक तीतर के समान शिकार के लिए उसकी तलाश की जा रही थी। एक दिन जब उसकी भोजन-वस्तुएं समाप्त हो गईं , तो **उसने परमेश्वर के भवन में जाकर भेंट की रोटियों** को अपने साथियों के लिए और स्वयं के लिए उपयोग किया। साधारणतया ये भेंट की रोटियां याजकों के अतिरिक्त किसी के भी लिए प्रतिबन्धित थीं, तौभी ऐसा करने के लिए दाऊद को परमेश्वर द्वारा नहीं डांटा गया। क्यों? क्योंकि इस्राएल में परिस्थितियां सही नहीं थीं। जब तक दाऊद को राजा के रूप में उसका उचित स्थान नहीं दिया गया, तब तक परमेश्वर ने उसे वह करने की अनुमति दी जो कि साधरणतया अवैधानिक होता।

यही बात यीशु मसीह के साथ थी। यद्यपि वह अभिषिक्त था, तौभी वह राज्य नहीं कर रहा था। यह तथ्य कि उनके चेलों को यात्रा करते समय बालें तोड़नी पड़ीं यह दर्शाती है कि इस्राएल में परिस्थितियां सही नहीं थीं। स्वयं फरीसियों को प्रभु यीशु और उनके चेलों की आलोचना करने के बदले उनके प्रति आतिथ्य-सत्कार दर्शाना चाहिए था। यदि दाऊद को भेंट की रोटियां खाकर वास्तव में व्यवस्था को तोड़ने पर भी परमेश्वर द्वारा नहीं डांटा गया, तो वे चेले और कितने अधिक निर्दोष थे जिन्होंने समान परिस्थिति में प्राचीनों की परम्परा के अतिरिक्त किसी नियम को नहीं तोड़ा।

पद 26 बताता है कि दाऊद ने उस समय **भेंट की रोटियां खाईं** जब **अबियातार महायाजक** था। 1 शमूएल 21:1 के अनुसार उस समय अहीमेलेक महायाजक था। अबियातार उसका पुत्र था। ऐसा संभव है कि दाऊद के प्रति महायाजक की स्वामिभक्ति ने महायाजक को व्यवस्था के परे इस कार्य की अनुमति देने के लिए प्रेरित किया।

2:27,28 प्रभु ने अपने उपदेश को फरीसियों को यह स्मरण दिलाते हुए समाप्त किया कि परमेश्वर द्वारा **सब्त के दिन** को मनुष्य की दासता के लिए नहीं अपितु उसकी भलाई के लिए बनाया गया। उसने यह भी जोड़ा कि **मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है** – उसने सब्त के दिन को पहले स्थान में ठहराया था। इसीलिए उसे यह निर्णय देने का अधिकार था कि उस दिन क्या अनुज्ञेय था और क्या प्रतिबन्धित। निश्चित रूप से सब्त कभी भी आवश्यक कार्यों या करुणा के कार्यों को प्रतिबन्धित करने के लिए अभीष्ट नहीं थे। मसीही लोग सब्त को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। वह दिन इस्राएल राष्ट्र को दिया गया था। मसीहत का विशेष दिन प्रभु का दिन अर्थात् , सप्ताह का पहला दिन है । तथापि, यह ''ऐसा करो'' और ''ऐसा न करो'' के रीति-रिवाजों से जड़ा हुआ दिन नहीं है । उसके बदले यह एक ऐसे सौभाग्य का दिन है जब मसीही विश्वासी सांसारिक व्यवसायों से मुक्त होकर आराधना कर सकते हैं, सेवा कर सकते हैं और अपनी आत्मा की संस्कृति पर ध्यान दे सकते हैं। हमारे लिए प्रश्न यह नहीं है कि, ''क्या प्रभु के दिन में यह करना उचित या अनुचित है?'' परंतु इसके बदले प्रश्न यह है कि,''मैं इस दिन को परमेश्वर की महिमा के लिए, अपने पड़ोसी की आशीष के लिए और मेरी आत्मिक भलाई के लिए कैसे सर्वोत्तम तरीके से उपयोग में ला सकता हूं?''

ल.सेवक सब्त के दिन चंगा करता है (3:1-6)

3:1,2 सब्त के दिन एक और परखने की घटना घटित हुई। जब प्रभु यीशु **फिर आराधनालय में गया**, तो उसे **एक मनुष्य** मिला जिसका **हाथ सूख गया था**। इसने एक प्रश्न को जन्म दिया, ''क्या प्रभु यीशु **उसे सब्त के दिन चंगा करेगा**?'' यदि उसने ऐसा किया तो फरीसी उसके विरुद्ध एक विषय पा लेंगे- ऐसा उन्होंने सोचा। उनके पाखण्ड और कपट की कल्पना करें। इस मनुष्य की सहायता के लिए वे कुछ नहीं कर सकते थे , और यदि कोई उसकी सहायता करता तो उससे वे अप्रसन्न होते थे। वे प्रभु को मृत्युदण्ड देने के लिए कोई आधार तलाश रहे थे । यदि वह **सब्त के दिन** चंगा करे तो वे भेड़ियों के झुण्ड के समान उसकी हत्या के लिए दौड़ पड़ेंगे।

3:3,4 प्रभु ने **उस मनुष्य** से **बीच में खड़े होने** को कहा। वातावरण अपेक्षाओं से उत्तेजित हो गया। **तब उसने फरीसियों से कहा, ''क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?''** उसके प्रश्न ने फरीसियों की दुष्टता को उजागर किया। उन्होंने सोचा कि प्रभु के द्वारा सब्त के दिन चंगा करने का आश्चर्यकर्म करना अनुचित था, परंतु उनके द्वारा सब्त के दिन उसे नाश करने की योजना बनाना अनुचित नहीं था।

3:5 कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने उत्तर नहीं दिया! उलझन भरे शांति के पश्चात् उद्धारकर्ता ने उस मनुष्य को अपना **हाथ बढ़ाने** की आज्ञा दी। जब उसने वैसा किया तो पूर्ण सामर्थ लौट आई, मांस सामान्य आकृति में भर आया, और झुर्रियां लुप्त हो गईं।

3:6 यह **फरीसियों** द्वारा ग्रहण करने से परे बात थी। उन्होंने **बाहर जाकर**, अपने परम्परागत शत्रु **हेरोदियों** से संपर्क साधा और उनके **साथ** मिलकर यीशु को नाश करने की **सम्मति** की। अभी भी सब्त

जारी था। हेरोदेस यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की मृत्यु को सम्पादित कर चुका था। संभवत: उसका दल यीशु की हत्या में भी समान रूप से सफल हो जाए। फरीसियों को यही आशा थी।

म.बड़ी भीड़ सेवक के पीछे हो लेती है (3:7–12)

3:7–10 आराधनालय से निकलकर प्रभु **यीशु** गलील **झील की ओर चला गया**। बाइबल में सागर (झील) बहुधा अन्यजातियों को चित्रित करता है। इसलिए उसका यह कार्य संभवत:यहूदियों की ओर से अन्यजातियों की ओर उसके मुड़ने को चित्रित करता है। न केवल **गलील से** वरन् साथ ही साथ दूसरे क्षेत्रों से भी **एक बड़ी भीड़** इकट्ठी हो गई। भीड़ इतनी विशाल थी कि प्रभु यीशु ने **एक छोटी नाव** की मांग की ताकि वह किनारे से दूर जा सके जिससे कि वे लोग जो चंगाई के लिए आए थे उसे दबा न सकें।

3:11,12 जब भीड़ में सम्मिलित **अशुद्ध आत्माएं** चिल्लाईं कि वह **परमेश्वर का पुत्र** था, तो उसने **उन्हें** ऐसा न कहने के लिए **बहुत चिताया**। जैसा कि पहले ही समझा जा चुका है कि वह दुष्टात्माओं की गवाही को स्वीकार नहीं करेगा। उसने इस बात से इंकार नहीं किया कि वह परमेश्वर का पुत्र था, परंतु उसने इस बात के प्रकाशित होने के समय और इस प्रकार के तरीके को नियंत्रित रखने का चुनाव किया। प्रभु यीशु के पास चंगाई की सामर्थ थी परंतु उसने उन्हीं लोगों पर आश्चर्यकर्म दिखाया जो सहायता मांगने के लिए आए। उद्धार के साथ भी ऐसा ही है। उद्धार करने की उसकी सामर्थ सबके लिए पर्याप्त है परंतु केवल उनके लिए ही प्रभावकारी है जो उस पर भरोसा रखते हैं। उद्धारकर्ता की सेवकाई से हम सीखते हैं कि आवश्यकता बुलाहट का निर्माण *नहीं* करती। सभी जगह आवश्यकता थी। इस बात के लिए कि सेवा करने के लिए कहां और कब जाना है प्रभु यीशु परमेश्वर पिता के निर्देशों पर निर्भर रहा। आवश्यक रूप से हमें भी ऐसे ही रहना चाहिए।

III. सेवक की बुलाहट और उनके चेलों का प्रशिक्षण (3:13–8:38)

अ.बारह चेलों का चुना जाना (3:13–19)

3:13–18 सम्पूर्ण जगत में सुसमाचार प्रचार के कार्य को देखते हुए प्रभु यीशु ने बारह चेले नियुक्त किए। उन मनुष्यों में कोई अद्‌भुत बात नहीं थी; यह यीशु के साथ उनका संबंध था जिसने उन्हें महान बनाया। वे जवान व्यक्ति थे। चेलों की जवानी पर जेम्स ई. स्टीवर्ट यह वैभवमय टीका देते हैं:

> मसीहत एक युवा आंदोलन के रूप में आरम्भ हुआ... दुर्भाग्य से, यह एक ऐसा तथ्य है जिसे मसीही कला और मसीही प्रचार ने बहुधा ढांप दिया है। परंतु यह बिलकुल निश्चित है कि चेलों का मूल दल जवानों का एक समूह था। अत: यह आश्चर्यजनक नहीं है कि मसीहत ने इस संसार में एक युवा आंदोलन के रूप में प्रवेश किया। संभवत: अधिकांश प्रेरित उस समय तीस वर्ष से कम के थे जब वे यीशु के पीछे गए... हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धरती पर अपनी सेवकाई के लिए स्वयं प्रभु यीशु भी अपने ऊपर ''(अपनी) जवानी की ओस'' लिए हुए गए। (भ.सं.110:3 – यह भजन सर्वप्रथम स्वयं प्रभु यीशु पर लागू होता है उसके पश्चात् प्रेरितिक कलीसिया पर)। यह एक सच्ची प्रतिभा थी जिसने उत्तरकालीन मसीहियों की तब अगुवाई की जब उन्होंने अपने प्रभु के स्वरूप को अन्तर्भौम समाधि क्षेत्र की दीवारों में उकेरते समय, उसे बूढ़े और थके हुए और दु:ख से टूटे हुए व्यक्ति के रूप में नहीं परंतु भोर के पर्वतों पर एक युवा चरवाहे के रूप में चित्रित किया। आईज़क वाट्स के महान गीत का मूल संस्करण तथ्य के प्रति सच्चा था:
>
> अद्‌भुत क्रूस को निहारता जब
> महिमा का *युवा* राजकुमार जहां मुआ था।
>
> युवा हृदय को इसकी प्रफुल्लता और पराक्रम और उदारता और आशा में, इसके आकस्मिक एकाकीपन और आवा–जाही स्वप्नों और गुप्त संघर्षों और शक्तिशाली परीक्षाओं में किसी ने कभी नहीं

समझा है, किसी ने इसे उतनी समीपता से नहीं समझा जितना कि यीशु ने। और यीशु की अपेक्षा को किसी ने कभी इतनी स्पष्टता से अनुभव नहीं किया कि जीवन की तरुणाई के वर्ष आत्मा के साथ परमेश्वर के व्यवहार के सर्वोत्तम अवसर होते हैं, जब विलक्षण प्रसुप्त विचार झकझोरते हैं और सम्पूर्ण संसार प्रकट होने लगता है... जब हम प्रथम **बारह** की कहानी का अध्ययन करते हैं तो हम युवाओं के रोमांच का अध्ययन करते हैं। हम उन्हें अपने नेता का अनुसरण अनजाने राहों में करते हुए पाते हैं। वे उतनी स्पष्टता से नहीं जानते थे कि वह कौन था या वे क्यों उसके पीछे चल रहे थे या वह उन्हें कहां ले जाएगा; परंतु बस उसके चुम्बकीय आकर्षण में बंधे हुए और उसके आत्मा के किसी अप्रतिरोध्य वस्तु के द्वारा वशीभूत, मंत्रमुग्ध और नियंत्रित होकर, मित्रों के ठट्ठों और शत्रुओं के षड़यंत्रों का सामना करते हुए चलते रहे। और जब तक वे लगभग इस इच्छा पर नहीं पहुंच गए कि उन्हें समस्त कर्तव्यों को त्यागना है, तब तक कुछ अवसरों पर उनके हृदयों में संदेह का कोलाहल उमड़ता रहा; परंतु तौभी वे उससे लिपटे रहे। अपनी आशाओं के खण्डहरों से होकर एक उत्तम स्वामिभक्ति की राह में वे पहुंचे और अंततः विजयोल्लास के साथ उस महान नाम को पा लिया जो द *टे डेउम* उन्हें देता है, ''प्रेरितों की महिमित मण्डली''। वे अवलोकन के योग्य हैं, क्योंकि हम भी उनकी आत्मा के अनुप्रेरण को लपक सकते हैं और प्रभु यीशु का अनुसरण कर सकते हैं।[4]

बारह चेलों की बुलाहट के पीछे तीन उद्देश्य थे : (1) **कि वे उसके साथ-साथ रहें**; (2) कि **वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें**; और (3) कि वे **बीमारियों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें**।

सर्वप्रथम प्रशिक्षण का समय आवश्यक था - सार्वजनिक प्रचार से पहले व्यक्तिगत तैयारी। यहां सेवकाई का एक आधारभूत सिद्धान्त है। परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में निकलने से पूर्व हमें **उसके साथ** समय अवश्य व्यतीत करना चाहिए।

द्वितीय, वे भेजे गए ताकि **प्रचार करें**। उनके सुसमाचार की आधारभूत विधि, परमेश्वर के वचन की घोषणा, सदैव केन्द्रीय स्थान पर होनी चाहिए। किसी भी बात को इसे गौण करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

अंततः, उन्हें अलौकिक **अधिकार** दिया गया। **दुष्टात्माओं** का निकाला जाना मनुष्यों के सम्मुख यह प्रमाणित करेगा कि परमेश्वर प्रेरितों के द्वारा बातें कर रहा था। बाइबल का लेखन कार्य तब तक पूर्ण नहीं हुआ था। आश्चर्यकर्म परमेश्वर के संदेशवाहकों के प्रत्यय-पत्र थे। आज मनुष्य के पास सम्पूर्ण परमेश्वर का वचन है; उनका दायित्व है कि वे इस पर आश्चर्यकर्मों के प्रमाण के *बिना* विश्वास करें।

3:19 यहूदा इस्करियोति का नाम प्रेरितों के मध्य अलग दिखाई देता है। एक व्यक्ति जिसे प्रेरित चुना गया उसका हमारे प्रभु का पकड़वाने वाला बनने में एक रहस्य जुड़ा हुआ है। मसीही सेवकाई में सबसे महान मनोव्यथा यह देखना है कि एक व्यक्ति जो दीप्त, उत्साही और विदित रूप से समर्पित रहता है, कुछ समय पश्चात् उद्धारकर्ता की ओर पीठ फेरकर उस संसार की ओर वापस चला जाता है जिस संसार ने प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया था।

ग्यारह प्रेरित प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य सिद्ध हुए और उनके द्वारा प्रभु ने संसार को उलट-पुलट कर दिया। उन्होंने समस्त समयकाल में सर्वाधिक विस्तारित सुसमाचारीय प्रचार के क्षेत्र में स्वयं को पुनः उत्पन्न किया, और एक अर्थ में, आज हम उनकी सेवकाई के सतत् फल हैं। यह बताने का कोई तरीका नहीं है कि मसीह के लिए हमारे प्रभाव का पहुंच कितना दूरस्थ हो सकता है।

ब. अक्षम्य पाप (3:20-30)

3:20,21 जिस पहाड़ पर प्रभु यीशु ने अपने चेलों को बुलाया था वहां से वह गलील के एक घर में वापस आया। वहाँ ऐसी **भीड़** इकट्ठी हुई कि वह और उसके चेले इतने व्यस्त हो गए कि भोजन भी न कर सके। प्रभु के क्रियाकलापों के विषय सुनकर, **उनके कुटुम्बियों** ने सोचा कि **उसका चित ठिकाने पर नहीं** था, और उन्होंने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया। निःसंदेह वे परिवार में इस धर्मोन्मत के धुन के कारण परेशान थे।

जे.आर. मिलर टिप्पणी करते हैं :

उसके अविजित धुन का आंकलन करने पर वे केवल इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वह पागल था। इन आधुनिक दिनों में भी जब मसीह के कुछ समर्पित अनुयायी अपने प्रभु के प्रेम में स्वयं को पूरी तरह से भूल जाते हैं

> तो हम इसी प्रकार की कई बातों को सुनते हैं। लोग कहते हैं, ''वह अवश्य पागल होगा!'' वे सोचते हैं कि वह प्रत्येक व्यक्ति सनकी है, जिसका धर्म किसी प्रकार के असामान्य उत्ताप में प्रदीप्त है, या जो प्रभु के लिए कार्य में सामान्य विश्वासी की अपेक्षा अधिक उत्साह से बढ़ता है...
>
> यह एक भले प्रकार का पागलपन है। यह एक दु:ख की बात है कि यह अति दुर्लभ है। यदि यह पागलपन अधिक होता तो कलीसियाओं के छाया तले इतनी मरती हुई उद्धारहीन आत्माएं नहीं होतीं; मिशनरियों को पाना और अंधेरे महाद्वीपों में सुसमाचार भेजने के लिए धन पाना तब इतना कठिन नहीं होता; हमारी कलीसियाओं में इतनी रिक्त कुर्सियां नहीं होतीं; हमारी प्रार्थना सभाओं में इतने लम्बे विराम नहीं होते; हमारे सण्डे-स्कूल में पढ़ाने वालों की संख्या इतनी कम नहीं होती। यह एक महिमित बात होगी यदि सभी मसीही स्वयं को वैसे ही पीछे छोड़ दें जैसे कि प्रभु ने या पौलुस ने स्वयं को छोड़ दिया था। यह बदतरीन (सब से बुरा) पागलपन है जो इस संसार में और किसी दूसरे संसार के विषय कभी विचार नहीं करता; जो, खोए हुओं के मध्य सतत् विचरण करते हुए कभी उन पर तरस नहीं खाता, न ही कभी उनकी खोई हुई परिस्थितियों पर विचार करता है, न ही उनको बचाने का कोई प्रयास करता है। ठंडे दिमाग और उदासीन हृदय रखकर नाश होने वाली आत्माओं की चिन्ता में अपने आप को न डालना आसान है; परंतु हम अपने भाइयों के रखवाले हैं, और कर्तव्यों के दुष्करण में कोई दुष्करण उतना बदतर नहीं होगा जितना कि वह दुष्करण जो उनके अनन्त उद्धार के प्रति कोई ध्यान नहीं देता।[5]

यह चिरकालीन सत्य है कि जो परमेश्वर के लिए आग में कूदता है वह अपने समकालीनों को मतिभ्रष्ट लगता है। जितना अधिक हम मसीह के समान होंगे, उतना ही अधिक हम भी अपने रिश्तेदारों और मित्रों के द्वारा गलत समझे जाने के दु:ख को अनुभव करेंगे। यदि हम धन-सम्पत्ति बनाने के लिए आगे आएंगे तो लोग हमारा प्रोत्साहन करेंगे। यदि हम यीशु मसीह के लिए धर्मोन्मत हैं तो वे हमारा उपहास करेंगे।

3:22 **शास्त्रियों** ने नहीं सोचा कि वह पागल था। उन्होंने उस पर यह आरोप लगाया कि वह **दुष्टात्माओं के सरदार बालजबूल** की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता है। बालजबूल का अर्थ होता है, ''मक्खियों का प्रभु'' या ''गंदगी का प्रभु।'' यह एक गंभीर, घृणित और ईश-निन्दक आरोप था!

3:23 पहले यीशु ने इसका खण्डन किया, फिर जिन्होंने ऐसा कहा था उनके विनाश की घोषणा की। यदि वह बालजबूल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था, तो शैतान स्वयं के विरोध में कार्य करके स्वयं के ही उद्देश्य को विफल करने वाला होता। उसका उद्देश्य मनुष्यों को दुष्टात्माओं के द्वारा नियंत्रित करना है, उन्हें दुष्टात्माओं से मुक्त करना नहीं।

3:24-26 एक **राज्य**, एक **घर**, या एक व्यक्ति **अपना ही विरोधी होकर** स्थिर नहीं रह सकता। सतत् उत्तरजीविता आंतरिक सहयोग पर निर्भर करता है, प्रतिरोध पर नहीं।

3:27 इसलिए शास्त्रियों का आरोप हास्यापद था। वास्तव में यीशु मसीह का कार्य उन शास्त्रियों के कथन के ठीक विपरीत था। उसके आश्चर्यकर्मों ने शैतान के पराक्रम के स्थान पर उसके पतन का संकेत दिया। यही आशय था जब उद्धारकर्ता ने कहा, **''कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को बांध न ले; और तब उसके घर को लूट लेगा।''**

वह **बलवन्त** - शैतान है। **घर** उसका राज्य है; वह इस युग का ईश्वर है। **उसका माल** वे लोग हैं जिनके ऊपर वह नियंत्रण रखता है। प्रभु यीशु वह व्यक्ति हैं जो शैतान को बांधता है और **उसके घर** को लूटता है। मसीह के द्वितीय आगमन पर शैतान बांधा जाएगा और एक हजार वर्ष के लिए अथाह गड्हे में डाला जाएगा। इस धरती पर अपनी सेवकाई के समय उद्धारकर्ता द्वारा दुष्टात्माओं को निकालना उसके द्वारा शैतान को अंतत: बांधे जाने की एक पूर्वसूचना थी।

3:28-30 इन पदों में, प्रभु यीशु उन शास्त्रियों के विनाश की घोषणा करते हैं जो अक्षम्य अपराध के दोषी थे। जब वास्तव में प्रभु यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था, वैसे समय में उस पर दुष्टात्मा की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाकर, उन्होंने वास्तव में पवित्र आत्मा को एक दुष्टात्मा कहा। यह **पवित्र आत्मा के विरुद्ध** निन्दा थी। **सब** पाप क्षमा हो सकते हैं, परंतु इस विशेष पाप की कोई क्षमा नहीं है। यह एक **अनन्त** पाप है।

क्या लोग आज इस पाप को कर सकते हैं? संभवत: नहीं। यह एक ऐसा पाप था जो तब किया गया जब यीशु इस धरती पर आश्चर्यकर्म दिखा रहा था। चूंकि आज वह दुष्टात्माओं को निकालते हुए धरती पर शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं है, अत: पवित्र आत्मा की निन्दा करने की वही संभावना नहीं बनती है। वे लोग जो यह चिन्ता करते हैं कि वे अक्षम्य पाप कर चुके हैं, वे ऐसा नहीं किए रहते हैं। यही तथ्य कि वे चिंतित हैं इस बात का संकेत देता है कि वे पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करने के दोषी नहीं हैं।

स. सेवक की सच्ची माता और सच्चे भाई (3:31-35)

प्रभु यीशु की **माता** मरियम **उसके भाइयों** के साथ उससे बात करने आई। भीड़ के कारण वे उस तक नहीं पहुंच पाए, अत: उन्होंने यह संदेश भेजा कि वे **बाहर** उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब संदेशवाहक ने उससे कहा कि उसकी **माता** और उसके **भाई**[6] उससे मिलना चाहते थे, उसने उन पर **जो उसके आसपास बैठे थे दृष्टि करके** घोषणा की कि वे **जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले** वही उसकी **माता** और उसके **भाई** थे।

इससे हमारे लिए कई शिक्षाएं प्रगट होती हैं :

1. सबसे पहले, प्रभु यीशु के शब्द मरियम की आराधना के प्रति एक फटकार थी। उसने अपनी स्वाभाविक माता के रूप में उसका अनादर नहीं किया, परंतु उसने यह अवश्य कहा कि आत्मिक रिश्ते, शारीरिक रिश्ते के ऊपर हैं। मरियम को उसकी मां होने की अपेक्षा परमेश्वर की इच्छा पर चलने का श्रेय अधिक जाता है।
2. दूसरी बात, यह इस धर्मसिद्धान्त को गलत सिद्ध करती है कि मरियम चिरस्थाई कुंवारी थी। यीशु के भाई थे। वह मरियम का पहिलौठा था, परंतु बाद में उससे अन्य पुत्र- पुत्रियां उत्पन्न हुईं (मत्ती 13:55; मर.6:3; यूह. 2:12; 7:3,5,10; प्रेरि. 1:14; 1 कुरि. 9:5; गला. 1:19 देखिए। भजन 69:8 भी देखिए)।
3. प्रभु यीशु, परमेश्वर के प्रति दिलचस्पी को सांसारिक संबंधों से ऊपर रखता है। अपने अनुयायियों से आज भी वह कहता है: ''यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता ''(लूका 14:26)।
4. यह भाग हमें स्मरण दिलाता है कि विश्वासी, संगी मसीहियों के साथ सगे रिश्तेदारों की अपेक्षा अधिक मजबूत बन्ध में बंधे रहते हैं, यदि वे रिश्तेदार उद्धारहीन हैं।
5. अंत में, यह यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को महत्व दिए जाने पर जोर देता है। क्या मैं इस मापदण्ड को पूरा करता हूं? क्या मैं उसकी माता या उसका भाई हूं?

द. बीज बोने वाले का दृष्टान्त (4:1-20)

4:1,2 यीशु **फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा**। पुन: भीड़ ने उसके लिए आवश्यक कर दिया कि वह किनारे से थोड़ी ही दूर पर अपने मंच के रूप में **एक नाव** का प्रयोग करे। और **वह** पुन: प्रकृति से अपने विषय में आत्मिक शिक्षाएं **सिखाने लगा**। वह प्राकृतिक जगत में आत्मिक सत्य को देख सका। हम सबके लिए यह उपलब्ध है।

4:3-4 इस दृष्टान्त का सम्बन्ध **बीज बोने वाला**, **बीज**, और मिट्टी से है। **मार्ग के किनारे** की मिट्टी इतनी कठोर थी कि बीज उसे भेद नहीं पाया। **पक्षियों ने आकर** बीज को चुग लिया।

4:5,6 **पथरीली भूमि** में चट्टान की सतह को धूल की पतली परत ढांपी हुई थी। मिट्टी के उथलेपन ने बीज को गहरी जड़ जमाने से रोका।

4:7 झाड़ीदार भूमि में कंटीली झाड़ियां थीं जिन्होंने बीज को पोषण और सूर्यप्रकाश नहीं मिलने दिया, इस प्रकार दबा दिया।

4:8 **अच्छी भूमि** बीज के लिए अनुकूल परिस्थितियों के साथ गहरी और उपजाऊ थी। **कोई** बीज **तीस गुणा, कोई साठ गुणा, कोई सौ गुणा** फल लाया।

4:10-12 जब चेले उसके साथ **अकेले** थे, तब

उन्होंने **उससे पूछा** कि वह क्यों दृष्टान्तों में बातें करता था। उसने उन्हें समझाया कि केवल उन्हें जिनके हृदय ग्रहणशील हैं **परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ** दी गई थी। नया नियम में **भेद** तब तक अज्ञात एक सत्य था जो केवल विशेष प्रकाशन के द्वारा ज्ञात हो सकता है। **परमेश्वर के राज्य का भेद** यह है कि:

1. जब प्रभु यीशु ने स्वयं को इस्राएल के राजा के रूप में प्रस्तुत किया तो उसका तिरस्कार किया गया।
2. इस धरती पर उस राज्य के शब्दश: स्थापित होने से पहले एक समय अंतराल होगा।
3. अंतरकाल के दौरान यह आत्मिक रूप में विद्यमान होगा। जितने मसीह को राजा के रूप में स्वीकार करेंगें वे सब राज्य में होंगे यद्यपि राजा स्वयं अनुपस्थित था।
4. अंतरकाल में सफलता के भिन्न–भिन्न अंशों के साथ परमेश्वर का वचन बोया जाएगा। कुछ लोग वास्तव में उद्धार पाएंगे, परंतु अन्य केवल नामधारी विश्वासी होंगे। सभी नामधारी मसीही राज्य के बाह्य रूप में सम्मिलित होंगे, परंतु केवल वास्तविक लोग ही राज्य की आंतरिक वास्तविकता में प्रवेश करेंगे।

पद 11 और 12 बताते हैं कि क्यों यह सत्य दृष्टान्तों में प्रस्तुत किया गया। परमेश्वर अपने परिवार के भेद को उन पर प्रगट करता है जिनके हृदय खुले, ग्रहणशील और आज्ञाकारी होते हैं, जबकि वह उनसे जानबूझकर सत्य को छिपाता है जो उनको दिए गए प्रकाश का तिरस्कार करते हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें प्रभु यीशु ''**बाहरवाले**'' कहता है। पद 12 के शब्द एक साधारण पाठक को कठोर और अनुचित प्रतीत हो सकते हैं: ''**वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं।**''

परंतु जिस महान सौभाग्य का आनन्द इन व्यक्तियों ने उठाया उसे हमें अवश्य स्मरण रखना चाहिए। परमेश्वर के पुत्र ने उनके मध्य शिक्षा दी और उनके सम्मुख कई सामर्थी आश्चर्यकर्म किए। उसे सच्चे मसीह के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा अब वे उसका तिरस्कार कर रहे थे। क्योंकि उन्होंने जगत की ज्योति का तिरस्कार किया, इसलिए उनसे उसकी शिक्षा की ज्योति को दूर रखा जाएगा। अब से वे उसके आश्चर्यकर्म को देखेंगे, तौभी उसके आत्मिक महत्व को नहीं समझेंगे; उसके शब्दों को सुनेंगे, तौभी उनमें छिपी गहरी शिक्षाओं की प्रशंसा नहीं करेंगे।

इसमें अंतिम बार सुसमाचार सुनने जैसी कोई बात है। यह संभव है कि पाप करके अनुग्रह के दिन से दूर चले जाएं। अवश्य ही मनुष्य छुटकारे की सीमा से बाहर चले जाते हैं। ऐसे स्त्री–पुरुष हैं जिन्होंने उद्धारकर्ता का तिरस्कार किया है और जो कभी भी मन फिराने और क्षमा पाने का अवसर नहीं पाएंगे। वे सुसमाचार सुन सकते हैं परंतु यह कठोर कानों में और एक संवेदनहीन हृदय में गिरेगा। हम कहते हैं, ''जहां जीवन है, वहां आशा है,'' परंतु बाइबल कुछ ऐसे लोगों के विषय बताती है जो जीवित हैं, तौभी मन फिराने की आशा के परे हैं (उदाहरण के लिए, इब्रा. 6:4–6)।

4:13 बीज बोनेवाले के दृष्टान्त में वापस जाते हुए, प्रभु यीशु ने चेलों से पूछा कि यदि वे इस सरल दृष्टान्त को नहीं **समझते** तो वे कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि वे अधिक जटिल **दृष्टान्तों** को समझेंगे।

4:14 उद्धारकर्ता ने **बीज बोनेवाला** की पहचान नहीं दी। यह वह स्वयं हो सकता था या वे जो उसके प्रतिनिधि के रूप में उसका प्रचार करते हैं। उसने कहा, बीज, **वचन** है।

4:15–20 विभिन्न प्रकार की भूमि मानव हृदयों और उनकी वचन की ग्रहणशीलता को दर्शाती हैं, जो निम्नलिखित हैं:

मार्ग के किनारे की भूमि (पद 15). यह हृदय कठोर है। वह व्यक्ति जो हठीला है और जिसका हृदय टूटा हुआ नहीं है, उसका प्रत्युत्तर उद्धारकर्ता के प्रति एक दृढ़ संकल्पी ''नहीं'' होता है। पक्षियों के द्वारा चित्रित **शैतान** वचन को उठा ले जाता है। यह पापी व्यक्ति संदेश के द्वारा अविचलित और अविकल रहता है। वह इसके पश्चात् इसके प्रति उदासीन और संवेदनहीन रहता है।

पथरीली भूमि (पद 16,17). यह व्यक्ति **वचन** के प्रति सतही प्रतिक्रिया दिखाता है। संभवत: वह एक जोशीले सुसमाचार अपील के समय भावुकता में मसीह में विश्वास को प्रगट करता है। परंतु यह मात्र मानसिक सहमति होती है। उसमें मसीह के व्यक्तित्व के प्रति कोई

वास्तविक समर्पण नहीं रहता। वह वचन को **आनन्द से** ग्रहण करता है; अच्छा होता यदि वह इसे गहरे पश्चाताप और अनुताप के साथ ग्रहण करता। वह थोड़े समय के लिए प्रफुल्लित होकर चलता प्रतीत होता है परंतु **जब** उसके विश्वास के कारण **क्लेश या उपद्रव होता है**, तब वह निर्णय लेता है कि कीमत बहुत अधिक है और वह सब कुछ त्याग देता है। वह तब तक मसीही होने का दावा करता है जब तक ऐसा करना सस्ता होता है, परंतु उपद्रव उसकी अवास्तविकता को उघाड़ देता है।

झाड़ियां (पद 18,19). ये लोग भी आशाजनक आरंभ करते हैं। सभी प्रकार के बाह्य दर्शन में वे सच्चे विश्वासी प्रतीत होते हैं। परंतु तत्पश्चात वे धनी बनने की अभिलाषा में व्यवसाय और सांसारिक चिन्ता में लवलीन हो जाते हैं। वे आत्मिक बातें में अपनी रुचि खो देते हैं, और अंततः मसीही होने के किसी भी दावे को ही त्याग देते हैं।

अच्छी भूमि (पद 20). यहां कीमत चाहे कुछ भी क्यों न हो, **वचन** की एक निश्चित स्वीकार्यता होती है। ये लोग सही में नया जीवन प्राप्त करते हैं। वे मसीह राजा के निष्ठावान प्रजा होते हैं। न तो संसार, न तो शरीर और न ही शैतान, यीशु राजा पर उनके भरोसे को डिगा सकता है।

अच्छी भूमि में सम्मिलित सुनने वालों के मध्य भी फलवन्त होने की भिन्न-भिन्न दशा है। **कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा** फल लाते हैं।

उपजाऊपन की दशा क्या निर्धारित करती है? वह जीवन सबसे अधिक फलवन्त है जो वचन के प्रति आज्ञाकारिता तत्परता के साथ, प्रश्नरहित और आनन्द सहित होकर दिखाते हैं।

ई. सुनने वालों का दायित्व (4:21-25)

4:21 यहां **दीया** उस सत्य को दर्शाता है जिसे यीशु ने अपने चेलों को सिखाया। ये सत्य **पैमाने या खाट के नीचे** रखने के लिए नहीं थे, परंतु ये खुले में रखने के लिए थे ताकि मनुष्य इन्हें देखें। **पैमाना** संभवतः व्यस्तता को दर्शाता है, जिसे यदि अनुमति दी जाए तो उस समय को चुरा लेगा जिसे प्रभु की बातों के लिए दिया जाना चाहिए। **खाट** संभवतः आराम या आलस्य को बताता है, दोनों सुसमाचार प्रचार के शत्रु हैं।

4:22 प्रभु यीशु ने भीड़ से दृष्टान्तों में बातें की। उसमें निहित सत्य छिपा रह गया। परंतु ईश्वरीय अभिप्राय यह था कि चेले उन छिपे सत्यों को इच्छुक हृदयों को बताएं। तथापि, पद 22 का यह अर्थ भी हो सकता है कि चेलों को प्रकटीकरण के दिन को सतत स्मरण रखते हुए सेवा करनी चाहिए, जब यह प्रगट हो जाएगा कि कहीं व्यस्तता या आत्म-आसक्ति को उद्धारकर्ता के लिए गवाही देने के ऊपर वरीयता लेने की अनुमति तो नहीं दी गई।

4:23 इन शब्दों की गंभीरता का संकेत प्रभु यीशु की चेतावनी से मिलता है : "**यदि किसी के सुनने के कान हों, तो वह सुन ले**"।

4:24 तत्पश्चात उद्धारकर्ता ने एक और गंभीर चेतावनी दी : "**चौकस रहो कि क्या सुनते हो**"। यदि मैं परमेश्वर के वचन से कोई आज्ञा सुनता हूं, परंतु उसका पालन करने में असफल हो जाता हूं, तो मैं इसे दूसरों को नहीं दे सकता। जब लोग प्रचारक के जीवन में इस सत्य को देखते हैं तो उसकी दी हुई शिक्षा को सामर्थ और उद्देश्य मिलता है।

हम दूसरों को जिस मात्रा में सत्य बांटते हैं, सत्य हमारे पास उसके संयोजित ब्याज के साथ वापस आता है। शिक्षक एक पाठ को तैयार करने में सामान्यतः विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सीखता है। और भविष्य के पुरस्कार हमारे अल्प व्यय की तुलना में विशाल होंगे।

4:25 प्रत्येक समय जब हम नए सत्य को प्राप्त करते हैं और उसे अपने जीवन में वास्तविक बनने की अनुमति देते हैं, तो हमें **अधिक** मिलने की निश्चयता है। दूसरी ओर, सत्य के प्रति प्रतिक्रिया में असफलता के परिणामस्वरूप जो था वह भी खो जाता है।

फ. उगने वाले बीज का दृष्टान्त (4:26-29)

यह दृष्टान्त केवल मरकुस में पाया जाता है। इसकी व्याख्या कम से कम दो तरीके से की जा सकती है। यह **मनुष्य** संभवतः अपनी सार्वजनिक सेवकाई के समय धरती पर **बीज** बोता प्रभु यीशु है, जो तत्पश्चात स्वर्ग लौट गया। बीज रहस्यमय तरीके से, अनुभूति-शून्य परंतु अपराजेय रीति से बढ़ना आरंभ करता है। एक छोटी

शुरुआत से, सच्चे विश्वासियों की एक उपज विकसित होती है। **जब दाना पक जाता है... कटनी** स्वर्गीय खलिहान में पहुंचाई जाएगी।

या फिर, यह दृष्टान्त चेलों को उत्साहित करने के अभिप्राय से दी गई होगी। उनका दायित्व है **बीज** बोना। वे **रात को** सोकर **दिन को** जाग सकते हैं, इस बात को जानते हुए कि परमेश्वर का वचन उसके पास खाली न लौटेगा, परंतु जिस कार्य को करने की अपेक्षा उसने उससे की है वह उस कार्य को करेगा। मनुष्य की सामर्थ और कौशल से बिलकुल परे, एक रहस्यमय और आश्चर्यजनक प्रक्रिया के द्वारा वचन मानव हृदयों में कार्य करके परमेश्वर के लिए फल उत्पन्न करता है। मनुष्य रोपता और सिंचता है परंतु परमेश्वर बढ़ाता है। इस व्याख्या की समस्या पद 29 में पाई जाती है। केवल परमेश्वर ही **कटनी** के समय **हंसिया** लगा सकता है। परंतु इस दृष्टान्त में वही मनुष्य जो बीज बोता है दाना पकने पर **हंसिया लगाता है**।

ग. राई के दाने का दृष्टान्त (4:30–34)

4:30–32 यह दृष्टान्त **राज्य** के विकास को **एक राई के दाने** के समान छोटी शुरुआत से इतने बड़े वृक्ष या झाड़ी में बदलने के रूप में दिखाता है जिसमें **पक्षी** अपना घोंसला बना सकें। राज्य का आरंभ एक छोटे, सताए हुए अल्पसंख्यकों के झुण्ड के साथ हुआ। तत्पश्चात् यह अधिक लोकप्रिय हो गया और शासन द्वारा राज्य-धर्म के रूप में अपनाया गया। यह विकास दर्शनीय परंतु विकृत था, इसमें सम्मिलित अधिकांश लोग राजा को होंठों का बलिदान चढ़ाते थे, परंतु वास्तव में वे उद्धार पाए हुए नहीं थे।

जैसा कि वैन्स हैवनेर ने कहा:

> जब तक कलीसिया ने घावों के निशानों को धारण किया तब तक उन्होंने प्रगति की। जब उन्होंने पदकों को पहनना आरंभ किया, उनका उद्देश्य मुरझा गया। जब मसीही महंगे टिकट खरीदकर भव्य मंच पर बैठते थे उसकी अपेक्षा वह दिन कलीसिया के लिए एक महान दिन था जब मसीही सिहों को खिला दिए जाते थे।[7]

इसलिए राई की झाड़ी तथाकथित ईसाई जगत को चित्रित करती है जो सब प्रकार के झूठे शिक्षकों के लिए घरौंदा बन चुकी है। यह राज्य का बाह्य रूप है, जैसा कि यह आज अस्तित्व में है।

4:33,34 पद 33 और 34 शिक्षा देने में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त का परिचय हमसे कराती हैं। प्रभु यीशु ने लोगों को **उनकी समझ के अनुसार** शिक्षा दी। उसने उनके पूर्ववर्ती ज्ञान पर निर्माण किया, उसने उन्हें आगे की शिक्षा देने से पहले एक पाठ को अपनाने का समय दिया। वह अपने सुनने वालों की क्षमता से परिचित था, इसलिए उसने उन्हें उनकी ग्रहण क्षमता से अधिक शिक्षाओं से तृप्त नहीं किया (छका नहीं दिया) (यूह. 16:12; 1 कुरि. 3:2; इब्रा. 5:12 भी देखिए)। कुछ प्रचारकों की विधि हमें यह सोचने पर बाध्य कर सकती है कि मसीह ने "मेरी भेड़ों को चरा" कहने के स्थान पर "मेरे ज़िराफों को चरा" कहा था!

यद्यपि प्रभु यीशु की सामान्य शिक्षा दृष्टान्तों में थी, तौभी वे एकान्त में **अपने चेलों को** उनका **अर्थ बताते थे**। वे उन्हें प्रकाश देते थे जो सच्चाई से इसकी लालसा करते थे।

ह. आंधी और लहर सेवक की सेवा करते हैं (4:35–41)

4:35–37 **उसी दिन सांझ** को प्रभु यीशु और उनके चेले गलील की झील के पूर्वी छोर की ओर जाने के लिए निकले। उन्होंने कोई पूर्व तैयारी नहीं की थी। **और भी नावें** उनके पीछे हो लीं। तभी अकस्मात **बड़ी आंधी आई**। विशाल **लहरें नाव** को डुबाने पर थीं।

4:38–41 प्रभु यीशु नाव के **पिछले भाग में** सो रहा था। व्यग्र चेलों ने **उसे जगाकर** उसे अपनी सुरक्षा के प्रति उसकी 'प्रतीत होती चिंता' की कमी के लिए उलाहना दिया। प्रभु ने **उठकर आंधी और** पानी को **डांटा**। तुरंत और पूर्ण **चैन** मिला। तब प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों को डरने के कारण और भरोसा न रखने के कारण थोड़ा झिड़का। वे आश्चर्यकर्म से चकित हुए। हालांकि वे जानते थे कि यीशु कौन था, तौभी वे उस व्यक्ति के द्वारा नए रूप से प्रभावित हुए जो प्रकृति को नियंत्रित कर सकता था।

यह घटना प्रभु यीशु के मनुष्यत्व और ईश्वरत्व को प्रगट करती है। प्रभु यीशु नाव के पिछले भाग में सोया था; यह उसका मनुष्यत्व है। उसने कहा और समुद्र शांत

हो गया; यह उसका ईश्वरत्व है।

जैसा कि पूर्व के आश्चर्यकर्मों ने बीमारियों और दुष्टात्माओं पर उसके अधिकार को दिखाया, उसी प्रकार इस आश्चर्यकर्म ने प्रकृति पर उसके अधिकार को दिखाया।

अंततः यह हमें जीवन की समस्त आंधियों में प्रभु यीशु के पास जाने के लिए उत्साहित करती है, यह जानते हुए कि जब वे नाव में हैं तो नाव कभी नहीं डूबेगी।

तू है प्रभु तकिये पर सोया जो,
तू है प्रभु जिसने प्रचण्ड समुद्र को किया शांत,
आने दो मारक आंधी और उफनती लहरों को,
सिर्फ रहना है हमें नाव में तेरे साथ?

– एमी कार्माइकेल

ई. दुष्टात्मा-ग्रसित एक गिरासेनी को चंगा करना (5:1-20)

5:1-5 गिरासेनियों [8] **का देश** गलील की झील के पूर्व की ओर था। वहां प्रभु यीशु एक दुष्टात्मा-ग्रसित व्यक्ति से मिला जो असामान्य रूप से हिंसक तथा समाज के लिए आतंक का कारण था। उसे बांधने के समस्त प्रयास निष्फल हो चुके थे। वह लगातार चिल्लाता और **अपने को** नुकीले **पत्थरों से** घायल करता हुआ पहाड़ों पर और **कब्रों** में रहा करता था।

5:6-13 दुष्टात्मा-ग्रसित व्यक्ति ने प्रभु यीशु को देखकर पहले आदरभाव दिखाया, तत्पश्चात कड़वाहट भरी शिकायत की। ''कितना सच्चा और भयंकर चित्र है यह – आराधना, याचना और विश्वास में नत एक व्यक्ति, तौभी बैर और भय से भरा हुआ विद्रोही; एक दोहरा व्यक्तित्व, स्वतंत्रता के लिए इच्छुक तौभी वासना से जकड़ा हुआ''(स्क्रिप्चर यूनियन नोट्स)।

घटनाओं का निश्चित क्रम अस्पष्ट है, परंतु निम्नांकित रूप से क्रम संभव हैं:

1. दुष्टात्मा-ग्रसित व्यक्ति ने प्रभु यीशु के प्रति आदरयुक्त भय दिखाया (पद 6)।
2. प्रभु यीशु ने उस **अशुद्ध आत्मा** को उसमें से **निकल** जाने की आज्ञा दी (पद 8)।
3. दुष्टात्मा ने, मनुष्य में से होकर बोलते हुए , इस बात को स्वीकार किया कि यीशु कौन था, उसने हस्तक्षेप करने के उसके अधिकार को चुनौती दी और पीड़ा न देने की शपथ के साथ प्रभु यीशु से बिनती की (पद 7)।
4. यीशु ने उस मनुष्य का **नाम पूछा**। उसका नाम **सेना** था, जो इस बात का संकेत देता है कि उसमें कई दुष्टात्माओं का निवास था (पद 9)। यह विदित रूप से पद 2 का विरोध नहीं करता जहां यह लिखा है कि उसमें अशुद्ध आत्मा थी (एकवचन)।
5. संभवतः यह दुष्टात्माओं का प्रतिनिधि था जिसने **सूअरों** में जाने की अनुमति मांगी (पद 10-12)।
6. अनुमति दी गई, परिणामस्वरूप सूअरों का झुण्ड जो कोई **दो हजार** का था पहाड़ से नीचे दौड़ा **और झील में डूब मरा** (पद 13)।

इन सूअरों के विनाश के लिए प्रभु की बहुधा आलोचना की जाती है। कई बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

1. उसने यह विनाश नहीं किया; उसने इसकी अनुमति दी। यह शैतान की विनाशकारी सामर्थ थी जिसने सूअरों का नाश किया।
2. ऐसा कोई भी उल्लेख नहीं है कि स्वामियों ने दोष लगाया। संभवतः वे यहूदी थे जिनके लिए सुअर पालना प्रतिबंधित था।
3. उस मनुष्य की आत्मा संसार के समस्त सूअरों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान थी।
4. यदि प्रभु यीशु जितना जानते थे हम उतना जानते, तो हम ठीक वैसा ही करते जैसा उन्होंने किया।

5:14-17 जिन्होंने सूअरों के विनाश को देखा वे वापस **नगर** की ओर दौड़े और उन्हें यह समाचार सुनाया। एक भीड़ ने लौटकर उस व्यक्ति को जिसमें पहले दुष्टात्मा थी प्रभु यीशु के चरणों में **कपड़े पहने हुए और सचेत बैठे** देखा। लोग **डर गए**। किसी ने कहा है,''जब उसने समुद्र में तूफान को शांत किया तब वे डर गए, और अब जब उसने एक मनुष्य की आत्मा में तूफान को शांत किया तब भी वे डर गए।'' देखनेवालों ने नव- आगंतुकों को पूरा हाल कह सुनाया। यह जनसाधारण के लिए आवश्यकता से अधिक था; वे प्रभु यीशु से बिनती करके कहने लगे कि **हमारी सीमा से चला जा**। सूअरों का विनाश नहीं अपितु यह इस घटना का वीभत्स भाग है। मसीह अत्याधिक महंगा अतिथि था!

''असंख्य लोग इस भय से कि मसीह की संगति उनके लिए कुछ सामाजिक या आर्थिक या व्यक्तिगत हानि उत्पन्न कर सकती है, अब भी चाहते हैं कि मसीह उनसे दूर चला जाए। अपनी संपत्ति को बचाने के प्रयास में, वे अपनी आत्माओं को खो देते हैं''(चयनित)।

5:18-20 जब प्रभु यीशु **नाव** द्वारा जाने ही वाला था, तो चंगाई पाए हुए व्यक्ति ने स्वयं को उसके साथ लेने की **विनती** की। यह एक प्रशंसनीय विनती थी, उसके नए जीवन का प्रमाण, परंतु प्रभु यीशु ने परमेश्वर की सामर्थ और करुणा के जीवित गवाह के रूप में उसे **घर** भेज दिया। उस मनुष्य ने आज्ञा मानी और **दिकापुलिस** क्षेत्र में, जिसमें दस नगर सम्मिलित थे, सुसमाचार सुनाया।

उन सबके लिए जिन्होंने परमेश्वर के उद्धारकारी अनुग्रह का अनुभव प्राप्त किया है, यह एक स्थाई क्रम है : **''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।''**

ज.असाध्य रोग को चंगा करना और मृतक को जीवित करना (5:21-43)

5:21-23 गलील की झील के पश्चिमी किनारे पर वापस आते ही प्रभु यीशु **एक बड़ी भीड़** से घिर गया। एक घबराया हुआ पिता दौड़ता हुआ उसके पास आया। यह **याईर** था, जो आराधनालय के सरदारों में से एक था। उसकी **छोटी बेटी** मरने पर थी। क्या प्रभु यीशु दया दिखाकर उसके पास जाएगा और **उस पर** अपने **हाथ** को रखेगा **कि वह चंगी** हो सके ?

5:24 प्रभु यीशु ने प्रतिक्रिया दिखाई और उसके घर की ओर चल पड़ा। एक बड़ी भीड़ उस पर गिरते हुए **उसके पीछे हो ली**। यह दिलचस्प बात है कि भीड़ के उस पर *गिरने* के कथन के तुरंत पश्चात् हम चंगाई के लिए विश्वास द्वारा उसे *छूने* का विवरण पाते हैं।

5:25-29 एक उद्विग्न **स्त्री** ने याईर के घर जाते समय प्रभु यीशु के मार्ग में बाधा डाली। हमारे प्रभु इस व्यवधान से न तो चिढ़े और न ही उपद्रव मचाए। *हम* व्यवधानों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखाते हैं?

मैं सोचता हूं कि एक व्यक्ति के द्वारा स्वयं के अनुशासन के रूप में अपने कार्य के सम्मुख जिन व्यवधानों और बाधाओं को रखने की योजना बनाई जाती है, उनको देखने के प्रयत्न में, और एक व्यक्ति को अपने कार्य के प्रति स्वार्थी बनने के विरोध में सहायता के लिए परमेश्वर द्वारा भेजी गई परीक्षाओं को देखने के प्रयत्न में, मुझे सबसे अधिक सहायता मिलती है ... जैसा कि कोई सोच सकता है, यह समय को व्यर्थ गंवाना नहीं है, यह दिन के कार्य का सबसे महत्वपूर्ण भाग है – कोई व्यक्ति इस भाग का सर्वोत्तम श्रेय परमेश्वर को ही दे सकता है। *(चॉएस ग्लीनिंग्स कैलेण्डर)*

यह स्त्री **बारह वर्ष से** चिरकालिक लहू बहने के रोग से पीड़ित थी। जिन **बहुत से वैद्यों** के पास वह गई थी उन्होंने विदित रूप से उपचार के उग्र रूपों का प्रयोग किया, और उसके रूपयों को लूटकर, उसे बेहतर करने की अपेक्षा और भी रोगी बना दिया। जब स्वस्थ होने की समस्त आशा लुप्त हो गई, तब किसी ने उसे यीशु के विषय में बताया। उसने उसे ढूंढने में कुछ भी समय व्यर्थ न गंवाया। भीड़ में अपना रास्ता बनाते हुए, उसने **उसके वस्त्र** के छोर को **छू लिया**। तुरंत खून बहना बंद हो गया और उसने पूर्ण स्वस्थता का अनुभव किया।

5:30 उसकी योजना थी, चुपचाप बचकर निकल जाना, परंतु प्रभु यीशु उस स्त्री को अपने उद्धारकर्ता को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने की आशीष से वंचित करना नहीं चाहेगा। जब उसने उसे छुआ तब बाहर निकली हुई ईश्वरीय **सामर्थ** से वह अवगत था; उसे चंगा करने की कुछ कीमत उसे चुकानी पड़ी। अत: उसने पूछा, **''मेरा वस्त्र किसने छुआ?''** उसे उत्तर मालूम था, परंतु उसने प्रश्न पूछा ताकि उसे भीड़ के सम्मुख ला सके।

5:31 उसके चेलों ने सोचा कि प्रश्न मूर्खतापूर्ण था। कई लोग उसे लगातार धक्का दे रहे थे। फिर क्यों पूछा, **''किसने मुझे छुआ?''** परंतु वास्तविक नज़दीकी के स्पर्श और अतिसाहसिक विश्वास के स्पर्श के बीच एक अंतर है। उस पर भरोसा किए बिना सदैव उसके अति समीप रहना संभव है, परंतु यह असंभव है कि कोई व्यक्ति प्रभु यीशु को विश्वास के द्वारा छुए और प्रभु को पता ही न चले (कि किसी ने उसे छुआ है) तथा उस व्यक्ति को चंगाई न मिले।

5:32,33 वह स्त्री डरती और कांपती हुई सामने आई। उसने **उसके पांवों पर गिरकर** यीशु के विषय अपने प्रथम सार्वजनिक अंगीकार को दिखाया।

5:34 तब उसने उससे आश्वासन के शब्द कहे। मसीह का सार्वजनिक अंगीकार आश्चर्यजनक महत्व का है। इसके बिना मसीही जीवन में थोड़ा सा विकास हो सकता है। जब हम उसके लिए हियाव से खड़े होते हैं, तो वह हमारी आत्माओं को विश्वास के पूर्ण आश्वासन से भर देता है। प्रभु यीशु के शब्दों ने न केवल उसकी शारीरिक चंगाई को पुष्ट किया, परंतु इसके साथ ही इसमें निःसंदेह आत्मा के उद्धार की महान आशीष भी सम्मिलित थी।

5:35–38 इस समय तक, संदेशवाहक इस समाचार के साथ पहुंच चुके थे कि याईर की **बेटी** मर चुकी थी। **गुरु** को लाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। प्रभु ने अनुग्रहपूर्वक याईर को पुनः आश्वासन दिया, तत्पश्चात् **पतरस, याकूब और यूहन्ना** को **घर** के भीतर ले गया। उनका सामना अविराम रुदन से हुआ, जो पूर्वीय देश के घरों में दु:ख के समय का अभिलक्षण है, इसमें से कुछ किराए के विलाप करने वालों से कराए जाते हैं।

5:39–42 जब यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि **लड़की मरी नहीं परंतु सो रही थी**, तो उनके आंसू ठट्ठों में बदल गए। इससे विचलित हुए बिना प्रभु यीशु परिवार के करीबी सदस्यों को अचल लड़की के पास ले गए, और उसका **हाथ पकड़कर**, अरामी भाषा में **कहा**, **''हे लड़की मैं तुझ से कहता हूं, उठ!''** तुरंत बारह वर्षीय **लड़की** उठी और **चलने फिरने लगी**। रिश्तेदार अचंभित हुए और निःसंदेह आनन्द से उन्मत हो गए।

5:43 प्रभु ने इस आश्चर्यकर्म को सार्वजनिक किए जाने से मना किया। वह जनसमूह के जनप्रिय जनघोष में रूचि नहीं रखता था। उसे दृढ़ता से क्रूस की ओर बढ़ना आवश्यक था।

यदि लड़की वास्तव में मरी थी, तो यह अध्याय दुष्टात्माओं, बीमारियों और मृत्यु के ऊपर प्रभु यीशु के अधिकार को चित्रित करता है। सभी बाइबल विज्ञ इस बात पर सहमत नहीं हैं कि वह लड़की मर गई थी। प्रभु यीशु ने कहा कि वह मरी नहीं परंतु सो रही थी। संभवत: वह एक गहरी बेहोशी में थी। वह उसे उतनी ही आसानी से मृतकों में से जिला सकता था, परंतु वह ऐसा करने का श्रेय नहीं लेगा यदि वह केवल चेतनाशून्य हुई हो।

इस अध्याय के समापन के शब्दों को हमें अनदेखा नहीं करना चाहिए : **''उसने... कहा** कि **इसे कुछ खाने को दो।''**आत्मिक सेवकाई में, यह ''अनुसरण कार्य'' (फॉलो–अप वर्क) के रूप में जाना जाता है। जिन आत्माओं ने नया जीवन के स्पन्दन को जान लिया है उन्हें भोजन देने की आवश्यकता होती है। उसकी भेड़ों को चराकर एक चेला उद्धारकर्ता के प्रति अपने प्रेम को एक तरीके से प्रगट कर सकता है।

क.सेवक का नासरत में तिरस्कार (6:1–6)

6:1–3 प्रभु यीशु और **उनके चेले** वापस नासरत आए। यह उसका **अपना देश** था, जहां उसने एक बढ़ई के रूप में काम किया था। **सब्त के दिन** उसने **आराधनालय** में उपदेश दिया। चकित लोग, उसकी शिक्षा देने की बुद्धिमत्ता या उसके आश्चर्यकर्मों की अद्‌भुतता से इंकार न कर सके। परंतु उनमें उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करने की गहरी अनिच्छा थी। उन्होंने उसे **मरियम का पुत्र**, एक **बढ़ई** ही समझा, जिसके भाई और **बहिनें** उस समय भी वहां रहते थे। यदि वह नासरत में एक सामर्थी विजेता नायक के रूप में लौटता, तो संभवत वे उसे अधिक तत्परता से ग्रहण करते। परंतु प्रभु उनके पास दीन लावण्य और नम्रता में आए। इस बात से उन्होंने **ठोकर खाई**।

6:4–6 तब प्रभु **यीशु** ने कहा कि एक **भविष्यद्वक्ता** को सामान्यत: घर से दूर एक बेहतर स्वागत मिलता है। उसके रिश्तेदार और मित्र उसके इतने समीप थे कि वे उसके व्यक्तित्व या सेवकाई की प्रशंसा नहीं कर सकते थे। ''प्रभु की सेवा के लिए घर से बढ़कर कोई कठिन जगह नहीं है।'' नासरत के लोग स्वयं तिरस्कृत लोग थे। एक सामान्य दृष्टिकोण यह था : ''क्या नासरत से कोई भली वस्तु निकल सकती है?'' तौभी इन सामाजिक बहिष्कृतों ने प्रभु यीशु को घृणा की दृष्टि से देखा। मनुष्य के हृदय के गर्व और अविश्वास पर कितनी सटीक टिप्पणी! नासरत में उद्धारकर्ता के कार्य को मुख्यत: अविश्वास ने बाधा पहुंचाई। उसने **थोड़े से बीमारों** को चंगा किया, परंतु मात्र इतना ही उसने किया। लोगों के अविश्वास ने उसे चकित किया। जे. जी. मिलर चेतावनी देते हैं:

> इस प्रकार के अविश्वास के अपरिमित दुष्परिणाम होते हैं। यह अनुग्रह और करुणा के मार्गों को ऐसे बंद कर देता है कि आवश्यकता के समय मनुष्य के जीवन में मात्र एक रिसाव ही प्रवेश करता है।[९]

पुनः प्रभु यीशु ने गलत समझे जाने और उपेक्षा के एकाकीपन को चखा। उसके कई अनुयायियों ने इस दु:ख को भोगा है। बहुधा प्रभु के सेवक अति दीन भेष में रहते हैं। क्या हम बाह्य रूप-रंग से परे देखने और सच्ची आत्मिक योग्यता को पहचानने के योग्य हैं? नासरत के द्वारा अपने तिरस्कार से अविचलित रहते हुए प्रभु **चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा।**

ल. सेवक अपने चेलों को भेजता है (6:7-13)

6:7 **बारहों** के बाहर निकलने का समय आ पहुंचा था। वे अब तक उद्धारकर्ता के अनुपम संरक्षण में थे, अब उन्हें एक महिमित संदेश के अग्रदूतों के रूप में जाना होगा। प्रभु **उन्हें दो-दो करके भेजने लगे**। इस प्रकार प्रचार की पुष्टि दो गवाहों के मुख से हो जाएगी। साथ ही एक साथ यात्रा करने में मनोबल बना रहेगा और पारस्परिक सहयोग मिलेगा। अंतत: दो लोगों की उपस्थिति संभवत: ऐसी संस्कृतियों में सहायक होगी जहां नैतिक परिस्थितियां निम्न स्तर की थीं। फिर प्रभु ने **उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया**। यह ध्यान देने योग्य है। दुष्टात्माओं को निकालना एक अलग बात है; परंतु मात्र परमेश्वर ही इस अधिकार को दूसरों को दे सकता है।

6:8 यदि हमारे प्रभु का राज्य इस संसार का होता तो वे पद 8-11 में पाए जाने वाले निर्देशों को कभी नहीं देते। ये निर्देश एक सांसारिक नेता के द्वारा दिए जाने वाले निर्देशों के ठीक विपरीत हैं। चेलों को बिना किसी प्रबंध या तैयारी के जाना था - **न तो रोटी, न झोली, न बटुए में पैसे**। उन्हें इन आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए प्रभु पर भरोसा रखना था।

6:9 उन्हें **जूतियां** पहनने और एक लाठी रखने की अनुमति थी, लाठी संभवतः जानवरों से सुरक्षा के लिए, और उन्हें मात्र एक कुरता रखना था। निश्चित रूप से किसी को भी चेलों की सम्पत्ति से ईर्ष्या नहीं होगी, और न ही कोई धनी बनने की सम्भावना के कारण मसीहत के प्रति आकर्षित होगा! और जो भी अधिकार चेलों के पास हो वह आवश्यक रूप से परमेश्वर की ओर से आना चाहिए; वे सम्पूर्णत: उस पर डाल दिए गए थे। वे अति साधारण (मितव्ययी) परिस्थितियों में भेजे गए थे, तौभी वे परमेश्वर के पुत्र की सामर्थ से सुसज्जित उसके प्रतिनिधि थे।

6:10 उन्हें कहीं पर भी मिले पहुनाई के प्रस्ताव को स्वीकार करना था, और उस स्थान को छोड़ने **तक उसी घर में ठहरे** रहना था। इस निर्देश ने बेहतर सुविधाजनक आवास के लिए उनके भटकाव को रोका। उनका मिशन था उस व्यक्ति के संदेश का प्रचार करना जिसने स्वयं को प्रसन्न नहीं किया, जो स्वार्थपरायण नहीं था। चेलों को सुख-साधन, आराम या सुविधा की तलाश में संदेश से समझौता नहीं करना था।

6:11 यदि किसी जगह चेलों का और उनके संदेश का तिरस्कार हो, तो वे वहां रहने के लिए बाध्य नहीं थे। ऐसा करना सूअरों के आगे मोती फेंकना होगा। उस स्थान को छोड़कर जाते समय चेलों को **अपने तलवों की धूल झाड़** डालना था, यह उनके प्रति परमेश्वर के तिरस्कार का प्रतीक है जो उनके प्रिय पुत्र का तिरस्कार करते हैं।

यद्यपि कुछ निर्देश अस्थाई प्रकृति के थे और कालांतर में प्रभु यीशु के द्वारा वापस ले लिए गए (लूका 22:35,36), तौभी वे प्रत्येक समयकाल (युग) में मसीह के सेवक के लिए स्थाई सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं।

6:12,13 चेलों ने **बाहर जाकर प्रचार किया** कि मन फिराओ, **और बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला, और बहुत से बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया**। हम विश्वास करते हैं कि **तेल** मलना एक प्रतीकात्मक संकेत था, जो पवित्र आत्मा के शमक और आरामदायक सामर्थ को चित्रित करता है।

म. सेवक के अग्रदूत का सिर काटा जाना (6:14-29)

6:14-16 जब यह समाचार **हेरोदेस राजा** के पास पहुंचा कि एक आश्चर्यकर्म करने वाला देश में विचरण कर रहा था, तो तुरंत उसने निष्कर्ष निकाला कि यह **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला** था... जो **मरे हुओं में से जी उठा है**। अन्य लोगों ने कहा यह **एलिय्याह** या **भविष्यद्वक्ताओं** में से, **किसी एक के समान** था, परंतु हेरोदेस को विश्वास था कि **जिस** मनुष्य का उसने **सिर कटवाया** था वह जी उठा था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला परमेश्वर की ओर से एक शब्द था। हेरोदेस ने

इस शब्द को शांत कर दिया था। अब जो हेरोदेस ने किया था उसके कारण उसके विवेक की भयानक कसक उस पर प्रहार कर रही थी। वह सीखेगा कि पापी (अपराधी) का मार्ग कठिन है।

6:17–20 वृत्तान्त अब यूहन्ना के वध के समय की ओर वापस आ जाता है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हेरोदेस को **अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी** के साथ अवैध विवाह करने के कारण फटकार लगाई थी। हेरोदियास, जो कि अब हेरोदेस की पत्नी बन चुकी थी, अतिक्रुद्ध हुई और प्रतिशोध लेने की मन्नत मानी। परंतु हेरोदेस यूहन्ना को **पवित्र पुरूष** जानकर उसका आदर करता था और हेरोदियास के प्रयत्नों को निष्फल करता था।

6:21–25 अंततः उसका अवसर आया। हेरोदेस के **जन्मदिन** समारोह में, जिसमें स्थानीय प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे, **हेरोदियास** ने अपनी **बेटी** के नृत्य का प्रबंध किया। इसने हेरोदेस को इतना **प्रसन्न किया** कि उसने लड़की को कुछ भी यहां तक कि अपने **आधे राज्य तक** देने की प्रतिज्ञा दी। अपने माता द्वारा उकसाए जाने पर, उसने **एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर** मांगा।

6:26–28 **राजा** फंस गया। अपनी इच्छा और सही न्याय के विरूद्ध उसने निवेदन को स्वीकार किया। पाप उसके चारों ओर अपना एक जाल बुन चुका था, और जागीदार राजा एक बुरी स्त्री और एक उत्तेजक नृत्य का शिकार बना।

6:29 जो कुछ हुआ था उसे **सुनकर** यूहन्ना के विश्वासयोग्य **चेले** आए और उन्होंने **उसके शव** की मांग की और उसे दफना दिया तत्पश्चात् जाकर प्रभु यीशु को बताया।

न.पांच हजार लोगों को भोजन खिलाना (6:30–44)

6:30 यह आश्चर्यकर्म उसके सार्वजनिक सेवकाई के तीसरे वर्ष के आरंभ में हुआ था और यह चारों सुसमाचार में पाया जाता है। **प्रेरितों** ने अपने प्रथम प्रचार मिशन से लौटकर अभी-अभी कफरनहूम में अपने कदम रखे थे (पद 7–13 देखिए)। वे संभवतः अपनी सफलता से उत्तेजित थे, संभवतः थके हुए और पैरों में छाले लिए हुए। उनके विश्राम और शांति की आवश्यकता को समझते हुए प्रभु यीशु उन्हें नाव के द्वारा गलील की झील के किनारे एक विश्राम स्थान में ले गया।

6:31–32 हम मसीहियों के विलासमय अवकाश को न्यायसंगत ठहराने के लिए बहुधा सुनते हैं, "**तुम आप अलग किसी स्थान में चलकर थोड़ा विश्राम करो।**" मसीही लेखक केली ने लिखा:

यह हमारे लिए अच्छा होगा यदि हमें इस प्रकार से अधिक आराम करने की आवश्यकता पड़ती; इसका तात्पर्य यह है कि यदि हमारा परिश्रम इतना भरपूर होता, दूसरों की आशीष के लिए आत्म-त्याग के हमारे प्रयत्न इतने सतत् होते, कि हमें निश्चय हो जाता कि हमारे लिए ये प्रभु के शब्द थे।[10]

6:33,34 झील के किनारे के स्थल मार्ग का उपयोग करते हुए एक भीड़ यीशु और उसके चेलों के पीछे हो ली। प्रभु **यीशु** ने उन पर **तरस** खाया। वे चारों ओर बिना किसी आत्मिक अगुवे के भूखे और सुरक्षाहीन भटक रहे थे। **और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।**

6:35,36 जब दिन ढलने लगा, तो **उसके चेले** भीड़ के कारण अधीर हो उठे– इतने सारे लोग और **खाने को** कुछ नहीं। उन्होंने प्रभु यीशु से विनती की कि वह **उन्हे विदा कर** दे। वही भीड़ जिसने उद्धारकर्ता में तरस उत्पन्न किया, चेलों को चिंतित कर रही थी। क्या लोग हमारे लिए विघ्न डालनेवाले होते हैं या वे हमारे प्रेम के पात्र हैं?

6:37,38 यीशु ने चेलों की ओर मुड़कर कहा, "**तुम ही उन्हें खाने को दो।**" सब कुछ हास्यापद प्रतीत हुआ – पांच हजार पुरूष, उसके अतिरिक्त स्त्रियां और बच्चे, और पांच रोटी तथा दो मछली को छोड़कर और कुछ नहीं – और परमेश्वर।

6:39–44 इसके बाद दिखाए गए आश्चर्यकर्म में चेलों ने यह चित्र देखा कि कैसे उद्धारकर्ता स्वयं को एक भूखे संसार के लिए जीवन की रोटी के रूप में दे देगा। उसकी देह तोड़ी जाएगी ताकि दूसरे अनन्त जीवन पाएँ। वास्तव में, जो शब्द प्रयोग किए गए वे प्रभु भोज के तीव्र सुझाव देने वाले हैं जो (भोज) प्रभु की मृत्यु का स्मरण दिलाता है : "**उसने... लिया; उसने धन्यवाद किया**, उसने तोड़ा, उसने दिया।"

चेलों ने प्रभु के लिए अपनी सेवा के विषय में भी बहुमूल्य शिक्षाएं सीखी:

1. प्रभु यीशु के चेलों को अपनी आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए प्रभु की सामर्थ पर कभी संदेह नहीं करना चाहिए। यदि प्रभु यीशु **पांच हजार पुरूष** को **पांच** रोटी **और दो मछली** से तृप्त कर सकता है, तो फिर वह उस पर भरोसा रखने वाले सेवकों के लिए किसी भी परिस्थिति में भोजन दे सकता है। वे इस बात की चिंता किए बिना कि उनका भोजन कहां से आएगा, प्रभु के लिए परिश्रम कर सकते हैं। यदि वे पहले परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करें तो सब आवश्यकताओं की आपूर्ति होगी।
2. नाश होते संसार में कैसे सुसमाचार का प्रचार किया जा सकता है? प्रभु यीशु ने कहा, "**तुम ही उन्हें खाने को दो!**" यदि हमारे पास जो कुछ भी है, उसे हम प्रभु को दे दें तो चाहे वह नगण्य प्रतीत हो, वह उन्हें आशीष देकर बहुतों के लिए बढ़ा सकता है।
3. प्रभु ने भीड़ को **सौ सौ और पचास पचास** की पांति **से** बिठाकर कार्य को एक सुव्यवस्थित विधि से किया।
4. प्रभु ने **धन्यवाद** (आशीष) देकर रोटियां और मछली तोड़ी। उसके द्वारा आशीष रहित होकर, वे कभी भी उपयोगी नहीं होते। बिना टूटे वे पूरी तरह से अपर्याप्त ठहरते।
   "हम मनुष्यों के बीच अधिक उदारता से बांटे नहीं जाते क्योंकि हम अभी तक सही रीति से तोड़े नहीं गए हैं।" (चयनित)
5. प्रभु यीशु ने स्वयं भोजन वितरित नहीं किया। उन्होंने अपने चेलों को ऐसा करने की अनुमति दी। उनकी योजना है इस संसार को अपने लोगों के द्वारा तृप्त करना (भोजन कराना)।
6. **सब** के लिए पर्याप्त भोजन था। यदि आज विश्वासी अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त सभी वस्तुओं को प्रभु के कार्य में देंगे, तो सम्पूर्ण जगत इसी पीढ़ी में सुसमाचार सुन पाएगा।
7. जो टुकड़े बच गए (बारह टोकरियां भर कर), वे उस मात्रा से अधिक थे जिनके साथ उसने प्रारम्भ किया था। परमेश्वर उदारता से देने वाला है। तौभी ध्यान देने योग्य बात यह है कि कुछ भी नष्ट नहीं हुआ। अतिरिक्त भोजनवस्तु को एकत्रित किया गया। किसी भी वस्तु को अपव्यय करना पाप है।
8. यदि चेले विश्राम करने की अपनी योजना पर चिपके (अड़े) रहते तो यह आश्चर्यकर्म जो महान आश्चर्यकर्मों में से एक है, कभी घटित नहीं हुआ होता। कितनी ही बार हमारे साथ ऐसा ही होता है!

ओ.प्रभु यीशु पानी पर चलते हैं (6: 45–52)

6: 45–50 उद्धारकर्ता न केवल अपने सेवकों को आहार दे सकता है, परंतु साथ ही उनकी सुरक्षा का भी प्रबंध कर सकता है। नाव के द्वारा चेलों को वापस झील के पश्चिमी किनारे की ओर भेजने के पश्चात्, **प्रभु यीशु पहाड़ पर प्रार्थना करने** को गया। रात के अंधियारे में, प्रभु ने उन्हें **हवा** के विरूद्ध नाव को कठिनाई से **खेते** देखा। वह **झील पर चलते हुए** उनकी सहायता के लिए आया। पहले तो वे यह सोचकर अत्यन्त डर गए कि वह एक **भूत** था। तब प्रभु ने तर्क देते हुए उनसे बात की और नाव पर अपने कदम रखे। तुरंत **हवा थम गई।**

6:51,52 वृत्तांत इस टिप्पणी के साथ समाप्त हुआ : **"वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे। वे उन रोटियों के विषय में न समझे . . . क्योंकि उनके मन कठोर हो गए थे।"** यह विचार ऐसा प्रतीत होता है कि रोटी के चमत्कार में प्रभु की सामर्थ को देखने के बाद भी वे इस बात को नहीं समझ पाए थे कि उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं था। उन्हें प्रभु को पानी पर चलते हुए देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए था। यह उस आश्चर्य से किसी भी रीति से नहीं था जिसे वे थोड़े ही समय पहले देख चुके थे। विश्वास की कमी ने हृदय की कठोरता और आत्मिक बोध की मतिमन्दता को उत्पन्न किया।

इस आश्चर्यकर्म में कलीसिया ने इस युग और इसके समापन के एक चित्र को देखा। पहाड़ पर प्रभु यीशु, स्वर्ग में अपने लोगों के लिए विनती करने की अपनी वर्तमान सेवकाई को दर्शाते हैं। चेले जीवन की आंधी और संकट

से त्रस्त प्रभु के सेवकों को दर्शाते हैं। शीघ्र ही उद्धारकर्ता अपने लोगों को खतरों और विपत्तियों से बचाने और स्वर्गीय किनारे पर सुरक्षित पहुंचाने के लिए वापस आएँगे।

प. सेवक गन्नेसरत में चंगाई प्रदान करता है (6:53-56)

झील के पश्चिमी किनारे पर पहुंचने पर, प्रभु बीमारों से घिर गया। जहां-जहां वह गया, वहां-वहां लोग आवश्यकता में पड़े हुए रोगियों को खाटों पर डालकर उसके पास ले आए। वे सिर्फ उसके इतने पास जाना चाहते थे कि उसके **वस्त्र के आंचल को छू** सकें। जितने **उसे छूते थे**, वे सब **चंगे हो जाते थे**।

क्र.परम्परा बनाम परमेश्वर का वचन (7:1-23)

7:1 फरीसी और... शास्त्री यहूदी धार्मिक अगुवे थे जिन्होंने सख्ती से लागू की गई परम्पराओं की एक वृहद व्यवस्था का निर्माण कर लिया था। ये परम्पराएं परमेश्वर की व्यवस्था के साथ इस तरह से गूंथ दिये गए थे कि इन्हें करीब-करीब पवित्रशास्त्र के साथ समान अधिकार दिया जाने लगा था। कुछ बातों में ये वास्तव में पवित्रशास्त्र के विपरीत थे या परमेश्वर की व्यवस्था को कमजोर करते थे। धार्मिक अगुवे नियमों को थोपने में, और लोगों के द्वारा वास्तविकता-रहित रीति-रिवाजों की इस व्यवस्था से संतुष्ट होकर इन नियमों को नम्रता के साथ स्वीकार करने में प्रसन्न होते थे।

7:2-4 यहां हम फरीसियों और शास्त्रियों को प्रभु यीशु की आलोचना करते हुए पाते हैं क्योंकि **उसके चेले बिना धोए हाथों से** रोटी खाते थे। इसका यह अर्थ नहीं है कि चेले खाने से पूर्व अपने हाथों को नहीं धोते थे, परंतु इसका अर्थ यह है कि वे परम्परा द्वारा सुझाए गए विस्तृत (जटिल) रीति -रिवाजों के अनुसार नहीं करते थे। उदाहरण के लिए, यदि वे कुहनी तक अपने हाथों को न धोएं, तो वे औपचारिक रूप से **अशुद्ध** समझे जाएंगे। यदि वे बाजार जाकर आए थे तो उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे औपचारिक स्नान लें। धोने की यह जटिल व्यवस्था बरतनों और कड़ाहियों को डुबोने तक भी विस्तारित थी। फरीसियों के संबंध में ई. स्टेनली जोन्स लिखते हैं :

वे लंबी यात्रा करते हुए यरूशलेम से उससे मिलने के लिए आए, और उनका दृष्टिकोण इतना नकारात्मक और दोष -ढूंढनेवाला था कि वे बिना धुले हाथों को ही देख सके। वे छुटकारे के उस महान आंदोलन को नहीं देख सके जिसने हमारे ग्रह को पहले कदाचित ही स्पर्श किया था - एक ऐसा आंदोलन जो मनुष्य की देह, प्राण और बुद्धि को शुद्ध कर रहा था... उनकी बड़ी-बड़ी आंखे छोटी और तुच्छ वस्तुओं के प्रति व्यापकता में खुली हुई थीं, और बड़ी वस्तुओं के प्रति वे अंधे बन गए थे। अत: इतिहास इन नकारात्मक व्यक्तियों को भूल जाता है - उन्हें सकारात्मक मसीह के इस संघात की पृष्ठभूमि मात्र के रूप में स्मरण किया जाता है। वे आलोचना छोड़ गए, वह उद्धार (परिवर्तन, मन-परिवर्तन) छोड़ गया। उन्होंने त्रुटियां चुनीं, उसने फूल चुने।[11]

7:5-8 प्रभु यीशु ने शीघ्रता से इस व्यवहार के ढोंग की ओर संकेत किया। ये लोग वैसे ही थे जैसे **यशायाह** ने बताया था। वे प्रभु के प्रति महान-भक्ति का अभिनय करते थे, परंतु आंतरिक रूप से भ्रष्ट थे। विस्तृत रीति-रिवाजों के द्वारा वे परमेश्वर की आराधना करने का दावा करते थे, परंतु उन्होंने बाइबल की शिक्षाओं को अपनी परम्पराओं से बदल दिया था। विश्वास और नैतिकता की समस्त बातों में परमेश्वर के वचन के एकमात्र अधिकार को स्वीकार करने के स्थान पर वे अपनी **परम्परा** द्वारा पवित्रशास्त्र की स्पष्ट मांग को टाल देते थे या फिर उस मांग से हटकर शिक्षा देते थे।

7:9,10 इस बात को दर्शाने के लिए कि कैसे **परम्परा** ने **परमेश्वर की** व्यवस्था को व्यर्थ बना दिया है, प्रभु ने एक उदाहरण दिया। दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा की यह मांग है कि बच्चे अपने माता-पिता का **आदर करें** (जिसमें माता-पिता की आवश्यकता के समय, उनके बच्चों द्वारा उनकी देखभाल करना सम्मिलित है)। जो कोई अपने **पिता वा माता** को बुरा कहे उसे **मार** डाले जाने की आज्ञा दी गई थी।

7:11-13 परंतु एक यहूदी **परम्परा** का उदय हुआ था जिसे **कुर्बान** के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है ''दिया हुआ'' या ''समर्पित।'' मान लो कोई माता-पिता बहुत आवश्यकता में थे। उनके बेटे के पास उनकी देखभाल करने के लिए धन था, परंतु वह ऐसा करना नहीं

चाहता था। उसे बस इतना कहना था, ''कुर्बान'', यह इस बात का संकेत होता कि उसका धन **परमेश्वर को** या मंदिर को समर्पित किया गया था। यह उसे भविष्य में अपने माता- पिता को सहायता करने के उसके दायित्व से मुक्त करता था। वह इस धन को कैसे भी रख सकता था और व्यवसाय में प्रयोग कर सकता था। यह महत्वपूर्ण नहीं था कि इसे कभी मंदिर को दिया गया कि नहीं। केली टिप्पणी देते हैं:

अगुवों ने धार्मिक उद्देश्यों के लिए सम्पत्ति सुरक्षित करने और परमेश्वर के वचन के विषय में विवेक द्वारा उत्पन्न सभी अशांति से लोगों को शांत करने के लिए यह योजना बनाई थी . . . यह परमेश्वर था जिसने मनुष्य को अपने माता-पिता का आदर करने की आज्ञा दी, और उनके प्रति किए गए सभी अनादर की भर्त्सना की। तौभी ये धर्म के चोले में छिपे मनुष्य थे जो परमेश्वर की इन दोनों आज्ञाओं का उल्लंघन कर रहे थे! 'कुर्बान', कहने की इस परम्परा को प्रभु न केवल माता-पिता के प्रति किए गए गलत कार्य के रूप में लिया, परंतु साथ में परमेश्वर की अभिव्यक्त आज्ञा के विरुद्ध एक विद्रोही कार्य के रूप में भी।[12]

7:14-16 पद 14 में प्रारम्भ करते हुए, प्रभु ने क्रांतिकारी घोषणा की कि जो मनुष्य के अंदर जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता (जैसे कि बिना हाथ धोए खाना) परंतु वह जो मनुष्य से बाहर आता है (जैसे कि परम्पराएं जो परमेश्वर के वचन को किनारे रख देती हैं)।

7:17-19 यहां तक कि उसके **चेलों** के लिए भी यह रहस्यमय था। पुराना नियम की शिक्षा के आधीन पले-बढ़े होने के कारण वे सदैव यही समझते थे कि कुछ निश्चित भोजन-वस्तु जैसे कि सुअर, खरगोश, और झींगी अशुद्ध थे और वे उन्हें अशुद्ध कर देंगे। प्रभु यीशु ने अब स्पष्ट रूप से कह दिया कि मनुष्य उससे अशुद्ध नहीं होता था जो उसके अंदर जाता था। एक अर्थ में, इसने विधि-विषयक युग की समाप्ति का संकेत दिया।

7:20-23 जो मनुष्य **में से निकलता है**, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है : **बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार,चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता**। संदर्भानुसार, विचार यह है कि मानवीय परम्परा को भी यहां सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। कुर्बान की परम्परा हत्या के तुल्य थी। इस दुष्ट मन्नत के तोड़े जाने से पहले ही माता-पिता भूख से मर सकते थे।

इस भाग में मुख्य शिक्षाओं में से एक शिक्षा यह है कि हमें सतत् रूप से परमेश्वर के वचन द्वारा समस्त शिक्षाओं और परम्पराओं को परखना चाहिए, जो परमेश्वर का है उसे मानना चाहिए और जो मनुष्य का है उसका तिरस्कार करना चाहिए। प्रारंभ में एक व्यक्ति पवित्रशास्त्र सम्मत एक स्पष्ट संदेश की शिक्षा देकर और प्रचार करके बाइबल पर विश्वास करने वाले लोगों के मध्य स्वीकार्यता प्राप्त कर सकता है। इस स्वीकार्यता को प्राप्त करने के पश्चात् वह कुछ मानवीय शिक्षाओं को जोड़ना प्रारंभ करता है। उसके समर्पित (भक्त) अनुयायी जो यह मान चुके हैं कि वह कोई गलती नहीं कर सकता, उसका पीछा अंधे के समान करते हैं, फिर चाहे उसका संदेश वचन के तीक्ष्ण धार को कुंद करे या इसके स्पष्ट संदेश की स्पष्टता को कम कर दे।

इसी प्रकार से शास्त्रियों और फरीसियों ने वचन के शिक्षकों के रूप में अधिकार प्राप्त किया था। परंतु अब वे वचन के अभिप्राय को निष्प्रभावित कर रहे थे। प्रभु यीशु को लोगों को यह चेतावनी देनी पड़ी कि यह वचन है जो मनुष्य को मान्यता दिलाता है (प्रामाणिक ठहराता है), न कि मनुष्य वचन को। सदैव सबसे बड़ी कसौटी यह होनी चाहिए, ''वचन क्या कहता है?''

र. एक अन्यजाति स्त्री को उसके विश्वास के कारण आशीष (7:24,25)

पूर्ववर्ती घटना में यीशु ने दिखाया कि समस्त भोजनवस्तुएं शुद्ध हैं। यहां वह प्रदर्शित करता है कि अन्यजाति अब साधारण या अशुद्ध नहीं रहे। यीशु ने उत्तर-पश्चिम दिशा में अब **सूर और सैदा के देशों** की ओर जो सूरफिनीके भी कहलाता है, यात्रा की। उसने गुप्त रूप से **एक घर** में प्रवेश करने का प्रयत्न किया, परंतु उसकी ख्याति उससे पहले वहां पहुंच चुकी थी और उसकी उपस्थिति शीघ्र ही ज्ञात को गई। एक अन्यजाति **स्त्री** अपनी दुष्टात्मा-ग्रसित **बेटी** के लिये

उससे सहायता मांगने को उसके पास आई।

7:26 हम इस तथ्य पर जोर देते हैं कि वह एक यूनानी स्त्री थी, यहूदी नहीं। यहूदी लोग, जो परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, परमेश्वर के साथ एक सुस्पष्ट विशेषाधिकार का स्थान रखते थे। उसने उनके साथ अद्भुत वाचाएं बांधी थी, पवित्रशास्त्र उन्हें सौंपा गया था, और उनके साथ पहले तम्बू में और तत्पश्चात् मंदिर में निवास किया। इसके विपरीत अन्यजाति लोग इस्राएल राष्ट्र से असंबद्ध परदेशी, प्रतिज्ञा की वाचाओं से अपरिचित, बिना मसीह के आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे (इफि. 2:11,12)। प्रभु यीशु मुख्य रूप से इस्राएल राष्ट्र के लिए आया था। उसने स्वयं को उस राष्ट्र के राजा के रूप में प्रस्तुत किया। सुसमाचार सर्वप्रथम इस्राएल के घराने को प्रचार किया गया। इसे समझना आवश्यक है ताकि **सुरुफिनीकी जाति** की स्त्री के साथ उसके व्यवहार को समझा जा सके। जब **उसने उससे विनती की कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे**, तो वह उसे झिड़कता हुआ प्रतीत हुआ।

7:27 **उसने कहा** कि **पहले लड़कों** (इस्राएलियों) को तृप्त होना चाहिए और यह भी कहा कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों (अन्यजाति) के आगे डालना उचित नहीं था। उसके उत्तर में अस्वीकृति नहीं थी। उसने कहा,**''पहले लड़कों को तृप्त होने दे।''** सुनने में यह कठोर लग सकता है। वास्तव में यह उसके पश्चाताप् और विश्वास की एक परख थी। उस समय उसकी सेवकाई मुख्यत: यहूदियों की ओर निर्देशित थी। एक अन्यजाति के रूप में उस स्त्री का प्रभु यीशु पर या उसकी आशीषों पर कोई अधिकार नहीं था। क्या वह इस सत्य को स्वीकार करेगी?

7: 28 उसने, ''**सच है प्रभु** कहते हुए वास्तव में ऐसा किया। मैं केवल एक अन्यजाति कुत्ता हूं। परंतु मैं ध्यान देती हूं कि कुत्तों के बच्चों (पिल्लों) के पास भी **रोटी** के **चूर-चार** जिसे बालक **मेज के नीचे** गिरा देते हैं खाने का एक साधन (उपाय) है। बस इसी के लिए मैं विनती करती हूं – यहूदियों के प्रति आपकी सेवकाई से बचा हुआ कुछ चूर-चार!''

7:29,30 यह विश्वास अविस्मरणीय था। प्रभु ने पास जाए बिना ही लड़की को चंगा करके इस विश्वास को तुरंत पुरस्कृत किया। जब स्त्री घर गई, तो उसकी **बेटी** पूरी तरह से ठीक थी।

स.बहिरा-हकला का चंगा किया जाना (7:31-37)

7: 31,32 भूमध्यसागर के किनारे से हमारा प्रभु **गलील की झील** के पूर्वी किनारे पर पहुंचा – यह क्षेत्र **दिकापुलिस** नाम से जाना जाता था। वहां एक घटना घटित हुई जिसका वर्णन केवल मरकुस के सुसमाचार में ही पाया जाता है। शुभ-चिंतक मित्र **एक बहिरे को जो हकला भी था उसके पास** लेकर आए। संभवत: वह किसी शारीरिक विकृति के कारण **हकला** बन गया था या फिर इस तथ्य के कारण, कि कभी भी शब्दों को स्पष्टत: न सुन पाने के कारण वह उन शब्दों को ठीक रीति से पुनरुत्पादित नहीं कर सका। किसी भी हाल में, वह एक पापी को चित्रित करता है, परमेश्वर की आवाज के प्रति बहरा और इसलिए उसे दूसरों को बताने में असमर्थ।

7:33,34 प्रभु यीशु पहले उस मनुष्य को अकेले **अलग ले गए। अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूककर उसकी** जीभ को **छुआ**, इस प्रकार एक सांकेतिक भाषा के रूप में उस मनुष्य से कहा कि वह उसके कानों को खोलने और उसके जीभ को बंधमुक्त करने पर था। फिर प्रभु यीशु ने इस बात का संकेत देते हुए कि उसकी सामर्थ परमेश्वर की ओर से थी, **स्वर्ग की ओर** देखा। उसकी आह पाप के द्वारा मनुष्य जाति पर लाई गई विपत्ति के ऊपर उसके दु:ख को अभिव्यक्त करती है। अंतत: उसने कहा,**''इप्फत्तह''**, **''खुल जा''** के लिए अरामी भाषा का शब्द।

7:35,36 उस मनुष्य ने तुरंत सामान्य रूप से बोलने और सुनने की शक्ति पा ली। प्रभु ने लोगों से इस आश्चर्यकर्म को सार्वजनिक नहीं करने के लिए कहा, परंतु उन्होंने उसके निर्देशों की उपेक्षा की। अनाज्ञाकारिता को कभी भी न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता, चाहे वे लोग कितने ही नेकनीयत क्यों न हों।

7:37 देखनेवाले प्रभु यीशु के अद्भुत कार्यों से चकित रह गए। उन्होंने कहा, **''उसने जो कुछ किया**

पाँच हजार	*चार हजार*
1. यहाँ पर लोग यहूदी थे (यूहन्ना 6:14,15 देखिए)।	1. यहाँ पर लोग संभवत: अन्यजाति थे (ये दिकापुलिस में रहते थे)।
2. भीड़ प्रभु यीशु के साथ एक दिन ही थी (6:35)।	2. यह भीड़ प्रभु यीशु के साथ तीन दिनों से थी (8:2)।
3. प्रभु यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों का इस्तेमाल किया (मत्ती 14:17)।	3. यहाँ पर उसने सात रोटियों तथा थोड़ी सी छोटी मछलियों का इस्तेमाल किया (8:5,7)।
4. पाँच हजार पुरूषों के अलावा, स्त्रियों और बच्चों को भी भोजन खिलाया गया (मत्ती 14:21)।	4. चार हजार पुरूषों के अलावा, स्त्रियों और बच्चों को भी भोजन खिलाया गया (मत्ती 15:38)।
5. बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह बड़ी टोकरियाँ उठाई गईं (मत्ती 14:20)।	5. शेष टुकड़ों के सात छोटे टोकरे भरकर उठाए (8:8)।

सब अच्छा किया है, वह बहिरों को सुनने की, और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है।'' जो उन्होंने कहा उसके सत्य को वे नहीं जानते थे। यदि वे क्रूस के इस ओर रहते तो वे इसे और गहरे विश्वास और अनुभूति के साथ कह सकते थे।

> ''और हमारी आत्मा ने उसके प्रेम को जान लिया है
> उसने अपनी दया हम पर सिद्ध की है,
> दया जो हमारी सब स्तुति से बढ़कर;
> हमारे यीशु ने की है सब कुछ हितकर।''
>
> – *सैमुएल मेडली*

त.चार हजार लोगों को भोजन खिलाना (8:1–10)

8:1–9 यह आश्चर्यकर्म पांच हजार लोगों को खिलाने के आश्चर्यकर्म के साथ समानता दिखाता है, तौभी ऊपर दर्शाए गए तालिका में भिन्नताओं पर ध्यान दीजिए।

यीशु के पास कार्य करने के लिए जितनी कम मात्रा थी, उसने उतना ही अधिक किया और बची हुई सामग्री की मात्रा भी उसने बढ़ा दी। अध्याय 7 में, हमने मेज में से एक अन्यजाति स्त्री के लिए गिरते चूर–चार को देखा। यहां अन्यजातियों की एक भीड़ भरपूरी से तृप्त की गई। अर्डमेन ने टिप्पणी की है :

> इस अवधि में प्रथम आश्चर्यकर्म ने यह संकेत दिया कि आवश्यकता में पड़े हुए अन्यजातियों के लिए मेज में से रोटी का चूर–चार गिर सकता है; यहां ये इस बात का संकेत हो सकते हैं कि अपने लोगों के द्वारा तिरस्कृत यीशु को संसार के लिए अपना प्राण देना है, और सब राष्ट्रों के लिए जीवित रोटी बनना है।[13]

चार हजार लोगों को भोजन खिलाने जैसी घटनाओं को महत्वहीन दुहराव समझने में जोखिम की संभावना है। हमें इस विश्वास के साथ बाइबल अध्ययन करना चाहिए कि चाहे हम अपनी समझ की वर्तमान अवस्था में देख न पाएं, तौभी पवित्रशास्त्र के प्रत्येक शब्द आत्मिक सत्य से भरपूर हैं।

8:10 प्रभु यीशु **अपने चेलों** के साथ नाव पर चढ़कर दिकापुलिस से गलील की झील के पश्चिमी किनारे को गया, जो **दलमनूता** कहलाता है (मत्ती 15:39 में 'मगदाला')।

य.फरीसियों द्वारा स्वर्गीय चिन्ह की मांग (8:11–13)

8:11 फरीसी उसकी प्रतीक्षा में थे, उन्होंने उससे **कोई स्वर्गीय चिन्ह** मांगा। उनका अंधापन और ढिठाई भयानक (विशाल) थी। उनके सम्मुख समस्त चिन्हों से बढ़ा चिन्ह – स्वयं प्रभु यीशु मसीह खड़े थे। वे वास्तव में

चिन्ह थे जो स्वर्ग से आए थे, परंतु उसके लिए उन लोगों के मन में कोई प्रशंसा नहीं थी। उन्होंने प्रभु के अद्वितीय वचन सुने, उसके अद्‌भुत आश्चर्यकर्म देखे, एक सम्पूर्ण निष्पाप व्यक्ति – देह में प्रकट परमेश्वर के सम्पर्क में आए – तौभी उन्होंने अपने अंधेपन में **कोई स्वर्गीय चिन्ह** की मांग की!

8:12,13 इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उद्धारकर्ता ने **आत्मा में आह भर कर कहा**! यदि संसार के इतिहास में कोई वंश विशिष्ठ था, तो वह वंश था यहूदी वंश, फरीसी लोग जिसके एक भाग थे। तौभी इस सुस्पष्ट प्रमाण के प्रति अंधे होकर कि मसीहा प्रकट हो चुका था, उन्होंने धरती पर चिन्ह के स्थान पर स्वर्ग में चिन्ह की मांग की। यीशु कह रहे थे, "अब और चिन्ह नहीं दिया जाएगा, तुम्हारा अवसर समाप्त हो चुका है।" **फिर नाव पर** चढ़कर वे पूर्व-दिशा की ओर चल दिए।

व.फरीसियों और हेरोदेस का खमीर (8:14-21)

8:14,15 यात्रा के समय चेले रोटी लेना भूल गए थे। तथापि, जब प्रभु ने उन्हें **फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर** के विरुद्ध चितौनी दी, तब भी वे फरीसियों के साथ अपनी भिड़ंत पर विचार कर रहे थे। बाइबल में खमीर बुराई का एक सुसंगत रूप है, जो धीमी गति से और शांतिमय रीति से फैलता है और जिस किसी भी वस्तु को यह स्पर्श करता है उसे प्रभावित करता है। **फरीसियों के खमीर** में ढोंग, रीतिवाद, आत्म-घोषित धार्मिकता और कट्टरता सम्मिलित थे। फरीसी पवित्रता के बड़े-बड़े बाह्य दिखावा करते थे, परंतु आंतरिक रूप से भ्रष्ट और अपवित्र थे। **हेरोदेस के खमीर** में सम्भवत: संशयवाद,अनैतिकता और सांसारिकता सम्मिलित थे। हेरोदी इन पापों के लिए कुख्यात थे।

8:16-21 चेले पूरी तरह से चूक गए। वे मात्र भोजन के विषय में ही सोच सके। अतः प्रभु ने उनसे नौ त्वरित प्रश्न पूछे। प्रथम पांच प्रश्नों ने उनकी मंदबुद्धिता के लिए उन्हें उलाहना दी। अंतिम चार प्रश्नों ने जब प्रभु उनके साथ था, तब उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनकी चिंता के विषय में उन्हें फटकार लगाई। क्या उसने **पांच** रोटी से **पांच हजार** को नहीं खिलाया था, और **बारह टोकरियां** शेष रह गई थीं? हां, क्या प्रभु ने **चार हजार** को **सात** रोटियों से तृप्त नहीं किया था, और **सात** टोकरे शेष रह गए थे? हां उसने खिलाया था।

तब फिर वे क्यों नहीं समझ पाए कि वह एक नाव में सवार मुट्ठी भर चेलों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए बहुतायत से योग्य था। क्या वे नहीं समझे थे कि संसार का सृष्टिकर्ता और संभालनेवाला उनके साथ नाव में था।

ड. बैतसैदा में एक अंधे को चंगा करना (8:22-26)

यह आश्चर्यकर्म जो केवल मरकुस में पाया जाता है, कई प्रश्नों को उत्पन्न करता है। सबसे पहले तो यह कि, उसे चंगा करने से पहले प्रभु यीशु उसे **गांव के बाहर** क्यों ले गया?क्यों उसने उस व्यक्ति को केवल छूकर चंगा नहीं किया? क्यों थूक के जैसे रूढ़ीविरोधी साधन का प्रयोग किया? क्यों उस व्यक्ति ने तुरंत दृष्टि प्राप्त नहीं की?[14] (सुसमाचारों में यही एकमात्र चंगाई है जो चरण दर चरण प्राप्त हुई)। अंततः, क्यों प्रभु यीशु ने उस व्यक्ति को आश्चर्यकर्म को **गांव** में बताने से मना किया? हमारा प्रभु सर्वसत्ताक है और अपने कार्यों का लेखा हमें देने के लिए बाध्य नहीं है। उसने जो कुछ किया उसके लिए एक वैध कारण था, यद्यपि हम संभवतः उसे समझ न पाएं। चंगाई की प्रत्येक घटना भिन्न है, जैसे कि उद्धार की घटना। कुछ लोग उद्धार पाते ही अविस्मरणीय आत्मिक दृष्टि को पाते हैं। अन्य, पहले तो धुंधला देखते हैं, तत्पश्चात् उद्धार के पूर्ण आश्वासन में प्रवेश करते हैं।

एक्स.पतरस का महान अंगीकार (8:27-30)

इस अध्याय के अंतिम दो अनुच्छेद हमें बारह चेलों के प्रशिक्षण के उच्च जल-स्तर चिन्ह तक पहुंचाते हैं। इससे पहले कि यीशु चेलों के साथ आगे की राह को बांट सके और उन्हें भक्ति और बलिदान के जीवन में अपना पीछा करने के लिए आमंत्रित कर सके, चेलों को यह जानना आवश्यक था कि यीशु कौन है, इस विषय में वे एक गहन और व्यक्तिगत बोध को पा लें। यह भाग शिष्यता के हृदय को हम तक पहुंचाता है। संभवतः यह आज मसीही विचार और अभ्यास में सबसे अधिक तिरस्कृत क्षेत्र है।

8:27,28 प्रभु यीशु और उसके चेले सुदूर उत्तर में एकान्त स्थान को गए। **कैसरिया फिलिप्पी** के मार्ग पर प्रभु ने यह पूछते हुए विषय खोला कि उसके विषय में लोगों की क्या राय थी? आम तौर पर, मनुष्य उसे **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, एलिय्याह, या भविष्यद्वक्ताओं** में से एक के समान एक महान व्यक्ति स्वीकारते थे। परंतु मनुष्य का आदर वास्तव में अनादर था। यदि यीशु परमेश्वर नहीं है, तो फिर वह एक धोखा देने वाला, एक पागल, या एक किवदंती है। इनके अलावा, और कोई संभावना नहीं है।

8: 29,30 तब प्रभु ने सुस्पष्ट रीति से चेलों से उसके विषय में उनके मूल्यांकन को पूछा। **पतरस** ने अविलंब उसे **मसीह** अर्थात् अभिषिक्त घोषित किया। बौद्धिक रूप से पतरस यह जान चुका था। परंतु उसके जीवन में कुछ हुआ था जिसके कारण अब उसके हृदय में एक गहन व्यक्तिगत विश्वास था। जीवन अब पुन: पूर्ववत नहीं हो सकता था। पतरस आत्मकेंद्रित अस्तित्व से कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकता। यदि यीशु ख्रीष्ट मसीह था तो पतरस को उसके लिए पूर्ण त्याग में जीना अवश्य था।

य.सेवक अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी करता है (8:31-38)

अब तक हमने यहोवा के सेवक को दूसरों की अनवरत सेवा के जीवन में देखा। हमने उसे शत्रुओं द्वारा घृणा किए जाते और मित्रों द्वारा गलत समझे जाते हुए देखा। हमने गतिशील सामर्थ, नैतिक सिद्धता, उत्कृष्ट प्रेम और दीनता के जीवन को देखा।

8:31 परंतु परमेश्वर की सेवा का मार्ग दु:ख और मृत्यु को ले जाता है। अत: उद्धारकर्त्ता ने अब चेलों से स्पष्ट रूप से कह दिया कि **अवश्य** था कि वह (1) **दु:ख उठाए**; (2) तुच्छ समझा जाए; (3) मार डाला जाए; (4) **जी उठे**। उसके लिए महिमा का पथ पहले क्रूस और कब्र को ले जाएगा। ''सेवा का हृदय बलिदान में प्रकाशित होगा'', जैसा कि एफ.डब्ल्यू. ग्रान्ट ने लिखा।

8:32,33 पतरस; इस विचार को ग्रहण नहीं कर पाया कि यीशु को दु:ख उठाना और मरना होगा; यह मसीह की उसकी छवि के विपरीत था। न ही वह यह सोचना चाहता था कि उसका प्रभु और मालिक अपने शत्रुओं के द्वारा घात किया जाए। ऐसी बात का सुझाव देने के कारण उसने उद्धारकर्त्ता को डांटा। तब प्रभु यीशु ने पतरस से कहा, **''हे शैतान मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परंतु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।''**

ऐसी बात नहीं थी कि प्रभु यीशु पतरस पर शैतान होने का, या उसे शैतान द्वारा अन्तर्निवासित होने का दोष लगा रहा था। उसका आशय था,'' तुम वैसी बात कर रहे हो जैसी बात शैतान करता है। वह सदैव हमें परमेश्वर की आज्ञा पूरी तरह से मानने से हतोत्साहित करने का प्रयास करता है। वह सिंहासन की ओर एक आसान मार्ग चुनने के लिए हमें लुभाता है (हमारी परीक्षा लेता है)।'' पतरस के शब्द उद्‌गम और विषय-वस्तु में शैतानी थे, और यह प्रभु के क्रोध का कारण बना। केली टिप्पणी करते है:

> यह क्या था जिसने हमारे प्रभु को इतना उत्तेजित कर दिया? वही फन्दा जिसके प्रति हम सब अति अनावृत हैं : स्वयं को बचाने की इच्छा; क्रूस की ओर आसान राह की अभिरूचि। क्या यह सही नहीं है कि हम स्वाभावत: परीक्षा, लज्जा और तिरस्कार से बचना पसंद करते हैं? क्या सही नहीं है कि हम उन दुखों से झिझकते हैं, जो इस प्रकार के एक संसार में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने पर, आवश्यक रूप से सदैव जुड़े रहते हैं? क्या यह सही नहीं है कि हम इस धरती में एक शांत और आदरमय पथ को वरीयता देते हैं - संक्षिप्त में कहें तो, दोनों जहान (दुनिया) की सर्वोत्तम वस्तुओं को? कितनी आसानी से कोई भी इसमें फंस सकता है! पतरस यह नहीं समझ सका कि मसीह को क्यों इस दु:ख के पथ से जाना होगा। यदि हम वहां होते तो संभवत हम उससे भी बुरा कहते या सोचते। पतरस की आपत्ति तीव्र मानवीय स्नेह के बिना नहीं थी। वह उद्धारकर्ता से हृदय से प्रेम करता था। परंतु स्वयं से अज्ञात, उसके अंदर संसार की एक अदण्डित आत्मा थी।[15]

ध्यान दीजिए कि पहले यीशु ने **अपने चेलों की ओर देखा**, तत्पश्चात् पतरस को झिड़का, मानो वह कहना चाहता था, ''यदि मैं क्रूस पर न जाऊं, तो इन्हें अर्थात् मेरे चेलों को कौन बचाएगा?''

8:34 तब यीशु ने वस्तुत: **उनसे कहा,** ''मैं दु:ख उठाने और मरने जा रहा हूं ताकि लोग बच जाएं। यदि तुम **मेरे पीछे आना** चाहते हो, तो तुम्हें अवश्य प्रत्येक स्वार्थी

अन्त: प्रेरणा का त्याग करके, विचार विमर्श पूर्वक (जान–बूझकर) निन्दा, दु:ख और मृत्यु के पथ को चुनकर, **मेरे पीछे हो** लेना चाहिए। तुम्हे संभवत: व्यक्तिगत सुख–सुविधा, सामाजिक आनन्द, सांसारिक आनन्द, सांसारिक बन्ध, महान अभिलाषाएं, भौतिक धन–सम्पदा, और यहां तक कि स्वयं जीवन को त्यागना पड़ सकता है।'' इस प्रकार के शब्द हमें अचंभित करते हैं कि हम वास्तव में कैसे विश्वास कर सकते हैं कि हमारे लिए विलासिता और सुगमता में जीना पूर्णत: सही है। हम भौतिकवाद, स्वार्थ और अपने हृदयों के ठण्डेपन को कैसे न्यायोचित ठहरा सकते हैं। प्रभु के शब्द हमें आत्म–त्याग, समर्पण, दु:ख और बलिदान के जीवन के लिए आमंत्रित करते हैं।

8:35 अपना **प्राण** बचाने की परीक्षा सदैव बनी रहती है – आराम से रहने की, भविष्य के लिए प्रबंध करने की, अपने स्वयं की पसंद निर्धारित करने की, समस्त बातों में स्वयं को केन्द्र के रूप में रखने की। अपना प्राण खोने का कोई निश्चित तरीका नहीं हैं। मसीह यीशु हमें हमारे आत्मा, प्राण और देह को उसे समर्पित करते हुए हमारे जीवन को उसके लिए और सुसमाचार के लिए उण्डेलने हेतु बुलाते हैं। वे हमसे समस्त संसार में सुसमाचार प्रचार करने की अपनी पवित्र सेवकाई में खर्च करने और खर्च हो जाने को कहते हैं, यदि आवश्यक हो तो अपने जीवन को देकर। अपने प्राण को खोने का यही अर्थ है। उन्हें बचाने का और कोई निश्चित तरीका नहीं है।

8:36,37 यदि एक विश्वासी भी अपने जीवनकाल में संसार की समस्त धन–सम्पत्ति को प्राप्त करे, तो यह उसका क्या भला कर पाएगी? वह अपने जीवन को परमेश्वर की महिमा और खोए हुओं के उद्धार के लिए प्रयोग किए जाने के अवसरों को खो चुका होगा। यह एक खराब सौदा होगा। हम उनका प्रयोग मसीह के लिए करेंगे या स्वयं के लिए?

8:38 हमारे प्रभु ने महसूस किया कि उसके युवा चेलों में से कुछ लज्जा के भय के कारण शिष्यता की राह में ठोकर खा सकते हैं। अत: उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि जो उसके कारण होने वाली निन्दा से बचने का प्रयत्न करते हैं वे उस समय कहीं अधिक लज्जा से ढंप जाएंगे, जब वह धरती पर सामर्थ के साथ वापस आएगा, इस बार दीनता में नही,परंतु अपनी व्यक्तिगत महिमा में और अपने पिता की महिमा में, पवित्र स्वर्गदूतों के संग। यह चकाचौंध कर देने वाले वैभव का समय होगा। तब वह उनसे लजाएगा जो अभी उसके कारण लजाते हैं। प्रभु के शब्द, ''**इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझसे...लजाएगा**'' हमारे हृदयों से बातें करे। एक ऐसे संसार में जिसकी विशेषता अविश्वासयोग्यता और पापमयता है, निष्पाप उद्धारकर्ता से लजाना कितना बेतुका (असंगत) है।

IV. सेवक की यरूशलेम यात्रा (अध्याय 9,10)

अ. सेवक का रूपान्तरण (9:1–13)

चेलों के सम्मुख निन्दा, दु:ख और मृत्यु के उस पथ को रखने पश्चात् जिस पर वह चलने वाला था, और उन्हें बलिदान और आत्म–त्याग के जीवन में अपना पीछा करने के लिए आमंत्रित करने के पश्चात्, अब प्रभु यीशु चित्र के दूसरे पहलू को दिखाता है। यद्यपि शिष्यता उन्हें इस जीवन में महंगी पड़ेगी, तौभी बाद में इसे महिमा के साथ (या महिमा से) पुरस्कृत किया जाएगा।

9:1–7 प्रभु ने यह कहते हुए प्रारंभ किया कि चेलों में से **कोई–कोई तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे, जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें**। वे **पतरस और याकूब सहित यूहन्ना** की ओर संकेत कर रहे थे। रूपान्तरण के पहाड़ पर उन्होंने **परमेश्वर के राज्य** को **सामर्थ** में देखा। इस भाग का तर्क यह है कि अभी हम जो कुछ भी मसीह के लिए सहते हैं, उन सबका बदला उसके दोबारा आगमन पर भरपूरी से मिलेगा, और उसके सेवक उसके साथ महिमा में प्रकट होंगे। पहाड़ पर जो परिस्थितियां प्रबल थीं, वे सहस्त्राब्दिक राज्य की पूर्वछाया हैं।

1. यीशु का **रूप बदल गया** – चकाचौंध करने वाली महिमा उसके शरीर(व्यक्तित्व) से निकली। यहां तक कि उसके **वस्त्र** भी **चमकने** लगे, वे अति उज्ज्वल, यहां तक कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता।

   अपने प्रथम आगमन के समय, मसीह की महिमा पर परदा पड़ा था। वह दीनता में आया, एक दुखी पुरुष, और ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसकी

रोगों से जान-पहचान थी। परंतु वह महिमा में वापस आएगा। तब उसे समझने में किसी से भी चूक नहीं होगी। वह दृश्यमान रूप से राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होगा।

2. वहां **एलिय्याह** और **मूसा** थे। वे इनका प्रतिनिधित्व कर रहे थे : (अ) पुराना नियम संत, या (ब) व्यवस्था (मूसा) और भविष्यद्वक्ता (एलिय्याह), या (स) वे संत जो मर चुके हैं और जो उठा लिए गए हैं।
3. **वहां पतरस और याकूब और यूहन्ना** थे। संभवत वे सामान्य रूप में नया नियम संत जनों का प्रतिनिधित्व करते हैं या उनका जो राज्य की स्थापना के समय जीवित रहेंगे।
4. **प्रभु यीशु** सर्वप्रमुख व्यक्ति था। **तीन मण्डप** बनाने के पतरस के सुझाव को **बादल** और स्वर्ग से **शब्द** के द्वारा फटकार लगाई गई। सब बातों में मसीह की सर्वश्रेष्ठता होनी चाहिए। वह इम्मानुएल के देश की महिमा होगा।
5. बादल संभवत: शेकेना या महिमा का बादल हो सकता है जो पुराना नियम समय काल में मिलापवाले तम्बू और मन्दिर के परम-पवित्र स्थान में रहता था। यह परमेश्वर की उपस्थिति की दृश्यमान अभिव्यक्ति थी।
6. **शब्द,** परमेश्वर पिता के शब्द थे, जिसके द्वारा उसने मसीह को अपने **प्रिय पुत्र** के रूप में स्वीकार किया।

9:8 जब बादल हटा तो चेलों ने **यीशु को छोड़ और किसी को न देखा**। यह उस अद्वितीय, महिमित और सर्वश्रेष्ठ स्थान का एक चित्र था जो प्रभु को तब प्राप्त होगा जब राज्य सामर्थ में आएगा, और इस वर्तमान समय में जो स्थान उन्हें अपने अनुयायियों के हृदय में मिलना चाहिए।

9:9,10 पहाड़ से उतरते समय उसने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उन्होंने **देखा** उसे तब तक किसी से न कहें, जब तक वह **मरे हुओं में से जी न उठे**। इस अंतिम विचार ने उलझन में डाल दिया। संभवत: वे अब तक न समझे थे कि प्रभु यीशु को घात होना और पुन: जी उठना था। वे **मरे हुओं में से जी उठने** वाले वाक्यांश पर आश्चर्यचकित थे। यहूदी होने के कारण वे इस सत्य से परिचित थे कि सब जी उठेंगे। परंतु प्रभु यीशु एक विशेष पुनरुत्थान की बात कर रहा था। प्रभु मृतकों में से जी उठेगा - जब वह जी उठेगा, तब उस समय सब नहीं जी उठेंगे। यह एक ऐसा सत्य है जो मात्र नया नियम में पाया जाता है।

9:11 चेलों के साथ एक और समस्या थी। उन्होंने थोड़ी देर पहले ही राज्य के पूर्वदर्शन को प्राप्त किया था। परंतु क्या मलाकी ने भविष्यद्वाणी नहीं की थी कि सब वस्तुओं के बहाली का प्रारंभ करने और मसीह के सार्वभौमिक राज्य की स्थापना हेतु मार्ग तैयार करने के लिये मसीह के अग्रदूत के रूप में **एलिय्याह का पहले आना अवश्य है** (मला.4:5)? एलिय्याह कहां था? क्या वह **पहले** आएगा, जैसे कि शास्त्री कहते थे कि वह आएगा?

9:12,13 प्रभु यीशु ने वस्तुत: उत्तर दिया, "**सचमुच** यह सच है कि **एलिय्याह पहले** आएगा। परंतु इससे अधिक महत्वपूर्ण और तात्कालिक प्रश्न यह था कि : क्या पुराना नियम पवित्रशास्त्र भविष्यद्वाणी नहीं करता है कि **मनुष्य के पुत्र** को बहुत दु:ख उठाना होगा और वह **तुच्छ** समझा जाएगा? जहां तक एलिय्याह की बात है, **एलिय्याह आ चुका** था (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के व्यक्तित्व और सेवकाई में), परंतु मनुष्यों ने उससे मनचाहा व्यवहार किया - जैसे मनुष्यों ने एलिय्याह के साथ व्यवहार किया था, ठीक वैसे ही। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की मृत्यु उस कार्य का अग्रिम चिन्ह था, जिसे वे मनुष्य के पुत्र के साथ करने वाले थे। उन्होंने अग्रदूत का तिरस्कार किया; वे राजा का तिरस्कार करेंगे।"

ब. दुष्टात्माग्रसित बालक को चंगा करना (9:14-29)

9:14-16 चेलों को महिमा के पर्वत-शिखर पर बने रहने की अनुमति नहीं थी। नीचे घाटी में कराहती और सिसकती मनुष्य जाति थी। आवश्यकता का संसार उनके पैरों पर था। जब प्रभु यीशु और उसके तीन चेले पहाड़ के तल पर पहुंचे तो वहां **शास्त्री**, भीड़ और अन्य **चेले** एक जोशपूर्ण विवाद में लगे हुए थे। जैसे ही प्रभु प्रगट हुआ, बातचीत भंग हो गई और भीड़ उसकी ओर दौड़ी। उसने पूछा, "**तुम मेरे चेलों से क्या विवाद कर रहे हो?**"

9:17,18 एक उद्विग्न पिता ने उत्तर में प्रभु को क्षोभपूर्वक अपने **पुत्र** के विषय में बताया जिसमें एक **गूंगी दुष्टात्मा** थी। दुष्टात्मा बच्चे को भूमि पर पटक देती थी, और उसके कारण वह **दांत पीसता** और **मुंह में** फेन भरता था। ये हिंसक ऐंठन उस बच्चे को दुर्बल कर देते थे। पिता ने चेलों से सहायता मांगी थी, **परंतु वे** उस दुटात्मा को **निकाल न सके**।

9:19 यीशु ने चेलों को उनके अविश्वास के कारण झिड़का। क्या वह उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार नहीं दे चुका था? इससे पहले कि वे उस अधिकार को जो उन्हें दिया जा चुका था प्रयोग में लाएं, उसे **कब तक** उनके साथ रहना होगा? उसे **कब तक** सामर्थहीनता और पराजय के जीवन को सहना होगा?

9:20–23 जब **वे** उस बच्चे को प्रभु के पास **लाए,** तब दुष्टात्मा ने एक विशेष गंभीर मिरगी अभिप्रेरित की। प्रभु ने बच्चे के **पिता से पूछा** कि उसकी यह दशा **कब से** थी। उसने बताया कि यह **बचपन से** था। यह ऐंठन उसे **कभी आग** और **कभी पानी** में गिरा चुकी थी। मृत्यु से चंद कदम की दूरी थी। तत्पश्चात् पिता ने प्रभु से विनती की कि **यदि** वह कुछ कर सकता था तो कृपा करके करे – एक हृदय–विदारक चीख, जो वर्षों के हताशा के ऐंठन से निकली। प्रभु **यीशु** ने **उससे** कहा कि यह उसकी चंगा करने की योग्यता का प्रश्न नहीं था, अपितु पिता के **विश्वास** करने की योग्यता का प्रश्न था, जीवित परमेश्वर में विश्वास सदैव पुरस्कृत होता है। उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

9:25–27 **जब यीशु** ने **अशुद्ध आत्मा** को बच्चे में से निकलने की आज्ञा दी, तो एक और भयानक ऐंठन हुई, और तब वह छोटा शरीर **मरा हुआ सा** शांत हो गया। उद्धारकर्ता ने उसे जीवित किया और उसके पिता को दे दिया।

9:28,29 बाद में जब हमारा प्रभु अपने **चेलों** के साथ **घर** में अकेला था, तब उन्होंने उससे **एकान्त में पूछा** कि वे वैसा क्यों नहीं कर पाए। उसने उत्तर दिया कि कुछ आश्चर्यकर्मों के लिए **प्रार्थना** और उपवास की आवश्यकता होती है। हममें से किसने हमारी मसीही सेवकाई में कई बार पराजय और हताशा के भाव का सामना नहीं किया है? हमने बिना थके शुद्ध अन्त:करण से परिश्रम किया, तौभी परमेश्वर के आत्मा द्वारा सामर्थ में काम करने का कोई प्रमाण नहीं। हम भी उद्धारकर्ता के शब्दों को स्मरणार्थ सुनते हैं,'' **यह जाति** ... इत्यादि।

स.यीशु पुन: अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी करता है (9:30–32)

9:30 हमारे प्रभु की कैसरिया फिलिप्पी की यात्रा समाप्त हो चुकी थी। अब प्रभु **गलील में होकर** जा रहा था – एक यात्रा जो उन्हें यरुशलेम और क्रूस की ओर ले जाएगी। उसने बिना किसी की जानकारी के यात्रा करनी चाही। उसकी सार्वजनिक सेवकाई का अधिकांश भाग समाप्त हो चुका था। अब वह चेलों के साथ समय गुजारते हुए उन्हे आगामी घटना के लिए शिक्षा देना और तैयार करना चाहता था।

9:31,32 प्रभु ने उन्हें साफ–साफ कह दिया कि **वह तीन दिन बाद** पुन: **जी उठेगा**। उसके चेले इस बात को समझ न पाए **और वे उससे पूछने से डरते थे**। हम भी बहुधा पूछने से डरते हैं, और इस प्रकार आशीष को खो देते हैं।

द.राज्य में महानता (9:33–37)

9:33,34 **फिर** वे **कफरनहूम** में उस घर में आए जहां उन्हें ठहरना था, वहां प्रभु यीशु ने **उनसे पूछा** कि वे रास्ते में **किस बात** पर विवाद कर रहे थे। वे इस बात को स्वीकार करने में लज्जित हुए कि वे यह विवाद कर रहे थे कि उनमें से **बड़ा कौन है**। संभवत: रूपान्तरण ने एक सन्निकट राज्य के लिए उनकी आशाओं को पुनर्जागृत कर दिया था, और वे इसमें महिमा के स्थान के लिए अपने आप को श्रृंगारित कर रहे थे। यह समझना हृदय विदारक है कि जिस समय प्रभु यीशु उन्हें अपनी सन्निकट मृत्यु के विषय बता रहा था, उस समय वे अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ आंक रहे थे। जैसा कि यिर्मयाह ने कहा है, मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है।

9:35–37 इस बात को जानते हुए कि वे किस बात पर विवाद कर रहे थे, प्रभु यीशु ने उन्हें दीनता का एक पाठ सिखाया। उसने कहा कि स्वेच्छा से सेवा के निम्नतम स्थान को ग्रहण करना और स्वयं के स्थान पर दूसरों के लिए जीना, प्रथम बनने का रास्ता है। **एक बालक**

को उनके सम्मुख खड़ा किया गया और उसे प्रभु के द्वारा गले लगाया गया। प्रभु ने जोर दिया कि उसके **नाम से** सबसे छोटे समझे जाने वाले, सबसे कम प्रसिद्ध व्यक्ति पर दया दिखाना, महानता का कार्य था। यह मानों स्वयं प्रभु के प्रति यहां तक कि पिता परमेश्वर के प्रति दया दिखाना था। ''हे धन्य प्रभु यीशु, तेरी शिक्षाएं मेरे (शारीरिक) हृदय को जांचें और अनावृत करें। मुझे स्वयं से अलग कर और अपने जीवन को मेरे द्वारा जीने दे।''

इ.सेवक दलबंदी (सम्प्रदायवाद) से मना करता है (9:38-42)

यह अध्याय असफलताओं से भरा हुआ प्रतीत होता है। रूपान्तरण के पहाड़ पर पतरस ने अदक्षता से बातें की (पद 5,6)। चेले गूंगी दुष्टात्मा को निकालने में असफल हुए (पद18)। उन्होंने इस बात पर विवाद किया कि उनमें सबसे बड़ा कौन था (पद 34)। पद 38-40 में हम उन्हें दलबन्दी (सम्प्रदायवाद) के भाव को दर्शाते हुए पाते हैं।

9:38 यह प्रिय चेला **यूहन्ना** था जिसने प्रभु यीशु को सूचित किया कि उन्होंने उसके **नाम से दुष्टात्माओं को निकालते** हुए एक व्यक्ति को देखा था। वह व्यक्ति झूठी शिक्षा नहीं दे रहा था और न ही पाप में जीवन बिता रहा था। वह मात्र चेलों के साथ जुड़ा हुआ नहीं था।

जब उन्होंने खींचा एक घेरा,
मैं – विद्रोही, विधर्मी, निरादर के योग्य हुआ बाहर;
परंतु प्रेम और मुझमें थी बुद्धि विजय की –
हमने खींचा एक घेरा जिसने ले लिया उनको अंदर।

9:39 प्रभु यीशु ने कहा, ''उस को मना मत करो। यदि उसे मुझ पर इतना विश्वास है कि दुष्टात्माओं को निकालने में वह मेरे नाम का प्रयोग करता है, तो वह मेरी ओर है और वह शैतान के विरोध में कार्य कर रहा है। वह इस योग्य नहीं कि शीघ्रता से मुड़कर **मुझे बुरा कह सके** या मेरा शत्रु बन जाए।

9:40 यह पद, मत्ती 12:30 के विरोधाभास में प्रतीत होता है, जहां यीशु ने कहा, ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ बटोरता नहीं, वह बिखेरता है।'' परंतु वास्तव में कोई विरोधाभास नहीं है। मत्ती में विषय यह था कि मसीह परमेश्वर का पुत्र था या दुष्टात्मा द्वारा सामर्थ प्राप्त व्यक्ति। ऐसे आधारभूत प्रश्न पर, जो कोई उसके साथ नहीं है वह उसके विरोध में कार्य कर रहा है।

यहां पर, मरकुस में मसीह के व्यक्तित्व या कार्य का प्रश्न नहीं था, परंतु यहां पर विषय प्रभु की सेवकाई में एक व्यक्ति की साझेदारी से था। इस क्षेत्र में निश्चित रूप से सहनशीलता और प्रेम होना चाहिए। जो कोई भी सेवा में उसके **विरोध में नहीं** निश्चित रूप से शैतान के विरोध में है और इसलिए वह मसीह **की ओर** है।

9:41 यहां तक कि मसीह के **नाम से** दिखाई गई नगण्यतम दया भी पुरस्कृत होगी। एक चेले को **एक कटोरा पानी** दिया जाना, क्योंकि वह **मसीह** का है, अलक्षित (बिना प्रतिफल) नहीं जाएगा। एक दुष्टात्मा को निकालना इसकी तुलना में दर्शनीय है। एक कटोरा **पानी** देना सामान्य बात है। परंतु ये दोनों ही उसकी दृष्टि में बहुमूल्य हैं, जब वे प्रभु की महिमा के लिए किए जाते हैं। ''**कि तुम मसीह के हो**'' वह बंध है जिसमें विश्वासियों को एक साथ बंधना चाहिए। इन शब्दों को, यदि हमारे सम्मुख रखा जाए, तो ये हमें दलबंदी के भाव से, तुच्छ कलहों से, और मसीही सेवा में ईर्ष्या से छुड़ाएंगे।

9:42 सतत् रूप से प्रभु के सेवक को अवश्य सोचना चाहिए कि उसके शब्दों और कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव होगा। एक सह-विश्वासी को ठोकर खिलाकर उसे जीवन भर की आत्मिक क्षति पहुंचाना, संभव है। **छोटों** में से किसी एक का पवित्रता और सत्य के पथ से भटकने से **भला होगा** कि एक **चक्की का पाट उसके गले में** लटकाकर उसे डुबो दिया जाए।

फ. निर्दयी स्व-अनुशासन (9:43-50)

9:43 इस अध्याय की शेष आयतें अनुशासन और आत्म-त्याग की आवश्यकता पर जोर देती हैं। जो सच्ची शिष्यता के पथ पर निकलते हैं उन्हें आवश्यक रूप से स्वाभाविक इच्छा और अभिलाषा से सतत् संघर्ष करना चाहिए। उन अभिलाषाओं को भोजन कराना (तृप्त करना) विनाश का संकेत देता है। उन्हें नियंत्रित करना आत्मिक विजय को निश्चित करता है।

प्रभु ने यह समझाते हुए **हाथ, पांव** और **आंख** के विषय में बताया कि इनके द्वारा ठोकर खाकर **नरक** में जाने की अपेक्षा इनमें से एक को खोना भला है। लक्ष्य पर पहुंचना किसी भी बलिदान से अधिक मूल्यवान है।

संभवत: **हाथ** हमारे कार्यों का सुझाव देते हैं, **पांव**

हमारे चाल का, और आंख उन वस्तुओं का जिनकी लालसा हम रखते हैं। ये संभावित जोखिम स्थल हैं। यदि उनके साथ कठोरता से व्यवहार न किया जाए, तो वे हमें अनन्त विनाश की ओर ले जा सकते हैं।

क्या यह ऐसी शिक्षा देता है कि सच्चे विश्वासी अंतत: नाश हो सकते हैं और अनन्तता नरक में गुजार सकते हैं? केवल यहीं से शिक्षा लेने पर यह ऐसा ही सुझाव देता हुआ प्रतीत होता है। परंतु नया नियम की सतत् शिक्षा को देखने पर, यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह निष्कर्ष निकालें कि कोई व्यक्ति नया जन्म पाने की *घोषणा* कर सकता है और कुछ समय के लिए सही रीति से चलता प्रतीत हो सकता है। परंतु यदि वह व्यक्ति सतत् रूप से शरीर को संतुष्ट करता है, तो यह स्पष्ट है कि वह कभी बचाया ही नहीं गया था (उसका उद्धार ही नहीं हुआ था)।

9:44–48 प्रभु बार–बार[16] नरक को ऐसी जगह बताते हैं **जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती**। यह भयंकर रहस्यपूर्ण है। यदि हम इस पर वास्तव में विश्वास करते, तो संसार की बातों के लिए नहीं परंतु कभी न मरने वाली आत्माओं के लिए अपना जीवन व्यतीत करते। ''हे प्रभु! मुझे आत्माओं के लिए उमंग दे।''

सौभाग्यवश एक हाथ या पांव को काट डालना या एक आंख को निकाल फेंकना कभी भी नैतिक रूप से आवश्यक नहीं है। प्रभु यीशु ने यह नहीं सुझाया कि हमें इन सख्त कार्यों को अभ्यास में लाना चाहिए। उन्होंने केवल इतना कहा कि इन अंगो के दुरुपयोग के द्वारा **नरक** में खींचे जाने की अपेक्षा इन अंगों के प्रयोग को बलिदान कर देना *भला* होगा।

9:49 पद 49 और 50 विशेषत: कठिन हैं। इसीलिए हम उनका परीक्षण, एक के बाद एक उपवाक्य के परीक्षण से करेंगे।

''**क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा।**'' तीन मुख्य समस्याएं हैं : (1) किस **आग** का संकेत है? (2) **नमकीन किया जाना** का क्या आशय है? (3) क्या **हर एक जन** उद्धार पाए हुओं का, उद्धार न पाए हुओं का, या दोनों का संकेत है?

आग का अर्थ नरक (जैसे कि पद 44,46,48 में) या किसी भी प्रकार का न्याय और आत्म–न्याय सम्मिलित हैं, हो सकता है। **नमक** उस वस्तु का संकेत देता है जो सुरक्षित रखता, शुद्ध करता और नमकीन करता है। पूर्वीय देशों में यह एक प्रतिज्ञा के प्रति स्वामिभक्ति, मित्रता या विश्वासयोग्यता का एक बन्धक भी है।

यदि **हर एक जन** का अर्थ उद्धार न पाए हुए हैं, तो विचार यह है कि वे नरक की आग में सुरक्षित रखे जाएंगे, अर्थात् , वे अनन्त दण्ड को भोगेंगे।

यदि **हर एक जन** विश्वासियों का संकेत है, तो यह भाग शिक्षा देता है कि उन्हें अवश्य : (1) इस जीवन में परमेश्वर की ताड़ना की आग से शुद्ध होना है; या (2) उन्हें अपने आप को स्व–अनुशासन और आत्म–त्याग के द्वारा भ्रष्टाचार से सुरक्षित रखना है; या (3) मसीह के न्याय–आसन के सम्मुख परखा जाएगा।

''**और हर एक बलिदान नमक से नमकीन किया जाएगा।**'' यह उपवाक्य[17] लैव्य. 2:13 (गिनती 18:19; 2 इति.13:5 भी देखिए) से उद्धरित है। परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा का प्रतीक नमक, लोगों को यह स्मरण दिलाने के लिए अभिप्रेरित था कि वाचा एक गंभीर संधि थी जिसे बिना उल्लंघन के निभाया जाना चाहिए। हमारे शरीर को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने में (रोमि.12:1,2), हमें इस बलिदान को एक अटल संकल्प बनाने के द्वारा नमक से नमकीन करना चाहिए।

9:50 ''**नमक अच्छा है।**'' मसीही इस पृथ्वी के नमक हैं (मत्ती. 5:13)। परमेश्वर उनसे स्वास्थ्यपूर्ण, शोधन के प्रभाव को काम में लाने की अपेक्षा करता है। जब तक वे अपनी शिष्यता को पूरी करते हैं, तब तक वे सब के लिए एक आशीष हैं।

''**परंतु यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे किस से नमकीन करोगे?**'' बिना नमकीनपन के **नमक** मूल्यरहित है। एक मसीही जो एक सच्चे चेले के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं कर रहा है, वह बंजर और निष्प्रभावी है। मसीही जीवन में अच्छा आरंभ करना ही पर्याप्त नहीं है। यदि सतत् और मौलिक आत्म–न्याय न हो, तो परमेश्वर का सन्तान उस उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बचाया है।

''**अपने में नमक रखो।**'' संसार में परमेश्वर के लिए एक सामर्थ बनो। मसीह की महिमा के लिए एक

लाभकारी प्रभाव को काम में लाओ। अपने जीवन में उस किसी भी बात को सहन न करो जो प्रभु के लिए तुम्हारी प्रभावकारिता को कम कर दे।

''और आपस में मेलमिलाप से रहो।'' यह विदित रूप से वापस पद 33 और 34 की ओर संकेत है, जहां चेलों ने विवाद किया था कि उनमें बड़ा कौन था। घमण्ड को अवश्य दूर करना चाहिए और इसे सब के लिए दीन सेवा द्वारा स्थानान्तरित करना चाहिए।

संक्षिप्त में, पद 49 और 50 विश्वासी के जीवन को परमेश्वर के लिए एक बलिदान के रूप में चित्रित करती है। यह आग से नमकीन किया जाता है, अर्थात्, आत्म-न्याय और आत्म-त्याग मिश्रित। यह नमक से नमकीन किया जाता है अर्थात्, अपरिवर्तनीय भक्ति के बंधक के साथ अर्पित। यदि विश्वासी अपनी मन्नत से पीछे हट जाता है, या पापमय अभिलाषाओं के साथ उग्रता से व्यवहार करने में असफल हो जाता है, तो उसका जीवन स्वादहीन, मूल्यहीन और लक्ष्यहीन बन जाएगा। इसीलिए उसे अपने जीवन से किसी भी ऐसी वस्तु को हटा देनी चाहिए जो उसके ईश्वर-निर्धारित मिशन में हस्तक्षेप करे, तथा उसे दूसरे विश्वासियों के साथ शांतिमय संबंध को बनाए रखना चाहिए।

ग.विवाह और तलाक (10:1-12)

10:1 गलील से हमारे प्रभु दक्षिण-पूर्व दिशा में **यरदन के पार** (पूर्व दिशा) के एक जिला पिरीया को जाता है। उसकी पिरीया की सेवकाई इस अध्याय के 45 वें पद तक चलती है।

10:2 **फरीसियों** ने शीघ्र ही उसे ढूंढ लिया। वे भेड़ियों के एक झुण्ड के समान उसकी हत्या करने को भटक रहे थे । उसे फंसाने के प्रयास में उन्होंने उससे पूछा कि क्या **पत्नी को त्यागना उचित** है। प्रभु उन्हें वापस पंचग्रंथ की ओर ले गया। **मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?**

10:3-9 उन्होंने इस प्रश्न को *मूसा की अनुमति* को बताने के द्वारा टाल दिया। मूसा ने एक पुरुष को अपनी पत्नी को लिखित **त्याग-पत्र** देकर त्यागने की *अनुमति* दी थी। परंतु यह परमेश्वर की ओर से आदर्श-स्वरूप नहीं था; इसकी अनुमति सिर्फ लोगों के **मन की कठोरता के कारण** दी गई थी। ईश्वरीय योजना ने एक पुरुष और स्त्री को विवाह के बंध में तब तक बांधा था, जब तक वे जीवित रहते। यह परमेश्वर द्वारा **नर और नारी** की सृष्टि की ओर वापस जाता है। एक पुरुष को **अपने** माता-पिता से **अलग होकर** विवाह में इस तरह जुड़ना है कि वह और उसकी पत्नी **एक तन** हैं। इसलिए जिसे **परमेश्वर** ने जोड़ा है, उसे मनुष्य की आज्ञा द्वारा अलग नहीं किया जाना चाहिए।

10:10 विदित रूप से इसे स्वीकार करना प्रभु के **चेलों** के लिए भी कठिन था। उस समय स्त्रियों को आदर और सुरक्षा का स्थान प्राप्त नहीं था। उनके साथ बहुधा घृणा की अपेक्षा थोड़ा ही ठीक बर्ताव किया जाता था। यदि एक पुरुष अपनी स्त्री से अप्रसन्न हो तो वह उसे तलाक दे सकता था। स्त्री के पास कोई आश्रय (सहारा, शरण) नहीं था। कई घटनाओं में उसके साथ सम्पत्ति के रूप में व्यवहार किया जाता था।

10:11,12 जब चेलों ने प्रभु से और पूछा, तो प्रभु ने स्पष्टत: कह दिया कि तलाक पश्चात् पुनर्विवाह **व्यभिचार** था, चाहे पुरुष तलाक प्राप्त हो या स्त्री। यहीं से शिक्षा लेने पर, यह पद यह संकेत देता है कि तलाक समस्त परिस्थितियों में प्रतिबंधित है। परंतु मत्ती 19:9 में, प्रभु ने एक अपवाद दिया। जहां एक संगी व्यभिचार (अनैतिकता) का दोषी हो, वहां दूसरे संगी को तलाक लेने की अनुमति थी और संभवत: वह पुनर्विवाह के लिए स्वतंत्र था। यह भी संभव है कि 1कुरि.7:15 उस स्थिति में तलाक की अनुमति देता है जब एक अविश्वासी संगी अपने मसीही संगी को त्याग दे।

निश्चित रूप से तलाक और पुनर्विवाह के सम्पूर्ण विषय के साथ कठिनाईयां जुड़ी हुई हैं। लोग दाम्पत्य उलझन को इतना जटिल बना देते हैं कि इन्हें सुलझाने के लिए सुलैमान की बुद्धि की आवश्यकता पड़ती है। तलाक से बचना ही इन उलझनों से बचने का सर्वोत्तम तरीका है। तलाक उन लोगों के जीवन में बादल और प्रश्न चिन्ह निर्मित करता है, जो इसमें सम्मिमित हैं। जब तलाक प्राप्त व्यक्ति एक स्थानीय कलीसिया में सहभागिता तलाशता है, तो प्राचीनों को परमेश्वर के भय में उस घटना की समीक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक घटना भिन्न होती है और प्रत्येक घटना को अवश्य ही व्यक्तिगत रूप से देखा जाना चाहिए।

ह.बालकों को आशीष देना (10:13–16)

10:13 अब हम **बालकों** के लिए हमारे प्रभु यीशु की चिन्ता को देखते हैं। उन माता–पिताओं को जो अपने **बालकों** को चरवाहा शिक्षक के द्वारा आशीष दिलाने के लिए **लाने** लगे थे, चेलों के द्वारा उन्हें भगा दिया गया।

10:14–16 प्रभु **क्रुद्ध** हुए और उन्होंने समझाया कि **परमेश्वर का राज्य बालकों** का और उनका है जिनमें बालकों के समान विश्वास और दीनता है। वयस्कों को राज्य में **प्रवेश** करने के लिए छोटे बालकों के समान बनना होगा।

जॉर्ज मैकडोनाल्ड कहते थे कि वह एक व्यक्ति की मसीहत पर विश्वास नहीं करता था यदि उस व्यक्ति के दरवाजे के पास लड़के–लड़कियां कभी भी खेलते हुए न पाए जाएं। निश्चित रूप से ये आयतें प्रभु के सेवक पर छोटे बच्चों के पास परमेश्वर के वचन के साथ पहुंचने के महत्व के विषय पर प्रभाव डालना चाहिए। बच्चों का मन सबसे नम्र (आज्ञाकारी) और सबसे अधिक ग्रहणशील होता है। डब्ल्यू. ग्राहम स्क्राजी ने कहा, ''सर्वोत्तम बनो और बच्चों को अपना सर्वोत्तम दो।''

ई.धनी युवा शासक (10:17–31)

10:17 एक धनी व्यक्ति ने विदित रूप से एक गंभीर प्रश्न के साथ प्रभु का रास्ता रोका। यीशु को **''उत्तम गुरु''** कहते हुए उसने पूछा कि **अनन्त जीवन का अधिकारी** होने के लिए उसे **क्या** करना चाहिये।

10:18 प्रभु यीशु ने ''उत्तम गुरु'' शब्दों को पकड़ लिया। उन्होंने इस शीर्षक से इंकार नहीं किया परंतु इसका प्रयोग उस व्यक्ति के विश्वास को परखने के लिए किया। केवल **परमेश्वर** ही उत्तम है। क्या वह धनी व्यक्ति प्रभु यीशु को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने का इच्छुक था? विदित रूप से नहीं।

10:19,20 फिर उद्धारकर्ता ने पाप की धारणा को समझाने के लिए व्यवस्था का प्रयोग किया। यह व्यक्ति अभी भी इस भ्रम में था कि (अनन्त जीवन पाने के लिये) क्या (कर्म) *करना* चाहिए।
हमारे प्रभु ने पांच आज्ञाओं को उद्धरित किया जो मुख्यत: दूसरे सहभागी व्यक्तियों के साथ हमारे रिश्तों से संबंध रखती हैं। ये पांच आज्ञाएं वास्तव में कहती हैं, ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख''। उस व्यक्ति ने घोषित किया कि वह उन आज्ञाओं को **लड़कपन** से **मानता** आया है।

10:21,22 परन्तु क्या वह वास्तव में अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करता था? यदि ऐसा था, तो उसे इस बात को अपनी सारी सम्पत्ति को बेचकर और धन को **कंगालों** को देकर सिद्ध करने दिया जाए। आह, यह तो एक अलग कहानी थी। वह **शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।**

प्रभु यीशु का यह आशय नहीं था कि यह व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को बेचकर और प्राप्त धन को दान में देकर उद्धार पा सकता था। उद्धार का मात्र एक ही मार्ग है – वह है प्रभु में (पर) विश्वास। परंतु उद्धार पाने के लिए अवश्य है कि एक व्यक्ति यह स्वीकार करे कि वह परमेश्वर की पवित्र मांगों को पूरी करने में असफल एक पापी है। पाप की दृढ़ धारणा को उत्पन्न करने के लिए, प्रभु उस व्यक्ति को दस आज्ञाओं की ओर वापस ले गए। अपनी सम्पत्ति को बांटने में धनी व्यक्ति की अनिच्छा ने यह दर्शाया कि वह अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम नहीं रखता था। उसे ऐसे कहना चाहिए था, ''प्रभु, यदि मांग यही है, तो मैं एक पापी हूं। मैं स्वयं को अपने स्वप्रयास से नहीं बचा सकता। अत: मैं आपसे निवेदन करता हूं, मुझे अपने अनुग्रह के द्वारा बचाएं।'' परंतु वह अपनी सम्पत्ति से बहुत अधिक प्रेम करता था। वह इसे त्यागने के लिए अनिच्छुक था, उसने (स्वयं को) टूटने से इंकार कर दिया। जब प्रभु यीशु ने उस व्यक्ति से सब कुछ बेचने के लिए कहा, तो वह उसे उद्धार का एक रास्ता **नहीं** बता रहा था। वह तो उस व्यक्ति को यह दिखा रहा था कि उसने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा था और इसलिए उसे उद्धार की आवश्यकता थी। यदि वह उद्धारकर्ता के निर्देश पर प्रतिक्रिया दिखाता, तो उसे उद्धार का मार्ग बताया जाता।

परंतु यहां एक समस्या है। क्या हम विश्वासियों से यह अपेक्षा की जाती है कि हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें? क्या प्रभु यीशु हमसे कहता है, **''जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।''** प्रत्येक को स्वयं के लिए उत्तर देना अवश्य है, परंतु ऐसा करने से पूर्व उसे निम्नलिखित अनिवार्य तथ्यों पर विचार करना चाहिए:

1. प्रतिदिन हजारों लोग भूख से मरते हैं।
2. संसार की आधी आबादी से भी अधिक ने कभी शुभ-संदेश नहीं सुना है।
3. हमारी भौतिक सम्पत्ति अभी आत्मिक और भौतिक मानव आवश्यकता को कम करने के लिए उपयोग में लाई जा सकती है।
4. मसीह का उदाहरण हमें सिखाता है कि हमें कंगाल (दीन) बनना चाहिए ताकि दूसरे (अन्य) धनी हो जाएं (2 कुरि.8:9)।
5. जीवन की लघुता और प्रभु के आगमन की सन्निकटता हमें हमारे धन को अभी उसके कार्य के लिए लगाने की शिक्षा देते हैं। प्रभु के आने के पश्चात् बहुत देर हो जाएगी।

10:23-25 जब प्रभु ने धनी व्यक्ति को भीड़ में गुम होते देखा तब धनवानों के **परमेश्वर के राज्य** में प्रवेश करने की कठिनता पर उसकी टिप्पणी से चेले चकित हुए; वे धन की बहुतायत को परमेश्वर की आशीष से जोड़ते थे। अत: प्रभु यीशु ने दोहराया,"**हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं**[18]**, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है।**" उन्होंने कहना जारी रखा, "वास्तव में, **परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है।**"

10:26,27 इस बात ने चेलों को अचंभित कर दिया, **तो फिर किसका उद्धार हो सकता है।** चूंकि यहूदी लोग व्यवस्था के आधीन जीवन बिता रहे थे, अत: वे धन सम्पत्ति को परमेश्वर की आशीष के संकेत के रूप में देखने में सही ही थे। मूसा की विधि के आधीन, परमेश्वर ने उन्हें सम्पन्नता की प्रतिज्ञा दी थी, जो उनकी आज्ञा मानते थे। चेलों ने तर्क दिया कि यदि एक धनवान व्यक्ति राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, तो अन्य कोई भी प्रवेश नहीं कर पाएगा। प्रभु यीशु ने उत्तर दिया कि जो मनुष्य से **नहीं हो सकता** वह परमेश्वर से **हो सकता है।**

इस भाग की शिक्षा से हम क्या निष्कर्ष निकालते हैं? सबसे पहले तो यह कि धनवानों का उद्धार पाना विशेषत: कठिन है (पद 23), चूंकि ये लोग परमेश्वर की अपेक्षा अपनी सम्पत्ति से अधिक प्रेम करने के लिए प्रवृत्त रहते हैं। वे अपने धन को त्यागने के बदले परमेश्वर को त्याग देंगे (या त्यागना पसंद करेंगे)। वे प्रभु की अपेक्षा धन पर भरोसा रखते हैं। जब तक ये परिस्थितियां बनी रहेंगी, वे उद्धार नहीं पा सकते।

पुराना नियम में यह सच था कि धन-सम्पत्ति परमेश्वर की कृपा का संकेत था। अब यह परिवर्तित हो गया। प्रभु की आशीष के स्थान पर, धन-सम्पत्ति एक व्यक्ति की भक्ति की एक परख है।

राज्य के द्वार से धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा एक ऊंट सुई के नाके से अधिक सहजता से प्रवेश कर सकता है। मानवीय रूप से कहें तो, एक धनी व्यक्ति सरलतापूर्वक उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता। यहाँ पर कोई व्यक्ति आपत्ति उठा सकता है कि मानवीय रूप से कहें तो *कोई भी नहीं* बच सकता। यह सही है। परंतु यह एक धनी व्यक्ति के संदर्भ में और भी अधिक सही है। वह उन बाधाओं का सामना करता है, जो गरीब व्यक्ति के लिए अज्ञात हैं। उसके हृदय के सिंहासन से उसे धन के ईश्वर को अवश्य नीचे गिराना चाहिए, और उसे अवश्य ही परमेश्वर के सम्मुख एक कंगाल के रूप में खड़ा होना चाहिए। इस परिवर्तन को लाना मनुष्य के लिए असंभव है। केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकते हैं। वे मसीही जो धरती पर धन इकट्ठा करते हैं, सामान्यत: अपनी अनाज्ञाकारिता का दण्ड अपने बच्चों के जीवन में पाते हैं। ऐसे परिवारों से बहुत ही कम बच्चे प्रभु के लिए ठीक जीवन बिताते हैं।

10:28-30 प्रभु की शिक्षा के अभिप्राय को **पतरस** ने पकड़ (समझ) लिया। उसने समझ लिया कि प्रभु यीशु कह रहा था, "सब कुछ छोड़कर मेरे पीछे हो लो।" प्रभु यीशु ने उन लोगों को जो उसके लिए और सुसमाचार के लिए सब कुछ छोड़ते हैं वर्तमान और अनन्त प्रतिफल की प्रतिज्ञा देने के द्वारा इसे दृढ़ किया।

1. वर्तमान प्रतिफल, 100 गुणा वापसी है, धन के रूप में नहीं परंतु:
   अ. **घरों** - दूसरे लोगों के घर जहां उसे प्रभु के दास के रूप में स्थान दिया जाता है।
   ब. **भाइयों और बहनों, और माताओं और बाल-बच्चों** - मसीही मित्र जिनकी सहभागिता सम्पूर्ण जीवन को समृद्ध बनाती है।
   स. **खेतों** - जगत के देश जिन्हें उसने राजा के लिए जीत लिया है।

द. **सताव** – ये वर्तमान प्रतिफल का एक हिस्सा है। जब कोई व्यक्ति मसीह के कारण दु:ख उठाने के योग्य पाया जाए, तो यह उसके लिए आनन्द का एक कारण है।

2. भविष्य का प्रतिफल है **अनन्त जीवन**। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सब कुछ त्यागने के द्वारा अनन्त जीवन को कमाते हैं। अनन्त जीवन एक वरदान (उपहार) है। यहां पर विचार यह है कि जो लोग सब कुछ त्यागते हैं, वे स्वर्ग में अनन्त जीवन का आनन्द अधिक क्षमता में उठाने का प्रतिफल पाएंगे। समस्त विश्वासियों को यह जीवन प्राप्त होगा परंतु समस्त विश्वासी इसका आनंद उसी सीमा में नहीं उठाएंगे।

10:31 तत्पश्चात् हमारे प्रभु ने चेतावनी के शब्द कहे, ''**बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।**'' शिष्यता के पथ पर अच्छा आरम्भ ही पर्याप्त नहीं है। हम (अपनी दौड़) कैसे समाप्त करते हैं, इसकी गणना होती है। प्रभु के दास आयरनसाईड ने कहा है :

> ''जितनों ने एक विश्वासयोग्य और समर्पित अनुयायी होने की आशा दी, उनमें से प्रत्येक मसीह के नाम के कारण आत्म–त्याग के पथ पर नहीं बने रहेंगे, और कुछ जो पिछड़े हुए प्रतीत होते थे और जिनकी समर्पणता पर प्रश्नचिन्ह था, वे परीक्षा के समय वास्तविक और स्वयं को मिटा (भुला) देनेवाले सिद्ध होंगे।''[19]

ज.सेवक की वेदना की तीसरी भविष्यद्वाणी (10:32–34)

10:32 अब **यरूशलेम** जाने का समय आ पहुंचा था। प्रभु यीशु के लिए इसका तात्पर्य था गतसमनी के दु:ख और संकट, क्रूस की लज्जा और वेदना।

एक ऐसे समय में उसकी भावनाएं क्या थीं? क्या हम उसे इन शब्दों में नहीं पढ़ते, ''यीशु उन के आगे–आगे जा रहा था''? इस बात को पूर्णत: जानते हुए कि कीमत क्या होगी, उसमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का दृढ़ संकल्प था। वहां एकाकीपन था – वह चेलों से बहुत आगे था, अकेले चलते हुए। और था एक आनन्द – पिता की इच्छा में होने का एक गहरा, स्थिर आनन्द, आगामी महिमा का आनन्दमय दृश्य, अपने लिए एक दुल्हन को छुड़ाने (खरीदने) का आनन्द। उस आनन्द के लिए जो उसके सम्मुख रखा था, उसने लज्जा को तुच्छ जानते हुए क्रूस को सह लिया।

जब हम उसे मोर्चे पर लम्बे डग भरते देखते हैं, तो हम भी **अचम्भित** हो जाते हैं। हमारा निर्भिक अगुवा, हमारे विश्वास का कर्ता और सिद्ध करनेवाला, हमारा महिमित स्वामी, ईश्वरीय राजकुमार। मसीही टीकाकार अर्डमेन लिखते हैं :

> आइए, क्रूस की तरफ लड़खड़ाहट–रहित कदमों से बढ़ते हुए परमेश्वर के पुत्र के मुख और रूप को निहारने के लिए थोड़ा ठहरें। जब हम अनुसरण करते हैं, तो क्या यह हमें नवीन नायकवाद के लिए जागृत नहीं करता है; जब हम देखते हैं कि हमारे लिए उसकी मृत्यु कितनी स्वेच्छापूर्ण थी तो क्या यह नवीन प्रेम जागृत नहीं करता है; तौभी क्या हम उसकी मृत्यु के अर्थ और रहस्य पर आश्चर्य नहीं करते हैं?[20]

जो पीछे चल रहे थे वे **डरे हुए थे**। वे जानते थे कि यरूशलेम में धार्मिक नेता प्रभु की मौत के लिए कृतसंकल्पित थे।

10:33,34 तीसरी बार प्रभु यीशु ने अपने चेलों को आनेवाली घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया। यह भविष्यसूचक रूपरेखा उन्हें एक साधारण मनुष्य से कहीं महान व्यक्ति दिखाती है।

1. **''देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं''** (11:1–13:37)।
2. **''मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा''**(14:1,2,43–53)।
3. **''वे उसको घात के योग्य ठहराएंगे''**(14:55–65)।
4. **''और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे''**(15:1)।
5. **''वे उसको ठट्ठों में उड़ाएंगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे''**(15:2–38)।
6. **''और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा''**(16:1–11)।

क. सेवा करना महानता है (10:35-45)

10:35-37 प्रभु के आनेवाले क्रूसीकरण की मर्मस्पर्शी भविष्यद्वाणी के पश्चात् **याकूब और यूहन्ना** उसके पास एक ऐसे निवेदन के साथ आए जो एक ही समय में भव्य था कि वे मसीह के समीप रहना चाहते थे, परंतु यह अपने लिए महान वस्तुएं पाने का एक अच्छा समय नहीं था। उन्होंने इस विश्वास का प्रदर्शन किया कि प्रभु यीशु अपने राज्य की स्थापना करेंगे, परंतु उन्हें उसकी आसन्न वेदना के बारे में विचार करते रहना चाहिए था।

10:38,39 प्रभु **यीशु** ने उनसे पूछा कि क्या वे उसके **कटोरा** को **पी सकते** थे और उसके **बपतिस्मा** को ले सकते थे। **कटोरा** उसके दु:ख का और **बपतिस्मा** उसकी मृत्यु का संकेत था। चेलों ने कहा कि उनसे **हो सकता** था, और प्रभु ने कहा कि वे सही थे। अपनी स्वामिभक्ति के कारण वे दु:ख उठाएंगे, और कम से कम याकूब शहादत को प्राप्त करेगा (प्रेरि.12:2)।

10:40 परंतु तत्पश्चात् प्रभु ने समझाया कि राज्य में आदर का स्थान मनमाने ढ़ंग से प्रदान नहीं किया जाता। उन्हें आदर के स्थान को परिश्रम से प्राप्त करना पड़ेगा। यहां यह स्मरण करना भला है कि राज्य में *प्रवेश* विश्वास द्वारा अनुग्रह ही से है, परंतु राज्य में *पद* निर्धारण मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता के द्वारा होगा।

10:41-44 अन्य **दसों** चेले **रिसियाने लगे** कि **याकूब और यूहन्ना** ने उनसे आगे होने का प्रयास किया। परंतु उनकी रिस ने इस तथ्य को प्रकट किया कि उनमें भी वही मनसा थी। इसने प्रभु यीशु को अवसर दिया कि वह महानता पर एक सुंदर और क्रांतिकारी सीख उन्हें दे। उद्धारहीन लोगों के मध्य, महान लोग वे हैं जो मनमाने अधिकार के साथ शासन करते हैं, जो निरंकुश और दबंग हैं। परंतु मसीह के राज्य में महानता की विशेषता सेवा है। **जो कोई ... प्रधान होना चाहे**, उसे सब का **दास** बनना चाहिए।

10:45 सर्वश्रेष्ठ उदाहरण **मनुष्य का पुत्र** स्वयं है। वह **इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।** जरा इस विषय पर विचार करें! वे अपने अद्‌भुत जन्म के द्वारा आए। अपने जीवन भर उसने सेवा की। और अपनी स्थानापन्न मृत्यु में उसने अपने प्राण दे दिए।

जैसा कि पहले बताया गया है, पद 45 इस सुसमाचार का कुंजी पद (मुख्य पद) है। यह लघुरूप में एक आध्यात्मज्ञान है, संसार के द्वारा अब तक ज्ञात महानतम जीवन का एक लघुचित्र।

ल.अंधे बरतिमाई का चंगा किया जाना (10:46-52)

10:46 दृश्य अब पिरीया से यहूदिया को स्थानान्तरित हो जाता है। प्रभु यीशु और उसके चेले यरदन को पार कर **यरीहो को** आ चुके थे। वहां प्रभु **अंधे बरतिमाई** से मिला, एक ऐसे मनुष्य से जो नितांत आवश्यकता में था, जिसे उस आवश्यकता का ज्ञान था, और जिसमें इस आवश्यकता की पूर्ति करवाने का संकल्प था।

10:47 बरतिमाई ने हमारे प्रभु को **दाऊद की सन्तान** के रूप में जिस समय पहचाना और संबोधित किया, यह व्यंग्यात्मक था कि इस्राएल राष्ट्र मसीह की उपस्थिति के प्रति अंधा था, उस समय एक अंधे यहूदी के पास सच्ची आत्मिक दृष्टि थी!

10:48-52 **दया** के लिए उसके सतत् निवेदन अनुत्तरित नहीं गए। दृष्टि प्राप्ति की उसकी विशेष प्रार्थना, एक विशेष उत्तर लाई। उसकी कृतज्ञता विश्वासयोग्य शिष्यता में अभिव्यक्त हुई। प्रभु **यीशु** की अंतिम यरूशलेम यात्रा में वह उसके साथ था। जब प्रभु यीशु क्रूस की ओर बढ़ रहा था, तो यरीहो में इस प्रकार के विश्वास को पाने से अवश्य ही उसका हृदय आल्हादित हुआ होगा। यह एक अच्छी बात थी कि बरतिमाई ने उस दिन प्रभु यीशु को ढूंढ लिया क्योंकि उद्धारकर्ता फिर कभी उस रास्ते से नहीं गुजरा।

V.यरूशलेम में सेवक की सेवकाई (अध्याय 11,12)

अ. विजयी-प्रवेश (11:1-11)

11:1-3 अंतिम सप्ताह का विवरण यहां प्रारम्भ होता है। यीशु **बैतफगे** (कच्चे अंजीरों का घर) और **बैतनिय्याह** (गरीब, दीन, सताए हुओं का घर) के निकट **जैतून पर्वत** की पूर्वी ढलान पर ठहरा हुआ था।

स्वयं को यहूदियों के सम्मुख उनके मसीह-राजा के

रूप में खुलकर प्रस्तुत करने का समय आ पहुंचा था। वह इसे **गदही के बच्चे** पर सवार होकर जकर्याह (9:9) की भविष्यद्वाणी को पूरा करके करेगा। अत: वह **अपने चेलों में से दो को** बैतनिय्याह से बैतफगे भेजा। सिद्ध ज्ञान और पूर्ण अधिकार के साथ प्रभु ने उन्हें अनसधाए (जिस पर कोई कभी सवार न हुआ हो) **गदही के बच्चे** को जिसे वे वहां पाते, लाने भेजा। यदि कोई उन्हें रोके, तो उन्हें कहना था, **''प्रभु को इसका प्रयोजन है।''** प्रभु की सर्वज्ञानता ने, जैसा कि यहां पर प्रकट है, किसी को ऐसा कहने के लिए प्रेरित किया, ''यह आधुनिकवाद का मसीह नहीं है, परंतु इतिहास और स्वर्ग का।''

11:4-6 सब कुछ वैसे ही हुआ जैसे प्रभु यीशु ने कहा था। उन्होंने **गदही के बच्चे को** गांव के मुख्य चौराहे पर बंधा हुआ **पाया**। जब चेलों को रोका गया, तो चेलों ने वैसे ही उत्तर दिया जैसे प्रभु यीशु ने सिखाया था। तब लोगों ने **उन्हें जाने दिया**।

11:7,8 यद्यपि इस गदही के बच्चे पर कभी सवारी नहीं की गई थी, तौभी इसने अपने सृष्टिकर्ता को यरूशलेम ले जाने में कोई आपत्ति नहीं की। लोगों के जयघोषों के स्वर के गुंजन को अपने कानों में महसूस करते हुए, प्रभु यीशु खजूर की **डालियों** के गलीचे से होकर नगर को गया। कम से कम, एक क्षण के लिए, उन्हें राजा के रूप में स्वीकार किया गया।

11:9,10 लोग चिल्ला उठे :

1. **''होशाना''**- मूल रूप से जिसका अर्थ है, ''हम प्रार्थना करते हैं, बचा (हमें बचा)'' परंतु जो बाद में स्तुति का उद्‌गार बन गया। संभवत: लोगों का आशय था, ''हम प्रार्थना करते हैं, हमें हमारे सताने वाले रोमी शासकों से बचा!''
2. **''धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है''**- एक स्पष्ट स्वीकारोक्ति कि यीशु प्रतिज्ञात मसीह था (भजन 118:26)।
3. **''हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है!''** - उन्होंने सोचा कि **राज्य** स्थापित होने वाला था और मसीह **दाऊद** के सिंहासन पर विराजमान होगा।
4. **''आकाश में होशाना!''**- प्रभु की ऊंचे **आकाश** में *स्तुति* करने का एक आह्वान या उसे आह्वान कि वह ऊंचे **आकाश** से *बचाए।*

11:11 **यरूशलेम** में एक बार प्रभु यीशु **मंदिर में** गया था - मंदिर में नहीं, अपितु मंदिर के आंगन में। स्पष्टत: यह परमेश्वर का भवन था, परंतु उसका इस मंदिर मे वास नहीं था, क्योंकि याजकों और लोगों ने उसे उसका उचित स्थान देने से इंकार कर दिया। थोड़े समय में **चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर**, उद्धारकर्ता **बारहों के साथ** बैतनिय्याह गया। यह रविवार की संध्या थी।

ब.फल-रहित अंजीर का पेड़ (11:12-14)

यह घटना उस उत्तेजित स्वागत के लिए उद्धारकर्ता की व्याख्या है जिसे उसने कुछ ही समय पूर्व यरूशलेम में प्राप्त किया था। उसने इस्राएल राष्ट्र को एक फल- रहित **अंजीर के पेड़** के रूप में देखा - इसमें प्रदर्शन के पत्ते थे परंतु फल नहीं। होशाना की पुकार शीघ्र ही भयानक चीत्कार में बदल जाएगी,''उसे क्रूस पर चढ़ाओ!'' इसमें विदित रूप से एक समस्या यह है कि उसने अंजीर के पेड़ को श्राप दिया क्योंकि उसमें फल नहीं थे, यद्यपि अभिलेख स्पष्ट रूप से बताते हैं कि **फल का समय न था**। यह उद्धारकर्ता को अतार्किक और चिड़चिड़ा व्यक्ति के रूप में चित्रित करता प्रतीत होता है। हम जानते हैं कि यह सही नहीं है; फिर हम इस जिज्ञासापूर्ण परिस्थिति को कैसे समझाएंगे?

इस्राएल और उसके आसपास के देशों में अंजीर के वृक्ष पत्ते निकलने से पहले ही, खाने योग्य प्राथमिक फल उत्पन्न करते हैं। यह नियमित फसल का, जिसे यहां **फल का समय** के रूप में बताया गया है, 'अग्रदूत' था। यदि कोई प्राथमिक फल नहीं देखा, तो यह एक संकेत था कि बाद में कोई नियमित फसल नहीं होगा। जब प्रभु यीशु इस्राएल राष्ट्र में आया तो पत्ते उपलब्ध थे, जो प्रदर्शन को दिखाता है, परंतु वहां परमेश्वर के लिए कोई फल नहीं था। वहाँ पूर्णता के बिना प्रतिज्ञा थी, वास्तविकता के बिना प्रदर्शन था। प्रभु यीशु राष्ट्र से फल के लिए भूखा था। चूंकि वहां कोई प्राथमिक फल उपलब्ध नहीं था, अत: प्रभु ने जान लिया कि उन अविश्वासी लोगों से कोई फल बाद में भी प्राप्त नहीं होगा, इसलिए उसने अंजीर के पेड़ को श्राप दिया। इसने उस न्याय को पूर्वचित्रित किया जो इस्राएल पर 70 ईसवी में आना था।

तथापि, यह घटना यह शिक्षा *नहीं* देती कि इस्राएल को स्थाई रूप से फल-रहित रहने के लिये श्राप दिया गया। यहूदी लोग *अस्थाई* रूप से किनारे किए गए हैं, परंतु जब मसीह राज्य करने वापस आएगा, तो इस्रायल राष्ट्र का पुन:उत्थान होगा और राष्ट्र परमेश्वर की दया के पद पर पुनर्स्थापित होगा।

यह एकमात्र आश्चर्यकर्म है जिसमें मसीह ने **आशीष** देने के स्थान पर श्राप दिया, पुनर्स्थापित करने के स्थान पर जीवन को नष्ट किया। यह एक कठिनाई के रूप में उभरा है। तथापि, आपत्ति वैध नहीं है। सृष्टिकर्ता के पास सर्वसत्ताक अधिकार है एक अचेतन वस्तु को नष्ट कर दे ताकि एक महत्त्वपूर्ण आत्मिक शिक्षा दी जाए और इस प्रकार मनुष्य को अनन्त विनाश से बचाया जाए।

स.सेवक मंदिर को शुद्ध करता है (11:15-19)

11:15,16 अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरंभ में, प्रभु यीशु ने मंदिर आस-पास से व्यवसायवाद को खदेड़ा था (यूह.2:13-22)। अब जब उसकी सेवकाई समापन पर थी, तो उसने पुन: **मंदिर** के आंगन में प्रवेश किया और उन सबको बाहर खदेड़ दिया जो धार्मिक क्रियाकलापों से लाभ कमा रहे थे। यहां तक कि उसने **मंदिर में से** साधारण **बर्तन** को भी ले जाने न दिया।

11:17 यशायाह और यिर्मयाह के उद्धरणों को सम्मिश्रित करते हुए, उसने अपवित्रीकरण और व्यवसायवाद को श्राप दिया। परमेश्वर का अभिप्राय यह था कि मंदिर केवल इस्राएल के लिए नहीं परंतु, **सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर** बने (यशा.56:7)। परन्तु उन्होंने इसे एक धार्मिक बाजार, धोखेबाजों और ठगों का अड्डा बना दिया था (यिर्म.7:11)।

11:19 सांझ होते ही वह नगर से बाहर चला गया। मूल क्रिया का काल सुझाव देता है कि यह प्रभु की रीति थी, संभवत: सुरक्षा कारणों से। उसे अपना भय नहीं था। हमें अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि अपनी भेड़ों की सुरक्षा अर्थात् अपने चेलों की सुरक्षा प्रभु की सेवकाई का एक भाग था (यूह.17:6-19)। इसके अतिरिक्त उचित समय से पूर्व स्वयं को अपने शत्रुओं की इच्छाओं पर सौंप देना भी बेतुका होता।

द.फल-रहित अंजीर के पेड़ की शिक्षा (11:20-26)

11:20-23 अंजीर के पेड़ को श्राप देने के अगले **भोर** को चेले यरूशलेम की ओर जा रहे थे। यह जड़ तक **सूखा हुआ** था। जब **पतरस** ने इसे प्रभु को बताया, तो प्रभु ने बस इतना कहा, ''परमेश्वर पर विश्वास रखो।'' परंतु इन शब्दों का अंजीर के पेड़ से क्या संबंध? आगामी आयतें संकेत देती हैं कि प्रभु यीशु कठिनाईयों को दूर करने के एक माध्यम के रूप में विश्वास को बढ़ावा दे रहा था। यदि चेले **परमेश्वर पर विश्वास** रखें, तो वे फलहीनता की समस्या का सामना कर सकते हैं, और पहाड़ जैसी बाधाओं को हटा सकते हैं।

तथापि, ये आयतें किसी व्यक्ति को स्वयं की सुविधा या प्रशंसा के लिए आश्चर्यजनक सामर्थ को पाने हेतु प्रार्थना करने का अधिकार नहीं देती हैं। विश्वास का प्रत्येक कार्य परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर आधारित होना चाहिए। यदि हम जानते हैं कि किसी विशेष कठिनाई को हटाना परमेश्वर की इच्छा है, तो हम पूर्ण हियाव के साथ प्रार्थना कर सकते हैं कि वैसा ही हो। वास्तव में हम किसी भी विषय पर प्रार्थना कर सकते हैं, जब तक कि हमें हियाव है कि यह बाइबल में प्रकाशित परमेश्वर की इच्छा के अनुसार या आत्मा की आंतरिक गवाही के द्वारा है।

11:24 जब हम वास्तव में प्रभु के सम्पर्क में रहते हैं और आत्मा में प्रार्थना करते हैं, तो हम उत्तर प्राप्त होने से पूर्व ही उत्तर प्राप्त होने की निश्चयता पा सकते हैं।

11:25,26 परंतु प्रार्थना का उत्तर पाने की एक आधारभूत मांग है, एक क्षमाशील मन। यदि हम दूसरों के प्रति कठोर, पलटा लेने वाली भावना का पोषण करें, तो हम परमेश्वर से अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह हमारी सुने और उत्तर दे। यदि हमें क्षमा पाना है तो अवश्य ही हमें **क्षमा** करना होगा। यह उद्धार पाने के समय पापों की न्यायिक क्षमा का संदर्भ नहीं है; वह पूर्ण रूप से 'विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से' विषय है। यहां पर यह अपने संतानों के साथ परमेश्वर के पितृत्व व्यवहार का संदर्भ है। एक विश्वासी में अक्षमाशील मन **स्वर्गीय पिता** के साथ उसकी संगति को तोड़ता है और आशीषों के बहाव को रोकता है।

ई. सेवक के अधिकार को चुनौती (11:27-33)

जैसे ही वह **मंदिर** में पहुंचा, वैसे ही धार्मिक अगुवों ने प्रभु यीशु को छेड़ा और उसके अधिकार को दो प्रश्न पूछते हुए चुनौती दी : (1)"**तू ये काम किस अधिकार से करता है?**" (2) "**और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है कि तू ये काम करे?**" (अर्थात, मंदिर को शुद्ध करना, अंजीर के पेड़ को श्राप देना, और यरूशलेम में विजयोल्लास के साथ प्रवेश करना)। उन्हें आशा थी कि चाहे प्रभु यीशु कैसे भी उत्तर दे, वे उसे फंसा लेंगे। यदि वह परमेश्वर का पुत्र होने के कारण स्वयं के पास अधिकार होने की बात करता तो वे उन पर ईश-निन्दा का आरोप लगाते। यदि वह मनुष्यों से अधिकार प्राप्त होने की बात करता, तो वे उसे बदनाम करते। यदि वह परमेश्वर से अधिकार प्राप्त होने की बात करता, तो वे उस दावे को चुनौती देते, वे अपने आप को लोगों के लिए परमेश्वर-नियुक्त धार्मिक अगुवा समझते थे।

11:29-32 परंतु प्रभु **यीशु** ने एक प्रश्न पूछते हुए उन्हें उत्तर दिया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, ईश्वर द्वारा भेजा हुआ था या नहीं? (**यूहन्ना का बपतिस्मा** उसकी सम्पूर्ण सेवकाई का संदर्भ है।) वे उलझन में पड़ गए। यदि यूहन्ना की सेवकाई को तुच्छ ठहराते या उसे अस्वीकार करते, तो साधारण लोगों के क्रोधित होने का डर था, जो उस समय भी **यूहन्ना** को परमेश्वर का एक प्रवक्ता मानते थे।

11:33 जब उन्होंने अपनी अज्ञानता का बहाना बनाकर उत्तर देने से इंकार कर दिया, तो प्रभु ने भी अपने अधिकार पर वाद-विवाद करने से इंकार कर दिया। वे अग्रदूत के प्रत्यय-पत्र (प्रत्यायक) को स्वीकार करने के प्रति अनिच्छुक थे, तो वे स्वयं राजा के श्रेष्ठतर प्रत्यय-पत्र (प्रत्यायक) को कदाचित ही स्वीकार करेंगे!

फ.दुष्ट किसानों का दृष्टान्त (12:1-12)

12:1 हालांकि प्रभु ने यहूदी अधिकारियों के प्रश्न का उत्तर देने से इंकार कर दिया था, तौभी उनके साथ उसकी भिड़ंत समाप्त नहीं हुई थी। अब वह उन पर उनके द्वारा परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार करने के कारण **दृष्टान्तों** के रूप में एक डंकदार अभियोग लगाता है। वह **मनुष्य** जिसने **दाख की बारी लगाई** वह स्वयं परमेश्वर था। **दाख की बारी** वह प्राधिकार का स्थान था जिस पर उस समय इस्राएल का अधिकार था। **बाड़ा** मूसा की व्यवस्था थी, जो इस्राएलियों को अन्यजातियों से अलग करती थी और प्रभु के लिए उन्हें एक विशिष्ठ प्रजा के रूप में सुरक्षित रखती थी। **किसानों** से तात्पर्य, फरीसी, शास्त्री और प्राचीन जैसे धार्मिक अगुवों से था।

12: 2-5 नियमित अंतराल से परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल के पास संगति, पवित्रता और प्रेम की तलाश में अपने सेवक, भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। परंतु लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं को सताया और उनमें से कुछ को **मार डाला।**

12:6-8 अंतत: परमेश्वर ने अपने प्रिय **पुत्र** को भेजा। निश्चित रूप से वे उसका **आदर करेंगे**। परंतु उन्होंने नहीं किया। उन्होंने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा और अंतत: **उसे पकड़कर मार डाला।** इस प्रकार प्रभु ने अपनी मृत्यु की भविष्यद्वाणी की और अपने दोषी हत्यारों को उजागर किया।

12:9 परमेश्वर ऐसे दुष्ट व्यक्तियों के साथ **क्या करेगा?** वह उन्हें **नाश करेगा** और प्राधिकार के उस स्थान को **दूसरों को** दे देगा। यहां संभवत: **दूसरों** से तात्पर्य अन्यजातियों से या फिर अंतिम दिनों में मनफिराए शेष बचे हुए इस्राएलियों से है।

12:10-11 यह सब पुराना नियम पवित्रशास्त्र की पूर्णता में था। उदाहरण के लिए, भजन.118:22 में इस बात की भविष्यद्वाणी थी कि यहूदी अगुवों द्वारा उनकी भवन योजनाओं में मसीह को **निकम्मा** ठहराया जाएगा। उनके पास इस **पत्थर** के लिए कोई स्थान न होगा। परंतु अपनी मृत्यु के पश्चात्, वह मृतकों में से जिलाया जाएगा तथा परमेश्वर के द्वारा उसे सर्वोच्च स्थान दिया जाएगा। उसे परमेश्वर के भवन में **कोने का सिरा** बनाया जाएगा।

12:12 यहूदी अगुवों ने बात समझ ली। वे विश्वास करते थे कि भजन 118 मसीह के विषय बातें करता है। अब उन्होंने सुना कि प्रभु यीशु उसे अपने लिए लागू कर रहे थे। **उन्होंने उसे पकड़ना चाहा**, परंतु प्रभु का समय नहीं आया था। **लोगों** के द्वारा प्रभु यीशु का पक्ष लिया जा सकता था। अत: धार्मिक अगुवे थोड़े समय के लिए **उसे छोड़कर चले गए।**

ग.कैसर को और परमेश्वर को दो (12:13-17)

अध्याय 12 प्रभु पर फरीसियों, और हेरोदियों और शास्त्रियों द्वारा आक्रमण को सम्मिलित करता है। यह प्रश्नों का अध्याय है। (पद 9, 10, 14, 15, 16, 23, 24, 26, 28, 35, 37 देखिए।)

12: 13,14 उद्धारकर्ता के प्रति एक सर्वसामान्य घृणा ने कट्टर शत्रुओं, **फरीसियों और हेरोदियों** को अब एक साथ खड़ा किया। उन्होंने प्रभु को फुसलाकर ऐसा कुछ भी कहलवाने का भरसक प्रयत्न किया जिसे वे उसके विरुद्ध एक आरोप के रूप में प्रयोग कर सकें। अत: उन्होंने प्रभु यीशु से पूछा, रोमी शासन को **कर देना उचित** है कि नहीं।

कोई भी यहूदी, अन्यजाति शासन के आधीन रहने में *आनन्दित* नहीं था। फरीसी इससे क्रोध सहित घृणा करते थे, जबकि हेरोदियों ने कहीं अधिक उदार मत अपना लिया था। यदि प्रभु यीशु **कैसर** को कर देने का खुलकर समर्थन करता, तो वे कई यहूदियों को विमुख कर देता। यदि वह कैसर के विरुद्ध बोलता तो वे उसे कैसर के पास गिरफ्तारी और सुनवाई के लिए धकियाकर ले जाते।

12:15,16 प्रभु यीशु ने किसी से अपने पास **एक दीनार** लाने को कहा। (विदित रूप से उसके पास कोई सिक्का नहीं था)। सिक्के पर तिबिरियास कैसर की छाप थी, यहूदियों के लिए एक स्मरणार्थ कि वे पराजित और आधीन लोग थे। वे लोग क्यों इस परिस्थिति में थे? अपनी अविश्वासयोग्यता और पाप के कारण। उन्हें इस बात को स्वीकार करने के द्वारा दीन होना चाहिए था कि जिस सिक्के का वे प्रयोग करते थे उसमें एक अन्यजाति शासक की छाप थी।

12:17 प्रभु यीशु ने उनसे कहा,‘‘ **जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो।**’’ उनकी महान असफलता प्रथम क्षेत्र में नहीं, परंतु इस द्वितीय क्षेत्र में थी। यद्यपि अनिच्छा से, तौभी रोमी शासन को उन्होंने अपना कर (चुंगी) दिया था, परंतु अपने जीवन पर परमेश्वर के दावे को उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। सिक्के पर कैसर की छाप थी, अत: वह कैसर का था। मनुष्य पर परमेश्वर की छाप है – परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया (उत्प.1:26,27) – और इसलिए वह परमेश्वर का है। जिस शासन के आधीन एक विश्वासी रहता है, विश्वासी को उस शासन की आज्ञा माननी चाहिए और उसकी सहायता करनी चाहिए। उसे अपने शासकों के प्रति बुरी बात नहीं कहनी है, या उस शासन को उखाड़ फेंकने के लिए उसे कार्य नहीं करना है। उसे अपना कर (चुंगी) देना है और जो अधिकार में है उनके लिए प्रार्थना करनी है। यदि उसे ऐसा कुछ करने के लिए कहा जाए, जो मसीह के प्रति उसकी उच्चतर स्वामिभक्ति के विरुद्ध है, तो उसे इंकार करना है और दण्ड को सहना है। परमेश्वर का दावा अवश्य ही प्रथम स्थान पर रहना चाहिए। उन दावों को संभाले हुए, मसीही को संसार के सम्मुख सदैव अच्छी गवाही बनाई रखनी चाहिए।

ह.सदूकी और उनके पुनरुत्थान की पहेली (12:18-27)

12:18 सदूकी उस समय के उदारवादी या तर्कवादी लोग थे। वे शारीरिक **पुनरुत्थान** के विचार का ठट्ठा उड़ाते थे। अत: वे इस सम्पूर्ण विचार के उपहास के प्रयत्न में एक अनर्गल कहानी के साथ प्रभु के पास आए।

12:19 उन्होंने प्रभु यीशु को स्मरण दिलाया कि **मूसा** की व्यवस्था ने इस्राएल में विधवाओं के लिए विशेष प्रबंध किया है। परिवार के नाम को बनाए रखने और सम्पत्ति को परिवार में ही रखने के लिए, व्यवस्था में यह मांग थी कि यदि कोई व्यक्ति नि:संतान मर जाए तो **उसका भाई** उसकी विधवा से विवाह करे (व्य.वि. 25:5-10)।

12:20-23 यहां पर एक काल्पनिक (विलक्षण) घटना थी, जिसमें एक स्त्री ने एक के बाद एक **सात** भाईयों से विवाह किया। तत्पश्चात् **सब के पीछे** वह भी मर गई। अब उनका चतुराई भरा प्रश्न! ‘‘पुनरुत्थान में **वह उनमें से किसकी पत्नी होगी**?’’

12:24 वे सोचते थे कि वे चतुर थे; उद्धारकर्ता ने उन्हें बताया कि वे **पवित्रशास्त्र** के प्रति, जो पुनरुत्थान की शिक्षा देता है और **परमेश्वर की सामर्थ के प्रति** जो मृतकों को जिलाता है, अथाह रूप से अज्ञानी थे।

12:25 प्रथमत: उन्हें यह जानना चाहिए कि स्वर्ग में **विवाह** संबंध नहीं होंगे। विश्वासी एक दूसरे को

पहचानेंगे और पुरुष तथा स्त्री के रूप में अपनी विशिष्टताओं को नहीं खोएंगे, परंतु वे **न विवाह करेंगे** और **न विवाह** में दिए जाएंगे। इस सम्बन्ध में वे **स्वर्ग में दूतों** के समान होंगे।

12:26,27 तब हमारा प्रभु सदूकियों को, जो मूसा की पुस्तकों को पुराना नियम की शेष पुस्तकों से ऊपर आंकते थे, जलती **झाड़ी** के पास **मूसा** की कथा की ओर वापस ले गया (निर्ग.3:6)। वहां परमेश्वर ने स्वयं को **इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर** बताया। उद्धारकर्ता ने इसका प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया कि परमेश्वर **मरे हुओं का नहीं वरन जीवतों का परमेश्वर** था।

परंतु ऐसा कैसे हुआ? जब परमेश्वर मूसा पर प्रकट हुआ तो क्या इब्राहीम, इसहाक और याकूब मर नहीं गए थे। फिर परमेश्वर कैसे जीवितों का परमेश्वर है?

तर्क कुछ इस प्रकार प्रतीत होता है:

1. परमेश्वर ने कुलपतियों से देश (भूमि) और मसीह के विषय प्रतिज्ञाएं की थीं।
2. ये प्रतिज्ञाएं उनके जीवनकाल में पूर्ण नहीं हुई थीं।
3. जब परमेश्वर ने जलती झाड़ी के पास मूसा से बातें की तो इन कुलपतियों के शरीर कब्र में थे।
4. तब भी परमेश्वर ने स्वयं को जीवितों का परमेश्वर बताया।
5. उसे इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करना अवश्य है।
6. अत: परमेश्वर के चरित्र के ज्ञान से पुनरुत्थान एक निरपेक्ष (सुनिश्चित) मांग है।

अत: सदूकियों के लिए प्रभु के विदाई वचन थे, **"अत: तुम बड़ी भूल में पड़े हो।"**

ई.महान आज्ञा (12:28-34)

12:28 हमारे प्रभु के द्वारा अपने आलोचक के प्रश्न को दक्षता से संभालने से प्रभावित **शास्त्रियों में से एक** ने प्रभु **यीशु से पूछा** कि सबसे मुख्य **आज्ञा कौन सी है?** यह एक अच्छा (ईमानदार) प्रश्न था, और एक प्रकार से, जीवन का सबसे बुनियादी प्रश्न। वह वास्तव में मनुष्य के अस्तित्व के मुख्य उद्देश्य के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त कथन के लिए प्रश्न कर रहा था।

12:29 प्रभु यीशु ने व्यवस्थाविवरण 6:4 **"हे इस्राएल सुन! प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है,"** से लिए गए यहूदियों के एक विश्वास-कथन *शेमा* को उद्धरित करते हुए प्रारंभ किया।

12:30 तत्पश्चात् उन्होंने परमेश्वर के प्रति मनुष्य के उत्तरदायित्व का सारांश दिया : परमेश्वर से सम्पूर्ण **मन, प्राण, बुद्धि** और शक्ति से **प्रेम** रखना। मनुष्य के जीवन में परमेश्वर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त होना है। किसी अन्य प्रेम को परमेश्वर के प्रेम का प्रतिस्पर्धी बनने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

12:31 दस आज्ञाओं का शेष आधा हिस्सा अपने **पड़ोसी** से अपने **समान प्रेम** रखने शिक्षा देता है। परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम, स्वयँ के प्रति हमारे प्रेम से *अधिक* होना चाहिए, और अपने पड़ोसी से अपने *समान* प्रेम। इस प्रकार, वह जीवन जिसका वास्तव में मूल्य है पहले परमेश्वर से सम्बद्ध है, तत्पश्चात् दूसरों से। भौतिक वस्तुओं का उल्लेख नहीं है। परमेश्वर महत्वपूर्ण है, और लोग भी महत्वपूर्ण हैं।

12:32,33 शास्त्री ने हृदय से सहमति देते हुए सराहनीय स्पष्टता से कहा कि परमेश्वर से और अपने **पड़ोसी** से **प्रेम** रखना रीति-रिवाजों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। उसने महसूस किया कि लोग बिना आंतरिक, व्यक्तिगत पवित्रता के धार्मिक अनुष्ठानों से गुजर सकते थे और भक्ति का सार्वजनिक प्रदर्शन कर सकते थे। उसने माना कि परमेश्वर इस बात में रुचि रखते हैं कि मनुष्य अंदर से और साथ ही साथ बाहर से क्या है।

12:34 जब यीशु ने इस अनूठे कथन को सुना, तो उसने शास्त्री से कहा कि **वह परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं** था। राज्य की सच्ची प्रजा परमेश्वर को, अपने संगी-पुरुषों को या स्वयं को बाह्य धर्म के द्वारा धोखा देने का प्रयत्न नहीं करती। इस बात को समझते हुए कि परमेश्वर हृदय को देखते हैं, राज्य की सच्ची प्रजा पाप से शुद्धिकरण के लिए और उसको प्रसन्न करने योग्य जीवन जीने की सामर्थ पाने के लिए परमेश्वर के पास जाती है। इसके पश्चात्, प्रभु यीशु से सूचक प्रश्न पूछने के द्वारा उन्हें फंसाने का **और किसी को साहस न हुआ।**

ज.दाऊद का पुत्र दाऊद का प्रभु है (12:35-37)

शास्त्रियों ने सदैव शिक्षा दी थी कि मसीह **दाऊद** का वंशज होगा। यद्यपि यह सत्य था, तौभी यह सम्पूर्ण सत्य नहीं था। अत: अब मंदिर के आंगन में अपने चारों ओर एकत्रित लोगों के सम्मुख प्रभु यीशु ने एक समस्या की चर्चा चलाई। भजन संहिता 110:1 में, दाऊद ने मसीह को अपने **प्रभु** के रूप में बताया। यह कैसे हो सकता था? एक ही समय में मसीह दाऊद का *पुत्र* और उसका *प्रभु* कैसे हो सकता था? हमारे लिए उत्तर स्पष्ट है। मसीह मनुष्य और परमेश्वर दोनों होगा। दाऊद के **पुत्र** के रूप में, वह मनुष्य होगा। दाऊद के **प्रभु** के रूप में वह ईश्वर होगा।

भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे। भले ही वे लोग तथ्य को पूर्णत: न समझ पाए हों, तौभी वे विदित रूप से इसे ग्रहण करने के इच्छुक थे। परंतु फरीसियों और शास्त्रियों के विषय कुछ भी नहीं कहा गया है। उनकी शांति अनिष्ट-सूचक थी।

क.शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी (12:38-40)

12:38,39 शास्त्री बाह्य रूप से धार्मिक थे। वे लम्बे-**लम्बे चोगे** पहनकर फिरना पसंद करते थे। यह उन्हें सामान्य लोगों से अलग दिखाता था और उन्हें एक धार्मिक रूप प्रदान करता था। वे सार्वजनिक स्थानों में अति आदरयुक्त नामों से नमस्कार कहलवाना पसंद करते थे! वे आराधनालयों में **मुख्य-मुख्य आसन** चाहते थे, मानो भौतिक स्थिति का भक्ति से कोई सम्बन्ध हो। वे न केवल धार्मिक ख्याति परंतु साथ ही सामाजिक प्रतिष्ठा भी चाहते थे। वे **भोज में मुख्य-मुख्य स्थान** चाहते थे।

12:40 आंतरिक रूप से वे लालची और कुटिल थे। वे धनी होने के लिए **विधवाओं** के घरों और जीविका को लूट लेते थे, यह बहाना करते हुए कि धन प्रभु के लिए था! वे **बड़ी देर तक प्रार्थना** करते थे - व्यर्थता के अति उदान्त शब्द-मात्र शब्दों की प्रार्थना। संक्षेप में, वे *विशिष्ठता* (लम्बे-लम्बे चोगे); *लोकप्रियता* (नमस्कार); *प्राधान्य* (मुख्य-मुख्य आसन); *प्राथमिकता* (मुख्य-मुख्य स्थान); *सम्पत्ति* (विधवाओं के घर); *बनावटी भक्ति* (बड़ी देर तक प्रार्थना), पसंद करते थे।

ल.विधवा की दो दमड़ियाँ (12:41-44)

इस विधवा की भक्ति, शास्त्रियों की धनलोलुपता के तीक्ष्ण विरोधाभास में थी। वे विधवाओं के घरों को निगल गए; उसने **जो कुछ उसका था** उसे प्रभु को दे दिया। यह घटना प्रभु की सर्वज्ञता को दिखाती है। मंदिर के **भण्डार** के लिए पेटी में **धनवानों** को काफी बड़ा दान डालते देखकर प्रभु ने जान लिया कि उनका देना बलिदान को नहीं दर्शाता था। उन्होंने **अपने धन की बढ़ती में से डाला था।** इस बात को भी जानते हुए कि जो दो दमड़ियाँ उसने डाली वे उसकी **सारी जीविका** थी, प्रभु ने घोषणा की कि उस विधवा ने शेष समस्त लोगों के सकल दान से **बढ़कर** डाला।

यदि आर्थिक कीमत को देखें, तो उसने बहुत कम दिया। परंतु प्रभु हमारे उद्देश्य, हमारे साधनों और कितना हम शेष रख छोड़ते हैं आदि बातों के द्वारा हमारे द्वारा दी गई भेंट का आंकलन करते हैं। यह बात उन लोगों के लिए एक महान उत्साह की बात है जिनके पास कुछ ही भौतिक सम्पत्ति है, परंतु जिनमें प्रभु को देने की तीव्र इच्छा है। यह आश्चर्य का विषय है कि विधवा के उदाहरण का अनुसरण (नकल) किए बिना हम कैसे उसके कार्य को सही ठहरा सकते हैं! जिन बातों के विषय हम कहते हैं कि हम उन पर विश्वास करते हैं, यदि हमने वास्तव में उन पर विश्वास किया होता, तो हम ठीक वैसा ही करते जैसा उसने किया। उसके दान ने उसके इस विश्वास को अभिव्यक्त किया कि सब कुछ प्रभु का है, कि वह सब कुछ पाने के योग्य है, सब कुछ अवश्य ही उसके पास होना चाहिए। आज कई मसीही उसकी आलोचना करेंगे कि उसने अपने भविष्य के लिए कुछ नहीं रखा। क्या इस घटना ने दूरदर्शिता और बुद्धिमानी (विवेक) की कमी को दर्शाया? मनुष्य ऐसा ही तर्क देंगे। परंतु यह विश्वास का जीवन है - वर्तमान में सब कुछ परमेश्वर के कार्य के लिए डाल देना और भविष्य के लिए उस पर भरोसा रखना। क्या प्रभु ने उनके लिए प्रबंध करने की प्रतिज्ञा नहीं दी जो पहले परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करते हैं (मत्ती.6:33)?

उग्र? क्रांतिकारी? यदि हम यह न देखें कि मसीह की शिक्षाएं उग्र और क्रांतिकारी हैं, तो हम उसकी सेवकाई के

महत्व से चूक गए हैं।

VI. सेवक का जैतून-पर्वत संवाद (अध्याय 13)

अ.प्रभु यीशु मंदिर के विनाश की भविष्यद्वाणी करते हैं (13:1,2)

13:1 जिस समय प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु से पूर्व अंतिम बार **मंदिर** क्षेत्र से निकल रहा था, उस समय **उसके चेलों में से एक** ने मंदिर और उसके आसपास के भवन की भव्यता के संबंध में उसके उत्साह को जगाने का प्रयास किया। चेले वास्तुशिल्पीय उपलब्धियों को देखने में व्यस्त थे, जिसमें विशालकाय चट्टानों को उठाना सम्मिलित था।

13:2 उद्धारकर्ता ने संकेत दिया कि वस्तुएं शीघ्र ही नष्ट होने वाली थीं। जब 70 ईसवी में रोमी सेना यरूशलेम पर आक्रमण करेगी तब **पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा**। ऐसी वस्तुओं में क्यों व्यस्त रहा जाए जो मात्र ढलती छाया हैं।

ब. दु:ख का आरम्भ (13:3-8)

जैतून के पहाड़ पर अपने संवाद में प्रभु ने चेलों के ध्यान को ज्यादा महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर मोड़ा। इन भविष्यद्वाणियों में से कुछ 70 ईसवी में यरूशलेम के विनाश को चिन्हित करती हुई प्रतीत होती हैं; परंतु अधिकांश भविष्यद्वाणियां स्पष्टत: इस घटना के परे क्लेशकाल तक और सामर्थ और महिमा में मसीह के व्यक्तिगत आगमन तक जाती हैं। इस संवाद के *आदर्श-वाक्य* जो प्रत्येक युग के विश्वासियों के लिए लागू होता है, अग्रलिखित हैं : (1) *चौकस रहो* (पद 5,23,33); (2) *न घबराना* (पद 7); (3) *धीरज धरे रहेगा* (पद 13); (4) *प्रार्थना करो* (पद 18,33); (5) *जागते रहो* (पद 9,33,35,37)।

13:3,4 इस संवाद का प्रारम्भ **पतरस, याकूब, यूहन्ना, और अन्द्रियास** के प्रश्न के द्वारा हुआ। मंदिर **कब** नष्ट होगा, और भविष्यद्वाणी की घटना के पहले **क्या चिन्ह होगा**? प्रभु के उत्तर में उत्तरकालीन मंदिर के विनाश की भविष्यद्वाणी सम्मिलित थी, जो क्लेशकाल के समय उसके द्वितीय आगमन से पूर्व घटित होगी।

13:5,6 सबसे पहली बात, उन्हें **चौकस** रहना था कि **कोई** उन्हें मसीह होने का दावा करके **न भरमाए। बहुतेरे** झूठे मसीह प्रगट होंगे, जैसा कि अनेक पंथों का अपना एक ख्रीष्ट-विरोधी।

13:7,8 दूसरी बात, उन्हें **लड़ाइयां और लड़ाईयों की चर्चा** की व्याख्या अन्त के समय के चिन्ह के रूप में नहीं करनी चाहिए। मध्यवर्ती काल में प्रारंभ से अन्त तक अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष होगा। इसके अतिरिक्त महान प्राकृतिक विभीषिकाएं (तबाहियां) होंगी – **भूकम्प, अकाल**। ये अपूर्व प्रसव-पीड़ा के काल की घोषणा में मात्र प्राथमिक प्रसव पीड़ाएं होंगी।

स.चेलों का सताव (13:9-13)

13:9 तीसरी बात, प्रभु ने उन लोगों के लिए जो उसके लिए गवाही में दृढ़प्रतिज्ञ रहेंगे, महान व्यक्तिगत परीक्षाओं की भविष्यद्वाणी करता है। उन्हें धार्मिक और न्यायिक अदालत में सुनवाई के लिए खड़ा किया जाएगा।

यद्यपि यह भाग समस्त समयकाल की मसीही गवाही के लिए लागू होता है, तौभी ऐसा प्रतीत होता है कि यहां उन 1,44,000 यहूदी विश्वासियों का विशेष संदर्भ है जो मसीह के राज्य करने आने से पूर्व राज्य के सुसमाचार को धरती के समस्त देशों तक ले जाएंगे।

13:10 पद 10 का प्रयोग यह शिक्षा देने के लिए *नहीं* करना चाहिए कि *मेघारोहण से पूर्व* **अवश्य है . . .** कि **सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए**। सुसमाचार को समस्त संसार में प्रचार करना **चाहिए**, और संभवत: ऐसा *होगा,* परंतु यह कहना कि यह *अवश्य होगा,* उस बात को कहना है, जिसे बाइबल नहीं कहती है। अपने संत जनों के लिए मसीह के आगमन (मेघारोहण) के पूर्व किसी भी भविष्यद्वाणी के पूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है; प्रभु यीशु कलीसिया को लेने के लिये किसी भी क्षण (बादलों पर) आ सकता है!

13:11 प्रभु ने प्रतिज्ञा दी कि उसके लिए सताए गए विश्वासियों को सुनवाई के समय अपनी प्रतिरक्षा में ईश्वरीय सहायता दी जाएगी। उन्हें अपने मुकद्दमे को पहले से तैयार करने की आवश्यकता नहीं होगी; संभवत: ऐसा करने के लिए समय नहीं होगा। **पवित्र आत्मा** उन्हें एकदम सही शब्द देगा। इस प्रतिज्ञा का प्रयोग आज संदेश या सुसमाचार तैयार न करने के बहाने के रूप में नहीं

करना चाहिए, परंतु यह संकट के समय के लिए अलौकिक सहायता की निश्चयता है। यह शहीदों के लिए प्रतिज्ञा है, सेवकों के लिए नहीं!

13:12,13 क्लेशकाल के दिनों का एक और गुण होगा – उन लोगों के प्रति व्यापक विश्वासघात जो उद्धारकर्ता के प्रति निष्ठावान हैं। विश्वासियों के विरुद्ध उनके परिवार के सदस्य सूचना देने वालों के रूप में कार्य करेंगे। मसीही–विरोधी भावना की एक महा–तरंग संसार को ढ़ांप लेगी। प्रभु यीशु के प्रति सच्चे बने रहने के लिए हियाव (साहस) की आवश्यकता होगी, **पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा**। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता है कि अपने धीरज के कारण वे अनन्त उद्धार को पाएंगे; यह एक झूठा सुसमाचार होगा। न ही इसका अर्थ यह हो सकता है कि विश्वासयोग्य विश्वासी क्लेशकाल के समय शारीरिक मृत्यु से बचाए जाएंगे, क्योंकि हम दूसरी जगहों में पढ़ते हैं कि बहुतेरे अपनी गवाही पर अपने लहू के द्वारा मुहर लगायेंगे। संभवत: इसका अर्थ यह है कि अन्त तक धीरज धरना वास्तविकता को प्रामाणित करेगा, यह उन्हें *चित्रित* करेगा जो वास्तव में *उद्धार पाए हुए* हैं।

द. महाक्लेशकाल (13:14–23)

13:14–18 पद 14 क्लेशकाल का मध्य बिन्दु, *महाक्लेशकाल* के आरम्भ को चिन्हित करता है। हम इस बात को **दानिय्येल** 9:27 के साथ तुलना करने पर जानते हैं। उस समय, यरूशलेम के मन्दिर में एक अति घृणित मूर्ति स्थापित की जाएगी। मनुष्यों को इसकी आराधना करने या घात हो जाने के लिए बाधित किया जाएगा। नि:संदेह, सच्चे विश्वासी इंकार करेंगे।

इस मूर्ति की स्थापना महान सताव के आरम्भ का संकेत देगी। जो बाइबल पढ़ते और मानते हैं वे जान जायेंगे कि **यहूदिया** से भागने का समय आ पहुंचा है। व्यक्तिगत सामानों को एकत्रित करने का समय नहीं होगा। **गर्भवती** महिलाएं और **दूध पिलाती** माताएं विशेष प्रतिकूल परिस्थितियों में होंगी। यदि यह **जाड़े** में हो, तो संकट में अतिरिक्त वृद्धि होगी।

13:19 यह भूतकाल में या भविष्यकाल में किसी भी समय की अपेक्षा महान **क्लेश** का समय होगा। यह *महाक्लेशकाल* है। यहां प्रभु यीशु मसीह उस सामान्य प्रकार के क्लेश की बात नहीं कर रहा है जिसका सामना प्रत्येक युग के विश्वासियों ने किया है। यह संकट का एक ऐसा समय है जो अपनी तीव्रता में अद्वितीय है।

ध्यान दीजिए कि **क्लेश** में प्राथमिक रूप से यहूदी हैं। हम मंदिर (पद 14, मत्ती.24:15 से तु.की.) और यहूदिया (पद 14) के विषय पढ़ते हैं। यह याकूब के संकट का समय है (यिर्म.30:7)। यहां कलीसिया दृश्यपटल में नहीं है। कलीसिया तो प्रभु का दिन प्रारम्भ होने से पूर्व ही स्वर्ग में उठा ली जाएगी (1 थिस्स. 4:13–18; 1 थिस्स. 5:1–3 से तु.की.)।

13:20 परमेश्वर के क्रोध का कटोरा उन दिनों में संसार पर उण्डेला जाएगा। यह आपदा, दुर्व्यवस्था, और रक्तपात का समय होगा। वास्तव में, हत्याकाण्ड (संहार) इतना भयानक होगा कि परमेश्वर अलौकिक रूप से दिन के प्रकाश को कम करेंगे, अन्यथा **कोई भी प्राणी नहीं** बच पाएगा।

13:21,22 महाक्लेशकाल में पुन: **झूठे** मसीह उठ खड़े होंगे। लोग इतने हताश होंगे कि वे उन्हें सुरक्षा की प्रतिज्ञा देने वाले किसी भी व्यक्ति की ओर मुड़ेंगे। परंतु विश्वासियों को ज्ञात होगा कि मसीह चुपचाप या बिना घोषणा किए हुए नहीं आएगा। भले ही ये **झूठे मसीह** अलौकिक आश्चर्यकर्म करें (जो कि वे करेंगे), तौभी **चुने हुए** भरमाए न जाएंगे। वे जान जाएंगे कि ये आश्चर्यकर्म शैतान द्वारा प्रेरित हैं। आश्चर्यकर्मों का ईश्वरीय होना आवश्यक नहीं है। वे प्रकृति के ज्ञात नियमों से परे परामानवीय विचलन को दर्शाते हैं, परंतु ये शैतान, स्वर्गदूतों, या दुष्टात्माओं के कार्य भी हो सकते हैं। पाप के पुरुष को आश्चर्यकर्म करने की शैतानी सामर्थ दी जाएगी (2 थिस्स.2:9)।

13:23 अत: विश्वासियों को **चौकस** रहना और पहले से सावधान रहना चाहिए।

इ. द्वितीय आगमन (13:24–27)

13:24,25 **उस क्लेश के बाद**, आकाश में विस्मयकारी विक्षोभ (गड़बड़ियाँ) होंगे। अंधकार पृथ्वी को दिन–रात ढांपे रहेगा। **आकाश के तारागण गिरने लगेंगे; और आकाश की शक्तियां** (वह बल जो

तारकीय पिण्डो को कक्ष में बनाए रखती है) **हिलाई जाएंगी।**

13:26,27 तब भय-ग्रसित संसार के लोग **मनुष्य के पुत्र को** धरती पर वापस **आते देखेंगे**, इस बार एक दीन नासरत निवासी के रूप में नहीं परंतु महिमित विजेता के रूप में। वह असंख्य स्वर्गदूतों और महिमा प्राप्त संत जनों के साथ **बादलों में** आएगा। यह दुर्दमनीय सामर्थ और चकाचौंध कर देने वाली महिमा (वैभव) का दृश्य होगा। प्रभु **अपने चुने हुए लोगों** को इकट्ठा करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, अर्थात् उन सबको इकट्ठा करने के लिए जिन्होंने क्लेशकाल में उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक – चीन से कोलम्बिया तक – वे धरती पर प्रभु के हजार वर्ष के अद्‌भुत शासन (राज्य) की आशीषों का आनन्द उठाने आएंगे। तथापि, उनके शत्रु उसी समय नाश किए जाएंगे।

फ. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त (13:28-31)

13:28 **अंजीर का पेड़** इस्राएल राष्ट्र के लिए एक प्रतीक (या रूपक) है। प्रभु यीशु ने यहां शिक्षा दी कि उसके द्वितीय आगमन से पूर्व अंजीर के पेड़ से **पत्ते निकलने** लगेंगे। 1948 में, इस्राएल का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में निर्माण हुआ। आज यह राष्ट्र विश्व-गतिविधियों में अपने प्रभाव को काम में लाता है, जो कि उसके आकार के अनुपात से पूर्णत: बाहर है। कहा जा सकता है कि इस्राएल के ''पत्ते निकलने लगे है।'' जैसा कि अभी तक फल नहीं है; वास्तव में, फल तब तक नहीं होंगे जब तक मसीह उन लोगों के पास न लौटे जो उसे स्वीकार करने के इच्छुक हैं।

13:29 इस्राएल राष्ट्र का निर्माण और विकास हमें बताता है कि राजा[21] **निकट है – द्वार ही पर है**। यदि राज्य करने के लिए उसका आगमन इतना निकट है, तो फिर कलीसिया के लिए उसका आगमन कितना निकट होगा!

13:30 पद 30 को बहुधा इस अर्थ में समझा गया है कि इस अध्याय में भविष्यद्वाणी की गई समस्त बातें मसीह के दिन के लोगों के जीवित रहते ही पूरी होतीं क्योंकि कई घटनाएं, विशेषत: पद 24-27, उस समय घटित ही नहीं हुईं। अन्य इसे इस अर्थ में समझते हैं कि जब अंजीर के पेड़ से पत्ते निकले उस समय की जीवित **पीढ़ी (लोग)**, अर्थात् जब 1948 में इस्राएल राष्ट्र का निर्माण हुआ, उस समय की पीढ़ी दूसरे आगमन को देखेगी। हम एक तीसरे मत को प्राथमिकता देते हैं **यह पीढ़ी (लोग)** का संभवत: अर्थ है ''यह जाति''। हम विश्वास करते हैं कि इसका अर्थ है, ''अविश्वास और मसीह के तिरस्कार की विशेषता लिए यह यहूदी जाति''। इतिहास की गवाही यह है कि ''यह पीढ़ी (लोग)'' गुजर *नहीं* गई। विशेष लोगों के रूप में यह राष्ट्र न केवल विद्यमान है, परंतु प्रभु यीशु के प्रति गहरी पैठी हुई शत्रुता में भी बना हुआ है। प्रभु यीशु ने भविष्यद्वाणी की कि यह राष्ट्र और इसकी राष्ट्रीय विशेषता उसके द्वितीय आगमन तक बने रहेंगे।

13:31 हमारे प्रभु ने अपनी भविष्यद्वाणी की प्रत्येक बातों की दृढ़ निश्चयता पर जोर दिया। वायुमण्डलीय **आकाश** और तारकीय **आकाश टल जाएंगे। पृथ्वी** स्वयं पिघल जाएगी (विघटित हो जाएगी)। परंतु उसके द्वारा कही गई प्रत्येक बात पूरी होगी।

ग. अज्ञात दिन और घड़ी (13:32-37)

13:32 प्रभु यीशु ने कहा, ''**उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परंतु केवल पिता।**'' यह सर्वज्ञात है कि सुसमाचार के शत्रुओं के द्वारा इस पद का प्रयोग इस बात को सिद्ध करने के लिए किया जाता रहा है कि प्रभु यीशु हमारे समान सीमित-ज्ञान के एक मनुष्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। इसका प्रयोग गंभीर परंतु विभ्रान्त विश्वासियों द्वारा भी यह दर्शाने के लिए किया गया है जब प्रभु यीशु इस संसार में एक मनुष्य के रूप में आया तो उसने अपने आपको ईश्वरत्व के गुणों से शून्य(रिक्त)कर दिया।

इन दोनों व्याख्याओं में से कोई भी सही नहीं है। प्रभु यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों था और है (और सदाकाल तक रहेगा)। उसमें ईश्वरत्व के समस्त गुण और सिद्ध मनुष्यत्व के समस्त अभिलक्षण (विशेषताएं) थे। यह सत्य है कि उसका ईश्वरत्व मांस की एक देह में ढंपा हुआ था, फिर भी यह वहां था। ऐसा कोई भी समय नहीं रहा, जब वह पूर्ण परमेश्वर नहीं था।

फिर उसके विषय में कैसे कहा जा सकता है कि वह अपने द्वितीय आगमन के समय को नहीं जानता है? हम विश्वास करते हैं कि उत्तर की कुंजी यूहन्ना 15:15 में पाई जाती है: ''. . . दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है . . .।'' एक सिद्ध दास के रूप में प्रभु यीशु को अपने आगमन के समय को **जानने का कार्य नहीं सौंपा गया था** (यूह. 12:50; 17:8)। परमेश्वर के रूप में, नि:संदेह, वह इसे जानता है। परंतु एक दास के रूप में उसे इसे दूसरों पर प्रकाशित करने के उद्‌देश्य से जानने का कार्य नहीं सौंपा गया था। जेम्स एच. ब्रुक्स इसे इस प्रकार समझाते हैं:

यह हमारे प्रभु की ईश्वरीय सर्वज्ञता का इंकार नहीं है, परंतु मात्र एक पुष्टि है कि मानव छुटकारे के इस युग में ''उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है,'' उसका कार्य नहीं था (प्रेरित 1:7)। प्रभु यीशु जानता था कि वह दुबारा आएगा, और बहुधा उसने अपने द्वितीय आगमन के संबंध में बातें की, परंतु एक पुत्र के रूप में उसके पद के लिए यह उचित नहीं था कि वह अपने आगमन की तिथि का निर्धारण करे, और इस कारण वह इसे अपने चेलों के सम्मुख सतत् अपेक्षा और चाह के एक विषय के रूप में रोके रख सका।[22]

13:33-37 यह अध्याय प्रभु की वापसी के विचाराधीन जागते रहने और प्रार्थना करने के उपदेश के साथ समाप्त होता है। यह तथ्य कि हम ठहराए हुए समय को **नहीं जानते**, हमें यह सचेत रखने वाला होना चाहिए।

इस प्रकार की एक परिस्थिति प्रतिदिन के जीवन में सामान्य है। एक व्यक्ति अपने घर से एक लंबी यात्रा पर जाता है। वह अपने सेवकों को निर्देश देता है और पहरेदार को भी अपनी वापसी के लिए सतर्क रहने को कहता है। प्रभु यीशु ने स्वयं को उस यात्रा करनेवाले मनुष्य से जोड़ा। वह रात्रि के किसी भी पहर में आ सकता है। पहरेदार के रूप में सेवा देते उसके लोग **सोते** हुए नहीं पाए जाने चाहिए। अत: उसने इस शब्द को अपने समस्त लोगों के लिए दिया : ''जागते रहो!''

VII. सेवक की वेदना और मृत्यु (अध्याय 14,15)

अ.प्रभु यीशु की हत्या का षड़यंत्र (14:1,2)

उस महत्वपूर्ण सप्ताह का यह दिन बुधवार का दिन था। **दो दिन** बाद **फसह** होगा, जिसके साथ प्रारंभ होगा सात दिनों का **अखमीरी रोटी का पर्व**। धार्मिक अगुवे प्रभु यीशु को नाश करने के लिए कृतसंकल्पित थे, परंतु इसे धार्मिक अवकाश के दिनों में नहीं करना चाहते थे क्योंकि लोगों में से कई उस समय भी यीशु को एक भविष्यद्वक्ता मानते थे।

यद्यपि **प्रधान याजक और शास्त्री** निश्चय किए हुए थे कि वे उसे **पर्व के दिन नहीं** मारेंगे, तौभी ईश्वरीय पूर्वप्रबंध ने उनके विरुद्ध निर्णय दिया, और फसह का मेमना ठीक उसी समय वध किया गया (मत्ती 26:2 देखिए)।

ब.बैतनिय्याह में यीशु का अभिषेक (14:3-9)

जैसे एक जौहरी एक हीरा को काले मखमल में रखता है, वैसे ही पवित्र आत्मा और उसका मानवीय लेखक मरकुस धार्मिक श्रेणीबद्ध संगठन और यहूदा के काले षड़यंत्र के बीच हमारे प्रभु के प्रति एक स्त्री के प्रेम की चमक को कुशलता से दर्शाता है।

14:3 शमौन कोढ़ी ने संभवत: अपने चंगा होने के धन्यवाद स्वरूप उद्धारकर्ता के सम्मान में एक भोज दिया। एक अनाम स्त्री (संभवत: बैतनिय्याह की मरियम, यूह.12:3) ने किसी **बहुमूल्य इत्र** से प्रभु यीशु के **सिर** का उदारता से अभिषेक किया। उसके प्रति उसका प्रेम महान था।

14:4,5 अतिथियों में से **कोई-कोई** सोचने लगे कि यह एक भयंकर बर्बादी थी। वह उतावली और अपव्ययी थी। उसने इत्र को क्यों नहीं **बेचा** और धन को **कंगालों में** क्यों नहीं बांटा? (**तीन सौ दीनार** एक वर्ष की मजदूरी के तुल्य थे)। लोग आज भी जीवन के एक वर्ष को प्रभु को देना बर्बादी समझते

हैं। सम्पूर्ण जीवन प्रभु को देने को वे और कितना अधिक बर्बादी समझेंगे!

14:6-8 प्रभु **यीशु** ने उनकी कुड़कुड़ाहट को डांटा। उस स्त्री ने उद्धारकर्ता को यह श्रद्धांजलि (उपहार) देने के अपने सुनहरे अवसर को समझ लिया था। यदि वे कंगालों के लिए इतने चिन्तित थे, तो वे उनकी सहायता के लिए सदैव योग्य रहेंगे, क्योंकि **कंगाल सदा** उपस्थित हैं। परंतु प्रभु शीघ्र ही मरेगा और गाड़ा जाएगा। यह स्त्री इस दया को तब दिखाना चाहती थी, जब वह दिखा सकती थी। वह मृत्यु के समय संभवत: उसकी **देह** की देखभाल करने में समर्थ न हो, अत: वह प्रेम उसी समय दिखा देगी जब वह जीवित ही था।

14:9 उस इत्र की सुगन्ध हमारी पीढ़ी तक पहुंचती है। प्रभु यीशु ने कहा कि उसे समस्त संसार में स्मरण किया जाएगा। उसे स्मरण किया गया है -सुसमाचार के अभिलेखों के द्वारा।

स. यहूदा का विश्वासघात (14:10,11)

स्त्री ने उद्धारकर्ता को उच्च सम्मान दिया। इसके विपरीत **यहूदा** ने उसे बहुत हल्का आंका। यद्यपि वह प्रभु यीशु के साथ कम से कम एक वर्ष रहा, और प्रभु से उसने दया ही को पाया था, तौभी अब यहूदा आंख बचाकर प्रधान याजकों के पास इस निश्चय के साथ गया कि परमेश्वर के पुत्र को उनके **हाथ पकड़वा दे**। उन्होंने उसे उसके विश्वासघात के लिए कुछ देने का प्रस्ताव रखकर, इस प्रस्ताव को उसने आनंदपूर्वक लपक लिया। अब उसे मात्र विस्तृत विवरण को कार्यरूप में परिणित करना था।

द. फसह की तैयारी (14:12-16)

यद्यपि ठीक-ठीक कालानुक्रम निश्चित नहीं है, तौभी संभवत: हम फसह-सप्ताह के गुरुवार को आ पहुंचे हैं। चेलों ने कदाचित ही समझा होगा कि यह फ़सह अब तक मनाए गए समस्त फसहों की पूर्णता और परमोत्कर्ष होगा। **फसह** कहां मनाया जाए इस विषय में उन्होंने प्रभु से निर्देश लिए। **प्रभु ने** उन्हें इन निर्देशों के साथ यरूशलेम **भेजा** कि वे **जल का घड़ा उठाए हुए एक मनुष्य** को ढूंढें - एक दुर्लभ बात, चूंकि सामान्यत: स्त्रियां पानी का घड़ा ले जाती थीं। यह मनुष्य उन्हें सही घर तक ले जाएगा। तब वे उस घर के स्वामी से पूछेंगे कि वह उन्हें एक कमरा दिखाए जहां **गुरु** अपने **चेलों के साथ फसह खा** सके।

प्रभु यीशु को इस तरह से चुनते और आज्ञा देते देखना अद्‌भुत है। वह मनुष्यों और सम्पत्ति के सर्वनियंत्रक शासक के रूप में कार्य करता है। अपने आप को और अपनी सम्पत्तियों को उसके अधिकार पर समर्पित करने वाले उत्तरकारी हृदयों को देखना भी अद्‌भुत है। जब उसे हमारे जीवन के प्रत्येक कमरे में तात्कालिक और सुविधाजनक प्रवेश मिलता है, तब हमारे लिए यह भला होता है।

इ.प्रभु यीशु अपने पकड़वाए जाने की भविष्यद्वाणी करते हैं (14:17-21)

उसी **सांझ प्रभु बारहों के साथ** उस अटारी पर **आया** जो तैयार किया जा चुका था। जब वे बैठे **भोजन कर रहे थे,** तब प्रभु **यीशु** ने घोषणा की कि चेलों **में से एक** उसे **पकड़वाएगा**। वे सब अपने स्वभाव की बुरी प्रवृत्तियों को जानते थे। स्वयं के प्रति एक स्वस्थ संदेह के साथ प्रत्येक ने पूछा कि कहीं वह तो अपराधी नहीं है। तब प्रभु यीशु ने उस विश्वासघाती को यह कहकर प्रकट किया कि यह वही व्यक्ति है जिसने उसके साथ मांस के रस में रोटी डुबाई थी, अर्थात्, वह व्यक्ति जिसे उसने रोटी का टुकड़ा दिया था। प्रभु ने कहा कि **मनुष्य का पुत्र** तो जैसा उसके विषय कहा गया अपनी मृत्यु की ओर जा रहा था, परंतु उसके विश्वासघाती का अन्त भयानक होगा। वास्तव में, **''यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिए भला होता।''**

फ. प्रथम प्रभु-भोज (14:22-26)

14:22-25 रोटी लेने के बाद यहूदा बाहर अंधकार में चला गया (यूह.13:30)। तब यीशु ने उसकी स्थापना की जिसे हम प्रभु-भोज के रूप में जानते हैं। इसका तीन अर्थ शब्दों में सुन्दरता से बताया

गया है: (1) उसने **ली** – उसने स्वयं पर मनुष्यत्व को ले लिया; (2) उसने **तोड़ी** – वह क्रूस पर तोड़े जाने पर था; (3) उसने **दिया** – उसने स्वयं को हमारे लिए दे दिया। **रोटी** उसकी दी हुई **देह** का संकेत है, और **कटोरा** उसके बहाए हुए **लहू** का। अपने **लहू** के द्वारा प्रभु ने नई **वाचा** को अभिपुष्ट किया। उसके लिए तब तक कोई पर्व का आनन्द नहीं होगा जब तक वह अपना **राज्य** स्थापित करने के लिए इस धरती पर वापस न आ जाए।

14:26 ऐसे अवसर पर, उन्होंने मिलकर एक **भजन** गाया – संभवत: महान स्तुति संग्रह का एक भाग – भजन 113–118। पत्पश्चात, वे यरूशलेम के **बाहर** किद्रोन के नाले के किनारे, **जैतून के पहाड़ पर गए।**

ग.पतरस का आत्म–विश्वास (14:27–31)

14:27,28 मार्ग में, उद्धारकर्ता ने चेलों को चिताया कि आने वाली घड़ी में वे **सब** लज्जित होंगे और उसके अनुयायी के रूप में पहचाने जाने से भयभीत होंगे। यह वैसा ही होगा जैसा जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी – **चरवाहा** घात किया जाएगा और उसकी **भेड़ें तितर–बितर हो जाएंगी** (जक.13:7)। परंतु उसने अनुग्रहपूर्वक उन्हें आश्वासन दिया कि वे उसका परित्याग नहीं करेंगे; मरे हुओं में से जी उठने के पश्चात्, वह **गलील** में उनकी प्रतीक्षा करेगा।

14:29,30 प्रभु का इंकार करने के विचार पर **पतरस** क्रोधित हुआ। दूसरे चेलों के इंकार करने की संभावना हो सकती है; परंतु वह? कभी नहीं! प्रभु यीशु ने ''कभी नहीं'' को सुधारकर ''शीघ्र ही'' किया। **मुर्ग के दो बार** बांग देने **से पहले**, पतरस **तीन बार** उद्धारकर्ता का इंकार कर चुका होगा।

14:31 पतरस चिल्लाया, ''यह निरर्थक है'', ''**तेरा इंकार** करने से पहले मैं मर जाऊंगा।'' इस मुखर अंहकार को व्यक्त करने वाला पतरस ही एकमात्र व्यक्ति नहीं था। उतावली भरे और आत्मविश्वास भरे दावे में **वे सब** व्यस्त थे। इस घटना को न भूलें, क्योंकि हम उनसे भिन्न नहीं हैं। हम सबको अवश्य ही हमारे हृदय के भीरुपन और कमजोरी को जानना चाहिए।

ह. गतसमनी में वेदना (14:32–42)

14:32 धरती पर अंधेरा छा चुका था। यह गुरुवार की रात थी जो शुक्रवार की सुबह की ओर बढ़ रही थी। जब वे **गतसमनी नामक** एक घेरा लगाए हुए स्थान में **आए**, तो प्रभु ने चेलों में से आठ को प्रवेश द्वार के निकट ही छोड़ दिया।

14:33,34 प्रभु यीशु अपने तीन चेलों **पतरस, और याकूब, और यूहन्ना** को बगीचे के अंदर ले गए। जब उसने हमारे लिए एक पाप–बलि बनने को महसूस किया, तो उसे अपने पवित्र मन पर एक अभिभूत कर देने वाले बोझ का अनुभव हुआ। हम यह नहीं समझ सकते कि उस निष्पाप व्यक्ति को हमारे लिए पाप बनाए जाने का परमेश्वर के लिए क्या अर्थ था। उसने तीन चेलों को इस निर्देश के साथ छोड़ दिया कि यहां **ठहरो,** और जागते हुए ठहरो। **वह** बगीचे में **थोड़ा आगे बढ़ा –** अकेले। इसी प्रकार हमारे पापों के विरुद्ध परमेश्वर के भयानक न्याय को लिए हुए वह अकेले क्रूस तक जाएगा।

14:35 आश्चर्य और विस्मय के साथ हम प्रभु यीशु को भूमि पर दण्डवत कर परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए देखते हैं। क्या वह क्रूस तक जाने से बचने के लिए प्रार्थना कर रहा था? बिल्कुल नहीं; यह इस संसार में उसके आने का उद्देश्य था। पहले उसने **प्रार्थना** की **कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए।** यदि उसकी मृत्यु, दफन, और पुनरुत्थान के अलावा और कोई दूसरा मार्ग था जिसके द्वारा पापी बचाए जा सकते थे, तो परमेश्वर उस मार्ग को प्रकाशित करे। स्वर्ग शान्त था। ऐसा कोई और मार्ग नहीं था जिसके द्वारा हम छुड़ाए जा सकते थे।

14:36 पुन: प्रभु ने प्रार्थना की, **''हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले : तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।''** ध्यान दीजिए कि उसने परमेश्वर को प्रिय **पिता** के रूप में संबोधित किया, जिससे **सब कुछ हो सकता है।** यहां यह शारीरिक बातों के विषय में संभावना नहीं है, बल्कि नैतिक बातों के विषय में है। क्या सर्वशक्तिमान पिता कोई अन्य धार्मिक आधार पा

सका जिस पर वह अभक्त पापियों को बचा सके? शांत स्वर्ग ने संकेत दिया कि कोई अन्य मार्ग नहीं था। परमेश्वर के पुत्र को अवश्य ही खून बहाना पड़ेगा ताकि पापी पाप से स्वतंत्र किए जा सकें।

14:37–40 तीन चेलों के पास वापस लौटकर, प्रभु ने **उन्हें सोते** पाया – पतित मानव स्वभाव पर एक दुखद टीका। उस संकटकालीन **घड़ी में सोते** रहने के विरुद्ध प्रभु यीशु ने पतरस को चेतावनी दी। अभी हाल ही में, पतरस ने अपनी अमिट स्थिरता पर गर्व किया था। अब वह यहां तक कि जाग भी न पाया। यदि कोई मनुष्य **एक घड़ी** के लिए प्रार्थना न कर सके, तो यह असंभव है कि वह तीव्र दबाव के क्षण में परीक्षा का सामना करने के योग्य होगा। चाहे उसकी आत्मा कितनी ही उत्साही क्यों न हो, उसे अपनी देह की चंचलता पर ध्यान रखना होगा।

14:41,42 तीन बार प्रभु यीशु ने लौटकर चेलों को सोते पाया। तब उसने कहा, ''अब सोते रहो और विश्राम करो, बस घड़ी आ पहुंची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।'' इसके साथ, वह उठ गया, मानो आगे जाने के लिए। परंतु उसे दूर नहीं जाना था।

ई. प्रभु यीशु से विश्वासघात और उसका पकड़ा जाना (14:43–52)

14:43 **यहूदा** पहले ही एक टुकड़ी के साथ बगीचे में प्रवेश कर चुका था। उसके सहगण **तलवारें और लाठियां** लिए हुए थे मानो वे किसी खतरनाक महाअपराधी को पकड़ने जा रहे थे।

14:44, 45 **पकड़वानेवाले** ने पूर्वायोजित चिन्ह दिया था। जिसे उन्हें पकड़ना है,उसे वह चूमेगा। अत: वह लम्बे डग भरता हुआ प्रभु यीशु के पास गया, उसे **रब्बी** कहकर सम्बोधित किया और **उसको** उल्लासपूर्ण भाव से **चूमा**। (मूल भाषा में बलाघात रूप पुनरावृत्त या संकेतवाचक चुंबन का सुझाव देता है।) यहूदा ने क्यों प्रभु यीशु को पकड़वाया? क्या वह इस बात से हताश था कि प्रभु यीशु ने शासन की बागडोर नहीं संभाली? क्या राज्य में एक विशिष्टता के स्थान की उसकी आशा को आघात पहुंचा था? क्या लालच ने उस पर जय पा ली? इन सभी बातों ने उसके इस कुकृत्य के लिए योगदान दिया होगा।

14:46–50 पकड़वानेवाले के हथियारबंद अनुचर आगे बढ़े और प्रभु को बंदी बना लिए। पतरस ने शीघ्रता से अपनी **तलवार खींचकर महायाजक के दास के कान** के अंश को **उड़ा दिया**। यह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी, आत्मिक नहीं। पतरस आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए शारीरिक हथियार का प्रयोग कर रहा था। प्रभु ने पतरस को डांटा और अद्भुत ढ़ंग से उस दास के कान को ठीक किया, जैसा कि हम लूका 22:51 और यूहन्ना 18:11 में पढ़ते हैं। प्रभु यीशु ने तब अपने पकड़नेवालों को स्मरण दिलाया कि उसे बलपूर्वक पकड़ना उनके लिए कितना असंगत था! वह **हर दिन मंदिर में उपदेश** देते हुए उनके साथ था। तब उन्होंने उसे क्यों नहीं पकड़ा था? वह उत्तर को जानता था। **पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों** जिसमें भविष्यद्वाणी की गई थी कि वह पकड़वाया जाएगा (भज. 41:9), बंदी बनाया जाएगा (यशा. 53:7), मनुष्य के हाथ सौंपा जाएगा (भज. 22:12) और त्यागा जाएगा (जक.13:7)।

14:51,52 मरकुस ऐसा एक मात्र सुसमाचार प्रचारक है जो इस घटना को लिपिबद्ध करता है। व्यापक रूप से यह विश्वास किया जाता है कि स्वयं मरकुस वह **जवान** था जिसने भाग निकलने के अपने उन्माद में अपने ओढ़ने को हथियारबंद व्यक्तियों के हाथ में छोड़ दिया। **चादर** कोई औपचारिक वस्त्र नहीं था, परंतु यह कपड़े का एक टुकड़ा था जिसे उसने एक तात्कालिक ओढ़ने के रूप में शीघ्रता से उठा लिया था। मसीही लेखक अर्डमेन टीका देते हैं, ''संभवत: यह विलक्षण घटना यह दर्शाने के लिए जोड़ी गई है कि संकट और दु:ख की घड़ी में प्रभु यीशु को किस तरह से सम्पूर्णत: त्याग दिया गया। वह निश्चित रूप से जानता था कि अकेले दु:ख उठाना क्या होता है।''

ज. महायाजक के सम्मुख यीशु (14:53,54)

सभाओं में सुनवाई पद 53 से 15:1 तक विस्तारित है और यह तीन भागों में विभाजित है: (1) महायाजक के सम्मुख सुनवाई (पद 53,54); (2) यहूदी

धर्ममहासभा की मध्यरात्रि सभा (पद 55-65); (3) यहूदी धर्मसभा का प्रात: मिलना (15:1)।

14:53 इस बात पर आम सहमति है कि यहां मरकुस काईफा के सम्मुख सुनवाई को लिपिबद्ध करता है हन्ना के सम्मुख सुनवाई का वर्णन यूहन्ना 18:13,19-24 में मिलता है।

14:54 **पतरस** ने अपनी समझ के अनुसार एक सुरक्षित दूरी से पीछा करते हुए **महायाजक के आंगन** तक प्रभु यीशु को ढूंढ निकाला। किसी ने उसके पतन को निम्नलिखित रूप से रूपरेखित किया है:

1. पहले वह लड़ा – चूका हुआ उत्साह।
2. तत्पश्चात वह भागा – भीरुतामय निकासी।
3. अंतत: उसने दूर से पीछा किया – अंधकार में निरुत्साह (बेमन) शिष्यता।

वह प्यादों के साथ **आग** के पास बैठकर, अपने प्रभु के शत्रुओं के साथ **आग तापने लगा।**

क.प्रभु यीशु यहूदी धर्मसभा के सम्मुख (14:55-65)

14:55-59 यद्यपि स्पष्ट उल्लेख नहीं है, तौभी पद 55 यहूदी धर्ममहासभा के एक मध्यरात्रि सभा के विवरण का प्रारम्भ प्रतीत होता है। इकहत्तर धार्मिक अगुवों के दल की अध्यक्षता महायाजक द्वारा होती थी। इस विशेष रात्रि में, यहूदी धर्ममहासभा में सम्मिलित फरीसियों, सदूकियों, शास्त्रियों और प्राचीनों ने उन नियमों के प्रति पूर्ण उपेक्षा दर्शाई जिसके अंतर्गत वे कार्य करते थे। उन्हें मध्यरात्रि या किसी भी यहूदी पर्व के समय मिलने की अनुमति नहीं थी। उन्हें झूठी गवाही देने के लिए गवाहों को घूस देने की अनुमति नहीं थी। मृत्युदण्ड की आज्ञा तब तक नहीं दी जा सकती थी, जब तक कि एक रात्रि गुजर न जाए। यदि वे मंदिर क्षेत्र में काटे गए चट्टान के सभागार में न मिलें, तो उनके निर्णय बंधनकारी नहीं होते थे।

प्रभु यीशु को मार डालने की अपनी उत्कण्ठा में धार्मिक अधिकारी स्वयं के नियमों को तोड़ने की नीचता करने से भी नहीं हिचके। उनके दृढ़निश्चयी प्रयत्नों ने **झूठी** गवाहियों के एक समूह को उत्पन्न किया, परंतु वे एकमत वाली गवाही उत्पन्न करने में असफल रहे। कुछ लोगों ने प्रभु के शब्दों को गलत रूप से उद्धरित करते हुए कहा कि उसने **हाथ के बनाए** मंदिर को **ढाने और तीन दिन में जो हाथ से न बना हो,** ऐसा **दूसरा** मंदिर बनाने की धमकी दी थी। प्रभु यीशु ने जो वास्तव में कहा था वह यूहन्ना 2:19 में पाया जाता है। उन्होंने जानबूझकर प्रभु की देह के मंदिर को यरूशलेम के मंदिर के रूप में गलत समझा।

14:60-62 जब **महायाजक** ने पहली बार प्रभु से प्रश्न किया तो प्रभु यीशु ने उत्तर नहीं दिया। परंतु जब शपथ की आधीनता में उससे पूछा गया कि क्या वह **परमधन्य का पुत्र** मसीह है, तो उद्धारकर्ता ने उत्तर दिया कि वह है, इस प्रकार उसने लैव्यव्यवस्था 5:1 की आज्ञाकारिता में कार्य किया। तत्पश्चात्, मानो जो होने का प्रभु ने दावा किया था उससे किसी भी प्रकार के संदेह को हटाने के लिए, प्रभु यीशु ने महायाजक से कहा कि वह **मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ** धरती पर वापस **आते** देखेगा। इसके द्वारा उसका आशय यह था कि महायाजक उसे प्रत्यक्ष परमेश्वर के रूप में प्रकट देखेगा। अपने प्रथम आगमन के समय उसका ईश्वरत्व एक मानवीय देह में ढंपा हुआ था। परंतु जब वह पुन: सामर्थ और महा-महिमा में आएगा, तो परदा हटाया जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति ठीक-ठीक जान लेंगे कि वह कौन है।

14:63,64 **महायाजक** ने समझ लिया कि प्रभु यीशु का आशय क्या था। उसने इस तथाकथित **निन्दा** के विरुद्ध अपने धार्मिक क्रोध के चिन्ह स्वरूप **अपने वस्त्र** फाड़े। जिस इस्राएली को मसीह को स्वीकार करने और ग्रहण करने में सबसे अधिक तत्पर होना चाहिए था, वही प्रभु को दण्डाज्ञा देने में सबसे अधिक मुखर था। परंतु एकमात्र वही नहीं, परंतु सम्पूर्ण यहूदी धर्ममहासभा [23] इस बात पर सहमत थी कि प्रभु यीशु ने निन्दा की थी, और उन्होंने उसे **वध के योग्य** ठहराया।

14:65 आगे का दृश्य 'फूहड़ता की पराकाष्ठा' था। यहूदी धर्ममहासभा के कुछ सदस्य परमेश्वर के पुत्र पर **थूकने लगे, उसका मुंह ढांकने लगे,** और उसे चुनौती देने लगे कि उसे मारनेवाले का नाम बताए। लगभग अविश्वसनीय है कि योग्य उद्धारकर्ता को पापियों के ऐसे व्याघातों को स्वयं के विरुद्ध सहना था। **प्यादों** (मंदिर के सिपाही) ने **उसे थप्पड़** मारकर इस बुराई में अपनी भागीदारी दर्शाई।

ल.पतरस यीशु का इंकार करता है और फूट-फूटकर रोता है (14:66-72)

14:66-68 **पतरस** उस भवन के **नीचे आंगन में** प्रतीक्षा कर रहा **था। महायाजक की दासियों में से एक** वहां से गुजरी। उसने उसे एकाग्रचित्त होकर देखा, तत्पश्चात् उस पर **यीशु** नासरी का एक चेला होने का आरोप लगाया। दयनीय चेले ने उसके आरोप के प्रति पूर्ण अज्ञानता का नाटक किया, तब वह डेवढ़ी में गया और **मुर्ग** ने बांग दी। यह एक दारुण क्षण था। पाप अपना भारी कर (चुंगी) वसूल कर रहा था।

14:69,70 **दासी ने उसे फिर** देखा और उसे प्रभु यीशु का एक चेला बताया। पतरस ने एक और सर्द इंकार किया, और संभवत: आश्चर्य व्यक्त किया कि क्यों लोग उसे अकेले नहीं छोड़ते। तब भीड़ ने पतरस से कहा, **''निश्चय तू उनमें से एक है; क्योंकि तू गलील भी है।''**

14:71,72 धिक्कारते और शपथ खाते हुए पतरस ने विद्रोहपूर्वक कहा कि वह **उस मनुष्य को नहीं जानता** था। उसके मुंह से ये शब्द निकले अधिक देर नहीं हुए थे कि **मुर्ग ने बांग दी।** प्राकृतिक जगत इस प्रकार भीरु झूठ का विरोध करता हुआ प्रतीत हुआ। क्षण भर में पतरस ने जान लिया कि प्रभु की भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी थी। **वह** टूट गया और **रोने लगा।** यह महत्वपूर्ण है कि चारों सुसमाचार पतरस के इंकार को लिपिबद्ध करते हैं। हम सबको यह शिक्षा लेनी चाहिए कि स्वयं पर विश्वास अपमान की ओर ले जाता है। हमें अवश्य ही स्वयं पर संदेह करना और पूर्णत: परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर रहना सीखना चाहिए।

म. यहूदी धर्मसभा के सम्मुख प्रात:कालीन सुनवाई (15:1)

यह पद यहूदी धर्मसभा के **भोर** की सभा का विवरण देता है, जो संभवत: गत रात्रि के अवैधानिक कृत्य को वैध ठहराने के लिए आयोजित की गई थी। परिणामस्वरूप, प्रभु यीशु को **बन्धवाया** गया और पलस्तीन के रोमी राज्यपाल (शासक) **पीलातुस के** पास भेज दिया गया।

न.पीलातुस के सम्मुख प्रभु यीशु (15:2-5)

15:2 अब तक प्रभु यीशु *ईश-निन्दा* के आरोप में धार्मिक अगुवों के सम्मुख सुनवाई में थे। परंतु अब उन्हें *राजद्रोह* के आरोप में जन-अदालत ले जाया गया। जन-अदालत की सुनवाई तीन चरणों में हुई - पहले पीलातुस के सम्मुख, फिर हेरोदेस के सम्मुख, और अंतत: पुन: पीलातुस के सम्मुख। **पीलातुस** ने प्रभु यीशु से पूछा कि क्या वह **यहूदियों का राजा** है। यदि वह था तो वह संभाव्यत: कैसर के समाप्ति (पराजय) के प्रति समर्पित था, और इस प्रकार राजद्रोह का दोषी था।

15:3-5 **प्रधान याजक** प्रभु यीशु के विरुद्ध आरोपों की बौछार उण्डेल रहे थे। ऐसे दुर्दमनीय आरोपों के सामने प्रभु के संतुलन को पीलातुस भूल नहीं सका। उसने प्रभु से पूछा कि वह अपनी रक्षा क्यों नहीं करता, परंतु प्रभु यीशु ने अपने आलोचकों को उत्तर देने से इंकार कर दिया।

ओ. प्रभु यीशु या बरअब्बा? (15:6-15)

15:6-8 रोमी राज्यपाल की यह रीति थी कि इस पर्व के समय **एक** यहूदी **बन्दी** को छोड़ दे - अप्रसन्न लोगों की राजनैतिक मुंह-भराई की एक रीति। **बरअब्बा** एक ऐसा ही वांछित बन्दी था, जो **बलवे** और **हत्या** का दोषी था। जब ईर्ष्यालु प्रधान-याजकों को ताना मारते हुए पीलातुस ने प्रभु यीशु को छोड़ने का प्रस्ताव रखा, तो लोगों को बरअब्बा को मांगने के लिए तैयार किया गया। वही लोग जो प्रभु यीशु पर कैसर के विरुद्ध राजद्रोह का आरोप लगा रहे थे, एक ऐसे व्यक्ति को छोड़ने की मांग कर रहे थे जो *वास्तव* में उस अपराध का दोषी था! प्रधान याजकों का ऐसा ही होता है। मूल रूप से वे उसकी लोकप्रियता से ईर्ष्या रखते थे।

15:9-14 पीलातुस ने पूछा कि जिसे वे **यहूदियों का राजा** कहते हैं उसके साथ वह क्या करे। लोग वहशीपन में एक साथ चिल्लाए, **''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''** पीलातुस ने कारण पूछा, परंतु कोई कारण उपलब्ध नहीं था। भीड़ का पागलपन बढ़ता जा रहा था। वे केवल यही चिल्लाते थे, **''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''**

15:15 और अंतत: रीढ़विहिन **पीलातुस** ने वही

किया जो वे चाहते थे – उसने **बरअब्बा को छोड़ दिया**, प्रभु यीशु को कोड़े लगवाए और क्रूस पर चढ़ाने के लिए उसे सैनिकों को **सौंप दिया**। यह अधार्मिकता का एक नितांत असंगत निर्णय था। और तौभी यह हमारे छुटकारे का एक दृष्टान्त था – निर्दोष व्यक्ति को मार डालने के लिए सौंप दिया गया ताकि दोषी व्यक्ति स्वतंत्र हो सकें।

प.सैनिक परमेश्वर के सेवक का ठट्ठा करते हैं (15:16–21)

15:16–19 **सैनिक** प्रभु यीशु को राज्यपाल के निवास–स्थान **किले के भीतर ले गए**। **सारी पलटन** को एकत्रित करने के पश्चात्, उन्होंने यहूदियों के राजा के नकली (दिखावटी) राज्याभिषेक का अभिनय किया। **काश! वे मात्र इतना जान पाते**। प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र था जिसे उन्होंने **बैंजनी वस्त्र पहिनाया**। वह उनका अपना सृष्टिकर्ता था जिसे उन्होंने **कांटों का** मुकुट पहनाया। वह विश्व को संभालने (पोषण करने) वाला था जिसका उन्होंने **यहूदियों के राजा** के रूप में ठट्ठा किया। वह जीवन और महिमा का प्रभु था जिसके **सिर पर** उन्होंने मारा। उन्होंने शांति के राजकुमार पर थूका। उन्होंने ठट्ठा उड़ाते हुए राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के सम्मुख घुटने टेके।

15:20,21 जब उनके असभ्य ठट्ठे समाप्त हो गए, तो उन्होंने प्रभु यीशु को वापस **उसी के कपड़े पहिनाए, और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए**। मरकुस यहां पर उल्लेख करता है कि सैनिकों ने एक यात्री, कुरेन (उत्तरी अफ्रीका में) के **शमौन** को **प्रभु का क्रूस** उठाने की आज्ञा दी। वह काला हो सकता है, परंतु अधिक संभावनीय रूप से वह एक यूनानी–यहूदी था। उसके दो पुत्र थे, **सिकन्दर और रुफुस**, जो संभवत: विश्वासी थे (यदि यह **रुफुस** वही है, जिसका उल्लेख रोमि. 16:13 में मिलता है)। प्रभु यीशु के पीछे क्रूस उठाकर चलने के द्वारा उसने हमें एक चित्र दिया है कि उद्धारकर्ता के चेले के रूप में *हमारी* क्या विशेषता होनी चाहिए।

क्यू. क्रूसीकरण (15:22–32)

परमेश्वर का आत्मा क्रूसीकरण का सरल और **भावनारहित** विवरण देता है। वह मृत्युदण्ड के इस विधि की चरमनिर्दयता या इसके साथ जुड़े भयानक दु:ख का विस्तारपूर्वक निरुपण नहीं करता है।

वर्तमान में ठीक–ठीक भौगोलिक स्थिति अज्ञात है। यद्यपि 'पवित्र कब्र गिरजाघर' जो परम्परागत स्थल है, यह शहरपनाह के अंदर है, परंतु इस मत के पक्षधर यह तर्क देते हैं कि मसीह के समय में यह स्थल दीवार के बाहर था। एक और तथाकथित स्थल गॉर्डन का कलवरी है, जो शहर की दीवार के उत्तर में और एक वाटिका–क्षेत्र से लगा हुआ है।

15:22 **गुलगुता** अरामी नाम है जिसका अर्थ होता है **खोपड़ी**। कलवरी लातिनी नाम है। संभवत: इस क्षेत्र की आकृति खोपड़ी जैसी थी यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह मृत्युदण्ड देने का एक स्थान था।

15:23 सैनिकों ने प्रभु यीशु को **मुर्र मिला हुआ दाखरस** दिया। यह संवेदनमन्दक के रूप में कार्य करके प्रभु की संवेदना को शून्य करता। मनुष्य के पाप को अपनी पूर्ण चेतना में सहने के दृढ़निश्चय में, **प्रभु ने** इसे **नहीं लिया**।

15:24 जो क्रूस पर चढ़ाए गए थे उनके कपड़ों के लिए सैनिकों ने जुआ खेला। जब उन्होंने उद्धारकर्ता के **कपड़ों** को ले लिया, तो उन्होंने लगभग उस प्रत्येक भौतिक वस्तु को ले लिया जो प्रभु का था।

15:25–28 यह प्रात: 9:00 बजे का समय **था**, जब उन्होंने प्रभु को **क्रूस पर चढ़ाया**। उसके सिर के ऊपर उन्होंने एक शीर्षक लिखा था **यहूदियों का राजा**। (मरकूस पूर्ण विवरण नहीं देता है, परंतु अपने आपको इसके सार तक सीमित करता है; मत्ती 27:37; लूका 23:38; यूह.19:19 देखिए)। प्रभु के साथ **दो डाकू** चढ़ाए गए थे, दोनों ओर एक–एक, ठीक वैसे ही जैसे यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह मृत्यु के समय अपराधियों के संग गिना जाएगा (यशा.53:12)[24]।

15:29,30 मार्ग में जानेवालों (पद 29,30), **प्रधान याजक**, और **शास्त्रियों** (पद 31,32 अ), और दो डाकूओं (पद 32 ब) के द्वारा प्रभु ठट्ठों में

उड़ाया गया।

मार्ग में गुजरनेवाले संभवत: यहूदी थे जो शहर के अंदर फसह मनाने की तैयारी में थे। फसह के मेमने का मजाक उड़ाने के लिए वे शहर के बाहर काफी देर तक रुके हुए थे। उन्होंने प्रभु के कथन का गलत उद्धरण करते हुए कहा कि उसने धमकी दी थी कि वह उनके प्रिय **मंदिर** को **ढा** देगा और उसे **तीन दिन में** पुन: बनाएगा। यदि वह इतना महान है, **तो क्रूस पर से उतरकर** स्वयं को **बचा ले**।

15:31 औरों को बचाने के प्रभु के दावे का **प्रधान याजक** और शास्त्रियों ने ठट्ठा उड़ाया। **''इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता।''** यह कथन द्वेषपूर्ण रूप से निर्दय था, तौभी अनजाने में सत्य था। यह प्रभु के जीवन में सत्य था, और हमारे जीवन में भी। हम *अपने को* बचाने का प्रयास करते हुए *औरों को* नहीं बचा सकते।

15:32 धार्मिक अगुवों ने उसे यह भी चुनौती दी कि यदि वह **इस्राएल का राजा**, मसीह है तो **क्रूस पर से** उतर आए। उन्होंने कहा कि तब वे **विश्वास** करेंगे। हम **देखकर विश्वास** करेंगे।[25] परंतु परमेश्वर का क्रम है, ''विश्वास कर, तब तू देखेगा।''

यहां तक कि अपराधियों ने भी प्रभु की निन्दा की।

र. तीन घंटे का अंधकार (15:33-41)

दोपहर से तीन बजे तक **सारे देश में अंधियारा** छा गया। तब प्रभु यीशु हमारे पापों के विरुद्ध परमेश्वर के पूर्ण न्याय को सह रहा था। उसने आत्मिक एकाकीपन और परमेश्वर से अलगाव के दु:ख को सहा। जब उसकी आत्मा पाप के लिए एक बलिदान बनाई गई, उस समय उसके द्वारा सही गई वेदना को कोई भी नश्वर मस्तिष्क कभी नहीं समझ पाएगा।

15:34 अपनी वेदना के अंत में प्रभु यीशु ने **बड़े शब्द से पुकार कर कहा** (अरामी भाषा में), **''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?''** परमेश्वर ने प्रभु यीशु को **छोड़ दिया** था क्योंकि उसे अपनी पवित्रता में स्वयं को पाप से अवश्य ही अलग रखना चाहिए था। प्रभु यीशु ने स्वयं को हमारे पापों से अभिन्न समझा (एक किया) और उसका दाम वह पूर्णता में चुका रहा था।

15:35,36 जब प्रभु ने कहा, ''इलोई, इलोई'', तब निर्मम लोगों **ने** सुझाव दिया कि वह **एलिय्याह को पुकार रहा** है। अंतिम तिरस्कार (अपमान) के रूप में उनमें से एक ने एक **स्पंज** को **सिरके में** डुबोया और **सरकण्डे** पर रखकर **उसे चुसाया**।

15:37 प्रभु यीशु ने सामर्थ और विजय के साथ **चिल्लाकर** – अपने **प्राण छोड़ दिए**। उसकी मृत्यु उसकी इच्छा का एक कार्य था, एक अनैच्छिक विध्वंस (समाप्ति) का नहीं।

15:38 उस क्षण **मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।** यह परमेश्वर का एक कार्य था, जिसमें इस बात का संकेत था कि अब से परमेश्वर के पवित्र-स्थान में प्रवेश, मसीह की मृत्यु द्वारा समस्त विश्वासियों का सौभाग्य है (इब्रा.10:19-22 देखिए)। एक महान नए युग का पदार्पण हो चुका था। यह परमेश्वर से दूरी का नहीं परंतु उससे समीपता का युग होगा।

15:39 रोमी अधिकारी की स्वीकारोक्ति यद्यपि उदान्त (भव्य) थी, तौभी यह आवश्यक नहीं कि उसने यीशु को परमेश्वर के साथ एक होकर स्वीकारा था। अन्यजाति **सूबेदार** ने प्रभु को **परमेश्वर के पुत्र** के रूप में सम्मान दिया। इस बात में कोई संदेह नहीं कि इतिहास के रचे जाने का आभास उसे था। परंतु क्या उसका विश्वास सच्चा था यह स्पष्ट नहीं है।

15:40,41 मरकुस बताता है कि कुछ **स्त्रियां** क्रूस के पास थीं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सुसमाचार वृत्तान्त में स्त्रियां दीप्तमान रूप से चमकती हैं। व्यक्तिगत सुरक्षा के सोच-विचार ने पुरुषों को छिपने की जगह की ओर खींचा। स्त्रियों की भक्ति (समर्पणता) ने मसीह के प्रति प्रेम को उनके अपने कल्याण से ऊपर रखा। वे क्रूस के पास अंतिम और कब्र पर प्रथम थीं।

स. यूसुफ के कब्र में गाड़ा जाना (15:42-47)

15:42 शुक्रवार के सूर्यास्त के साथ सब्त प्रारम्भ हुआ। **सब्त** या अन्य पर्व **के एक दिन पहले** का दिन **तैयारी का दिन**[26] के रूप में जाना जाता था।

15:43 तात्कालिक कार्य की आवश्यकता ने संभवत: **अरिमतिया का रहनेवाला यूसुफ** को पीलातुस से प्रभु **यीशु के शव को** दफन करने की अनुमति मांगने हेतु हियाव प्रदान किया। यह यूसुफ एक यहूदी भक्त था तथा संभवत: यहूदी धर्ममहासभा का एक सदस्य था (लूका 23:50,51; मत्ती 27:57; यूह.19:38 भी देखिए)।

15:44,45 पीलातुस को बमुश्किल ही विश्वास हुआ कि प्रभु यीशु **मर गया**। जब **सूबेदार** ने इस तथ्य की पुष्टि की, तो राज्यपाल ने प्रभु यीशु का **शव यूसुफ को दिला दिया**। (इस भाग में प्रभु यीशु की देह के लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया है। यूसुफ ने प्रभु यीशु की *देह* मांगी और पीलातुस ने उसे *शव* दिला दिया)।

15:46 प्रेममय चिन्ता के साथ, यूसुफ (और निकुदेमुस – यूह. 19:38,39) ने देह में सुगन्धद्रव्य लगाया, और उसे **चादर में लपेटा**, तत्पश्चात् उसे अपनी एक नई **कब्र में** रखा। यह कब्र **चट्टान में खोदा गया** एक छोटा कमरा था। द्वार एक सिक्के के आकार वाले पत्थर से बंद था, जो चट्टान में खोदे गए ढांचे में लुढ़काया जा सकता था।

15:47 पुन: स्त्रियां अर्थात् दोनों मरियम, यहां उपस्थित बताई गई हैं। हम उनके अथक और निर्भीक स्नेह के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं। हमें ज्ञात है (बताया गया है) कि आज स्त्री मिश्नरियों की संख्या अधिकता (प्रचुरता) में है। पुरुष कहां गए?

VIII. सेवक की जीत (16:1–20)

अ.खाली कब्र पर स्त्रियां (16:1–8)

16:1–4 शनिवार संध्या दोनों मरियम और सलोमी यीशु की देह पर सुगन्धद्रव्य का लेप लगाने कब्र पर आईं। वे जानती थीं कि यह आसान नहीं होगा। वे जानती थीं कि कब्र के मुंह पर एक विशाल **पत्थर** लुढ़काया गया था। वे रोमी मुहर और सैनिकों के विषय में जानती थीं। परंतु प्रेम अपने स्नेह–पात्र तक पहुंचने के लिए कठिनाईयों के पर्वतों को लांघता है।

रविवार के दिन **बड़े भोर** को वे इस सोच में थीं कि **कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा। उन्होंने आंख उठाई** और देखा कि पत्थर पहले से लुढ़का हुआ था! कितने ही बार यह होता है कि जब हम उद्धारकर्ता का सम्मान करने के लिए दृढ़संकल्पित (उत्सुक) रहते हैं तो समस्याओं का हमसे सामना होने से पूर्व ही समस्याएं हट जाती हैं।

16:5,6 कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने एक जवान के रूप में एक स्वर्गदूत को देखा। उसने इस घोषणा के साथ कि प्रभु **यीशु जी उठा है,** शीघ्रता से उनके भय को दूर किया। कब्र खाली थी।

16:7 तब स्वर्गदूत ने उन्हें पुनरुत्थान के हरकारे (अग्रदूत) बनने की आज्ञा दी। उन्हें **प्रभु के चेलों** – और **पतरस** से कहना था कि प्रभु यीशु उनसे **गलील** में मिलेगा। ध्यान दीजिए कि पतरस, वह चेला जिसने प्रभु का इंकार किया था, उसके नाम का विशेष व्यक्तिगत उल्लेख है। पुनरुत्थित प्रभु ने उसका परित्याग नहीं किया था परंतु उस समय भी वह उससे प्रेम करता था और उसे पुन: देखने के लिये इच्छुक था। पुनर्स्थापन के एक विशेष कार्य का होना आवश्यक था। भटकती हुई भेड़ का चरवाहे की संगति में वापस लाया जाना आवश्यक था। पीछे हटे (भटके) हुए को पिता के घर अवश्य लौटना चाहिए।

16:8 स्तब्धता और आतंक के साथ स्त्रियां **कब्र से भाग गईं**। वे इतनी भयभीत थीं कि जो कुछ हुआ था उसे किसी को न बता सकीं। यह आश्चर्यजनक नहीं है। आश्चर्य का विषय यह है कि वे अब तक अति साहसी और निष्ठावान और समर्पित थीं।

चूंकि मरकुस की दो प्रमुख प्राचीन हस्तलिपियों में पद 9–20 नहीं पाया जाता, इसलिए कई आधुनिक विद्वान विश्वास करते हैं कि वे प्रामाणिक नहीं हैं। तथापि, पाठ में उनके सम्मिलित किए जाने के कई प्रभावशाली तर्क हैं:

1. वस्तुत:, अन्य समस्त यूनानी हस्तलिपि और कई कलीसियाई पितामह (चर्च फॉदर्स) इस भाग को *अवश्य ही* सम्मिलित करते हैं।
2. पद 8 एक अत्यधिक विलक्षण निष्कर्ष है, विशेषत: यूनानी में जहां अंतिम शब्द (*गार,* के लिए) है। यह शब्द किसी पुस्तक या किसी वाक्य के समापन के समीप भी कदाचित ही आएगा।
3. यदि, जैसा कि कुछ लोग शिक्षा देते हैं, मरकुस द्वारा लिखित मूल समापन *खो गया है*, और यह उत्तरकालीन सारांश है, तो फिर परिरक्षण

(संरक्षण) संबंधी हमारे प्रभु के वचन (मत्ती 24:35) विदित रूप से असफल हो चुके हैं।

4. इस भाग की विषय-वस्तुएं पवित्रशास्त्र-सम्मत हैं।
5. शैली, और विशेषत: शब्दावली इस पुस्तक के प्रथम अध्याय के अति समानान्तर है।[27] यह *व्यत्यासिका* कही जाने वाली संरचना का एक उदाहरण है, जिसमें किसी कृति के आरंभ और समापन समानान्तर होते हैं (अबसद दसबअ)।

ब. मरियम मगदलीनी पर प्रकट होना (16:9-11)

16:9 उद्धारकर्ता सबसे पहले **मरियम मगदलीनी** पर प्रकट हुए। जब पहली बार वह प्रभु यीशु से मिली थी, तब प्रभु ने उसमें से **सात दुष्टात्माएं निकाली थीं।** उस समय से वह उसकी सेवा अपनी सम्पत्ति से प्रेम के साथ करने लगी। वह क्रूसीकरण के समय उपस्थित थी, और उसने देखा कि प्रभु की देह कहां रखी गई थी।

दूसरे सुसमाचार से हम सीखते हैं कि कब्र को खाली पाकर, वह दौड़ी और इसका समाचार पतरस और यूहन्ना को दिया। उसके साथ वापस आने पर उन्होंने कब्र को खाली पाया, जैसा कि उसने उन्हें बताया था। वे अपने घर लौट गए परंतु वह खाली कब्र के समीप रुक गई। यह तब की बात है जब प्रभु यीशु उस पर प्रगट हुए।

16:10,11 शोक में डूबे चेलों को शुभ-संदेश देने वह पुन: नगर में गई। उनके लिए यह *इतना* शुभ था, कि वे विश्वास न कर सके। **उन्होंने** इस संदेश की **प्रतीति न की।**

स. दो चेलों पर प्रगट होना (16:12,13)

16:12 इस प्रगटीकरण का पूर्ण वृत्तान्त लूका 24:13-31 में पाया जाता है। यहां हम पढ़ते हैं कि इम्माऊस के मार्ग पर **प्रभु दूसरे रूप में उनमें से दो** चेलों **को दिखाई दिया।** मरियम पर वह एक माली के रूप में प्रगट हुआ। परंतु अपनी महिमित देह में वही यीशु था।

16:13 जब दोनों चेले यरूशलेम लौटे और पुनरुत्थित उद्धारकर्ता के साथ अपनी सहभागिता की सूचना दी तो उनका सामना उसी अविश्वास से हुआ जिसका सामना मरियम कर चुकी थी।

द.ग्यारहों पर प्रगट होना (16:14-18)

16:14 **ग्यारहों** पर यह प्रगटीकरण उसी रविवार-संध्या को हुआ (लूका 24:36; यूह. 20:19-24; 1कुरि.15:5)। यद्यपि चेलों को **ग्यारहों** के रूप में संदर्भित किया गया है, तौभी मात्र दस ही उपस्थित थे। थोमा इस अवसर पर अनुपस्थित था। प्रभु यीशु ने मरियम और दूसरों के द्वारा दी गई उसके पुनरुत्थान की सूचना को, अपने लोगों द्वारा स्वीकार न किये जाने के कारण उन्हें डांटा।

16:15 पद 15 उस आज्ञा को लिपिबद्ध करता है जो प्रभु द्वारा अपने स्वर्गारोहण की पूर्व संध्या में दी गई। इस प्रकार पद 14 और 15 के मध्य एक अन्तराल है। चेलों को सम्पूर्ण विश्व में सुसमाचार प्रचार कार्य। प्रभु ने इसे उन ग्यारहों के द्वारा पूर्ण करने का निश्चय किया जो उसका अनुसरण करने के लिए शब्दश: सब कुछ त्याग देंगे।

16:16 प्रचार करने के दो परिणाम होंगे। कुछ लोग विश्वास करेंगे, **बपतिस्मा** लेंगे और **उद्धार** पाएंगे; कुछ लोग अविश्वास करेंगे और **दोषी** ठहराए जाएंगे। पद 16 का प्रयोग कुछ लोगों के द्वारा उद्धार के लिए बपतिस्मा की अनिवार्यता की शिक्षा देने के लिए किया जाता है। हम जानते हैं कि निम्नलिखित कारणों से इसका यह अर्थ नहीं हो सकता है:

1. क्रूस पर टंगे हुए डाकू को बपतिस्मा नहीं दिया गया था; तौभी उसे मसीह के साथ स्वर्ग में होने का आश्वासन मिला था (लूका 23:43)।
2. कैसरिया में अन्यजाति लोगों को उद्धार पाने के *पश्चात* बपतिस्मा दिया गया (प्रेरि. 10:44-48)।
3. प्रभु यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं देते थे (यूह. 4:1,2) - यदि बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक था, तो यह एक आश्चर्यजनक चूक है।
4. पौलुस ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने कुरिन्थियों में से बहुत ही थोड़े लोगों को बपतिस्मा दिया था (1 कुरि. 1:14-16) - यदि बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक था, तो एक असंभव धन्यवाद।
5. नया नियम में लगभग 150 भाग बताते हैं कि उद्धार केवल विश्वास से है। कोई भी पद या थोड़े बहुत कुछ पद इस अपूर्व गवाही का विरोध नहीं कर सकते।

6. नया नियम में बपतिस्मा को मृत्यु और दफनाए जाने के साथ जोड़ा गया है, आत्मिक जन्म के साथ नहीं।

फिर पद 16 का *क्या* अर्थ है? हम विश्वास करते हैं कि यह पद बपतिस्मा को विश्वास के अपेक्षित बाह्‌य अभिव्यक्ति के रूप में बताता है। बपतिस्मा उद्धार की *एक शर्त* नहीं है, परंतु इस बात की एक बाह्‌य *घोषणा* है कि वह व्यक्ति बचाया जा चुका है।

16:17,18 यहां प्रभु यीशु कुछ आश्चर्यकर्मों को बताता है जो उनके द्वारा होंगे जो सुसमाचार पर विश्वास करेंगे। जब हम इन पदों को पढ़ते हैं, तो प्रत्यक्ष प्रश्न यह उठता है कि, ''क्या ये चिन्ह आज अस्तित्व में हैं?'' हम विश्वास करते हैं कि **ये चिन्ह** प्राथमिक रूप से सम्पूर्ण बाइबल के लिखित रूप में उपलब्ध होने से पहले, प्रेरितीय युग के लिए अभिप्रेरित थे। इनमें से अधिकांश चिन्ह प्रेरितों के काम में पाए जाते हैं :

1. **दुष्टात्माओं को निकालेंगे** (प्रेरि. 8:7; 16:18; 19:11–16)।
2. **नई–नई भाषा** (प्रेरि.2:4–11; 10:46; 19:6)।
3. **सांपों को उठा लेंगे** (प्रेरि.28:5)
4. बिना हानि के विष को **पी** लेंगे – प्रेरितों के काम में इसका उल्लेख नहीं है, परंतु कलीसिया के इतिहासकार यूसेबियस के द्वारा यूहन्ना और बरनबास को इस बात का श्रेय दिया गया।
5. चंगाई के लिए **बीमारों पर हाथ रखेंगे** (प्रेरि. 3:7; 19:11; 28:8,9)।

इन आश्चर्यकर्मों का उद्‌देश्य क्या था? हम विश्वास करते हैं कि इसका उत्तर इब्रा. 2:3,4 में पाया जाता है। सम्पूरित रूप में नया नियम के उपलब्ध होने से पूर्व, लोग प्रेरितों और दूसरों से इस बात का प्रमाण मांगते कि सुसमाचार ईश्वर की ओर से था। प्रचार की पुष्टि करने के लिए, परमेश्वर ने चिन्हों, आश्चर्य के कामों, और पवित्रआत्मा के भिन्न–भिन्न वरदानों के द्वारा गवाही दी।

इन चिन्हों की आवश्यकता आज समाप्त हो चुकी है। हमारे पास सम्पूर्ण बाइबल है। यदि मनुष्य उस पर विश्वास नहीं करेंगे, तो वे किसी भी रीति से विश्वास नहीं करेंगे। मरकुस ने यह *नहीं कहा* कि आश्चर्यकर्म सतत्‌ रूप से जारी रहेंगे। ''जगत के अन्त तक'' शब्द *यहां वैसे नहीं पाए जाते* जैसे कि वे मत्ती 28:18–20 में हैं।

तथापि, मार्टिन लूथर ने सुझाव दिया कि, ''यहां बताए गए चिन्हों का प्रयोग आवश्यकतानुसार, किन्तु भारी दबाव हो तो हमें, सुसमाचार की निन्दा होने और उसके पराजित होने से पूर्व इन चिन्हों का निश्चित रूप से प्रयोग करना चाहिए।''

ह. परमेश्वर की दाहिनी ओर सेवक का स्वर्गारोहण (16:19,20)

16:19 अपने पुनरुत्थान के चालीस दिन पश्चात्‌, हमारा **प्रभु** यीशु मसीह **स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया**। यह सम्मान और अधिकार का स्थान है।

16:20 प्रभु की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारिता में चेले प्रज्वलित अग्नि की तरह सुसमाचार प्रचार करते और उद्धारकर्ता के लिए लोगों को जीतते हुए निकल गए। **प्रभु** की सामर्थ **उनके साथ** थी। प्रतिज्ञात **चिन्ह** उनके प्रचार के साथ–साथ होते रहे, जो उनके द्वारा कहे गए वचन को **दृढ़ करते रहे**।

यहां वृत्तान्त स्वर्ग में मसीह के साथ, धरती पर सम्पूर्ण विश्व में सुसमाचार प्रचार करने के बोझ को लिए हुए, और अनन्त परिणामों के उत्तरों के साथ समाप्त होता है।

हमें हमारी पीढ़ी में महान–आज्ञा सौंपी गई है। हमारा कार्य प्रत्येक व्यक्ति के पास सुसमाचार के साथ पहुंचना है। अब तक इस संसार में पैदा हुए कुल मनुष्यों में से एक तिहाई आज जीवित हैं। वर्ष 2000 में, संसार में प्रारंभ से तब तक पैदा हुए कुल मनुष्यों में से आधे मनुष्य जीवित रहें होंगे। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती है, कार्य बढ़ता है। परंतु विधि सदैव एक सी है – मसीह के लिए असीमित प्रेम के साथ समर्पित चेले जो उसके लिए किसी भी त्याग को अति महान नहीं समझते।

परमेश्वर की इच्छा है कि समस्त संसार में सुसमाचार–प्रचार हो। इस विषय में हम क्या कर रहे हैं?

अन्त्य टिप्पणियाँ

[1](1:2, 3) *क्रिटिकल एनयू* पाठ में भी ''यशायाह भविष्यद्वक्ता'' लिखा है, परन्तु पहला उद्दरण मलाकी से

लिया गया है; पारम्परिक पाठ में, ''भविष्यद्वक्ता'' प्रयोग में लाया गया है जिसका समर्थन अधिकांश हस्तलिपियों करती हैं, और यह अधिक सहीं है।

[2](1:14, 15) *एनयू* मूलपाठ ''का राज्य'' को हटा दिया गया है।

[3](1:31) जे. आर. मिलर, *कम यी अपार्ट,* मार्च 28 का पाठ।

[4](3:13–18) जेम्स इ स्टीवर्ट, *द लाइट एण्ड टिचिंग ऑफ जीज़स ख्राइस्ट,* पृष्ठ 55, 56।

[5](3:20, 21) मिलर, *कम,* जून 7 का पाठ।

[6](3:31, 35) *एनयू* (सबसे पुराना) और *एम* (*मेजारिटी*) हस्तलिपियाँ, दोनों ही में ''और तेरी बहन'' जोड़ा गया है। निसन्देह यह सहीं है।

[7](4:30, 32) *स्पिरिचुअल मेच्युरिटी* जे. ओसवाल्ड सेन्डर्स, पृष्ठ 110।

[8](5:1–5) *एनयू* मूलपाठ में भी गिरासेनियों ''लिखा है।''

[9](6:4–6) जे. जी. मिलर, अतिरिक्त जानकारियाँ अनुपलब्ध।

[10](6:31, 32) विलियम केली, *एन एक्पोशिसन ऑफ द गॉस्पल ऑफ मार्क,* पृष्ठ 85।

[11](7:2–4) इ. स्टेनली जोन्स, *ग्रोइंग स्पिरिचुआलिटि,* पृष्ठ 109।

[12](7:11–13) केली, *मार्क,* पृष्ठ 106।

[13](8:1–9) चार्ल्स आर. इर्डमान, *द गॉस्पल ऑफ मार्क,* पृष्ठ 116।

[14](8:22–26) यह सम्भव है कि इस मनुष्य को पूरी पूरी दृष्टि उसी तरह से मिली जिस तरह से एक नवजात शिशु को पूरी पूरी दृष्टि मिलती तो है, तौभी वह *इनकी सहायता से वस्तुओं पर ध्यान केन्द्रित कर देखना धीरे धीरे सीखता है*।

[15](8:32, 33) केली, *मार्क,* पृष्ठ 136।

[16](9:44–48) तीन बार (44, 46, और 48 पद में) हमारे प्रभु ने यशायाह 66:24 का उद्दरण नरक के खतरों के विरुद्ध सावधान करने को किया है। *टीआर* और *मेजोरिटी* मूलपाठ में ऐसा करने के द्वारा इस पर जोर दिया गया है, जबकि हमारा ऐसा मानना है कि *क्रिटिकल एनयू* मूलपाठ ने तीन में से दो को हटा कर नरक के विषय इस तथ्य को नरम बना कर प्रस्तुत कर दिया है।

[17](9:49) *एनयू* मूलपाठ में इस वाक्य को हटा दिया गया है।

[18](10:23–25) *एनयू* में ''जो धन पर भरोसा रखते हैं'' को हटा दिया गया है, जबकि इस स्थल में यही वह वाक्यांश है जिस पर सबसे अधिक जोर दिया गया है।

[19](10:31) हैरी ए. आइरनसाइड, *एक्सपोसिटरी नोट्स ऑन द गॉस्पल ऑफ मार्क,* पृष्ठ 136।

[20](10:32) इर्डमान, *मार्क,* पृष्ठ 147।

[21](13:29) यहाँ पर यूनानी मूलपाठ में कर्ता के रूप में सिर्फ क्रिया का प्रत्यय *इस्टिन* (है) है, सन्दर्भ के अनुसार यह ''वह'' (मसीह) या ''यह'' (ग्रीष्मकाल – घटना जिसकी भविष्यद्वाणी की जा रही है) दोनों हो सकता है। दोनों स्थिति में समान अर्थ ही निकलता है।

[22](13:32) जेम्स एच. ब्रूक्स, ''*आई एम कमिंग,*'' पृष्ठ 40।

[23](14:63, 64) ऐसा माना जाता है कि इस अवैधानिक सभा में अरमतिया का यूसुफ और नीकुदिमुस उपस्थित नहीं हुए।

[24](15:25–28) *क्रिटिकल एनयू* मूलपाठ में मरकुस में यह उद्धरण हटा दिया गया है।

[25](15:32) अधिकांश हस्तलिपियों में ''उस पर विश्वास करे'' लिखा है, यह अगुवे की (झूठी) प्रतिज्ञा का मानवीकरण है।

[26](15:42) आधुनिक यूनानी में इस शब्द ''तैयारी'' का अर्थ ''शुक्रवार'' होता है।

[27](16:8) अधिक जानकारी के लिए, जार्ज सल्मोन की पुस्तक *हिस्टोरिकल इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ द बुक्स ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट,* पृष्ठ 144–151।

उपयोग में लाई गई पुस्तकों की सूची

एलेक्ज़ेंडर, जोसफ एडिसन. *द गॉस्पल अकार्डिंग टू मार्क.* एडिनबर्गः द बैनर ऑफ ट्रूथ ट्रस्ट, 1960।

कोट्स, सी.ए. *एन आऊटलाइन ऑफ मार्क्स गॉस्पल एण्ड अदर मिनिस्ट्री.* किंगस्टन ऑन थेम्सः स्टोव हिल बाइबल एण्ड ट्रेक्ट डिपोट, 1964।

कोल, एलन. *द गॉस्पल अकार्डिंग टू सेन्ट मार्क.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान पब्लिशिंग कम्पनी, 1961।

इर्डमान, चार्ल्स आर. *द गॉस्पल ऑफ मार्क* फिलाडेल–फिया: द वेस्टमिनिस्टर प्रेस, 1917।

आइरनसाइड हेरी ए. *एक्सपॉसिटोरि नोट्स ऑन द गॉस्पल ऑफ मार्क.* नेप्च्यून, एन जे: लोइजॉक्स ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1948।

केली विलियम. *एन एक्सपोज़िशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ मार्क.* लंदन: सी.ए. हेम्मन्ड, 1934।

लेनस्की, आर.सी.एच. *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ सेन्ट मार्क्स गॉस्पल.* मिन्नियापोलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाऊस, 1946।

स्वेते, हेनरी बार्कले. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेन्ट मार्क.* लंदन: मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लिमिटेड. 1902।

लूका रचित
सुसमाचार

पुस्तक का परिचय

"अब तक लिखी गई पुस्तकों में सबसे सुन्दर पुस्तक!" **अर्नेस्ट रेनन**

I. बाइबल प्रामाणिक–संग्रह में विशिष्ठ स्थान

"अब तक लिखी गई पुस्तकों में सबसे सुन्दर पुस्तक," यह सचमुच में एक बहुत बड़ी तारीफ़ है, और वह भी तब, जब ऐसी तारीफ एक सन्देहवादी आलोचक के द्वारा की जाए। यह सच है कि फ्रांसिसी आलोचक रेनन ने लूका के सुसमाचार का ऐसा ही मूल्यांकन किया था। तो फिर कौन पढ़नेवाला संवेदनशील *विश्वासी* , पवित्र आत्मा से प्रेरित सुसमाचार प्रचारक के द्वारा रचित इस अनमोल कृति में लिखे गए इन वचनों का प्रतिस्पर्धी होना चाहेगा? लूका शायद एकमात्र अन्यजाति (गैरयहूदी) लेखक है जिसे परमेश्वर ने अपने पवित्रशास्त्र के एक लेखक के रूप में चुना था, और इसलिये भी यह पुस्तक यूनानी–रोमी संस्कृति से प्रभावित पाश्चात्य देशवासियों को विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करती है।

लूका वैद्य के द्वारा लिखे गए इस सुसमाचार पर विशेष रूप से ध्यान दिए बिना हम प्रभु यीशु और उसकी सेवकाई की सराहना कर पाने में अपने आप को आत्मिक रूप से काफी कमजोर महसूस करेंगे। इस पुस्तक में विशेष कर के जिन बातों पर प्रकाश डाला गया है, वे हैं: सिर्फ यहूदियों के लिये नहीं परन्तु सब लोगों के प्रति हमारे प्रभु का प्रेम और उद्धार का प्रस्ताव, लोगों पर व्यक्तिगत रूप से प्रभु की रूचि, कंगालों और तुच्छ समझे जाने वाले लोगों के प्रति प्रभु की रूचि। लूका ने स्तुति आराधना (लूका 1 और 2 में आरम्भिक मसीही भजनों का उदाहरण दिया है), प्रार्थना, और पवित्रआत्मा पर भी जोरदार बल दिया है।

II. लेखक

लूका, जो जाति से अन्ताकियाई और व्यवसाय से वैद्य था, इस सुसमाचार का लेखक माना जाता है। उसने पौलुस के साथ बहुत समय बिताया था, तथा उसने अन्य प्रेरितों के साथ गम्भीरतापूर्वक अनेक चर्चाएं की थीं। अपनी दो पुस्तकों में उसने आत्माओं के लिए उन दवाओं का उल्लेख किया है जिन्हें उसने इन प्रेरितों से प्राप्त किया था।

चर्च फ़ादर यूसेबियुस द्वारा लिखित *हिस्टोरिया एक्लेसियास्टिका* में तीसरे सुसमाचार के लेखक के विषय में यह *बाह्य प्रमाण* विश्वव्यापी आरम्भिक मसीही परम्परा से सहमत है। इरेनियस ने तीसरे सुसमाचार को लूका के नाम से व्यापक रूप से उद्धरित किया है। जस्टिन मार्टिर, हेगसिप्पस, अलेक्ज़ेन्ड्रिया के क्लेमेन्ट, और टर्टुलियन लूका को इस सुसमाचार का लेखक मानने वाले आरम्भिक समर्थकों में शामिल हैं। मार्सीयोन ने बाइबल की पुस्तकों का एक अलग प्रामाणिक–संग्रह तैयार किया था, जिसमें उसने अपने एकतरफा दृष्टिकोण से काफी सावधानी बरतते हुए काफी कम पुस्तकों को स्थान दिया था, इस झूठे शिक्षक के द्वारा मात्र लूका के सुसमाचार को ही सुसमाचार के रूप में स्वीकार कर अपने संग्रह में स्थान दिया गया था। मुराटोरी के अपूर्ण प्रामाणिक–संग्रह में तीसरे सुसमाचार को लूका का नाम दिया गया है।

लूका एकमात्र सुसमाचार प्रचारक है जिसने अपने सुसमाचार की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए एक और पुस्तक लिखी, और इसी पुस्तक को पढ़ कर, जिसे हम प्रेरितों के

काम की पुस्तक कहते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि इन पुस्तकों का लेखक लूका है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, जिन खण्डों में लेखक ने ''हम'' का उपयोग किया है, ये खण्ड ऐसे खण्ड हैं जिनमें लेखक उन में दिए गए वर्णनों में व्यक्तिगत रूप से शामिल था (16:10; 20:5,6; 21:15; 27:1; 28:16; साथ ही 2 तीमु. 4:11 से तुलना कीजिए)। विलोपन की प्रक्रिया के आधार पर, सिर्फ लूका ही इन सभी अवधियों में उपयुक्त बैठता है। दोनों ही पुस्तकों में यह उल्लेख किया गया है कि ये पुस्तकें थियोफिलुस के लिए विशेष कर के लिखी गई थीं, साथ ही इन दोनों पुस्तकों को लिखने की शैली भी एक ही है, इन दोनों तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि लूका ही इन दोनों पुस्तकों का लेखक है।

पौलुस ने लूका को ''प्रिय वैद्य'' कहा और उसका उल्लेख यहूदी मसीहियों से अलग किया है (कुलु. 4:14), जिससे यह ज्ञात होता है कि वह नया नियम का एकमात्र गैरयहूदी लेखक है। आकार में, लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक को एक साथ रखने पर यह खण्ड, पौलुस द्वारा लिखी गई सारी पत्रियों को एक साथ रखने पर भी उनसे बड़ा है।

आन्तरिक प्रमाण भी लूका के इन पुस्तकों का लेखक होने के बाहरी तथ्यों और कलीसिया के परम्परागत मतों की पुष्टि करते हैं। इस पुस्तक में उपयोग की गई शब्दावलियां (नया नियम के अन्य लेखकों की तुलना में अधिक ठोस और सही चिकित्सकीय शब्दावलियों का उपयोग किया गया है) एक शिक्षित यूनानी व्यक्ति की शैली में है, जिससे इस बात को बल मिलता है कि इस सुसमाचार का लेखक एक गैरयहूदी सुसंस्कृत मसीही वैद्य था, जो यहूदी पृष्ठभूमि से चिरपरिचित था। ठीक ठीक जाँच परख कर और क्रमानुसार लिखने में लूका का शौक (उदा., 1:1–4; 3:1) उसे कलीसियाई इतिहास का सबसे पहला इतिहासकार बना देता है।

III. तिथि

इस सुसमाचार को लिखे जाने की सबसे सम्भावित तिथि प्रथम शताब्दी का साठवां दशक है। यद्यपि कुछ लोगों का मानना है कि इस सुसमाचार को 75–85 (या कुछ यहाँ तक कहते हैं कि दूसरी शताब्दी) में लिखा गया, परन्तु ऐसा मानना इस बात का इंकार करना होगा कि प्रभु यीशु यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी ठीक ठीक नहीं कर सकता। यरूशलेम को सन् 70 में नाश कर दिया गया था, इसलिए यह अनिवार्य है कि प्रभु की भविष्यद्वाणी उस तिथि से पहले लिखी गई हो।

चूंकि लगभग सभी इस बात से सहमत हैं कि लूका का सुसमाचार अवश्य ही प्रेरितों के काम से पहले लिखा गया, और प्रेरितों के काम का समापन लगभग सन् 63 में रोम में पौलुस के साथ होता है, इसलिए लूका रचित सुसमाचार इस तिथि से पहले लिखा गया है। रोम में लगी भीषण आग और इसके परिणामस्वरूप नीरो द्वारा यहूदियों को बलि का बकरा बना कर उनका सताव करना (सन् 64) और पतरस और पौलुस की शहादत कुछ ऐसी बातें थीं जिन्हें कलीसिया का पहला इतिहासकार लूका अपनी पुस्तक में शामिल करने के लिए अनदेखा नहीं करता यदि ये बातें इस पुस्तक के लिखे जाने से पहले घटतीं। इसलिए सन् 61 से 62 की तिथि ही इस सुसमाचार के लेखन की सबसे अधिक सम्भावित तिथि है।

IV. पृष्ठभूमि और प्रमुख विषय

यूनानी लोग एक सिद्ध ईश्वरीय मानव की प्रतीक्षा कर रहे थे – एक ऐसा व्यक्तित्व जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के सर्वोत्तम गुण पाए जाते हों और दोनों के कोई भी अवगुण उसमें न हों। लूका ने मसीह को मनुष्य के पुत्र के रूप में इसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है – सामर्थी, परन्तु दयालु। उसने प्रभु के मनुष्यत्व पर जोर दिया है।

उदाहरण के लिए, उसके प्रार्थनामय जीवन का उल्लेख अन्य सुसमाचारों की तुलना में इस सुसमाचार में सबसे अधिक आया है। उसकी सहानुभूति और दया का बार बार उल्लेख किया गया है। शायद यही कारण है कि इस सुसमाचार में स्त्रियों और बच्चों को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। लूका के सुसमाचार को मिशनरी सुसमाचार भी कहा गया है। इस पुस्तक में होकर सुसमाचार गैरयहूदियों तक पहुँचा और प्रभु यीशु को जगत के उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया। अन्तिम बात, यह सुसमाचार शिष्यता की शिक्षा के लिए एक मार्गदर्शिका है। हम अपने प्रभु के जीवन में शिष्यता के मार्ग को पाते हैं, और चेलों को दी जा रही

शिक्षाओं में इसे सुनते हैं। हमें इसी विशेषता को विशेष रूप से वचन की व्याख्या करते समय अपनाना है। सिद्ध मानव के जीवन में हमें ऐसी बातें देखने के लिए मिलती हैं जो सारे मानव के लिए जीवन का एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं। उसके अतुलनीय वचनों में हमें क्रूस का मार्ग दिखाई देता है जिस पर चलने के लिए वह हमें बुलाता है।

अब जबकि हम लूका के सुसमाचार का अध्ययन आरम्भ करते हैं, तो हम उद्धारकर्ता की बुलाहट को सुन सकें, और सब कुछ छोड़ कर उसके पीछे हो लें। आज्ञाकारिता आत्मिक ज्ञान का एक अंग (अवयव) है। पवित्रशास्त्र का अर्थ तब अधिक से अधिक स्पष्ट होता जाता है और अधिक से अधिक प्रिय होने लगता है जब हम इसमें दिए गए अनुभवों में प्रवेश करने लगते हैं।

रूपरेखा

I. प्रस्तावना: लूका का उद्देश्य और उसका तरीका (1:1–4)
II. मनुष्य के पुत्र का आगमन और उसका मार्ग तैयार करने वाला (1:5–2:52)
III. सेवकाई के लिए मनुष्य के पुत्र का तैयार होना (3:1–4:30)
IV. मनुष्य का पुत्र अपनी सामर्थ को सिद्ध करता है (4:31–5:26)
V. मनुष्य का पुत्र अपनी सेवकाई को स्पष्ट करता है (5:27–6:49)
VI. मनुष्य का पुत्र अपनी सेवकाई का विस्तार करता है (7:1–9:50)
VII. मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध सताव का बढ़ना (9:51–11:54)
VIII. यरूशलेम की ओर बढ़ते हुए शिक्षा और चंगाई की सेवकाई (12–16 अध्यायों में)
IX. मनुष्य का पुत्र अपने चेलों को निर्देश देता है (17:1–19:27)
X. मनुष्य का पुत्र यरूशलेम में (19:28–21:38)
XI. मनुष्य के पुत्र का दुखभोग और उसकी मृत्यु (अध्याय 22, 23 में)
XII. मनुष्य के पुत्र की विजय (अध्याय 24)

टीका

I. प्रस्तावना: लूका का उद्देश्य और उसका तरीका (1:1–4)

अपनी प्रस्तावना में, लूका अपने आप को एक इतिहासकार के रूप में प्रस्तुत करता है। वह स्रोत–सामग्री और अपनी लेखन–विधि का वर्णन करता है। उसके बाद वह अपने लिखने के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। मानव लेखक के रूप में, उसके पास दो प्रकार की स्रोत सामग्रियां हैं – मसीह के जीवन का लिखित ब्यौरा और मसीह के जीवन की घटनाओं को अपनी आँखों से देखे हुए लोगों से मिली मौखिक जानकारियाँ।

1:1 लिखित ब्यौरे का वर्णन पद 1 में पाया जाता है: **बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है।** हम इन लेखकों के बारे में नहीं जानते। मत्ती और मरकुस इनमें शामिल रहे होंगे परन्तु यह स्पष्ट है कि शेष अन्य को परमेश्वर की ओर से प्रेरणा नहीं मिली थी। (यूहन्ना ने अपना सुसमाचार बाद में लिखा था)।

1:2 लूका ने इस पुस्तक के लेखन के लिए उन लोगों की मौखिक जानकारियों का भी उपयोग किया है जो **पहिले से इन बातों के देखनेवाले और वचन के**

सेवक थे। लूका यह दावा नहीं करता कि वह इन बातों का प्रत्यक्षदर्शी है, परन्तु उसने अवश्य ही प्रत्यक्षदर्शियों से बातचीत कर इस विषय पर जानकारियां प्राप्त की है। वह हमारे प्रभु के इन सहयोगियों को **इन बातों के देखनेवाले** और **वचन के सेवक** कहा है। यहाँ पर उसने **वचन** को मसीही के एक नाम के रूप में उपयोग किया है जिस तरह से यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में किया है। यहाँ पर **पहिले से** का अर्थ है, मसीही युग का वह आरम्भ जिसके बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने पहले से बताया था। यह तथ्य कि लूका ने लिखित और मौखिक जानकारियों का उपयोग इस पुस्तक को लिखने के लिए किया इस बात का इंकार नहीं करता कि उसने जो कुछ लिखा था वह पूरी तरह से परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। इसका सीधा सीधा अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा ने उसका मार्गदर्शन किया कि वह अपने पास उपलब्ध सामग्रियों का सही चुनाव कर उन्हें ठीक ठीक व्यवस्थित कर सके।

जेम्स एस. स्टीवर्ट ने इस प्रकार से टिप्पणी की है:

> लूका से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि जिन लेखकों ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से पवित्रशास्त्र की रचना की, उन्हें बीती बातों की खोज करने के कठिन परिश्रम से कोई आश्चर्यजनक छुटकारा नहीं मिल गया था . . .। प्रेरणा का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने जादुई तरीके से मानवीय बुद्धि और इन्द्रियों को लोकातीत कर दिया हो; प्रेरणा का अर्थ यह है कि मानवीय बुद्धि और इन्द्रियों को परमेश्वर को समर्पित कर दिए जाने के द्वारा परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त कर रहा था। प्रेरणा ने लेखक के स्वयं के व्यक्तित्व को शून्य नहीं बना दिया, न ही उसे परमेश्वर का कोई यंत्र बना दिया; प्रेरणा ने लेखक के व्यक्तित्व को और सुदृढ़ किया और उसे परमेश्वर के लिए एक जीवित साक्षी बना दिया।[1]

1:3 लूका ने लिखने के अभिप्राय और लिखने की विधि का एक संक्षिप्त उल्लेख करते हुए कहा: **इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं**। अपने अभिप्राय के विषय में वह सीधा सीधा कहता है, **मुझे . . . यह उचित मालूम हुआ**। मानवीय स्तर पर वह इच्छुक था कि वह इस सुसमाचार को लिखे। नि:सन्देह, हम जानते हैं कि ईश्वरीय नियंत्रण का उसके इस निर्णय के साथ पूरा पूरा तालमेल था।

यदि हम उसके लेखन विधि की बात करें, तो सबसे पहले उसने **सब बातों** को आरम्भ से लेकर अन्त तक ठीक ठीक व्यवस्थित किया और फिर उसे क्रमानुसार लिखा। उसने हमारे उद्धारकर्ता के जीवन की घटनाओं का सावधानीपूर्वक तकनीकी जाँच किया। लूका ने उन स्त्रोतों की भी जाँच की जिनका उसने उपयोग किया, उन सारी बातों को हटा दिया जो ऐतिहासिक रूप से सही नहीं थीं और आत्मिक दृष्टिकोण से उपयोगी नहीं थीं, और उसके बाद उसने आवश्यक बातों को उसी क्रम से जमाया जिस क्रम से इस समय ये हमारे पास हैं। लूका जब ये कहता है कि उसने सब कुछ **क्रमानुसार** लिखा है तो उसका अर्थ यह नहीं है कि ये बातें अनिवार्यत: कालक्रम के अनुसार लिखी गई हों। इस सुसमाचार में घटनाओं को उस क्रम में नहीं जमाया गया है जिस क्रम में वे घटीं। बल्कि वे नैतिक और आत्मिक शिक्षा के क्रम में जमाई गई हैं, अर्थात्, वे विषय और नैतिक निर्देशों के क्रम से जमाई गई हैं, समय के क्रम से नहीं। यद्यपि यह सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक **थियुफिलुस** को सम्बोधित करते हुए लिखी गईं हैं, पर यह आश्चर्य की बात है कि हम उसके बारे में अधिक कुछ नहीं जानते। उसे दिया गया पदनाम **श्रीमान** यह संकेत देता है कि वह एक सरकारी अधिकारी था। उसके नाम थियुफिलुस का अर्थ होता है, *परमेश्वर का मित्र*। शायद वह एक मसीही था जो रोमी साम्राज्य में किसी आदर और जिम्मेदारी के पद पर विदेशी सेवा में आसीन था।

1:4 लूका का उद्देश्य यह था कि वह थियोफिलुस को एक लिखित ब्यौरा दे जिसके द्वारा उन सारी बातों की विश्वासयोग्यता की पुष्टि हो जाए जो प्रभु यीशु के जीवन और सेवकाई के विषय में सिखाई जा रही थीं। लिखित सन्देश रहने से इसे सतत् मौखिक संचार से आने वाली गड़बड़ियों से संरक्षित रखा जा सकता था।

और इस तरह से, 1–4 पदों में उन मानवीय परिस्थितियों की संक्षिप्त किन्तु ज्ञानसम्पन्न पृष्ठभूमि प्रदान की गई है जिस पृष्ठभूमि में यह सुसमाचार लिखा गया। हम जानते हैं कि लूका ने इस सुसमाचार को परमेश्वर की प्रेरणा से रचा था। उसने यहाँ पर इस बात का उल्लेख नहीं किया है, परन्तु *आरम्भ से* शब्द में उसने इसका संकेत अवश्य दिया है, इस शब्द का अनुवाद *ऊपर से*[2] भी किया जा सकता है।

II. मनुष्य के पुत्र का आगमन और उसका मार्ग तैयार करने वाला (1:5–2:52)

अ. मार्ग तैयार करनेवाले के जन्म की घोषणा (1:5–2:52)

1:5, 6 लूका ने अपने वर्णन का आरम्भ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के माता–पिता से हमारा परिचय करवाते हुए किया है। वे उस समय के लोग थे जब दुष्ट **हेरोदेस** महान **यहूदियों का राजा** था। वह इदुमई था, अर्थात्, एसाव (एदोम) के वंश का था।

जकरयाह (अर्थात्, *यहोवा स्मरण करता है)* एक **याजक** था जो कि **अबिय्याह के दल** का सदस्य था, अबिय्याह का दल उन चौबीस पारियों में से एक पारी में मन्दिर की सेवा करता था जिसे दाऊद के द्वारा यहूदी याजकों को बांटा गया था (1 इतिहास 24:10)। प्रत्येक दल को साल में दो बार सब्त से लेकर सब्त तक यरूशलेम के मन्दिर में सेवा करने का कार्य सौंपा जाता था। जकरयाह के दिनों में इतने ढेर सारे याजक थे कि धूप जलाने का सुअवसर किसी भी याजक के जीवन में एकाध बार ही आ पाता था।

इलीशिबा (अर्थात्, *परमेश्वर की शपथ*) भी **हारून** के याजकीय घराने से थी। वह और उसका पति परमेश्वर का भय माननेवाले यहूदी थे, और नैतिक तथा संस्कारिक दोनों ही रूपों में पवित्रशास्त्र का पालन करने में विश्वासयोग्य थे। यह सच है कि वे निष्पाप नहीं थे, परन्तु जब वे पाप करते थे, तो वे बलिदान चढ़ाया करते थे या अन्य रीति से व्यवस्था की मांगों को पूरी करते थे।

1:7 इस दम्पत्ति की कोई *सन्तान नहीं* थी, किसी भी यहूदी के लिए नि:सन्तान होना एक कलंक के समान था। लूका वैद्य इस बात का उल्लेख करता है कि उनके नि:सन्तान होने का कारण इलीशिबा का बांझपन था। इस समस्या की गम्भीरता इस तथ्य से और बढ़ गई थी कि **वे दोनों बूढ़े** हो चुके थे।

1:8–10 एक दिन जकरयाह **मन्दिर** में अपनी याजकीय सेवा कर रहा था। यह उसके जीवन का एक महान दिन था क्योंकि पवित्रस्थान में **धूप** जलाने के लिए उसे चिट्ठी डालकर चुना गया था। **लोगों** की मण्डली मन्दिर के **बाहर** एकत्रित हुई थी और **प्रार्थना कर रही थी**। ऐसा प्रतीत होता है कि इस बात को कोई भी पूरी निश्चयता के साथ नहीं जानता कि **धूप जलाने का समय** किस समय के लिये कहा गया है।

यह उत्साहवर्धक है कि सुसमाचार के आरम्भ में लोगों को मन्दिर में प्रार्थना करते हुए और सुसमाचार के समापन में लोगों को मन्दिर में आराधना करते हुए प्रस्तुत किया गया है। इन दोनों के बीच के अध्यायों में यह बताया गया है कि किस तरह से प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और कार्य में उन लोगों की प्रार्थना का उत्तर दिया गया।

1:11–14 जब याजक और लोगों की मण्डली प्रार्थना कर रही थी, तब यह ईश्वरीय प्रगटीकरण के लिए एक बिल्कुल उपयुक्त समय था। **प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ** दिखाई दिया – यह स्थान अनुग्रह का स्थान था। पहले तो **जकरयाह** डर गया; उसके समय के किसी भी व्यक्ति ने अब तक किसी स्वर्गदूत को नहीं देखा था। परन्तु स्वर्गदूत ने उसे एक अद्‌भुत सुसमाचार सुनाते हुए आश्वस्त किया। **इलीशिबा** से उसे एक **पुत्र** उत्पन्न होगा, जिसका नाम **यूहन्ना** (अर्थात्, *यहोवा का अनुग्रह*) रखा जाना था। अपने माता–पिता के **आनन्द और हर्ष** का कारण होने के साथ–साथ, वह **बहुत** लोगों के लिए आशीष का कारण होगा।

1:15 यह बालक **प्रभु** की दृष्टि में **महान होगा** (यही वह महानता है जो सचमुच में महत्व रखती है)। सबसे पहली बात, वह परमेश्वर के लिए व्यक्तिगत रूप से अलग किए जाने के कारण महान होगा; वह **दाखरस** (अंगूर के रसों से बनाया हुआ) और **मदिरा** (अन्न से बनाया हुआ) कभी न पीएगा।

दूसरी बात, वह आत्मिक सम्पन्नता में महान होगा; वह **अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा**। (इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि गर्भ में ही यूहन्ना ने उद्धार का अनुभव प्राप्त किया या अपना मन फिरा लिया, परन्तु इसका अर्थ सिर्फ यह है कि गर्भ से ही परमेश्वर का आत्मा उसमें था ताकि मसीह का मार्ग तैयार करनेवाले के रूप में उसके विशेष मिशन के लिए उसे तैयार करे।)

1:16–17 तीसरी बात, वह मसीह का मार्ग तैयार करनेवाले की अपनी भूमिका के कारण महान होगा। वह

बहुतेरे यहूदी लोगों को **प्रभु परमेश्वर** की ओर **फेरेगा।** उसकी सेवकाई **एलिय्याह** के समान होगी, एलिय्याह एक भविष्यद्वक्ता था जो लोगों को मनफिराव के माध्यम से परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में लौटाना चाहता था। जैसा कि जी. कॉलमेन लक ने कहा है:

> उसका प्रचार लापरवाह माताओं–पिताओं को बदल देगा कि वे अपने बच्चों के आत्मिक जीवन की वास्तव में चिन्ता करें। साथ ही वह अनाज्ञाकारी, विद्रोही के हृदय को बदल कर उन्हें ''धर्मियों की समझ'' प्रदान करेगा।[3]

दूसरे शब्दों में, वह संसार में विश्वासियों के एक ऐसे समूह को एकत्रित करने के लिए परिश्रम करेगा जो प्रभु के आगमन पर उससे मुलाकात करने के लिए तैयार रहें। यह एक ऐसी सेवकाई है जिसे हम सब को करनी चाहिए।

ध्यान दें कि पद 16 और 17 में मसीह के ईश्वरत्व की ओर किस प्रकार से संकेत किया गया है। पद 16 में लूका कहता है कि यूहन्ना **इस्राएलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा।** उसके बाद पद 17 में, लूका कहता है कि यूहन्ना **उसके आगे आगे चलेगा।** *'उसके'* शब्द किसके लिए प्रयोग में लाया गया है? स्पष्टत:, पिछले पद में आए *उन के प्रभु परमेश्वर* के लिए। और तौभी हम यह जानते हैं कि यूहन्ना *यीशु* का अग्रदूत (मार्ग तैयार करनेवाला) था। तब यह संकेत यहाँ पर स्पष्ट हो जाता है। यीशु परमेश्वर है।

1:18 बूढ़ा हो चुका **जकरयाह** इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की किसी भी सम्भावना को नहीं देख पाता। वह और उसकी **पत्नी** दोनों इतने बूढ़े हो चुके थे कि सन्तानोत्पत्ति की आशा नहीं की जा सकती थी। उसके विषादपूर्ण प्रश्न ने उसके हृदय की शंका को बाहर ला दिया।

1:19 स्वर्गदूत ने उत्तर देते हुए पहले अपना परिचय **जिब्राईल** *(परमेश्वर का सामर्थी)* के रूप में दिया। यद्यपि सामान्य रूप से उसका उल्लेख प्रधान स्वर्गदूत के रूप में किया गया है, पवित्रशास्त्र में उसका उल्लेख एक ऐसे जन के रूप में किया गया है **जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता है** और जो परमेश्वर का सन्देश मनुष्य तक लाता है (दानि.8:16; 9:21)।

1:20 चूंकि जकरयाह ने सन्देह किया, इस कारण वह उस दिन तक बोलने की क्षमता से वंचित रहेगा **जिस दिन तक** बच्चे का जन्म न हो जाए। जब कभी एक विश्वासी परमेश्वर के वचन के प्रति सन्देह जताता है, वह अपनी गवाही और अपना 'गीत' खो देता है। अविश्वास उसके ओठों को सी देता है, और वे तब तक बन्द रहते हैं जब तक कि विश्वास लौट नहीं आता और फिर उनसे स्तुति और गवाही फूट निकलती हैं।

1:21,22 बाहर, **लोग** अधीर होकर प्रतीक्षा कर रहे थे; सामान्यत: जो याजक धूप जलाने के लिए जाया करता था वह काफी पहले लौट आता था। जब **जकरयाह . . . बाहर आया,** तो वह लोगों से इशारे में बात करने लगा। तब वे समझ गए कि **उसने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है।**

1:23 जब मन्दिर में उसकी पारी समाप्त हो गई, तब याजक वापस अपने घर चला गया, अब भी वह बात कर पाने में असमर्थ था, जैसा कि स्वर्गदूत ने भविष्यद्वाणी की थी।

1:24, 25 जब **इलीशिबा** गर्भवती हुई तब उसने **पाँच महीने** तक अपने आप को लोगों से छिपाए रखा, और वह भीतर ही भीतर आनन्दित थी कि **प्रभु** ने उचित समझा है कि वह उसे नि:सन्तान होने के **अपमान** से मुक्त कर दे।

ब. मनुष्य के पुत्र के जन्म की घोषणा (1:26–38)

1:26, 27 जकरयाह के सामने प्रगट होने के बाद (या इलीशिबा के गर्भवती होने के) **छठवें महीने में . . .जिब्राईल** फिर से प्रगट हुआ – इस बार वह एक **कुंवारी के पास** पहुँचा जिसका नाम मरियम था और जो **गलील** के **नासरत** में रहती थी। मरियम की **मंगनी** एक **पुरुष** से हो गई थी जिसका नाम **यूसुफ** था, वह **दाऊद** के वंश का था, जो दाऊद की राजगद्दी का वैधानिक उत्तराधिकारी था, उसके बाद भी वह एक बढ़ई था। उस समय मंगनी को वर्तमान में होने वाली सगाई की तुलना में काफी अधिक बाध्यकारी माना जाता था। बल्कि, इसे तोड़ने के लिए तलाक के समान ही एक वैधानिक प्रक्रिया को पार करना पड़ता था।

1:28 स्वर्गदूत ने मरियम को एक ऐसी स्त्री के रूप में सम्बोधित किया जिस पर **अनुग्रह** हुआ है, एक ऐसी स्त्री जिसे सुअवसर मिला है कि परमेश्वर उसे दर्शन दे।

यहाँ पर दो बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है: (1) स्वर्गदूत ने मरियम की आराधना *नहीं* की, न ही उससे प्रार्थना की; उसने सीधे सीधे उसका अभिवादन किया। (2) उसने यह *नहीं* कहा कि मरियम अनुग्रह से भरपूर है, परन्तु यह कि उस पर अनुग्रह हुआ है।

1:29, 30 हम समझ सकते हैं कि मरियम इस अभिवादन से **घबरा** गई थी; उसे विस्मय हो रहा था कि इस अभिवादन का क्या अर्थ हो सकता है। **स्वर्गदूत** ने उसके डर को दूर किया, और फिर उसे बताया कि **परमेश्वर** उसे बहुप्रतीक्षित मसीह की माता होने के लिए चुना रहा है।

1:31–33 इस घोषणा में निहित महत्वपूर्ण सच्चाइयों की ओर ध्यान दें:

मसीह का वास्तविक मनुष्यत्व – **तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र होगा।**

उसका ईश्वरत्व और उद्धारकर्ता के रूप में उसका मिशन – **तू उसका नाम यीशु रखना** (यीशु का अर्थ *है – यहोवा ही उद्धारकर्ता है)*।

उसकी सारभूत महानता – **वह महान होगा,** अपने व्यक्तित्व और कार्य दोनों में।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी पहचान – **और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा।**

दाऊद की राजगद्दी पर उसकी पदवी – **प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा।** यह बात उसके मसीह होने की पुष्टि करती है।

उसका अनन्त और व्यापक राज्य – **वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।**

पद 31 और 32अ में स्पष्टत: मसीह के प्रथम आगमन के बारे में कहा गया है, जबकि पद 32ब और 33 में उसके दूसरे आगमन का वर्णन किया गया है जब वह 'राजाओं का राजा' और 'प्रभुओं का प्रभु' के रूप में आएगा।

1:34, 35 मरियम के प्रश्न, ''**यह क्योंकर** (कैसे) **होगा?**'' में शंका नहीं परन्तु आश्चर्य का भाव था। उसके गर्भ में एक पुत्र कैसे आ सकता है जबकि उसने कभी किसी **पुरुष** के साथ (शारीरिक) सम्बन्ध नहीं बनाया था? यद्यपि स्वर्गदूतों ने सीधे सीधे नहीं कहा परन्तु इस प्रश्न का उत्तर था: *कुंवारी से जन्म* के द्वारा। यह **पवित्र आत्मा** का एक आश्चर्यकर्म होगा। पवित्र आत्मा उस पर **उतरेगा**, और परमेश्वर की **सामर्थ** उस पर **छाया** करेगी। मरियम की ''**क्योंकर**'' (कैसे) की समस्या का समाधान – मानवीय समझ के अनुसार असम्भव है – परन्तु परमेश्वर का उत्तर है ''पवित्र आत्मा।''

इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। यहाँ पर देहधारण के विषय में एक शानदार कथन पाया जाता है। मरियम का पुत्र देह रूप में परमेश्वर का प्रगटीकरण होगा। यहाँ छिपे भेद को व्यक्त करने में कोई भी भाषा पर्याप्त नहीं है।

1:36, 37 उसके बाद स्वर्गदूत ने मरियम को यह खबर सुनाई कि यह उसकी **कुटुम्बनी इलीशिबा** के गर्भ का **छठवां महीना** है – वही इलीशिबा जो अब तक बांझ थी। इस आश्चर्यकर्म से मरियम को आश्वस्त हो जाना चाहिए कि **परमेश्वर की ओर से** जो कुछ होता है वह **प्रभावरहित नहीं होता** या परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

1:38 बड़ी सुन्दर रीति से समर्पण करते हुए **मरियम** ने अपने आप को प्रभु के हाथों में सौंप दिया ताकि वह अपनी अद्भुत योजना को पूर्ण करने में उसका उपयोग कर सके। उसके बाद **स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।**

स. मरियम इलीशिबा से मिलने को जाती है (1:39–45)

1:39, 40 हमें यह नहीं बताया गया है कि **मरियम** इस समय **इलीशिबा** से मिलने के लिए क्यों गई। शायद वह उस बवाल से बचना चाहती रही हो जो कि उसकी अवस्था सार्वजनिक होने के बाद नासरत में खड़ा हो सकता था। यदि कारण यही था, तब फिर इलीशिबा के द्वारा किया गया स्वागत और उसके द्वारा दर्शायी गई भलाई मरियम के लिए दोहरी खुशी लेकर आई होगी।

1:41 जैसे ही **इलीशिबा** ने मरियम की आवाज को **सुना**, **बच्चा उसके पेट में उछला** – अजन्मे मसीह के आगमन के प्रति अजन्मे अग्रदूत की एक रहस्यमयी, अनजाने में की गई प्रतिक्रिया। **इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई**, अर्थात्, पवित्र आत्मा का उस पर नियंत्रण था, और वह उसकी वाणी और कार्यों का मार्गदर्शन कर रहा था।

अध्याय 1 में तीन लोगों के पवित्र आत्मा से परिपूर्ण

होने का उल्लेख किया गया है: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (पद 15); इलीशिबा (पद 41); और जकरयाह (पद 67)।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन का एक चिन्ह है – भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाना (इफि. 5:18, 19)। इसलिए हमें इस अध्याय में तीन, और अगले अध्याय में दो गीतों को देख कर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इनमें से चार गीतों को सामान्यत: लैटिन भाषा में उनकी प्रत्येक की पहली पंक्तियों से पहचाना जाता है: (1) इलीशिबा का अभिवादन (1:42–45); (2) *मैगनिफिकेट* /बड़ाई का गीत (1:46–55); (3) *बेनेडिक्टस*/धन्य (1:68–79); (4) *ग्लोरिया इन एक्सेसिस डियो*/आकाश में परमेश्वर की महिमा (2:14); और (5) *नंक डिमिट्टिस*/अब तू विदा करता है (2:29–32)।

1:42–45 विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से प्रेरणा प्राप्त कर, इलीशिबा ने मरियम को **''मेरे प्रभु की माता''** कहते हुए सम्बोधित किया। उसके हृदय में अंशमात्र भी ईर्ष्या नहीं थी; बल्कि सिर्फ आनन्द और हर्ष था कि यह अजन्मा बच्चा उसका **प्रभु** होगा। मरियम **स्त्रियों में** इसलिए **धन्य** थी कि उसे मसीह को अपने गर्भ में पालने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसके **पेट का फल** इसलिए धन्य है कि वह प्रभु और उद्धारकर्ता है। बाइबल में मरियम को कहीं भी ''परमेश्वर की माता'' *नहीं* कहा गया है। यद्यपि यह सत्य है कि वह यीशु की माता थी और यीशु परमेश्वर है, तथापि यह कहना सैद्धान्तिक रूप से अटपटा होगा कि परमेश्वर की कोई माता है । यीशु अनन्तकाल से अस्तित्व में रहा है जबकि मरियम एक सीमित सृष्टि थी जो एक निश्चित तारीख से अस्तित्व में आई। वह सिर्फ यीशु के देहधारण में उसकी माता थी।

इलीशिबा ने बताया कि जैसे ही मरियम ने पहली बार उससे बात की, उसने अपने अजन्मे बच्चे की अन्तर्बोधी प्रतीत होने वाली उत्तेजना को महसूस किया। उसके बाद उसने मरियम को आश्वासन दिया कि उसके विश्वास के लिए उसे बहुतायत का प्रतिफल दिया जाएगा। उसकी आशा पूरी होगी। उसका विश्वास व्यर्थ नहीं जाएगा। प्रतिज्ञा के अनुसार उसके बच्चे का जन्म होगा।

द. मरियम प्रभु की बड़ाई करती है (1:46–56)

1:46–49 यह बड़ाई–गीत हन्ना के गीत से मिलता जुलता है (1 शमू. 2:1–10)। पहले, प्रभु ने जो कुछ मरियम के साथ किया उसके लिए **मरियम** ने **प्रभु** की स्तुति की (46ब–49)। ध्यान दें कि उसने कहा (पद 48) **''सब युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे**।'' मरियम दूसरों को आशीष प्रदान करने वाली नहीं होगी परन्तु वह आशीष पाने वाली होगी। वह **परमेश्वर** को उसका **उद्धार करने** वाला **परमेश्वर** कहती है, जिससे यह धारणा निर्मूल सिद्ध होती है कि मरियम निष्पाप थी।

1:50–53 उसके बाद, वह इस बात के लिए प्रभु की स्तुति करती है कि **उसकी दया उन पर जो उस से डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है**। उसने **बलवानों** और अपने आप **बड़ा** समझने वालों **को** गिरा दिया और **दीनों** और **भूखों** को ऊँचा उठाया।

1:54, 55 अन्तिम बात, उसने उन प्रतिज्ञाओं को इस्राएल के लिए पूरा करने में प्रभु की विश्वासयोग्यता के लिए उसकी बड़ाई की जिन्हें उसने **इब्राहीम और उसके वंश** से की थी।

1:56 इलीशिबा के साथ **लगभग तीन महीने** तक ठहरने के बाद, मरियम **अपने घर** नासरत को **लौट गई**। वह अब तक अविवाहित थी। इस बात पर कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि उसे आस–पड़ोस के लोगों की शंका और निन्दा का सामना करना पड़ा होगा। परन्तु परमेश्वर उसका बदला लेगा; वह धीरज धर सकेगी।

इ. अग्रदूत का जन्म (1:57–66)

1:57–61 **इलीशिबा** ने समय पूरे होने पर एक **पुत्र** को जन्म दिया। उसके **कुटुम्बियों** और मित्रों को बड़ा आनन्द हुआ। **आठवें दिन**, जब **बालक** का खतना हुआ, तो लोगों को लगा कि उसका नाम **उसके पिता** के नाम पर **जकरयाह** रखा जाएगा। जब **उसकी माता** ने उन्हें बताया कि बालक का नाम **यूहन्ना** होगा, तो उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसके **कुटुम्ब** में **यह नाम** किसी का नहीं था।

1:62–63 अन्तिम निर्णय के लिए, उन्होंने जकरयाह से **संकेत** में उसकी राय पूछी। (इससे यह पता चलता है कि वह न सिर्फ गूंगा, बल्कि बहरा भी हो गया था)। उसने **लिखने की एक पट्टी** मंगाई और मामले को सुलझा दिया – बालक का नाम **यूहन्ना** रखा गया। **सभों ने अचम्भा** किया।

1:64–66 परन्तु उन्हें और भी आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि जैसे ही जकरयाह ने बालक का नाम ''यूहन्ना'' लिखा वैसे ही उसके बोलने की क्षमता लौट आई। यह खबर **यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में** फैल गई; और लोगों ने इस असाधारण बालक के भविष्य के कार्य के बारे में आश्चर्य किया। वे यह जान गए कि **प्रभु का हाथ** विशेष रूप से **उसके साथ था**।

फ.यूहन्ना के विषय में जकरयाह की भविष्यद्वाणी (1:67–80)

1:67 अविश्वास के चंगुल से मुक्त होने के बाद और **पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** हो कर **जकरयाह** को प्रेरणा मिली कि वह स्तुति का एक अर्थपूर्ण भजन बोले, यह भजन पुराना नियम के उद्धरणों से भरपूर था।

1:68, 69 *परमेश्वर द्वारा किए गए कार्यों के लिए स्तुति.* जकरयाह ने जान लिया कि उसके पुत्र यूहन्ना का जन्म, मसीह के आगमन के निकट आने का संकेत है। उसने मसीह के आगमन के पहले ही उसे अपनी विश्वास की आँखों से पूरा होते देख लिया। विश्वास के कारण वह यह कह सका कि **परमेश्वर** ने छुड़ौती देनेवाले को भेजकर अपने लोगों पर **कृपादृष्टि** की **और उनका छुटकारा किया**। यहोवा ने **दाऊद के घराने** में **उद्धार का सींग निकाला** (सींग का उपयोग उसमें उस तेल को रखने के लिए किया जाता था जिसके द्वारा राजाओं का अभिषेक किया जाता था; इसलिए यहाँ पर इसका अर्थ दाऊद के राजकीय वंश में उद्धार का *राजा* हो सकता है। या फिर यह सामर्थ का प्रतीक हो सकता है और इस प्रकार से इसका अर्थ ''एक सामर्थी उद्धारकर्ता'' हो सकता है)।

1:70, 71 *भविष्यद्वाणी को पूरी करने के लिए परमेश्वर की स्तुति.* मसीह के आने की भविष्यद्वाणी **पवित्र भविष्यद्वक्ता**(ओं) के द्वारा की गई थी **जो जगत के आदि से होते आए हैं**। इसका अर्थ **शत्रुओं** से उद्धार और बैरियों से सुरक्षा हो सकता है।

1:72–75 *प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में विश्वासयोग्यता के लिए परमेश्वर की स्तुति.* प्रभु ने **इब्राहीम** के साथ उद्धार की एक नि:शर्त **वाचा** बान्धी थी। यह प्रतिज्ञा इब्राहीम की सन्तान के आने के द्वारा पूरी हुई, जो कि प्रभु यीशु मसीह है। उसके द्वारा लाया गया उद्धार बाहरी और आन्तरिक दोनों है। बाहरी उद्धार का अर्थ है उनके **शत्रुओं के हाथ से** छुटकारा। आन्तरिक उद्धार का अर्थ है **पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उसकी सेवा करते** रहना।

जी. केम्पबेल इस स्थल में से दो ध्यान देने योग्य बिन्दुओं को सामने लाते हैं।[5] पहला, वे यूहन्ना के नाम और गीत के विषय के बीच के सम्बन्ध की ओर ध्यान दिलाते हैं – दोनों ही परमेश्वर का अनुग्रह है। उसके बाद वे यूहन्ना, जकरयाह, और इलीशिबा के नामों को 72 और 73 पदों में ढूंढ़ निकालते हैं।

यूहन्ना – प्रतिज्ञा की गई दया (पद 72)

जकरयाह – स्मरण करना (पद 72)

इलीशिबा – शपथ (पद 73)

जैसा कि यूहन्ना ने घोषणा की कि परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर द्वारा **अपनी पवित्र वाचा** को स्मरण रखने का परिणाम है।

1:76, 77 *उद्धारकर्ता के अग्रदूत यहून्ना का मिशन.* यूहन्ना सर्वोच्च प्रभु का **भविष्यद्वक्ता** होगा, जो **प्रभु** के आगमन के लिए लोगों के हृदय को तैयार करेगा, और लोगों के **उद्धार** का प्रचार करेगा जो कि **उनके पापक्षमा** के द्वारा मिलेगा। एक बार फिर से हम पाते हैं कि पुराना नियम में जिन बातों को यहोवा के लिए कहा गया था उन्हें नया नियम में यीशु पर लागू किया गया है। मलाकी ने एक सन्देशवाहक के विषय में भविष्यद्वाणी की थी कि वह यहोवा के लिए आगे आगे मार्ग तैयार करेगा (मलाकी 3:1)। जकरयाह इस सन्देशवाहक की पहचान यूहन्ना के रूप में करता है। हम जानते हैं कि यूहन्ना, प्रभु यीशु के लिए मार्ग **तैयार** करने को आया था। इसलिए हम सीधे सीधे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यीशु ही यहोवा है।

1:78, 79 *यीशु के आगमन को सूर्योदय के समान बताया गया है.* शताब्दियों तक संसार में **अन्धकार** छाया हुआ था। अब **हमारे परमेश्वर की . . . बड़ी करुणा से** भोर होने पर ही है। यह भोर प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व

में होकर आएगा, और अन्यजातियों पर चमकेगा जो **अन्धकार और मृत्यु की छाया में** थे, और इस्राएल के पाँव को **कुशल के मार्ग** की ओर ले जाएगा (मला. 4:2)।

1:80 अध्याय का समापन एक साधारण वाक्य से होता है कि **बालक** शारीरिक और आत्मिक रूप से बढ़ता गया और **इस्राएल** की जाति के सामने सार्वजनिक रूप से प्रगट होने से पहले तक **जंगलों में रहा।**

ग. मनुष्य के पुत्र का जन्म (2:1–7)

2:1–3 **औगूस्तुस कैसर** ने एक **आज्ञा** निकाली कि **सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं**, उसके पूरे साम्राज्य में जनगणना कराई जाए। **यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था।** अनेक वर्षों तक लूका के सुसमाचार पर प्रश्नचिन्ह लगा हुआ था क्योंकि इस स्थल में क्विरिनियुस का उल्लेख किया गया है। किन्तु, बाद में किए गए पुरातत्व खोज इस उल्लेख की पुष्टि करते हुए प्रतीत होते हैं। **कैसर औगूस्तुस** अपनी तरफ से, यूनानी–रोमी संसार पर अपनी सर्वोच्चता का प्रदर्शन करना चाहता था। परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह गैरयहूदी सम्राट ईश्वरीय योजना के अनुसार कठपुतली के समान एक साधन मात्र था (नीति. 21:1)।

2:4–7 औगूस्तुस की राजाज्ञा ने **यूसुफ** और **मरियम** को बिल्कुल ठीक समय पर **बैतलहम** ला लिया ताकि भविष्यद्वाणी (मीका 5:2) की पूर्णता के रूप में मसीह का जन्म हो। जब वे **गलील** से बैतलहम पहुँचे तो बैतलहम में भारी भीड़ थी। उन्हें रहने के लिए **सराय** के गौशाले को छोड़ और कहीं जगह नहीं मिली। यह इस बात का एक पूर्वसंकेत था कि लोग अपने उद्धारकर्ता को किस तरह से ग्रहण करेंगे। और जब **नासरत** का यह जोड़ा उस गौशाले में ठहरा हुआ था तभी मरियम **अपना पहिलौठा पुत्र जनी। कपड़े में लपेटकर** उसे उसने प्रेम से **चरनी में रखा।**

इस तरह से परमेश्वर इस पृथ्वी पर एक असहाय शिशु के रूप में, बदबूदार गौशाले की गरीबी में आया। यह कितने आश्चर्य की बात है! मसीही बाइबल विद्वान जे.एन. डार्बी ने इसे बहुत ही सुन्दर रीति से व्यक्त किया है:

> उसने चरणी से अपना जीवन आरम्भ किया और क्रूस पर समाप्त किया, और इस बीच उसे अपना सिर रखने तक के लिए कोई स्थान नहीं मिला।[6]

ह. स्वर्गदूत और गड़रिये (2:8–20)

2:8 इस अद्वितीय जन्म की पहली सूचना यरूशलेम के धार्मिक अगुवों को नहीं, बल्कि यहूदिया की पहाड़ियों के किनारे विश्वासयोग्यता से अपना कार्य करते हुए दीन गड़ेरियों को दी गई। जेम्स एस. स्टीवर्ट ने निम्नलिखित बिन्दु की ओर ध्यान खींचा है:

> क्या इस तथ्य में अर्थों का भण्डार नहीं छिपा है कि प्रभु के आगमन की महिमा को सबसे पहले बहुत ही साधारण लोगों की आँखों ने बहुत ही साधारण कार्य करते समय देखा? इसका अर्थ है, पहला, कार्यक्षेत्र का स्थान, चाहे कितना ही साधारण क्यों न हो, वह स्थान होता है जहाँ दर्शन मिलता है। दूसरा, जो लोग जीवन की साधारण और गहरी भक्ति को बनाए रखते हैं और जिनका मन बालकों के समान होता है, ऐसे लोगों के लिए राज्य का द्वार सबसे सरलता से खुलता है।[7]

2:9–11 **प्रभु का एक दूत** गड़रियों के पास आया, और उनके **चारों ओर** एक चमकदार और महिमामय तेज **चमका**। जब वे डर से ठिठक गए, तो स्वर्गदूत ने उन्हें शान्ति दी और उन्हें बिल्कुल ताजा खबर सुनाई। यह **आनन्द का सुसमाचार** था जो **सब लोगों** के लिए था। उसी **दिन**, पास में ही बैतलहम में, एक बालक **जन्मा** है। यह बालक **उद्धारकर्ता . . . मसीह प्रभु** है! यहाँ पर धर्मविज्ञान का लघुरूप पाया जाता है। सबसे पहले, वह **उद्धारकर्ता** है, जो कि उसके नाम यीशु में व्यक्त किया गया है। उसके बाद वह **मसीह** है, जो परमेश्वर का भेजा हुए इस्राएल का मसीह है। और फिर वह **प्रभु** है, जो देहधारी रूप में परमेश्वर का प्रगटीकरण है।

2:12 गड़रिये उसे किस प्रकार से पहचानेंगे? स्वर्गदूतों ने उन्हें दो चिन्ह बताया। पहला चिन्ह यह था कि बालक **कपड़े से लिपटा** हुआ होगा। उन्होंने पहले भी कपड़े से लिपटे बच्चों को देखा था। परन्तु स्वर्गदूतों ने अभी अभी उन्हें यह बताया था कि यह बालक प्रभु है। किसी ने कभी भी प्रभु को एक **कपड़े में** लिपटे **बालक** की तरह नहीं देखा था। चिन्ह का दूसरा भाग यह था कि

वह **चरनी में पड़ा** हुआ मिलेगा। इस बात पर सन्देह है कि गड़रियों ने कभी ऐसे गन्दे स्थान पर किसी बच्चे को कभी देखा हो। यह अप्रतिष्ठा जीवन और महिमा के प्रभु के लिए आरक्षित थी जब वह हमारे संसार में आया। यह विचार कर हमारा मन व्याकुल हो जाता है कि विश्व का सृष्टिकर्ता और पालनहार मानव इतिहास में एक विजयी नायक के रूप में नहीं, परन्तु एक छोटे **बालक** के रूप में प्रवेश करता है। तौभी यह देहधारण का सत्य है।

2:13,14 एकाएक स्वर्ग का हर्षोल्लास फूट पड़ा। **स्वर्गदूतों का एक दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए** प्रगट हुआ। वर्तमान में उनके द्वारा गाए गए इस गीत को *ग्लोरिया इन इक्सेलसिस डियो* शीर्षक दिया गया है, इस गीत में बालक के जन्म की पूर्ण सार्थकता और उसके महत्व को व्यक्त किया गया है। उसका जीवन और उसकी सेवकाई **आकाश** (स्वर्ग) **में परमेश्वर की महिमा** और **पृथ्वी पर उन मनुष्यों से जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति** लेकर आएंगे।[8] वे मनुष्य जिनसे परमेश्वर प्रसन्न है ऐसे लोग हैं जो अपने पापों से फिर कर यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं।

2:15–19 जैसे ही **स्वर्गदूत** वहाँ से गये, **गड़रियों** ने तुरन्त **बैतलहम** जाकर **मरियम और यूसुफ** को **और** यीशु को **चरनी में . . . पड़ा** पाया। गड़रियों ने स्वर्गदूतों के आगमन के विषय में सारी बातें उन्हें सुनाई, जिससे जितने भी लोग उस समय गौशाले में थे चकित हुए। **परन्तु** जो कुछ भी हो रहा था उसके बारे में **मरियम** को बहुत गहरी समझ थी; उसने **ये सब बातें** अपने मन में रखी और उनके विषय में **सोचती रही**।

2:20 गड़रिये अपने झुण्ड की रखवाली करने को लौट गए, वे इन **सब** बातों **को सुनकर और देखकर** अतिआन्दित हुए, और **परमेश्वर** की आराधना करने लगे।

ई. यीशु का खतना और अर्पण (2:21–24)

इस स्थल में कम से कम तीन विभिन्न संस्कार-विधियों का वर्णन किया गया है:

1. सबसे पहले यीशु का **खतना** हुआ। यह उस समय हुआ जब वह **आठ दिन** का था। यह उस वाचा का चिन्ह था जो परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ बान्धी थी। उसी दिन, **बालक** का नाम रखा गया, जैसा कि यहूदी परम्परा थी। स्वर्गदूत ने पहले से ही मरियम और यूसुफ को यह निर्देश दिया था कि उसका नाम **यीशु** रखा जाए।

2. दूसरा समारोह मरियम के **शुद्ध होने** से सम्बन्धित था। यह समारोह यीशु के जन्म के चालीस दिन बाद हुआ (लैव्य. 12:1–4 देखें)। सामान्यत: माता-पिता को होमबलि के लिए एक मेम्ना और पापबलि के लिए कबूतर के बच्चे या पंडुकी लेकर आना पड़ता था।

परन्तु यदि माता-पिता निर्धन हैं तो उन्हें **पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे** लाने की अनुमति थी (लैव्य. 12:6–8)। यह तथ्य कि मरियम एक मेम्ना नहीं लाई, परन्तु **कबूतर के दो बच्चे** लेकर आई, उस निर्धनता की तस्वीर है जिसमें यीशु ने जन्म लिया था।

3. तीसरी संस्कार विधि थी, **यरूशलेम** के मन्दिर में यीशु को ले जाया जाना। मूलत: परमेश्वर ने यह ठहराया था कि पहिलौठा पुत्र परमेश्वर का होगा; पहिलौठे पुत्रों को ले कर याजकीय वर्ग तैयार किया जाता था (निर्ग. 13:2)। बाद में, उसने याजकों के रूप में सेवा करने के लिए लेवीय के गोत्र को अलग कर दिया (निर्ग. 28:1,2)। उसके बाद माता-पिता को अनुमति थी कि वे पाँच शकेल चुका कर अपने पहिलौठे पुत्र को ''वापस खरीद लें'' या ''छुड़ा लें''। जब वे उसे **प्रभु के सामने लाए** तब उन्होंने ऐसा ही किया।

ज. शमौन मसीह को देखने के लिए जीवित था (2:25–35)

2:25, 26 शमौन यहूदियों के भक्त विश्वासयोग्य झुण्ड के लोगों में से एक था जो मसीह के आगमन की **बाट जोह** रहा था। **पवित्र आत्मा से उसे चेतावनी हुई थी कि . . . प्रभु के मसीह** या ''अभिषिक्त''को देखने से पहले उसकी मृत्यु नहीं होगी। ''यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं'' (भजन 25:14)। जो परमेश्वर की सहभागिता में शान्तचित्त होकर चिन्तन करते हुए चलते हैं उन्हें ईश्वरीय भेद बताया जाता है।

2:27, 28 उस समय ऐसा हुआ कि जिस दिन यीशु को उसके माता-पिता प्रभु के सामने लेकर आए उसी दिन शमौन ने **मन्दिर** परिसर में प्रवेश किया। शमौन को अलौकिक रीति से यह बताया गया कि यही बालक

प्रतिज्ञा किया गया मसीह है। यीशु को **अपनी गोद में** लेकर, उसने एक विस्मरणीय गीत का उच्चारण किया जिसे आज हम *नंक डिमिट्टिस* (*अब तू अपने दास को . . . विदा करता है)* के नाम से जानते हैं।

2:29-32 इस गीत का टेक इस प्रकार से है: **हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है। मेरी आँखों ने** इस बालक के, जो कि प्रतिज्ञा किया हुआ छुड़ानेवाला है, व्यक्तित्व में **तेरे उद्धार को देख लिया है,** जैसा कि तूने मुझ से प्रतिज्ञा की थी। तू ने उसे ठहराया है कि वह सभी वर्ग के लोगों के लिए उद्धार को उपलब्ध करवाए। वह **अन्यजातियों के लिए प्रकाश देने के लिए** (उसके पहले आगमन पर) और **तेरे निज लोग इस्राएल** पर (उसके दूसरे आगमन पर) **महिमा** में चमकने के लिए **ज्योति** होगा। शमौन प्रभु यीशु को देखने के बाद मरने के लिए तैयार था। मृत्यु का डंक जाता रहा।

2:33 *किंग जेम्स वर्ज़न* सहित अधिकांश अनुवाद संस्करणों में **''उसका पिता''** के स्थान पर ''यूसुफ'' लिखा गया है; इन संस्करणों के अनुसार लूका ने कुंवारी से जन्म के सिद्धान्त पर सावधानीपूर्वक जोर देते हुए ''यूसुफ और उसकी माता'' लिखा है।

2:34, 35 मसीह को भेजने के लिए परमेश्वर की आरम्भिक स्तुति करने के बाद, **शमौन** ने माता-पिता को **आशीष** दी, और उसके बाद **मरियम** से भविष्यद्वाणिक अर्थों में बात की। उसकी भविष्यद्वाणी के चार भाग हैं:

1. बालक को **इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए** ठहराया गया है। ढिठाई करने वाले, मन न फिराने वाले, और अविश्वासी लोग गिरेंगे और दण्ड भोगेंगे। जो अपने आप को दीन करके, अपने पापों से मन फिराएंगे, और प्रभु यीशु को स्वीकार करेंगे, वे उठेंगे और आशीष पाएंगे।

2. बालक को **एक ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसके विरोध में बातें की जाएंगी।** मसीह के व्यक्तित्व में एक विशेष महत्ता थी। पृथ्वी पर उसकी उपस्थिति पाप और अपवित्रता के लिए एक भयानक घुड़की सिद्ध हुई, और इस प्रकार से मानव हृदय के भीतर से घोर द्वेश को बाहर लेकर आई।

3. **तेरे प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा.** शमौन यहाँ पर उस शोक की भविष्यद्वाणी कर रहा है जिससे मरियम का हृदय भर उठेगा जब वह अपने पुत्र को क्रूस पर देखेगी (यूहन्ना 19:25)।

4. **इससे बहुतों के हृदय के विचार प्रगट होंगे।** एक व्यक्ति जिस तरीके से उद्धारकर्ता को लेकर प्रतिक्रिया देता है वह उसके भीतरी अभिप्रायों और अनुराग की एक परख है।

इस प्रकार से शमौन के गीत में कसौटी के पत्थर, ठोकर खिलाने वाले पत्थर, सीढ़ीरूपी पत्थर और तलवार के विचार शामिल हैं।

क. हन्ना भविष्यद्वक्तिन (2:36-39)

2:36, 37 **हन्ना भविष्यद्वक्तिन** शमौन के समान इस्राएल के विश्वासयोग्य झुण्ड से थी जो मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। वह **अशेर** (अर्थात्, *प्रसन्न, धन्य)* **के गोत्र** की थी। अशेर उन दस गोत्रों में से एक था जो 721 ई.पू. में अश्शूर की बन्धुआई में ले जाए गए थे। हन्ना की आयु एक सौ वर्ष से ऊपर की रही होगी, क्योंकि वह **सात वर्ष** तक विवाहित रही, और **चौरासी वर्ष** तक विधवा। एक **भविष्यद्वक्तिन** के रूप में, नि:सन्देह उसे ईश्वरीय प्रकाशन मिलता था और उसने **परमेश्वर** के प्रवक्ता के रूप में अपनी सेवाएं दी थी। वह **मन्दिर** की सार्वजनिक आराधनाओं में ईमानदारी से अपनी उपस्थिति देती थी, और **उपवास** सहित आराधना करते हुए **रात दिन** प्रार्थना किया करती थी। **बहुत बूढ़ी** हो जाने के बाद भी उसकी आयु प्रभु की सेवा करने से उसे न रोक सकी।

2:38 जिस समय यीशु को प्रभु के सामने लाया गया, और जब शमौन मरियम से बातें कर रहा था, तब हन्ना अपने छोटे झुण्ड के लोगों के पास आई। वह प्रतिज्ञा किए गए छुड़ानेवाले के लिए **प्रभु का धन्यवाद करने लगी** और फिर **यरूशलेम के** उस विश्वासयोग्य झुण्ड से यीशु के बारे में **बातें करने लगी** जो झुण्ड **छुटकारे** की बाट जोह रहा था।

2:39 जब यूसुफ और मरियम शुद्ध होने के और अर्पण के संस्कारों को **निपटा चुके**, तो वे **गलील में** अपने गृह नगर **नासरत** को **चले गए।** लूका ज्योतिषियों के बारे में या मरियम और यीशु को लेकर यूसुफ के मिस्र भाग जाने के बारे में कोई उल्लेख नहीं करता।

ल. यीशु का लड़कपन (2:40–52)

2:40 **बालक** के सामान्य विकास को निम्नलिखित तरीके से प्रस्तुत किया गया है: *शारीरिक विकास* वह **बढ़ता और बलवन्त होता गया।**[10] उसने शारीरिक विकास की सारी सीढ़ियों को पार किया, उसने चलने सीखा, बात करना सीखा, वह खेलता था, वह कार्य करता था। इस कारण वह हमारे शारीरिक विकास की हर सीढ़ी पर हमें समझ सकता है और हमारे प्रति सहानुभूति रख सकता है। उसने न सिर्फ अपने दिनों में मिलने वाली बुनियादी शिक्षा को प्राप्त की, बल्कि वह **बुद्धि** में भी बढ़ता गया, अर्थात् उसने इस शिक्षा या ज्ञान का उपयोग जीवन की समस्याओं का हल करने के लिए भी किया। *आत्मिक विकास* **परमेश्वर का** अनुग्रह **उस पर था।** वह परमेश्वर की सहभागिता में और पवित्र आत्मा पर निर्भर हो कर चलता था। वह पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता था, प्रार्थना में समय व्यतीत करता था, और अपने पिता की इच्छा पूरी करने में हर्षित होता था।

2:41–44 एक यूहदी बालक बारह वर्ष की आयु पूरी करने पर व्यवस्था का पुत्र बन जाता था। **जब** हमारा प्रभु **बाहर वर्ष का हुआ**, तब उसका परिवार **फसह** के लिए **यरूशलेम को** वर्ष में एक बार की जाने वाली यात्रा पर गया। परन्तु जब वे गलील को लौटने लगे, तो उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि **यीशु** उनके साथ नहीं था। हमें यह विचित्र लग सकता है यदि हम इस बात की ओर ध्यान न दें कि परिवार शायद एक बहुत बड़े दल के साथ यह यात्रा कर रहा था। इस बात पर कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि उन्होंने यह मान लिया होगा कि यीशु अपनी आयु के लड़कों के साथ साथ चल रहा है।

यूसुफ और मरियम को दोष देने से पहले हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि अनेक बार हम भी **एक दिन का पड़ाव** यह मान कर पूरा कर लेते हैं कि यीशु **साथ** में चल रहा है, जबकि वास्तव में हमने अपने जीवन के उन पापों के कारण उसके साथ सम्पर्क खो दिया हो जिन पापों का हमने अपने जीवन में अंगीकार नहीं किया है। उसके साथ सहभागिता को पुन: स्थापित करने के लिए हमें उस स्थान पर वापस जाना होगा जहाँ से यह सहभागिता टूट गई थी, और फिर हमें अपने पाप का अंगीकार कर उसे त्यागना होगा।

2:45 **यरूशलेम** को लौट कर परेशान माता–पिता ने **यीशु** को **मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे**, और **उनकी सुनते और उन से प्रश्न करते** पाया। यहाँ इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि वह समय से पूर्व परिपक्व हो चुके बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा हो। बल्कि वह एक सामान्य बच्चे की तरह, शिक्षकों से दीनतापूर्वक शान्तचित्त होकर सीख रहा था। तौभी इस दौरान उसने कुछ ऐसे प्रश्न पूछे होंगे जिसके कारण लोग **उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित** हो गए **थे**।

2:48 यहाँ तक कि उसके माता–पिता भी **चकित हुए** जब उन्होंने यीशु को उन लोगों के साथ बैठ कर इतनी बुद्धिमानीपूर्वक चर्चा में शामिल होते देखा जो उम्र में उससे काफी बड़े थे। तौभी **उसकी माता** अपनी उत्तेजना और खीज़ पर काबू न रख सकी और उसने उसे डांटा। क्या वह नहीं जानता था कि उन्हें उसकी चिन्ता रही होगी?

2:49 प्रभु का उनको उत्तर, जो इस सुसमाचार में उल्लेख किए गए उसके पहले शब्द थे, यह दर्शाता है कि वह अच्छी तरह से जानता था कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और वह अपने ईश्वरीय मिशन के बारे में भी अच्छी तरह से जानता था। ''**तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है?**'' *मरियम* ने कहा, ''तेरा पिता और मैं।'' *यीशु* ने कहा, ''**मुझे अपने पिता के भवन में**'' या ''मुझे अपने पिता के कामों में।''

2:50 उस समय **उन्होंने उसे नहीं समझा** कि अपनी इस भेदभरी टिप्पणी के माध्यम से वह क्या कह रहा था। बारह वर्ष के बच्चे के मुँह से ऐसी बात निकलना असामान्य बात थी!

2:51 इस तरह से, वे एक बार फिर से साथ हो लिए, ताकि वे वापस **नासरत** लौट जाएं। यीशु की नैतिक उत्कृष्ठता उसके इन शब्दों में पाई जाती है, ''**वह . . . उनके वश में रहा।**'' यद्यपि वह विश्व का सृष्टिकर्ता था, तौभी उसने इस निर्धन यहूदी परिवार में एक आज्ञाकारी बच्चे का अपना स्थान लिया। परन्तु पूरे समय **उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं।**

2:52 एक बार फिर से हम अपने प्रभु की सच्ची मानवता और उसके सामान्य विकास का चित्रण पाते हैं:

1. उसका मानसिक विकास – **बुद्धि . . . में बढ़ता गया।**
2. उसका शारीरिक विकास – **डील डौल** में बढ़ता गया।
3. उसका आत्मिक विकास – **परमेश्वर . . . के अनुग्रह में** बढ़ता गया।
4. उसका सामाजिक विकास – **मनुष्यों** के अनुग्रह में बढ़ता गया।

वह अपने विकास के हर एक पहलू में पूरी तरह से सिद्ध था। यहाँ पर लूका अपने वर्णन में यीशु द्वारा नासरत में एक बढ़ई के पुत्र के रूप में बिताए गए अट्ठारह मौन वर्षों को लांघ कर आगे बढ़ जाता है। इन वर्षों में तैयारी, प्रशिक्षण, धीरज की आवश्यकता, और सामान्य कार्य के मूल्य का महत्व दिखाई देता है। यहाँ हमें यह चेतावनी भी मिलती है कि हमें आत्मिक रूप से नया जन्म पाने के बाद एकदम से सार्वजनिक रूप से सेवकाई करने के लिए नहीं कूद पड़ना है। जिनका आत्मिक बचपन और किशोरावस्था सामान्य नहीं रहता वे अपने बाद के जीवन और गवाही में आपदा को आमंत्रित करते हैं।

III. सेवकाई के लिए मनुष्य के पुत्र का तैयार होना (3:1–4:30)

अ.मार्ग तैयार करने वाले के द्वारा तैयारी (3:1–20)

3:1, 2 एक इतिहासकार की तरह, लूका उस **वर्ष** की पहचान, जिस वर्ष यूहन्ना ने प्रचार आरम्भ किया उन दिनों की सत्ता पर आसीन राजनैतिक और धार्मिक अगुवों का नाम बताने के द्वारा करता है – उनमें से एक सम्राट **(कैसर)** था, एक **हाकिम** था, तीन **चौथाई** (देश के एक चौथाई भाग के अधिकारी या राजा) के पद पर थे और दो **महायाजक** थे। राजनैतिक शासकों के उल्लेख से यह संकेत मिलता है कि उन दिनों इस्राएली राष्ट्र आधीनता में कितनी बुरी तरह से जकड़ा हुआ था। यह तथ्य कि उन दिनों में दो महायाजक थे यह दर्शाता है कि इस्राएल न सिर्फ राजनैतिक बल्कि धार्मिक क्षेत्र में भी अव्यवस्थित था। यद्यपि संसार की दृष्टि में इन्हें महान लोगों में गिना जाता था, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वे दुष्ट और और चरित्रहीन थे। इसलिए जब परमेश्वर ने मनुष्य से बात करना चाहा तब उसने अपना वचन राजमहल और यहूदी सभा की बजाए अपना वचन **जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास** पहुँचाया।

3:3 यूहन्ना ने तुरन्त **यरदन के आसपास के सारे** क्षेत्र में दौरा किया, यह क्षेत्र शायद यरीहो के पास था। वहाँ उसने इस्राएली जाति को उनके **पापों** से मन फिराने के लिए आव्हान किया ताकि वे अपने पापों की क्षमा प्राप्त करें, और ऐसा करने के द्वारा अपने आप को मसीह के आगमन के लिए तैयार कर सकें। इसलिए उसने सच्चे मन फिराव के बाहरी चिन्ह के रूप में लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए आमंत्रित किया। यूहन्ना एक सच्चा भविष्यद्वक्ता था, वह मानों देहरूप में एक विवेक था, जो पाप के विरुद्ध पुकार रहा था, और आत्मिक नये जन्म के लिए आव्हान कर रहा था।

3:4 इस तरह से, उसकी सेवकाई **यशायाह** 40:3–5 की पूर्णता थी। वह **जंगल में एक पुकारने** वाली आवाज था। आत्मिक दृष्टिकोण से देखने पर, इस्राएल इस समय एक **जंगल** था। एक राष्ट्र के रूप में यह उजाड़ और मरुस्थल हो चुका था और परमेश्वर के लिए कोई फल नहीं ला रहा था। प्रभु के आगमन के लिए तैयार होने हेतु लोगों को अपने भीतर एक नैतिक परिवर्तन लाना आवश्यक था। उन दिनों में जब एक राजा राजकीय दौरे पर आता था, तो मार्गों को समतल और जितना हो सके उतना सीधा बनाने के लिए बड़ी–भारी तैयारी की जाती थी। यूहन्ना लोगों से यही करने के लिए कह रहा है, वह शब्दश: सड़कों को तैयार करने के लिए परन्तु अपने स्वयं के हृदयों में उसे स्वीकार करने हेतु तैयार होने को कह रहा है।

3:5 मसीह के आगमन के प्रभावों का वर्णन इस प्रकार से किया गया है:

हर एक घाटी भर दी जाएगी – जो सचमुच में मन फिराएंगे और अपने आप को दीन करेंगे वे उद्धार पाएंगे और तृप्त किए जाएंगे।

हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा – शास्त्रियों और फरीसी जैसे अंहकारी और घमण्डी लोग दीन बनाए जाएंगे।

जो टेढ़ा है सीधा किया जाएगा – महसूल लेने वालों जैसे बेइमान लोगों का चरित्र सीधा किया जाएगा।

जो ऊँचा नीचा है वह चौरस किया जाएगा – सैनिकों के समान क्रूर और अक्खड़ लोगों को सभ्य और शिष्टाचारी बनाया जाएगा।

3:6 इसका निर्णायक परिणाम यह होगा कि **हर प्राणी** – चाहे वह यहूदी हो या गैरयहूदी – **परमेश्वर के उद्धार** को देखेगा। प्रभु के पहले आगमन के समय उद्धार का प्रस्ताव सब लोगों के पास गया, यद्यपि सब ने उसे ग्रहण नहीं किया। जब वह दुबारा राज्य करने के लिए आएगा, तो इस पद में लिखी गई बात पूरी तरह से पूर्ण हो जाएगी। तब सारा इस्राएल बचा लिया जाएगा, और गैरयहूदी भी उसके महिमामय राज्य की आशीषों के भागी होंगे।

3:7 जब **भीड़ की भीड़... निकलकर** बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आती **थी**, तब यूहन्ना ने पाया कि उनमें से अनेक लोग सच्चे मन से उसके पास नहीं आ रहे हैं। कुछ लोग सिर्फ दिखावे के लिए आ रहे थे, जिनमें धार्मिकता के लिए कोई भूख या प्यास नहीं थी। इन्हीं लोगों को यूहन्ना ने **साँप** के बच्चे कहते हुए सम्बोधित किया। यूहन्ना के इस प्रश्न का **''तुम्हें किस ने जता दिया, कि आने वाले क्रोध से भागो?''** यह आशय है कि यूहन्ना ने ऐसा नहीं किया है; यूहन्ना का सन्देश उन लोगों के लिए था जो अपने पापों का अंगीकार करने के लिए तैयार थे।

3:8 यदि वे सचमुच में परमेश्वर के प्रति गम्भीर थे, तो उन्हें अपना एक बदला हुआ जीवन प्रगट करने के द्वारा सच्चे मन फिराव को दर्शाना था। सच्चे मनफिराव से **फल** उत्पन्न होते हैं। उन्हें यह सोचना आरम्भ नहीं कर देना है कि **इब्राहीम** के वंशज होना ही उनके लिए पर्याप्त है; परमेश्वर के लोगों के साथ रिश्तेदारी हमें परमेश्वर के लोग नहीं बनाती। **परमेश्वर** अपनी योजना को पूरी करने के लिए इब्राहीम के शारीरिक वंश तक सीमित नहीं था; वह यरदन नदी से **पत्थरों** को उठाकर उनसे **इब्राहीम के लिए सन्तान** उत्पन्न कर सकता था। *पत्थर* यहाँ पर अन्यजातियों को कहा गया है जिन्हें परमेश्वर ईश्वरीय अनुग्रह के आश्चर्यकर्म के द्वारा ऐसे विश्वासी बना सकता था जिनमें इब्राहीम के समान विश्वास हो। वास्तव में बिल्कुल ऐसा ही हुआ। इब्राहीम के शारीरिक सन्तानों ने एक राष्ट्र होकर मसीह को स्वीकार करने से इंकार कर दिया। परन्तु अनेक गैरयहूदियों ने उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और इब्राहीम की आत्मिक सन्तान बन गए।

3:9 कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा है एक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ यह है कि मसीह का आगमन मनुष्य के मन-फिराव की सच्चाई की जाँच करेगा। जिन व्यक्तियों के जीवन में मन फिराव का फल नहीं देखाई देगा उन्हें दोषी ठहराया जाएगा।

> यूहन्ना के शब्द और वाक्यांश उसके मुख से तलवारों की तरह निकलते थे: ''साँप के बच्चो,'' ''आने वाला क्रोध,'' ''कुल्हाड़ा,'' ''काटा,'' ''आग में झोंका।'' प्रभु के भविष्यद्वक्ता कभी चिकनी-चुपड़ी बातें नहीं करते थे: वे बड़े नैतिकतावादी थे, और अक्सर उनके वचन लोगों पर इस प्रकार से आते थे जैसा कि तरकश से छोड़े गए तीर शत्रुओं के सिर पर आते हैं *(डेली नोट्स ऑफ द स्क्रिप्चर्स यूनियन)।*

3:10 लोगों ने उस की बातों से कायल होकर उससे कुछ व्यवहारिक सुझाव **पूछा** कि वे किस तरह से अपने मन-फिराव की सच्चाई को प्रदर्शित कर सकते हैं।

3:11-14 इन पदों में, उसने उन्हें कुछ स्पष्ट तरीके बताए हैं जिसके द्वारा वे अपनी सच्चाई को सिद्ध कर सकते हैं। सामान्यत:, उन्हें अपने कपड़े और **भोजन** निर्धनों के साथ बांटने के द्वारा अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम रखना है।

महसूल लेने वाले लोगों के लिए उसने कहा है कि वे अपना सारा लेन-देन पूरी ईमानदारी के साथ करें। चूंकि महसूल लेने वाला वर्ग अपने टेढ़ेपन के लिए कुख्यात था इसलिए इमानदारी से कार्य करना उनकी सच्चाई का एक निश्चित प्रमाण होगा।

वैसे ही, **सिपाहियों** को तीन पापों से बचने के लिए कहा गया जो सेना से जुड़े लोगों के बीच में आम है – उपद्रव, झूठा दोष लगाना, और असंतुष्टि। यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना द्वारा बताए गए कार्य को करने के द्वारा किसी का उद्धार नहीं होता; बल्कि ये कार्य इस बात का बाहरी चिन्ह है कि उनके हृदय परमेश्वर के सामने वास्तव में सच्चे हैं।

3:15, 16अ यूहन्ना द्वारा स्वयं को छोटा बनाए रखना भी ध्यान देने योग्य है। कम से कम, यूहन्ना कुछ समय के लिए तो मसीह की तरह अपने आप को प्रस्तुत करके बहुत से लोगों को अपनी ओर खींच सकता है।

परन्तु ऐसा करने की बजाए उसने अपने आप को मसीह के साथ तुलना करने के सबसे योग्य समझा। उसने स्पष्ट किया कि उसके द्वारा दिया गया बपतिस्मा बाहरी और भौतिक है, जबकि मसीह द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा आन्तरिक और आत्मिक होगा। उसने कहा कि वह तो मसीह के **जूतों का बन्ध** खोलने के भी **योग्य नहीं** है।

3:16ब, 17 मसीह द्वारा **पवित्र आत्मा** और **आग** से बपतिस्मा दिया जाएगा। उसकी इस सेवकाई के दो पहलू होंगे – पहला, वह विश्वासियों को **पवित्र आत्मा** से **बपतिस्मा** देगा – उस बात की प्रतिज्ञा जो पेन्तिकुस्त के दिन पूरी होने वाली थी जब विश्वासियों को मसीह की देह में बपतिस्मा दिया जाना था। परन्तु दूसरा पहलू यह है, कि वह **आग से** बपतिस्मा देगा।

पद 17 से, स्पष्ट प्रतीत होता है कि **आग** का बपतिस्मा न्याय का बपतिस्मा है। यहाँ पर प्रभु को अन्न फटकने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। जब वह अन्न को हवा में उड़ाता है, तो **भूसी** खलिहान के बाहर उड़ जाती है। उसके बाद इसे झाड़ कर आग में जला दिया जाता है।

जब यूहन्ना मिली-जुली भीड़ – विश्वासी और अविश्वासी दोनों से बात कर रहा था, तो उसने *आत्मा* के बपतिस्मा और *आग* के बपतिस्मा दोनों के बारे में चर्चा की (मत्ती 3:11 और यहाँ)। किन्तु जब, वह सिर्फ विश्वासियों से बात कर रहा था (मरकुस 1:5) तब उसने आग के बपतिस्मा के बारे में कुछ नहीं कहा (मरकुस 1:8)। किसी भी सच्चे विश्वासी को आग के बपतिस्मा का अनुभव करना नहीं पड़ेगा।

3:18-20 लूका अब हमारा ध्यान यूहन्ना से हटा कर यीशु की ओर केन्द्रित करने के लिए तैयार है। इसलिए, इन पदों में, उसने यूहन्ना की शेष सेवकाई के विषय में संक्षेप में बताया है और फिर सीधे वह **हेरोदेस** द्वारा उसे बन्दीगृह में डाले जाने की घटना की ओर बढ़ जाता है। वास्तव में यूहन्ना को बन्दी बनाए जाने की घटना इस समय से लगभग अठ्ठारह महीने बाद घटी। यूहन्ना ने **हेरोदेस** को **उलाहना** दी थी क्योंकि उसने अपने भाई की पत्नी के साथ व्यभिचार करते हुए उसे अपनी पत्नी की तरह रख लिया था। इस पर **हेरोदेस** ने **यूहन्ना को बन्दीगृह में** डालने के द्वारा अपने सारे अन्य बुरे कर्मों की हद पार कर दी थी।

ब. बपतिस्मा के द्वारा तैयारी (3:21-22)

जैसे ही लूका द्वारा यूहन्ना पर से हमारा ध्यान हटाया जाता है, प्रभु यीशु प्रमुखता का स्थान ले लेता है। वह अपनी सार्वजनिक सेवकाई का आरम्भ लगभग तीस वर्ष की आयु में यरदन नदी में **बपतिस्मा** लेने के साथ करता है।

उसके बपतिस्मा में हमारे ध्यान देनेयोग्य अनेक रोचक बातें पाई जाती हैं:

1. त्रिएक परमेश्वर के तीनों व्यक्ति यहाँ पाए जाते हैं: **यीशु** (पद 21); **पवित्र आत्मा** (पद 22अ में); पिता (पद 22ब में)।

2. सिर्फ लूका ने अपने सुसमाचार में इस बात का वर्णन किया है कि यीशु ने अपने बपतिस्मा के समय **प्रार्थना** की (पद 21)। लूका ने ऐसा यीशु को मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए किया जो हमेशा परमेश्वर पिता पर निर्भर रहता था। हमारे प्रभु का प्रार्थनामय जीवन इस सुसमाचार का एक प्रमुख विषय रहा है। उसने यहाँ पर अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में प्रार्थना की। उसने तब भी प्रार्थना की जब वह उसके पीछे पीछे चलने वाली भीड़ के बीच में लोकप्रिय होता जा रहा था (5:16)। उसने बारह चेलों का चुनाव करने से पहले सारी रात प्रार्थना की (6:12)। उसने कैसरिया फिलिप्पी की घटना से पहले प्रार्थना की, इस समय उसकी सार्वजनिक सेवकाई अपने पूरे शबाब पर थी (9:18)। उसने रूपान्तर के पहाड़ पर प्रार्थना की (9:28)। उसने अपने चेलों की उपस्थिति में प्रार्थना की, जिसके बाद प्रार्थना के विषय पर उसने उपदेश दिया (11:1)। उसने गिरते हुए पतरस के लिए प्रार्थना की (22:32)। उसने गतसमनी के बाग में प्रार्थना की (22:41, 44)।

3. परमेश्वर ने अपने प्रिय **पुत्र** की सेवकाई के विषय में तीन बार **आकाशवाणी** की थी जिनमें से एक बार उसने उसके बपतिस्मा के अवसर पर ऐसा किया था। तीस वर्षों तक परमेश्वर की आँखों ने प्रभु के द्वारा नासरत में बिताए गए पवित्र जीवन को जाँचा था; यहाँ पर परमेश्वर इस जाँच के परिणाम की घोषणा करता है, "**मैं तुझसे प्रसन्न हूँ**।" वे दो अन्य अवसरों पर जब परमेश्वर ने आकाशवाणी की थी: जब पतरस ने सुझाव दिया था कि रूपान्तर के पर्वत पर तीन तम्बू बनाए जाएं (लूका 9:35),

और जब यहूदी लोग यीशु से मिलने की इच्छा लिए हुए फिलिप्पुस के पास आए थे (यूहन्ना 12:20–28)।

स. मानवता का हिस्सा बनने के द्वारा तैयारी (3:23–28)

हमारे प्रभु की सेवकाई का वर्णन करने से पहले लूका प्रभु की वंशावली का वर्णन करता है। यदि यीशु सचमुच में मनुष्य है, तो यह आवश्यक है कि वह **आदम** की सन्तान हो। इस वंशावली से यह प्रदर्शित होता है कि वह आदम की सन्तान था। व्यापक रूप से ऐसा माना जाता है कि यह मरियम के परिवार की वंशावली है। ध्यान दें कि पद 23 में यह नहीं कहा गया है कि यीशु यूसुफ का पुत्र था, परन्तु इस पद में यह लिखा हुआ है कि **(जैसा समझा जाता था** यीशु **यूसुफ का पुत्र** था। यदि यह मत सही है, तब **एली** (पद 23) यूसुफ का सुसर था और मरियम का पिता था।

बाइबल के विद्वानों का मानना है कि निम्नलिखित कारणों से यह वंशावली मरियम के परिवार की वंशावली है:

1. यह काफी स्पष्ट है कि यूसुफ के परिवार की वंशावली का वर्णन मत्ती के सुसमाचार में दिया गया है (1:2–16)
2. लूका के सुसमाचार के आरम्भिक अध्यायों में, मरियम को यूसुफ से अधिक स्थान दिया गया है, जबकि मत्ती में यूसुफ को अधिक प्रमुखता दी गई है।
3. स्त्रियों के नाम यहूदी वंशावली में शामिल नहीं किए जाते थे। इस कारण मरियम का नाम वंशावली में नहीं आ सकता था।
4. मत्ती 1:16 में, विशेष रूप से यह उल्लेख किया गया है कि याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ। यहाँ पर लूका की पुस्तक में, ऐसा नहीं लिखा है कि एली से यूसुफ उत्पन्न हुआ; इसमें लिखा है कि यूसुफ एली का पुत्र था। *पुत्र* का अर्थ दामाद भी हो सकता है।
5. यूनानी भाषा में *डेफिनिट आर्टिकल/* निश्चयवाचक उपपद *(ताव)*, (उदाहरण के लिए वही यूसुफ, वही व्यक्ति, इत्यादि) *जेनेटिव/* सम्बन्धकारक रूप में (*ऑफ द/* का, इसका, उसका, इत्यादि) वंशावली के प्रत्येक नाम में दिया गया है *सिवाय एक के*। और यह एक नाम यूसुफ का है। इस एकमात्र अपवाद से ऐसा संकेत मिलता है कि यूसुफ को इस वंशावली में सिर्फ मरियम से उसके विवाह के कारण स्थान दिया गया था।

यद्यपि इस वंशावली का विस्तार से अध्ययन करना आवश्यक नहीं है, परन्तु कुछ महत्वपूर्ण बातों को अपने ध्यान में रखना हमारे लिए उपयोगी होगा:

1. इस सूची में यह दर्शाया गया है कि मरियम **दाऊद** पुत्र **नातान** (पद 31) के माध्यम से दाऊद के वंश की थी। मत्ती के सुसमाचार के अनुसार, यीशु सुलैमान के माध्यम से दाऊद की राजगद्दी का उत्तराधिकारी होगा।

यूसुफ का वैधानिक पुत्र होने के कारण, प्रभु ने परमेश्वर द्वारा दाऊद से बान्धी गई उस वाचा को पूरा किया कि दाऊद की राजगद्दी हमेशा बनी रहेगी। परन्तु यीशु यूसुफ का वास्तविक शारीरिक पुत्र तब तक नहीं बन सकता था जब तक वह परमेश्वर द्वारा कोन्याह को दिए गए शाप के आधीन नहीं आता, परमेश्वर ने कोन्याह को यह शाप दिया था कि इस दुष्ट राजा का कोई भी वंश सफल नहीं होगा (यिर्म. 22:30)।

मरियम का शारीरिक पुत्र होने के कारण, यीशु ने परमेश्वर द्वारा दाऊद से बान्धी गई उस वाचा को पूरा किया जिसमें दाऊद से प्रतिज्ञा की गई थी कि उसका *वंश* उसके सिहासन पर सदाकाल के लिए बैठेगा। और नातान के माध्यम से दाऊद की सन्तान होने के कारण, यीशु उस शाप के आधीन नहीं आया जो कोन्याह को दिया गया था।

2. **आदम** के विषय में कहा गया है कि **वह परमेश्वर . . . का था** (पद 38)। इसका सीधा सीधा अर्थ यह है कि वह परमेश्वर के द्वारा सृजा गया था।

3. यह बिल्कुल स्पष्ट है कि *मसीह* की वंशरेखा का प्रभु यीशु में समापन हो जाता है। *कोई भी दूसरा* अब कभी भी दाऊद की राजगद्दी पर वैधानिक दावा नहीं कर सकता।

द. परीक्षा के द्वारा तैयारी (4:1–13)

4:1 हमारे प्रभु के जीवन में कोई भी ऐसा समय नहीं आया जब वह पवित्रआत्मा से परिपूर्ण नहीं था,

परन्तु यहाँ पर उसकी परीक्षा के सन्दर्भ में विशेष कर के इसका उल्लेख किया गया है। **पवित्र आत्मा से भरा** होने का अर्थ है, अपने आप को पूरी तरह से पवित्र आत्मा को सौंप देना और परमेश्वर के प्रत्येक वचन के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी होना। एक व्यक्ति जो पवित्र आत्मा से भरा हुआ है वह जानबूझ कर पाप नहीं करता, वह अंहकार नहीं करता, और परमेश्वर का वचन उसमें अधिकाई से बसा रहता है। जब यीशु **यरदन से** जहाँ उसने बपतिस्मा लिया था लौट रहा था, तब वह **आत्मा के सिखाने पर जंगल में** गया – शायद वह यहूदिया के जंगल में गया, जो मृतक सागर के पश्चिमी तट से लगा हुआ था।

4:2, 3 यहाँ पर **चालीस दिन** तक **शैतान उसकी परीक्षा करता रहा** – इन **दिनों** में हमारे प्रभु ने **कुछ न खाया**। चालीस दिन के अन्त में तीन ऐसी परीक्षाएं उसके सामने आईं जो वर्तमान में हमारे लिए काफी चिरपरिचित हैं। वास्तव में ये तीनों परीक्षाएं तीन अलग अलग स्थानों पर हुईं – जंगल में, पहाड़ में, और यरूशलेम के मन्दिर में। यीशु का सच्चा मनुष्यत्व इन शब्दों में झलकता है: **उसे भूख लगी**। यह उसकी पहली परीक्षा का निशाना था। शैतान ने उसे सुझाव दिया कि प्रभु अपनी शारीरिक भूख को मिटाने के लिए अपनी ईश्वरीय शक्ति का उपयोग करे। इस परीक्षा में शैतान ने बहुत ही सूक्ष्म धूर्तता दिखाई, इस कार्य को करने में कोई बुराई नहीं थी। परन्तु यदि यह कार्य शैतान की आज्ञा का पालन करते हुए किया जाता तो यह गलत होता; यह आवश्यक था कि प्रभु यीशु पिता की आज्ञा के अनुरुप कार्य करे।

4:4 यीशु ने पवित्रशास्त्र का उद्धरण देते हुए इस परीक्षा का सामना किया (व्य. वि. 8:3)। शारीरिक भूख की तृप्ति से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता है। उसने तर्कवितर्क नहीं किया। डार्बी ने कहा है, ''यदि पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर वचन का प्रयोग किया जाए तो शान्त करने के लिए एक ही पद काफी होता है। संघर्ष के समय परमेश्वर के वचन का सही तरीके से उपयोग करने में ही सामर्थ का रहस्य है।''

4:5–7 दूसरी परीक्षा में **शैतान** ने यीशु को **पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए**। शैतान जिन बातों का भी प्रस्ताव रखता है उसे दिखाने के लिए कुछ भी समय नहीं लगता। उसने संसार नहीं, परन्तु **जगत के सारे राज्यों** को उसे दिखाया। एक अर्थ में उसके पास जगत के सारे **राज्य** पर **अधिकार** है। मनुष्य के पाप के कारण, शैतान इस ''जगत का सरदार'' (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11), ''संसार का ईश्वर'' (2 कुरि. 4:4), और ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' (इफि. 2:2) बन गया है। परमेश्वर की यह योजना है कि ''जगत का राज्य'' एक दिन ''हमारे प्रभु का और उसके मसीह का'' हो जाएगा (प्रका. 11:15)। इस प्रकार से शैतान, मसीह के सामने उसी चीज़ को देने का प्रस्ताव रख रहा था जो एक दिन ऐसे भी प्रभु का ही होने वाला है।

परन्तु सिहांसन तक पहुँचने का कोई भी छोटा रास्ता नहीं है। इससे पहले क्रूस को पार करना आवश्यक था। परमेश्वर की सम्मति में, अपनी महिमा में प्रवेश करने से पहले यीशु को कष्ट उठाना आवश्यक था। वह एक सही लक्ष्य को गलत तरीके से प्राप्त नहीं कर सकता था। किसी भी परिस्थिति में वह शैतान को **प्रणाम** नहीं करता चाहे इसके लिए उसे कोई भी प्रलोभन क्यों न दिया जाए।

4:8 इसलिए, प्रभु ने व्यवस्थाविवरण 6:13 को उद्धरित किया ताकि यह दर्शाए कि एक मनुष्य के रूप में वह सिर्फ परमेश्वर को ही **प्रणाम** करेगा और उसी की **उपासना** करेगा।

4:9–11 तीसरी परीक्षा में, यीशु को शैतान **यरूशलेम** के **मन्दिर** के **कंगूरे** पर ले गया, और उससे कहने लगा कि वह अपने आप को **नीचे गिरा** दे। क्या परमेश्वर ने भजन 91:11, 12 में यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि वह मसीह को हर खतरे से सुरक्षित रखेगा? शायद यीशु को शैतान इस परीक्षा में लाना चाह रहा था कि वह एक सनसनीखेज जोखिमपूर्ण कारनामा करने के द्वारा अपने आप को मसीह के रूप में प्रस्तुत करे। मलाकी ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा (मला. 3:1)। इसलिए यहाँ पर यीशु के सामने एक सुअवसर था कि वह कलवरी पर जाए बिना ही प्रतिज्ञा किए हुए छुड़ानेवाले के रूप में यश और ख्याति प्राप्त कर ले।

4:12 तीसरी बार यीशु ने बाइबल को उद्धरित करते हुए परीक्षा का सामना किया। व्यवस्थाविवरण 6:16 में **परमेश्वर** की परीक्षा करने से मना किया गया है।

4:13 आत्मा की तलवार से पराजित होकर **शैतान** यीशु को **कुछ समय के लिए** छोड़ कर चला गया। परीक्षाएं लगातार एक धारा की तरह नहीं आती, ये बीच–

बीच में लहरों की तरह आती हैं।

परीक्षा के सम्बन्ध में और भी कुछ बातों की ओर ध्यान देना हमारे लिए उपयोगी होगा:

1. लूका में दिया गया क्रम और मत्ती का क्रम अलग-अलग है। दूसरी और तीसरी परीक्षा का क्रम उलट दिया गया है; इसका कारण स्पष्ट नहीं है।

2. तीनों परीक्षाओं में, जिन कार्यों को करने के लिए कहा जा रहा था वे अपने आप में सही थे, परन्तु उन्हें करने का जो तरीका सुझाया जा रहा था वह गलत था। शैतान की आज्ञा का पालन करना, उसे प्रणाम करना, उसकी या किसी भी सृजित प्राणी की उपासना करना गलत है। परमेश्वर की परीक्षा करना गलत है।

3. पहली परीक्षा शरीर से सम्बन्धित है, दूसरी प्राण से, और तीसरी आत्मा से। ये परीक्षाएं क्रमश: शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीविका के घमण्ड को उभारते हैं।

4. तीनों परीक्षाएं मानवीय अस्तित्व के तीन सबसे सशक्त लालसाओं के आसपास घूमती हैं – शारीरिक भूख, सत्ता और पद की लालसा, और सार्वजनिक रूप से यश प्राप्त करने की अभिलाषा। अनेक बार प्रभु यीशु के अनुयायी भी सुविधाजनक और सरल मार्ग ढूंढ़ने लगते हैं, संसार के प्रतिष्ठित पदों की चाह करने लगते हैं, और कलीसिया में बड़ा पद पाने की अभिलाषा करने लगते हैं।

5. तीनों परीक्षाओं में, शैतान ने धार्मिक भाषाओं का उपयोग किया है और ऐसा करने के द्वारा उसने परीक्षाओं को बाहरी सम्मान का जामा पहना दिया है। उसने पवित्रशास्त्र को भी उद्धरित किया (10, 11 पदों में)।

जेम्स स्टीवट ने बिल्कुल पते की बात की ओर हमारा ध्यान खींचा है:

> यीशु की परीक्षा से सम्बन्धित वर्णन दो महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है। एक ओर, यह प्रमाणित करता है कि आवश्यक नहीं है कि परीक्षा पाप हो। दूसरी ओर, यह वर्णन प्रभु के महान चेले के इस बात पर प्रकाश डालता है कि: ‘‘क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है।’’

कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि यदि यीशु पाप कर ही नहीं सकता था तो फिर परीक्षा का कोई अर्थ ही नहीं था। यीशु परमेश्वर है, और परमेश्वर पाप नहीं कर सकता। प्रभु यीशु ने कभी भी अपने ईश्वरत्व के गुणों को त्यागा नहीं था। उसका ईश्वरत्व पृथ्वी पर के उसके जीवन के दौरान ढंका हुआ था परन्तु यह एक किनारे नहीं रख दिया गया था न ही ऐसा किया जा सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर के रूप में वह पाप नहीं कर सकता था परन्तु मनुष्य के रूप में वह पाप कर सकता था। परन्तु वह अभी भी परमेश्वर और मनुष्य दोनों है, और यह बात सोचने से भी परे है कि वह वर्तमान में पाप कर सकता है। परीक्षा का उद्देश्य यह देखना नहीं था कि क्या वह पाप करेगा, परन्तु यह प्रमाणित करना कि वह पाप *कर ही नहीं* सकता। सिर्फ एक पवित्र, निष्पाप मनुष्य हमारा छुटकारा देनेवाला हो सकता है।

इ. सिखाने के द्वारा तैयारी (4:14-30)

4:14-15 पद 13 और 14 के बीच में लगभग एक वर्ष का समय है। इस समय के दौरान प्रभु यीशु ने यहूदिया में सेवकाई की। इस सेवकाई का एकमात्र वर्णन यूहन्ना 2-5 अध्यायों में पाया जाता है।

जब **यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा** कि वह अपनी सार्वजनिक सेवकाई के दूसरे वर्ष का आरम्भ करे तो उसका यश **आसपास के सारे देश** में फैल गया। जब वह यहूदी **आराधनालयों** में **उपदेश** देता था, तब उसकी बहुत बड़ाई होती थी।

4:16-21 **नासरत** में जहाँ उसने अपना लकड़पन बिताया था यीशु नियमित रूप से **सब्त के दिन आराधनालय** में जाया करता था। दो ऐसी बातें है जिनके विषय में हम पढ़ते हैं जिन्हें वह नियमित रूप से करता था। वह नियमित रूप से प्रार्थना करता था (लूका 22:39), और उसने यह आदत बना ली थी कि वह दूसरों को सिखाए (मरकुस 10:1)। जब वह एक बार **आराधनालय** में गया, तो उसने खड़े होकर पुराना नियम के एक भाग का पठन किया। आराधनालय की व्यवस्था सम्भालने वाले व्यक्ति ने उसे एक स्क्रोल दिया जिसमें यशायाह की भविष्यद्वाणी लिखी हुई थी। प्रभु ने उस स्क्रोल को खोला और उसमें में जिस भाग को उसने निकाला उसे हम आज यशायाह 61 के रूप में जानते हैं, और उसमें से उसने पहला पद और दूसरे पद के पहले भाग को पढ़ा। इस स्थल को हमेशा से ही मसीह की सेवकाई के एक वर्णन के रूप

में स्वीकार किया जाता है। जब यीशु ने कहा, **''आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ,''** तो वह पूरी तरह से स्पष्ट रीति से यह कह रहा था कि वही इस्राएल का मसीह है।

मसीह के मिशन के क्रान्तिकारी आशयों की ओर ध्यान दें। वह उन घोर समस्याओं से निपटने के लिए आया था जिनके कारण मानवजाति हमेशा से ही कष्ट में रही है:

गरीबी. **कंगालों को सुसमाचार सुनाने।**

बन्धुआई. **बन्धुओं को छुटकारे का** प्रचार करने।

कष्ट. **अन्धों को दृष्टि पाने का।**

शोषण. **कुचले हुओं को छुड़ाने।**

संक्षेप में, वह **प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार** करने के लिए आया – इस संसार के रोते और सिसकते लोगों के लिए एक नए युग का भोर। उसने अपने आप को उन सारे कष्टों के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जो हमें यंत्रणा देते हैं। और यदि सत्य है, चाहे हम इन कष्टों को आत्मिक अर्थों में देखें या फिर भौतिक अर्थों में। मसीह ही इसका एकमात्र समाधान है।

यह बात अर्थपूर्ण है कि वह इन शब्दों में ही आकर रूक गया: **''प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करुं।''** उसने यशायाह के इन शेष शब्दों को नहीं जोड़ा ''. . . हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का।'' प्रथम आगमन का उद्‌देश्य **प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार** करना था। अनुग्रह का यह वर्तमान युग प्रभु के प्रसन्न रहने का समय और उद्धार का दिन है। जब वह पृथ्वी पर वापस आएगा, तो वह हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करेगा। ध्यान दें कि प्रभु के प्रसन्न रहने के समय को **वर्ष** कहा गया है, और पलटा लेने के समय को *दिन* कहा गया है।

4:22 लोग उसकी बात सुनकर उससे प्रभावित हो गए। उन्होंने उसे सराहा और **अनुग्रह** की उसकी बातों ने उन्हें उसकी ओर आकर्षित किया। यह उनके लिए एक रहस्य था कि **यूसुफ** बढ़ई का **पुत्र** इतना आगे कैसे बढ़ गया।

4:23 प्रभु जानता था कि उसका यह यश खोखला है। प्रभु की वास्तविक पहचान और प्रभु के मोल की कोई भी सच्ची सराहना नहीं कर रहा है। उनके लिए, वह उनके नगर का एक लड़का ही था जिसने कफरनहूम में काफी नाम कमा लिया था। वह पहले से ही जान गया कि वे उससे कहेंगे, **''हे वैद्य अपने आप को चंगा कर!''** सामान्यत: इस कहावत का अर्थ यह होता है, ''जो तुमने दूसरों के लिए किया है वही अपने लिए करो। अपने स्वयं की स्थिति का समाधान करो, क्योंकि तुम दूसरों के लिए समाधान निकालने का दावा करते हो।'' परन्तु यहाँ पर इस कहावत का अर्थ कुछ अलग है। यह अगले वाक्य में स्पष्ट किया गया है: **''जो कुछ हमने सुना है कि कफरनहूम में किया है उसे यहाँ अपने देश में भी कर,''** अर्थात्, उसका ठठ्ठा करते हुए उसे चुनौती दी जा रही है कि जिस तरह से उसने दूसरे स्थानों पर आश्चर्यकर्म किया है वैसे ही आश्चर्यकर्म नासरत में करे और इस प्रकार से अपने आप को उपहास का पात्र बनने से बचाए।

4:24–27 प्रभु ने मानवीय स्वभाव की जड़ तक पहुँच चुके सिद्धान्त को बताते हुए इसका उत्तर दिया: महान व्यक्ति को उसके **अपने** आसपड़ोस में सम्मान नहीं मिलता। तब उसने पुराना नियम में से दो उदाहरण दिए जहाँ परमेश्वर के नबियों को इस्राएल के लोगों ने सम्मान नहीं दिया था और इसलिए इन भविष्यद्वक्ताओं को अन्यजातियों के पास भेजा गया। जब इस्राएल में **बड़ा आकाल पड़ा**, तब **एलिय्याह** को किसी यहूदी विधवा के पास नहीं भेजा गया – यद्यपि उस समय अनेक यहूदी विधवाएं थीं – परन्तु उसे **सैदा** में एक अन्यजाति **विधवा** के पास भेजा गया। वैसे ही **एलीशा** के सेवाकाल में **इस्राएल में बहुत से कोढ़ी** थे, तौभी उसे उनमें से किसी के पास भेजा नहीं गया। बल्कि, उसे एक अन्यजाति कोढ़ी **नामान** के पास भेजा गया जो अश्शूर का सेनापति था। यहूदी मस्तिष्क पर यीशु की बातों के असर की कल्पना करें। यहूदी सोच स्त्रियों, अन्यजातियों, और कोढ़ियों को सामाजिक तराजू में सबसे नीचा स्थान देती थी। परन्तु यहाँ पर प्रभु ने इन तीनों को गैरविश्वासी यहूदियों से *ऊँचा* स्थान दिया! प्रभु यीशु के कहने का आशय यह था कि इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है। उसके आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद भी, न सिर्फ नासरत परन्तु सारी इस्राएली जाति उसका तिरिस्कार कर देगी। उसके बाद वह अन्यजातियों की ओर मुड़ जाएगा, ठीक जैसे एलिय्याह और एलीशा ने किया था।

4:28 नासरत के लोग समझ गए कि वास्तव में वह क्या कहना चाह रहा है। वे अन्यजातियों पर अनुग्रह किए जाने का संकेत दिए जाने मात्र से क्रोधित हो गए। बिशप रायल इस पर यह टिप्पणी करते हैं:

मनुष्य परमेश्वर के प्रभुत्व के सिद्धान्त को बुरी तरह से नापसन्द करता है और मसीह ने अभी अभी इस सिद्धान्त की घोषणा की। परमेश्वर यहूदियों के बीच में ही आश्चर्यकर्म करने के लिए बन्धा हुआ नहीं था।[12]

4:29, 30 लोगों ने **उसे नगर से बाहर** निकाल दिया और **पहाड़ . . . की चोटी** तक ले गए ताकि **उसे वहाँ से नीचे गिरा दें**। नि:सन्देह यह घटना शैतान के द्वारा प्रेरित थी, यह इस शाही वारिस को नाश करने का उसका एक अन्य प्रयास था। परन्तु यीशु ने आश्चर्यजनक रीति से भीड़ के बीच में से निकलकर नगर को छोड़ दिया। उसके शत्रु उसे रोक पाने में असमर्थ हो गए। जहाँ तक हम जानते हैं, इसके बाद वह कभी भी नासरत नहीं लौटा।

IV.मनुष्य का पुत्र अपनी सामर्थ को सिद्ध करता है (4:31–5:26)

अ.एक अशुद्ध आत्मा पर अधिकार (4:31–37)

4:31–34 नासरत की हानि कफरनहूम के लिए लाभ सिद्ध हुई। कफरनहूम के लोगों ने यह पहचान लिया कि यीशु के द्वारा दी जा रही शिक्षाएं सचमुच में परमेश्वर की ओर से हैं। उसके वचनों में मनों को बदल देने की और प्रेरित करने की सामर्थ थी। 31 और 41 पदों में प्रभु के जीवन के एक विशेष सब्त का दिन आया। इन पदों में दुष्टात्माओं और बीमारियों पर उसके अधिकार को प्रगट किया गया है। पहले वह **आराधनालय** में गया जहाँ उसे एक **मनुष्य** मिला जिसमें **अशुद्ध आत्मा** थी। विशेषण के रूप में प्रयोग में लाए गए शब्द **अशुद्ध** का उपयोग प्राय: दुष्ट आत्माओं के लिए किया गया है; इसका अर्थ यह है कि वे स्वयं अपने आप में अशुद्ध हैं और यह भी कि वे अपने शिकार के जीवनों में अशुद्धता को उत्पन्न करती हैं। दुष्टात्माग्रस्त होने की वास्तविकता इस स्थल में देखी जा सकती है। पहले एक भयाकुल पुकार सुनाई देती है – ''**हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है?**'' उसके बाद दुष्टात्मा ने साफ साफ यह प्रगट किया कि यीशु **परमेश्वर का पवित्र जन** है जो अन्तत: शैतान की सेना को नाश कर देगा।

4:35 **यीशु** ने दुष्टात्मा को दो बातों का आदेश दिया, ''**चुप रह; और उसमें से निकल जा:**'' **दुष्टात्मा** ने इस व्यक्ति को भूमि पर पटकने से पहले, परन्तु उसकी कोई हानि किए बिना, प्रभु यीशु के आदेश का पालन किया।

4:36, 37 लोग आश्चर्यचकित रह गए! यीशु के शब्दों में ऐसी कौन सी अलग बात थी कि **अशुद्ध आत्माओं** ने उसके आदेश का पालन किया? उसके पास ऐसा कौन सा अपरिभाषीय **अधिकार और** कौन सी ऐसी **सामर्थ** थी जिसमें होकर वह बोलता था? इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि **चारों ओर हर जगह उसकी धूम मच गई**।

यीशु के द्वारा किए गए सारे भौतिक आश्चर्यकर्म उनसे मिलते–जुलते उन आश्चर्यकर्मों की तस्वीर हैं जिन्हें वह आत्मिक क्षेत्र में भी करता है। उदाहरण के लिए, लूका में पाए जाने वाले निम्नलिखित आश्चर्यकर्मों में पाई जाने वाली शिक्षाएं इस प्रकार से हैं:

अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालना (4:31–37) – पाप की गन्दगी और अशुद्धता से छुटकारा देना।

पतरस की सास के ज्वर को चंगा करना (4:38, 39) – पाप के कारण उत्पन्न बेचैनी और दुर्बलता से राहत देना।

कोढ़ियों को चंगा करना (5:12–16) – पाप के घिनौनेपन और आशाहीन दशा से निकाल कर फिर से अपनी संगति में लेना 17:11–19 भी देखें)।

लकवाग्रसित (5:17–26) – पाप के लकवे से छुटकारा और परमेश्वर की सेवा के लिए सक्षम बनाना।

विधवा का पुत्र जिलाया गया (7:11–17) – पापी लोग अपराध और पाप में मरे हुए हैं, और उन्हें जीवन की आवश्यकता है (8:49–56 भी देखें)।

आँधी को शान्त करना (8:22–25) – मसीह उन आँधियों को नियंत्रित कर सकता है जो उसके अनुयायियों के जीवन में उथल–पुथल मचाती हैं।

सेना, दुष्टात्माग्रसित (8:26–39) – पाप हिंसा और गन्दगी को उत्पन्न करता है और मनुष्य को सभ्य समाज से अलग–थलग कर देता है। प्रभु सभ्यता, स्वच्छता, और अपने साथ संगति प्रदान करता है।

स्त्री जिस ने उसके वस्त्र के कोर को छुआ (8:43–48) – पाप के द्वारा निर्धनता और अवसाद आ जाता है।

5000 लोगों को भोजन कराया जाना (9:10–17)– पापमय संसार जो परमेश्वर की रोटी के लिए भूखा है। यीशु अपने चेलों के माध्यम से इस आवश्यकता को पूरी करता है।

दुष्टात्माग्रसित पुत्र (9:37–43अ) – पाप की क्रूरता और हिंसा, और मसीह की चंगाई देने वाली सामर्थ।

स्त्री जिसमें दुर्बल करने वाली दुष्टात्मा थी (13:10–17) – पाप मनुष्य को दुर्बल और विकृत कर देता है, परन्तु यीशु मसीह का स्पर्श पूर्ण चंगाई लेकर आता है।

जलन्धर का रोगी (14:1–6) – पाप से बेचैनी, हताशा, और खतरा उत्पन्न होता है।

अन्धा भिखारी (18:35–43) – पाप मनुष्य को अनन्तकालीन सच्चाई के प्रति अन्धा बना देता है। नया जन्म के परिणामस्वरूप आँखे खुल जाती हैं।

ब. ज्वर पर अधिकार (4:38, 39)

इसके बाद यीशु **शमौन के घर** आया, जहाँ **शमौन की सास को ज्वर चढ़ा हुआ था**। जैसे ही प्रभु ने **ज्वर को डांटा** ज्वर **उस पर से उतर गया**। यह चंगाई न सिर्फ तुरन्त मिली परन्तु यह चंगाई पूर्ण रूप से भी मिली, क्योंकि वह उठ कर पुनः अपना बल पा कर घराने की सेवा करने लगी। सामान्यतः ज्वर एक व्यक्ति को कुछ दिनों तक कमजोर और पस्त कर देता है। (जो लोग ऐसा मानते हैं कि प्रभु के सेवकों को अविवाहित रहना चाहिए उनके लिए यह स्थल अड़चनदायक है क्योंकि पतरस एक विवाहित था!)

स. बीमारियों और दुष्टात्माओं पर अधिकार (4:40, 41)

4:40 जब सब्त का दिन समाप्त हुआ, तो लोग थोपी गई निष्क्रयता से मुक्त हुए; वे बड़ी संख्या में बीमारों और दुष्टात्माग्रसित लोगों को यीशु के पास लेकर आए। किसी का भी आना व्यर्थ नहीं हुआ। उसने हर एक बीमार को चंगा किया और दुष्टात्माग्रसित को छुटकारा दिया। ऐसे लोगों में से अनेक विश्वास से चंगाई देने का दावा करते है अपना आश्चर्यकर्म पहले से तय कर लिए गए लोगों तक ही सीमित रखते हैं। यीशु ने *प्रत्येक* को चंगाई दी।

4:41 बाहर निकाली गई **दुष्टात्मा** यह जानती थी कि यीशु ही **परमेश्वर का पुत्र ... मसीह** है। परन्तु वह दुष्टात्माओं की गवाही को स्वीकार नहीं करता। उन्हें शान्त किया जाना आवश्यक है। **वे जानते थे कि यह** मसीह है, परन्तु परमेश्वर के पास इस सच्चाई की घोषणा करने के लिए इससे बेहतर माध्यम थे।

द. भ्रमणकारी प्रचार करने के द्वारा सामर्थ (4:42–44)

अगले **दिन**, यीशु कफरनहूम के पास एक **जंगली जगह** में आराम करने के लिए गया। **भीड़ की भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई** आई और उसे पा लिया। वे उससे आग्रह करने लगे कि वह उन्हें छोड़ कर न जाए। **परन्तु उसने** उन्हें स्मरण दिलाया कि उसे **गलील** के **और और नगरों** में कार्य करना आवश्यक है। इसलिए वह एक आराधनालय से दूसरे आराधनालय में जा जा कर **परमेश्वर के राज्य का** सुसमाचार सुनाता गया। यीशु स्वयं ही राजा था। वह उन पर राज्य करना चाहता था। परन्तु इससे पहले उन्हें अपना मन फिराना होगा। वह ऐसे लोगों पर राज्य नहीं करेगा जो अपने पापों से चिपके रहते हैं। यही मार्ग की बाधा थी। वे अपने राजनैतिक परेशानियों से छुटकारा पाना चाहते थे, अपने पापों से नहीं।

इ. दूसरों को प्रशिक्षित करने के द्वारा सामर्थ: चेलों को बुलाया गया (5:1–11)

पतरस की बुलाहट के इस साधारण वर्णन में से अनेक महत्वपूर्ण शिक्षाएं उभर कर सामने आती हैं।

1. प्रभु ने पतरस की **नावों** में से एक नाव का उपयोग पुलपिट की तरह किया ताकि उस पर से वह भीड़ को शिक्षा दे। यदि हम अपनी सारी सम्पत्ति और धन उद्धारकर्ता को सौंप देते हैं, तो वह अद्‌भुत रीति से उनका उपयोग करता है, और हमें भी प्रतिफल देता है।

2. उसने पतरस को बताया कि ठीक किस स्थान पर पर्याप्त मछलियां मिलेंगी – इससे पहले पतरस और अन्य लोगों ने **सारी रात** मेहनत करने के बाद भी कुछ न पाया था। सर्वज्ञ प्रभु जानता है कि मछलियां कहाँ पर तैर रही हैं। अपने स्वयं की बुद्धि और सामर्थ से सेवा करना व्यर्थ है। मसीही सेवकाई में सफलता का रहस्य यह है कि हम

प्रभु यीशु के मार्गदर्शन में कार्य करें।

3. यद्यपि पतरस स्वयं एक अनुभवी मुछआरा था, फिर भी उसने एक बढ़ई के सुझाव को स्वीकार किया, और इसके परिणामस्वरूप, उनकी जालें मछलियों से भर गईं। "**तेरे कहने पर जाल डालूंगा।**" यह दीनता, सीखने के लिए तैयार रहने, और निर्विवाद आज्ञाकारिता के मूल्य को दर्शाता है।

4. जब **गहिरे** जल में **जाल** डाला गया तो यह मछलियों से इतना भर गया कि **फटने** लगा। इसलिए हमें भी किनारे किनारे कार्य करना छोड़ कर पूर्ण रूप से समर्पण कर सेवा करनी चाहिए। विश्वास का अपना गहरा जल होता है, और इसी तरह से कष्ट, दु:ख, और हानि का भी। ये ही वे बातें हैं जो जाल को फलों से भर देते हैं।

5. **उनके जाल** फटने लगे और उनकी नावें **डूबने लगीं** (6, 7 पदों में)। मसीह के निर्देशों का पालन करते हुए सेवकाई करने से समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं – परन्तु ये समस्याएं क्या ही सुखद हैं। इस प्रकार की समस्याएं एक सच्चे मछुआरे के हृदय को गदगद कर देती हैं।

6. प्रभु यीशु की महिमा के इस दर्शन से **पतरस** के भीतर उसकी तुच्छता का एक प्रबल अहसास उत्पन्न हुआ। ऐसा ही यशायाह के साथ भी हुआ था (6:5); ऐसा उन सब लोगों के साथ होता है जो राजा की शोभा का दर्शन करते हैं।

7. जिस समय पतरस अपने दैनिक सामान्य कार्य में जुटा हुआ था उसी समय मसीह ने उसे **मनुष्यों** का मछुवा बनने के लिए बुलाया। यदि आप उसकी बुलाहट की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो आप को जो भी कार्य मिलता है उसे करें। आप को मिले कार्य को आप अपनी पूरी शक्ति लगा कर करें। इस कार्य को अपने पूरे हृदय से करें मानों इसे आप प्रभु के लिए कर रहे हों। जिस प्रकार से एक पतवार नाव को तभी दिशा दे सकती है जब यह गतिमान हो, ठीक उसी प्रकार से परमेश्वर उन्हीं लोगों का मार्गदर्शन करता है जो गतिमान होते हैं।

8. मसीह ने पतरस को बुलाया कि वह मछली पकड़ने वाला से अब मनुष्यों को पकड़ने वाला बन जाए, या अधिक शब्दश:, "मनुष्यों को जीवता" पकड़ने वाला बन जाए। समुद्र की सारी मछलियों की तुलना में एक आत्मा को अनन्तकाल के लिए मसीह के लिए जीतते हुए देखे जाने के अतुलनीय सौभाग्य क्या ही मूल्य है!

9. पतरस, **याकूब और यूहन्ना** ने अपनी अपनी नावों को किनारे लगा दिया और **सब कुछ छोड़ कर** अपने जीवन के व्यवसाय के सबसे उत्तम दिनों में से एक दिन वे यीशु के **पीछे हो लिए**। और वे कितना ज्यादा अपने इस निर्णय में पूरी तरह से कायम रहे! हम शायद उनके बारे में यह कभी नहीं सुने होंगे कि उन्होंने अपनी नावों के पास फिर से कभी आना पसन्द किया।

फ. कोढ़ के ऊपर अधिकार (5:12–16)

5:12 लूका वैद्य इस बात का विशेष उल्लेख करता है कि यह **मनुष्य . . . कोढ़ से भरा हुआ** था। उसका कोढ़ काफी बढ़ चुका था और मानवीय दृष्टिकोण से उसकी स्थिति काफी निराशाजनक थी। इस कोढ़ी का विश्वास अद्‌भुत था। उसने कहा, "**तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।**" वह संसार के किसी अन्य व्यक्ति को ऐसा नहीं कह सकता था। तौभी उसे **प्रभु** की सामर्थ पर पूर्ण भरोसा था। जब उसने कहा, "**यदि तू चाहे,**" तब वह मसीह की इच्छा के प्रति सन्देह नहीं कर रहा था। बल्कि वह यीशु के पास एक ऐसे प्रार्थी के रूप में आता है, जिसके पास चंगाई पाने का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु वह अपने आप को प्रभु की दया और अनुग्रह पर सौंपते हुए आता है।

5:13 एक कोढ़ी को छूना चिकित्सकीय दृष्टिकोण से जोखिम भरा, धार्मिक दृष्टि से अशुद्ध करने वाला, और सामाजिक दृष्टि से नीच कार्य था। परन्तु उद्धारकर्ता किसी भी प्रकार की अशुद्धता या संक्रमण से प्रभावित नहीं हुआ। बल्कि कोढ़ी व्यक्ति के शरीर में चंगाई और स्वास्थ्य का एक प्रपात उमड़ पड़ा। यह चंगाई धीरे धीरे प्राप्त नहीं हुई; **उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा**! हम सोच सकते हैं कि इस हताश, असहाय कोढ़ी के लिए एक ही क्षण में पूर्ण रूप से चंगा हो जाना कितना मायने रखा होगा!

5:14 यीशु ने उसे **चिताया कि** वह इस चंगाई के बारे में **किसी से न कहे**। उद्धारकर्ता किसी जिज्ञासु भीड़ को अपनी ओर आकर्षित नहीं करना चाहता था, न ही किसी ऐसे जनआन्दोलन को हवा देना चाहता था जो उसे राजा बनाए जाने के लिए चलाया जाए। इसकी बजाए, प्रभु ने कोढ़ी को आज्ञा दी कि वह **जाके** अपने आप को

याजक को दिखाए और **मूसा** द्वारा निर्धारित किया गया **चढ़ावा** चढ़ाए (लैव्य. 14:4)। चढ़ावा का एक एक विवरण मसीह की ओर संकेत करता है। **याजक** का एक कार्य यह था कि वह कोढ़ी की जाँच करे और यह तय करे कि क्या सचमुच में वह चंगा हुआ है। याजक में चंगाई देने की सामर्थ नहीं थी; वह सिर्फ इतना कर सकता था कि वह एक व्यक्ति को *चंगा* घोषित करे। इस याजक ने इससे पहले कभी भी चंगा किए गए किसी कोढ़ी को नहीं देखा था। यह दृश्य अद्वितीय था; इसे देख कर उस व्यक्ति को यह जान लेना था कि अन्तत: मसीह का आगमन हो चुका है। उसे इस बात की **गवाही** सारे याजकों को देनी थी। परन्तु उनका हृदय अविश्वास के कारण अन्धा हो गया था।

5:15, 16 प्रभु द्वारा यह निर्देश दिए जाने के बाद भी कि यह आश्चर्यकर्म सार्वजनिक न किया जाए, इसकी खबर तेजी से सब जगह फैल गई और **भीड़ की भीड़** चंगाई पाने के लिए उसके पास आने लगी। यीशु प्राय: **जंगलों में अलग** चला जाता था ताकि कुछ समय प्रार्थना करने में बिताए हमारा उद्धारकर्ता प्रार्थना करने वाला मनुष्य था। यह बिल्कुल उपयुक्त है कि लूका का सुसमाचार, जो उसे मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है, उसके प्रार्थनामय जीवन के बारे में अन्य सुसमाचारों की तुलना में सबसे अधिक बातें कहता है।

ग. लकवा पर अधिकार (5:17–26)

5:17 जैसे जैसे यीशु की सेवकाई के विषय में खबर फैलती गई, **फरीसी और व्यवस्थापक** यीशु से अधिक द्वेष करने लगे। यहाँ पर हम देखते हैं कि वे **गलील** में इस स्पष्ट उद्देश्य से एकत्रित हो रहे हैं कि वे यीशु के विरुद्ध कोई दोष ढूंढ़ सकें। **चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।** वास्तव में यीशु के पास हमेशा से चंगा करने की सामर्थ थी, परन्तु परिस्थितियाँ हमेशा अनुकूल नहीं थीं। उदाहरण के लिए, नासरत में, लोगों के अविश्वास के कारण वह बड़े बड़े कार्य नहीं कर सका (मत्ती 13:58)।

5:18,19 चार मनुष्य एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को एक **खाट** पर लेकर उस घर में आए जहाँ यीशु शिक्षा दे रहा था। वे **भीड़ के कारण** उसके पास **न** पहुँच **सके**, इसलिए वे बाहर सीढ़ी लगाकर छत पर चढ़ गए। उसके बाद उन्होंने छत के कुछ खपरैल निकाल कर एक कुछ हिस्सा खोल दिया और वहाँ से उस व्यक्ति को नीचे लटका कर उतार दिया।

5:20, 21 यीशु ने इस **विश्वास** को देखा जिसने यीशु का ध्यान एक जरूरतमंद की ओर खींचने के लिए इस हद तक जाकर प्रयास किया। **उसने उन का विश्वास देखकर** (चारों व्यक्तियों का और उस लकवेग्रस्त व्यक्ति का विश्वास), उस लकवाग्रस्त व्यक्ति से **कहा**, ''**हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा हुए।**'' इस अभूतपूर्व कथन को सुनकर **शास्त्री और फरीसी** भड़क गए। वे जानते थे कि **परमेश्वर** को छोड़ और कोई दूसरा जन **पाप को क्षमा** नहीं कर सकता। वे यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि यीशु परमेश्वर है, और इसलिए वे ईशनिन्दा का रोना रोने लगे।

5:22, 23 उसके बाद प्रभु ने उनके सामने यह सिद्ध किया कि उसने उस मनुष्य के पाप को सचमुच में क्षमा कर दिया है। पहले उसने उनसे पूछा कि ''**सहज क्या है? क्या यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ, और चल फिर?**'' एक अर्थ में तो एक बात *कहना* उतना ही सहज था जितना कि दूसरी बात, परन्तु दोनों बातों में से किसी एक को भी *करना* एक अलग ही बात थी, क्योंकि दोनों ही मनुष्य द्वारा किए जा सकने में सम्भव नहीं हैं। यहाँ पर प्रभु यीशु यह कहता हुआ प्रतीत होता है कि ''**तेरे पाप क्षमा हुए**'' कहना अधिक सहज है, क्योंकि यह देखा नहीं जा सकता कि ऐसा हुआ या नहीं। यदि यह कहा जाए, ''**उठ, और चल फिर,**'' तो यह देख पाना अधिक सरल है कि रोगी चंगा हुआ या नहीं।

फरीसी लोग यह नहीं *देख* सके कि मनुष्य का पाप क्षमा किया जा चुका है, इसलिए उन्होंने विश्वास नहीं किया। इसलिए यीशु ने एक आश्चर्यकर्म किया ताकि वे इस बात का प्रमाण *देख* सकें कि यीशु ने सचमुच में उस मनुष्य के पाप को क्षमा कर दिया है। उसने लकवाग्रस्त व्यक्ति को चलने की सामर्थ प्रदान की।

5:24 ''**परन्तु इसलिए कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है**'' – **मनुष्य का पुत्र**, पदनाम, प्रभु के सिद्ध मनुष्यत्व पर जोर देता है। एक अर्थ में, हम सब मनुष्य के पुत्र हैं, परन्तु यह पदनाम ''मनुष्य का पुत्र''

जिसके आगे मूलभाषा में निश्चयवाचक उपपद लगा हुआ है, यीशु को प्रत्येक अन्य मनुष्य से अलग करता है। यह पदनाम उसे परमेश्वर के मन के अनुसार मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करता है, एक ऐसा मनुष्य जो नैतिक रूप से सिद्ध है, एक ऐसा मनुष्य जो दु:ख उठाएगा, जिसका लोहू बहाया जाएगा, और जो मर जाएगा, और एक ऐसा मनुष्य जिसे विश्वव्यापी प्रधानता दी जाएगी।

5:25 यीशु की आज्ञा का पालन करते हुए, यह लकवाग्रस्त व्यक्ति उठ कर खड़ा हो गया, उसने अपनी खाट उठाई, और **परमेश्वर की बड़ाई** करता हुआ घर चला गया।

5:26 भीड़ के लोग पूरी तरह से **चकित** हो गए और वे **परमेश्वर की बड़ाई** करने लगे, और उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्होंने उस दिन अद्‌भुत बातें **देखीं,** अर्थात्, पाप क्षमा की घोषणा और वह आश्चर्यकर्म जिससे पाप क्षमा किए जाने को सिद्ध किया गया।

V. मनुष्य का पुत्र अपनी सेवकाई को स्पष्ट करता है (5:27–6:49)

अ. लेवी की बुलाहट (5:27, 28)

लेवी एक यहूदी था जो रोमी सरकार के लिए **चुंगी** लेता था। इस प्रकार के मनुष्यों से अन्य दूसरे यहूदी घृणा करते थे, न सिर्फ इसलिए क्योंकि ये लोग रोमी सरकार के साथ मिलकर कार्य करते थे परन्तु इसलिए भी कि वे बेइमानी करते थे। एक दिन, जब लेवी अपना कार्य कर रहा था, यीशु वहाँ से पार हुआ और उसने लेवी को उसका चेला बनने के लिए बुलाया। आश्चर्यजनक रीति से तत्परता दिखाते हुए लेवी अपना **सब कुछ छोड़ कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।** इस साधारण विश्वास से जिससे बहुत बड़ा परिणाम प्रवाहित हुआ उस पर विचार करें। लेवी, या मत्ती, प्रथम सुसमाचार का लेखक हुआ। उसके द्वारा यीशु की बुलाहट को सुन कर पीछे आ जाने के लिए उसे यह ईनाम मिला।

ब. मनुष्य का पुत्र पापियों को क्यों बुलाता है (5:29–32)?

5:29, 30 ऐसा समझा गया है कि **लेवी** द्वारा इस **बड़ी जेवनार** का आयोजन किए जाने के तीन उद्‌देश्य थे। वह प्रभु का सम्मान करना चाहता था, अपनी नई निष्ठा को सार्वजनिक करना चाहता था, और अपने मित्रों से यीशु का परिचय करवाना चाहता था। अधिकांश यहूदी लोग **चुंगी लेने वालों और पापियों** के साथ बैठ कर भोजन करना पसन्द नहीं करते थे। नि:सन्देह, प्रभु ने लेवी और उसके मित्रों के पापों का समर्थन नहीं किया, या उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि उसे अपनी गवाही से समझौता करना पड़े, परन्तु उसने इस अवसर का उपयोग लोगों को सिखाने, फटकार लगाने, और आशीष देने के लिए किया।

फरीसी और उन के शास्त्री[13] समाज के इन निचले और तुच्छ लोगों के साथ सम्बन्ध रखने के कारण यीशु की आलोचना करने लगे।

5:31 यीशु ने . . . उत्तर दिया कि उसका यह कार्य इस संसार में उसके आने के उद्‌देश्य के बिल्कुल अनुरूप था। वैद्य की आवश्यकता स्वस्थ लोगों को नहीं परन्तु **बीमारों** को होती है।

5:32 फरीसी लोग अपने आप को **धर्मियों** में गिनते थे। उन्हें अपने पाप या अपनी आत्मिक आवश्यकता का कोई अहसास नहीं था। इसलिए वे महान वैद्य की सेवकाई से कोई लाभ नहीं उठा सके। परन्तु इन चुंगी लेनेवालों और पापियों को इस बात का अहसास हो गया कि वे पापी हैं इसलिए उन्हें उनके पापों से उद्धार की आवश्यकता है। उन्होंने यह स्वीकार किया कि उनके समान लोगों के लिए उद्धारकर्ता आया है। वास्तव में फरीसी लोग धर्मी *नहीं* थे। उन्हें भी उद्धार पाने की उतनी ही आवश्यकता थी जितनी कि चुंगी लेने वालों को। परन्तु वे अपने पाप का अंगीकार करने और अपने दोष को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। और इसलिए वे गम्भीर रूप से रोगी व्यक्तियों के पास वैद्य के जाने की आलोचना कर रहे थे।

स. यीशु के चेलों द्वारा उपवास न किये जाने का स्पष्टीकरण (5:33–35)

5:33 फरीसियों की अगली चाल यह थी कि वे यीशु को उपवास की प्रथा के विषय पर पूछताछ करें। आखिर, **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाले **के चेले** अपने गुरु के बैरागी जीवन का अनुसरण करते थे। और **फरीसियों** के चेले विभिन्न सांस्कारिक उपवास किया करते थे। परन्तु

यीशु के चेले उपवास नहीं करते थे। वे उपवास क्यों नहीं करते थे?

5:34, 35 प्रभु के उत्तर का आशय यह था कि उसके चेलों के पास उपवास करने का कोई कारण नहीं है जब तक वह स्वयं **उन के साथ** है। यहाँ पर वह उपवास का सम्बन्ध दु:ख और शोक के साथ जोड़ता है। जब वह **उन से अलग किया जाएगा**, अर्थात्, हिंसा के द्वारा उसे मार डाल कर उनसे अलग कर दिया जाएगा, तो वे अपना शोक प्रगट करते हुए **उपवास** करेंगे।

द. नए काल खण्ड *(डिस्पेन्सेशन)* से सम्बन्धित तीन दृष्टान्त (5:36–39)

5:36 इसके बाद तीन दृष्टान्त दिए गए हैं जो यह शिक्षा देते हैं कि एक नए कालखण्ड का आरम्भ होगा, और नए और पुराने कालखण्डों को एक साथ मिलाया नहीं जा सकेगा।

पहले **दृष्टान्त** में, **पुराने** वस्त्र व्यवस्था या व्यवस्था के कालखण्ड को दर्शाता है, जबकि **नए पहिरावन** अनुग्रह के युग (कालखण्ड) का चित्र है। दोनों के बीच समन्वय नहीं हो सकता। व्यवस्था और अनुग्रह का मिश्रण करने पर दोनों ही खराब हो जाएंगे। पुराने पहिरावन पर पैबन्द लगाने के लिए नये पहिरावन से टुकड़ा लेने पर नया पहिरावन खराब हो जाता है, और साथ ही यह टुकड़ा **पुराने में मेल भी नहीं खाएगा**, न दिखने में न ही मजबूती में। मसीही विद्वान जे. एन. डार्बी ने इस बात को बहुत ही सुन्दर रीति से व्यक्त किया है: ''यीशु ऐसा कभी नहीं करेगा और मसीहत का टांका यहूदी धर्म में नहीं लगाएगा। शरीर और व्यवस्था साथ साथ चल सकते हैं, परन्तु अनुग्रह और व्यवस्था, परमेश्वर की धार्मिकता और मनुष्य की धार्मिकता का कभी मेल नहीं हो सकता है।''

5:37, 38 *दूसरे* दृष्टान्त में **नया दाखरस पुरानी मशकों में** रखने की मूर्खता के बारे में है। **नया दाखरस** सड़ने पर (खमीर उठने पर) पुरानी मशकों से चमड़े पर तनाव पड़ता है, जिनका लचीलापन अब तक समाप्त हो चुका होता है और इस कारण ये इस तनाव को सह पाने लायक नहीं रह जाते। इसलिए **दाखरस** थैले को **फाड़कर** बाहर बह जाता है। यहूदी धर्म के बाहरी रूप, विधियां, परम्पराएं, और संस्कार इतने सख्त (लचीलापन नहीं था) थे कि नये कालखण्ड (मसीहत) का आनन्द और उल्लास को समा पाने लायक नहीं रहे। **नया दाखरस** इस अध्याय में उस अपारम्परिक (क्रान्तिकारी) तरीके में दिखाई देता है जिस तरीके से चार मनुष्य लकवाग्रस्त व्यक्ति को यीशु के पास लाए थे। नया दाखरस लेवी के नयेपन और उत्साह में दिखाई देता है। **पुरानी मशकों** के माध्यम से फरीसियों के अड़ियल रवैये और ठण्डी औपचारिकता का चित्रण किया गया है।

5:39 *तीसरे* दृष्टान्त में यह बताया गया है कि **कोई** भी **मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया** दाखरस पीना **नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है कि पुराना दाखरस ही अच्छा है**। यह दृष्टान्त नये के लिए पुराने को त्याग पाने में मनुष्य की स्वाभाविक अनिच्छा का चित्रण करता है, अर्थात्, मसीहत को स्वीकार करने के लिए यहूदी धर्म को त्यागने, अनुग्रह के लिए व्यवस्था को त्यागने, और तत्व के लिए उसकी परछाई को त्यागने के प्रति अनिच्छा को प्रगट करता है! जैसा कि जे.एन. डार्बी ने कहा है, ''एक ऐसा व्यक्ति जो प्रथाओं, मानवीय व्यवस्थाओं, पिता के धर्म, इत्यादि जैसी बातों का आदी हो गया है, वह कभी भी परमेश्वर के राज्य के नए सिद्धान्त और सामर्थ को पसन्द नहीं करता।''

इ. मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का प्रभु है (6:1–11)

6:1, 2 सब्त के दिन से सम्बन्धित दो घटनाएं हमारे सामने प्रस्तुत की गई हैं ताकि इनके माध्यम से यह दर्शाया जा सके कि धार्मिक अगुवों की ओर से हो रहा विरोध अब अपने चरम पर पहुँच रहा था। पहली घटना ''दूसरे–पहले सब्त'' (शब्दश: अनुवाद) के दिन की है। इसे इस तरह से समझाया गया है: फसह के बाद के पहले सब्त को पहला सब्त कहा जाता था। दूसरा सब्त इसके बाद वाले (अगले) सब्त को कहा जाता था। इस **सब्त के दिन**, प्रभु और उसके चेल **खेतों में से** होकर जा रहे थे। चेले कुछ **बालें तोड़ तोड़ कर** और हाथों से मल मल कर छिलके अलग कर अन्न को **खाते जा** रहे थे। **फरीसियों** को बालें तोड़ने को लेकर झगड़ा करने का अवसर नहीं मिला क्योंकि व्यवस्था में बालें तोड़ कर खाने की अनुमति थी (व्य. वि. 23:25)। इसलिए वे यह कह

कर उनकी आलोचना करने लगे कि ऐसा **सब्त के दिन** किया गया। वे कभी कभी बालें तोड़े जाने को कटनी का नाम भी दे देते थे, और हाथ से मसलने को मिंजाई का नाम देते थे।

6:3–5 प्रभु ने दाऊद के जीवन की एक घटना का उदाहरण देते हुए यह उत्तर दिया कि सब्त के नियम का आशय किसी आवश्यक कार्य पर प्रतिबन्ध लगाना कभी नहीं रहा। जब **दाऊद** का तिरिस्कार कर दिया गया था और उसका पीछा किया जा रहा था, तो उसे और उसके साथियों को भूख लगी। वे **परमेश्वर के घर में गए** और **भेंट की रोटियां खाईं**, जिन्हें सामान्यत: **याजकों** के खाने के लिए ही रखा जाता था। परमेश्वर ने दाऊद के मामले में छूट दी। इस्राएल में पाप था। राजा का तिरिस्कार कर दिया गया था। व्यवस्था में भेंट की रोटियों के सम्बन्ध में ऐसा नियम इतनी सख्ती से पालन करने के लिए नहीं बनाया गया था कि राजा भी भूखा रह जाए।

यहाँ भी मिलती–जुलती स्थिति थी। मसीह और उसके चेले भूखे थे। फरीसी लोग सब्त के दिन उन्हें बालें तोड़ते हुए देखने की बजाए भूखा रह जाते देखना पसन्द कर रहे थे। परन्तु **मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है**। पहली बात, व्यवस्था उसी के द्वारा दी गई थी और इसके सच्चे आत्मिक अर्थ की व्याख्या करने और इसे गलत समझने से बचाने के लिए उससे अधिक योग्यता और किसी में नहीं है।

6:6–8 दूसरी घटना **किसी और सब्त के दिन** घटी, यह घटना आश्चर्यजनक चंगाई से सम्बन्धित घटना थी। **शास्त्री और फरीसी** अपने मनों में दुर्भाव लिए हुए इस **अवसर** की **ताक** में थे कि वह **सब्त के दिन** सूखे हाथ वाले व्यक्ति को **चंगा करता है कि नहीं**। अपने पिछले अनुभवों से और जितना वे प्रभु के बारे में जानते थे, उनके पास इस बात पर विश्वास करने के पर्याप्त कारण थे कि वह इस व्यक्ति को चंगा करेगा। प्रभु ने उन्हें हताश नहीं किया। पहले उसने इस **मनुष्य** को आराधनालय में भीड़ के बीच में **खड़ा** होने के लिए कहा। इस नाटकीय कार्य से दूसरों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित हुआ कि अब क्या होने वाला है।

6:9 तब **यीशु** ने अपने आलोचकों से पूछा कि **सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना**। यदि वे सही उत्तर देते तो उन्हें यह कहना पड़ता कि सब्त के दिन भला करना उचित है और बुरा करना गलत है। यदि भला करना उचित है तो वह मनुष्य को चंगा करने के द्वारा भला कर रहा है। यदि सब्त के दिन **बुरा** करना उचित है, तो वे प्रभु यीशु को मार डालने का षड्यंत्र रच कर सब्त के दिन का उल्लंघन कर रहे हैं।

6:10 यीशु के विरोधियों की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। तब यीशु ने इस मनुष्य को आदेश किया कि वह अपना **हाथ** बढ़ाए। (सिर्फ लूका वैद्य ने इस बात का उल्लेख किया है कि यह दाहिना हाथ था। यीशु के इस आदेश के साथ ही उस व्यक्ति के पास प्रभु की वह सामर्थ भी पहुँची जिसकी उस व्यक्ति को आवश्यकता थी। जैसे ही इस व्यक्ति ने प्रभु के आदेश का पालन किया वैसे ही **उसका हाथ फिर चंगा हो गया**।

6:11 फरीसी और शास्त्री **आपे से बाहर हो** गए। वे यीशु पर सब्त के दिन का उल्लंघन करने का दोष लगाने लगे। प्रभु ने सिर्फ मुँह से कुछ शब्द कहे थे और वह व्यक्ति चंगा हो गया था। इसमें कोई भी गलत कार्य नहीं हुआ था। तौभी वे मिलकर यह षड्यंत्र रचने लगे कि वे उसे कैसे ''फँसाएं।''

सब्त का दिन परमेश्वर ने मनुष्य की भलाई के उद्देश्य से बनाया था। यदि इसे सही तरीके से समझा जाए, तो इस दिन किसी भी आवश्यक कार्य या दया के किसी कार्य को करने से मना नहीं किया गया था।

फ. बारह चेलों का चुनाव (6:12–19)

6:12 यीशु ने बारह चेलों का चुनाव करने से पहले **प्रार्थना करने में सारी रात** बिता दी। हमारी हड़बड़ियों और परमेश्वर पर हमारी अनिर्भरता पर यह क्या ही कड़ी फटकार है! मात्र लूका ने ही अपने सुसमाचार में **प्रार्थना** की इस **रात** का उल्लेख किया है।

6:13–16 जिन **बारह** चेलों को उसने अपने अनेक **चेलों** में से चुना था उनके नाम इस प्रकार से हैं:

1. **शमौन, जिसका नाम उसने पतरस भी रखा**, योना का पुत्र था, जो आगे चल कर सबसे प्रमुख प्रेरितों में से एक हुआ।

2. **उसका भाई अन्द्रियास**. अन्द्रियास ने ही पतरस को प्रभु से मिलवाया था।

3. **याकूब** जब्दी का पुत्र था. उसे पतरस और यूहन्ना

के साथ रूपान्तर के पर्वत पर जाने का सुअवसर मिला था।

4. **यूहन्ना** जब्दी का पुत्र था. यीशु ने याकूब और यूहन्ना को ''गर्जन के पुत्र'' कहा था। इसी यूहन्ना ने यूहन्ना का सुसमाचार, यूहन्ना की पत्रियाँ, और यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य लिखा है।

5. **फिलिप्पुस**, बैतसैदा का निवासी था, जिसने नतनएल को यीशु से मिलवाया था। प्रेरितों के काम का सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस इस फिलिप्पुस से अलग है।

6. **बरतुलमै,** सामान्यत: नतनएल का दूसरा नाम समझा जाता है। उसका उल्लेख सिर्फ बारह चेलों की सूची में आया है।

7. **मत्ती,** जो चुंगी लेनेवाला था, लेवी भी कहलाता था। उसने नया नियम के पहले सुसमाचार को लिखा है।

8. **थोमा**, दिदुमुस भी कहलाता था. उसने कहा कि जब तक उसे ठोस प्रमाण नहीं मिलेंगे वह यह विश्वास नहीं करेगा कि यीशु जी उठा है।

9. **हलफई का पुत्र याकूब.** यह वह चेला हो सकता है जिसने याकूब के बाद यरूशलेम की कलीसिया के एक महत्वपूर्ण पद को सम्भाला था, जब्दी का पुत्र याकूब हेरोदेस के द्वारा इस समय तक मार डाला गया था।

10. **शमौन जो जेलोतेस कहलाता है**. इस चेले के बारे में पवित्रशास्त्र में शायद ही कुछ बताया गया है।

11. **याकूब का बेटा यहूदा**. शायद यह वही यहूदा है, जिसने यहूदा की पत्री को लिखा, और लिबियुस, जिसका उपनाम तद्दै था (मत्ती 10:3; मर. 3:18)।

12. **यहूदा इस्कारियोति**, ऐसा समझा जा सकता है कि वह यहूदा के किरियोत का रहने वाला था, और चेलों में से अकेला ऐसा व्यक्ति था जो गलीली नहीं था। उसने हमारे प्रभु को पकड़वा दिया था, यीशु ने उसे ''विनाश का पुत्र'' कहा था।

यीशु द्वारा चुने गए चेले विलक्षण बुद्धि या क्षमता वाले व्यक्ति नहीं थे। वे मानवजाति के प्रतिनिधिक अंश थे। जो बात उन्हें महान बनानी थी वह थी यीशु के साथ उनका सम्बन्ध और यीशु के प्रति उनका समर्पण। जिस समय यीशु ने उन्हें चुना उस समय वे लगभग 20 से 30 वर्ष के बीच के युवा रहे होंगे। युवावस्था वह समय होता है जब मनुष्य में सबसे अधिक उमंग रहती है। वह सीख ग्रहण करने के लिए इच्छुक रहता है, साथ ही कठिनाइयों को झेलने की भी सबसे अधिक क्षमता उसके पास इस अवस्था में होती है। यीशु ने सिर्फ बारह चेलों का चुनाव किया। वह संख्या पर नहीं परन्तु गुण में अधिक रूचि रखता था। उसकी योजना थी कि वह सही गुणों और क्षमता वाले (थोड़े से) व्यक्तियों को ही सेवा के लिए भेजे, और आत्मिक प्रजनन (नया-जन्म) की प्रक्रिया के द्वारा वह सारे संसार में सुसमाचार का फैलाव करे।

जब चेलों का चुनाव हो गया, तो उसके बाद यह महत्वपूर्ण था कि उन्हें स्वर्ग के राज्य के सिद्धान्तों में निपुणता से प्रशिक्षित किया जाए। इस अध्याय के शेष भाग में, सारांश में यह बताया गया है कि प्रभु यीशु के चेलों में किस प्रकार के गुण और आचरण पाए जाने चाहिए।

6:17-19 यह उपदेश पहाड़ी उपदेश से अलग है (मत्ती 5-7)। पहाड़ी उपदेश पहाड़ पर दिया गया था; यह उपदेश **चौरस जगह** पर दिया जा रहा है। उस उपदेश में सिर्फ धन्य वचन कहे गए थे, हाय के नहीं; इस उपदेश में धन्य वचन के साथ साथ हाय के वचन भी कहे गए हैं। दोनों उपदेशों में कुछ और भी अन्तर पाए जाते हैं – अलग अलग शब्दों का उपयोग किया गया है, एक उपदेश बड़ा है दूसरा उससे छोटा, दोनों उपदेशों में अलग अलग बातों पर जोर दिया गया है।[14]

ध्यान दें कि शिष्यता की इस शिक्षा का कड़ाई से पालन करने का उपदेश चेलों के साथ साथ भीड़ को भी दिया गया था। ऐसा लगता है कि जब कभी एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे पीछे आती थी, तो वह उनसे खरी खरी बात कहने के द्वारा उनकी सच्चाई की परख करता था। जैसा कि कहा गया है, ''प्रभु पहले रिझाता है, फिर फटकता है।''

दक्षिण से **सारे यहूदिया और यरूशलेम** और उत्तर-पश्चिम से **सूर और सैदा** से लोग वहाँ आए थे, जिनमें यहूदी और गैरयहूदी दोनों शामिल थे। बीमार लोग और दुष्टात्माग्रसित लोग यीशु को छूने की कोशिश कर रहे थे; वे जानते थे कि चंगा करने वाली **सामर्थ . . . उसमें से** ही निकलती है।

यह ध्यान देना बड़ा महत्वपूर्ण है कि उद्धारकर्ता की शिक्षाएं कितनी क्रान्तिकारी हैं। ध्यान रखें कि वह क्रूस की ओर बढ़ रहा था। उसे मरना, गाड़ा जाना, तीसरे दिन फिर से जी उठना और स्वर्ग में लौटना था। सेंतमेंत मिलने वाले उद्धार का सुसमाचार संसार को पहुँचाना आवश्यक

था। मनुष्यों का छुटकारा, उनके द्वारा सन्देश को सुने जाने पर निर्भर करता था। पूरे संसार में सुसमाचार प्रचार किस प्रकार से किया जा सकता है? इस संसार के चालाक अगुवे, एक बहुत बड़ी सेना तैयार करते हैं, भारी भरकम धन खर्च करते हैं, उदारता से भोजन करवाते हैं, लोगों का मनोरंजन करते हैं और अच्छा जनसम्पर्क कायम रखते हैं।

ग. धन्य वचन और हाय के वचन (6:20–26)

6:20 यीशु ने बारह **चेलों** को चुना और उन्हें गरीबों, भूखों, और सताए हुए लोगों के पास भेजा। क्या इस तरह से संसार भर में सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है? हाँ, और इसका कोई दूसरा तरीका नहीं है! उद्धारकर्ता चार धन्य वचन और चार हाय के वचन के साथ अपने सन्देश का आरम्भ करता है। **''धन्य हो तुम जो दीन हो''**. प्रभु ने यहां पर यह नहीं कहा कि धन्य हैं वे *जो दीन (गरीब)* हैं, परन्तु उसने कहा, धन्य हो *तुम जो* दीन (गरीब) हो। गरीबी अपने आप में कोई आशीष नहीं है; बल्कि प्राय: यह एक प्रकार का शाप है। यहाँ पर यीशु उस दीनता (गरीबी) की बात कर रहा है जो यीशु के कारण स्वेच्छा से अपनाई जाती है। वह ऐसे गरीब लोगों के बारे में नहीं कह रहा है जो आलस, त्रासदी, या किसी ऐसे कारण से गरीब हैं जो उनके नियंत्रण से बाहर है। बल्कि वह उन लोगों के बारे में बात कर रहा है जो अपनी इच्छा से गरीबी को स्वीकार करने के लिए तैयार हो गए ताकि वे अपने उद्धारकर्ता को दूसरों के साथ बांट सकें। और यदि हम इस विषय पर विचार करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यही एकमात्र समझदारीपूर्ण, और संगत तरीका है। मान लें कि चेले धनी बन कर सुसमाचार प्रचार करने के लिए जाते। तब लोग झुण्ड के झुण्ड मसीह के नाम से आ जाते और यह आशा करते कि वे भी धनी बन जाएंगे। चेलों ने उन्हें सोना या चाँदी देने का वचन नहीं दिया। चेलों को सिर्फ आत्मिक आशीषों की प्रतिज्ञा करनी है। साथ ही, यदि चेले धनी होते, तो वे प्रभु पर लगातार निर्भर रहने की आशीष और उसकी विश्वासयोग्यता के प्रमाण को पाने से वंचित हो जाते। परमेश्वर का राज्य ऐसे लोगों का है जो अपनी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति से ही सन्तुष्ट रहते हैं, और इससे अधिक जो कुछ भी उन्हें मिलता है उसे प्रभु के कार्य के लिए दे देते हैं।

6:21 **''धन्य हो तुम जो अब भूखे हो।''** यहाँ पर भी भूखे का अर्थ उन मनुष्यों से नहीं है जो कुपोषण का शिकार हैं। बल्कि यह ऐसे चेलों को कहा गया है जो अपनी इच्छा से त्याग का एक जीवन अपनाते हैं ताकि वे मानवीय आवश्यकताओं की कमी को पूरी करने में सहायता कर सकें। यह ऐसे लोगों को कहा गया है जो अपने पेटूपन में सब कुछ खर्च कर दूसरों को सुसमाचार से वंचित करने की बजाए सादा और सस्ता भोजन खा कर जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार के सारे त्याग के लिए भविष्य में प्रतिफल दिया जाएगा।

''धन्य हो तुम जो अब रोते हो।'' इसका अर्थ यह नहीं है कि रोना अपने आप में कोई आशीष की बात है; उद्धार न पाए हुए लोगों का रोना कहीं से भी लाभ से जुड़ा नहीं है। यहाँ पर यीशु उन आँसुओं के बारे में कह रहा है जो उसके कारण बहाए जाते हैं। खोए हुए लोगों के लिए बहाए गए आँसू, नाश हो रहे लोगों के लिए बहाए गए आँसू। कलीसिया में विभाजन पर आँसू, कलीसिया की निष्क्रियता पर आँसू। वे सारे दु:ख जो यीशु मसीह की सेवा के कारण आते हैं। जो आँसू बहाते हुए बीज बोते हैं वे हर्ष के साथ लवने पाएंगे।

6:22 **''धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जान कर काट देंगे।''** यह आशीष ऐसे लोगों के लिए नहीं हैं जो अपने स्वयं के पापों या मूर्खता के कारण दु:ख उठाते हैं। परन्तु यह ऐसे लोगों के लिए है जो इसलिए तिरिस्कृत, बहिष्कृत, निन्दित, कलंकित है क्योंकि वे *मसीह के प्रति निष्ठावान* हैं।

इन चार धन्य वचनों को समझने की कुंजी इस वाक्यांश में मिलती है: **''मनुष्य के पुत्र के कारण।''** जो बातें अपने आप में एक शाप हैं वे ही बातें हमारे लिए आशीषें बन जाती हैं जब हम अपनी इच्छा से उन्हें मसीह के लिए सहते हैं। परन्तु इन बातों में मसीह के प्रति प्रेम ही हमारा अभिप्राय हो; अन्यथा महान से महान त्याग भी निरर्थक हो जाएंगे।

6:23 मसीह के लिए सताव सहना महा आनन्द का कारण है। पहली बात, कि यह **स्वर्ग से बड़ा प्रतिफल** लेकर आता है। दूसरी बात, यह सतावभोगी को इतिहास

के विश्वासयोग्य मसीही गवाहों के साथ जोड़ देता है।

चारों धन्य वचनों में परमेश्वर के राज्य के आदर्श व्यक्ति का वर्णन किया गया है – ऐसा व्यक्ति जो त्याग का, सादगी का, सन्तुलन का, और धीरज से सहते रहने का जीवन व्यतीत करता है।

6:24 परन्तु, दूसरी ओर, हाय के चार वचनों में ऐसे लोगों के विषय में कहा गया है जो मसीह के नए (उस समय के लिए नए) समाज में सबसे कम प्रतिष्ठित हैं। त्रासदी की बात यह है कि ये वे ही लोग हैं जिन्हें संसार ने महान व्यक्तियों में गिना है! **हाय तुम पर, जो धनी हो**। जिस संसार में प्रतिदिन हजारों लोग भूख से मर रहे हैं और जहाँ हर दूसरा व्यक्ति प्रभु यीशु पर विश्वास लाने के द्वारा उद्धार पाने का सुसमाचार सुनने से वंचित है उस संसार में धन जमा करना नैतिकता के दृष्टिकोण से एक गम्भीर समस्या है। प्रभु यीशु के इन वचनों पर मसीहियों को ध्यान देना चाहिए जो संसार में धन एकत्रित करने के प्रयास में लगे रहते हैं, जो वर्षा के दिन के लिए बटोरते और जमाखोरी करते हैं। ऐसा करने का अर्थ है गलत संसार के लिए जीना। प्रसंगवश, धनी लोगों पर यह **हाय** बिल्कुल उपयुक्त बैठता है क्योंकि जब यीशु ने कहा, ''धन्य हो तुम, जो दीन हो'' (पद 20) तो उसके कहने का आशय ''मन के दीन'' से नहीं था। अन्यथा, पद 24 का अर्थ होता है, ''हाय तुम पर जो मन में धनी हो (आत्मा में धनी)'' और इस प्रकार के अर्थ का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जिनके पास धन है और जो इसका उपयोग दूसरों की अनन्त भलाई के लिए नहीं करते वे अपना प्रतिफल **पा चुके**, और उनका प्रतिफल यहीं तक सीमित है – अपनी वर्तमान अभिलाषाओं की स्वार्थपूर्ण तृप्ति।

6:25 ''हाय तुम पर जो अब तृप्त हो।'' ये ऐसे विश्वासियों के लिए कहा गया है जो महंगे रेस्टोरेन्ट्स में खाते हैं, वे जो हमेशा अति स्वादिष्ठ भोज्य-पदार्थों की लालसा करते हैं, और किराना सामानों पर खर्च करने में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं करते। उनका मूल-मन्त्र है, ''परमेश्वर के लोगों के लिए सर्वोत्तम कुछ भी नहीं है!'' प्रभु कहता है कि वे आने वाले उस दिन **भूखे** रहेंगे, जिस दिन विश्वासयोग्य और त्याग का जीवन व्यतीत करने वाले प्रभु के अनुयायियों को प्रतिफल दिया जाएगा तब वे छूछे रह जाएंगे।

''हाय तुम पर जो अब हंसते हो'' इस हाय का निशाना ऐसे लोग हैं जिनके जीवन में मनोरंजन, भोगविलास और खेल तमाशा ही सब कुछ है। वे ऐसे रहते हैं मानों जीवन मजा लेने और आमोद-प्रमोद करने के लिए ही है तथा वे ऐसे व्यक्ति तक सुसमाचार पहुँचाने के प्रति निश्चिन्त रहते हैं जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह को अब तक नहीं जाना है। जो **अब हँसते हैं** वे **शोक** करेंगे और रोएंगे जब वे पीछे मुड़ कर यह देखेंगे कि उन्होंने किस तरह से सुसमाचार सुनाने के लिए उन्हें मिले अवसरों को व्यर्थ जाने दिया, अपने स्वार्थपूर्ण लालसाओं को पूरा करने में लगे रहे, और आत्मिक रीति से कंगाल बने रहे।

6:26 ''हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें।'' प्रभु यीशु ने ऐसा क्यों कहा? क्योंकि यह इस बात का निश्चित चिन्ह है कि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य हो कर जीवन नहीं जी रहे हैं या विश्वासयोग्यता के साथ सुसमाचार के सन्देश को नहीं बाँट रहे हैं। सुसमाचार का स्वभाव ही ऐसा है कि यह अभक्त व्यक्ति को आहत करता है या उसके लिए ठोकर का कारण बनता है। जिन्हें संसार की ओर से शाबाशी मिलती है वे पुराना नियम समय के उन **झूठे भविष्यद्वक्ताओं** के संगी हैं जो लोगों के कानों को खुजलाते थे, अर्थात्, वे सिर्फ वही बात लोगों से कहते थे जिसे लोग सुनना चाहते थे। वे परमेश्वर की स्तुति की बातों के बजाए लोगों का समर्थन हासिल करने में अधिक रूचि रखते थे।

ह. मनुष्य के पुत्र का गुप्त हथियारः प्रेम (6:27-38)

6:27-29अ अब प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों के सामने परमेश्वर के शस्त्रागार के एक गुप्त हथियार को प्रगट करता है – यह **प्रेम** का हथियार है। यह संसार में सुसमाचार सुनाने के लिए सबसे प्रभावशाली हथियार है। किन्तु, जब प्रभु **प्रेम** के विषय में कहता है, तो वह प्रेम के नाम से जाने जानी वाली उस मानवीय भावना की बात नहीं कर रहा है। यह प्रेम एक *अलौकिक* प्रेम है। सिर्फ वे ही लोग जिन्होंने नया जन्म पाया है इस प्रेम को जान सकते हैं और इस प्रेम को प्रगट कर सकते हैं। जिस व्यक्ति के भीतर पवित्र आत्मा का निवास नहीं है उसके लिए इस प्रेम को जान पाना असम्भव है। एक हत्यारा भी अपने

बच्चों से प्रेम कर सकता है, परन्तु यह वह प्रेम नहीं है जिसके बारे में प्रभु यीशु बता रहा है। हत्यारा जिस तरह का प्रेम कर सकता है वह एक मानवीय अनुराग है; प्रभु यीशु जिस तरह के प्रेम के बारे में बता रहा है वह ईश्वरीय प्रेम है; इस प्रेम के लिए ईश्वरीय जीवन आवश्यक है। मानवीय प्रेम अधिकाशंत: भावनाओं तक सीमित रहता है, ईश्वरीय प्रेम इच्छा से सम्बन्धित है। कोई भी व्यक्ति अपने मित्र से प्रेम कर सकता है, परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम रखने के लिए ईश्वरीय सामर्थ की आवश्यकता पड़ती है। नया नियम में इसी प्रेम *(अगापे)* पर बल दिया गया है। *अगापे* का अर्थ है: **जो तुमसे बैर करें, उनका भला करो, जो तुम्हें शाप दें, उन को आशीष दो, जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिए प्रार्थना करो,** और, हमेशा और हर समय, **एक गाल पर थप्पड़** मारे जाने पर **दूसरा भी फेर** दो।

एफ. बी. मेयर इस बात को इस तरह से समझाते हैं:

> अपने सबसे गहरे अर्थों में प्रेम मसीहत की सबसे अनिवार्य योग्यता है। शत्रुओं के प्रति भी वैसी ही भावना रखना जैसा कि हम अपने मित्रों के प्रति रखते हैं; भले और बुरे दोनों पर एक समान वर्षा और सूर्य की किरण पहुँचाना; अनाकर्षक और घृणित लोगों की भी उसी प्रकार से सेवा करना जिस प्रकार से हम आकर्षक और मनोहर लोगों की करते हैं; हर समय एक सा रहना, तुनकमिजाजी, सनकी, या मनमौजी न होना; लम्बे समय तक धीरज धरे रहना; बुराई का पलटा न लेना; सच्चाई का आनन्द उठाना; सारी बातों में सहनशीलता, विश्वास, आशा, और धीरज बनाए रखना – यही प्रेम है, और इस प्रकार का प्रेम पवित्र आत्मा की उपलब्धि होती है। हम इसे अपने आप नहीं प्राप्त कर सकते।[13]

इस प्रकार के प्रेम को कोई परास्त नहीं कर सकता। संसार सामान्यत: ऐसे व्यक्ति पर जय प्राप्त कर ही लेता है जो पलट कर लड़ता है। संसार वर्चस्व और बदले की लड़ाई जीतना जानता है। परन्तु यह नहीं जानता है कि ऐसे व्यक्ति से कैसे निपटा जाए जो हर एक बुराई का बदला भलाई से देता है। इस प्रकार के अलौकिक व्यवहार से संसार बुरी तरह असमंजस में पड़ जाता है और गड़बड़ा कर कमजोर पड़ जाता है।

6:29ब–31 जब कोई ऊपरी वस्त्र छीन ले तो प्रेम उसे अपने भीतर के कपड़े भी दे देने का प्रस्ताव रखता है। प्रेम किसी व्यक्ति की वास्तविक आवश्यकता के समय कभी मुँह नहीं मोड़ता। जब कोई अन्याय करके सम्पत्ति छीन ले तो यह इसे वापस करने के लिए नहीं कहता। इस प्रेम का स्वर्णिम नियम यह है कि यह दूसरों के साथ उसी प्रकार की भलाई करता है और दूसरों का वैसा ही ध्यान रखता है जैसा कि यह अपने साथ किए जाने की आशा करता है।

6:32–34 उद्धार न पाए हुए लोग **अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम** रखते हैं। यह एक सामान्य आचरण है, और यह इतना सामान्य है कि यह उद्धार न पाए हुए लोगों के संसार में किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाता। बैंकों और लोन देने वाली कम्पनियों के द्वारा इस अपेक्षा के साथ *कर्ज* दिया जाता है कि वे अपने देनदारों से ब्याज कमाएंगे। इस प्रकार के आचरण के लिए ईश्वरीय प्रेम की आवश्यकता नहीं होती।

6:35 इसलिए प्रभु यीशु ने इस बात को दोहराया है कि हमें अपने **शत्रुओं से प्रेम** करना है, उनके साथ **भलाई** करनी है, और **फिर पाने की आस न रखकर उधार** देना है। इस प्रकार का आचरण मसीही विशिष्ठता है और यह ऐसे लोगों के जीवन का चिन्ह है जो **परम प्रधान के सन्तान** हैं। यह सच है, कि इन सारे कार्यों को करने के द्वारा कोई परमेश्वर की सन्तान नहीं बन जाता, यह सिर्फ प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करने के द्वारा ही हो सकता है (यूहन्ना 1:12)। परन्तु यही वह तरीका जिसके द्वारा सच्चे विश्वासी संसार के सामने अपने आप को परमेश्वर के पुत्र के रूप में *प्रगट* करते हैं। परमेश्वर ने हमारे साथ जिस तरीके से व्यवहार किया उसका वर्णन 27 से 35 पदों में पाया जाता है। **वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है**। जब हम इस प्रकार से व्यवहार करते हैं, तो हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य के समान व्यवहार प्रगट करते हैं। हम यह दर्शाते हैं कि हम परमेश्वर से जन्में हैं।

6:36 दयावन्त का अर्थ है कि यदि हम बदला लेने में सक्षम हैं तौभी क्षमा कर दें। **पिता** ने हमें उस दण्ड को न देकर हम पर दया दिखाई है जो दण्ड हमें मिलना था। वह चाहता है कि हम भी ऐसी ही दया दूसरों पर भी दिखाएं।

6:37 दो ऐसी बातें हैं जिन्हें प्रेम नहीं करता – यह

दोष नहीं लगाता और यह **दोषी** नहीं ठहराता। यीशु ने कहा है, ''**दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा।**'' सबसे पहली बात, हमें लोगों के अभिप्रायों पर दोष नहीं लगाना चाहिए। हम लोगों के हृदय को नहीं पढ़ सकते और हम यह नहीं जान सकते कि एक व्यक्ति जो कुछ कर रहा है उसे वह क्यों कर रहा है। साथ ही हमें दूसरे मसीहियों के भण्डारीपन या सेवा पर दोष नहीं लगाना चाहिए (1 कुरि. 4:1–5); परमेश्वर सारे मामलों का न्यायी है। सामान्य भाषा में, हमें कटु आलोचक नहीं बनना है। अलोचना करने वाली और दूसरों में गलती ढूंढ़ते रहने वाली भावना प्रेम के नियम का उल्लंघन कर देती है।

किन्तु, कुछ ऐसी बातें हैं जहाँ मसीहियों को सावधानीपूर्वक बातों को परखना चाहिए। हमें इस बात को परखना चाहिए कि दूसरे लोग सचमुच में मसीही हैं; अन्यथा हम कभी भी असमान जुए की पहचान नहीं कर पाएंगे (2 कुरि. 6:14)। परिवार और कलीसिया में पाप होने पर जाँच करना आवश्यक है। संक्षेप में, हमें भले और बुरे के बीच में अन्तर करना आवश्यक है, परन्तु हमें दूसरे के अभिप्रायों का विरोध नहीं करना है और न ही किसी का चरित्र हनन करना है।

''**क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी।**'' इसका अर्थ है कि क्षमा प्राप्त करना हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। परन्तु पवित्रशास्त्र के दूसरे स्थलों से यह प्रतीत होता है कि जब हम विश्वास से मसीह को ग्रहण करते हैं तो हम सेंतमेंत और बिना किसी शर्त के क्षमा कर दिए जाते हैं। हम इस विरोधाभास को किस तरह से दूर कर सकते हैं? इसका स्पष्टीकरण यह है कि हम दो प्रकार की क्षमा के बारे मे बात कर रहे हैं – *न्यायिक* और*पालकीय*। न्यायिक क्षमा वह क्षमा है जो क्षमा परमेश्वर एक न्यायधीश के रूप में प्रभु यीशु पर विश्वास लाने वाले हर एक विश्वासी को देता है। इसका अर्थ यह है कि पाप का दण्ड मसीह के द्वारा चुका दिया गया है और विश्वास करने वाले पापी को यह दण्ड उठाना नहीं पड़ेगा। यह क्षमा नि:शर्त है।

पालकीय क्षमा वह क्षमा है जिसे परमेश्वर एक पिता के रूप में गलती करने वाले अपने बच्चे को देता है जब उसका वह बच्चा अपने पाप का अंगीकार कर उसे छोड़ देता है। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर के परिवार में फिर से उसकी संगति का पुनर्स्थापन हो जाता है, और इसका कोई संबंध पाप के दण्ड से नहीं होता है। एक पिता के रूप में, परमेश्वर हमें क्षमा नहीं कर सकता यदि हम दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं है। परमेश्वर ऐसा नहीं करेगा और ऐसा करने वालों के साथ संगति भी नहीं करेगा। ''**तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी**'' कहते हुए यीशु पालकीय क्षमा के विषय में कह रहा है।

6:38 प्रेम, देने के द्वारा स्वयं को प्रगट करता है (यूहन्ना 3:16; इफि. 5:25)। मसीही सेवकाई खर्च करने की सेवकाई है। जो लोग उदारता से **दिया** करते हैं उन्हें भी उदारता से प्रतिफल दिया जाएगा। यहाँ पर एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया गया है जिसके वस्त्र के सामने वाले हिस्से में एप्रन के समान एक बड़ा तह है, जिसका उपयोग वह बीज़ रख कर ले जाने के लिए करता है। वह जितने बड़े क्षेत्र में बीज को बिखराता है उतनी ही अधिक कटनी भी पाता है। उसे **पूरा नाप दबा दबा कर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ** दिया जाएगा। यह उसकी **गोद** में अर्थात् उसके वस्त्र की तह में दिया जाएगा। जीवन का यह अटल नियम है कि हम जो बोते हैं वही काटते हैं, हमारा कार्य हम पर ही पलट कर आता है, जिस **नाप** से हम नापते हैं **उसी** नाप से हमारे लिए **नापा जाएगा**। यदि हम (प्रभु के लिये) अपनी भौतिक वस्तुओं की बोनी बोते हैं तो हम आत्मिक धन की अपार कटनी काटते हैं। यह भी सत्य है कि जो अपने लिए रख लेते हैं उसे हम खो देते हैं, और जिसे हम दे देते हैं वह हमारे पास रहता है।

ई. अन्धे पाखण्डी का दृष्टान्त (6:39–45)

6:39 पिछले खण्ड में प्रभु यीशु ने यह शिक्षा दी कि उसके अनुयायियों को *देने* की सेवा करनी है। अब वह सचेत करता है कि दूसरों के लिए आशीष का कारण बनना उनकी स्वयं की आत्मिक अवस्था तक ही सीमित है। **अन्धा** व्यक्ति दूसरे **अन्धे** को **मार्ग** नहीं दिखा सकता; ऐसा करने पर **दोनों** ही **गड़हे** में **गिरेंगे**। जो हमारे पास नहीं है वह हम दूसरों को नहीं दे सकते। यदि हम परमेश्वर के किसी वचन के प्रति अन्धे हैं तो उस क्षेत्र में दूसरों की सहायता नहीं कर पाएंगे। यदि हमारे आत्मिक जीवन में

कुछ अन्धापन है तो निश्चय ही हमारे आधीन रह कर सीखने वालों के आत्मिक जीवन में अन्धापन होगा।

6:40 **''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।''** एक व्यक्ति किसी ऐसे विषय पर शिक्षा नहीं दे सकता जिसे वह स्वयं नहीं जानता। वह जिस स्तर तक पहुँच पाया है अपने छात्रों को उससे ऊपर नहीं ले जा सकता। वह उन्हें जितना सिखाता जाता है, वे उतना ही उसके समान बनते जाते हैं। परन्तु जिस स्तर तक वह स्वयं बढ़ पाया है वही स्तर उसके छात्रों के लिए सबसे उच्चतम स्तर बन कर रह जाता है। एक सीखने वाला एक चेले के रूप में तब **सिद्ध** हो जाता है जब वह अपने गुरू के समान बन जाता है। गुरू के सिद्धान्तों या जीवन में पाई जाने वाली कमियां उसके छात्रों के जीवन में भी आ जाती हैं, और जब शिक्षा पूर्ण हो जाती है तो चेले अपने गुरू से ऊपर होने की आशा नहीं कर सकता।

6:41–42 यह महत्वपूर्ण सत्य **तिनका** और **लट्ठा** के उदाहरण के माध्यम से और अधिक प्रभावशाली ढंग से सामने लाया गया है। एक दिन एक व्यक्ति खलिहान से होकर के जा रहा था जहाँ अन्न को फटका जा रहा था। अचानक हवा चली और एक **तिनका** उड़ कर उसकी आँख में चला गया। वह इस तिनके को निकालने के लिए अपनी आँखों को मलने लगता है। परन्तु वह अपनी आँखों को जितना अधिक मलता है उतना ही अधिक यह उसके लिए तकलीफदेह होते जाता है। उसी समय एक अन्य व्यक्ति वहाँ आता है, पहले व्यक्ति की तकलीफ को देखता है, और उसकी सहायता करना चाहता है। परन्तु इस व्यक्ति की **अपनी ही आँख** में एक **लट्ठा** घुसा हुआ है! इसलिए वह पहले व्यक्ति की सहायता कर ही नहीं सकता क्योंकि वह यह देख ही नहीं पाएगा कि वह क्या कर रहा है। यहाँ पर हमें यह स्पष्ट शिक्षा मिलती है कि एक गुरू अपने चेलों के जीवन के दोषों को सामने नहीं ला सकता यदि वही दोष बहुतायत से उसके जीवन में पाए जाते हैं, और तौभी वह अपने दोषों को देख नहीं पाता। यदि हम दूसरों की सहायता करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि हमारा जीवन अनुकरणीय हो। अन्यथा वे हमसे यह कहेंगे, ''हे वैद्य अपने आप को चंगा कर।''

6:43–45 प्रभु जिस चौथे उदाहरण का उपयोग करता है वह एक **पेड़** और **फल** का है। एक पेड़ में फल लगते हैं, **अच्छा** और **निकम्मा** फल, यह निर्भर करता है कि पेड़ कैसा है। हम हर एक पेड़ को इस आधार पर परखते हैं कि उसमें लगने वाले फल का प्रकार और गुण कैसा है। ऐसा ही शिष्यता के क्षेत्र में भी होता है। एक व्यक्ति जो नैतिक रूप से पवित्र और आत्मिक रूप से स्वस्थ है वह अपने **मन के भले भण्डार से** दूसरों पर आशीष बाहर ला सकता है। दूसरी ओर, जिस व्यक्ति का मन ही अशुद्ध है वह बाहर **बुरी बातें निकालता है**।

इस प्रकार से 39–45 पदों में, प्रभु चेलों को यह शिक्षा दे रहा है कि उनकी सेवकाई अच्छे चरित्र की सेवकाई हो। वे क्या करेंगे या क्या कहेंगे इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वे क्या हैं। उनकी सेवकाई का अन्तिम परिणाम इस बात से निर्धारित किया जाएगा कि वे अपने आप में क्या हैं।

ज. प्रभु आज्ञाकारिता की मांग करता है (6:46–49)

6:46 **''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?''** *'प्रभु* शब्द का अर्थ है, *स्वामी;* इसका अर्थ है कि हमारे जीवनों पर उसका सम्पूर्ण अधिकार है, हम उसके हैं, और जो कुछ वह कहता है उसे करने के लिए हम बाध्य हैं। उसे **प्रभु** कहना और उसकी आज्ञा का पालन नहीं करना अटपटा और अन्तर्विरोधी है। उसे मुँह से प्रभु कह देना ही पर्याप्त नहीं है। सच्चे प्रेम और विश्वास में आज्ञाकारिता भी शामिल होती है। यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम वास्तव में उससे प्रेम नहीं करते और वास्तव में उस पर विश्वास नहीं करते।

तुम मुझे ''मार्ग'' कहते हो, पर मुझ पर चलते नहीं,
तुम मुझे ''जीवन'' कहते हो, पर मुझ में जीते नहीं,
तुम मुझे ''स्वामी'' कहते हो, पर मेरी मानते नहीं,
यदि मैं तुम्हें दण्ड दूं, तो मुझे दोष न देना।
तुम मुझे रोटी कहते हो, पर मुझे खाते नहीं,
तुम मुझे ''सत्य'' कहते हो, पर मुझ पर विश्वास करते नहीं,
तुम मुझे ''प्रभु'' कहते हो, पर मेरी सेवा करते नहीं।
यदि मैं तुम्हें दोष दूं, तो मुझे दोष न देना।

– जैफ्री ओ' हारा

6:47-49 इस महत्वपूर्ण सत्य पर और अधिक जोर देने के लिये, प्रभु यहाँ पर घर बनाने वाले दो व्यक्तियों की एक कहानी बताता है। सामान्यत: हम इस कहानी को सुसमाचार के सन्देश से जोड़ कर देखते हैं; हम कहते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो विश्वास करता है और उद्धार पाता है; मूर्ख व्यक्ति एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो मसीह को ठुकरा देता है और नाश हो जाता है। अवश्य ही, इसे इस प्रकार से लागू करना गलत नहीं है। परन्तु यदि हम इस कहानी की व्याख्या इसके सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए करेंगे, तो हम इसमें एक गहरे अर्थ को पाएंगे।

बुद्धिमान व्यक्ति उसे कहा गया है जो मसीह (उद्धार) के पास **आता है**, जो उसकी **बातें** (आज्ञाएं) **सुनकर** उन्हें **मानता है** (आज्ञाकारिता)। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने जीवन का निर्माण मसीही शिष्यता के उन सिद्धान्तों के अनुसार करता है जो सिद्धान्त इस अध्याय में पाए जाते हैं। जीवन का निर्माण करने का सही मार्ग यही है। जब घर पर बाढ़ का दबाव पड़ा और लहरों ने टक्करें मारीं, तब यह स्थिर खड़ा रहा क्योंकि **चट्टान पर** इसकी **नेव डाली** गई थी, यह नेव मसीह और उसकी शिक्षाएं हैं।[17]

मूर्ख व्यक्ति वह है जो सुनता है (आज्ञाएं) परन्तु शिक्षाओं पर चलता नहीं (अनाज्ञाकारिता)। वह अपने जीवन का निर्माण ऐसी बातों के अनुसार करता है जो बातें उसके विचार में सर्वोत्तम हैं, वह अपने जीवन का निर्माण इस संसार के शारीरिक सिद्धान्तों के अनुसार करता है। जब उसके जीवन में आंधियां आती हैं, तो उसका **घर** जो **बिना नेव** का है, बह जाता है। उसकी आत्मा तो बच जाती है परन्तु उसका जीवन नाश हो जाता है।

बुद्धिमान व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जो निर्धन हो, जो भूखा हो, जो विलाप करता हो, और जो सताया जाता हो – और यह सब कुछ वह मनुष्य के पुत्र के कारण से सहता हो। संसार इस प्रकार के व्यक्ति को शायद मूर्ख कहे। परन्तु यीशु उसे बुद्धिमान कहता है।

मूर्ख व्यक्ति वह होता है जो धनी हो, जो स्वादिष्ट और महंगे भोजन करता हो, जो जीवन के सारे सांसारिक आनन्द उठाता हो, और जो सब लोगों के बीच में लोकप्रिय हो। संसार ऐसे व्यक्ति को शायद बुद्धिमान कहे। परन्तु यीशु उसे मूर्ख कहता है।

VI. मनुष्य का पुत्र अपनी सेवकाई का विस्तार करता है (7:1-9:50)

अ. सूबेदार के दास की चंगाई (7:1-10)

7:1-3 अपने उपदेश के अन्त में यीशु भीड़ को छोड़कर **कफरनहूम में आया**। वहाँ पर **यहूदियों के . . . पुरनिये** उसके पास एक विनती लेकर आए, वे एक अन्यजाति **सूबेदार** के **एक दास** के लिए यीशु से सहायता मांगने आए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूबेदार यहूदी लोगों के प्रति विशेष रूप से भला था, यहाँ तक कि उसने उनके लिए एक आराधनालय भी बनवाया था। नया नियम के अन्य सभी सूबेदारों के समान, उसकी भी एक अच्छी छवि प्रस्तुत की गई है (लूका 23:47; प्रेरित 10:1-48)।

बल्कि यह काफी असामान्य बात है कि एक स्वामी अपने एक दास के प्रति इतनी भलाई का भाव रखता हो जैसा कि यह सूबेदार रखता था। जब **दास** बीमार हो गया, तो सूबेदार ने **यहूदियों के . . .**पुरनियों से विनती कि वे यीशु से उसे चंगा करने के लिए याचना करें। जहाँ तक हम जानते हैं यही एकमात्र रोमी अधिकारी था जिसने एक **दास** के लिए यीशु से आशीष मांगी।

7:4-7 लोगों के पुरनियों के सामने एक अटपटी स्थिति निर्मित हो गई थी। वे यीशु पर विश्वास नहीं करते थे, तौभी सूबेदार के साथ उनकी मित्रता के कारण वे आवश्यकता के समय यीशु के पास जाने के लिए बाध्य हो गए। उन्होंने सूबेदार के सम्बन्ध में कहा, "**वह इस योग्य है।**" परन्तु जब सूबेदार यीशु से मिला तो सूबेदार ने कहा, "**मैं इस योग्य नहीं,**" इसका अर्थ है, "मैं इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं हूँ।"

मत्ती अपने सुसमाचार में बताता है कि सूबेदार सीधे यीशु के पास गया। लूका अपने सुसमाचार में बता रहा है कि उसने पुरनियों को यीशु के पास भेजा। दोनों का ही वर्णन सही है। पहले उसने पुरनियों को भेजा, और उसके बाद वह स्वयं यीशु के पास गया।

सूबेदार की दीनता और उसका विश्वास ध्यान देने योग्य है। उसने अपने आप को इस **योग्य नहीं** समझा कि यीशु उसके घर में **आए**। न ही उसने अपने आप को इस **योग्य** समझा कि यीशु व्यक्तिगत रूप से स्वयं वहाँ

जाए। परन्तु उसमें इतना विश्वास था कि यीशु उस स्थान पर सशरीर उपस्थित हुए बिना ही चंगाई दे सकता है। उसके मुँह से कहा गया एक **वचन** ही बीमारी को दूर भगाने की क्षमता रखता था।

7:8 सूबेदार ने आगे कहा कि वह **पराधीनता** (अधिकार) और जिम्मेदारी के बारे में सब कुछ जानता है। इस क्षेत्र में उसके पास काफी अनुभव है। वह स्वयं रोमी सरकार के आधीन है और रोमी सरकार के आदेश का पालन करना उसकी जिम्मेदारी है। वह समझ गया था कि यीशु को भी बीमारियों पर वैसा ही अधिकार है जिस प्रकार का अधिकार रोमी सरकार को सूबेदार पर है, और सूबेदार को अपने अधीनस्थों पर है।

7:9, 10 इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि **यीशु ने** इस गैरयहूदी के विश्वास पर **अचम्भा किया। इस्राएल में** से किसी ने भी यीशु के परम अधिकार के विषय में इतना बेबाक अंगीकार कभी नहीं किया था। **ऐसा विश्वास** प्रतिफल क्यों नहीं पाएगा। जब वे सूबेदार के घर में वापस पहुँचे तो उन्होंने पाया कि **दास** पूरी तरह से **चंगा** हो गया था।

सुसमाचारों में दो अवसरों पर कहा गया है कि यीशु ने **अचम्भा** किया, उनमें से एक अवसर यही था। उसने गैरयहूदी सूबेदार के विश्वास पर अचम्भा किया और उसने इस्राएल के अविश्वास पर अचम्भा किया था (मरकुस 6:6)।

ब. विधवा के बेटे को जीवित करना (7:11–17)

7:11–15 **नाईन** कफरनहूम का एक छोटा सा नगर था। जब यीशु नगर के फाटक के पास पहुँचा, तो उसने एक शवयात्रा **नगर** से बाहर निकलते हुए देखा। वह **विधवा** का **एकलौता** बेटा था। प्रभु को शोकित माता पर **तरस** आया। उसने अर्थी को छुआ – इसलिए ताकि शवयात्रा रूक जाए – यीशु ने **जवान** को **उठ** जाने की आज्ञा दी। तुरन्त ही मृतदेह में प्राण लौट आया, और वह लड़का **उठ बैठा**। इस प्रकार से जिसे मृत्यु और बीमारी पर अधिकार है उसने **माँ** को उसका बेटा लौटा दिया।

7:16, 17 लोगों में **भय** छा गया। उन्होंने एक महान आश्चर्यकर्म देखा था। मृतक को जिला कर जीवन दे दिया गया था। लोगों का मानना था कि यीशु **एक बड़ा भविष्यद्वक्ता** है जिसे परमेश्वर ने भेजा है। परन्तु जब उन्होंने यह कहा कि "**परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है,**" तब शायद वे यह समझ नहीं पाए कि यीशु ही परमेश्वर है। बल्कि उन्हें ऐसा लगा कि यह आश्चर्यकर्म इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर उनके बीच में अव्यक्तिक रीति से कार्य कर रहा है। इस आश्चर्यकर्म की **बात . . . आसपास के सारे देश** में फैल गई।

लूका वैद्य ने अपने वर्णन में यीशु द्वारा तीन लोगों को ज्यों का त्यों किए जाने के विषय में उल्लेख किया है, तीनों बच्चे थे: "विधवा का बेटा; याईर की बेटी (8:42); और दुष्टात्माग्रसित बालक (9:8)।"

स. मनुष्य का पुत्र अपने अग्रदूत (मार्ग तैयार करने वाले) को आश्वस्त करता है (7:18–23)

7:18–20 यीशु द्वारा किए जा रहे आश्चर्यकर्मों की खबर **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाला तक पहुँची जो मृतक सागर के पूर्वी छोर पर स्थित मखरुस के गढ़ में कैद था। यदि यीशु सचमुच में मसीह था, तो वह अपनी सामर्थ का प्रयोग करते हुए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला को हेरोदस के कैद से छुड़ा क्यों नहीं रहा था? इसलिए यूहन्ना ने अपने **चेलों में से दो** को यीशु के पास यह पूछने के लिए भेजा कि क्या सचमुच में वह मसीह है, या मसीह अब तक नहीं आया है। हमें यह बात विचित्र लग सकती है कि यूहन्ना यीशु के मसीह होने पर कैसे सन्देह कर सकता है। परन्तु हमें यह बात स्मरण रखना आवश्यक है कि परमेश्वर के बड़े से बड़े जन का विश्वास भी कभी कभी कुछ समय के लिए डोल जाता है। साथ ही, शारीरिक संकट के कारण गम्भीर मानसिक अवसाद उत्पन्न हो सकता है।

7:21–23 यीशु ने यूहन्ना को यह स्मरण दिलाते हुए उत्तर दिया कि वह उन आश्चर्यकर्मों को कर रहा है जिन आश्चर्यकर्मों के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी कि ये आश्चर्यकर्म मसीह के द्वारा किए जाएंगे (यशा. 35:5, 6; 61:1)। उसके बाद उसने आगे यह जोड़ा, "**धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए।**" इसे एक फटकार के रूप में भी समझा जा

सकता है; रोमी शासन से सत्ता छीनने और अपने आप को लोगों की अपेक्षा के अनुरुप प्रगट करने में यीशु की असफलता से यूहन्ना ने ठोकर खाई थी। परन्तु इसे यूहन्ना के लिए कहे गए उत्साहवर्धन के शब्द भी कहा जा सकता है ताकि वह अपना विश्वास न त्याग दे।

सी. जी. मोरे कहते हैं:

> विश्वास की सबसे बड़ी परख तब होती है जब यीशु अपनी सामर्थ के ढेर सारे प्रमाण देता है और उसके बाद भी उसका *उपयोग नहीं करता* . . . जिस समय सन्देशवाहक वापस आकर यह बताता है: ''हाँ, उसके पास सारी सामर्थ है, और वह सब कुछ है जो तुमने सोचा था; परन्तु उसने तुम्हें कैद से छुड़ाने के सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कहा . . .'' कोई स्पष्टीकरण नहीं; बन्दीगृह के दरवाजे बन्द रहे; और उसके बाद यह सन्देश दिया गया: ''**धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए।**''[18]

ड. मनुष्य का पुत्र अपने अग्रदूत की तारीफ करता है (7:24–29)

7:24 यीशु ने निजी तौर पर यूहन्ना को जो कुछ भी कहा हो, सार्वजनिक रूप से उसने उसके लिए तारीफ के सिवाय और कुछ नहीं कहा। जब लोग यरदन के पास के जंगल में गए थे, तो वे क्या पाने की आशा से वहाँ गए थे? एक कमजोर से, रीढ़हीन, डगमगाते हुए अवसरवादी को? कोई भी व्यक्ति यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला को **हवा से हिलते हुए सरकण्डे** कह कर उस पर दोष नहीं लगा सकता है।

7:25 तो फिर क्या वे फिल्मी सितारे के तरह पहिनावे और रंग–ढंग वाले किसी फैशनपरस्त को देखने गए थे जो भोगविलास और आरामदायक जीवन जीता है? जी नहीं, इस प्रकार का व्यक्ति **राजभवनों** के आसपास मण्डराता रहता है, ताकि राजभवन के अपार सुखों को आनन्द उठाने का मौका पा सके और अपने लाभ और तृप्ति के लिए बहुत से लोगों के साथ सम्पर्क बना सके।

7:26 वे एक **भविष्यद्वक्ता** को **देखने गए** थे – एक साकार विवेक जो परमेश्वर का वचन बेधड़क होकर बोलता था चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े, बल्कि वह एक **भविष्यद्वक्ता** से भी बड़ा था।

7:27 वह स्वयं ही भविष्यद्वाणी का विषय था, और उसे राजा का परिचय करवाने का अद्वितीय सौभाग्य मिला था। यीशु ने मलाकी 3:1 से उद्धरित करते हुए यह दर्शाया कि यूहन्ना के आने की प्रतिज्ञा पुराना नियम में कर दी गई थी, परन्तु इस स्थल को उद्धरित करते हुए यीशु ने सर्वनामों में एक रोचक परिवर्तन किया। मलाकी 3:1 में लिखा है, ''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा।'' परन्तु यीशु ने इसे इस प्रकार से उद्धरित किया, ''**देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा।**'' सर्वनाम ''मेरे'' को बदल कर ''**तेरे**'' कर दिया गया।

गॉडेट ने इस परिवर्तन को इस तरह से समझाया है:

> भविष्यद्वक्ता के दृष्टिकोण से, भेजनेवाला व्यक्ति, और जिसके आगे मार्ग तैयार करने भेजा जा रहा है, दोनों एक ही और समान व्यक्ति थे, अर्थात्, यहोवा। इसलिए मलाकी में *''मेरे आगे''* लिखा हुआ है। परन्तु यीशु के लिए, जो अपने बारे में बोलते समय, पिता और अपने आप को अलग अलग व्यक्तित्व के रूप में लेता था, एक अन्तर करना आवश्यक था। इस बात को यहोवा अपने लिए नहीं कह रहा है, परन्तु यहोवा यीशु से इस बात को कह रहा है; इसलिए लूका ने *''तेरे आगे''* का उपयोग किया है। किस तथ्य के आधार पर, इस उद्धरण का अर्थ यह नहीं है कि, भविष्यद्वक्ता के दृष्टिकोण से, और साथ ही साथ मसीह के दृष्टिकोण से, मसीह का आगमन यहोवा का आगमन है?[19]

7:28 यीशु ने इस बात पर जोर देते हुए यूहन्ना की तारीफ करना जारी रखा कि **जो स्त्रियों से जन्में हैं** उनमें **यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं** है। यह उत्तमता उसके व्यक्तिगत चरित्र की ओर संकेत नहीं कर रही है, परन्तु मसीह के लिए मार्ग तैयार करने वाले की उसकी भूमिका की ओर संकेत कर रही है। और भी अनेक व्यक्ति हुए जो उत्साह, सम्मान, और समर्पण के दृष्टिकोण से यूहन्ना के समान महान थे। परन्तु उनमें से किसी भी अन्य को राजा के आगमन की घोषणा करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इस बात में यूहन्ना अद्वितीय है। तौभी, प्रभु आगे कहता है कि **परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा** भी **यूहन्ना** से बड़ा है। **परमेश्वर के राज्य** की आशीषों का भागीदार बनना राजा का अग्रदूत बनने से बड़ी बात है।

7:29 यीशु इस पद में यूहन्ना के प्रचार को मिले प्रत्युत्तर का स्मरण करवा रहा है। सामान्य **लोगों** और **चुंगी लेनेवालों** जैसे कुख्यात पापियों ने मन फिरा कर यरदन में बपतिस्मा लिया। यूहन्ना के सन्देश पर विश्वास लाने और उस पर अमल करने के द्वारा उन्होंने **परमेश्वर को सच्चा मान** लिया, अर्थात्, उन्होंने परमेश्वर की इस मांग को न्यायसंगत जाना कि मसीह द्वारा इस्राएल के लोगों पर राज्य करने से पहले उन्हें अपना मन फिराना है। परमेश्वर द्वारा तय किए गए नियमों और अर्हताओं के मामले में उसे सही जाना।

इ. मनुष्य का पुत्र अपनी ही पीढ़ी के लोगों की आलोचना करता है (7:30–35)

7:30–34 **फरीसियों** और व्यवस्था के शिक्षकों ने यूहन्ना के बपतिस्मा के आगे समर्पण करने से मना कर दिया, और इस प्रकार से उनके ही कल्याण के लिए परमेश्वर द्वारा बनाई गई योजना को ठुकरा दिया। वास्तव में, उस **युग** (यीशु के समय की पीढ़ी) के लोगों को खुश करना असम्भव था जिसके वे अगुवे थे। यीशु ने उस पीढ़ी के लोगों को उन **बालकों** के समान बताया जो **बाजार** में खेल रहे थे। वे न ही शादी–ब्याह का खेल खेलना चाहते थे और न दफन क्रिया का। वे बिगड़े हुए, अड़ियल, सनकी, और ढीठ थे। परमेश्वर चाहे उनके बीच में किसी भी प्रकार की सेवकाई करे, वे स्वयं को इससे दूर ही रखते थे। **यूहन्ना बपतिस्मा** देनेवाला ने उनके सामने सादगी, त्याग, और वैराग्य का उदाहरण रखा। यह उन्हें पसन्द नहीं आया और उन्होंने उसे दुष्टात्माग्रसित कह डाला। **मनुष्य का पुत्र . . . चुंगी लेने वालों** और **पापियों** के साथ खाता पीता था, अर्थात्, वह अपने आप को उन लोगों के साथ एक कर के देखता था जिन्हें वह आशीष देने आया था। तौभी फरीसी लोग अप्रसन्न थे, वे उसे **पेटू** और पियक्कड कहते थे। चाहे उपवास हो या जेवनार, दफन क्रिया हो या विवाह, यूहन्ना हो या यीशु – कोई भी और कुछ भी उन्हें प्रसन्न नहीं कर सकता था।

रायल सचेत करते हुए कहते हैं,

> हमें हर एक को खुश करने में लगे नहीं रहना चाहिए। ऐसा सम्भव नहीं है और इस प्रकार का प्रयास करना समय की बर्बादी है। हमें मसीह के कदमों में चल कर सन्तुष्ट रहना है, और संसार जो भी कहे उसे कहने देना है। हमें जैसा उचित लगे वैसा करें, हम संसार को कभी संतुष्ट नहीं कर सकते न ही उसकी उल्टी सीधी टीका टिप्पणियों को चुप करवा सकते हैं। इस प्रकार के लोगों ने पहले यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला में दोष निकाला और उसके बाद अपने धन्य स्वामी में। और वे आगे भी ऐसे ही उस स्वामी के शिष्यों की बाल की खाल और गलती निकालते रहेंगे जब तक पृथ्वी पर उनका अस्तित्व रहेगा।[20]

7:35 **''पर ज्ञान अपनी सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है।'' ज्ञान** यहाँ पर स्वयं उद्धारकर्ता को कहा गया है। उसका आदर करने वाले अल्पसंख्यक शिष्यों को ज्ञान की सन्तान कहा गया है। यद्यपि बहुसंख्यक लोगों ने उसे ठुकरा दिया, तौभी उसके सच्चे अनुयायी प्रेम, पवित्रता, और समर्पण का जीवन जीने के द्वारा उसके दावे को पुख्ता करेंगे।

फ.एक पापिनी स्त्री उद्धारकर्ता का अभिषेक करती है (7:36–39)

7:36 आगे दी गई घटना में, एक चित्रण प्रस्तुत किया गया है जिसमें ज्ञान की सन्तानों में से एक, पापिनी स्त्री, के द्वारा उसे सही ठहराया जा रहा है। जैसे कि डॉ. एच. सी. वुडरिंग ने बिल्कुल पते की बात कही है, ''जब परमेश्वर को ऐसे धार्मिक अगुवे नहीं मिलते जो मसीह की सराहना करें, तो वह यह कार्य वेश्याओं से करवाता है।'' शमौन ने जो एक फरीसी था यीशु से **विनती** की कि वह उसके घर में उसके **साथ भोजन** करे, शायद उसने ऐसा जिज्ञासावश या फिर विद्वेशवश किया।

7:37, 38 एक पापिनी **स्त्री** उसी समय उस कमरे में आई। हम नहीं जानते कि वह कौन थी; ऐसा माना जाता है कि वह मरियम मगदलीनी थी लेकिन पवित्रशास्त्र में इसका कोई प्रमाण नहीं है। यह स्त्री अपने साथ संगमरमर के एक पात्र में **इत्र** लेकर आई थी। जब यीशु भोजन करने के लिए मेज पर झुका हुआ था, और उसका सिर मेज के पास था, तो वह उसके **पाँवों के पास पीछे खड़ी** हो

गई। वह **उसके पाँवों को आँसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोछने लगी** और उसे **बार बार चूम कर** उस पर महंगा **इत्र** डाल दिया। इस प्रकार की आराधना और बलिदान से उसकी यह निश्चयता प्रगट होती है कि यीशु के लिए जो भी किया जाए वह कम ही होगा।

7:39 इस विषय पर शमौन का रवैया काफी अलग था। उसका मानना था कि फरीसियों के समान ही, भविष्यद्वक्ताओं को भी पापियों से अलग रहना चाहिए। उसका विचार था कि, यदि यीशु सचमुच में **भविष्यद्वक्ता** होता, तो वह एक **पापिनी** स्त्री को अपने प्रति ऐसा स्नेह दर्शाने नहीं दिया होता।

ग. दो देनदारों का दृष्टान्त (7:40–50)

7:40–43 यीशु ने उसके मन की बात जान ली, और शिष्टाचार दर्शाते हुए **शमौन** से **कुछ** कहने के लिए उससे अनुमति मांगी। उत्कृष्ट कौशल के साथ प्रभु ने उसे **महाजन** और दो **देनदारों** के बारे में एक कहानी बताई। **एक** देनदार लगभग 2000 रूपये **धारता** था, दूसरा लगभग 250 रूपये। **जब** दोनों देनदार कर्ज **पटाने** में पूरी तरह से असफल हो गए, तो महाजन ने उन दोनों के कर्ज माफ कर दिये। इस बिन्दु पर यीशु ने शमौन से पूछा कि **कौन** सा देनदार महाजन से **अधिक प्रेम** करेगा। फरीसी ने बिल्कुल सही उत्तर दिया, ''**मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।**''

7:44–47 जब से प्रभु इस **घर में आया** था, स्त्री ने उसके प्रति अत्याधिक स्नेह प्रगट किया था। इसके विपरीत, इस फरीसी ने यीशु का बहुत ही ठण्डा स्वागत किया था, यहाँ तक कि उसने औपचारिक शिष्टाचारों की ओर भी ध्यान नहीं दिया था, जैसे कि मेहमान के पाँव धोना, उसके गाल पर चुम्बन देना, और उसके सिर पर लगाने के लिए तेल देना। ऐसा क्यों हुआ? इसका कारण यह था कि स्त्री को यह बोध था कि उसे अधिक क्षमा दी गई है, जबकि शमौन को लगता था कि वह बहुत बड़ा पापी नहीं है। ''**पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।**''

यीशु ने यह नहीं कहा कि शमौन बहुत बड़ा पापी नहीं है। बल्कि उसने इस बात पर जोर दिया कि शमौन ने वास्तव में कभी भी अपने बड़े दोष का अंगीकार नहीं किया और क्षमा किया गया। यदि उसने ऐसा किया होता, तो वह भी प्रभु से वैसा ही गहरा प्रेम रखता जैसा कि वह पापिनी स्त्री रखती थी। हम सब बहुत बड़े पापी हैं। हम सब उस महान क्षमा का अनुभव कर सकते हैं। हम सब प्रभु से बहुतायत से प्रेम रख सकते हैं।

7:48 तब यीशु ने सार्वजनिक रूप से उस स्त्री को यह कहते हुए घोषणा की कि उसके **पाप क्षमा हुए**। उसे क्षमा देने का *कारण* यह नहीं था कि वह यीशु से प्रेम रखती थी, बल्कि उसे क्षमा दिये जाने के *परिणामस्वरूप* वह यीशु से प्रेम रखती थी। वह इसलिए अधिक प्रेम रखती थी क्योंकि उसे अधिक क्षमा किया गया था। यीशु ने इस अवसर का उपयोग करते हुए सार्वजनिक रूप से उस स्त्री के पाप क्षमा की घोषणा की।

7:49–50 दूसरे अतिथि मन ही मन यीशु द्वारा **पाप** क्षमा किए जाने के अधिकार पर प्रश्न उठाने लगे। एक सांसारिक हृदय अनुग्रह को पसन्द नहीं करता। परन्तु यीशु ने फिर से **स्त्री** को आश्वासन दिया कि उसके **विश्वास** ने उसे **बचा** लिया है और वह **कुशल से चली** जाए। यह एक ऐसा कार्य है जिसे मनोचिकित्सक नहीं कर सकते। वे ग्लानि की भावना को दूर करने के लिए पीड़ित का मन हल्का करने वाली बातें तो कह सकते हैं, परन्तु वे वह आनन्द और शान्ति कभी नहीं दे सकते जो यीशु उन्हें देता है।

हमारे प्रभु द्वारा इस फरीसी के साथ भोजन करने के इस उदाहरण का कुछ मसीही लोग दुरुपयोग करते हुए उद्धार न पाए हुए लोगों के साथ प्रेम सम्बन्ध रखने, गैर मसीही रीति से मनोरंजन करने, और उनके समान भोग–विलास में लिप्त होने के लिए आधार बताते हैं। रायल ने इस विषय पर सचेत करते हुए कहा है:

> जो इस प्रकार का तर्क देते हैं उन्हें इस अवसर पर प्रभु यीशु के आचरण को भी स्मरण रखने की आवश्यकता है। उसने शमौन की मेज पर बैठकर भी ''पिता का काम'' किया। उसने शमौन के चिराभ्यस्त पाप से उसे अवगत कराया। उसने संतमेंत मिलने वाली क्षमा के स्वभाव, और प्रभु के प्रति सच्चे प्रेम के रहस्य को समझाया। उसने विश्वास के बचाने वाले स्वभाव के विषय में बताया। यदि ऐसे मसीही जो उद्धार न पाए हुए व्यक्ति के साथ घनिष्ठता रखने का समर्थन करते हैं, तो वे ऐसे व्यक्तियों के घर में उसी भाव से जाएं जिस

भाव से यीशु गया था, और वैसे ही बातचीत और व्यवहार करें, जैसा यीशु ने किया था, तो वे अवश्य ही उन बातों को करते रहें जिनका वे समर्थन करते हैं। परन्तु क्या वे उद्धार न पाए हुए अपने अपरिचितों के मेज पर बैठ कर वैसे ही बातचीत और व्यवहार करते हैं जैसा कि यीशु ने शमौन की मेज पर बैठे हुए किया था? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उन्हें उत्तर देना होगा।[21]

ह. कुछ स्त्रियों ने यीशु की सेवा की (8:1-3)

अपने ध्यान में यह बात रखना अच्छा होगा कि सुसमाचार में हमारे प्रभु के जीवन और सेवकाई से जुड़ी कुछ घटनाओं को ही शामिल किया गया है। पवित्र आत्मा ने उन विषयों को चुना जिन्हें उसे पवित्रशास्त्र में शामिल करना अच्छा लगा, और अनेक विषयों को शामिल नहीं किया। यहाँ पर हमारे सामने एक साधारण कथन है कि यीशु अपने चेलों के साथ गलील के **नगर नगर और गाँव गाँव** जा जाकर सेवकाई करता था। जब वह **परमेश्वर के राज्य** के सुसमाचार का प्रचार करता था और राज्य की घोषणा करता था, तो भिन्न भिन्न स्थानों में वे **स्त्रियाँ** जिन्हें यीशु ने आशीष दी थी उसकी सेवा (ठहरने और भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करने के द्वारा) करती थीं। उदाहरण के लिए, **मरियम मगदलीनी**। कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि मगदला (मिग्दोल) नामक स्थान के कारण उसका ऐसा नाम पड़ा था। चाहे जो भी हो, प्रभु ने उसे अद्‌भुत रीति से **सात दुष्टात्माओं** से छुटकारा प्रदान किया था। वैसे ही **योअन्ना** नामक एक अन्य स्त्री थी, जिसका पति **हेरोदेस** का **भण्डारी खोजा** था। इसी तरह से **सुसन्नाह** और **बहुत सी** स्त्रियाँ यीशु की सेवा करने वालों में शामिल थीं। हमारे प्रभु के प्रति उनके द्वारा की गई भलाई को अनदेखा नहीं किया गया है और सुसमाचार में इस बात को स्थान दिया गया है। जब उन्होंने अपनी सम्पत्ति और धन को यीशु के साथ बांटा तो शायद ही उन्होंने यह सोचा होगा कि उनकी उदारता और पहुनाई के बारे में आने वाले सब समयों के लोग सुसमाचार में पढ़ेंगे।

प्रभु की सेवकाई का विषय था: **परमेश्वर** का **राज्य**। **परमेश्वर के राज्य** का अर्थ वह क्षेत्र है, जो चाहे दृश्यमान हो या अदृश्य, जहाँ परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार किया जाता है। मत्ती ने इसी को ''स्वर्ग का राज्य'' कहा है, परन्तु दोनों एक ही हैं; इसका सीधा सीधा अर्थ यह है कि ''परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है'' (दानि. 4:17)। दानिय्येल 4:26 भी देखें।

नया नियम में परमेश्वर के राज्य की धारणा विभिन्न चरणों में विकसित हुई है:

1. सबसे पहली बात, इस राज्य की घोषणा करते हुए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ने कहा था कि यह निकट है (मत्ती 3:1, 2)।

2. उसके बाद हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य राजा के व्यक्तित्व में वास्तव में उपस्थित था (''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है,'' लूका 17:21) यह उसी राज्य का सुसमाचार था जिसकी घोषणा यीशु ने की। उसने अपने आप को इस्राएल के राजा के रूप में प्रस्तुत किया (लूका 23:3)।

3. इसके बाद हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य इस्राएली जाति के द्वारा ठुकरा दिया गया (लूका 19:14; यूहन्ना 19:15)।

4. वर्तमान में परमेश्वर का राज्य भेद के रूप में है (मत्ती 13:11)। मसीह जो इस राज्य का राजा है अस्थायी तौर पर यहाँ से अनुपस्थित है परन्तु जगत में कुछ लोगों के हृदय में उसकी प्रभुता को स्वीकार किया जाता है। एक अर्थ में परमेश्वर के राज्य में वे सारे लोग शामिल हैं जो परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करने का दावा करते हैं, भले ही उन्होंने सचमुच में मन न फिराया हो। ऊपरी तौर पर दावा करने का उदाहरण बीज और बीज बोनेवाला के दृष्टान्त (लूका 8:4-15), गेहूँ और जंगली दानों के दृष्टान्त (मत्ती 13:24-30), और बड़े जाल में मछली के दृष्टान्त (मत्ती 13:47-50) में मिलता है। परन्तु गहरे और सच्चे अर्थों में परमेश्वर के राज्य में वे ही लोग शामिल हैं जिन्होंने सचमुच में अपना मन फिराया है (मत्ती 18:3) या जिन्होंने नया जन्म पाया है (यूहन्ना 3:3)। यह भीतरी सच्चाई वाला क्षेत्र है। (मत्ती 3:1, 2 में रेखाचित्र देखें।)

5. एक दिन अक्षरश: यह राज्य पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा और प्रभु यीशु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में एक हजार वर्ष तक राज्य करेगा (प्रका. 11:15; 19:16; 20:4)।

6. अन्तिम चरण को हम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य के रूप में जानते हैं (2 पतरस 1:11)। यह अनन्तकाल तक बने रहने वाला राज्य है।

ई. बीज बोनेवाला का दृष्टान्त (8:4–15)

8:4–8 बोनवाला का **दृष्टान्त** स्वर्ग के राज्य के वर्तमान पहलू का वर्णन करता है। इसमें यह शिक्षा पाई जाती है कि परमेश्वर के राज्य में अंगीकार (दावे) के साथ साथ सच्चाई भी होना आवश्यक है। और यह इस गम्भीर चेतावनी का एक आधार तैयार करता है कि हमें परमेश्वर के वचन को किस प्रकार से सुनना चाहिए। पवित्रशास्त्र से किए जाने वाले प्रचार और शिक्षा को सुनना कोई हल्की बात नहीं है। वचन को सुनने के बाद इसके प्रति जिम्मेदारी बढ़ जाती है। यदि वे सन्देश की ओर ध्यान नहीं देते हैं, यदि वे वचन को हल्का लेते हैं या उसे पालन करना वैकल्पिक समझते हैं, तो ऐसा करने के द्वारा अपनी ही हानि करते हैं। परन्तु यदि वे सुनकर मानते हैं, तो वे अपने आप को एक ऐसी अवस्था में पहुँचा देते हैं कि वे परमेश्वर की ओर से और अधिक प्रकाश प्राप्त कर सकें। यह **दृष्टान्त** यहाँ पर एक **बड़ी भीड़** के सामने कहा गया था, और फिर शिष्यों को इसका अर्थ समझाया गया था।

भूमि का प्रकार	*परिणाम*
1. **मार्ग के किनारे**	मनुष्यों के पैरो तले **रौंदा गया** और **पक्षियों ने चुग लिया**
2. **चट्टान** पर	**तरी ने मिलने से सूख गया**
3. **झाड़ियों** में	**झाड़ियों** से दब कर बढ़ न पाया
4. **अच्छी भूमि**	प्रत्येक बीज से सौ सौ गुना **फल लाया**

प्रभु ने इन शब्दों के साथ दृष्टान्त का समापन किया, ''**जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले**!'' दूसरे शब्दों में, जब तुम परमेश्वर का वचन सुनते हो, तो सावधान रहो कि उसे किस प्रकार से स्वीकार करते हो। बीज का **अच्छी भूमि** पर गिरना आवश्यक है ताकि फल लाए।

8:9, 10 जब **उसके चेले** उससे **इस दृष्टान्त** का अर्थ पूछने लगे, तो यीशु ने उन्हें समझाया कि **स्वर्ग के राज्य के भेद** को हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता। इसलिए कि चेले भरोसा करने और आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार थे, उन्हें मसीह की शिक्षाओं को समझने के लिए क्षमता **दी गई है**। परन्तु यीशु ने जानबूझ कर अनेक सच्चाइयों को **दृष्टान्त** रूप में प्रस्तुत किया ताकि जो उससे सचमुच में प्रेम नहीं रखते वे इसे **न समझें**; ताकि वे **देखते हुए** भी इसे **न देखें**; **और सुनते हुए** भी **न समझें**। एक अर्थ में, उन्होंने देखा और सुना। उदाहरण के लिए, वे जानते थे कि यीशु ने एक बोनेवाले और उसके बीज के बारे में बताया है। परन्तु इस उदाहरण के अर्थ की गहराई को वे **न समझे**। उन्हें इस बात का बोध नहीं था कि उनके हृदय कठोर, अपश्चतापी, और कटीले झाड़ी की तरह हो चुके हैं, और जो वचन उन्होंने सुना उससे उन्होंने कोई लाभ नहीं लिया।

8:11–15 प्रभु ने **दृष्टान्त** का अर्थ सिर्फ चेलों को बताया। वे पहले से ही उन शिक्षाओं को स्वीकार कर चुके थे जो उन्हें दी गई, और इसलिए उन्हें और शिक्षा दी जाएगी। यीशु ने यह समझाया कि **बीज तो परमेश्वर का वचन है**, अर्थात्, परमेश्वर का सत्य – उसके स्वयं की शिक्षा।

मार्ग के किनारे के वे हैं जिन्होंने वचन को सुना परन्तु सिर्फ सतही, और बाहरी तौर पर। वह उनके जीवन में सतह पर ही रह गया। इससे **शैतान** (आकाश के पक्षी) के लिए सरल हो गया कि वह इसे उनसे छीन कर ले जाए।

चट्टान पर के वे हैं जिन्होंने वचन को सुना, परन्तु उन्होंने वचन को अवसर नहीं दिया कि उन्हें तोड़े। वे अपश्चतापी बने रहे। बीज को किसी भी प्रकार का कोई प्रोत्साहन नहीं दिया गया, इसलिए यह सूख गया, और मर गया। शायद उन्होंने पहले पहले अपने विश्वास का जोरदार अंगीकार किया हो, परन्तु इसमें कोई वास्तविकता नहीं थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसमें जीवन है, परन्तु सतह से नीचे **जड़** न पकड़ सका। जब संकट आया, तो उन्होंने अपने मसीही अंगीकार को त्याग दिया।

कटीली झाड़ियों में के वे हैं जिन्होंने वचन को सुना, कुछ समय के लिए सब कुछ ठीक चलता प्रतीत हुआ, परन्तु स्थिर बने रहने में असफल होकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वे सच्चे विश्वासी नहीं हैं। **चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास** उन पर हावी हो गए, और वचन को दबा दिया गया।

अच्छी भूमि उन सच्चे विश्वासियों को दर्शाती है जिनके हृदय **भले और उत्तम** थे। उन्होंने न सिर्फ वचन को स्वीकार किया परन्तु उसे अवसर दिया कि यह उनके जीवन को रूप दे। वे सीखने के इच्छुक और आज्ञाकारी थे, उनमें सच्चे मसीही चरित्र का विकास हुआ और वे परमेश्वर के लिए **फल** लाए।

डार्बी ने इस खण्ड में पाए जाने वाले सन्देश का सारांश इस प्रकार से दिया है:

> यदि, सुन कर, मैं वह स्वीकार कर लेता हूँ जिसे मैंने सुना, तो मुझे न सिर्फ इसे स्वीकार करने का आनन्द मिलता है, परन्तु यह मेरा हो जाता है, तब यह मेरे प्राण के सार का एक भाग बन जाता है, तथा मुझे और मिलेगा; क्योंकि जब सत्य मेरे प्राण में एक सार बन जाता है, तो और अधिक ग्रहण करने की क्षमता आ जाती है।[22]

ज.सुनने वालों का उत्तरदायित्व (8:16–18)

8:16–18 सरसरी नजर से देखने पर इस खण्ड और इसके पहले वाले खण्ड के बीच में कोई खास सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। किन्तु, वास्तव में, इन दोनों के बीच में विचारों की निरन्तरता है। उद्धारकर्ता अब भी इस बात के महत्व पर जोर दे रहा है कि उसके चेले उसकी शिक्षाओं के साथ क्या करने वाले हैं। वह अपने आप को एक ऐसे मनुष्य के समान बताता है जो **दीया बार के** उसे **बरतन** या **खाट के नीचे** नहीं, परन्तु **दीवट पर** रखता है ताकि सब उसका **प्रकाश पाएं**। चेलों को परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों की शिक्षा देते हुए, वह एक दीया प्रज्वलित कर रहा था। चेलों को अब क्या करना चाहिए?

सबसे पहली बात, उन्हें इसे **बरतन** के नीचे नहीं रख देना है। मत्ती 5:15, मरकुस 4:21, और लूका 11:33 में, बरतन के स्थान पर पैमाना शब्द का प्रयोग किया गया है। यह नापने की एक ईकाई है जिसका उपयोग व्यापार जगत में किया जाता है। इसलिए दीया को पैमाने के नीचे रखने का अर्थ यह हो सकता है – अपनी गवाही को अपने व्यवसायिक जीवन की भागदौड़ में धुंधला कर देना या दबा देना। बेहतर होगा कि दीया को पैमाने के ऊपर रखा जाए, अर्थात्, बाजारों में भी मसीही व्यवहार करना और अपने व्यवसाय का उपयोग सुसमाचार के प्रचार के लिए एक पुलपिट के रूप में करना।

दूसरी बात, चेले दीया को **खाट के नीचे** छिपा कर न रखें। खाट विश्राम, आराम, सुस्ती, और भोग विलास को प्रगट करता है। ये बातें किस तरह ज्योति को चमकने से बाधित कर सकती हैं! चेलों को चाहिए कि वे दीया को ऊँचे स्थान पर रखें। दूसरे शब्दों में, हमें सच्चाई को इस प्रकार से अपने जीवन में जीना है और उसका प्रचार करना है कि सब उसे देख सकें।

8:17 पद 17 को पढ़ कर ऐसा लगता है कि यदि हम सन्देश को अपनी व्यस्तता या आलस के कारण सीमित कर दें, तो हमारी लापरवाही और असफलता सामने आ जाएगी। सच्चाई को छिपाने से यह **प्रगट** हो जाएगी, और इसे गुप्त रखने से यह जान ली जाएगी।

8:18 इसलिए हमें सावधान रहना है कि हम **किस रीति** से सुनते हैं। यदि हम दूसरों के साथ सच्चाई को बाँटने में विश्वासयोग्य हैं, तब परमेश्वर हम पर नई तथा और अधिक गहरी सच्चाइयों को प्रगट करेगा। वहीं दूसरी ओर, यदि हमारे भीतर सुसमाचार सुनाने का उत्साह नहीं है, तो परमेश्वर हमें उस सत्य से वंचित कर देगा जिसे हम सोचते हैं कि यह हमारे पास है। यदि हम इसका उपयोग नहीं करेंगे तो इसे हम खो देंगे। जी. एच. लैंग इस पर यह टिप्पणी देते हैं:

> चेले उत्सुकता के साथ समझने के लिए तथा विश्वास करने और आज्ञापालन करने की तैयारी के साथ ध्यान से सुनते थे; शेष लोगों ने बिना किसी उत्साह के, या जिज्ञासावश, या फिर विरोध या खण्डन करने के लिए सुना। पहले तरह के सुनने वालों को और अधिक ज्ञान दिया जाएगा; दूसरे तरह के सुनने वालों से वह ज्ञान भी ले लिया जाएगा जो वे समझते हैं कि उनके पास है।[23]

हमें उन वस्तुओं को जो हमें ऊपर से मिली हैं
बाँटना आवश्यक है
जिन्हें हम रखना चाहते हैं;
देने से अपने आप को रोकने पर,
हम उसे अपने साथ रखने से वंचित हो जाएंगे,
यही प्रेम का नियम है।

– आर. सी. ट्रेन्च

क.यीशु की सच्ची माता और उसके सच्चे भाई (8:19–21)

यीशु जब ये बातें कह रहा था, तभी उसे किसी ने बताया कि **उसकी माता और उसके भाई** उससे मिलना चाहते हैं। **भीड़ के कारण**, वे उससे **भेंट** न कर सके। यीशु ने इस पर उत्तर दिया कि उसके साथ वास्तविक रिश्ता शारीरिक भाव पर नहीं, परन्तु **परमेश्वर** के **वचन**

के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर करता था। वह अपने परिवार के सदस्य ऐसे लोगों को मानता था जो उसके वचन का भय मानते थे, जो इसे नम्रतापूर्वक स्वीकार करते थे, और बिना प्रश्न किए इसका पालन करते थे। कोई भी भीड़ उसके *आत्मिक* परिवार को उस तक पहुँचने से नहीं रोक सकती।

ल.मनुष्य का पुत्र आँधी को शान्त करता है (8:22–25)

8:22 इस अध्याय के शेष भाग में हम यीशु को प्रकृति पर, दुष्टात्माओं पर, बीमारियों पर, और यहाँ तक कि मृत्यु पर भी अपनी प्रभुता का उपयोग करते हुए पाते हैं। ये सारी चीज़ें उसके वचन का पालन करती हैं; सिर्फ मनुष्य उसके वचन को मानने से मना कर देता है।

गलील की झील पर अचानक और बहुत ही जल्दी से भयानक आँधी चलने लगती है, जिसके कारण नाव चलाना बहुत ही खतरनाक हो जाता है। तौभी ऐसा लगता है कि इस आँधी के पीछे शैतान का हाथ था; यह शायद उसकी ओर से उद्धारकर्ता को नाश करने का एक प्रयास था।

8:23 जिस समय आँधी आई उस समय यीशु **सो गया** था; उसका सो जाना उसके सच्चे मनुष्यत्व को सत्यापित करता है। जब यीशु के कहा, तब *आँधी* सो (शान्त हो) गई; यह सच्चाई उसके पूर्ण ईश्वरत्व को सत्यापित करती है।

8:24 चेलों ने उद्धारकर्ता को **जगाया**, और अपने स्वंय की असुरक्षा के प्रति अपने भयानक डर को जताया। पूरी तरह से अपना सन्तुलन कायम रखते हुए यीशु ने **आँधी** और लहरों को **डाँटा**; और सब कुछ **थम** गया और चैन आ गया। प्रभु ने गलील की झील के साथ जो किया वही कार्य आज भी वह अपने परेशान, और जीवन की आँधियों से त्रस्त अनुयायियों के साथ करने की सामर्थ रखता है।

8:25 उसने चेलों से पूछा, "**तुम्हारा विश्वास कहाँ था?**" उन्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं थी। उन्हें उसे नहीं जगाना चाहिए था। "कोई भी जल उस नाव को नहीं डूबा सकता जिसमें महासागर, भूमि, और आकाश का स्वामी सो रहा हो।" मसीह के साथ जहाज में रहना पूर्णत: सुरक्षित है।

चेलों ने अपने स्वामी की सामर्थ के विस्तार को पूरी तरह से नहीं जाना था। उसके बारे में उनकी समझ त्रुटिपूर्ण थी। **वे** यह देखकर **अचम्भित** थे कि प्रकृति भी उसकी आज्ञा को मानती है। चेले हमसे अलग नहीं हैं। जीवन की आँधियों में, हम भी प्राय: हताश हो जाते हैं। जब प्रभु हमारी सहायता के लिए आते हैं, तब हम उसकी सामर्थ के प्रदर्शन को देख कर अचम्भित हो जाते हैं। और हम सोचने लगते हैं कि हमने उस पर पूर्ण रूप से भरोसा क्यों नहीं रखा।

म. दुष्टात्माग्रस्त गिरासेनी की चंगाई (8:26–39)

8:26–27 यीशु और उसके चेले झील के पार पहुँच कर **गिरासेनियों के** देश में आ गए।[24] वहाँ उन्होंने **एक मनुष्य** को देखा जिसमें **दुष्टात्माएं** थीं। मत्ती के अनुसार उन्होंने दो दुष्टात्माग्रसित मनुष्यों को देखा, जबकि मरकुस और लूका एक ही दुष्टात्माग्रसित व्यक्ति का उल्लेख कर रहे हैं। यह एक विसंगति प्रतीत हो रही है जिसे इस तरह से समझा जा सकता है कि वास्तव में दो अलग अलग अवसरों पर उन्होंने दो अलग अलग दुष्टात्माग्रसित मनुष्यों को देखा, या फिर यह हो सकता है कि मत्ती इसी घटना का अधिक विस्तार से वर्णन कर रहा है। दुष्तात्माग्रस्त होने के कारण इस व्यक्ति ने अपने **कपड़े** उतार दिए थे, समाज से भाग गया था, और **कब्रों में** रहा करता था।

8:28, 29 वह यीशु को देखकर उससे विनती करने लगा कि उसे अकेला रहने दिया जाए। नि:सन्देह, यह विनती करने वाली वह **अशुद्ध आत्मा** थी जो इस दयनीय व्यक्ति में होकर बोल रही थी।

दुष्टात्माग्रसित होना एक वास्तविकता है। ये दुष्टात्माएं कोई प्रभाव मात्र नहीं थी। वे अलौकिक प्राणी थीं जो इस मनुष्य के भीतर निवास करते हुए उसके विचारों, उसकी बातों, और उसके आचरण को नियंत्रित कर रही थीं। इस व्यक्ति के भीतर जिस तरह की दुष्टात्माएं थीं उन्होंने इस मनुष्य को अत्याधिक हिंसक बना दिया था – इतना अधिक हिंसक कि जब उसे हिंसा का दौरा आता था, तो **वह** उन जंजीरों को **तोड़ डालता था** जिससे उसे बान्ध कर रखा जाता था कि उसे **जंगल** में भागने से रोका जा सके। हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए यदि हम ध्यान में

रखें कि इस एक मनुष्य के भीतर इतनी ढेर सारी दुष्टात्माएं थीं कि वे दो हजार सूअरों को नाश करने की सामर्थ रखती थीं (मरकुस 5:13 देखें)।

8:30, 31 इस मनुष्य ने अपना **नाम . . . सेना** बताया क्योंकि उसके भीतर दुष्टात्माओं की सेना थी। इन दुष्टात्माओं ने यीशु को परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचान लिया। वे यह भी जान गई थीं कि उनका विनाश अब निश्चित है, और वह अब इस कार्य को पूरा करेगा। परन्तु उन्होंने अपना प्राणदण्ड स्थगित करने का प्रयास किया, और **उससे** विनती की कि वह उन्हें **अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दे**।

8:32, 33 उन्होंने उससे अनुमति मांगी कि उन्हें उस मनुष्य से बाहर निकाले जाने पर पास के ही **पहाड़ पर** चर रहे **सूअरों** के एक बड़े **झुण्ड** के भीतर जाने दिया जाए। यह अनुमति दे दी गई, जिसके परिणामस्वरूप सूअर **कड़ाड़े पर से झपट कर झील** में जा गिरे। वर्तमान में अनेक लोग प्रभु की आलोचना करते हुए कहते हैं कि उसने किसी की सम्पत्ति की हानि की थी। किन्तु, यदि सूअर के मालिक यहूदी थे, तो वे व्यवस्था के अनुसार एक अशुद्ध और अवैध व्यवसाय कर रहे थे। और चाहे वे यहूदी रहे हों या फिर गैरयहूदी, उन्हें एक मनुष्य की कीमत दो हजार सूअरों से अधिक आँकना चाहिए।

8:34–39 यह खबर तेजी से उस सारे क्षेत्र में फैल गई। जब एक बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई, तो उन्होंने इस व्यक्ति की समझ और उसके शिष्टाचार को बिल्कुल सामान्य पाया जिसमें पहले दुष्टात्मा थी। **गिरासेनियों** को इतनी नाराजगी हो गई कि उन्होंने यीशु से **विनती** की कि वह वहाँ से **चला** जाए। वे उद्धारकर्ता की तुलना में अपने सूअरों के बारे में अधिक सोच रहे थे; सूअरों की अधिक और आत्माओं की कम चिन्ता कर रहे थे। डार्बी ने इस बात की ओर हमारा ध्यान खींचा है:

> संसार यीशु को चले जाने के लिए विनती करता है, वह अपनी सुख सुविधा की अभिलाषा करता है जो दुष्टात्माओं की सेना की उपस्थिति की तुलना में उद्धारकर्ता की उपस्थिति से अधिक गड़बड़ा जाती है। वह चला जाता है। जो व्यक्ति चंगा किया गया . . . यीशु के पीछे आना चाहता है; परन्तु प्रभु उसे वापस भेज देता है . . . कि वह उस अनुग्रह और सामर्थ की गवाही दे जो उस हुआ है।[25]

कुछ समय बाद जब यीशु दिकापुलिस को आया, तो उसे एक संवेदनशील भीड़ मिली (मरकुस 7:31–37)। क्या यह इस चंगे हुए व्यक्ति की विश्वासयोग्य गवाही का परिणाम था?

न. असाध्य रोग का चंगा किया जाना और मृतक को जिलाया जाना (8:40–56)

8:40–42 यीशु गलील की झील को वापस पार कर इसके पश्चिमी छोर पर आ गया। वहाँ एक अन्य भीड़ उसकी **बाट जोह रही** थी। **याईर** जो **आराधनालय का सरदार** था, विशेष कर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि **बारह** वर्ष की उसकी **बेटी . . . मरने पर** थी। उसने शीघ्रता से यीशु से **विनती** की कि वह जल्दी उसके साथ चले। परन्तु भीड़ के **लोग उस पर गिरे पड़ते थे**, और जिसके कारण वह आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

8:43 इसी भीड़ में एक संकोची, परन्तु एक परेशान **स्त्री** भी थी, जो **बारह वर्ष से लोहू बहने** के रोग से पीड़ित थी। लूका वैद्य इस बात को स्वीकार करता है कि उसने **अपनी सारी** बचत और आय **वैद्यों** पर खर्च करने में लगा दी थी, फिर भी उसे कोई लाभ नहीं हुआ था। (मरकुस ने यह भी जोड़ा है कि वैद्यों से इलाज करने के बाद भी उसकी स्थिति बदतर हो चुकी थी!)

8:44, 45 उसने जान लिया कि यीशु में उसे चंगा करने की सामर्थ है, इसलिए वह भीड़ में से रास्ता बनाते हुए यीशु के पास पहुँची। और पीछे से आकर उसके **वस्त्र के आँचल को छुआ**, या उस कोर को छुआ जो यहूदी पहिनावे के किनारे लगा रहता था (गिनती 15:38, 39; व्य. वि. 22:12)। **तुरन्त** ही उसका **लोहू बहना थम गया** और वह पूरी तरह से चंगी हो गई। उसने चुपचाप उसे छूने का प्रयास किया था, परन्तु वह यीशु के इस प्रश्न के कारण बच कर वहाँ से निकल न सकी, ''**मुझे किसने छुआ?**'' **पतरस** और अन्य चेलों को लगा कि यह एक फालतू का प्रश्न है; सब प्रकार के लोग उसे धक्का दे रहे थे, हटा रहे थे, और छू रहे थे!

8:46 परन्तु यीशु ने पहचान लिया कि यह अलग प्रकार का स्पर्श था। और जैसा कि किसी ने कहा है, ''लोगों की भीड़ तो घेर लेती है, परन्तु विश्वास स्पर्श कर

लेता है।'' प्रभु ने जान लिया कि विश्वास ने उसे **छुआ** है, क्योंकि उसे मालूम था कि उसमें से **सामर्थ** निकली है – स्त्री को चंगा करने की सामर्थ। उसने **जान लिया** कि **सामर्थ** उस में से गई है। ऐसा नहीं था कि वह अब पहले से कम सामर्थी हो गया, परन्तु यह कि किसी को चंगा करने के लिए उसे भी कुछ *देना* पड़ता था। वहां पर कुछ खर्च किया गया था।

8:47, 48 स्त्री . . . कांपती हुई यीशु के पास आई और उसने क्षमा भाव से यह स्पष्टीकरण दिया कि उसने उसे क्यों **छुआ,** उसने कृतज्ञ भाव से यह गवाही भी दी कि उसके साथ क्या क्या हुआ। सार्वजनिक रूप से उसके अंगीकार के फलस्वरूप यीशु द्वारा उसके **विश्वास** की सार्वजनिक रूप से सराहना की गई, साथ ही उसके **कुशल** की भी सार्वजनिक घोषणा की गई। यह संभव नहीं है कि कोई व्यक्ति कभी यीशु को उसकी जानकारी के बिना विश्वास के साथ छूए, और आशीष प्राप्त न करे। कोई भी व्यक्ति उद्धार की निश्चयता में दृढ़ हुए बिना सार्वजनिक रूप से उसका अंगीकार नहीं कर सकता।

8:49 जिस स्त्री को लोहू बहने का रोग था उसे चंगाई देने के कारण शायद यीशु को बहुत देर न हुई हो, परन्तु इतनी देर तो हो ही गई कि एक सन्देशवाहक आकर यह सन्देश देता है कि याईर की **बेटी मर गई,** और इसलिए अब यीशु की सेवकाई की आवश्यकता नहीं रही। उनमें यह विश्वास तो था कि यीशु याईर की बेटी को चंगा कर सकता है परन्तु यह विश्वास नहीं था कि वह मृतक को जिला सकता है।

8:50 किन्तु **यीशु** इतनी आसानी से वहाँ से विदा नहीं होने वाला था। उसने शान्ति, प्रोत्साहन, और प्रतिज्ञा के शब्दों में **उत्तर दिया, ''मत डर, केवल विश्वास रख; तो वह बच जाएगी।''**

8:51–53 जैसे ही वह उसके घर पहुँचा, वह कमरे के भीतर गया और अपने साथ सिर्फ **पतरस, और यूहन्ना और याकूब** और उस लड़की के माता पिता को ले गया। हर एक व्यक्ति दुखी होकर विलाप कर रहा था, परन्तु यीशु ने उन्हें यह कहते हुए विलाप करने से मना किया कि लड़की **मरी नहीं, परन्तु सो रही है**। इस पर वे उसका उपहास करने लगे, क्योंकि वे मान चुके थे कि वह **मर गई है**।

क्या वह सचमुच में मर गई थी, या फिर वह गहरी बेहोशी (जैसे कि कोमा) में थी? बाइबल के अधिकांश विद्वानों का यह मानना है कि वह मर चुकी थी। वे इस आधार पर यह कहते हैं कि यीशु ने लाजर के विषय भी कहा था कि वह सो रहा है, जबकि वह मर चुका था। सर राबर्ट एन्डरसन कहते हैं कि लड़की सचमुच में नहीं मरी थी।[26] वह अपने इस कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्क देते हैं:

1. यीशु ने कहा कि लड़की ''बच जाएगी।'' इसी शब्द का उपयोग उसने पद 48 में भी किया था (मूल यूनानी में), जहाँ वह पुनरूत्थान नहीं परन्तु चंगाई के विषय में कह रहा था। इस शब्द का उपयोग नया नियम में कहीं पर भी मृतक को जिलाने के लिए नहीं किया गया है।

2. लाज़र की घटना में 'सोने' शब्द के लिए भिन्न यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है।

3. लोगों का मानना था कि वह मर गई है, परन्तु यीशु उसे मरे हुओं में से जिलाने का श्रेय नहीं लेना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि वह मरी नहीं परन्तु सो रही थी।

एन्डरसन कहते हैं कि बात सिर्फ इतनी है कि आप किस पर विश्वास करना चाहते हैं। यीशु ने कहा कि वह सो रही है। शेष का विचार था कि वे जानते थे कि वह मर चुकी है।

8:54–56 चाहे कुछ भी हो, यीशु ने उससे कहा, **''हे लड़की उठ!'' और वह तुरन्त उठी**। उसके माता पिता को उनकी बेटी लौटाने के बाद, यीशु ने उनसे कहा कि वे इस आश्चर्यकर्म को सार्वजनिक न करें। प्रभु ख्याति में, लोगों के क्षणिक रूप से उत्साहित हो जाने में, और उनके व्यर्थ की जिज्ञासा में रूचि नहीं रखता था।

इस प्रकार से यीशु के दूसरे वर्ष की सेवकाई पूरी हुई। अध्याय 9 का आरम्भ उसके तीसरे वर्ष की सेवकाई से होता है जब प्रभु बारहों को भेज रहा है।

ओ. मनुष्य का पुत्र अपने चेलों को भेजता है (9:1–11)

9:1–2 यह घटना मत्ती 10:1–15 में **बारहों** को भेजे जाने की घटना से काफी मिलती जुलती है, परन्तु दोनों के बीच कुछ ध्यान देनेयोग्य भिन्नताएं भी हैं। उदाहरण के लिए, मत्ती में, चेलों से कहा गया था कि वे सिर्फ

यहूदियों के पास जाएं, चेलों से कहा गया था कि वे मृतकों को जिलाएं, और साथ ही **बीमारियों को दूर** करें। लूका के संक्षिप्त वर्णन के पीछे स्पष्टत: एक कारण है, परन्तु यह कारण स्पष्ट नहीं है। प्रभु के पास आश्चर्यकर्म करने की न सिर्फ सामर्थ और अधिकार था, बल्कि उसने अपनी **सामर्थ और** अपने **अधिकार** को दूसरों को भी सौंपा था। **सामर्थ** का अर्थ होता है शक्ति या क्षमता। **अधिकार** का अर्थ होता है इसे उपयोग करने का अधिकार। चेलों के सन्देश की पुष्टि चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा हुई (इब्रा. 2:3,4) जब लिखित रूप से सम्पूर्ण बाइबल अनुपस्थित थी। परमेश्वर आश्चर्यजनक रीति से चंगाई दे सकता है, परन्तु सुसमाचार प्रचार के साथ साथ अभी भी चंगाई होगी या नहीं यह निश्चय ही सन्देहास्पद है।

9:3–5 अब चेलों के सामने अवसर था कि वे उन सिद्धान्तों पर अमल करें जिन्हें प्रभु यीशु ने उन्हें सिखाया था। अब उन्हें अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रभु पर भरोसा रखना है – न कि **झोली**, भोजन, या **रूपये** पर। उन्हें बहुत ही साधारण जीवन बिताना है – कोई भी अतिरिक्त लाठी नहीं, अतिरिक्त वस्त्र नहीं। जिस घर में पहले उनका स्वागत किया जाए **वहीं** उन्हें ठहरना था – ठहरने के बेहतर और अधिक सुविधाजनक स्थान पाने की आशा में इधर उधर नहीं घूमना था। जो लोग उनके सन्देश को ठुकरा दें उनके पास ठहरने या अधिक प्रयास करने में अपना समय नहीं देना था, परन्तु उन्हें यह आदेश दिया गया था कि वे **अपने पाँवों की धूल झाड़** दें कि **उन पर गवाही हो**।

9:6 ऐसा माना जाता है यीशु के चेलों ने **सुसमाचार** का प्रचार और बीमारों को चंगा गलील के **गाँव गाँव** में किया था। इस बात का उल्लेख किया जाना चाहिए कि उनका सन्देश परमेश्वर के राज्य के विषय में था – वे यह घोषणा कर रहे थे कि राजा उनके बीच में उपस्थित है और वह मन फिराने वाले लोगों पर राज्य करना चाहता है।

9:7 इस समय **हेरोदेस** अन्तिपास गलील और पिरिया में **चौथाई** (देश का) राजा था। वह अपने पिता हेरोदेस महान के राज्य के एक चौथाई क्षेत्र पर शासन करता था। उस तक यह समाचार पहुँचा कि उसके क्षेत्र में कोई व्यक्ति बड़े बड़े आश्चर्यकर्म कर रहा है। तुरन्त ही उसका विवेक उसके सामने अनेक प्रश्न उत्पन्न करने लगा। **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाला से सम्बन्धित घटना अब भी उसे व्याकुल कर देती थी। हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला की निर्भीक आवाज को उसका सिर कटवा देने के द्वारा मौन कर दिया था, परन्तु अब भी यूहन्ना के जीवन की सामर्थ का प्रभाव उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी। यह व्यक्ति कौन था जो अब भी उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला के विषय में लगातार सोचने के लिए बाध्य कर रहा था? **कितनों** के द्वारा यह अफवाह फैला दी गई थी कि **यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है**।

9:8, 9 दूसरे अनुमान लगा रहे थे कि यह व्यक्ति **एलिय्याह** या पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं में से कोई** एक हो सकता है। **हेरोदेस** ने दूसरों को यह स्मरण दिलाने के द्वारा अपनी व्याकुलता को दबाना चाहा। परन्तु उसके मन में भय बना रहा। आखिर **यह** व्यक्ति **कौन** था? उसने उसे **देखने की इच्छा की** परन्तु वह उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ाए जाने से ठीक पहले तक कभी देख नहीं पाया।

आत्मा से परिपूर्ण जीवन की सामर्थ! प्रभु यीशु मसीह ने, जो कि नासरत का एक अनजान बढ़ई था, हेरोदेस से मिले बिना भी उसके मन में भय उत्पन्न कर दिया था। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण किसी भी व्यक्ति के जीवन के प्रभाव को हम कभी भी कम आँकने की भूल न करें।

9:10 प्रेरितों ने लौटकर अपने अभियान के परिणामों का ब्यौरा सीधे प्रभु यीशु को दिया। यह सभी मसीही सेवकों के लिए एक अच्छा उदाहरण हो सकता है। बहुधा अपने सेवा कार्य की उपलब्धियों को सार्वजनिक तौर पर प्रस्तुत करना जलन और फूट जैसी बातों को उत्पन्न कर सकता है। जी. कैम्पबेल मोर्गन इस विषय पर यह टिप्पणी करते हैं कि, ''आंकड़े दर्शाने की हमारी अभिलाषा आत्मकेन्द्रित, और शारीरिक होती है, आत्मिक नहीं।'' हमारा प्रभु चेलों को **अलग करके बैतसैदा** *(मछली पकड़ने का घर)* के पास एक एकान्त स्थान पर ले गया। ऐसा लगता है कि उस समय में दो बैतसैदा हुआ करते थे, एक गलील के पश्चिमी भाग में था और दूसरा पूर्वी भाग में। इसकी वास्तविक भोगौलिक स्थिति अज्ञात है।

9:11 एकान्त में समय बिताने की आशा शीघ्र ही टूट गई। बहुत जल्दी लोगों की एक भीड़ वहाँ एकत्रित हो गई। प्रभु यीशु मसीह तक कभी भी पहुँचा जा सकता था, वह लोगों के लिए हमेशा उपलब्ध रहता था। वह इस प्रकार के विघ्न से खीजता नहीं था। वह कभी भी अपने

आप को इतना व्यस्त नहीं बताता था कि लोगों को आशीष न दे सके। बल्कि यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि **वह . . . उन से मिला** (या उनका स्वागत किया), उन्हें **परमेश्वर के राज्य** के बारे में शिक्षा दी, और **जो** चंगे होना चाहते थे उन्हें चंगा किया।

प. पाँच हजार लोगों को भोजन कराया जाना (9:12–17)

9:12 जैसे जैसे शाम होने लगी, **बारहों** चेले बेचैन होने लगे। इतने सारे लोगों के लिए भोजन की आवश्यकता थी! इस परिस्थिति से निकल पाना असम्भव था। इसलिए उन्होंने प्रभु से कहा कि वह **भीड़ को विदा कर** दे। हमारा रवैया भी बिल्कुल ऐसा ही होता है! अपने लिए तो हम पतरस के समान प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, ''मुझे अपने पास आने की आज्ञा दे।'' परन्तु दूसरों के लिए कहते हैं, ''उन्हें **विदा कर**!''

9:13 यीशु उन्हें आसपास के स्थानों में भोजन लेने के लिए नहीं भेजेगा। चेलों को लोगों की सेवा करने के लिए यात्रा पर क्यों जाना चाहिए, और अपने दरवाजे पर आए व्यक्ति को अनदेखा क्यों करना चाहिए? चेलों को भीड़ को तृप्त करना ही है। चेलों ने आपत्ति जताते हुए कहा कि उनके पास सिर्फ **पाँच रोटियाँ और दो मछली** हैं, वे यह भूल गए कि उनके पास प्रभु यीशु मसीह के रूप में असीमित स्रोत हैं जिसका वे उपयोग कर सकते थे।

9:14–17 प्रभु यीशु ने चेलों से सीधे सीधे कहा कि वे **पाँच हजार पुरुषों** और स्त्रियों और बच्चों की भीड़ को बैठा दें। उसके बाद उसने धन्यवाद दिया और रोटी **तोड़ तोड़ कर** उसे **चेलों को** देता गया। चेले इन टुकड़ों को लोगों को बाँटने लगे। प्रत्येक को पर्याप्त भोजन मिला। बल्कि, जब सब भोजन कर चुके तो बाद में इतना भोजन बच गया जितना कि पहले भोजन शुरू करने से पहले भी नहीं था। बचे हुए भोजन को एकत्रित करने पर **बारह टोकरी** भर गई, प्रत्येक चेले के लिए एक। जो लोग तर्क दे देकर यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि यह एक आश्चर्यकर्म नहीं था, वे सिर्फ अपने आप को और दूसरों को उलझा रहे हैं।

इस घटना में प्रभु के उन चेलों के लिए महत्वपूर्ण शिक्षाएं मिलती हैं जिन्हें संसार में सुसमाचार प्रचार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। **पाँच हजार** लोग खोई हुई मानवजाति को दर्शाते हैं, जो परमेश्वर की रोटी के लिए भूखी है। चेले असहाय मसीहियों को दर्शाते हैं, जिनके पास उपलब्ध साधन और स्रोत कम प्रतीत होते हैं, और जिन्हें बांटने के लिए वे तैयार नहीं हैं। प्रभु यीशु मसीह की यह आज्ञा कि, ''तुम उन्हें कुछ खाने को दो'' महान आज्ञा का पुनर्कथन मात्र है। यहाँ पर यह शिक्षा पाई जाती है कि हमारे पास जो कुछ है यदि उसे यीशु को दें, तो वह इसे कई गुणा बढ़ा कर आत्मिक रूप से भूखी भीड़ को तृप्त करने के लिए उपयोग में ला सकता है। उदाहरण के लिए, हमारे सोने की वह अंगूठी, हमारी बीमा पालिसी, हमारा बैंक खाता, हमारे मंहगे शौक! इन सब को सुसमाचार साहित्यों के रूप में बदला जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक आत्माएं उद्धार के अनुभव को प्राप्त कर सकती हैं, और फिर ये आत्माएं अनन्तकाल तक परमेश्वर के मेम्ने की आराधना करने वाले बन जाएंगी।

इसी पीढ़ी में सुसमाचार पूरे संसार भर में पहुँच जाएगा यदि मसीही लोग अपना सब कुछ मसीह को समर्पित कर दें। पाँच हजार लोगों को खिलाने की इस घटना में पाई जाने वाली अटल शिक्षा यही है।

क्व. पतरस का महानतम अंगीकार (9:18–22)

9:18 भीड़ को आश्चर्यजनक रीति से भोजन करवाने की घटना के तुरन्त बाद पतरस द्वारा कैसरिया फिलिप्पी में मसीह का एक महान अंगीकार किये जाने की घटना पाई जाती है। क्या पाँच रोटी और दो मछलियों के आश्चर्यकर्म ने चेलों की आँखे खोल दी थी कि वे प्रभु यीशु की महिमा को परमेश्वर के अभिषिक्त जन के रूप में देख सकें? कैसरिया फिलिप्पी की यह घटना आमतौर पर उद्धारकर्ता की चेलों के साथ शिक्षा देने वाली सेवकाई के निर्णायक मोड़ के रूप में स्वीकार की जाती है। इस समय तक वह धीरजपूर्वक चेलों की अगुवाई कर रहा था कि वे पहचान सकें कि वह कौन है और वह उनके द्वारा और उन में होकर क्या कर सकता है। अब वह इस लक्ष्य तक पहुँच चुका था, और अब वह प्रतिबद्ध होकर क्रूस की ओर बढ़ने लगता है। यीशु ने **एकान्त** में प्रार्थना की। यह कहीं नहीं बताया गया है कि यीशु ने कभी चेलों के साथ प्रार्थना की

हो। उसने चेलों के लिए प्रार्थना की थी, उसने चेलों की उपस्थिति में प्रार्थना की थी, और उसने उन्हें प्रार्थना करना भी सिखाया था, परन्तु उसके स्वयं का प्रार्थनामय जीवन उनके प्रार्थनामय जीवन से अलग था। अपनी एक प्रार्थना के बाद, उसने अपने चेलों से प्रश्न किया कि **लोग** उसे क्या कहते हैं।

9:19, 20 चेलों ने इस विषय पर लोगों के अलग अलग विचारों को बताया: कुछ उसे **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला** कहते हैं; कुछ **एलिय्याह**; और कुछ कहते हैं कि पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा** है। परन्तु जब उसने चेलों से पूछा, तो **पतरस** ने पूरे विश्वास के साथ यह अंगीकार किया कि यीशु **परमेश्वर का मसीह** है।

जेम्स स्टीवर्ट के द्वारा कैसरिया फिलिप्पी की इस घटना के सम्बन्ध में दी गई टिप्पणी इतनी उत्कृष्ट है कि हम उसे पूरा का पूरा यहाँ पर उद्धरित कर रहे हैं:

> उसने एक गैरनिजी प्रश्न से अपनी बात आरम्भ की – ''लोग मुझे क्या कहते हैं?'' इस प्रश्न का उत्तर देना कहीं से भी कठिन नहीं था। क्योंकि हर जगह लोग यीशु के बारे में बातें कर रहे थे। लोगों के दर्जन मत थे। सब प्रकार की अफवाहें और मत हवा में तैर रहे थे। हर जीभ यीशु की ही बात कर रही थी। और लोग न सिर्फ यीशु के बारे में बातें कर रहे थे; बल्कि वे उसके बारे में *बड़ी बड़ी* बातें कर रहे थे। कुछ लोगों का मानना था कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है। दूसरे उसे देखकर एलिय्याह को स्मरण करते थे। कुछ अन्य उसे एलिय्याह और कुछ भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक समझ रहे थे। दूसरे शब्दों में, यद्यपि लोग यीशु की पहचान को लेकर एकमत नहीं थे, परन्तु वे इस बात को लेकर एकमत अवश्य थे कि वह कोई महान व्यक्ति है। उसे उसकी जाति के नायकों के बीच में स्थान दिया गया था।
>
> यहाँ पर इस बात की ओर ध्यान देना आवश्यक होगा कि इतिहास एक बार फिर से अपने आप को दोहरा रहा है। एक बार फिर से यीशु मसीह हर एक जुबान पर है। यीशु के बारे में मसीही कलीसिया के बाहर भी दूर दूर तक चर्चाएं की जा रही हैं। और यहाँ पर भी लोगों के मतों में बड़ी भिन्नताएं हैं। पपिनी, यीशु को एक सच्चा कवि समझते हैं। ब्रूस बारटोन उसे कर्मयोगी समझते हैं। मिडिलटोन मुरे उसे एक रहस्यवादी मानते हैं। गैर परम्परावादी लोग प्रभु यीशु को सन्तों में सबसे महान और संसार के सब समय के नैतिक अगुवों के सर्वकालिक कप्तान के रूप में ऊपर उठाने को तैयार हैं। जॉन स्टुअर्ट मिल कहते हैं, ''चाहे एक अविश्वासी भी क्यों न हो, उसके लिये आज भी निराकार से साकार की नैतिकता के आधिपत्य का एक बेहतर रूपान्तरण खोज पाना, मसीह के द्वारा स्वीकार किया जाने वाला जीवन जीने की कोशिश करने की तुलना में आसान नहीं होगा।'' जिस तरह से उसके दिनों में लोग उसे यूहन्ना, एलिय्याह, यिर्मयाह कहा करते थे, वैसे ही आज भी लोग इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं कि प्रभु यीशु सब समय के नायकों और सन्तों में सर्वोच्च है।
>
> परन्तु प्रभु यीशु इस पहचान से सन्तुष्ट नहीं था। लोग उसे यूहन्ना, एलिय्याह, या यिर्मयाह के रूप में पहचान रहे थे। परन्तु इसका अर्थ यह होता कि वह इसी कड़ी का एक व्यक्ति है। इसका अर्थ यह होता कि उसके पहले भी उसके समकक्ष लोग आए, और यद्यपि वह श्रेणी में सबसे आगे है, तौभी वह अपने समकक्षों में ही प्रथम है। परन्तु नया नियम का मसीह निश्चय ही इस तरह का व्यक्ति होने का दावा नहीं करता, लोग मसीह के दावे को चाहे मानें या न मानें; परन्तु सच्चाई यह है कि मसीह के दावे पर शंका की कोई छाया तक नहीं आ सकती। मसीह ने दावा किया है कि न ही उसके आगे न उसके पीछे उसके समान कोई है, न कोई उसके समकक्ष है, उसका कोई प्रतिस्पर्धी नहीं है, और वह अद्वितीय है (उदाहरण के लिए मत्ती 10:37; 11:27; 24:35; यूहन्ना 10:30; 14:6 देखें)।[27]

9:21, 22 पतरस के ऐतिहासिक अंगीकार के बाद, यीशु ने उन्हें **चिताकर** कहा कि वे यह बात किसी से न कहें; क्रूस की ओर उसके मार्ग के बीच में कोई भी अवरोध नहीं आना चाहिए। उसके बाद उद्धारकर्ता ने भविष्य में उसके साथ होने वाली बातों को उनके सामने प्रगट किया। यह **अवश्य है** कि वह **दुख** उठाए, इस्राएल के धार्मिक अगुवों के द्वारा **तुच्छ** समझा जाए, **मार** डाला जाए और **तीसरे दिन जी उठे**। यह एक विस्मयकारी घोषणा थी। हम यह न भूलें कि ये शब्द संसार में रहे अब तक के एकमात्र निष्पाप और धर्मी व्यक्ति के द्वारा कहे गए। ये शब्द इस्राएल के सच्चे मसीह के द्वारा कहे गए। ये देहधारी परमेश्वर के शब्द थे। इन शब्दों में यह बताया

गया है कि परिपूर्णता का जीवन, सिद्ध जीवन, और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के जीवन में दु:ख, तिरिस्कार और किसी न किसी प्रकार की मृत्यु, और एक ऐसा पुनरूत्थान सम्मिलित है जो मृत्युहीन है। यह एक ऐसा जीवन है जो दूसरों के लिए उण्डेल दिया जाता है।

नि:सन्देह यह दावा मसीह की भूमिका को लेकर लोगों की आमधारणा से बिल्कुल *विपरीत* था। लोग उसे तलवार लहराते हुए शत्रुओं का नाश करने वाले एक अगुवे के रूप में देखना चाहते थे। चेलों के लिए यीशु का दावा नि:सन्देह एक सदमे की तरह रहा होगा। परन्तु यदि, जैसा कि उन्होंने अंगीकार किया था, यीशु वास्तव में परमेश्वर का मसीह था, तो फिर किसी भी भ्रम में पड़ने या हताश होने का उनके पास कोई कारण नहीं था। यदि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है, तब उसका उद्‌देश्य कभी भी असफल नहीं होगा। चाहे उसके साथ कुछ भी हो जाए, वे विजयी पक्ष की ओर ही रहेंगे। उनकी विजय और उन्हें ऊँचा उठाया जाना अटल है।

र. क्रूस उठाकर पीछे चलने का न्यौता (9:23–27)

9:23 भविष्य में अपने साथ होने वाली बातों की रूपरेखा प्रस्तुत करने के बाद प्रभु ने चेलों को उसके **पीछे** हो लेने का न्यौता दिया। इसका अर्थ यह होगा कि उन्हें अपने आप का इंकार करना है और अपना **क्रूस** उठाना है। **इंकार** करने का अर्थ है अपनी इच्छा से कोई भी योजना बनाने या कोई भी चुनाव करने के अपने किसी भी तथाकथित अधिकार का त्याग करना और अपने जीवन के हर क्षेत्र में उसकी प्रभुता को स्वीकार करना। **क्रूस** उठाने का अर्थ है कि अपनी इच्छा से यीशु के समान जीवन जीने के लिए तैयार होना। इसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

– अपने प्रिय जनों की ओर से विरोध।
– संसार की ओर से निन्दा।
– परिवार और घर और भूमि और इस जीवन की सुखसुविधाओं को छोड़ना।
– परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता।
– पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति आज्ञाकारिता।
– अलोकप्रिय (किन्तु सत्य) सन्देश का प्रचार करना।
– अकेलेपन का मार्ग।
– स्थापित धार्मिक अगुवों की तरफ से योजनाबद्ध आक्रमण।
– धार्मिकता के कारण सताया जाना।
– निन्दा और लज्जा।
– अपने और संसार के लिए मर जाना।

परन्तु इसमें उस जीवन को पकड़ लेना भी शामिल है जो वास्तविक जीवन है! इसका अर्थ है अपने जीवन के अस्तित्व के उद्‌देश्य को अन्तत: प्राप्त कर लेना। और इसका अर्थ है अनन्त प्रतिफल प्राप्त करना। हमारी प्रवृत्ति होती है कि हम क्रूस उठा कर चलने वाला जीवन जीने से पीछे हटते हैं। हमारा मन यह विश्वास नहीं करना चाहता कि यह हमारे जीवनों के प्रति परमेश्वर की इच्छा हो सकती है। तौभी मसीह के इस वचन, ''**यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे**'' का अर्थ यह है कि ऐसा न करने के लिए, न ही कोई बहाना हो सकता है, और न ही कोई अपवाद।

9:24 हममें यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम अपने जीवनों को स्वार्थ, आत्मसन्तुष्टि, दिनचर्या, और तुच्छता के द्वारा बचाना चाहते हैं। हम सुख–विलास, आरामदायक, और सुविधाओं के जीवन जीने के द्वारा, वर्तमान के लिए जीने के द्वारा, कुछ वर्षों की खोखली सुरक्षा के लिए अपनी योग्यताओं को संसार को बेच देने के द्वारा अपने भोग विलास और लालसाओं में लिप्त हो जाते हैं। परन्तु ऐसा करने के द्वारा हम अपने जीवनों को खो देते हैं, अर्थात्, अपने जीवन के सच्चे उद्‌देश्य और इसके साथ मिलने वाले गहरे आत्मिक सुख को खो देते हैं! दूसरी ओर, हम उद्धारकर्ता के लिए अपना जीवन खो सकते हैं। मनुष्य हमें पागल समझते हैं यदि हम अपनी स्वार्थपूर्ण महत्वाकांक्षाओं को हवा में उड़ा देते हैं, यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करते हैं, और यदि हम पूरी तरह से अपने आप को उसे समर्पित कर देते हैं। परन्तु त्याग का यह जीवन ही सच्चा जीवन है। इसमें आनन्द है, पवित्र निश्चिन्तता है, और एक गहरी आन्तरिक सन्तुष्टि है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

9:25 जब उद्धारकर्ता अपने बारह चेलों से बातें कर रहा था, तो उसने महसूस किया कि भौतिक धन की लालसा पूर्ण समर्पण के विरुद्ध एक शक्तिशाली प्रतिरोध

हो सकता है। और इसलिए उसने कुछ ऐसा कहा, ''मान लो कि तुमने अपने लिए **सारे जगत** के सोना-चाँदी का एक ढेर एकत्रित कर लिया, सारी जमीन जायदाद हासिल कर ली, सारे शेयर और बॉन्ड खरीद लिए – भौतिक मूल्य देने वाली सारी वस्तुएं प्राप्त कर ली – और मान लो कि इन सारी वस्तुओं को प्राप्त करने के अपने इस उन्माद में तुम अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य को पाने से चूक गए, तो इससे तुम्हें क्या लाभ होगा? ये सारी वस्तुएं तुम्हारे पास कुछ ही समय के लिए रहेंगी; उसके बाद तुम इन्हें हमेशा के लिए छोड़ कर चले जाओगे। इस छोटे से जीवन को मिट्टी के खिलौने प्राप्त करने के लिए बेच देना एक बेवकूफी भरा सौदा होगा।''

9:26 मसीह के प्रति पूर्ण समपर्ण के विरोध में दूसरा प्रतिरोध है – शर्मिन्दगी का भय। एक सृष्टि का अपने सृष्टिकर्ता को लेकर शर्म महसूस करना और एक पापी का अपने उद्धारकर्ता को लेकर शर्म महसूस करना, पूरी तरह से बेतुकी बात है। और फिर हममें से कौन निर्दोष है? प्रभु ने उससे लजाने की सम्भावना को ताड़ लिया और उसके विरुद्ध गम्भीर चितौनी दी है। यदि हम नामधारी मसीही बने रह कर, और संसार के अनुरूप जीवन जी कर इस शर्मिंदगी से बचने का प्रयास करते हैं, तो **मनुष्य का पुत्र** भी **जब अपनी और अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तो उससे लजाएगा**। वह अपने दूसरे आगमन की त्रि-वैभवशाली महिमा पर जोर देते हुए यह जताता है कि इस समय हम उसके कारण जो भी निन्दा या शर्मिंदगी उठाते हैं, वह उस शर्मिंदगी के आगे कुछ नहीं है जिसे इस जीवन में प्रभु का इंकार करने वाले उस समय झेलेंगे जब वह अपनी महिमा में प्रगट होगा।

9:27 उसकी महिमा का यह उल्लेख इसके बाद होने वाली बातों के लिए एक कड़ी का कार्य करता है। वह अब भविष्यद्वाणी करता है कि उन चेलों में से **कोई कोई** जो उस समय वहाँ खड़े थे, अपनी मृत्यु से पहले ही **परमेश्वर का राज्य** देखें लेंगे। उसके इन वचनों की पूर्णता 28-36 पदों में पाई जाती है, जहाँ पर रूपान्तर के पर्वत की घटना का वर्णन है। ये चेले पतरस, याकूब, और यूहन्ना थे। पर्वत पर उन्होंने इस बात का एक पूर्वदृश्य देखा कि जब यीशु पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा उस समय का दृश्य कैसा होगा। पतरस इस सम्बन्ध में अपनी दूसरी पत्री में कहता है:

> क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था बरन हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था कि उस ने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो हमने स्वर्ग से यही वाणी आते सुना (1:16-18)।

इस स्थल में प्रभु की शिक्षा की निरन्तरता पर ध्यान दें। अभी अभी उसने अपने आने वाले तिरिस्कार, दु:खभोग, और अपनी मृत्यु के विषय में घोषणा की थी। उसने अपने चेलों को न्यौता दिया था कि वे आत्म-इंकार, दु:ख, और त्याग का जीवन जीने के लिए उनके पीछे हो लें। अब वह कुछ इस प्रकार से कह रहा है, ''परन्तु ध्यान रखो! यदि तुम मेरे साथ दु:ख उठाओगे, तो तुम मेरे साथ राज्य करोगे। क्रूस के पार महिमा है। हम जितना अधिक कीमत चुकाएंगे उतना ही बड़ा हमारा प्रतिफल भी होगा।''

स. मनुष्य के पुत्र का रूपान्तरण (9:28-36)

9:28-36 कोई आठ दिन बाद यीशु **पतरस, याकूब, और यूहन्ना को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गया**। इस **पहाड़** की भोगौलिक स्थिति ज्ञात नहीं है, परन्तु इस बात की बहुत सम्भावना है कि यह पहाड़ ओस से ढंका रहने वाला हर्मोन पर्वत हो सकता है। जब प्रभु प्रार्थना कर रहा था, तो उसका बाहरी **रूप** बदलने लगा। यह एक रोचक तथ्य है – प्रार्थना के द्वारा हममें अन्य परिवर्तनों के साथ साथ हमारा मुख भी परिवर्तित होने लगता है। **उसके चेहरे** से एक उजली चमक दमकने लगी **और उसका वस्त्र** चकाचौंध कर देने वाली सफेदी से चमक उठा। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यह उस महिमा का पूर्वदृश्य है जो महिमा प्रभु के आने वाले राज्य के समय प्रभु में देखी जाएगी। जब वह इस पृथ्वी पर था, तब उसकी महिमा उसके माँस के शरीर से साधारणतया ढंकी हुई थी। वह यहाँ पर अपनी दीन अवस्था में, एक बन्धुए दास के समान था। परन्तु अपने हजार वर्ष के शासन के दौरान, उसकी महिमा पूरी तरह से

प्रगट हो जाएगी। सभी उसे उसके सारे वैभव और प्रताप में देख सकेंगे।

प्रोफेसर डब्ल्यू. एच. रोजर्स ने इस पर इस तरह से व्याख्या की है:

> रूपान्तर में, आने वाले राज्य की सारी प्रमुख विशेषताएं लघुरूप (नमूना) में प्रगट की गई हैं। हम प्रभु को महिमा का वस्त्र पहने हुए देखते हैं, दीनता के चिथड़ों में नहीं। हम मूसा को महिमारूप धारण किए हुए देखते हैं, वह उन नया जन्म पाए हुओं का प्रतिनिधि है जो मृत्यु को पार करके राज्य में प्रवेश कर चुके हैं। हम एलिय्याह को महिमा ओढ़े हुए देखते हैं, वह उन छुड़ाए हुओं का प्रतिनिधि है जिन्होंने जीते जी राज्य में प्रवेश कर लिया। यहाँ पर तीन चेले पतरस, याकूब, और यूहन्ना भी हैं, जो महिमारूप में नहीं हैं, वे हजार वर्ष के राज्य में शारीरिक इस्राएल के प्रतिनिधि हैं। साथ ही पहाड़ के नीचे भीड़ भी है, जो उन सारी अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करती है जो स्वर्ग के राज्य के आरम्भ होने के बाद से उसके भीतर लाई जाएंगी।[28]

9:30, 31 मूसा और एलिय्याह यीशु से **उसके मरने** (शब्दश:, विदाई, निर्गमन) **की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होने वाला था**। ध्यान दें कि यहाँ पर उसकी मृत्यु को एक पूर्णता या सिद्धता के रूप में कहा गया है। यह भी ध्यान दें कि मृत्यु सिर्फ एक *निगर्मन* या *विदाई* है – यह अस्तित्व का समाप्त हो जाना नहीं, परन्तु एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में जाना है।

9:32, 33 जब यह सब कुछ हो रहा था तो चेलों को नींद आ रही थी। बिशप रायल कहते हैं:

> इस बात की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि जो चेले महिमा के एक दर्शन के दौरान सो रहे थे वे ही चेले गमतसमनी में प्रभु की व्याकुलता के समय भी सो रहे थे। माँस और लोहू को स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले बदलना वास्तव में ज़रूरी है। हमारे निर्बल कमजोर शरीर न ही मसीह के दु:ख के समय में उसके साथ सचेत रह सकते हैं न ही उसकी महिमा किए जाने के समय जागते रह सकते हैं। स्वर्ग का आनन्द लेने से पहले हमारी भौतिक संरचना में बड़ा बदलाव लाना ज़रूरी है।

जब वे **अच्छी तरह सचेत हुए**, तो उन्होंने मसीह की **महिमा** की चमकदार दमक को **देखा**। इस अवसर की पवित्रता को संरक्षित रखने के प्रयास में, **पतरस** ने **तीन मण्डप** खड़े करने का प्रस्ताव रखा, **एक** यीशु के सम्मान में, एक **मूसा** के, और एक **एलिय्याह** के। परन्तु यह विचार ज्ञान के अभाव में और उतेजना से उत्पन्न हुआ था।

9:34–36 उस बादल में से जिसने उन्हें घेर लिया परमेश्वर का **शब्द निकला** जिसमें यीशु को परमेश्वर ने अपना प्रिय **पुत्र** बताया, और चेलों से कहा कि वे उसकी बात सुनें। जैसे ही यह **शब्द** कहा गया, उसके बाद मूसा और एलिय्याह लोप हो गए। और यीशु **अकेला** वहाँ रह गया। स्वर्ग के राज्य में भी ऐसा ही होगा; वह सारी बातों में प्रधान होगा। वह अपनी महिमा किसी के साथ नहीं बांटेगा।

चेले वहाँ से इतने विस्मय के साथ गए कि उन्होंने दूसरों को इस घटना के विषय में कुछ नहीं बताया।

ट. दुष्टात्माग्रसित बालक चंगा किया गया (9:37–43अ)

9:37–39 महिमा के पर्वत से, यीशु और उसके चेले **दूसरे दिन** मानवीय आवश्यकताओं की तराई में उतर गए। जीवन में हमें आत्मिक रूप से ऊँचा उठाए जाने के क्षण आते रहते हैं परन्तु परमेश्वर हमारे जीवन में प्रतिदिन परिश्रम और व्यय के भी चक्र लाकर संतुलन बनाए रखता है। जो **भीड़** उसके पास आकर उससे **मिली** उस **भीड़ में से** एक विचलित पिता निकल कर बाहर आया और दुष्टात्माग्रसित अपने **पुत्र** के लिए यीशु से सहायता की विनती करने लगा। वह उसका **एकलौता** पुत्र था और इसलिए वह अपने पिता के हृदय की प्रसन्नता का कारण था। एक पिता द्वारा अपने पुत्र को दुष्टात्मा द्वारा प्रताड़ित करते (मरोड़ते) हुए देखना इतना दुखद है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐंठन के ये दौरे अचानक आ जाते थे। ये लड़का तब रो उठता और उसके **मुँह में** फेन आ जाता था। बहुत भयानक संघर्ष के बाद ही दुष्टात्मा उसे बुरी तरह से घायल अवस्था में छोड़ कर जाती थी।

9:40 यह विचलित पिता इससे पहले सहायता के लिए **चेलों** के पास भी गया था परन्तु वे सामर्थहीन सिद्ध हुए। चेले इस बालक की सहायता कर पाने में असमर्थ क्यों थे? शायद वे अपनी सेवा में पेशेवर बन चुके थे। शायद उनका विचार था कि वे लगातार आत्मिक अनुशासन

का अभ्यास किए बिना ही आत्मा से परिपूर्ण सेवकाई पर निर्भर रह सकते हैं। शायद वे बातों को बहुत ही हल्के ढंग से ले रहे थे।

9:41 प्रभु **यीशु** इन सारी बातों को देखकर दुखित हो गया। किसी व्यक्ति विशेष का नाम लिए बिना ही उसने कहा, ''**हे अविश्वासी और हठीले लोगो . . .**।'' यह बात उसने या तो चेलों को, या लोगों को, या पिता को, या फिर एक साथ सब के लिए कहा हो। वे सभी मानुषिक आवश्यकता की इस परिस्थिति में इतने असहाय थे इसके बावजूद भी वे सामर्थ के असीमित स्त्रोत के निकट आ सकते थे। **कब तक** उसे उनके **साथ** रहना पड़ेगा और कब तक वह उन्हें सहता रहेगा? उसके बाद उसने उस बालक के पिता से कहा, ''**अपने पुत्र को यहाँ ले आ!**''

9:42, 43अ जब वह बालक यीशु के पास **आ ही रहा था**, तभी **दुष्टात्मा** ने उस पर आक्रमण कर दिया और बुरी तरह से जमीन पर पटक दिया। परन्तु दुष्टात्मा के इस शक्तिप्रदर्शन से यीशु को कोई विस्मय नहीं हुआ; दुष्टात्मा की सामर्थ ने नहीं परन्तु मनुष्यों के विश्वास ने उसके सामने बाधा लाई। उसने **दुष्टात्मा को डांटा** और **लड़के को अच्छा कर के उसके पिता को सौंप दिया**। उन्होंने जान लिया कि परमेश्वर ने एक आश्चर्यकर्म किया है। उन्हानें इस आश्चर्यकर्म में **परमेश्वर के सामर्थ** के प्रदर्शन को देखा।

य. मनुष्य का पुत्र अपनी मृत्यु और अपने पुनरूत्थान के विषय में भविष्यद्वाणी करता है (9:43ब–45)

9:43ब, 44 **चेलों** के मन में ऐसा विचार आया होगा कि उनका प्रभु उस समय तक आश्चर्यकर्म करना जारी रखेगा जब तक की सारी जाति उसे अपने राजा के रूप में स्वीकार न कर ले। इस प्रकार की धारणा को उनके मन से निकालने के लिए, प्रभु ने उन्हें फिर से स्मरण दिलाया कि अवश्य है कि **मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में पकड़वाया** जाए, अर्थात्, मार डाले जाने के लिए पकड़वाया जाए।

वे इस भविष्यद्वाणी को क्यों नहीं **समझते थे**? सिर्फ इसलिए क्योंकि वे मसीह को एक लोकप्रिय नायक ही मानते थे। उनकी समझ के अनुसार, उसकी मृत्यु का अर्थ होता – उद्देश्य का असफल हो जाना। मसीह द्वारा उनका सांसारिक छुटकारा कराए जाने को लेकर उनकी आशाएं इतनी मजबूत थीं कि कोई भी अलग विचारधारा से सहमत हो पाने में वे असफल थे। यह सत्य परमेश्वर ने उनसे नहीं छिपाया था, परन्तु विश्वास करने में उनके स्वयं के हठपूर्वक इंकार ने इस सत्य को उनसे छिपा कर रखा था। **वे** स्पष्टीकरण **पूछने से डरते थे** – उन्हें भय था कि उनकी आशंका सच न निकल जाए।

व. परमेश्वर के राज्य में सच्ची महानता (9:46–48)

9:46 चेले न सिर्फ यह अपेक्षा कर रहे थे कि महिमामय राज्य शीघ्र ही आने वाला है, परन्तु वे इस राज्य में बड़े बड़े पदों को पाने की लालसा भी रखते थे। वे पहले से ही आपस में वादविवाद करने लगे कि स्वर्ग के राज्य में, उन में सबसे से **बड़ा** कौन होगा।

9:47, 48 यीशु ने यह जानकर कि यह प्रश्न चेलों को सता रहा है, **एक बालक** को अपने पास खड़ा किया और उन्हें समझाया कि जो कोई एक **बालक** को उसके (यीशु के) **नाम से** ग्रहण करेगा वह उसे (यीशु को) ग्रहण करेगा। सरसरी तौर पर पढ़ने से, इस बात का कोई सम्बन्ध इस प्रश्न से दिखाई नहीं देता कि चेलों में सबसे बड़ा कौन है। यद्यपि यह बात सीधे सीधे प्रगट नहीं है, फिर भी इन दोनों के बीच में यह सम्बन्ध दिखाई देता है : सच्ची महानता छोटे लोगों के प्रति स्नेही देखभाल करने में पाई जाती है, सच्ची महानता असहाय लोगों की चिन्ता करने में पाई जाती है, सच्ची महानता ऐसे लोगों की चिन्ता करने में पाई जाती है जिन्हें संसार अनदेखा कर देता है। इस तरह से जब यीशु ने कहा कि जो ''**छोटे से छोटा है, वही बड़ा है**'' वह एक ऐसे व्यक्ति की बात कर रहा था जो अपने आप को दीन बना कर ऐसे विश्वासियों के साथ संगति करता है जिनकी कोई पहचान नहीं है, जिनका कोई महत्व नहीं है, और जो तुच्छ जाने जाते हैं।

मत्ती 18:4 में, प्रभु ने कहा है कि स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा वह होगा जिसने अपने आप को एक बालक के समान दीन बनाया हो। लूका में इस स्थल में, महानता का अर्थ है अपने आप को परमेश्वर के सबसे दीन सन्तानों

के साथ गिनना। दोनों ही स्थलों में, दीनता का स्थान ग्रहण करने की आवश्यकता है, जैसा कि उद्धारकर्ता ने किया।

व. मनुष्य का पुत्र सम्प्रदायवाद (धार्मिक दलबन्दी) को निषेध करता है (9:49–50)

9:49 यह घटना उस आचरण का उदाहरण देती हुई प्रतीत होती है जिस प्रकार का आचरण करने के लिए उद्धारकर्ता ने अभी अभी चेलों को मना किया था। चेलों ने किसी व्यक्ति को यीशु के **नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा**। उन्होंने **उसे** सिर्फ इस कारण से ऐसा करने के लिए **मना** कर दिया कि वह उनका अनुयायी नहीं था। दूसरे शब्दों में, उन्होंने प्रभु के एक बालक को उसके नाम से ग्रहण करने से मना कर दिया था। वे मतान्ध और संकीर्ण मानसिकता के लोग थे। उन्हें इस बात से प्रसन्न होना था कि उस मनुष्य में से दुष्टात्मा निकल गई थी। उन्हें किसी भी ऐसे मनुष्य या समूह से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए जो उनकी तुलना में अधिक दुष्टात्माएं निकालता हो। परन्तु फिर हर एक चेले को स्वयं को एकाधिकार की लालसा करने से बचना चाहिए – आत्मिक सामर्थ और प्रतिष्ठा पर एकाधिकार की लालसा।

9:50 यीशु ने उस से कहा, "उसे मना मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।" जहाँ तक मसीह के व्यक्तित्व के कार्य से सम्बन्धित कोई विषय हो, उस में तटस्थता का कोई स्थान नहीं है। यदि मनुष्य मसीह की *ओर* नहीं है, तो फिर वह उसके *विरोध* में है। परन्तु जब मसीही सेवकाई की बात होती है, तो ए. एल. विलियम्स इस विषय पर कहते हैं:

> गम्भीर मसीहियों को यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि जब बाहरी लोग मसीह के नाम से कुछ करते हैं, अवश्य ही, यह अपनी सम्पूर्णता में, उसके उद्देश्य को आगे बढ़ाने वाला कार्य हो . . .। प्रभु के उत्तर में एक व्यापक और दूरगामी सत्य था। इस जगत का कोई भी समाज, चाहे कितना भी पवित्र क्यों न हो, प्रभु के नाम का विश्वासयोग्यता और सच्चाई से उपयोग करने के सम्बन्ध में ईश्वरीय सामर्थ पर एकाधिकार करने का दावा नहीं कर सकता।[30]

VII. मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध सताव का बढ़ना (9:51–11:54)

अ. सामरिया ने मनुष्य के पुत्र का इंकार किया (9:51–11:54)

9:51 यीशु के स्वर्गारोहण का समय अब निकट आता जा रहा था। वह इस बात को अच्छी तरह से जानता था। वह यह भी जानता था कि बीच में क्रूस को पार करना है, इसलिए वह उस संकल्प को लेकर **यरूशलेम**, और यरूशलेम में उसके साथ होने वाली बातों की ओर बढ़ चलता है।

9:52, 53 मार्ग में एक सामरी **गाँव** ने परमेश्वर के पुत्र का सत्कार नहीं किया। लोग जानते थे कि वह **यरूशलेम** को जा रहा था, और कम से कम उनके लिए, उसे रोकने का यह कारण पर्याप्त था। आखिर यहूदी और सामरी लोग एक दूसरे से घोर बैर रखते थे। अपनी सम्प्रदायवादी मताग्रही आत्मा, अपने अलगाववादी रवैये, और अपनी जाति पर उनके घमण्ड के कारण उन्होंने महिमा के प्रभु को अपने मध्य **उतरने** नहीं दिया।

9:54–56 याकूब और यूहन्ना इस अशिष्ट व्यवहार से इतने अप्रसन्न हो गए कि उन्होंने **आकाश से आग** गिराकर दोषियों को नाश करने का प्रस्ताव रखा। यीशु ने तुरन्त **उन्हें डांटा**। वह **लोगों के प्राण को नाश करने नहीं बरन् उन्हें बचाने के लिए आया** है। यह प्रभु के प्रसन्न होने का वर्ष था, हमारे परमेश्वर के पलटा लेने का दिन नहीं। उन्हें अनुग्रह का व्यवहार करना चाहिए था पलटा लेने वाला नहीं।

ब. यीशु का अनुसरण करने में बाधा (9:57–62)

9:57 इन पदों में, हमारी मुलाकात तीन ऐसे लोगों से होती है, जो प्रभु यीशु के चेले बनना चाहते थे, और जो इस बात का चित्रण करते हैं कि पूरे मन से प्रभु यीशु के पीछे चलने में कौन कौन सी तीन बाधाएं आती हैं। पहला व्यक्ति काफी हद तक निश्चित था कि वह कहीं भी और सभी जगह प्रभु यीशु के पीछे आने के लिए तैयार है। वह बुलाए जाने के लिए नहीं रूका, परन्तु उतावली में उसने अपने आप को समर्पित कर दिया। वह अतिआत्मविश्वासी

था, बहुत अधिक आतुर था, और यीशु के पीछे चलने पर जो कीमत चुकानी पड़ती है उससे अनजान था। वह नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा था।

9:58 पहले तो ऐसा लगेगा कि प्रभु यीशु द्वारा दिया गया उत्तर उस मनुष्य के प्रस्ताव से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। किन्तु, वास्तव में इन दोनों बातों के बीच में एक बहुत ही निकट सम्बन्ध था। **यीशु** ने कुछ इस प्रकार से कहा, ''क्या तुम जानते हो कि मेरे पीछे चलने का अर्थ क्या होता है? इसका अर्थ होता है जीवन की सुख–सुविधाओं और आराम का त्याग कर देना। मेरे पास अपना कोई घर नहीं है। यह जगत मुझे चैन आराम दे सकने लायक नहीं है। **लोमड़ियों** और **पक्षियों** के पास मेरी तुलना में अधिक प्राकृतिक सुरक्षा है। क्या तुम मेरे पीछे आना चाहते हो, तब भी, जब तुम्हें उन सारी बातों को त्यागना पड़े जिन्हें मनुष्य अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है?'' जब हम यह पढ़ते हैं कि **मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं,** तो हो सकता है कि हमें उस पर तरस आए। एक टीकाकार ने इस बात पर यह टिप्पणी दी है, ''उसे हमारी दया की आवश्यकता नहीं है। बल्कि हम अपने ऊपर तरस खाएं, यदि हमारे पास एक ऐसा घर है जो हमें उस समय रोके रखता है जब मसीह चाहता है कि हम उसके लिए जगत के ऊँचे ऊँचे स्थानों में बाहर जाएं।'' इस पहले व्यक्ति के बारे में आगे कुछ भी नहीं लिखा हुआ है, और हम सिर्फ यह अनुमान लगा सकते हैं कि वह प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने के लिए जीवन की सामान्य सुख–सुविधाओं को त्यागने के लिए तैयार नहीं था।

9:59 दूसरे मनुष्य ने यीशु के पीछे चलने की बुलाहट को सुना। वह एक प्रकार से इच्छुक था, परन्तु वह पीछे चलने से **पहले** कुछ करना चाह रहा था। वह जाकर **अपने पिता को** गाड़ना चाहता था। ध्यान दें कि उसने क्या कहा, ''**हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे . . .**।'' दूसरे शब्दों में, **''हे प्रभु, मुझे पहले''**। उसने यीशु को **प्रभु** कह कर पुकारा, परन्तु वास्तव में वह अपनी लालसाओं और अपनी रूचियों को **पहले** रखता है। ''प्रभु'' और ''मुझे पहले'' – पूरी तरह से एक दूसरे के विरोधी शब्द हैं; हमें दोनों में से सिर्फ एक को चुनना आवश्यक है। **पिता** की मृत्यु हो गई थी, या फिर पुत्र घर पर ही रह कर अपने पिता की मृत्यु की प्रतीक्षा करना चाह रहा था, दोनों एक ही बात है – वह किसी और बात को मसीह की बुलाहट पर प्राथमिकता दे रहा था। मर चुके या मर रहे पिता के प्रति आदर प्रदर्शित करना पूरी तरह से उचित है, परन्तु कोई भी बात यदि मसीह के प्रतिस्पर्धी के रूप में खड़ी हो जाती है, तो वह बात पापमय है। इस व्यक्ति के पास करने के लिए कुछ और था – उदाहरण के लिए, कोई नौकरी या व्यवसाय – और इसी ने उसे प्रभु यीशु के पीछे पूर्ण समर्पण के साथ चलने के मार्ग से बहका दिया।

9:60 प्रभु यीशु ने उसे दोहरे विचार के लिए इन शब्दों में डांटा, ''**मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना**।'' *आत्मिक रूप* से मृत व्यक्ति *शारीरिक रूप* से मृत व्यक्ति को गाड़ सकते हैं, परन्तु वे सुसमाचार का प्रचार नहीं कर सकते। मसीह के अनुयायियों को ऐसे कार्यों को प्राथमिकता नहीं देना चाहिए जिन कार्यों को अविश्वासी लोग भी उतने ही अच्छे से कर सकते हैं जितना कि विश्वासी लोग। प्रत्येक विश्वासी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिये कि उसके जीवन के प्रमुख उद्देश्य से संबंधित बात के लिए उसे अपनी भूमिका अदा करना अनिवार्य है। उसका प्रमुख कार्य इस जगत में मसीह के उद्देश्य को पूरा करना होना चाहिए।

9:61 चेला बनने की चाह रखने वाला तीसरा व्यक्ति भी पहले व्यक्ति की तरह प्रभु यीशु के **पीछे** हो लेने की इच्छा व्यक्त करता है। वह दूसरे व्यक्ति के भी समान यह कहता है, **''हे प्रभु, पहले मुझे''**। **पहले** वह अपने परिवार से विदा लेना चाहता था। अपने आप में यह निवेदन तर्कसंगत और उचित था, परन्तु जीवन के सामान्य शिष्टाचार भी गलत हैं यदि उन्हें मसीह के प्रति पूर्ण और त्वरित आज्ञाकारिता से पहले स्थान दिया जाए।

9:62 यीशु ने उससे कहा कि एक बार यदि वह **अपना हाथ** शिष्यता के **हल पर रख** दे, तो वह **पीछे** मुड़ कर नहीं देख[31] सकता; अन्यथा वह **स्वर्ग के राज्य के योग्य** नहीं है। मसीह के अनुयायी अधूरे मन के या भावनाओं में बह जाने वालों के रूप में नहीं बनाए गए हैं। परिवार या मित्रों का ध्यान रखना यद्यपि उचित है, परन्तु इसकी अनुमति नहीं है यदि इसके कारण मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण का त्याग किया जाता है। ''**स्वर्ग के राज्य के योग्य**'' नहीं होने का अर्थ उद्धार के विषय में नहीं परन्तु सेवा के विषय में कहा गया है। यहाँ स्वर्ग के राज्य

में *प्रवेश* करने के विषय में नहीं, परन्तु स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के बाद *सेवा* करने के विषय में है। स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के योग्य हम प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के कारण बनते हैं। उस पर विश्वास लाने द्वारा हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं।

इसलिए प्रभु यीशु के पीछे हो लेने के मार्ग पर हमारे सामने तीन प्रमुख बाधाएं हैं जिन्हें इन तीन व्यक्तियों के उदाहरण के द्वारा हमारे सामने लाया गया है:

1. भौतिक सुख सुविधाएं
2. नौकरी या व्यवसाय
3. परिवार और मित्र

यह आवश्यक है कि मसीह हमारे हृदय में एकछत्र राज्य करे। बाकी सारे प्रेम और सारी निष्ठाएं दूसरा स्थान रखती हैं।

स. सत्तर को भेजा गया (10:1–16)

10:1–12 सत्तर[32] लोगों को प्रभु द्वारा भेजे जाने के सम्बन्ध में सुसमाचार में सिर्फ यहीं पर उल्लेख किया गया है। यह वर्णन मत्ती 10 में बारहों को भेजे जाने की घटना से काफी मिलता जुलता है। किन्तु, मत्ती के स्थल में चेलों को उत्तरी क्षेत्रों (इस्राएल के घराने) में भेजा गया था, जबकि सत्तर को अब दक्षिण में उसी रास्ते से भेजा जा रहा है जिस रास्ते से प्रभु यीशु यरूशलेम की ओर बढ़ रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मिशन उत्तर में कैसरिया फिलिप्पी से, गलील से सामरिया होते हुए, यरदन पार, दक्षिण की ओर पिरिया, और फिर वापस यरदन पार यरूशलेम तक प्रभु यीशु की यात्रा की तैयारी के लिए था।

जबकि सत्तर की सेवकाई और पद अस्थायी थे, तथापि हमारे प्रभु द्वारा इन व्यक्तियों को दिए गए निर्देश में जीवन के ऐसे अनेक सिद्धान्तों को सुझाया गया है जो हर समय के मसीही पर लागू होते हैं।

इन में से कुछ सिद्धान्त निम्नलिखित हैं:

1. उसने उन्हें **दो दो करके** भेजा (पद 1)। यहाँ पर वैध गवाही पर जोर डाला गया है। ''दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाएगी'' (2 कुरि. 13:1)।

2. प्रभु के सेवकों को लगातार **विनती** करना चाहिए कि स्वामी **खेत काटने को मजदूर भेज दे** (पद 2)। भेजे जाने वाले सेवकों की संख्या की तुलना में सेवकों की आवश्यकता हमेशा अधिक रहती है। **मजदूर(**ों) के लिए विनती करते हुए, हमें स्वयं ही जाने के लिए तैयार रहना चाहिए – यह सीधी सी बात है। **विनती करो** (पद 2), और **जाओ** (पद 3) पर ध्यान दें।

3. यीशु के चेलों को एक प्रतिकूल वातावरण में भेजा जा रहा है (पद 3)। बाहरी तौर पर वे असहाय **भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच** में हैं। वे संसार से शानदार सत्कार पाने की नहीं, परन्तु सताव और यहाँ तक की मारे जाने की ही अपेक्षा कर सकते हैं।

4. अपनी सुविधाओं का ध्यान रखने की अनुमति चेलों को नहीं थी (पद 4अ)। **''न बटुआ, न झोली, न जूते लो;'' बटुआ** पैसा बचा कर रखने को दर्शाता है। **झोली** भोजन–सामग्री ले कर चलने को दर्शाती है। **जूते** या तो जूते के एक अतिरिक्त जोड़े के कहा गया है या फिर किसी ऐसी चरण–पादुका को जो अधिक आरामदायक हो। ये तीनों बातें एक ऐसी निर्धनता के विषय में बताते हैं, जो ऐसी है जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं और बहुतों को धनवान बना देते हैं (2 कुरि. 6:10)।

5. **''न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।''** मसीह के सेवकों को रास्ते पर लम्बा चौड़ा अभिवादन करने में समय बर्बाद नहीं करना है, इस प्रकार के लम्बे–चौड़े अभिवादन पूर्वी देशों में प्रचलित थे। यद्यपि उन्हें शिष्टाचार और सभ्यता का ध्यान रखना है, परन्तु अपने समय का उपयोग लाभहीन बातों में करने की बजाए सुसमाचार के महिमामय प्रचार में करना है। अनावश्यक विलम्ब करने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

6. उन्हें जहाँ कहीं अतिथि के रूप में ठहरने के लिए आमंत्रित किया जाए, उन्हें वह आमंत्रण स्वीकार करना चाहिए (5, 6 पदों में)। यदि उनके पहले नमस्कार को कोई स्वेच्छा से स्वीकार कर ले, इसका अर्थ है कि मेजबान और **कल्याण** के बीच एक परस्पर सम्बन्ध है। वह **कल्याण** के लिए पहचाना जाएगा, और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाना जाएगा जो **कल्याण** (शान्ति) के सन्देश को स्वीकार करता है। यदि चेलों का अतिथि सत्कार करने से कोई मना कर देता है, तो उन्हें हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है; उनका **कल्याण** उनके पास लौट आएगा, अर्थात्, कल्याण की कोई बर्बादी या हानि नहीं होगी, और दूसरे इसे स्वीकार कर लेंगे।

7. चेलों को **उसी घर में** ठहर जाना है जो घर सबसे पहले उन्हें अपने यहाँ ठहराता है (पद 7)। **घर घर में फिरना** इस बात को दर्शा सकता है कि वे सबसे अधिक सुख–सुविधाएं देने वाले ठहरने के आरामदायक स्थान को ढूंढ़ते फिर रहे हों, जबकि उन्हें साधारण रूप से और कृतज्ञतापूर्वक रहना चाहिए।

8. उन्हें खाने के लिए जो भी परोसा जाता है, उसे खाने के लिए संकोच नहीं करना चाहिए (पद 7)। प्रभु के सेवक होने के कारण वे भरणपोषण किए जाने के हकदार हैं।

9. नगर और शहर भी या तो प्रभु को स्वीकार करते हैं या उसका विरोध करते हैं, ठीक जिस प्रकार से लोग व्यक्तिगत रूप से करते हैं (8, 9 पदों में)। यदि कोई क्षेत्र सुसमाचार के सन्देश के प्रति ग्रहणशील है, तो चेलों को वहाँ सुसमाचार प्रचार करना है, वहाँ की पहुनाई को स्वीकार करना है, और सुसमाचार की आशीष को वहाँ लाना है। मसीह के सेवकों के सामने **जो कुछ** भी **रखा जाए वही** खा लेना है, भोजन को अपने न खाने लायक बता कर उनके लिए असुविधा उत्पन्न नहीं करना है। आखिर, सेवकों के जीवन में भोजन ही सब कुछ नहीं है। जिन नगरों में प्रभु के सेवकों को स्वीकार कर लिया जाता है उन नगरों के बीमारों को चंगाई प्राप्त होगी। साथ ही स्वर्ग के राज्य का राजा उनके बहुत **निकट** आ जाता है (पद 9)।

10. यदि कोई नगर, सुसमाचार को अस्वीकार कर देता है तो शायद उसे इसे फिर सुन पाने का अवसर कभी न प्राप्त हो (10–12 पदों में)। परमेश्वर की योजना में एक ऐसा दिन आएगा जिसके बाद से सुसमाचार प्रचार करना बन्द कर जाएगा। लोगों को सुसमाचार को हल्के में नहीं लेना है, क्योंकि इसे हमेशा के लिए वापस लिया जा सकता है। ज्योति का इंकार करने पर ज्योति वापस ले ली जाएगी। जिन नगरों और गाँवों को सुसमाचार सुनने का अवसर मिला, और जिसे उन्हों ने ठुकरा दिया उन स्थानों का न्याय सदोम से भी अधिक कठोरता से किया जाएगा। जितना बड़ा सुअवसर, उतनी बड़ी जिम्मेदारी।

10:13, 14 जब प्रभु यीशु इन बातों को कह रहा था, तो उसे गलील के उन नगरों के बारे में याद दिलाया गया जिन्हें दूसरों की तुलना में अधिक सुअवसर प्राप्त हुए। उन नगरों के लोगों ने प्रभु यीशु को उनकी सड़कों और गलियों में बड़े बड़े आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था। उन्होंने प्रभु यीशु के अनुग्रह के सन्देश को सुना था। उसने **खुराजीन** और **बैतसैदा** में जो कुछ किया यदि वही **सूर और सैदा** के प्राचीन देशों में किया जाता, तो समुद्र तट के ये नगर गहरे पश्चताप में डूब जाते। इसलिए कि गलील के ये नगर यीशु के कार्यों से प्रभावित नहीं हुए, उनका न्याय **सूर** और **सैदा** से भी अधिक कठोरता से किया जाएगा। यह इतिहास की सच्चाई है कि खुराजीन और बैतसैदा को इस रीति से नाश कर दिया गया कि वर्तमान में उनकी वास्तविक भोगौलिक स्थिति अज्ञात है।

10:15 नासरत से निकल जाने के बाद **कफरनहूम** यीशु का गृहनगर बन गया। इस नगर को सुअवसर मिला कि यह **स्वर्ग तक ऊँचा किया** किया। परन्तु इस नगर ने अपने सबसे प्रतिष्ठित नागरिक को तुच्छ जाना और अवसर को खो दिया। इसलिए उसका न्याय किया जाएगा और उसे **अधोलोक तक नीचे** लाया जाएगा।

10:16 यीशु ने इस कथन के साथ सत्तरों को दिए गए निर्देशों का समापन किया कि वे उसके भेजे हुए राजदूत हैं। जो उनको ठुकराता है वह उसे ठुकराता है, और जो उसे ठुकराता है वह परमेश्वर पिता को ठुकराता है।

इस बात पर रायल टिप्पणी करते हैं:

> नया नियम में इससे अधिक सख्त भाषा में शायद और कहीं एक विश्वासयोग्य सेवक के पद की प्रतिष्ठा और उसके सन्देश को सुनने से मना करने वालों पर आने वाले दोष के बारे में नहीं कहा गया है। हमें यह स्मरण रखना है कि यह बात बारह प्रेरितों को नहीं परन्तु सत्तर चेलों को सम्बोधित करते हुए कही गई है, जिनके नामों और जिनके इतिहास के बारे में हम कुछ नहीं जानते। स्कॉट इस पर टिप्पणी करते हुए यह कहते हैं, ''एक राजदूत को ठुकराना या फिर उसके साथ अवज्ञापूर्ण व्यवहार करना, उस राजा का तिरिस्कार है, जिसने इस राजदूत को जिम्मेदारी सौंप कर भेजा है और जिसका वह प्रतिनिधि है।'' प्रेरित और सत्तर चेले मसीह के राजदूत और प्रतिनिधि थे; और जिन्होंने उनका तिरिस्कार किया और उन्हें तुच्छ जाना, वास्तव में उन्होंने मसीह के साथ ऐसा किया।[33]

ड. सत्तर की वापसी (10:17–24)

10:17, 18 जब वे अपने प्रचार अभियान को पूरा कर वापस लौटे, तब इन **सत्तर** चेलों के मन में घमण्ड आने लगा कि **दुष्टात्मा भी** उनके **वश** में है। यीशु के

उत्तर को दो तरीकों से समझा जाना चाहिए। सबसे पहले, इसका अर्थ यह हो सकता है कि प्रभु ने उनकी सफलता में **शैतान के स्वर्ग से** गिराए जाने की घटना के पूर्वदृश्य को देखा। जैमिसन, फावसेट, और ब्राऊन जैसे विद्वानों ने प्रभु के शब्दों को सारांश में इस तरह से समझा है।

> मैं इस प्रचार अभियान में तुम्हारे पीछे पीछे गया था, और मैंने इस अभियान की सफलता को देखा है; जिस समय तुम मेरे नाम से दुष्टात्माओं को तुम्हारे वश में होते हुए देख कर सोच विचार कर रहे थे, मेरी दृष्टि के सामने एक अधिक बड़ा दृश्य उभर कर सामने आ रहा था; जिस तेजी से बिजली आकाश से पृथ्वी पर आती है, देखो! उसी तेजी से शैतान स्वर्ग से नीचे गिरते हुए देखा गया।

शैतान का गिरना अभी भी बाकी है, यह भविष्यकाल में होगा। वह मीकाएल और उसके स्वर्गदूतों के द्वारा स्वर्ग से गिराया जाएगा (प्रका. 12:7–9)। यह क्लेशकाल के दौरान, और पृथ्वी पर मसीह के महिमामय राज्य से पहले होगा।

यीशु के इन शब्दों की दूसरी सम्भावित व्याख्या घमण्ड के विरुद्ध एक चेतावनी है। प्रभु शायद यह कह रहा है, ''हाँ, तुम्हें बहुत घमण्ड हो गया है कि दुष्टात्माएं तुम्हारे वश में हैं। परन्तु ध्यान रखो – घमण्ड ही पाप की जननी है। लूसीफर के पतन और उसे स्वर्ग से नीचे गिराए जाने का कारण घमण्ड ही था। सावधान रहो कि तुम इस संकट से बचे रहो।''

10:19 प्रभु ने अपने चेलों को बुराई की शक्तियों के विरोध में **अधिकार** दिया था। उन्हें उनके अभियान के दौरान हानि से पूरी तरह सुरक्षित कर दिया गया था। परमेश्वर के सारे सेवकों पर यह लागू होता है; वे सुरक्षित रखे जाते हैं।

10:20 तौभी उन्हें **आत्मा** पर अपने अधिकार को लेकर **आनन्दित** नहीं होना है, **परन्तु** अपने स्वयं के उद्धार को लेकर आनन्दित होना है। यही एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ पर प्रभु ने अपने चेलों को आनन्दित होने से मना किया है। मसीह सेवकाई में सफलता से जुड़े कुछ नाजुक खतरे भी होते हैं, जबकि यह सच्चाई कि हमारे **नाम स्वर्ग पर लिखे हैं,** हमें परमेश्वर और उसके पुत्र के प्रति हमारे अपरिमित कर्ज को स्मरण दिलाती है। अनुग्रह से प्राप्त उद्धार के विषय में आनन्दित होना सुरक्षित है।

10:21 लोगों की भीड़ के द्वारा ठुकराए जाने के बाद, यीशु ने अपने दीन अनुयायियों की ओर देखा और **आनन्द से भर गया,** और परमेश्वर को परमेश्वर की अतुलनीय बुद्धि के लिए धन्यवाद दिया। ये सत्तर चेले इस जगत के **ज्ञानियों और समझदारों** में से नहीं थे। वे बुद्धिजीवी या विद्वान नहीं थे। वे ऐसों के सामने **बालकों** के समान थे! परन्तु वे ऐसे बालक थे जिनमें विश्वास, समर्पण, और पूर्ण आज्ञाकारिता थी। बुद्धिजीवी लोग अपने ही हित के लिए बहुत ही ज्ञानी, बहुत ही जानकार, बहुत ही चतुर थे। उनके घमण्ड ने उन्हें परमेश्वर के प्रिय पुत्र के सच्चे मूल्य को पहचानने से अन्धा कर दिया था। परमेश्वर बालकों के माध्यम से सबसे अधिक प्रभावशाली रीति से कार्य करता है। हमारा प्रभु उन लोगों के लिए आनन्दित था जिन्हें पिता ने उसे दिया था, और इन सत्तर चेलों की आरम्भिक सफलता के लिए भी, जिसने शैतान के अन्तिम पतन का पूर्वदर्शन करा दिया।

10:22 **सब कुछ** उसके **पिता ने** पुत्र को **सौंप दिया,** चाहे वह स्वर्ग की वस्तु हो, या पृथ्वी की, या फिर पृथ्वी के नीचे की। **कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, केवल पिता।** देहधारण से जुड़ा एक ऐसा रहस्य है, जिसकी थाह को **पिता** के छोड़ और कोई नहीं पा सकता। यह किसी भी प्राणी के समझ से बाहर की बात है कि परमेश्वर कैसे मनुष्य बन कर मानवीय शरीर में वास कर सकता है। **पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र के, और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।** परमेश्वर को भी समझ पाना मनुष्य की बुद्धि से बाहर है। पुत्र उसे पूरी तरह से जानता है, और पुत्र ने परमेश्वर को कमजोरों और तुच्छों, और नीचले तबके के लोगों पर प्रगट किया है जो उस पर विश्वास करते हैं (1 कुरि. 1:26–29)। जिन्होंने पुत्र को देखा है उन्होंने पिता को देख लिया है। एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने पिता को प्रगट किया (यूहन्ना 1:18)।

केली कहते हैं, ''ईश–पुत्र अवश्य ही परमेश्वर पिता को प्रगट करता है; परन्तु मनुष्य का मस्तिष्क स्वयं को टुकड़े–टुकड़े कर देता है जब वह मसीह की व्यक्तिगत महिमा की अनसुलझी पहेली को सुलझाने का प्रयास करता है।''

10:23, 24 **अकेले** में, प्रभु ने अपने **चेलों** को बताया कि वे अभूतपूर्व अनुग्रह के समय में जी रहे हैं।

पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं** ने **चाहा** था कि वे मसीह के दिन को **देखते**, परन्तु वे नहीं देख सके। प्रभु यीशु ने यहाँ पर दावा किया कि वह वही मसीहा है जिसके आने के विषय में पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी। चेलों को यह सुअवसर मिला था कि वे आश्चर्यकर्मों को **देखें**, और इस्राएल की आशा के सन्देश को **सुनें**।

इ. व्यवस्थापक और नेक सामरी (10:25–37)

10:25 व्यवस्थापक, जो कि मूसा की व्यवस्था की शिक्षाओं का एक विद्वान था, उसके प्रश्न में सच्चाई नहीं थी। वह उद्धारकर्ता को अपनी बातों में फँसाना चाह रहा था, ताकि उसे परीक्षा में डाल सके। शायद वह यह सोच रहा था कि प्रभु व्यवस्था का खण्डन करेगा। उसके लिए प्रभु यीशु सिर्फ एक **गुरू** था, और **अनन्त जीवन** उसके लिए एक ऐसी चीज़ थी जिसे वह कमा कर या अपनी योग्यता के द्वारा प्राप्त कर सकता था।

10:26–28 प्रभु ने इन सारी बातों को अपने ध्यान में रखते हुए उसे उत्तर दिया। यदि व्यवस्थापक प्रभु यीशु के पास दीन हो कर मन फिराव के भाव से आता, तो प्रभु यीशु उसे सुस्पष्ट उत्तर दिया होता। परिस्थिति के अनुसार, यीशु ने उसका ध्यान **व्यवस्था** की ओर दिलाया। **व्यवस्था** की मांग क्या थी? व्यवस्था की मांग यह थी कि मनुष्य **परमेश्वर से** सबसे बढ़कर **प्रेम** रखे, और अपने **पड़ोसी** से अपने समान प्रेम रखे। प्रभु यीशु ने उसे बताया कि यदि वह **यही** करेगा तो **जीवित** रहेगा।

सरसरी तौर पर पढ़ने से ऐसा लगता है कि प्रभु यह सिखा रहा है कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा उद्धार पाया जा सकता है। परन्तु ऐसा नहीं है। परमेश्वर ने कभी भी यह नहीं चाहा है कि कोई भी व्यक्ति कभी भी व्यवस्था का पालन कर के उद्धार पाए। दस आज्ञाएं उन लोगों को दी गईं थीं जो पहले से ही पापी थी। व्यवस्था का उद्देश्य पाप से उद्धार देना नहीं, परन्तु पाप के प्रति ज्ञान उत्पन्न करना था। व्यवस्था की भूमिका यह है कि वह मनुष्य को यह दिखाए कि वह कितना बड़ा पापी है।

यह असम्भव है कि पापमय मनुष्य अपने **सारे मन** से परमेश्वर को, और अपने **पड़ोसी** से अपने समान प्रेम रख सके। यदि वह अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक ऐसा कर सके तो अवश्य ही उसे उद्धार की आवश्यकता नहीं होगी। वह खोया हुआ नहीं माना जाएगा। परन्तु तौभी, उसका प्रतिफल सिर्फ इस पृथ्वी के जीवन तक सीमित रहेगा, उसे स्वर्ग का अनन्त जीवन नहीं मिलेगा। वह जितने दिन तक निष्पाप जीवन बिताता रहेगा, उतने दिनों तक वह जीवित रहेगा। अनन्त जीवन सिर्फ पापियों के लिए है जो अपनी खोई हुई अवस्था को पहचान लेते हैं और जो परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाते हैं।

परन्तु प्रभु यीशु का यह कथन, ''**यही कर, तो तू जीवित रहेगा,**'' पूरी तरह से एक परिकल्पना थी। यदि उसके द्वारा व्यवस्था का हवाला दिए जाने से व्यवस्थापक पर इसका उचित असर होता, तो वह कहता, ''यदि परमेश्वर मुझसे यह चाहता है, तो इसका अर्थ है कि मैं खोया हुआ, असहाय, और आशाहीन हूँ। मैं अपने आप को तेरे प्रेम और तेरी दया पर छोड़ देता हूँ। अपने अनुग्रह के द्वारा मेरा उद्धार कर!''

10:29 ऐसा कहने की बजाए, वह **अपनी तईं धर्मी** ठहराने का प्रयास करने लगा। उसे ऐसा क्या करना चाहिए? किसी ने उस पर दोष नहीं लगाया। उसे उसकी त्रुटि का अहसास हुआ और उसका हृदय अंहकार में उस अहसास को दबाने के लिये उठ खड़ा हुआ। उसने पूछा, ''**मेरा पड़ोसी कौन है**?'' यह उसकी एक कुटिल चाल थी।

10:30–35 उसके इसी प्रश्न के उत्तर में प्रभु **यीशु** ने नेक सामरी की कहानी को बताया। इस कहानी को हम अच्छे से जानते हैं। लूटेरों का शिकार व्यक्ति (लगभग निश्चित है कि वह एक यहूदी था) **यरीहो** के मार्ग में **अधमुआ** पड़ा हुआ था। यहूदी **याजक** और **लेवी** ने उसकी सहायता करने से मना कर दिया; शायद उन्हें डर था कि यह उन्हें फँसाने का एक षड्यंत्र हो, या फिर वे सोच रहे थे कि यदि वे कुछ देर और वहाँ रूके तो वे भी लूट का शिकार हो जाएंगे। एक **सामरी** (जिनसे यहूदी लोग घृणा करते थे) उस घायल व्यक्ति को बचाने के लिए आया, उसके घावों पर मरहम लगाया, उसे **सराय** में ले गया और उसकी **सेवा टहल** के लिए प्रबन्ध किया। इस सामरी के लिए, आवश्यकता में पड़ा एक यहूदी उसका पड़ोसी था।

10:36, 37 उसके बाद उद्धारकर्ता ने एक अचूक

प्रश्न पूछा। इस असहाय व्यक्ति के लिए इन **तीनों** में से **कौन** सा व्यक्ति **पड़ोसी** सिद्ध हुआ। **जिसने** उस पर **तरस खाया**, अवश्य ही। तब अवश्य ही, व्यवस्थापक को भी जाकर **ऐसा ही** करना चाहिए। ''यदि एक सामरी एक यहूदी पर दया करने के द्वारा उसका एक सच्चा पड़ोसी सिद्ध हो सकता है, तो इसका अर्थ यह है कि सारे मनुष्य पड़ोसी हैं।''[34]

याजक और लेवी में पाप में मरे हुए पापी की सहायता कर सकने में व्यवस्था की सामर्थहीनता को असानी से देखा जा सकता है; व्यवस्था की यह आज्ञा थी कि ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो'' परन्तु व्यवस्था ऐसा करने के लिए सामर्थ नहीं देती थी। न ही नेक सामरी की पहचान प्रभु यीशु के रूप में करना कठिन है जो हमें बचाने के लिये हमारे पास आया, हमें हमारे पापों से बचाया, और पृथ्वी से लेकर स्वर्ग तक और अनन्त तक के लिए हमारे लिए पूरा पूरा प्रबन्ध कर दिया। याजक और लेवी हमें हताश कर सकते हैं, परन्तु सामरी कभी भी नहीं।

नेक सामरी की कहानी में एक अनापेक्षित मोड़ है। यह एक प्रश्न के उत्तर से आरम्भ हुआ, ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' परन्तु यह एक प्रश्न के साथ समाप्त हुआ, ''आप अपने आप को किसका पड़ोसी सिद्ध करेंगे?''

फ. मरियम और मार्था (10:38–42)

10:38–41 प्रभु अब अपना ध्यान परमेश्वर के वचन और प्रार्थना पर केन्द्रित करते हुए उन्हें आशीष के दो महान माध्यम बताता है (10:38–11:13)।

मरियम . . . प्रभु के पाँवों के पास बैठकर उसके वचन सुन रही थी जबकि **मार्था** अपने खास मेहमान के लिए तैयारी करते करते **घबरा** उठी। मार्था चाहती थी कि **प्रभु** उसकी **बहिन** को डाँटे क्योंकि वह उसकी सहायता नहीं कर रही थी, परन्तु प्रभु यीशु ने बड़े स्नेह से **मार्था** को उसकी चिड़चिड़ाहट के लिए फटकार लगाई!

10:42 हमारा प्रभु हमारे स्नेह को हमारी सेवा से अधिक मूल्य देता है। हमारी सेवा घमण्ड और आत्म–महत्व से विकृत हो सकती है। प्रभु के साथ व्यस्त हो जाना **एक** ऐसी **बात** है जो अतिआवश्यक है, उस **उत्तम भाग** को **छीना न जाएगा**। सी.ए. कोट्स कहते हैं, ''प्रभु हमें मार्था से बदल कर मरियम बनाना चाहता है, ठीक जिस प्रकार से वह हमें व्यवस्थापक से बदल कर पड़ोसी बनाना चाहता है।''[35]

चार्ल्स आर. इर्डमान ने लिखा है:

> यद्यपि प्रभु उन सारी बातों में से अनेक की सराहना करता जो हम उसके लिए करते हैं, वह जानता है कि हमारी पहली आवश्यकता यह है कि हम उसके चरणों में बैठकर उसकी इच्छा को जाने; तब हमारे कार्यों में हम शान्तचित्त, सन्तुलित, और भले रहे पाएंगे, और अन्तत: हमारी सेवा में मरियम की वह सिद्धता आ जाएगी जैसे कि उसने बाद में यीशु के चरणों पर सुगन्धित इत्र डाल दिया, जिसकी सुगन्ध आज भी संसार को भर देती है।[36]

ग. चेलों की प्रार्थना (11:1–4)

अध्याय 10 और 11 के बीच में, जो कुछ हुआ, उसका वर्णन यूहन्ना 9:1–10:21 में दिया गया है।

11:1 लूका ने बार बार हमारे प्रभु के प्रार्थनामय जीवन का उल्लेख किया है, यहाँ पर ऐसा ही एक और उल्लेख पाया जाता है। हमारे प्रभु के प्रार्थनामय जीवन का उल्लेख लूका द्वारा उसे हमेशा परमेश्वर पर निर्भर रहने वाले मनुष्य के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य में बिल्कुल ठीक बैठता है। चेले समझ गए कि प्रार्थना यीशु के जीवन का सच्चा और अनिवार्य बल है। जब वे उसे प्रार्थना करते हुए सुनते थे, तो वे भी ऐसा करने के लिए प्रेरित हो गए। और इसलिए **चेलों में से एक** ने यीशु से कहा कि वह उन्हें **प्रार्थना करना . . . सिखा दे**।'' उसने यह नहीं कहा, ''हमें सिखा कि प्रार्थना *कैसे* करना है,'' परन्तु यह कहा, ''हमें **प्रार्थना करना . . . सिखा दे**।'' किन्तु, इस निवेदन में निश्चय ही तथ्य और विधि दोनों शामिल हैं।

11:2 प्रभु ने इस समय उन्हें प्रार्थना का जो नमूना बताया, वह मत्ती में दी गई ''प्रभु की प्रार्थना'' से कुछ भिन्न है। इन भिन्नताओं में भी एक उद्देश्य और अर्थ छिपा हुआ है। कुछ भी बिना महत्व लिए हुए नहीं है।

सबसे पहली बात, प्रभु ने चेलों को सिखाया कि वह परमेश्वर को **हे पिता** कहते हुए सम्बोधित करें। इस आत्मीय पारिवारिक रिश्ते से पुराना नियम के विश्वासी अनजान थे। इसका सीधा सीधा अर्थ है कि विश्वासियों

को अब परमेश्वर को एक प्रेमी स्वर्गीय **पिता** के रूप में सम्बोधित करना है। इसके बाद, हमें यह प्रार्थना करना सिखाया गया है कि परमेश्वर का **नाम पवित्र** है। यह विश्वासी के हृदय की अभिलाषा को व्यक्त करता है कि परमेश्वर का आदर किया जाए, उसकी बड़ाई की जाए, और उसकी सराहना की जाए। **''तेरा राज्य आवे''** कहने के द्वारा हम यह प्रार्थना करते हैं कि शीघ्र ही एक ऐसा दिन आएगा जब परमेश्वर बुराई की ताकतों को नाश करके, मसीह के व्यक्तित्व में, पृथ्वी पर सर्वोच्च प्रभु के रूप में राज्य करेगा, और उसकी **इच्छा पृथ्वी** पर भी वैसे ही पूरी होगी जैसे कि **स्वर्ग में पूरी होती है**।

11:3 इस तरह से परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करने के बाद, प्रार्थना करने वाले को यह सिखाया जा रहा है कि वह अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और इच्छाओं के लिए प्रार्थना करे। भोजन की आवश्यकता, शारीरिक और आत्मिक दोनों, जो सदा तक उत्पन्न रहती हैं, सामने लाई गई है। हमें **दिन भर** उस पर निर्भर रहते हुए जीना है, और उसे हर अच्छी वस्तु के स्रोत के रूप में पहचानना है।

11:4 इसके बाद **पापों** से क्षमा के लिए प्रार्थना की जानी है, इस प्रार्थना का आधार यह है कि हमने दूसरे के प्रति क्षमा करने वाली भावना दिखाई है। स्पष्ट है कि यहाँ पर पापों के दण्ड से क्षमा की बात नहीं की जा रही है। यह क्षमा मसीह द्वारा कलवरी पर पूर्ण किए गए कार्य पर आधारित है, और इसे सिर्फ (यीशु मसीह पर) विश्वास के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु यहाँ पर हम अभिभावकीय या प्रशासकीय क्षमा के बारे में बात कर रहे हैं। एक बार जब हमारा उद्धार हो जाता है, तब परमेश्वर पिता हमारे साथ अपने बच्चों के समान व्यवहार करता है। यदि वह हमारे हृदय में किसी कठोर या क्षमा न करने वाली भावना को पाता है, तो वह तब तक ताड़ना देता है जब तक कि हम टूट न जाएं और वापस उसकी संगति में न आ जाएं। यह क्षमा पिता के साथ संगति से सम्बन्धित है, रिश्ते से नहीं।

यह अनुनय, ''**हमें परीक्षा में न ला**'' कुछ लोगों के लिये समस्याएं प्रस्तुत करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर किसी को भी पाप करने के लिए परीक्षा में नहीं लाता। परन्तु वह अवश्य ही हमें जीवन की परीक्षाओं और परखे जाने के अनुभव से होकर जाने देता है, क्योंकि ये परीक्षाएं हमारी भलाई ही के लिए तैयार की गई हैं। यहाँ पर शायद यह विचार पाया जाता है कि हमें लगातार भटक जाने और पाप में गिर जाने की अपनी प्रवृत्ति के प्रति सचेत रहना है। हमें प्रभु से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें पाप में गिरने से बचाए, भले ही हम स्वयं ही वह पाप करना चाह रहे हों। हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि पाप करने का अवसर और पाप करने की अभिलाषा कभी साथ साथ न आए। यह प्रार्थना परीक्षा का प्रतिरोध कर पाने में स्वयं की योग्यता के प्रति एक स्वस्थ अविश्वास को व्यक्त करती है। हमें अन्त में यह प्रार्थना करनी है कि वह हमें **बुराई से** बचाए।[37]

ह. प्रार्थना के विषय पर दो दृष्टान्त (11:5–13)

11:5–8 प्रार्थना के विषय को जारी रखते हुए, प्रभु एक उदाहरण देते हुए बताता है कि परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं को सुनने और उनका उत्तर देने के लिए तैयार हो जाता है। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसके घर में **आधी रात** के समय एक अतिथि आया। लेकिन उस व्यक्ति के पास घर में अपने अतिथि को देने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था। इसलिए वह अपने पड़ोसी के घर गया, उसका दरवाजा खटखटाया, और उसने उससे **तीन रोटियां** मांगी। पहले तो पड़ोसी अपनी नींद में खलल डाले जाने से खीज उठा और उसने उठना न चाहा। तौभी चिन्तित मेजबान के द्वारा लगातार दरवाजा खटखटाने और जोर जोर से आवाज देने पर अन्ततः उसे उठना पड़ेगा, और वह उस व्यक्ति को उसके द्वारा मांगी गई वस्तु **देगा**।

इस उदाहरण को अपने जीवन में लागू करते समय हमें कुछ निष्कर्षों पर आने से बचना आवश्यक है। हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना है कि परमेश्वर हमारे द्वारा बार बार मांगे जाने पर खीज उठता है। और हमें यह निष्कर्ष भी नहीं निकालना है कि हठपूर्वक मांगते रहना ही अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने का एकमात्र उपाय है।

अवश्य ही इस उदाहरण के माध्यम से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यदि एक मनुष्य अपने मित्र की सहायता उसके हठ के कारण करने के लिए तैयार हो जाता है, तो फिर परमेश्वर अपने बच्चों की पुकार सुनने के लिए *और अधिक* तैयार क्यों न होगा।

11:9 इस उदाहरण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने प्रार्थनामय जीवन में हताश या निराश नहीं होना चाहिए। ''हम मांगते रहें . . . हम ढूंढ़ते रहें . . . हम खटखटाते रहें . . .।''[38] कभी कभी परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर पहली बार में ही दे देता है। परन्तु अनेक बार काफी प्रार्थनाएं करने पर ही हमें उत्तर मिलता है।

परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है:
कभी कभी, जब हृदय कमजोर होता है,
वह विश्वासियों को वही वस्तु दे देता है जिसे वह ढूंढ़ता है;
परन्तु बहुधा आवश्यक है कि विश्वास एक गहरी थाह को पाए,
और परमेश्वर के मौन पर भरोसा करे
जब वह कुछ नहीं कर रहा हो;
क्योंकि वह जिसका नाम प्रेम है सर्वोत्तम भेजेगा,
चाहे तारे जल जाएं, या पहाड़ी दीवारें गिर जाएं
परन्तु परमेश्वर सच्चा है; उसकी प्रतिज्ञाएं निश्चित हैं
वह हमारी सामर्थ है।

– एम. जी. पी.

ऐसा प्रतीत होता है कि यह दृष्टान्त धीरे धीरे प्रार्थना में आग्रह को बढ़ाते जाने की शिक्षा देता है – मांगना, फिर ढूंढ़ना, फिर खटखटाना।

11:10 यह दृष्टान्त यह शिक्षा देता है कि **जो कोई मांगता है उसे मिलता है, जो ढूंढ़ता है वह पाता है, जो खटखटाता है** उसके लिए **खोला जाता** है। यह एक प्रतिज्ञा है कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर हमें हमारे मांगने के अनुसार देता है या उससे भी बढ़कर देता है। ''नहीं'' के रूप में दिए गए उत्तर का अर्थ है कि वह जानता है कि हमारे द्वारा मांगी गई वस्तु हमारे लिए सर्वोत्तम नहीं है; ऐसी स्थिति में उसका इंकार हमारे प्रार्थना से बेहतर होता है।

11:11, 12 यह दृष्टान्त हमें यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर हमें **रोटी** मांगने पर **पत्थर** देकर कभी भी धोखा नहीं देगा। उन दिनों में रोटी का आकार एक गोल चपटी टिकिया के आकार का होता था, जो कि पत्थर के समान दिखाई देती थी। परमेश्वर कभी भी हमें न खाने योग्य वस्तु देकर हमारा उपहास नहीं करेगा जब हम उससे कुछ खाने के लिए मांग रहे हों। यदि हम **मछली** मांगें, तो वह हमें **सांप** नहीं देगा, अर्थात्, कोई ऐसी वस्तु हमें नहीं देगा जो हमें नाश करे। और यदि हम **अण्डा** मांगे, तो वह हमें **बिच्छु** नहीं देगा, अर्थात्, कोई ऐसी वस्तु नहीं देगा जो हमें असहनीय पीड़ा पहुँचाए।

11:13 एक मानवीय पिता खराब वस्तु नहीं देगा; भले ही वह पापमय स्वभाव का है, वह अपने **लड़केबालों** को **अच्छी वस्तुएं** देना जानता है। **तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।** जे. जी. बेलेट कहते हैं, ''यह एक अर्थपूर्ण बात है कि जो दान वह हमारे लिए सर्वोत्तम समझता है, और जिस दान को हमें देने की वह सबसे अधिक इच्छा रखता है, वह दान पवित्र आत्मा है।'' जब यीशु यह शिक्षा दे रहा था उस समय तक पवित्र आत्मा नहीं दिया गया था (यूहन्ना 7:39)। अब हमें पवित्र आत्मा को हमारे भीतर वास करने के लिए भेजने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हमारे मनफिराव (हृदय–परिवर्तन) के समय वह आकर हममें वास करता है (रोमि. 8:9ब; इफि. 1:13,1 4)।

परन्तु निश्चय ही हमारे लिए यह उचित और आवश्यक है कि हम पवित्र आत्मा की सेवकाई से सम्बन्धित अन्य बातों के लिए प्रार्थना करें। हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हम पवित्र आत्मा से सीखने के लिए तैयार रहें, हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हम पवित्र आत्मा के चलाए चलें, और हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि मसीह के लिए हमारी सारी सेवकाइयों में उसकी सामर्थ हम पर उण्डेली जाए।

यह सम्भव है कि जब यीशु ने चेलों को **पवित्र आत्मा** मांगने के लिए सिखाया, तो उसके कहने का अर्थ था कि वे पवित्र आत्मा की *सामर्थ* के लिए प्रार्थना करें जिसके द्वारा वे उस गैरसांसारिक शिष्यता का जीवन व्यतीत कर सकें जिसके विषय में उसने पिछले अध्यायों में शिक्षा दी है। इस समय तक, शायद उन्हें ऐसा लगने लगा था कि अपनी सामर्थ से शिष्यता की कसौटी पर खरा उतर पाना कितना असम्भव है। नि:सन्देह यह बात सत्य है। **पवित्र आत्मा** ही वह सामर्थ है जो एक विश्वासी को मसीही जीवन के लिए समर्थ बनाता है। इसलिए प्रभु यीशु यह चित्रित कर रहा है कि परमेश्वर मांगने वालों को यह सामर्थ देने के लिए आतुर है।

मूल यूनानी भाषा में, पद 13 में पवित्र आत्मा के साथ *उपपद* (द) नहीं प्रयोग किया गया है। प्रोफसर एच. बी. स्वेट इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कहते हैं कि जहाँ उपपद होता है, वहाँ पर यह स्वयं पवित्र के व्यक्तित्व पर जोर देने के लिए होता है, परन्तु जहाँ उपपद नहीं होता, वहाँ यह उस व्यक्तित्व के द्वारा दिए जा रहे

वरदान या उसके द्वारा हमारी ओर से किए जा रहे कार्य का सन्दर्भ होता है। इसलिए इस स्थल में, यह प्रार्थना पवित्र आत्मा के *व्यक्तित्व* को दिए जाने के लिए नहीं, परन्तु हमारे जीवनों में उसकी सेवकाई के विषय में अधिक संबंध रखती है। मत्ती 7:11 में दिए गए समानान्तर स्थल में भी इसका समर्थन किया गया है, जहाँ लिखा है, ". . . तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को *अच्छी वस्तुएं* क्यों न देगा!"

ई. यीशु अपने आलोचकों को उत्तर देता है (11:14–26)

11:14–16 पीड़ित व्यक्ति को **गूंगा** कर देने वाली एक **दुष्टात्मा** को निकाल कर यीशु ने लोगों के बीच में खलबली मचा दी। जबकि कुछ **लोगों ने अचम्भा किया**, वहीं दूसरे और भी खुलकर यीशु का विरोध करने लगे। लोगों ने मुख्य रूप से दो प्रकार से विरोध जताया। **उनमें से कितनों** ने उस पर यह दोष लगाया कि वह **शैतान नाम दुष्टात्माओं के प्रधान की सहायता से दुष्टात्माओं को** निकालता है। **औरों** का कहना था कि वह **आकाश का एक चिन्ह** दिखाए; शायद उनका विचार था कि इससे वह आरोप गलत सिद्ध हो जाएगा जो उसके विरूद्ध लगाया जा रहा था।

11:17, 18 इस आरोप का उत्तर, कि वह दुष्टात्माओं को इसलिए निकाल पाता है क्योंकि उसके भीतर बालजबूल (या दुष्टात्माओं का सरदार शैतान) है, 17–26 पदों में दिया गया है। चिन्ह मांगे जाने का उत्तर पद 29 में दिया गया है। सबसे पहले, प्रभु यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया कि **जिस राज्य में फूट होती है वह राज्य** अपने आप ही **उजड़ जाता है**। यदि वह शैतान के हाथ की कठपुतली है, तो इसका अर्थ हुआ कि **शैतान** अपने ही मातहतों के विरुद्ध लड़ रहा है। यह उपहासपूर्ण बात है कि शैतान इस प्रकार से अपने आप का विरोध करेगा और अपने ही उद्‌देश्यों को पूरी करने में बाधा पहुँचाएगा।

11:19 दूसरी बात, प्रभु ने अपने आलोचकों को यह स्मरण दिलाया कि आलोचकों के ही कुछ साथी भी दुष्टात्माओं को निकालने का काम किया करते थे। यदि प्रभु यीशु यह कार्य शैतान की सामर्थ से कर रहा है, तो अवश्य ही इसका अर्थ है कि वे भी उसी सामर्थ से ऐसा कर रहे हैं। नि:सन्देह, यहूदी लोग इस बात को कभी भी स्वीकार नहीं करते। तौभी वे प्रभु के तर्क के बल का इंकार किस प्रकार से कर सकते हैं? दुष्टात्मा को निकालने की सामर्थ परमेश्वर और शैतान दोनों में से किसी एक के ही ओर से आ सकती है; यह दोनों की ओर से नहीं आ सकती। यदि प्रभु यीशु शैतान की सहायता से यह कार्य कर रहा था, तो यहूदी जादू टोने भी उसी सामर्थ पर निर्भर थे। प्रभु यीशु पर दोष लगाने का अर्थ था उन पर भी दोष लगाना।

11:20 इसकी सही समझ यह है कि प्रभु यीशु **परमेश्वर की सामर्थ** (मूल में, परमेश्वर की उंगली) **से दुष्टात्माओं को निकालता** था। परमेश्वर की उंगली से उसका आशय क्या था? मत्ती द्वारा इस घटना के विषय किए गए वर्णन में (12:28) लिखा है, "पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि **परमेश्वर की सामर्थ** या परमेश्वर की उंगली का अर्थ और परमेश्वर के आत्मा का अर्थ एक ही है। यह तथ्य कि प्रभु यीशु परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था इस बात का प्रमाण है कि सचमुच में **परमेश्वर का राज्य** उस पीढ़ी के लोगों के **पास** आ पहुँचा था। यह राज्य स्वयं राजा के व्यक्तित्व के रूप में आया। यह सच्चाई, कि प्रभु यीशु वहाँ पर उपस्थित होकर इस प्रकार के आश्चर्यकर्म कर रहा था, इस बात का सकारात्मक प्रमाण थी कि परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त शासक इतिहास के मंच में प्रवेश कर चुका है।

11:21, 22 अब तक, शैतान **हथियार बान्धे** एक **बलवन्त मनुष्य** था, जिसका उसके दरबार में एकछत्र नियंत्रण था। जो दुष्टात्मा से ग्रसित हो जाते थे वे उसके मुट्ठी में आ जाते थे, और उसे चुनौती देने वाला कोई भी नहीं था। प्रभु यीशु शैतान **से बढ़कर . . . बलवन्त** था, वह आकर उस पर चढ़ाई करता है, उससे **जीत** जाता है, उससे उसका **हथियार** छीन लेता है, और उसकी **सम्पत्ति लूट** लेता है।

उसके आलोचकों ने भी इस बात से इंकार नहीं किया कि दुष्टात्माएं प्रभु यीशु के द्वारा निकाली जा रही हैं। इसका अर्थ यह था कि शैतान पर जीत हासिल कर ली गई

है और उसके पीड़ितों को छुटकारा दे दिया गया है। इन पदों में ये ही बातें मुख्य रूप से पाई जाती हैं।

11:23 उसके बाद यीशु ने आगे कहा कि **जो** उसके **साथ नहीं** वह उसके **विरोध** में है, और जो उसके **साथ नहीं बटोरता** वह **बिथराता** है। जैसा कि किसी ने कहा है, ''एक मनुष्य या तो रास्ते पर जा रहा है, या फिर रास्ते में आड़े आ रहा है।'' इस पद और 9:50 में जो विरोधाभास प्रतीत होता है उस पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं। जहाँ यीशु के व्यक्तित्व और कार्य की बात आती है, हम तठस्थ नहीं हो सकते। जो व्यक्ति मसीह की ओर नहीं है वह उसके विरोध में है। परन्तु जब यह मसीही सेवकाई के सम्बन्ध में कहा जाता है, तब इसका अर्थ है कि जो मसीह के सेवकों के विरोध में नहीं है वह उनके पक्ष में है। पहले पद में, यह उद्धार के विषय से सम्बन्धित है; दूसरे में यह सेवकाई के विषय से सम्बन्धित है।

11:24-26 ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु अपने आलोचकों पर पलटवार कर हावी हो रहा है। उन्होंने उस पर दुष्टात्माग्रसित होने का दोष लगाया था। अब वह उनकी जाति को एक ऐसे मनुष्य के समान बताता है जिसमें से बुरी आत्मा अस्थायी तौर पर बाहर निकाली गई है। यह बात उनके इतिहास पर पूरी तरह से लागू होती है। बन्धुआई से पहले, इस्राएली जाति मूर्तिपूजा की बुरी आत्मा से ग्रसित थी। परन्तु बन्धुआई ने उस बुरी आत्मा से उनका पीछा छुड़ा दिया, और उस समय से यहूदी लोगों ने कभी भी मूर्तिपूजा नहीं की। उनका घर **झाड़ा-बुहारा** गया और **सजा** दिया गया, परन्तु उन्होंने प्रभु को भीतर आकर उस पर अधिकार करने नहीं दिया। इसलिए उसने यह भविष्यद्वाणी की कि आने वाले दिनों में, यह **बुरी आत्मा . . . अपने से और बुरी सात आत्माओं** को लेकर आ जाएगी **और वे** उस घर में **पैठकर** वहाँ **वास** करेंगी। यह मूर्तिपूजा के उस विकराल रूप की ओर संकेत कर रहा है जिसे यहूदी जाति क्लेशकाल के दौरान अपना लेगी; वे लोग ख्रीष्ट-विरोधी को परमेश्वर के रूप में स्वीकार कर लेंगे (यूहन्ना 5:43) और इस पाप का दण्ड इतना बड़ा होगा जितना कि यहूदी जाति ने आज तक नहीं जाना है।

यद्यपि यह उदाहरण प्राथमिक रूप से इस्राएल के *राष्ट्रीय* इतिहास पर लागू होता है, यह एक *व्यक्ति विशेष के* जीवन में केवल मन-फिराव या सुधार की अपर्याप्तता की ओर भी संकेत करता है। नया जीवन का अनुभव कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। अपने हृदय और जीवन में प्रभु यीशु का स्वागत करना आवश्यक है। अन्यथा जीवन में पाप के ऐसे ऐसे भयानक रूपों के प्रवेश कर जाने का खतरा बना रहेगा जैसे पाप हमारे जीवन में कभी नहीं रहे।

ज. मरियम से भी अधिक धन्य (11:27, 28)

एक स्त्री **भीड़ में से** निकली और उसने इन शब्दों के साथ प्रभु यीशु का अभिवादन किया, ''**धन्य (है) वह गर्भ जिस में तू रहा; और वे स्तन, जो तू ने चूसे**।'' हमारे प्रभु का उत्तर बहुत ही अर्थपूर्ण था। उसने इस बात से इंकार नहीं किया कि उसकी माता मरियम धन्य थी, परन्तु उसने यह भी कहा कि **परमेश्वर का वचन** सुनना **और** मानना और भी *अधिक* महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, यहाँ तक कि कुंवारी मरियम प्रभु यीशु की माता होने के कारण जितनी धन्य थी, उससे अधिक धन्य वह मसीह पर विश्वास करने वाली और उसके पीछे चलने वाली होने के कारण थी। शारीरिक रिश्ते उतने महत्वपूर्ण नहीं होते जितने कि आत्मिक रिश्ते। यह बात ऐसे लोगों को मौन करने के लिए पर्याप्त है जो मरियम को आराधना किए जाने योग्य मानते हैं।

क. योना का चिन्ह (11:29-32)

11:29 पद 16 में, कुछ लोगों ने स्वर्ग से एक **चिन्ह** मांग कर यीशु की परीक्षा की। अब वह इस मांग का उत्तर उन्हें बुरी पीढ़ी **(इस युग के लोग बुरे हैं)** कहते हुए देता है। वह प्राथमिक रूप से उस समय की यहूदी पीढ़ी के बारे में कह रहा था। उस पीढ़ी के यहूदियों को यह सुअवसर मिला था कि वे परमेश्वर के पुत्र की उपस्थिति में जीवन बिताएं। उन्होंने उसके वचन को सुना और उसके आश्चर्यकर्मों के गवाह बने। परन्तु वे इससे सन्तुष्ट नहीं हुए। अब वे यह बहाना बनाने लगे कि यदि अब उन्हें स्वर्ग से सिर्फ एक महान, अलौकिक आश्चर्यकर्म यीशु के द्वारा दिखा दिया जाए, तो वे उस पर विश्वास कर लेंगे। प्रभु का उत्तर यह था कि **यूनुस के चिन्ह को छोड़** कर और कोई दूसरा **चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।**

11:30 वह अपने स्वयं के पुनरूत्थान के विषय में

बातचीत कर रहा था। जिस प्रकार से **यूनुस** को, मछली के पेट में तीन दिन और तीन रात रहने के बाद समुद्र से छुड़ाया गया, उसी प्रकार से प्रभु यीशु तीन दिन और तीन रात कब्र में रहने के बाद मृतकों में से जिलाया जाएगा। दूसरे शब्दों में, इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु का सबसे अन्तिम और निर्णायक आश्चर्यकर्म उसका पुनरूत्थान होगा। **यूनुस नीनवे के लोगों के लिए चिन्ह ठहरा**। जब वह इस अन्यजाति महानगर में प्रचार करने को गया, तब वह प्रतीकात्मक रूप से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में गया जो मृतकों में से जी उठा।

11:31, 32 दक्खिन की रानी, शीबा की अन्यजाति रानी, बड़ी दूर की यात्रा कर **सुलैमान का ज्ञान सुनने** के लिए आई। उसने एक भी आश्चर्यकर्म नहीं देखा था। यदि जिन दिनों में प्रभु इस पृथ्वी पर था उन दिनों को देखने का उसे सुअवसर मिला होता, तो जरा सोचिए कि वह कितनी खुशी से प्रभु को स्वीकार कर लेती! इसलिए वह **न्याय के दिन** में उन बुरे लोगों के विरुद्ध खड़ी होगी जिन्हें प्रभु यीशु के आलौकिक कार्यों को देखने का अवसर मिला और उसके बाद भी उन्होंने उसका तिरिस्कार कर दिया। मानव इतिहास के मंच पर **यूनुस से भी बड़ा** और **सुलैमान से भी बड़ा** एक व्यक्ति प्रवेश कर चुका था। जबकि नीनवे के लोगों ने **यूनुस का प्रचार सुनकर मन फिरा** लिया, इस्राएल के लोगों ने **यूनुस से भी** बड़े व्यक्ति के प्रचार को सुन कर मन फिराने से मना कर दिया।

अविश्वासी लोग आज योना की कहानी का उपहास करते हैं, और इसे एक इब्री दन्तकथा बताते हैं। यीशु ने योना को इतिहास के एक वास्तविक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है, ठीक जैसे उसने सुलैमान को किया। जो लोग यह कहते हैं कि यदि उन्हें एक आश्चर्यकर्म दिखा दिया जाए तो वे विश्वास कर लेंगे, वे गलत हैं। विश्वास प्रमाणों पर नहीं परन्तु परमेश्वर के जीवित वचन पर आधारित है। यदि एक मनुष्य परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं करता, तो वह एक व्यक्ति के मर कर जी उठने के बाद भी विश्वास नहीं करेगा। चिन्ह मांगने वाले रवैये से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। यह विश्वास नहीं परन्तु दृष्टि है। अविश्वास कहता है, ''पहले मुझे देख लेने दो तब मैं विश्वास करूंगा।'' परमेश्वर कहता है, ''पहले विश्वास करो तो तुम देख सकोगे।''

ई. जलते हुए दीये का दृष्टान्त (11:33–36)

11:33 पहले तो शायद हमारे मन में यह विचार आ सकता है कि इन पदों का पिछले पदों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु बारीकी से देखने पर, हम दोनों के बीच एक सारभूत कड़ी को पाते हैं। यीशु ने अपने सुननेवालों को यह स्मरण दिलाया कि **कोई** भी व्यक्ति जलता हुआ **दीया** टोकरी या **पैमाने के नीचे** नहीं रखता। वह इसे **दीवट** के नीचे रखेगा ताकि इसे देखा जा सके और भीतर प्रवेश करने वालों को इसका उजियाला मिल सके।

इस बात को इस तरह से लागू किया जाना है: परमेश्वर वह व्यक्ति है जिसने **दीया** बारा। प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा उसने संसार को प्रकाशमान करने के लिए एक ज्योति का प्रबन्ध किया। यदि कोई ज्याति को नहीं देखता, तो यह परमेश्वर की गलती नहीं है। अध्याय 8 में, प्रभु यीशु ऐसे लोगों के उत्तरदायित्व के बारे में बात कर रहा है जो पहले से ही उसके चेले थे और जो उसके विश्वास का प्रचार कर रहे थे और इसे उन्होंने पैमाने के नीचे छिपा कर नहीं रखा था। यहाँ 11:33 में वह चिन्ह ढूंढ़ने वाले अपने आलोचकों की पोल खोलते हुए बता रहा है कि उनके अविश्वास का कारण उनका लालच और लज्जा का भय है।

11:34 उनका अविश्वास उनके अशुद्ध अभिप्राय का परिणाम था। भौतिक संसार में, **आँख** उसे कहते हैं जिससे **सारा शरीर . . . उजियाला** प्राप्त करता है। यदि आँख स्वस्थ है, तो व्यक्ति ज्योति को देख सकता है। परन्तु यदि आँख खराब हो, अर्थात्, वह अन्धा हो, तो ज्योति भीतर नहीं जा सकती।

आत्मिक संसार में भी यही बात लागू होती है। यदि एक व्यक्ति यह जानने के लिए अपनी इच्छा में सच्चा है कि क्या यीशु ही परमेश्वर द्वारा भेजा गया मसीह है, तब परमेश्वर इस बात को उस पर प्रगट करेगा। परन्तु यदि उसका अभिप्राय शुद्ध नहीं है, यदि वह अपने लोभ को छोड़ नहीं पाता, और यदि उसे लगातार इस बात का भय है कि लोग क्या कहेंगे, तो फिर इसका अर्थ है कि उद्धारकर्ता के सच्चे मूल्य को जान पाने के प्रति वह अन्धा हो चुका है।

11:35 यीशु मसीह जिन लोगों को सम्बोधित करते

हुए इन बातों को कह रहा है, वे लोग अपने आप को बहुत बुद्धिमान समझ रहे थे। उनका मानना था कि उनके पास बहुत ढेर सारा उजियाला है। परन्तु प्रभु यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि वे इस बात की ओर ध्यान दें कि उनके भीतर जो **उजियाला** है वह वास्तव में **अन्धेरा** है। अपने आप को बुद्धिमान और सर्वोत्तम समझने के कारण ही वे मसीह से दूर रह गए।

11:36 जिस व्यक्ति के अभिप्राय शुद्ध हैं, जो अपना सारा व्यक्तित्व जगत की ज्योति यीशु को समर्पित कर देता है, वह आत्मिक प्रकाश से लबालब हो जाता है। उसका भीतरी जीवन मसीह के द्वारा उसी तरह से प्रकाशमान कर दिया जाता है जिस तरह से उसका शरीर, जब वह एक दीये की सीधी रोशनी में बैठता है।

म. बाहरी और भीतरी स्वच्छता (11:37–41)

11:37–41 जब यीशु ने **किसी फरीसी** द्वारा भोजन के लिए दिए गए आमंत्रण को स्वीकार किया, तो मेजबान यह देखकर चौंक गया कि यीशु ने **भोजन करने से पहले स्नान नहीं किया**। यीशु ने उसके विचारों को पढ़ लिया और उसे इस पाखण्ड के लिए जमकर फटकारा। यीशु ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि **कटोरे और थाली को ऊपर** से नहीं परन्तु **भीतर** से साफ रखना महत्वपूर्ण है। बाहर से, फरीसी लोग बहुत ही धर्मी दिखाई देते थे, परन्तु भीतर से वे टेढ़े और दुष्ट थे। जिस परमेश्वर ने मनुष्य के **बाहर का भाग बनाया** उसी परमेश्वर ने **भीतर का भाग** भी बनाया, और वह चाहता है कि हमारा भीतरी जीवन शुद्ध रहे। ''मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है'' (1 शमू. 16:7)।

11:41 प्रभु यीशु इस बात को जानता था कि ये फरीसी लोग कितने लोभी और स्वार्थी हैं, इसलिए उसने अपने मेजबान से कहा कि वे पहले **भीतर वाली वस्तुओं को दान** करें जैसा कि उसने किया। यदि वह दूसरों से प्रेम करने की बुनियादी जाँच में खरा उतरता है, तो सचमुच में **सब कुछ** उसके लिए **शुद्ध** हो जाएगा। एच. ए. आइरनसाइड ने इस पर यह टिप्पणी दी है:

> जब परमेश्वर का प्रेम हृदय को भर देता है ताकि एक व्यक्ति दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति चिन्तित हो जाए, तभी ये बाहरी रीतिविधियाँ अर्थपूर्ण हो पाएंगी। जो लगातार अपने लिए धन जमा करता जा रहा है, और निर्धनों और जरूरतमंदों को लेकर संवेदनहीन है, वह इस बात को प्रमाणित करता है कि परमेश्वर का प्रेम उसके जीवन में वास नहीं करता।[29]

एक अज्ञात लेखक ने लिखा है:

> लूका 11:39–52 पदों में फरीसियों और व्यवस्थापकों के विरूद्ध कही गई गम्भीर बातें एक फरीसी के भोजन की मेज़ पर से कही गईं (पद 37)। हम जिसे ''अच्छा स्वाद'' कहते हैं, प्राय: वही सच्चाई के प्रति निष्ठा बनाए रखने से रोक देता है; जब हमें अप्रसन्नता जाहिर करना चाहिए तब हम मुस्कुरा देते हैं; जब हमें बोलना चाहिए तो हम मौन रह जाते हैं। परमेश्वर पर विश्वास को छोड़ देने की बजाए भोज के समारोह को छोड़ देना चाहिए।

न. फरीसियों को फटकार (11:42–44)

11:42 फरीसी लोग बाहरी बातों पर जोर दिया करते थे। वे व्यवस्था की रीति–विधियों का पालन करने में एक एक बारीकियों का ध्यान रखते थे, जैसे **साग–पात** का दसवांश देना। परन्तु परमेश्वर और मनुष्य के साथ अपने सम्बन्धों में वे लापरवाही करते थे। वे गरीबों पर अत्याचार करते थे और परमेश्वर से प्रेम नहीं रखते थे। प्रभु ने उन्हें इसलिए नहीं फटकारा कि वे **पोदीने और सुदाव** और **साग–पात** का दसवांश देते थे, परन्तु सिर्फ यह कहा कि वे इस तरह से दसवांश देने में तो उत्साह दिखाते हैं परन्तु जीवन के बुनियादी कर्तव्यों, जैसे **न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को** अनदेखा करते हैं। वे दोयम दर्जे की बातों पर तो जोर देते थे परन्तु प्राथमिक बातों को अनदेखा कर देते थे। वे लोगों को दिखाने वाले कार्य करने में तो काफी आगे थे परन्तु जिन कार्यों को सिर्फ परमेश्वर देख सकता है उन कार्यों के प्रति लापरवाह थे।

11:43 वे अपने आप को सामने लाना पसन्द करते थे, वे **आराधनालयों** में मुख्य–मुख्य स्थान पाना चाहते थे, और **बाजारों** में जितना हो सके उतना लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे। इस प्रकार से

वे न सिर्फ बाहरी दिखावा करने के बल्कि अंहकार के भी दोषी थे।

11:44 अन्त में प्रभु ने उनकी तुलना बिना निशानी वाली **कब्रों** (ऐसी कब्र जिन्हें देख कर एकदम से पता नहीं चलता था कि ये कब्रें हैं) से किया। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, यदि कोई किसी कब्र को छू ले तो वह सात दिनों तक अशुद्ध ठहरता था (गिनती 19:16), चाहे उस समय वह न जानता हो कि यह कब्र है। फरीसी लोग बाहर से यह दिखावा करते थे कि वे समर्पित धार्मिक अगुवे हैं। परन्तु उन्हें एक निशानी के रूप में कुछ पहनना चाहिए था जो लोगों को सचेत करे कि उन्हें (फरीसियों) को छू लेना वाला व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा। वे बिना निशान की कब्रों के समान थे, और भ्रष्टाचार और अशुद्धता से भरे हुए थे, और अपनी बाह्यवादिता और अहंकार से लोगों को संक्रमित कर देते थे।

ओ.व्यवस्थापकों की भर्त्सना की गई (11:45–52)

11:45 **व्यवस्थापक** शास्त्रियों को कहा जाता था – वे मूसा की व्यवस्था की व्याख्या करने में निपुण माने जाते थे। किन्तु उनकी निपुणता सिर्फ लोगों को यह बताने तक सीमित थी कि उन्हें क्या करना है। वे स्वयं इसका पालन नहीं किया करते थे। व्यवस्थापकों में से एक ने यीशु के वचनों की धार से अपने आप को आहत महसूस किया, और उसे ध्यान दिलाया कि फरीसियों की आलोचना करने के द्वारा वह व्यवस्था के विशेषज्ञों का भी अपमान कर रहा है।

11:46 प्रभु ने इस अवसर का उपयोग व्यवस्थापकों के कुछ पापों के लिए उन्हें झिड़कने के लिए किया। सबसे पहली बात वे सब प्रकार के वैधानिक **बोझ** डाल कर लोगों पर अत्याचार करते थे, परन्तु इस **बोझ** को उठाने में उनकी कोई भी मदद नहीं किया करते थे। जैसे कि केली ने टिप्पणी की है, ‘‘वे जिन लोगों से अपने लिये प्रतिष्ठा पाना चाहते थे, उन्हीं लोगों की उनके प्रति घृणा के लिये वे बदनाम थे’’[40] उनके अनेक नियम मनुष्य के बनाए गए नियम थे और उनका कोई महत्व नहीं था।

11:47, 48 व्यवस्थापक पाखण्डी हत्यारे थे। वे परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं की सराहना करने का दिखावा करते थे। उनके दिखावे की हद यह थी कि वे पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं** की कब्रों पर स्मारक भी बनाते थे। यह निश्चय ही उनकी गहरी श्रद्धा का प्रमाण प्रतीत होता था। परन्तु प्रभु यीशु भिन्नता को पहचानता था। यद्यपि बाहरी तौर पर वे भविष्यद्वक्ताओं का घात करने वाले यहूदी पूर्वजों से सम्बन्ध विच्छेद करने का दिखावा कर रहे थे, परन्तु वास्तव में वे उनके ही पद चिन्हों पर चल रहे थे। जिस समय वे भविष्यद्वक्ताओं की कब्रों पर स्मारक का निर्माण कर रहे थे, उसी समय वे परमेश्वर के महानतम भविष्यद्वक्ता, स्वयं प्रभु यीशु की मृत्यु का षड़यत्र रच रहे थे।

11:49 पद 49 की तुलना मत्ती 23:34 से करने पर, हम पाएंगे कि यीशु स्वयं **परमेश्वर की बुद्धि** है। यहाँ पर वह **परमेश्वर की बुद्धि** को यह कहते हुए उद्धरित करता है, ‘‘**मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं . . . को भेजूंगी।**’’ मत्ती में उसने इसे पुराना नियम या किसी अन्य स्त्रोत से लिए गए उद्धरण के रूप में नहीं परन्तु सीधे सीधे अपने कथन के रूप में प्रस्तुत किया है। (1 कुरि. 1:30 भी देखें जहाँ मसीह को बुद्धि कहा गया है।) प्रभु यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की कि वह **भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को** अपनी पीढ़ी के लोगों के पास भेजेगा और वे लोग उन्हें **मार डालेंगे और सताएंगे।**

11:50, 51 वह उस पीढ़ी के लोगों से परमेश्वर के सारे भविष्यद्वक्ताओं, सबसे पहले उल्लेखित **हाबिल** से लेकर सबसे अन्त में उल्लेखित **जकरयाह** तक, **जो वेदी और मन्दिर के बीच में घात किए गए,** (2 इतिहास 24:21) के लोहू के लेखे की मांग करेगा। यहूदियों द्वारा जमाए गए क्रम में पुराना नियम में दूसरा इतिहास की पुस्तक सबसे अन्तिम पुस्तक थी। इस तरह से प्रभु यीशु ने जब **हाबिल** और **जकरयाह** का उल्लेख किया तो उसमें सारे के सारे शहीद शामिल थे। जब वह इन बातों को कह रहा था तब वह जानता था कि उस समय की पीढ़ी उसे क्रूस पर चढ़ा कर मार डालेगी, और इस प्रकार से परमेश्वर के लोगों पर अपने द्वारा किए गए सारे अत्याचार के उत्कर्ष तक पहुँच जाएगी। इसलिए कि वे उसकी हत्या करेंगे, पिछले युगों की सारी हत्याओं का दोष भी उन पर ही डाला जाएगा।

11:52 अन्त में, प्रभु यीशु ने **व्यवस्थापकों** को **ज्ञान की कुंजी ले** लेने के लिए डांटा, अर्थात्, परमेश्वर

के वचन को लोगों से वंचित करने के लिए डांटा। यद्यपि बाहरी तौर पर वे पवित्रशास्त्र के प्रति निष्ठा प्रगट करते थे, तौभी उन्होंने हठपूर्वक उस व्यक्ति को स्वीकार करने से मना कर दिया जो पवित्रशास्त्र का प्रमुख विषय है। और उन्होंने दूसरों को मसीह के पास आने से **रोक दिया**। वे स्वयं उसे स्वीकार करना नहीं चाहते, और वे यह भी नहीं चाहते कि दूसरे उसे स्वीकार करें।

प. शास्त्रियों और फरीसियों का प्रत्युत्तर (11:53,54)

स्पष्ट है कि शास्त्री और फरीसी प्रभु द्वारा सीधे सीधे लगाए गए दोष से क्रोधित हो गए। वे उसके **बहुत पीछे पड़ गए और** उसे उसकी ही बातों में फँसाने का प्रयास करने लगे। उन्होंने हरसम्भव प्रयास किया कि वह ऐसी **बहुत सी बातों की चर्चा करे** जिसके आधार पर वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहरा सकें। ऐसा करने के द्वारा, वे सिर्फ इतना ही प्रमाणित कर पाए कि वह उनके चरित्र को पढ़ पाने में कितना सटीक था।

VIII. यरूशलेम की ओर बढ़ते हुए शिक्षा और चंगाई की सेवकाई (12–16 अध्यायों में)

अ.चेतावनियाँ और ढाढ़स की बातें (12:1–12)

12:1 जब यीशु फरीसियों और व्यवस्थापकों की भर्त्सना कर रहा था उस समय वहाँ पर **हजारों की भीड़ लग गई**। कोई झगड़ा या विवाद अक्सर भीड़ को एकत्रित कर लेता है, परन्तु नि:सन्देह यह भीड़ यहाँ पर यीशु द्वारा निर्भीक होकर पाखण्डी धार्मिक अगुवों की भर्त्सना किए जाने पर एकत्रित हुई थी। यद्यपि पाप के साथ समझौता न करने वाले रवैये को अधिकांश लोग पसन्द नहीं करते, तौभी यह रवैया उस मनुष्य को उसके हृदय में धर्मी ठहरा कर उसकी सराहना करता है। सत्य हमेशा स्वत: प्रमाणित होता है। **अपने चेलों** की ओर मुड़ते हुए, यीशु ने चेतावनी दी, ''**फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना**।'' उसने उन्हें समझाया कि खमीर कपट का एक चित्र या प्रतीक है। कपटी व्यक्ति वह होता है जो मुखौटा पहनता है, जिसका बाहरी रूप उसके भीतरी रूप से पूरी तरह भिन्न होता है। फरीसी लोग अपने आप को सद्‌गुणों के आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते थे, परन्तु वास्तव में वे शातिर कपटी थे।

12:2, 3 एक ऐसा दिन आएगा जब सारी पोल खुल जाएगी। उन्होंने जो कुछ ढांपा है वह **खोला** जाएगा, और उन्होंने **अन्धेर में** जो कुछ किया है वह खींच कर **उजाले** में लाया जाएगा।

जिस तरह से कपट की पोल खुलना अटल है, उसी तरह से सत्य की विजय भी अटल है। अब तक, चेलों के द्वारा प्रचार किया गया सन्देश तुलनात्मक दृष्टि से कुछ धुंधला था और सीमित लोगों को ही सुनाया गया था। परन्तु इस्राएल के द्वारा मसीह को ठुकरा दिए जाने के बाद से, और पवित्र आत्मा दिए जाने के बाद से, चेले बेधड़क प्रभु यीशु के नाम से दूर दूर जाकर सुसमाचार का प्रचार करेंगे। उसके बाद से इसका प्रचार **कोठों पर** (घरों की छत पर) किया जाएगा, तुलनात्मक दृष्टिकोण से गोडेट टिप्पणी करते हुए यह कहते हैं, ''आज जिनकी आवाजों को सुनने वाला कोई नहीं है, जो आज सीमित घेरे और धुंधलेपन में रह गए हैं, एक ऐसा दिन आएगा जब वे संसार के गुरू बन जाएंगे।''

12:4, 5 ढाढ़स प्रदान करने वाले और गर्मजोशी से कहे गए शब्द ''**मेरे मित्र**'' कहते हुए प्रभु यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी कि वे किसी भी तरह की परीक्षा आने पर भी इस अनमोल मित्रता को लेकर न शर्माएं। संसार भर में मसीही सन्देश का प्रचार प्रभु के निष्ठावान चेलों पर सताव और मृत्यु लेकर आएगा। परन्तु फरीसी जैसे लोग चेलों के साथ एक सीमा तक ही ऐसा कर पाएंगे। शारीरिक मृत्यु वह सीमा है। उन्हें इससे नहीं डरना है। परन्तु प्रभु उनके सताने वालों को इससे कहीं अधिक भयानक दण्ड देगा, और यह दण्ड **नरक** की अनन्त मृत्यु का होगा। और इसलिए चेलों को मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से **डरना** है।

12:6, 7 चेलों की सुरक्षा के प्रति परमेश्वर की चिन्ता पर जोर देने के लिए, प्रभु यीशु ने **गौरैयों** के प्रति पिता परमेश्वर की चिन्ता का उल्लेख किया। मत्ती 10:29 में हम यह पढ़ते हैं कि एक पैसे में दो गौरैया बिकती थीं।

यहाँ पर हमें यह पता चलता है कि **दो पैसे की पाँच गौरैया** बिकती हैं। दूसरे शब्दों में, यदि कोई चार गौरैया खरीदता है तो उसे एक गौरैया ऐसे ही मुफ्त में दे दी जाती है। और तौभी यह पाँचवी गौरैया जिसका कोई व्यवसायिक मूल्य नहीं है **परमेश्वर** की दृष्टि में भुलाई नहीं जाती। यदि परमेश्वर इस पाँचवी गौरैया की भी चिन्ता करता है, तो वह ऐसे मनुष्यों की कितनी चिन्ता करेगा जो उसके पुत्र के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए जाते हैं! वह उनके **सिर के सब बाल** को भी गिन गिन कर अपने ध्यान में रखता है।

12:8 उद्धारकर्ता ने चेलों से कहा कि **जो कोई** उसे अभी मान लेगा उसे भी **परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने** मान लिया जाएगा। यहाँ पर वह सभी सच्चे विश्वासियों के बारे में कह रहा है। उसे मान लेने का अर्थ है उसे एकमात्र प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लेना।

12:9 जो कोई **मनुष्यों के सामने** उसका इंकार करेगा उसका **परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने** (उसका भी) **इंकार किया जाएगा**। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पर यह बात प्राथमिक रूप से फरीसियों के लिए कही गई है, परन्तु यह बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो मसीह का इंकार करेंगे और उसे मान लेने में शर्माएंगे। उस दिन, वह कहेगा, ''मैं तुम्हें नहीं पहचानता।''

12:10 इसके बाद उद्धारकर्ता ने चेलों को समझाया कि यीशु की आलोचना करने और **पवित्र आत्मा की निन्दा** करने के बीच में अन्तर है। जो **मनुष्य के पुत्र के विरोध में** कुछ बोलता है, और यदि वह फिर से मन फिरा कर विश्वास करेगा, तो उसे **क्षमा किया जाएगा** । परन्तु **पवित्र आत्मा की निन्दा** करना अक्षम्य पाप (ऐसा पाप जिसकी कोई क्षमा नहीं) है। फरीसी लोग इसी पाप के दोषी थे (मत्ती 12:22-32)। यह पाप कौन सा पाप है? यह पाप प्रभु यीशु मसीह के द्वारा किए जा रहे आश्चर्यकर्मों को शैतान द्वारा किए जा रहे आश्चर्यकर्म बताने का पाप है। यह इसलिए **पवित्र आत्मा** के विरोध में पाप है क्योंकि यीशु अपने सारे आश्चर्यकर्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से किया करता था। इसका अर्थ है कि वे यह कह रहे थे कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा शैतान है। न इस समय में, और न ही आने वाले समय में इस पाप की कोई क्षमा है।

यह पाप किसी सच्चे विश्वासी के द्वारा नहीं किया जा सकता, यद्यपि कुछ लोगों को यह भय सताते रहता है कि उन्होंने विश्वास से हटने/धर्म त्याग देने (*बैक स्लाइड़िंग*) के द्वारा यह पाप कर दिया है। विश्वास से हट जाना/धर्म त्याग (*बैक स्लाइड़िंग*) एक अक्षम्य पाप नहीं है। विश्वास से हट जाने वाले एक व्यक्ति को प्रभु की सहभागिता में फिर से शामिल होना सम्भव है। यह सच्चाई कि उस व्यक्ति को इस पाप के कर दिए जाने की चिन्ता इस बात का प्रमाण है कि उसने यह अक्षम्य पाप नहीं किया है।

न ही एक अविश्वासी द्वारा मसीह को ठुकराना वह अक्षम्य पाप है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति उद्धारकर्ता को बार बार ठुकराए, तौभी यह सम्भव है कि वह बाद में प्रभु की ओर मुड़ जाए और अपना मन फिरा ले। नि:सन्देह, यदि वह अविश्वास की दशा में ही मर जाता है, तो उसका मन फिराव असम्भव होगा। तब वास्तव में उसका पाप अक्षम्य हो जाता है। परन्तु जिस पाप को प्रभु ने अक्षम्य पाप बताया है, वह पाप उस पाप को कहा गया है जिसे फरीसियों ने यह कहने के द्वारा किया कि वह दुष्टात्माओं के प्रधान शैतान की सामर्थ से अपने आश्चर्यकर्म करता है।

12:11, 12 यह अवश्य था कि चेलों को सरकारी **अधिकारियों** के सामने मुकद्दमें के लिए खड़े होना पड़े। प्रभु यीशु ने उन्हें बताया कि पहले से ही यह तय करना अनावश्यक है कि ऐसी स्थिति में **क्या उत्तर दे**। जब भी ऐसी स्थिति आएगी तो **पवित्र आत्मा** आवश्यकतानुसार उनके मुँह में उचित शब्दों को डालेगा। इसका अर्थ यह *नहीं* है कि परमेश्वर के सेवकों को सुसमाचार प्रचार करने या परमेश्वर के वचन का प्रचार करने से पहले प्रार्थना और बाइबल अध्ययन नहीं करना चाहिए। इसे आलस के बचाव के लिए किसी बहाने के रूप में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए! किन्तु, प्रभु की यह अटल प्रतिज्ञा है कि जो मसीह की गवाही के कारण मुकद्दमें के लिए खड़े किए जाएंगे उन्हें **पवित्र आत्मा** विशेष रूप से सहायता करेगा। और परमेश्वर के लोगों के लिए यह एक सामान्य प्रतिज्ञा है कि यदि वे आत्मा के चलाए चलते हैं, तो जीवन में इस प्रकार के संकट के क्षणों में उनके मुँह में कहने के लिए उपयुक्त शब्द दिए जाएंगे।

ब. लालच के विरुद्ध चेतावनी (12:13–21)

12:13 इस समय, एक मनुष्य **भीड़ में से** निकला और प्रभु से विनती करने लगा कि उसके **पिता की सम्पत्ति** को लेकर उसके और उसके **भाई** के बीच के विवाद का समाधान कर दे। ऐसा कहा गया है कि जहाँ वसीयत होती है, वहाँ ढ़ेर सारे रिश्तेदार भी होते हैं। यहाँ पर भी ऐसी ही स्थिति प्रतीत हो रही थी। यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि इस मनुष्य को उसके अधिकार की सम्पत्ति से वंचित कर दिया गया था, या फिर वह लोभ में आकर अपने हिस्से से अधिक की मांग कर रहा था।

12:14 उद्धारकर्ता ने उन्हें शीघ्र ही स्मरण दिलाया कि वह इस जगत में इस प्रकार के तुच्छ मामलों को निपटाने नहीं आया है। उसके आने का उद्देश्य था पापी मनुष्य का उद्धार करना। वह एक तुच्छ सम्पत्ति का बटंवारा करने के लिए अपने इस भव्य और महिमामय मिशन से विचलित नहीं होगा। (इसके साथ ही, सम्पत्ति से सम्बन्धित मामलों का न्याय करने के लिए उसके पास कानूनी अधिकार नहीं था। उसका निर्णय मान्य नहीं होता।)

12:15 परन्तु प्रभु ने इस घटना का उपयोग सुनने वालों को यह चेतावनी देने के लिए *अवश्य* किया कि वे मानवहृदय के सबसे घातक बुराइयों में से एक – **लोभ** – से सावधान रहें। भौतिक सम्पत्ति के प्रति कभी न समाप्त होने वाली लालसा जीवन की सबसे सशक्त चाहतों में से एक है जिसे पूरी करने के लिए मनुष्य अपना सब कुछ झोंक देते हैं। और तौभी यह मानवीय अस्तित्व के उद्देश्य को पूर्ण करने में पूरी तरह से चूक जाती है। ''**किसी का जीवन उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।**'' जैसे कि जे. ए. मिलर कहते हैं:

> यह उन लाल झण्डियों में से एक है जिसे हमारे प्रभु ने टांगा है और वर्तमान में जिसकी ओर अधिकांश लोग ध्यान देते हुए प्रतीत नहीं होते। मसीह ने धन से सम्बन्धित खतरों के बारे में काफी कुछ कहा है, परन्तु बहुत से लोग धन से नहीं डरते। वर्तमान समय में व्यवहारिक रूप से लोभ को एक पाप नहीं माना जा रहा है। यदि एक मनुष्य छठवीं या आठवीं आज्ञा का उल्लंघन करे, तो उसे अपराधी करार दिया जाता है और उसे लज्जित किया जाता है; परन्तु वह दसवीं आज्ञा को तोड़ सकता है; और उसे उद्यमी मान लिया जाता है। बाइबल बताती है कि धन का मोह सारी बुराइयों की जड़ है; परन्तु हर एक व्यक्ति जो इस कथन को उद्धरित करता है वह मोह पर अधिक बल देता है, और यह तर्क देता है कि धन नहीं, परन्तु धन के लिए ''मोह'' इसकी जड़ है।
>
> चारों ओर देख कर, एक व्यक्ति शायद यह सोचे कि किसी का जीवन *अवश्य* ही उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से होता है। मनुष्य सोचता है कि उसके पास जितना अधिक धन आते जाता है वह उतना ही महान होता जाता है। और यह बात सत्य प्रतीत भी होती है; क्योंकि संसार मनुष्यों को उनके बैंक खातों के आधार पर तौलता है। तौभी इससे अधिक घातक त्रुटि और कोई दूसरी नहीं हो सकती। एक मनुष्य को सिर्फ इस आधार पर तौला जाता है कि *वह क्या है,* इस आधार पर नहीं कि *उसके पास क्या है।*[42]

12:16–18 **धनवान** मूर्ख के दृष्टान्त में इस सच्चाई को चित्रित किया गया है कि धन–सम्पत्ति जीवन की प्रमुख वस्तु *नहीं* है। बहुत अच्छी फसल होने के कारण, धनी किसान के सामने एक विकट प्रतीत होने वाली समस्या उत्पन्न हुई। वह नहीं समझ पा रहा था कि वह इतने सारे अनाज का क्या करेगा। उसकी सारी बखारियां और खत्ते अपने क्षमता तक भर चुके थे। उसके बाद वह मन ही मन विचार करने लगा। उसकी समस्या का समाधान मिल गया। उसने निर्णय लिया कि वह अपनी **बखारियां तोड़ कर** और बड़ी बखारियां बनाएगा। यदि उसने अपने आसपास के जरूरतमंद संसार की ओर ध्यान दिया होता और अपने धन का उपयोग उनकी आत्मिक और शारीरिक भूख को मिटाने में लगाया होता, तो वह इस भारी–भरकम निर्माण परियोजना के बड़े खर्चे और चिन्ता से बच जाता। एंब्रोस कहते हैं, ''निर्धनों की गोद, विधवाओं का घर, और बच्चों के मुँह ऐसी बखारियां है जो हमेशा तक बनी रहती हैं।''

12:19 नई बखारियां बना लेने के बाद वह अपने नियमित कार्य से निवृत होने की योजना बना रहा था। उसकी आत्मनिर्भरता की भावना की ओर ध्यान दें: मेरी बखारियां, मेरी उपज, मेरा धन, मेरा प्राण। उसने अपने भविष्य की सारी योजना बना ली। वह **चैन** से रहेगा, खाएगा, पीएगा, और **सुख से** रहेगा।

12:20, 21 ''परन्तु जैसे ही उसने सोचना शुरू किया कि अब समय उसका हो चुका है, तो उसकी मुठभेड़

परमेश्वर से हो गई और वह अनन्त विनाश का भागी हो गया।'' **परमेश्वर** ने **उससे** कहा कि उसी **रात** वह मर जाएगा। तब वह अपनी सारी भौतिक सम्पत्तियों पर से अपना अधिकार खो देगा। वे किसी और के हाथों में चली जाएंगी। किसी ने मूर्ख की परिभाषा देते हुए कहा है कि मूर्ख व्यक्ति वह होता है जिसकी योजनाएं कब्र में जा कर समाप्त हो जाती हैं। यह मनुष्य सचमुच में एक मूर्ख था।

परमेश्वर ने उससे पूछा, ''**तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किसका होगा**?'' हम भी अपने आप से यह प्रश्न पूछ सकते हैं, ''यदि मसीह आज आ जाए, तो मेरी सम्पत्ति मेरे बाद किसकी होगी?'' कितना बेहतर होगा कि आज हम इस धन–सम्पत्ति का उपयोग परमेश्वर के लिए करें, बजाए इसके कि उसे कल शैतान के हाथों में चले जाने दें! हम स्वर्ग में **धन** बटोर सकते हैं, और इस प्रकार से हम **परमेश्वर की दृष्टि में धनी** हो जाएंगे। या फिर हम इसे अपने शरीर पर उड़ा दें, और शरीर की विकृति की कटनी काटें।

स. चिन्ता या विश्वास (12:22–34)

12:22, 23 मसीही जीवन में एक सबसे बड़ा खतरा यह होता है कि भोजन और वस्त्र हमारे अस्तित्व के सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बन जाते हैं। हम इन वस्तुओं के लिए धन कमाने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि प्रभु के कार्य को दोयम दर्जा दे बैठते हैं। नया नियम में इस बात पर जोर डाला गया है कि मसीह का कार्य हमारे जीवन की प्राथमिकता हो। **भोजन** और **वस्त्र** का स्थान इसके बाद आता है। हमें अपने वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए, और फिर भविष्य के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हुए उसकी सेवा में अपने आप को झोंक देना चाहिए। ऐसे ही जीवन को विश्वास का जीवन कहा जाता है।

जब प्रभु यीशु ने कहा कि हम भोजन और वस्त्र की **चिन्ता न** करें, तो उसके कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि हम आलसी बने बैठे रहें और ठहरे रहें कि हमें ये वस्तुएं उपलब्ध कराई जाएंगी। मसीहत आलस को बढ़ावा नहीं देता! परन्तु प्रभु के ऐसा कहने का तात्पर्य यह अवश्य था कि जीवन की आवश्यकताओं के लिए कमाते समय, हमें उन्हें जरूरत से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं समझना है। आखिर, जीवन में हमारे खाने और हमारे पहनने से भी अधिक महत्वपूर्ण कुछ है। हम यहाँ पर राजा के राजदूत के रूप में हैं, और हमें व्यक्तिगत चैन आराम और रंग–रूप की सारी बातों को राजा के नाम का महिमामय प्रचार करने की तुलना में बहुत कम स्थान देना है।

12:24 प्रभु यीशु ने **कौवों** का उदाहरण देते हुए यह समझाया कि वह अपने द्वारा सृजे गए प्राणियों की चिन्ता और देखभाल किस प्रकार से करता है। कौवे अपना जीवन भोजन और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए प्रबन्ध करने के व्यग्र भागदौड़ में नहीं खपाते। वे हर क्षण परमेश्वर पर निर्भर रह कर व्यतीत करते हैं। इस बात का अर्थ कि **वे न बोते हैं न काटते हैं,** तोड़ मरोड़ कर यह न समझा जाए कि मनुष्यों को गैरआत्मिक (जीविकोपार्जन के लिए नौकरी–पेशा) कार्य नहीं करना चाहिए। इसका अर्थ सिर्फ यह है कि परमेश्वर अपने द्वारा सृजे गए प्राणियों की आवश्यकताओं को जानता है, और यदि हम उस पर निर्भर रहते हुए जीवन जीते हैं तो वह हमारी आवश्कताओं को पूरी करेगा। यदि **परमेश्वर** कौवों को **पालता** है, तो फिर वह उन लोगों की देखभाल कितनी अधिक करेगा जिन्हें उसने बनाया है, जिनका अपने अनुग्रह के द्वारा उद्धार किया है, और जिन्हें उसने अपनी सेवा के लिए बुलाया है। कौवों के पास कोई बखारिया या गोदाम नहीं होते, तौभी परमेश्वर प्रतिदिन उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। तो फिर हम अपने जीवन को और बड़े बड़े गोदाम और बखारियां बनाने में खर्च क्यों करें?

12:25, 26 प्रभु यीशु ने प्रश्न किया, ''**तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है।**'' यह प्रश्न ऐसी बातों (जैसे भविष्य) के लिए चिन्ता करने की मूर्खता की ओर संकेत करता है जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। कोई भी व्यक्ति **चिन्ता करने से** न ही अपनी ऊँचाई और न ही अपना जीवन थोड़ा सा भी बढ़ा सकता है (*अपनी अवस्था* को *अपनी आयु* भी अनुवाद किया जा सकता है।) यदि ऐसा है तो फिर हमें भविष्य के लिए चिन्ता क्यों करनी चाहिये? बल्कि, आइये हम अपनी सारी सामर्थ और अपना सारा समय मसीह की सेवा करने में लगाएं, और भविष्य को उसके हाथों में छोड़ दें।

12:27, 28 इसके बाद **सोसनों** का उदाहरण

देते हुए वस्त्रों को पाने के लिए अपने वरदानों को खपा देने की मूर्खता को दर्शाया गया है। यहाँ पर सोसन किसी लाल रंग के जंगली फूल को कहा गया है। **वे न परिश्रम करते न कातते हैं, तौभी** उनमें एक प्राकृतिक सुन्दरता है जिसके सामने **सुलैमान भी अपने विभव में** पीछे रह जाता है। **यदि परमेश्वर,** आज खिलकर कल मुर्झा जाने वाले फूलों को ऐसी गजब की सुन्दरता से ओढ़ा देता है, तो क्या वह अपनी सन्तानों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं देगा? जब हम चिन्ता करते हैं, खीज उठते हैं, और अधिक से अधिक भौतिक धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए अथक संघर्ष करते हैं, तो हम अपने आप को **अल्प** विश्वासी प्रमाणित करते हैं। हम अपना जीवन उन सारे कार्यों को करने के लिए बर्बाद करते हैं जिन्हें परमेश्वर हमारे लिए करता, यदि हम अपना समय और अपने वरदान उसके कार्य के लिए अधिक समर्पित करते।

12:29-31 वास्तव में, हमारी दैनिक आवश्यकताएं बहुत छोटी होती हैं। यह अद्‌भुत बात होगी यदि हम साधारण से साधारण जीवन व्यतीत कर सकें। तो फिर भोजन और वस्त्र को अपने जीवन में इतना प्रमुख स्थान हम क्यों दें? और हम भविष्य के बारे में चिन्ता करते हुए **सन्देह** क्यों करें? उद्धार न पाए हुए लोग इस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं। **संसार की जातियां** (अन्यजातियां) जो परमेश्वर को अपने पिता के रूप में नहीं जानती वे अपना ध्यान भोजन, वस्त्र, और सुखविलास पर केन्द्रित करती हैं। ये ही वस्तुएं उनके अस्तित्व का केन्द्रबिन्दु और परिधि बन जाती हैं। परन्तु परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा है कि उसकी सन्तानें सांसारिक सुखविलास को पाने के पागलपन में अपना समय बर्बाद करें। उसका एक कार्य है जिसे इस पृथ्वी पर पूरा किया जाना है, और उसने यह प्रतिज्ञा की है कि जो अपने आप को पूर्ण मन से उसे समर्पित कर देंगे, वह उनकी देखभाल करेगा। यदि हम उसके **राज्य** की **खोज** करें, तो वह हमें कभी भी भूखा या नंगा रहने नहीं देगा। यह कितना दुखद होगा जब हम अपने जीवन के अन्तिम दिनों में यह समझ पाएंगे कि हमने अपना अधिकांश समय ऐसी चीज़ों के लिए गुलामी करने में खपा दिया जो पहले से ही स्वर्ग जाने वाली टिकट के साथ हमें मिलने वाली थीं।

12:32 चेले असहाय भेड़ों के उस **छोटे झुण्ड** के समान हैं जो प्रतिकूल संसार में भेजा गया है। यह सच है कि उनके पास जीविकोपार्जन या सुरक्षा का कोई उपाय दिखाई नहीं देता। तौभी इन युवाओं का मैला कुचला समूह मसीह के साथ उसके **राज्य** का वारिस होने के लिए ठहराया गया है। एक दिन वे उसके साथ सारी पृथ्वी पर राज्य करेंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए, प्रभु ने उन्हें उत्साहित करते हुए डरने से मना किया, क्योंकि यदि पिता ने उनके लिए ऐसे महिमामय आदर को रख छोड़ा है, तो उन्हें उस मार्ग के विषय में चिन्ता नहीं करनी है जो इसके बीच में रखा गया है।

12:33, 34 भौतिक धन सम्पत्ति जमा करने और समय के लिए योजना बनाने की बजाए, वे अपना धन परमेश्वर के कार्य में लगा सकते हैं। ऐसा करने के द्वारा वे स्वर्ग के लिए और अनन्तकाल के लिए निवेश करेंगे। युग के नाश हो जाने से उनकी सम्पत्ति पर कोई असर नहीं होगा। स्वर्गीय धन चोरी होने और खराब होने से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं। भौतिक धन के साथ यह समस्या है कि यदि हमारे पास धन है तो हमारा भरोसा भी उसी पर रह जाएगा, यह सम्भव नहीं है कि हमारे पास धन हो और उस धन पर हमें भरोसा न हो। इसलिए प्रभु यीशु ने कहा है, ''**जहाँ तुम्हारा धन है वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।**'' यदि हम अपना धन स्वर्ग में जमा कर दें, तो हम इस संसार की नाशमान वस्तुओं के मोह से मुक्त हो जाएंगे।

द. जागते रहने वाले सेवक का दृष्टान्त (12:35-40)

12:35 न सिर्फ चेलों को अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रभु पर भरोसा रखना था; बल्कि उन्हें उसके दुबारा आगमन की सनातन आशा करते हुए भी जीवन जीना था। उनकी **कमरें बन्धी रहें**, और उनके **दीए जलते रहें**। पूर्वी देशों में, कमर में एक पट्टा बान्धा जाता था ताकि जब एक व्यक्ति जल्दी जल्दी चले या दौड़े तो उसके लम्बे और लहराते हुए पहिनावे को कस कर रखा जा सके। बन्धी हुई कमर का अर्थ एक अभियान को पूरा करना और जलते हुए दीये का अर्थ एक गवाही को बनाए रखना है।

12:36 चेलों को पल-पल प्रभु के दोबारा आगमन की आशा करते हुए जीवन जीने के लिए कहा गया था,

मानों वह एक ऐसा व्यक्ति है जो किसी **ब्याह से** लौट रहा हो। केली ने इस पर यह टिप्पणी की है:

> उन्हें पृथ्वी की सारी बाधाओं से मुक्त हो कर रहने के लिए कहा गया था, ताकि जिस क्षण प्रभु खटखटाए, तो वे उसके लिए तुरन्त दरवाजा खोल सकें – बिना विचलित हुए और तैयार होने के लिए समय लिए बिना। उनका हृदय प्रभु की प्रतीक्षा कर रहा था, वे उससे प्रेम करते थे, वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही वे खटखटाए वे तुरन्त उसके लिए द्वार खोल दें।[43]

ब्याह से लौट रहे मनुष्य की कहानी के विवरण को भविष्यद्वाणिक भविष्यकाल के दृष्टिकोण से अधिक जोर नहीं देना चाहिए। हमें यहाँ पर ब्याह को मेम्ने के ब्याह के रूप में नहीं समझना है, न ही उस मनुष्य की वापसी को मेघारोहण (कलीसिया का मसीह से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिया जाना) समझना चाहिए। प्रभु द्वारा बताई गई यह कहानी सिर्फ एक साधारण से सत्य को समझाने के लिए थी कि उसकी वापसी को लेकर जागते रहो; यह कहानी उसके आगमन के समय की घटनाओं के क्रम को तय करने के उद्देश्य से नहीं बताई गई थी।

12:37 जब मनुष्य ब्याह से वापस लौटेगा, तो उसके **दास** उत्सुकता से उसके लिए **जागते** रहेंगे, और उसके आदेशों को पूरा करने के लिए दौड़ पड़ने के लिए तैयार रहेंगे। वह जागते रहने वाले उनके इस रवैये से इतना प्रसन्न होगा कि वह उनके लिए मेज तैयार करेगा। **वह** स्वयं ही दास का वस्त्र धारण कर **उन्हें** मेज पर बैठाएगा, और **उन्हें** भोजन परोसेगा। यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी बात है कि वह जो इस संसार में एक बार दास का स्वरूप लेकर आया था एक बार फिर से अपने लोगों की उनके स्वर्गीय निवास में सेवा करने के लिए अपने आप को अनुग्रहपूर्वक दीन करेगा। बाइबल के एक जर्मन विद्वान बेन्गल ने पद 37 को परमेश्वर के वचन में दी गई प्रतिज्ञाओं में सबसे महान प्रतिज्ञा माना है।

12:38 रात नौ बजे से लेकर आधी रात को **दूसरे पहर** कहा गया है। आधी रात से सुबह तीन बजे तक को **तीसरे** पहर कहा गया है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि यह कौन सा पहर था पर महत्वपूर्ण यह है कि जब स्वामी वापस आया तब **दास** उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

12:39, 40 प्रभु यहाँ पर चित्रण में परिवर्तन करते हुए घर के एक ऐसे स्वामी के बारे में बताता है जिसके जागते न रहने के कारण उसके घर में **सेंध** लग गई। **चोर** का आना पूरी तरह से अचानक हुआ। **यदि घर का स्वामी जानता**, तो वह अपने घर में **सेंध लगने** न देता। इसमें यह शिक्षा पाई जाती है कि मसीह का आगमन कभी भी हो सकता है; वह उस घड़ी और समय को कोई नहीं जानता कि वह कब आएगा। जब वह आएगा, तो ऐसे विश्वासी जिन्होंने पृथ्वी पर धन एकत्रित कर के रखा है, सब कुछ खो देंगे, क्योंकि जैसा कि किसी ने कहा है, ''एक मसीही या तो अपना धन छोड़ देता है या फिर वह उसके पीछे जाता है।'' यदि हम सचमुच में मसीह के आगमन के लिए जाग रहे हैं, तो हम अपना सब कुछ बेच कर स्वर्ग में धन जमा करेंगे जहाँ कोई चोर नहीं पहुँच सकता।

इ. विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य दास (12:41–48)

12:41, 42 इस बात पर **पतरस** ने पूछा कि जागते रहने की शिक्षा देने वाला दृष्टान्त क्या सिर्फ चेलों के लिए है या फिर **सब** के लिए। प्रभु का उत्तर यह था कि यह उन सब के लिए है जो अपने आप को परमेश्वर का भण्डारी कहते हैं। **विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी** वह है जिसे उसका स्वामी अपने घर पर प्रमुख ठहराता है और जो स्वामी के लोगों को **सीधा** (भोजन) देता है। यहाँ पर भण्डारी की प्रमुख जिम्मेदारी लोगों से सम्बन्धित है, भौतिक वस्तुओं से नहीं। इस पूरे सन्दर्भ के प्रकाश में यह चेलों के लिए भौतिकवाद और लोभ के विरुद्ध एक चेतावनी है। वस्तुएं नहीं परन्तु लोग महत्वपूर्ण हैं।

12:43, 44 जब प्रभु आएगा और अपने दास को मनुष्यों के आत्मिक युद्ध में सच्ची रूचि लेते पाएगा, तो वह उदारता के साथ उसे प्रतिफल देगा। यह प्रतिफल शायद मसीह के साथ हजार वर्ष के राज्य में शासन किए जाने को कहा गया है (1 पतरस 5:1–4)।

12:45 **दास** यह दावा कर रहा है कि वह मसीह के लिए कार्य कर रहा है परन्तु वास्तव में वह अविश्वासी है। परमेश्वर के लोगों को तृप्त करने की बजाए, वह उन्हें बुरा भला कहता है, उन्हें लूटता है, और भोगविलास में

लिप्त रहता है। (यह बात शायद फरीसियों के लिए कही गई थी।)

12:46 प्रभु का आगमन इस दास के कपट की पोल खोल देगा और वह अन्य **अविश्वासियों** के साथ दण्डित किया जाएगा। ''**भारी ताड़ना**'' का अनुवाद ''उसे दो भाग में काट डालेगा'' भी किया जा सकता है।

12:47, 48 पद 47 और 48 में सभी सेवकाइयों से सम्बन्धित एक मूलभूत सिद्धान्त पाया जाता है। यह सिद्धान्त यह है कि हमें जितना बड़ा सुअवसर मिलता है, हमारी जिम्मेदारी भी उतनी अधिक बढ़ जाती है। विश्वासियों के लिए, इसका अर्थ यह है कि स्वर्ग में किसी को छोटा और किसी को बड़ा प्रतिफल मिलेगा। अविश्वासियों के लिए इसका अर्थ यह है कि नरक में किसी को छोटा और किसी को बड़ा दण्ड मिलेगा। जिन लोगों ने पवित्रशास्त्र में दी गई परमेश्वर की **इच्छा** को अच्छी तरह से जाना है, उन पर इसका पालन करने की अधिक बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें **बहुत दिया** गया है; और इसलिए उनसे **बहुत मांगा जाएगा**। जिन लोगों को इतना बड़ा सुअवसर नहीं मिला है, वे भी अपने गलत कार्यों के लिए दण्डित किए जाएंगे, परन्तु उनका दण्ड कम कठोर होगा।

फ.मसीह के पहले आगमन का प्रभाव (12:49–53)

12:49–53 प्रभु यीशु यह जानता था कि **पृथ्वी** पर उसके आने से आरम्भ में शान्ति स्थापित नहीं होगी। यह अवश्य था कि उसके आने के कारण पहले विभाजन, सताव, और खून खराबा होगा। उसके आने का उद्देश्य इस प्रकार से **पृथ्वी पर आग** लगाना नहीं था, परन्तु यह उसके आने का प्रभाव या परिणाम था। यद्यपि उसकी सांसारिक सेवकाई के दौरान कष्ट और मतभेद उत्पन्न हुए, परन्तु क्रूस की मृत्यु तक मनुष्य का हृदय खुले रूप में प्रगट नहीं हुआ था। प्रभु जानता था कि इन सब बातों का होना अवश्य है, और वह चाहता था कि उसके विरूद्ध जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी सताव की **आग** भड़क उठे।

12:50 उसे **एक बपतिस्मा लेना** था। यह कलवरी पर उसकी मृत्यु की हद तक के **बपतिस्मा** के विषय में कहा गया है। उस पर इस बात का जबर्दस्त दबाव था कि वह खोई हुई मानवजाति के छुटकारे के कार्य को पूरा करने के लिए क्रूस पर चढ़े। उसके लिए पिता की इच्छा थी कि वह लज्जा, दु:ख, और मृत्यु सहे, और वह इसका पालन करने के लिए आतुर था।

12:51–53 वह इस बात को अच्छी तरह से जानता था उसके आगमन से उस समय **पृथ्वी पर मिलाप** नहीं होगा। और इसलिए उसने अपने चेलों को सचेत किया कि जब लोग उसके पास आएंगे, तो उनका परिवार उन्हें सताएगा और घर से बाहर निकाल देगा। यदि किसी घर में **पाँच** लोग हैं तो उस घर में मसीहत आने से परिवार में विभाजन हो जाएगा। मनुष्य के विकृत हो चुके स्वभाव का यह विचित्र चिन्ह है कि अविश्वासी रिश्तेदार अपने बेटे को एक पियक्कड़ और दुराचारी के रूप में तो स्वीकार कर लेंगे, परन्तु उसे मसीह का चेला बन कर लोगों के सामने खड़ा होता हुआ देखना स्वीकार नहीं करेंगे। यह अनुच्छेद इस सिद्धान्त को नकार देता है कि यीशु सारी मानवता (विश्वासी और अविश्वासी) को ''विश्वव्यापी भाईचारे'' के एक सूत्र में बान्धने के लिए आया था। बल्कि, उसने उन्हें ऐसे बाँट दिया जितना कि वे पहले कभी नहीं बंटे हुए थे!

ग. युगों के चिन्ह (12:54–59)

12:54, 55 पिछले पद चेलों को सम्बोधित किए गए हैं। अब उद्धारकर्ता **भीड़ से** बातें करने लगता है। वह उन्हें मौसम का पूर्वानुमान लगाने में उनकी कला की ओर ध्यान दिलाता है। वे **पश्चिम** में (भूमध्यसागर पर) **बादल** को देखकर यह समझ जाते थे कि अब **वर्षा** होने वाली है। दूसरी ओर, **दक्षिणी वायु** को देखकर वे जान लेते थे कि यह अपने साथ झुलसाने वाली गर्मी और सूखा लेकर आ रही है। लोगों में इन सारी बातों को जानने की बुद्धि पाई जाती है। परन्तु बुद्धि से भी बढ़कर इसमें कुछ सम्मलित है। और यह है जानने के लिए इच्छा का होना।

12:56 आत्मिक मामलों में, कहानी अलग होती है। यद्यपि उनके पास सामान्य मानवीय बुद्धि है, वे उस महत्वपूर्ण युग को न पहचान सके, जो मानवीय इतिहास में प्रवेश कर चुका था। परमेश्वर का पुत्र इस पृथ्वी पर था, और वह उनके बीच में खड़ा था। इससे पहले कभी भी

स्वर्ग इतने निकट नहीं आया था। परन्तु वे उनके आने के समय को नहीं पहचान सकें। जानने के लिए उनके पास बौद्धिक क्षमता तो थी, परन्तु उनमें जानने की इच्छा नहीं थी, और इसलिए वे अपने भ्रम में रह गए।

12:57–59 यदि वे उस दिन के महत्व को पहचान पाते जिसमे वे रह रहे थे, तो वे अपने **मुद्दई के साथ** शीघ्रता से मेल कर लेते। यहाँ पर चार कानूनी शब्दावलियों का उपयोग किया गया है – **मुद्दई, हाकिम, न्यायी, प्यादा** – और शायद ये सभी शब्द परमेश्वर के लिए उपयोग किए गए हैं। उस समय परमेश्वर उनके बीच चलफिर रहा था, उनसे विनती कर रहा था, और उन्हें उद्धार पाने का अवसर दे रहा था। उन्हें मन फिरा कर उस पर विश्वास लाना चाहिए था। यदि वे इंकार करते, तो उन्हें परमेश्वर के सामने उसके न्याय का सामना करने के लिए खड़ा होना पड़ता। और मामला निश्चय ही उनके विरोध में जाता। वे अपने अविश्वास के लिए दोषी करार दिए जाकर दण्डित किए जाते। वे **बन्दीगृह** में डाल दिए जाते, अर्थात्, उन्हें अनन्त दण्ड दिया जाता। वे तब तक बाहर नहीं आ पाते **जब तक** वे **दमड़ी दमड़ी भर न** देते – जिसका अर्थ यह है कि वे *कभी भी* बाहर *नहीं* आ पाते, क्योंकि वे कभी भी इतने बड़े कर्ज को नहीं चुका पाते।

इसलिए प्रभु यीशु यह कह रहा था कि उन्हें उस समय को पहचान लेना चाहिए जिसमें वे रह रहे थे। तब वे अपने पापों से मन फिराकर और अपने आप को उसे पूर्ण रूप से समर्पित करके परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष बन सकते थे।

ह. मन फिराव का महत्व (13:1–5)

13:1–5 यहूदी जाति जिस युग में रह रही थी उस युग को पहचान पाने में यहूदी जाति की असफलता, और प्रभु यीशु द्वारा शीघ्र ही मन फिराने या फिर नाश हो जाने की चेतावनी दिए जाने के साथ अध्याय 12 का समापन होता है। अध्याय 13 में यह सामान्य विषय जारी रहता है, और यह अधिकांशत: इस्राएली जाति को सम्बोधित करते हुए कहा गया है, यद्यपि इस में दिए गए सिद्धान्त लोगों पर व्यक्तिगत रूप से लागू होते हैं। दो राष्ट्रीय विपदाओं को आधार बना कर आगे का वार्तालाप किया गया है। पहली विपदा **गलीलियों** का नरसंहार था, जो आराधना करने के लिए यरूशलेम में आए हुए थे। जिस समय वे **बलिदान** चढ़ा रहे थे उस समय यहूदिया के हाकिम **पीलातुस** ने उनका वध करने का आदेश दे दिया था। इस उत्पीड़न के सम्बन्ध में इससे अधिक जानकारी ज्ञात नहीं है। हम मानते हैं कि आहत लोग गलील के यहूदी थे। यरूशलेम में यहूदी लोग इस भ्रम में बहुत मुश्किल से आगे बढ़ रहे थे **कि** इन **गलीलियों** ने कोई भयानक पाप किया होगा, और उनकी मृत्यु परमेश्वर के अप्रसन्न होने का प्रमाण है। किन्तु, प्रभु यीशु ने उनके इस विचार के विरुद्ध में चेतावनी देते हुए उन्हें सुधारा कि **यदि** उन्होंने मन न फिराया, तो वे **सब भी इसी रीति से नाश** हो जाएंगे।

13:4, 5 दूसरी त्रासदी **शीलोह के गुम्मट** के धराशायी हो जाने से सम्बन्धित है जिसके कारण **अठारह** व्यक्तियों की जानें चली गईं। इस दुर्घटना के बारे में और अधिक जानकारी ज्ञात नहीं है। साथ ही, इसके बारे में अधिक जानकारी जानने की आवश्यकता भी नहीं है। प्रभु ने इस बात पर जोर दिया था कि इस विपदा को घोर दुष्टता के कारण दिए गए विशेष दण्ड के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। बल्कि, यह सारी इस्राएली जाति के लिए एक चेतावनी हो कि **यदि** वे मन नहीं फिराते, तो वे भी इसी तरह से नाश हो जाएंगे। यह नाश 70 ईस्वी में हुआ जब रोमी जनरल तीतुस ने यरूशलेम को अपने वश में कर लिया।

ई. अंजीर के फलहीन पेड़ का दृष्टान्त (13:6–9)

पिछले भाग से काफी नजदीकी से सम्बन्ध जोड़ते हुए यीशु ने **अंजीर के पेड़** का **दृष्टान्त** बताया। हम बड़ी सरलता से यह पहचान सकते हैं कि इस्राएल वह **अंजीर का पेड़** है, जिसे परमेश्वर ने **अंगूर की बारी**, अर्थात् इस संसार में लगाया था। परमेश्वर ने इस पेड़ से **फल** पाना चाहा था परन्तु एक भी फल **न पाया**। इसलिए उसने अंगूर की बारी के रखवाले (यीशु मसीह) से कहा कि उसने व्यर्थ ही **तीन वर्ष** इस पेड़ से फल पाने की आशा की। यह सीधे सीधे हमारे प्रभु यीशु के पहले तीन वर्ष की सार्वजनिक सेवकाई के लिए कहा गया है। इस स्थल में यह विचार दिया है कि अंजीर के पेड़ को फल लाने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, यदि यह वास्तव में

फल लाता। यदि तीन वर्ष में इस पेड़ में कोई फल नहीं दिखाई दे, तो इस निष्कर्ष पर आना वाजिब है कि इस में आगे भी कोई फल नहीं लगेगा। इसकी फलहीनता के कारण, परमेश्वर ने इसे **काट** डालने का आदेश दिया। यह सिर्फ **भूमि** को घेर रहा था जबकि उस भूमि का उपयोग किसी अधिक उत्पादक कार्य के लिए किया जा सकता था। अंगूर की बारी के रखवाले ने इस अंजीर के पेड़ के लिए विनती की कि इसे एक वर्ष और दे दिया जाए। यदि एक वर्ष बाद भी यह न फले, तो इसे **काट** दिया जाए। और बिल्कुल ऐसा ही हुआ। चौथा वर्ष पूर्ण होने के बाद इस्राएल ने प्रभु यीशु को ठुकरा दिया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। इसके परिणामस्वरूप इस्राएल की राजधानी तो नाश हो गई और लोग तितर–बितर हो गए।

जी.एच. लैंग ने इसे इस प्रकार से व्यक्त किया है:

> मनुष्य का पुत्र अपने पिता, जो अंगूर की बारी का रखवाला है, के मन की बात को जानता था, और यह भयानक आदेश ''काट डाल'' जारी कर दिया गया था; इस्राएल ने ईश्वरीय धीरज को एक बार फिर से क्लांत कर दिया था। न ही कोई जाति और न कोई व्यक्ति परमेश्वर से देखभाल की अपेक्षा कर सकता है यदि वह परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए धार्मिकता के फल नहीं लाता। मनुष्य के अस्तित्व का उद्देश्य है- अपने सृष्टिकर्ता का आदर करना और उसे प्रसन्न करना: जब वह इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर रहा है तो फिर उसकी पापमय असफलता के लिए उसे मृत्युदण्ड क्यों न दिया जाए,और उसे दिए गए विशेषाधिकार के स्थान से उसे क्यों न वंचित कर दिया जाए?[44]

ज.कुबड़ी स्त्री का चंगा किया जाना (13:10–17)

13:10–13 प्रभु यीशु के प्रति इस्राएल का वास्तविक रवैया आराधनालय के सरदार के रवैये में देखा गया। इस अधिकारी ने आपत्ति जताई कि सब्त के दिन उद्धारकर्ता ने एक स्त्री को चंगा किया है। इस **स्त्री** की रीढ़ की हड्डी **अठारह** वर्षों से बुरी तरह से झुकी हुई थी। वह बहुत अधिक झुक गई थी; वह अपने आप **किसी रीति से** सीधी नहीं हो सकती थी। बिना कुछ पूछे ही, प्रभु **यीशु** ने उसके लिए चंगाई के शब्द कहे, **उस पर हाथ रखे**, और उसके कुबड़ को ठीक कर दिया।

13:14 आराधनालय का सरदार क्रोधित होकर लोगों से कहने लगा कि उन्हें चंगाई प्राप्त करने के लिए सप्ताह के पहले **छः दिन** में आना चाहिए, सातवें दिन नहीं। वह एक पेशेवर धर्मवादी था, और लोगों की समस्याओं की उसे कोई गम्भीर चिन्ता नहीं थी। यदि वे सप्ताह के पहले छः दिनों में आते तब भी आराधनालय का सरदार उनकी कोई सहायता नहीं कर पाता। वह व्यवस्था की तकनीकी बातों को पकड़े रहने वाला व्यक्ति था, परन्तु उसके हृदय में कोई प्रेम या दया नहीं थी। यदि उसके स्वयं की रीढ़ की हड्डी अठारह वर्षों से झुकी हुई होती तो वह इस बात की परवाह नहीं करता कि किस दिन उसे सीधा किया गया!

13:15, 16 प्रभु ने उसके और अन्य अगुवों के कपट की निन्दा की। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वे **सब्त के दिन** अपने **बैल या गदहे को** पानी पिलाने के लिए **थान से** खोलने से नहीं हिचकते। यदि वे सब्त के दिन इन मूक पशुओं का इतना ध्यान रखते हैं, तो क्या यीशु ने इस **स्त्री** को जो **इब्राहीम की बेटी** थी चंगा करने के द्वारा कोई गलत काम कर दिया? ''इब्राहम की बेटी'' वाक्यांश यह दर्शाता है कि वह न सिर्फ एक यहूदी स्त्री थी, परन्तु एक सच्ची विश्वासिनी भी थी। उसके रीढ़ की हड्डी के कुबड़ होने का कारण **शैतान** था। पवित्रशास्त्र के कुछ भागों से हमें यह ज्ञात होता है कि कुछ बीमारियां शैतान के कार्यों के कारण होती हैं। अय्यूब के फोड़ों का कारण शैतान था। पौलुस की देह में कांटा चुभाए गया अर्थात् शैतान का एक दूत उसे घूसे मारे। किन्तु, एक विश्वासी के साथ, परमेश्वर की अनुमति के बिना शैतान ऐसा नहीं कर सकता। और परमेश्वर ऐसे किसी भी प्रकार की बीमारी या कष्ट पर अपनी महिमा के लिए प्रबल हो जाता है।

13:17 प्रभु के इन वचनों के द्वारा हमारे प्रभु के आलोचक पूरी तरह से **लज्जित** कर दिए गए। सामान्य लोग इससे **आनन्दित** हुए क्योंकि **महिमा** का एक आश्चर्यकर्म किया गया और वे इसे जानते थे।

क.परमेश्वर के राज्य के दृष्टान्त (13:18-21)

13:18-19 चंगाई के इस अद्‌भुत आश्चर्यकर्म को देखने के बाद, लोग शायद यह सोचने की परीक्षा में पड़ने लगे कि राज्य अब तुरन्त ही स्थापित होने वाला है। प्रभु ने उनके भ्रम को दूर करने के लिए **परमेश्वर** के **राज्य** के विषय में दो दृष्टान्त बताए जो यह दर्शाते हैं कि स्वर्ग का राज्य राजा के ठुकराए जाने से लेकर पृथ्वी पर राज्य करने के लिए उसकी वापसी के बीच अस्तित्व में होगा। इन दृष्टान्तों में मसीही जगत की वृद्धि को चित्रित किया गया है, और इसमें सच्चाई (प्रभु पर सच में विश्वास करने वालों) के साथ साथ दावों (प्रभु पर विश्वास लाने का दावा करने वालों) को भी शामिल किया गया है (8:1-3 पर टिप्पणी देखें)।

सबसे पहले उसने **परमेश्वर** के **राज्य** को **राई के एक दाने** के समान बताया, जो सबसे छोटे बीजों में से एक होता है। जब यह भूमि में बोया जाता है, तो यह एक झाड़ी का रूप लेता है, पेड़ का नहीं। इसलिए जब यीशु ने कहा कि यह बीज **बढ़कर पेड़** बन गया, तो वह इस बात की ओर संकेत कर रहा था कि उसकी यह वृद्धि अत्यंत असामान्य थी। यह इतना बड़ा हो गया कि **आकाश के पक्षियों** ने **उसकी डालियों पर** बसेरा कर लिया। यहाँ पर यह बताया जा रहा है कि मसीहत का बहुत ही दीन आरम्भ हुआ, इतना छोटा जितना कि **राई** का **एक** दाना। परन्तु जैसे जैसे यह बढ़ने लगा, यह लोकप्रिय होता गया, और एक ऐसे मसीही जगत के रूप में विकसित हो गया है जैसा कि आज हम देखते हैं। मसीही जगत में वे सभी लोग शामिल हैं जो प्रभु यीशु के प्रति निष्ठावान होने का दावा करते हैं, भले ही उनका कभी नया जन्म हुआ हो या नहीं। **आकाश के पक्षियों** का अर्थ यहाँ पर गिद्ध या शिकारी पक्षियों को कहा गया है। वे बुराई के प्रतीक हैं, और यह चित्रित करते हैं कि मसीही जगत भिन्न भिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है।

13:20:21 दूसरे दृष्टान्त में प्रभु ने **स्वर्ग के राज्य** को उस **खमीर** के समान बताया **जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया।** हम ऐसा विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र में खमीर हमेशा ही बुराई के एक प्रतीक के रूप में उपयोग में लाया गया है। यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि परमेश्वर के लोगों के (वचनरूपी) शुद्ध भोजन में बुरे सिद्धान्तों की मिलावट कर दी गई है। यह बुरा सिद्धान्त स्थिर नहीं है; इसमें फैलने की घातक क्षमता है।

ई. राज्य में प्रवेश करने का सकेत द्वार (13:22-30)

13:22, 23 जब प्रभु यीशु **यरूशलेम की ओर** बढ़ने लगा, तो भीड़ में से निकलकर किसी ने **उस से** पूछा कि क्या **उद्धार पाने वाले थोड़े** हैं। यह शायद एक निरर्थक प्रश्न था जो सिर्फ किसी जिज्ञासा के कारण पूछा गया था।

13:24 यीशु ने एक अव्यवहारिक प्रश्न का उत्तर एक सीधा आदेश देते हुए दिया। उसने प्रश्न पूछने वाले से कहा कि वह यह सुनिश्चित करे कि वह **सकेत द्वार से प्रवेश** करता है। जब यीशु ने कहा, "**सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो,**" तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि उद्धार के लिए हमें अपनी ओर से प्रयत्न करने की आवश्यकता है। यहाँ पर **सकेत द्वार** नया जन्म को कहा गया है - विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार - प्रभु यीशु इस व्यक्ति को सचेत कर रहा था कि वह यह सुनिश्चित कर ले कि वह इस द्वार से प्रवेश कर रहा है। "**बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे**" एक बार जब द्वार बन्द हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे मनफिराव के द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु यह कि मसीह की सामर्थ और महिमा के दिन, वे उसके राज्य में प्रवेश पाना चाहेंगे, परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। अनुग्रह का यह दिन जिसमें आज हम रह रहे हैं एक दिन समाप्त हो जाएगा।

13:25-27 घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका होगा। यहूदी जाति को तब **द्वार** पर खटखटाते हुए और **प्रभु से द्वार** खोलने की विनती करते हुए चित्रित किया गया है। वह यह कारण बताते हुए उन्हें इंकार कर देगा कि वह उन्हें नहीं जानता। वे इस पर जोर देंगे, और यह दावा करेंगे कि उसके साथ उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। परन्तु इन दावों का उस पर कोई असर नहीं होगा। वे **कुकर्म करने** वाले लोग थे, और उन्हें प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

13:28–30 उसके इंकार करने पर **रोना और दांत पीसना** होगा। **रोना** ग्लानि को और **दांत पीसना** परमेश्वर के प्रति हिंसक बैर को दर्शाता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नरक की यातना मनुष्य के हृदय को नहीं बदल सकती। अविश्वासी इस्राएली **इब्राहीम और इसहाक और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे** देखेंगे। इन अविश्वासी इस्राएलियों ने आशा की थी कि वे स्वयं वहाँ होंगे, सिर्फ इस आधार पर क्योंकि वे इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के सम्बन्धी हैं, परन्तु वे **बाहर निकाले** जाएंगे। अन्यजाति विश्वासी पृथ्वी की छोर छोर से मसीह के राज्य की महिमा की ओर बढ़ जाएंगे और इसकी अद्‌भुत आशीषों का आनन्द उठाएंगे। इस तरह से अनेक यहूदी जो पहले परमेश्वर की आशीष की योजना में शामिल किए गए थे ठुकरा दिए जाएंगे, जबकि गैरयहूदी लोग जिन्हें बहुत समय तक कुत्तों के समान नीचा समझा गया था अब वे मसीह के हजार वर्ष की आशीषों का आनन्द उठाएंगे।

म.भविष्यद्वक्ता यरूशलेम में नाश हुए (13:31–35)

13:31–35 स्पष्ट है कि इस समय प्रभु हेरोदेस के क्षेत्र में था। **कितने फरीसियों ने आकर** उसे चेतावनी दी कि वह वहाँ से **निकलकर चला** जाए क्योंकि **हेरोदेस** उसे **मार डालना** चाहता है। यहाँ पर फरीसियों द्वारा यीशु की सुरक्षा और कल्याण की बात करना उनके चरित्र से बिल्कुल विपरीत प्रतीत होता है। शायद वे हेरोदेस के साथ मिलकर यह षड़्यंत्र रच रहे थे कि वे यीशु को डरा कर यरूशलेम भेज दें, जहाँ निश्चय ही उसे बन्दी बना लिया जाएगा।

13:32 हमारा प्रभु शारीरिक हिंसा की धमकी से नहीं डरा। उसने जान लिया कि यह हेरोदेस की एक चाल है और इसलिए उसने फरीसियों से कहा कि वे **जाकर उस लोमड़ी से** प्रभु का सन्देश बता दें। कुछ लोगों को यह पचा पाने में कठिनाई होती है कि प्रभु ने हेरोहेस को लोमड़ी (मूल में स्त्रीलिंग) कहा। उनका कहना है कि यह पवित्रशास्त्र का उल्लंघन है जो यह कहता है कि लोगों के शासक के विरुद्ध में कोई बुरी बात न कही जाए (निर्ग. 22:28)। किन्तु, यह कोई बुरी बात नहीं थी; यह एक परम सच्चाई थी। प्रभु द्वारा उसे भेजे गए सन्देश का सार यह था कि प्रभु को अपना कार्य कुछ और समय के लिए करना है। और इन शेष दिनों में वह **दुष्टात्माओं को निकालता** और चंगाई के आश्चर्यकर्म करता। तब तीसरे दिन, अर्थात्, अन्तिम दिन, वह पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के कार्य को पूर्ण करता। उसके कर्तव्यों को पूरा करने में कोई भी चीज़ बाधा नहीं बन सकती। पृथ्वी पर कोई भी सामर्थ नियुक्त समय से पहले उसकी कोई हानि नहीं कर सकती।

13:33 इसके अतिरिक्त, गलील में उसका वध किया जाना असम्भव था। इस कार्य के स्थान के रूप में सिर्फ **यरूशलेम** को ठहराया गया था। यह वह नगर था जो परमप्रधान परमेश्वर के सेवकों की हत्या करने के लिए जाना जाता था। यह भी कहा जा सकता है कि परमेश्वर के प्रवक्ताओं की हत्या पर यरूशलेम का विशेषाधिकार था। प्रभु के कहने का अर्थ यही था जब उसने कहा, ''**हो नही सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर मारा जाए।**''

13:34, 35 इस दुष्ट नगर के बारे में यह सच्चाई कहने के बाद, प्रभु यीशु करूणा से भर गया और उसके लिए विलाप करने लगा। यह नगर जो परमेश्वर के **भविष्यद्वक्ताओं को मार** डालता और उसके सन्देशवाहकों को **पत्थरवाह** करता है, परमेश्वर के स्नेही प्रेम का पात्र है। **कितनी बार** उसने **चाहा** कि वह उस नगर के लोगों को एक साथ वैसे ही **इकट्ठे** करे, **जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे** इकट्ठे करती है . . ., **परन्तु** उन्होंने **न चाहा**। समस्या उनके हठ में थी। इसके परिणामस्वरूप, उनका नगर, उनका मन्दिर, और उनकी भूमि सब **उजाड़** छोड़ दिए जाएंगे। उन्हें एक लम्बी अवधि बन्धुआई में बितानी होगी। बल्कि वे प्रभु को उस समय तक नहीं देख पाएंगे जब तक वे उसके प्रति अपना मन और अपना रवैया न बदल लें। पद 35ब मसीह के दूसरे आगमन के सन्दर्भ में है। इस्राएली जाति का एक छोटा विश्वासयोग्य झुण्ड उस समय मन फिराएगा और कहेगा, ''**धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।**'' तब उसके लोग उसके सामर्थ के दिन में उसके पास आने के लिए इच्छुक होंगे।

न. जलन्धर के रोगी का चंगा होना (14:1-6)

14:1-6 सब्त के एक दिन, **फरीसियों** के एक सरदार ने प्रभु यीशु को अपने घर में भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। उसने सच्चे मन से यीशु की पहुनाई करने के लिए उसे आंमत्रित नहीं किया था, बल्कि यह धार्मिक अगुवों की एक चाल थी कि परमेश्वर के पुत्र की कोई त्रुटि ढूंढ़ सकें। प्रभु यीशु ने यहाँ **जलन्धर** रोग से पीड़ित **एक मनुष्य** को देखा, जलन्धर एक ऐसा रोग है जिसके रोगी को उसके उत्तकों में पानी भर जाने के कारण सूजन आ जाती है। उद्धारकर्ता ने अपने आलोचकों के मन को पढ़ लिया और उनसे पूछा कि क्या **सब्त के दिन अच्छा करना उचित है।**

14:4-6 वे यह कहना चाहते तो थे कि ऐसा करना उचित नहीं है परन्तु वे अपने इस उत्तर का समर्थन नहीं कर सकते थे, और इसलिए **वे चुपचाप रहे**। इसलिए प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को **चंगा** कर दिया **और जाने दिया**। प्रभु के लिए यह एक दया का कार्य था, और ईश्वरीय प्रेम सब्त के दिन भी अपना कार्य करना बन्द नहीं करता (यूहन्ना 5:17)। तब उसने यहूदियों को ध्यान दिलाया कि यदि उनका कोई पशु **कुएं में गिर जाए** तो वे निश्चय ही **सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर** निकाल लेंगे। ऐसा करने में उनके स्वयं का हित है। यह पशु उनके लिए एक कीमत रखता है। परन्तु जब उनका एक साथी कष्ट में है, तो उन्हें उसकी चिन्ता नहीं है, और प्रभु यीशु द्वारा उसे चंगा कर उसकी सहायता करने पर वे उसे दोषी ठहराएंगे। यद्यपि वे उद्धारकर्ता की बात का कोई उत्तर न दे सके, परन्तु हम यह समझ सकते हैं कि वे उस पर पहले से भी अधिक क्रोधित हो गए होंगे।

ओ.महत्वाकांक्षी अतिथि का दृष्टान्त (14:7-11)

जब प्रभु ने फरीसी के घर में प्रवेश किया, तो शायद उसने अतिथियों को मेज के पास की **मुख्य जगह** पाने के लिए जुगाड़ लगाते हुए देखा। वे प्रतिष्ठा और आदर का स्थान पाने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि वह स्वयं एक अतिथि था तौभी वह बेधड़क होकर खरी बात कहने से नहीं रूका। उसने स्वयं को बढ़ावा देने वाले उनके इस रवैये के विरुद्ध चेतावनी दी। **जब** कोई उन्हें बुलाए, तो उन्हें कोई ऊँचा स्थान लेने की बजाए किसी **नीची जगह** पर बैठना चाहिए। जब हम अपने आप के लिए एक उँचा स्थान लेते हैं, तो हमें वहाँ से हटा कर नीचे स्थान पर बैठाए जाने से लज्जित होने की सम्भावना हमेशा बनी रहेगी। परमेश्वर के सामने सच्चे मन से दीन बने रहना ही एकमात्र उपाय है जिसके द्वारा हम **आगे** आ सकते हैं। यीशु ने सिखाया कि किसी स्थान को हथिया कर उससे बेदखल कर दिए जाने की बजाए यह बेहतर होता है कि हम नीचे स्थान पर बैठें और कोई दूसरा हमें आगे बढ़ाए। वह स्वयं आत्म-त्याग का एक जीता जागता उदाहरण है (फिलि. 2:5-8)। उसने अपने आप को दीन किया और परमेश्वर ने उसे अति महान किया। **जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा।**

प. परमेश्वर के सम्मानीय अतिथियों की सूची (14:12-14)

फरीसियों के सरदार ने नि:सन्देह स्थानीय प्रतिष्ठित लोगों को इस भोजन के लिए आमंत्रित किया था। प्रभु यीशु तुरन्त इस बात को समझ गया। उसने देखा कि समाज के शोषित लोगों को इस भोज में शामिल नहीं किया गया है। इसलिए उसने इस अवसर का लाभ उठाते हुए मसीही विश्वास के सबसे महान सिद्धान्तों में से एक की घोषणा की - कि हमें ऐसे लोगों से प्रेम करना चाहिए जिन्हें प्रेम के योग्य नहीं समझा जाता, और जो हमें बदले में कुछ नहीं दे सकते। यह सामान्य बात है कि लोग अपने **मित्रों या भाइयों** और **कुटुम्बियों** और **धनवान पड़ोसियों** को आमंत्रित करते है, क्योंकि वे उनसे अपने द्वारा की गई इस भलाई के लिए उनसे **बदला** चाहते हैं। इस प्रकार का व्यवहार करने के लिए ईश्वरीय जीवन की आवश्यकता नहीं है। परन्तु **कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों, और अन्धों** पर ऐसी भलाई करना निश्चय ही अलौकिक कार्य है। परमेश्वर ने ऐसे लोगों के लिए विशेष प्रतिफल सुरक्षित रखा है जो इस प्रकार के लोगों के प्रति भलाई का व्यवहार करते हैं। यद्यपि ऐसे अतिथियों के पास हमें **बदला देने को कुछ नहीं** है, तौभी परमेश्वर ने स्वयं प्रतिज्ञा की है कि वह **धर्मियों के जी उठने पर** प्रतिफल देगा।

पवित्रशास्त्र में इसे पहला पुनरूत्थान भी कहा गया है, और इसमें सारे सच्चे विश्वासियों का पुनरूत्थान शामिल है। इसमें मेघारोहण (मसीह से मिलने के लिए कलीसिया का बादलों पर उठा लिया जाना) और साथ ही, हम विश्वास करते हैं, क्लेशकाल के अन्त का समय भी सम्मिलित है। अर्थात्, पहला पुनरूत्थान एक बार में हो जाने वाली घटना नहीं है, परन्तु यह चरणबद्ध रीति से घटती है।

क्ष.बहाना बनाने का दृष्टान्त (14:15–24)

14:15–18 अतिथियों में से एक ने, जो भोजन के लिए यीशु के साथ मेज़ पर बैठा हुआ था, कहा कि **परमेश्वर के राज्य** की आशीषों का भागी बनना क्या ही अद्‌भुत होगा। शायद वह स्वर्ग के राज्य की आचार संहिता के उस सिद्धान्त से प्रभावित हो गया था जिसे प्रभु ने अभी अभी बताया था। या फिर यह सिर्फ एक सामान्य टिप्पणी थी जिसे उसने बिना सोचे समझे कह दिया। चाहे कुछ भी हो, इस पर प्रभु ने उत्तर दिया कि धन्य है वह जो **परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा**, परन्तु दुखद सच्चाई यह है कि अनेक लोग जो इसके लिए आमंत्रित किए गए हैं वे इस आमंत्रण को स्वीकार करने के लिए सब प्रकार के मूर्खतापूर्ण बहाने बना रहे हैं। उसने परमेश्वर को **किसी** ऐसे **मनुष्य** के समान चित्रित किया जिसने **बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया**। जब **भोजन तैयार** हो गया, तो उसने **अपने दास** से कहा कि वह **नेवताहारियों** को सूचित कर दे कि सब कुछ **अब . . .तैयार** हो चुका है। यह हमें उस महान सच्चाई का स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु ने कलवरी पर छुटकारे के कार्य को पूरा किया, और सुसमाचार का न्योता इसी पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर दिया जाता है। आमंत्रित किये गए एक व्यक्ति ने यह बहाना बनाते हुए भोज में आने के लिए अपनी असमर्थता जताई कि उसने एक खेत **मोल लिया है** और वह उसे देखने के लिए जाना चाहता है। सामान्यत: उसे खरीदने से पहले ही खेत को देख लेना चाहिए था। परन्तु तौभी वह भौतिक वस्तुओं के प्रति अपने प्रेम को अनुग्रह के न्यौते से अधिक महत्व दे रहा था।

14:19, 20 अगले व्यक्ति ने **पाँच जोड़े बैल मोल लिए** थे और वह **उन्हें परखने** जाना चाहता था। यह व्यक्ति ऐसे लोगों को चित्रित कर रहा है जो अपनी नौकरी, अपने व्यवसाय, या अपने धन्धे को परमेश्वर की बुलाहट से अधिक महत्व देते हैं। तीसरे व्यक्ति ने कहा कि उसने **ब्याह किया है, इसलिए** वह नहीं **आ सकता**। पारिवारिक बन्धन और सामाजिक रिश्ते अक्सर मनुष्य को सुसमाचार के आमंत्रण को स्वीकार करने के मार्ग में बाधा बनते हैं।

14:21–23 जब **उस दास** ने **अपने स्वामी** को यह सूचित किया कि सभी ने उसके आमंत्रण को ठुकरा दिया है, तब **स्वामी** ने उसे **नगर** में **कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों** को निमंत्रण देने के लिए भेज दिया। बेन्गल कहते हैं, ''प्रकृति और अनुग्रह दोनों ही खालीपन से झिझकते हैं।'' जिन्हें सबसे पहले आमंत्रित किया गया था वे शायद यहूदी लोगों के अगुवों को चित्रित करते हैं। जब उन्होंने सुसमाचार को ठुकरा दिया, तो परमेश्वर ने इसे **नगर** के सामान्य लोगों को भेजा। इनमें से बहुतों ने इस न्यौते को स्वीकार किया और आए, परन्तु स्वामी के घर में **फिर भी जगह** रह गई थी। और इसलिए प्रभु ने दास से कहा कि वह **सड़कों** और गलियों में जाकर, और भी लोगों को **बरबस** भीतर ले आए। नि:सन्देह यह सुसमाचार के अन्यजातियों तक जाने को चित्रित करता है। उन्हें *ताकत के बल* (जैसा कि मसीही जगत के इतिहास में हुआ है) से नहीं, परन्तु *तर्क के बल* से विवश किया जाना चाहिए। उन्हें भीतर लाने के लिए स्नेह के साथ प्रयास करना चाहिए **ताकि** स्वामी का **घर भर जाए**।

14:24 इस प्रकार से जब भोज किया गया तब पहले तैयार की गई अतिथियों की मूल सूची किसी काम की नहीं रही क्योंकि जिन्हें मूल रूप से बुलाया गया था वे नहीं आए।

र. सच्ची शिष्यता की कीमत (14:25–35)

14:25 अब **बड़ी भीड़** यीशु के पीछे चलने लगी। अधिकांश अगुवे इतने सारे लोगों को अपने पीछे आते देख फूल उठेंगे। परन्तु प्रभु ऐसे लोगों को नहीं खोज रहा था जो जिज्ञासावश उसके पीछे आते हैं, और जिनके हृदय में उसके प्रति कोई सच्ची रूचि नहीं होती। वह ऐसे लोगों को खोज रहा था जो उसके प्रति पूर्ण समर्पित और जोशीले

होकर जीने के लिए तैयार हैं, चाहे उसके लिए उन्हें मरना ही क्यों न पड़े। और इसलिए अब प्रभु ने शिष्यता की सख्त शर्तों को प्रस्तुत करने के द्वारा उन्हें परखना आरम्भ किया। कभी कभी प्रभु यीशु लोगों को अपनी ओर *रिझाता* है, परन्तु जब वे उसके पीछे चलने लगते हैं तब वह उन्हें *फटकना* आरम्भ करता है। यहाँ पर वह ऐसा ही कर रहा है।

14:26 सबसे पहले उसने अपने पीछे चलने वालों को बता दिया कि सच्चा चेला बनने के लिए, यह आवश्यक है वे उसे सबसे बढ़कर प्रेम रखें। उसने कभी ऐसा नहीं कहा कि मनुष्य अपने **पिता, माता, और पत्नी और लड़के बाले** के प्रति अपने मन में कड़वा बैर रखे। बल्कि वह इस बात पर जोर दे रहा है कि मसीह के प्रति हमारा प्रेम इतना अधिक हो कि बाकि सब के प्रति हमारा प्रेम प्रभु के प्रति हमारे प्रेम की *तुलना* में बैर लगने लगे (मत्ती 10:37)। पारिवारिक रिश्ते कभी भी चेले को प्रभु के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता के मार्ग से न भटकाएं।

दरअसल, शिष्यता की इस पहली शर्त का सबसे कठिन भाग इन शब्दों में पाया जाता है, "**बरन अपने प्राण को भी**।" न सिर्फ हमें अपने रिश्तेदारों से मसीह की तुलना में कम प्रेम रखना है; हमें **अपने** आप को **भी अप्रिय** जानना है! हमें आत्मकेन्द्रित जीवन जीने की बजाए मसीह–केन्द्रित जीवन जीना है। इस बात की ओर अधिक ध्यान देने की बजाए कि किसी भी चीज़ का असर हम पर कैसा होगा, हमें इस बात की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि इसका असर मसीह और उसकी महिमा पर कैसा होगा। व्यक्तिगत सुखसुविधाओं और सुरक्षा को लेकर हमारी चिन्ता का स्थान मसीह की महिमा और उसके नाम का प्रचार करने के बड़े कार्य के बाद ही होना चाहिए। उद्धारकर्ता के शब्द पूर्णसत्य हैं। उसने कहा कि यदि हम सबसे बढ़कर, अपने परिवार से बढ़कर और अपने प्राण से बढ़कर उससे प्रेम नहीं रखते, तो हम उसके चेले नहीं हो सकते। आधा–अधूरा प्रेम पर्याप्त नहीं है।

14:27 दूसरी बात, उसने यह शिक्षा दी कि एक सच्चे चेले को **अपना क्रूस** स्वयं **उठाए** रखना और प्रभु के पीछे चलना आवश्यक है। क्रूस को हम कोई शारीरिक दुर्बलता या मानसिक वेदना *न* समझें, परन्तु यह लज्जा, दु:ख, अकेलेपन, और यहाँ तक कि मृत्यु का वह मार्ग है जिसे एक व्यक्ति स्वेच्छा से मसीह के कारण चुनता है। सभी विश्वासी **क्रूस** नहीं उठाते। एक नामधारी मसीही बने रह कर क्रूस उठाने से बच जाना सम्भव है। परन्तु जब हम मसीह के समान बनने के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं, तो हम उसी प्रकार के शैतानी विरोधों को महसूस करेंगे जो प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी पर रहते हुए किया था। *क्रूस इसे ही कहते हैं*। चेले को मसीह के **पीछे** आना आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि उसे उसी प्रकार का जीवन जीना आवश्यक है जिस प्रकार का जीवन मसीह ने इस पृथ्वी पर रहते हुए जीया था – आत्मत्याग, अपमान, सताव, निन्दा, परीक्षा, और पापियों का विरोध सहने का जीवन।

14:28–30 उसके बाद प्रभु यीशु ने दो उदाहरण देते हुए उसके पीछे चलने से पहले उसके **खर्च** (शिष्यता की कीमत) का अनुमान लगा लेने की आवश्यकता पर जोर दिया। उसने मसीही जीवन को एक निर्माण परियोजना और एक युद्ध के समान बताया। यदि कोई व्यक्ति एक **गढ़ बनाना चाहता हो** तो वह **पहले बैठकर** उस पर होने वाले खर्च का हिसाब लगाता है। यदि उसके पास उसे **पूरा करने की विसात** (हैसियत) नहीं है, तो वह आगे नहीं बढ़ेगा। अन्यथा जब **नेव** डाली जाएगी, और धन की कमी के कारण कार्य रोकना आवश्यक हो जाएगा, तो देखने वाले उसका **ठट्ठा उड़ाकर** कहने लगेंगे **कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका**। यही बात चेलों पर भी लागू होती है। पहले उन्हें यह सोच लेना चाहिए कि मसीह के पीछे चलने के लिए क्या कीमत चुकानी पड़ती है, क्या वे सचमुच में पूरे मन से मसीह के लिए अपने जीवन का त्याग करना चाहते हैं। अन्यथा, वे उसकी महिमा की ओर आकर्षित होकर तो उसके पीछे हो लेंगे, पर बाद में असफल हो जाएंगे। यदि ऐसा हुआ, तो देखने वाले अच्छी शुरूआत परन्तु लज्जास्पद समाप्ति पर हमारा उपहास करेंगे। संसार अधूरे मन वाले मसीहियों की निन्दा ही करेगा।

14:31, 32 यदि कोई **राजा** एक ऐसी सेना के विरूद्ध **युद्ध करने जाता है** जो उसकी सेना की संख्या की दृष्टि से अधिक बड़ी है, तो उसे सावधानीपूर्वक यह विचार करना आवश्यक है कि **क्या** तुलना में उसकी छोटी सेना के पास उसके शत्रुओं को पराजित करने की क्षमता है। वह इस बात को भली भांति समझ जाता है कि वे या तो पूरी तरह से हार जाएंगे या फिर उन्हें पहले से ही आत्मसमर्पण कर देना चाहिए। ऐसी परिस्थिति में आधा–अधूरा निर्णय नहीं लिया जा सकता।

14:33 पद 33 शायद पूरी बाइबल का सबसे अलोकप्रिय पद है। यह पद स्पष्ट कहता है, ''**तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।**'' इस पद को और कोई दूसरा अर्थ नहीं दिया जा सकता। इस पद में यह नहीं लिखा है कि एक व्यक्ति को अपना सब कुछ त्याग देने के लिए *तैयार* रहना चाहिए। बल्कि यह पद कहता है कि उसे अपना सब कुछ त्याग देना *अनिवार्य* है। हमें प्रभु को इस बात के लिए श्रेय देना आवश्यक है कि वह जो कह रहा था उसे वह पूरी रीति से समझ रहा था। वह यह बात अच्छी तरह से जानता था कि उसका कार्य और किसी दूसरे तरीके से नहीं हो सकता। उसे ऐसे लोग चाहिए जो उसे संसार की प्रत्येक वस्तु से बढ़कर स्थान दें। रायल कहते हैं:

> वही व्यक्ति अपना भला करता है जो मसीह के लिए अपना सब कुछ दे देता है। ऐसा ही व्यक्ति सबसे अधिक लाभ का सौदा करता है; वह इस संसार में कुछ वर्षों के लिए क्रूस उठाता है, और आने वाले संसार में अनन्त जीवन पा लेता है। वह सर्वोत्तम धन प्राप्त करता है, और उन्हें कब्र के पार ले जाता है। वह यहाँ पर अनुग्रह का धनी है, और यहाँ से जाने के बाद वह महिमा का धनी हो जाता है। सबसे सर्वोत्तम, वह मसीह से विश्वास के द्वारा जो कुछ प्राप्त करता है उसे कभी नहीं खोता। यह वही ''उत्तम भाग है जो उससे कभी भी छीना न जाएगा।''[45]

14:34, 35 नमक चेले का एक चित्रण है। जो व्यक्ति प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण और त्याग के साथ जीवन व्यतीत करता है उसमें कुछ न कुछ सराहनीय और हितकर बात होती है। परन्तु उसके बाद हम ऐसे **नमक** के बारे में पढ़ते हैं जिसका **स्वाद बिगड़** जाता है। वर्तमान में पाया जाने वाला नमक अपना नमकीन स्वाद नहीं खो सकता क्योंकि यह शुद्ध नमक होता है। परन्तु बाइबल लिखे जाने के समय पलश्तिन देश में नमक में बहुत सी अशुद्धता पाई जाती थी। इसलिए यह सम्भव था कि नमक बर्बाद हो जाए और बचाखुचा स्वादहीन हिस्सा एक बरतन में पड़ा रह जाए। परन्तु यह बचाखुचा हिस्सा बेकार था। यह भूमि को उपजाऊ बनाने के काम भी नहीं आ सकता था। इसे नष्ट करना आवश्यक था।

यह एक ऐसे चेले का चित्रण है जो शिष्यता के जीवन का आरम्भ तो शानदार तरीके से करता है, परन्तु बाद में अपने संकल्प से पीछे हट जाता है। चेले के अस्तित्व का एकमात्र बुनियादी उद्‌देश्य होता है; यदि वह उस उद्‌देश्य को पूरा करने में असफल हो जाता है, तो फिर वह एक दयनीय पात्र है। नमक के विषय में हम पढ़ते हैं कि ''**उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं।**'' यहाँ यह *नहीं* कहा गया है कि इसे *परमेश्वर* बाहर फेंक देता है; ऐसा कभी नहीं हो सकता। परन्तु **उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं**, अर्थात्, वे ऐसे व्यक्ति की गवाही को अपने पैरों तले रौंद देते हैं जो बनाना तो आरम्भ करता है परन्तु पूरा नहीं कर पाता। केली ने इस पर यह टिप्पणी की है:

> यहाँ पर इस खतरे में बारे में बताया गया है कि अनेक बार अच्छा आरम्भ होने के बाद भी अन्त में सब कुछ बुरा हो सकता है। संसार में ऐसे नमक से अधिक बेकार वस्तु और क्या हो सकती जो अपने उसी गुण को खो दे जिसके कारण उसका मूल्य है? यह किसी दूसरे काम में लाए जाने के भी योग्य नहीं होता। ऐसा ही वह चेला भी होता है जो मसीह के पीछे चलना छोड़ दे। वह सांसारिक उद्‌देश्यों को पूरा करने के लिए भी उपयुक्त नहीं पाया जाता, और उसने परमेश्वर के उद्‌देश्य को भी त्याग दिया है। उसके पास इस संसार की व्यर्थ बातों और पापों में लिप्त होने के लिये बहुत अधिक प्रकाश या ज्ञान है, और मसीह के मार्ग में बने रहने के लिये उसके पास अनुग्रह और सत्य का आनंद भी नहीं है . . . स्वादहीन नमक निंदा और न्याय का एक विषय बन जाता है।[46]

प्रभु ने शिष्यता के विषय पर अपने सन्देश को इन वचनों के साथ समाप्त किया, ''**जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले**!'' इन वचनों का अर्थ यह है कि हर एक व्यक्ति में शिष्यता की सख्त शर्तों को सुनने की इच्छा नहीं होगी। परन्तु यदि कोई व्यक्ति प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए तैयार है, तब चाहे उसे कोई भी कीमत चुकानी क्यों न पड़े, उसे सुनकर उसके पीछे चलना चाहिए।

एक बार जॉन केल्विन ने कहा था, ''मैंने मसीह के लिए अपना सब कुछ दे दिया, और मुझे क्या मिला? मुझे मसीह में सब कुछ मिल गया।'' हेनरी ड्रमोन्ड कहते हैं, ''स्वर्ग के राज्य में प्रवेश –शुल्क कुछ भी नहीं है: परन्तु इसका वार्षिक अनुदान सब कुछ है।''

स. खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त (15:1–7)

15:1, 2 ऐसा प्रतीत होता है कि अध्याय 14 में प्रभु ने जो शिक्षा देने की सेवकाई की है, उसकी ओर तुच्छ माने जाने वाले **चुंगी लेने वाले** और अन्य लोग जिन्हें पापी माना जाता था, आकर्षित हुए। यद्यपि प्रभु ने उनके पापों के लिए उन्हें फटकारा, तौभी उनमें से अनेक ने यह मान लिया कि वह सही है। वे अपने विरुद्ध होकर मसीह के पक्ष में आ गए। सच्चाई से मन फिराकर, उन्होंने उसे अपना प्रभु मान लिया। जहाँ कहीं प्रभु ने लोगों में पाया कि वे अपने पापों को मान लेने के लिए तैयार हैं, वह उनकी ओर खींचा चला आया, और उसने उन्हें आत्मिक सहायता और आशीष प्रदान की।

फरीसी और शास्त्री इस बात से कुढ़ गए कि यीशु **पापियों** के साथ मिलता जुलता है। वे इन सामाजिक और नैतिक कोढ़ियों के प्रति कोई अनुग्रह नहीं दर्शाते थे, और यीशु द्वारा अनुग्रह दर्शाने पर उससे कुढ़ जाते थे।और इसलिए उन्होंने उस पर एक दोष लगाया, ''**यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है**।'' अवश्य ही, यह बात सही थी। उन्हें लगाता था कि यह दोष लगाए जाने योग्य बात है, परन्तु वह तो उसी उद्देश्य को पूरा कर रहा था जिसके लिए वह इस संसार में आया था!

उनके इसी आरोप के उत्तर में प्रभु यीशु ने खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और ऊड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त बताए। ये दृष्टान्त सीधे सीधे शास्त्रियों और फरीसियों को निशाना बना कर कहे गए, जो कभी भी परमेश्वर के सामने अपनी खोई हुई दशा को स्वीकार करने की परवाह नहीं करते थे। सच्चाई तो यह थी, कि वे भी उतने ही खोए हुए थे जितना कि महसूल लेने वाले और पापी, परन्तु वे इसे स्वीकार करने से हठपूर्वक इंकार कर देते थे। इन तीन दृष्टान्तों में मुख्य रूप से यह कहा गया है कि जब परमेश्वर पापियों को मन फिराते हुए देखता है तो वह सच्चा आनन्द और सन्तुष्टि पाता है, जबकि अपने आप को धर्मी बताने वाले पाखण्डियों से उसे किसी भी तरह का कोई संतोष प्राप्त नहीं होता, जो अपनी नीच और पापमय दशा को अपने अत्यंत घमण्ड के कारण स्वीकार नहीं करते।

15:3, 4 यहाँ पर प्रभु यीशु को एक चरवाहे के रूप में चित्रित किया गया है। **निन्नानवे** भेड़ें शास्त्रियों और फरीसियों को दर्शाती हैं। **खोई** हुई भेड़ किसी ऐसे महसूल लेने वाले या पापी का प्रतीक है जिसने अपना पाप मान लिया हो। जब चरवाहे को पता चलता है कि उसकी भेड़ों में से **एक** खो गई है, तो वह **निन्नानवे को जंगल में छोड़कर** (भेड़शाले में नहीं) उस एक को तब तक **खोजता** है **जब तक मिल न जाए**। जहाँ तक हमारे प्रभु की बात है, खोजबीन की इस यात्रा में पृथ्वी पर उसका आना, लोगों के बीच उसकी सार्वजनिक सेवकाई के वर्ष, उसका तिरिस्कार, उसका दु:ख उठाना, और उसकी मृत्यु शामिल है। *नाइन्टी एंड नाइन* शीर्षक कविता की ये पंक्तियां क्या ही सत्य हैं:

> परन्तु किसी भी छुड़ाए हुए ने कभी नहीं जाना
> कितना गहरा सागर पार किया गया था,
> न ही यह कि कितनी अन्धियारी रात हमारे प्रभु ने बिताई
> ताकि वह उस भेड़ को खोज ले जो खो गई थी।
> – *एलिज़ाबेथ सी. क्लेफेन*

15:5 भेड़ **मिल** जाने के बाद, **वह . . . उसे कांधे पर उठा लेता है** और अपने घर ले जाता है। इसका अर्थ यह है कि बचाई गई भेड़ को वह विशेषाधिकार और आत्मीयता मिलती है जो उसे तब नहीं मिली थी जब वह दूसरी भेड़ों के साथ गिनी जाती थी।

15:6 चरवाहे ने **अपने मित्रों और पड़ोसियों** को बुलाया और खोई हुए भेड़ के मिल जाने (उद्धार) के उपलक्ष्य में उनके साथ **आनन्द** किया। यह बात एक पापी के मन फिराने पर उद्धारकर्ता के आनन्द को प्रगट करती है।

15:7 इस दृष्टान्त में पाई जाने वाली शिक्षा स्पष्ट है: **एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में . . . आनन्द** होता है परन्तु उन निन्नानवे को लेकर कभी कोई आनन्द नहीं मनाया जाता जिन्हें अपनी खोई हुए दशा का कभी बोध नहीं रहता। पद 7 का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि कुछ लोगों को मन फिराने की आवश्यकता नहीं होती। सब मनुष्य पापी हैं, और उद्धार पाने के लिए सभी को मन फिराव की आवश्यकता है। यह पद ऐसे लोगों के बारे में है जो यह समझते हैं कि उन्हें **मन फिराने की आवश्यकता नहीं** है।

ट. खोए हुए सिक्के का दृष्टान्त (15:8-10)

इस दृष्टान्त में **स्त्री** को पवित्र आत्मा का चित्रण समझा जा सकता है, जो परमेश्वर के वचन का **दीया** लेकर खोए हुओं को ढूंढ़ता है। नौ **सिक्के** मन न फिराए हुए लोगों को दर्शाते हैं, जबकि **एक** खोया हुआ **सिक्का** एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो यह अंगीकार करने के लिए तैयार है कि वह परमेश्वर से दूर हो गया है। पिछले दृष्टान्त में भेड़ स्वयं ही रास्ते से भटक गई थी। सिक्का निर्जीव वस्तु है और इसलिए इसे एक **पापी** की निर्जीव दशा का चित्र माना जा सकता है। वह पापों में मरा हुआ है।

स्त्री तब तक **जी लगाकर** उस सिक्के को **खोजती** रहती है **जब तक वह मिल न जाए**। उसके बाद **वह अपनी सखियों और पड़ोसियों को** इकट्ठा करती है कि वे उसके साथ मिल कर सिक्के के मिल जाने का आनन्द मनावें। खोए हुए सिक्के से, जिसे उसने पा लिया, उसे जो सच्ची खुशी मिलती है वह उन नौ सिक्कों से नहीं मिलती जो नहीं खोए थे। ऐसा ही परमेश्वर के साथ होता है। जो **पापी** अपने आप को दीन बना लेता है और अपनी खोई हुई दशा का अंगीकार कर लेता है वह परमेश्वर के हृदय में आनन्द लेकर आता है। परमेश्वर को इस प्रकार का आनन्द ऐसे लोगों से नहीं मिलता जो मन फिराने की आवश्यकता को महसूस नहीं करते।

य. खोए हुए पुत्र का दृष्टान्त (15:11-32)

15:11-16 यहाँ पर परमेश्वर का चित्रण **किसी** ऐसे **मनुष्य** के रूप में किया गया है जिसके **दो पुत्र** थे। **छुटका पुत्र** मन फिराने वाले पापी को दर्शाता है, जबकि बड़ा पुत्र शास्त्रियों और फरीसियों को दर्शाता है। शास्त्री और फरीसी जैसे लोग सृष्टि के भाव से परमेश्वर की सन्तान हैं,यद्यपि छुटकारे के भाव से नहीं। छोटे पुत्र को ऊड़ाऊ पुत्र भी कहा जाता है। उड़ाऊ एक ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो बहुत फिजूलखर्ची करता है, और जो धन की बर्बादी करता है। यह पुत्र अपने पिता के घर से अघा गया और उसने उस घर को छोड़ देने का निर्णय लिया। वह अपने पिता की मृत्यु तक भी रूकना नहीं चाहता, और इसलिए उसने समय से पहले ही **सम्पत्ति में से** अपना **भाग** मांग लिया। पिता ने अपने पुत्रों को उनका भाग दे दिया। कुछ ही समय बाद, छुटका पुत्र **एक दूर देश** को चला गया और उसने अपना सारा धन पापमय भोगविलास में उड़ा दिया। जैसे ही उसका धन समाप्त हो गया उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह दुर्दशा की अवस्था में पहुँच गया। उसे **सूअर** चराने का कार्य ही मिल सका – एक ऐसा कार्य जो एक सामान्य यहूदी के लिए सबसे घृणित कार्य है। जब वह सूअरों को उनके बर्तनों में फलियां खाते देखता था, तो उसका जी जल उठता था। उसकी तुलना में खाने के लिए सूअरों के पास अधिक था, और **कोई** भी उसकी सहायता करने को तैयार नहीं था। उसके वे मित्र जो धन उड़ाते समय उसके साथ थे, वे सभी गायब हो चुके थे।

15:17-19 यह अकाल उसके लिए एक आशीष का रूप धारण कर के आया था। इस अकाल ने उसे सोचने के लिए मजबूर किया। उसे याद आने लगा कि उसके **पिता के . . . मजदूरों** का जीवन उसकी तुलना में कहीं अधिक आरामदायक है। उनके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन है, जबकि वह **भूखा** मर रहा है। जब वह इस विषय पर सोच रहा था, तभी उसने एक निर्णय लिया। उसने निश्चय किया कि वह मन फिरा कर अपने **पिता के पास** जाएगा, अपने पापों को मान लेगा, और उससे क्षमा मांगेगा। उसने यह जान लिया कि वह **अब इस योग्य नहीं रहा कि** अपने पिता का **पुत्र** कहलाए, और इसलिए उसने एक **मजदूर की नाई** उसके यहाँ नौकरी करने का मन बनाया।

15:20 इससे पहले कि वह अपने घर पहुँचता, दूर से ही **उसके पिता ने उसे देख कर तरस खाया**। उसने **दौड़कर उसे गले लगाया** और उसे **चूमा**। शायद बाइबल में सिर्फ यहीं परमेश्वर द्वारा हड़बड़ी किए जाने की बात अच्छे भाव से दी गई है। स्टीवर्ट ने इसे इस तरह से समझाया है:

> प्रभु यीशु ने बेधड़क होकर परमेश्वर का इस प्रकार से चित्रण किया है: वह ठहरा नहीं रहा कि उसका लज्जित पुत्र चुपचाप आकर घर में एक कोने में दुबक जाए, न ही उसके आने पर वह अपनी प्रतिष्ठा को महत्व देते हुए वहीं का वहीं खड़ा रहा, परन्तु उसे अपना

लेने के लिए दौड़ पड़ा, उसने अपने लज्जित, मैले कुचले, और मिट्टी से सने पुत्र को वैसे का वैसा अपने बाँहों में ले लिया। इसी नाम ''पिता'' ने तुरन्त ही पाप के रंग को गहरा कर दिया और क्षमा की भव्य महिमा को ऊँचा कर दिया।[43]

15:21-24 पुत्र अंगीकार कर ही रहा था और अपने पिता से नौकरी मांगने पर ही था। **परन्तु पिता ने** उसे बीच में ही रोक कर अपने दासों को आदेश दिया कि वे उसे **अच्छे से अच्छा वस्त्र** पहिनाएं, उसके **हाथ में अंगूठी और पावों में जूतियां** पहिनाएं। उसने अपने उस **पुत्र** की वापसी पर एक बड़े भोज का आयोजन करने का भी आदेश दिया, जो **खो गया था** और अब **मिल गया** है। पिता का यह मानना था कि पुत्र **मर गया था** परन्तु अब **फिर से जी गया है**। किसी ने कहा है, ''यह जवान एक अच्छे समय की खोज कर रहा था, परन्तु वह इसे दूर देश में नहीं पा सका। उसने इसे तभी पाया जब उसके मन में पिता के घर में लौट जाने की अच्छी समझ प्राप्त हुई।'' यहाँ इस बात की ओर ध्यान दिलाया जा रहा है कि **वे आनन्द करने लगे**, परन्तु इस बात का उल्लेख कहीं नहीं किया गया है कि उनका आनन्द मनाना कभी समाप्त हुआ हो। ऐसा ही एक पापी के उद्धार पाने पर होता है।

15:25-27 जब **जेठा पुत्र खेत** से लौटा और उसने इस आनन्द मनाए जाने के बारे में सुना, तो उसने एक दास से **पूछा** कि यह सब क्या हो रहा है। उसने उसे बताया कि उसका छोटा भाई घर वापस लौट आया है और इसलिए उसका **पिता** आनन्दविभोर है।

15:28-30 बड़ा पुत्र जलन और क्रोध से भर गया। उसने अपने पिता के आनन्द में शामिल होने से इंकार कर दिया। जे.एन. डार्बी ने इसे इस तरह से समझाया है: ''जहाँ परमेश्वर का आनन्द है, वहाँ स्व-धार्मिकता (अपने कार्यों के कारण अपने आप को धर्मी समझना) नहीं आ सकती। यदि परमेश्वर पापियों के लिए भला है, तो मेरी अपनी धार्मिकता का क्या काम।'' जब उसके **पिता** ने उसे उत्सव में शामिल होने के लिए आग्रह किया तो उसने मना कर दिया और पिनपिनाने लगा कि उसके पिता ने **कभी** भी उसकी विश्वासयोग्य सेवा और आज्ञाकारिता के लिए उसे इनाम नहीं दिया है। उसने उसे **कभी एक बकरी का बच्चा** भी न दिया, पाले हुए बछड़े की बात तो दूर की बात है। उसने शिकायत करते हुए कहा कि जब उड़ाऊ पुत्र पिता की सारी सम्पत्ति **वेश्याओं** पर लुटा कर आया है, तो पिता को एक बड़ा उत्सव आयोजित करने में कोई हिचक तक महसूस न हुई। ध्यान दें कि उसने क्या कहा, ''**तेरा यह पुत्र,**'' न कि ''मेरा भाई''।

15:31, 32 पिता के उत्तर में यह आशय पाया जाता है कि खोए हुए व्यक्ति के वापस लौटने पर आनन्द होता है, जबकि हठी, कृतघ्न, और मेल-मिलाप करने से इंकार कर देने वाला पुत्र आनन्द करने का कोई अवसर नहीं देता।

बड़ा पुत्र शास्त्रियों और फरीसियों का सटीक चित्रण है। वे परमेश्वर द्वारा घोर पापियों पर तरस खाने पर कुढ़ते थे। उनका मानना था (परमेश्वर का नहीं), कि उन्होंने विश्वासयोग्यता से परमेश्वर की सेवा की है, और कभी भी उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं किया है, और उसके बाद भी उन्हें इन सारी बातों के लिए उचित प्रतिफल नहीं दिया गया। परन्तु सच्चाई यह है कि वे पाखण्डी धर्मवादी और दोषी पापी थे। उनका घमण्ड परमेश्वर और उनके बीच की दूरी को देखने नहीं दे रहा था, और वे इस सच्चाई के प्रति भी अन्धे हो गए थे कि उस ने उन पर आशीष पर आशीष बरसाई है। सिर्फ यदि वे मन फिरा कर अपने पापों को मान लेते तो पिता का हृदय गदगद हो जाता और वे भी एक बड़े उत्सव का कारण बनते।

व. अधर्मी भण्डारी का दृष्टान्त (16:1-13)

16:1, 2 प्रभु यीशु अब फरीसियों और शास्त्रियों से हट कर **चेलों से** भण्डारीपन के विषय में बातचीत करने लगा। हम यह स्वीकार करते हैं कि यह स्थल लूका के सुसमाचार का सबसे कठिन स्थल है। कठिन होने का कारण यह है कि ऐसा लगता है कि अधर्मी भण्डारी के दृष्टान्त में बेईमानी के लिए सराहना की गई है। किन्तु, हम यह देखेंगे कि ऐसा नहीं है। इस कहानी में **धनवान** मनुष्य परमेश्वर का चित्रण करता है। **भण्डारी** उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे दूसरे व्यक्ति की सम्पत्ति को सम्भालने की जिम्मेदारी दी जाती है। इस कहानी के अनुसार, प्रभु का हर एक चेला एक भण्डारी है। इस दृष्टान्त में जिस

भण्डारी के विषय में बताया गया है उस पर यह दोष लगाया गया है कि वह अपने स्वामी के पैसों का गबन कर रहा था। उसने उसे **लेखा** देने के लिए बुलाया और उससे कह दिया कि अब उसे उसके कार्य से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

16:3–6 इस भण्डारी ने तेजी से दिमाग दौड़ाया। वह समझ गया कि उसे अपने भविष्य के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक है। तौभी अब वह शारीरिक श्रम कर जीविकोपार्जन करने लायक नहीं रह गया और **भीख मांगने** पर उसे लज्जा आती है (यद्यपि उसे चोरी करने में लज्जा नहीं आती थी)। ऐसी स्थिति में वह अब अपनी जीविका का प्रबन्ध कैसे करेगा? उसने एक योजना बनाई जिसके द्वारा वह कुछ लोगों का दिल जीत कर उन्हें अपना मित्र बना सके ताकि उसकी आवश्यकता के समय वे उसकी सहायता करें। उसकी योजना यह थी: वह अपने स्वामी के एक ग्राहक के पास गया और उससे पूछा कि उस पर उसके स्वामी का **क्या आता** है? जब ग्राहक ने कहा, **''सौ मन तेल,''** तो भण्डारी ने उससे **पचास** चुकाने के लिए कहा और उसके खाते में हिसाब बराबर कर दिया।

16:7 दूसरे ग्राहक ने **सौ मन गेहूँ** उधार में लिया था। भण्डारी ने उसे **अस्सी** चुकाने के लिए कहा, और उसका हिसाब भी बराबर कर दिया।

16:8 इस दृष्टान्त में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि **स्वामी ने इस अधर्मी भण्डारी को** उसकी **चतुराई** के लिए **सराहा**। कोई व्यक्ति ऐसी बेइमानी को क्यों सही ठहराएगा? भण्डारी ने जो किया वह अन्यायपूर्ण था। आगे के पदों में यह बताया गया है कि इस भण्डारी की इस धूर्तता के लिए उसकी सराहना बिल्कुल नहीं की गई है, परन्तु उसकी सराहना उसकी दूरदर्शिता के लिए की गई है। उसने चतुराई से काम लिया। उसने भविष्य के बारे में सोचा, और उसके लिए प्रबन्ध किया। उसने भविष्य के प्रतिफल के लिए वर्तमान के लाभ का त्याग कर दिया। इस बात को अपने जीवन में लागू करते समय हम स्पष्ट रूप से यह समझ लें कि परमेश्वर की सन्तान का भविष्य इस पृथ्वी पर नहीं, परन्तु स्वर्ग में है। जिस प्रकार से भण्डारी ने इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया ताकि उसकी सेवानिवृत्ति के बाद उसके पास सहायता करने वाले मित्र रहें, उसी तरह से एक मसीही को भी अपने प्रभु की सम्पत्ति का इस प्रकार से उपयोग करना है कि जब वह स्वर्ग में प्रवेश करे तो आनन्द के साथ उसका स्वागत किया जाए।

प्रभु ने कहा, **''इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं।''** इसका अर्थ यह है कि सच्चे विश्वासी जितनी चतुराई स्वर्ग में धन जमा करने में दिखाते हैं, उससे कहीं अधिक चतुराई अधर्मी और उद्धार न पाए हुए लोग इस संसार में अपने भविष्य के लिए प्रबन्ध करने में दिखाते हैं।

16:9 हमें **अधर्म के धन** *के माध्यम से* अपने लिए **मित्र बना** लेना चाहिए। अर्थात्, हमें अपने धन और अन्य भौतिक वस्तुओं का उपयोग इस प्रकार से करना है कि हम मसीह के लिए आत्माओं को जीत सकें और ऐसी मित्रता स्थापित कर लें जो अनन्तकाल तक बनी रहती है। पीयरसन ने बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा है:

> धन का उपयोग बाइबल, मसीही पुस्तकें, टेक्ट्स, अर्थात्, अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्यों की आत्माओं को खरीदने में करना चाहिए। इस प्रकार से जो चीज़ें भौतिक और क्षणिक हैं, वे अनश्वर, अभौतिक, आत्मिक, और अनन्त बन जाती हैं। यदि एक व्यक्ति के पास 10,000 रूपये हों, और वह इसे पूरा का पूरा किसी भोज का आयोजन कर या कोई पार्टी आयोजित कर खर्च कर देता है, तो अगले दिन इस 10,000 में से उसके पास कुछ नहीं बच जाता। परन्तु यदि वह इस पैसे से 100 रूपये की एक एक बाइबल लेता है, तो वह 100 बाइबल खरीद सकता है। ऐसा करने के द्वारा वह स्वर्ग के राज्य का बीज बोता है, और यह बीज जब बढ़ कर कटनी के लिए तैयार होता है, तब बाइबल नहीं, परन्तु आत्माओं की कटनी काटी जाती है। अधर्म के धन से उसने अनश्वर मित्र बना लिए, जो मित्र उसके यहां से विदा होने पर, अनन्त निवास में उसका आदर करेंगे।[48]

यह हमारे प्रभु द्वारा दी गई शिक्षा है। भौतिक धन का बुद्धिमानीपूर्वक निवेश करने के द्वारा, हम मनुष्यों की अनन्त आशीषों में सहभागी हो सकते हैं। हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जब हम स्वर्ग के द्वार पर पहुँचेंगे, तो हमारा स्वागत करने के लिए वे लोग खड़े रहेंगे जो हमारे द्वारा त्याग के साथ दिए गए धन और प्रार्थना के माध्यम से बचाए गए थे। ये लोग हमें यह कहते हुए धन्यवाद देंगे, ''आप ही हैं, जिन्होंने मुझे यहाँ का निमंत्रण दिया था।''

डार्बी ने इस पर यह टिप्पणी की है:

मनुष्य सामान्यत: परमेश्वर का भण्डारी होता है; और दूसरे अर्थ में और दूसरे तरीके से इस्राएल परमेश्वर का भण्डारी था, जिसे परमेश्वर ने दाख की बारी में रखा था और उसे व्यवस्था, प्रतिज्ञाएं, वाचाएं, और आराधना सौंपी थी। परन्तु, इन सारी बातों में इस्राएल ने अपनी सम्पत्ति को व्यर्थ जाने दिया। जिस व्यक्ति को एक भण्डारी के रूप में देखा जा रहा था वह पूरी तरह से अविश्वासयोग्य निकला। अब, इसके बाद क्या किया जाना है? परमेश्वर प्रगट होता है, और अपने अनुग्रह की सम्प्रभुता में, उस चीज़ को जिसका मनुष्य ने पृथ्वी पर दुरुपयोग किया था, स्वर्गीय फल में बदल दिया। इस संसार की वस्तुएं जो मनुष्य के हाथ में सौंपी गई हैं, वे उसे इसलिए नहीं सौंपी गई हैं कि मनुष्य इस पृथ्वी पर रहते हुए उनका मजा लेता रहे, जो कि परमेश्वर के उद्देश्य से बिल्कुल हटकर है, परन्तु इसलिए कि वह भविष्य (अनन्तता) को ध्यान में रखते हुए उन वस्तुओं का उपयोग करे। हमें सांसारिक वस्तुओं को एकत्रित करने के प्रयास में नहीं लगे रहना है, परन्तु इन वस्तुओं का सही उपयोग करते हुए इन्हें अन्य समयों के लिए एक प्रावधान बनाना है। यह बेहतर है कि आने वाले दिनों के लिए सब का उपयोग मित्र बनाने के लिए किया जाए बजाए इसके कि वह धन आज के लिए बचा कर रखा जाए। मनुष्य इस विषय में विनाश तक जा चुका है। इसलिए मनुष्य अब भण्डारी के पद पर रहने योग्य नहीं रह गया है।[49]

16:10 यदि हम एक भण्डारी के रूप में **थोड़े से थोड़े** (धन) **में** विश्वासयोग्य और सच्चे हैं, तो हम **बहुत** (आत्मिक धन) को सम्भालने **में भी** सच्चे ठहरेंगे। दूसरी ओर, एक मनुष्य जो परमेश्वर द्वारा उसे सौंपे गए धन का उपयोग करने में अधर्मी है वह तब भी अधर्मी सिद्ध होगा जब उसे बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। धन की तुलनात्मक महत्वहीनता को ''**थोड़े से थोड़े**'' वाक्यांश के द्वारा व्यक्त किया गया है।

16:11 जो कोई प्रभु के लिए **अधर्म के धन** का उपयोग करने में विश्वासयोग्य नहीं है, वह कैसे अपेक्षा कर सकता है कि उसे **सच्चा** धन सौंपा जाएगा। धन को **अधर्म का धन** कहा गया है। यह मूल रूप से अपने आप में बुरा नहीं है। परन्तु यदि पाप संसार में न आता तो शायद धन की आवश्यकता ही नहीं होती। और धन इसलिए **अधर्म** है क्योंकि यह परमेश्वर की महिमा के उद्देश्य को छोड़ कर दूसरे उद्देश्यों में लगाया जाता है। यहाँ पर इसकी तुलना सच्चे धन से की गई है। धन का मूल्य अनिश्चित और क्षणिक होता है; आत्मिक सच्चाइयों का मूल्य स्थिर और अनन्त होता है।

16:12 इस पद में **पराए** की और स्वयं की चीज़ के बीच में अन्तर किया गया है। हमारे पास जो कुछ है, हमारा धन, हमारा समय, हमारे वरदान – सब प्रभु के हैं, और हमें इनका उपयोग उसके लिए करना है। हमारे स्वयं की चीज़, वह चीज़ हैं जिसे हम मसीह की सेवा विश्वासयोग्यता से करने के कारण इस जीवन में और आने वाले जीवन में प्रतिफल के रूप में प्राप्त करते हैं। यदि हम उसकी चीज़ों के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहे, तो फिर **जो** हमारा है उसके प्रति विश्वासयोग्य कैसे रह सकते हैं?

16:13 एक ही समय में सांसारिक वस्तुओं और परमेश्वर दोनों के लिए जीवन जीना बिल्कुल असम्भव है। यदि हमारा स्वामी धन है, तो हम सचमुच में परमेश्वर की सेवा नहीं कर पाएंगे। धन एकत्रित करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम अपना सर्वोत्तम प्रयास इस ओर झोंक दें। ऐसा करने के द्वारा हम परमेश्वर को उन बातों से वंचित कर देते हैं जिस पर उसका अधिकार है। हमारी निष्ठा बंट जाती है। अभिप्राय में मिश्रण हो जाता है। हमारे निर्णय निष्पक्ष नहीं रह जाते। जहाँ हमारा धन है वहीं हमारा मन भी लगा रहता है। धन कमाने के प्रयास में, हम **धन** की सेवा कर रहे हैं। धन की सेवा करते हुए **परमेश्वर** की सेवा कर पाना पूरी तरह से असम्भव है। धन हमें पूरी तरह से, और हमारा सब कुछ, मांग लेगा है – हमारी शाम, हमारा सप्ताहान्त, और वह सारा समय जिसे हमें परमेश्वर को देना चाहिए।

व. लोभी फरीसी (16:14–18)

16:14 **फरीसी** लोग न सिर्फ अहंकारी और पाखण्डी थे; परन्तु वे लोभी भी थे। वे समझते थे कि धर्म कमाई का एक रास्ता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी फायदे के पेशे को चुनता है उसी प्रकार से वे धर्म को एक मलाईदार पेशे के रूप में चुनते थे। उनके कार्य का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना या अपने पड़ोसी की सेवा करना नहीं, परन्तु अपने आप को धनी बनाना होता था। यीशु की इस

शिक्षा को **सुनकर** कि उन्हें इस संसार के धन का त्याग कर स्वर्ग में अपने लिए धन जमा करना है, वे उसे **ठट्ठों में उड़ाने लगे**। उनके लिए, धन परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से अधिक वास्तविक था। उन्हें धन जमा करने से कोई रोक नहीं सकता था।

16:15 फरीसी लोग बाहर से ईश्वरभक्त और आत्मिक होने का दिखावा करते थे। वे अपने आप को **मनुष्य** की दृष्टि में धर्मी गिनते थे। परन्तु इस छल के पहिनावे के भीतर, **परमेश्वर** उनके **मन** के लोभ को देख सकता था। वह उनके दिखावे से धोखा नहीं खा सकता था। जिस तरह का जीवन जीने का वे दिखावा करते थे, और जिसे दूसरे सही मानते थे (भजन 49:18), **परमेश्वर के निकट** (वह) **घृणित है**। वे अपने आप को सफल मानते थे क्योंकि वे धार्मिक कार्य को धन की बहुतायत के साथ जोड़ कर देखते थे। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वे आत्मिक व्यभिचारी थे। वे यहोवा से प्रेम करने का दावा करते थे, परन्तु वास्तव में धन ही उनका ईश्वर था।

16:16 पद 16 से पद 18 के बीच की कड़ी (निरन्तरता) को समझ पाना काफी कठिन है। पहली बार पढ़ने से तो ऐसा लगता है कि इससे पहले जो कुछ हुआ और इसके बाद जो हुआ उन दोनों के साथ इसका कहीं से भी कोई सम्बन्ध नहीं है। किन्तु, हमें लगता है कि यदि हम इस बात को ध्यान में रखें कि अध्याय 16 का विषय फरीसियों का लोभ और उनकी अविश्वासयोग्यता है, तो हम इसे अच्छे से समझ सकते हैं। जो लोग अपने आप पर इस विषय पर घमण्ड करते थे कि वे व्यवस्था का पूरी सावधानी के साथ पालन करते हैं, उन्हीं लोगों की पोल धनलोलुप पाखण्डियों के रूप में खोल दी गई है। व्यवस्था की आत्मा की एक तीक्ष्ण तुलना फरीसियों की आत्मा के साथ की गई है।

व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे। इन शब्दों के साथ, प्रभु ने व्यवस्था के कालखण्ड (डिस्पेंसेशन) का वर्णन किया जो मूसा से आरम्भ हो कर **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाला के साथ समाप्त हुआ। परन्तु अब एक नए कालखण्ड का आरम्भ हुआ। यूहन्ना के समय से, **परमेश्वर के राज्य** का सुसमाचार सुनाया गया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इस्राएल के अधिकारिक राजा के आगमन की घोषणा करते हुए उसके आगे आगे चला। उसने लोगों को बताया कि यदि वे मन फिराएंगे, तो प्रभु यीशु उन पर राज्य करेगा। उसके प्रचार के और बाद में स्वयं प्रभु के द्वारा किए गए प्रचार के परिणामस्वरूप, बहुत से लोगों ने उत्सुकता के साथ प्रत्युत्तर दिया।

''हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है'' का अर्थ यह है कि जिन लोगों ने सुसमाचार का प्रत्युत्तर दिया उन्होंने शब्दश: राज्य में प्रबलता के साथ प्रवेश कर लिया। उदाहरण के लिए, चुंगी लेनेवाले और पापी लोगों को फरीसियों द्वारा निर्धारित किए गए अवरोधों पर से कूद कर जाना पड़ता था। दूसरों को अपने मन में धन के मोह के साथ हिंसक होकर निपटना पड़ता था। पूर्वाग्रह पर प्रबल होना आवश्यक था।

16:17, 18 परन्तु नए कालखण्ड का अर्थ यह नहीं था कि बुनियादी नैतिक सच्चाइयों को हटा दिया गया। **आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज** है। **व्यवस्था का एक बिन्दु** ''अं'' के एक बिन्दु ''ं'' के जैसा समझा जा सकता है।

फरीसी लोगों ने सोचा कि वे परमेश्वर के राज्य में है, परन्तु प्रभु कुछ इस प्रकार से कह रहा था, ''तुम परमेश्वर के महान नैतिक नियमों को एक तरफ हटा कर परमेश्वर के राज्य का दावा नहीं कर सकते।'' शायद उन्होंने यह पूछा होगा, ''हमने किस महान नैतिक नियम को एक तरफ हटा दिया?'' तब प्रभु ने विवाह की व्यवस्था की ओर उनका ध्यान खींचते हुए कहा कि यह एक ऐसी व्यवस्था जो कभी नहीं टलेगी। जो कोई **अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई त्यागी हुई** स्त्री **से व्यभिचार करता है वह भी व्यभिचार करता है**। फरीसी लोग आत्मिक दृष्टि से ठीक ऐसा ही कर रहे थे। यहूदी लोगों के साथ परमेश्वर ने वाचा बान्धी थी और उन्हें वाचा के लोग बनाया था। परन्तु अब ये फरीसी धन पाने के पागलपन में परमेश्वर की ओर पीठ फेर रहे थे। और शायद यह पद यह भी बता रहा है कि वे वास्तव में शारीरिक व्यभिचार के भी दोषी थे।

एक्स. धनवान मनुष्य और लाजर (16:19–31)

16:19–21 प्रभु ने दो जीवन, दो मृत्यु, और दो

मृत्यु के बाद के जीवन का वर्णन करते हुए भौतिक वस्तुओं के भण्डारीपन के विषय में अपने उपदेश को समाप्त किया। यह ध्यान देना आवश्यक है कि इसका वर्णन दृष्टान्त के रूप में नहीं किया गया है। हम इस बात का उल्लेख यहां पर इसलिए कर रहे हैं क्योंकि कुछ आलोचक इस वर्णन को दृष्टान्त बता कर इसमें दी गई गम्भीर सच्चाइयों को टाल देना चाहते हैं।

आरम्भ में ही यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये कि इस अनाम **धनवान मनुष्य** को उसके धन के कारण आधोलोक का दण्ड नहीं दिया गया था। प्रभु यीशु पर विश्वास लाना ही उद्धार का एकमात्र आधार है, और उस पर विश्वास लाने से इंकार करने पर मनुष्य दोषी ठहराए जाते हैं। परन्तु इस धनवान व्यक्ति ने **उसकी डेवढ़ी पर छोड़** दिए जाने वाले **कंगाल** के प्रति लापरवाह होकर उसकी अवहेलना की, और ऐसा करने के द्वारा उसने यह सिद्ध कर दिया कि उसमें वह सच्चा विश्वास नहीं है जिसके आधार पर एक व्यक्ति को उद्धार प्राप्त होता है। यदि उसके जीवन में परमेश्वर का प्रेम होता, तो वह भोगविलास, सुखसुविधाओं, और आराम का जीवन नहीं बिताता जब वह यह देखता कि उसकी डेवढ़ी पर उसका एक भाई **जूठन** के कुछ टुकड़ों के लिए भीख मांग रहा है। धन के प्रति अपने मोह को त्याग कर वह परमेश्वर के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश कर सकता था।

वैसे ही यह भी सत्य है कि **लाजर** के उद्धार का कारण उसका कंगाल होना नहीं था। उसने अपनी आत्मा के उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखा था।

अब धनवान व्यक्ति के जीवन की ओर ध्यान दें। वह सबसे कीमती आभूषण और वस्त्र ही पहिनता था, उसके भोजन की मेज चिकनी चुपड़ी सबसे स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों से भरी रहती थी। वह अपने आप के लिए जीता था, वह अपने शारीरिक सुख और लालसाओं की पूर्ति में ही लगा रहता था। उसके जीवन में परमेश्वर के लिए कोई सच्चा प्रेम नहीं था, और उसे अपने भाइयों की कोई चिन्ता नहीं थी।

लाजर का जीवन इसके ठीक विपरीत था। वह एक अभागा **कंगाल** था जो धनी मनुष्य के घर के सामने हर दिन छोड़ दिया जाता था, वह **घावों से भरा** हुआ था, भूख से तड़फ रहा था, और गन्दे कुत्तों से त्रस्त रहता था जो उसके **घावों को चाटते** रहते थे।

16:22 जब **वह कंगाल मर गया**, तो **स्वर्गदूतों ने उसे इब्राहीम की गोद में पहुँचाया**। अनेक लोग यह प्रश्न करते हैं कि क्या **स्वर्गदूत** सचमुच में विश्वासियों की आत्माओं को स्वर्ग में पहुँचाने का काम करते हैं। हमें इन वचनों के सीधे अर्थ पर सन्देह करने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। स्वर्गदूत इस जीवन में भी विश्वासियों की सेवाटहल करते हैं, और ऐसा कोई कारण दिखाई नहीं देता कि वे मृत्यु के समय ऐसा क्यों न करेंगे। **इब्राहीम की गोद** स्वर्ग के सुख का वर्णन करने के लिए एक प्रतीकात्मक वाक्यांश है। किसी भी यहूदी के लिए इब्राहीम के साथ संगति करना एक ऐसे परमानन्द का विषय है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। हम मानते हैं कि **इब्राहीम की गोद** स्वर्ग को कहा गया है। जब **धनवान** मनुष्य **मरा**, तो उसका शरीर भी **गाड़ा गया** – वही शरीर जिसका उसने इतना ध्यान रखा और जिसे इतना खिलाया पिलाया, और जिस पर इतना खर्च किया।

16:23, 24 परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। उसकी आत्मा **आधोलोक** में पहुँच गई। **आधोलोक** पुराना नियम के *शिओल* (इब्रानी) शब्द का अनुवाद है। *शिओल* संसार से विदा हुई आत्माओं की स्थिति है। पुराना नियम समय में, आधोलोक उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए हुए दोनों ही प्रकार के लोगों की आत्माओं का स्थान समझा जाता था। यहाँ पर आधोलोक उद्धार न पाए हुए लोगों की आत्मा के स्थान के रूप में बताया गया है, क्योंकि हम यहाँ पर पढ़ते हैं कि धनवान मनुष्य **ज्वाला में तड़फ** रहा था।

चेले अवश्य ही चौंक गए होंगे जब यीशु ने कहा कि यह धनी यहूदी **आधोलोक** में चला गया। पुराना नियम से उन्हें हमेशा यह सिखाया गया था कि धन परमेश्वर की आशीषों और अनुग्रह का एक चिन्ह है। जो इस्राएली प्रभु की आज्ञाओं का पालन करेगा उसे भौतिक समृद्धि देने की प्रतिज्ञा की गई थी। तब फिर एक धनी यहूदी आधोलोक कैसे जा सकता है? प्रभु यीशु ने अभी अभी यह घोषणा की थी कि यूहन्ना के प्रचार के साथ ही एक नई व्यवस्था का आरम्भ हुआ है। अब से धन आशीष का चिन्ह नहीं होगा। यह एक भण्डारी के रूप में उसकी विश्वासयोग्यता की एक परीक्षा के रूप में होगा। जिसे अधिक दिया गया है, उससे अधिक लिया भी जाएगा।

पद 23 में "प्राणों के सो जाने" के विचार का खण्डन

किया गया है, यह विचार दावा करता है कि प्राण, मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच के समय में अचेतन अवस्था में रहता है। यह पद इस बात की पुष्टि करता है कि कब्र के बाद भी एक चैतन्य अस्तित्व होता है। बल्कि, धनवान व्यक्ति के ज्ञान के बारे में जान कर हम चौंक जाएंगे। **उसने . . . दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा**। वह इब्राहीम के साथ बातचीत भी कर सकता था। उसने उसे **पिता इब्राहीम** कहते हुए उससे अनुनय किया कि **लाजर** उसके लिए **पानी** की एक बूंद लाकर उसकी **जीभ** को **ठंडी** करे। अवश्य ही, यह एक प्रश्न है कि बिना शरीर की एक आत्मा प्यास और **ज्वाला** की वेदना को कैसे महसूस कर सकती है। हम सिर्फ इसी निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं कि यह भाषा प्रतीकात्मक है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कष्ट वास्तविक नहीं था।

16:25 इब्राहीम ने उसे **पुत्र** कहते हुए सम्बोधित किया, जो यह प्रगट करता है कि वह शारीरिक भाव से इब्राहीम का पुत्र था, यद्यपि आत्मिक भाव से नहीं। इब्राहीम ने उसे याद दिलाया कि उसने **जीवन** भर सुखसुविधा, आराम, और भोग विलास का आनन्द लिया है। उसने **लाजर** की कंगाली और कष्ट के विषय में उसका ध्यान खींचा। अब, कब्र के पार, स्थिति पलट चुकी थी। पृथ्वी पर रहते समय जो असमानता थी वह पलट चुकी थी।

16:26 यहाँ पर हम यह सीखते हैं कि इस जीवन में हमारे द्वारा लिए गए निर्णय हमारी अनन्त नियति को निर्धारित करते हैं, और एक बार मृत्यु हो जाए तो फिर वह नियति सुनिश्चित है। उद्धार पाई हुई आत्माओं के वासस्थान (अब्राहम की गोद या स्वर्गलोक) और नाश होने वाली आत्माओं के वासस्थान (अधोलोक) के मध्य कोई भी आने-जाने का रास्ता नहीं है।

16:27-31 मरने के बाद, धनवान व्यक्ति अचानक सुसमाचार प्रचारक बन गया। वह चाहता था कि उसके **पाँच** भाइयों के पास जाकर कोई उन्हें **पीड़ा** के इस स्थान के विरूद्ध सचेत कर दे। इब्राहीम ने उत्तर दिया कि इन भाइयों के पास यहूदी होने के कारण पुराना नियम है, और इसलिए यह उन्हें सचेत करने के लिए पर्याप्त है। धनी व्यक्ति ने **इब्राहीम** की बात से असहमत होते हुए उससे कहा कि **यदि कोई मरे हुओं में से** उनके पास जाए, तो वे **मन फिराएंगे**। किन्तु, इब्राहीम ने अपना निर्णय दे दिया। उसने कहा कि यदि परमेश्वर के वचन की ओर ध्यान लगाने से कोई मना कर दे तो उसके बाद उसका कुछ नहीं हो सकता। यदि लोग बाइबल की ओर कान नहीं लगाएंगे, तो वे यह विश्वास नहीं करेंगे कि **मरे हुओं में से कोई जी** उठा है। यह बात यीशु मसीह के मामले में पूरी तरह से प्रमाणित हो गई थी। वह मरे हुओं में से जी उठा, और उसके बाद भी मनुष्यों ने उस पर विश्वास नहीं किया।

नया नियम से, हमें यह जानकारी मिलती है कि जब एक विश्वासी की मृत्यु होती है तो उसकी देह कब्र में चली जाती है, परन्तु उसकी आत्मा मसीह के साथ रहने के लिए स्वर्ग चली जाती है (2 कुरि. 5:8; फिलि. 1:23)। जब एक अविश्वासी की मृत्यु होती है, तो उसकी देह कब्र में चली जाती है, परन्तु उसकी आत्मा अधोलोक में चली जाती है। उसके लिए, अधोलोक कष्ट और दांत पीसने का स्थान है।

मेघारोहण (यीशु से मिलने के लिए कलीसिया के बादलों पर उठा लिए जाने) के समय, विश्वासियों की देहें कब्र से जीवित कर दी जाएंगी और अपनी आत्मा और प्राण से फिर से मिल जाएंगी (1 थिस्स. 4:13-18)। वे तब मसीह के साथ अनन्तकाल के लिए राज्य करेंगे। न्याय के उस बड़े श्वेत सिंहासन के सामने अविश्वासियों की देह, आत्मा, और प्राण फिर से एक साथ मिल जाएंगी (प्रका. 20:12, 13)। तब वे आग की झील में जो अनन्त दण्ड का स्थान हैं डाल दिए जाएंगे।

और इस तरह से अध्याय 16 फरीसियों को और उन सब को जो धन के लिए जीवन व्यतीत करते हैं दी गई एक बहुत गम्भीर चेतावनी के साथ समाप्त होता है। ऐसा करने के द्वारा वे अपनी आत्माओं को संकट में डालते हैं। अधोलोक में एक बूंद पानी की भीख मांगने की बजाए पृथ्वी पर रोटी की भीख मांगना बेहतर है।

IX. मनुष्य का पुत्र अपने चेलों को निर्देश देता है (17:1-19:27)

अ. ठोकर पहुँचाने के खतरे के सम्बन्ध में (17:1,2)

इस अध्याय में विचारों की निरन्तरता अस्पष्ट है। ऐसा लगता है कि लूका ने अलग अलग विषयों को

लेकर यहाँ पर एक साथ जोड़ दिया है। किन्तु, ठोकर पहुँचाने के खतरे से सम्बन्धित मसीह की आरम्भिक टिप्पणी को अध्याय 16 के धनवान मनुष्य की कहानी के साथ जोड़ा जा सकता है। सुखविलास, आराम, और आत्मसन्तुष्टि का जीवन ऐसे लोगों को ठोकर पहुँचा सकता है जो विश्वास में नए हैं। विशेष कर यदि एक व्यक्ति एक मसीही के रूप में अच्छा नाम (अच्छी गवाही) रखता है तो दूसरे लोग उसका अनुकरण करते हैं। मसीह के होनहार अनुयायी को इस प्रकार से भौतिकवाद के जीवन में और धन की आराधना करने के लिए धकेलना क्या ही गम्भीर बात है।

नि:सन्देह, यह सिद्धान्त बहुत ही सामान्य तौर पर लागू होता है। सांसारिक बातों की ओर उत्साहित करने पर **छोटों** को ठोकर लग सकती है। वे यौन पापों में संलग्नता को देखकर ठोकर खा सकते हैं। वे किसी भी ऐसी शिक्षा से ठोकर खा सकते हैं जो पवित्रशास्त्र के सीधे सीधे अर्थों को हल्का करने में लगी रहती है। सरल विश्वास, समर्पण, और पवित्रता के मार्ग से उन्हें भटकाने वाली हर एक चीज़ ठोकर का एक पत्थर है।

मानव स्वभाव और संसार की स्थिति को देखते हुए प्रभु ने कहा है कि **ठोकरें** लगना अवश्य है। परन्तु इससे उन लोगों का दोष कम नहीं हो जाता जिनके कारण ठोकरें लगती हैं। **उसके लिए यह भला होता** कि **चक्की का पाट उसके गले में लटकाया** जाता, और वे **समुद्र** में डूबो दिए जाते। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस प्रकार की सख्त भाषा शारीरिक मृत्यु की ही नहीं, परन्तु अनन्त दण्ड का भी चित्रण करती है।

जब प्रभु यीशु **छोटों में से किसी एक को** ठोकर पहुँचाने के विषय में कह रहे थे, तो शायद वे सिर्फ बच्चों की बात ही नहीं कर रहे थे। यह बात उनके लिए भी कही गई प्रतीत होती है जो विश्वास में नए हैं।

ब. क्षमा करने वाली आत्मा की आवश्यकता के सम्बन्ध में (17:3, 4)

मसीही जीवन में दूसरों को ठोकर पहुँचाने का ही खतरा नहीं होता। जब ठोकर पहुँचाने वाला व्यक्ति क्षमा मांगता है, तब मनमुटाव बनाए रखने, और क्षमा करने से इंकार कर देने का खतरा भी बना रहता है। इसी विषय पर यहाँ प्रभु चर्चा कर रहा है। नया नियम में इस विषय पर निम्नलिखित प्रक्रिया समझाई गई है:

1. यदि एक मसीही के साथ दूसरा मसीही कुछ गलत करता है, तो उस मसीही को सबसे पहले उस दूसरे मसीही को अपने हृदय में क्षमा कर देना चाहिए (इफि. 4:32)। इससे उसके स्वयं का मन द्वेष और दुर्भाव से बचा रहता है।

2. उसके बाद उसे ठोकर पहुँचाने वाले व्यक्ति के पास निजी रूप से जाकर समझाना चाहिए (पद 3; साथ ही मत्ती 18:15 भी देखें)। **यदि** वह **पछताए** तो उसे बता दिया जाए कि उसे क्षमा कर दिया गया है। यदि वह बार बार यही पाप दोहराता है, और उसके बाद वह कहता है कि उसने मन फिरा लिया है, तब भी उसे क्षमा कर देना चाहिए (पद 4)।

3. यदि वह निजी रूप से समझाए जाने पर नहीं मानता, तो जिस व्यक्ति को ठोकर पहुँचाई गई है वह अपने साथ एक या दो गवाहों को लेकर जाए (मत्ती 18:16)। यदि वह उनकी भी न सुने तब मामले को कलीसिया के पास ले जाना चाहिए। यदि कलीसिया की बात भी नहीं सुनी जाती, तो उस व्यक्ति को कलीसियाई संगति से अलग कर दिया जाना चाहिए (मत्ती 18:17)।

समझाने और दूसरे अनुशासनात्मक कदम उठाने का उद्देश्य ठोकर पहुँचाने वाले व्यक्ति से हिसाब बराबर करना या उसे नीचा दिखाना नहीं, परन्तु उसे प्रभु और उसके भाइयों की संगति में दोबारा लेना होना चाहिए। सभी समझाइश और फटकार प्रेम की आत्मा में होकर देना चाहिए। हमारे पास यह जाँच कर पाने का कोई तरीका नहीं है कि अपराध करने वाले व्यक्ति का पश्चताप सच्चा है या नहीं। यदि वह कहे कि उसने पश्चताप कर लिया है, तो हमें उसकी बातों पर विश्वास करना आवश्यक है। इसी कारण प्रभु यीशु कहता है: ''**यदि वह दिन भर में सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूँ, तो उसे क्षमा कर**।'' हमारा पिता अनुग्रह की इसी रीति पर हमसे व्यवहार करता है। चाहे हम उसे कितनी बार निराश ही क्यों न कर दें, हमें वह आश्वासन देता है कि ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूह. 1:9)।

स. विश्वास के सम्बन्ध में (17:5, 6)

17:5 एक दिन में सात बार क्षमा करने की बात **प्रेरितों** को असम्भव तो नहीं लगी, परन्तु उसमें उन्हें एक समस्या दिखाई दी। उन्हें लगा कि उनमें इतना अनुग्रह दिखाने के लिए पर्याप्त क्षमता नहीं है। और इसलिए उन्होंने **प्रभु** से प्रार्थना की कि वह उनके **विश्वास** को बढ़ाए।

17:6 प्रभु के उत्तर से यह ज्ञात होता है कि विश्वास की मात्रा (विश्वास कितना है) नहीं , परन्तु विश्वास की गुणवत्ता (विश्वास कैसा है) अधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही यह हमें अधिक विश्वास प्राप्त करने की नहीं, परन्तु उस विश्वास को लागू करने की आवश्यकता है जो हममें है। हमारे स्वयं का घमण्ड और आत्म–महत्व ही हमें हमारे भाइयों को क्षमा करने से हमें रोकता है। इस घमण्ड को जड़ से उखाड़ कर फेंकना आवश्यक है। यदि **राई के दाने** के बराबर का **विश्वास . . . तूत के पेड़** को उखाड़ कर उसे **समुद्र** में गड़ा सकता है, तो यह हमारी उस कठोरता और ढिठाई पर हमें और अधिक सरलता से जय प्रदान कर सकता है, जो हमें बार बार एक भाई को क्षमा करने से रोकती है।

द. उपयोगी दास के सम्बन्ध में (17:7–10)

17:7–10 मसीह के सच्चे दास होने के कारण अपने ऊपर घमण्ड करने का कोई कारण नहीं होता। अपने आप को महत्वपूर्ण समझने के गुण को जड़ से उखाड़ कर फेंक देना चाहिए और उसके स्थान पर अयोग्यता को स्वीकार करने की भावना को अवश्य अपनाना चाहिए। दास की कहानी में हम इसी शिक्षा को पाते हैं। यह **दास** सारे दिन **हल जोतता या भेड़ चराता** था। **जब वह** कठोर परिश्रम करने के बाद **खेत से** आया तो उसके स्वामी ने उसे भोजन के लिए बैठने को नहीं कहा। **बल्कि** उसने उसे आदेश दिया कि वह कमर बान्धकर **खाना तैयार** करे। जब वह ऐसा कर चुके उसके बाद ही अपना खाना **खा** सकता है। स्वामी उसे इन सब कार्यों के लिए धन्यवाद नहीं देता। दास को यह सब करना आवश्यक है। आखिर, दास पर स्वामी का अधिकार है और स्वामी की आज्ञा का पालन करना दास का पहला कर्तव्य है।

17:10 इसलिए चेले प्रभु यीशु मसीह के दास हैं। प्रभु को उन पर अधिकार है – उनकी आत्मा, प्राण, और शरीर पर। क्रूस पर प्रभु द्वारा किए गए कार्य के प्रकाश में, चेले उद्धारकर्ता के लिए कभी ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिसके द्वारा वे प्रभु द्वारा किए गए कार्य का पर्याप्त (वाजिब) बदला दे सकें। इसलिए जब चेला वह सब कुछ **कर** चुके जिसकी आज्ञा उसे नया नियम में दी गई है, तब भी उसे यह स्वीकार करना आवश्यक है कि वह एक निकम्मा दास है और उसने **वही किया है** जो उसे अपने कर्तव्य के रूप में **करना चाहिए था**।

रॉय हेसियन के अनुसार, दास के पाँच गुण इस प्रकार से हैं:

यह आवश्यक है कि वह एक काम पूरा होने से पहले ही बिना राहत दिए दूसरा काम पहले काम के साथ साथ करने के लिए थोपे जाने पर चुपचाप उसे स्वीकार करने को हमेशा तैयार रहे।

ऐसा करते हुए उसे कभी भी धन्यवाद दिए जाने की अपेक्षा नहीं करनी है।

यह सब करने के बाद वह अपने स्वामी पर स्वार्थी होने का आरोप न लगाए।

उसे यह स्वीकार करना आवश्यक है कि वह एक निकम्मा दास है।

उसे यह स्वीकार करना आवश्यक है कि वह दीनता और नम्रता प्रगट करते हुए उसने जो कुछ सहा और किया है उसे अपने कर्तव्य से अधिक और कुछ न समझे।[50]

इ. यीशु दस कोढ़ियों को शुद्ध करता है (17:11–19)

17:11 कृतघ्नता (धन्यवाद न देना) चेले के जीवन में आने वाला एक और खतरा है। यह बात दस कोढ़ियों की कहानी में दर्शायी गई है। हम यह पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु **सामरिया और गलील** की सीमा से होते हुए **यरूशलेम** की ओर जा रहा था।

17:12–14 किसी गाँव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले। अपनी रोगी अवस्था के कारण वे उसके पास नहीं आए, परन्तु उन्होंने दूर से ही उसे पुकारा, और उससे चंगाई के लिए प्रार्थना करने लगे। उसने उनके विश्वास का प्रतिफल देते हुए उनसे कहा, **"जाओ** और

अपने आप को **याजकों को दिखाओ।''** इसका अर्थ यह है कि वे याजकों के पास पहुँचेंगे, वे कोढ़ से शुद्ध हो चुके होंगे। याजकों में सामर्थ नहीं थी कि वे उन्हें कोढ़ से चंगा कर सकें, परन्तु उन्हें इसलिये नियुक्त किया गया था कि वे कोढ़ियों के शुद्ध होने की **घोषणा** करें। प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए कोढ़ी याजकों के पास जाने लगे, और **जाते जाते** ही **वे** आश्चर्यजनक रीति से अपने रोग से **शुद्ध** हो गए।

17:15–18 चंगाई पाने के लिए उन सब में विश्वास था परन्तु दस में से सिर्फ **एक** प्रभु को धन्यवाद देने के लिए वापस लौटा। यह काफी रोचक है कि यही व्यक्ति एक **सामरी** था, सामरी लोग यहूदियों के पड़ोसी थे परन्तु यहूदी उन्हें तुच्छ समझते थे और उनके साथ कोई लेनदेन नहीं करते थे। इस सामरी ने **मुँह के बल गिर कर** उसे धन्यवाद दिया – यह आराधना की सच्ची मुद्रा है – और यीशु के **पांवों** के पास ही – आराधना करने का सच्चा स्थान है। **यीशु** ने पूछा कि क्या **दसों शुद्ध न** हुए, परन्तु सिर्फ एक ही, ''यह **परदेशी**'' धन्यवाद देने के लिए आया। बाकी **नौ** कहाँ हैं? उनमें से कोई भी **परमेश्वर की बड़ाई करता** हुआ वापस नहीं आया।

17:19 सामरी व्यक्ति की ओर देख कर, प्रभु यीशु ने कहा, ''**उठ कर चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।**'' सिर्फ वे दस प्रतिशत ही जो कृतज्ञता जातते हैं यीशु के सच्चे धन के वारिस ठहरते हैं। प्रभु यीशु हमारे वापस लौटने (पद 15) और हमारे धन्यवाद देने पर (पद 16) हमें नई आशीषें प्रदान करता है। प्रभु का यह वाक्य, **''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है,''** यह संकेत देता है कि जहाँ नौ लोग कोढ़ से शुद्ध हुए, वहीं दसवें ने पाप से भी उद्धार प्राप्त किया!

फ.राज्य के आगमन के सम्बन्ध में (17:20–37)

17:20, 21 यह जान पाना कठिन है कि क्या **फरीसियों** ने **राज्य** के विषय में सच्चे मन से प्रश्न किया था, या फिर यीशु का ठट्ठा उड़ा रहे थे। परन्तु हम यह जानते हैं कि यहूदी होने के कारण वे एक ऐसे राज्य की आशा कर रहे थे जो बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ आएगा। वे बाहरी चिन्हों और बड़े राजनैतिक उथलपुथल की आशा कर रहे थे। उद्धारकर्ता ने उन्हें बताया, ''**परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता**,'' अर्थात्, कम से कम अपने वर्तमान रूप में, परमेश्वर का राज्य बाहरी दिखावे के साथ **नहीं** आया। यह एक दृश्य, सांसारिक, अस्थायी राज्य नहीं है जिसे **यहाँ** या **वहाँ** दिखाया जा सके। बल्कि, उद्धारकर्ता ने कहा, **परमेश्वर का राज्य** उनके **बीच में** है। प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं हो सकता था कि राज्य फरीसियों के हृदय में है, क्योंकि इन कठोर धार्मिक पाखण्डियों के हृदय में मसीह राजा के लिए कोई जगह नहीं थी। परन्तु प्रभु के कहने का अर्थ था कि **परमेश्वर का राज्य** उनके बीच में है। वह इस्राएल का अधिकारिक राजा था और उसने अपने (जो आश्चर्यकर्म सिर्फ मसीह कर सकता था) आश्चर्यकर्म दिखाए थे, और उसने अपनी ओर से अपने मसीह होने के सारे प्रमाण प्रस्तुत किए। परन्तु फरीसियों के मन में उसे स्वीकार करने की कोई इच्छा नहीं थी। और इसलिए, परमेश्वर के राज्य ने (राजा के व्यक्तित्व के रूप में) अपने आप को प्रस्तुत किया, परन्तु उसकी ओर उनके द्वारा जरा भी ध्यान नहीं दिया गया।

17:22 प्रभु ने फरीसियों से बातें करते हुए बताया कि स्वर्ग का राज्य एक ऐसी सच्चाई है जो आ चुकी है। **चेलों** से बातें करते हुए उसने बताया कि स्वर्ग का राज्य भविष्य में आने वाला है जो उसके दूसरे आगमन में स्थापित होगा। परन्तु पहले उसने उस समय के बारे में बताया जो पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय होगा। **वे दिन आएंगे** जब चेले **मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहेंगे**, परन्तु वे उसे **नहीं देखने** पाएंगे। दूसरे शब्दों में हम इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं कि वे **उन दिनों में से एक** को देखने के लिए तरस जाएंगे जब प्रभु यीशु उनके साथ इस पृथ्वी पर था और उन्होंने उसके साथ मधुर सहभागिता का आनन्द लिया। एक अर्थ में, वे दिन उस समय का पूर्वचित्र है जब वह अपनी सामर्थ और महान महिमा के साथ लौटेगा।

17:23, 24 अनेक झूठे मसीह उठ खड़े होंगे, और शासक यह घोषणा कर देंगे कि मसीह आ चुका है। परन्तु प्रभु यीशु के अनुयायियों को ऐसे किसी भी भ्रामक बातों को सुनकर धोखा नहीं खाना है। मसीह का दूसरा आगमन वैसे ही स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा और पहचान लिया जाएगा **जैसे बिजली** देखी और पहचान ली जाती है।

17:25 एक बार फिर से प्रभु यीशु ने चेलों को बताया कि इससे पहले कि इन में से एक बात भी पूरी हो, **वह** स्वयं **बहुत दुख** उठाएगा **और** उस **युग के** लोगों के द्वारा **तुच्छ** ठहराया जाएगा।

17:26, 27 अपने दूसरे आगमन के विषय पर वापस लौटते हुए, प्रभु ने बताया कि उस महिमामय घटना से ठीक पहले के दिन **नूह के दिनों** के समान होंगे। लोग **खाते–पीते थे, और उनमें शादी ब्याह होती थी।** ये बातें (अपने आप में) गलत नहीं हैं; ये सामान्य और वैधानिक मानवीय गतिविधियां हैं। बुराई इस बात में थी कि लोग इन्हीं चीज़ों के लिए जीते थे और परमेश्वर के बारे में नहीं सोचते थे और उसे समय नहीं देते थे। जब **नूह** और उसका परिवार **जहाज पर चढ़ा** तब **जलप्रलय ने आकर** बाकी सब लोगों को **नाश किया।** इसलिए मसीह का दूसरा आगमन उन लोगों के लिए दण्ड लेकर आएगा जो उसकी दया के प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं।

17:28–30 एक बार फिर से, प्रभु ने कहा कि उसके दूसरे आगमन से पहले के दिन **लूत** के दिनों के समान होंगे। उस समय के बाद से सभ्यता कुछ तरक्की कर चुकी है; मनुष्य न सिर्फ **खाते पीते**, परन्तु वे **लेनदेन करते, पेड़ लगाते, और घर बनाते** थे। मनुष्य परमेश्वर के बिना ही शान्ति और समृद्धि का एक स्वर्णीम युग लाने का अपनी ओर से प्रयास कर रहा था। **जिस दिन लूत सदोम से निकला उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और** दुष्ट नगर **को नष्ट कर दिया। मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।** जो सुख विलास, आत्म तृप्ति, और व्यापार–उद्योग की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर देंगे वे नाश कर दिए जाएंगे।

17:31 यह एक ऐसा **दिन** होगा जब पृथ्वी की वस्तुओं के प्रति मोह मनुष्य के जीवन को खतरे में डाल देगा। यदि वह **कोठे पर** हो, तो वह अपने **घर** के किसी समान को बचाने का प्रयास न करे। यदि वह बाहर **खेत में** हो, तो वह अपने घर की ओर **वापस न लौटे**। वह उस स्थान से भाग निकले जहाँ दण्ड आ रहा हो।

17:32 यद्यपि **लूत की पत्नी** को लगभग जबर्दस्ती सदोम से बाहर खींच लाया गया था, तौभी उसका हृदय नगर में ही रह गया था। यह इससे प्रगट होता है कि उसने पीछे मुड़ कर देखा। वह सदोम से बाहर थी, परन्तु सदोम उससे बाहर नहीं था। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उसे नमक के खम्भे के रूप में बदल कर नाश कर दिया।

17:33 जो कोई सिर्फ शारीरिक सुरक्षा की चिन्ता कर **अपना प्राण बचाना चाहे** और आत्मा की चिन्ता न करे, वह **उसे खोएगा**। दूसरी ओर जो कोई **अपना प्राण** प्रभु के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के कारण **खोए वह उसे** वास्तव में अनन्तकाल के लिए **जीवित रखेगा।**

17:34–36[51] प्रभु का आगमन अलगाव लेकर आएगा। **दो मनुष्य एक खाट पर** सो रहे होंगे। **एक** दण्ड देने के लिए **ले लिया जाएगा। दूसरा,** जो विश्वासी है, मसीह के राज्य में प्रवेश करने के लिए बचा लिया जाएगा। **दो स्त्रियां एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक,** जो विश्वासी नहीं है, परमेश्वर के क्रोध की आंधी में **ले ली जाएगी; और दूसरी,** जो परमेश्वर की सन्तान है, मसीह के हजार वर्ष की आशीषों में सहभागी होने के लिए **छोड़ दी जाएगी।**

संयोग से, पद 34 और 35 पृथ्वी के गोलाकार के अनुरुप हैं। यह तथ्य कि पृथ्वी के एक भाग में रात और दूसरे भाग में दिन होगा, जैसा कि उल्लेखित गतिविधियों के द्वारा दर्शाया गया है, उस वैज्ञानिक ज्ञान को प्रदर्शित करता है जो इसके बाद भी अनेक वर्षों तक खोजा नहीं जा सका था।

17:37 उद्धारकर्ता के वचनों से चेले पूरी तरह से समझ गए कि उसका दूसरा आगमन परमेश्वर को त्यागने वाले संसार पर स्वर्ग से आया हुआ भंयकर न्याय (दण्ड) होगा। इसलिए उन्होंने **प्रभु** से पूछा कि यह दण्ड कहाँ दिया जाएगा। प्रभु ने उत्तर दिया कि **जहाँ लोथ हैं वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे। गिद्ध** या चील आने वाले दण्ड का प्रतीक है। इसलिए इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर के प्रति, चाहे जहाँ कहीं भी हो, हर प्रकार के अविश्वास और उसके विरुद्ध हर प्रकार के विद्रोह पर दण्ड झपट पड़ेगा।

अध्याय 17 में, प्रभु यीशु ने चेलों को चेतावनी दी थी कि कष्ट और सताव आने वाले हैं। उसके महिमामय आगमन के समय से पहले, उन्हें घोर परीक्षा से होकर जाना पड़ेगा। तैयारी के तौर पर, उद्धारकर्ता प्रार्थना के सम्बन्ध में उन्हें आगे निर्देश देता है। आगे के पदों में, हम प्रार्थना करने वाली एक विधवा, प्रार्थना करने वाले एक फरीसी, प्रार्थना करने वाले एक चुंगी लेनेवाले, और प्रार्थना करने वाले एक भिखारी के विषय में देखेंगे।

ग. डटी रहने वाली विधवा का दृष्टान्त (18:1-8)

18:1 प्रार्थना करने वाली विधवा का **दृष्टान्त** हमें यह सिखाता है **कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए**। यह सामान्य रूप से सब लोगों पर और सब प्रकार की प्रार्थनाओं पर लागू होता है। परन्तु यहाँ पर परीक्षा के समय परमेश्वर द्वारा छुड़ाए जाने के सन्दर्भ में इसे लागू किया गया है। यह मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच के लम्बे, और पस्त कर देने वाली अवधि के दौरान **हियाव** न छोड़ने के विषय में है।

18:2, 3 इस दृष्टान्त में एक अधर्मी **न्यायी** के बारे में बताया गया है जो सामान्यत: न तो **परमेश्वर** से डरता था और न अपने किसी साथी **मनुष्य** की परवाह करता था। **एक विधवा** भी किसी अनाम **मुद्दई** के द्वारा सताई जा रही थी। विधवा लगातार न्यायी के पास आती थी, और उससे **न्याय** की मांग करती थी, ताकि वह अमानवीय अत्याचार से छुटकारा प्राप्त कर सके।

18:4, 5 न्यायी उसके पक्ष की वैधता के बाद भी उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था; यह तथ्य भी विधवा के लिए कुछ करने के लिए उस पर कोई असर नहीं डाल सका कि विधवा के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। किन्तु, विधवा द्वारा लगातार उसके पास आते रहने के कारण वह उस विधवा के मामले का निपटारा करने के लिए बाध्य हो गया। उस विधवा के आग्रह और उसकी अटलता ने उसके पक्ष में निर्णय दिया।

18:6, 7 तब प्रभु ने चेलों को समझाया कि यदि एक **अधर्मी न्यायी** गरीब विधवा के हठ के कारण उसका न्याय कर सकता है, तो फिर न्यायी **परमेश्वर अपने चुने हुओं** के पक्ष में हस्तक्षेप कर उन्हें न्याय क्यों नहीं देगा। **'चुने हुओं'** यहाँ पर विशेष अर्थ में क्लेशकाल के समय के यहूदी विश्वासयोग्य झुण्ड को कहा जा सकता है, परन्तु यह हर समय के सभी सताए हुए विश्वासियों पर भी लागू होता है। परमेश्वर ने बहुत पहले से ही इसलिए हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि वह मनुष्य को लेकर बहुत धीरज धरता है, और वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो।

18:8 परन्तु एक दिन आएगा जब उसका आत्मा लोगों से और अधिक वादविवाद नहीं करेगा, और तब **वह** उन लोगों को नाश कर देगा जो उसके अनुयायियों को सताते हैं। प्रभु यीशु ने इस प्रश्न के साथ दृष्टान्त को समाप्त किया, "**तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?**" इसका अर्थ शायद यह है कि क्या पृथ्वी पर वह उसी प्रकार का विश्वास पाएगा जिस *प्रकार* का विश्वास उस गरीब विधवा का था। परन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जब प्रभु लौटेगा, तब थोड़े लोग ही उसके प्रति सच्चे होंगे। इस दौरान, हम में से हर एक उस विश्वास के लिए प्रेरित हो जो दिन और रात परमेश्वर को पुकारता रहता है।

ह. फरीसी और चुंगी लेनेवाले का दृष्टान्त (18:9-14)

18:9-12 अगला **दृष्टान्त** उन लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है जो **अपने ऊपर** घमण्ड करते हैं कि वे **धर्मी** हैं, और जो **औरों को** तुच्छ समझते हैं। पहले व्यक्ति को **फरीसी** बताते हुए प्रभु ने इस बात को लेकर कोई शंका का अवसर नहीं दिया कि वह किस वर्ग के लोगों के विषय में कह रहा था। यद्यपि फरीसी पूरी भाव-भंगिमा को दिखा रहा था, परन्तु वास्तव में वह **परमेश्वर** से बात नहीं कर रहा था। बल्कि वह अपने स्वयं की नैतिक और धार्मिक उपलब्धियों का गुणगान कर रहा था। अपनी तुलना परमेश्वर द्वारा निर्धारित सिद्ध मापदण्डों से करने और अपनी पापमय दशा को देख पाने की बजाए, वह अपनी तुलना समाज के दूसरे लोगों के साथ कर रहा था और घमण्ड कर रहा था कि वह उनसे बेहतर है। **'मैं'** उसके हृदय की सही दशा को बता रहा था कि यह कपटी और अभिमानी है।

18:13 चुंगी लेनेवाला फरीसी से बिल्कुल विपरीत था। परमेश्वर के सामने **खड़े होकर**, उसने अपनी घोर अयोग्यता को जान लिया। उसने अपने आप को पूरी तरह से दीन कर लिया। उसने **स्वर्ग की ओर आँख उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट पीट कर . . . परमेश्वर** को दया के लिए पुकारा: "**हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर!**" उसने अपने आप को अनेक पापियों में से एक पापी नहीं, परन्तु *एकमात्र* पापी समझा जो परमेश्वर से कुछ भी पाने के अयोग्य है।

18:14 प्रभु यीशु अपने श्रोताओं को यह स्मरण दिलाता है कि अपने आप को दीन बनाने और मन फिराने

वाली आत्मा ही परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य है। मनुष्य की सोच से बिल्कुल परे, यह वह चुंगी लेने वाला ही था जो **धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया**। परमेश्वर दीनों को ऊँचा उठाता है, परन्तु वह उन लोगों को नीचे गिरा देता है जो अपने आप को ऊँचा उठाते हैं।

ई. यीशु और छोटे बच्चे (18:15–17)

इस घटना में एक बार फिर से उसी बात पर जोर दिया गया है जिसके विषय में अभी हमने विचार किया, अर्थात्, **परमेश्वर** के **राज्य** में प्रवेश करने के लिए छोटे बच्चों के समान दीन बनना आवश्यक है। माताओं ने अपने **बच्चों** को लेकर यीशु के चारों तरफ भीड़ लगा दिया कि वह उन बच्चों को आशीष दे। उद्धारकर्ता के काम में विघ्न डाले जाने पर उसके चेले खीज उठे। परन्तु प्रभु यीशु ने **उन्हें डांटा**, और बड़े स्नेह से **बच्चों को** अपने **पास बुलाकर** कहा, ‘‘**परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है**।’’ पद 16 में इस प्रश्न का उत्तर पाया जाता है, ‘‘जब छोटे बच्चों की मृत्यु होती है तो वे कहाँ जाते हैं?’’ इसका उत्तर यह है कि वे स्वर्ग को जाते हैं। प्रभु ने सीधे सीधे कहा है, ‘‘**परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है**।’’

बच्चे बहुत छोटी आयु में उद्धार पा सकते हैं। यह आयु शायद अलग अलग बच्चों के मामले में अलग अलग हो सकती है, परन्तु यह सच्चाई बनी रहती है कि कोई भी बच्चा, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, यदि यीशु के पास आना चाहता है, तो उसे यीशु के पास आने दिया जाना चाहिए, और उसे उसके विश्वास में बढ़ने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

छोटे बच्चों को उद्धार पाने के लिए वयस्क होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु निश्चय ही वयस्कों को परमेश्वर के राज्य में **प्रवेश** करने के लिए एक **बालक** के समान सरल विश्वास का और दीन बनाना आवश्यक है।

ज. युवा धनी सरदार (18:18–30)

18:18, 19 इस खण्ड में एक ऐसे मनुष्य का उदाहरण दिया गया है जो परमेश्वर के राज्य को एक बालक के समान ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं होता। एक दिन एक **सरदार** प्रभु के पास आया, और उसे **उत्तम गुरु** कह कर सम्बोधित करते हुए उससे पूछा कि **अनन्त जीवन का अधिकारी** होने के लिए उसे **क्या** करना चाहिए। उद्धारकर्ता ने सबसे पहले उसके द्वारा उसे *उत्तम गुरु* कहे जाने पर उससे प्रश्न किया। प्रभु यीशु ने उसे उत्तर दिया कि सिर्फ **परमेश्वर** ही **उत्तम** है। हमारा प्रभु इस बात से इंकार नहीं कर रहा था कि वह **उत्तम** है, परन्तु वह चाह रहा था कि सरदार स्वयं ही इस सच्चाई का अंगीकार करे। यदि वह उत्तम है, तो अवश्य ही वह परमेश्वर है, क्योंकि सिर्फ परमेश्वर ही पूर्ण रूप से अपने सार में उत्तम है।

18:20 उसके बाद यीशु ने उसके इस प्रश्न का उत्तर दिया कि अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए क्या करना आवश्यक है? हम यह जानते हैं कि अनन्त जीवन अच्छे कार्यों को करने से नहीं पाया या कमाया जा सकता। अनन्त जीवन प्रभु यीशु मसीही के द्वारा परमेश्वर का दान है। सरदार को दस **आज्ञाओं** का स्मरण दिलाते हुए, प्रभु यीशु यह नहीं कह रहा था कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा वह उद्धार प्राप्त कर सकता है। बल्कि, वह व्यवस्था का उपयोग करते हुए उस व्यक्ति से उसका पाप मनवाने का प्रयास कर रहा था। प्रभु यीशु ने पाँच **आज्ञाओं** को दोहराया जो हमारे साथी मनुष्यों के प्रति हमारे कर्तव्यों से संबंधित हैं, दस आज्ञाओं की दूसरी पटिया।

18:21–23 यह स्पष्ट है कि इस मनुष्य के जीवन में व्यवस्था का कोई असर नहीं हुआ था कि वह अपनी पापमय दशा को स्वीकार करे, क्योंकि वह अहंकारपूर्ण तरीके से यह दावा कर रहा था कि वह इन आज्ञाओं को **लड़कपन** ही से **मानता** आया है। यीशु ने उसे बताया कि उसमें एक बात की कमी है – उसके पड़ोसी के प्रति उसका प्रेम। यदि उसने इन आज्ञाओं का सचमुच में पालन किया होता, तो उसने अपनी **सब** सम्पत्ति बेच दी होती और **कंगालों** को बांट दी होती। परन्तु सच्चाई तो यह है कि वह अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम नहीं रखता था। वह एक स्वार्थी जीवन व्यतीत कर रहा था, और दूसरों के लिए उसके जीवन में कोई सच्चा प्रेम नहीं था। इसका प्रमाण यह है कि जब उसने प्रभु यीशु की इन बातों को सुना तो **वह . . . बहुत उदास हुआ** क्योंकि **वह बड़ा धनी था**।

18:24 जब प्रभु **यीशु** ने उसकी ओर देखा, तो

उसने **परमेश्वर के राज्य में** प्रवेश करने में **धनवानों** को होने वाली कठिनाई पर टिप्पणी की। कठिनाई की जड़ वह धन है जिससे प्रेम किए बिना और जिस पर भरोसा किए बिना हम उसे अपने पास नहीं रख सकते।

यह पूरा खण्ड न सिर्फ मसीहियों परन्तु अविश्वासियों के सामने भी विचलित करने देने वाले प्रश्न लेकर आता है। हम यह कैसे कह सकते हैं कि हम अपने पड़ोसी से सचमुच में प्रेम रखते हैं जबकि हम अपने धन और सुखविलास के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं और दूसरे लोग मसीह का सुसमाचार उन तक न पहुँच पाने के कारण नाश हो रहे हैं?

18:25 यीशु ने कहा कि **परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है**। इस कथन के बहुत सारे स्पष्टीकरण दिए गए हैं। कुछ लोगों का कहना है कि **सुई** का नाका शहरपनाह का भीतरी छोटा फाटक है, जिसके भीतर से ऊँट सिर्फ घुटनों के बल ही पार हो सकता है। किन्तु, लूका वैद्य ने यहाँ सुई के लिए एक ऐसे शब्द का उपयोग किया है जिसका अर्थ सुई ही हो सकता है। प्रभु यीशु के कहने का अर्थ बिल्कुल सीधा है, जिस तरह से **ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना** असम्भव है, उसी प्रकार से एक **धनवान** का **स्वर्ग के राज्य में** प्रवेश करना असम्भव है। इसे यह अर्थ देना पर्याप्त नहीं होगा: एक धनी व्यक्ति अपने स्वयं के प्रयास से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता; और यह बात धनी और गरीब दोनों पर लागू होती है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति के लिए यह *असम्भव है* कि वह *एक धनी व्यक्ति के रूप में* **स्वर्ग के राज्य में . . . प्रवेश** करे; जब तक वह अपने धन से एक ईश्वर तैयार कर लेता है, और इसे अपने और अपने उद्धार के बीच में रखता है, तब तक वह मन नहीं फिरा सकता। सीधी और सरल सच्चाई यह है कि बहुत कम धनी उद्धार पाते हैं, और जो धनी उद्धार पाते हैं उन्हें पहले अपने आप को परमेश्वर के सामने तोड़ना आवश्यक है।

18:26, 27 जब चेले इन सारी बातों के विषय में विचार कर रहे थे, तो वे यह सोचने लगे कि तब **किस का उद्धार** हो सकता है। उनके लिए, धन हमेशा से ही परमेश्वर की आशीषों का एक चिन्ह रहा है (व्य.वि. 28:1–8)। यदि धनी यहूदी उद्धार नहीं पाएंगे, तो फिर कौन उद्धार पाएगा? प्रभु ने उत्तर दिया कि **परमेश्वर** वह कार्य कर सकता है जो मनुष्य से नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर एक लोभी, छीननेवाले, और निष्ठुर भौतिकवादी को अपने हाथ में लेकर, धन के प्रति उसके मोह को उसके भीतर से निकाल कर, उसके स्थान पर प्रभु के लिए सच्चा प्रेम डाल सकता है। यह ईश्वरीय अनुग्रह का आश्चर्यकर्म है।

एक बार फिर से, यह पूरा खण्ड परमेश्वर की सन्तानों के सामने एक विचलित कर देने वाला प्रश्न लाता है। दास स्वामी से बड़ा नहीं होता; प्रभु यीशु अपने स्वर्गीय धन का त्याग कर हमारे दोषी आत्माओं का उद्धार करने के लिए आया। यह उपयुक्त नहीं होगा कि हम संसार में एक धनी बन कर रहें जब वह एक गरीब के रूप में इस संसार में था। आत्माओं का मोल, मसीह के दुबारा आगमन की निकटता, और मसीह का प्रबल प्रेम हमें प्रेरित करे कि हम अपने प्रत्येक भौतिक सम्पत्ति का निवेश प्रभु के कार्य के लिए करें।

18:28, 30 जब **पतरस** ने प्रभु को यह स्मरण दिलाया कि चेलों ने यीशु के पीछे चलने के लिए अपने घरों और परिवारों को छोड़ दिया है, तो प्रभु ने उत्तर दिया कि त्याग के इस प्रकार के जीवन का प्रतिफल इस जीवन में उदारता से दिया जाता है और आगे भी अनन्त अवस्था में दिया जाएगा। पद 30 का बाद वाला भाग (**और परलोक में अनन्त जीवन**) का अर्थ यह नहीं है कि सब कुछ त्याग देने से अनन्त जीवन प्राप्त होता है; बल्कि यह स्वर्ग की महिमा का आनन्द और अधिकाई से ले सकने की क्षमता को बढ़ाए जाने से सम्बन्धित है, साथ ही स्वर्ग राज्य में और बढ़ा कर प्रतिफल दिया जाता है। इसका अर्थ है ''उस जीवन को पूरी तरह से प्राप्त कर लेना जो मन फिराव के समय दिया गया था, अर्थात्, बहुतायत का जीवन।''

क. यीशु एक बार फिर से अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यद्वाणी करता है (18:31–34)

18:31–33 तीसरी बार प्रभु ने **बारहों को साथ लेकर** उन्हें विस्तार से सचेत किया कि आगे उसके साथ क्या होने वाला है (9:22, 44 देखें)। उसने भविष्यद्वाणी

की कि उसका दु:ख उठाना पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं** के द्वारा **लिखी गई** बातों को पूरा करने के लिए होगा। ईश्वरीय पूर्वदृष्टि के द्वारा उसने शान्तचित्त होकर यह भविष्यद्वाणी की कि **वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा।** "अधिक सम्भावना थी कि चुपचाप उसका वध कर दिया जाता, या उपद्रव कर उसे पत्थरवाह कर दिया जाता।"[52] परन्तु भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह पकड़वाया जाएगा, और लोग उसे **ठट्ठों में उड़ाएंगे और उसका अपमान करेंगे और उस पर थूकेंगे**, और इसलिए इन सारी बातों का पूरा होना अवश्य था। उसे कोड़े मारे जाएंगे और वह मार डाला जाएगा, परन्तु **तीसरे दिन** वह **जी उठेगा।**

शेष अध्यायों में आने वाली सारी घटनाओं को प्रगट किया गया है जिसे प्रभु अद्भुत रीति से पहले से ही जानता था और जिसे उसने पहले से ही बता दिया:

हम यरूशलेम जा रहे हैं (18:35–19:45)। मनुष्य का पुत्र अन्यजातियों को सौंपा जाएगा (19:47–23:1)। उसका उपहास और अपमान किया जाएगा (23:1–32)। वे उसे मार डालेंगे (23:33–56)। तीसरे दिन वह फिर से जी उठेगा (24:1–12)।

18:34 यह बहुत आश्चर्य की बात है कि चेलों ने **इन बातों में से कोई बात न समझी**। उसके वचनों का अर्थ उनसे छिपा रहा। हमारे लिए यह समझ पाना कठिन है कि इस विषय में उनकी बुद्धि इतनी कमजोर क्यों थी: उनके दिमाग में एक ऐसे मसीह की धारणा इतनी हावी हो गई थी जो उन्हें रोमी अत्याचार से छुटकारा प्रदान करेगा और तुरन्त ही अपने राज्य की स्थापना करेगा, कि वे दूसरे तरह के छुटकारे की योजना को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे थे। हम बहुधा उन्हीं बातों पर विश्वास करते हैं जिन बातों पर हम विश्वास करना *चाहते* हैं, और उन सच्चाइयों का प्रतिरोध करते हैं जो हमारे द्वारा *पहले से मान ली गई* बातों से मेल नहीं खातीं।

ल. अंधे भिखारी का चंगा होना (18:35–43)

18:35–37 प्रभु यीशु अब यरदन पार कर पिरिया से चला गया था। लूका कहता है कि अंधे भिखारी को चंगा करने की यह घटना तब घटी **जब वह यरीहो के निकट पहुँचा**। मत्ती और मरकुस का कहना है कि यह घटना तब घटी जब वह यरीहो से *जा रहा था* (मत्ती 20:29; मरकुस 10:46)। साथ ही मत्ती यह भी कहता है कि वहाँ पर दो अन्धे व्यक्ति थे; मरकुस और लूका एक ही अन्धे व्यक्ति के बारे में बताते हैं। यह सम्भव है कि लूका यरीहो के नए नगर की बात कर रहा है, जबकि मत्ती और मरकुस पुराने यरीहो के बारे में कह रहे हैं। यह भी सम्भव है कि इस स्थान पर यीशु द्वारा अन्धों को दृष्टि देने के एक से अधिक आश्चर्यकर्म किए गए। इसका वास्तविक स्पष्टीकरण जो भी हो, परन्तु हम निश्चित तौर पर यह कह सकते हैं कि यदि इस विषय पर बाइबल में अधिक जानकारी दी जाती तो, विरोधाभास नहीं दिखाई देता।

18:38 अन्धे भिखारी ने एक तरह से **यीशु** को मसीह के रूप में स्वीकार कर लिया था, क्योंकि उस ने उसे **दाऊद की सन्तान** कह कर सम्बोधित किया। उसने प्रभु से उस **पर दया** करने को कहा, अर्थात्, उसे दृष्टि देने के लिए कहा।

18:39 कुछ लोगों द्वारा भिखारी को शान्त कराए जाने के प्रयास के बाद भी, वह लगातार प्रभु को पुकारता रहा। लोगों को भिखारी में कोई रूचि नहीं थी। परन्तु प्रभु यीशु को इस अंधे भिखारी में रूचि थी।

18:40, 41 इसलिए प्रभु यीशु वहाँ पर रूक गया। डार्बी ने इस पर बहुत ही सुविचारित टिप्पणी की है, "एक बार यहोशू ने आकाश पर सूर्य को ठहरा दिया था, परन्तु यहाँ पर सूर्य, और चन्द्रमा, और आकाश का *प्रभु* एक भिखारी के निवेदन पर ठहर कर खड़ा हो गया।" प्रभु यीशु के आदेश पर भिखारी को उसके **पास** लाया गया। प्रभु यीशु ने उससे **पूछा** कि वह क्या चाहता है। बिना हिचक या औपचारिकता के, भिखारी ने उत्तर दिया कि वह चाहता है कि **देखने** लगे। उसकी प्रार्थना छोटी थी, सीधी और स्पष्ट थी, और विश्वास से परिपूर्ण थी।

18:42, 43 तब **यीशु** ने उसके निवेदन को स्वीकार कर लिया, और **तुरन्त** ही वह मनुष्य **देखने लगा**। इतना ही नहीं, वह **उसके पीछे हो लिया** और **परमेश्वर की बड़ाई** करने लगा। इस घटना से हम यह सीख सकते हैं कि हमें असम्भव बातों के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने का साहस करना चाहिए। बड़े विश्वास से परमेश्वर का बड़ा आदर होता है। जैसा कि एक कवि ने लिखा है:

तुम एक राजा के निकट आ रहे हो,
उसके पास बड़े निवेदन ले कर आओ;
क्योंकि उसके अनुग्रह और सामर्थ की यह विशेषता है;
कि कोई भी निवेदन उसके लिए बहुत बड़ा नहीं होता।
– जॉन न्यूटन

म. जक्कई का मनफिराव (19:1–10)

जक्कई के मनफिराव में लूका 18:27 में दी गई इस सच्चाई का चित्रण किया गया है, ''जो मनुष्य से नहीं हो सकता वह परमेश्वर से हो सकता है।'' जक्कई एक धनी व्यक्ति था, और सामान्यत: एक धनी व्यक्ति के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना असम्भव है। परन्तु जक्कई ने अपने आप को उद्धारकर्ता के सामने दीन किया, और अपने धन को अपने प्राण और परमेश्वर के बीच में आने नहीं दिया।

19:1–5 जब प्रभु यीशु यरूशलेम की ओर अपनी तीसरी और अन्तिम यात्रा के समय **यरीहो से होकर जा रहा था** तभी ऐसा हुआ कि **जक्कई . . . यीशु को देखना चाहता था;** नि:सन्देह यह चाह जिज्ञासावश उत्पन्न हुई थी। यद्यपि वह **चुंगी लेने वालों का सरदार था,** तौभी वह यीशु को देखने के लिए कोई असामान्य हरकत करने से नहीं शर्माया। इसलिए कि वह **नाटा** था, वह जानता था कि वह यीशु को अच्छे से देख नहीं पाएगा। इसलिए **वह दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया;** यह पेड़ उसी रास्ते पर था जिस रास्ते से होकर यीशु जा रहा था। जक्कई के विश्वास का यह कार्य अनदेखा नहीं किया गया। जब **यीशु** पास आया, उसने **ऊपर दृष्टि कर के** जक्कई को देखा। उसने उसे झट नीचे **उतर** आने का आदेश दिया, और चुंगी लेने वाले के घर में स्वयं ही अपने आप को आमंत्रित किया। पवित्रशास्त्र में सिर्फ इसी स्थल में यह उल्लेख किया गया है कि उद्धारकर्ता ने स्वयं ही अपने आप को किसी घर में आमंत्रित किया हो।

19:6 जक्कई को जैसा कहा गया था, उसने बिल्कुल वैसा ही किया, और वह **आनन्द से** प्रभु यीशु को अपने **घर को ले गया।** निश्चय ही हम जानते हैं कि इस दिन से उसका मन परिवर्तन हो गया।

19:7 उद्धारकर्ता के **सब** आलोचक **कुड़कुड़ाकर कहने** लगे कि वह **एक पापी** के रूप में पहचाने जाने वाले **मनुष्य के यहाँ जा उतरा है।** उन्होंने इस सच्चाई को अनदेखा कर दिया कि हमारे संसार में आकर वह पूरी तरह से इसी प्रकार के घरों तक सीमित हो गया था!

19:8 चुंगी लेने वाले के जीवन में उद्धार एक आमूल–चूल परिवर्तन (पूरा का पूरा बदलाव) ले कर आया। उसने उद्धारकर्ता को बताया कि अब वह अपनी **आधी सम्पत्ति कंगालों को** देगा। (अब तक वह जितना हो सके उतना कंगालों को लूट रहा था।) उसने अपने द्वारा बेइमानी कर के कमाए गए किसी भी धन का **चौगुना** भरपाई कर देने का संकल्प लिया। उसने व्यवस्था की मांगों से बढ़कर यह निर्णय लिया (निर्ग. 22:4, 7; लैव्य. 6:5; गिनती 5:7)। इससे यह प्रगट होता है कि जक्कई अब प्रेम के वश में था जबकि पहले वह लोभ के वश में था।

इस बात पर कुछ लोगों को थोड़ा सन्देह है कि जक्कई ने बेइमानी से कुछ कमाया हो। मसीही आध्यात्मज्ञानी वेस्ट द्वारा पद 8ब का अनुवाद कुछ इस तरह से किया गया है: ''इसलिए क्योंकि मैंने अन्याय करके कुछ ले लिया है . . .।'' यहाँ पर ''यदि'' वाली कोई बात ही नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि जक्कई अपने परोपकारी स्वभाव पर घमण्ड कर रहा है और अपने उद्धार के लिए अपने इसी स्वभाव का सहारा दे रहा है। परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं है। वह यह कह रहा है कि मसीह में मिला नया जीवन उसके भीतर यह इच्छा उत्पन्न कर रहा है कि वह अपनी पिछली गलतियों की भरपाई करे, और उद्धार मिलने पर परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता जताते हुए वह अब इस धन का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए और अपने पड़ोसियों की आशीष के लिए करना चाहता है।

पद 8 भरपाई किए जाने के सम्बन्ध में एक सशक्त पद है। उद्धार एक व्यक्ति को पिछले समयों में की गई गलतियों को सुधारने की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं करता। यदि मनफिराव से पहले किसी ने किसी से कर्ज लिया है, तो नया जन्म पाने के बाद वह कर्ज निरस्त नहीं हो जाता। और यदि उद्धार से पहले किसी ने किसी का पैसा चुराया हो, तो परमेश्वर के अनुग्रह का सच्चा बोध यह अनिवार्य करता है कि परमेश्वर की सन्तान बनने के बाद उस पैसे को लौटाया जाए।

19:9 **यीशु** ने सीधे सीधे यह घोषणा की कि

जक्कई के **घर में उद्धार आया** है, क्योंकि वह **इब्राहीम का एक पुत्र** है। जक्कई के घर में उद्धार आने का कारण उसका जन्म से ही यहूदी होना नहीं था। यहाँ पर ''इब्राहीम का एक पुत्र'' शारीरिक सन्तान से बढ़कर अर्थ रखता है; इसका अर्थ यह है कि जक्कई ने प्रभु पर उसी प्रकार का विश्वास रखा जिस प्रकार का विश्वास इब्राहीम ने रखा था। साथ ही, जक्कई के घर में उद्धार आने का कारण उसका परोपकार और उसके द्वारा की गई भरपाई नहीं थी (पद 8)। ये बातें उद्धार का परिणाम है, कारण नहीं।

19:10 जो लोग प्रभु यीशु की आलोचना कर रहे थे कि वह एक पापी के यहाँ ठहरा हुआ है, उन लोगों को उत्तर देते हुए प्रभु यीशु ने कहा, ''**मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।**'' दूसरे शब्दों में, जक्कई का मनफिराव मसीह के इस संसार में आने के उद्देश्य की पूर्णता थी।

न. दस मुहरों का दृष्टान्त (19:11–27)

19:11 जब उद्धारकर्ता यरीहो से **यरूशलेम** के पास पहुँचा, तो उसके अनेक अनुयायी यह समझ रहे थे कि **स्वर्ग का राज्य प्रगट हुआ चाहता है** (शीघ्र ही प्रगट होने वाला है)। दस मुहरों[53] के **दृष्टान्त** में, उसने उनकी इस आशा को खारिज कर दिया। उसने यह बताया कि उसके पहले आगमन और दूसरे आगमन के बीच में एक अन्तराल होगा जिस दौरान उसके अनुयायी उसके कार्य को लेकर बहुत व्यस्त रहेंगे।

19:12, 13 **धनी मनुष्य** का दृष्टान्त अरखिलाउस के इतिहास से काफी मिलता जुलता है। अरखिलाउस को हेरोदेस के द्वारा अपने उत्तराधिकारी के रूप में चुना गया था, परन्तु उसे लोगों ने ठुकरा दिया। वह अपनी नियुक्ति के अनुमोदन के लिए रोम गया, और वहाँ से लौट कर उसने अपने सेवकों को इनाम दिया और अपने शत्रुओं का नाश कर दिया।

इस दृष्टान्त में, **धनी मनुष्य** स्वयं प्रभु यीशु मसीह है जो स्वर्ग **चला** गया है कि उस समय की प्रतीक्षा करे जब वह **फिर आए** और पृथ्वी पर अपना **राज्य** स्थापित करे। **दासों में से दस** उसके चेलों को दर्शाते हैं। उसने प्रत्येक को एक एक मुहर दी है और उन्हें कहा है कि वे उसके वापस आने तक इस मुहर का उपयोग **लेनदेन** के लिए करें। यद्यपि प्रभु के दासों के वरदानों और क्षमताओं में भिन्नताएं होती है (तोड़ों का दृष्टान्त मत्ती 25:14–30 में देखें), कुछ ऐसी चीजें हैं जो सब को दी गई हैं, जैसे सुसमाचार प्रचार करने का सुअवसर, प्रभु को संसार के सामने प्रस्तुत करने का अवसर, और प्रार्थना करने का विशेषाधिकार। निःसन्देह, इस दृष्टांत में मुहरें इन्हीं सुअवसरों को कहा गया है।

19:14 **नगर के रहने वाले** नागरिक यहूदी जाति को दर्शाते हैं। उन्होंने न सिर्फ उसे ठुकरा दिया, बल्कि उसके जाने के बाद, **उसके पीछे दूतों द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते कि यह हम पर राज्य करे**। हो सकता है कि यह सन्देश उनके द्वारा स्तिफनुस और अन्य शहीदों के साथ किए गए व्यवहार को दर्शा रहा हो।

19:15 यहाँ पर प्रभु को प्रतीकात्मक रूप से अपना **राजपद** स्थापित करने के लिए वापस आते हुए चित्रित किया गया है। तब वह उन लोगों से लेखा लेगा **जिन्हें** उसने **रोकड़** सौंपे थे।

मसीह के न्याय सिंहासन के सामने आज के विश्वासियों को अपनी सेवकाई का हिसाब देना होगा। यह कलीसिया के बादलों पर यीशु के साथ मिलने के लिए उठाए जाने के बाद स्वर्ग में होगा।

विश्वासयोग्य यहूदी झुण्ड जो क्लेशकाल के दौरान मसीह के लिए गवाह बना रहेगा, वह मसीह के दूसरे आगमन पर लेखा देगा। ऐसा प्रतीत होता है कि इस स्थल में न्याय के विषय पर मुख्य रूप से बल दिया गया है।

19:16 पहले दास ने उसे सौंपे गए एक **मोहर** के द्वारा **दस और मोहरें** कमाईं। वह इस बात को जानता था कि यह पैसा उसका नहीं है (''**तेरे मोहर**'') और उसने अपने स्वामी के हित में इसका सर्वोत्तम उपयोग किया।

19:17 स्वामी ने **बहुत थोड़े में विश्वासी** (विश्वासयोग्य) सिद्ध होने के लिए उसकी सराहना की – यह इस बात का स्मरण दिलाता है कि अपना सर्वोत्तम देने के बाद हम निकम्मे दास ही हैं। उसे प्रतिफल के रूप में **दस नगरों पर अधिकार** दिया गया। विश्वासयोग्यता से सेवकाई करने का प्रतिफल स्पष्ट रूप से मसीह के राज्य में शासन करने से जुड़ा हुआ है। चेले को किस हद तक राज्य करने का अधिकार दिया जाएगा यह इस बात

पर निर्भर रहेगा कि वह कितना समर्पित है और उसने अपने आप को प्रभु की सेवा में कितना खपाया है।

19:18, 19 **दूसरे** दास ने उसे दी गई एक मोहर के द्वारा **पाँच और मोहरें** कमाईं। उसे **पाँच नगरों पर हाकिम** बनाया गया।

19:20, 21 तीसरे दास के पास बहाने के सिवाय और कुछ नहीं था। उसने **मोहर** लौटा दी, उसे सम्भाल कर **अंगोछे में** बान्ध रखा। उसने इसमें से कुछ भी नहीं कमाया। उसने क्यों कुछ भी नहीं कमाया? इसके लिए उसने अपने स्वामी को दोष दिया। उसने कहा कि उसका स्वामी एक **कठोर मनुष्य** है, जो बिना खर्च किए कमाना चाहता है। परन्तु इस दास के स्वयं के शब्दों ने उसे पकड़वा दिया। यदि उसे यह लग रहा था कि उसका स्वामी ऐसा है, तो कम से कम उसे उस मोहर को किसी महाजन के पास जमा कर देना था, ताकि उसका कुछ ब्याज मिल सके।

19:22 धनवान मनुष्य के शब्दों को उद्धरित करते हुए, प्रभु यीशु ने यह नहीं कहा कि वे सत्य हैं। सीधी सी बात यह है कि उस दास का पापमय हृदय ही अपने स्वयं के आलस के लिए अपने स्वामी पर दोष लगा रहा था। परन्तु यदि वह सचमुच में अपने स्वामी को ऐसा समझता था तो उसे उसी के अनुसार कार्य भी करना था।

19:23 पद 23 का अर्थ यह हो सकता है कि या तो हमें अपना सब कुछ प्रभु के कार्य के लिए लगा देना चाहिए, या फिर किसी ऐसे व्यक्ति को सौंप देना चाहिए जो इसका उपयोग प्रभु के कार्यों के लिए करे।

19:24–26 धनवान व्यक्ति ने यह फैसला सुनाया कि इस तीसरे दास से उसे दी गई **मोहर ... ले** ली जाए, और उस पहले दास को दे दी जाए **जिस** ने **दस मोहरें** कमाए थे। यदि हम हमें मिले सुवअसरों का उपयोग परमेश्वर के लिए नहीं करेंगे, तो वे हमसे ले लिए जाएंगे। दूसरी ओर, यदि हम थोड़े में विश्वासयोग्य रहें, तो परमेश्वर इस बात का ध्यान रखेगा कि उसकी और अधिक सेवा करने के लिए हमें किसी वस्तु की घटी न हो। शायद कुछ लोगों को यह अनुचित लगे कि तीसरे दास की **मोहर** एक ऐसे व्यक्ति को दे दी गई जिसके पास पहले से ही **दस** मोहरें थीं, परन्तु आत्मिक जीवन का यह अटल सिद्धान्त है कि जो लीन होकर उससे प्रेम रखते और उसकी सेवा करते हैं उन्हें और भी व्यापक अवसर दिए जाते हैं। अवसरों का लाभ न उठा पाने से सब कुछ छीन लिया जाता है।

तीसरे सेवक ने अपने प्रतिफल की हानि उठाई, परन्तु उसे कोई अन्य दण्ड दिए जाने का उल्लेख नहीं मिलता। यहाँ पर उसके उद्धार के विषय में कोई प्रश्न चिन्ह नहीं है।

19:27 नगर के जो लोग इस धनवान व्यक्ति को अपने राजा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, उन्हें बैरी बता कर उनकी निन्दा की गई और उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया। यह उस जाति के लिए की गई एक दुखद भविष्यद्वाणी थी जिस जाति ने मसीह को ठुकरा दिया था।

X. मनुष्य का पुत्र यरूशलेम में (19:28–21:38)

अ. विजयी प्रवेश (19:28–40)

19:28–34 यह घटना प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले वाले रविवार के दिन की है। प्रभु यीशु **यरूशलेम की ओर** जाते हुए जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुँचा। **जब वह . . . बैतफगे और बैतनिय्याह के पास पहुँचा** तो **उसने अपने चेलों में से दो** को **गदही** का एक बच्चा लाने के लिए एक गाँव में भेजा, ताकि उस पर सवार हो कर वह यरूशलेम में प्रवेश कर सके। उसने उन्हें पहले से ही बिल्कुल ठीक ठीक बता दिया था कि उन्हें यह पशु कहाँ मिलेगा, और **मालिकों** द्वारा उनसे क्या पूछा जाएगा। चेलों ने जब मालिकों को अपना प्रयोजन बताया तो उन्होंने खुशी खुशी गदही के बच्चे को प्रभु यीशु के उपयोग के लिए दे दिया। शायद उन्होंने पहले प्रभु यीशु की सेवकाई के द्वारा आशीष पाई हो और उन्होंने प्रभु को आवश्यकता पड़ने पर सहयोग देने का वचन दिया हो।

19:35–38 चेलों ने **अपने कपड़े** डालकर प्रभु के लिए एक गद्देदार काठी तैयार की। अनेक लोग **अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे** और वह यरूशलेम की ओर जैतून पहाड़ के पश्चिमी तल से होकर बढ़ता जाता था। उसके बाद प्रभु यीशु के पीछे चलने वाले लोग एक स्वर में **सामर्थ के कामों के कारण जो उन्होंने** प्रभु को करते हुए **देखे थे** उसकी **स्तुति** की। वे परमेश्वर के **राजा** के रूप में उसका अभिवादन कर रहे थे और नारे

लगा रहे थे कि उसका आगमन **स्वर्ग में शान्ति और आकाशमण्डल में महिमा** का कारण है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि वे पुकार कर यह कह रहे थे कि "**स्वर्ग में शान्ति**" हो, यह नहीं कि "पृथ्वी पर शान्ति" हो। पृथ्वी पर शान्ति नहीं हो सकती थी क्योंकि शान्ति के राजकुमार को ठुकरा दिया गया था और शीघ्र ही उसका वध होने वाला था। परन्तु कलवरी पर मसीह की मृत्यु और उसके स्वर्गारोहण से **स्वर्ग में शान्ति** होने वाली थी।

19:39, 40 **फरीसी** लोग क्रोध से जल उठे कि यीशु को इस तरह से सार्वजनिक सम्मान दिया जा रहा है। उन्होंने प्रभु यीशु से कहा कि वह अपने **चेलों को** डांटे। परन्तु प्रभु यीशु ने **उत्तर दिया** कि ऐसी जयजयकार को टाला नहीं जा सकता। **यदि** चेले जयजयकार नहीं करेंगे, तो **पत्थर** जयजयकार करने लगेंगे! इस प्रकार से उसने फरीसियों को फटकारा कि वे निर्जीव पत्थरों से भी अधिक कठोर और उदासीन हैं।

ब. मनुष्य का पुत्र यरूशलेम के लिए विलाप करता है (19:41–44)

19:41, 42 जब यीशु यरूशलेम के **निकट** आया तो वह उस **नगर** के लिए विलाप करने लगा कि इसने एक स्वर्णिम अवसर को खो दिया है। यदि लोगों ने उसे मसीह के रूप में स्वीकार कर लिया होता, तो यह उनके लिए **कुशल** लेकर आता। परन्तु उन्होंने अपने **कुशल** के स्त्रोत को नहीं पहचाना। अब बहुत देर हो चुकी थी। वे पहले से ही यह तय कर चुके थे कि वे मनुष्य के पुत्र के साथ क्या करेंगे। उनके द्वारा प्रभु का तिरिस्कार कर दिए जाने के कारण उनकी **आँखों** को बन्द कर दिया गया था। चूंकि वे उसे नहीं देखना *चाहते* थे, आगे से वे उसे नहीं देख *सकेंगे*।

उद्धारकर्ता के आँसुओं पर विचार करने की ओर ध्यान दें। जैसा कि डब्ल्यू. एच. ग्रिफ्फिथ थॉमस ने कहा है, "आइये हम प्रभु यीशु के चरणों पर तब तक बैठे रहें जब तक कि उसके आँसुओं के रहस्य को न जान लें, और नगर और गाँवों के पापों और दुखों को देखें और उन के लिए भी विलाप करें।"[54]

19:43, 44 प्रभु यीशु ने रोमी सेनापति तीतुस द्वारा नगर को घेरे जाने का प्रभावशाली ढंग से पूर्वचित्रण किया – वह रोमी सेनापति किस तरह से नगर को **घेर** लेगा, निवासियों को फँसा कर बच्चों और बड़ों दोनों का नरसंहार कर देगा, और दीवारों और भवनों को **मिट्टी में** मिला देगा। एक भी **पत्थर** दूसरे **पत्थर पर** रखा हुआ पाया नहीं जाएगा। और यह सब इसलिए होगा **क्योंकि** यरूशलेम ने उस पर की गई **कृपादृष्टि** के **अवसर** को **न पहिचाना**। प्रभु ने उद्धार के प्रस्ताव के साथ आकर नगर पर कृपादृष्टि की थी। परन्तु लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। उनकी योजनाओं में प्रभु के लिए कोई स्थान नहीं था।

स. मन्दिर का दूसरी बार शुद्ध किया जाना (19:45, 46)

प्रभु यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ करने के समय भी **मन्दिर** को शुद्ध किया था (यूहन्ना 2:14–17)। अब जबकि उसकी सेवकाई के समापन का समय तेजी से निकट आ रहा था, तब उसने पवित्रस्थान में प्रवेश किया और उन सब लोगों को बाहर **निकालने** लगा जो **प्रार्थना** के **घर** को **डाकुओं की खोह** बना रहे थे। परमेश्वर के कार्यों में व्यवसायवाद को लाने का खतरा हमेशा बना रहता है। मसीही जगत में इस बुराई का खमीर फैल रहा है: चर्च में खरीदी–बिक्री, वित्तीय हितों पर ध्यान केन्द्रित करना, लाभ कमाने के उद्देश्य से प्रचार करना – और यह सब कुछ मसीह के नाम से किया जा रहा है।

मसीह ने पवित्रशास्त्र (यशा. 56:7 और यिर्म. 7:11) को उद्धरित करते हुए अपने इस कदम का समर्थन किया। कलीसिया में पाई जाने वाली सारी बुराइयों में सुधार सिर्फ परमेश्वर के वचन के आधार पर किया जाए।

द. मन्दिर में प्रतिदिन प्रचार करना (19:47, 48)

प्रभु यीशु **प्रतिदिन मन्दिर** क्षेत्र **में उपदेश देता था** – मन्दिर के भीतर नहीं, परन्तु आँगन में जहाँ लोगों को आने की अनुमति थी। धार्मिक अगुवे प्रभु को **नाश** करने का बहाना ढूंढ़ रहे थे, परन्तु सामान्य **लोग** अब भी

आश्चर्यकर्म करने वाले नासरी से अभिभूत थे। उसका समय अब तक नहीं आया था। **परन्तु** शीघ्र ही वह घड़ी आ जाएगी, और फिर **महायाजक, शास्त्री,** और फरीसी लोग उसे मार डालने के लिए जुट जाएंगे।

सोमवार आ चुका है। अगला दिन, मंगलवार होगा, जो उसकी सार्वजनिक सेवकाई का अन्तिम दिन होगा, और इस दिन से सम्बन्धित वर्णन 20:1–22:6 में दिया गया है।

इ. मनुष्य के पुत्र के अधिकार पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया (20:1–8)

20:1, 2 इस दृश्य की कल्पना करें! महागुरू अथक परिश्रम करते हुए **मन्दिर** की छाया में सुसमाचार का प्रचार कर रहा था, और इस्राएल के अगुवे गुस्ताखी करते हुए शिक्षा देने के उसके अधिकार को चुनौती दे रहे थे। उनके लिए यीशु नासरत का एक गंवार बढ़ई था। उसने थोड़ी बहुत शिक्षा ग्रहण की थी, उसके पास किसी भी धार्मिक संस्था द्वारा दी गई कोई उपाधि या प्रमाण पत्र या अधिकार नहीं था। वह किस अधिकार से शिक्षा दिया करता था? वह **कौन** था जिसने उसे **यह अधिकार दिया** कि वह दूसरों को शिक्षा और उपदेश दे और मन्दिर को शुद्ध करे? वे उससे इसका उत्तर चाहते थे!

20:3 प्रभु यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछते हुए **उत्तर दिया**; यदि वे इसका सही उत्तर देते तो उन्होंने अपने ही प्रश्न का उत्तर दे दिया होता। क्या **यूहन्ना का बपतिस्मा** परमेश्वर के द्वारा दिये गए अधिकार से था, या फिर यह सिर्फ मनुष्य के अधिकार से था? वे इस प्रश्न में फँस गए। यदि वे यह स्वीकार कर लेते कि यूहन्ना ने परमेश्वर के द्वारा दिए गए अधिकार से प्रचार किया, तो उन्होंने उसके सन्देशों का पालन कर मन क्यों नहीं फिराया और उस मसीह को ग्रहण क्यों नहीं किया जिसका वह प्रचार करता था? परन्तु यदि वे यह कहते कि यूहन्ना सिर्फ एक पेशेवर शिक्षक था, तो वे भीड़ का क्रोध भड़का देते, जो अब भी **यूहन्ना** को परमेश्वर का **भविष्यद्वक्ता** मानती थी। **सो** उन्होंने कह दिया कि वे **नहीं जानते** कि यूहन्ना को यह अधिकार किस ने दिया। इस पर यीशु ने कुछ इस तरह से कहा, *''ठीक है, यदि ऐसा है, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किसके अधिकार से काम करता हूँ।''* यदि वे यूहन्ना के बारे में इतना नहीं बता सके, तो वे एक ऐसे व्यक्ति के अधिकार को क्यों चुनौती दे रहे हैं जो यूहन्ना से भी बड़ा है? इस स्थल से हमें यह शिक्षा मिलती है कि परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने के लिए सबसे आवश्यक बात है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना। जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण किए गए हैं वे उन लोगों पर प्रबल हो सकते हैं जिनकी सामर्थ उपाधियों, मानवीय पद्वियों, और सम्मानों में लिपटी हुई है।

''तुमने अपना डिप्लोमा कहाँ से प्राप्त किया? सेवकाई के लिए तुम्हारा अभिषेक किसने किया?'' ऐसे कुछ पुराने प्रश्न, जो शायद जलन की उपज हो, अब भी पूछे जाते हैं। एक सफल सुसमाचार प्रचारक जिसके पास किसी नामी बाइबल विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं है, उसकी योग्यता और उसके अभिषेक की वैधता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है।

फ. दुष्ट किसानों का दृष्टान्त (20:9–18)

20:9–18 इस्राएल के परमेश्वर के हृदय से निरन्तर निकलती पुकार एक बार फिर से **दाख की बारी** के इस **दृष्टान्त** में दोहराई गई है। परमेश्वर वह **मनुष्य** है जिसने **दाख की बारी** (इस्राएल) का **ठेका . . . किसानों** (इस्राएली जाति के अगुवों – यशा. 5:1) को दिया। उसने अपने दासों को **किसानों के पास** भेजा कि उसके लिए **कुछ फलों का भाग** लेकर आएं; ये दास परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता थे, जैसे यशायाह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, जो इस्राएल को मन फिराव और विश्वास का न्यौता दे रहे थे। परन्तु इस्राएल के अगुवे लगातार भविष्यद्वक्ताओं को सताते रहे।

20:13 अन्त में परमेश्वर ने अपने **प्रिय पुत्र** को यह सोचकर भेजा कि **वे** उसका **आदर** करेंगे (यद्यपि परमेश्वर अवश्य ही यह जानता था कि वे मसीह को ठुकरा देंगे। ध्यान दें कि मसीह अपने आप को दूसरों से बिल्कुल अलग प्रस्तुत करता है। दूसरे लोग दास थे, वह पुत्र है।

20:14 अपने पिछले इतिहास के अनुरूप ही, **किसानों** ने **वारिस** का काम–तमाम करने का निश्चय किया। वे लोगों के अगुवों और शिक्षकों के रूप में अपना

एकाधिकार स्थापित करना चाहते थे – "**कि मीरास हमारी हो जाए।**" वे अपने धार्मिक पदों को यीशु के आगे समर्पित नहीं करेंगे। यदि वे उसे मार डालें, तो इस्राएल में उनके अधिकार को कोई चुनौती नहीं दे सकेगा – या वे ऐसा सोचते थे।

20:15–17 और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकाल कर मार डाला। इस पर प्रभु यीशु ने अपने यहूदी श्रोताओं से पूछा कि **दाख की बारी का स्वामी** इस प्रकार के **किसानों** के साथ क्या करेगा। मत्ती में, महायाजकों और पुरनियों ने अपने आप को ही दोषी ठहराते हुए कहा कि वह उन्हें मार डालेगा (मत्ती 21:41)। यहाँ प्रभु स्वयं उत्तर देता है, "**वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को सौंपेगा।**" इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर विशेषाधिकार का स्थान **औरों** को दे देगा। "औरों" से उसका आशय अन्यजाति या अन्त के दिनों में नया जीवन पाने वाले इस्राएल से हो सकता है। यहूदी यह सुनकर ठिठक गए। **उन्होंने कहा, "परमेश्वर ऐसा न करे।"** प्रभु ने इस भजन 118:22 को उद्धरित करते हुए भविष्यद्वाणी की पुष्टि की। यहूदी **राजमिस्त्रियों** ने मसीह को, जो **पत्थर** है, **निकम्मा** ठहरा दिया। उसके लिए उनकी योजनाओं में कोई स्थान नहीं था। परन्तु परमेश्वर इस बात को लेकर संकल्पित था कि वह मसीह को **कोने का पत्थर** बना कर उसे प्रमुखता का स्थान दिलवा कर रहेगा, कोने का पत्थर भवन का सबसे अनिवार्य और महत्वपूर्ण पत्थर होता है।

20:18 मसीह के दो बार आगमन का संकेत पद 18 में दिया गया है।[55] उसका पहला आगमन भूमि पर के **पत्थर** के रूप में चित्रित किया गया है; लोग उसकी दीनता और नम्रता से ठोकर खाते थे; और उसे ठुकराने के द्वारा वे **चकनाचूर** हो गए। इस पद के दूसरे भाग में, पत्थर को स्वर्ग से गिर कर अविश्वासियों को **पीस** डालते हुए दिखाया गया है।

ग.कैसर को देना और परमेश्वर को देना (20:19–26)

20:19, 20 महायाजकों और शास्त्रियों ने जान लिया कि यीशु उसके विरूद्ध बातें कर रहा है, इसलिए वह उसे पकड़ने के लिए अधिक सक्रिय हो गए। उन्होंने उसके पीछे **भेदिए भेजे** जो उसको फँसा कर उसके मुँह से ऐसा कुछ निकलवाएं जिसके आधार पर उसे बन्दी बना कर रोमी **हाकिम** के सामने खड़ा किया जा सके। पहले तो इन भेदियों ने उसकी सराहना करते हुए उसे एक ऐसा व्यक्ति बताया जो हर कीमत पर परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहता है और जो मनुष्यों से नहीं डरता – उन्हें लग रहा था कि वह कैसर के विरुद्ध कुछ कहेगा।

20:21, 22 तब उन्होंने उससे पूछा कि क्या एक यहूदी के लिए **कैसर को कर देना** उचित है। यदि यीशु कहता, नहीं, तो वे उस पर राजद्रोह का दोष लगाते और मुकद्दमा चलाने के लिए रोमियों के हाथों सौंप देते। यदि वह कहता, हाँ, तो वह हेरोदियों से (और यहूदियों के एक बड़े हिस्से से) अपने आप को अलग थलग कर बैठता।

20:23, 24 यीशु ने अपने विरुद्ध रचे जा रहे षड़यंत्र को भाँप लिया। उसने उनसे एक **दीनार** मांगा; शायद उसके पास एक दीनार भी नहीं रहता था। यह तथ्य कि उनके पास दीनार था और वे इसका उपयोग करते थे अन्यजाति सत्ता के नीचे उनकी आधीनता को दर्शाता है। प्रभु यीशु ने पूछा, "**इस पर किस की मूर्ति और किसका नाम है?**" उन्होंने स्वीकार किया कि इस पर **कैसर** की मूर्ति और उसी का नाम है।

20:25, 26 तब यीशु ने उन्हें यह आदेश देते हुए चुप कर दिया, "**जो कैसर का है वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।**" वे कैसर के हित का तो ध्यान रखते थे परन्तु परमेश्वर के हित का जरा भी ध्यान नहीं रखते थे। "धन कैसर का है, और तुम परमेश्वर के हो। संसार को उसके सिक्के ले लेने दो, परन्तु परमेश्वर को अपनी सृष्टि को ले लेने दो।" जीवन की प्रमुख बातों को अनदेखी कर छोटी छोटी बातों में बाल की खाल निकालना बहुत सरल है। परमेश्वर को उसके अधिकार से वंचित रखते हुए अपने संगी मनुष्यों के प्रति अपनी देनदारियों को पूरा करना भी सरल है।

ह. सदूकी और पुनरूत्थान के सम्बन्ध में उनकी पहेली (20:27–44)

20:27 चूंकि एक राजनैतिक प्रश्न पूछने के द्वारा यीशु को फँसाने की चाल निष्फल हो गई, इसलिये कुछ

सदूकी लोग **उसके पास आकर** उससे एक धर्मसम्बधी पहेली पूछने लगे। वे इस बात से इंकार करते थे कि मरे हुए फिर से कभी जी उठेंगे, इसलिए एक अतिवादी उदाहरण देते हुए उन्होंने **जी** उठने के सिद्धान्त को हास्यपूर्ण बताना चाहा।

20:28–33 उन्होंने यीशु को स्मरण दिलाया कि **मूसा** की व्यवस्था में एक अविवाहित व्यक्ति को अपने भाई की विधवा से विवाह करने के लिए कहा गया है ताकि परिवार का नाम आगे बढ़ता रहे और परिवार की सम्पत्ति परिवार में ही रहे (व्य. वि. 25:5)। उनकी कहानी के अनुसार, एक स्त्री ने **सात** भाइयों से एक एक कर विवाह किया। जब सातवां पति मरा, तब भी वह **बिना सन्तान** ही थी। तब वह **भी मर गई**। वे यह जानना चाहते थे कि "**जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी**?" वे सोचते थे कि इस प्रकार के अनुत्तरित प्रश्न को तैयार करने में वे बहुत चतुर हैं।

20:34 प्रभु यीशु ने उत्तर दिया कि विवाह का सम्बन्ध सिर्फ **इस** जीवन तक के लिए है; यह सम्बन्ध स्वर्ग में कायम नहीं रहेगा। उसने यह नहीं कहा कि पति और पत्नी एक दूसरे को स्वर्ग में नहीं पहचानेंगे, परन्तु स्वर्ग में उनके सम्बन्ध का आधार पूरी तरह से अलग होगा।

20:35 "**जो लोग इस योग्य ठहरेंगे कि इस युग को . . . प्राप्त करें,**" इस वाक्य का भाव यह सुझाव नहीं देता है कि कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से स्वर्ग को प्राप्त करने के योग्य हैं; स्वर्ग जाने की एकमात्र योग्यता जो पापी प्राप्त कर सकते हैं वह योग्यता प्रभु यीशु मसीह ही है। "वे ही लोग योग्य गिने जाने जाते हैं जो अपने आप को परखते हैं, जो मसीह को ऊँचा उठाते हैं, और जिन के पास वे सारी योग्यताएं हैं जो प्रभु यीशु मसीह में उन्हें दी गई हैं।"[56] **मरे हुओं में से जी उठना** सिर्फ विश्वासियों के ही पुनरूत्थान को दर्शाता है। इसका शब्दश: अर्थ है **मरे** हुओं में से **जी** उठकर बाहर निकलना (यूनानी भाषा में *एख* का अर्थ है – . . . में से निकलकर बाहर आना)। यह धारणा कि सभी मृतक, चाहे उद्धार पाए हुए या उद्धार न पाए हुए, एक साथ जी उठेंगे, बाइबल में नहीं पाई जाती।

20:36 स्वर्गीय दशा की उत्तमता को पद 36 में आगे बताया गया है। वहाँ मृत्यु नहीं होगी, इस अर्थ में, मनुष्य **स्वर्गदूतों के समान** हो जाएगा। साथ ही वे **परमेश्वर के भी सन्तान** के रूप में प्रगट होंगे। विश्वासी लोग पहले से ही परमेश्वर की सन्तान हैं, परन्तु उनका बाहरी रूप अभी वैसा दिखाई नहीं देता। स्वर्ग में, वे परमेश्वर के सन्तान के रूप में *प्रगट* रूप में दिखाई देंगे। यह तथ्य कि वे पहले पुनरूत्थान में भागी हुए इस बात के लिए आश्वस्त कर देता है। "इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसने समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूह. 3:2)। "जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे" (कुलु. 3:4)।

20:37, 38 पुनरूत्थान के सत्य को प्रमाणित करने के लिए प्रभु यीशु ने निर्गमन 3:6 की ओर ध्यान आकृष्ट किया जहाँ **मूसा ने प्रभु** को उद्धरित किया है, यहाँ पर प्रभु ने अपने आप को **इब्राहीम . . . इसहाक . . . और याकूब का परमेश्वर** कहा है। अब यदि सदूकी लोग जरा विचार करें तो वह यह समझ जाएंगे कि: (1) **परमेश्वर तो मुर्दों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।** (2) **इब्राहीम**, **इसहाक**, और **याकूब** सभी मर चुके थे। इसलिए इस निष्कर्ष पर आना अनिवार्य होगा कि परमेश्वर अवश्य ही उन्हें मरे हुओं में से जिलाएगा। परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि वह "मैं इब्राहीम का परमेश्वर *था*," परन्तु यह कहा कि "मैं . . .*हूँ।*" यदि परमेश्वर जीवतों का परमेश्वर है तो उसके इस चरित्र के अनुरूप पुनरूत्थान का होना अनिवार्य है।

20:39–44 कुछ शास्त्रियों को इस तर्क के बल को स्वीकार करना पड़ा। परन्तु यीशु की बात अभी पूरी नहीं हुई थी; एक बार फिर से उसने परमेश्वर के वचन का सहारा लिया। भजन 110:1 में **दाऊद** ने मसीह को अपना **प्रभु** कहा है। यहूदी लोग सामान्यत: इस बात से सहमत थे कि मसीह **दाऊद** का **सन्तान** होगा। वह दाऊद का **प्रभु** और दाऊद का **सन्तान** एक ही समय में कैसे हो सकता है? प्रभु यीशु स्वयं इस प्रश्न का उत्तर था। वह मनुष्य के पुत्र के रूप में दाऊद के वंश का था; तौभी वह दाऊद का सृष्टिकर्ता था। परन्तु वे इतने अन्धे थे कि यह देख पाना उनके बस की बात नहीं थी।

ई. शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी (20:45–47)

इसके बाद प्रभु यीशु ने भीड़ को सार्वजनिक रूप से

सदूकियों से सचेत किया। वे **लम्बे लम्बे वस्त्र** पहनते थे ताकि अपने आप को अतिधार्मिक जता सकें। जब वे **बाजारों** में फिरते थे तो वे चाहते थे कि लोग उन्हें विशिष्ठ पदनामों से पुकारें। वे **सभाओं** में और जेवनारों में **मुख्य आसन** पाने के लिए किसी भी हद तक चले जाते थे। परन्तु वे असहाय विधवाओं द्वारा अपने लिए बचा कर रखी गई बचत राशियों को लूटकर डकार जाते थे, और **बड़ी देर तक प्रार्थना** करने के अपने दुष्टता को ढांपने का प्रयास करते थे। इस प्रकार के पाखण्ड का दण्ड और अधिक कठोरता से दिया जाएगा।

ज. विधवा की दो दमड़ी (21:1-4)

जब प्रभु यीशु **धनवानों को अपना अपना दान** मन्दिर के **भण्डार में डालते** देख रहा था, तभी **धनवान** व्यक्तियों और **एक कंगाल विधवा** के बीच के एक फर्क की ओर उसका ध्यान गया। धनवान व्यक्तियों ने अपने धन में से कुछ भाग डाला, परन्तु इस विधवा ने अपना **सब** कुछ डाल दिया। परमेश्वर के हिसाब से उस विधवा ने **सब** देने वालों द्वारा दिए गए सारे दान से भी **बढ़ कर** डाला। उन्होंने **अपनी अपनी बढ़ती में से** दिया; परन्तु इस विधवा ने **अपनी घटी में से** दिया। उन्होंने जो कुछ दिया उससे उन्हें थोड़ा बहुत या नहीं के बराबर फर्क पड़ा, परन्तु इस विधवा ने अपने पास की **सारी जीविका** दे दी। ''बहुतायत से दिया गया ऐसा सोना जिसकी आवश्यकता देने वाले को न हो, परमेश्वर द्वारा अथाह गड़हे में फेंक दिया जाता है; परन्तु खून पसीने से सने हुए ताम्बे को वह उठाकर चूम लेता है और उसे अनन्तकाल के स्वर्णपात्र में रख लेता है।''[57]

क.भविष्य की घटनाओं की रूपरेखा (21:5-11)

5 से लेकर 33 पदों में भविष्य में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित एक महान उपदेश दिया गया है। यद्यपि यह मत्ती 24 और 25 के जैतून पहाड़ पर दिए गए उपदेश से मिलता जुलता है, परन्तु यह बिल्कुल हूबहू नहीं है। हमें फिर से यह बात अपने ध्यान में लाना चाहिए कि सुसमाचार में पाई जाने वाली भिन्नता अपने आप में एक गहरा अर्थ लिए हुए है।

इस उपदेश में, हम पाते हैं कि प्रभु सन् 70 में होने वाले यरूशलेम के नाश और प्रभु के दूसरे आगमन के समय की परिस्थितियों को एक साथ मिला कर के बताता है। यह दोहरे सन्दर्भ के नियम का एक उदाहरण है – उसकी भविष्यद्वाणी तीतुस द्वारा यरूशलेम को घेरे जाने के समय आंशिक रूप से पूरी होगी, परन्तु क्लेशकाल के अन्त में यह पूर्ण रीति से पूरी होगी।

उसके उपदेश की रूपरेखा कुछ इस प्रकार से है:

1. यीशु ने यरूशलेम के नाश की भविष्यद्वाणी की (5, 6 पदों में)।
2. चेलों ने उससे पूछा कि ये बातें कब पूरी होंगी (पद 7)।
3. यीशु ने पहले अपने स्वयं के दोबारा आगमन से पूर्व होने वाली घटनाओं का एक सामान्य चित्रण किया (8-11 पदों में)।
4. उसके बाद उसने यरूशलेम के पतन और उसके बाद के समय का चित्रण किया (12-24 पदों में)
5. अन्त में उसने अपने दूसरे आगमन से पहले प्रगट होने वाले चिन्हों का चित्रण किया, और अपने अनुयायियों से आग्रह किया कि वे उसके वापस लौटने की आशा में अपना जीवन व्यतीत करें (25-26 पदों में)।

21:5, 6 **जब** कुछ **लोग** हेरोदेस के **मन्दिर** की भव्यता की तारीफ कर रहे थे, तब प्रभु यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे भौतिक **वस्तुओं** को अपने ऊपर हावी होने न दें जो शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगी। **वे दिन** आने वाले हैं जब मन्दिर को पूरी तरह से मिट्टी में मिला दिया जाएगा।

21:7 तुरन्त ही चेले यह जानने के लिए जिज्ञासा करने लगे कि ये बातें कब होंगी और इस बात का **क्या चिन्ह होगा** जिससे यह अनुमान लगा पाने में सहायता मिलेगी कि इन बातों के पूरा होने का समय अब निकट है। नि:सन्देह उनका प्रश्न सिर्फ यरूशलेम के नाश तक ही सीमित था।

21:8-11 ऐसा प्रतीत होता है कि उद्धारकर्ता का उत्तर उन्हें समय से काफी आगे अन्त के दिनों की ओर ले गया जब परमेश्वर का राज्य स्थापित करने से पहले मन्दिर को फिर से नाश कर दिया जाएगा। उस समय झूठे मसीह खड़े हो जाएंगे और झूठी अफवाहें फैलने लगेंगी, साथ ही

लड़ाइयां और विद्रोह होंगे। न सिर्फ राष्ट्रों में बीच संघर्ष होगा, बल्कि प्रकृति में भी उथल-पुथल मच जाएगी – **भुईंडोल . . . अकाल और मरियां पड़ेंगी और आकाश में बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।**

ल.अन्त के समय से पहले की अवधि (21:12-19)

22:12-15 इससे पहले वाले खण्ड में, यीशु ने अन्त के समय से ठीक पहले होने वाली घटनाओं का वर्णन किया है। पद का आरम्भ इस वाक्यांश के साथ हुआ है ''**परन्तु इन सब बातों से पहले . . .**।'' इसलिए हम ऐसा मानते हैं कि पद 12-24 में प्रभु द्वारा यह उपदेश दिए जाने और भविष्य में आने वाले क्लेशकाल के बीच की अवधि का वर्णन किया है। उसके चेलों को हिरासत में ले लिया जाएगा, उन्हें सताया जाएगा, धार्मिक और दीवानी अदालतों में उन पर मुकद्‌दमा चलाया जाएगा, और उन्हें जेल में डाल दिया जाएगा। हो सकता है कि चेले इसे अपने लिए एक असफलता और त्रासदी समझें, परन्तु वास्तव में प्रभु अपनी महिमा की **गवाही** के लिए इन सारी बातों पर प्रबल हो जाएगा। उन्हें अपने बचाव के लिए पहले से तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है। संकट की घड़ी में, परमेश्वर उन्हें विशेष रूप से **बुद्धि** देगा ताकि वे ऐसी बातें बोल सकें जिससे उनके **विरोधी** पूरी तरह से निष्फल हो जाएं।

21:16-18 परिवारों में गृहकलह शुरू हो जाएगा; उद्धार न पाए हुए अपने ही **कुटुम्ब** के लोग मसीहियों को पकड़वा देंगे, और कुछ लोगों को मसीह के नाम से खड़े होने के कारण मरवा भी दिया जाएगा। पद 16, ''**और तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे**'' तथा पद 18, ''**परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बांका न होगा**'' के बीच में विरोधाभास प्रतीत होता है। इसका अर्थ सिर्फ यह हो सकता है कि यद्यपि उनमें से कुछ मसीह के लिए शहीद हो जाएंगे, परन्तु उनकी आत्मा पूरी तरह से सुरक्षित रहेगी। वे मर तो जाएंगे परन्तु नाश नहीं होंगे।

21:19 पद 19 में यह बताया गया है कि जो लोग मसीह के लिए धीरजपूर्वक सहते हैं और उसे त्यागते नहीं, वे ऐसा करने के द्वारा अपने विश्वास की सच्चाई को सिद्ध करेंगे। जिन लोगों ने सचमुच में उद्धार पाया है वे हर कीमत पर उसके प्रति सच्चे और निष्ठावान बने रहेंगे। अंग्रेजी बाइबल के *आर.एस.वी.* संस्करण में कुछ इस प्रकार से लिखा हुआ है, ''अपने धीरज के द्वारा तुम अपने प्राणों को बचाओगे।''

म. यरूशलेम का नाश (21:20-24)

अब प्रभु यीशु स्पष्ट रूप से **यरूशलेम** के सर्वनाश के विषय पर बोल रहा है जो सन् 70 में होने वाला था। इस घटना का पूर्वचिन्ह यह होगा कि नगर को रोमी **सेनाओं** के द्वारा घेर लिया जाएगा।

> आरम्भिक समय के मसीही के लिये – सन् 70 – यरूशलेम के नाश और संगमरमर के सुन्दर मन्दिर को मिट्टी में मिला दिए जाने का एक विशेष पूर्वचिन्ह दिया गया था: ''जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।'' यह यरूशलेम के नाश का एक पूर्वचिन्ह होगा, और यह चिन्ह देख कर उन्हें भाग जाना है। अविश्वासी लोगों ने यह तर्क दिया हो कि शहरपनाह के घिरे हुए होने की स्थिति में, बच कर निकल पाना असम्भव होगा; परन्तु परमेश्वर का वचन कभी निष्फल नहीं होता। रोमी सेना ने अपनी सेनाओं को कुछ समय के लिए पीछे हटा लिया, और विश्वासी यहूदियों को बच कर निकल जाने के लिए अवसर दिया। विश्वासी यहूदियों ने ऐसा ही किया और वे पेला नामक एक स्थान को चले गए, जहाँ उन्हें सुरक्षित बचा कर रखा गया।[58]

नगर में फिर से प्रवेश करने के लिए उठाया गया कोई भी कदम घातक होता। परमेश्वर के पुत्र को ठुकरा देने के कारण अब इस नगर को दण्ड मिलने वाला था। **गर्भवती और दूध पिलाती** स्त्रियों के लिए यह एक हानि की स्थिति थी; इस्राएल **देश** और यहूदी **लोगों** पर परमेश्वर के दण्ड से बच कर भाग निकलने में उनके लिए उनकी यह दशा एक अवरोध थी। अनेक लोगों का वध किया जाना था, और जो बच गए उन्हें दूसरे देशों में बन्दी बना कर ले जाया जाना था।

पद 24 के बाद का हिस्सा एक ध्यान देनेयोग्य भविष्यद्वाणी है जिसमें यह बताया गया है कि प्राचीन

नगर **यरूशलेम** उस समय से लेकर जब तक **अन्यजातियों का समय पूरा न हो** अन्यजाति शासन के आधीन रहेगा। इसका अर्थ यह नहीं था कि इस दौरान कुछ समय के लिए भी यह यहूदियों के नियंत्रण में नहीं रहेगा; यहाँ पर यह कहा गया है कि लगातार अन्यजातियों के आक्रमण और हस्तक्षेप से प्रभावित रहेगा जब तक **अन्यजातियों का समय पूरा न** हो।

नया नियम में अन्यजातियों की सम्पत्ति, अन्यजातियों की पूर्णता, और अन्यजातियों के समय – इन तीनों के बीच अन्तर को बताया गया है।

1. अन्यजातियों की *सम्पत्ति* (रोमि.11:12) उस विशेषाधिकार के स्थान को कहा गया है जिसका आनन्द अन्यजातियों द्वारा वर्तमान में उठाया जा रहा है जबकि परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को अस्थायी रूप से एक किनारे कर दिया गया है।

2. अन्यजातियों की *पूर्णता* (रोमि. 11:25) मेघारोहण के समय होगी जब मसीह की अन्यजाति दुल्हन पूर्ण की जाएगी और पृथ्वी से बादलों पर मसीह से मिलन के लिए उठा ली जाएगी और जब परमेश्वर एक बार फिर से इस्राएल के साथ अपनी योजना को आगे बढ़ाना शुरू करेगा।

3. अन्यजातियों का *समय* (लूका 21:24) वास्तव में बाबुल की बन्धुआई के समय (521 ई.पू.) से आरम्भ हुआ, और उस समय तक कायम रहेगा जब तक अन्यजातियों का यरूशलेम पर और आगे नियंत्रण नहीं रह पाएगा।

हमारे उद्धारकर्ता द्वारा यह वचन कहे जाने के समय से लेकर, शताब्दियों से यरूशलेम अन्यजातियों की सत्ता के आधीन रहा है। धर्मत्यागी सम्राट जूलियन (331–363 इस्वी) ने प्रभु की इस भविष्यद्वाणी को टालने का प्रयास कर मसीही विश्वास को झूठा ठहराने का प्रयास किया था। इसलिए उसने यहूदियों को मन्दिर का निर्माण फिर से करने के लिए उत्साहित किया। वे उत्साहित होकर इस कार्य को करने के लिए आगे आए, और इस हद तक इस कार्य के प्रति अति समर्पित हो गए कि वे निर्माण कार्य के लिए चाँदी के बेलचों का उपयोग करने लगे, मिट्टी को बैंजनी परदों में ढोने लगे। परन्तु जब वे कार्य कर ही रहे थे, तभी एक भूकम्प आया और आकाश से आग का एक गोला भूमि पर गिरा और उनके काम को रोक दिया। उन्हें इस निर्माण परियोजना को बन्द करना पड़ा।[59]

न. दूसरा आगमन (21:25–28)

इन पदों में प्रकृति में मचने वाली उथल पुथल **और पृथ्वी पर** आने वाली विभीषिका का वर्णन किया गया है जो मसीह के दूसरे आगमन से पहले आएगी। **सूरज और चान्द और तारों** में गड़बड़ी होने लगेगी जिसे पृथ्वी पर से स्पष्ट देखा जा सकेगा। आकाशमण्डल के ग्रह अपने परिक्रमा- पथ से भटक जाएंगे। इसके कारण पृथ्वी अपनी धुरी से अलग झुक सकती है। विशाल ज्वार-भाटा भूमि को अपने लपेटे में ले लेंगे। मानवजाति हड़बड़ा जाएगी क्योंकि आकाशमण्डल के ग्रह पृथ्वी से टकराने की स्थिति में आ जाएंगे। परन्तु परमेश्वर के लोगों के लिए एक आशा है:

तब वे मनुष्य के पुत्र को बादलों पर बड़ी सामर्थ और महिमा के साथ आते हुए देखेंगे। जब ये बातें घटनी शुरू हो जाएंगी, तब हम अपनी आँखें उठाकर ऊपर की ओर देखें, क्योंकि हमारा छुटकारा निकट आ रहा है।

ओ. अंजीर का पेड़ और सब पेड़ (21:29–33)

21:29–31 उसके वापस आने का एक और अन्य चिन्ह यह होगा कि **अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों** में **कोपलें** आ जाएंगी। **अंजीर का पेड़** इस्राएल जाति का एक उपयुक्त चित्र है; यह अन्तिम दिनों में नया जीवन का प्रमाण देना आरम्भ करेगा। निश्चय ही यह एक अर्थपूर्ण बात है कि अनेक शताब्दियों तक तितर-बितर होकर गुमनामी का जीवन व्यतीत करने के बाद सन् 1948 में इस्राएल राष्ट्र फिर से स्थापित हुआ, और अब यह राष्ट्रों के परिवार के एक सदस्य के रूप में पहचाना जाता है।

दूसरे पेड़ों में कोपलों का निकलना राष्ट्रवाद और संसार के नए नए विकसित देशों में अनेक नई सरकारों के उभर कर आने का प्रतीक हो सकता है। इन चिन्हों का अर्थ होगा कि मसीह का महिमामय राज्य शीघ्र ही स्थापित होने वाला है।

21:32 यीशु ने कहा कि **इस पीढ़ी का** तब तक अन्त न होगा **जब तक ये बातें पूरी न हो लें**। परन्तु ''इस पीढ़ी'' से उसका आशय क्या था?

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि उसने यह बात उस समय

की पीढ़ी के लिए कही जिस समय वह इन वचनों को कह रहा था, और इन सारी बातों की पूर्णता यरूशलेम के सर्वनाश के साथ पूरी हुई। परन्तु यह विचार सही नहीं है क्योंकि मसीह उस समय सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में नहीं लौटा।

कुछ अन्य लोग यह मानते हैं कि ''इस पीढ़ी'' उन लोगों को कहा गया है जो इन चिन्हों के प्रगट होने के आरम्भ को देखेंगे, और जो इन चिन्हों को आरम्भ होते देखेंगे वे मसीह को वापस आते देखने तक जीवित रहेंगे। जितनी भी घटनाओं की यहाँ भविष्यद्वाणी की गई है वे सारी घटनाएं एक पीढ़ी की अवधि में ही घट जाएंगी। यह स्पष्टीकरण सम्भव प्रतीत होता है।

एक अन्य सम्भावना यह है कि ''इस पीढ़ी'' उन यहूदियों को कहा गया है जिनका रवैया मसीह के प्रति द्वेषपूर्ण है। प्रभु यह कह रहा था कि यहूदी जाति जीवित बची रहेगी, यद्यपि तितर-बितर रहेगी तौभी उसे नाश नहीं किया जा सकेगा, और उसके प्रति उनका रवैया शताब्दियों तक नहीं बदलेगा। शायद दूसरा और तीसरा स्पष्टीकरण दोनों ही सही हैं।

21:33 वायुमण्डल और आकाशमण्डल **टल जाएंगे**। **पृथ्वी** के वर्तमान रूप की दशा भी ऐसी ही होगी। परन्तु प्रभु यीशु की ये भविष्यद्वाणियां पूरी हुए बिना नहीं रहेंगी।

प. जागते रहने और प्रार्थना करते रहने के लिए सचेत किया जाना (21:34-38)

21:34, 35 इस दौरान, उसके अनुयायियों को सावधान रहना है कि वे अपने आप को खाने पीने, और जीवन की **चिन्ताओं** में इतना न उलझा लें कि उसका आना **अचानक** हो जाए। यह इसी रीति से उन **सब** लोगों **पर** आएगा जो **पृथ्वी** को अपना स्थायी निवासस्थान मानते हैं।

21:36 सच्चे अनुयायियों को हर समय **जागते** और **प्रार्थना** करते रहना है, और इस प्रकार से अपने आप को उस अधर्मी संसार से अलग किए रहना है जो परमेश्वर के क्रोध के द्वारा नाश होने के लिए ठहराया गया है; साथ ही जागते रहने और प्रार्थना करते रहने के द्वारा अपने आप को उन लोगों के साथ शामिल करना है जो **मनुष्य के पुत्र के सामने** उसके द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए **खड़े** रहने के योग्य हैं।

21:37, 38 प्रभु प्रतिदिन **मन्दिर** परिसर में शिक्षा दिया करता था, परन्तु **रात को** वह जैतून पहाड़ पर सोने जाता था, वह अपने ही बनाए हुए संसार में बेघर था। **भोर को तड़के सब लोग उसकी सुनने के लिए . . . उसके** पास हर दिन नए उत्साह के साथ आया करते थे।

XI. मनुष्य के पुत्र का दुखभोग और उसकी मृत्यु (अध्याय 22, 23 में)

अ. यीशु को मार डालने का षड़्यंत्र (22:1, 2)

22:1 अखमीरी रोटी का पर्ब्ब यहाँ पर उस अवधि को कहा गया है जो **फसह** से आरम्भ होकर सात दिनों तक चलता था और इस दौरान कोई खमीरी रोटी नहीं खाई जाती थी। फसह निसान महीने के पन्द्रहवें दिन में मनाया जाता है, यह यहूदी कैलेण्डर का पहला महीना है। महीने के पन्द्रहवें दिन से इक्कीसवें दिन तक सात दिनों को **अखमीरी रोटी का पर्ब्ब** के रूप में मनाया जाता था। यदि लूका अपने सुसमाचार को प्राथमिक रूप से यहूदियों को लिखा होता, तो उसके द्वारा **अखमीरी रोटी के पर्ब्ब** और **फसह** के बीच की कड़ी का उल्लेख करना आवश्यक नहीं होता।

22:2 महायाजक और शास्त्री निरन्तर यह षड़यंत्र रचने में लगे हुए थे कि वे **क्योंकर** (कैसे) प्रभु यीशु को **मार डालें**, परन्तु वे इस बात को समझते थे कि यह सब उन्हें हंगामा मचाए बिना करना है, क्योंकि **वे लोगों से डरते थे**, और जानते थे कि अनेक लोगों की दृष्टि में यीशु का अब भी बहुत ऊँचा स्थान है।

ब. यहूदा का विश्वासघात (22:3-6)

23:3 शैतान यहूदा में समाया, जो इस्करियोति कहलाता था, और प्रभु यीशु के **बारह** चेलों में से एक था। यूहन्ना 13:27 में बताया गया है कि यह तब हुआ जब यीशु ने फसह के भोज के दौरान रोटी

का टुकड़ा यहूदा के हाथ में दिया। हमारा निष्कर्ष यह है कि या तो यह अलग अलग चरणों में हुआ, या फिर लूका घटना के ठीक ठीक समय पर नहीं, बल्कि घटना की सच्चाई पर जोर दे रहा था।

22:4-6 चाहे जो भी हो, यहूदा ने **महायाजकों और पहरुओं के सरदार** के साथ एक सौदा किया। उसने सावधानीपूर्वक यह योजना बनाई थी जिसके द्वारा वह यीशु को बिना किसी हंगामे के **पकड़वाए**। सब ने इस योजना के लिए सहमति दे दी, और उन्होंने **उसे रूपये देने का वचन दिया** – चाँदी के तीस सिक्के , जैसा कि दूसरे स्थल में बताया गया है। अत: यहूदा अपने विश्वासघाती षड़यंत्र को कार्यरूप देने के लिए वहाँ से निकल पड़ा।

स. फसह के लिए तैयारी (22:7-13)

22:7 इन पदों में जिन अलग अलग समय अवधियों का उल्लेख किया गया है उसमें कुछ सुस्पष्ट समस्याएं दिखाई देती हैं। **अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन** सामान्यत: नीसान महीने के तेरहवें दिन को समझा जाता था जब यहूदी घरों से खमीर वाली सारी रोटियों को हटाया जाता था। परन्तु यहाँ पर कहा गया है कि यह वह दिन था जिस दिन **फसह** का बलिदान चढ़ाया जाना था, और इस आधार पर यह नीसान महिने का चौदहवाँ दिन होगा। लियोन मोरिस, और बाइबल के कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि फसह के लिए दो कैलण्डरों का उपयोग किया जाता था, एक अधिकारिक कैलेण्डर था और एक प्रभु यीशु और उसके चेलों के द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला कैलेण्डर था।[60] हम ऐसा मानते हैं कि अन्तिम गुरूवार की घटनाओं का वर्णन यहाँ से आरम्भ होता है और पद 53 तक पाया जाता है।

22:8-10 प्रभु ने **पतरस और यूहन्ना को** यरूशलेम **भेजा** कि वे **फसह** के भोज की तैयारी करें। उसने उन्हें निर्देश देते समय यह दर्शा दिया कि उसके पास सारी बातों की पूरी पूरी जानकारी रहती है। **नगर** के भीतर **एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए** उन्हें **मिलेगा**। पूर्वी देशों के किसी नगर में इस प्रकार का दृश्य काफी असामान्य होता है। यहाँ पर यह मनुष्य पवित्र आत्मा का अच्छा चित्र प्रस्तुत कर रहा है, जो खोजने वाली आत्माओं को प्रभु के साथ सहभागिता के स्थान की ओर अगुवाई करता है।

22:11-13 प्रभु न सिर्फ यह जानता था कि यह मनुष्य किस स्थान और किस मार्ग में मिलेगा, परन्तु वह यह भी जानता था कि घर का एक स्वामी अपनी **एक सजी सजायी बड़ी अटारी** उसके और उसके चेलों के लिए उपलब्ध करवाने के लिए तैयार हो जाएगा। शायद यह व्यक्ति प्रभु को जानता था और उसने प्रभु से अपने आप को और अपनी सम्पत्ति को उसके लिये समर्पित करने का पहले वचन दिया रहा हो। **पाहुनशाला** और **सजी सजाई अटारी** के बीच में एक अन्तर है। इस उदार मेजबान ने चेलों की अपेक्षा से भी बढ़ कर सुविधाओं का प्रबन्ध किया। जब यीशु का जन्म बैतलेहेम में हुआ था, तब उसके लिए सराय (यूनानी शब्द *काटालूमा)* में कोई जगह नहीं थी। यहाँ पर उसने अपने चेलों से एक **पाहुनशाला** *(काटालूमा)* का प्रबन्ध करने को कहा था, परन्तु उन्हें इससे बेहतर स्थान का प्रबन्ध करके दिया गया – **एक सजी सजाई अटारी**।

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा उसने बताया था, तब चेलों ने **फसह तैयार किया**।

द. अन्तिम फसह (22:14-18)

22:14 सैकड़ों वर्षों से यहूदी लोग फसह का पर्व मना रहे थे और इस अवसर पर वे मिस्र से अपने महान छुटकारे और निष्कलंक मेम्ने के लोहू के द्वारा मृत्यु से छुटकारे को स्मरण किया करते थे। यह बात कितनी सजीवता से उद्धारकर्ता के मन में उभर आई होगी जब **वह** अपने **प्रेरितों** के साथ अन्तिम बार फसह के इस भोज में भाग ले रहा था। वही फसह का सच्चा मेम्ना था जिसका लोहू शीघ्र ही उन सब लोगों के उद्धार के लिए बहाया जाना था जो उस पर भरोसा रखते हैं।

22:15, 16 इस बार का **यह फसह** उसके लिए एक अवर्णनीय अर्थ लेकर आया था और उसने **दु:ख भोगने** से पहले इसे मनाने की **बड़ी लालसा** की थी। वह अब तब तक फसह का पर्व नहीं मनाएगा जब तक वह इस पृथ्वी पर अपना महिमामय **राज्य** स्थापित करने के लिए नहीं लौटेगा। **''मुझे बड़ी लालसा थी''** – इस वाक्य रचना में अत्यंत गम्भीरता और धुन का भाव है। इस

प्रकाशित वचन में सब समय और सब स्थान के सब विश्वासियों के लिए एक आव्हान है कि इस बात की ओर ध्यान करें कि प्रभु यीशु अपनी मेज पर हमारे साथ सहभागिता करने के लिए कितनी लालसा रखता है।

22:17, 18 जब **उसने** फसह के संस्कार के एक भाग के रूप में दाख का **कटोरा** लिया, उसने **धन्यवाद किया** और उसे अपने चेलों को दिया, और उन्हें एक बार फिर स्मरण दिलाया कि वह **दाखरस अब से कभी न** लेगा **जब तक** वह हजार वर्ष का अपना राज्य स्थापित नहीं कर लेगा। फसह के पर्व का विवरण पद 18 में समाप्त हो जाता है।

इ. पहला प्रभु भोज (22:19–23)

22:19, 20 फसह के अन्तिम भोज के तुरन्त बाद प्रभु भोज आया। प्रभु यीशु ने इस पवित्र स्मारक की स्थापना की ताकि उसके अनुयायी इसी प्रकार से शताब्दियों तक उसकी मृत्यु का स्मरण करें। सबसे पहले उसने उन्हें **रोटी** दी, रोटी उसके **देह** का प्रतीक है जो कुछ ही समय बाद उनके **लिए दी** जानी थी। उसी तरह से **कटोरा** उसके बहुमूल्य **लोहू** का प्रतीक है जो कुछ ही समय बाद कलवरी के क्रूस पर बहाया जाना था। उसने इस कटोरे को **उस लोहू में . . . नई वाचा** का **कटोरा** कहा जो उसके अपनों के **लिए बहाया** गया। इसका अर्थ है कि **नई वाचा** का जिसे उसने प्राथमिक रूप से इस्राएली जाति के साथ बान्धा था, उसके **लोहू** के द्वारा फिर से समर्थन किया गया। नई वाचा पूर्ण रूप से पृथ्वी पर हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य के दौरान पूरी होगी, परन्तु हम लोग विश्वासियों के रूप में वर्तमान में ही उसकी आशीषों में प्रवेश कर लेते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि रोटी और दाखरस उसके शरीर और उसके लोहू के सूचक या *प्रतिरूप* हैं। उस समय तक उसका शरीर मारे जाने के लिए दिया नहीं गया था, न ही उसका लोहू बहाया गया था। इसलिए ऐसा कहना बेतुका होगा कि ये सूचक आश्चर्यजनक रीति से वास्तविकता में बदल गए। यहूदी लोगों को लोहू खाना मना था, और इसलिए चेले यह जानते थे कि वह शब्दश: लोहू के बारे में नहीं कह रहा है, परन्तु उस वस्तु की बात कर रहा है जो उसके लोहू का *प्रतीक* है।

22:21 यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यहूदा वास्तव में अन्तिम फसह के समय वहाँ उपस्थित था। किन्तु, यूहन्ना 13 में, यह भी उतना ही स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रभु यीशु द्वारा रोटी को डुबो कर उसे दिए जाने के बाद पकड़वाने वाला उस कक्ष से चला गया। चूंकि यह घटना प्रभु यीशु द्वारा प्रभु भोज की स्थापना किए जाने से पहले की है, इसलिये अनेक लोगों का मानना है कि जब रोटी और दाखरस बांटे गए उस समय यहूदा वास्तव में वहाँ उपस्थित नहीं था।

22:22 प्रभु यीशु मसीह का दु:ख भोग और उसकी मृत्यु पहले से **ठहराये** गये थे, परन्तु यहूदा ने अपनी मर्जी से जानबूझ कर प्रभु यीशु को पकड़वाया था। इसलिए यीशु ने कहा, **"हाय उस मनुष्य पर, जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है।"** यद्यपि यहूदा बारह चेलों में से एक था, तौभी वह एक सच्चा विश्वासी नहीं था।

22:23 पद 23 में हमें कुछ आश्चर्य और आत्मविश्वासहीनता की बातें दिखाई देती हैं। वे यह नहीं जानते थे कि उन **में से कौन** इस कायराना **काम** का दोषी होगा।

फ. सेवा सच्ची महानता है (22:24–30)

22:24–25 मानवीय हृदय का यह एक भयानक अभ्यारोपण है कि प्रभुभोज के तुरन्त बाद, चेले आपस **में** इस बात पर वाद विवाद करने लगे कि उनमें से सबसे **बड़ा** कौन है। प्रभु यीशु ने उन्हें ध्यान दिलाया कि उसके विधान में, महानता का अर्थ मनुष्य की धारणा के बिल्कुल विपरीत है। **अन्यजातियों** के **राजा** सामान्यत: महान व्यक्ति समझे जाते हैं; बल्कि वे **उपकारक कहलाते** हैं। परन्तु यह सिर्फ एक पदवी है; वास्तव में वे क्रूर तानाशाह हैं। उनका नाम अच्छाई से जुड़ा हुआ है परन्तु उनके व्यक्तिगत चरित्र में उनके नाम से मेल खाता कोई गुण नहीं है।

22:26 उद्धारकर्ता के अनुयायी **ऐसे** नहीं होते। जो लोग महान हैं, उन्हें **छोटे** लोगों का स्थान लेना चाहिए। और जो प्रधान है, वह झुक कर दूसरों की दीनतापूर्वक सेवा करे। इस क्रान्तिकारी कथन ने इस स्वीकृत परम्परा को पूरी तरह से उलट दिया कि छोटा बड़े से कमतर होता है, और प्रधान दूसरों पर अधिकार जता कर महानता प्रगट करता है।

22:27 मनुष्य समझता है कि किसी भोज में परोसने का काम करने से अधिक महान उस भोज का अतिथि बनना है। परन्तु प्रभु यीशु मनुष्यों का सेवक बन कर आया, और जो कोई उसके पीछे चलना चाहे वह इस बात में उसका अनुसरण करे।

22:28–30 यह प्रभु की मनोहरता थी कि उसने इस बात के लिए अपने चेलों की सराहना की कि वे उसकी **परीक्षाओं में लगातार** उसके **साथ** रहे। अभी अभी ये चेले आपस में झगड़ रहे थे। शीघ्र ही वे सब उसे छोड़ कर भाग जाएंगे। और तौभी वह उनके हृदयों को जानता है, उन्होंने उससे प्रेम रखा और उसके नाम के कारण उन्होंने निन्दा भी सही। उनका प्रतिफल यह होगा कि वे **सिहांसनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय** करेंगे जब मसीह वापस आकर दाऊद के सिहांसन पर बैठेगा और पृथ्वी पर राज्य करेगा। जिस निश्चयता के साथ पिता ने मसीह को राज्य देने की प्रतिज्ञा दी है, उसी निश्चियता के साथ चेले भी मसीह के साथ नवीनीकृत इस्राएल में राज्य करेंगे।

ग. पतरस द्वारा इंकार की प्रभु यीशु की भविष्यद्वाणी (22:31–34)

अब इसके बाद मानवीय कृतघ्नता के इतिहास के तीन सबसे अन्धकारमय अध्यायों के क्रम का सबसे अन्तिम अध्याय आता है। सबसे पहला था, यहूदा का विश्वासघात। दूसरा था, चेलों की स्वार्थी अभिलाषा। इसके बाद अब हम पतरस की कायरता के बारे में देखते हैं।

22:31–32 **शमौन, शमौन** कह कर पुकारते हुए पतरस के नाम को दो बार दोहराना अपने ढुलमुल चेले के प्रति मसीह के हृदय प्रेम और स्नेह को दर्शाता है। **शैतान** ने सारे चेलों को **मांग लिया** था कि वह उन्हें **गेहूं की नाई फटके**। प्रभु यीशु ने पतरस को उन सब का प्रतिनिधि मान कर उसे सम्बोधित किया। **परन्तु** प्रभु ने शमौन के **लिए विनती** की **कि** उसका **विश्वास** निस्तेज न हो जाए। (**''मैने तेरे लिए विनती की''** बहुत ही अर्थपूर्ण वचन हैं)। प्रभु की ओर वापस फिरने के बाद उसे अपने **भाइयों को स्थिर** करना था। यह फिरना उद्धार के सन्दर्भ में नहीं है, परन्तु एक विश्वासी के पाप में गिर कर फिर से प्रभु की संगति में आ जाने के सन्दर्भ में कहा गया है।

22:33, 34 अशोभनीय अति– आत्मविश्वास के साथ, पतरस ने प्रभु यीशु के साथ **बन्दीगृह** और यहाँ तक कि **मरने** तक साथ रहने के लिए अपनी उत्सुकता जता दी। परन्तु उसे यह बताया जाना आवश्यक था कि सुबह का उजाला होने से पहले वह **तीन बार** इस बात का **इंकार** कर देगा कि वह प्रभु को जानता तक नहीं!

मरकुस 14:30 के अनुसार, प्रभु ने कहा था कि मुर्ग के दो बार बांग देने से पहले पतरस तीन बार प्रभु यीशु का इंकार करेगा। मत्ती 26:34; लूका 22:34; और यूहन्ना 13:38 में, प्रभु ने कहा कि मुर्ग के बांग देने से पहले पतरस तीन बार उसका इंकार करेगा। इन विरोधाभासी कथनों का स्पष्टीकरण देना अवश्य ही कुछ कठिन है। यह सम्भव है कि मुर्ग ने एक से अधिक बार बांग दी होगी, एक बार रात में और दूसरी बार भोर के समय। साथ ही इस बात की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है कि सुसमाचारों में पतरस के द्वारा कम से कम छः बार इंकार किए जाने की घटनाओं का उल्लेख किया गया है। उसने प्रभु यीशु का इंकार निम्नलिखित लोगों के सामने किया:

1. एक युवती के सामने (मत्ती 26:69, 70; मरकुस 14:66–68)।
2. एक अन्य युवती के सामने (मत्ती 26:71, 72)।
3. पास खड़ी भीड़ के सामने (मत्ती 26:73, 74; मरकुस 14:70, 71)।
4. एक व्यक्ति के सामने (लूका 22:58)।
5. एक अन्य व्यक्ति के सामने (लूका 22:59, 60)।
6. महायाजक के दास के सामने (यूहन्ना 18:26, 27)। यह व्यक्ति शायद दूसरों से अलग है क्योंकि उसने कहा, ''क्या मैंने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?'' (पद 26)।

ह. कूच करने के लिए नए आदेश (22:35–38)

22:35 अपनी सेवकाई के आरम्भिक समय में, प्रभु ने अपने चेलों को **बटुए और झोली और जूते बिना भेजा था** – कम से कम में काम चलाना। सिर्फ अनिवार्य वस्तुएं ही उनके लिए पर्याप्त थीं। और यह बात सिद्ध भी हो गई। उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्हें किसी भी बात की घटी **नहीं** हुई।

22:36 परन्तु अब वह उन्हें छोड़ कर जाने वाला था, और वे अब उसके लिए सेवकाई के एक नए चरण में प्रवेश करने वाले थे। उनका सामना अब गरीबी, भूखमरी, और खतरों से होगा, और यह आवश्यक होगा कि वे अपने वर्तमान की आवश्यकताओं के लिए प्रबन्ध करें। अब उन्हें एक **बटुआ**, एक **झोली** या भोजन रखने का डब्बा रखना है, और यदि उनके पास तलवार न हो, तो उन्हें अपने **कपड़े बेचकर एक** तलवार **मोल** लेना है। उद्धारकर्ता द्वारा चेलों को **तलवार** खरीदने के लिए कहे जाने का क्या अर्थ हो सकता है? यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसने दूसरों लोगों को हानि पहुँचाने के लिए तलवार का उपयोग करने को नहीं कहा। ऐसा कहना निम्नलिखित स्थलों में उसके द्वारा दी गई शिक्षाओं का उल्लंघन होता:

''मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते'' (यूहन्ना 18:36)।

''जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे'' (मत्ती 26:52)।

''अपने बैरियों से प्रेम रखो . . .'' (मत्ती 5:44)।

''जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा गाल भी फेर दे'' (मत्ती 5:39; साथ ही 2 कुरि. 10:4 भी देखें)।

तब फिर तलवार से प्रभु यीशु का आशय क्या था?

1. कुछ लोगों का मानना है कि प्रभु यीशु आत्मा की तलवार के विषय में कह रहा है जो कि परमेश्वर का वचन है (इफि. 6:17)। यह सम्भव है, परन्तु इस स्थिति में बटुआ, झोली, और कपड़े के लिये भी आत्मिक अर्थ निकालने पड़ेंगे।

2. जॉर्ज विलियम्स इस विषय पर कहते हैं कि तलवार का अर्थ किसी सरकारी तंत्र द्वारा दी गई सुरक्षा है, वे रोमियों 13:4 की ओर ध्यान दिलाते हैं, जहाँ इसे दण्डाधिकारी के अधिकार के रूप में बताया गया है।

3. जे. पी. लेंग कहते हैं कि तलवार मानवीय शत्रुओं के विरुद्ध बचाव करने के लिए होता है, हानि पहुँचाने के लिए नहीं। परन्तु मत्ती 5:39 में बचाव के उद्देश्य से भी तलवार का उपयोग करने के लिये मना किया गया है।

4. कुछ लोगों का मानना है कि तलवार जंगली जानवरों से बचाव के लिए रखने को कहा गया था। यह सम्भव है।

22:37 पद 37 में स्पष्ट किया गया है कि चेलों को अपने साथ पैसे का बटुआ, झोली, और अब तलवार रखने के लिए क्यों कहा गया है। अब तक प्रभु उनके साथ रहा था, और वह समय के अनुसार उनकी आवश्यकता पूरी करता रहा था। शीघ्र ही वह यशायाह 53:12 की भविष्यद्वाणी के अनुसार उनसे विदा लेने वाला था। उससे सम्बन्धित बातों को **पूरा होना** अवश्य था, अर्थात्, **अपराधियों के साथ** गिने जाने के द्वारा पृथ्वी पर के उसके जीवन और सेवा का समापन होने वाला था।

22:38 चेले प्रभु की बात का सही अर्थ बिल्कुल नहीं समझ पाए। वे **दो तलवारें** लेकर आए, वे समझते थे कि आने वाली समस्याओं से निपटने के लिए ये तलवारें काफी हैं। ''**बहुत है**'' का बेहतर अनुवाद होगा, ''बहुत हो चुका'' या इस विषय पर बहुत बात हो चुकी (*एन.के.जे.वी.* अंग्रेजी बाइबल में, *इट इज़ इनफ़* लिखा है), ऐसा कहने के द्वारा प्रभु ने इस चर्चा पर पूर्ण विराम लगा दिया। चेले सोच रहे थे कि वे प्रभु यीशु के शत्रुओं द्वारा प्रभु यीशु को मार डालने के प्रयास को तलवारों का उपयोग करने के द्वारा विफल कर देंगे। ऐसा विचार प्रभु के मन में दूर दूर तक नहीं था!

ई. गतसमनी में व्याकुलता (22:39-46)

22:39 गतसमनी का बाग **जैतून के पहाड़** के पश्चिमी ढलान पर स्थित था। प्रभु यीशु बहुधा वहाँ प्रार्थना करने जाया करता था, **चेले**, जिनमें पकड़वाने वाला भी शामिल था, ये बात जानते थे।

22:40 प्रभु भोज के समापन पर, प्रभु यीशु और चेले उपरौठी कोठरी से निकल कर गतसमनी के बाग की ओर चले गए। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उसने उन्हें यह **प्रार्थना** करने के लिए सचेत किया कि वे **परीक्षा में न** पड़ें। शायद वह जिस **परीक्षा** की बात कर रहा था वह यह थी कि वे शत्रुओं के पास आने पर परमेश्वर और उसके मसीह को छोड़ देने के दबाव में न आ जाएं।

22:41, 42 तब प्रभु यीशु चेलों को वहीं छोड़ कर बाग में प्रार्थना करने के लिए चला गया जहाँ उसने अकेले ही **प्रार्थना** की। उसकी प्रार्थना यह थी कि यदि **पिता** चाहे; तो **इस कटोरे** को उसके पास से दूर कर सकता है; **तौभी** वह चाहता था कि उसके स्वयं की **नहीं**, परन्तु परमेश्वर की इच्छा पूरी हो। हम इस प्रार्थना का यह अर्थ समझते हैं: यदि मेरे क्रूस पर चढ़ने के छोड़ और कोई

दूसरा मार्ग है जिसके द्वारा पापियों का उद्धार हो सके, तो इस समय उस मार्ग को प्रगट कर। स्वर्ग की ओर से कोई आवाज नहीं आई, क्योंकि और कोई मार्ग नहीं *था*।

हम यह विश्वास नहीं करते कि बाग में प्रभु यीशु का दुखभोग उसके प्रायश्चितकारी कार्य का एक हिस्सा था। छुटकारे का कार्य क्रूस पर अन्धकार के उन तीन घण्टों के दौरान पूरा किया गया। परन्तु गतसमनी, (प्रभु यीशु के लिये) कलवरी का पूर्वानुभव था। हमारे पापों के साथ सम्पर्क में आने के विचार ने उस स्थान पर प्रभु को तीव्र दु:ख दिया।

22:43, 44 उसकी सिद्ध मानवता उस व्याकुलता में दिखाई देती है जो उसकी पीड़ा के साथ साथ उसे हो रही थी। **तब स्वर्ग से एक दूत उस को दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था।** सिर्फ लूका में ही इस बात का उल्लेख आया है, साथ ही यहाँ यह भी बताया गया है कि **उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बूंदों की नाई भूमि पर गिर रहा था।** इस विवरण की ओर सचेत वैद्य लूका का विशेष ध्यान गया।

22:45, 46 **तब** प्रभु यीशु **अपने चेलों** के पास वापस पहुँचा, और उन्हें **सोता** पाया, ऐसा नहीं है कि वे प्रभु के दु:ख को अनदेखा कर सो रहे थे, बल्कि वे दु:ख के कारण निढाल हो गए थे। एक बार फिर से उसने उनसे आग्रह किया, ''**उठो, प्रार्थना करो,**'' क्योंकि संकट की घड़ी निकट आ रही है, और उनके सामने यह परीक्षा आएगी कि वे अधिकारियों के सामने प्रभु का इंकार करें।

ज.प्रभु यीशु के साथ विश्वासघात और उसका पकड़वा जाना (22:47–53)

22:47, 48 अब तक, **यहूदा** महायाजकों, पुरनियों, और मन्दिर के सरदारों का एक दल लेकर प्रभु को पकड़वाने के लिए आ पहुँचा था। पूर्वयोजना के अनुसार यह विश्वासघाती यहूदा, प्रभु यीशु की पहचान चूम कर करवाने वाला था। जेम्स एस. स्टीवर्ट ने इस विषय पर निम्नलिखित टिप्पणी की है:

> यह सर्वोच्च आतंक का एक स्पर्श था, यह दुष्टता की चरमसीमा थी, मानवीय दुष्टता इसके पार नहीं जा सकती: यहूदा ने बाग में अपने प्रभु के साथ विश्वासघात किया, किसी शोर या प्रहार या छुरा घोंपने के द्वारा नहीं, परन्तु एक चुम्बन के द्वारा।[61]

प्रभु **यीशु** ने अपार करूणा के साथ पूछा, ''**हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?**''

22:49–51 चेले समझ गए कि **क्या होने वाला है**, और वे प्रहार करने के लिए तैयार हो गए। बल्कि, **उनमें से एक** ने, जो पतरस था, एक **तलवार** लेकर **महायाजक के दास** का **दाहिना कान** काट डाला। प्रभु यीशु ने उसे डांटा कि वह आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए सांसारिक हथियारों का सहारा ले रहा है। उसका समय आ चुका था, और परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्धारित उद्देश्य का पूरा होना अवश्य था। अनुग्रहकारी प्रभु यीशु ने पीड़ित व्यक्ति का **कान छूकर** उसे **अच्छा कर दिया।**

22:52, 53 यहूदी अगुवों और अधिकारियों की ओर देख कर, प्रभु **यीशु** ने उनसे पूछा कि वे उसे इस तरह से पकड़ने क्यों **निकले** हैं मानों वह कोई भगोड़ा **डाकू** हो। क्या वह **मन्दिर** परिसर **में हर दिन** शिक्षा नहीं दिया करता था, तब उस समय उन्होंने उसे पकड़ने का प्रयास क्यों नहीं किया? परन्तु वह उत्तर को जानता था, **यह** उनकी **घड़ी** थी, **और अंधकार का अधिकार** था। यह बृहस्पतिवार के लगभग आधी रात का समय था।

ऐसा लगता है कि हमारे प्रभु पर तीन चरणों में धार्मिक मुकद्दमा चलाया गया। पहले वह हन्ना के समक्ष उपस्थित हुआ। उसके बाद वह कैफा के समक्ष उपस्थित हुआ। अन्त में उस पर दोषारोपण करने के लिए उसे यहूदी महासभा *(सेन्हेड्रिन)* के सामने पेश किया गया। इस बिन्दु से लेकर पद 65 तक की घटनाएं शायद शुक्रवार के सुबह 1 बजे से लेकर सुबह 5 बजे तक घटी थी।

क.पतरस यीशु का इंकार करता और फूट फूट कर रोता है (22:54–62)

22:54–57 जब प्रभु को **महायाजक के घर में** लाया गया, तब **पतरस दूर ही दूर उसके पीछे चलता था।** भीतर जा कर वह उन लोगों के पास चला गया जो **आंगन** के बीच में **आग** ताप रहे थे। **एक लौण्डी** (दासी) ने पतरस **की ओर** देख कर कहा कि वह यीशु के चेलों में से एक **था**। यह दयनीय है कि पतरस ने इस बात से **इंकार किया** कि वह **उसे** जानता है।

22:58–62 कुछ ही देर बार, किसी दूसरे ने पतरस

की ओर उंगली उठाते हुए उसे नासरत के यीशु का चेला बताया। एक बार फिर से **पतरस** ने इस आरोप से **इंकार** कर दिया। **कोई घण्टे भर के बाद** , किसी अन्य ने पतरस को एक **गलीली** के रूप में पहचान लिया। **पतरस** ने साफ साफ मना कर दिया कि वह जानता ही नहीं कि वह मनुष्य क्या बात कर रहा था। परन्तु इस बार उसके इंकार के बाद **मुर्ग** ने बांग दी। उस अंधेरे क्षण में, **प्रभु ने घूम कर पतरस की ओर देखा**, और **पतरस को** वह भविष्यद्वाणी **याद आई** कि **मुर्ग के बांग देने से पहले**, वह **तीन बार** प्रभु यीशु का **इंकार** करेगा। परमेश्वर के पुत्र की इस दृष्टि ने **पतरस** को रात के अन्धकार में **फूट फूट कर** विलाप करने के लिए बाध्य कर दिया।

ल. सिपाहियों ने परमेश्वर के पुत्र का उपहास किया (22:63–65)

यरूशलेम के पवित्र मन्दिर के अधिकारियों ने ही प्रभु यीशु को गिरफ्तार किया था। अब ये अधिकारी जो परमेश्वर के पवित्र भवन के संरक्षक होने के लिए ठहराए गए थे, प्रभु यीशु का उपहास कर उसे **पीटने लगे**। उसकी आँखों पर पट्टी बान्ध कर, उन्होंने उसके मुँह पर मारा, और **उससे पूछा** कि वह पहचाने कि उसे किसने मारा। वे इतने में ही रूक नहीं गए, परन्तु वह धीरज के साथ अपने ही विरुद्ध पापियों के इस अन्तर्विरोध को सहता रहा।

म. यहूदी महासभा *(सेन्हेड्रिन)* के सामने सुबह के समय मुकद्दमा (22:66–71)

22:66–69 सुबह के समय (5:00 – 6:00 बजे सुबह), **पुरनिये** प्रभु यीशु को अपनी **महासभा**, या *सेन्हेड्रिन* में ले कर आए। महासभा के सदस्यों ने प्रभु यीशु से सीधे सीधे पूछा कि क्या वह मसीह है। प्रभु यीशु ने यह जता दिया कि उनके साथ इस विषय पर चर्चा करने का कोई औचित्य नहीं है। वे सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु उसने उन्हें चेतावनी दी कि आज जो उनके सामने इस अपमानित दशा में खड़ा है वह एक दिन **परमेश्वर की दहिनी ओर** बैठेगा (भजन 110:1 देखें)।

22:70, 71 **उस पर सब ने** उससे साफ साफ पूछा कि क्या वह **परमेश्वर का पुत्र** है। उनके पूछने का क्या अर्थ था इस पर कोई प्रश्न नहीं होना चाहिए। उनके लिए **परमेश्वर का पुत्र** वह है जो परमेश्वर के बराबर है। प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, "**तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूं**" (मर. 14:62 देखें)। उनके लिए इतना सुनना ही काफी था। उन्होंने मान लिया कि उन्होंने उसे अपने आप को परमेश्वर के बराबर बता कर परमेश्वर की निन्दा करते हुए सुन लिया है। अब इसके बाद उन्हें और किसी **गवाही** की आवश्यकता नहीं है। परन्तु यहाँ पर एक समस्या थी। उनकी व्यवस्था के अनुसार, परमेश्वर की निन्दा करने की सजा मृत्यु दण्ड थी। परन्तु यहूदी लोग रोमी शासन के आधीन थे और इसलिए उन्हें बन्दियों को मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था। इसलिए उन्हें प्रभु यीशु को पीलातुस के पास ले जाना पड़ा, और निश्चय ही पीलातुस परमेश्वर की निन्दा जैसे किसी *धार्मिक* आरोप में बिल्कुल भी रूचि नहीं लेने वाला था।

न. पीलातुस के सामने यीशु (23:1–7)

23:1, 2 यहूदी महासभा के समक्ष यीशु की हाजिरी के बाद **सारी सभा** यीशु को लेकर रोमी हाकिम **पीलातुस** के सामने दीवानी मुकद्दमा चलाने के लिए ले गई। धार्मिक अगुवों के द्वारा अब उस पर तीन राजनैतिक आरोप लगाए। सबसे पहले, उन्होंने उस पर दोष लगाया कि वह **लोगों को** बहकाता है, और लोगों की निष्ठा को रोमी शासन की ओर से हटाने का काम कर रहा है। दूसरा, उन्होंने कहा कि वह **कैसर को कर देने से** यहूदियों को मना कर रहा है। अन्तिम, उन्होंने उस पर दोष लगाया कि वह अपने आप को एक **राजा** बताता है।

23:3–7 जब **पीलातुस** ने प्रभु यीशु से पूछा कि क्या वह **यहूदियों का राजा** है, तो **उसने . . . उत्तर दिया** कि वह है। **पीलातुस** ने प्रभु के इस दावे को रोमी सम्राट के विरुद्ध किसी खतरे के रूप में नहीं लिया। प्रभु यीशु के साथ एक निजी साक्षात्कार के बाद (यूह. 18:33–38अ), वह **महायाजकों और** भीड़ की ओर देख कर कहने लगा कि वह उसमें **कुछ दोष नहीं** पा सका। भीड़ और भी हठ करने लगी, और प्रभु यीशु पर तिरस्कृत

गलील से लेकर यरूशलेम तक देशद्रोह भड़काने का आरोप लगाने लगी। **गलील** शब्द **सुनकर पीलातुस** ने सोचा कि अब उसे अपने बचने का रास्ता मिल गया। गलील **हेरोदेस की रियासत** में था, और इसलिए पीलातुस ने प्रभु यीशु को **हेरोदेस** को सौंप कर इस मामले में आगे किसी भी प्रकार से शामिल होने से बचने का प्रयास किया। तब ऐसा हुआ कि **उन दिनों** हेरोदेस **यरूशलेम में** आया हुआ था।

हेरोदेस अन्तिपास उस हेरोदेस महान का पुत्र था, जिसने बैतलहम में नवजात शिशुओं का संहार करवा दिया था। इसी हेरोदेस अन्तिपास ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला की हत्या कर दी थी क्योंकि यूहन्ना ने उसके भाई की पत्नी के साथ उसके अवैध सम्बन्धों की निन्दा की थी। यही वह हेरोदेस था जिसे प्रभु यीशु ने लूका 13:32 में ‘‘लोमड़ी’’ कहा था।

ओ. हेरोदेस का तिरिस्कारपूर्ण प्रश्न (23:8–12)

23:8 हेरोदेस प्रभु यीशु को अपने समक्ष उपस्थित देख कर काफी **प्रसन्न** हुआ। उसने **बहुत दिनों से उसके विषय में सुना था**, और उससे **कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था।**

23:9–11 हेरोदेस प्रभु यीशु से ढेर सारे प्रश्न **पूछता** रहा, परन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिला। यहूदी लोग और भी उत्तेजित होकर आरोप लगाने लगे, परन्तु प्रभु यीशु ने अपना मुँह न खोला। **हेरोदेस** के पास करने के लिए अब सिर्फ इतना ही रह गया था कि वह यीशु को अपने सिपाहियों के हाथों छोड़ दे ताकि वे उसके साथ मारपीट करें, और **भड़कीला वस्त्र** पहना कर **उसका** उपहास करें, और वह **उसे पीलातुस के पास लौटा** दे।

23:12 इससे पहले . . . हेरोदेस और **पीलातुस . . . एक दूसरे के बैरी थे,** परन्तु अब यह बैर मित्रता में बदल गया। वे दोनों ही प्रभु यीशु के *विरोध* में अब एक पक्ष के हो गए थे, और इससे वे एक हो गए। थियोफिलेक्ट इस सम्बन्ध में विलाप करते हुए कहते हैं: ‘‘यह मसीहियों के लिए शर्म की बात है कि जबकि शैतान हानि पहुँचाने वाले कार्य करने के लिए दुष्ट व्यक्तियों को अपनी शत्रुता भुला कर एक हो जाने के लिए तैयार कर लेता है, परन्तु मसीही लोग अच्छे कार्य करने के लिए भी अपनी मित्रता कायम नहीं रख पाते।’’

प. पीलातुस का फैसला: निर्दोष परन्तु दोषी

23:13–17 इसलिए कि **पीलातुस** अपने शाही बन्दी के साथ न्याय कर उसे दोषमुक्त करने में असफल रहा था, वह अब अपने आप को फँसा हुआ पाता है। उसने हड़बड़ी में यहूदी अगुवों की एक सभा बुलाई और उन्हें समझाया कि न ही वह और **न हेरोदेस** यीशु में देशद्रोह का कोई दोष पा सके: ‘‘**उस ने ऐसा कुछ नहीं किया कि वह मृत्यु दण्ड के योग्य ठहराया जाए।**’’ इसलिए उसने प्रस्ताव रखा कि यीशु को कोड़े लगवाकर छोड़ दिया जाए। जैसा कि स्टीवर्ट ध्यान दिलाते हैं कि:

> यह दुखद समझौता, नि:सन्देह, पूरी तरह से अन्यायपूर्ण और बेतुका था। यह एक तुच्छ, और डरे हुए व्यक्ति का प्रयास था कि वह प्रभु यीशु के प्रति अपना कर्तव्य निभाए और साथ ही साथ भीड़ को भी प्रसन्न रखे। परन्तु वह दोनों में से कुछ न कर सका, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि क्रोधित महायाजक इस फैसले को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करते।[62]

23:18–23 महायाजक और लोगों के सरदार रोष से भर गए। वे प्रभु यीशु की मृत्यु और एक बदनाम अपराधी **बरअब्बा** की, जो इस समय **बलवे** और **हत्या** के दोष में बन्दीगृह में बन्द किया गया था, रिहाई की मांग करने लगे। एक बार फिर से पीलातुस ने प्रभु यीशु को दोषमुक्त करने का एक कमजोर प्रयास किया, परन्तु भीड़ की दुष्टातापूर्ण मांग के सामने वह दब गया। उसकी किसी भी बात को सुनने के लिये वे बिल्कुल भी तैयार नहीं थे, और वे परमेश्वर के पुत्र को मार डाले जाने की अपनी **मांगों** पर हठपूर्वक अड़े रहे।

23:24, 25 और यद्यपि **पीलातुस** ने प्रभु यीशु को पहले ही निर्दोष घोषित कर दिया था, परन्तु अब वह लोगों को खुश करने के लिए प्रभु यीशु को मृत्युदण्ड के योग्य ठहराता है। साथ ही साथ उसने भीड़ **के लिए** बरअब्बा को **छोड़ दिया।**

क्यू. मनुष्य का पुत्र कलवरी को ले जाया गया (23:26–32)

23:26 यह शुक्रवार की सुबह लगभग 9:00 बजे की बात है। क्रूसीकरण के स्थल की ओर जाने वाले रास्ते में, सिपाहियों ने **शमौन नामक एक कुरेनी** व्यक्ति को **क्रूस** उठाने का आदेश दिया। इस व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी ज्ञात नहीं है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चलकर उसके दो बेटे प्रसिद्ध मसीही बने (मर. 15:21)।

23:27–30 जब प्रभु यीशु को कलवरी की ओर ले जाया जा रहा था, तब संवेदनशील अनुयायियों की एक भीड़ प्रभु यीशु के लिए विलाप करती जा रही थी। भीड़ की स्त्रियों को **यरूशलेम की पुत्रियों** के रूप में सम्बोधित करते हुए, उसने उन से कहा कि वे उस पर नहीं परन्तु अपने आप पर तरस खाएं। वह उस भयानक नाश के विषय में कह रहा था जो सन् 70 में यरूशलेम पर आने वाला था। उन दिनों का क्लेश और दु:ख इतना भयानक होगा कि **बांझ** स्त्रियां, जो नामधराई की पात्र होती हैं, उस समय विशेष रूप से भाग्यशाली समझी जाएंगी। तीतुस द्वारा यरूशलेम को घेरे जाने का आतंक इतना भयानक होगा कि लोग ऐसी कामना करेंगे कि पहाड़ उन पर गिर जाएं और टीले उन्हें ढांप लें।

उसके बाद प्रभु यीशु ने आगे कहा, ‘‘**क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?**’’
वह स्वयं हरा पेड़ था, और अविश्वासी इस्राएली **सूखे** पेड़ थे। यदि रोमी शासन ने परमेश्वर के निष्पाप और निर्दोष पुत्र पर ऐसी लज्जा और कष्ट थोप दिया, तो फिर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के दोषी हत्यारों को कितना भारी दण्ड दिया जाएगा?

23:32 प्रभु यीशु के साथ उस जूलुस में **दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे,** क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जाया गया।

र. क्रूस पर चढ़ाया जाना (23:33–38)

23:33 जिस स्थान पर अपराधियों को क्रूस पर चढ़ाया जाता था वह **खोपड़ी**[63] (‘‘खोपड़ी’’ को लैटिन भाषा में कलवरी कहते हैं) कहलाता था। शायद उस भूमि की बनावट एक खोपड़ी से मिलती जुलती थी, या फिर उसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह मृत्यु का स्थान था, और खोपड़ी को अक्सर मृत्यु के एक प्रतीक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना का वर्णन करने में पवित्रशास्त्र में बहुत ही संयम बरता गया है। भयानक विवरणों पर जोर देने के लिए अधिक समय नहीं दिया गया है। इस विषय पर एक साधारण सा वाक्य ही दिया गया है: ‘‘**उन्होंने वहां उसे क्रूस पर चढ़ाया।**’’ एक बार फिर से जेम्स ए. स्टीवर्ट इस पर बिल्कुल सटीक टिप्पणी करते हैं:

> मसीह को मरना चाहिए इस बात को स्वीकार करना बहुत ही कठिन था, परन्तु उसे इस तरह से मरना चाहिए, यह बात आम धारणा से बिल्कुल परे थी। तौभी ऐसा ही हुआ। हर वस्तु जिनका मसीह ने स्पर्श किया – जिसमें क्रूस भी शामिल है – उन्हें उसने सुसज्जित कर के, उनका रूप बदल के, और उन्हें महिमा दे कर वैभव और सुन्दरता में बदल दिया; परन्तु हम यह न भूलें कि उसने क्रूस पर चढ़ कर किन भयानक गहराइयों को ऊँचाइयों पर पहुँच दिया।[64]
>
> हे प्रभु मुझे इस बात का अर्थ सिखा,
> जिसे क्रूस ने इतनी ऊंचाँइयों तक पहुँचा दिया,
> उस एक दुखी पुरुष के साथ,
> जिसे घायल कर मार डाला गया।
>
> – *लूसी ए बेनेट*

उस दिन खोपड़ी में तीन क्रूस थे, बीच में प्रभु यीशु का क्रूस था, और दोनों तरफ़ एक एक कुकर्मियों के क्रूस। इसके द्वारा यशायाह 53:12 पूरा हुआ – ‘‘वह अपराधियों के संग गिना गया।’’

23:34 प्रभु **यीशु** क्रूस पर से अपार प्रेम और दया के साथ पुकार उठा, ‘‘**हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।**’’ इस बात को कौन जानता है कि इस प्रार्थना के द्वारा ईश्वरीय कोप का कितना भयानक महाप्रपात रोक दिया गया! जी. केम्पबेल मोर्गन उद्धारकर्ता के प्रेम पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं:

> प्रभु यीशु के मन में उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहे लोगों के प्रति किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं था; कोई क्रोध नहीं, उन्हें दण्ड दिलाने की कोई घातक लालसा नहीं। लोग मुठ्ठी तान कर डराने वाले की सराहना करते हैं। जब मैं यीशु की इस प्रार्थना को सुनता हूं, तो मैं यह जान जाता हूं कि मुठ्ठी तान कर डराने वालों के लिए एकमात्र स्थान नरक है।[65]

उसके बाद सिपाहियों ने आपस में **उसके कपड़े** बांट लिए, और बिना सिवन के पहिनावे के लिए **चिट्ठियां** डालीं।

23:35-38 सरदार (शासक) क्रूस के सामने खड़े होकर, उसका उपहास कर रहे थे, और उसे चुनौती दे रहे थे **यदि** वह सचमुच में **परमेश्वर . . . का . . . चुना हुआ . . .मसीह** है तो **अपने आप को बचा ले। सिपाही भी** उसे **सिरका देकर उसका ठट्ठा करते** हुए अपने आप को बचा पाने की उसकी क्षमता को चुनौती देते थे। साथ ही उन्होंने क्रूस के ऊपर यह लिख दिया था: यह **यहूदियों का राजा है।**

एक बार फिर से स्टीवर्ट टिप्पणी करते हुए कहते हैं:

हमें इस तथ्य के महत्व को समझने से नहीं चूकना है कि यह उपरिलेख तीन भाषाओं में लिखा गया था, यूनानी, लैटिन, और इब्रानी। इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए लिखा गया था कि समस्त भीड़ का प्रत्येक व्यक्ति इसे पढ़ सके; परन्तु मसीह की कलीसिया ने इसे हमेशा और सही अर्थ में अपने प्रभु के विश्वव्यापी प्रभुत्व के एक प्रतीक के रूप में देखा है। इसलिए कि ये विश्व की तीन महान भाषाएं थीं, प्रत्येक एक प्रबल धारणा के आधीन थी। यूनानी भाषा संस्कृति और ज्ञान की भाषा थी; इस उपरिलेख के अनुसार इस क्षेत्र में प्रभु यीशु ही राजा है! लैटिन भाषा कानून और सरकार की भाषा थी; यहाँ भी प्रभु यीशु ही राजा है! इब्रानी भाषा प्रकाशित किए गए धर्म की भाषा थी; इस क्षेत्र में भी प्रभु यीशु ही राजा है! इसलिए यद्यपि वह मरने के लिए टंगा हुआ था, यह सत्य था कि ''उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं'' (प्रका. 19:12)।[66]

स. दो कुकर्मी (23:39-43)

23:39-41 दूसरे सुसमाचारों में दिए गए वर्णनों के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि शुरू में दोनों ही कुकर्मी प्रभु यीशु का ठट्ठा कर रहे थे। यदि वह **मसीह** था, तो वह उन सब को क्यों नहीं बचा लेता? परन्तु उन में से एक का हृदय परिवर्तन हो गया। अपने साथी कुकर्मी की ओर देख कर, उसने उसकी श्रद्धाहीनता के लिए उसे डांटा। आखिर वे दोनों अपने कुकर्मों की सजा भोग रहे थे जिन्हें उन दोनों ने सचमुच में किया था। वे दण्ड के योग्य थे। **परन्तु इस ने** (प्रभु यीशु ने) **कोई अनुचित काम नहीं किया** था।

23:42 प्रभु यीशु की ओर देखकर, उस कुकर्मी ने प्रभु[67] से प्रार्थना की कि जब वह पृथ्वी पर अपना **राज्य** स्थापित करने के लिए वापस आए तब उसकी **सुधि** ले। इस प्रकार का विश्वास ध्यान देने योग्य है। मरता हुआ यह कुकर्मी विश्वास करता था कि प्रभु यीशु मृतकों में से जी उठेगा और एक दिन संसार पर राज्य करेगा।

23:43 प्रभु यीशु ने उसे उसके विश्वास का प्रतिफल उसी दिन दे दिया, उसी दिन वे दोनों **स्वर्गलोक में** साथ साथ होंगे। **स्वर्गलोक** और तीसरा स्वर्ग (2 कुरि. 12:2, 4) एक ही हैं, और इसका अर्थ है परमेश्वर का निवासस्थान। **आज ही** – क्या ही तीव्र गति – **मेरे साथ** – क्या ही संगति! **स्वर्गलोक में** – क्या ही आनन्द! चार्ल्स आर. ईर्डमान ने लिखा है:

> यह घटना हमारे सामने इस सत्य को प्रगट करती है कि उद्धार में मनफिराव और विश्वास की शर्त शामिल है। किन्तु, इसमें अन्य महत्वपूर्ण सन्देश भी पाए जाते हैं। यह इस बात को बताती है कि उद्धार संस्कारों पर निर्भर नहीं है। इस कुकर्मी का बपतिस्मा कभी नहीं हुआ था, न ही उसने कभी प्रभु-भोज में भाग लिया था . . .। बल्कि उसने एक विरोधी भीड़ की उपस्थिति में और सरदारों और सिपाहियों के कटाक्षों और ठट्ठों के बीच में बेधड़क होकर अपने विश्वास का अंगीकार किया, तौभी उसने बिना किसी औपचारिक संस्कार को पूरा किये उद्धार पा लिया। साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उद्धार अच्छे कर्मों पर निर्भर नहीं है . . .। यहाँ पर यह भी देखा जा सकता है कि ''आत्मा के सो जाने'' जैसी भी कोई सच्चाई नहीं होती। शरीर तो सो जाता है परन्तु मृत्यु के बाद चेतना बनी रहती है। इसके अतिरिक्त यहाँ यह भी स्पष्ट है कि ''शोधन स्थान (जहाँ मृत्यु के बाद पाप शुद्ध होता हो)'' जैसा कोई स्थान नहीं होता। पाप और लज्जा के जीवन से बाहर आकर, यह पश्चातापी कुकर्मी तुरन्त ही आशीष के स्थान में प्रवेश कर गया। एक बार फिर से हमें इस बात की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि उद्धार विश्वव्यापी (यह धारणा कि विश्व के हर व्यक्ति का उद्धार हो ही जाएगा) नहीं है। यहाँ पर दो कुकर्मी हैं; दोनों में से सिर्फ एक ने ही उद्धार पाया। अन्तिम बात जिसकी ओर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है वह यह है कि मृत्यु के बाद जो आनन्द पाया जाता है उसका सार मसीह के साथ व्यक्तिगत संगति में हैं। उस कुकर्मी को दी गई प्रतिज्ञा का सार यह था: ''तू मेरे साथ

होगा।'' यह हमारे लिए एक धन्य निश्चयता है, कि पृथ्वी पर से विदा होने का अर्थ है ''मसीह के साथ होना'' जो कि तुलना में ''बहुत ही बेहतर'' है।[68]

प्रभु यीशु मसीह के अगल बगल का एक व्यक्ति स्वर्ग जा सकता है तो दूसरा नरक भी जा सकता है। आप क्रूस के किस बगल में हैं?

ट. अंधकार के तीन घण्टे (23:44-49)

23:44 दो पहर से तीसरे पहर तक, अर्थात्, दोपहर से तीन बजे तक सारे देश (या *पृथ्वी*) में **अन्धकार** छा गया। यह इस्राएली जाति के लिए एक चिन्ह था। उन्होंने ज्योति को ठुकरा दिया था, और अब परमेश्वर ने उन्हें न्यायोचित्त दण्ड देकर अन्धा कर दिया।

23:45 मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक **बीच से फट गया**। यह इस तथ्य को चित्रित करता है कि प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से, उन सब के लिए परमेश्वर के पास पहुँचने का एक मार्ग खोला गया जो विश्वास से आएंगे (इब्रा. 10:20-22)।

23:46, 47 अन्धकार के इन तीन घण्टों में प्रभु यीशु ने अपनी देह में क्रूस पर हमारे पापों के दण्ड को उठा लिया। इस समय के अन्तिम क्षणों में उसने अपनी **आत्मा** को अपने **पिता**, परमेश्वर के **हाथों** में सौंप दिया। उसने स्वेच्छा से अपना जीवन दे दिया। एक रोमी **सूबेदार** इस दृश्य को देख कर भारविभोर हो गया, और उसने **परमेश्वर की बड़ाई की**, और **कहा**, **''निश्चय ही यह मनुष्य धर्मी था।''**

23:48, 49 सारी **भीड़** पर दु:ख और अनिष्ठ का एक भयानक भाव छा गया। प्रभु यीशु के विश्वासयोग्य अनुयायियों में, वे स्त्रियां भी शामिल थीं जो **गलील से उनके साथ आई थीं**, वे दूर **खड़ी हुई** इस संसार के इतिहास के सबसे निर्णायक दृश्य को **देख रही थीं**।

य. यूसुफ की कब्र में दफनाया जाना (23:50-56)

23:50-54 इस समय तक, **यूसुफ** प्रभु यीशु का एक गुप्त चेला था। यद्यपि वह यहूदी महासभा का एक **मन्त्री** था, वह प्रभु यीशु के मामले में महासभा के निर्णय से सहमत नहीं था। अब यूसुफ **पीलातुस** के पास गया और उसने उससे विनती की कि क्या उसे क्रूस पर से प्रभु **यीशु की लोथ** को उतार कर इस सम्मानजनक रीति से दफनाने का सुअवसर मिलेगा। (यह 3:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच की बात है।) उसे इस बात की अनुमति दे दी गई और यूसुफ ने तुरन्त उसे **चादर में लपेटा और एक कब्र में रखा जो चट्टान में खोदी हुई थी**, और जिस में अब तक किसी को भी दफनाया नहीं गया था। यह शुक्रवार के दिन हुआ, जो **तैयारी का दिन** था। जब हम पढ़ते हैं कि **सब्त का दिन आरम्भ होने पर था** तो हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यहूदी सब्त शुक्रवार के सूर्यास्त से आरम्भ होता है।

23:55, 56 जो स्त्रियां **उसके साथ गलील से आई थीं**, वे यूसुफ के **पीछे पीछे** गईं और उसने **लोथ** को **कब्र** के भीतर रखा। **और** उन्होंने **लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया** ताकि वे वापस आकर अपने प्रिय की लोथ पर उसे मलें। प्रभु यीशु की लोथ को गाड़ने के साथ ही, एक प्रकार से यूसुफ ने अपने आप को भी गाड़ दिया। इस कार्य के द्वारा उसने अपने आप को उस जाति से हमेशा के लिए अलग कर लिया जिसने जीवन और महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया था। वह यहूदी धर्म का हिस्सा नहीं रहा, परन्तु अब वह नैतिक रूप से इससे अलग रहेगा और उसके विरुद्ध गवाही देगा।

शनिवार के दिन स्त्रियों ने सब्त के दिन के विषय में दी गई आज्ञा का पालन करते हुए विश्राम किया।

XII. मनुष्य के पुत्र की विजय (अध्याय 24)

अ.खाली कब्र पर स्त्रियां (24:1-12)

24:1 उसके बाद रविवार की भोर को वे **कब्र** की ओर चल पड़ीं, और अपने साथ **उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थी** रख लिया। परन्तु अब वे ऐसी आशा कैसे कर सकती थीं कि वे उसकी लोथ तक पहुँच पाएंगी? क्या वे यह नहीं जानती थीं कि कब्र के मुँह से एक बड़ा पत्थर हटाना पड़ेगा? हमें इसका उत्तर नहीं बताया गया है। हम सिर्फ इतना जानते हैं कि वे उससे बहुत प्रेम रखती थीं, और प्रेम अपने प्रेमपात्र तक पहुँचने के लिए सारी बाधाओं को भूल जाता है।

''उनका प्रेम समय पर जागा हुआ था (पद 1) और यह बहुतायत से पुरस्कृत किया गया (पद 6)। यत्न से

तड़के उठकर खोजने वालों के लिये अभी भी एक पुनरूत्थित प्रभु उपस्थित है (नीतिवचन 8:17)। ''

24:2–10 जब वे वहाँ पहुँचीं तो **उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया**। जैसे ही वे **भीतर** गईं, उन्होंने देखा कि **प्रभु यीशु की लोथ** वहाँ से गायब है। उनकी उलझन का अनुमान लगा पाना हमारे लिए कठिन नहीं होना चाहिए। जब वे इसके बारे में सोच ही रही थीं, तब **झलकते वस्त्र** पहने हुए **दो** स्वर्गदूत (यूहन्ना 20:12 देखें) उनके सामने आ खड़े हुए, और उन्हें विश्वास दिलाया कि प्रभु यीशु जीवित है; उसे कब्र पर खोजना व्यर्थ है। वह अपनी उस प्रतिज्ञा के अनुसार **जी उठा है** जिसे उसने **गलील में रहते हुए** की थी। क्या उसने उन्हें पहले से ही नहीं बता दिया था कि अवश्य है कि **मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों पकड़वाया जाए** और **क्रूस पर चढ़ाया जाए** और **तीसरे दिन जी उठे?** (लूका 9:22; 18:33)। इस पर वह सारी बातें उन्हें स्मरण आ गईं। वे हड़बड़ाते हुए नगर को गईं और **ग्यारहों** चेलों को यह समाचार **कह सुनाया**। पुनरूत्थान के प्रथम सन्देशवाहकों में **मरियम मगदलीनी**, **योअन्ना**, और **याकूब की माता मरियम** शामिल थीं।

24:11, 12 चेलों ने **उन की प्रतीति न की**। उन्होंने इस खबर को स्त्रियों की अफवाह समझी – अविश्वसनीय! काल्पनिक! – जब तक पतरस ने स्वयं ही **कब्र पर** जा कर **केवल कपड़े पड़े** न **देखा**। ये वे कपड़े थे जिन्हें लोथ के चारों ओर कसकर बान्धा गया था। हमें यह नहीं बताया गया है ये कपड़े खुले हुए मिले या फिर लिपटे हुए मिले। परन्तु हम यह मान कर चल सकते हैं कि कपड़े लिपटी हुई अवस्था में ही मिले। ऐसा लगता है कि प्रभु ने कपड़ों को ऐसे छोड़ दिया मानों यह कोई खोल हो। यह सच्चाई कि कब्र पर के कपड़े वहीं छोड़ दिए गए थे यह दर्शाती है कि शरीर को चुराया नहीं गया था; चोरी करने वाले कपड़ों को उतारने में समय नष्ट नहीं करते। पतरस अपने घर लौट गया, और वह अब भी इस रहस्य को सुलझाने का प्रयास कर रहा था। इन सारी बातों का क्या अर्थ हो सकता है?

ब. इम्माऊस के मार्ग में (24:13–35)

24:13 इम्माऊस के **दो** चेलों में से एक का नाम **क्लियोपास** था; हमें दूसरे व्यक्ति का परिचय नहीं मालूम। वह क्लियोपास की पत्नी हो सकती है। एक परम्परा यह कहती है कि वह स्वयं लूका था। हम निश्चित तौर पर सिर्फ इतना कह सकते हैं कि वह प्रभु यीशु के ग्यारह चेलों में से नहीं था (पद 33)। चाहे जो भी हो, दोनों चेले **यरूशलेम से . . . इम्माऊस** लौटते हुए दु:खी[69] हो कर प्रभु यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने के विषय में बातचीत कर रहे थे। यरूशलेम से इम्माऊस की दूरी लगभग **सात मील** की थी।

24:14–18 जब वे आगे बढ़े, तो एक परदेशी भी उनके साथ हो लिया; यह स्वयं पुनरूत्थित प्रभु यीशु था, परन्तु उन्होंने उसे **न** पहिचाना। उसने उनसे पूछा कि वे लोग किस विषय पर बातचीत कर रहे हैं। कुछ समय तक तो वे शान्त रहे, यह उनकी बेबसी व दु:ख को दर्शाता है। उसके बाद **क्लियोपास** ने आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या यरूशलेम में कोई **परदेशी** भी इस विषय पर अनजान रह सकता है कि **क्या क्या हुआ**।

24:19–24 प्रभु यीशु ने उनसे एक प्रश्न और पूछा, ''क्यों, क्या हुआ?'' उन्होंने पहले प्रभु **यीशु** को श्रद्धांजली दी और उसके बाद उसके मुकद्दमों और क्रूसीकरण की घटनाओं का वर्णन किया। उन्होंने अपनी चूर चूर हो चुकी आशा के बारे में बताया, उसके बाद उस समाचार के बारे में भी बताया कि **उसकी लोथ** अब कब्र पर नहीं है। वास्तव में कुछ **स्वर्गदूतों** ने यह आश्वासन दिया था कि **वह जीवित है**।

24:25–27 तब प्रभु यीशु ने उन्हें स्नेह से झिड़का कि वे यह पहचान न सके कि पुराना नियम के **भविष्यद्वक्ताओं** ने मसीह के विषय में ठीक ठीक ऐसी ही भविष्यद्वाणी की थी। सबसे पहले, वह दु:ख उठाएगा, और उसके बाद महिमा पाएगा। उत्पत्ति से **आरम्भ कर** और **सब भविष्यद्वक्ताओं** की पुस्तकों से वर्णन करते हुए प्रभु यीशु ने **अपने** (मसीह के) **विषय में . . . सारे पवित्रशास्त्र** की बातों को दोहरा दिया। यह एक अद्भुत बाइबल अध्ययन का समय था, और कितना अच्छा होता कि उस समय हम उसके साथ होते! परन्तु हमारे पास अब भी वह पुराना नियम है, और हमें सिखाने के लिए हमारे पास पवित्र आत्मा है, और इसलिए हम भी सारे पवित्रशास्त्र में उसके **विषय में की बातों का अर्थ** समझ सकते हैं।

24:28, 29 अब ये दोनों चेले अपने घर के पास पहुँच चुके थे। उन्होंने अपने संगी–यात्री को अपने घर में

रात बिताने के लिए आमंत्रित किया। पहले तो, उसने शिष्टाचार दिखाते हुए ऐसा जताया मानों वह अपनी यात्रा को जारी रखना चाहता है; वह जबर्दस्ती किसी के घर में प्रवेश नहीं करना चाहेगा। परन्तु वे उसे मनाने में सफल हो गए कि वह उनके घर में ठहरे, और इसके लिए उन्हें कितना बड़ा प्रतिफल मिला!

24:30, 31 जब वे रात्रि भोजन के लिए बैठे, तो मेहमान ने मेजबान का स्थान ले लिया।

> यह सादा भोजन अब एक संस्कार बन गया, और यह घर परमेश्वर का घर बन गया। मसीह जहाँ कहीं जाता वह ऐसा ही कर देता है। जो उसका स्वागत–सत्कार करेंगे वे भी ऐसे ही स्वागत–सत्कार के पात्र होंगे। दोनों ने अपने घरों को मसीह के लिए खोला था, और अब उसने उनकी आँखें खोल दी (*डेली नोट्स ऑफ द स्क्रिप्चर यूनियन*)।

जब वह **रोटी . . . तोड़कर उन को देने लगा,** तो **उन्होंने** पहली बार **उसे** पहचाना। क्या उन्होंने उसके हाथों में कीलों के निशानों को देख लिया था? हम सिर्फ इतना ही जानते हैं कि **उन की आँखें** आश्चर्यजनक रीति से **खुल गईं** और उन्होंने उसे पहचान लिया। जैसे ही यह हुआ, वह उनकी **आँखों से छिप गया।**

24:32 उसके बाद वे अपने दिन भर की यात्रा का स्मरण करने लगे। यह सच है कि **जब वह** उनसे **बातें करता** था और **पवित्रशास्त्र का अर्थ** उन्हें **समझाता था** तब उनके **मन में उत्तेजना** उत्पन्न होती थी। उनका यह शिक्षक और संगी यात्री वास्तव में जी उठा प्रभु यीशु मसीह था।

24:33 इम्माऊस में रात बिताने की बजाए वे फुर्ती से **यरूशलेम** की ओर दौड़ पड़े जहाँ उन्होंने **ग्यारहों** को **इकट्ठे** पाया। ''ग्यारहों'' यहाँ पर प्रभु यीशु के वास्तविक चेलों के दल को दर्शाते हैं। वास्तव में सभी ग्यारह चेले वहाँ उपस्थित नहीं थे, जैसा कि हम यूहन्ना 20:24 में पाते हैं, परन्तु यह शब्द सामूहिक भाव से उपयोग में लाया गया है।

24:34 इससे पहले कि इम्माऊस के चेले अपने आनन्द का समाचार बांटते, यरूशलेम के चेलों ने हर्षोल्लास के साथ यह घोषणा की कि **प्रभु** सचमुच में **जी उठा** है और **शमौन** पतरस **को दिखाई दिया है।**

24:35 उसके बाद इम्माऊस के चेलों की बारी आई कि वे कहें, ''हाँ, हम यह जानते हैं, क्योंकि उसने हमारे साथ यात्रा की, हमारे घर में आया, और **रोटी तोड़ते समय** हम पर अपने आप को प्रगट किया।''

स. ग्यारहों को दिखाई देना (24:36–43)

24:36–41 प्रभु यीशु मसीह की पुनरूत्थित देह शब्दश:, **हड्डी मांस** की साकार या मूर्त देह थी। यह वही देह थी जिसे गाड़ा गया था, परन्तु यह इस रीति से बदल गई थी कि अब यह मृत्यु के वश में नहीं रही। इस महिमामय देह के साथ, प्रभु यीशु एक ऐसे कक्ष में भी प्रवेश कर सकता था जहाँ के द्वार बन्द हों (यूहन्ना 20:19)।

प्रथम रविवार को प्रभु यीशु ने यही किया। चेलों ने आँखे ऊपर की और उसे देखा, और फिर उसे यह कहते हुए सुना, ''**तुम्हें शान्ति मिले**।'' वे घबरा उठे और सोचने लगे कि यह कोई भूत है। जब उसने **अपने हाथ पांव** में अपने दु:खभोग के चिन्हों को उन्हें दिखाया, तभी उन्हें समझ आना शुरू हुआ। उसके बाद भी, इसे सच मानना उनके लिए बहुत बड़ी बात थी।

24:42–43 उसके बाद उन्हें यह दिखाने के लिए कि वह सचमुच में यीशु ही है, उसने कुछ **भूनी मछली** खाई।

द. समझ का खोला जाना (24:44–49)

24:44–47 इन पदों को उद्धारकर्ता द्वारा उसके पुनरूत्थान और उसके स्वर्गारोहण के बीच के समय में दी गई शिक्षाओं का सारांश कहा जा सकता है। उसने उन्हें समझाया कि उसका जी उठना उसके द्वारा उन्हें कही गई बातों की पूर्णता है। क्या उसने नहीं बताया था कि उसके विषय में पुराना नियम की सारी भविष्यद्वाणियों का पूरा होना अवश्य है? **मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की** पुस्तक : ये पुराना नियम के तीन प्रमुख वर्ग थे। एक साथ मिलकर वे सम्पूर्ण पुराना नियम को दर्शाते थे। मसीह के विषय में पुराना नियम की भविष्यद्वाणियों का बोझ/जोर निम्नलिखित था:

1. यह कि, उसे **दु:ख** उठाना आवश्यक है (भजन 22:1–21; यशा. 53:1–9)।

2. यह कि, यह अवश्य है कि वह तीसरे दिन **मरे हुओं में से** जी उठेगा (भजन 16:10; योना 1:17; होशे 6:2)।
3. **और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मनफिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।**

प्रभु यीशु ने **पवित्रशास्त्र** की इन सारी बातों को **बूझने के लिए उनकी समझ खोल दी**। बल्कि, यह अध्याय खोल दी गई वस्तुओं से भरा एक अध्याय है: खुली हुई *कब्र* (पद 12), खोला गया *घर* (पद 29); खोल दी गई *आँखें* (पद 31), *पवित्रशास्त्र का अर्थ* खोलना (पद 32), *मुँह* खुलना (पद 35), *समझ* खुलना (पद 45), और *स्वर्ग* खुल जाना (पद 51)।

24:48, 49 चेले पुनरूत्थान के **गवाह** थे। उन्हें इस महिमामय सन्देश को लेकर स्थान स्थान पर जाना आवश्यक था। परन्तु इससे पहले यह आवश्यक था कि वे **पिता** की **प्रतिज्ञा** के लिए ठहरे रहें, अर्थात्, पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के आने की प्रतिज्ञा। उसके बाद वे पुनरूत्थित मसीह की गवाही देने के लिए ईश्वरीय **सामर्थ** प्राप्त करेंगे। पिता द्वारा पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पुराना नियम के अनेक स्थलों में की गई है, जैसे, यशायाह 44:3; यहेजकेल 36:27; योएल 2:28।

इ. मनुष्य के पुत्र का स्वर्गारोहण (24:50–53)

24:50–53 प्रभु यीशु मसीह अपने जी उठने के चालीस दिनों बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया। **वह** अपने चेलों को लेकर **बैतनिय्याह तक** गया, जो कि जैतून पहाड़ के पूर्वी ओर है, **और उसने अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी**। जब वह उन्हें आशीष दे ही रहा था, तो वह **स्वर्ग पर उठा लिया गया।**

24:52, 53 उन्होंने **उसको दण्डवत्** किया और **बड़े आनन्द से यरूशलेम लौट गए**। अगले दस दिनों तक, उन्होंने **मन्दिर में . . . परमेश्वर की स्तुति** करते हुए अधिकांश समय बिताया।

लूका के सुसमाचार का आरम्भ मन्दिर में भक्त विश्वासियों द्वारा बहुप्रतीक्षित मसीह के लिए प्रार्थना के साथ हुआ था। इसका समापन भी उसी स्थान पर भक्त विश्वासियों के द्वारा **परमेश्वर की स्तुति** करते हुए होता है क्योंकि उसने आरम्भ में की गई प्रार्थना का उत्तर दिया और छुटकारे के कार्य को पूरा किया। प्रसिद्ध विद्वान रेनान कहते हैं कि यह समापन संसार की सबसे खूबसूरत पुस्तक का मनोहर चरमोत्कर्ष है। आमीन।

अन्त्य टिप्पणियाँ

[1](1:2) जेम्स एस. स्टीवर्ट, *द लाइफ एण्ड टिचिंग ऑफ जीज़स ख्राइस्ट*, पृ. 9।

[2](1:4) यही यूनानी शब्द *(ऐनोथेन)* यूहन्ना 3:7 में भी आया है: ''तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है।''

[3](1:16, 17) जी. कोलमैन, *लूक*, पृ. 17

[4](1:28) यूनानी शब्द कर्मवाच्य कृदन्त है, जो यह दर्शाता है कि उसने अनुग्रह *प्राप्त* किया। लैटिन *''ग्रेशिया प्लेना''* (''अनुग्रह से परिपूर्ण'') का गलत उपयोग यह सिखाने के लिए किया गया है कि मरियम अनुग्रह का *स्त्रोत* है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ठीक ठीक अनुवाद कितना महत्वपूर्ण होता है।

[5](1:72–75) जी. केम्पबेल मोर्गन, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू लूक*. 30, 31 पृष्ठों में।

[6](2:7) जे.एन. डार्बी, *सिनोप्सिस ऑफ द बुक्स ऑफ द बाइबल,* III:293।

[7](2:8) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग*, पृ. 24।

[8](2:13, 14) अंग्रेजी *द क्रिटिकल (एन.यू.)* संस्करण में कुछ इस प्रकार लिखा है ''अच्छी साख रखने वाले मनुष्यों पर,'' जो कि बाइबल के इस सिद्धान्त के विपरीत है कि मनुष्यजाति भ्रष्ट है। जो सुसमाचारवादी लोग आलोचनात्मक पठन को स्वीकार करते हैं वे सामान्यत: इसका भावानुवाद करते हैं। *के.जे.* परम्परा शायद सबसे बेहतर है।

[9](2:33) अंग्रेजी का *एन.यू.* पठन ''उसके माता और पिता'' कुंवारी से जन्म की सच्चाई का इंकार नहीं करता, परन्तु यह कम स्पष्ट है। पद 43 की तुलना भी पारम्परिक और बहुमत वाले सस्करणों और *एन.यू.* संस्करण के बीच करें।

[10](2:40) *एन.यू.* संस्करण में भी ''आत्मा में'' नहीं आया है।

[11](4:13) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग*, पृ. 45।

[12](4:28) जॉन चार्ल्स रायल, *एक्पोसिटरी थॉट्स ऑन द गॉस्पल, सेन्ट लूक,* I:121।

[13](5:30) अंग्रेजी *एन.यू.* संस्करण में भी लिखा है, ''फरीसी और उनके शास्त्री,'' जिसका अर्थ होता है वे शास्त्री जो फरीसियों के पद पर थे।

[14](6:17–19) किन्तु, बाइबल के अनेक विद्वान ऐसा मानते हैं कि ''चौरस जगह'' पहाड़ के नीचे थी और भिन्नताएं सिर्फ मत्ती और लूका द्वारा अलग अलग बातों पर जोर दिए जाने, और सम्पादकीय रचना (परमेश्वर की प्रेरणा) में है।

[15](6:26) अधिकांश पाण्डुलिपियों में ''सब'' को हटा दिया गया, जो यह दर्शाता है कि समझौता करने वालों की प्रशंसा सिर्फ कुछ ही मनुष्य करेंगे।

[16](6:27–29अ) एफ.बी. मेयर, *''द हेवेनलिज़''*, पृ. 26।

[17](6:47–49) ''पक्का बना था'' अधिकांश संस्करणों में आया है, परन्तु यह सही अर्थ से चूक जाता है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि एक व्यक्ति अपना जीवन *कैसे* बनाता था, परन्तु यह कि वह *किस* (मसीह) पर बनाता है!

[18](7:21–23) सी.जी. मूरे, *आऊटलाइन्स स्टडीज़ इन द गॉस्पल ऑफ लूक,* पृ. 129।

[19](7:27) एफ.एल. गॉडेट, *कॉमेन्ट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ लूक,* I:350।

[20](7:30–34) रायल, *सेन्ट लूक,* I:230।

[21](7:49, 50) तत्रैव, पृ. 239।

[22](8:11–15) जे.एन. डार्बी, *द गॉस्पल ऑफ लूक,* पृ. 61।

[23](8:18) जी.एच. लैंग, *द पैराबोलिक ऑफ द स्क्रिप्चर्स,* पृ. 60।

[24](8:26, 27) यहाँ और पद 37 में एन.यू. संस्करण में भी *गिरासेनियों* लिखा है।

[25](8:34–39) डार्बी, *सिनोप्सिस,* III:340।

[26](8:51–53) सर राबर्ट एन्डरसन, *मिसअन्डरस्टूड टेक्सट्रस ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट,* पृ. 51।

[27](9:19, 20) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* पृ. 109, 110।

[28](9:28, 29) डब्ल्यू एच. रोजर्स, अतिरिक्त जानकारी अप्राप्त।

[29](9:32, 33) रायल, *गॉस्पल्स, सेन्ट लूक,* I:320।

[30](9:50) ए. एल. विलियम्स, आगे की जानकारी अप्राप्त।

[31](9:62) शायद इसका अर्थ कुछ देर के लिए पिछली घटनाओं की ओर ध्यान देना नहीं है, परन्तु जंगल में भटक रहे इस्राएल की ''मिस्र को वापस जाना'' वाली मानसिकता है।

[32](10:1–12) यहाँ और पद 17 में *एन.यू.* संस्करण में ''बाहत्तर'' लिखा है।

[33](10:16) रायल, *सेन्ट लूक,* I:357, 358।

[34](10:36, 37) एफ. डेविडसन, सम्पा., *द न्यू बाइबल कॉमेन्ट्री,* पृ. 851।

[35](10:42) सी.ए. कोट्स, *एन आऊटलाइन ऑफ द लूक्स गॉस्पल*, पृ. 129।

[36](10:42) चार्ल्स आर. इर्डमान, *द गॉस्पल ऑफ लूक*, पृ. 112।

[37](11:4) लूका ने ''चेलों की प्रार्थना'' का एक संक्षिप्त संस्करण दिया, जिससे शायद हमें यह समझना चाहिए कि इसे शब्दश: रटना नहीं है। ऐसा समझा जाता है कि आलोचनात्मक *एन.यू.* संस्करण में (*एन.के.जे.वी.* की टिप्पणियों में देखें) हटाई गई बातों को मत्ती में से उस पाठ के सम्पादकों द्वारा बाद में जोड़ा गया।

[38](11:9) यूनानी *वर्तमान काल आदेशसूचक* एक सतत् क्रिया को दर्शाता है।

[39](11:41) हैरी ए. आइरनसाइड, *एड्रेसेज़ ऑन द गॉस्पल ऑफ लूक*, पृ. 390।

[40](11:46) विलियम केली, *एन एक्पोज़िशन ऑफ द गॉस्पल,* पृ. 199।

[41](12:2, 3) गोडेट, *लूक* II:89।

[42](12:15) जे. आर. मिलर, *कम यि अपार्ट,* जून 10 का पठन।

[43](12:36) केली, *लूक,* पृ. 214।

[44](13:6–9) लैंग, *पैराबोलिक टिचिंग,* पृ. 230।

[45](14:33) रायल, *गॉस्पल्स, सेन्ट लूक,* II:86।

[47](15:20) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* 77–78 पृष्ठों में।

[48](16:9) *अवर लार्डस् टिचिंग अबाउट मनी,* (ट्रेक्ट), पृ. 10, 11।

[49](16:9) जे. एन. डार्बी, *द मैंन ऑफ सॉरो,* पृ. 178।

[50](17:10) रॉय हेसियन, *द कलवरी रोड,* पृ. 49।

[51](17:34–36) सबसे पुराने संस्करण में और अधिकांश संस्करणों में पद 36 नहीं है, जिसका अर्थ यह है कि बहुत कर के यह पद प्रमाणिक नहीं है।

[52](18:31, 33) रायल, *गॉस्पल्स, सेन्ट लूक,* II:282।

[53](19:11) एक मोहर (इब्रा. *मीना,* यूनानी में *मना*) का मूल्य 100 रूपये से कहीं अधिक था।

[54](19:41, 42) ग्रिफ्फिथ थॉमस, *लूक,* पृ. 303।

[55](20:18) अन्य लोग ऐसा समझते हैं कि पत्थर पश्चातापी पापी को दर्शाते हैं जो प्रभु यीशु में सच्चे टूटे दिल से पश्चताप करता है जबकि मसीह को ठुकराने वाला आने वाले न्याय के समय बुकनी के समान चूर चूर हो जाएगा।

[56](20:35) कोट्स, *लूक्स गॉस्पल,* पृ. 252।

[57](21:1–4) डॉ. जोसफ पार्कर, आगे की जानकारी अनुपलब्ध।

[58](21:20–24) *क्रिश्चन ट्रूथ मैगज़ीन,* नवम्बर 1962, पृ. 303।

[59](21:20–24) एडवर्ड गिबोन, *द डिक्लाइन एण्ड फॉल ऑफ रोमन इम्पायर,* II:95–101।

[60](22:7) लियोन मोरिस, *द गॉस्पल अकार्डिंग टू लूक,* पृ. 302–304।

[61](22:47, 48) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* पृ. 154।

[62](22:13–17) तत्रैव, पृ. 161।

[63](23:33) अंग्रेजी बाइबल *(के.जे.)* में यही एक स्थान है जहाँ यह प्रिय नाम आया है। यद्यपि ऐसे हजारों झुण्ड हैं जिन्हें ''कलवरी -- चर्च'' नाम दिया गया है, अधिकांश आधुनिक बाइबलों में इस पारम्परिक मान्यता को हटा दिया गया है।

[64](23:33) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* पृ. 166।

[65](23:34) मोर्गन, *लूक,* पृ. 269।

[66](23:35–38) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* पृ.168।

[67](23:42) पारम्परिक संस्करण और अधिकांश संस्करणों में कुछ इस प्रकार से लिखा है, ''*प्रभु,* मेरी सुधि लेना'' आलोचनात्मक *एन.यू.* के ''*यीशु,* मेरी सुधि लेना'' से अधिक प्रभावशाली है। आदरसूचक ''प्रभु'' (अनुवाद ''महाशय'' भी किया जा सकता है) व्यक्तिगत नाम का उपयोग किए जाने की तुलना में अधिक गहरे विश्वास को दर्शाता है।

[68](23:43) इर्डमान्स, *लूक* 217–218 पृष्ठों में।

[69](24:13) *एन.यू.* संस्करण में ''स्तुति'' शब्द को हटा दिया गया है। कुछ संस्करणों में समापन में ''आमीन'' लिखा हुआ है।

प्रयोग में लाई गई पुस्तकों की सूची

कोट्स, सी.ए. *एन आऊटलाइन ऑफ लूक्स गॉस्पल. किंग्सटन ऑन थामेस: स्टो हिल बाइबल एण्ड ट्रेक्ट डिपोट,* अनोल्लेखित।

डार्बी, जे.एन. *द गास्पल ऑफ लूक.* लंदन:जेम्स कार्टर, अनोल्लेखित।

--. *द मैंन ऑफ सॉरो.* ग्लासगो:पिकरिंग एण्ड इनग्लिस, अनोल्लेखित।

--. *नोट्स ऑफ एड्रेसेज़ ऑन द गॉस्पल ऑफ लूक.* लंदन: सी.ए. हैमोन्ड, अनोल्लेखित।

इर्डमान्स, चार्ल्स आर. *द गास्पल ऑफ लूक.* फिलाडेलफिया: द वेस्टमिन्सटर प्रेस, 1921।

जेल्डेनहुइस, नोरवल. *कॉमेन्ट्री ऑन द गास्पल ऑफ लूक,* 2 संस्करणों में, ग्रैण्ड रेपिड्स: जोन्डरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1977.

आइरनसाइड, एच.ए. *एड्रेसेज़ ऑन द गॉस्पल ऑफ लूक,* न्यूयार्क:लोइज़ॉक्स ब्रदर्स, 1947।

केली विलियम. *एन एक्पोज़िशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ लूक.* लंदन: पिकरिंग एण्ड इनग्लिस, अनोल्लेखित।

लक, जी. कोलमान. *लूक.* शिकागो: मूडी प्रेस, 1960।

मोर्गन, जी. केम्पबेल. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू लूक.* न्यूयार्क: फ्लेमिंग एच. रेवल कम्प., 1931।

मोरिस, लियोन, *द गॉस्पल अकार्डिंग टू सेन्ट लूक, टीबीसी.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1974।

थॉमस, डब्ल्यू. एच. ग्रिफ्फिथ. *आऊटलाइन स्टडीज़ इन द गास्पल ऑफ लूक.* ग्रैण्ड रेपिड्स: क्रेगल पब्लिकेशन्स, 1984।

यूहन्ना रचित सुसमाचार

पुस्तक का परिचय

''संसार की सबसे गूढ़ पुस्तक'' – ए.टी. राबर्टसन।

I. बाइबल प्रामाणिक संग्रह *(केनन)* में विशिष्ठ स्थान

यूहन्ना बिल्कुल स्पष्ट रूप से बता देता है कि उसकी पुस्तक का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार है – ''ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो'' (20:31)। कलीसिया ने प्रेरितों की शिक्षा का अनुसरण एक बार कर लिया है: पिछली सदी में यूहन्ना के सुसमाचार की छोटी छोटी पुस्तकों का लाखों की संख्या में वितरित किया जाना इस बात का गवाह है।

परन्तु यूहन्ना का सुसमाचार यदि *बहुत* लोकप्रिय न भी हो, तौभी परिपक्व और भक्त मसीहियों के लिए बाइबल की लोकप्रिय पुस्तकों में से एक है। यूहन्ना के सुसमाचार में न सिर्फ प्रभु यीशु मसीह के जीवन के तथ्यों को बताया गया है, परन्तु एक ऐसे प्रेरित के लम्बे लम्बे उपदेशों और परिपक्व चिन्तनों को भी शामिल किया गया है जिसने मसीह के साथ (संभवत:) उन्नीस–बीस वर्ष की आयु से गलील में चलना आरम्भ किया और अपने बुढ़ापे तक एशिया प्रान्त में रहते हुए उसने मसीह का साथ नहीं छोड़ा। इस सुसमाचार में संसार का सबसे चिरपरिचित पद पाया जाता है, इस पद (यूहन्ना 3:16) को मार्टिन लूथर ने ''संक्षिप्त सुसमाचार'' नाम दिया है।

यदि यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक नया नियम की *अकेली* पुस्तक भी होती, तब भी इसमें इतनी क्षमता होती कि यह एक मसीही को उसके जीवन में अध्ययन और मनन के लिए पर्याप्त मात्रा में आत्मिक दूध और अन्न उपलब्ध करवा देती।

II. लेखक

इस चौथे सुसमाचार की लेखनकारिता पर पिछले 150 वर्षों से व्यापक विवाद उभर कर सामने आए हैं। नि:सन्देह इसका कारण यह है कि यह पुस्तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के ईश्वरत्व के विषय में बिल्कुल साफ–साफ गवाही देती है। इन आक्रमणों का उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि यह सुसमाचार एक ''प्रत्यक्षदर्शी'' द्वारा नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह के पचास से सौ वर्षों बाद किसी अज्ञात ''धार्मिक विद्वान'' के द्वारा लिखा गया। इसलिए यह पुस्तक मसीह के विषय में कलीसिया के विचारों को परिलक्षित करती है, इस बात को नहीं कि मसीह वास्तव में क्या था, उसने वास्तव में क्या कहा, या क्या किया।

यह सुसमाचार भी लेखक के विषय में कोई जानकारी नहीं देता, परन्तु यह विश्वास करने के लिए हमारे पास अनेक बेहतर कारण हैं कि यह बारह चेलों में से प्रेरित यूहन्ना के द्वारा लिखा गया था।

एलेक्ज़ेन्ड्रिया के क्लेमेंट ने इस बात का वर्णन किया है कि यूहन्ना के जीवन के अन्तिम समय में, प्रेरित से उसके निकट मित्रों ने जो उसके पास इफिसुस आए थे, उससे पूछा, कि वह एक ऐसा सुसमाचार लिखे जो मत्ती, मरकुस, और लूका को और भी स्पष्ट रीति से समझने में सहायक हो। परमेश्वर की आत्मा के प्रभाव में इस तरह से यूहन्ना ने एक *आत्मिक* सुसमाचार की रचना की। ऐसा नहीं है कि अन्य सुसमाचारों को *गैर आत्मिक* माना गया, परन्तु मसीह के वचनों पर यूहन्ना द्वारा दिया गया बल और *चिन्हों* (आश्चर्यकर्मों) के अधिक गहरे अर्थ यह

स्पष्ट करते हैं कि इस सुसमाचार को विशेष रूप से ''आत्मिक'' क्यों कहा जाना चाहिए।

बाहरी प्रमाण

अन्ताकिया के थियोफिलस (170 ईस्वी के लगभग) प्रथम ज्ञात लेखक हैं जिन्होंने स्पष्ट रूप से यूहन्ना को इस पुस्तक का लेखक बताया। जबकि, इस चौथे सुसमाचार के उल्लेख व उद्धरण इग्नेशियस, जस्टिन मार्टियर (संभवत:), टेशियन, मूरोटोरी प्रामाणिक संग्रह, और यहाँ तक कि बेसिलिडस और वेलेंटिनस जैसे झूठे शिक्षकों के, इससे भी पहले के लेखों में भी पाए जाते हैं।

इरेनियस ने प्रभु यीशु मसीह से लेकर यूहन्ना तक, यूहन्ना से लेकर पॉलीकार्प तक, और पॉलीकार्प से लेकर स्वयं अपने आप तक शिष्यता की एक कड़ी पूरी की है। यह कड़ी मसीहत के आरम्भ से लेकर दूसरी शताब्दी के अन्त तक की है। इरेनियस ने व्यापक रूप से इस सुसमाचार को यूहन्ना द्वारा लिखित उद्धरित किया है, और कलीसिया में इसकी पुष्टि की गई। इरेनियस के बाद से, इस सुसमाचार को व्यापक रूप से सत्यापित किया गया है, और एलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट और टर्टुलियन जैसे गवाहों ने भी इसकी पुष्टि की है।

उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ तक सिर्फ अलोगी नामक एक प्रभावहीन कुपंथ ही यूहन्ना द्वारा इस सुसमाचार को लिखे जाने की बात का इंकार करता था।

यूहन्ना रचित सुसमाचार के अन्तिम भाग को शायद पहली शताब्दी में इफिसुस की कलीसिया के अगुवों ने लिखा था, ताकि विश्वासयोग्य मसीहियों को यूहन्ना के सुसमाचार को स्वीकार करने के लिए उत्साहित करें। पद 24 एक ऐसे चेले की ओर संकेत करता है जो प्रभु यीशु से प्रेम रखता था (पद 20 और अध्याय 13 में)। यह हमेशा से ही माना गया है कि यह बात यूहन्ना के लिए कही गई है।

उदारवादी आलोचक तो यहाँ तक शिक्षा देते थे कि यूहन्ना के सुसमाचार को दूसरी शताब्दी के *अन्त* में लिखा गया था। किन्तु, 1920 में, यूहन्ना 18 का एक टुकड़ा (पपाइरस 52, जिस पर दूसरी शताब्दी के *प्रथम* भाग में प्रचलित रीति से तिथि अंकित की गई थी, और शायद यह तिथि 125 इस्वी की थी) मिस्र में पाया गया। इसका एक प्रान्तीय नगर में पाया जाना (उदा. के लिए, एलेक्ज़ेंड्रिया नहीं) इस बात की पुष्टि करता है कि यूहन्ना की पुस्तक को लिखे जाने की पारम्परिक तिथि (पहली शताब्दी का दूसरा भाग) सही है, क्योंकि इफिसुस से ऊपरी (दक्षिणी) मिस्र तक पहुचँने के लिए कुछ समय तो लगा ही होगा। यूहन्ना अध्याय 5 का भी एक ऐसा ही मिलता जुलता टुकड़ा, इगेरटन पपाइरस 2, जो दूसरी शताब्दी के आरम्भिक भाग का ही था, भी इस बात की पुष्टि करता है कि यह सुसमाचार यूहन्ना के जीवनकाल में ही लिखा गया।

आन्तरिक प्रमाण

उन्नीसवीं शताब्दी के बाद वाले भाग में एक प्रसिद्ध एंग्लिकन विद्वान बिशप वेस्टस्कॉट ने बहुत ही सूक्ष्म विधि से यूहन्ना के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किया। इसका सार निम्नलिखित है: (1) लेखक एक *यहूदी* था – लेखन शैली, शब्दावली, यहूदी प्रथाओं और विशेषताओं से चिरपरिचित होना, और सुसमाचार में पुराना नियम की पृष्ठभूमि का परिलक्षित होना आदि तथ्य इसका समर्थन करते हैं। (2) वह *एक यहूदी था जो पलस्तीन देश में रहता था* (1:28; 2:1, 11; 4:46; 11:18, 54; 21:1, 2)। वह यरूशलेम और मन्दिर के बारे में बहुत ही बारीकी से जानकारी रखता था और उसे इन दोनों से बहुत लगाव था (5:2; 9:7; 18:1; 19:13, 17, 20, 41; साथ ही 2:14–16; 8:20; 10:22)। (3) उसने जो कुछ भी वृत्तान्त प्रस्तुत किया है उसका वह *एक प्रत्यक्षदर्शी था*। इस सुसमाचार में स्थानों, व्यक्तियों, समय, और तौर तरीकों के बारे में अनगिनत विवरण दिए गए हैं (4:46; 5:14; 6:59; 12:21; 13:1; 14:5, 8; 18:6; 19:31)। (4) *वह एक प्रेरित था* और उसे चेलों के भीतरी समूह और स्वयं प्रभु यीशु मसीह के बारे में गहरी जानकारी थी। (5) चूंकि लेखक ने अन्य चेलों का उल्लेख करते समय साफ साफ उनका नाम लिया है और अपने स्वयं का नाम *नहीं* लिया है, ऐसा माना जाता है कि 13:23; 19:26; 20:2; 21:17, 20 का अनाम व्यक्ति *प्रेरित यूहन्ना है*। लेखक के प्रत्यक्षदर्शी होने के विषय में और अधिक बातें 1:14; 19:35 और 21:24 में पाई जाती हैं।

III. तिथि

इरेनियस ने पूरे निश्चय के साथ बताया है कि यूहन्ना ने इस सुसमाचार को इफिसुस से लिखा है, इसलिए यदि वह सही है, तो 69 या 70 ईस्वी सबसे पहली संभावित तिथि होनी चाहिये, जब प्रेरित यूहन्ना वहाँ पहुँचा था। इसलिए कि यूहन्ना ने यरूशलेम के नाश के बारे में कोई उल्लेख नहीं किया है, यह सम्भव है कि यह घटना उस समय तक न घटी हो, ऐसी स्थिति में यूहन्ना के सुसमाचार को इस भयानक घटना के पूर्व ही लिखा गया होगा।

कुछ उदारवादी आलोचक मृत (खारा) सागर कुण्डलपत्रों के साथ सम्भावित कड़ी के आधार पर यूहन्ना की लेखन तिथि 45–66 ईस्वी बताते हैं। यह एक असामान्य बात है, चूंकि सामान्यत: संरक्षणवादी लोग पहले की तारीखों का समर्थन करते हैं जबकि उदारवादी बाद की तारीखों का। इस मामले में आरम्भिक कलीसिया पारम्परिक रूप से बाद वाली तारीख का समर्थन करती है।

पहली शताब्दी के अन्त की तारीख के समर्थन में पक्ष काफी मजबूत है। अधिकांश विद्वान इरेनियस, अलेक्ज़ेंड्रिया के क्लेमेंट, और जेरोम से इस बात पर सहमत है कि यूहन्ना चारों सुसमाचारों में सबसे अन्तिम में लिखा गया सुसमाचार है, अंशत: इसलिए कि वह इन तीनों सुसमाचारों की बातों का आधार बना कर आगे बढ़ता है या उन्हें पूरी करता है। यरूशलेम के नाश होने का उल्लेख यूहन्ना में नहीं पाए जाने के पीछे कारण यह हो सकता है कि यह पुस्तक इस घटना के कम से कम पन्द्रह से बीस वर्ष *बाद* लिखी गई हो जब लोग इस घटना के आघात से उबर चुके थे। इरेनियस यह लिखता है कि यूहन्ना ट्राजन सम्राट (जिसने अपना राज्य 98 ईस्वी में आरम्भ किया था), और उसके शासनकाल के कुछ ही पहले की तारीख संभावित है। इस सुसमाचार में ‘‘यहूदियों’’ के विषय किए गए उल्लेख भी बाद वाली तारीखों की ओर ही संकेत करते हैं, जब मसीही विश्वास को लेकर यहूदियों का विरोध कठोर हो कर सताव का रूप ले चुका था।

यद्यपि इस पुस्तक की कोई भी ठोस लेखन तिथि बता पाना सम्भव नहीं है, 85 ईस्वी से 95 ईस्वी का दशक सबसे सम्भावित समय सीमा हो सकता है।

IV. पृष्ठभूमि और प्रमुख विषय

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को सात सार्वजनिक आश्चर्यकर्मों या ‘‘चिन्हों’’को केन्द्रबिन्दु बना कर रचा है। प्रत्येक आश्चर्यकर्मों को प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से रूप दिया गया है: (1) गलील के काना में विवाह के दौरान पानी को दाखरस में बदलना (2:9)। (2) राजा के कर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (4:46–54)। (3) अड़तीस वर्ष के रोगी को बैतसैदा के कुण्ड में चंगा करना (5:2–9)। (4) पाँच हजार लोगों को भोजन करवाना (6:1–14)। (5) प्रभु यीशु गलील की झील में पानी पर चलते हुए अपने चेलों को आंधी से बचाता है (6:16–21)। (6) जन्म के अन्धे व्यक्ति को चंगा करना (9:1–7)। (7) लाजर को मुर्दों में से जिलाना (11:1–44)। इन सात सार्वजनिक आश्चर्यकर्मों के अतिरिक्त, एक आठवां आश्चयकर्म भी है जिसने उसने सिर्फ अपने चेलों के लिए अपने पुनरूत्थान के बाद किया था – आश्चर्यजनक रीति से मछली पकड़ना (21:1–14)।

चार्ल्स आर. इर्डमेन कहते हैं कि चौथे (यूहन्ना रचित) सुसमाचार की तुलना में ‘‘और कोई भी दूसरी पुस्तक नहीं है जिसने सबसे अधिक व्यक्तियों को मसीह के पीछे चलने के लिए प्रभावित किया है, निष्ठापूर्वक सेवा करने के लिए सबसे अधिक विश्वासियों को प्रेरित किया है, और विद्वानों के सामने सबसे अधिक कठिनाइयां खड़ी की है।’’

हमारे प्रभु द्वारा इस पृथ्वी पर रहते हुए की गई सेवकाई का *कालक्रम* इसी पुस्तक के आधार पर तैयार किया गया है। तीन अन्य सुसमाचारों को देख कर ऐसा लगता है कि मसीह की सेवकाई सिर्फ एक वर्ष की थी। यूहन्ना के सुसमाचार में वार्षिक पर्व के उल्लेख से हमें यह मालूम होता है कि उसकी सार्वजनिक सेवकाई लगभग साढ़े तीन वर्षों की थी। इन स्थलों की ओर ध्यान दें: फसह का पर्ब्ब (2:12, 13); ‘‘एक पर्ब्ब’’ (5:1), शायद फसह या पुरीम; फसह का दूसरा (या तीसरा) पर्ब्ब (6:4); तम्बुओं का पर्ब्ब (7:2); स्थापन–पर्ब्ब (10:22); और अन्तिम फसह का पर्ब्ब (12:1)।

यूहन्ना समय को लेकर भी अपने उल्लेखों में बहुत स्पष्ट है। जबकि शेष तीन लेखक अन्दाज लगा कर ही सन्तुष्ट हैं, यूहन्ना बिल्कुल ठीक ठीक समय बताता है,

जैसे, सातवां घण्टा (4:52); तीसरा दिन (2:1); दो दिन (11:6); और छ: दिन (12:1)।

इस सुसमाचार की *शैली और शब्दावली* विशिष्ठ हैं और सिर्फ ये यूहन्ना की पत्रियों से मिलती जुलती हैं। वाक्य छोटे और साधारण हैं। उनकी भाषा यद्यपि यूनानी है परन्तु विचार इब्रानी है। बहुधा वाक्य जितना छोटा है उसमें दी गई सच्चाई उतनी अधिक वजनदार है! अन्य तीनों सुसमाचारों की तुलना में इसमें शब्दावली सीमित है परन्तु अर्थों में सर्वाधिक गूढ़ है। इन महत्वपूर्ण शब्दों की ओर ध्यान दें और यह भी ध्यान दें कि इनका उपयोग कितनी बार (अंग्रेजी *एन.के.जे.वी.* बाइबल में) किया गया है: पिता (118 बार), संसार (78 बार), प्रेम (45 बार), गवाह, गवाही, इत्यादि (47 बार), जीवन (37 बार), ज्योति (24 बार)।

यूहन्ना की एक खास विशेषता यह है कि इस पुस्तक में सात की संख्या और उसके गुणांक का बार बार उपयोग किया गया है। इस संख्या से सिद्धता और पूर्णता की धारणा जुड़ी हुई है जो सारे पवित्रशास्त्र में देखी जा सकती है (उत्प. 2:1–3 देखिये)। इस सुसमाचार में परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के प्रगटीकरण को प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में सिद्ध और पूर्ण करता है, इसलिए सात की संख्या पर आधारित नमूनों (पैटर्न) का बार बार उपयोग किया गया है।

यूहन्ना में सात ''मैं . . .हूँ'' वाक्यांशों से हम चित-परिचित हैं: ''जीवन की रोटी मैं हूँ'' (6:35, 41, 48, 51); ''जगत की ज्योति मैं हूँ'' (8:12; 9:5); ''द्वार मैं हूँ'' (10:11, 14); ''पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ'' (11:25); ''मार्ग, सत्य, और जीवन मैं हूँ'' (14:6); और ''... दाखलता मैं हूँ'' (15:1, 5)। बिना निर्धारक के, अर्थात्, सरल वाक्य में भी ''मैं . . . हूँ'' का सात बार प्रयोग किया गया है, जिसकी ओर कम ही ध्यान जाता है: 4: 26; 6:20; 8:24, 28, 58; 13:19; 18:5, 8। अन्तिम वाक्य दो बार आया है।

छठवें अध्याय में, जो कि जीवन की रोटी से सम्बन्धित है, जिसे यूनानी शब्द का उपयोग ''रोटी''के लिए किया गया है वह इक्कीस बार आया है, अर्थात्, सात का गुणांक। साथ ही जीवन की रोटी पर दिए गए उपदेश में ''स्वर्ग से उतरी रोटी'' ठीक सात बार आया है; ऐसा ही मिलता-जुलता वाक्यांश, ''स्वर्ग से उतरा'' भी सात बार आया है।

हम देख चुके हैम कि इस सुसमाचार को लिखने के पीछे यूहन्ना का उद्देश्य यह था कि उसके पाठक विश्वास करें कि ''यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन'' पाएं (20:31)।

रूपरेखा

I. प्रस्तावना: परमेश्वर के पुत्र का प्रथम आगमन (1:1–18)

II. परमेश्वर के पुत्र के प्रथम वर्ष की सेवकाई (1:19–4:54)

III. परमेश्वर के पुत्र के द्वितीय वर्ष की सेवकाई (अध्याय 5)

IV. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: गलील में (अध्याय 6)

V. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: यरूशलेम में (7:1–10:39)

VI. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: पिरिया में (10:40–11:57)

VII. परमेश्वर के पुत्र द्वारा उसके अपनों के मध्य सेवकाई (12–17 अध्यायों में)

VIII. परमेश्वर के पुत्र का दु:खभोग और उसकी मृत्यु (18–19 अध्यायों में)

IX. परमेश्वर के पुत्र की विजय (अध्याय 20)

X. उपसंहार: पुनरूत्थित पुत्र उसके अपनों के साथ (अध्याय 21)

टीका

I. प्रस्तावना: परमेश्वर के पुत्र का प्रथम आगमन (1:1–18)

यूहन्ना *वचन* के विषय में कहते हुए अपने सुसमाचार का आरम्भ करता है – परन्तु वह पहले यह स्पष्ट नहीं करता कि वचन कौन या क्या है। वचन कथन (बोली) की एक इकाई है जिसके माध्यम से हम अपनी बात दूसरों पर व्यक्त करते हैं। परन्तु यूहन्ना यहाँ पर *कथन* (बोली) के विषय में नहीं, परन्तु एक *व्यक्ति* के विषय में बात कर रहा है। यह व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है। परमेश्वर ने प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में अपने आप को मनुष्यजाति पर पूर्ण रूप से प्रगट कर दिया है। इस संसार में आने के द्वारा, मसीह ने पूर्ण सिद्धता के साथ यह प्रगट कर दिया है कि परमेश्वर किसके समान है। क्रूस पर मरने के द्वारा, उसने हमें यह बता दिया है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम रखता है। इस प्रकार से मसीह मनुष्य के लिए परमेश्वर का जीवित वचन है, परमेश्वर के विचारों की अभिव्यक्ति।

अ. आदि और इतिहास में वचन

1:1 आदि में वचन था। उसके स्वयं का कोई आरम्भ नहीं था, परन्तु यह आदि से ही अस्तित्व में था। मानवीय मस्तिष्क जितना पीछे जाने की कल्पना कर सकता है, प्रभु यीशु मसीह उस समय भी वहाँ था। उसकी सृष्टि नहीं की गई। उसका कोई आरम्भ नहीं था। (परमेश्वर के पुत्र के इस सुसमाचार में वंशावली को कोई स्थान नहीं दिया जा सकता।) **और वचन परमेश्वर के साथ था**। उसका एक अलग और विशिष्ठ व्यक्तित्व था। वह कोई धारणा, विचार, या किसी तरह का कोई बेतुका उदाहरण नहीं है, परन्तु एक वास्तविक व्यक्ति है जो **परमेश्वर के साथ था**। वह न सिर्फ **परमेश्वर के साथ** निवास करता था, परन्तु वह स्वयं **परमेश्वर था**।

बाइबल हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर–शीर्ष में तीन व्यक्ति हैं – पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। ये तीनों व्यक्ति परमेश्वर हैं। इस पद में, परमेश्वर–शीर्ष के दो व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है – परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र। सुसमाचार में अनेक स्पष्ट वाक्य पाए जाते हैं जो कहते हैं कि *यीशु मसीह परमेश्वर है* , यह वाक्य उनमें से सबसे पहला वाक्य है। यह कहना पर्याप्त नहीं है कि वह ''एक ईश्वर'' है, वह ईश्वर के समान है, या यह कि वह अलौकिक है। बाइबल यह शिक्षा देती है कि वह **परमेश्वर** *है*।

1:2 हमें ऐसा लग सकता है कि पद 2 पिछले पद का ही दोहराव है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। यह पद हमें यह सिखाता है कि मसीह के व्यक्तित्व और ईश्वरत्व का कोई आरम्भ नहीं था। वह बैतलहम के शिशु के रूप में पहली बार एक व्यक्ति नहीं बना था। न ही अपने पुनरूत्थान के बाद किसी तरह से एक ईश्वर बन गया था। वह आदि से ही परमेश्वर है।

1:3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ। वह स्वयं ही कोई सृजित प्राणी नहीं था; बल्कि वह **सब कुछ** का सृष्टिकर्ता था। इसमें मानवजाति, पशु, आकाश के ग्रह, स्वर्गदूत – **सब कुछ** दृश्य और अदृश्य शामिल हैं। **जो कुछ उत्पन्न हुआ उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई**। यहाँ पर कोई भी अपवाद सम्भव नहीं है। जिस किसी वस्तु की भी सृष्टि हुई वह वस्तु उसी के द्वारा सृजी गई। एक सृष्टिकर्ता के रूप में, अवश्य ही, वह अपने द्वारा सृजी गई हर एक वस्तु से ऊपर है। परमेश्वर–शीर्ष के तीनों व्यक्ति सृष्टि के कार्य में शामिल थे: ''परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्प. 1:1)। ''परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था'' (उत्प. 1:2)। ''सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं'' (कुलु. 1:16ब)।

1:4 उस में जीवन था। इसका अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि वह जीवधारी (प्राणी) मात्र था, परन्तु यह कि वह **जीवन** का स्रोत था। यहाँ पर इस शब्द में आत्मिक और शारीरिक जीवन दोनों शामिल हैं। जब हमारा जन्म हुआ, तब हमें शारीरिक जीवन मिला। जब हम नया जन्म लेते हैं, तब हमें आत्मिक जीवन मिलता है। दोनों ही उसी से हमें मिलते हैं।

वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। जिस व्यक्ति ने हमें जीवन प्रदान किया वही **मनुष्यों की ज्योति** भी है। वह मनुष्य को आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा देता है।

अस्तित्व में रहना एक अलग बात है, और यह जानना उससे बिल्कुल अलग बात है कि जीवन कैसे जीएं, जीवन के सच्चे उद्देश्य को कैसे जानें, और स्वर्ग के मार्ग को कैसे जानें। जिस व्यक्ति ने हमें **जीवन** दिया वही हमें हमारी जीवनयात्रा के मार्ग में हमारा मार्गदर्शन करता है।

इस सुसमाचार के पहले अध्याय में हमारे प्रभु यीशु मसीह के सात अद्भुत पदनाम दिए गए हैं। उसे (1) वचन कहा गया है (1, 14 पदों में); (2) ज्योति कहा गया है (5, 7 पदों में); (3) परमेश्वर का मेम्ना कहा गया है (29, 36 पदों में); (4) परमेश्वर का पुत्र कहा गया है (34, 49 पदों में); (5) मसीह कहा गया है (पद 41); (6) इस्राएल का राजा कहा गया है (पद 49); और (7) मनुष्य का पुत्र कहा गया है (पद 51)। प्रथम चार पदनाम, जिनमें से प्रत्येक का उल्लेख कम से कम दो बार आया है, सब लोगों के लिए है। अन्तिम तीन पदनाम, जिनमें से प्रत्येक का उल्लेख सिर्फ एक एक बार आया है, पहले इस्राएल के लिए हैं।

1:5 ज्योति अंधकार में चमकती है। जब पाप आया तो साथ साथ मनुष्य के मन में **अन्धकार** ले आया। इसने संसार को इस अर्थ में **अन्धकार** में डूबो दिया कि मनुष्य सामान्य रूप से न ही परमेश्वर को जानता था और न ही उसे जानना चाहता था। इसी **अन्धकार** में प्रभु यीशु आया – वह एक अन्धकारमय स्थान में चमकती हुई **ज्योति** बन कर आया।

अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। इसका अर्थ यह हो सकता है कि जब प्रभु यीशु इस संसार में आया तो अन्धकार ने उसे नहीं समझा। मनुष्यों ने यह नहीं पहचाना कि वह वास्तव में कौन है, या वह किसलिए आया है। किन्तु, इसका एक और अर्थ हो सकता है: **अन्धकार** *उस पर जयवन्त न हुआ।* तब इसका अर्थ यह होगा कि मनुष्य द्वारा ठुकराया जाना और उससे बैर रखा जाना भी सच्ची **ज्योति** को चमकने से नहीं रोक सका।

ब. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवकाई (1:6–8)

1:6 पद 6 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में है, इस सुसमाचार को लिखने वाले यूहन्ना के विषय में नहीं। **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाले को **परमेश्वर** ने प्रभु यीशु मसीह के आगे आगे जाने के लिए भेजा था। उसका कार्य था कि वह मसीह के आगमन की घोषणा करे और लोगों को बताए कि वे मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाएं।

1:7 यह मनुष्य इस सच्चाई की गवाही देने के लिए आया था कि प्रभु यीशु सचमुच में संसार की **ज्योति** है, **ताकि** सब लोग अपना विश्वास उस पर ला सकें।

1:8 यदि यूहन्ना ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयास किया होता, तो वह उसे सौंपे गए कार्य के प्रति विश्वासयोग्य नहीं ठहरता। वह मनुष्यों को प्रभु यीशु की ओर जाने का इशारा करता था, अपने स्वयं की ओर आने का नहीं।

स. परमेश्वर के पुत्र का प्रथम आगमन (1:9–18)

1:9 वह **सच्ची ज्योति** था। युगों से अनेक व्यक्ति मार्गदर्शक और उद्धारकर्ता होने का दावा करते आ रहे हैं, परन्तु यूहन्ना ने जिस व्यक्ति की गवाही दी, वही सच्ची **ज्योति** था, वही सर्वोत्तम और एकमात्र सत्य ज्योति था। **सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी। सच्ची ज्योति** के **जगत में** आने पर हर एक व्यक्ति को ज्योति प्रदान की गई। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर एक व्यक्ति मसीह के सम्बन्ध में कुछ भीतरी ज्ञान हासिल कर लिया है। न ही इसका अर्थ यह है कि सब मनुष्यों ने प्रभु यीशु के बारे में कभी न कभी सुना है। बल्कि, इसका अर्थ यह है कि **ज्योति** सब लोगों पर चमकती है, और यह जाति, रंग, राष्ट्र का भेदभाव नहीं करती। इसका अर्थ यह भी है कि प्रभु यीशु ने मनुष्य पर उनका वास्तविक चरित्र प्रगट कर दिया है। एक सिद्ध व्यक्ति के रूप में प्रभु यीशु के इस संसार में आने के द्वारा, उसने हमें यह दिखा दिया कि शेष मनुष्य कितने असिद्ध हैं। यदि किसी कमरे में अंधकार हो, तो हमें फर्नीचरों पर जमी धूल दिखाई नहीं देती। परन्तु जब कमरे में प्रकाश लाया जाता है, तो वह कमरा वैसा ही दिखाई देने लगता है जैसा कि वह वास्तव में है। इसी प्रकार से, **सच्ची ज्योति** का चमकना मनुष्य पर प्रगट कर देता है कि मनुष्य वास्तव में क्या है।

1:10 बैतलहम में जन्म लेने के समय से उसके स्वर्ग

वापस लौटने तक, **वह** उसी **जगत में था** जिसमें आज हम रहते हैं। उसने सारे संसार को अस्तित्व में लाया और वह इसका स्वामी होने का पूरा अधिकार रखता है। उसे सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करने की बजाए, मनुष्य ने सोचा कि वह भी उन्हीं के समान एक साधारण मनुष्य मात्र है। उन्होंने उसके साथ एक परदेशी और बहिष्कृत व्यक्ति के समान व्यवहार किया।

1:11 वह अपने घर आया। उसने किसी अन्य के घर में अनाधिकृत प्रवेश नहीं किया। बल्कि वह उसी ग्रह में रहता था जिसे उसने स्वयं ही बनाया था। **उसके अपनों ने** (अपने लोगों ने) **उसे ग्रहण नहीं किया**। सामान्य अर्थ में यह सारे मनुष्यजाति के लिए कहा गया है, और यह सत्य है कि लगभग सारी मानवजाति ने उसका तिरिस्कार किया। परन्तु, विशिष्ठ अर्थ में, यहूदी जाति इस पृथ्वी पर की उसके द्वारा चुनी हुई जाति थी। जब वह संसार में आया, तो उसने अपने आप को यहूदियों के सामने एक मसीह के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु उन्होंने उसे **ग्रहण नहीं किया**।

1:12 इसलिए अब वह अपने आप को सारी मानवजाति के सामने पेश कर रहा है, और जो **उसे** ग्रहण करेंगे, उन्हें वह **परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार** देगा।

यह पद स्पष्ट बताता है कि हम **परमेश्वर के सन्तान** बन सकते हैं। वह भले कार्यों के द्वारा नहीं, न ही कलीसिया का सदस्य बनने के द्वारा, न ही अपनी ओर से सर्वोत्तम प्रयास करने के द्वारा – परन्तु उसे **ग्रहण** करने के द्वारा, और **उसके नाम पर** विश्वास करने के द्वारा।

1:13 शारीरिक अर्थ में सन्तान बनने का अर्थ होता है कि एक व्यक्ति **उत्पन्न** हो। ऐसा ही परमेश्वर की सन्तान बनने के मामले में भी होता है, एक व्यक्ति दूसरी बार उत्पन्न हो। यह नया जन्म या मनफिराव या उद्धार पाना कहलाता है। यह पद *तीन तरीके* बताता है जिसके द्वारा नया जन्म *नहीं* होता, और *एक* ऐसा *तरीका* बताता है जिसके द्वारा नया जन्म *होता* है। पहले, वह तरीका जिसके द्वारा नया जन्म नहीं होता। **न तो लोहू से**। इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति के माता–पिता मसीही होने के कारण वह स्वत: मसीही नहीं हो सकता। उद्धार माता–पिता के द्वारा **लोहू** के माध्यम से बच्चों में नहीं आता। यह **शरीर की इच्छा से** नहीं है। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति के पास उसके **शरीर** में सामर्थ नहीं है कि वह नया जन्म ले सके। यद्यपि वह उद्धार पाने के लिए नया जन्म अवश्य लेना चाहेगा, तौभी उसकी अपनी **इच्छा** उसे उद्धार दिला पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। **मनुष्य की इच्छा से** नहीं। कोई दूसरा मनुष्य एक व्यक्ति को उद्धार नहीं दे सकता। उदाहरण के लिए, एक प्रचारक किसी व्यक्ति को नया जन्म लेते देख पाने के लिए बहुत उत्सुक हो सकता है, परन्तु उस प्रचारक में वह सामर्थ नहीं है जिससे कि वह नया जन्म दे सके। तो फिर यह नया जन्म किस प्रकार से होता है? इसका उत्तर इन शब्दों में पाया जाता है: **परन्तु परमेश्वर से**। इसका अर्थ सिर्फ यह है कि नया जन्म देने की सामर्थ किसी और में नहीं परन्तु सिर्फ **परमेश्वर** में है।

1:14 और वचन देहधारी हुआ जब प्रभु यीशु ने बेतलहम की एक चरणी में जन्म लिया। वह हमेशा से ही परमेश्वर के पुत्र के रूप में पिता के साथ स्वर्ग में था, परन्तु अब उसने एक मानवीय शरीर में इस संसार में आने का निर्णय लिया। उसने **हमारे बीच डेरा किया**। वह सिर्फ कुछ ही देर के लिए हमारे सामने प्रगट नहीं हुआ था, कि उसके विषय में कोई भ्रम या गलतफहमी हो। परमेश्वर सचमुच में इस पृथ्वी पर आया और यहाँ एक मनुष्य के रूप में मनुष्यों के बीच में रहा। ‘‘**डेरा किया**’’ का अर्थ ‘‘तम्बू बना कर रहा’’ या ‘‘अपना तम्बू ताना’’ होता है। उसका शरीर वह तम्बू था जिसमें वह तैंतीस वर्ष तक मनुष्य के बीच में रहा।

हम ने उस की ऐसी महिमा देखी। बाइबल में ‘‘महिमा’’ का अर्थ अक्सर तेज चमक वाली रोशनी होता है जो उस समय देखी जाती है जब परमेश्वर उपस्थित होता है। इसका अर्थ परमेश्वर की सिद्धता और श्रेष्ठता भी होता है। जब प्रभु यीशु इस संसार में था, उसने अपनी महिमा को मांस के एक शरीर से ढांक कर रखा था। परन्तु उसकी महिमा दो तरीकों से प्रगट हुई *थी*। पहला, उसकी *नैतिक* महिमा थी। इससे हमारा तात्पर्य है उसके सिद्ध जीवन और चरित्र का तेज। उसमें कोई भी दाग या दोष नहीं था। वह अपने सारे चालचलन में सिद्ध था। उसके जीवन में हर एक सद्गुण पूर्ण संतुलन के साथ प्रगट होता था। उसके बाद उसकी महिमा की एक दृश्य चमक थी जो रूपान्तर के पर्वत पर देखी गई थी (मत्ती 17:1, 2)। उस समय, पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने उसके मुख को

सूर्य के समान चमकते हुए, और उसके वस्त्रों को चमकदार प्रकाश के समान चमचमाते देखा था। इन तीन चेलों को उस महिमा की एक पूर्व झलक दिखाई गई जो प्रभु यीशु उस समय धारण किए हुए होगा जब वह एक हजार वर्ष तक पृथ्वी पर राज्य करने के लिए वापस लौटेगा।

जब यूहन्ना ने कहा, "**हम ने उस की ऐसी महिमा देखी**," तो वह प्राथमिक रूप से, नि:सन्देह प्रभु यीशु की *नैतिक* **सामर्थ** के बारे में कह रहा था। उसने और दूसरे चेलों ने पृथ्वी पर एक परम सिद्ध जीवन के आश्चर्यकर्म को देखा था। परन्तु यह सम्भव है कि यूहन्ना ने यहाँ पर रूपान्तर के पर्वत की घटना को भी शामिल किया है। जिस **महिमा** को चेलों ने देखा उस महिमा से उन्हें यह संकेत मिला कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है। प्रभु यीशु **पिता** का एकलौता पुत्र है, अर्थात्, मसीह परमेश्वर का अद्वितीय पुत्र है। परमेश्वर के पास उसके समान और कोई दूसरा पुत्र नहीं है। एक अर्थ में, सारे सच्चे विश्वासी परमेश्वर के पुत्र हैं। परन्तु प्रभु यीशु, इस अर्थ में, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र है कि उसके दर्जे या उसकी श्रेणी में उसे छोड़ और कोई दूसरा नहीं है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, वह परमेश्वर के तुल्य है।

उद्धारकर्ता **अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण** था। एक ओर, जहाँ वह दूसरों के प्रति ऐसी भलाई का भाव रखता था जिसके वे योग्य नहीं, तो दूसरी ओर वह पूरी तरह से ईमानदार और खरा था, और वह कभी भी पाप के लिए कोई बहाना स्वीकार नहीं करता था,और न ही बुराई का पक्ष लेता था। एक ही समय में पूर्णत: अनुग्रहकारी होना और पूर्णत: धर्मी होना कुछ ऐसी बात है जो सिर्फ परमेश्वर में ही हो सकती है।

1:15 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने **गवाही दी** कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। प्रभु द्वारा सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ करने से पहले, यूहन्ना लोगों को उसके बारे में बताता रहा। जब प्रभु यीशु दृश्य में आया, तो यूहन्ना ने कुछ इस प्रकार से कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैं तुम्हें बताता था।" प्रभु यीशु जन्म और सेवकाई के मामले में यूहन्ना के **बाद** आया (देहधारी हुआ)। यूहन्ना के जन्म के छ: माह बाद प्रभु यीशु का जन्म हुआ, और जब यूहन्ना इस्राएल के लोगों को प्रचार कर रहा था और बपतिस्मा दे रहा था, तो उसके कुछ समय बाद प्रभु यीशु ने अपने आप को लोगों के सामने प्रस्तुत किया। परन्तु प्रभु यीशु को यूहन्ना **से पहिले** का स्थान दिया गया। वह यूहन्ना से बड़ा था; वह अधिक आदर के योग्य था क्योंकि वह यूहन्ना **से पहिले** था। वह आदि से अस्तित्व में था – परमेश्वर का पुत्र।

1:16 जितने प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं वे **उसकी परिपूर्णता से** आत्मिक सामर्थ प्राप्त करते हैं। **उसकी परिपूर्णता** इतनी महान है कि वह सब समय और सब देशों के मसीहियों को यह सामर्थ उपलब्ध करवा सकता है। **अनुग्रह पर अनुग्रह** का अर्थ शायद "बहुतायत का अनुग्रह" है। यहाँ **अनुग्रह** का अर्थ परमेश्वर के अनुग्रह की वह कृपा है जिसे वह अपने प्रिय बच्चों पर बरसाता है।

1:17 यूहन्ना पुराना नियम समय और नया नियम के युग के बीच में तुलना करता है। **व्यवस्था** जो **मूसा के द्वारा दी गई** वह अनुग्रह का प्रदर्शन नहीं था। इसमें लोगों को आज्ञा का पालन करने के लिए आदेश दिया गया था और यदि वे आज्ञा का पालन नहीं करते तो उनके लिए मृत्यु ठहराई गई थी। व्यवस्था मनुष्य को यह बताती तो थी कि सही क्या है परन्तु उसे करने के लिए सामर्थ प्रदान नहीं करती थी। व्यवस्था इसलिए दी गई थी कि वह मनुष्य को यह दिखाए कि वह पापी है, परन्तु यह उन्हें उनके पापों से उद्धार नहीं दिला सकती थी। **परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची**। वह संसार का न्याय करने के लिए नहीं, परन्तु अयोग्य लोगों को उद्धार देने के लिए आया, जो अपने आप को नहीं बचा सकते थे, और जो उसके शत्रु थे। यही **अनुग्रह** है – पृथ्वी के बदतर के लिए स्वर्ग का सर्वोत्तम।

यीशु मसीह के **द्वारा** न सिर्फ **अनुग्रह** आया, परन्तु उसके द्वारा **सच्चाई** भी आई। उसने अपने विषय में कहा है, "मैं . . . सत्य . . . हूँ।" वह अपने सारे वचनों और कार्यों में पूर्णत: ईमानदार और विश्वासयोग्य था। उसने **अनुग्रह** दिखाने में **सच्चाई** के साथ समझौता नहीं किया। यद्यपि वह पापियों से प्रेम रखता था, वह उनके पापों को पसन्द नहीं करता था। वह जानता था कि पाप की मजदूरी या सजा मृत्यु है। और इसलिए वह स्वयं ही उस दण्ड को चुकाने के लिए मर गया जिसे हमें सहना था, ताकि वह हमारी आत्मा को बचाने के द्वारा हम पर ऐसी भलाई दर्शा सके जिसके हम लायक नहीं थे और स्वर्ग में हमें एक घर दे सके।

1:18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा। परमेश्वर आत्मा है और इसलिए वह अदृश्य है। उसके पास कोई शरीर नहीं है। यद्यपि अवश्य ही पुराना नियम में वह मनुष्यों के सामने स्वर्गदूत या मनुष्य के रूप में दिखाई देता था, परन्तु ऐसे दर्शनों से यह प्रगट नहीं हुआ कि परमेश्वर किसके समान है। उस समय वह मात्र अस्थायी रूप से दिखाई देता था ताकि उसके द्वारा वह अपने लोगों से बात कर सके। प्रभु यीशु परमेश्वर का **एकलौता पुत्र**[1] है; वह परमेश्वर का अद्वितीय पुत्र है; उसके समान परमेश्वर का और कोई दूसरा पुत्र नहीं है। वह हमेशा परमेश्वर पिता से निकटता के एक विशेष स्थान का आनन्द उठाता है। जब प्रभु यीशु यहाँ इस पृथ्वी पर था, उस समय भी वह **पिता की गोद में** था। वह परमेश्वर के साथ एक था और परमेश्वर के तुल्य था। इस धन्य व्यक्ति ने मनुष्य के सामने इस बात को पूरी तरह से प्रगट कर दिया कि परमेश्वर कैसा है। जब मनुष्यों ने प्रभु यीशु को देखा, तो उन्होंने उसमें परमेश्वर को देखा। उन्होंने उसमें परमेश्वर को बोलते सुना। उन्होंने उसके द्वारा परमेश्वर के प्रेम और स्नेह का अनुभव किया। मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर के विचार और उसका रवैया मसीह के द्वारा पूर्ण रीति से **प्रगट** कर दिया गया।

II. परमेश्वर के पुत्र के प्रथम वर्ष की सेवकाई (1:19–4:54)

अ. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही (1:19–34)

1:19 जब **यरूशलेम** में यह खबर पहुँची कि **यूहन्ना** नाम का एक व्यक्ति इस्राएली जाति को मनफिराने के लिए कह रहा है क्योंकि मसीह आने वाला है, तब **यहूदियों ने . . . याजकों और लेवियों** के एक दल को यह पता लगाने के लिए भेजा कि यह व्यक्ति कौन है। याजक उन लोगों को कहा जाता था जो मन्दिर की महत्वपूर्ण सेवकाईयों को पूरा करते थे, जबकि लेवी उन लोगों को कहा जाता था जो वहाँ के सामान्य कार्यों को करते थे। "**तू कौन है?**" उन्होंने यूहन्ना से पूछा, "क्या तू मसीह है जिसकी लम्बे समय से प्रतीक्षा की जा रही है?"

1:20 यदि कोई दूसरा होता तो मसीह होने का दावा कर के यश पाने का अवसर छीन लेता। परन्तु यूहन्ना एक विश्वासयोग्य गवाह था। उसकी गवाही यह थी कि वह **मसीह नहीं** है।

1:21, 22 यहूदी लोग यह आशा कर रहे थे कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह इस पृथ्वी पर वापस आएगा (मलाकी 4:5)। इसलिए उन्होंने सोचा कि यदि यूहन्ना मसीह नहीं है तो फिर वह **एलिय्याह** है। परन्तु यूहन्ना ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि वह एलिय्याह नहीं है। व्यवस्थाविवरण 18:15 में, मूसा ने कहा था, "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात्, तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना।" यहूदी लोगों को यह भविष्यद्वाणी याद थी और उन्होंने सोचा कि यूहन्ना वह **नबी** हो सकता है जिसके बारे में मूसा ने कहा है। परन्तु एक बार फिर से यूहन्ना ने कहा कि ऐसा नहीं है। यहूदियों द्वारा भेजे गए दल को अब बिना किसी ठोस **उत्तर** के वापस जाने में लज्जा आने लगी, और इसलिए उन्होंने यूहन्ना से पूछा कि वह कौन है।

1:23 उसने कहा, "मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ।" दल के प्रश्न के उत्तर में यूहन्ना ने यशायाह 40:3 को उद्धरित किया, जहाँ यह भविष्यद्वाणी की गई है कि मसीह के आने की घोषणा एक अग्रदूत द्वारा की जाएगी। वह **शब्द** था, और इस्राएल **जंगल**। अपने पापों और परमेश्वर से दूर चले जाने के कारण लोग सूखे और उजाड़ हो चुके थे, जैसा कि कोई जंगली मरूस्थल। यूहन्ना ने अपने आप को सिर्फ **शब्द** कहा। उसने अपने आप को किसी ऐसे महान व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जिसकी प्रशंसा और सराहना की जाए, परन्तु एक **शब्द** के रूप में – जो देखा नहीं जा सकता परन्तु सिर्फ सुना जा सकता है। यूहन्ना **शब्द** था परन्तु मसीह **वचन** था। वचन को एक शब्द की आवश्यकता होती है कि यह लोगों के बीच में पहुँचाया जाए और बिना वचन के शब्द का कोई महत्व नहीं होता। वचन शब्द से अत्याधिक महान है परन्तु यह हमारे लिए सुअवसर होगा यदि हम भी उसके लिए शब्द बन जाएं।

यूहन्ना का सन्देश यह था, "**प्रभु का मार्ग सीधा करो।**" दूसरे शब्दों में, "मसीह आ रहा है। इसलिए अपने जीवन से हर उस वस्तु को हटा दो जो तुम्हें उसे स्वीकार करने के मार्ग में बाधा उत्पन्न करेगी। अपने पापों

से मन फिराओ, ताकि वह आकर इस्राएल के राजा के रूप में तुम पर राज्य कर सके।''

1:24, 25 यहूदियों के एक कट्टर समूह को फरीसी कहा जाता था जिन्हें अपने ऊपर घमण्ड था कि उन्हें व्यवस्था के विषय दूसरे से अधिक ज्ञान है और वे पुराना नियम का पालन बारीकी से करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। असल में, उन में से अधिकांश पाखण्डी थे जो धार्मिक होने का दिखावा करते थे परन्तु जो बहुत ही पापमय जीवन व्यतीत करते थे। वे यह जानना चाहते थे कि यदि यूहन्ना उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक नहीं है जिनका नाम उन्होंने अभी अभी लिया तो फिर उसके पास बपतिस्मा देने का अधिकार कहाँ से आया।

1:26, 27 यूहन्ना ने कहा, ''**मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ**।'' वह नहीं चाहता था कि कोई भी यह समझे कि *वह* (यूहन्ना) महत्वपूर्ण व्यक्ति है। उसका कार्य सिर्फ यह था कि वह मसीह के लिए मनुष्यों को तैयार करे। जब भी लोग उसकी बात सुन कर अपने पापों से मन फिराते थे तो वह भीतरी परिवर्तन के बाहरी चिन्ह के रूप में उन्हें पानी से बपतिस्मा देता था। यूहन्ना ने आगे कहा, ''**तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते**,'' ऐसा उसने प्रभु यीशु के बारे में कहा। फरीसी लोग प्रभु यीशु को उस मसीह के रूप में पहचान नहीं पाए जिसके आने की बहुत समय से प्रतीक्षा की जा रही थी। वास्तव में यूहन्ना फरीसियों से यह कह रहा था, ''तुम मुझे कोई महान व्यक्ति न समझो। तुम्हें जिस व्यक्ति की ओर ध्यान लगाना है वह है **प्रभु** यीशु मसीह; तौभी **तुम नहीं जानते** कि वह वास्तव में कौन है।'' वह वही है जो योग्य है। वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बाद में आया, तौभी वह सारी प्रशंसा और प्रतिष्ठा के योग्य है। एक दास या गुलाम का यह कर्तव्य था कि वह अपने स्वामी के जूतों के बन्धन को खोले। परन्तु यूहन्ना अपने आप को मसीह के लिए ऐसी तुच्छ सेवा करने के योग्य भी नहीं समझता था।

1:28 **बैतनिय्याह** (*एन.के.जे.वी. बाइबल* में ''बेथबारा'') की वास्तविक भोगौलिक स्थिति ज्ञात नहीं है। परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि यह स्थान **यरदन** नदी के पूर्व में स्थित था। यदि हम इसे बैतनिय्याह ही पढ़ते हैं, तो यह वह बैतनिय्याह नहीं हो सकता जो यरूशलेम के निकट था।

1:29 यरूशलेम से आए फरीसियों से बातचीत के बाद **दूसरे दिन, यूहन्ना** ने प्रभु **यीशु को अपनी ओर आते** देखा। उस दृश्य को देख रोमांचित और उत्तेजित हो कर, वह पुकार उठा, ''**देखो! परमेश्वर का मेम्ना** जो **जगत का पाप** उठा ले जाता है।'' मेम्ना यहूदियों के लिए एक बलिदान पशु था। परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को सिखाया था कि वे एक मेम्ने का वध करें और उसके लोहू को बलिदान के रूप में छिड़कें। मेम्ना उस दोषी व्यक्ति के स्थानापन्न के रूप में वध किया जाता था और उसका लोहू बहाया जाता था ताकि उस व्यक्ति को उसके पापों से क्षमा मिल सके।

तथापि, पुराना नियम समयकाल में वध किए जाने वाले मेम्ने के लोहू से पाप दूर नहीं होते थे। वे मेम्ने एक प्रतीक हुआ करते थे जो इस सच्चाई की ओर इशारा करते थे कि एक दिन परमेश्वर एक ऐसे मेम्ने का प्रबन्ध करेगा जो वास्तव में पापों को दूर कर देता है। वर्षों से यहूदी लोगों ने इस मेम्ने की प्रतीक्षा की। अब अन्ततः वह समय आ चुका था, और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने विजयी भाव से **परमेश्वर के** मेम्ने के आगमन की घोषणा की। मसीह की मृत्यु सारे **जगत** के पापों का दण्ड चुकाने के लिए पर्याप्त से भी अधिक थी, परन्तु सिर्फ वे ही पापी क्षमा किए जाते हैं जो प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं।

जे.सी. जोन्स ध्यान दिलाते हैं कि इन पदों में मसीहत के प्रायश्चित की श्रेष्ठता को दर्शाया गया है:

1. यह पीड़ित के स्वभाव के मामले में श्रेष्ठ है। जहाँ यहूदी धर्म के बलिदान अविवेकी मेम्ने हुआ करते थे, मसीहत का बलिदान परमेश्वर का मेम्ना है।

2. यह कार्य की सामर्थ के मामले में श्रेष्ठ है। यहाँ यहूदी धर्म के बलिदान प्रत्येक वर्ष पाप का स्मरण ही दिलाते थे, मसीहत के बलिदान ने सारे पाप को दूर कर दिया। ''उसने अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दिया।''

3. यह अपने प्रभाव के विस्तार के मामले में श्रेष्ठ है। जहाँ यहूदी बलिदान का अभिप्राय सिर्फ एक जाति को लाभान्वित करता था, मसीहत का बलिदान सारे जातियों के लिए है, ''जगत का पाप उठा ले जाता है।''[2]

1:30, 31 यूहन्ना बार बार लोगों को यह बात स्मरण दिलाने से नहीं थका कि वह सिर्फ अपने से किसी

आनेवाले महान व्यक्ति के लिए मार्ग तैयार करने वाला है। प्रभु यीशु यूहन्ना से उतना ही बड़ा था जितना कि परमेश्वर मनुष्य से बड़ा है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला प्रभु यीशु के जन्म से कुछ महिनों पहले उत्पन्न हुआ था, परन्तु प्रभु यीशु आदि से ही अस्तित्व में था। जब यूहन्ना ने कहा, ''**मैं तो उसे पहचानता न था**, तो उसके कहने का अर्थ शायद यह नहीं रहा होगा कि उसने उसे इससे पहले कभी नहीं देखा।''

इसलिए कि वे मौसेरे भाई थे; यह सम्भव है कि यूहन्ना और प्रभु यीशु एक दूसरे से भली-भांति परिचित रहे हों। परन्तु यूहन्ना ने अपने मौसेरे भाई को मसीह के रूप में उसके बपतिस्मा तक नहीं पहचाना था। यूहन्ना का मिशन था कि वह प्रभु के लिए मार्ग तैयार करे, और फिर जब वह प्रगट हो तो **इस्राएल** के लोगों को उसकी ओर इशारा कर उन्हें बताए कि यही मसीह है। इसी कारण से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला लोगों को **जल** से बपतिस्मा देता था – उन्हें मसीह के आगमन हेतु तैयार करने के लिए। अपनी ओर चेलों को आकर्षित करने के उद्देश्य से नहीं।

1:32 यहाँ पर उस समय की बात की जा रही है जब यूहन्ना ने प्रभु यीशु को यरदन में बपतिस्मा दिया था। जब प्रभु जल से बाहर निकला तब परमेश्वर का **आत्मा . . . कबूतर की नाई** उतरकर **उस पर ठहर गया** (मत्ती 3:16 से तु.की.)। लेखक आगे इसका अर्थ समझाता है।

1:33 परमेश्वर ने यूहन्ना पर यह प्रगट किया था कि मसीह आ रहा है और जब वह आएगा, तो **आत्मा** उस **पर** उतर कर ठहर जाएगा। इसलिए जब यह सब यीशु के साथ हुआ, तो यूहन्ना ने पहचान लिया कि यही वह है जो **पवित्र आत्मा से** बपतिस्मा देगा। **पवित्र आत्मा** एक व्यक्ति है, परमेश्वर-शीर्ष के तीन व्यक्तियों में से एक। वह परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के तुल्य है।

जबकि यूहन्ना **जल से** बपतिस्मा देता था, प्रभु यीशु **पवित्र आत्मा** से बपतिस्मा देगा। **पवित्र आत्मा** का बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन सम्पन्न हुआ (प्रेरित 1:5; 2:4, 38)। इस समय, **पवित्र आत्मा** स्वर्ग से नीचे उतरा कि हर एक विश्वासी की देह में निवास करे और साथ ही प्रत्येक विश्वासी को मसीह की देह, कलीसिया का एक अंग बना दे (1 कुरि. 12:13)।

1:34 प्रभु यीशु के बपतिस्मा के समय यूहन्ना ने जो कुछ देखा, उसके आधार पर उसने इस तथ्य की सकारात्मक **गवाही** दी कि नासरत का यीशु **परमेश्वर का पुत्र** है जिसके इस संसार में आने की भविष्यद्वाणी की गई थी। जब यूहन्ना ने कहा कि मसीह **परमेश्वर का पुत्र** है, तो वह यह कहना चाहता था कि प्रभु यीशु पुत्र-परमेश्वर है।

ब. अन्द्रियास, यूहन्ना, और पतरस की बुलाहट (1:35, 36)

1:35, 36 यहां पर ज़िक्र किया गया ''**दूसरे दिन**,'' अगले दिन अर्थात् तीसरे दिन की ओर संकेत करता है। इन मनुष्यों ने यूहन्ना के प्रचार को सुना और उसके द्वारा कही गई बातों पर विश्वास किया। परन्तु अब तक उनकी मुलाकात प्रभु यीशु से नहीं हुई थी। अब यूहन्ना प्रभु की गवाही सार्वजनिक रूप से दे रहा था। एक दिन पहले, उसने उसके व्यक्तित्व (परमेश्वर का मेम्ना) और उसके कार्य (जो जगत के पाप उठा ले जाता है) के विषय में बताया था। अब वह सीधे उसके व्यक्तित्व की ओर ध्यान खींच रहा है। उसका सन्देश छोटा, सरल, नि:स्वार्थ, और पूरी तरह से सिर्फ उद्धारकर्ता के विषय में था।

1:37 विश्वासयोग्यता से प्रचार करने के द्वारा, यूहन्ना ने अपने दो **चेले** खो दिये, परन्तु वह उन्हें **यीशु** के पीछे चलता देख प्रसन्न था। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने मित्रों को प्रभु यीशु के पीछे चलते हुए देखने के लिए उत्सुक हों, हमारे विषय में ऊँचे विचार रखते हुए देखने के लिए नहीं।

1:38 उद्धारकर्ता हमेशा ऐसे लोगों में रूचि रखता है जो उसके पीछे चलते हैं। यहाँ पर उसने इन दो चेलों की ओर उनसे यह पूछने के द्वारा रूचि दिखाई कि, ''**तुम किस की खोज में हो**?'' वह इस प्रश्न का उत्तर जानता था; वह सारी बातों को जानता था। परन्तु वह चाहता था कि वे अपनी अभिलाषा को शब्दों में व्यक्त करें। उनका उत्तर, ''**हे रब्बी, तू कहाँ रहता है?**'' यह दर्शाता है कि वे प्रभु के साथ रहना चाहते थे और उसे और बेहतर रीति से जानना चाहते थे। वे सिर्फ उस से मिल कर ही सन्तुष्ट नहीं हो गए। वे उसके साथ संगति करने के लिए तरस रहे थे। **रब्बी** एक इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ **गुरू** (शब्दश:, मेरे महान) होता है।

1:39 उस ने उन से कहा, ''चलो तो देख लोगे।'' उद्धारकर्ता के बारे में अधिक जानने की सच्ची

लालसा रखने वाले किसी भी व्यक्ति को वह वापस नहीं भेजता। प्रभु यीशु ने दोनों को उस स्थान पर चलने के लिए आमंत्रित किया जहाँ वह उस समय रहता था – आज की तुलना में शायद एक बहुत ही साधारण निवासस्थान में।

तब उन्होंने आकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसी के साथ रहे; और यह दसवें घण्टे के लगभग था। इन दोनों पुरुषों को आज तक ऐसा सम्मान नहीं मिला था। उन्होंने विश्व के सृष्टिकर्ता के साथ एक ही छत के नीचे रात बिताई। वे यहूदी जाति के सबसे पहले सदस्यों में से थे जिन्होंने मसीह को पहचान लिया।

दसवां घण्टा या तो 10 बजे सुबह या फिर 4 बजे शाम को कहा गया है। 10 बजे सुबह वाला (रोमी) समय को सामान्यत: प्राथमिकता दी जाती है।

1:40 उन दोनों में से . . . एक चेला चेला **अन्द्रियास** था। आज **अन्द्रियास** अपने **भाई, शमौन पतरस** जैसी पहचान नहीं रखता, परन्तु यह जानना रोचक है कि दोनों चेलों में अन्द्रियास प्रभु यीशु से पहले मिला।

दूसरे चेले का नाम हमें नहीं बताया गया है, परन्तु बाइबल के लगभग सभी विद्वान ऐसा मानते हैं कि वह यूहन्ना था – वही यूहन्ना जिसने इस सुसमाचार को लिखा। विद्वानों का तर्क है कि दीनता दिखाते हुए यूहन्ना ने अपना नाम यहाँ पर नहीं लिखा।

1:41 जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु को पा लेता है, तो वह सामान्यत: चाहता है कि उसके रिश्तेदार भी प्रभु यीशु से मिलें। उद्धार इतना उत्तम है कि इसे अपने तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसलिए अन्द्रियास जल्दी से **अपने सगे भाई शमौन** के पास रोमांचित कर देने वाले इस समाचार को लेकर गया, "**हम को ख्रिस्तुस अर्थात्, मसीह मिल गया है।**" यह घोषणा क्या ही चौंकाने वाली थी! लगभग चार हजार वर्षों से, लोग परमेश्वर द्वारा ठहराए गए और प्रतिज्ञा किए गए मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे। और अब **शमौन** अपने स्वयं के भाई के मुँह से यह चौंका देने वाली खबर सुनता है कि **मसीह** उनके पास में ही है। सचमुच में वे उस स्थान पर रह रहे थे जहाँ इतिहास बन रहा था। अन्द्रियास का सन्देश कितना सरल था। इस सन्देश में सिर्फ गिनती के शब्द थे, "**हम को ख्रिस्तुस अर्थात् मसीह मिल गया!**" – तौभी परमेश्वर ने पतरस को जीत लेने के लिए इस छोटे सन्देश का उपयोग किया। इससे हम यह सीखते हैं कि यह अनिवार्य नहीं है कि हम महान प्रचारक या चतुर उपदेशक हों। हमें प्रभु यीशु के बारे में बहुत ही साधारण शब्दों में बताना है, और शेष कार्यों को परमेश्वर पूरा करेगा।

1:42 अन्द्रियास अपने भाई को बिल्कुल सही स्थान पर और सही व्यक्ति के पास **लाया**। वह उसे कलीसिया में नहीं ले गया, न ही किसी मत की ओर, और न किसी पादरी के पास ले गया। **वह उसे यीशु के पास लाया।** क्या ही महत्वपूर्ण कार्य! अन्द्रियास की रूचि के कारण, शमौन बाद में मनुष्यों को पकड़ने वाला एक महान मछुवा, और प्रभु का एक अग्रणी प्रेरित बना। शमौन को उसके भाई की तुलना में अधिक प्रचार मिला, परन्तु अन्द्रियास नि:सन्देह पतरस के प्रतिफल का भागी बनेगा क्योंकि अन्द्रियास ही पतरस को प्रभु यीशु के पास लाया था। प्रभु को पतरस का नाम किसी ने नहीं बताया था तौभी वह उसका नाम जानता था। वह यह भी जानता था कि शमौन चंचल स्वभाव का है। और वह यह भी जानता था कि पतरस का यह स्वभाव बदल जाएगा, जिससे कि वह पत्थर के समान दृढ़ हो जाएगा। प्रभु यीशु यह सब कैसे जानता था? क्योंकि वह परमेश्वर था और है।

सचमुच शमौन का नाम बदल कर **कैफा** ('पत्थर' के लिए आरामी शब्द) रखा गया, और वह सचमुच एक मजबूत चरित्र का व्यक्ति बना, विशेषकर प्रभु के स्वर्ग पर चढ़ने और पवित्र आत्मा के आगमन के बाद।

स. फिलिप्पुस और नतनएल की बुलाहट (1:43–51)

1:43 इस अध्याय में अब हम चौथे **दिन** के विषय में पढ़ते हैं। बोस्क नामक विद्वान ध्यान दिलाते हैं कि पहले दिन हम *सिर्फ यूहन्ना* को देखते हैं (15–28 पदों में); दूसरे दिन हम *यूहन्ना और प्रभु यीशु* को देखते हैं (29–34 पदों में); तीसरे दिन *प्रभु यीशु और यूहन्ना* को देखते हैं (35–42 पदों में); और चौथे दिन हम *सिर्फ प्रभु यीशु* को देखते हैं (43–51 पदों में)। प्रभु उत्तर की ओर **गलील** नामक एक क्षेत्र को गया। वहाँ **फिलिप्पुस से मिलकर** उसने उसे अपने पीछे चलने के लिए बुलाया। "**मेरे पीछे हो ले!**" ये बहुत महत्वपूर्ण शब्द हैं क्योंकि एक महान व्यक्ति ने इसे कहा और इसलिए भी क्योंकि ये शब्द एक

महान सुअवसर प्रदान करते हैं। उद्धारकर्ता अभी भी यह साधारण, तौभी एक उच्च आमंत्रण सब स्थानों के समस्त लोगों को दे रहा है।

1:44 बैतसैदा गलील की झील के किनारे स्थित एक **नगर** था। संसार के कुछ ही नगरों को इतना अधिक सम्मान मिला है। प्रभु ने अपने महान आश्चर्यकर्मों में से कुछ आश्चर्यकर्म इस स्थान पर किये थे (लूका 10:13)। यहाँ पर **फिलिप्पुस, अन्द्रियास**, और **पतरस** का घर था। तौभी इस नगर ने उद्धारकर्ता को ठुकरा दिया, और इसके परिणामस्वरूप यह पूरी रीति से इस कदर नाश हो गया कि वर्तमान में यह बता पाना सम्भव नहीं है कि यह ठीक ठीक कहाँ पर बसा हुआ था।

1:45 फिलिप्पुस अपने इस नए आनन्द को किसी दूसरे के साथ बांटना चाहता था, इसलिए वह **नतनएल** के पास गया। नए विश्वासी आत्माओं को जीतने में सबसे आगे होते हैं। उसका सन्देश साधारण था, और सीधा सीधा कहा गया था। उसने नतनएल को बताया कि उसे मसीह **मिल गया** है जिसके बारे में **मूसा** और **भविष्यद्वक्ताओं ने** पहले ही से बता दिया था – **यीशु नासरी**। वास्तव में उसका सन्देश पूरी तरह से ठीक ठीक नहीं था, उसने प्रभु यीशु का परिचय **यूसुफ के पुत्र** के रूप में दिया। प्रभु यीशु का जन्म कुंवारी मरियम से हुआ था और उसका कोई शारीरिक पिता नहीं था। **यूसुफ** ने प्रभु यीशु को गोद लिया था और इस तरह से कानूनी तौर पर वह उसका पिता बन गया था। जेम्स एस. स्टीवर्ट ने इस विषय पर यह टिप्पणी की है:

> मसीह का कभी भी यह तरीका नहीं रहा कि वह आरम्भ में ही पूर्ण विश्वास की मांग करें। उसका यह भी तरीका कभी नहीं रहा कि अधूरे विश्वास के आधार पर वह कभी भी लोगों को अपने पीछे चलने से वंचित करे। और आज भी वह ऐसा ही है। वह अपने लोगों के साथ हो लेता है। वह उनसे निवेदन करता है कि वे जब कभी चाहें उससे जुड़ सकते हैं। उनमें जितना भी विश्वास हो वह उन्हें उतने ही विश्वास के साथ स्वीकार करता है। वह आरम्भ में इतने से ही सन्तुष्ट रहता है; और फिर यहाँ से वह अपने लोगों को आगे बढ़ाता ले चलता है, और उसने अपने प्रथम चेलों को भी यहीं से आगे बढ़ाया, और एक एक कदम बढ़ाते हुए, वह उन्हें सबसे भीतरी रहस्य तक ले गया कि वह कौन है साथ ही उसने शिष्यता की पूर्ण महिमा तक उसने उन्हें पहुँचाया।[3]

1:46 नतनएल के मन में कुछ प्रश्न थे। **नासरत** गलील का एक तुच्छ नगर था। नतनएल को यह असम्भव मालूम हुआ कि मसीह इतने निर्धन परिवेश में रहेगा। और इसलिए उसने अपने मन के प्रश्न को फिलिप्पुस के सामने रखा। **फिलिप्पुस** ने कोई वाद–विवाद नहीं किया। उसने महसूस किया कि इन आपत्तियों का उत्तर देने का सबसे सही तरीका यह होगा कि उस व्यक्ति को सीधे प्रभु यीशु से मिला दिया जाए – यह उन सब के लिए एक अनमोल शिक्षा है जो दूसरों को यीशु के लिए जीतने में लगे रहते हैं। तर्क–वितर्क न करें। चर्चाओं को लम्बी न खींचें। लोगों को आमंत्रित करें कि वे **चल कर देख लें**।

1:47 पद 47 में यह दर्शाया गया है कि प्रभु **यीशु** सारी बातों को जानता है। **नतनएल** से बिना किसी पूर्व परिचय के, उसने उसे एक ऐसा **इस्राएली** बताया जिसमें कोई छल या **कपट** नहीं था। याकूब ने व्यापार के ऐसे तरीके अपना कर प्रतिष्ठा कमाई थी जो बेईमानीपूर्ण थे, परन्तु नतनएल एक ऐसा ''इस्राएली'' था जिसमें ''याकूब'' नहीं था।

1:48 नतनएल का चौंकना स्वाभाविक था कि एक ऐसा व्यक्ति जो उसके लिए पूरी तरह से अनजान है उससे इस तरह बातें कर रहा है मानों वह उसे पहले से जानता हो। स्पष्ट है कि जब वह **अंजीर के पेड़ के तले** बैठा था तब वह पूरी तरह से छिपा हुआ था। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि अंजीर की नीचे झुलती हुई घनी डालियों और आसपास के बेल–बूटों के कारण उसे देख पाना सम्भव नहीं था। परन्तु प्रभु यीशु ने उसे **देखा,** यद्यपि वह पूरी तरह से छिपा हुआ था।

1:49 शायद **नतनएल** दो कारणों से प्रभु यीशु को मसीह मानने के लिए तैयार हुआ होगा: (1) प्रभु यीशु की वह सामर्थ जिससे वह उसे देख सका जो मानवीय दृष्टि से छिपा हुआ था, या (2) फिर प्रभु यीशु के मसीह होने का ज्ञान उसे अलौकिक रीति से प्राप्त हुआ होगा। चाहे जो भी कारण सही हो, अब वह यह जानता था कि प्रभु यीशु **परमेश्वर का पुत्र** और **इस्राएल का महाराजा** है।

1:50 प्रभु ने नतनएल को अपने मसीह होने के दो प्रमाण दिए। उसने उसके चरित्र का वर्णन किया, और उसने नतनएल को तब भी देख लिया जब उसे कोई दूसरा देख नहीं पा रहा था। ये दो प्रमाण नतनएल के लिए पर्याप्त

थे, और उसने विश्वास किया। परन्तु प्रभु यीशु उससे प्रतिज्ञा कर रहा है कि वह अब **इससे** भी **बड़े बड़े** प्रमाणों को देखेगा।

1:51 जब कभी प्रभु यीशु ''**सच सच**'' (शब्दश:, ''आमीन, आमीन''[4]) शब्दों के साथ अपनी बातें कहना आरम्भ करता था, तो वह कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात कहने वाला रहता था। यहाँ पर उसने नतनएल के सामने भविष्य की उस समय की एक तस्वीर रखी जब वह सारी पृथ्वी पर राज्य करने के लिए वापस आएगा। तब संसार यह जान लेगा कि बढ़ई का वह बेटा जो नासरत के छोटे से नगर में रहता था वास्तव में परमेश्वर का पुत्र और इस्राएल का राजा है। उस दिन, **स्वर्ग** खुल जाएगा। जब राजा यरूशलेम को अपनी राजधानी बना कर उस पर राज्य करेगा, तो परमेश्वर का अनुग्रह उस पर छाए रहेगा।

यह सम्भव है कि नतनएल याकूब की सीढ़ी वाली कहानी पर मनन कर रहा था (उत्प. 28:12)। यह सीढ़ी, जिस पर स्वर्गदूत चढ़ और उतर रहे थे, स्वयं प्रभु यीशु का एक चित्र है, जो स्वर्ग तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है। **परमेश्वर के** स्वर्गदूत **मनुष्य के पुत्र के करीब** चढ़ेंगे और उतरेंगे। स्वर्गदूत **परमेश्वर के** सेवक हैं, जो उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आग की ज्वाला की नाईं इधर उधर जा रहे हैं। जब प्रभु यीशु राजा के रूप में राज्य करेगा, तब ये स्वर्गदूत स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में उसकी इच्छा पूरी करते हुए आया जाया करेंगे।

प्रभु यीशु नतनएल से कह रहा था कि उसने अभी उसके मसीहत्व का एक छोटा सा प्रदर्शन ही देखा है। भविष्य में मसीह के राज्य में, वह प्रभु यीशु को परमेश्वर द्वारा अभिषेक किए गए पुत्र के रूप में पूर्ण प्रगट रूप में देखेगा। तब सारी मानवजाति यह जान लेगी कि नासरस से कुछ अच्छी वस्तु निकल कर आई है।

द. पहला चिन्ह: पानी को दाखरस में बदला (2:1–11)

2:1 तीसरे दिन नि:सन्देह गलील में प्रभु यीशु द्वारा बिताए गए **तीसरे दिन** को कहा गया है। 1:43 में उद्धारकर्ता उस क्षेत्र में गया। हम यह नहीं जानते कि **काना** ठीक ठीक कहाँ स्थित है, परन्तु पद 12 से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह कफरनहूम के निकट एक ऊँचे क्षेत्र में था।

इसी दिन **गलील के काना में किसी का ब्याह था**, और प्रभु **यीशु की माता भी वहां थी**। यह रोचक है कि मरियम को यहाँ पर **यीशु की माता** कहा गया है। उद्धारकर्ता के प्रसिद्ध होने का कारण यह नहीं था कि वह कुंवारी मरियम का पुत्र था, परन्तु मरियम के प्रसिद्ध होने का कारण अवश्य ही यह था कि वह हमारे प्रभु की माता थी। पवित्रशास्त्र में मसीह को हमेशा से ही सर्वोत्तम स्थान दिया गया है मरियम को नहीं।

2:2 प्रभु **यीशु और उसके चेले भी उस ब्याह में नेवते गए थे**। विवाह के आयोजकों द्वारा मसीह को आंमत्रित करने का निर्णय बुद्धिमानीपूर्ण था। इसलिए आज भी प्रभु यीशु को अपने विवाह में आमंत्रित करना एक बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय होता है। ऐसा करने के लिए, अवश्य ही, दूल्हा और दुल्हन दोनों को प्रभु यीशु में सच्चे (उद्धार पाए हुए) विश्वासी होना आवश्यक है। उसके बाद भी, उन्हें अपना जीवन उद्धारकर्ता को देना और यह सुनिश्चित करना आवश्यक कि उनका घर एक ऐसा स्थान बने जहाँ प्रभु यीशु को रहना प्रिय लगता हो।

2:3 दाखरस समाप्त हो चुका था। जब प्रभु **यीशु की माता** ने देखा कि दाखरस समाप्त हो गया है, तो उसने यह समस्या अपने पुत्र के सामने रखी। वह जानती थी कि वह दाखरस उपलब्ध करवाने के लिए कोई आश्चर्यकर्म करेगा, और शायद वह चाहती थी कि उसका पुत्र सारे एकत्रित पाहुनों के सामने अपने आप को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रगट करे। दाखरस पवित्रशास्त्र में अक्सर आनन्द को दर्शाता है। जब मरियम ने कहा, ''**उनके पास दाखरस नहीं रहा**,'' तो ऐसा कहने के द्वारा उसने उन स्त्रियों और पुरुषों की हालत को बिल्कुल ठीक ठीक सामने रखा जिनका अब तक उद्धार नहीं हुआ था। अविश्वासी के लिए कोई सच्चा, अटल आनन्द नहीं है।

2:4 प्रभु द्वारा अपनी माता को दिया गया उत्तर ठण्डा और रूखा प्रतीत होता है। परन्तु यह कोई कठोर फटकार नहीं है जैसा कि हमें लग रहा हो। यहाँ पर ''**महिला**'' शब्द आदरसूचक पदनाम के रूप में उपयोग में लाया गया है, जैसे, महोदया। जब प्रभु ने पूछा, ''**हे महिला मुझे तुझे से क्या काम?**'' तो उसने यह संकेत दिया कि उसके ईश्वरीय मिशन में वह अपनी माता के निर्देशों के आधीन नहीं है, परन्तु वह पूरी तरह से अपने स्वर्गीय पिता के प्रति आज्ञाकारी रहते हुए अपना कार्य

करेगा। मरियम प्रभु यीशु को महिमा पाते हुए देखना चाहती थी, परन्तु उसने उसे स्मरण दिलाया कि इसका समय **अभी नहीं आया** है। इससे पहले कि वह संसार के सामने एक सब पर विजयी मसीह के रूप में प्रगट हो, यह आवश्यक था कि वह बलिदान की वेदी पर पहले उतरे, और ऐसा उसने कलवरी के क्रूस पर कर दिया।

विलियम निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं:

> ''मुझे तुझ से क्या काम?'' इस वाक्यांश का प्रयोग बाइबल में अनेक बार किया गया है। इसका अर्थ है, ''हम दोनों के बीच में कौन सी बात समान है?'' इसका उत्तर है, ''कुछ भी नहीं!'' दाऊद इस वाक्यांश का उपयोग दो बार सरूयाह के पुत्रों (अपने चचेरे/ममेरे भाइयों) के विषय में करता है। उनके लिए यह कैसा असम्भव था कि उनके और उसके बीच में आत्मिक जीवन में कोई समानता हो! एलीशा ने 2 राजा 3 में इस वाक्यांश का उपयोग यह व्यक्त करने के लिए किया है कि आहाब के पुत्र यहोराम और उसके बीच कितनी गहरी खाई है। तीन बार, दुष्टात्माओं ने इसी वाक्यांश का उपयोग करते हुए यह प्रगट किया कि शैतान और मसीह में कोई समानता नहीं है। और अन्त में प्रभु इसे कुंवारी मरियम के लिए प्रयोग करते हुए यह दर्शाता है मसीह के निष्पाप ईश्वरत्व और मरियम के पापमय मनुष्य के बीच की खाई कितनी अलंघ्य है, और सिर्फ एक ही आवाज को उसके कानों पर अधिकार है।[5]

2:5 मरियम उसके वचनों के अर्थ को समझ गई, और इसलिए उसने सेवकों को निर्देश दिया कि **जो कुछ वह** आदेश दे वे वैसा ही करें। उसके वचन हम में से अनेक के लिए महत्वपूर्ण हैं। ध्यान दें कि मरियम ने सेवकों से यह नहीं कहा कि वे मरियम की बात सुनें, या किसी मनुष्य की बात सुनें। वह उनका ध्यान प्रभु यीशु की ओर ले गई और उन्हें बताया कि उसी की आज्ञा का पालन किया जाना है। प्रभु यीशु की शिक्षा नया नियम में दी गई है। जब हम इस अनमोल पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें मरियम द्वारा कही गई बात को अपने स्मरण में रखना चाहिए, ''**जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।**''

2:6 जिस स्थान पर विवाह हो रहा था, वहाँ **पत्थर के छः** बड़े बड़े मटके रखे हुए थे, जिनमें **दो दो तीन तीन मन** पानी समाता था। यह पानी यहूदी लोगों द्वारा अपने आप को अशुद्धता से शुद्ध करने के लिए उपयोग में लाया जाता था। उदाहरण के लिए, यदि किसी यहूदी ने जाने अनजाने में किसी लोथ को छू लिया, तो वह तब तक अशुद्ध माना जाता था जब तक वह तय विधि के अनुसार अपने आप को शुद्ध नहीं कर लेता था।

2:7 **यीशु** ने **मटकों में पानी** भरने के लिए निर्देश दिया। सेवकों ने तुरन्त ऐसा कर दिया। जब प्रभु आश्चर्यकर्म करने वाला था उस समय उसने वहाँ उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग किया। उसने मनुष्यों को मटके लेकर उसमें **पानी** भरने दिया, परन्तु उसके बाद उसने जो किया उसे कोई दूसरा मनुष्य कभी नहीं कर सकता – उसने पानी को दाखरस में बदल दिया! मटकों में पानी चेलों ने नहीं, परन्तु सेवकों ने भरा था। इस तरह से प्रभु ने छल की सारी सम्भावना को समाप्त कर दिया। साथ ही, मटकों को **मुँहामुँह** भर दिया गया था, ताकि कोई भी यह न कह सके कि पानी में दाखरस मिलाया गया है।

2:8 अब आश्चर्यकर्म हो चुका था। प्रभु ने सेवकों को निर्देश दिया कि वे मटकों में से **निकालकर** उसे **भोज के प्रधान के पास ले** जाएं। इससे यह स्पटष हो जाता है कि यह आश्चर्यकर्म तुरन्त हो गया। पानी को दाखरस में बदलने के लिए समय नहीं लगा, परन्तु यह क्षण भर में हो गया। जैसा कि किसी ने काव्यात्मक शैली में कहा है, ''अचैतन्य जल ने अपने परमेश्वर को देखा और झेंप गया।''

2:9 **भोज** का **प्रधान** यहाँ उस व्यक्ति को कहा गया है जिसे मेज़ और भोजन का प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी दी गई थी। **जब** उसने इसे **चखा**, तो उसने पाया कि कुछ असामान्य बात हुई है। वह **नहीं जानता था कि** दाखरस **कहाँ से आया**, परन्तु वह यह जान गया कि यह बहुत ही उच्च कोटि का दाखरस है और इसलिए उसने तुरन्त ही **दूलहे को** बुलाया।

दाखरस (दाखमधु) को लेकर मसीहियों का रवैया वर्तमान में कैसा होना चाहिए? कभी कभी दाखमधु को दवाई के रूप में लेने की सलाह दी जाती है, और यह नया नियम की शिक्षा के अनुरूप है (1 तीमु. 5:23)। इसका उपयोग मेज़ पर करने के मामले में मसीहियों को हर स्थिति और हर संस्कृति में बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए, और सारी बातों में परमेश्वर की महिमा को प्रधानता देना चाहिए, अपनी स्वयं की अभिलाषाओं की तृष्टि को नहीं। परमेश्वर

की भली भेंटों का कभी तिरिस्कार न करें, विश्वासियों को पियक्कड़पन से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र की चेतावनियों को अपने ध्यान में रखना है (रोमि. 13:13; गला. 5:21; इफि. 5:18; 1 पत. 4:3), और साथ ही सामान्य रूप से संयम की कमी के विरोध में दी गई चेतावनियों को भी अपने ध्यान में रखना आवश्यक है (1 कुरि. 6:12)। अन्तिम बात, पवित्र लोगों को किसी भी ऐसे व्यवहार से बचना चाहिए जो किसी के लिए ठोकर का कारण बन सकता है (रोमि. 14:21)।

2:10 भोज का प्रधान हमारा ध्यान उस महत्वपूर्ण अन्तर की ओर ले जाता है जो प्रभु यीशु के कार्य करने के तरीके और सामान्य मनुष्य के कार्य करने के तरीके में है। विवाह के समय सामान्य चलन यह होता था कि पहले सबसे अच्छा **दाखरस** परोसा जाता था जब लोग उसका स्वाद लेकर आनन्द लेने की अवस्था में होते थे। बाद में जब वे खा पी चुके होते थे, तो उन्हें पेय पदार्थों की गुणवत्ता का पता नहीं चल पाता था। इस विवाह में, सबसे अच्छा दाखमधु सबसे अन्त में दिया गया। इसमें हमारे लिए एक आत्मिक सन्देश पाया जाता है। संसार सामान्यत: आरम्भ में लोगों को सबसे अच्छी चीजें देता है। यह अपने सबसे आकर्षक प्रस्तावों को युवाओं के सामने रखता है। उसके बाद वे व्यर्थ के भोग विलास में अपना जीवन खपा देते हैं, तो संसार के पास एक व्यक्ति की वृद्धावस्था के लिए बचे खुचे तलछट के सिवाय और कुछ नहीं रहता। मसीही जीवन बिल्कुल उल्टा है। मसीह सर्वोत्तम दाखरस अन्त तक बचा कर रखता है। भोज के बाद उपवास का समय आता है।

पवित्रशास्त्र का यह भाग यूहदी जाति पर सीधे सीधे लागू होता है। उस समय यहूदी धर्म में कोई सच्चा आनन्द नहीं था। लोग रीति विधियों और संस्कारों के नीरस चक्रों में ही घूमते रह जा रहे थे, परन्तु जीवन उनके लिए बेस्वाद हो चुका था। वे ईश्वरीय आनन्द को लेकर अनजान थे। प्रभु यीशु उन्हें यह सिखाना चाह रहा था कि वे उस पर विश्वास लाएं। वह उनके नीरस अस्तित्व को आनन्द की भरपूरी में बदल देगा। यहूदी रीतिविधियों और संस्कारों का पानी मसीह की आनन्दमय वास्तविकता में बदल जाएगा।

2:11 यह वाक्य कि '**यह पहिला चिन्ह** था,' उन हास्यपद आश्चर्यकर्मों को प्रभु यीशु द्वारा किए जाने के दावे को निरस्त कर देते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे प्रभु यीशु के द्वारा उसकी बाल्यावस्था में किए गए थे। वे छद्म सुसमाचार में पाए जाते हैं, जैसे ''पतरस का सुसमाचार।'' इस प्रकार की पुस्तकों में ऐसे ऐसे आश्चर्यकर्मों को प्रभु यीशु के द्वारा उसकी बाल्यावस्था में किया गया बताया गया है जो आश्चर्यकर्म की प्रकृति में ईशनिन्दक है। इस बात को पहले से ही जान कर, पवित्र आत्मा ने हमारे प्रभु यीशु के जीवन की इस अवधि और उसके चरित्र को इस छोटी सी अतिरिक्त टिप्पणी (**यह पहिला चिन्ह**) के द्वारा एक रक्षात्मक कवच से ढांक दिया।

पानी को दाखरस में बदलना एक चिन्ह था, अर्थात्, एक आश्चर्यकर्म था जिसमें एक अर्थ छिपा था। यह अलौकिक पुरुष के द्वारा किया गया एक कार्य था जिसके पीछे एक आत्मिक अर्थ छिपा हुआ था। ये आश्चर्यकर्म इसलिए भी किए गए थे ताकि यह दर्शाया जा सके कि प्रभु यीशु वास्तव में परमेश्वर के द्वारा भेजा गया मसीह है। इस चिन्ह को करने के द्वारा उसने **अपनी महिमा प्रगट की**। उसने मनुष्यों के सामने यह प्रगट किया कि वह वास्तव में परमेश्वर है – जो देह रूप में प्रगट हुआ है। अवश्य ही, इससे पहले भी एक प्रकार से उन्होंने उस पर विश्वास किया था, परन्तु अब उनका विश्वास और दृढ़ हो गया, और वे उस पर और पूर्णता के साथ भरोसा करने लगे। सिन्डिलॉन जोन्स ने हमारा ध्यान निम्नलिखित बिन्दु की ओर खींचा है:

> मूसा का पहला आश्चर्यकर्म था पानी को लोहू में बदलना; इसमें एक बहुत ही विनाशकारी प्रभाव था। परन्तु मसीह का पहला आश्चर्यकर्म था पानी को दाखरस में बदलना; इसमें राहत और आराम देने वाला प्रभाव था।[6]

इ. परमेश्वर का पुत्र अपने पिता के घर को शुद्ध करता है (2:12–17)

2:12 अब उद्धारकर्ता, **उसकी माता, उसके भाई** और **उसके चेले** काना से **कफरनहूम को गए**। वे कफरनहूम में कुछ ही **दिन** ठहरे। शीघ्र ही, प्रभु यरूशलेम को गया।

2:13 यहाँ से आरम्भ करते हुए, हम **यरूशलेम** में प्रभु द्वारा पहली बार उसकी सेवा के विषय में पाते हैं। उसकी इस सेवकाई का यह चरण अध्याय 3 के पद 21 तक में पाया जाता है। उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई का आरम्भ और समापन दोनों ही **फसह** के समय मन्दिर को शुद्ध करने के द्वारा किया था (मत्ती 21:12, 13; मर. 11:15-18; लूका 19:45, 46)। फसह का पर्व एक वार्षिक पर्व हुआ करता था जिसमें इस्राएलियों के मिस्र से छुटकारा और लाल समुद्र को पार कर मिस्र होते हुए प्रतिज्ञा के देश तक पहुँचने की घटना को स्मरण किया जाता है। फसह को मनाए जाने का पहला उल्लेख निर्गमन 12 में पाया जाता है। एक भक्त यहूदी होने के कारण, प्रभु यीशु यहूदी कैलेण्डर के इस महत्वपूर्ण दिन में **यरूशलेम को गया**।

2:14 **मन्दिर में** आते हुए, उसने **पाया** कि यह व्यापार का एक स्थान बन चुका था। वहाँ **बैल और भेड़ और कबूतर** को बेचा जा रहा था, और **सर्राफ़ों** द्वारा व्यवसाय किया जा रहा था। आराधना करनेवालों को पशु और पक्षी बलिदान चढ़ाने के लिए बेचे जा रहे थे। सर्राफ़ा व्यापारी बाहर से आए हुए परदेशियों से मुद्राएं लेकर उन्हें यरूशलेम में प्रचलित मुद्रा में बदल रहे थे ताकि परदेशी यहूदी मन्दिर के कर को चुका सकें। यह बात सब जानते थे कि ये सर्राफ़ा व्यापारी दूर से आए हुए परदेशी यहूदियों की मजबूरी का लाभ उठाकर उनसे बहुत अधिक पैसे वसूलते थे।

2:15 प्रभु ने जो **कोड़ा** बनाया वह **रस्सियों** से बनाया गया एक छोटा चाबुक रहा होगा। यह उल्लेख नहीं किया गया है कि उसने इसका उपयोग किसी पर किया हो। बल्कि, यह सम्भव है कि यह मात्र उसके अधिकार का एक प्रतीक था जिसका वह उपयोग कर रहा था। कोड़े को लहराते हुए, उसने व्यापारियों को **मन्दिर से निकाल दिया** और सर्राफ़ों के **पीढ़ों को उलट दिया**।

2:16 व्यवस्था में निर्धनों को छूट दी गई थी कि वे कबूतर का एक जोड़ा ही चढ़ा दें, क्योंकि वे इससे अधिक मंहगे पशुओं को चढ़ा पाने की हैसियत नहीं रखते थे। **कबूतर बेचने वालों** को प्रभु ने आदेश दिया कि वे **उन्हें यहाँ से ले** जाएं। यह उचित नहीं था कि वे उसके **पिता के भवन को व्यापार का घर** बना दें। सब समयों में, परमेश्वर ने धार्मिक सेवाओं को धनी बनने का माध्यम बनाने के विरुद्ध चेतावनी दी है। प्रभु के इस कदम में कुछ भी अन्यायपूर्ण या कठोर नहीं था। बल्कि, उसने जो कुछ भी यहाँ किया वह उसकी पवित्रता और धार्मिकता को दर्शाता है।

2:17 जब **उसके चेलों** ने यह सब देखा, तो उनका ध्यान भजन 69:9 की ओर गया जहाँ यह भविष्यद्वाणी की गई है कि जब मसीह आएगा, तो उसे परमेश्वर के लिए एक ऐसी **धुन** होगी कि वह उसके पीछे अपने आप को पूरी तरस से खपा देगा। अब वे परमेश्वर की आराधना की पवित्रता को कायम रखने के लिए प्रभु यीशु में एक दृढ़ प्रतिबद्धता को देख रहे हैं, और उन्होंने यह पहचान लिया कि यही वह जन है जिसके बारे में भजनकार ने भविष्यद्वाणी की है।

हमें यह स्मरण रखना है कि एक मसीही की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है। जिस तरह से प्रभु यीशु यरूशलेम के मन्दिर को शुद्ध रखने के लिए चिंतित था, उसी प्रकार से हमें भी सावधान रहना है कि हम अपने शरीर को लगातार शुद्ध करते रहने के लिए उसे प्रभु को सौंप दें।

फ. यीशु अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान की भविष्यद्वाणी करता है (2:18-22)

2:18 ऐसा प्रतीत होता है कि यहूदी लोग हमेशा से ही कुछ चिन्ह और आश्चर्यकर्म होने की राह देखते रहते थे। उन्होंने कुछ इस प्रकार से कहा, "यदि तू हमारे लिए कोई महान, पराक्रमी कार्य करे, तो हम तुझ पर विश्वास कर लेंगे।" किन्तु, प्रभु यीशु एक के बाद एक आश्चर्यकर्म करता रहा, और तौभी वे अपने हृदयों को उसके लिए बन्द किए रहे। पद 18 में उन्होंने व्यवसायियों को मन्दिर से बाहर खदेड़ने के उसके अधिकार पर प्रश्न उठाया। उनकी मांग थी कि वह मसीह होने के अपने दावे के समर्थन में कोई **चिन्ह** दिखाए।

2:19 उत्तर में, प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के सम्बन्ध में एक अद्‌भुत बात कही। उसने उनसे कहा कि वे उसके पवित्रस्थान को **ढा** दें, परन्तु **तीन दिन में** वह उसे फिर से **खड़ा कर** देगा। मसीह का ईश्वरत्व इस पद में एक बार फिर देखा जा सकता है। सिर्फ परमेश्वर यह कह सकता है, "**मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा**।"

2:20 यहूदियों ने उसे नहीं समझा। वे आत्मिक सच्चाइयों की तुलना में भौतिक वस्तुओं में अधिक रूचि रखते थे। एकमात्र मन्दिर, जिसका विचार उनके दिमाग में आ सकता था, वह था हेरोदेस का मन्दिर जो उस समय यरूशलेम में था। **इस मन्दिर को बनाने में छियालीस वर्ष** लगे थे, और वे यह समझ ही नहीं सकते थे कि किस प्रकार कोई भी मनुष्य इसे तीन दिन में खड़ा कर सकेगा।

2:21 किन्तु, प्रभु यीशु मसीह, यह बात **अपनी देह** के विषय में कह रहा था, जो ऐसा पवित्रस्थान था जिसमें परमेश्वरत्व अपनी परिपूर्णता में वास करता था। जिस प्रकार से इन यहूदियों ने यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध कर दिया था, उसी तरह से वे कुछ ही वर्षों में उसे भी मार डालेंगे।

2:22 कुछ समय बाद, जब प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया गया और **जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने** यह प्रतिज्ञा की थी कि वह तीन दिन बाद जी उठेगा। अपनी आँखों के सामने ही भविष्यद्वाणी की इस अद्‌भुत पूर्णता को देखकर **उन्होंने पवित्रशास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।**

अक्सर हमारा सामना ऐसी सच्चाइयों से होता जो हमारे समझने में कठिन होती हैं। परन्तु यहाँ पर हम यह सीखते हैं कि हमें परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छिपा कर रखना चाहिए। कुछ समय बाद प्रभु इसे हमारे सामने स्पष्ट करेगा भले ही आज हम इसे न समझते हों। जब यह पद कहता है कि उन्होंने **पवित्रशास्त्र की प्रतीति की**, तो इसका अर्थ यह है कि उन्होंने पुराना नियम में मसीह के पुनरूत्थान से सम्बन्धित भविष्यद्वाणी पर विश्वास किया।

ग.अनेक लोगों ने मसीह पर विश्वास करने का दावा किया (2:23–25)

2:23 यरूशलेम में प्रभु यीशु द्वारा दिखाए गए **चिन्हों** के परिणामस्वरूप **बहुतों** ने **उसके नाम पर विश्वास किया**। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने सरल विश्वास के साथ अपने जीवन को उसे समर्पित कर दिया; बल्कि, उन्होंने उसे ग्रहण करने का दावा किया। उनके इस कदम में कोई वास्तविकता नहीं थी; यह प्रभु यीशु के पीछे चलने का मात्र बाहरी दिखावा था। ऐसी ही स्थिति आज भी हम संसार में देख सकते हैं जहाँ अनेक लोग मसीही होने का दावा तो करते हैं परन्तु उन्होंने कभी भी प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा नया जन्म नहीं पाया है।

2:24 यद्यपि बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया, तौभी प्रभु **यीशु ने** उन पर विश्वास (यूनानी में समान शब्द) नहीं किया। अर्थात्, उसने **अपने आप को उनके भरोसे नहीं छोड़ा**। वह जानता था कि वे मात्र जिज्ञासावश उसके पास आ रहे हैं। वे कोई सनसनीखेज और चमत्कारिक चीज़ देखना चाहते थे। **वह सब को जानता था** – उनके विचारों और उनके अभिप्रायों को। वह जानता था कि वे इस तरह से क्यों कर रहे हैं। वह जानता था कि उनका विश्वास सच्चा है या फिर सिर्फ एक दिखावा।

2:25 मनुष्य के हृदय की बात को स्वयं प्रभु यीशु से बेहतर और कोई नहीं जान सकता। किसी को उसे इस विषय पर कुछ भी बताने या सिखाने की आवश्यकता नहीं थी। वह पूरी तरह से जानता था कि **मनुष्य के मन में** क्या था और वह इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहा था।

ह. यीशु ने नीकुदेमुस को नया जन्म के बारे में शिक्षा दी (3:1–21)

3:1 नीकुदेमुस की कहानी में और पिछले खण्ड में कुछ अन्तर दिखाया गया है। यरूशलेम के अनेक यहूदी ऐसा दावा करते थे कि वे प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, परन्तु प्रभु जानता था कि उनका विश्वास सच्चा नहीं था। नीकुदेमुस एक अपवाद था। प्रभु ने जान लिया कि उसमें सच्चाई को जानने के लिए एक सच्ची लालसा है। पद 1 का आरम्भ एक सम्बन्ध जोड़ने वाले इस शब्द से होना चाहिए, *''परन्तु''* **फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।**

नीकुदेमुस अपने लोगों के मध्य में एक शिक्षक के रूप में जाना जाता था। शायद वह प्रभु से शिक्षा लेने आया था, ताकि वह अपने इस अतिरिक्त ज्ञान के साथ यहूदियों के बीच में जा सके।

3:2 बाइबल में यह नहीं बताया गया है कि नीकुदेमुस प्रभु **यीशु के पास . . . रात को** *क्यों* आया। इसका सबसे उपयुक्त उत्तर यह है कि वह प्रभु यीशु के पास जाते हुए देखे जाने से शर्म महसूस कर रहा हो, क्योंकि प्रभु को अधिकांश यहूदी स्वीकार नहीं करते थे। किन्तु, अवश्य ही, वह प्रभु यीशु के पास आया था। नीकुदेमुस ने प्रभु को **परमेश्वर** के द्वारा भेजे गए एक **रब्बी** के रूप में स्वीकार किया, क्योंकि कोई भी इस प्रकार के चिन्हों को **परमेश्वर** की प्रत्यक्ष सहायता के बिना नहीं दिखा सकता। अपनी सारी शिक्षा के बाद भी, नीकुदेमुस प्रभु को देह रूप में प्रगट परमेश्वर के रूप में नहीं मानता था। वह उन अनेक लोगों के समान था जो आज कहते हैं कि प्रभु यीशु एक महान व्यक्ति, एक अद्‌भुत शिक्षक, और एक आदर्श उदाहरण था। इस प्रकार के सारे कथन पूर्ण सत्य से दूर ही हैं। प्रभु यीशु परमेश्वर *था* और *है*।

3:3 सरसरी तौर पर पढ़ने से, पहले तो प्रभु यीशु का उत्तर नीकुदेमुस द्वारा अभी अभी कही गई बात से सम्बन्धित नहीं लगता। हमारा प्रभु कह रहा है, ‘‘नीकुदेमुस तू मुझ से शिक्षा ग्रहण करने आया है, परन्तु वास्तव में तुझे **नये सिरे से जन्म** लेने की आवश्यकता है। तुझे यहीं से आरम्भ करने की आवश्यकता है। तुझे नया जन्म लेने की आवश्यकता है। अन्यथा, तू **परमेश्वर का राज्य देख** नहीं सकता।’’

प्रभु ने अपने इन अद्‌भुत वचनों का आरम्भ इस वाक्यांश के साथ किया, ‘‘**सच सच**’’ (शब्दश: *आमीन, आमीन*)। ये वाक्यांश हमें इस सच्चाई के लिए सचेत करते हैं कि प्रभु द्वारा अब एक महत्वपूर्ण सच्चाई दी जाने वाली है।

एक यहूदी के रूप में, नीकुदेमुस यह आशा कर रहा था कि मसीह आकर इस्राएल को रोमी शासन की गुलामी से छुटकारा देगा। उस समय संसार पर रोमी साम्राज्य का अधिकार था, और यहूदी लोग रोमी नियमों और शासन के आधीन थे। नीकुदेमुस उस दिन की बाट जोह रहा था जब मसीह पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा, जब यहूदी लोग जातियों पर प्रधानता करेंगे, और जब उनके सारे शत्रु नाश किए जाएंगे। अब प्रभु ने नीकुदेमुस को जानकारी दी कि उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए एक मनुष्य को **नये सिरे से** जन्म लेना आवश्यक है। जिस प्रकार से भौतिक जीवन के लिए शारीरिक जन्म आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से ईश्वरीय जीवन के लिए दूसरा जन्म लेना आवश्यक है। (**नये सिरे से** जन्म लेने का अर्थ ऊपर से/स्वर्ग की ओर से जन्म लेना भी हो सकता है)। दूसरे शब्दों में, मसीह के राज्य में सिर्फ वे ही व्यक्ति प्रवेश कर सकते हैं जिनका जीवन बदल चुका है। चूंकि उसका राज्य धार्मिकता का राज्य होगा, उसकी प्रजा को भी धर्मी होना आवश्यक है। वह ऐसे लोगों पर राज्य नहीं कर सकता जो पाप करते जा रहे हैं।

3:4 यहाँ पर एक बार फिर से हम देखते हैं कि मनुष्यों के लिए प्रभु के वचन को समझना कितना कठिन है। **नीकुदेमुस** हर बात को शब्दश: समझना चाह रहा था। वह यह नहीं समझ सका कि किस प्रकार से एक परिपक्व हो चुका व्यक्ति फिर से जन्म ले सकता है। वह एक मनुष्य के द्वारा फिर से अपनी **माता के गर्भ** में प्रवेश कर पाने की भौतिक असम्भवता पर विचार कर रहा था।

नीकुदेमुस का जीवन यह दर्शाता है कि ‘‘शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जाँच आत्मिक रीति से होती है’’ (1 कुरि. 2:14)।

3:5 आगे समझाते हुए, प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस को बताया कि उसे **जल और आत्मा से** जन्म लेना आवश्यक है। अन्यथा, वह **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश** नहीं कर सकता।

प्रभु यीशु के कहने का क्या अर्थ है? अनेक लोग इस बात पर जोर देते हैं कि यहाँ *शब्दश:* पानी का आशय है, और प्रभु यीशु ने उद्धार के लिए बपतिस्मा की अनिवार्यता के बारे में कहा है। किन्तु, इस प्रकार की शिक्षा शेष बाइबल में दी गई शिक्षा के विपरीत है। परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन में हम यह पढ़ते हैं कि उद्धार सिर्फ प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने से मिलता है। बपतिस्मा उन लोगों के लिए है जिनका उद्धार हो चुका है, परन्तु यह उद्धार का एक माध्यम नहीं है।

कुछ लोगों का कहना यह है कि इस पद में **जल** परमेश्वर के वचन को कहा गया है। इफिसियों 5:25, 26 में जल परमेश्वर के वचन से नजदीकी से जुड़ा हुआ है। साथ ही, 1 पतरस 1:23 और याकूब 1:18 में कहा गया है कि नया जन्म परमेश्वर के वचन के माध्यम से होता है। इसलिए यह सम्भव है कि इस पद में जल परमेश्वर के

वचन को कहा गया हो। हम जानते हैं कि पवित्रशास्त्र से बाहर और कहीं उद्धार नहीं है। नया जन्म पाने से पहले परमेश्वर के वचन में दिए गए सन्देश को एक पापी द्वारा अपने जीवन में आत्मसात करना है।

परन्तु यह भी सम्भव है कि **जल** का अर्थ यहाँ पर पवित्र आत्मा हो। यूहन्ना 7:38, 39 में प्रभु यीशु ने जीवन के जल की नदियों के बारे में बताया है, और हमें बिल्कुल साफ साफ बताया गया है जब प्रभु यीशु यहाँ पर *जल* शब्द का उपयोग कर रहा था तो वह पवित्र आत्मा के विषय में बता रहा था। यदि अध्याय 7 में जल का अर्थ पवित्र आत्मा हो सकता है, तो फिर अध्याय 3 में भी इसका यही अर्थ क्यों नहीं हो सकता?

किन्तु, यदि यह व्याख्या स्वीकार कर ली जाती है, तो एक समस्या सामने आती प्रतीत होती है। यीशु कहता है, ''**जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।**'' यदि **जल** का *अर्थ* यहाँ पर पवित्र आत्मा मान लिया जाए, तो इसका अर्थ यह होगा कि इस पद में पवित्र आत्मा का उल्लेख दो बार आया है। परन्तु यहाँ पर जिस यूनानी शब्द का अनुवाद ''और'' किया गया है, उस यूनानी शब्द का अनुवाद ''और...भी'' करना भी सही होगा। अत: इस पद को इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है, ''**जब तक कोई मनुष्य जल,** और **आत्मा से** भी **न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।**'' हम ऐसा मानते हैं कि यह इस पद का सही अर्थ है। शारीरिक जन्म पर्याप्त नहीं है।[8] यदि कोई व्यक्ति **परमेश्वर के राज्य में** प्रवेश करना चाहता है तो उसे आत्मिक जन्म लेना आवश्यक है। यह आत्मिक जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा दिया जाता है जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाता है। अगले पदों (पद 6, 8) में ''आत्मा से जन्म'' का दो बार उल्लेख किया जाना इस व्याख्या का समर्थन करता है।

3:6 यदि नीकुदेमुस ने किसी तरह से अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर लिया होता, तो इससे उसके भीतर का बुरा स्वभाव सुधर नहीं जाता। **जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है,** इस वाक्यांश का अर्थ है, कि मानवीय माता–पिता से जन्मे बच्चे पाप में जन्मे हैं और जहाँ तक उनके उद्धार पाने की बात है वह इसके लिए अपने आप में वे असहाय और आशाहीन हैं। दूसरी ओर, **जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।** आत्मिक जन्म तब होता है जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु पर विश्वास लाता है। जब एक व्यक्ति आत्मा के द्वारा जन्म लेता है, तो वह एक नया स्वभाव प्राप्त करता है, और उसे परमेश्वर के राज्य के योग्य बनाया जाता है।

3:7 नीकुदेमुस को प्रभु यीशु की शिक्षा पर **अचम्भा** नहीं करना था। उसे यह बोध होना आवश्यक था कि एक व्यक्ति को **नये सिरे से जन्म** लेना आवश्यक है और मनुष्य अपनी पतित अवस्था से छुटकारा पाने में पूर्णत: असमर्थ है। उसे यह बोध होना आवश्यक था कि परमेश्वर के राज्य का नागरिक बनने के लिए, एक मनुष्य को पवित्र, शुद्ध, और आत्मिक होना आवश्यक है।

3:8 जैसा कि प्रभु अक्सर किया करता था, उसने आत्मिक सच्चाई को समझाने के लिए प्रकृति से एक उदाहरण दिया। उसने नीकुदेमुस को याद दिलाया कि **हवा जिधर चाहती है उधर चलती है**, और एक व्यक्ति उसका **शब्द** सुन सकता है, **परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती है और किधर को जाती है।** नया जन्म भी ठीक **हवा** के समान है। सबसे पहले, यह परमेश्वर की इच्छा से होता है। यह कोई ऐसी सामर्थ नहीं है जिसे मनुष्य अपने नियंत्रण में ले सके। दूसरी बात, नया जन्म अदृश्य होता है। हम इसे होते हुए नहीं देख सकते, परन्तु हम इसका पणिाम एक व्यक्ति के जीवन में अवश्य देख सकते हैं। जब एक मनुष्य उद्धार पाता है, तो उसमें एक परिवर्तन होता है। जो (बुरी) बातें पहले उसे प्रिय थीं, उन बातों से वह अब बैर करने लगता है। जिस तरह से कोई भी व्यक्ति हवा को पूरी तरह से नहीं समझ सकता, उसकी प्रकार से नया जन्म भी परमेश्वर के आत्मा (पवित्र आत्मा) का एक ऐसा आश्चर्यजनक कार्य है जिसे मनुष्य पूरी तरह से नहीं समझ सकता। इसके साथ साथ, **हवा** के जैसे ही, नया जन्म के विषय अनुमान नहीं लगाया जा सकता। यह बता पाना सम्भव नहीं है कि नया जन्म कब होगा और कहाँ होगा।

3:9 एक बार फिर से, **नीकुदेमुस** ने यह दर्शा दिया कि स्वाभाविक मन अलौकिक बातों को समझ पाने में असमर्थ होता है। नि:सन्देह वह अब भी नया जन्म को एक स्वाभाविक या भौतिक घटना के रूप में ही समझने का प्रयास कर रहा था, आत्मिक सच्चाई के रूप में नहीं। और इसलिए उसने प्रभु यीशु से पूछा: ''**ये बातें क्यों**

कर हो सकती हैं।''

3:10 प्रभु यीशु ने उत्तर दिया कि **इस्राएलियों का गुरू** होने के कारण, नीकुदेमुस को **इन बातों को** समझना चहिये था। पुराना नियम की पुस्तकों में यह स्पष्ट शिक्षा दी गई है कि जब मसीह इस पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए वापस आएगा, तो वह सबसे पहले अपने शत्रुओं का न्याय करेगा और उसका विरोध करने वाली सारी बातों को नाश कर देगा। सिर्फ वे ही जिन्होंने अपने पापों का अंगीकार किया है और उन पापों को छोड़ दिया है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे।

3:11 प्रभु यीशु ने तब अपनी शिक्षा की अचूकता पर, अचूक होने के बाद भी उसके प्रति मनुष्य के अविश्वास की ओर ध्यान खींचा। आदि से ही वह इसकी सच्चाई को जानता था और उसने सिर्फ वही सिखाया था **जिसे** उसने **देखा** था और जिसे वह जानता था। परन्तु नीकुदेमुस और उन दिनों के अधिकांश यहूदियों ने उसकी गवाही देने से मना कर दिया।

3:12 **पृथ्वी की बातें** क्या हैं जिनके बारे में प्रभु ने इस पद में कहा है? यह उसके **पृथ्वी** का राज्य है। पुराना नियम का जानकार होने के कारण, नीकुदेमुस यह जानता था कि एक दिन मसीह आएगा और पृथ्वी पर शब्दश: एक राज्य स्थापित करेगा और यरूशलेम को इसकी राजधानी बनाएगा। तो फिर **पृथ्वी की बातें** क्या हैं जिनके विषय में प्रभु ने यहाँ पर कहा है? नीकुदेमुस यह समझने में असमर्थ था कि इस राज्य में प्रवेश करने के लिए नया जन्म पाना आवश्यक है। ये वे सच्चाइयां हैं जो आगे के पदों में समझाई गई हैं – वह अद्‌भुत उपाय जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपना नया जन्म प्राप्त करता है।

3:13 स्वर्गीय वस्तुओं के बारे में बोलने के लिए सिर्फ एक ही व्यक्ति योग्यता रखता था, क्योंकि वही एकमात्र व्यक्ति था **जो स्वर्ग में** था। प्रभु यीशु परमेश्वर द्वारा भेजा गया सिर्फ एक मानव शिक्षक नहीं था, परन्तु वह एक ऐसा व्यक्ति था जो आदि से ही परमेश्वर पिता के साथ निवास कर रहा था, और संसार में **उतरा** था। जब उसने कहा कि **कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा**, तो वह यह नहीं कह रहा था कि पुराना नियम के हनोक और एलिय्याह स्वर्ग नहीं गए, परन्तु उन्हें स्वर्ग पर उठाया गया था, जबकि प्रभु यीशु मसीह अपने स्वयं की सामर्थ से **स्वर्ग पर . . . चढ़ा** था। दूसरी व्याख्या यह है कि परमेश्वर की उपस्थिति में कोई भी व्यक्ति उस तरह लगातार नहीं पहुँच सकता जिस तरह से प्रभु यीशु मसीह लगातार उस तक पहुँच रखता हैं। वह परमेश्वर के निवासस्थान पर दूसरों से अलग तरीके से चढ़ सकता है क्योंकि वह इस पृथ्वी पर स्वर्ग से आया है। जिस समय प्रभु यीशु पृथ्वी पर नीकुदेमुस के साथ बात कर रहा था, उसने कहा कि वह **स्वर्ग** में है। यह कैसे हो सकता है? यहाँ पर एक तथ्यात्मक कथन है कि, परमेश्वर के रूप में प्रभु एक ही समय में सब स्थानों में रह सकता है। इसलिए हम उसे सर्वव्यापी कहते हैं। जबकि कुछ आधुनिक अनुवादकों ने **'स्वर्ग में है'** को हटा दिया है, परन्तु हस्तलिपियों में यह पाया जाता है और इस भाग का हिस्सा है।

3:14 अब प्रभु यीशु मसीह नीकुदेमुस के सामने स्वर्गीय सच्चाई प्रगट करने वाला था। नया जन्म कैसे हो सकता है? मनुष्य के पाप का दण्ड चुकाया जाना आवश्यक था। लोग अपने पापों के साथ स्वर्ग नहीं जा सकते। जिस तरह से **मूसा ने जंगल में** पीतल के **साँप को ऊँचे पर चढ़ाया** जब सब इस्राएलियों को साँप ने काट लिया था, **उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य के पुत्र को भी ऊँचे पर चढ़ाया** जाए (गिनती 21:4–9)। जब वे प्रतिज्ञा के देश में जाते समय जंगल में भटक रहे थे, तब इस्राएली लोग हताश और उतावले होने लगे थे। वे यहोवा के विरुद्ध शिकायत करने लगे। उन्हें दण्ड देने के लिए प्रभु ने उनके बीच में भयानक साँपों को भेज दिया, और अनेक लोग मर गए। जब बचे हुए लोगों ने मन फिराते हुए यहोवा को पुकारा तो, यहोवा ने मूसा से पीतल का एक **सांप** बना कर उसे एक खम्भे पर लटकाने के लिए कहा। जिन इस्राएलियों को साँपों ने काटा था उनमें से जितनों ने साँप की ओर देखा, वे आश्चर्यजनक रीति से बच गए।

प्रभु यीशु ने पुराना नियम की इस घटना को उद्धरित करते हुए यह समझाया कि नया जन्म किस प्रकार से होता है। लोग आज पाप के साँप के दंश से पीड़ित हैं और वे अनन्त मृत्यु की ओर जा रहे हैं। पीतल का साँप प्रभु यीशु का एक प्रतीक (टाईप) या चित्र (पिक्चर) था। बाइबल में पीतल दण्ड को दर्शाता है। प्रभु यीशु निष्पाप था और उसे कभी भी दण्ड नहीं मिलना चाहिए था, परन्तु उसने हमारा स्थान ले लिया और जिस दण्ड को हमें सहना था उसे उसने सह लिया। खम्भा क्रूस को दर्शाता है जिस

पर यीशु मसीह चढ़ाया गया था। हम विश्वास की आँखों से उसकी ओर देख कर उद्धार प्राप्त करते हैं।

3:15 उद्धारकर्ता, जिसने पापों को कभी नहीं जाना था हमारे लिए पाप बन गया था, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। **जो कोई** प्रभु यीशु मसीह पर **विश्वास करे** वह मुफ्त में एक भेंट के रूप में **अनन्त जीवन** प्राप्त करेगा।

3:16 यह बाइबल का सबसे जाना पहिचाना पद है, नि:सन्देह इसलिए क्योंकि इसमें उद्धार के सुसमाचार को बिल्कुल साफ साफ और सरल रीति से प्रस्तुत किया गया है। यह प्रभु यीशु मसीह द्वारा नीकुदेमुस को दी जा रही इस शिक्षा का सारांश है कि किस तरह से नया जन्म प्राप्त होता है। यहाँ पर लिखा है कि **परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा**। यहाँ पर **संसार** सारी मानवजाति को कहा गया है। परमेश्वर ने मनुष्य के पापों या संसार के बुरे तंत्र से प्रेम नहीं रखा, परन्तु वह लोगों से प्रेम रखता है और नहीं चाहता कि उनमें से कोई भी नाश हो।

उसके प्रेम की सीमा इस सत्य में देखी जा सकती है कि **उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया**। परमेश्वर का हमारे प्रभु यीशु के समान और कोई दूसरा पुत्र नहीं है। यह उसके असीमित प्रेम की अभिव्यक्ति थी कि उसने अपने अद्वितीय **पुत्र** को विद्रोही पापी मनवजाति के लिए दे दिया। इसका अर्थ यह नहीं है कि *प्रत्येक* व्यक्ति उद्धार पा लेगा। एक व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा अनन्त जीवन दिए जाने से पहले उस व्यक्ति को यह स्वीकार करना आवश्यक है कि मसीह ने उसके लिए क्या किया है। इसलिए यह पद आगे कहता है, ''**ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो**।'' किसी को भी नाश होने की ज़रूरत नहीं है। एक उपाय का प्रबन्ध कर दिया गया है जिसके द्वारा सारे लोग उद्धार पा सकें, परन्तु यह आवश्यक है एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करे। जब वह ऐसा करता है, तो उसे अनन्त **जीवन** अभी से मिल जाता है। बोरहम कहते हैं:

> जब कलीसिया उस प्रेम को समझ जाती है जिसे परमेश्वर ने संसार से किया, तो वह तब तक चैन से नहीं बैठ सकती, जब तक सारे महान सम्राज्य प्रभु के आधीन न हो जाएं, और प्रत्येक दुर्गम द्वीप जीत न लिया जाए।[9]

3:17 परमेश्वर कोई कठोर और निर्दयी शासक नहीं है कि अपना कोप मनुष्य जाति पर उण्डलने के लिए उतावला हो। उसका हृदय मनुष्य के लिए स्नेह से भरा हुआ है और उसने मनुष्य का उद्धार करने के लिए सबसे बड़ी कीमत चुका दी है। वह **अपने पुत्र को जगत में इसलिए** भेज सकता था कि वह **जगत पर दण्ड की आज्ञा दे**, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया।

इसके विपरीत, उसने उसे यहाँ इसलिए भेजा कि वह दु:ख उठाए, खून बहाए, और मर जाए **कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए**। क्रूस पर प्रभु यीशु का कार्य इतनी बड़ी कीमत थी कि हर जगह के सारे पापी उद्धार पा सकते हैं यदि वे उसे स्वीकार करें।

3:18 अब सारी मानवजाति दो वर्गों में विभाजित हो गई है: विश्वासी और अविश्वासी। परमेश्वर के पुत्र के प्रति हमारे रवैये के आधार पर हमारी अनन्त नियति निर्धारित होती है। जो उद्धारकर्ता पर भरोसा करता है उस पर **दण्ड की आज्ञा** नहीं, परन्तु **जो** उस पर विश्वास **नहीं** करता वह पहले से ही **दोषी ठहर चुका**। प्रभु यीशु ने उद्धार के कार्य को पूरा कर दिया है, और अब यह मनुष्यों पर छोड़ दिया गया है कि वे यह निर्णय लें कि वे उसे स्वीकार करेंगे या ठुकराएंगे। प्रेम की ऐसी भेंट को ठुकराना एक भयानक बात है। यदि एक मनुष्य प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करेगा, तो परमेश्वर के पास मनुष्य को दोषी ठहराने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचता।

उसके **नाम** पर विश्वास करना और *उस पर* विश्वास करना एक ही बात है। बाइबल में, नाम व्यक्ति को दर्शाता है। यदि हम उसके **नाम** पर विश्वास करते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम उस पर विश्वास करते हैं।

3:19 प्रभु यीशु वह **ज्योति** है जो **जगत में** चमकती है। वह परमेश्वर का निष्पाप मेम्ना है। वह सारे संसार के पापों के लिए मरा। परन्तु इसके कारण क्या मनुष्य उससे प्रेम करते हैं? नहीं – वे उससे बैर रखते हैं। वे प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानने की तुलना में अपने पापों को प्राथमिकता देते हैं, और प्रभु यीशु को ठुकरा देते हैं। जिस तरह से कुछ रेंगने वाले जन्तु प्रकाश होने पर वहाँ से तुरन्त हट जाते हैं, उसी तरह से दुष्ट मनुष्य मसीह की उपस्थिति से दूर भाग जाते हैं।

3:20 जो पाप से प्रेम रखते हैं वे **ज्योति** से बैर रखते हैं, क्योंकि ज्योति उनकी पापमय दशा को प्रगट कर

देती है। जब प्रभु यीशु यहाँ पर इस संसार में था, तो पापमय मनुष्य उसकी उपस्थिति में असहज महसूस करता था, क्योंकि वह अपनी पवित्रता के द्वारा उसकी पापमय दशा का भेद खोल देता था। किसी टेढ़ी लाठी का टेड़ापन प्रगट करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि उस लाठी के बगल में एक सीधी लाठी रख दी जाए। इस संसार में एक सिद्ध मनुष्य के रूप में आकर, प्रभु यीशु ने, अन्य सभी मनुष्यों के टेढ़ेपन को प्रगट कर दिया।

3:21 यदि एक मनुष्य परमेश्वर के समक्ष सचमुच में ईमानदार है, तो वह **ज्योति के निकट** आएगा, अर्थात्, प्रभु यीशु के निकट आएगा, और अपनी घोर अयोग्यता और पापमयता को पहचान लेगा। तब वह उद्धारकर्ता पर भरोसा लाएगा, और इस प्रकार से मसीह में विश्वास लाने के द्वारा नया जन्म पाएगा।

ई. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवकाई (3:22–36)

3:22 इस अध्याय का पहला भाग यरूशलेम नगर में प्रभु यीशु मसीह की गवाही का वर्णन करता है। इस पद से लेकर इस अध्याय के अन्त तक, यूहन्ना **यहूदिया** में मसीह की सेवकाई का वर्णन करता है, जहाँ नि:सन्देह उसने उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखा। जब मनुष्य ज्योति में आए, तो उन्होंने बपतिस्मा लिया। इस पद से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु यीशु स्वयं बपतिस्मा देता था, परन्तु यूहन्ना 4:2 में हम पाते हैं कि बपतिस्मा देने का कार्य प्रभु यीशु के चेले किया करते थे।

3:23 इस पद में जिस **यूहन्ना** का नाम आया है वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है। वह अब भी यहूदिया के क्षेत्र में मनफिराव का सुसमाचार प्रचार कर रहा था और उन यहूदियों को बपतिस्मा दे रहा था जो मसीह के आगमन की तैयारी में बपतिस्मा लेने के लिए तैयार थे। **यूहन्ना भी शालेम के निकट एनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था**। इससे हम इस ठोस निष्कर्ष तक तो नहीं पहुँच सकते कि वह डूबा कर बपतिस्मा दिया करता था, परन्तु निश्चय ही यह इस बात की ओर संकेत अवश्य करता है। यदि वह छिड़क कर या उण्डेल कर बपतिस्मा देता, तो **बहुत जल** की आवश्यकता नहीं होती।

3:24 यह पद यूहन्ना के द्वारा जारी सेवकाई और भक्त यहूदियों के द्वारा लगातार दिए जा रहे प्रत्युत्तर को समझा रहा है। निकट भविष्य में, **यूहन्ना** को **जेलखाने में . . . डाला** जाएगा और अपनी विश्वासयोग्य गवाही के कारण उसका सिर कटवा दिया जाएगा। परन्तु इस दौरान, वह अब भी उसे सौंपी गई जिम्मेदारी को यत्न से पूरा कर रहा था।

3:25 इस पद से यह स्पष्ट है कि **यूहन्ना के चेलों** का यहूदियों **के साथ शुद्धि के विषय पर वाद–विवाद** हो गया। इसका अर्थ क्या है? **शुद्धिकरण** का अर्थ शायद यहाँ पर बपतिस्मा है। वाद–विवाद का विषय यह था कि प्रभु यीशु का बपतिस्मा बेहतर है या फिर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का। किस बपतिस्मा में अधिक सामर्थ है? किसका महत्व अधिक है? शायद **यूहन्ना के चेलों** ने अविवेकपूर्ण हो कर यह तर्क दिया कि उनके स्वामी के बपतिस्मा से बेहतर और कोई बपतिस्मा नहीं हो सकता। शायद फरीसियों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेलों के मन में प्रभु यीशु और उसकी वर्तमान लोकप्रियता को लेकर ईर्ष्या उत्पन्न करना चाहा।

3:26 **उन्होंने यूहन्ना के पास आकर** इस विषय पर उसे निर्णय देने के लिए कहा। वे उससे यह कहना चाह रहे थे, ''यदि तेरा बपतिस्मा बेहतर है, तो फिर क्यों बहुत सारे लोग तुझे छोड़कर यीशु के पास जा रहे हैं?'' **''जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था''** – यह वाक्यांश प्रभु यीशु के लिए कहा गया है। यूहन्ना प्रभु यीशु मसीह की गवाही देता था, और उसकी गवाही के परिणामस्वरूप, स्वयं यूहन्ना के चेलों में से अनेक उसे छोड़ कर प्रभु यीशु के पीछे चलने लगे थे।

3:27 यदि यूहन्ना ने अपने उत्तर में प्रभु यीशु मसीह के विषय में कहा, तो इसका अर्थ है कि उद्धारकर्ता की हर एक सफलता इस बात का संकेत थी कि परमेश्वर उसका अनुमोदन कर रहा है। यदि यूहन्ना ने अपने उत्तर में स्वयं के विषय में कहा, तो उसके कहने का अर्थ यह था कि उसने कभी भी महान या महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का ढोंग नहीं किया। उसने कभी यह दावा नहीं किया कि उसका बपतिस्मा प्रभु यीशु के बपतिस्मा से बेहतर है। उसने सिर्फ यह कहा कि उसके पास स्वयं का कुछ नहीं था, परन्तु उसने जो कुछ पाया वह **स्वर्ग से** था। यह बात हम सब के साथ भी सत्य है, और संसार में ऐसा कोई कारण नहीं

है कि हम घमण्ड करें या मनुष्यों की दृष्टि में अपना कद ऊँचा करने का प्रयास करें।

3:28 यूहन्ना ने अपने चेलों को स्मरण दिलाया कि उसने बार बार यह कहा है कि वह **मसीह नहीं, परन्तु** मसीह के लिए मार्ग तैयार करने के लिए **भेजा** गया अग्रदूत है। तो फिर उन्हें उसे लेकर वाद-विवाद क्यों करना चाहिए? उन्हें उसे लेकर एक गुट क्यों बनाना चाहिए? वह सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं है, परन्तु सिर्फ लोगों का ध्यान प्रभु यीशु मसीह की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है।

3:29 प्रभु यीशु मसीह दूल्हा था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला सिर्फ **दूलहे का मित्र** या डेड़हा था। **दुल्हन** पर दूलहे के मित्र का अधिकार नहीं होता, परन्तु **दूलहे** का होता है। इसलिए, यह उपयुक्त था कि लोग यूहन्ना के पीछे नहीं परन्तु प्रभु यीशु के पीछे चलें। **दुलहन** यहाँ पर सामान्य रूप से उन सब को कहा गया है जो प्रभु यीशु के अनुयायी बनेंगे। पुराना नियम में, इस्राएल को यहोवा की पत्नी कहा गया था। बाद में नया नियम में, मसीह की कलीसिया के सदस्यों को दुलहन के रूप में चित्रित किया गया है। परन्तु यहाँ यूहन्ना के सुसमाचार में, इस शब्द का उपयोग उन सारे लोगों के लिए किया गया है जो मसीह के प्रगट होने पर यूहन्ना को छोड़ देंगे। यहाँ पर दुलहन का अर्थ इस्राएल या कलीसिया नहीं है। यूहन्ना अपने चेलों के चले जाने पर नाराज नहीं हुआ। **दूलहे के शब्द** को सुनना उसके लिए महान आनन्द का विषय था। उसे इस बात से सन्तोष था कि सब का ध्यान प्रभु यीशु की ओर जाए। जब मसीह को स्तुति और आदर मिलता था तो यूहन्ना का **हर्ष पूरा** हो जाता था।

3:30 यूहन्ना की सेवकाई के सम्पूर्ण उद्देश्य का सार इस पद में पाया जाता है। उसने लोगों का ध्यान प्रभु यीशु मसीह की ओर ले जाने और उसके सच्चे मूल्य को पहचानने में उनकी सहायता करने के लिए अथक परिश्रम किया। यूहन्ना समझ गया था कि ऐसा करने के लिए उसे अपने आप को परदे के पीछे रखना पड़ेगा। मसीह के किसी भी सेवक द्वारा लोगों का ध्यान अपने स्वयं की ओर खींचने का प्रयास करना निश्चय ही निष्ठाहीनता है।

इस अध्याय में तीन बातों को आवश्यक बताया गया है: *पापियों* के लिए (3:7); *उद्धारकर्ता* के लिए (3:14); *पवित्र लोगों* (विश्वासियों) के लिए (3:30)।

3:31 प्रभु यीशु ही वह व्यक्ति है **जो ऊपर से आता है** और **वह सब के ऊपर** और **सर्वोत्तम** है। यह कथन उसके स्वर्गीय मूल और सर्वोच्च पद को दर्शाता है। यूहन्ना ने अपने आप को प्रभु यीशु से कम बताने के लिए कहा कि **वह** स्वयं **पृथ्वी का है और पृथ्वी की ही बातें करता है**। इसका अर्थ सिर्फ यह है कि वह मनुष्यों से जन्मा है। उसके पास कोई स्वर्गीय पद नहीं है और वह परमेश्वर के पुत्र के समान अधिकार के साथ नहीं बोल सकता। वह प्रभु यीशु से दर्जे में कम है क्योंकि वह **स्वर्ग से आता है** और **वह सब के ऊपर है**। मसीही विश्व का सर्वोच्च प्रभु है। इसलिए यही उपयुक्त है कि लोग उसके पीछे चलें उसके दूत के पीछे नहीं।

3:32 परन्तु जब प्रभु बोलता था तब वह पूरे अधिकार के साथ बोलता था। उसने मनुष्यों को वह बताया **जो कुछ** उसने **देखा और सुना**। इसमें त्रुटि या छल की कोई सम्भावना नहीं थी। तौभी यह कहना बहुत ही विचित्र है कि **कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता**। **'कोई'** शब्द को हमें पूर्ण अर्थ में नहीं समझना है। अनेक लोग व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु को अपना मुक्तिदाता स्वीकार करते हैं। किन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला सम्पूर्ण मनुष्यजाति की ओर सामान्य दृष्टि से देख रहा है और सिर्फ यह कह रहा है कि उद्धारकर्ता की शिक्षाओं को अधिकांश लोग ग्रहण नहीं कर रहे हैं। प्रभु यीशु ही वह व्यक्ति था जो स्वर्ग से नीचे आया, परन्तु बहुत कम लोग ही उसे सुनने के लिए तैयार हैं।

3:33 पद 33 में उन थोड़े लोगों का वर्णन किया गया है जिन्होंने प्रभु यीशु के वचनों को परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण किया। उन्होंने उसे ग्रहण करने के द्वारा, **छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है**। यह बात आज भी सत्य है। जब लोग सुसमाचार के सन्देश को ग्रहण करते हैं, तो वे परमेश्वर के पक्ष को सही ठहराते हैं तथा अपने और मनुष्यजाति के पक्ष का विरोध करते हैं। वे यह समझ जाते हैं कि यदि **परमेश्वर** ने कुछ कहा है तो वह **सच्चा** है। ध्यान दें कि पद 33 में प्रभु यीशु के ईश्वरत्व की शिक्षा बिल्कुल स्पष्ट रीति से दी गई है। यह पद बताता है कि जो कोई मसीह की **गवाही** पर विश्वास करता है वह इस बात को मान लेता है कि **परमेश्वर सच्चा है**। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि मसीह की गवाही *परमेश्वर* की गवाही है, और एक को ग्रहण करने का अर्थ

दूसरे को ग्रहण करना है।

3:34 प्रभु यीशु वह व्यक्ति था जिसे **परमेश्वर ने भेजा है**। वह **परमेश्वर की बातें** करता था। इस कथन का समर्थन करने के लिए, यूहन्ना ने कहा कि परमेश्वर **आत्मा नाप नापकर नहीं देता**। मसीह का अभिषेक परमेश्वर के पवित्रआत्मा के द्वारा जिस तरीके से किया गया है वह अद्वितीय है और यह किसी अन्य मनुष्य के अभिषेक से भिन्न है। अन्य मनुष्य अपनी सेवकाई में पवित्र आत्मा की सहायता का अनुभव अवश्य करते हैं परन्तु, किसी ने भी आज तक परमेश्वर के पुत्र के जैसे आत्मा से परिपूर्ण हो कर सेवकाई नहीं की है। भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर की ओर से आंशिक प्रकाशन प्राप्त होता था परन्तु ''आत्मा ने मसीह में और मसीह के द्वारा परमेश्वर के हृदय को और परमेश्वर के ज्ञान को उसके प्रेम की सारी असीमितताओं के साथ प्रकाशित किया।''

3:35 यूहन्ना के सुसमाचार में सात बार बताया गया है कि **पिता पुत्र से प्रेम रखता है**, सात में से एक बार यहाँ इसका उल्लेख पाया जाता है। यहाँ पर **सब वस्तुएं** उसके आधीन कर देने के द्वारा यह प्रेम प्रगट किया गया है। इन वस्तुओं पर उद्धारकर्ता का पूर्ण नियंत्रण है और ये वस्तुएं मनुष्यों की नियति है जैसा कि पद 36 में समझाया गया है।

3:36 परमेश्वर ने मसीह को अधिकार दिया है कि वह उस पर विश्वास करने वाले सब लोगों को **अनन्त जीवन** प्रदान करे। यह बाइबल के सबसे स्पष्ट पदों में से एक है कि किस प्रकार से एक व्यक्ति उद्धार पा सकता है। वह **पुत्र पर** *सिर्फ विश्वास करके ही* उद्धार पा सकता है। जब हम इस पद को पढ़ते हैं, तो हमें यह समझ जाना चाहिए कि परमेश्वर कुछ कह रहा है। वह एक ऐसी प्रतिज्ञा दे रहा है जो कभी तोड़ी नहीं जाएगी। वह स्पष्ट रूप से कहता है कि **जो** कोई भी **पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है**। इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करना अंधेरे में कूदने के समान नहीं है। यह सीधे सीधे उस बात पर विश्वास करना है जिसका गलत होना सम्भव नहीं है। जो परमेश्वर के **पुत्र** की आज्ञा का पालन नहीं करता वह **जीवन को नहीं देखेगा परन्तु** पहले से ही **परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है**। इस पद से हम यह सीखते हैं कि हमारी अनन्त नियति इस बात पर निर्भर करती है कि हम परमेश्वर के **पुत्र** के साथ क्या करते हैं। यदि हम उसे स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर हमें मुफ्त में अनन्त **जीवन** का दान देता है। यदि हम उसका तिरिस्कार करते हैं, तो हम कभी भी अनन्त **जीवन** का आनन्द नहीं उठा सकते, और सिर्फ इतना ही नहीं, परमेश्वर का **क्रोध** पहले से ही हम पर मण्डरा रहा है, जो हम पर किसी भी क्षण भड़क सकता है।

ध्यान दें कि इस पद में व्यवस्था को पूरी करने, सबसे बड़ी आज्ञा का पालन करने, चर्च जाने, अपना सर्वोत्तम प्रयास करने, या स्वर्ग जाने के लिए प्रयास करने के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया है।

ज. सामरी स्त्री का मनफिराव (4:1–30)

4:1, 2 फरीसियों ने सुना कि प्रभु **यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है** और यूहन्ना की लोकप्रियता घटती हुई दिखाई दे रही है। शायद उन्होंने इस सच्चाई का उपयोग यूहन्ना के चेलों और प्रभु यीशु के चेलों के बीच में ईर्ष्या और मनमुटाव को उत्पन्न करने के उद्देश्य से किया था। वास्तव में, प्रभु **यीशु आप** ही बपतिस्मा **नहीं** देता था। यह कार्य **उसके चेले** किया करते थे। किन्तु, लोगों को प्रभु के चेलों या अनुयायियों के रूप में बपतिस्मा दिया जा रहा था।

4:3 यहूदिया छोड़ कर **गलील को** जाने के द्वारा प्रभु यीशु फरीसियों द्वारा मतभेद उत्पन्न करने के प्रयासों को दूर कर देगा। परन्तु इस पद में एक और महत्वपूर्ण बात है। **यहूदिया** यहूदी धर्म तंत्र का मुख्यालय था, जब **गलील** अन्यजातियों की बहुलता के लिए जाना जाता था। प्रभु यीशु समझ गया था कि यहूदी अगुवे पहले से ही उसका और उसकी गवाही का तिरिस्कार कर रहे हैं, और इसलिए यहाँ पर अब वह उद्धार के सन्देश के साथ अन्यजातियों के पास जा रहा है।

4:4 सामरिया यहूदियों से गलील जाने के सीधे रास्ते पर आता था। परन्तु बहुत कम यहूदी ही इस सीधे रास्ते से जाते थे। सामरिया के क्षेत्र को यहूदी लोग इतना तुच्छ समझते थे कि उत्तर में गलील को जाने के लिए अक्सर पिरिया से होकर एक बहुत ही घुमावदार रास्ता लेते थे। इसलिए, जब यह पद कहता है कि प्रभु यीशु को **सामरिया से होकर जाना अवश्य था**, तो यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि भौगोलिक स्थिति के कारण प्रभु

यीशु इस रास्ते से जाने के लिए बाध्य था, परन्तु इसलिए क्योंकि **सामरिया** में एक जरूरतमंद आत्मा उसकी सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी।

4:5 सामरिया में से होकर जाते हुए प्रभु यीशु **सूखार** नाम एक छोटे से गाँव में आया। उस गाँव से कुछ ही दूरी पर वह **भूमि थी जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ** को दिया था (उत्प. 48:22)। जब प्रभु यीशु इस क्षेत्र से होकर जा रहा था, तब इस क्षेत्र के पिछले इतिहास से सम्बन्धित सारी बातें लगातार उसके ध्यान में बनी हुई थीं।

4:6 याकूब का कुंआ के नाम से जाने जाना वाला एक जलस्त्रोत **वहीं था**। आज भी इस प्राचीन कुंए को पर्यटकों द्वारा देखा जा सकता है, यह बाइबल के उन कुछ दर्शनीय स्थलों में से एक है जो आज भी पहचाने जा सकते हैं।

दोपहर के लगभग (यहूदी समय) या 6 बजे उपरान्ह (रोमी समय) प्रभु **यीशु** कुंए पर पहुँचा। वह लम्बी यात्रा के कारण **थका हुआ** था और इसलिए वह **कुंए पर . . . बैठ गया**। यद्यपि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वह एक मनुष्य भी है। परमेश्वर के रूप में, वह कभी नहीं थकता, परन्तु एक मनुष्य के रूप में थकता है। हमें इन बातों को समझने में कठिनाई महसूस होती है। परन्तु प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व को कभी भी कोई नश्वर मस्तिष्क समझ नहीं सकेगा। यह सच्चाई कि परमेश्वर इस संसार में आया और मनुष्यों के बीच में एक मनुष्य के रूप में रहा एक ऐसा रहस्य है जो हमारी समझ से परे है।

4:7 जब प्रभु यीशु कुंए पर बैठा था, तो गाँव से **एक सामरी स्त्री जल** भरने के लिए आई। विद्वानों के अनुसार, यदि यह दोपहर का समय था, तो फिर यह किसी स्त्री के लिए जल भरने के लिए कुंए पर जाने के लिए एक असामान्य समय था; यह दिन का सबसे गर्म समय होता था। परन्तु यह स्त्री एक अनैतिक पापिनी थी, और उसने यह समय इसलिए चुना होगा क्योंकि वह जानती थी कि उस समय कुंए पर और कोई स्त्री नहीं होगी कि उसे देखे। अवश्य ही, प्रभु यीशु यह जानता था कि वह इस समय कुंए पर होगी। वह जानता था कि वह एक जरूरतमंद आत्मा है, और इसलिए वह उससे मिलने के लिए और उसे उसके पापमय जीवन से बचाने के लिए प्रतिबद्ध था।

इस स्थल में, हम आत्मा को जीतने वाले निपुण व्यक्ति को सक्रिय पाते हैं, और हम यह अच्छी तरह से उन तरीकों को देख सकते हैं जिसका उपयोग उसने इस स्त्री की पापमय दशा से उसे बोध कराने और उसकी इस समस्या का समाधान बताने के लिए किया था। हमारे प्रभु ने स्त्री से सिर्फ सात बार बातें की। स्त्री ने भी सिर्फ सात बार बातें की – छः बार प्रभु से और एक बार नगर के लोगों से। शायद हम भी प्रभु से उतनी बातें करें जितना कि उस स्त्री ने किया था, तो हमें भी हमारी गवाही में भी वैसी ही सफलता मिल सकती है जैसी उस स्त्री को मिली जब उसने नगर के लोगों को इस विषय में बताया। प्रभु यीशु ने बातचीत की शुरुआत एक मदद मांगने के द्वारा की, उसने **उससे कहा, मुझे पानी पिला**।

4:8 पद 8 में, मानवीय दृष्टिकोण से यह समझाया गया है कि प्रभु ने उससे पानी क्यों मांगा। **उसके चेले तो** सूखार **नगर में भोजन मोल लेने गए थे**। वे सामान्यत: अपने साथ पानी खींचने के लिए बाल्टियां लेकर चलते थे, परन्तु उसे भी वे अपने साथ नगर में ले गए थे। इसलिए प्रभु यीशु के पास और कोई साधन नहीं रहा कि वह कुएं से पानी ले सके।

4:9 स्त्री ने प्रभु यीशु को एक **यहूदी** के रूप में पहचान लिया और जब प्रभु ने उससे बातें की तो वह अचम्भा करने लगी कि वह एक **सामरी** से कैसे बातें कर रहा है। सामरी लोग दावा करते थे कि वे याकूब की सन्तान थे, और वे अपने आप को सच्चे इस्राएली मानते थे। वास्तव में वे यहूदियों और अन्यजातियों के बीच हुए बेमेल विवाह से उत्पन्न हुई एक जाति थी। गिरिज्जिम पर्वत को उन्होंने अपना अधिकारिक आराधना स्थल बना लिया था। यह सामरिया का एक पर्वत था, जो उस समय प्रभु यीशु और उस स्त्री को साफ साफ दिखाई दे रहा था जब वे आपस में बातचीत कर रहे थे। यहूदी लोग सामरियों से बहुत घृणा करते थे। वे उन्हें मिश्रित जाति के लोग मानते थे। इसलिए इस स्त्री ने प्रभु यीशु से कहा, ‘‘**तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है?**’’ उसे इस बात की समझ नहीं थी कि वह अपने ही सृष्टिकर्ता से बात कर रही है,जिसका प्रेम लोगों के भेदभाव से ऊपर उठ कर है। स्त्री सिर्फ *शब्दश:* जल की और बिना किसी साधन के उसे निकाल पाने की असम्भवता की ही कल्पना कर सकती थी। वह प्रभु या उसके वचन को पहचान पाने में पूरी तरह से असफल रही।

4:12 जब उसने कुलपिता **याकूब** के बारे में विचार किया तो उसकी उलझन और बढ़ गई, याकूब ने ही उन्हें यह **कुंआ** दिया था। याकूब ने **आप ही अपने सन्तान और अपने ढोरों समेत उसमें से पीया** था। अब शताब्दियों बाद, एक थका हुआ यात्री, याकूब के इस कुंए से पानी मांग रहा है और तौभी वह यह दावा कर रहा है कि वह उस जल से भी उत्तम जल दे सकता है जिसे याकूब ने उन्हें दिया है। यदि उसके पास इससे उत्तम जल था, तो फिर वह याकूब के कुंए का जल क्यों मांग रहा था?

4:13 इसलिए प्रभु याकूब के कुंए के शब्दश: (भौतिक) जल और उस जल के बीच में अन्तर बताने लगा जिसे वह स्वयं देगा। **जो कोई यह जल** पीएगा वह **फिर पियासा होगा**। निश्चय ही सामरी स्त्री इस बात को समझ गई। वह दिन प्रतिदिन इस कुंए पर पानी लेने के लिए आती थी; तौभी उसकी पानी की आवश्यकता कभी भी पूरी नहीं होगी। और ऐसा ही संसार के सारे कुंए के साथ भी है, कोई भी कुंआ हमें ऐसा जल नहीं दे सकता कि हम उस जल को पीने के बाद फिर से प्यासे न हों। लोग सांसारिक वस्तुओं में सुख और सन्तुष्टि खोजते हैं, परन्तु ये वस्तुएं मनुष्य के हृदय की प्यास को बुझा नहीं सकतीं। जैसा कि आगस्टीन ने अपने *अंगीकारों* में कहा है, ''हे प्रभु, तू ने हमें तेरे लिए ही बनाया है, और हमारा हृदय तब तक बेचैन रहेगा जब तक वे तुझ में विश्राम न पा लें।''

4:14 जिस **जल** को प्रभु यीशु देता है वह जल सचमुच में मनुष्य को तृप्त कर देता है। **जो कोई** मसीह की आशीषों और दया में से **पीएगा** वह **अनन्तकाल तक पियासा न होगा**। न सिर्फ उसकी आशीषें हमारे हृदय को भर देती हैं, बल्कि इतना भर देती हैं कि यह छलकने लगता है। यह उमड़ते हुए सोते के समान है, जो लगातार छलकता रहता है, न सिर्फ इस जीवन में बल्कि अनन्त जीवन में भी। **अनन्त जीवन के लिए उमण्डता रहेगा –** इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु द्वारा दिए जाने वाले **जल** की आशीषें इस संसार तक ही सीमित नहीं हैं, परन्तु ये हमेशा बनी रहेंगी। दोनों के बीच में अन्तर बिल्कुल सजीव है। संसार हमें जो वस्तुएं उपलब्ध करा सकता है वे मनुष्य के हृदय को सन्तुष्ट कर पाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। परन्तु जो आशीषें प्रभु यीशु देता है वह न सिर्फ हृदय को सन्तुष्ट कर देती हैं, बल्कि वे इतनी महान हैं कि कोई भी हृदय उसे अपने आप में समा नहीं सकता।

> सम्पूर्ण विस्तृत संसार पर्याप्त नहीं है,
> कि हृदय के तीन कोनों को भर सके,
> परन्तु तौभी यह लालायित रहता है;
> सिर्फ त्रिएक परमेश्वर जिसने इसे बनाया है,
> मनुष्य के इस त्रिकोण हृदय को भर सकता है।
> – *जार्ज हरबर्ट*

इस संसार के सुख बहुत थोड़े वर्षों के लिए हैं, परन्तु मसीह हमें जो सुख देता है वह **अनन्त जीवन** तक बना रहता है।

4:15 जब **स्त्री** ने इस अद्‌भुत जल के बारे में सुना, तो तुरन्त ही उसने उसे पाना चाहा। परन्तु अब भी वह *भौतिक* जल के बारे में ही सोच पा रही थी। वह नहीं चाहती थी कि उसे हर दिन उस कुंए पर **जल भरने** के लिए आना पड़े और भारी घड़े को अपने सिर पर रख कर घर तक ले जाना पड़े। वह इस बात को नहीं समझ पा रही थी कि प्रभु यीशु जिस जल की बात कर रहा है वह आत्मिक जल है, वह उन सारी आशीषों के विषय में कह रहा था जो एक मनुष्य के जीवन में प्रभु यीशु पर विश्वास लाने के द्वारा आती हैं।

4:16 यहाँ पर वार्तालाप के विषय में एक अटपटा बदलाव आ जाता है। स्त्री ने अभी अभी जल मांगा है, और प्रभु यीशु उससे कहता है कि वह **जा** कर अपने **पति** को **बुला** ला। क्यों? इससे पहले कि इस स्त्री का उद्धार होता, उसे यह स्वीकार करना आवश्यक था कि वह एक पापिनी है। यह आवश्यक था कि वह सच्चा पश्चताप करे, और अपनी ग्लानि और लज्जा को स्वीकार करे। प्रभु यीशु उसके सारे पापमय जीवन को जानता था, और वह अब कदम–ब–कदम उसकी अगुवाई करने वाला था, कि वह स्वयं अपने पापमय जीवन को देख सके।

सिर्फ वे ही लोग उद्धार पा सकते हैं जो यह जानते हैं कि वे अपने पापों में खोए हुए हैं। सब मनुष्य अपने पापों में खोए हुए हैं, परन्तु सब मनुष्य इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। लोगों को मसीह के लिए जीतने की सेवा में हमें कभी भी पाप की समस्या को अनदेखा नहीं करना है। यह बात स्पष्ट रूप से उनके सामने लाने की आवश्यकता है कि वे अपने अपराधों और पापों में मरे हुए हैं, उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, प्रभु यीशु ही वह उद्धारकर्ता

है जिसकी उन्हें आवश्यकता है, और यदि वे अपने पापों से पश्चताप कर उस पर विश्वास लाएंगे तो वह उन्हें उद्धार देगा।

4:17 पहले तो **स्त्री** ने झूठ बोले बिना सच को छिपाना चाहा। उसने कहा, ''**मैं बिना पति की हूँ**।'' शायद कानूनी भाषा में उसका कथन सत्य था। परन्तु उसने यह कथन इस घृणित सच्चाई को छिपाने के लिए कहा था कि वह एक ऐसे मनुष्य के साथ पाप में जीवन बिता रही है जो उसका पति नहीं है:

> वह धर्म के बारे में बात करती है, धर्मविज्ञान की चर्चा करती है, व्यंग्योक्ति का प्रयोग करती है, चौंकने का दिखावा करती है – वह अपनी तरफ से वो सब कुछ करने की कोशिश करती है ताकि मसीह, उसके अपने आप से भागने वाले प्राण को न देख सके (*डेली नोट्स ऑफ द स्क्रिप्चर यूनियन*)।

प्रभु यीशु, परमेश्वर होने के कारण, इन सारी बातों को जानता था। और इसलिए उसने उससे कहा, ''**तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूँ**।'' यद्यपि वह संगी मनुष्यों को मूर्ख बना सकती थी, परन्तु वह इस मनुष्य (प्रभु यीशु) को मूर्ख नहीं बना सकी। प्रभु इस स्त्री के विषय में सब कुछ जानता था।

4:18 प्रभु यीशु ने कभी भी सारी बातों के विषय में अपने पूर्ण ज्ञान का उपयोग अनावश्यक ही किसी व्यक्ति की पोल खोलने या उसे शर्मिन्दा करने के लिए नहीं किया। परन्तु अवश्य ही उसने अपने इस ज्ञान का उपयोग यहाँ पर किया, ताकि वह एक व्यक्ति को उसके पाप के बन्धन से छुटकारा दे सके। जब प्रभु ने उस स्त्री के विषय में बीती बातों को बताया तब वह कितना चौंक गई होगी! वह **पाँच पति** कर चुकी थी, और इस समय भी वह जिस पुरुष के साथ रह रही थी वह उसका **पति नहीं** था।

इस पद पर बाइबल के विद्वानों के बीच कुछ मतभेद हैं। कुछ लोग मानते हैं कि इस स्त्री के पिछले पाँच पति या तो मर चुके थे या फिर उसे त्याग चुके थे, और उनके साथ इस स्त्री के सम्बन्धों में कोई भी अवैध या पापमय बात नहीं थी। ऐसी व्याख्या सही है या नहीं, परन्तु इस पद के बाद वाले हिस्से से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि यह स्त्री एक व्यभिचारिणी थी। ''**जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं**।'' यह एक ध्यान देने वाली बात है। यह स्त्री एक पापिनी थी, और जब तक वह यह बात स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होती, तब तक प्रभु उसे जीवन के जल की आशीष नहीं दे सकता था।

4:19 जब इस स्त्री के जीवन की सारी बातों को उसके सामने खोल कर रख दिया गया, तो **स्त्री** समझ गई कि जो उससे बातें कर रहा है वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। किन्तु, वह यह नहीं पहचान सकी कि वह व्यक्ति स्वयं परमेश्वर है। वह अधिक से अधिक यही अनुमान लगा सकी कि वह कोई **भविष्यद्वक्ता** है, अर्थात्, परमेश्वर की ओर से बोलने वाला।

4:20 ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्त्री अपने पापों को मान चुकी थी, और इसलिए उसने आराधना के उचित स्थान से सम्बन्धित एक प्रश्न पूछते हुए विषय को बदलने का प्रयास किया। नि:सन्देह, जब उसने कहा, ''**हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया**,'' तब उसने पास ही स्थित गिरिज्जिम पर्वत की ओर इशारा किया। उसके बाद उसने प्रभु को स्मरण दिलाया (अनावश्यक ही) कि **यहूदी** दावा करते हैं कि **यरूशलेम** ही वह उचित स्थान है **जहाँ भजन करना चाहिए**।

4:21 **प्रभु यीशु** ने उसकी बात को अनसुनी नहीं की, परन्तु उसी की बात का उपयोग करते हुए उसने उसे और भी आत्मिक सच्चाइयों की शिक्षा दी। उसने उसे बताया कि वह समय **आता है** जब **न तो** गिरिज्जिम पर्वत और **न यरूशलेम . . . भजन** का स्थान रह जाएगा। पुराना नियम में, यरूशलेम को परमेश्वर ने *एकमात्र* ऐसा नगर कर के ठहराया, जहाँ परमेश्वर का भजन किया (आराधना की) जाए। यरूशलेम का मन्दिर परमेश्वर का निवासस्थान था, और भक्त यहूदी अपने बलिदान और भेंट चढ़ाने के लिए यरूशलेम आया करते थे। परन्तु, आज सुसमाचार के इस युग में, यह बात लागू नहीं होती। परमेश्वर ने अभी कोई ऐसा निश्चित स्थान तय करके नहीं रखा है कि उसके लोगों को उसी स्थान पर जाकर आराधना करना आवश्यक हो। प्रभु ने इस बात को और विस्तार से अगले पदों में स्पष्ट किया है।

4:22 जब प्रभु ने कहा, ''**तुम जिसे नहीं जानते उसका भजन करते हो**,'' तो उसने ऐसा कहने के द्वारा आराधना करने की सामरी रीति को गलत ठहराया। वर्तमान के धार्मिक गुरू कहते हैं कि सब धर्म अच्छे हैं और अन्तत: वे स्वर्ग को पहुँचाते हैं, परन्तु प्रभु यीशु की कही बात उनके विचारों के बिल्कुल विपरित है। प्रभु यीशु ने

इस स्त्री को बताया कि सामरियों द्वारा किया जाने वाला भजन परमेश्वर द्वारा अधिकृत नहीं है, न ही वह इसका अनुमोदन करता है। इस आराधना का अविष्कार मनुष्य के द्वारा किया गया है और परमेश्वर के वचन द्वारा इसे अनुमति दिए बिना ही व्यवहार में लाया जा रहा है। परन्तु यहूदियों की आराधना ऐसी नहीं है। परमेश्वर ने यहूदी लोगों को पृथ्वी पर अपने लोगों के रूप में चुना है। उसने उन्हें आराधना करने के तरीके के बारे में पूर्ण निर्देश दिए हैं।

यह कह कर कि **''उद्धार यहूदियों में से है,''** प्रभु यीशु यह शिक्षा दे रहा है कि यहूदी लोगों को परमेश्वर ने अपने सन्देशवाहकों के रूप में नियुक्त किया है, और पवित्रशास्त्र उन्हें ही दिया गया है। इसके अतिरिक्त, मसीह भी यहूदी जाति के माध्यम से ही दिया गया है। उसने एक यहूदी माता की कोख से जन्म लिया।

4:23 इसके बाद प्रभु यीशु ने स्त्री को बताया कि, उसके आगमन के बाद, अब परमेश्वर की आराधना करने का कोई निश्चित स्थान नहीं रहा। अब जो प्रभु यीशु पर विश्वास लाता है वह कभी भी और कहीं भी परमेश्वर की आराधना कर सकता है। सच्ची आराधना का अर्थ है कि एक विश्वासी विश्वास के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में जाता है और *वहाँ* उसकी स्तुति और आराधना करता है। चाहे उसका शरीर किसी गुफा में हो, किसी जेल में, या फिर खेत में, परन्तु उसकी आत्मा किसी भी समय परमेश्वर के पास उसकी स्वर्गीय वेदी में विश्वास के माध्यम से आ सकती है। प्रभु यीशु ने इस स्त्री के सामने घोषणा की कि अब से पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से की जाएगी। यहूदी लोगों ने आराधना को बाहरी रीति विधियों और संस्कारों तक सीमित कर दिया था। वे सोचते थे कि व्यवस्था के छोटे से छोटे बिन्दु का बारीकी से पालन करने के द्वारा और कुछ निर्धारित संस्कारों को पूरा करने के द्वारा वे पिता की आराधना कर रहे थे। परन्तु ऐसी आराधना आत्मा और सच्चाई से की जाने वाली आराधना नहीं थी। यह बाहरी थी, भीतरी नहीं। उनका शरीर तो भूमि पर झुक जाता था परन्तु उनका हृदय परमेश्वर के सामने सही नहीं था। शायद वे गरीबों का शोषण करते थे, या फिर व्यवसाय में कपटपूर्ण तरीकों का इस्तेमाल करते थे।

दूसरी ओर, सामरी लोगों ने आराधना का एक रूप तैयार कर लिया था, परन्तु यह झूठा रूप था। इसमें पवित्रशास्त्र द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं था। उन्होंने अपने स्वयं का एक धर्म स्थापित कर लिया था और अपने ही मन से तैयार की हुई रीति विधियों का पालन कर रहे थे। इस प्रकार से, जब प्रभु ने कहा कि आराधना **आत्मा और सच्चाई** से करना आवश्यक है, तो वह यहूदियों और सामरियों दोनों को ही डांट लगा रहा था। परन्तु वह उन्हें यह भी बता रहा था कि, अब जबकि वह आ चुका है, तो यह सम्भव हो गया है कि सच्ची और निष्ठापूर्ण आराधना करने के लिए उसके द्वारा परमेश्वर के पास पहुँचा जा सकता है । इस बात पर ध्यान करें! **पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है।** परमेश्वर अपने लोगों द्वारा सराहे जाने में रूचि रखता है। क्या उसने यह बात मुझ से प्राप्त की है?

4:24 परमेश्वर आत्मा है – यह परमेश्वर के अस्तित्व की परिभाषा है। वह एक मनुष्यमात्र नहीं है, जो मनुष्यत्व की त्रुटियों और सीमाओं से बन्धा हुआ हो। न ही वह किसी स्थान या समय में सीमित है। वह एक अदृश्य व्यक्ति है जो सब स्थानों पर एक ही समय में उपस्थित रहता है, जो सब कुछ जानता है, जो सर्वसामर्थी है। वह अपने सारे कार्यों में सिद्ध है। इसलिए, **अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से उसका भजन करें।** उसकी आराधना में कोई पाखण्ड या कपट नहीं होना चाहिए। जब भीतरी जीवन भ्रष्ट है, तो धार्मिक होने का दिखावा नहीं करना चाहिये। यह बिल्कुल नहीं सोचना चाहिये कि एक के बाद एक रीति–विधियों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है। यद्यपि परमेश्वर ने ही उन रीति–विधियों को स्थापित किया था, वह अब भी इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य उसके पास एक टूटे और पश्चतापी हृदय के साथ जाए। इस अध्याय में दो और ''अवश्य है'' पाए जाते हैं – आत्माओं को जीतने वाले के लिए ''अवश्य है'' (4:4) और आराधना करने वालों के लिए ''अवश्य है'' (4:24)।

4:25 सामरी स्त्री ने जब प्रभु यीशु की बातें सुनीं, तो वह **मसीह** के आगमन के विषय में सोचने लगी। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने उसके भीतर एक इच्छा जगाई कि **मसीह** को आना चाहिए। उस स्त्री ने यह विश्वास व्यक्त किया कि जब वह आएगा, तो वह (मसीहा) **सब बातें** सिखाएगा। इस कथन में, उसने मसीह के आने के महान उद्देश्यों में से एक के प्रति अपनी स्पष्ट समझ प्रदर्शित किया।

"**मसीह जो ख्रिस्तुस कहलाता है**" – दोनों एक ही हैं। **मसीह** परमेश्वर के अभिषिक्त के लिए इब्रानी शब्द है; **ख्रिस्तुस** उसी के लिए यूनानी शब्द है।

4:26 प्रभु **यीशु ने उस से कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।" "मैं . . . हूँ"** में उसने परमेश्वर के एक नाम का प्रयोग किया है जिसे पुराना नियम में परमेश्वर ने अपना नाम बताया है।" उसने कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ" या दूसरे शब्दों में "यहोवा ही वह है जो तुझ से बोल रहा है।" वह उस स्त्री के सामने इस चौंकाने वाली सच्चाई को प्रगट कर रहा था कि जो व्यक्ति उस से बोल रहा है वह वही मसीह है जिसकी वह बाट जोह रही थी और यह भी कि वह स्वयं परमेश्वर है। पुराना नियम का यहोवा नया नियम का यीशु मसीह है।

4:27 जब **चेले** सूखार गाँव से वापस पहुँचे तो उन्होंने प्रभु यीशु को इस **स्त्री** के साथ बातें करते हुए पाया। वे उसे इस स्त्री से बातचीत करते हुए देख कर आश्चर्यचकित हो गए, क्योंकि वह एक सामरी थी। साथ ही, वे यह भी जान गए होंगे कि वह एक पापिनी स्त्री है। **तौभी किसी ने** प्रभु से यह नहीं पूछा कि वह उस स्त्री से क्या चाहता है या वह **किसलिए उससे बातें करता है**। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है, "चेले अचम्भा करने लगे कि प्रभु ने उस स्त्री से बातें की; बेहतर होता कि वे इस बात पर आश्चर्य करते कि प्रभु ने उनसे बातें की।"

4:28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई! घड़ा उसके जीवन के उन विभिन्न बातों को दर्शाता है जिनका उपयोग उसने अपनी गहरी लालसाओं की पूर्ति करने के प्रयास में किया था। वे सारी बातें उसे तृप्त करने में असफल रहीं थी। अब जबकि वह प्रभु को पा चुकी थी, तो उसे और दूसरी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं रही जो एक समय उसके जीवन में इतनी महत्वपूर्ण थीं।

प्रभु मैंने टूटे हुए हौद को अपनाना चाहा,
परन्तु ओह! उसका जल मुझे सन्तुष्ट न कर सका।
जब मैं उसमें से पीने के लिए झुका
तो सारा जल मुझ से दूर बह गया,
जब मैं बिलखने लगा,
तो यह मुझे चिढ़ाने लगा।

अब मसीह को छोड़ और कोई दूसरा
मेरी प्यास नहीं बुझा सकता;
मैं मसीह के सिवाय
और किसी दूसरे नाम को नहीं जानता;
प्रेम, और जीवन और सदाकाल का आनन्द,
हे प्रभु तुझी में मिलता है।

– बी.इ.

उस स्त्री ने न सिर्फ अपना **घड़ा** छोड़ा परन्तु वह **नगर में चली गई**। जब कभी कोई व्यक्ति उद्धार पाता है, तो वह तुरन्त ही दूसरों के बारे में सोचने लगता है जिन्हें जीवन के जल की आवश्यकता है। जे. हडसन टेलर ने कहा है, "कुछ लोग प्रेरितों का उत्तराधिकारी बनने के लिए उत्सुक रहते हैं, परन्तु मैं इस सामरी स्त्री का उत्तराधिकारी बनना चाहूंगा, जो, जब प्रेरित भोजन के लिए गए हुए थे, आत्माओं को जीतने की जलन में अपना घड़ा भूल गई।"

4:29,30 उसकी साक्षी साधारण परन्तु प्रभावशाली थी। उसने नगर के सारे लोगों को आमंत्रित किया कि वे आकर **एक मनुष्य को** देखें जिसने वह **सब कुछ** बता दिया जो अब तक उस स्त्री ने **किया** था। साथ ही उस स्त्री ने उनके हृदय के भीतर यह बात भी डाल दी कि शायद यह व्यक्ति मसीह हो सकता है। स्वयं उस स्त्री के मन में भी इस बात को लेकर शायद ही कोई सन्देह रह गया हो क्योंकि प्रभु यीशु उसके सामने पहले ही यह प्रगट कर चुका था कि वह **मसीह** है। परन्तु उस स्त्री ने अन्य लोगों के मन में भी इस प्रश्न को जगाया ताकि वे प्रभु यीशु के पास जाएं और स्वयं इस बात को मालूम करें। नि:सन्देह यह स्त्री अपने पाप और शर्मनाक कृत्यों के कारण पूरे नगर में परिचित रही होगी। लोग कितना चौंक उठे होंगे जब उन्होंने उसे सार्वजनिक स्थान पर खड़े होकर प्रभु यीशु की गवाही देते हुए सुना होगा! इस स्त्री की गवाही असरदार थी। नगर के लोग अपने घरों से निकल गए, उन्होंने अपना काम छोड़ दिया, और प्रभु यीशु की खोज में निकल पड़े।

क. पिता की इच्छा को पूरी करने में पुत्र का हर्ष (4:31–38)

4:31 अब **चेले** भोजन लेकर वापस आ चुके थे, उन्होंने प्रभु यीशु से भोजन करने के लिए आग्रह किया। यह स्पष्ट है कि उस समय वहाँ हो रही घटना के विषय में वे अनजान थे। इस ऐतिहासिक क्षण में जब एक सामरी नगर प्रभु की महिमा से परिचित हो रहा था, तब चेलों का

दिमाग उनके शारीरिक भोजन से ऊपर उठ कर और कुछ भी नहीं सोच पा रहा था।

4:32 प्रभु यीशु ने **भोजन** और सामर्थ अपने पिता की आराधना करने वालों को जीतने में ही पा लिया था। इस आनन्द की तुलना में शरीरिक पोषण का महत्व उसकी दृष्टि में बहुत कम था। जीवन में हम वही पाते हैं जिसे पाने के लिए हम उसके पीछे जाते हैं। चेलों की रूचि भोजन में थी। वे भोजन लेने के लिए किसी गाँव में गए। और वे भोजन के साथ वापस आए। प्रभु को आत्माओं में रूचि थी। उसकी रूचि लोगों को पापों से उद्धार और अनन्त जीवन देने में थी। प्रभु ने भी वही पाया जिसके पीछे वह गया। हम किस बात में रूचि रखते हैं?

4:33 अपने सांसारिक नजरिये के कारण, **चेलों** को प्रभु के वचनों का अर्थ समझ में नहीं आया। वे इस सच्चाई को समझ नहीं सके कि ''आत्मिक सफलता का आनन्द और इसकी खुशी उस समय के लिए व्यक्ति को सारी शारीरिक अभिलाषाओं से ऊपर उठा सकती है और भौतिक वस्तुओं की भूख और प्यास को तृप्त कर सकती है।'' इसलिए वे यह समझ कर शान्त हो गए कि किसी ने अवश्य ही प्रभु को भोजन लाकर दे दिया होगा।

4:34 एक बार फिर से प्रभु **यीशु** ने उनका ध्यान भौतिक से आत्मिक की ओर मोड़ा। उसका **भोजन** यह था कि वह परमेश्वर की **इच्छा** को पूरी करे, और उस **काम** को **पूरा** करे जिसे परमेश्वर ने उसे सौंपा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु यीशु वास्तविक या भौतिक भोजन खाने से परहेज करता था, परन्तु इसका अर्थ यह है कि उसके जीवन का बड़ा उद्देश्य शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा को पूरी करना था।

4:35 शायद चेले कटनी के आगमन के बारे में आपस में बात कर रहे थे। या शायद यह यहूदियों के मध्य प्रचलित एक कहावत थी, ''बोने और काटने के समय के बीच के **चार महीने**।'' जो भी हो, प्रभु यीशु ने **कटनी** से सम्बन्धित भौतिक सच्चाइयों का उदाहरण देते हुए एक आत्मिक शिक्षा दी। चेलों को यह नहीं सोचना चाहिए कि अभी कटनी में देर है। वे अपना जीवन भोजन और कपड़े के पीछे भाग दौड़ में बिता नहीं सकते , यह सोचते हुए कि परमेश्वर का कार्य बाद में किया जा सकता है। उन्हें यह समझना आवश्यक है कि **खेतों** की फसल **कटनी के लिए पक** चुकी है। खेत का अर्थ यहाँ पर संसार है। जिस समय प्रभु ये बातें कह रहा था, उस समय वह एक ऐसे खेत के बीच में खड़ा था जिसमें सामरी लोगों की आत्माएं कटनी के लिए तैयार थीं। वह चेलों को यह बता रहा था कि कटनी काट कर फसल इकट्ठा किया जाने वाला एक बड़ा कार्य उनके सामने है, और इसलिए चाहिए कि वे तुरन्त ही और पूरे यत्न से इस कार्य को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करें।

इसलिए आज, प्रभु हम सब विश्वासियों से यह कहता है, ''**अपनी आँखे उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो**।'' जब हम अपना समय संसार की बड़ी बड़ी आवश्यकताओं पर चिन्तन करने में बिताते हैं, तब प्रभु हमारे हृदय में हमारे आसपास की खोई हुई आत्माओं के लिए बोझ देगा। उसके बाद हमारा कर्तव्य यह होगा कि हम उसके नाम से आगे जाएं ताकि पकी हुई फसलों के पूले लेकर आ सकें।

4:36 अब प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों को उस कार्य से सम्बन्धित निर्देश दे रहा था जिसके लिए वे बुलाए गए थे। उसने उन्हें कटनी काटने के लिए चुना था। वे न सिर्फ इस जीवन में **मजदूरी** पाएंगे, बल्कि अनन्तकाल के लिए **फल** एकत्रित करेंगे। वर्तमान के लिए भी मसीह की सेवा करने पर अनेक प्रतिफलों की प्रतिज्ञा है। परन्तु आने वाले दिनों में, कटनी काटने वाले स्वर्ग में उन आत्माओं को देखकर अतिरिक्त आनन्द पाएंगे जिनके लिए उन्होंने विश्वासयोग्यता से सुसमाचार का प्रचार किया था।

पद 36 में यह शिक्षा *नहीं* दी गई है कि कटनी काटने वाला व्यक्ति अपनी विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए अनन्त जीवन का अधिकारी होगा, परन्तु यह कि उस कार्य के **फल** अनन्तकाल तक बने रहेंगे।

स्वर्ग में, बीज बोनेवाला और काटने वाला दोनों एक साथ **आनन्द** करेंगे। भौतिक जीवन में, पहले खेतों को तैयार किया जाता है और उसके बाद बीज बोया जाता है। कुछ समय बाद, फसल काटी जाती है। ऐसा ही आत्मिक जीवन में भी होता है। सबसे पहले, सन्देश सुनाना आवश्यक है, और उसके बाद उस पर प्रार्थना रूपी जल सींचना आवश्यक है। परन्तु जब कटनी का समय आएगा, तो जितने लोगों ने इस कार्य में अपनी भूमिका निभाई है वे सब एक साथ **आनन्द** करेंगे।

4:37 **इस पर**, प्रभु ने इस **कहावत** को पूरा कर दिया कि ''**बोनेवाला और है और काटनेवाला**

और।'' कुछ मसीही इसलिए बुलाए गए हैं कि अपने परिश्रम के लिए फल देखे बिना भी वर्षों प्रचार करते रहें। अन्य लोग इनके बाद आते हैं, और बहुत सी आत्माएं प्रभु के पास आ जाती हैं।

4:38 प्रभु यीशु अपने चेलों को उन क्षेत्रों में भेज रहा था जिसे पहले से ही दूसरे के द्वारा तैयार कर दिया गया था। सम्पूर्ण पुराना नियम समय में, भविष्यद्वक्ताओं ने सुसमाचार के युग और मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की थी। उसके बाद, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी प्रभु का अग्रदूत बन कर आया ताकि लोगों के हृदय को प्रभु को स्वीकार करने के लिए तैयार करे। अब चेले कटनी के खेत में कदम रखने ही वाले थे। स्वयं प्रभु ने सामरिया में बीज बोया था, और प्रभु चाहता था कि वे यह ध्यान रखें कि यद्यपि उन्हें बहुतों को मसीह के पास आते हुए देखने का आनन्द प्राप्त होगा, परन्तु उन्हें यह समझना है कि वे दूसरे के द्वारा **परिश्रम** कर तैयार किए हुए खेत में प्रवेश कर रहे हैं।

बहुत कम आत्माएं ही अकेले व्यक्ति की सेवकाई के द्वारा जीती जा सकी हैं। अनेक लोगों ने उद्धारकर्ता को ग्रहण करने से पहले सुसमाचार को बहुत बार सुना है। इसलिए, जो व्यक्ति अन्त में किसी व्यक्ति को प्रभु तक पहुँचने में अगुवाई करता है उसे इस बात पर घमण्ड नहीं करना चाहिए कि इस अद्‌भुत कार्य के लिए सिर्फ वही परमेश्वर द्वारा उपयोग किया गया पात्र था।

ल.अनेक सामरी प्रभु यीशु पर विश्वास लाते हैं (4:39-42)

4:39 सामरी स्त्री की साधारण और स्पष्ट गवाही के परिणामस्वरूप, **बहुत** से उसके सामरी लोगों ने प्रभु यीशु पर **विश्वास किया**। उस स्त्री ने उनसे सिर्फ इतना ही कहा था, ''**उसने सब कुछ जो मैंने किया** था, **मुझे बता दिया,**'' और तौभी यह बात दूसरों को उद्धारकर्ता तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त थी। हमें इससे उत्साहित होना चाहिए कि हम में से प्रत्येक मसीही विश्वासी प्रभु यीशु मसीह के साधारण, साहसी, और स्पष्ट गवाह बनें।

4:40 प्रभु यीशु मसीह का सामरियों द्वारा ग्रहण किया जाना, मसीह के प्रति यहूदियों के आचरण के बिल्कुल विपरीत था। ये **सामरी** लोग इस अद्‌भुत व्यक्ति की सच्ची सराहना करते हुए दिखाई दिये और फिर वे **उससे बिनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह**। उनके इस निमंत्रण के फलस्वरूप प्रभु यीशु **वहाँ दो दिनों तक रहा**। जरा सोचिए कि सूखार नगर को कितना बड़ा सुअवसर मिला कि वह जीवन और महिमा के प्रभु का इस समयावधि में सत्कार कर सका!

4:41, 42 सामरियों के साथ सामरी स्त्री और प्रभु यीशु के वार्तालाप एक समान नहीं थे। कुछ लोगों ने सामरी स्त्री की गवाही के कारण विश्वास लाया। **और भी बहुतों ने** स्वयं प्रभु यीशु के वचनों के कारण **विश्वास किया**। परमेश्वर पापियों को अपने पास लाने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करता है। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास का होना ही सबसे अनिवार्य बात है। इन सामरियों द्वारा उद्धारकर्ता की इतनी स्पष्ट गवाही देना सचमुच में अद्‌भुत है। उनके मनों में कोई भी सन्देह नहीं था। वे अपने उद्धार को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त थे, यह आश्वासन उस स्त्री के वचनों पर आधारित नहीं था, परन्तु स्वयं उद्धारकर्ता के वचनों पर। जब सामरियों ने उसके वचनों को **सुन लिया** और उस पर विश्वास लाया, तब उन्होंने जान लिया कि **यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है**। ऐसा अन्तर्ज्ञान उन्हें सिर्फ पवित्र आत्मा से ही मिल सकता था। यहूदी लोग यह सोचते थे कि मसीह सिर्फ उनके लिए ही होगा। परन्तु सामरी लोगों ने यह जान लिया कि मसीह की सेवकाई की आशीषों का विस्तार सारे **जगत** में होगा।

म.दूसरा चिन्ह: कर्मचारी के पुत्र की चंगाई (4:43-54)

4:43, 44 सामरियों के बीच में **दो दिन** बिताने **के बाद,** प्रभु यीशु ने उत्तर की ओर **गलील** जाने के लिए कदम मोड़े। पद 44 में एक समस्या दिखाई दे रही है। इसमें यह कहा गया है कि उद्धारकर्ता के सामरिया से गलील जाने का कारण यह था कि **भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता**। और तौभी गलील उसका अपना क्षेत्र था, क्योंकि नासरत नामक नगर इसी क्षेत्र में बसा हुआ था। इस पद का अर्थ संभवत: यह है कि प्रभु यीशु नासरत के छोड़ गलील के अन्य दूसरे भागों में गया।

चाहे जो भी बात यहाँ पर सही हो, यह कथन बिल्कुल सत्य है कि एक व्यक्ति अपने गृहनगर में उतनी सराहना नहीं पाता जितना कि वह दूसरे स्थानों में पाता है। उसके रिश्तेदार और मित्र उसे अपने बीच का ही एक लड़का समझते हैं। निश्चय ही प्रभु यीशु को अपने लोगों से वह सराहना नहीं मिली जितनी कि उसे मिलनी चाहिए थी।

4:45 जब प्रभु **गलील** में आया, तो उसका अच्छे से स्वागत किया गया क्योंकि लोगों ने उन सारे कार्यों का देखा था **जितने काम उसने यरूशलेम में पर्व** के समय किया था। स्पष्ट है कि यहाँ पर जिन्हें **गलीली** कहा गया है, वे यहूदी थे। वे आराधना करने के लिए **यरूशलेम** को गए थे। वहाँ उन्होंने प्रभु को देखा था और उसके कुछ महान आश्चर्यकर्मों के गवाह बने थे। अब वह उसे गलील में अपने मध्य में चाहते थे, इसलिए नहीं कि वह उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार कर रहे थे, परन्तु इसलिए क्योंकि उनके मन में उस व्यक्ति को लेकर जिज्ञासा थी जिसके कारण हर उस स्थान में चर्चाएं शुरू हो जाती थीं जिस जिस स्थान में वह जाया करता था।

4:46 एक बार फिर से **काना** गाँव को यह सम्मान मिला कि प्रभु स्वयं वहाँ पर जाए। जब प्रभु इस गाँव में पहली बार आया था, तो कुछ लोगों ने उसे पानी को दाखरस में बदलते हुए देखा था। परन्तु अब वे उसके द्वारा एक और महान आश्चर्यकर्म देखने वाले थे, जिसका असर **कफरनहूम** तक होगा। **एक कर्मचारी** का **पुत्र कफरनहूम में बीमार था**। यह व्यक्ति निःसन्देह एक यहूदी था जो हेरोदेस के यहाँ नौकरी करता था।

4:47 उसने यह सुना था कि प्रभु **यीशु यहूदिया** को गया था और अब **गलील** को लौट आया है। उसे अवश्य ही मसीह में चंगाई करने की सामर्थ पर कुछ विश्वास रहा हो क्योंकि वह सीधे **उसके पास** आया **और उससे विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को**, जो मरने पर हैं, **चंगा कर दे**। इस अर्थ में, उसे प्रभु पर उसके अधिकांश संगी मनुष्यों की तुलना में अधिक भरोसा था।

4:48 न सिर्फ उस कर्मचारी से, परन्तु यहूदियों से कहते हुए, प्रभु ने उन्हें एक राष्ट्रीय स्वभाव का स्मरण दिलाया, और वह यह स्वभाव कि वे **विश्वास** लाने से पहले चिन्ह देखना चाहते थे। हम यहाँ पर यह पाते हैं कि प्रभु सामान्यत: ऐसे विश्वास से उतना प्रसन्न नहीं होता जो कि किसी आश्चर्यकर्म को देखने के बाद आता है जितना कि ऐसे विश्वास से जो सिर्फ उसके वचन पर आधारित है। वह अधिक आदर का अनुभव तक करता है जब कोई उसकी बात पर सिर्फ इस आधार पर विश्वास ले आता है कि यह बात उसके द्वारा कही गई है बजाए इसके कि ऐसे विश्वास से जो किसी दृश्य प्रमाण को देखने के बाद ही आता है। परन्तु प्रभु यीशु हमें यह सिखाता है कि हमें पहले विश्वास लाना चाहिए, और उसके बाद हम प्रमाण भी देख लेंगे।

चिन्ह और अद्‌भुत काम दोनों ही आश्चर्यकर्म को कहा गया है। **चिन्ह** ऐसे आश्चर्यकर्मों को कहा गया है जिनका कोई गहरा अर्थ या महत्व होता है। **अद्‌भुत काम** उन आश्चर्यकर्मों को कहा जाता है जो अपने अलौकिक गुण के कारण मनुष्यों में विस्मय उत्पन्न करते हैं।

4:49 **कर्मचारी**, जो लगातार सच्चे विश्वास में अडिग था, विश्वास करता था कि प्रभु यीशु उसके पुत्र को चंगा कर सकता है, और किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में सबसे अधिक इच्छा इस बात की रखता है कि प्रभु यीशु एक बार उसके घर आ जाए। एक अर्थ में उसका विश्वास त्रुटिपूर्ण था। वह सोचता था कि प्रभु यीशु को उस बालक को चंगा करने के लिए उसकी खाट के पास होना आवश्यक है। किन्तु, उद्धारकर्ता ने उसे इस बात के लिए नहीं डांटा परन्तु जितना भी विश्वास उस व्यक्ति ने प्रभु पर दिखाया उसके लिए प्रभु ने उसे प्रतिफल दिया।

4:50 यहाँ पर हम इस मनुष्य के विश्वास को बढ़ते हुए देख रहे हैं। उसके पास जितना भी विश्वास था उस विश्वास के अनुसार उसने व्यवहार किया और प्रभु ने उसे और अधिक विश्वास दिया। प्रभु यीशु ने उसे इस प्रतिज्ञा के साथ घर भेजा, "**तेरा लड़का जीवित है**।" उसका पुत्र चंगा हो चुका था! बिना किसी आश्चर्यकर्म या दृश्य प्रमाण के उस **मनुष्य ने** प्रभु **यीशु की कही हुए बात की प्रतीति की** और घर को चल पड़ा। इसे विश्वास का सक्रिय हो जाना कहा जाता है।

4:51, 52 जब वह **मार्ग में जा रहा था**, तो घर में पास पहुँचते ही, **उसके दास** उसके पास आए और उन्होंने उसे यह खुशखबरी सुनाई कि उसका **पुत्र** चंगा हो चुका है। यह कर्मचारी इस खबर से जरा भी नहीं चौंका। उसने प्रभु यीशु की प्रतिज्ञा पर विश्वास कर लिया था,

विश्वास करने के बाद वह उसका प्रमाण भी देखेगा। पिता ने अपने दासों से पूछा कि **किस घड़ी** उसका पुत्र **चंगा होने लगा**। उनके उत्तर से यह प्रगट हुआ कि उसकी चंगाई धीरे धीरे नहीं हुई, परन्तु वह एक ही क्षण में चंगा हो गया।

4:53 अब इस अद्‌भुत आश्चर्यकर्म के विषय में थोड़ा भी सन्देह नहीं रह सकता। पिछले दिन के सातवें घण्टे में, प्रभु **यीशु** ने काना के कर्मचारी को **कहा** था, **''तेरा पुत्र जीवित है।'' उसी घड़ी** कफरनहूम में उसका पुत्र चंगा हो गया था, और उसका ज्वर उतर गया। इससे इस कर्मचारी ने यह जान लिया कि प्रभु को आश्चर्यकर्म करने या किसी प्रार्थना का उत्तर देने के लिए उस स्थान पर शारीरिक रूप से उपस्थित रहना आवश्यक नहीं है। यह बात सब मसीहियों के प्रार्थनामय जीवन के लिए उत्साहजनक है। हमारा एक सामर्थी परमेश्वर है जो हमारे निवेदनों को सुनता है और जो अपने उद्‌देश्यों को संसार के किसी भी स्थान में किसी भी समय पूरा कर सकता है।

कर्मचारी और **उसके सारे घराने ने विश्वास किया**। इस स्थल और पुराना नियम के और भी मिलते जुलते स्थलों से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर परिवारों को मसीह में एक होते देख कर प्रसन्न होता है। वह नहीं चाहता कि स्वर्ग में टूटे हुए परिवार हो। वह सावधानीपूर्वक़ इस तथ्य का ध्यान रखता है कि सारा घराना उसके पुत्र पर विश्वास लाए।

4:54 कर्मचारी के पुत्र की चंगाई प्रभु की अब तक की सेवकाई का दूसरा आश्चर्यकर्म नहीं था। यह **दूसरा आश्चर्यकर्म** था जिसे प्रभु **यीशु** ने **यहूदिया से गलील में आकर** दिखाया था।

III. परमेश्वर के पुत्र की द्वितीय वर्ष की सेवकाई (अध्याय 5)

अ. तीसरा चिन्ह: अड़तीस वर्ष के रोगी की चंगाई (5:1–9)

5:1 अध्याय 5 के आरम्भ में, यहूदी पर्वो में से एक का समय आ चुका था। अनेक लोगों को ऐसा मानना है कि यह फसह का पर्व था, परन्तु निश्चित तौर पर यह कह पाना असम्भव है। इस संसार में प्रभु यीशु एक यहूदी के रूप में जन्मा था, और वह उस व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी था जिसे परमेश्वर ने यहूदियों के लिए बनाया था, प्रभु **यीशु** पर्ब्ब के लिए **यरूशलेम को गया**। सबसे पहली बात, पुराना नियम के यहोवा के रूप में, प्रभु यीशु ही वह व्यक्ति था जिसने फसह की स्थापना की थी। अब एक मनुष्य के रूप में, वह अपने पिता का आज्ञाकारी (पुत्र) था, उसने हर उस व्यवस्था का पालन किया जिसे उसी ने बनाया था।

5:2 **यरूशलेम में**, एक **कुण्ड** था जिसका नाम **बेतहसदा**[12] था, बेतहसदा का अर्थ होता है, ''दया का घर'' या ''तरस का घर''। यह **कुण्ड . . . भेड़ फाटक के पास** स्थित था। इसका वास्तविक स्थान अब पता चल गया है और इसे उत्खनन द्वारा खोज निकाला गया है (सेन्ट ऐनी के क्रूसेडर चर्च के सामने)। कुण्ड के चारों ओर **पाँच ओसारे** या बड़े बड़े खुले स्थान थे जिसमें ढेर सारे लोग समा सकते थे। बाइबल के विद्वानों का मानना है कि ये पाँच ओसारे मूसा की व्यवस्था को दर्शाते हैं और मनुष्य को उसके गहरे संकटों से बाहर निकाल पाने में उनकी असमर्थता को जताते हैं।

5:3 स्पष्ट है कि बेतहसदा का कुण्ड एक ऐसे स्थान के लिए जाना जाता था जहाँ चंगाई के आश्चर्यकर्म हुआ करते थे। हमें यह नहीं मालूम कि ये आश्चर्यकर्म साल भर होते थे, या कुछ निश्चित समयों पर ही होते थे, जैसे कि पर्ब्ब के दिनों में। इस कुण्ड के चारों ओर बड़ी संख्या में **बीमार** लोग पड़े हुए थे जो चंगा होने की आशा से वहाँ आए हुए थे। कुछ लोग **अन्धे** थे, कुछ लोग **लंगड़े**, और कुछ लोग **सूखे अंगवाले**। विभिन्न प्रकार की ये दुर्बलताएं पापमय मनुष्य की असहाय दशा, उसके अन्धेपन, उसके लंड़गेपन, और उसकी अनुपयोगिता का चित्रण करती हैं।

ये लोग, जो पाप के प्रभाव के कारण अपने शरीर में कष्ट झेल रहे थे, **पानी के हिलने की आशा में** ठहरे हुए थे। उनका हृदय बीमारी से मुक्त होने के लिए ललक रहा था, और वे चंगाई पाने की तीव्र इच्छा रखते थे। जे.बी. बेल्लेट ने कहा है:

> वे उस अनिश्चित, और निराश करने वाले जल के आसपास फंसे पड़े थे, जबकि परमेश्वर पुत्र वहाँ उपस्थित था . . . नि:सन्देह यहाँ पर हमारे लिए एक

> शिक्षा पाई जाती है। इस कुण्ड के चारों ओर बड़ी संख्या में लोग थे और प्रभु यीशु वहाँ से जा रहा था परन्तु किसी का भी ध्यान उसकी ओर नहीं था! यह मनुष्य द्वारा बनाए गए धर्म का एक उदाहरण है! लोग रीति–विधियों और उनकी जटिल प्रक्रियाओं के पीछे भाग रहे हैं, और परमेश्वर के अनुग्रह की उपेक्षा की जाती है।[13]

5:4 यहाँ दिया गया वर्णन हमारी जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमें सिर्फ यह बताया गया है कि **नियुक्त समय पर स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे**। जो भी व्यक्ति उस समय सबसे पहले पानी में उतर जाता था वही व्यक्ति चंगाई पाता था। आप कल्पना कर सकते हैं कि इतने सारे लोगों को जो पानी में उतरने के लिए संघर्ष करते थे और उसके बाद भी सिर्फ एक ही व्यक्ति चंगाई पाता था, उन्हें सहायता की आवश्यकता में देखना क्या ही दयनीय दृश्य रहा होगा।

यद्यपि बाइबल के अनेक संस्करणों में पद 3 का अन्तिम भाग (''पानी के हिलने की आशा में'') और पूरा पद 4 शामिल नहीं किया गया है। ये पद अधिकांश हस्तलिपियों में पाए जाते हैं। इसके साथ साथ, इन बीमारों के वहाँ होने का कारण जाने बिना इस कहानी का अर्थ सही रीति से सामने नहीं आता।

5:5, 6 उन में से एक मनुष्य जो कुण्ड के पास पड़ा हुआ था **अड़तीस वर्ष** से बीमार था। इसका अर्थ यह है कि वह इस अवस्था में मसीह के जन्म होने के पहले से ही पड़ा हुआ था। प्रभु यीशु को हर एक बात का पूरा पूरा ज्ञान था। वह इस व्यक्ति से पहले कभी नहीं मिला था। तौभी वह जानता था कि यह व्यक्ति **बहुत दिनों से** बीमार है।

करूणा दर्शाते हुए उसने **उससे पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?''** प्रभु यीशु जानता था कि यह इस मनुष्य के हृदय की सबसे बड़ी अभिलाषा है। परन्तु वह यह भी चाहता था कि यह व्यक्ति अपनी असहाय दशा और चंगाई की नितांत आवश्यकता को अपने मुँह से व्यक्त करे। उद्धार में भी ऐसा ही होता है। प्रभु जानता है कि हमें उद्धार की बहुत आवश्यकता है, परन्तु वह तब तक रूका रहता है जब तक हम अपने मुँह से यह अंगीकार नहीं कर लेते कि हमें उसकी आवश्यकता है और हम उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं कर लेते। हम अपनी इच्छा से उद्धार नहीं पाते, तौभी इससे पहले कि परमेश्वर एक आत्मा का उद्धार करे उस मनुष्य को अपनी इच्छा प्रगट करना आवश्यक है।

5:7 बीमार व्यक्ति का उत्तर और भी दयनीय था। वर्षों तक वह कुण्ड के किनारे पड़ा रहा ताकि वह नियुक्त समय पर नीचे उतर सके, परन्तु जब भी **पानी हिलाया** जाता था, उसकी सहायता करने के लिए उसके पास और कोई नहीं होता था। हर बार वह पानी में उतरने का प्रयास करता था, परन्तु उससे पहले ही कोई दूसरा उतर जाता था। यह बात हमें इस बात का ध्यान दिलाती है कि यदि हम अपने उद्धार के लिए अपने संगी मनुष्यों पर निर्भर रहेंगे तो हमें कितना निराश होना पड़ेगा।

5:8 इस मनुष्य की **खाट** (बिस्तर) असल में एक हल्की सी चटाई या गुदड़ी थी। प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''**उठ** अपनी खाट उठा और **चल फिर**।'' यहाँ पर यह शिक्षा पाई जाती है कि उद्धार पाने के बाद हमें सिर्फ उठना ही नहीं है, परन्तु हमें चलना भी है। प्रभु यीशु हमें पाप की महामारी से चंगाई देता है, और उसके बाद वह चाहता है कि हम उसके योग्य चाल चलें।

5:9 उद्धारकर्ता कभी भी किसी कार्य को करने के लिए सामर्थ दिए बिना उस कार्य को करने की आज्ञा नहीं देता। जब प्रभु ने इस व्यक्ति से अपनी बातें कहीं तो उस बीमार व्यक्ति के शरीर में नया जीवन और सामर्थ बह चला। वह तुरन्त चंगा हो गया। वह धीरे धीरे चंगा नहीं हुआ। जो पैर वर्षों से बेकार या कमजोर हो गए थे अब शक्ति पाकर सक्रिय हो गए। उसके बाद प्रभु के वचनों का पालन किया गया। वह **अपनी खाट उठा कर चलने फिरने लगा**। अड़तीस वर्ष की बीमारी के बाद ऐसा कर पाना उसके लिए क्या ही रोमांचक रहा होगा!

यह आश्चर्यकर्म **सब्त** के दिन हुआ, जो सप्ताह का सातवां दिन था – जिसे हम शनिवार कहते हैं। यहूदी लोगों को सब्त के दिन कार्य करना मना था। यह व्यक्ति एक यहूदी था, और प्रभु के एक आदेश पर, वह सब्त के दिन की इस यहूदी परम्परा के बाद भी अपनी खाट उठा कर चलने में जरा भी नहीं हिचका।

ब. यहूदियों का विरोध (5:10-18)

5:10 जब **यहूदी** लोगों ने इस मनुष्य को **सब्त** के दिन अपनी खाट उठा कर चलते हुए देखा, तो उन्होंने उसे चुनौती दी। ये लोग धार्मिक रीतिविधियों का पालन करने में बहुत ही सख्त, यहाँ तक कि निर्दयी भी थे और व्यवस्था के एक एक शब्द का हूबहू पालन किया करते हैं, परन्तु स्वयं दूसरों के प्रति दया और करूणा नहीं दर्शाते थे।

5:11 चंगाई पाए हुए इस व्यक्ति ने एक बहुत ही सरल उत्तर दिया। उसने कहा कि जिस व्यक्ति ने उसे चंगा किया है उसी ने उस से अपनी खाट **उठा कर** चलने-फिरने कहा है। यदि किसी व्यक्ति के पास अड़तीस वर्ष के एक बीमार को चंगा कर देने की सामर्थ है तो ऐसे व्यक्ति की आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए, चाहे उसने किसी व्यक्ति को सब्त के दिन खाट उठाकर चलने के लिए ही क्यों न कहा हो! चंगाई प्राप्त व्यक्ति उस समय प्रभु यीशु को नहीं जानता था कि वह कौन था। उसने उसके विषय में सामान्य रीति से बातचीत की, परन्तु उसके प्रति अत्यंत कृतज्ञता जताते हुए।

5:12 यहूदी लोग यह जाने के लिए उत्सुक थे कि किसने इस व्यक्ति को सब्त के विषय उनकी परम्परा को तोड़ने के लिए कहने का साहस किया है, और इसलिए उन्होंने उस व्यक्ति से दोषी को पहचानने के लिए कहा। मूसा की व्यवस्था में यह ठहराया गया था कि जो सब्त के नियम का उल्लंघन करे उसे पत्थरवाह कर मार डाला जाए। यहूदियों को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि सूखे अंगवाला व्यक्ति चंगा कर दिया गया है।

5:13 जो व्यक्ति **चंगा** हुआ था वह यह नहीं जानता कि उसे किसने चंगा किया है। और उसे ढूंढ़ पाना असम्भव था, क्योंकि प्रभु **यीशु** वहाँ एकत्रित भीड़ से बाहर निकल कर जा चुका था।

यह घटना प्रभु यीशु मसीह की सार्वजनिक सेवकाई में एक महान निर्णायक मोड़ लेकर आती है। इसलिए कि प्रभु यीशु ने यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन किया था, उसके प्रति यहूदी अगुवों के मन में क्रोध और बैर बढ़ने लगा। वे उसके पीछे पड़ गए कि उसे मार डालें।

5:14 कुछ समय बाद चंगा किया गया यह व्यक्ति प्रभु **यीशु को मन्दिर में मिला**, जहाँ नि:सन्देह वह परमेश्वर को अपने जीवन में हुए इस आश्चर्यकर्म के लिए धन्यवाद दे रहा था। प्रभु ने उसे ध्यान दिलाया कि चूंकि उस पर बहुत बड़ी दया हुई है, इस कारण उसे भी सावधानीपूर्वक कुछ बाध्यताओं (जिम्मेदारियों) का ध्यान रखना होगा। सुअवसर हमेशा अपने साथ जिम्मेदारियां लेकर आते हैं। ''**देख तू चंगा हो गया है, फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े**।'' यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस व्यक्ति की यह बीमारी उसके किसी पाप के परिणामस्वरूप उसमें आई थी। सब बीमारियों पर यह बात लागू नहीं होती। अनेक बार एक व्यक्ति के जीवन में आई अस्वस्थता का उसके द्वारा किए गए पाप से सीधा सम्बन्ध नहीं रहता। उदाहरण के लिए, नवजात शिशु यह जान पाने से पहले ही बीमार पड़ सकते हैं कि पाप क्या होता है।

प्रभु यीशु ने कहा, ''**फिर से पाप मत करना**,'' इस तरह प्रभु यीशु ने परमेश्वर द्वारा ठहराए गए पवित्रता के स्तर को व्यक्त किया। यदि प्रभु यीशु कहता, ''जितना हो सके उतना कम पाप करना,'' तो वह परमेश्वर नहीं हो सकता था। परमेश्वर पाप को किसी भी अंश में अनदेखा नहीं कर सकता। उसके बाद यह चेतावनी आगे जोड़ी गई, ''**ऐसा न हो कि इससे** भी **भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े**।'' प्रभु ने यह नहीं बताया कि इससे भारी विपत्ति और क्या हो सकती है। किन्तु, वह नि:सन्देह यह चाह रहा था कि वह व्यक्ति इस बात को समझ जाए कि शारीरिक बीमारी की तुलना में पाप के परिणाम काफी भयानक होते हैं। जो अपने पापों में मर जाते हैं वे अनन्त कोप और वेदना भोगने के लिए दोषी ठहराए जाते हैं।

व्यवस्था के विरोध में पाप करने की तुलना में अनुग्रह के विरुद्ध पाप करना अधिक गम्भीर बात है। प्रभु यीशु ने इस व्यक्ति पर अद्‌भुत प्रेम और दया दर्शायी थी। और यदि अब यह व्यक्ति उसी प्रकार का पापमय जीवन जीना जारी रखता है जिसके कारण उस पर यह बीमार आई थी, तो फिर यह एक खराब प्रत्युत्तर होगा।

5:15 सामरी स्त्री के समान, यह **मनुष्य** अपने उद्धारकर्ता के विषय में सार्वजनिक रूप से गवाही देना चाहता था। उसने **जाकर यहूदियों से कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया, वह यीशु है**। वह प्रभु यीशु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना चाहता था, यद्यपि यहूदी लोगों को इस प्रकार की श्रद्धा में कोई रूचि नहीं थी। उनकी

सबसे मुख्य अभिलाषा प्रभु यीशु को पकड़ कर उसे दण्ड देने की थी।

5:16 यहाँ पर मनुष्य के हृदय का एक भयानक चित्र सामने आता है। उद्धारकर्ता ने आकर चंगाई का एक महान कार्य किया और ये **यहूदी** अत्यंत क्रोधित हो गए। वे इस बात से कुढ़ गए कि यह आश्चर्यकर्म **सब्त के दिन** हुआ। वे निष्ठुर धर्मवादी थे, जो अपने संगी मनुष्यों पर आने वाली आशीषों और कल्याण से अधिक रूचि धार्मिक रीति-विधियों को पूरा करने में रखते थे। वे यह नहीं पहचान सके कि प्रभु यीशु ही वह व्यक्ति है जिसने सब्त को अलग करके ठहराया था और उसी ने इस दिन दया के इस कार्य को किया है। प्रभु यीशु ने सब्त के नियम को नहीं तोड़ा था। व्यवस्था में उस दिन तुच्छ कार्यों को करने से मना किया गया था, परन्तु इसमें आवश्यक या दया के कार्यों को करने से मना नहीं किया गया था।

5:17 सृष्टि की रचना के कार्य को छः दिनों में पूरा करने के बाद, परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया था। यह सब्त का दिन था। किन्तु, जब पाप संसार में आया, तो परमेश्वर के विश्राम में विघ्न पड़ा। अब वह मनुष्यों को फिर से अपनी संगति में लाने के लिए बिना रूके परिश्रम करेगा। वह अब छुटकारे का एक उपाय करेगा। वह प्रत्येक पीढ़ी के लोगों के लिए सुसमाचार का सन्देश भेजेगा। इस प्रकार से, आदम के पाप में पड़ने से लेकर वर्तमान समय तक, परमेश्वर बिना रूके **अब तक कार्य करता है**, और अब भी कार्य कर रहा है। प्रभु यीशु पर भी यही बात लागू होती है। वह अपने पिता के कार्य में व्यस्त था, और उसका प्रेम और अनुग्रह सप्ताह के सिर्फ छः दिनों तक सीमित नहीं रह सकता।

5:18 यह पद बहुत महत्वपूर्ण है। यह पद बताता है कि यहूदी पहले की अपेक्षा अब और अधिक प्रतिबद्ध हो गए कि प्रभु यीशु को **मार** डालें, क्योंकि **वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता** था, परन्तु अपने आप को **परमेश्वर के तुल्य** बताता था! उनकी संकीर्ण बुद्धि में, उन्हें ऐसा लगता था कि प्रभु यीशु ने सब्त के नियम को तोड़ा है जबकि ऐसा नहीं था। वे यह नहीं समझ सके कि परमेश्वर ने सब्त के नियम के लिए यह कभी नहीं चाहा था कि नियम के कारण मनुष्य के जीवन में कोई अनावश्यक कठिनाई आए। यदि एक मनुष्य सब्त के दिन एक बीमारी से चंगा हो सकता है, तो परमेश्वर अड़ा नहीं रहेगा कि उसे एक दिन और अपनी बीमारी में रहना ही पड़ेगा।

जब प्रभु यीशु ने **परमेश्वर** को **अपना पिता** कहा, तो वह जानता था कि वह **परमेश्वर के तुल्य** होने का दावा कर रहा है। उनके लिए यह बात एक घोर ईशनिन्दा थी। वास्तव में, यह एक सत्य ही था।

क्या प्रभु ने सचमुच में परमेश्वर के तुल्य होने का दावा किया? यदि यह उसका आशय नहीं था, तो उसने उसे यहूदियों को समझा दिया होता। बल्कि, उसने अगले पदों में और भी सकारात्मक शब्दों में यह कहा, कि वह और पिता सचमुच में एक हैं। जैसा कि जे. सिडलो कहते हैं:

> वह सात बातों में परमेश्वर के तुल्य होने का दावा करता है: (1) कार्य करने में तुल्य: ''जिन जिन कामों को वह (पिता) करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है'' (पद 19)। (2) जानने में तुल्य: ''क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है'' (पद 20)। (3) पुनरूत्थान करने में तुल्य: ''जैसा पिता मरे हुए को . . . जिलाता है वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है'' (पद 21 के साथ साथ पद 28, 29)। (4) न्याय करने में तुल्य: ''पिता किसी का भी न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम उसने पुत्र को सौंप दिया है'' (पद 22 के साथ साथ पद 27)। (5) आदर में तुल्य: ''इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें'' (पद 23)। (6) नया जीवन देने में तुल्य: ''जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, . . . वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है'' (24, 25 पदों में)। (7) स्व अस्तित्व में तुल्य: ''क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे'' (पद 26)।[14]

स. प्रभु यीशु परमेश्वर के तुल्य होने के अपने दावे का बचाव करता है (5:19-29)

5:19 उद्धारकर्ता अपने परमेश्वर पिता से इतने अनिवार्य रीति से जुड़ा हुआ है कि वह स्वतंत्र हो कर कार्य

नहीं कर सकता। उसके कहने का अर्थ यह नहीं है कि उसके पास कुछ भी करने का अधिकार नहीं है, परन्तु वह परमेश्वर से इतनी नज़दीकी से जुड़ा हुआ है कि वह सिर्फ उन्हीं कार्यों को कर सकता है जिन कार्यों को उसने **पिता** को करते हुए देखा है। यद्यपि प्रभु यीशु ने परमेश्वर के तुल्य होने का दावा किया, परन्तु उसने पिता से स्वतंत्र होने का दावा नहीं किया। यद्यपि वह पूर्णत: उसके तुल्य है, परन्तु उससे स्वतंत्र नहीं।

प्रभु यीशु यह चाहता था कि यहूदी उसे परमेश्वर के तुल्य समझें। किसी मनुष्यमात्र द्वारा उन कार्यों को करने का दावा करना जिसे सिर्फ परमेश्वर **करता है** अटपटा होगा। इस प्रकार का दावा करने के लिए, उसे लगातार पिता तक पहुँच और स्वर्ग में जो कुछ हो रहा है उसका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। न सिर्फ इतना ही, प्रभु यीशु उन कार्यों को करने का भी दावा करता है जिसे उसने **पिता को करते देखा** है। यह दावा कर निश्चय ही उसने परमेश्वर के तुल्य होने पर जोर दिया है। वह सर्वशक्तिमान है।

5:20 अपने **पुत्र** के प्रति उसके पिता के प्रेम का यह विशेष चिन्ह है कि पिता **जो जो काम . . . आप करता है वह सब उसे दिखाता है**। प्रभु यीशु ने इन चीज़ों को न सिर्फ देखा; उसके पास उन्हें करने की सामर्थ भी थी। उसके बाद उद्धारकर्ता ने आगे कहा कि परमेश्वर **इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा**, ताकि लोग **अचम्भा** करें। वे प्रभु यीशु को आश्चर्यकर्म करते हुए पहले ही देख चुके थे। अभी अभी उन्होंने अड़तीस वर्ष के रोगी को चंगा होते देखा था। परन्तु वे **इन से भी बड़े** अचम्भे के कार्य देखने पर थे। अचम्भे का पहला कार्य मरे हुए में से जीवित करने का आश्चर्यकर्म होगा (पद 21)। दूसरा मनुष्यजाति का न्याय करने का कार्य होगा (पद 22)।

5:21 यहाँ पर पुत्र और पिता की तुल्यता का एक और स्पष्ट कथन पाया जाता है। यहूदियों ने प्रभु यीशु पर दोष लगाया कि वह परमेश्वर के तुल्य होने का दावा करता है। उसने इस आरोप का इंकार नहीं किया, परन्तु उसने इस सच्चाई के एक से बढ़ कर एक ठोस प्रमाण दिए कि वह और पिता एक हैं। जिस प्रकार से **पिता मरे हुओं को उठाता है और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है**। यदि प्रभु यीशु मनुष्यमात्र होता तो क्या उसके विषय में ऐसा कहा जा सकता था? इस प्रश्न में ही इसका उत्तर भी पाया जाता है।

5:22 नया नियम यह बताती है कि परमेश्वर **पिता** ने **न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है**। इस कार्य को कर पाने के लिए, यह आवश्यक था कि प्रभु यीशु के पास परम ज्ञान और सिद्ध धार्मिकता हो। उसमें मनुष्य के हृदयों और विचारों को समझ पाने की सामर्थ आवश्यक है। यह कितनी विचित्र बात थी कि सारी पृथ्वी का न्यायी इन यहूदियों के सामने खड़ा होकर अपने अधिकार का दावा कर रहा है, तौभी वे उसे नहीं पहचान सके!

5:23 यहाँ पर कारण बताया गया है कि क्यों परमेश्वर ने अपने पुत्र को मृतकों को जिलाने और जगत का न्याय करने का अधिकार दिया है। इसका कारण यह है **कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं, वैसे ही पुत्र का भी आदर करें**। यह एक बहुत महत्वपूर्ण कथन है, और प्रभु यीशु के ईश्वरत्व पर बाइबल में दिए गए सबसे स्पष्ट प्रमाणों में से एक है। सम्पूर्ण बाइबल में हमें यह सिखाया गया है कि सिर्फ परमेश्वर की ही आराधना करनी है। दस आज्ञाओं में, लोगों को एकमात्र सच्चे परमेश्वर को छोड़ और किसी देवता को अपना ईश्वर मानने से मना किया गया था। यहाँ हमें यह बताया जा रहा है कि **सब लोग जैसा पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें**। इस पद से हम सिर्फ यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है।

अनेक लोग परमेश्वर की आराधना करने का दावा करते हैं परन्तु यह मानने से इंकार करते हैं प्रभु यीशु परमेश्वर है। उनका मानना है कि प्रभु यीशु एक अच्छा मनुष्य था या अन्य सभी मनुष्यों की तुलना में परमेश्वर के सबसे अधिक समान था। परन्तु इस पद में उसे पूरी तरह से परमेश्वर के बराबर बताया गया है, और इस पद में अनिवार्य किया गया है कि जो आदर लोग *परमेश्वर पिता* को देते हैं वे प्रभु यीशु को भी दें। परमेश्वर से प्रेम करने का दावा निरर्थक है यदि हम वही प्रेम प्रभु यीशु से नहीं रखते। यदि आपने अब तक यह नहीं पहचाना है कि प्रभु यीशु मसीह कौन है, तो इस पद की ओर सावधानी से ध्यान दें। स्मरण रखें कि यह परमेश्वर का वचन है, और इस महिमामय सत्य को स्वीकार करें कि प्रभु यीशु देहरूप में प्रगट हुआ परमेश्वर है।

5:24 पिछले पदों में, हमने यह देखा था कि प्रभु यीशु के पास जीवन देने का अधिकार है और यह भी कि उसे न्याय करने का सब काम सौंपा गया है। अब हम यह देखेंगे कि किस तरह से एक व्यक्ति उससे आत्मिक जीवन प्राप्त करके **दण्ड** से बच सकता है।

यह बाइबल के सबसे लोकप्रिय सुसमाचार पदों में से एक है। बहुत से लोगों ने इस पद के सन्देश के द्वारा अनन्त जीवन को पाया है। नि:सन्देह इस पद के इतना लोकप्रिय होने का कारण वह तरीका है जिससे कि यह उद्धार के मार्ग को स्पष्ट रीति से सामने रखता है। प्रभु यीशु ने इस पद के आरम्भ में इन शब्दों का प्रयोग किया, ''**सच सच**'' और इस तरह से उसने इसके बाद अपने द्वारा कही जाने वाली बात के महत्व की ओर सब का ध्यान खींचा। साथ ही उसने एक बहुत ही निजी घोषणा को जोड़ा, ''**मैं तुम से . . . कहता हूँ।**'' परमेश्वर का पुत्र हमसे बहुत ही निजी और घनिष्ठ तरीके से यह बात कह रहा है।

''**जो मेरा वचन सुनकर . . .।**'' परमेश्वर के वचन को सुनने का अर्थ सिर्फ उसे कान से सुन लेना ही नहीं होता, परन्तु इसे स्वीकार करना, इस पर विश्वास करना, और इसका पालन करना भी होता है। अनेक लोग सुसमाचार प्रचार को सुनते हैं, परन्तु सुनने के बाद उस पर कोई कदम नहीं उठाते। प्रभु यहाँ पर कह रहा है कि मनुष्य को चाहिये कि वह उसकी शिक्षाओं को ईश्वरीय शिक्षा के रूप में स्वीकार करे, और यह विश्वास लाए कि सचमुच में प्रभु यीशु मसीह ही जगत का उद्धारकर्ता है।

''**मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है।**'' यह परमेश्वर पर विश्वास करने का विषय है। परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति सिर्फ परमेश्वर पर विश्वास लाकर उद्धार पा सकता है? अनेक लोग परमेश्वर पर विश्वास करने का दावा करते हैं, तौभी उन्होंने कभी मन नहीं फिराया है। नहीं, यहाँ पर यह कहा गया है कि एक व्यक्ति को परमेश्वर पर विश्वास करना आवश्यक है जिसने प्रभु यीशु को इस जगत में भेजा। उसे क्या विश्वास करना आवश्यक है? उसे यह विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर ने प्रभु यीशु को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में **भेजा।** उसे वह विश्वास करना आवश्यक है जो परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह के विषय में कहता है, जैसे, यह कि वह एकमात्र उद्धारकर्ता है और उसके द्वारा कलवरी पर पूर्ण किए कार्य के द्वारा ही पाप दूर किए जा सकते हैं।

''**अनन्त जीवन उसका है।**'' ध्यान दें कि वह यह नहीं कहता कि वह अनन्त जीवन पाएगा, परन्तु यह कि वर्तमान से ही अनन्त जीवन उसका है। **अनन्त जीवन** प्रभु यीशु मसीह का जीवन है। यह एक ऐसा जीवन नहीं है जो सिर्फ सदा काल तक बना रहेगा, परन्तु यह एक उच्चतर स्तर का जीवन है। यह उद्धारकर्ता का जीवन है जिसे वह हमें देता है जब हम उस पर विश्वास लाते हैं। यह वह आत्मिक जीवन है जिसे एक मनुष्य नया जन्म के समय प्राप्त करता है, यह उस भौतिक जीवन के विपरीत है जिसे उसने अपने भौतिक जन्म पर प्राप्त किया था।

''**उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं।**'' यहाँ पर यह कहा गया है कि वह वर्तमान में दण्ड के लिए दोषी नहीं ठहराया गया है और भविष्य में भी वह दोषी नहीं ठहराया जाएगा। जो प्रभु यीशु पर विश्वास रखता है वह **दण्ड** से मुक्त है क्योंकि मसीह ने उसके पाप का दण्ड कलवरी पर चुका दिया है। परमेश्वर इस दण्ड को दो बार चुकाए जाने की मांग नहीं करेगा। मसीह ने हमारा स्थान लेकर के इस दण्ड को चुका दिया है, और इतना पर्याप्त है। उसने कार्य को पूरा कर दिया है, और पूर्ण किए गए कार्य में और कुछ भी नहीं जोड़ा जा सकता। एक मसीही को उसके पाप के लिए कोई दण्ड नहीं मिलेगा।[15]

''**परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।**'' जिस ने भी प्रभु यीशु की प्रतीति की उसने आत्मिक **मृत्यु** को पार लिया है और आत्मिक **जीवन** में प्रवेश कर चुका है। मन फिराव से पहले, वह पापों और अपराधों में मरा हुआ था। इस अर्थ में वह मरा हुआ था कि उसके जीवन में परमेश्वर के लिए प्रेम या प्रभु के साथ सहभागिता करने की इच्छा नहीं थी। जब वह यीशु मसीह पर विश्वास लाता है, तो पवित्र आत्मा उसके भीतर निवास करने लगता है और वह ईश्वरीय जीवन का अधिकारी बन जाता है।

5:25 यहाँ पर प्रभु, अध्याय 5 में तीसरी बार और सुसमाचार में सातवी बार **'सच सच'** का प्रयोग कर रहा है। जब प्रभु यीशु ने कहा कि वह **समय आता है और अब है,** तो वह यहाँ घण्टे, मिनट, या सेकंड वाले समय की बात नहीं कर रहा था, परन्तु वह यह कह रहा था कि समय आ रहा है और समय आ चुका है। यह समय संसार के इतिहास के मंच में प्रभु के आगमन को कहा गया है।

यहाँ पर इस पद में किस **मृतक** के बारे में कहा गया है? वे लोग कौन हैं जो **परमेश्वर के पुत्र का शब्द** सुनेंगे और **जीएंगे**? हो सकता है कि यह शायद उन लोगों के बारे कहा गया है जिन्हें प्रभु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के दौरान मृतकों में से जिलाया था। परन्तु इस पद का अर्थ इससे भी अधिक व्यापक है। यहाँ पर **मृतक** उन्हें कहा गया है जो अपने अपराधों और पापों में मरे हुए हैं। वे **परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे** जब सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा। जब वे सन्देश को ग्रहण कर उद्धारकर्ता को स्वीकार करते हैं, तब वे मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश करते हैं।

इस बात को समर्थन देने के लिए कि पद 25 का विषय भौतिक नहीं परन्तु आत्मिक है, हम एक सूची के सहारे पद 25 के साथ पद 28, 29 की तुलना कर रहे हैं:

पद 25 – मृत्यु से जीवन	*28, 29 पदों में – मृत्यु के बाद का जीवन*
''वह समय आता है, और अब है''	''वह समय आता है''
''मृत्तक''	''जितने कब्रों में हैं''
''शब्द सुनेंगे''	''उसका शब्द सुनकर''
''जो सुनेंगे वे जीएंगे''	''निकलेंगे''

5:26 इस पद में यह समझाया गया है कि किस तरह से एक व्यक्ति प्रभु यीशु से जीवन प्राप्त कर सकता है। जिस तरह से **पिता** ही **जीवन** का स्रोत और देनेवाला है, उसी तरह से उसने यह ठहराया है कि **पुत्र** भी **अपने आप में जीवन** रखे और उसे दूसरों को दे सके। यहाँ पर एक बार फिर से मसीह के ईश्वरत्व और पिता से उसकी तुल्यता के बारे में एक विशेष कथन पाया जाता है। यह किसी भी अन्य व्यक्ति के बारे में नहीं कहा जा सकता कि वह अपने आप में जीवन रखता है। जीवन हम में से हर एक को दिया गया था, परन्तु कभी भी पिता या पुत्र को जीवन नहीं दिया गया। आदि से उनमें जीवन पाया जाता है। जीवन का कभी कोई आरम्भ नहीं हुआ। इसका उनसे अलग कोई स्रोत नहीं है।

5:27 परमेश्वर ने न सिर्फ यह ठहराया है कि पुत्र अपने आप में जीवन रखे, परन्तु उसने जगत का न्याय करने का भी उसे **अधिकार दिया** है। न्याय करने की सामर्थ प्रभु यीशु को दी गई है **इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है**। प्रभु को परमेश्वर का पुत्र और **मनुष्य का पुत्र** दोनों कहा जाता है। *परमेश्वर का पुत्र* पदनाम हमें यह स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु पवित्र त्रिएकत्व का एक सदस्य है, और परमेश्वरत्व का एक व्यक्ति है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, वह पिता और पवित्र आत्मा के बराबर है, और परमेश्वर के पुत्र के रूप में वह जीवन देता है। परन्तु वह **मनुष्य का पुत्र** भी है। वह इस जगत में एक मनुष्य के रूप में आया, वह मनुष्यों के बीच में रहा, मनुष्यों के स्थान पर (के बदले) वह क्रूस पर मर गया। जब वह मनुष्य के रूप में इस जगत में आया था तब उसे ठुकरा दिया गया और क्रूस पर चढ़ा दिया गया। जब वह फिर से इस जगत में आएगा, तो वह अपने शत्रुओं पर न्याय करेगा और वही संसार उसका आदर करेगा जहाँ एक बार उसके साथ निष्ठुरता का व्यवहार किया गया था। इसलिए कि वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है, वह न्यायधीश के रूप में पूरी तरह से योग्य है।

5:28 नि:सन्देह जब मसीह पिता के तुल्य होने के अपने दावे के पक्ष में सशक्त तर्क दे रहा था, तो सुनने वाले यहूदी अचम्भित हो गए। वह यह जान गया कि उनके मनों में क्या चल रहा है, और इसलिए उसने उनसे कहा कि वे इन बातों पर **अचम्भा मत** करें। उसके बाद उसने उनके सामने कुछ और चौंकाने वाली सच्चाइयों को प्रगट किया। भविष्य में एक ऐसा समय आएगा जब **जितने** लोगों की लोथें **कब्रों में हैं** वे **उसका शब्द सुनेंगे**। किसी भी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो परमेश्वर नहीं है यह भविष्यद्वाणी किया जाना कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि कब्रों में पड़ी लोथें एक दिन उसका शब्द सुनेंगी! सिर्फ परमेश्वर ही इस प्रकार की बात कर सकता है।

5:29 एक दिन सारे मृतक जिलाए जाएंगे। कुछ लोग **जीवन** पाने के लिए जिलाए जाएंगे, और कुछ **दंड** के लिए जिलाए जाएंगे। यह एक गम्भीर सच्चाई है कि हर व्यक्ति जो इस जगत में आया और जो आएगा इन दोनों वर्गों में से ही किसी एक में अवश्य आता है।[16]

पद 29 में यह शिक्षा *नहीं* दी गई है कि जिन लोगों ने भला काम किया है, वे अपने भले कामों के कारण उद्धार पाएंगे, और जिन्होंने बुरे काम किए हैं वे अपने बुरे कामों के कारण दोषी ठहराए जाएंगे। एक व्यक्ति भला काम करने के द्वारा उद्धार नहीं पा सकता, परन्तु वह भले काम इसलिए करता है क्योंकि उसने उद्धार पाया है। भले काम

उद्धार की जड़ें नहीं, परन्तु फल हैं। वे कारण नहीं परन्तु प्रभाव हैं। **जिन्होंने बुराई की है** – यह वाक्यांश उन लोगों के विषय में है जिन्होंने अपना विश्वास और भरोसा कभी प्रभु यीशु पर नहीं रखा, जिसके कारण उनके जीवन परमेश्वर की दृष्टि में बुरे रहे। ये परमेश्वर के सामने इसलिए जिलाए जाएंगे ताकि उन्हें अनन्त दण्ड की आज्ञा सुनाई जाए।

द. प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र बताने वाले चार गवाह (5:30–47)

5:30 सरसरी तौर पर पढ़ने से ऐसा लगता है कि ''**मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता,**'' कह कर प्रभु यीशु यह कह रहा है कि उसके पास अपने आप कुछ करने का अधिकार नहीं है। किन्तु, ऐसा नहीं था। वह और पिता आपस में एक दूसरे से इतने नज़दीकी से जुड़े हुए हैं कि वह अकेला कुछ नहीं कर सकता। वह अपने अधिकार से कुछ नहीं कर सकता। उद्धारकर्ता में अंशमात्र भी हठ नहीं है। वह पूरी तरह से अपने पिता का आज्ञाकारी रह कर और हमेशा उसके साथ पूर्ण संगति और तालमेल बनाए रख कर कोई भी कार्य करता है।

यह पद अक्सर झूठे शिक्षकों द्वारा अपने इस दावे का समर्थन करने के लिए उपयोग में लाया जाता है कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर नहीं है। वे कहते हैं कि इसलिए कि उसके पास अपने आप कुछ भी करने का अधिकार नहीं था इसलिए वह एक मनुष्यमात्र था। परन्तु यह पद इसकी विपरीत बात को प्रमाणित करता है। मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है चाहे वह परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो या न हो। परन्तु प्रभु यीशु ऐसा नहीं कर सकता था। यह *भौतिक* असम्भवता नहीं, परन्तु एक *नैतिक* असम्भवता थी। उसके पास सब कुछ करने के लिए भौतिक सामर्थ थी, परन्तु वह ऐसा कुछ भी नहीं कर सकता था जो गलत हो: और उसके लिए कोई भी ऐसा कार्य करना गलत होता जो कि परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार नहीं है। यह कथन प्रभु यीशु मसीह को शेष हर एक मनुष्य से अलग करता है।

प्रभु अपने पिता की बात सुनता था और उससे प्रतिदिन निर्देश प्राप्त करता था, और वह उसी के अनुसार सोचता, सिखाता, और कार्य करता था। यहाँ पर **न्याय** शब्द किसी कानूनी मामले पर निर्णय देने के अर्थ से प्रयोग नहीं किया गया है परन्तु यह निर्णय लेने के अर्थ से कि क्या करना और क्या कहना उसके लिए उचित होगा।

इसलिए कि उद्धारकर्ता का कोई भी स्वार्थ नहीं था, वह किसी भी विषय पर निष्पक्ष और उचित निर्णय ले सकता था। उसकी एकमात्र अकांक्षा यह थी कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करे और उसकी इच्छा पूरी करे। इस अंकाक्षा को पूरी करने के मार्ग में किसी भी चीज़ को आड़े आने नहीं दिया जा सकता था। इसलिए, किसी भी विषय में उसका निर्णय किसी ऐसे पक्ष के द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता था जिससे स्वयं उसे कोई लाभ मिल सके। हमारे मत और हमारी शिक्षाएं सामान्यत: इस बात से प्रभावित होती हैं कि हम क्या करना चाहते हैं या क्या विश्वास करना चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर के पुत्र के साथ ऐसा नहीं था। उसके मत या उसके निर्णय का झुकाव उसके स्वयं के पक्ष की ओर नहीं होता था। वह पूर्वाग्रह से मुक्त था।

5:31 इस अध्याय के शेष पदों में, प्रभु यीशु ने अपने ईश्वरत्व के विभिन्न गवाहों का वर्णन किया है। उसने कहा, ''**यदि मैं आप से अपनी गवाही दूं, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं**।'' इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं हो सकता कि प्रभु यीशु कभी कोई ऐसी बात भी कह सकता है जो सच्ची न हो। बल्कि, वह सिर्फ एक सामान्य बात कह रहा था कि एक अकेले व्यक्ति की गवाही को कानून की कचहरी में पर्याप्त साक्ष्य नहीं माना जाता। परन्तु ईश्वरीय आज्ञा यह थी कि कम से दो या तीन गवाहों की गवाही पर ही एक वैध निर्णय दिया जा सकता है। और इसलिए अब प्रभु यीशु दो या तीन नहीं, परन्तु अपने ईश्वरत्व के चार गवाहों को सामने रख रहा है।

5:32 यहाँ पर एक प्रश्न है कि यह पद यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कह रहा है, या परमेश्वर पिता के बारे में, या फिर पवित्र आत्मा के विषय में। कुछ लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि **'एक और है'** यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के लिए कहा गया है और यह पद उन तीनों से जुड़ा है जिनके बारे में आगे कहा गया है। कुछ अन्य लोग ऐसा मानते हैं कि प्रभु यहाँ पर उस **गवाही** के बारे में कह रहा है जो गवाही पवित्र आत्मा प्रभु यीशु के विषय में देता है। हम विश्वास करते हैं कि वह पिता की **गवाही** के बारे में कह रहा है (**जो** के लिए उपयोग में

लाया गया अंग्रेजी शब्द *ही* (वह) एन.के.जे.वी. संस्करण में कैपिटल में है, जो यह दर्शाता है कि यह ईश्वर के लिए प्रयोग में लाया गया है)।

5:33 गवाहों में सबसे महान, अपने पिता को सामने लाने के बाद, प्रभु यीशु अब **यूहन्ना** की गवाही के विषय में कहता है। वह अविश्वासी यहूदियों को यह स्मरण दिलाता है कि उन्होंने **यूहन्ना** के पास लोगों को भेजा था कि यह जानें कि वह क्या कहना चाहता है, और यूहन्ना की गवाही पूरी तरह से प्रभु यीशु मसीह के बारे में थी। लोगों को अपनी ओर खींचने की बजाए यूहन्ना ने लोगों का ध्यान उद्धारकर्ता की ओर खींचा। वह उस व्यक्ति की **गवाही** देता था जो स्वयं ही एकमात्र **सच्चाई** है।

5:34 प्रभु यीशु ने अपने चेलों को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर के तुल्य होने का उसका दावा सिर्फ मनुष्यों की **गवाही** पर आधारित नहीं है। यदि उसके पास सिर्फ मनुष्यों की गवाही होती तो उसका पक्ष सचमुच में बहुत कमजोर होता। परन्तु उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही को एक आधार बनाया क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था और उसने यह गवाही दी थी कि प्रभु यीशु सचमुच में मसीह और परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।

उसके बाद उसने आगे कहा, ''**तौभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें उद्धार मिले**।'' प्रभु यीशु यहूदियों से इतनी लम्बी चौड़ी बात क्यों कर रहा था? क्या वह सिर्फ यह प्रमाणित करना चाह रहा था कि वह सही है और वे सब गलत हैं? ऐसा नहीं था। इसके विपरीत, वह उनके सामने इन अद्‌भुत सच्चाइयों को इसलिए रख रहा था ताकि वे यह पहचान सकें कि वह कौन है, और उसे प्रतिज्ञा किए गए मसीह के रूप में ग्रहण करें। इस पद में हमें प्रभु यीशु के प्रेमी और स्नेहिल हृदय की स्पष्ट तस्वीर दिखाई देती है। वह उन लोगों से बातें कर रहा था जो उससे बैर रखते थे और जो शीघ्र ही उसे जान से मार डालने के लिए हर सम्भव प्रयास में जुट जाएंगे। परन्तु उसके हृदय में उनके प्रति कोई बैर नहीं था। वह उनसे सिर्फ प्रेम ही कर सकता था।

5:35 यहाँ पर प्रभु यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को **जलता और चमकता हुआ दीपक** कह कर उसकी प्रशंसा की। इसका अर्थ यह है कि वह एक बहुत ही जोशीला व्यक्ति था, जो ऐसी सेवकाई करता था जिसके द्वारा अन्य लोग **ज्योति** में लाए जाते थे, और जिसने लोगों का ध्यान प्रभु यीशु की ओर करने के लिए अपने आप को खपा दिया। पहले यहूदी लोग यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पीछे भीड़ की भीड़ उमड़ पड़े थे। वह एक अनूठा और विचित्र व्यक्तित्व था जो उनके जीवनों में आया था, और वे उसके पास उसे सुनने के लिए आया करते थे। **कुछ देर तक**, उन्होंने उसे एक लोकप्रिय धार्मिक अगुवे के रूप में स्वीकार किया।

तो फिर क्यों, यूहन्ना को इतना गर्मजोशी से स्वीकार करने के बाद, वे उस व्यक्ति को स्वीकार नहीं कर रहे थे जिसका प्रचार स्वयं यूहन्ना कर रहा था? उन्होंने क्षणिक आनन्द उठाया, परन्तु उन्होंने मन नहीं फिराया। वे अनियमित थे। उन्होंने अग्रदूत (मार्ग तैयार करने वाले) को तो ग्रहण कर लिया, परन्तु वे राजा को ग्रहण नहीं कर रहे थे! प्रभु यीशु ने यूहन्ना की बहुत प्रशंसा की। मसीह के किसी भी सेवक को **जलता और चमकता हुआ दीपक** कहा जाना परमेश्वर के पुत्र के द्वारा एक सच्ची प्रशंसा है। प्रभु हमारी सहायता करे कि हम में से हर एक की, जो प्रभु यीशु से प्रेम रखता है, यह अभिलाषा हो कि हम भी उसके लिए आग की ज्वाला बनकर अपने आप को जलाएं और ऐसा करने के द्वारा संसार में ज्योति लाएं।

5:36 **यूहन्ना की** गवाही मसीह के ईश्वरत्व का मसीह के द्वारा दिया गया सबसे बड़ा प्रमाण नहीं था। पिता ने उसे जिन आश्चर्यकर्मों को करने के लिये दिया था वे आश्चर्यकर्म उसकी **गवाही** देते थे, कि **पिता** ने सचमुच में उसे **भेजा** है। आश्चर्यकर्म अपने आप में उसके ईश्वरत्व के प्रमाण नहीं हैं। बाइबल में हम ऐसे मनुष्यों के बारे में पाते हैं जिन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी, और हम ऐसे बुरे लोगों के बारे में भी पाते हैं जिनके पास अलौकिक अद्‌भुत कार्य के लिए सामर्थ थी। परन्तु प्रभु यीशु मसीह द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म दूसरों से अलग हैं। सबसे पहली बात, इन आश्चर्यकर्मों को करने के लिए *स्वयं उसमें* वह सामर्थ थी, जबकि अन्य लोगों को यह सामर्थ *दी* गई थी। अन्य लोगों ने आश्चर्यकर्म तो किया परन्तु वे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दूसरों को प्रदान नहीं कर सके। प्रभु यीशु ने न सिर्फ स्वयं आश्चर्यकर्म किया बल्कि उसने अपने प्रेरितों को ऐसा ही करने के लिए अधिकार भी दिया था। इसके अतिरिक्त, **जो काम** उद्धारकर्ता के द्वारा किए गए वे वही कार्य थे जिन्हें मसीह

द्वारा किए जाने के विषय में पुराना नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी। अन्तिम बात, प्रभु यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म अपने स्वभाव, विस्तार, और संख्या में विशिष्ठ थे।

5:37, 38 एक बार फिर से प्रभु यीशु ने उस गवाही के विषय में कहा जो **पिता** उसके विषय में देता है। शायद यह उस समय के विषय में कहा गया है जब प्रभु यीशु को बपतिस्मा दिया गया था। तब परमेश्वर पिता का शब्द आकाश से सुना गया जिसमें उसने प्रभु यीशु को अपना ऐसा प्रिय पुत्र बताया था जिससे वह प्रसन्न है। परन्तु यहाँ पर यह भी जोड़ा जाना आवश्यक होगा कि प्रभु यीशु के जीवन, सेवकाई, और आश्चर्यकर्मों में, पिता ने यह गवाही भी दी कि वही परमेश्वर का पुत्र है।

अविश्वासी यहूदियों ने **न कभी** परमेश्वर का **शब्द सुना, और न कभी उसका रूप देखा**। इसका कारण यह है कि वे **उसके वचन को** अपने **मन में स्थिर नहीं** रखते थे। परमेश्वर अपने वचन बाइबल के द्वारा मनुष्यों से बात करता है। इन यहूदियों के पास पुराना नियम था, परन्तु वे इस पवित्रशास्त्र के द्वारा परमेश्वर को बोलने नहीं देते थे। उनके हृदय कठोर हो चुके थे, और उनके कान बहरे हो चुके थे।

उन्होंने कभी भी परमेश्वर के रूप या व्यक्तित्व को नहीं देखा था क्योंकि वे उस व्यक्ति की **प्रतीति नहीं करते** थे जिसे परमेश्वर ने **भेजा** था। परमेश्वर पिता का ऐसा कोई रूप या आकार नहीं है जो नश्वर आँखों से देखा जा सके। वह आत्मा है और इसलिए अदृश्य है। परन्तु परमेश्वर ने अपने आप को प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रगट किया। जिन लोगों ने भी मसीह पर विश्वास किया उन्होंने वास्तव में मसीह में परमेश्वर के रूप को देखा। अविश्वासी लोग सिर्फ उसे अपने समान ही एक मनुष्य के रूप में देखते थे।

5:39 इस पद के पहले भाग को दो तरीकों से समझा[17] जा सकता है। सबसे पहला, प्रभु यीशु यहूदियों को **पवित्रशास्त्र में** ढूंढ़ने के लिए कह रहा हो। या फिर वह सिर्फ यह कह रहा हो कि वे **पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते** हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि पवित्रशास्त्र अपने पास रख कर ही उन्होंने **अनन्त जीवन** पा लिया। इस पद की ये दोनों व्याख्याएं सम्भव हैं। शायद प्रभु यीशु सिर्फ यह कह रहा था कि यहूदी **पवित्रशास्त्र** में से ढूंढ़ते हैं और सोचते हैं कि ऐसा करने के द्वारा वे **अनन्त जीवन** प्राप्त कर रहे हैं। वे यह पहचान नहीं सके कि पुराना नियम की पुस्तकों में जो कुछ मसीह के आगमन में विषय में बताया गया है वह वास्तव में प्रभु यीशु के बारे में ही कहा गया है। मनुष्य के हाथ में पवित्रशास्त्र हो कर भी उसके प्रति अन्धे बने रहना कितनी भयानक बात है। परन्तु यह बात तो और भी अक्षम्य है कि प्रभु यीशु मसीह द्वारा उनसे इस तरह बात किए जाने के बाद भी, उन्होंने उसे ग्रहण करने से मना कर दिया। इस पद के बाद वाले हिस्से को ध्यान से देखें, ''**यह वही है जो मेरी गवाही देता है**।'' इसका सीधा सीधा अर्थ यह है कि मसीह का आगमन पुराना नियम का प्रमुख विषय है। यदि कोई भी पुराना नियम का अध्ययन करते हुए इस बात को समझने से चूक जाता है, तो वह इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात से चूक रहा है।

5:40 यहूदी लोग मसीह के पास **जीवन पाने** के लिए **आना नहीं चाहते** थे। लोगों द्वारा मसीह को ग्रहण न करने का कारण यह है कि वे सुसमाचार को नहीं समझ सकते, या प्रभु यीशु पर विश्वास कर पाना उन्हें असम्भव लगता है। प्रभु यीशु में ऐसा कुछ भी नहीं है कि उस पर भरोसा करना असम्भव हो। वास्तविक त्रुटि स्वयं मनुष्य की इच्छा में पाई जाती है। वह अपने उद्धारकर्ता की तुलना में अपने पापों से अधिक प्रेम करता है। वह अपने बुरे मार्गों को त्यागना नहीं चाहता।

5:41 प्रभु को ग्रहण कर पाने में यहूदियों की असफलता के लिए उन्हें दोषी ठहराते हुए, प्रभु यीशु यह नहीं चाहता था कि वे यह सोचें कि उनके द्वारा उसे **आदर** न दिए जाने पर वह दुखी है। वह संसार में इस उद्देश्य से नहीं आया था कि इस संसार के **मनुष्यों** द्वारा उसकी प्रशंसा की जाए। वह उनकी प्रशंसा पर निर्भर नहीं था, परन्तु वह अपने पिता से प्रशंसा पाना चाहता था। भले ही मनुष्यों ने उसे ठुकरा दिया, परन्तु इससे उसकी महिमा कम नहीं होती थी।

5:42 परमेश्वर के पुत्र को ग्रहण करने में मनुष्यों की असफलता का यहाँ पर कारण बताया गया है। इन मनुष्यों में **परमेश्वर का प्रेम नहीं** था, अर्थात्, वे परमेश्वर से नहीं, बल्कि अपने आप से प्रेम रखते थे। यदि वे परमेश्वर से प्रेम करते, तो उन्होंने उस व्यक्ति को ग्रहण कर लिया होता जिसे परमेश्वर ने भेजा था। प्रभु यीशु को ठुकराने के द्वारा उन्होंने उसके पिता के प्रति **प्रेम** में अत्यंत कमी को प्रगट कर दिया।

5:43 प्रभु यीशु मसीह अपने **पिता के नाम से** आया था, अर्थात्, वह अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए, अपने पिता को महिमा दिलाने के लिए, और सारी बातों में पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए आया था। यदि मनुष्यों ने सचमुच में परमेश्वर से प्रेम किया होता, तो वे उस व्यक्ति से भी प्रेम रखते जो अपने सब वचनों और कार्यों के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने में लगा रहता था।

प्रभु यीशु ने अब यह भविष्यद्वाणी की कि **कोई और अपने ही नाम से** आएगा और यहूदी लोग **उसे ग्रहण** *कर लेंगे*। शायद एक प्रकार से वह उन झूठे शिक्षकों के बारे में कह रहा है जो उसके बाद आए और जिन्होंने उस जाति से आदर पाना चाहा। शायद वह उन झूठे मतों के अगुवों की बात कर रहा था जो शताब्दियों से समय समय पर स्वयं मसीह होने का दावा करते हैं। परन्तु अधिक सम्भावना इस बात की है कि वह यहाँ पर ख्रीष्ट विरोधी के विषय में कह रहा है। एक ऐसा दिन आएगा, कि एक स्वयंभू शासक यहूदी लोगों के बीच उठ खड़ा होगा और मांग करेगा कि उसे परमेश्वर मान कर उसकी आराधना की जाए (2 थिस्स. 2:8–10)। अधिकांश यहूदी जाति इस ख्रीष्ट विरोधी को स्वीकार कर लेंगे, और इसके परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के कठोर न्याय के आधीन हो जाएंगे (1 यूह. 2:18)।

5:44 यहाँ पर प्रभु यीशु ने यहूदी लोगों द्वारा उसे ग्रहण न किए जाने का एक अन्य कारण बताया। वे परमेश्वर से सहमति पाने की अपेक्षा अपने संगी मनुष्यों से सहमति पाने में अधिक रूचि रखते थे। उन्हें डर था कि यदि वे यहूदी धर्म को छोड़ देंगे तो उनके साथी क्या सोचेंगे। वे उस लज्जा और कष्ट को सहने के लिए तैयार नहीं थे जो मसीह के पीछे चलने से उन पर भारी पड़ेगा। जब तक एक व्यक्ति डरता रहता है कि दूसरे क्या कहेंगे, वह उद्धार नहीं पा सकता। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने के लिए, एक व्यक्ति को किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक परमेश्वर की सहमति प्राप्त करने की इच्छा रखनी चाहिए। उसे सिर्फ उस **आदर** की चाह करनी चाहिए **जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है।**

5:45 प्रभु यीशु को **पिता के सामने** इन यहूदियों पर **दोष** लगाने की आवश्यकता नहीं होगी। नि:सन्देह, वह उन पर बहुत सारे दोष लगा सकता है। परन्तु उसे ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि **मूसा** की लिखी हुई बातें उन पर दोष लगाने के लिए पर्याप्त होंगी। ये यहूदी लोग पुराना नियम और विशेष कर **मूसा** द्वारा लिखी गई व्यवस्था की पाँच पुस्तकों (तोरह) को लेकर बहुत गर्व करते थे। उन्हें इस बात का घमण्ड था कि ये पुस्तकें इस्राएल को दी गई हैं। परन्तु समस्या यह थी कि वे मूसा के वचनों का पालन नहीं करते थे – पद 46 हमें यही बताता है।

5:46 प्रभु यीशु ने मूसा द्वारा लिखी गई पुस्तकों को भी उतना ही अधिकृत बताया जितना कि उसके स्वयं के वचन। जैसा कि लिखा है, ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।'' चाहे हम पुराना नियम पढ़ें या नया नियम, हम परमेश्वर के ही वचन को पढ़ रहे हैं। यदि यहूदियों ने **मूसा** के वचनों की **प्रतीति** की होती, तो उन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर लिया होता, क्योंकि मूसा ने अपनी पुस्तकों में मसीह के आगमन के **विषय में लिखा** है। इसका एक उदाहरण व्यवस्थाविवरण 18:15, 18 में पाया जाता है:

> तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात्, तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना . . . सो मैं उनके लिए भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुँह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा।

इन पदों में मूसा ने मसीह के आगमन की भविष्यद्वाणी की है, और यहूदी लोगों से कहा है कि जब वह आए तो वे उसकी सुनें और उसकी आज्ञा का पालन करें। अब प्रभु यीशु आ गया, परन्तु यहूदी उसे ग्रहण करने में असफल रहे। इसलिए उसने कहा कि मूसा उन्हें पिता के सामने दोषी ठहराएगा क्योंकि उन्होंने मूसा की आज्ञा का पालन नहीं किया। प्रभु यीशु द्वारा यह कहा जाना कि **'मेरे विषय में लिखा है,'** एक स्पष्ट कथन है जो यह दर्शाता है कि पुराना नियम में प्रभु यीशु मसीह के विषय में भविष्यद्वाणी दी गई है। अगस्टीन ने इस पर एक सटीक टिप्पणी करते हुए कहा है, ''नया पुराना में छिपा है; पुराना नया में प्रगट हुआ है,'' (*द न्यू इ़ज़ इन द ओल्ड कन्सिल्ड; द ओल्ड इ़ज़ इन द न्यू रिविल्ड।*)

5:47 **यदि** यहूदी लोग मूसा **की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते**, तो यह सम्भव नहीं था

कि वे प्रभु यीशु की **बातों** की प्रतीति करते। पुराना नियम और नया नियम के बीच में एक बहुत ही निकट सम्बन्ध है। यदि कोई व्यक्ति पुराना नियम के परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा रचे जाने पर सन्देह करता है, तो यह सम्भव नहीं है कि वह प्रभु यीशु के वचनों को परमेश्वर द्वारा प्रेरित मान लेगा। यदि लोग पवित्रशास्त्र के कुछ भागों पर सन्देह व्यक्त करते हैं, तो बहुत जल्दी ही वे पुस्तक के शेष भागों पर भी सन्देह व्यक्त करने लगेंगे। किंग्स ने कहा है:

> यहाँ पर नि:सन्देह प्रभु यीशु मूसा की पाँच पुस्तकों – पंचग्रंथ – के बारे में बात कर रहा है – बाइबल का वही भाग जिस पर किसी अन्य भागों की तुलना में सबसे अधिक सन्देह व्यक्त किया गया है; और जहाँ तक हम जानते हैं, यह एक विचित्र बात है, कि प्रभु ने दूसरों भागों की अपेक्षा सबसे अधिक इसी भाग में से उद्धरण दिया है। मानों, इससे बहुत पहले कि इस भाग पर सन्देह किया जाता, उसने पहले ही इसके लिए अपनी मुद्रण अनुमति दे दी थी।[18]

IV. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: गलील में (अध्याय 6)

अ. चौथा चिन्ह: पाँच हजार लोगों को भोजन कराना (6:1–15)

6:1 **'इन दिनों के बाद'** का अर्थ है, अध्याय 5 की घटनाओं के बाद कुछ समय बीत चुका था। हम यह नहीं जानते कि कितना समय बीता था, परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि प्रभु **यीशु** यरूशलेम के आसपास के क्षेत्र से होकर कर गलील की झील की ओर गया। जब यह पद कहता है कि वह झील के पार गया, तो शायद इसका अर्थ यह है कि वह झील के उत्तरपश्चिमी किनारे से उत्तरपूर्वी क्षेत्र की ओर गया। **गलील की झील** को **तिबिरियास की झील** के नाम से भी जाना जाता था, क्योंकि तिबिरियास नगर इसके पश्चिमी तट पर बसा हुआ था। इस नगर को, जो गलील प्रान्त की राजधानी थी, रोमी सम्राट तिबिरियास (टाइबेरियस) का नाम दिया गया था।

6:2, 3 लोगों की **एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली,** यह ज़रूरी नहीं है कि लोग इसलिए उसके पीछे पीछे जा रहे थे क्योंकि वे उसको परमेश्वर का पुत्र मानते थे, परन्तु इसलिए **क्योंकि . . . वे** उन आश्चर्यकर्मों को देखते थे, जिन्हें वह **बीमारों** के लिए करता था। आश्चर्यकर्मों के आधार पर उत्पन्न हुआ विश्वास परमेश्वर को उतना प्रसन्न नहीं करता जितना कि वह विश्वास जो सिर्फ उसके वचन पर आधारित हो। परमेश्वर के वचन को प्रमाणित करने के लिए आश्चर्यकर्म की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। परमेश्वर जो कुछ कहता है वह सत्य है। यह गलत नहीं हो सकता। सबके के लिए इतना ही पर्याप्त होना चाहिए। पद 3 का शब्दश: अनुवाद यह होगा: **'तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर,'** परन्तु इसका अर्थ झील के आसपास का सिर्फ पहाड़ी क्षेत्र हो सकता है।

6:4 यह स्पष्ट नहीं है कि यूहन्ना ने यह क्यों उल्लेख किया है कि **फसह का पर्ब्ब निकट था**। कुछ लोगों का मानना है कि जब प्रभु यीशु मसीह इस अध्याय में जीवन की सच्ची रोटी के बारे में अद्भुत सन्देश दे रहा था तो शायद उसके ध्यान में फसह का पर्ब्ब था। वह फसह के लिए यरूशलेम नहीं गया था। यूहन्ना **फसह के पर्ब्ब** को **यहूदियों . . . का पर्ब्ब** कहता है। वास्तव में, अवश्य ही, इसकी स्थापना पुराना नियम में परमेश्वर के द्वारा की गई थी। उसने इसे यहूदी लोगों को दिया था, और उस अर्थ में यह **यहूदियों . . .का पर्ब्ब** था। परन्तु **यहूदियों . . .का पर्ब्ब** कहे जाने का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अब परमेश्वर इसे अपना पर्ब्ब नहीं मानता क्योंकि यहूदी जाति हृदय की रूचि के बिना इसे सिर्फ एक रीति विधि के रूप में मनाती है। इस पर्ब्ब ने अपने वास्तविक अर्थ को खो दिया है, और अब यह यहोवा का पर्ब्ब नहीं रहा।

6:5 प्रभु **यीशु** ने जब **बड़ी भीड़** को देखा, तो वह यह सोच कर खीज़ नहीं उठा कि वह उसके आराम के समय में या चेलों के साथ उसके द्वारा बिताए जा रहे समय में विघ्न डालेगी। उनके विषय सबसे पहले उसके मन में यही विचार आया कि उनके लिए **भोजन** का प्रबन्ध करना है। और इसलिए उसने **फिलिप्पुस** की ओर देख कर उससे पूछा कि इस भीड़ को भोजन करने के लिए **रोटी** कहाँ से मोल ली जा सकती है। जब प्रभु यीशु ने यह प्रश्न पूछा, तो वह अपनी जानकारी बढ़ाने के उद्देश्य से नहीं, परन्तु दूसरों को सिखाने के लिए पूछ रहा था। वह उत्तर जानता था, परन्तु फिलिप्पुस उत्तर नहीं जानता था।

6:6 प्रभु फिलिप्पुस को एक अनमोल पाठ पढ़ा रहा

था और उसके विश्वास को **परखना** चाहता था। प्रभु यीशु **आप जानता था** कि वह इस भीड़ को भोजन कराने के लिए एक आश्चर्यकर्म करेगा। परन्तु क्या फिलिप्पुस को यह बोध था कि प्रभु ऐसा कर सकता है? फिलिप्पुस का विश्वास बड़ा था या छोटा?

6:7 यह स्पष्ट है कि फिलिप्पुस के विश्वास का कद नहीं बढ़ा। उसने जल्दी जल्दी हिसाब लगाया और इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि **दो सौ दीनार की रोटी** भी हर एक को **थोड़ी थोड़ी** देने पर भी पर्याप्त नहीं होगी। हमें यह नहीं मालूम कि उन दिनों में **दो सौ दीनार** में कितनी रोटियाँ खरीदी जा सकती थीं, परन्तु अवश्य ही यह उन दिनों में बहुत बड़ी रकम रही होगी। एक दीनार एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी हुआ करती थी।

6:8, 9 अन्द्रियास . . . शमौन पतरस का **भाई** था। वे बेतसैदा के पास गलील की झील की छोर पर रहते थे। अन्द्रियास का भी यही मानना था कि इतनी बड़ी भीड़ को भोजन कराना कठिन काम है। उसका ध्यान एक छोटे लड़के की ओर गया जिसके पास **जव की पाँच रोटी और दो मछलियाँ** थीं, परन्तु उसे लगा कि **इतने** लोगों की भूख को इतने कम भोजन से तृप्त करने का प्रयास करना व्यर्थ ही होगा। इस लड़के के पास बहुत अधिक नहीं था, परन्तु वह इसे प्रभु यीशु को देने के लिए तैयार था। उसकी इस भलाई के परिणामस्वरूप, इस कहानी का वर्णन चारों सुसमाचारों में किया गया है। उसने कोई बहुत अधिक या बहुत बड़ा कार्य नहीं किया, परन्तु ''कम भी बहुत होता है यदि उसमें परमेश्वर है,'' और यह लड़का सारे संसार में प्रसिद्ध हो गया।

6:10 लोगों को **बैठा** (शब्दश:, लेटना) कर प्रभु यीशु ने उनकी सुविधा का ध्यान रखा। ध्यान दें कि उसने एक ऐसे स्थान को चुना जहाँ **बहुत घास थी**। उस क्षेत्र में ऐसा स्थान ढूंढ़ पाना असामान्य बात थी, परन्तु प्रभु ने इस बात का ध्यान रखा कि भीड़ एक साफ सुथरे और सुहावने स्थान पर बैठ कर भोजन करे।

जैसा कि लिखा हुआ है कि लोगों (यूनानी में, पुरुषों) की संख्या हजारों में थी, अत: इसका अर्थ यह हुआ कि इसके अतिरिक्त स्त्रियां और बच्चे भी बड़ी संख्या में थे। **पाँच हजार** की संख्या का उल्लेख इस बात की ओर संकेत कर रहा है कि कुछ ही देर में कितना महान आश्चर्यकर्म होने पर था।

6:11 प्रभु **यीशु ने रोटियां ली** और उनके लिए **धन्यवाद** दिया। भोजन में शामिल होने से पहले या उसे बांटने से पहले यदि स्वयं प्रभु ने धन्यवाद दिया तो फिर हमें ऐसा करने की इससे अधिक आवश्यकता क्यों न होगी! इसके बाद उसने **बैठनेवालों को** भोजन **बांट** दिया। इसमें हमारे लिए एक वास्तविक शिक्षा पाई जाती है। प्रभु यीशु ने यह सारा काम अकेले नहीं किया। उसने दूसरों को भी सेवा के इस कार्य में शामिल किया। किसी ने यह बिल्कुल ठीक कहा है, ''आप जितना कर सकते है उतना करें; मैं जितना कर सकता हूँ मैं उतना करूंगा; और प्रभु वह करेगा जो हम नहीं कर सकते।''

जब प्रभु यीशु ने **बैठने वालों को** रोटी बांटी तब यह अद्‌भुत रीति से कई गुणा बढ़ गई। जिस समय यह आश्चर्यकर्म हुआ उसका ठीक ठीक समय नहीं बताया गया है, परन्तु हम यह जानते हैं कि आश्चर्यजनक रीति से ये पाँच रोटी और दो मछलियां प्रभु के हाथ में आकर इतनी पर्याप्त हो गईं कि यह बड़ी भीड़ इससे तृप्त हो गई। चेले **बैठने वालों को** रोटी और मछलियां बांटते गए। भोजन में किसी तरह की कोई कमी नहीं आई क्योंकि यहाँ पर यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि **जितना वे चाहते थे** उन्हें उतनी मछलियां दी गईं।

ग्रिफ्फिथ थामस ध्यान दिलाते हैं कि इस घटना में एक सुन्दर चित्रण पाया जाता है:

> (अ) नाश होता हुआ संसार; (ब) सामर्थहीन चेले; (स) सिद्ध उद्धारकर्ता। इस आश्चर्यकर्म में सृष्टि का एक सच्चा कार्य शामिल था। कोई भी मनुष्यमात्र पाँच रोटी और दो छोटी मछलियों को लेकर इसे इतना बढ़ा नहीं सकता कि इतने सारे लोग तृप्त हो जाएं। किसी ने बिल्कुल सही कहा है, ''जब उसने रोटी के लिए आशीष मांगी, तो यह बसन्त ऋतु के समान था, जब उसने रोटी तोड़ी तो यह कटनी के समय के समान था।'' और यह बात भी सत्य है, ''बिना आशीष की रोटियां बढ़ती नहीं हैं।''[19]

6:12 यह एक बहुत ही सुन्दर समापन था। यदि प्रभु यीशु एक मनुष्यमात्र होता तो वह कभी भी बचे हुए टुकड़ों की परवाह नहीं करता। कोई भी मनुष्य जो पाँच हजार लोगों को भोजन करा सकता है बचे हुए थोड़े से जूठन की ओर ध्यान नहीं देगा! परन्तु प्रभु यीशु परमेश्वर है, और परमेश्वर अपनी आशीषों को बर्बाद होने नहीं

देता। वह नहीं चाहता कि हम उन बहुमूल्य वस्तुओं का अपव्यय करें जिन्हें उसने हमें दिया है, और इसलिए उसने इसका ध्यान रखते हुए यह निर्देश दिया कि बचे हुए टुकड़ों को एकत्रित कर लिया जाए ताकि **कुछ फेंका न जाए**।

अनेक लोग इस आश्चर्यकर्म को सामान्य घटना के रूप में समझाने का प्रयास करते हैं। उनका कहना है कि जब भीड़ ने छोटे लड़के को अपनी पाँच रोटी और दो मछलियां प्रभु यीशु को सौंपते हुए देखा, तो उन्हें यह बोध हुआ कि वे कितने स्वार्थी हैं। इसलिए उन्होंने अपने अपने पास का भोजन निकाला और उसे एक दूसरे के साथ बांटा। इस तरीके से सब के लिए भोजन पर्याप्त हो गया। परन्तु इस प्रकार की कोई भी व्याख्या तथ्यों से मेल नहीं खाती, जैसा कि हम अगले पद में देख सकते हैं।

6:13 जब लोग भोजन कर चुके तो **बारह टोकरियां** भर कर रोटियां एकत्रित की गईं। बारह टोकरियों से भरी बची हुई रोटियां एकत्रित कर पाना असम्भव होगा यदि हर एक व्यक्ति अपने लिए ही भोजन लेकर आया हो। मनुष्यों की व्याख्या हास्यस्पद है। इस घटना से सिर्फ एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है, और वह यह है कि एक महान आश्चर्यकर्म सचमुच में हुआ था।

6:14 लोगों ने स्वयं इस बात को माना कि यह एक आश्चर्यकर्म था। यदि वे अपना ही भोजन खाते तो वे ऐसा कभी नहीं मानते। बल्कि, वे इसे आश्चर्यकर्म मानने के लिए इतने आश्वस्त थे कि वे यह भी मानने के लिए तैयार हो गए कि प्रभु यीशु ही वह **भविष्यद्वक्ता** है जो **जगत में आने वाला** था। पुराना नियम से वे यह जानते थे कि एक भविष्यद्वक्ता आने वाला है, और वे उसकी बाट जोह रहे थे कि वह आकर उन्हें रोमी साम्राज्य की आधीनता से छुटकारा दे। वे एक सांसारिक सम्राट की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु उनका विश्वास वास्तविक नहीं था। वे यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है, न ही वे अपने पापों का अंगीकार कर प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने के लिए तैयार थे।

6:15 प्रभु यीशु के आश्चर्यकर्म के परिणामस्वरूप, लोग उसे **राजा बनाने के लिए** बात करने लगे। पुनः, यदि प्रभु यीशु सिर्फ एक मनुष्य होता, तो निःसन्देह वह तुरन्त ही उनकी बात मान लेता। मनुष्य ऊपर उठने के लिए और प्रतिष्ठा का स्थान प्राप्त करने के लिए अत्यंत उतावली करता है। परन्तु प्रभु यीशु इस प्रकार की व्यर्थता और घमंड के आकर्षणों से प्रभावित नहीं हुआ। वह यह जानता था कि वह इस संसार में पापियों के बदले क्रूस पर मरने को आया था। वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगा कि उसके इस उद्देश्य को पूरा करने के मार्ग में कोई बाधा आए। वह सिंहासन पर तब तक नहीं बैठेगा जब तक वह बलिदान की वेदी पर न चढ़ जाए। उसे महिमा पाने से पहले दुःख उठाना, अपना खून बहाना, और मरना आवश्यक था।

एफ.बी. मेयर ने इस प्रकार से लिखा है:

> जैसा कि सन्त बर्नार्ड ने कहा है, जब भी उसे उन्होंने राजा बनाना चाहा वह वहाँ से बच निकला, और जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहा तो उसने अपने आप को उनके सामने प्रस्तुत कर दिया। इस बात को अपने दिमाग में स्पष्ट रूप से रखते हुए हम गती इतै के इन कुलीन शब्दों को अपनाने से न हिचकें, ''यहोवा के जीवन की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिए हो चाहे जीवित रहने के लिए, उसी स्थान में तेरा दास भी रहेगा'' (2 शमू. 15:21)। और वह निश्चय ही उत्तर देगा, जिस तरह से दाऊद ने एक अन्य भगौड़े को दिया था जो उसके हित में उसका साथ दे रहा था: ''इसलिए तू मेरे साथ निडर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी।''[20]

ब. पाँचवा चिन्हः प्रभु यीशु पानी पर चलता है और अपने चेलों को बचाता है (6:16–21)

6:16, 17 **संध्या** का समय था। प्रभु यीशु अकेला ही पहाड़ की ओर गया था। भीड़ निःसन्देह घरों को लौट चुकी थी, और चेले अकेले रह गए थे। और इसलिए चेलों ने विचार किया कि वे **झील के किनारे** जाकर गलील झील के पार वापस जाने की अपनी यात्रा की तैयारी करेंगे।

जब वे **झील के पास कफरनहूम को जाने लगे, उस समय अंधेरा हो गया था**। प्रभु **यीशु** उनके साथ **नहीं** था। वह कहाँ था? वह ऊपर पहाड़ पर प्रार्थना कर रहा था। वर्तमान में मसीह के अनुयायियों का यह क्या ही

सजीव चित्र है! **अंधेरा** हो चुका है। प्रभु यीशु आसपास कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सारी बातों से अनजान है। वह स्वर्ग में उन लोगों के लिए प्रार्थना कर रहा है जिनसे वह प्रेम रखता है।

6:18 गलील की झील में अचानक भयानक आंधी चलना एक आम बात है। यरदन नदी की घाटी से वायु तेजी से बहती है। जब वे गलील की झील से टकराती हैं, तो बहुत ऊँची ऊँची लहरें उठती हैं। ऐसे समय में **झील में** एक छोटी नाव में यात्रा करना सुरक्षित नहीं होता।

6:19 चेले **खेते खेते तीन चार मील के लगभग** पहुँच गए थे। मानवीय दृष्टिकोण से वे बहुत बड़े खतरे में थे। बिल्कुल ठीक समय पर, उन्होंने आँख उठाई और प्रभु **यीशु को झील पर चलते और नाव के निकट आते देखा**। यह एक और अद्‌भुत चिन्ह है। परमेश्वर का पुत्र गलील की झील के पानी पर चल रहा था। चेले **डर गए** क्योंकि वे पूरी तरह से यह पहचान नहीं सके कि यह अद्‌भुत व्यक्ति कौन है।

ध्यान दें कि यह कहानी कितने साधारण तरीके से बताई गई है। यहाँ पर बहुत ही अद्‌भुत बातें बताई गई हैं, परन्तु यूहन्ना ने हमें इस कहानी की बड़ी बड़ी बातों को बता कर हमें प्रभावित करने के लिए बड़े बड़े शब्दों का प्रयोग नहीं किया है। उसने तथ्यों को सामने रखने में बहुत ही संयम बरता है।

6:20 उसके बाद प्रभु यीशु ने शान्ति के अद्‌भुत वचन कहे, **''मैं हूँ, डरो मत!''** यदि वह सिर्फ एक मनुष्य होता, तो वे अवश्य ही डरते। परन्तु वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता और विश्व का पालनहार है। एक व्यक्ति को इतने निकट पाकर डरने का कोई कारण नहीं है। जिसने गलील की झील को बनाया है वह उसकी लहरों को भी शान्त कर सकता है, और अपने डरे हुए चेलों को किनारे तक पहुँचा सकता है। **''मैं हूँ''** का उपयोग अब तक यूहन्ना इस सुसमाचार में दो बार कर चुका है, इन दोनों अवसरों पर प्रभु यीशु ने यहोवा के इस नाम का उपयोग अपने लिए किया है।

6:21 जब वे पहचान गए कि वह प्रभु यीशु है, तो उन्होंने **उसे नाव पर** बुलाया। **तुरन्त** ही उन्होंने अपने आप को किनारे पर पाया। यहाँ पर एक और आश्चर्यकर्म हुआ, परन्तु इसे समझाया नहीं गया है। उन्हें और अधिक खेना नहीं पड़ा। प्रभु यीशु एक ही क्षण में उन्हें सूखे **स्थान** तक ले आया। वह क्या ही अद्‌भुत व्यक्ति है!

स. लोग एक चिन्ह मांगते हैं (6:22–34)

6:22 यह पाँच हजार लोगों को भोजन कराए जाने के बाद वाला दिन है। लोगों की **भीड़** अब भी गलील की झील के उत्तरपूर्व में है। उन्होंने पिछली संध्या चेलों को **नाव** पर सवार होते देखा था, और वे जानते थे कि प्रभु **यीशु** उनके साथ गया है। उस समय सिर्फ एक ही नाव उपलब्ध थी, और उसे भी चेले ले गए थे।

6:23 अगले दिन, **तिबिरियास से उस जगह के निकट** कुछ **नावें** आईं **जहाँ** प्रभु यीशु ने भीड़ को भोजन खिलाया था। परन्तु इन में से एक में भी प्रभु यीशु जा नहीं सकता था क्योंकि ये नावें अभी अभी आई हुई थीं। परन्तु शायद इन्हीं छोटी नावों से भीड़ ने झील पार किया और कफरनहूम को गई, जैसा कि अगले पदों में बताया गया है।

6:24 **भीड़** प्रभु यीशु को बहुत ही बारीकी से देख रही थी। वह जानती थी कि प्रभु यीशु प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गया है। वह जानती थी कि वह नाव में चेलों के साथ झील के पार नहीं गया है। तौभी अगले दिन उन्हें कहीं नहीं मिला। उन्होंने झील को पार कर **कफरनहूम** जाने का निर्णय लिया, जहाँ चेलों के होने की काफी सम्भावना थी। वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि प्रभु **यीशु** वहाँ कैसे हो सकता है, परन्तु फिर भी उन्होंने जाकर ढूंढ़ने का निर्णय लिया।

6:25, 26 कफरनहूम पहुँच कर उन्होंने उसे पा लिया। वे अपनी जिज्ञासा को छिपा नहीं सके, और उससे पूछा कि वह **कब** पहुँचा।

प्रभु **यीशु ने** उनके प्रश्न का अप्रत्यक्ष **उत्तर दिया**। उसने यह जान लिया कि वे उसे इसलिए नहीं ढूंढ़ रहे थे क्योंकि वह मसीह है परन्तु इसलिए क्योंकि उस ने उन्हें भोजन दिया था। उन्होंने उसे एक दिन पहले एक महान आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था। इससे उन्हें यह विश्वास कर लेना चाहिए था कि वह सचमुच में सृष्टिकर्ता और मसीह है। परन्तु उनकी रूचि सिर्फ भोजन में थी। उन्होंने आश्चर्यकर्म के द्वारा **रोटियां** खाई थी और उनकी भूख तृप्त हो गई थी।

6:27 इसलिए प्रभु यीशु ने उन्हें पहले यह सुझाव

दिया कि वे **नाशमान भोजन के लिए परिश्रम न** करें। प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए कार्य न करें, परन्तु उसके कहने का अर्थ यह अवश्य था कि यही उनके जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य न बन जाए। अपनी शरीरिक भूख को तृप्त करना हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है। मनुष्य सिर्फ शरीर से नहीं, परन्तु आत्मा और प्राण से भी बना है। हमें **उस भोजन के लिए** परिश्रम करना है **जो अनन्त जीवन तक ठहरता है**। मनुष्य को यह मान कर नहीं चलना है कि उसका शरीर ही सब कुछ है। उसे अपनी सारी शक्ति और सारे वरदान अपने शरीर को तृप्त करने में ही नहीं लगा देना है, क्योंकि कुछ ही समय बाद इसी शरीर को एक दिन कीड़े खाएंगे। बल्कि, उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी आत्मा दिन प्रतिदिन परमेश्वर के वचन से तृप्त होती जाती है। ''मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'' हमें परमेश्वर के वचन का बेहतर ज्ञान प्राप्त करने के लिए निरन्तर अथक परिश्रम करना चाहिए।

जब प्रभु यीशु ने कहा कि **पिता अर्थात्, परमेश्वर** ने **उसी पर छाप कर दी**, तो इसका अर्थ है कि **परमेश्वर** ने उसे भेजा और उसका अनुमोदन भी किया। जब हम अपनी छाप किसी पर लगाते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि यह सत्य है। परमेश्वर ने मनुष्य के पुत्र पर इस अर्थ से छाप लगाया कि उसने उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सत्यापित कर दिया जो सत्य बोलता है।

6:28 अब लोगों ने प्रभु यीशु से पूछा कि **परमेश्वर के कार्य करने के लिए** वे **क्या करें?** मनुष्य हमेशा स्वर्ग जाने के लिए मार्ग ढूंढ़ता है। वह सोचता है कि अवश्य ही ऐसा कोई काम है जिसे करने के द्वारा वह उद्धार पाने की योग्यता अर्जित कर सकता है। यदि वह किसी तरह से अपनी आत्मा के उद्धार के लिए कोई योगदान दे सकता, तो उसे गर्व करने का अधिकार भी मिल जाता; और इससे वह बहुत प्रसन्न होता है।

6:29 प्रभु यीशु ने उनके पाखण्ड को पहचान लिया। वे यह जताना चाहे रहे थे कि वे परमेश्वर के लिए कार्य करना चाहते हैं, और तौभी वे परमेश्वर के पुत्र के लिए कुछ नहीं करना चाहते थे। प्रभु **यीशु** ने उन्हें बताया कि सबसे पहले उन्हें उस व्यक्ति को ग्रहण करना आवश्यक है जिसे परमेश्वर ने **भेजा** है। ऐसी ही स्थिति आज भी है। मनुष्य अच्छे कार्य करने के द्वारा स्वर्ग जाने के लिए मार्ग बनाना चाहता है, उन्हें पहले प्रभु यीशु मसीह पर **विश्वास** करने की आवश्यकता है। अच्छे कार्यों का क्रम उद्धार से पहले नहीं, उद्धार के बाद आता है। एकमात्र अच्छा **कार्य** जो एक पापी कर सकता है वह यह है कि वह प्रभु यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करे।

6:30 यह पद लोगों के हृदय की दुष्टता का एक और प्रमाण था। एक दिन पहले, लोगों ने प्रभु यीशु को पाँच हजार लोगों को पाँच रोटी और दो मछलियों से तृप्त करते हुए देखा था। इसके ठीक अगले ही दिन, वे उसके पास आकर उससे कोई ऐसा **चिन्ह** मांग रहे हैं जिससे उसका दावा प्रमाणित हो सके कि वह परमेश्वर का पुत्र है। अधिकांश अविश्वासियों के समान, वे पहले देखना चाहते थे, और देखकर ही वे बाद में विश्वास करेंगे। ''**कि हम उसे देख कर तेरी प्रतीति करें**।'' परन्तु परमेश्वर का क्रम ऐसा नहीं है। परमेश्वर पापियों से कहता है, ''यदि तुम विश्वास करोगे, तब तुम देखोगे।'' क्रम में विश्वास का सबसे पहले होना आवश्यक है।

6:31 पुराना नियम में वापस जाते हुए, यहूदियों ने प्रभु यीशु को जंगल में मन्ना[21] के आश्चर्यकर्म का स्मरण दिलाया। वे यह कहना चाह रहे थे कि प्रभु यीशु ने अब तक इस प्रकार का कोई अद्भुत काम नहीं किया है। उन्होंने भजन 78:24, 25 को उद्धरित किया, जहाँ लिखा है, ''**उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी**।'' उनके कहने का यह अर्थ था कि मूसा स्वर्ग से रोटी नीचे लाया; प्रभु यीशु उतना महान नहीं है जितना कि मूसा था, क्योंकि उसने *उपलब्ध* भोजन को सिर्फ बढ़ाने का काम किया!

6:32 प्रभु यीशु के उत्तर में कम से कम दो बातें पाई जाती हैं। सबसे पहली बात, मन्ना देनेवाला **मूसा** *नहीं*, परन्तु परमेश्वर था। इसके अतिरिक्त, मन्ना **स्वर्ग से** उतरी हुई सच्ची आत्मिक **रोटी** नहीं थी। मन्ना एक भौतिक भोजन था, जो भौतिक शरीर को तृप्त करने के लिए दिया गया था, परन्तु इस जीवन के बाद उसका कोई महत्व नहीं था। प्रभु यीशु यहाँ पर **सच्ची**, आदर्श, और वास्तविक **रोटी** की बात कर रहा है जो पिता स्वर्ग से देता है। यह रोटी आत्मा के लिए है, शरीर के लिए नहीं है। **मेरा पिता** कह कर प्रभु यीशु अपने ईश्वरत्व का दावा कर रहा है।

6:33 प्रभु यीशु ने अपने आप को **परमेश्वर की रोटी** के रूप में प्रगट किया जो **स्वर्ग से उतर कर** आई और जो **जीवन** देती है। वह **परमेश्वर की रोटी** की उत्तमता को दर्शा रहा था। मन्ना जीवन नहीं देता परन्तु सिर्फ भौतिक जीवन का पोषण करता था। *यह* सारे संसार के लिए नहीं, परन्तु सिर्फ इस्राएलियों के लिए था। सच्ची **रोटी . . . स्वर्ग से उतर कर** मनुष्य **को जीवन देती है** – सिर्फ एक राष्ट्र को नहीं, परन्तु सारे **जगत** को।

6:34 यहूदी लोग अब तक यह नहीं समझ पाए कि प्रभु यीशु अपने आप को सच्ची रोटी कह रहा है, और इसलिए वे उससे **रोटी** मांगने लगे। वे अब भी भौतिक रोटी के बारे में ही सोच रहे थे। यह दुखद है कि उनके हृदय में कोई सच्चा विश्वास नहीं था।

द. प्रभु यीशु – जीवन की रोटी (6:35–65)

6:35 अब प्रभु **यीशु ने** सरल और स्पष्ट शब्दों में सच्चाई को व्यक्त किया। वह **जीवन की रोटी** है। जो उसके पास आता है वह हमेशा के लिए भूख तृप्त कर लेने के लिए पर्याप्त भोजन पा लेता है। जो उस पर विश्वास करता है वह अपनी प्यास हमेशा के लिए तृप्त कर लेने के लिए जल पा लेता है। इस पद में '**मैं हूँ**' की ओर ध्यान दें और इस बात को स्वीकार करें कि यहाँ पर प्रभु यीशु यह दावा कर रहा है कि वह और यहोवा बराबर हैं। एक पापमय मनुष्य के लिए पद 35 की बात अपने लिए कहना मूर्खता होगी। कोई भी मनुष्यमात्र अपनी भूख या प्यास नहीं बुझा सकता, और सारे संसार की आत्मिक भूख को तो तृप्त कर ही नहीं सकता!

6:36 पद 30 में, अविश्वासी यहूदियों ने प्रभु यीशु से एक चिन्ह मांगा था ताकि वे विश्वास कर सकें। यहाँ पर प्रभु यीशु ने कहा कि उसने उन्हें पहले ही बता दिया है कि उन्होंने उसे **देख भी लिया** है – यह सबसे बड़ा चिन्ह है – **तौभी** वे **विश्वास नहीं करते**। यदि परमेश्वर का पुत्र सिद्ध मानव बन कर उनके सामने खड़ा है और वे उसे नहीं पहचान रहे हैं, तो फिर इस बात पर सन्देह है कि उसके द्वारा किया गया कोई भी आश्चर्यकर्म उन्हें विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त होगा।

6:37 प्रभु यहूदियों के अविश्वास से हत्तोत्साहित नहीं हुआ। वह जानता था कि पिता की सारी योजनाएं और उद्देश्य पूर्ण होंगे। यहाँ तक कि यदि वे यहूदी जिनसे वह बात कर रहा है उसे ग्रहण नहीं करेंगे, तब भी वह जानता है कि वे सब लोग जो परमेश्वर के द्वारा चुने गए हैं उसके पास आएंगे। जैसा कि आर्थर डब्ल्यू.पिंक ने कहा है, ''परमेश्वर की अनन्त सम्मतियों की अपराजेयता हमें एक शान्ति, एक ठहराव, एक साहस, और एक धीरज देती है जिन्हें कोई और नहीं दे सकता।''

यह पद बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कुछ ही शब्दों में बाइबल की दो सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं को व्यक्त करता है। पहली शिक्षा यह है कि परमेश्वर ने कुछ निश्चित लोगों को प्रभु यीशु को दे दिया है और वे **सब** जो उसे दे दिए गए हैं उद्धार पाएंगे। दूसरी शिक्षा मनुष्य की जिम्मेदारी के सम्बन्ध में है। उद्धार पाने के लिए, एक मनुष्य को प्रभु यीशु के पास आकर उसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करना आवश्यक है। परमेश्वर ने अवश्य ही कुछ लोगों को उद्धार के लिए चुन लिया है, परन्तु बाइबल में यह शिक्षा कहीं नहीं दी गई है कि उसने कुछ को नाश होने के लिए भी चुना है। यदि कोई उद्धार पाता है तो उसका कारण परमेश्वर का सेंतमेंत का अनुग्रह है। परन्तु यदि कोई हमेशा के लिए नाश हो जाता है तो यह उसकी गलती है। सब मनुष्य अपने पाप और अपनी दुष्टता के कारण दोषी ठहराए गए हैं। यदि सारे मनुष्य नर्क चले जाते हैं तो इसका अर्थ होगा कि उन्हें वही मिल रहा है जिसके वे लायक हैं। अनुग्रह में, परमेश्वर नीचे झुक कर बहुत बड़े मानव झुण्ड में से कुछ व्यक्तियों का उद्धार करता है। क्या उसे ऐसा करने का अधिकार है? अवश्य ही उसके पास यह अधिकार है। परमेश्वर को जैसा उचित लगे, वह वैसा कर सकता है, और कोई मनुष्य उसके अधिकार पर प्रश्न नहीं उठा सकता। हम यह जानते हैं कि परमेश्वर कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेगा जो गलत या अन्यायपूर्ण हो।

परन्तु जिस प्रकार से बाइबल यह शिक्षा देती है कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को उद्धार के लिए चुना है, उसी प्रकार से बाइबल यह शिक्षा भी देती है कि मनुष्य का कर्तव्य यह है कि वह सुसमाचार को ग्रहण करे। परमेश्वर एक विश्वव्यापी प्रस्ताव देता है – कि यदि एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाएगा तो वह उद्धार पाएगा। परमेश्वर मनुष्यों को उनकी इच्छा के विरोध में जाकर उद्धार नहीं देता। एक व्यक्ति को मन फिरा कर और विश्वास

के साथ उसके पास आना आवश्यक है। तब परमेश्वर उसका उद्धार करेगा। जो कोई परमेश्वर के पास मसीह के द्वारा आता है, वह बाहर नहीं निकाला जाएगा।

मानवीय बुद्धि इन दोनों शिक्षाओं के बीच में तालमेल नहीं बैठा पाती। किन्तु, भले ही हम इसे न समझ पाएं परन्तु हमें इस पर विश्वास रखना चाहिए। ये दोनों बाइबल की शिक्षाएं हैं और दोनों का यहाँ पर स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

6:38 पद 37 में, प्रभु यीशु ने कहा है कि जितने लोग उसे दे दिए गए हैं उनके उद्धार के विषय में परमेश्वर की सारी योजनाएं अनन्त: पूरी हो जाएंगी। चूंकि यह पिता की इच्छा थी, प्रभु व्यक्तिगत रूप से इस कार्य का दायित्व अपने हाथ में लेकर इसकी पूर्णता को सुनिश्चित करेगा। प्रभु यीशु ने यह कह कर कि, ''**मैं . . . स्वर्ग से उतरा हूँ,**'' स्पष्ट रूप से यह शिक्षा दी कि उसने अपना जीवन बैतलहम की चरणी से आरम्भ नहीं किया। बल्कि, वह आदि से ही परमेश्वर के साथ अस्तित्व में रहा है। इस संसार में आ कर, वह परमेश्वर का आज्ञाकारी पुत्र बना रहा। उसने अपनी इच्छा से दास का स्वरूप धारण किया ताकि अपने पिता की **इच्छा** को पूरी कर सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी स्वयं की कोई इच्छा नहीं थी, परन्तु यह कि उसकी और उसके पिता की **इच्छा** के बीच सिद्ध तालमेल सहमति थी।

6:39 **भेजनेवाले की इच्छा** यह थी हर एक जो मसीह को दे दिया गया है उद्धार पाएगा और धर्मियों के पुनरूत्थान तक सुरक्षित रखा जाएगा, जब वे जिलाए जाएंगे और स्वर्ग के घर में ले जाए जाएंगे। '**कुछ न,**' और '**उसे**' विश्वासियों को कहा गया है। यहाँ वह विश्वासियों के बारे में व्यक्तिगत रूप से नहीं, परन्तु मसीह की सम्पूर्ण देह के बारे में कह रहा था जिसमें सब समय के उद्धार पाए हुए विश्वासी होंगे। प्रभु यीशु मसीह की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करने की थी कि इस देह का एक भी सदस्य नाश न हो परन्तु **अन्तिम दिन** सम्पूर्ण देह जिलाई जाए।

मसीहियों के लिए, **अन्तिम दिन** का अर्थ वह **दिन** है जब प्रभु यीशु बादलों पर आएगा, जब मृतक मसीह में पहले जिलाए जाएंगे, जब जीवित विश्वासी बदल जाएंगे, और जब सब बादलों पर प्रभु यीशु से मिलने के लिए उठा लिए जाएंगे, ताकि हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहें। *यहूदियों* के लिए, इसका अर्थ है, मसीह का महिमा में आगमन।

6:40 प्रभु यीशु अब यह समझा रहा है कि किस तरह से एक व्यक्ति छुड़ाए हुओं के परिवार का सदस्य बनता है। परमेश्वर की **इच्छा** यह है कि **जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। पुत्र** को *देखने* का अर्थ यहाँ पर उसे भौतिक आँखों से नहीं, बल्कि विश्वास की आँखों से देखना है। एक व्यक्ति को यह देखना या स्वीकार करना आवश्यक है कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्ता है। साथ ही, उसे उस पर विश्वास करना भी आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि विश्वास लाने के द्वारा, उसे प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करना आवश्यक है। जो भी ऐसा करता है वह वर्तमान में ही **अनन्त जीवन** प्राप्त कर लेता है और साथ ही यह आश्वासन भी प्राप्त करता है कि **अन्तिम दिन** वह जिलाया जाएगा।

6:41 लोग प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए अब तक तैयार नहीं हो पाए थे, और **उस पर** कुड़कुड़ाने के द्वारा इस बात को उन्होंने प्रगट भी कर दिया। उसने दावा किया था कि **जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह मैं हूँ**। वे जान गए कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण दावा है। **स्वर्ग से** उतरने का अर्थ है, कि वह एक मनुष्यमात्र नहीं है या वह एक महान भविष्यद्वक्ता से बढ़कर है। और इसलिए वे **उस पर कुड़कुड़ाने लगे** क्योंकि वे उसके वचनों पर विश्वास नहीं करना चाहते थे।

6:42 वे यह मान कर बैठे थे कि प्रभु **यीशु . . . यूसुफ का पुत्र** है। यहाँ पर निश्चय ही वे गलत थे। प्रभु यीशु ने कुंवारी मरियम से जन्म लिया था। यूसुफ उसका पिता नहीं था। बल्कि, हमारा प्रभु पवित्रआत्मा से गर्भ में आया था। कुंवारी जन्म पर विश्वास न कर पाने के कारण वे अंधकार और अविश्वास की ओर चले गए। ऐसा ही आज भी होता है। जो प्रभु यीशु को परमेश्वर का ऐसा पुत्र मान कर उसे ग्रहण करने से मना कर देता है जिसने इस संसार में एक कुंवारी की कोख से जन्म लिया, वह मसीह के व्यक्तित्व और कार्य से सम्बन्धित सारी सच्चाइयों का इंकार करने के लिए बाध्य हो जाता है।

6:43 यद्यपि वे उससे सीधे बातें नहीं कर रहे थे, तौभी वह जान गया कि वे क्या कह रहे हैं, और यहाँ प्रभु **यीशु** ने उनसे कहा कि आपस में **मत कुड़कुड़ाओ**। अगले पदों में यह समझाया गया है कि उनका कुड़कुड़ाना

व्यर्थ और लाभहीन क्यों था। यहूदी लोग उसकी गवाही को जितना अधिक ठुकराते थे, उसकी शिक्षाएं उनके लिए उतनी ही कठिन होती जाती थीं। ''ज्योति को ठुकराने पर ज्योति से वंचित कर दिया जाता है।'' वे सुसमाचार को जितना अधिक ठुकराते थे, उनके लिए सुसमाचार को ग्रहण करना उतना ही कठिन होता गया। यदि प्रभु के द्वारा बताई जा रही सरल बातों पर वे विश्वास नहीं करते, तो अब वह और अधिक कठिन बातें बताएगा और वे उसके द्वारा कही जाने वाली बातों से पूरी तरह अज्ञान रहेंगे।

6:44 मनुष्य अपने आप में अत्यंत निराश और असहाय है। उसके पास इतनी सामर्थ भी नहीं है कि वह स्वयं प्रभु यीशु के पास आ सके। जब तक पहले पिता उसके हृदय और जीवन में कार्य करना आरम्भ नहीं करता, तब तक मनुष्य को उसके भयानक अपराधों और उद्धारकर्ता की आवश्यकता का बोध नहीं होता। अनेक लोगों को इस पद में कुछ कठिनाई दिखाई देती है। वे समझते हैं कि यह पद यह शिक्षा दे रहा है कि एक मनुष्य उद्धार पाना तो चाहता है तौभी वह इसे असम्भव पाता है। परन्तु ऐसा नहीं है। बल्कि यह पद सशक्त रीति से यह शिक्षा अवश्य देता है कि परमेश्वर ही वह जन है जिसने पहले हमारे जीवनों में कार्य किया और हमें अपने लिए जीतने के लिए पहल किया। हमारे पास विकल्प है कि हम प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करें या फिर उसे ठुकरा दें। परन्तु जब तक परमेश्वर हमारे हृदय से बातें नहीं करता तब तक हमारे भीतर प्रभु को ग्रहण करने की अभिलाषा उत्पन्न ही नहीं हो सकती। एक बार फिर से परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा दी कि वह **अन्तिम दिन** में सब सच्चे विश्वासियों को **जिला** देगा। जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, यह पवित्र लोगों को लेने के लिए मसीह के आगमन के बारे में कहा गया है, जब मृतक जिलाए जाएंगे और जीवित लोग बदल जाएंगे। यह सिर्फ विश्वासियों का पुनरूत्थान है।

6:45 सशक्त शब्दों में यह बताने के बाद कि कोई मनुष्य प्रभु यीशु के पास तब नहीं आ सकता जब तक परमेश्वर उसे न खींचे, प्रभु यीशु आगे यह समझाता है कि परमेश्वर पिता किस प्रकार लोगों को अपने पास खींचता है। सबसे पहले, वह यशायाह 54:13 को उद्धरित करता है, ''**वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे**।'' परमेश्वर व्यक्तियों को न सिर्फ चुनता है, परन्तु वह इसके लिए कुछ करता भी है। वह अपने बहुमूल्य वचन की शिक्षाओं के द्वारा उनके हृदयों से बातें करता है।

उसके बाद मनुष्य के स्वयं की इच्छा भी इसमें शामिल होती है। जो परमेश्वर के वचन की शिक्षा का प्रत्युत्तर देते हैं और **पिता से** सीखते हैं, वे ही मसीह के पास आते हैं। यहाँ पर एक बार फिर से हम परमेश्वर के प्रभुत्व और मनुष्य की इच्छा की दो सच्चाइयों को पवित्रशास्त्र में साथ साथ देखते हैं। ये हमें बताते हैं कि उद्धार का एक ईश्वरीय पक्ष होता है और एक मानवीय पक्ष भी होता है।

जब प्रभु यीशु ने कहा, ''**भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है**,'' तो उसका आशय यहाँ पर भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से था। विशेषकर वह यशायाह की पुस्तक के बारे में कह रहा था, परन्तु यहाँ पर जो विचार दिए गए हैं वे सारे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में व्यक्त किए गए हैं। परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा की शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य परमेश्वर के निकट आते हैं।

6:46 इस तथ्य का अर्थ कि लोग परमेश्वर के द्वारा सिखाए जाते हैं, यह **नहीं** है कि उन्होंने उसे **देखा** है। एकमात्र व्यक्ति **जिसने पिता को देखा** है, वह है, जो पिता के पास से आया है, और वह है, स्वयं प्रभु यीशु।

सभी जो परमेश्वर द्वारा सिखाए जाते हैं वे प्रभु यीशु मसीह के बारे में सिखाए जाते हैं क्योंकि परमेश्वर की शिक्षा का महानतम विषय स्वयं मसीह है।

6:47 पद 47 परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन में उद्धार के मार्ग के सम्बन्ध में सबसे संक्षिप्त और सबसे स्पष्ट वाक्यों में से एक है। प्रभु यीशु ने जिन शब्दों में यह बात कही है उन शब्दों का शायद ही कोई अलग अर्थ निकाले – कि जो कोई उस पर **विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है**। ध्यान दें कि उसने इन महत्वपूर्ण शब्दों के आगे ''**सच सच**'' जोड़ने के द्वारा बल दिया था। यह नया नियम के अनेक उन पदों में से एक है जो यह शिक्षा देते हैं कि उद्धार कार्यों से, व्यवस्था का पालन करने से, कलीसिया की सदस्यता से, सबसे बड़ी आज्ञा का पालन करने से नहीं मिलता, परन्तु सिर्फ प्रभु यीशु पर विश्वास करने से मिलता है।

6:48, 49 अब प्रभु यीशु कहता है कि *वही* वह **जीवन की रोटी** है जिसके बारे में वह कह रहा था। **जीवन की रोटी** का अर्थ वह **रोटी** है जो उन्हें **जीवन** देती है जो उसे खाते हैं। इससे पहले यहूदियों ने **जंगल में**

मन्ना के विषय की ओर प्रभु का ध्यान खींचा था और उसे चुनौती दी थी कि वह ऐसे ही अद्‌भुत रीति से कुछ भोजन उपलब्ध करवा कर दिखाए। यहाँ पर प्रभु उन्हें स्मरण दिलाता है कि उनके **बापदादों** ने **जंगल में मन्ना** खाया और **मर गए**। दूसरे शब्दों में, **मन्ना** सिर्फ इस जीवन के लिए था। मन्ना में खाने वालों को अनन्त जीवन देने की कोई सामर्थ नहीं थी। ''**तुम्हारे बापदादों**'' कहने के द्वारा प्रभु ने अपने आप को पतित मानवता से अलग कर दिया और अपने विशिष्ठ ईश्वरत्व की ओर संकेत किया।

6:50 मन्ना से भेद करते हुए, प्रभु यीशु ने अपने आप को **वह रोटी** कहा **जो स्वर्ग से उतरती है**। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो वह **न मरे** (नहीं मरेगा)। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह शारीरिक रूप से नहीं मरेगा, परन्तु उसे स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त होगा। चाहे वह शारीरिक रूप से मर भी जाए, तौभी उसका शरीर अन्तिम दिन में जिलाया जाएगा, और वह अनन्तकाल तक प्रभु के साथ रहेगा।

इस पद में और अगले पदों में, प्रभु यीशु ने बार बार यह दोहराया है कि *मनुष्य उस (प्रभु) में से खाए।* इसका अर्थ क्या हो सकता है? क्या इसका अर्थ यह है कि मनुष्य के लिए प्रभु यीशु को, भौतिक अर्थों में शब्दश:, खाना आवश्यक है? स्पष्टत: इस प्रकार का विचार असम्भव और अस्वीकार्य है। किन्तु, कुछ लोगों का मानना है कि हमें उसे सहभागिता की मेज में खाना आवश्यक है; उनका मानना है कि किसी आश्चर्यजनक रीति से रोटी और दाखरस उसकी देह और उसके लोहू में बदल जाते हैं और उद्धार पाने के लिए हमें उन चीज़ों को खाने में भागी होना आवश्यक है। परन्तु प्रभु यीशु ने ऐसा नहीं कहा है। सन्दर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसे खाने का अर्थ है, उस पर विश्वास करना। जब हम प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर उस पर विश्वास लाते हैं, तो हम उसे विश्वास के द्वारा अपना लेते हैं। हम उसके व्यक्तित्व और उसके कार्यों की आशीषों के भागी होते हैं। चर्च फादर संत अगस्टीन ने कहा है, ''तुमने विश्वास किया इसका अर्थ है कि तुम खा चुके।''

6:51 प्रभु यीशु **जीवन की रोटी** है। वह न सिर्फ अपने आप में जीवन रखता है, बल्कि वह जीवन देता भी है। जो **इस रोटी** में से खाता है वह **सर्वदा जीवित रहेगा**। परन्तु यह किस प्रकार से हो सकता है? प्रभु यीशु दोषी पापियों को अनन्त जीवन कैसे प्रदान कर सकता है? इसका उत्तर इस पद के बाद वाले हिस्से में पाया जाता है। ''**जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूंगा, वह मेरा मांस है।**'' यहाँ पर प्रभु यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु की ओर संकेत कर रहा है। वह अपना **जीवन** पापियों की छुड़ौती के रूप में देने वाला था। पापों के बलिदान के रूप में उसका शरीर तोड़ा जाना था और उसका लोहू बहाया जाना था। वह पापियों के बदले (स्थानापन्न के रूप में) मरने वाला था। वह उस दण्ड को चुकाने वाला था जिसे हमारे पापों के कारण हमें दिया जाना आवश्यक था। वह ऐसा क्यों कर रहा था? उसने ऐसा **जगत के जीवन** के लिए किया। वह न सिर्फ यहूदी जाति के लिए मरने वाला था, न ही वह सिर्फ चुने हुओं के लिए मरने वाला था। इसका अर्थ यह नहीं है कि सारा संसार उद्धार पा लेगा, परन्तु इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु द्वारा क्रूस पर किए गए कार्य का मूल्य सारे संसार का उद्धार करने के लिए पर्याप्त था, यदि लोग प्रभु यीशु के पास आते।

6:52 **यहूदी** अब भी शब्दश:, भौतिक रोटी और **मांस** के बारे में ही सोच रहे थे। उनके विचार इस जीवन से ऊपर नहीं उठ पा रहे थे। वे यह नहीं समझ सके कि प्रभु यीशु भौतिक वस्तुओं का उदाहरण देकर आत्मिक सच्चाइयों की शिक्षा दे रहा था। और इसलिए उन्होंने आपस में पूछा कि कैसे यह **मनुष्य**मात्र **अपना मांस** दूसरों को खाने के लिए दे सकेगा। एक पैराशूट तभी खुलता है जब हम हवाई जहाज से बाहर छंलाग लगाते हैं। विश्वास देखने से पहले आता है और हमारी आत्मा को समझने के लिए, हृदय को विश्वास करने के लिए, और इच्छा को आज्ञापालन करने के लिए तैयार करता है। हमारे सारे प्रश्न जो ''कैसे?'' से आरम्भ होते हैं, उनका उत्तर प्रभु यीशु के अधिकार के सामने झुकने पर मिलता है, जैसे कि पौलुस ने किया था, जब वह पुकार उठा था, ''हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं?''

6:53 एक बार फिर से प्रभु **यीशु** सब बातों को जानते हुए, यह समझ गया कि वे वास्तव में क्या सोच रहे हैं और कह रहे हैं। और इसलिए उसने गम्भीरतापूर्वक चेतावनी दी कि यदि वे उसका **मांस** नहीं खाते और उसका **लोहू** नहीं पीते, तो उन **में जीवन नहीं** होगा। यह प्रभु भोज की रोटी और दाखरस का हवाला नहीं हो सकता।

जब प्रभु यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की, जिस रात वह पकड़वाया गया था, तब तक उसका शरीर नहीं तोड़ा गया था, और न ही उसका लोहू बहा था। चेलों ने रोटी और दाखरस की सहभागिता की, परन्तु उन्होंने शब्दश: उसके मांस को नहीं खाया और न उसके लोहू को पीया। प्रभु यीशु सिर्फ यह कह रहा था कि जब तक हम क्रूस पर हमारे लिए उसकी मृत्यु के मूल्य को विश्वास के द्वारा अपने लिए नहीं अपनाते, तब तक हम उद्धार नहीं पा सकते। हमें उस पर विश्वास करना, उसे ग्रहण करना, उस पर भरोसा करना, और उसे अपना बनाना आवश्यक है।

6:54 पद 47 के साथ इस पद की तुलना करने पर, यह निश्चय ही दर्शाया जा सकता है कि उसका मांस खाने और उसका लोहू पीने का अर्थ है उस पर विश्वास करना। पद 47 में हम यह पढ़ते हैं कि "जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।" पद 54 में, हम यह सीखते हैं कि **जो** उसका **मांस खाता** और उसका **लोहू पीता है अनन्त जीवन उसी का है**। जो चीजें समान चीजों के बराबर होती हैं वे एक दूसरे के बराबर होती हैं। उसका **मांस** खाने और उसका **लोहू** पीने का अर्थ है, उस पर विश्वास करना। जितने उस पर विश्वास करते हैं वे **अन्तिम दिन** जिलाए जाएंगे। यह अवश्य ही, उन लोगों की देह के विषय में कह रहा है जो प्रभु यीशु पर विश्वास ला कर मरे हैं (मसीही विश्वासियों के रूप में मरे हैं)।

6:55 प्रभु यीशु का **मांस वास्तव में खाने की वस्तु** है, और उसका **लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है**।[22] यह संसार के उस भोजन और पेय पदार्थ से भिन्न है जिसका सिर्फ अस्थायी महत्व रहता है। प्रभु यीशु की मृत्यु का महत्व कभी समाप्त नहीं होता। जो विश्वास के द्वारा उसे अपनाते हैं वे एक ऐसे जीवन को प्राप्त करते हैं जो सर्वदा बना रहता है।

6:56 प्रभु यीशु और उस पर विश्वास करने के मध्य में एक बहुत नजदीकी एकता होती है। जो कोई उसका **मांस खाता** है और उसका **लोहू पीता** है, **वह** उसमें **स्थिर बना रहता है**। इससे अधिक निकट और घनिष्ठ कुछ नहीं हो सकता। जब हम भौतिक भोजन करते हैं, तो हम इसे अपने में (अपने भीतर) लेते हैं; और यह भोजन हमारा हिस्सा बन जाता है। जब हम प्रभु यीशु को अपने छुड़ाने वाले के रूप में स्वीकार करते हैं, तो वह हमारे जीवन में आता है कि वह हम में बना रहे, और हम भी (निरन्तर) उस में बने रहें।

6:57 अब प्रभु अपने और अपने लोगों के बीच विद्यमान एक और निकट सम्बन्ध का उदाहरण देता है। यह उदाहरण उसके स्वयं का उसके पिता के साथ सम्बन्ध के विषय में है। **जीवते पिता** ने प्रभु यीशु को इस संसार में **भेजा** है। (**जीवते पिता** का अर्थ है, पिता जो जीवन का स्त्रोत है)। इस संसार के एक मनुष्य के रूप में, प्रभु यीशु **पिता के कारण** जीवित था। वह अपना जीवन पिता के साथ निकटतम एकता व तालमेल में व्यतीत करता था। परमेश्वर उसके जीवन की परिधि और केन्द्र बिन्दु था। उसका उद्देश्य था कि पिता के कार्यों में व्यस्त रहे और पिता उसके जीवन के हर क्षेत्र में पूरी तरह से समाए रहे। यहाँ इस संसार में वह एक मनुष्य के रूप में था, और संसार यह नहीं पहचान सका कि वह देह रूप में प्रगट हुआ परमेश्वर है। यद्यपि यह संसार उसे सही रीति से समझ नहीं पाया, तौभी वह और पिता एक थे। वह निकटतम घनिष्ठता के जीवन में जीते थे। ऐसी ही घनिष्ठता विश्वासियों और प्रभु के बीच में होती है। विश्वासी इस संसार में हैं, और संसार उन्हें सही रीति से नहीं समझ पाता, उनसे बैर रखता है और अक्सर सताता है। परन्तु इसलिए कि उन्होंने प्रभु यीशु पर अपना विश्वास और भरोसा रखा है, वे उसके **कारण जीवित** रहेंगे। उनके जीवन प्रभु यीशु के जीवन के साथ बहुत ही नजदीकी से बन्धे हुए हैं, और यह जीवन सदा बना रहेगा।

6:58 इस पद में उन सारी बातों का सारांश दिखाई देता है जिसे प्रभु यीशु ने अब तक पिछले पदों में कहा है। **वही** वह **रोटी** है, जो **स्वर्ग से उतरी** है। वह उस **मन्ना** से उत्तम है जिसे **बापदादों** ने जंगल में खाया था। उस रोटी का महत्व अस्थायी था। यह सिर्फ इसी जीवन के लिए थी। परन्तु मसीह परमेश्वर की वह रोटी है जो उन सबको अनन्त जीवन देती है जो उसमें से खाते हैं।

6:59 भीड़ प्रभु यीशु और उसके चेलों के पीछे पीछे गलील की झील के उत्तरपूर्वी किनारे से **कफरनहूम** तक आई थी। भीड़ को प्रभु यीशु **आराधनालय**[23] में मिल गया और उसी स्थान पर प्रभु ने उन्हें जीवन की रोटी का सन्देश दिया था।

6:60 इस समय तक, प्रभु यीशु के बारह चेलों के अलावा और भी बहुत से चेले बन गए थे। जो कोई उसके

पीछे चलता था और उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करने का दावा करता था वह एक चेले के रूप में जाना जाता था। किन्तु, आवश्यक नहीं है कि उसके चेलों के रूप में पहचाने जाने वाले लोगों में से सब के सब वास्तव में विश्वासी हों। अब **उसके** चेले होने का दावा करने वाले **बहुतों** ने कहा, ''**यह बात नागवार है।**'' उनका आशय था कि उसकी शिक्षाएं आहत करने वाली हैं। उनके लिए यह बात समझने में जितनी कठिन नहीं थी, उससे अधिक ग्रहण करने में अरूचिकर थी। जब उन्होंने कहा, ''**इसे कौन सुन सकता है**'' (या, समझ सकता है), तब उनके कहने का आशय यह था कि ''कौन ऐसे आहत करने वाले सिद्धान्त को सुनते हुए खड़ा रह सकता है?''

6:61 यहाँ पर एक और प्रमाण पाया जाता है कि प्रभु यीशु के पास पूर्ण ज्ञान था। प्रभु **यीशु** यह **जान** गया कि चेले क्या कह रहे हैं। वह जान गया कि वे उसके इस दावे के बारे में कुड़कुड़ा रहे हैं कि वह स्वर्ग से उतरा है और उन्हें यह अच्छा नहीं लगा जब उसने कहा कि अनन्त जीवन पाने के लिए मनुष्य को उसका (प्रभु यीशु का) मांस खाना और लोहू पीना आवश्यक है। और इसलिए उसने उनसे पूछा, ''**क्या इससे तुम्हें ठोकर लगती है।**''

6:62 उन्होंने इस बात से ठोकर खाई क्योंकि उसने कहा कि वह स्वर्ग से उतरा है। अब उसने उनसे पूछा कि जब वे उसे वापस स्वर्ग को **ऊपर जाते** देखेंगे, तब क्या सोचेंगे; वह जानता था कि अपने पुनरूत्थान के बाद वह स्वर्ग पर चढ़ेगा। उन्होंने इस बात पर भी ठोकर खाई जब उसने कहा कि मनुष्य को उसका मांस खाना आवश्यक है। वे तब क्या सोचेंगे जब वे माँस की देह को **जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते** देखेंगे? मनुष्य उसके भौतिक मांस और लोहू को कैसे खा पाएंगे जब वह पिता के पास वापस चला जाएगा?

6:63 ये लोग मसीह के भौतिक मांस के बारे में ही सोच रहे थे, परन्तु यहाँ उसने यह बताया कि अनन्त जीवन भौतिक मांस को खाने के द्वारा नहीं, परन्तु परमेश्वर के पवित्र **आत्मा** के कार्य के द्वारा मिलता है। मांस जीवन नहीं दे सकता; सिर्फ **आत्मा** ही जीवन दे सकता है। उन्होंने उसकी बातों को शब्दश: ले लिया और वे यह नहीं समझ सके कि इन बातों को आत्मिक अर्थों में समझना है। और यहाँ प्रभु यीशु ने यह समझाया कि **जो बातें** उसने कही वे **आत्मा** और **जीवन** थी; जब उसके मांस खाने और लोहू पीने की उसकी बातें आत्मिक अर्थों में समझी गई, (यह अर्थ कि मांस खाने और लोहू पीने का अर्थ उस पर *विश्वास* लाना है) तब इस सन्देश को सुनने वाले अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे।

6:64 जब प्रभु यीशु ये बातें कह रहा था, तब उसने यह जान लिया कि सुननेवालों में से कुछ ने उसकी बात को नहीं समझा क्योंकि वे **विश्वास** नहीं करते थे। उनके न समझ पाने का कारण उनकी अक्षमता नहीं, परन्तु उनकी अनिच्छा थी। प्रभु **यीशु तो पहिले से ही जानता था** कि उसके चेले होने का दावा करने वाले कुछ लोग उस पर **विश्वास . . . नहीं करते** और उसके चेलों में से एक उसे **पकड़वाएगा**। अवश्य ही, प्रभु **यीशु** इन सारी बातों को आदि से **जानता** था, परन्तु यहाँ शायद इसका अर्थ यह है कि वह इन सारी बातों को संसार में अपनी सेवकाई के आरम्भ करने के समय से ही जानता था।

6:65 अब उसने उन्हें समझाया कि उनके अविश्वास के कारण ही उसने उन्हें यह बताया था कि उसके पास तब तक कोई नहीं आ सकता, **जब तक** पिता की ओर से **यह वरदान न दिया जाए**। इस प्रकार के वचन उस मनुष्य के अंहकार पर एक प्रहार है, जो यह सोचता है कि वह उद्धार को कमा सकता है या अपनी योग्यता के बल पर हासिल कर सकता है। प्रभु ने लोगों से कहा कि उसके पास आने की सामर्थ सिर्फ **पिता** से ही प्राप्त की जा सकती है।

इ. उद्धारकर्ता के वचन के प्रति मिश्रित प्रतिक्रियाएं (6:66–71)

6:66 प्रभु यीशु की ये बातें उसके पीछे चलने वाले **बहुतेरे** लोगों को इतनी अरूचिकर लगीं कि उन्होंने उसे अब छोड़ दिया और उसके साथ आगे को कोई सम्बन्ध नहीं रखा। ये चेले कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं थे। वे प्रभु के पीछे विभिन्न कारणों से चलते थे, उसके प्रति सच्चे प्रेम के कारण या उसकी योग्यता की सराहना करते हुए नहीं।

6:67 इस समय प्रभु **यीशु** ने अपने **बारहों** चेलों की ओर देखा और उनसे यह प्रश्न करते हुए उन्हें चुनौती दी कि क्या वे भी उसे छोड़ कर चले जाएंगे।

6:68 पतरस का उत्तर ध्यान देनेयोग्य है। उसने कुछ इस प्रकार से कहा, ''**प्रभु,** हम तुझे कैसे छोड़ सकते हैं? तू हमें ऐसे सिद्धान्तों की शिक्षा देता है जो **अनन्त जीवन** को ले जाती हैं। यदि हम तुझे छोड़ दें, तो फिर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास हम जाएं। तुझे छोड़ने का अर्थ होगा, अपने विनाश पर मुहर लगाना।''

6:69 बारह चेलों की ओर से बोलते हुए पतरस ने आगे कहा कि उन्होंने यह **विश्वास किया और जान गए हैं** कि प्रभु यीशु ही जीवते **परमेश्वर का पवित्र जन** *मसीह* है।[24] शब्दों के क्रम की ओर फिर से ध्यान दें , ''**विश्वास किया और जान गए।**'' सबसे पहले उन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया, और उसके बाद वे **जान गए** कि वह सचमुच में वही है जैसा कि वह दावा करता है।

6:70 68 से 69 पदों में, पतरस ने ''हम'' शब्द का प्रयोग सभी बारह चेलों के लिए किया है। यहाँ पद 70 में, प्रभु यीशु ने उसे सुधारा। उसे इतने आत्मविश्वास के साथ यह नहीं कहना चाहिए कि सभी बारह चेले सच्चे विश्वासी हैं। यह सत्य है कि **बारहों** को स्वयं प्रभु यीशु ने चुना था, परन्तु उन **में से एक व्यक्ति शैतान** था। बारहों के दल में एक ऐसा व्यक्ति था जो प्रभु यीशु मसीह के सम्बन्ध में पतरस के विचारों से सहमत नहीं था।

6:71 प्रभु यीशु जानता था कि **यहूदा इस्कारियोति** उसे **पकड़वाने को था।** वह जानता था कि यहूदा ने वास्तव में उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं किया था। यहाँ एक बार फिर से हम देखते हैं कि प्रभु को सारी बातों की जानकारी रहती है। साथ ही, यहाँ पर इस बात का भी एक प्रमाण पाया जाता है कि पतरस अचूक नहीं था, जब उसने चेलों के बारे में बातें कही थी!

जीवन की रोटी के सम्बन्ध में उपदेश में, हमारे प्रभु ने एक अत्यंत साधारण शिक्षा के साथ आरम्भ किया। परन्तु जैसे जैसे वह अपने उपदेश में आगे बढ़ा, तो यह स्पष्ट दिखाई देने लगा कि यहूदी लोग उसकी शिक्षाओं का तिरिस्कार कर रहे हैं। वे जितना अधिक अपने हृदय और मन को उसकी शिक्षाओं के प्रति कठोर करते, उसकी शिक्षाएं उतनी अधिक कठिन होती जाती थीं। अन्त में प्रभु यीशु ने 'उसका मांस खाने' और 'उसके लोहू को पीने' के बारे में शिक्षा दी। यह शिक्षा उन चेलों के लिए अत्यंत कठिन हो गई। वे कहने लगे, ''यह बात नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?'' और उन्होंने उसके पीछे चलना छोड़ दिया। सत्य को ठुकरा देने का परिणाम विवेक के अन्धे हो जाने के रूप में होता है। इसलिए कि वे देखना *नहीं चाहते* थे, इसलिए अब वे देख *नहीं सकेंगे*।

V. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: यरूशलेम में (7:1–10:39)

अ. प्रभु यीशु अपने भाइयों को डांटता है (7:1–9)

7:1 अध्याय 6 और अध्याय 7 के बीच में कुछ महिनों का अन्तराल है। प्रभु **यीशु गलील में** रह गया। वह **यहूदिया में** नहीं ठहरना चाहता था, यहूदिया प्रदेश यहूदियों का मुख्यालय था, और वे **उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे**। सामान्यत: सब इस बात पर सहमत हैं कि यहाँ पर जिन लोगों को **यहूदी**[25] कहा गया है वे यहूदियों के अगुवे या सरदार थे। वे ही लोग प्रभु यीशु से बहुत ही बैर रखते थे, और **उसे मार डालने** का अवसर ढूंढ़ रहे थे।

7:2 **मण्डपों का पर्ब्ब** यहूदी कैलेण्डर के सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक था। यह कटनी के समय में मनाया जाता था, और यह पर्ब्ब मिस्र से बाहर निकले इस्राएलियों द्वारा अस्थायी तम्बूओं या झोपड़ियों में निवास किए जाने के स्मरण में मनाया जाता था। यह एक त्यौहार, और आनन्दमय अवकाश का समय हुआ करता था, और इस अवसर पर उस दिन की आशा की जाती थी जब मसीह का शासन आएगा और उद्धार पाई हुई यहूदी जाति शान्ति और समृद्धि के साथ देश में निवास करेगी।

7:3 पद 3 में प्रभु के जिन **भाइयों** के बारे में उल्लेख किया गया है वे कदाचित मरियम के पुत्र थे जो प्रभु यीशु के बाद जन्में थे, (कुछ लोगों का मानना है कि वे उसके चचेरे/मौसेरे भाई या अन्य रिश्तेदार थे)। यह बात मायने नहीं रखती कि वे प्रभु यीशु के कितने नज़दीकी रिश्तेदार थे, जितनी यह कि उन्हें अब तक उद्धार का अनुभव नहीं हुआ था। वे प्रभु यीशु पर सच्चे मन से विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने उससे कहा कि वह यरूशलेम में मण्डपों

के पर्ब्ब के लिए जाए और कुछ आश्चर्यकर्म करे ताकि उसके **चेले** यह देखें कि वह क्या कर रहा है। यहाँ पर जिन्हें **चेले** कहा गया है वे प्रभु यीशु के बारह चेले नहीं, बल्कि यहूदिया के वे लोग हैं जो यह दावा करते थे कि वे प्रभु यीशु के पीछे चलने वाले हैं।

यद्यपि वे उस पर विश्वास नहीं करते, वे चाहते थे कि वह अपने आप को खुलकर प्रगट करे। शायद उनकी रूचि उस प्रसिद्धि में थी जो उन्हें प्रभु यीशु के रिश्तेदारों के रूप में पहचाने जाने से मिलती। या फिर, वे उसके यश से चिढ़ते थे और इसलिए यहूदिया जाने के लिए उसे आग्रह कर रहे थे कि वह मार डाला जाए।

7:4 शायद ये शब्द व्यंग्य के रूप में कहे गए हैं। उसके रिश्तेदार यह जताना चाह रहे थे कि प्रभु यीशु लोकप्रियता चाह रहा है। यदि वह प्रसिद्ध होना नहीं चाहता तो फिर वह गलील में इतने सारे आश्चर्यकर्म क्यों कर रहा है? उनके कहने का आशय कुछ इस प्रकार से था, ''यह तुम्हारे लिए एक बड़ा अवसर है, तू लोकप्रिय होने का प्रयास कर रहा है। तुझे पर्ब्ब के लिए यरूशलेम जाना चाहिए। वहाँ हजारों की संख्या में लोग आए हुए होंगे, और तेरे लिए यह सुअवसर होगा कि तू उनके लिए आश्चर्यकर्म करे। गलील एक शान्त स्थान है, और तू व्यवहारिक रूप से यहाँ पर आश्चर्यकर्मों को गुप्त में दिखा रहा है। तू ऐसा क्यों कर रहा है जब हम जानते हैं कि तू प्रसिद्ध होना चाहता है।'' उसके बाद उन्होंने कहा, ''**यदि तू यह काम करता है, जो अपने तई जगत पर प्रगट कर**।'' वे शायद यह कह रहे हैं, ''यदि तू सचमुच में मसीह है, और यदि तू ये आश्चर्यकर्म इसी बात को प्रमाणित करने के लिए कर रहा है, तो इन प्रमाणों को ऐसे स्थान पर क्यों नहीं प्रस्तुत करता, जहाँ दिखाने से कुछ लाभ होगा, अर्थात्, यहूदिया में?''

7:5 **उसके** भाइयों में उसे महिमा पाते देखने की कोई सच्ची अभिलाषा नहीं थी। वे यह **विश्वास नहीं** करते थे कि वह मसीह है। न ही वे उस पर भरोसा रखना चाहते थे। उन्होंने जो कुछ कहा, वह सब एक व्यंग्य था। उनके हृदय प्रभु के सामने सही नहीं थे। प्रभु के लिए यह बात सचमुच में दुखद रही होगी कि उसके स्वयं के भाई उसकी बातों और कार्यों पर विश्वास नहीं कर रहे थे। ऐसा अक्सर देखा जाता है कि जो लोग प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं उन्हें अपने ही निकटतम लोगों और प्रियजनों के विरोध का सामना करना पड़ता है।

7:6 प्रभु का जीवन आरम्भ से लेकर अन्त तक व्यवस्थित था। उसका हर दिन और हर क्षण उसके पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार था। संसार के सामने खुलकर अपने आप को प्रगट करने का **समय अभी तक नहीं आया** था। वह ठीक ठीक जानता था कि आगे क्या होने वाला था, और परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि वह इस समय अपने आप को सार्वजनिक रूप से प्रगट करने के लिए यरूशलेम को जाए। परन्तु उसने अपने भाइयों को स्मरण दिलाया कि उनके वहाँ जाने के लिए **सब समय** उपयुक्त है। वे अपना जीवन अपनी ही इच्छाओं के अनुसार जीते हैं, परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी रह कर नहीं। वे अपने मन से योजना बना सकते हैं और जब जहाँ जाना चाहें तब वहाँ जा सकते हैं, क्योंकि वे सिर्फ अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं।

7:7 **जगत** प्रभु के भाइयों से **बैर नहीं रखता** था क्योंकि वे जगत के ही थे। वे प्रभु यीशु के विरूद्ध जगत का पक्ष लेते थे। उनका सारा जीवन जगत के अनुरूप था। यहाँ पर **जगत** उस तंत्र को कहा गया है जिसे मनुष्य ने तैयार किया है और जहाँ परमेश्वर और उसकी कलीसिया के लिए कोई स्थान नहीं है: संस्कृति जगत, कला जगत, शिक्षा जगत, धर्म जगत, आदि। बल्कि, यहूदियों में विशेषकर धर्म जगत था, क्योंकि यहूदियों के सरदार ही प्रभु यीशु से सबसे अधिक बैर रखते थे।

जगत मसीह से इसलिए बैर रखता है **क्योंकि** उसने जगत के विषय में यह गवाही दी कि **उसके काम बुरे** हैं। मनुष्य के विकृत स्वभाव पर यह दुखद टिप्पणी है कि जब एक निष्पाप, निष्कलंक मनुष्य जगत में आया, तो जगत ने उसे मार डालने का प्रयास किया। मसीह के जीवन की सिद्धता से यह प्रगट हुआ कि शेष सब मनुष्यों का जीवन कितना सिद्धताहीन है। जिस प्रकार से एक सीधी रेखा को एक टेढ़ी मेढ़ी रेखा के बगल में रखने पर टेढ़ी मेढ़ी रेखा का टेढ़ापन प्रगट हो जाता है, उसी प्रकार से प्रभु ने इस संसार में आकर मनुष्य की सारी पापमयता को प्रगट कर दिया। मनुष्य अपनी पोल खुल जाने पर प्रभु से क्रुद्ध गया। परमेश्वर के सामने पश्चताप करने और दया के लिए उसे पुकारने की बजाए, उसने उस व्यक्ति को नाश करना चाहा जिसने उसके पापों को प्रगट कर दिया था।

एफ.बी. मेयर टिप्पणी करते हैं:

देहधारी प्रेम के द्वारा लगाई जा सकने वाली यह सबसे कड़ी फटकारों में से एक है, जब वह किसी के विषय में आज यह कहता है, जैसा कि उसने अपनी देह में रहने के दिनों में कहा था: ''जगत तुमसे बैर नहीं रखता।'' जगत द्वारा बैर न किया जाना; संसार द्वारा प्रेम किया जाना, खुशामद किया जाना, पुचकारा जाना – उन सबसे भयानक अवस्थाओं में से एक है जिसमें एक मनुष्य पड़ सकता है। एक प्राचीन साधु ने पूछा, ''मैंने क्या बुरा काम किया है, कि वह मेरे विषय में अच्छी बातें कहे?'' जगत द्वारा बैर न किया जाना यह सिद्ध करता है कि हम जगत के विरोध में यह गवाही नहीं देते कि उसका काम बुरा है। जगत के प्रेम की गर्माहट यह सिद्ध करती है कि हम जगत के हैं। संसार से मित्रता परमेश्वर के साथ शत्रुता है। इसलिए जो कोई इस जगत का मित्र है वह परमेश्वर का शत्रु है (यूहना 7:7; 15: 19; याकूब 4:4)।

7:8 प्रभु ने अपने भाइयों से **पर्ब्ब में** जाने के लिए कहा। इसमें एक बहुत ही दुखद बात थी। वे धार्मिक मनुष्य होने का दिखावा कर रहे थे। वे तम्बूओं के पर्ब्ब में शामिल होने जा रहे थे। तौभी परमेश्वर का मसीह उनके बीच में खड़ा था, और उसके लिए उनके मन में कोई सच्चा प्रेम नहीं था। मनुष्य धार्मिक रीति विधियों को इसलिए पसन्द करता है क्योंकि वह उन्हें हृदय में कोई सच्ची रूचि लिए बिना भी मना सकता है। परन्तु जब उसे मसीह के आमने सामने लाया जाता है जो वह असहज हो जाता है। प्रभु यीशु ने कहा कि वह **अभी इस पर्ब्ब में नहीं जाता** क्योंकि **अभी तक** उसका **समय पूरा नहीं हुआ** है। उसका आशय यह नहीं था कि वह पर्ब्ब में जाएगा ही नहीं, क्योंकि पद 10 में हम देखते हैं कि वह वहाँ गया। बल्कि, उसके कहने का अर्थ था कि वह वहाँ अपने भाइयों के साथ जाकर अपने आप को जोर शोर से प्रगट नहीं करेगा। ऐसा करने का समय अभी नहीं आया था। जब वह जाएगा, तो वह चुपचाप जाएगा और कम से कम जोर शोर के साथ जाएगा।

7:9 इसलिए प्रभु भाइयों के पर्ब्ब में चले जाने के बाद **गलील में ही रह गया**। उन्होंने उस महान व्यक्ति को पीछे छोड़ दिया जो उन्हें वह आनन्द और उल्लास दे सकता था जिसके विषय में तम्बुओं के पर्ब्ब का उद्देश्य बातें करता था।

ब.प्रभु यीशु मन्दिर में शिक्षा देता है (7:10–31)

7:10 **उसके भाई** जब यरूशलेम को चले गए, तो उसके कुछ समय बाद प्रभु यीशु चुपचाप वहाँ गया। एक भक्त यहूदी के रूप में, वह पर्ब्ब में शामिल होना चाहता था। परन्तु परमेश्वर के आज्ञाकारी पुत्र के रूप में, वह ऐसा **प्रगट में नहीं, परन्तु . . .गुप्त** में ही कर सकता था।

7:11 जो **यहूदी** उसे **पर्ब्ब** में ढूंढ़ रहे थे, वे निःसन्देह, वे ही अगुवे थे जो उसे मार डालना चाहते थे। जब उन्होंने पूछा, ''**वह कहाँ हैं?**'' तो उनकी रूचि उसकी आराधना में नहीं, परन्तु उसे नाश करने में थी।

7:12 यह स्पष्ट है कि प्रभु की उपस्थिति **लोगों में** खलबली मचा रही थी। उसके द्वारा किए जा रहे आश्चर्यकर्म अधिक से अधिक लोगों को यह सोचने के लिए बाध्य कर रहे थे कि वह वास्तव में कौन है। पर्ब्ब के समय लोगों में आपसी बातचीत होने लगी कि वह सच्चा भविष्यद्वक्ता है या झूठा। **कितने कहते थे, ''वह भला मनुष्य है: और कितने कहते थे, नहीं वह लोगों को भरमाता है।''**

7:13 यहूदी अगुवों का प्रभु यीशु के प्रति विरोध इतना तीव्र हो चुका था कि कोई भी **उसके** पक्ष में **खुलकर** बातें करने का साहस नहीं करता था। निःसन्देह अनेक सामान्य लोग यह जानते थे कि वह सचमुच में इस्राएल का मसीह है, परन्तु वे सामने आकर यह बात कहने का साहस नहीं करते थे क्योंकि उन्हें डर था कि अगुवे उन्हें सताएंगे।

7:14 तम्बुओं का **पर्ब्ब** कई दिनों तक चलता था। जब यह लगभग आधा बीत गया, तो प्रभु **यीशु मन्दिर** के बाहर वाले क्षेत्र (जो ओसारे के नाम से जाना जाता था, और जहाँ लोगों को एकत्रित होने की अनुमति थी) **में जाकर उपदेश करने लगा।**

7:15 जिन लोगों ने उद्धारकर्ता के उपदेश को सुना उन्होंने **अचम्भा** किया। निःसन्देह पुराना नियम के विषय में उसके ज्ञान ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। परन्तु साथ ही शिक्षा देने की उसकी कला भी उनका ध्यान उसकी ओर खींचती थी। वे जानते थे कि प्रभु यीशु उन दिनों के किसी भी बड़े धार्मिक संस्था में सीखने के लिए कभी नहीं गया, और वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि इस

प्रकार की शिक्षा उसे कहाँ से मिली होगी। संसार आज भी चकित होता है और बहुधा कुड़कुड़ाता है जब वह ऐसे विश्वासियों को देखता है जो बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और उसकी शिक्षा देने में सक्षम है।

7:16 एक बार फिर से हम एक सुन्दर बात देखते हैं कि किस प्रकार से प्रभु ने अपने आप के लिए कोई भी श्रेय लेने से मना कर दिया, परन्तु उसने सिर्फ अपने पिता की महिमा करनी चाही। प्रभु **यीशु ने** सीधा सीधा **उत्तर दिया** कि उसके द्वारा दी जा रही शिक्षा उसकी अपनी शिक्षा नहीं है, **परन्तु** यह उसके **भेजनेवाले** की ओर से आती है। प्रभु यीशु ने जो कुछ कहा और जो कुछ सिखाया, वे वही बातें थीं जिसे पिता ने उसे सिखाने और बोलने के लिए कहा था। वह अपने पिता से अलग होकर कुछ नहीं करता था।

7:17 यदि यहूदी सचमुच में यह जानना चाहते थे कि उसका उपदेश सही है या नहीं, तो उनके लिए यह पता कर पाना सरल होता। **यदि कोई** सचमुच में परमेश्वर की **इच्छा पर चलना** चाहता, तो परमेश्वर उस पर प्रगट करता कि मसीह की शिक्षाएं सचमुच में ईश्वरीय हैं या वह सिर्फ वही सिखा रहा है जैसा उसका मन कर रहा है। सच्चाई की खोज करने वाले हर व्यक्ति के लिए यहाँ पर एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा दी गई है। यदि एक व्यक्ति सच्चा है, और सचमुच में सच्चाई को जानना चाहता है, तो परमेश्वर उसे उस पर प्रगट करेगा। ''आज्ञाकारिता आत्मिक ज्ञान का अंग है।''

7:18 जो कोई **अपनी ओर से कुछ कहता है**, अर्थात्, अपनी इच्छा के अनुसार कहता है, वह **अपनी ही बड़ाई चाहता** है। परन्तु प्रभु यीशु मसीह के साथ ऐसा नहीं था। इसलिए कि उसकी मंशा पूरी तरह से शुद्ध थी, उसका सन्देश भी पूरी तरह से **सच्चा** था। **उसमें** कोई **अधर्म नहीं** था।

प्रभु यीशु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसके बारे में ऐसी बात कही जा सकती थी। शेष प्रत्येक शिक्षक की शिक्षा में कुछ न कुछ स्वार्थ पाया जाता था। प्रभु के हर एक सेवक की यह महत्वाकांक्षा हो कि वह अपनी नहीं बल्कि परमेश्वर की बड़ाई के लिए कार्य करे।

7:19 उसके बाद प्रभु यीशु ने यहूदियों पर एक सीधा सीधा आरोप लगाया। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि **मूसा** ने उन्हें **व्यवस्था** दी। वे अपनी बड़ाई करते थे कि उनके पास व्यवस्था है। वे यह भूल गए कि व्यवस्था का उनके पास रहना अपने आप में उनका कोई सद्‌गुण नहीं है। व्यवस्था की मांग थी कि उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन किया जाए। यद्यपि व्यवस्था का उनके पास होना वे अपनी बड़ाई की बात मानते थे, परन्तु यह स्पष्ट है कि वे इनमें से किसी का भी पालन नहीं करते थे, क्योंकि तब भी वे प्रभु यीशु को मार डालने का प्रयास कर रहे थे। व्यवस्था में हत्या करने के लिए स्पष्ट रूप से मना किया गया है। वे प्रभु यीशु मसीह के सम्बन्ध में अपनी मंशाओं के द्वारा व्यवस्था को तोड़ रहे थे।

7:20 **लोगों** ने प्रभु यीशु के आरोप की तेज धार को महसूस किया परन्तु, यह स्वीकार करने की बजाए कि प्रभु का कहना सच है, वे उस पर दोष लगाने लगे। वे कहने लगे कि उसमें **दुष्टात्मा** है। उन्होंने उसके कथन को चुनौती दी कि उनमें से कोई उसे **मार डालना चाहता** है।

7:21 प्रभु **यीशु** अब बेतहसदा के कुण्ड के पास अड़तीस वर्ष के रोगी की चंगाई के विषय पर आता है। इसी आश्चर्यकर्म के कारण यहूदी अगुवों के बीच में प्रभु यीशु के विरुद्ध बैर बढ़ गया था, और इसी समय से उन्होंने उसके विरूद्ध उसे मार डालने का दुष्टतापूर्ण षड़यंत्र गढ़ना आरम्भ किया था। प्रभु ने उसे स्मरण दिलाया कि उसने **एक काम किया** था, और उन **सब** ने उस पर अचम्भा किया था। उन्होंने सराहना के भाव से अचम्भा नहीं किया, परन्तु उन्हें आघात लगा था कि उसने सब्त के दिन ऐसा कार्य क्यों किया।

7:22 **मूसा** की व्यवस्था में यह आज्ञा दी गई थी कि एक नर शिशु का उसके जन्म के आठ दिन बाद खतना कराया जाए। (वास्तव में, खतना का आरम्भ **मूसा** के समय से **नहीं** हुआ था, परन्तु यह रीति **बाप दादों** के समय से चली आ रही थी, अर्थात्, इब्राहीम, इसहाक, याकूब, इत्यादि के समय से)। यदि आठवां दिन **सब्त के दिन** आता था, तो यहूदी लोग उस दिन बालक का **खतना** करना गलत नहीं मानते थे। वे मानते थे कि यह एक आवश्यक कार्य है और परमेश्वर ने ऐसा कार्य करने की अनुमति दी है।

7:23 यदि वे **मूसा की व्यवस्था** का पालन करने के लिए एक बालक का खतना **सब्त के दिन** करते थे,

तो उन्हें प्रभु में त्रुटि क्यों ढूंढ़ना चाहिए जब उसने **सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया**? यदि व्यवस्था किसी आवश्यक कार्य के लिए अनुमति देती है, तो फिर यह दया के कार्य के लिए अनुमति क्यों नहीं देगी?

खतना एक बालक (पुरुष) पर ही की जाने वाली एक छोटी सी शल्य चिकित्सा होती थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है, कि इससे पीड़ा होती थी, और कोई खास शारीरिक लाभ नहीं होता था। इसके विपरीत, प्रभु ने सब्त के दिन एक व्यक्ति को पूरी तरह से चंगा कर दिया था। और इस पर भी यहूदी उसमें गलती ढूंढ़ने लगे थे।

7:24 यहूदियों के साथ समस्या यह थी कि वे **मुँह देखकर** किसी भी बात को परखते थे, भीतरी सच्चाई के आधार पर नहीं। उनका न्याय सही नहीं होता था। जो कार्य स्वयं करने पर उन्हें सही लगते थे वे ही कार्य प्रभु द्वारा किए जाने पर उन्हें पूरी तरह गलत लगते थे। मानवीय स्वभाव की प्रवृत्ति होती है कि वह देख कर न्याय करता है, भीतरी सच्चाई के आधार पर नहीं। प्रभु यीशु ने मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं किया था; बल्कि वे ही उसके प्रति अर्थहीन बैर रखने के द्वारा व्यवस्था का उल्लंघन कर रहे थे।

7:25 इस समय तक, **यरूशलेम** में यह बात सब कोई जान चुके थे कि यहूदी अगुवे उद्धारकर्ता के विरूद्ध षड़यंत्र रच रहे हैं। यहाँ पर कुछ सामान्य लोगों ने पूछा कि क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसके पीछे उनके अगुवे पड़े हुए हैं।

7:26 वे यह नहीं समझ सके कि प्रभु यीशु को इतना बेधड़क होकर **खुल्लमखुल्ला** बोलने की अनुमति थी। यदि सरदार उससे बैर रखते थे, जैसा कि लोग भी मानते थे, तो उसे बोलने क्यों दे रहे हैं? क्या यह सम्भव है कि वे जानने आए थे कि क्या आखिर वह सच्चा मसीह है, जैसा कि वह दावा करता है?

7:27 जो लोग यह विश्वास नहीं करते थे कि प्रभु यीशु ही मसीह है, वे यह समझते थे कि वे जानते हैं कि वह कहाँ से आया है। उनका मानना था कि वह नासरत से आया था। वे उसकी माता मरियम को जानते थे, और मानते थे कि यूसुफ उसका पिता है। उन दिनों के यहूदी लोग ऐसा मानते थे कि मसीह जब भी आएगा तो वह अचानक और रहस्यमय ढंग से आएगा। उन्हें यह नहीं मालूम था कि वह एक बच्चे के रूप में आएगा और फिर एक मनुष्य के रूप में बड़ा होगा। उन्हें पुराना नियम से यह जान जाना चाहिए था कि वह बैतलहम में जन्म लेगा, परन्तु ऐसा लगता है कि वे मसीह के आगमन से सम्बन्धित जानकारियों को लेकर अनजान थे। इसलिए उन्होंने कहा, **''मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है**।''

7:28 इस समय प्रभु यीशु ने वहाँ एकत्रित लोगों और उसे सुनने वालों को **पुकार के कहा,** कि वे सचमुच में उसे **जानते** हैं, और यह भी जानते हैं कि वह **कहाँ का** है। यहाँ पर प्रभु यीशु यह कह रहा है कि वे उसे सिर्फ एक मनुष्य के रूप में जानते हैं। वे उसे नासरत के यीशु के रूप में जानते हैं। परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि वह परमेश्वर भी है। यही बात उसने शेष पदों में समझाया है।

जहाँ तक उसके मनुष्यत्व की बात है, वह नासरत में रहता था। परन्तु उन्हें यह जानना भी आवश्यक था कि वह अपने आप **नहीं आया** था, परन्तु परमेश्वर पिता के द्वारा भेजा गया था जिसे ये लोग **नहीं जानते** थे। इन वचनों में प्रभु यीशु ने सीधे सीधे यह दावा किया है कि वह परमेश्वर के तुल्य है। वह अपने आप **से नहीं आया** था, अर्थात्, वह अपने अधिकार से अपनी इच्छा पूरी करने को नहीं आया। बल्कि उसे संसार में एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने भेजा है, और वे इस परमेश्वर को **नहीं जानते**।

7:29 परन्तु प्रभु उसे जानता था। वह परमेश्वर के साथ आदि से निवास कर रहा था और वह सब बातों में परमेश्वर के तुल्य था। क्योंकि जब प्रभु ने कहा कि वह परमेश्वर **की ओर से** आया है, तो उसके कहने का अर्थ सिर्फ यह नहीं था कि वह परमेश्वर के द्वारा **भेजा** गया है, परन्तु यह कि वह हमेशा से ही परमेश्वर के साथ रहता है और हर तरह से वह परमेश्वर के तुल्य है। **''उसी ने मुझे भेजा है,''** कहते हुए प्रभु ने स्पष्टतम ढंग से यह कह दिया कि वह परमेश्वर का मसीह है, वह वही अभिषिक्त जन है जिसे परमेश्वर ने छुटकारे के कार्य को पूर्ण करने के लिए जगत में भेजा है।

7:30 यहूदी लोग प्रभु यीशु के वचनों के महत्व को समझ गए और वे जान गए कि वह मसीह होने का दावा कर रहा है। उन्होंने इसे घोर ईशनिन्दा माना, और उसे बन्दी बनाने का प्रयास किया, परन्तु उन्होंने **उस पर हाथ न डाला क्योंकि उसका समय अब तक न आया**

था। परमेश्वर की सामर्थ ने प्रभु यीशु को मनुष्यों की दुष्टतापूर्ण युक्तियों से बचा कर उस समय तक सुरक्षित रखा था जब तक वह समय न आ जाएगा कि उसे पापों के बलिदान के रूप में चढ़ाया जाए।

7:31 वास्तव में **भीड़ में से बहुतेरों ने** प्रभु यीशु पर **विश्वास किया**। हम ऐसा मानते हैं कि उनका विश्वास सच्चा रहा होगा। उनका तर्क यह था कि प्रभु यीशु यह प्रमाणित करने के लिए और क्या कर सकता है कि वह मसीह है? यदि प्रभु यीशु, मसीह नहीं था, तो फिर प्रभु यीशु ने जितने आश्चर्यकर्म किए हैं उससे **अधिक** या अधिक अद्भुत **आश्चर्यकर्म** क्या (और कोई दूसरा) **मसीहा** कर पाएगा जब वह आएगा? स्पष्ट है कि अपने प्रश्न से वे यह विश्वास करते थे कि प्रभु यीशु के आश्चर्यकर्मों से यह सिद्ध हो जाता है कि वह सचमुच में मसीह है।

स. फरीसियों की शत्रुता (7:32–36)

7:32 जब फरीसी लोग लोगों के आसपास से होकर गुजरते थे, तब उन्होंने लोगों के बीच हो रही बातचीत को **सुना**। लोग उद्धारकर्ता के विषय में **बातें चुपके चुपके** करते थे, वे उसकी शिकायत नहीं करते थे, परन्तु गुप्त रूप से वे उसकी सराहना कर रहे थे। फरीसियों को डर लगने लगा कि ये बातचीत बढ़ कर प्रभु यीशु को स्वीकार करने के लिए एक बड़े आन्दोलन का रूप ले सकती है, और इसलिए उन्होंने उसे बन्दी बनाने के लिए **सिपाही भेजे**।

7:33 पद 33 के वचन नि:सन्देह उन सिपाहियों को कहे गए हैं, जो प्रभु यीशु को बन्दी बनाने के लिए आए थे, साथ ही यह बात फरीसियों और सामान्य लोगों को भी कही गई है।

प्रभु यीशु ने अपने पिछले किसी भी दावे को कमजोर पड़ने नहीं दिया। बल्कि उसने उन्हें और दृढ़ किया। उसने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि वह उनके साथ **थोड़ी देर तक** और रहेगा, और उसके बाद वह पिता परमेश्वर के पास वापस चला जाएगा जिस ने उसे भेजा था। इससे फरीसी लोग और अधिक क्रोधित हो गए।

7:34 आने वाले दिनों में, फरीसी लोग उसे ढूंढ़ेंगे परन्तु **नहीं** पा सकेंगे। उनके जीवन में एक समय ऐसा आएगा जब वे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को महसूस करेंगे, परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। तब तक वह स्वर्ग जा चुका होगा, और उनके अविश्वास और दुष्टता के कारण, वे उससे फिर नहीं मिल पाएंगे। इस पद के वचन विशेष महत्व रखते हैं। वे हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि एक समय आता है जब अवसर चला जाता है। आज मनुष्यों के पास उद्धार पाने का अवसर है, यदि वे इसका तिरिस्कार कर देंगे, तो शायद उन्हें दोबारा अवसर न मिले।

7:35 **यहूदियों** को प्रभु के वचनों का अर्थ समझ में नहीं आया। वे यह नहीं समझ सके कि वह स्वर्ग वापस जा रहा है। उन्होंने समझा कि शायद वह एक प्रचार यात्रा पर जा रहा है, ताकि **यूनानियों** के बीच में तितर बितर यहूदियों के मध्य सेवकाई करे, और शायद यूनानियों को भी शिक्षा दे।

7:36 एक बार फिर से उन्होंने उसके वचनों पर अचम्भा किया। वह **क्या** कहना चाहता था जब **उसने** कहा कि वे उसे ढूंढ़ेंगे पर **न** पाएंगे? वह कौन से ऐसे स्थान को जा रहा है जहाँ वे उसके पीछे नहीं जा पाएंगे। यहाँ पर यहूदी लोग अविश्वास के अन्धेपन को दर्शा रहे हैं। प्रभु को ग्रहण करने से इंकार करने वाले हृदय से अंधकारमय हृदय और कोई दूसरा नहीं हो सकता। आज के समय में एक कहावत प्रचलित है, "जो आँख होने पर भी नहीं देखना चाहते उससे बड़ा अन्धा और कोई नहीं हो सकता।" यहाँ पर भी बिल्कुल ऐसी ही स्थिति थी। वे प्रभु यीशु को ग्रहण नहीं करना *चाहते* इसलिए वे देख भी नहीं *सकेंगे*।

द. पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा (7:37–39)

7:37 यद्यपि पुराना नियम में यह उल्लेख नहीं पाया जाता, परन्तु यहूदियों का एक संस्कार था जिसमें वे तम्बुओं के पर्ब्ब के पहले सात दिन प्रतिदिन शीलोह के कुण्ड से पानी लेकर होमबलि की वेदी के पास के चाँदी के पात्र में पानी उण्डेला करते थे। आठवें दिन ऐसा नहीं किया जाता था, जिसने मसीह के अनन्त जीवन देने वाले जल को और अधिक सनसनीखेज बना दिया। यहूदी लोगों ने इस धार्मिक संस्कार का पालन तो किया, तौभी उनके हृदय तृप्त नहीं हुए क्योंकि उन्हें पर्ब्ब के गहरे अर्थ की सही समझ नहीं थी। लोगों के घर लौटने से ठीक पहले,

पर्ब्ब के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, प्रभु यीशु खड़ा हुआ और उनसे **पुकार के** कुछ **कहा**। उसने उन्हें आमंत्रित किया कि वे आत्मिक सन्तुष्टि पाने के लिए उसके पास आएं। प्रभु के वचनों की ओर विशेष रूप से ध्यान दें। उसका आमंत्रण हर किसी के लिए है। उसका सुसमाचार विश्वव्यापी सुसमाचार था। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो प्रभु के पास आए और उद्धार न पाए।

परन्तु शर्त की ओर ध्यान दें। पवित्रशास्त्र कहता है, "**यदि कोई पियासा हो**।" यहाँ पर "प्यास" आत्मिक आवश्यकता को कहा गया है। जब तक किसी व्यक्ति को यह बोध नहीं होता कि वह एक पापी है, तब तक वह उद्धार पाना नहीं चाहेगा। जब तक उसे इस बात का बोध न हो कि वह खोया हुआ है, वह ढूंढ़े जाने की इच्छा कभी नहीं करेगा। जब तक एक व्यक्ति को अपने जीवन में उस बड़ी आत्मिक कमी की चेतना न हो, तब तक वह प्रभु के पास उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नहीं जाएगा। उद्धारकर्ता ने प्यासी आत्माओं को अपने पास बुलाया है – कलीसिया के पास नहीं, किसी प्रचारक के पास नहीं, बपतिस्मा के पानी के पास नहीं, प्रभु भोज की मेज के पास नहीं। प्रभु यीशु ने कहा है, "**मेरे पास आकर पीए**।" इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। "**मेरे पास आकर पीए**।" यहाँ पर "**पीए**" का अर्थ है, प्रभु यीशु को अपनाना। इसका अर्थ है, उस पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास लाना। इसका अर्थ है, उसे हमारे जीवन में उसी तरह से लेना जिस तरह से हम अपने शरीर में एक ग्लास पानी लेते हैं।

7:38 पद 38 यह सिद्ध करता है कि मसीह के पास आना और पीना तथा उस पर *विश्वास* करना एक ही बात है। जितने उस पर विश्वास करते हैं, उन सब की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाएगी और वे आत्मिक आशीषों की **नदियां** पाएंगे जो उनमें से निकल कर दूसरे तक **बह** चलेगी। सम्पूर्ण पुराना नियम में यह शिक्षा दी गई है कि जो मसीह को ग्रहण करेंगे वे स्वयं आशीष पाएंगे और दूसरों के लिए आशीष का माध्यम बनेंगे (उदा. यशा. 55:1)। "**उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी** – इसका अर्थ है कि एक व्यक्ति के भीतर से या भीतरी जीवन से दूसरों के लिए आशीष की धारा बह निकलेगी। मसीही लेखक जॉन स्टॉट एक बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कहते हैं कि हम किसी भी पेय को घूंट घूंट ले कर पीते हैं, परन्तु ये कई गुणा बढ़ कर बहती हुई धाराओं का एक महासंगम बन जाते हैं। टेन्पल चिताते हुए कहते हैं: "कोई भी व्यक्ति जिसके भीतर पवित्र आत्मा निवास करता है, उस आत्मा को अपने भीतर सीमित करके नहीं रख सकता। जहाँ पवित्र आत्मा है, वहाँ पवित्र आत्मा आगे बहता जाता है; जहाँ बहाव नहीं है, वहाँ पवित्र आत्मा नहीं है।"

7:39 यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "जीवन का जल" पवित्र **आत्मा** की ओर संकेत करता है। पद 39 बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें यह शिक्षा पाई जाती है कि जो प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं वे परमेश्वर के आत्मा को भी ग्रहण करते हैं। दूसरे शब्दों में, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं, यह सत्य नहीं है कि पवित्र आत्मा उनके मनफिराव के कुछ समय बाद उनमें निवास करने के लिए आता है। यह पद स्पष्ट रूप से और विशेष रूप से यह बताता है कि जो भी मसीह पर विश्वास लाता है वह आत्मा को ग्रहण करता है। जिस समय प्रभु यीशु ये बातें कह रहा था, उस समय तक पवित्र **आत्मा . . .न उतरा** था। प्रभु **यीशु** के वापस स्वर्ग जाने और **महिमा** को पहुँचने के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उतरा। उस दिन से, प्रभु यीशु के हर एक सच्चे विश्वासी के भीतर पवित्र आत्मा निवास करता है।

इ. प्रभु यीशु के विषय में मतभेद (7:40–53)

7:40, 41 सुनने वालों में से बहुत से लोगों ने मान लिया कि प्रभु यीशु ही वह **भविष्यद्वक्ता** है जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18:15, 18 में बताया है। **औरों** ने तो यह भी विश्वास कर लिया कि प्रभु यीशु ही **मसीह** है। परन्तु कुछ लोगों का मानना था कि ऐसा सम्भव नहीं है। वे मानते थे कि प्रभु यीशु नासरत से गलील में आया है, और पुराना नियम में ऐसी कोई भविष्यद्वाणी नहीं है कि **मसीह गलील से आएगा**।

7:42 इन यहूदियों का मानना सही था कि **मसीह दाऊद के वंश** का होगा और **बैतलहम से आएगा**। यदि उन्होंने ज़रा सा भी प्रयत्न किया होता, तो उन्हें यह पता चल जाता कि प्रभु यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ *था,* और मरियम के पुत्र के रूप में वह सीधे सीधे दाऊद के वंश का था।

7:43 इन मतभेदों के कारण और उनके इस सामान्य अज्ञानता के कारण, मसीह के **कारण लोगों में फूट पड़ी**। आज भी ऐसा ही होता है। लोग मसीह को लेकर बंटे हुए हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह हमारे समान ही सिर्फ एक मनुष्य था। कुछ लोग यह मान लेते हैं कि वह अब तक का सबसे महान व्यक्ति था। परन्तु जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं वे जानते हैं कि ''मसीह . . . सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है'' (रोमि. 9:5)।

7:44 प्रभु यीशु को बन्दी बनाने का प्रयास अब भी चल रहा था, परन्तु कोई भी उसे पकड़ पाने में सफल नहीं हो पा रहा था। जब तक एक व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलता है, संसार की कोई भी शक्ति उसे डिगा नहीं सकती। ''जब तक हमारा काम पूरा न होगा तब तक हम अमर रहेंगे।'' प्रभु का समय अब तक नहीं आया था, इसलिए लोग किसी भी तरह से उसे हानि पहुँचाने में असमर्थ थे।

7:45 अब **फरीसियों** और **महायाजकों** ने प्रभु यीशु को पकड़ने के लिए **सिपाही** भेजे। **सिपाही** वापस लौट आए परन्तु प्रभु यीशु उनके साथ नहीं था। महायाजक और फरीसी खीज उठे और उन्होंने सिपाहियों से पूछा कि वे **उसे क्यों नहीं लाए**।

7:46 यहाँ एक ऐसा उदाहरण पाया जाता है जिसमें पापी मनुष्य उद्धारकर्ता के विषय में अच्छी बात बोलने को बाध्य हो गए, यद्यपि उन्होंने स्वयं उसे ग्रहण नहीं किया। उनके शब्दों को भूला नहीं जा सकता है, ''**किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की**!'' नि:सन्देह इन सिपाहियों ने अपने दिनों में अनेक महान लोगों की बातें सुनी होंगी, परन्तु उन्होंने किसी को भी इतने अधिकार, मनोहरता, और ज्ञान के साथ बोलते नहीं सुना था।

7:47, 48 सिपाहियों को डपटने के प्रयास में, **फरीसियों** ने उन पर दोष लगाया कि वे भी प्रभु यीशु के द्वारा **भरमाए** गए हैं। उन्होंने उसे स्मरण दिलाया कि यहूदी जाति के **सरदारों** में से एक ने भी **उस पर विश्वास** नहीं **किया**। यह क्या ही भयानक तर्क था! यह उनके लिए एक शर्म की बात थी कि यहूदी जाति के अगुवे होकर भी वे मसीह के आगमन पर उसे पहचानने में असफल रहे।

ये फरीसी न सिर्फ स्वयं प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे, बल्कि यह स्पष्ट है कि वे यह भी नहीं चाहते थे कि दूसरे उस पर विश्वास करें। ऐसा ही आज भी होता है। अनेक लोग जो उद्धार नहीं पाना चाहते, अपनी ओर से हर सम्भव प्रयास करते हैं कि उनके मित्र और रिश्तेदार भी उद्धार न पाएं।

7:49 यहाँ पर फरीसियों ने यहूदी लोगों को अज्ञानी और **स्रापित** कहा। उनका तर्क यह था कि यदि सामान्य व्यक्ति पवित्रशास्त्र के बारे में ज़रा सा भी जानता हो, तो वह यह जान लेगा कि यीशु, मसीहा नहीं है। फरीसी लोगों से इससे बड़ी गलती और कुछ नहीं हो सकती!

7:50 इस समय **नीकुदेमुस ने उनसे** बातें की। यह वही नीकुदेमुस था जो **पहले** एक रात **उसके पास आया था** और प्रभु यीशु से यह शिक्षा पाई थी कि उसे नया जन्म लेना आवश्यक है। ऐसा लगता है कि नीकुदेमुस ने सचमुच में प्रभु यीशु पर विश्वास कर लिया था और उद्धार पा लिया था। यहाँ वह आगे आकर, यहूदियों के सरदारों के मध्य, अपने प्रभु के लिए कुछ कहना चाहता है।

7:51 नीकुदेमुस ने यह ध्यान दिलाया कि यहूदियों ने प्रभु यीशु को पर्याप्त मौका नहीं दिया है। यहूदी **व्यवस्था किसी व्यक्ति** का पक्ष सुनने से पहले उसको **दोषी** नहीं ठहराती है। तौभी इस समय यहूदी अगुवे ऐसा ही कर रहे हैं। क्या वे सच्चाई से डर रहे हैं? इसका उत्तर स्पष्ट था कि वे सच्चाई से डर रहे थे।

7:52 अब यहूदियों के अगुवे अपने ही दल के एक व्यक्ति पर, अर्थात्, नीकुदेमुस पर, भड़क गए। उन्होंने ताना मारते हुए उससे पूछा कि क्या वह भी प्रभु यीशु के **गलील** के अनुयायियों में से एक है? क्या वह नहीं जानता कि पुराना नियम में कहीं नहीं लिखा है कि **गलील** से **कोई भविष्यद्वक्ता** आएगा? अवश्य ही, यहाँ पर अगुवों ने अपनी अज्ञानता दर्शायी। क्या उन्होंने योना नबी के बारे में नहीं पढ़ा था? वह गलील से था।

7:53 तम्बुओं का पर्ब्ब अब समाप्त हो चुका था। लोग अपने अपने घरों को लौट चुके थे। कुछ लोग प्रभु यीशु से प्रत्यक्ष रूप से मिले और उन्होंने उस पर विश्वास किया। परन्तु अधिकांश लोगों ने उसे ठुकरा दिया, अब यहूदियों के अगुवे उसे समाप्त करने के लिए इतने प्रतिबद्ध हो गए जितना कि पहले कभी नहीं थे। वे उसे उनके धर्म और जीने के तरीके के लिए एक खतरा मानते थे।

फ.व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (8:1–11)

8:1 यह पद अध्याय 7 के अन्तिम पद से बहुत नज़दीकी से जुड़ा हुआ है। इन दोनों के बीच के सम्बन्ध को, दोनों पदों को इस तरह से पढ़ने के द्वारा अच्छे से समझा जा सकता है, ''तब सब कोई अपने अपने घर को गए, **परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।**'' प्रभु यीशु ने बिल्कुल सच कहा था कि ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने को भी जगह नहीं।''

8:2 जैतून पहाड़ मन्दिर से बहुत अधिक दूर नहीं था। **भोर को** प्रभु यीशु ने पहाड़ के किनारे से होकर, किद्रोन घाटी को पार किया, और फिर वापस नगर को गया, जहाँ **मन्दिर** स्थित था। **सब लोग उसके पास आए और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।**

8:3 **शास्त्री** (पुरुषों का एक समूह जो पवित्रशास्त्र की प्रतियां बनाते थे और पवित्रशास्त्र की शिक्षा देते थे) और **फरीसी** प्रभु यीशु के मुँह से कोई ऐसी गलत बात निकालवाने के लिए उतावले थे ताकि वे उस आधार पर उस पर दोष लगा सकें। उसी समय वे **एक स्त्री को** लेकर आए जो **व्यभिचार** में पकड़ी गई थी, और उन्होंने उसे भीड़ के बीच में, शायद प्रभु यीशु की ओर उसका मुँह करके, खड़ा कर दिया।

8:4 इस **स्त्री** के विरुद्ध व्यभिचार का दोष लगाया गया था, और नि:सन्देह यह सत्य था। इस बात पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं है कि वह यह घोर पाप करते समय ही पकड़ ली गई थी। परन्तु वह पुरुष कहाँ था जिसके साथ वह पकड़ी गई थी? अनेक बार ऐसा होता है कि स्त्री और पुरुष दोनों के दोषी होने के बाद भी सिर्फ स्त्री को दण्ड दिया जाता है जबकि पुरुष बच जाता है।

8:5 शास्त्रियों और फरीसियों की चाल अब स्पष्ट हो चुकी थी। वे चाहते थे कि प्रभु यीशु **मूसा की व्यवस्था** के विरोध में कुछ बोले। यदि वे इसमें सफल हो जाते, तो वे सामान्य लोगों को प्रभु यीशु के विरोध में कर सकते थे। उन्होंने प्रभु को स्मरण दिलाया कि **व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है** कि व्यभिचार में पकड़े गए एक व्यक्ति को **पत्थरवाह** कर मार डाला जाए। अपनी दुष्टतापूर्ण षड़्यंत्र के तहत, फरीसी आशा कर रहे थे कि प्रभु यीशु इससे असहमत होगा, और इसलिए उन्होंने उससे पूछा कि वह इस विषय पर क्या कहना चाहता है। उनका विचार था कि न्याय और मूसा की व्यवस्था की यह मांग थी कि उस स्त्री को पत्थरवाह करने के द्वारा एक नमूना प्रस्तुत किया जाए। जैसा कि जे. एन. डार्बी कहते हैं:

> यदि किसी व्यक्ति को उससे भी बुरा व्यक्ति मिल जाता है तो इससे उसके विकृत हृदय को शान्ति और चैन मिलता है: वह सोचता है कि दूसरे व्यक्ति का बड़ा पाप उसके अपने पापों के लिए एक बहाना है; और दूसरों पर आरोप लगाते हुए और बुरी तरह से दोष लगाते हुए, वह स्वयं की बुराई को भूल जाता है। इस तरह से वह अपनी दुष्टता में मगन रहता है।[28]

8:6 प्रभु यीशु के विरुद्ध उसके पास कोई वास्तविक आरोप नहीं था और वे एक आरोप उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे थे। वे जानते थे कि यदि वह इस स्त्री को ऐसे ही छोड़ देता है, तो यह मूसा की व्यवस्था का विरोध होगा, और वे **उस पर** अन्यायी होने का **दोष लगाते**। यदि दूसरी ओर वह स्त्री को मृत्यु दण्ड के लिए दोषी ठहराता था, तो वे इसे ऐसा प्रस्तुत करते कि वह रोमी शासन का शत्रु है, और वे यह भी कह सकते थे कि वह दयालु नहीं है। **यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।** हम किसी भी तरह से यह नहीं जान सकते कि उसने क्या लिखा होगा। अनेक लोग दृढ़ता से कहते हैं कि वे जानते हैं कि प्रभु यीशु ने क्या लिखा, परन्तु सीधी सी बात यह है कि बाइबल हमें यह नहीं बताती कि उसने क्या लिखा।

8:7 यहूदी इतने से सन्तुष्ट नहीं थे, वे उस पर जोर डालने लगे कि वह कुछ उत्तर दे। इसलिए प्रभु यीशु ने सीधे सीधे कह दिया कि व्यवस्था के अनुसार उसे दण्ड दिया जाए, परन्तु इस स्त्री को सिर्फ वही व्यक्ति दण्ड दे जिसने कभी पाप न किया हो। इस तरह से प्रभु यीशु ने मूसा की व्यवस्था का समर्थन किया। उसने यह नहीं कहा कि स्त्री को व्यवस्था में बताए गए दण्ड से मुक्त कर दिया जाए। परन्तु उसने यह अवश्य किया कि उसने प्रत्येक पर पाप करने का दोष लगाया। जो दूसरों का न्याय करना चाहते हैं उन्हें स्वयं पवित्र होना आवश्यक है। यह पद अक्सर पाप के दोष से बचने के लिए एक बहाने के रूप में उपयोग किया जाता है। लोग समझते हैं कि उन पर कोई दोष इसलिए नहीं लगाया जा सकता क्योंकि शेष सब ने

भी पाप किया है। परन्तु यह पद पाप के दोष से बचने के लिए एक बहाना नहीं है। बल्कि, यह उन्हें दोषी ठहराता है जिन्होंने अपराध किया है भले ही वे पकड़े न गए हों।

8:8 एक बार **फिर** से उद्धारकर्ता **झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा**। सिर्फ इसी स्थल में प्रभु यीशु द्वारा लिखे जाने का उल्लेख पाया जाता है, और उसने जो भी लिखा था वह बहुत पहले ही भूमि पर से मिटा दिया गया है।

8:9 जितने लोगों ने उस स्त्री पर आरोप लगाया था, उन सब के विवेक ने उन्हें दोषी ठहराया। उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं था। वे **एक एक करके** वहाँ से जाने लगे। **बड़ों** से लेकर छोटे तक सभी दोषी थे। प्रभु **यीशु अकेला रह गया**, और उसके पास ही वह **स्त्री . . .खड़ी** थी।

8:10 अद्‌भुत मनोहरता के साथ, प्रभु यीशु ने उस स्त्री को बताया कि उस पर दोष लगाने वाले सब लोग जा चुके हैं। वे आसपास कहीं दिखाई तक नहीं दे रहे हैं। पूरी भीड़ में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं निकला जो उस पर दोष लगाने का साहस कर सके।

8:11 यहाँ पर '**प्रभु**' शब्द का अर्थ शायद ''महाशय'' होगा। जब उस स्त्री ने कहा, ''**हे प्रभु, किसी ने नहीं,**'' तो प्रभु ने अपने अद्‌भुत वचन कहे, ''**मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता, जा, और फिर पाप मत करना**।'' इस प्रकार के दीवानी मामलों में प्रभु अपने अधिकार का दावा नहीं करता। यह अधिकार रोमी सरकार के पास था, और उसने उसे उसी पर छोड़ दिया था। उसने न ही उसे दण्ड दिया और न उसे क्षमा दान दिया। उस समय यह उसका कार्य नहीं था। परन्तु उसने उस स्त्री को अवश्य ही यह चेतावनी दी कि वह पाप करने से बची रहे।

यूहन्ना के पहले अध्याय में, हमने यह देखा था कि ''अनुग्रह, और सच्चाई प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।'' यह घटना इसी का एक उदाहरण है। प्रभु के इन शब्दों में कि ''**मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता,**'' हमें अनुग्रह का एक उदाहरण मिलता है; और ''**जा, और फिर पाप मत करना**'' सच्चाई के वचन हैं। प्रभु यीशु ने यह नहीं कहा, ''जा, जहाँ तक सम्भव हो, कम पाप करना।'' प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है, और वह पूर्ण सिद्धता का मापदण्ड स्थापित करता है। वह किसी भी हद तक पाप को सही नहीं ठहरा सकता। और इसलिए उसने उस स्त्री के सामने परमेश्वर के मापदण्ड को स्वयं ही निर्धारित किया।[29]

ग. प्रभु यीशु ही जगत की ज्योति है (8:12–20)

8:12 दृश्य अब मन्दिर के भण्डार की ओर केन्द्रित हो जाता है (पद 20 देखें)। एक भीड़ अब भी उसके पीछे पीछे चल रही थी। उसने उनकी ओर देखा और अपने मसीहत्व के विषय में दिए गए सबसे महान वक्तव्यों में से एक वक्तव्य को कहा। उसने कहा, ''**जगत की ज्योति मैं हूँ**।'' यह सामान्य बात है कि, **जगत** पाप, अज्ञानता, और उद्‌देश्यहीनता के अंधकार में पड़ा है। प्रभु यीशु **जगत की ज्योति** है। उसे छोड़ कर, पाप के अंधकार से कोई छुटकारा नहीं दे सकता। उसे छोड़, जीवन के मार्ग में कोई मार्गदर्शन नहीं दे सकता, जीवन के सच्चे अर्थ और अनन्त काल के विषयों पर कोई जानकारी नहीं दे सकता। प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि जो कोई उसके पीछे चलेगा वह **अन्धकार में न चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा**।

प्रभु यीशु के पीछे चलने का अर्थ होगा उस पर विश्वास करना। अनेक लोगों को यह गलतफहमी है कि वे बिना नया जन्म लिए ही प्रभु यीशु के समान जी सकते हैं। प्रभु यीशु के पीछे चलने का अर्थ है मन फिरा कर उसके पास आना, उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर उस पर भरोसा करना, अपना सारा जीवन उसे समर्पित कर देना। जो ऐसा करते हैं उन्हें जीवन में मार्गदर्शन मिलता है और कब्र के पार स्पष्ट और चमकीली आशा प्राप्त होती है।

8:13 अब **फरीसियों** ने प्रभु यीशु को एक कानूनी बिन्दु पर चुनौती दी। उन्होंने उसे स्मरण दिलाया कि वह अपने विषय में गवाही दे रहा था। एक व्यक्ति द्वारा अपने ही विषय में गवाही देना पर्याप्त नहीं माना जाता था क्योंकि औसत मनुष्य पर पूर्वाग्रह हावी रहता है। फरीसियों को प्रभु यीशु की बातों पर सन्देह करने में कोई हिचक नहीं हुई। बल्कि, उन्होंने सन्देह किया कि उसकी बातें बिल्कुल भी **ठीक** नहीं हैं।

8:14 प्रभु यीशु ने यह मान लिया कि सामान्यत:

कम से कम दो या तीन गवाहों की गवाही आवश्यक होती है। परन्तु उसके मामले में, उसकी **गवाही** पूर्णत: **ठीक** थी क्योंकि वह परमेश्वर है। वह जानता था कि वह स्वर्ग से आया है और वापस स्वर्ग को जाएगा। परन्तु वे यह **नहीं जानते** थे कि वह **कहां से आता** है और **कहां को जाता** है। वे जानते थे कि वह दूसरों के समान ही एक साधारण मनुष्य है और वे यह विश्वास नहीं करते थे कि वह अनन्त पुत्र है, जो पिता के तुल्य है।

8:15 फरीसी लोग दूसरों का न्याय मुँह देखकर या मानवीय मापदण्डों के आधार पर करते थे। वे प्रभु यीशु को नासरत के एक बढ़ई के रूप में देखते थे और उनका यही मानना था कि वह दूसरों के समान एक साधारण मनुष्य है। प्रभु यीशु ने कहा कि वह **किसी का** न्याय **नहीं** करता। इसका अर्थ यह है कि वह मनुष्य का न्याय सांसारिक मापदण्डों के अनुसार नहीं करता, जैसा कि फरीसी किया करते हैं। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि संसार में आने का उसका उद्देश्य लोगों का *न्याय* करना नहीं, परन्तु उनका *उद्धार* करना था।

8:16 **यदि** प्रभु यीशु को **न्याय** करना हो, तो उसका **न्याय** धार्मिकता और सच्चाई का न्याय होगा। वह परमेश्वर है और वह सब कुछ **पिता** के साथ साझेदार हो कर करता है **जिसने** उसे **भेजा** है। बार बार, प्रभु यीशु ने **पिता** परमेश्वर के साथ अपनी एकता पर जोर दिया है! इसी कारण से उनके हृदय में उसके प्रति कड़वाहट और विरोध बढ़ता जा रहा था।

8:17, 18 प्रभु ने यह स्वीकार किया कि मूसा की **व्यवस्था** के अनुसार **दो जनों की गवाही** आवश्यक है। उसने कोई भी ऐसी बात नहीं की जो इस सच्चाई का इंकार करती हो।

यदि वे दो गवाहों की गवाही पर इतना जोर दे रहे हैं, तो उसके लिए दो गवाह प्रस्तुत करना बहुत कठिन नहीं है। सबसे पहले, वह अपने स्वयं के निष्पाप जीवन और उसके मुँह से निकले वचनों के द्वारा स्वयं **गवाही** देता है। दूसरी बात, **पिता** ने सार्वजनिक रूप से आकाशवाणी करने के द्वारा और आश्चर्यकर्मों के द्वारा उसकी **गवाही** दी है। प्रभु यीशु ने मसीह के विषय में पुराना नियम की भविष्यद्वाणियों को पूरा किया, तौभी इस ठोस प्रमाण के बाद भी यहूदी लोग विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे।

8:19 नि:सन्देह फरीसियों द्वारा पूछा गया अगला प्रश्न एक ठट्ठा था। वे शायद भीड़ को देखते हुए यह प्रश्न करते हैं कि **"तेरा पिता कहाँ है?"** प्रभु **यीशु ने उत्तर दिया** कि वे **न** तो यह जान पाएं हैं कि वह कौन है और न ही वे यह जानते हैं कि उसका **पिता** कौन है। अवश्य ही, उन्होंने परमेश्वर के विषय में इस प्रकार की अज्ञानता से इंकार किया होगा। परन्तु यह सत्य था। यदि उन्होंने प्रभु यीशु को ग्रहण किया होता तो वे **पिता को भी जानते**। परन्तु पिता को प्रभु यीशु के द्वारा जानने के अलावा और किसी माध्यम से जाना नहीं जा सकता। इस प्रकार से, उद्धारकर्ता को अस्वीकार करने के कारण उनके लिए यह असम्भव हो गया कि वे ईमानदारी से यह दावा करें कि वे परमेश्वर को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं।

8:20 यहाँ पर हम देखते हैं कि पिछले पदों में जो कुछ हुआ वह **मन्दिर** के **भण्डार घर में** हुआ। एक बार फिर से प्रभु ईश्वरीय सुरक्षा से घिरा हुआ था, **और किसी ने भी उसे** बन्दी बनाने या मार डालने के लिए **न पकड़ा। उसका समय अब तक नहीं आया था। उसका समय** उस समय को कहा गया है जब वह जगत के पापों के लिए कलवरी के क्रूस पर चढ़ कर मर जाएगा।

ह. यहूदियों का प्रभु यीशु के साथ वादविवाद (8:21–59)

8:21 एक बार फिर से प्रभु **यीशु** ने भविष्य के विषय में अपने सिद्ध ज्ञान को प्रदर्शित किया। उसने अपने आलोचकों को बताया कि वह **जाता है** – वह न सिर्फ अपनी मृत्यु और गाड़े जाने के विषय में कह रहा था, परन्तु अपने पुनरूत्थान और स्वर्ग को वापस जाने के बारे में भी कह रहा था। यहूदी लोग मसीह को ढूंढ़ना जारी रखेंगे, और वे यह नही समझ पाएंगे कि वह उनके पास आया था और उन्होंने उसका तिरिस्कार कर दिया था। मसीह का तिरिस्कार कर दिए जाने के कारण वे अपने **पापों** में मरेंगे ("पापों" यूनानी और *एनकेजेवी* में एकवचन में है)। इसका अर्थ यह है कि वे हमेशा के लिए स्वर्ग में प्रवेश करने से वंचित हो जाएंगे, जहाँ प्रभु जा रहा था। यह एक महत्वपूर्ण सच्चाई है! जो प्रभु को ग्रहण करने से मना कर देंगे उनके लिए स्वर्ग की कोई आशा नहीं है। अपने पापों में, परमेश्वर के बिना, मसीह के बिना, और आशा के बिना मरना कितनी भयानक बात है!

8:22 यहूदियों को यह समझ में नहीं आया कि प्रभु स्वर्ग वापस जाने की बात कर रहा है। ''जाता हूँ'' का अर्थ क्या है? क्या उसके कहने का अर्थ यह था कि वह आत्महत्या करने के द्वारा उनके द्वारा मार डाले जाने के षड़यंत्र से बच निकलेगा? उनकी ऐसी सोच विचित्र थी। यदि वह **अपने आप को** मार डालने पर था, तो उसे ऐसा करने से रोकने का और मृत्यु में उसका अनुसरण करने का कोई अर्थ नहीं था। परन्तु यह अविश्वास के अंधकार का एक और उदाहरण था। यह आश्चर्य की बात है कि वे उद्धारकर्ता की बातों को लेकर इतने मन्दमति और अज्ञानी क्यों थे!

8:23 प्रभु द्वारा आत्महत्या किए जाने के उनके विचार को ध्यान में रखते हुए प्रभु ने उन्हें बताया कि वे **नीचे के** हैं। इसका अर्थ था कि उनका दृष्टिकोण बहुत नीचा है। वे समय और समझ की शाब्दिक बातों से ऊपर नहीं उठ पाते। उनके पास कोई आत्मिक समझ नहीं थी। इसके विपरीत, मसीह **ऊपर का** था। उसके विचार, वचन, और कार्य स्वर्गीय थे। वे जो कुछ करते थे उसमें इस **संसार** की गंध थी, जबकि उसका सारा जीवन यह दर्शाता था कि वह इस संसार की तुलना में अधिक शुद्ध देश से आया है।

8:24 प्रभु यीशु किसी भी बात पर जोर देने के लिए प्राय: उसे दोहराया करता था। यहाँ पर उसने उन्हें गम्भीरतापूर्वक चेतावनी दी कि वे अपने **पापों में** मरेंगे। यदि वे उस पर विश्वास करने से अपने इंकार में अटल रहेंगे, तो फिर उनके पास और कोई दूसरा रास्ता नहीं बचेगा। प्रभु यीशु के छोड़, पापों से क्षमा पाने का कोई उपाय नहीं है, और जो अपने **पापों** से क्षमा प्राप्त किए बिना मरते हैं उनका स्वर्ग में प्रवेश असम्भव है। मूल पाठ में इस पद में '**वही**' शब्द नहीं आया है, जबकि इसके संकेत की यहां पर संभावना है। यह पद शब्दश: कहता है, ''**यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं हूँ, तो अपने पापों में मरोगे**।'' हम इन शब्दों '***मैं हूँ***' में, प्रभु यीशु द्वारा ईश्वर होने का एक और दावा पाते हैं।

8:25 प्रभु यीशु की शिक्षाओं से यहूदी लोग पूरी तरह से उलझन में पड़ गए। उन्होंने उससे सीधे सीधे पूछा कि वह **कौन** है। शायद वे उस पर व्यंग्य कसते हुए कह रहे थे, ''तू अपने आप को क्या समझता है, हमसे इस तरीके से बात करने वाला तू कौन होता है?'' या शायद वे यह सुनने के लिए सचमुच में आतुर थे कि वह अपने विषय में क्या कहेगा। उसका उत्तर ध्यान देने योग्य है, ''**जो आरम्भ से तुम से कहता आया हूँ**।'' वह मसीह जिसके आने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। यहूदियों ने उसे ऐसा कहते अनेक बार सुना था, परन्तु उनका हठी हृदय इस सत्य के सामने झुकने से इंकार कर देता था। परन्तु उसके उत्तर का एक और अर्थ हो सकता था – प्रभु यीशु ठीक वही था जो वह प्रचार करता था। वह जो कहता था वही करता था। वह उन सारी बातों का एक सजीव देह था जिन बातों की वह शिक्षा देता था। उसका जीवन उसकी शिक्षाओं के अनुरूप था।

8:26 पद 26 का अर्थ हमें स्पष्ट नहीं है। ऐसा लगता है कि प्रभु यह कह रहा था कि वे इन अविश्वासी यहूदियों के बारे में और भी **बहुत कुछ** कह सकता है और **निर्णय** ले सकता है। वह उनके दुष्टतापूर्ण विचारों और उनके हृदय के अभिप्रायों की पोल खोल सकता है। किन्तु, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहते हुए उसने सिर्फ वे ही बातें कहीं जो पिता ने उसे बताई थी। और इसलिए कि पिता **सच्चा** है, वह विश्वास किए जाने और सुने जाने के योग्य है।

8:27 यहूदी इस समय **न समझे** कि वह उनसे परमेश्वर **पिता** के बारे में बात कर रहा है। ऐसा लगता है कि उस समय उनका दिमाग और अधिक धुंधला होता जा रहा था। पहले जब प्रभु यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था, तो वे समझ गए थे कि वह परमेश्वर के तुल्य होने का दावा कर रहा है। परन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।

8:28 एक बार फिर से प्रभु **यीशु** ने भविष्यद्वाणी की कि आगे क्या होने वाला है। सबसे पहले, यहूदी **मनुष्य के पुत्र को** ऊँचा उठाएंगे। यह बात क्रूस पर उसकी मृत्यु के बारे में कही गई थी। जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके होंगे, उसके बाद वे जानेंगे कि वह मसीह था। वे भुईंडोल और अंधियारे को देख कर यह बात जान पाएंगे, परन्तु, उनमें से अधिकांश, मृतकों में से उसके सदेह पुनरूत्थान के द्वारा ही यह जान पाएंगे। प्रभु के वचनों की ओर ध्यान दें, ''**तो जानोगे कि** *मैं हूँ।*'' यहाँ पर एक बार फिर से, '**वही**' शब्द यूनानी में नहीं आया है। इसका अधिक गहरा अर्थ यह है, ''**तो जानोगे कि मैं** परमेश्वर **हूँ**।'' तब वे यह समझ जाएंगे कि उसने अपने आप कुछ नहीं किया,

अर्थात्, अपने अधिकार से कुछ नहीं किया। बल्कि, वह इस संसार में पिता पर निर्भर रहते हुए आया, और सिर्फ वे ही बातें कहीं जो **पिता** ने कहने के लिए उसे **सिखाया** था।

8:29, 30 प्रभु यीशु का सम्बन्ध पिता के साथ बहुत घनिष्ठ और आत्मीय था। ये सारे वाक्य परमेश्वर के तुल्य होने के दावे थे। अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान पूरे समय, पिता उसके **साथ** था। प्रभु यीशु कभी भी **अकेला** नहीं था। वह हर समय वही काम करता रहा जिससे पिता प्रसन्न होता है। ऐसे वचन सिर्फ एक निष्पाप जीव के द्वारा ही कहे जा सकते हैं। मानवीय माता पिता से जन्मा कोई भी व्यक्ति सच्चाई से इन शब्दों को अपने मुँह से नहीं कह सकता, ''**मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिस से वह प्रसन्न होता है।**'' अक्सर हम वही काम करते हैं जो हमें प्रसन्न करते हैं। कभी हम अपने संगी मनुष्यों को प्रसन्न करने के लिए काम करते हैं। सिर्फ प्रभु यीशु मसीह ही पूरी तरह से उन कार्यों को करने के लिए समर्पित था जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

जब **वह ये बातें कह ही रहा था**, तब प्रभु यीशु ने पाया कि बहुत से लोग उस पर विश्वास करने का दावा करते हैं। नि:सन्देह उनमें से कुछ का विश्वास सच्चा था। अन्य सिर्फ मुँह से ही प्रभु की सेवा करने का दावा कर रहे थे।

8:31 तब प्रभु **यीशु** ने चेले और जो **सचमुच चेले** थे, दोनों के बीच में अन्तर किया। एक चेला वह होता है जो सीखनेवाला होने का दावा करता है, परन्तु **सचमुच में चेला** वह होता है जिसने निश्चय ही प्रभु को अपना जीवन समर्पित कर दिया है। जो सच्चे विश्वासी होते हैं उनका यह स्वभाव होता है – वे उसके **वचन में बने** रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे मसीह की शिक्षाओं में बने रहते हैं। वे उससे नहीं हटते हैं। सच्चे विश्वास में हमेशा स्थायित्व का गुण होता है। वे वचन में बने रहने के कारण उद्धार नहीं पाते, परन्तु वचन में इस कारण बने रहते हैं क्योंकि उन्होंने उद्धार पाया है।

8:32 हर एक चेले को यह प्रतिज्ञा दी गई है – **सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।** यहूदी लोग सत्य को नहीं जानते थे, और एक भयानक गुलामी में जकड़े हुए थे। वे अज्ञानता, त्रुटि, पाप, व्यवस्था, और अंधविश्वास के गुलाम थे। जो सचमुच में प्रभु यीशु को जानते हैं वे पाप से छुटकारा प्राप्त करते हैं, वे ज्योति में चलते हैं, और परमेश्वर के पवित्र आत्मा की अगुवाई प्राप्त करते हैं।

8:33 पास में खड़े यहूदियों में से कुछ लोगों ने स्वतंत्र किए जाने के विषय में प्रभु की बात सुनी। वे इस पर तुरन्त चिढ़ गए। उन्हें इब्राहीम की सन्तान होने का अहंकार था और उन्होंने कहा कि वे कभी भी **किसी के दास नहीं हुए**। परन्तु यह सत्य नहीं था। इस्राएल ने मिस्र, अश्शूर, बाबुल, फारस, यूनान की गुलामी झेली थी और अब रोमी शासक की गुलामी में थे। परन्तु उससे भी बड़ी बात, जब वे प्रभु यीशु मसीह से बात कर रहे थे तब वह पाप और शैतान की गुलामी में जकड़े हुए थे।

8:34 यह स्पष्ट है कि प्रभु **पाप** की गुलामी के विषय में कह रहा था। उसने सुननेवाले यहूदियों को स्मरण दिलाया कि **जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है**। यहूदी लोग बहुत धार्मिक होने का दिखावा करते थे, परन्तु सच्चाई यह थी कि वे बेईमान, अनादरकारी थे, और अब शीघ्र ही हत्यारे बनने वाले थे – उस समय भी वे परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु का षड़यंत्र रच रहे थे।

8:35 इसके बाद प्रभु यीशु ने **घर** में एक **दास** की हैसियत और एक **पुत्र** की हैसियत के बीच में तुलना की। **दास** के पास कोई आश्वासन नहीं रहता कि वह घर में हमेशा रहेगा जबकि **पुत्र** का वह अपना घर होता है। यहाँ पर ''पुत्र'' शब्द परमेश्वर के पुत्र के लिए प्रयोग में लाया गया है या फिर उन लोगों के लिए जो मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा परमेश्वर के पुत्र बनते हैं, यह स्पष्ट है कि प्रभु यीशु इन यहूदियों को बता रहा था कि वे पुत्र नहीं है, परन्तु दास हैं जिन्हें कभी भी बाहर किया जा सकता है।

8:36 इस बात पर कोई सन्देह नहीं है कि इस पद में **पुत्र** स्वयं मसीह को कहा गया है। जो उसके द्वारा स्वतंत्र किए गए हैं वे **सचमुच में स्वतंत्र** हैं। इसका अर्थ यह है कि जब एक व्यक्ति उद्धारकर्ता के पास आकर उससे अनन्त जीवन प्राप्त करता है, तो वह व्यक्ति पाप, व्यवस्थावाद, अंधविश्वास, और दुष्टात्मावाद के दासत्व से स्वतंत्र किया जाता है।

8:37 प्रभु ने स्वीकार किया कि, शारीरिक अर्थों में तो ये यहूदी **इब्राहीम के वंश** है (शब्दश: ''बीज'')। परन्तु यह स्पष्ट है कि वे इब्राहीम के आत्मिक *बीज* नहीं हैं। वे परमेश्वर के भक्त नहीं हैं, जिस प्रकार से इब्राहीम

था। उन्होंने प्रभु यीशु को **मार डालना** चाहा क्योंकि उसकी शिक्षा के लिए उनके जीवन में कोई **जगह नहीं** थी। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने मसीह के वचन को अपने जीवनों में कार्य करने नहीं दिया। उन्होंने उसके सिद्धान्तों का प्रतिरोध किया और उसके सामने झुकने से इंकार कर दिया।

8:38 प्रभु यीशु ने उन्हें वही सिखाया जिसे **पिता** ने उसे सिखाने के लिए कहा था। वह और उसका पिता दोनों पूरी तरह से इस कदर एक थे कि जो वचन उसके मुँह से निकलते थे वे पिता के वचन होते थे। प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर अपने पिता का सिद्ध प्रतिनिधि था। इसके विपरीत, यहूदी लोग वे कार्य करते थे जिन्हें उन्होंने *अपने* **पिता** से सीखा था। प्रभु यीशु उनके शारीरिक पिताओं के बारे में नहीं बात नहीं कर रहा था, परन्तु *शैतान* के विषय में कह रहा था।

8:39 एक बार फिर से यहूदियों ने **इब्राहीम** से अपने सम्बन्ध का दावा किया। उन्हें इस बात पर अंहकार था कि **इब्राहीम** उनका **पिता** था। किन्तु, प्रभु यीशु ने यह ध्यान दिलाया कि यद्यपि वे इब्राहीम के वंश (बीज) हैं (पद 37), वे उसकी **सन्तान** नहीं हैं। सामान्यत: सन्तान अपने माता पिता के समान दिखते, चलते, और बातचीत करते हैं। परन्तु यहूदी लोग ऐसा नहीं करते थे। उनका जीवन इब्राहीम के जीवन से उल्टा था। यद्यपि शारीरिक रीति से तो वे इब्राहीम की सन्तान थे, तौभी नैतिक रूप से शैतान की सन्तान थे।

8:40 इसके बाद प्रभु ने उनके और इब्राहीम के बीच के अन्तर का एक स्पष्ट उदाहरण दिया। प्रभु यीशु इस संसार में उनसे **सत्य** के सिवाय और कुछ बोलने नहीं आया था। वे उसकी शिक्षाओं से आहत हुए और उन्होंने ठोकर खाई, और इसलिए उन्होंने उसे **मार डालने** का प्रयास किया। **इब्राहीम ने** ऐसा **नहीं किया था**। उसने सत्य और धार्मिकता का पक्ष लिया था।

8:41 यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उनका पिता कौन है क्योंकि वे सिर्फ उसी के समान कार्य करते थे। वे अपने **पिता के समान काम** करते थे, अर्थात्, शैतान के समान। यहूदी लोग शायद प्रभु यीशु पर **व्यभिचार से** जन्मा होने का आरोप लगा रहे थे। परन्तु बाइबल के अनेक विद्वानों के अनुसार **व्यभिचार** शब्द मूर्तिपूजा के सन्दर्भ में प्रयोग में लाया गया है। यहूदी लोग कह रहे थे कि उन्होंने कभी भी आत्मिक व्यभिचार नहीं किया है। वे हमेशा ही **परमेश्वर** के प्रति सच्चे रहे थे। उन्होंने सिर्फ उसी को अपना **पिता** माना था।

8:42 प्रभु ने उनके दावे की असत्यता को उन्हें यह स्मरण दिलाते हुए प्रगट किया कि यदि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो उन्हें उससे भी **प्रेम** करना चाहिए जिसे परमेश्वर ने **भेजा** है। यदि कोई दावा करे कि वह परमेश्वर से प्रेम करता है और वह प्रभु यीशु से बैर रखे तो उसका दावा मूर्खतापूर्ण है। प्रभु यीशु ने कहा कि वह **परमेश्वर में से निकल कर आया है**। इसका अर्थ यह है कि वह आदि से ही परमेश्वर का पुत्र था। ऐसा कोई समय नहीं था जब उसने पिता से जन्म लिया हो, परन्तु पिता के साथ पुत्र के रूप में उसका सम्बन्ध आदि से ही था। उसने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि वह **परमेश्वर में से . . . आया** है। स्पष्ट है कि यहाँ पर वह अपने देहधारण से पूर्व के अस्तित्व के बारे में कह रहा था। वह अपने पिता के साथ स्वर्ग में इस पृथ्वी पर आने से बहुत पहले से ही विद्यमान था। परन्तु पिता ने उसे जगत के उद्धारकर्ता के रूप में इस संसार में भेजा, और इसलिए वह एक आज्ञाकारी पुत्र के रूप में यहाँ पर आया।

8:43 यहाँ पर पद 43 में **बात** और **वचन** के बीच में एक अन्तर है। मसीह का **वचन** उन बातों को कहा गया है जिसे उसने सिखाया। उसकी **बात** उन बातों को कहा गया है जिसके द्वारा उसने अपने सत्य को व्यक्त किया। वे उसकी **बात** तक **नहीं** समझ सके। जब उसने रोटी के विषय में बताया, तो उन्होंने इसे सिर्फ भौतिक रोटी समझा। जब उसने जल के विषय में बताया, तो वे उसे कभी भी आत्मिक जल के साथ जोड़ कर नहीं समझ सके। ऐसी क्या बात थी कि वे उसकी बात न समझ सके? इसका कारण यह है कि वे उसकी शिक्षाओं को सह सकने के लिए तैयार नहीं थे।

8:44 अब प्रभु यीशु खुलकर सामने आया और उसने उन्हें बताया कि **शैतान** उनका **पिता** है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे शैतान से उसी प्रकार से जन्में हैं जिस प्रकार से विश्वासी लोग परमेश्वर से जन्में हैं। बल्कि, इसका अर्थ यह था, जैसा कि सन्त अगस्टीन ने कहा है, कि वे अपने *कामों से* (उसके कामों का अनुसरण करने वाले) शैतान की सन्तान हैं। वे शैतान के साथ अपने सम्बन्ध को उसके समान जीवन जीने के द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

''**अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो**'' – यह वाक्यांश उनके हृदय के अभिप्राय या प्रवृत्ति को व्यक्त करता है।

शैतान तो **आरम्भ से हत्यारा था**। उसने आदम और सारी मानवजाति पर मृत्यु लाया। वह न सिर्फ **हत्यारा** था, परन्तु **झूठा** भी था। वह **सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता** है तो वह **अपने स्वभाव** के कारण झूठ बोलता है। झूठ उसके अस्तित्व का एक हिस्सा है। वह **झूठा है वरन झूठ का पिता है**। उन दिनों के यहूदी लोग इन दो बातों में शैतान का अनुसरण कर रहे थे। वे हत्यारे थे क्योंकि उनका अभिप्राय परमेश्वर के पुत्र की हत्या करना था। वे झूठे थे क्योंकि उन्होंने कहा कि परमेश्वर उनका पिता है। वे भक्ति और आत्मिकता का दिखावा करते थे, परन्तु उनका जीवन दुष्टतापूर्ण था।

8:45 जो लोग झूठ बोलने के आदी होते हैं वे, एक प्रकार से, सत्य को पहचान पाने की क्षमता खो देते हैं। यहाँ पर प्रभु यीशु इन व्यक्तियों के सामने खड़ा है, और उसने हमेशा ही **सच** बोला है। तौभी वे उस की **प्रतीति नहीं करते**। इससे यह प्रगट होता है उनका वास्तविक चरित्र दुष्ट है। लेन्सकी ने इसे इस तरह से व्यक्त किया है:

> जब भ्रष्ट हृदय का सामना सत्य से होता है, तब वह सिर्फ आपत्तियाँ ही खोजता है; जब उसका सामना इस सत्य से किसी भिन्न बात से होता है तो वह इस भिन्नता को देखता है और उसे स्वीकार करने के लिए कारण ढूंढ़ता है।[30]

8:46 सिर्फ मसीह, जो परमेश्वर का निष्पाप पुत्र है, इस प्रकार की बात कर सकता है। संसार में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उसे एक भी पाप का दोषी ठहरा सके। उसके चरित्र में कोई कमी नहीं थी। वह अपने सारे कार्यों में सिद्ध था। वह सिर्फ सत्य वचन बोलता था, और तौभी वे उसकी **प्रतीति . . . नहीं** करते थे।

8:47 यदि एक मनुष्य सचमुच में परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो वह **परमेश्वर की बातें** सुनेगा और उनका पालन करेगा। यहूदियों ने उद्धारकर्ता के वचनों को ठुकरा कर यह दर्शा दिया कि वे वास्तव में **परमेश्वर** के लोग नहीं हैं। पद 47 से यह स्पष्ट है कि प्रभु यीशु ने दावा किया कि वह स्वयं परमेश्वर के वचन को बोलता है। इस बात में कोई गलतफहमी नहीं हो सकती।

8:48 एक बार फिर से **यहूदियों** ने आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग किया, क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह के वचनों का उत्तर और किसी दूसरी तरह से नहीं दे सके। उसे एक **सामरी** कहने के द्वारा, उन्होंने जाने अनजाने में उसे निचले दर्जे का एक गैरजातीय व्यक्ति कह दिया। वे मानों कह रहे थे कि वह शुद्ध यहूदी नहीं है, परन्तु इस्राएल का शत्रु है। साथ ही उन्होंने यह भी दोष लगाया कि उसमें **दुष्टात्मा** है। ऐसा कहने के द्वारा नि:सन्देह उन्होंने कहा कि वह अपने आपे में (या उसके पास अपना दिमाग) नहीं है। उनके अनुसार, सिर्फ एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास दिमाग नहीं है, वही यीशु के समान दावा कर सकता है।

8:49 ध्यान दें कि प्रभु यीशु ने कितना संयमित होकर अपने शुत्रओं को **उत्तर दिया**। उसकी शिक्षाए किसी ऐसे व्यक्ति की शिक्षाएं नहीं थी जिसके भीतर **दुष्टात्मा** हो, परन्तु एक ऐसे व्यक्ति की, जो परमेश्वर **पिता** के **आदर** को प्राथमिकता देता है। और इसके लिए वे उसका अनादर कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि वह पागल है, परन्तु इसलिए कि वह पूरी तरह से अपने स्वर्गीय पिता के हित में कार्य करने के लिए समर्पित था।

8:50 उन्हें यह मालूम होना चाहिए था कि उसने कभी भी **अपनी प्रतिष्ठा** नहीं चाही। उसने जो कुछ किया वह उसने परमेश्वर की महिमा के लिए किया। यद्यपि उसने उन पर उसका अनादर करने का आरोप लगाया, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह **अपनी प्रतिष्ठा** की चिन्ता करता था। उसके बाद प्रभु ने कहा, ''**एक तो है जो चाहता है और न्याय करता है**।'' यह बात अवश्य ही परमेश्वर के लिए कही गई थी। परमेश्वर पुत्र अपने प्रिय पुत्र की महिमा चाहता है, और वह उन सभों को दण्ड देगा जो उसे यह महिमा देने में असफल रहते हैं।

8:51 एक बार फिर से हम प्रभु यीशु के मुँह से शानदार बातों को सुनते हैं जो सिर्फ एक ऐसे व्यक्ति के मुँह से ही निकल सकती थी जो परमेश्वर हो। उसने इन वचनों पर जोर देने के लिए ''**सच सच**'' जोड़ कर कहा, ''**मैं तुम से सच सच कहता हूँ**।'' प्रभु यीशु ने यह प्रतिज्ञा की कि **यदि कोई मेरे वचन** का पालन करता है, तो वह कभी **मृत्यु को न देखेगा**। उसने यह बात *शारीरिक* **मृत्यु** के लिए नहीं कही, क्योंकि हर दिन परमेश्वर के अनेक विश्वासियों की मृत्यु होती है। प्रभु

यहाँ पर *आत्मिक* **मृत्यु** के विषय में कह रहा है। प्रभु यह कह रहा था कि जो उस पर विश्वास करते हैं, वे अनन्त **मृत्यु** से छुड़ाए जाते हैं और उन्हें कभी भी नरक की पीड़ा नहीं भोगनी पड़ेगी।

8:52 अब **यहूदियों** को और भी विश्वास हो गया कि प्रभु यीशु ''पागल'' है। उन्होंने उसे स्मरण दिलाया कि **इब्राहीम** और **भविष्यद्वक्ता** सब **मर गए**। तौभी उसने कहा कि **यदि कोई** उसके **वचन** का पालन करेगा, **वह** कभी **मृत्यु का स्वाद न चखेगा**। इन दोनों बातों के बीच में किस प्रकार से तालमेल हो सकता है?

8:53 वे समझ गए कि प्रभु यीशु वास्तव में यह दावा कर रहा है कि वह उनके **पिता इब्राहीम** और **भविष्यद्वक्ता**(ओं) से **बड़ा** है। इब्राहीम ने कभी किसी को मृत्यु से छुटकारा नहीं दिया था और वह अपने आप को भी मृत्यु से छुटकारा नहीं दे सका। न ही कोई भी भविष्यद्वक्ता ऐसा कर सका। तौभी एक ऐसा व्यक्ति था जो यह दावा करता था कि वह अपने संगी मनुष्यों को मृत्यु से छुटकारा देने में सक्षम है। अवश्य है कि वह अपने आप को उनके बापदादों से बड़ा समझे।

8:54 यहूदियों ने सोचा कि प्रभु यीशु सब ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयास कर रहा है। प्रभु **यीशु** ने उसे स्मरण दिलाया कि यह सच नहीं है। **पिता** उसका आदर कर रहा है, वही **परमेश्वर** जिससे प्रेम करने और जिसकी सेवा करने का वे दावा करते हैं।

8:55 यहूदी लोग कहते थे कि परमेश्वर उनका पिता है, परन्तु वास्तव में वे उसे नहीं जानते थे। तौभी यहाँ वे एक ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे थे जो *अवश्य* ही परमेश्वर पिता को **जानता** था, और जो परमेश्वर के तुल्य था। वे चाहते थे कि प्रभु यीशु इस बात से इंकार करे कि वह पिता के तुल्य है, परन्तु उसने कहा, कि यदि वह ऐसा करता है, तो वह **झूठा** ठहरेगा। वह परमेश्वर पिता को जानता था और **उसके वचन** का पालन करता था।

8:56 चूंकि यहूदी लोग इब्राहीम को इस तर्क वितर्क में लाने पर जोर दे रहे थे, प्रभु ने उन्हें स्मरण दिलाया कि **इब्राहीम** भी मसीह के **दिन** की बाट जोहता था, और उसने वास्तव में विश्वास के द्वारा उस दिन को **देखा**। प्रभु यीशु यह कह रहा था कि *वह* वही है जिसकी इब्राहीम बाट जोहता था। इब्राहीम का विश्वास मसीह के आगमन पर टिका हुआ था।

इब्राहीम ने मसीह के दिन को कब देखा? शायद तब जब वह इसहाक को मोरिय्याह पर्वत पर परमेश्वर के सामने होमबलि चढ़ाने के लिए ले गया। मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान का दृश्य उस दिन पूरा पूरा अभिनीत किया गया था, और यह सम्भव है कि इब्राहीम ने इसे विश्वास से देख लिया। इस तरह से प्रभु ने पुराना नियम में मसीह के विषय में की गई सारी भविष्यद्वाणियों की पूर्णता का दावा किया।

8:57 एक बार फिर से **यहूदियों** ने ईश्वरीय सच्चाई को समझ पाने में अपनी असमर्थता प्रगट की। प्रभु यीशु ने कहा, ''इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा में बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया,'' परन्तु उन्होंने ऐसे उत्तर दिया मानों उसने यह कहा है कि उसने इब्राहीम को देखा है। दोनों बातों में बहुत बड़ा अन्तर है। प्रभु यीशु ने दावा किया कि वह इब्राहीम से पद में बड़ा है। वह इब्राहीम के विचारों और आशाओं का विषय था। इब्राहीम विश्वास से मसीह के दिन की बाट जोह रहा था।

यहूदी लोग इस बात को नहीं समझ पाए। वे सोचने लगे कि **अब तक** प्रभु यीशु **पचास वर्ष का** भी **नहीं** हुआ है। (वास्तव में वह सिर्फ उस समय तैंतीस वर्ष का था।) तो फिर उसने **इब्राहीम** को कैसे **देखा** होगा?

8:58 यहाँ पर प्रभु यीशु ने परमेश्वर होने का एक और स्पष्ट दावा किया। उसने यह नहीं कहा, ''**पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं** *था।*'' इसका अर्थ सिर्फ यह होता कि वह इब्राहीम से पहले अस्तित्व में आया। बल्कि, उसने परमेश्वर के नाम का उपयोग किया: ''**मैं हूँ।**'' प्रभु यीशु आदि से परमेश्वर पिता के साथ था। ऐसा कोई समय नहीं था जब वह अस्तित्व में आया हो, या कोई ऐसा समय नहीं था जब वह अस्तित्व में न रहा हो। इसलिए उसने कहा, ''**पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।**''

8:59 तुरन्त ही यहूदियों ने प्रभु यीशु को मार डालने का प्रयास किया, परन्तु प्रभु **यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया**। यहूदी लोग यह समझ गए कि प्रभु यीशु के कहने का क्या अर्थ था जब उसने कहा, ''पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।'' वह यह दावा कर रहा था कि वह यहोवा है! इसी कारण उन्होंने उसे पत्थरवाह करने का प्रयास किया, क्योंकि उनके लिए यह एक ईशनिन्दा थी। वे इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार

नहीं थे कि मसीह उनके मध्य में खड़ा है। वे नहीं चाहते थे कि वह उन पर राज्य करे!

ई. छठवां चिन्ह: जन्म से अन्धे व्यक्ति की चंगाई (9:1-12)

9:1 यह घटना उस समय की हो सकती है जब प्रभु **यीशु** मन्दिर परिसर से बाहर जा रहा था, या फिर यह अध्याय 8 की घटना के कुछ समय बाद घटी हो। यहाँ पर यह उल्लेख किया गया है कि यह मनुष्य **जन्म का अन्धा** था – उसके जन्म से अन्धा होने का उल्लेख उसकी अवस्था की आशाहीनता और उसे दृष्टि देने के आश्चर्यकर्म की अद्‌भुतता को बताने के लिए किया गया है।

9:2 **चेलों ने उससे** एक बहुत विचित्र प्रश्न किया। वे सोच रहे थे कि अन्धेपन का कारण उस व्यक्ति या उसके माता-पिता का पाप है। एक ऐसे व्यक्ति के अन्धेपन का कारण उसका पाप कैसे हो सकता है जब यह व्यक्ति जन्म से ही **अन्धा** *उत्पन्न* हुआ है? क्या वे पुनर्जन्म की इस धारणा पर विश्वास करते थे कि मृतकों की आत्मा दूसरी देह में लौट कर आती है? या फिर वे यह कहना चाह रहे थे कि वह उन पापों के कारण अन्धा हुआ जिनके विषय में परमेश्वर पहिले से जानता था कि ये पाप उस व्यक्ति द्वारा जन्म लेने के पश्चात किए जाएंगे? यह स्पष्ट है कि वे यह सोच रहे थे कि उसके अन्धेपन का कारण उसके परिवार के पाप से सम्बन्धित था। हम जानते हैं कि ऐसा आवश्यक नहीं है। यद्यपि संसार में सारे रोग, कष्ट, और मृत्यु अनन्त: पाप के परिणामस्वरूप ही आए, यह सत्य *नहीं* है कि एक व्यक्ति यदि किसी रोग से पीड़ित है तो उसका कारण उसका पाप ही हो।

9:3 प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि इस मनुष्य ने पाप नहीं किया था, या उसके माता-पिता ने पाप नहीं किया था। बल्कि, उसके कहने का अर्थ यह था कि उसके अन्धेपन का कारण उनके जीवनों के प्रत्यक्ष पापों का परिणाम नहीं था। परमेश्वर ने इस मनुष्य को इसलिए अन्धा पैदा होने दिया ताकि यह मनुष्य **परमेश्वर के** महान **कामों** को प्रदर्शित किए जाने का माध्यम बने। उस व्यक्ति के जन्म से पहले ही प्रभु यीशु यह जानता था कि वह उसकी अन्धी आँखों को ज्योति देगा।

9:4 उद्धारकर्ता ने इस बात को समझ लिया था कि क्रूस पर चढ़ने से पहले उसके पास सार्वजनिक सेवकाई करने के लिए लगभग तीन वर्ष थे। इस समय का हर एक क्षण परमेश्वर के कार्य में लगाना आवश्यक था। यहाँ पर एक मनुष्य है जो जन्म से अन्धा था। प्रभु यीशु को उस व्यक्ति को चंगाई देनेवाला आश्चर्यकर्म करना आवश्यक है, यद्यपि वह सब्त का दिन था। उसकी सार्वजनिक सेवकाई का समय शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा, और उसके बाद वह और अधिक इस पृथ्वी पर नहीं रहेगा। हर एक मसीही के लिए यह एक गम्भीर चेतावनी है कि जीवन का दिन तेजी से बीतता जा रहा है, और **वह रात आने वाली** है जब पृथ्वी पर का हमारा सेवाकार्य हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। इसलिए, हमें दिए हुए इस समय का प्रभु की ग्रहणयोग्य सेवा में सदुपयोग करना है।

9:5 जब प्रभु यीशु **जगत में** था, तो वह बिल्कुल सीधे और विशेष रूप में **जगत की ज्योति** था। जब वह आश्चर्यकर्म करता और लोगों को शिक्षा देता था, तो उसके आश्चर्यकर्मों और शिक्षाओं में उन्होंने **जगत की ज्योति** को अपनी आँखों से देखा। प्रभु यीशु *आज भी* जगत की ज्योति है, और जितने उसके पास आते हैं उन्हें यह प्रतिज्ञा दी जाती है कि वे अंधकार में नहीं चलेंगे। किन्तु, इस पद में प्रभु इस पृथ्वी की अपनी सार्वजनिक सेवकाई के विषय में विशेष रूप से बात कर रहा था।

9:6 हमें यह नहीं बताया गया है कि प्रभु यीशु ने **मिट्टी** और **थूक** को क्यों मिलाया और उसे **अन्धे की आँखों पर** लगाया। कुछ लोगों का मानना है कि इस व्यक्ति के आँखों में नेत्रगोलक नहीं थे, और इसलिए प्रभु यीशु ने इस गीली मिट्टी से उसके लिए नेत्रगोलक बनाया। अन्य लोगों का मानना है कि अन्धे को ज्योति देने में, प्रभु यीशु ने ऐसे तरीकों का प्रयोग किया जो संसार की दृष्टि में तुच्छ जाने जाते हैं। उसने निर्बल और महत्वहीन वस्तुओं का उपयोग अपने उद्‌देश्य को पूरा करने के लिए किया। आज भी, आत्मिक रूप से अन्धे व्यक्तियों को ज्योति देते समय परमेश्वर ऐसे लोगों का उपयोग करता है जो पृथ्वी की

मिट्टी से बनाए गए हैं।

9:7 प्रभु यीशु ने अन्धे व्यक्ति के विश्वास को उसे यह आज्ञा देने के द्वारा सक्रिय किया कि वह **शीलो के कुण्ड में . . . जा कर धो ले**। यद्यपि वह अन्धा था, तौभी वह शायद यह जानता था कि शीलो का कुण्ड कहाँ है और वह उसे बताए अनुसार करने में सक्षम था। पवित्रशास्त्र में बताया गया है कि **शीलो** का अर्थ होता है, **भेजा**। शायद यह मसीह ('भेजा हुआ') के विषय में है। जो व्यक्ति यह आश्चर्यकर्म कर रहा था वह वही व्यक्ति था जिसे पिता ने जगत में भेजा था। अन्धे व्यक्ति ने कुण्ड में **जाकर** अपनी आँखों को **धोया**, और ज्योति पाई। यह एक ऐसा मामला नहीं है जिसमें किसी व्यक्ति ने दुबारा ज्योति पाई हो, बल्कि उसने इससे पहले कभी कुछ देखा ही नहीं था। यह आश्चर्यकर्म तुरन्त हुआ और वह मनुष्य अपनी आँखों से उसी क्षण देखने लगा। उसके लिए यह क्या ही हर्षप्रद आश्चर्य रहा होगा कि उसने पहली बार उस संसार को देखा जिसमें वह रहता था!

9:8, 9 उस मनुष्य के **पड़ोसी** चौंक गए। उन्हें यह विश्वास नहीं हो रहा था कि वह वही मनुष्य है जो इतने समय से **बैठा भीख मांगा** करता था। (जब हमारा उद्धार होता है तब भी ऐसा ही होना चाहिए। हमारे पड़ोसी हमारे जीवनों में अन्तर को देख सकें)। **कितनों** ने जोर दे कर कहा कि यह वही मनुष्य है। **औरों** को अब भी निश्चय नहीं हुआ था और वे सिर्फ इतना ही मानने के लिए तैयार थे कि यह मनुष्य उस अन्धे व्यक्ति से कुछ मिलता-जुलता है। परन्तु इस मनुष्य ने सारी शंकाओं को दूर करते हुए बता दिया कि वह वही व्यक्ति है जो जन्म से अन्धा था।

9:10 जब कभी प्रभु यीशु कोई आश्चर्यकर्म करता था, मनुष्यों के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होने लगते थे। प्राय: ऐसे प्रश्न विश्वासियों को एक अवसर देते थे कि वे प्रभु के लिए गवाही दे सकें। लोगों ने उस मनुष्य से पूछा कि यह सब **क्यों कर** (कैसे) हुआ।

9:11 उसकी गवाही सीधी, तौभी विश्वास करने लायक थी। उसने अपनी चंगाई से सम्बन्धित सच्चाइयों को बताया, और इसका श्रेय उस व्यक्ति को दिया जिसने यह आश्चर्यकर्म किया था। इस समय तक यह व्यक्ति नहीं जानता था कि प्रभु यीशु कौन है। उसने उसे सिर्फ "**यीशु नाम एक व्यक्ति**" के रूप में बताया। परन्तु बाद में इस व्यक्ति की समझ बढ़ी और वह जान गया कि प्रभु यीशु कौन है।

9:12 जब हम प्रभु यीशु मसीह के विषय में गवाही देते हैं, तो हम अक्सर दूसरों के हृदय में एक इच्छा उत्पन्न कर सकते हैं कि वे भी उसे जानें।

ज.यहूदियों की ओर से बढ़ता हुआ विरोध (9:13-41)

9:13 विदित है कि इस आश्चर्यकर्म से अति उत्साहित होकर, कुछ यहूदी इस अन्धे मनुष्य को **फरीसियों के पास ले गए**। शायद वे नहीं जानते थे कि ये यहूदी अगुवे इस मनुष्य की चंगाई पर खीज उठेंगे।

9:14 प्रभु यीशु ने यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन किया था। आलोचक फरीसियों को यह बात समझ में नहीं आती थी कि परमेश्वर ने कभी भी सब्त के दिन दया या भलाई के कार्य को करने से मना करना नहीं चाहा है।

9:15 इस व्यक्ति को प्रभु यीशु की गवाही देने का एक और अवसर मिला। जब **फरीसियों ने भी उससे पूछा; तेरी आँखे किस रीति से खुल गईं**, तो उन्हें भी उसने वही कहानी फिर से साधारण रूप से सुनाई। इस व्यक्ति ने यहाँ पर प्रभु यीशु का नाम नहीं लिया, इसलिए नहीं कि वह ऐसा करने से डरता था, पर शायद इसलिए क्योंकि वह यह समझता था कि हर एक व्यक्ति यह जानता था कि इस आश्चर्यकर्म को किसने किया है। इस समय तक, प्रभु यीशु यरूशलेम में काफी प्रसिद्ध हो चुका था।

9:16 अब प्रभु यीशु की पहचान को लेकर एक और **फूट** पड़ गई। **कई फरीसी** बेधड़क हो कर यह कहने लगे कि प्रभु यीशु परमेश्वर का जन नहीं हो सकता क्योंकि उसने **सब्त** के दिन का नियम तोड़ा है। **औरों** का तर्क था कि एक पापमय मनुष्य इस प्रकार के आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता। प्रभु यीशु के कारण लोगों के बीच में अक्सर फूट पड़ती थी। लोगों को किसी न किसी पक्ष का समर्थन करना पड़ता था, या तो प्रभु यीशु के पक्ष का या फिर उसके विरोधयों के पक्ष का।

9:17 फरीसियों ने उस व्यक्ति से पूछा जो पहले

अन्धा था कि वह प्रभु यीशु के बारे में क्या सोचता है। अब तक, उस व्यक्ति को यह बोध नहीं हुआ था कि प्रभु यीशु परमेश्वर है। परन्तु उसका विश्वास इतना तो बढ़ ही चुका था कि वह यह स्वीकार करने को तैयार था कि प्रभु यीशु एक **भविष्यद्वक्ता** था। वह मानता था कि जिसने उसे ज्योति दी है वह परमेश्वर के द्वारा भेजा गया है और उसके पास ईश्वरीय सन्देश है।

9:18, 19 **यहूदियों** में से अनेक अब भी यह **विश्वास** करने के लिए तैयार नहीं थे कि ऐसा कोई आश्चर्यकर्म हुआ है। और इसलिए उन्होंने उस व्यक्ति के **माता–पिता** को **बुलाकर** यह जानना चाहा कि वे क्या कहते हैं।

माता–पिता से बेहतर और कौन जान सकता था कि उनका बच्चा अन्धा पैदा हुआ था या नहीं? निश्चय ही उनकी गवाही ही निर्णायक होगी। इसलिए फरीसियों ने **उन से पूछा** कि क्या यह उनका **पुत्र** है, और उसने ज्योति **क्यों कर** (कैसे) पाई।

9:20, 21 **उसके माता–पिता** की गवाही बहुत सकारात्मक थी। **यह** उनका **पुत्र** था, और यह उनके हृदय की पीड़ा थी **कि** वह हमेशा से ही **अन्धा** था।

वे इससे अधिक और कुछ नहीं कहना चाहते थे। वे यह **नहीं जानते** थे कि उसकी ज्योति कैसे आई। उन्होंने फरीसियों से कहा कि यह सब उसके पुत्र से पूछ लें और वह **अपने विषय में आप कह देगा**।

9:22, 23 पद 22 में **माता– पिता** के संकोच के कारण को स्पष्ट किया गया है। उन्होंने सुना था कि कोई भी मनुष्य जो यह अंगीकार करता है कि प्रभु यीशु ही मसीह है, उसे **आराधनालय से निकाला** जाता है। यह निष्कासन किसी भी यहूदी के लिए एक गम्भीर बात होती थी। वे इतनी बड़ी कीमत चुकाने के लिए तैयार नहीं थे। निष्कासन का अर्थ था, अपनी जीविकोपार्जन के जरिये से वंचित हो जाना, साथ ही यहूदी धर्म से मिलने वाले सारे विशेषाधिकारों से वंचित हो जाना।

यहूदी अगुवों के डर से, उसके **माता– पिता** ने गवाही देने के लिए अपने बेटे को सामने ला दिया।

9:24 **परमेश्वर की स्तुति कर!** इसके दो अर्थ हो सकते हैं। सबसे पहला, यह एक प्रकार की शपथ हो सकती है। शायद फरीसी यह कह रहे थे, ''अब सच्चाई बता। **हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है**।'' या इसका अर्थ यह हो सकता है कि आश्चर्यकर्मों का श्रेय परमेश्वर को मिलना चाहिए, और प्रभु यीशु को कोई श्रेय नहीं मिलना चाहिए क्योंकि यहूदी लोग प्रभु यीशु को एक पापी मनुष्य मानते थे।

9:25 हर मोड़ पर फरीसियों को असफलता ही प्राप्त हुई। जितनी बार उन्होंने प्रभु यीशु को श्रेय से वंचित करना चाहा, उसके परिणामस्वरूप उसे आदर ही मिला। इस मनुष्य की गवाही बहुत सुन्दर थी। वह प्रभु यीशु के व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ **नहीं जानता** था, परन्तु वह यह अवश्य **जानता** था कि यद्यपि वह **अन्धा** था, परन्तु **अब** वह देखता है। यह एक ऐसी गवाही थी जिसका कोई इंकार नहीं कर सकता।

ऐसा ही उन लोगों के साथ भी होता है जो नया जन्म प्राप्त करते हैं। संसार उन पर सन्देह करता है, उनका ठट्ठा उड़ाता है, और उनकी अवज्ञा करता है, परन्तु हमारी गवाही का इंकार कोई नहीं कर सकता जब हम यह कहते हैं कि पहले हम पापों में खोए हुए थे, और अब हमने परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पा लिया है।

9:26, 27 एक बार **फिर** उन्होंने प्रश्न करना आरम्भ कर दिया, और उस व्यक्ति को विवरण को दोहराने के लिए कहा। अब तक वह व्यक्ति जो पहले अन्धा था, खीज चुका था। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह ये सारी बातें उन से पहले ही **कह चुका** है, और उन्होंने **न सुना**। तो फिर वे **दूसरी बार क्यों सुनना** चाहते हैं? क्या वे प्रभु यीशु के **चेले** बनना चाहते हैं? स्पष्ट है कि यह बात व्यंग्य के रूप में कही गई थी। वह यह बात अच्छी तरह से जानता था कि वे प्रभु यीशु से बैर रखते थे, और उसके पीछे चलने के लिए उनमें कोई इच्छा नहीं थी।

9:28 किसी ने कहा है, ''यदि तुम्हारे पास कोई ठोस मामला नहीं है, तो वादी को भला बुरा कहो!'' ऐसा ही यहाँ पर भी हुआ। फरीसी लोग इस व्यक्ति को उसकी गवाही से डिगाने में बुरी तरह से असफल हो गए थे, इसलिए उन्होंने उसे भला बुरा कहना आरम्भ कर दिया। उन्होंने उस पर दोष लगाया कि वह प्रभु यीशु का **चेला** है, और प्रभु यीशु का चेला होना संसार की सबसे बड़ी बुराई है। उसके बाद उन्होंने दावा किया कि वे **मूसा के चेले** हैं, मानों यह उनके लिये सबसे बड़ी सम्भावित बात हो।

9:29 फरीसियों ने कहा कि **परमेश्वर ने मूसा से**

बातें की, परन्तु वे प्रभु यीशु के बारे में तुच्छ बातें किया करते थे। यदि वे मूसा के लेखों पर विश्वास करते हैं, तो उन्हें प्रभु यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा। साथ ही, यदि वे थोड़ा बहुत सोच विचार कर सकते, तो वे यह जानते कि मूसा ने एक भी अन्धे को दृष्टि नहीं दी थी जो जन्म से अन्धा हो। मूसा से भी बड़ा व्यक्ति उनके मध्य में था, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना।

9:30 इस मनुष्य का कटाक्ष अब उन्हें चुभने लगा। फरीसियों ने यह अपेक्षा नहीं की थी। वह अन्धा व्यक्ति मानों कह रहा था, ''तुम लोग इस्राएल के अगुवे हो। तुम लोग यहूदियों के शिक्षक हो। तौभी, तुम्हारे बीच में एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास एक अन्धे को आँख देने की सामर्थ है और **तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है**। यह तुम्हारे लिए शर्म की बात है।''

9:31 अब यह व्यक्ति अपनी गवाही देने में बेधड़क होता जा रहा था। उसका विश्वास बढ़ता जा रहा था। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि एक सामान्य सिद्धान्त के अनुसार, **परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता** न ही वह उनके माध्यम से आश्चर्यकर्म करता है। परमेश्वर ऐसे लोगों का अनुमोदन नहीं करता जो बुरे हैं, और इस प्रकार के लोगों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं देता। दूसरी ओर, **परमेश्वर** की आराधना करनेवालों को वह अपना कार्य सौंपता है और उनके कार्य को अनुमोदित करने का आश्वासन देता है।

9:32, 33 इस मनुष्य को यह बोध था कि वह सारे मनुष्यों में पहला ऐसा व्यक्ति है जो **जन्म** से अन्धा था और जिसे आँखे दी गईं। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि फरीसी ऐसे आश्चर्यकर्म को देख कर भी आश्चर्यकर्म करने वाले व्यक्ति में गलतियाँ क्यों ढूंढ़ रहे हैं।

यदि प्रभु यीशु **परमेश्वर की ओर से न होता**, तो वह कभी भी इस प्रकार का आश्चर्यकर्म नहीं कर पाता।

9:34 एक बार फिर से फरीसी लोग दुर्व्यवहार करने में उतर आए। उनके मन में यह बात बैठ चुकी थी कि इस मनुष्य का अन्धापन उसके **पापों** का सीधा सीधा परिणाम था। वह किस अधिकार से उन्हें **सिखाता** है? सच्चाई यह है कि उसके पास ऐसा करने का पूरा पूरा अधिकार था, जैसा कि मसीही लेखक रायल ने कहा है, ''पवित्र आत्मा की शिक्षाएं उच्च वर्ग के और पढ़े लिखे लोगों की तुलना में साधारण लोगों में अधिक पाई जाती हैं।'' **'उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया'** का अर्थ शायद उसे मन्दिर से बाहर निकालने से कुछ अधिक है। इसका अर्थ शायद यह है कि उसे यहूदी धर्म से निष्कासित कर दिया गया। और तौभी उस व्यक्ति को निष्कासित करने का क्या आधार था? जन्म से अन्धे मनुष्य को सब्त के दिन चंगाई दी गई थी। क्योंकि वह अन्धा व्यक्ति आश्चर्यकर्म करने वाले इस व्यक्ति (प्रभु यीशु) की बुराई करने को तैयार नहीं था, इसलिये उसे निष्कासित कर दिया गया।

9:35 प्रभु **यीशु** ने अब इस व्यक्ति से मुलाकात की। मानों प्रभु यीशु यह कह रहा हो, ''यदि वे तुम्हें नहीं रखना चाहते, तो मैं तुम्हें रख लेता हूँ।'' जो लोग प्रभु यीशु के कारण निष्कासित किए जाते हैं वे कुछ नहीं खोते, परन्तु उसके द्वारा व्यक्तिगत रूप से स्वीकार किए जाकर और उसकी संगति में लिए जाकर उसकी महान आशीषों को प्राप्त करते हैं। ध्यान दें कि प्रभु यीशु ने किस प्रकार से इस व्यक्ति को इस विश्वास में लाया कि वह (प्रभु यीशु) परमेश्वर का पुत्र है! उसने सिर्फ उससे यह पूछा, ''**क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?**''

9:36 यद्यपि वह अपनी शारीरिक दृष्टि पा चुका था, परन्तु उसे अब भी आत्मिक दृष्टि प्राप्त करने की आवश्यकता थी। उसने प्रभु से पूछा, ''परमेश्वर का पुत्र **कौन** है, कि वह **उस पर विश्वास** करे।'' ''**प्रभु**'' कहने के द्वारा यह व्यक्ति उसे सिर्फ ''महाशय'' कह रहा था।

9:37 प्रभु **यीशु** ने अब अपना परिचय परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसे दिया। वह मात्र एक मनुष्य नहीं था जिसने उसे दृष्टि देकर उसके जीवन में एक असम्भव काम किया हो। वह परमेश्वर को पुत्र था, जिसे उसने देखा था और अब उसके **साथ बातें** कर रहा था।

9:38 इस पर उस व्यक्ति ने सीधे सीधे और मधुरता के साथ अपना विश्वास प्रभु पर लाया और उसे **दण्डवत् किया**। अब वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने उद्धार और चंगाई पा ली थी। यह उसके जीवन का क्या ही महान दिन था! उसने शारीरिक और आत्मिक दृष्टि दोनों पा ली थी।

ध्यान दें कि उस अन्धे व्यक्ति ने तब तक प्रभु को

दण्डवत् नहीं किया था जब तक उसे यह नहीं पता चला कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। एक बुद्धिमान यहूदी होने के नाते वह एक मनुष्य को दण्डवत् नहीं करेगा। परन्तु जैसे ही उसे यह पता चला कि उसे चंगा करने वाला व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र है, तो उसने उसे **दण्डवत् किया** – इसलिए नहीं कि उसने उसे चंगा किया था परन्तु इसलिए कि वह परमेश्वर का पुत्र था।

9:39 सरसरी तौर पर देखने से यह पद यूहन्ना 3:17 का विरोधाभासी है, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे . . .।'' परन्तु यहाँ पर कोई विपरीत बात नहीं लिखी है। इस संसार में प्रभु के आने का उद्देश्य दण्ड देना नहीं, परन्तु उद्धार देना था। किन्तु, जितने उसे स्वीकार करने में असफल रहते हैं उनका दण्ड टाला नहीं जा सकता।

सुसमाचार की शिक्षा के दो प्रभाव होते हैं। **जो** यह स्वीकार कर लेते हैं कि वे **नहीं देखते** वे दृष्टि पाते हैं। परन्तु जो अड़े रहते हैं कि वे प्रभु यीशु के बिना पूर्ण रूप से **देखते** हैं, उनके अन्धेपन की पुष्टि कर दी जाती है।

9:40 कुछ **फरीसी** यह समझ गए कि प्रभु यीशु उनके बारे में और उनके अन्धेपन के बारे में बोल रहा है। इसलिए वे उसके पास आए और बदतमीजी से पूछा कि क्या वह समझता है कि वे **भी अन्धे** हैं। वे अपने प्रश्न का उत्तर ''नहीं'' में सुनना चाहता थे।

9:41 प्रभु के उत्तर का सारांश कुछ इस प्रकार से था, ''**यदि** तुम यह स्वीकार करते हो कि तुम **अन्धे** और पापी हो, और तुम्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, तो तुम्हारे पाप क्षमा किए जा सकते हैं, और तुम उद्धार पा सकते हो। परन्तु तुम यह दावा करते हो कि तुम धर्मी हो और तुम में कुछ भी पाप नहीं। **इसलिए,** तुम्हारे पापों की कोई क्षमा नहीं है।'' जब प्रभु **यीशु ने . . . कहा, ''. . . तो पापी न ठहरते,''** तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि वे पूरी तरह से निष्पाप होते। परन्तु वह यह कह रहा था कि तुलनात्मक रूप से वे पापरहित होते। यदि वे प्रभु यीशु को मसीह के रूप में पहचान पाने में सिर्फ अपने अन्धेपन को ही स्वीकार कर लेते, तो उनके पाप उस घोर पाप की तुलना में कुछ भी नहीं होते जो वे यह दावा करने के द्वारा कह रहे थे कि वे देखते हैं, तौभी उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचान नहीं पा रहे थे।

क. यीशु, भेड़ों का द्वार (10:1–10)

10:1 ये पद अध्याय 9 के अन्तिम भाग से नज़दीकी से जुड़े हुए हैं। वहाँ पर प्रभु यीशु फरीसियों से बात कर रहा था, जो यह दावा करते थे कि वे ही इस्राएल के लोगों के अधिकृत अगुवे हैं। यहाँ पर विशेष कर के प्रभु उनकी ही बात कर रहा है। वह यहाँ एक गम्भीर बात करने वाला था इसलिए उसने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''**मैं तुम से सच सच कहता हूँ**।''

भेड़शाला एक ऐसा बन्द स्थान हुआ करता था जहाँ रात के समय भेड़ों को रखा जाता था। यह एक ऐसा क्षेत्र हुआ करता था जो चारों ओर से बाड़े से घेरा जाता था और सिर्फ एक ही द्वार होता था। यहाँ पर **भेड़शाला** यहूदी जाति को कहा गया है।

बहुत सारे लोग यहूदियों के पास आए और उन्होंने दावा किया कि वे उनके आत्मिक अगुवे और मार्गदर्शक हैं। उन्होंने स्वयं ही अपने आप को यहूदी जाति का मसीहा घोषित कर दिया। परन्तु वे उस मार्ग से नहीं आए जिस मार्ग से मसीह के आने की भविष्यद्वाणी पुराना नियम में की गई है। वे **और किसी ओर से** कूद कर आए। उन्होंने इस्राएल के सामने स्वयं को अपने तरीके से प्रस्तुत किया। ये लोग सच्चे चरवाहे नहीं, परन्तु चोर और डाकू थे। चोर ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो किसी दूसरे की वस्तु को ले लेता है, और डाकू उस व्यक्ति को कहा जाता है जो हिंसा के सहारे ऐसा करता है। फरीसी लोग चोर और डाकू थे। वे यहूदियों पर शासन करना चाहते थे, और उन्होंने प्रभु यीशु को सच्चे मसीह के रूप में स्वीकार करने से लोगों को रोकने के लिए वह सब कुछ किया जो वे कर सकते थे। उन्होंने प्रभु यीशु के पीछे चलने वालों का सताया, और अन्ततः प्रभु यीशु को मार डाला।

10:2 पद 2 में स्वयं प्रभु यीशु के बारे में कहा गया है। वह इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को ढूंढ़ने के लिए आया। वह **भेड़ों का** सच्चा **चरवाहा** है। उसने **द्वार** से प्रवेश किया, अर्थात्, उसने पुराना नियम में मसीह के विषय में की गई भविष्यद्वाणी को ठीक ठीक पूरा किया। उसने स्वयं ही अपने आप को उद्धारकर्ता नियुक्त नहीं

किया, परन्तु वह पूरी तरह से पिता की इच्छा का पालन करते हुए आया। उसने सारी अनिवार्यताओं को पूरा किया।

10:3 इस पद में **द्वारपाल** की पहचान को लेकर काफी मतभेद हैं। कुछ लोगों का मानना है कि द्वारपाल पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं को कहा गया है जिन्होंने मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की थी। अन्य लोग यह मानते हैं कि द्वारपाल यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला को कहा गया है, क्योंकि वह सच्चे चरवाहे का अग्रदूत (मार्ग तैयार करने वाला) था। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि इस पद में पवित्र आत्मा को **द्वारपाल** कहा गया है जो हृदयों और जीवनों में प्रभु यीशु के प्रवेश के लिए द्वार खोलता है।

भेड़ें चरवाहे का **शब्द** सुनती हैं। वे शब्द से पहचान जाती हैं कि वह सच्चा चरवाहा है। जिस प्रकार से वास्तविक भेड़ें अपने चरवाहे का शब्द पहचान जाती हैं, उसी प्रकार से यहूदी लोगों के मध्य में भी ऐसे लोग थे जिन्होंने मसीह के प्रगट होने पर उसे पहचान लिया। सम्पूर्ण सुसमाचार में, हम चरवाहे को **अपने भेड़ों का नाम ले लेकर** पुकारते हुए सुनते हैं। उसने अध्याय 1 में अनेक चेलों को बुलाया, और उन्होंने उसका शब्द सुना और उसके पीछे आए। अध्याय 9 में उसने अन्धे व्यक्ति को बुलाया। आज भी वह उन्हें बुलाता है जो उसे उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं, और वह हर एक को व्यक्तिगत और निजी रूप से बुलाता है।

बाहर ले जाता है – यह वाक्यांश शायद इस तथ्य की ओर संकेत कर रहा है कि प्रभु यीशु उन लोगों को जो उसका शब्द सुनते हैं, इस्राएल की भेड़शाला से बाहर जाने में अगुवाई करता है। इस्राएल की भेड़शाला में वे बन्द व घिरे हुए थे। व्यवस्था के आधीन कोई स्वंतत्रता नहीं थी। प्रभु अपनी भेड़ों को अपने अनुग्रह की स्वतंत्रता में **ले जाता है**। पिछले अध्याय में, यहूदियों ने उस मनुष्य को आराधनालय से बाहर निकाल दिया था। ऐसा करने के द्वारा उन्होंने अनजाने में भी प्रभु के कार्य में सहयोग किया था।

10:4 **जब** सच्चा चरवाहा **अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता** है, तो वह उन्हें भगा नहीं देता, परन्तु उनकी अगुवाई करते हुए **उनके** आगे आगे चलता है। वह उन्हें किसी भी ऐसे स्थान की ओर नहीं खदेड़ता यदि वह स्वयं वहाँ पहले न जाए। वह हमेशा उनके उद्धारकर्ता, उनके मार्गदर्शक, और उनके आदर्श के रूप में अपनी भेड़ों के आगे आगे रहता है, जो मसीह की सच्ची **भेड़ें** हैं वे उसके **पीछे पीछे हो लेती** हैं। वे उसके आदर्श का अनुसरण करने के द्वारा नहीं, परन्तु नया जन्म पाने के द्वारा उसकी भेड़ें *बनती* हैं। तब जब वे उद्धार पा लेती हैं, तो उनके भीतर अब हर उस स्थान में जाने की लालसा उत्पन्न होती है जहाँ वह (उनका चरवाहा) जाने के लिए उनकी अगुवाई करता है।

10:5 जिस सहज प्रवृत्ति के द्वारा एक भेड़ सच्चे चरवाहे की आवाज़ पहचान जाती है, उसी प्रवृत्ति के द्वारा वह **पराए** से भागती है। पराए फरीसी और यहूदियों के अन्य अगुवे थे जो सिर्फ अपने निजी स्वार्थ के कारण भेड़ों में रूचि रखते थे। जिस जन्म के अन्धे व्यक्ति को प्रभु यीशु ने आँखे दी गई थी वह इस बात का एक उदाहरण है। वह प्रभु यीशु की आवाज को पहचानता था परन्तु वह जानता था कि फरीसी लोग पराए हैं। इसलिए, उसने उनकी बात मानने से इंकार कर दिया, भले ही इसके लिए उसे निष्कासित कर दिया गया।

10:6 यहाँ पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि प्रभु **यीशु ने** फरीसियों का उदाहरण देते हुए **यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे यह न समझे** – इसका कारण यह था कि वे सच्ची भेड़ें नहीं थे। यदि वे प्रभु यीशु की सच्ची भेड़ें होते, तो वे उसके शब्द को सुन लिये होते और उसके पीछे चलते।

10:7 **तब** प्रभु **यीशु** ने एक नया उदाहरण दिया। वह अब भेड़शाला के द्वार की बात नहीं कर रहा था, जैसा कि पद 2 में। अब वह अपने आप को **भेड़ों के द्वार** के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। अब इस्राएल की भेड़शाला में प्रवेश की बात पुरानी हो चुकी थी, और इस्राएल की चुनी हुई भेड़ों के यहूदी धर्म से निकल कर मसीह, जो **द्वार** है, के पास आने की बात की जा रही थी।

10:8 अन्य लोग मसीह से **पहिले** आए, और उन्होंने अधिकार और पद का दावा किया। परन्तु इस्राएल की चुनी हुई भेड़ों ने उनकी न सुनी क्योंकि वे जानती थीं कि वे जिन अधिकारों और पदों पर दावा कर रहे थे वह उनका नहीं था।

10:9 पद 9 एक आनन्ददायक पद है जो इतना सरल है कि इसे सण्डे स्कूल के बच्चे भी समझ सकते हैं,

और तौभी इसके अर्थ की गहराई को बड़े से बड़े विद्वान नहीं नाप सकते। मसीह **द्वार** है। मसीहत कोई मत या एक कलीसिया नहीं है। बल्कि यह एक व्यक्ति है, और वह व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह है। ''**यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे**।'' उद्धार सिर्फ मसीह के द्वारा पाया जा सकता है। बपतिस्मा पर्याप्त नहीं है; न ही प्रभु–भोज। हमें मसीह के और उसके द्वारा दी जाने वाली सामर्थ के द्वारा प्रवेश करना आवश्यक है। यह आमंत्रण सब लोगों के लिए है। मसीह जिस प्रकार से यहूदियों का उद्धारकर्ता है, उसी प्रकार से अन्यजातियों का भी वह उद्धारकर्ता है। परन्तु उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति को विश्वास के द्वारा मसीह को ग्रहण करना आवश्यक है। यह एक व्यक्तिगत कार्य है, और उसके बिना कोई उद्धार नहीं है। जो भीतर प्रवेश करते हैं वे दण्ड से, और अनन्त: पाप की उपस्थिति से उद्धार पा लेते हैं।

उद्धार के बाद, वे **बाहर आया जाया** करते हैं। शायद यहाँ पर यह कहा गया है कि वे विश्वास के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में आराधना करने जाते हैं, और फिर उसके बाद बाहर जगत में प्रभु की गवाही देने के लिए जाते हैं। इसका अर्थ चाहे जो भी हो, यह प्रभु की सेवा में सिद्ध सुरक्षा और स्वतंत्रता की एक तस्वीर है। जो प्रवेश करता है वह **चारा** पाता है। मसीह न सिर्फ उद्धारकर्ता, और स्वतंत्रता देनेवाला है, परन्तु वह पोषण करने वाला और तृप्त करने वाला भी है। उसकी भेड़ें परमेश्वर के वचन में **चारा** पाती हैं।

10:10 **चोर** का उद्‌देश्य **चोरी** करना **और घात** करना **और नष्ट** करना होता है। वह पूरी तरह से निजी स्वार्थ के कारण आता है। अपने स्वयं की अभिलाषाओं की पूर्ति करने के लिए वह भेड़ का **घात** तक कर सकता है। परन्तु प्रभु यीशु मनुष्य के हृदय में अपने किसी स्वार्थ के कारण नहीं आया। वह देने आता है, लेने के लिए नहीं। वह इसलिए आता है कि लोग **जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं**। जिस क्षण हम उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं उसी क्षण हम जीवन पा लेते हैं। किन्तु, उद्धार पाने के बाद, हम यह पाते हैं कि मसीही जीवन में विभिन्न प्रकार के आनन्द हैं। हम जितना अधिक अपने आप को पवित्र आत्मा के नियंत्रण में सौंपते हैं, हम उतना अधिक उसके द्वारा दिए गए जीवन का आनन्द उठाते हैं। हमारे पास न सिर्फ **जीवन** है, परन्तु हमारे पास यह जीवन **बहुतायत** से है।

ल. यीशु, अच्छा चरवाहा (10:11–18)

10:11 अनेक बार प्रभु यीशु ने इस वाक्यांश का प्रयोग किया है: ''**मैं हूं**,'' यह ईश्वरत्व का एक नाम है। उसने जितनी बार इस वाक्यांश का उपयोग किया है उतनी बार उसने अपने आप को परमेश्वर पिता के तुल्य होने दावा किया है। यहाँ पर उसने अपने आप को **अच्छा चरवाहा** के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपनी **भेड़ों के लिए अपना प्राण** देता है। सामान्यत: भेड़ों को अपने चरवाहे के लिए अपना प्राण देने के लिए बुलाया जाता है। परन्तु प्रभु यीशु भेड़ों के लिए मर गया।

जब एक पीड़ित का लोहू बहना अनिवार्य हो गया,
यह चरवाहा तरस से उठ खड़ा हुआ,
कि हमारे और हमारे शत्रुओं के बीच में वह खड़ा हो जाए,
और वह हमारे बदले में अपनी इच्छा से मर गया।
– *थॉमस केली*

10:12 **मजदूर** वह होता है जो पैसे के लिए काम करता है। उदाहरण के लिए, अपनी भेड़ों की देखभाल करने के लिए एक चरवाहा किसी दूसरे को पैसे देकर मजदूर के रूप में रख सकता है। फरीसी लोग मजदूर थे। वे लोगों में इसलिए रूचि लेते थे क्योंकि बदले में उन्हें पैसे मिलते थे। **मजदूर** स्वयं **भेड़ों का मालिक** नहीं होता है। जब खतरा आता है, तो वह भाग जाता है और भेड़ों को **भेड़िये** का शिकार बनने के लिए छोड़ देता है।

10:13 हम जो हैं, उसी के अनुसार हम काम करते हैं। मजदूर मजदूरी के लिए काम करता है। उसे **भेड़ों की चिन्ता नहीं** रहती। वह उनके हित से अधिक अपने स्वयं के कल्याण की चिन्ता करता है। वर्तमान में कलीसिया में भी अनेक मजदूर हैं – ऐसे लोग जो सेवकाई को इसलिए चुनते हैं क्योंकि यह उनके लिए एक आरामदायक धन्धा है, और उनमें परमेश्वर की भेड़ों के प्रति कोई सच्चा प्रेम नहीं होता।

10:14 एक बार फिर से प्रभु अपने आप को **अच्छा चरवाहा** कहता है। **अच्छा** (यूनानी में, *कालोस*) का अर्थ यहाँ पर, ''आदर्श, योग्य, उत्तम, श्रेष्ठ'' होता है। उसमें ये सारे गुण हैं। उसके बाद वह एक बहुत ही घनिष्ठ

सम्बन्ध के बारे में बताता है जो उसके और उसकी **भेड़ों** के बीच में है। वह अपने अपनों को जानता है, और उसके अपने उसे जानते हैं। यह एक अद्भुत सच्चाई है।

10:15 बेहतर होता यदि पद 14 का अन्तिम भाग इस पद से जुड़ा होता, और इसे हम इस तरह से पढ़ते, ''जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ **इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं**।'' यह सचमुच में एक रोमांचित कर देने वाली सच्चाई है! प्रभु ने अपने और अपनी भेड़ों के बीच के सम्बन्ध की तुलना उस सम्बन्ध के साथ की है जो उसके और उसके पिता के बीच में है। जो एकता, सहभागिता, घनिष्ठता, और ज्ञान पिता और पुत्र के बीच के सम्बन्ध में है, वही चरवाहा और भेड़ों के बीच के सम्बन्ध में भी है। उसने कहा, ''**और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ**।'' एक बार फिर से प्रभु यीशु के उन अनेक वाक्यों में से एक यहाँ पर दिया गया है जिनमें उसने उस समय के बारे में कहा है जब वह पापियों के बदले में क्रूस पर अपना प्राण देगा।

10:16 पद 16 इस सम्पूर्ण अध्याय का कुंजी पद है। **और भी भेड़ें** यहाँ पर अन्यजातियों को कहा गया है। वह इस संसार में विशेष रूप से इस्राएल की भेड़ों के लिए आया था, परन्तु उसके ध्यान में अन्यजातियों का भी उद्धार था। अन्यजाति भेड़ें यहूदी **भेड़शाला** में नहीं थीं। परन्तु प्रभु यीशु के महान हृदय की करुणा इन भेड़ों तक भी पहुँची, और वह इन्हें अपने पास लाने के लिए ईश्वरीय बाध्यता के आधीन था। वह जानता था कि अन्यजाति लोग यहूदी लोगों की तुलना में उसका **शब्द** सुनने के लिए अधिक तत्पर होंगे।

इस पद के बाद वाले भाग में एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देता है, यहाँ पर से विषय यहूदी **भेड़शाला** से हटकर मसीही **झुण्ड** की ओर केन्द्रित हो जाता है। इस पद में इस सच्चाई का पूर्वदृश्य दिया गया है कि मसीह में, यहूदी और अन्यजाति एक किए जाएंगे, और इन लोगों के बीच पहले जो भिन्नता थी वह समाप्त हो जाएगी।

10:17 पद 17 और 18 में, प्रभु यीशु ने यह समझाया है कि वह चुने हुए यहूदियों और अन्यजातियों को अपने पास लाने के लिए क्या करेगा। वह अपनी मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरूत्थान की बात करता है। यदि प्रभु यीशु मसीह मनुष्यमात्र होता तो ऐसे शब्दों का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं होता। उसने अपनी ही सामर्थ से अपना **प्राण** देने और **उसे फिर से ले** लेने के बारे में कहा। वह ऐसा सिर्फ इसलिए कर सकता था क्योंकि वह परमेश्वर था। **पिता** प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करता था क्योंकि वह मर कर फिर से जी उठने के लिए तैयार था, ताकि खोई हुए भेड़ों का उद्धार हो सके।

10:18 प्रभु का जीवन उस **से . . . कोई . . .नही** ले सकता। वह परमेश्वर है, और इसलिए अपने द्वारा सृजे गए प्राणियों के सारे हत्यारे षड़यंत्रों से ऊपर है। उसके पास सामर्थ है कि वह अपना जीवन दे **और** उसके पास **उसे फिर से ले लेने का** भी **अधिकार** है। परन्तु क्या मनुष्यों ने ही प्रभु यीशु की हत्या नहीं की? अवश्य ही वह मनुष्यों के द्वारा ही मारा गया था। प्रेरित 2:23 और 1 थिस्स. 2:15 में यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है। प्रभु यीशु ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी, और यह अपना प्राण **देने** के **उसके अधिकार** का एक प्रदर्शन था। इसके साथ ही, उसने अपने ''प्राण त्याग दिए'' (यूहन्ना 19:30) जो कि उसके स्वयं की सामर्थ और इच्छा से हुआ।

उसने कहा, ''**यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।**'' पिता ने उसे निर्देश दिया था कि वह अपना प्राण दे और मृतकों में से जी उठे। उसकी मृत्यु और उसका पुनरूत्थान उसके पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए अत्यंत अनिवार्य था। इसलिए, वह पवित्रशास्त्र के अनुसार, मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा, और तीसरे दिन जी उठा।

म. यहूदियों के बीच में फूट (10:19–21)

10:19 प्रभु यीशु के इन वचनों के कारण **यहूदियों** में **फूट** पड़ गई। संसार में, घरों में, और हृदयों में प्रभु यीशु मसीह का प्रवेश तलवार चलाने का कारण बनता है, शान्ति का नहीं। जब मनुष्य उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है तभी वह परमेश्वर की शान्ति का अनुभव कर सकता है।

10:20, 21 अब तक जितने भी मनुष्य इस पृथ्वी पर हुए उनमें प्रभु यीशु ही एकमात्र सिद्ध मनुष्य है। उसने कभी भी कोई गलत बात नहीं कही, न ही कोई गलत कार्य किया। परन्तु मनुष्य का हृदय इतना विकृत है कि जब प्रभु यीशु मसीह प्रेम और बुद्धि की बात बताने के

लिए आया, तो मनुष्य ने कहा, कि **उस में दुष्टात्मा** है और वह **पागल** है, और वह इस योग्य नहीं है कि उसकी बात सुनी जाए। निश्चय ही यह मानवजाति के इतिहास में एक काला धब्बा है। **औरों** (कुछ लोगों) का विचार इससे अलग था। उन्होंने प्रभु यीशु मसीह की इन बातों और उसके इन कार्यों को एक भले व्यक्ति के वचन और कार्य के रूप में पहचाना, **दुष्टात्मा** के कार्य व वचन के रूप में नहीं।

न. प्रभु यीशु अपने कार्यों के द्वारा मसीहा सिद्ध हुआ (10:22–29)

10:22 इस बिन्दु पर वर्णन में एक विराम आया है। प्रभु यीशु अब फरीसियों से बात नहीं कर रहा है, परन्तु सामान्य रूप से यहूदियों से बात कर रहा है। हम नहीं जानते कि पद 21 और पद 22 के बीच में कितने समय का अन्तर है। **स्थापन्न के पर्ब्ब** (इब्रानी में, *हनुक्काह*) का बाइबल में सिर्फ यहीं पर उल्लेख पाया जाता है। ऐसा सामान्यत: माना जाता है कि यह पर्ब्ब यहूदा मक्काबी के द्वारा आरम्भ किया गया था जब एंटीओकस इपिफेनस (165 ई.पू) के द्वारा यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध कर दिए जाने के बाद इसे पुन:समर्पित किया गया था। यह एक वार्षिक पर्ब्ब था, जिसे यहूदी लोगों द्वारा स्थापित किया गया था, और यह प्रभु के पर्ब्बों में से एक नहीं था। यह न सिर्फ मौसम की दृष्टि से **जोड़े की ऋतु** थी, बल्कि आत्मिक दृष्टि से भी लोगों का जीवन ठण्डा था।

10:23, 24 प्रभु यीशु की सार्वजनिक सेवकाई लगभग पूरी हो चुकी थी, और अब वह क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर पिता के प्रति अपना पूर्ण समर्पण प्रदर्शित करने पर ही था। **सुलैमान** का ओसारा एक ढंका हुआ क्षेत्र था, जो हेरोदेस के मन्दिर से लगा हुआ था। जब प्रभु यीशु वहाँ पर गया, तब उसके आसपास यहूदियों को एकत्रित होने के लिए शायद वहां पर पर्याप्त स्थान था।

यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा (असमंजस) **में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हम से साफ साफ कह दे।**

10:25, 26 प्रभु **यीशु** ने एक बार फिर से उन्हें अपने वचनों और **काम** के बारे में स्मरण दिलाया। उसने अक्सर उन्हें बताया था कि वह **मसीह** है, और उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म यह प्रमाणित करते हैं कि उसका दावा सच्चा है। एक बार फिर से उसने यहूदियों को स्मरण दिलाया कि वह अपने आश्चर्यकर्मों को अपने पिता के अधिकार से और अपने पिता की महिमा के लिए करता है। ऐसा करने में, उसने यह दर्शाया कि वह सचमुच में वही है जिसे पिता ने संसार में भेजा है।

मसीह को स्वीकार करने में उनकी अनिच्छा से यह प्रमाणित हो गया कि वे उसकी **भेड़ों में से नहीं** हैं। यदि उन्हें उसकी भेड़ें होने के लिए अलग किया गया होता, तो वे उस पर विश्वास करने के लिए अपनी इच्छा दिखाए होते।

10:27 इन दो पदों में बिल्कुल ठोस शब्दों में यह शिक्षा दी गई है कि मसीह की कोई भी सच्ची भेड़ कभी नाश नहीं होगी। विश्वासी की अनन्त आत्मिक सुरक्षा एक महिमामय सच्चाई है। जो मसीह की सच्ची **भेड़ें** हैं वे उसका **शब्द सुनती** हैं। वे उसका शब्द तब **सुनती** हैं जब सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, और वे उस पर विश्वास लाने के द्वारा प्रत्युत्तर देती हैं। उसके बाद से, वे हर दिन उसका शब्द **सुनती** हैं और उसके वचन का पालन करती हैं। प्रभु यीशु अपनी भेड़ों को जानता है। वह उन में से प्रत्येक को उनके नाम से जानता है। उनमें से कोई भी उसके ध्यान से दूर नहीं जा सकतीं। उसकी ओर से कोई भी ऐसी लापरवाही नहीं हो सकती या उसकी नज़र चूक नहीं सकती कि भेड़ें भटक जाएं या खो जाएं। मसीह की भेड़ें उसके **पीछे पीछे चलती** हैं, पहले उस पर अपना विश्वास करने के द्वारा, और फिर उसके साथ आज्ञाकारिता में चलने के द्वारा।

10:28 मसीह ने अपनी भेड़ों को **अनन्त जीवन** दिया है। अनन्त जीवन का अर्थ वह जीवन है जो हमेशा बना रहता है। यह एक ऐसा जीवन *नहीं* है, जो व्यक्ति के आचरण पर *निर्भर* हो। यह **अनन्त जीवन** है, और इसका अर्थ है कि यह सदा बना रहने वाला जीवन है। परन्तु **अनन्त जीवन** भी जीवन का एक गुण है। यह स्वयं प्रभु यीशु मसीह का जीवन है। यह एक ऐसा जीवन है जो परमेश्वर की बातों का इस पृथ्वी पर आनन्द लेने की क्षमता रखता है, और यह एक ऐसा जीवन है जो हमारे स्वर्गीय घर के लिए भी उतना भी उपयुक्त है। इन वचनों की ओर सावधानीपूर्वक ध्यान दें, "**वे कभी नाश न**[32] **होंगी।**" यदि मसीह की कोई भेड़ नाश हो जाए, तो इसका अर्थ

होगा कि प्रभु यीशु मसीह अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर पाने में असफल होने का दोषी है, और यह एक असम्भव बात है। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है, और वह कभी असफल नहीं होता है। उसने इस पद में प्रतिज्ञा की है कि उसकी कोई भी भेड़ अनन्तकाल के लिए नरक में रहने के लिए नहीं जाएगी।

क्या इसका अर्थ यह है कि यदि एक बार कोई व्यक्ति उद्धार पा लेता है तो वह जैसा चाहे वैसा जीवन जी सकता है? क्या वह उद्धार पाने के बाद भी संसार की पापमय अभिलाषाओं को पूरा करना जारी रख सकता है? नहीं, अब उसके पास ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं होती। वह अपने चरवाहे के पीछे चलना चाहता है। हम मसीही जीवन इस लिए नहीं जीते कि एक मसीही बन जाएं या इसलिए कि हम अपने उद्धार को कायम रख सकें। हम एक मसीही जीवन इसलिए जीते हैं क्योंकि *हम* मसीही *हैं*। हम एक पवित्र जीवन जीना चाहते हैं, इसलिए नहीं क्योंकि हमें हमारा उद्धार छिन जाने का डर है, परन्तु उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए जो हमारे लिए मरा। अनन्त आत्मिक सुरक्षा का सिद्धान्त हमें लापरवाहीपूर्ण जीवन जीने के लिए उत्साहित नहीं करता, बल्कि यह हमारे पवित्र जीवन जीने के लिए एक सशक्त प्रेरणा है।

कोई भी एक विश्वासी को मसीह के **हाथ** से नहीं **छीन** सकता। उसका हाथ सर्वशक्तिमान है। इसी हाथ ने संसार की सृष्टि की है; और अब भी यह हाथ जगत को सम्भालता है। ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो एक भेड़ को उसकी पकड़ से **छीन** सके।

10:29 विश्वासी न सिर्फ मसीह के हाथ में रहता है; बल्कि वह **पिता के हाथ** में भी रहता है। यह सुरक्षा की दोहरी गारंटी है। परमेश्वर पिता **सब से बड़ा है और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता**।

10:30 अब प्रभु यीशु ने परमेश्वर के तुल्य होने का एक और दावा किया: ''**मैं और पिता एक हैं**।'' यहाँ पर शायद यह विचार व्यक्त किया गया है कि मसीह **और पिता** *सामर्थ में* एक हैं। प्रभु यीशु अभी अभी उस सामर्थ के विषय में बात कर रहा था जिसके द्वारा मसीह की भेड़ों की सुरक्षा होती है। इसलिए, उसने आगे यह समझाया कि उसकी सामर्थ और परमेश्वर पिता की सामर्थ समान है। अवश्य ही यही बात ईश्वरत्व के अन्य सहज गुणों पर भी लागू होती है। प्रभु यीशु मसीह पूर्ण अर्थों में परमेश्वर है और वह हर प्रकार से पिता के बराबर है।

10:31 यहूदियों को मसीह की बातें साफ साफ समझ में आ गईं। वे समझ गए कि वह सीधे सीधे अपने आप को ईश्वर के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। इसलिए उन्होंने **उसे पत्थरवाह** करने के लिए **पत्थर उठाए**।

10:32 इससे पहले कि वे पत्थर फेंक पाते, प्रभु **यीशु** ने उन्हें उन **बहुत से भले** कामों के बारे में स्मरण दिलाया जिसे उसने अपने **पिता की ओर** से दी गई आज्ञा का पालन करते हुए किया था। उसने उन से पूछा कि **उनमें से किस काम** ने उन्हें इतना क्रोधित कर दिया कि वे उसे **पत्थरवाह** करना चाहते हैं।

10:33 यहूदियों ने इस बात से इंकार किया कि वे उसके किसी आश्चर्यकर्म के कारण उसे मार डालना चाहते हैं। बल्कि, वे उसे इसलिए पत्थरवाह करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उसने अपने आप को **परमेश्वर** पिता के तुल्य बताने के द्वारा **परमेश्वर की निन्दा** की है। उन्होंने यह मानने से इंकार कर दिया कि वह एक साधारण मनुष्य से थोड़ा भी अधिक है। तौभी, वे यह साफ साफ समझ सकते हैं कि वह अपने आप को **परमेश्वर** बना रहा है, जो उसके दावों से प्रगट होता है। वे इस बात को सहन नहीं करेंगे।

10:34 यहाँ पर प्रभु यीशु ने यहूदियों के सामने भजन 82:6 को उद्धरित किया। उसने इस भाग को उनकी **व्यवस्था** कहा। दूसरे शब्दो में, यह उद्धरण पुराना नियम से लिया गया था जिसे वे परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करते थे। यह पूरा पद इस प्रकार से है, ''मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो।'' यह भजन इस्राएल के न्यायियों को सम्बोधित किया गया था। उन्हें ''ईश्वर'' कहा गया है, इसलिए नहीं क्योंकि वे वास्तव में ईश्वरीय थे, परन्तु इसलिए क्योंकि जब वे लोगों का न्याय करते थे तब वे परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में ऐसा करते थे। ''ईश्वर'' (*एलोहीम*) का शब्दश: अर्थ ''शक्तिशाली लोग'' होता है और यह न्यायियों के समान महत्वपूर्ण लोगों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। (शेष भजन से यह स्पष्ट है कि वे मनुष्य ही थे, ईश्वर नहीं, क्योंकि वे अन्धेर करते, प्रभावशाली व्यक्तियों का आदर करते, और गरीबों का न्याय बिगाड़ देते थे)।

10:35 प्रभु ने भजन संहिता के इस पद का उपयोग यह दर्शाने के लिए भी किया कि परमेश्वर ने **ईश्वर** शब्द

का प्रयोग उन मनुष्यों के लिए किया है **जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुँचा**। दूसरे शब्दों में, ये मनुष्य परमेश्वर के प्रवक्ता थे। परमेश्वर उनके माध्यम से इस्राएली जाति से बातें करता था। ''वे अधिकार और न्याय के स्थान पर परमेश्वर के रूप को प्रगट करते, और वे वह सत्ता थे जिसे परमेश्वर ने ठहराया था।'' प्रभु ने यह कहते हुए कि **''और पवित्रशास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती,''** अपना यह विश्वास प्रगट किया कि पुराना नियम परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। वह उन्हें अचूक लेख बताता है जिनका पूरा होना अवश्य है, और जिसका इंकार नहीं किया जा सकता। वास्तव में, पवित्रशास्त्र के एक एक शब्द परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए हैं, उनके विचार या धारणाएं मात्र नहीं। प्रभु का सारा तर्क एक ही शब्द पर आधारित है: **ईश्वर**।

10:36 प्रभु अपना तर्क छोटों से आरम्भ कर के बड़े की ओर ले जा रहा था। यदि पुराना नियम में अन्यायी न्यायियों को ''ईश्वर'' कहा गया है, तो फिर परमेश्वर के पुत्र को ईश्वर कहना अधिक सही क्यों न होगा। परमेश्वर का वचन उनके पास *आया*; वह परमेश्वर का वचन *था* और *है*। वे ईश्वर *कहलाते* थे; वह परमेश्वर *था* और *है*। उनके बारे में यह कभी नहीं कहा जा सकता था कि **पिता** ने उन्हें **पवित्र ठहराकर जगत में भेजा** है। उन्होंने आदम के दूसरे पतित पुत्रों की तरह इस संसार में जन्म लिया था। परन्तु प्रभु यीशु परमेश्वर **पिता** के द्वारा आदि से ही जगत का उद्धारकर्ता होने के लिए पवित्र ठहराया गया था, और वह स्वर्ग से जहाँ वह हमेशा से ही पिता के साथ निवास करता आया है, **जगत में भेजा** गया है। इसलिए प्रभु यीशु के पास पूरा अधिकार है कि वह परमेश्वर के तुल्य होने का दावा करे। जब वह **परमेश्वर का पुत्र** होने का दावा कर रहा था, जो पिता के तुल्य है, तब वह परमेश्वर की निन्दा नहीं कर रहा था। यहूदी स्वयं ''ईश्वर'' शब्द का प्रयोग उन भ्रष्ट मनुष्यों के लिए करते थे जो परमेश्वर के प्रवक्ता या उसकी ओर से ठहराए गए न्यायी मात्र थे। तो फिर वह 'ईश्वर' पदनाम पर दावा क्यों नहीं कर सकता क्योंकि वह वास्तव में परमेश्वर *था* और *है*। सैमुएल ग्रीन ने इसे बहुत सुन्दर रीति से व्यक्त किया है:

> यहूदियों ने उस पर दोष लगाया कि वह अपने आप को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। उसने इस बात का इंकार नहीं किया कि ऐसा कहने के द्वारा उसने अपने आप को परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत किया है। परन्तु उसने इस बात का इंकार अवश्य किया कि उसने परमेश्वर की निन्दा की है, और यह उसने इस आधार पर किया जो उसे ईश्वरीय उपाधि अर्थात्, परमेश्वर का पुत्र मसीह, इम्मानुएल होने के दावे को पूरी तरह से न्यायोचित ठहराता है। यहूदियों की प्रभु यीशु के प्रति लगातार दर्शायी जा रही शत्रुता इस बात को प्रमाणित करती है कि यहूदियों ने देखा कि प्रभु यीशु अपने उच्चतम दावों से थोड़ा भी पीछे नहीं हटता। पद 39 देखें।[33]

10:37 एक बार फिर से उद्धारकर्ता ने उन आश्चर्यकर्मों की दोहाई दी जिन्हें उसने इस बात को सिद्ध करने के लिए किया था कि उसे परमेश्वर ने भेजा है। किन्तु, इस वाक्यांश पर ध्यान दें: **''अपने पिता के काम**।'' आश्चर्यकर्म अपने आप में ईश्वरत्व के प्रमाण नहीं हैं। परन्तु प्रभु के आश्चर्यकर्म **पिता के काम** थे। इन आश्चर्यकर्मों ने दो तरीकों से उसे मसीह प्रमाणित किया। पहला, ये वे आश्चर्यकर्म थे जिनके बारे में पुराना नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी कि ये मसीह के द्वारा किए जाएंगे। दूसरा, ये दया और करूणा के आश्चर्यकर्म थे, ये ऐसे कार्य थे जिनसे मनुष्य जाति का भला होता था और जिसे किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता।

10:38 पद 38 को रायल ने संक्षेप में समझाया है जो हमारे लिए काफी सहायक है:

> यदि मैं अपने पिता के कार्य करता हूँ, तो, यदि तुम मेरी बातों के आधार पर मेरी प्रतीति नहीं करते, तो कम से कम मेरे कार्यों के आधार पर मेरी प्रतीति करो। यद्यपि तुम मेरे वचन के प्रमाण को स्वीकार करने से इंकार करते हो, तो मेरे कार्यों के प्रमाण को स्वीकार करो। इस रीति से जान लो और विश्वास कर लो कि मैं और पिता सचमुच में एक हैं, वह मुझ में है और मैं उस में, और यह दावा करने के द्वारा कि मैं उसका पुत्र हूँ, मैं परमेश्वर की निन्दा नहीं कर रहा हूँ।

10:39 एक बार फिर से यहूदी समझ गए कि अपने पहले के दावों का इंकार करने की बजाए वह उन्हें दृढ़ ही कर रहा है। इसलिए उन्होंने उसे पकड़ने का एक और प्रयास किया, परन्तु एक बार फिर से वह उनके हाथ से निकल गया। अब वह समय अधिक दूर नहीं था जब वह अपने आप को पकड़ने की अनुमति दे देगा, परन्तु जहाँ

तक अभी की बात है, उसका समय अभी नहीं आया था।

VI. परमेश्वर के पुत्र के तृतीय वर्ष की सेवकाई: पिरिया (10:40–11:57)

अ.यरदन के पार वापस जाना (10:40–42)

10:40 प्रभु यीशु **फिर से यरदन के पास उस स्थान पर चला गया** जहाँ से उसने अपनी सेवकाई आरम्भ की थी। तीन वर्ष से अद्‌भुत वचनों और कार्यों के माध्यम से उसके द्वारा की जा रही सेवकाई का अब समापन होने वाला था। उसने उन्हें वहीं समाप्त किया जहाँ से उसने आरम्भ किया था – यहूदी धर्म के तंत्र से बाहर, ठुकाराए जाने और अकेलेपन के स्थान पर।

10:41 जो **उसके पास** आए वे शायद सच्चे विश्वासी थे। वे उसके साथ लज्जित होने के लिए तैयार थे, वे इस्राएल की छावनी के बाहर उसके साथ अपना स्थान लेने के लिए तैयार थे। इन अनुयायियों ने **यूहन्ना** बपतिस्मा देनेवाले की प्रशंसा की। उन्होंने स्मरण किया कि यूहन्ना की सेवकाई सनसनीखेज या तड़क–भड़क वाली भले ही न रही हो, परन्तु यह सच्ची थी। उसने प्रभु यीशु मसीह के बारे में जो कुछ कहा था वह उद्धारकर्ता की सेवकाई में पूरा हुआ। यह बात हर एक मसीही को उत्साहित करे। भले ही हम बड़े बड़े आश्चर्यकर्म न कर सकें या लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न कर सकें, परन्तु कम से कम हम अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की सच्ची गवाही तो दे सकते हैं। यह परमेश्वर की दृष्टि में बहुत महत्व रखती है।

10:42 यह सुखद बात है कि इस्राएली जाति के द्वारा ठुकराए जाने के बाद भी, प्रभु यीशु को कुछ नम्र और दीन लोग तथा उसे स्वीकार करने वाले हृदय प्राप्त लोग मिल गए। यहाँ बताया गया है कि **बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया**। ऐसा ही हर युग में होता है। एक विश्वासयोग्य छोटा झुण्ड हमेशा ही पाया जाता है जो प्रभु यीशु मसीह के साथ अपना स्थान लेने के लिए तैयार रहता है, इसके लिए उन्हें संसार से तो निकाल दिया जाता है, उनसे बैर किया जाता है और उनका ठट्ठा उड़ाया जाता है, परन्तु वे परमेश्वर के पुत्र की मधुर सहभागिता का आनन्द लेते हैं।

ब. लाजर की बीमारी (11:1–4)

11:1 अब हम हमारे प्रभु की *सार्वजनिक* सेवकाई के सबसे अन्तिम और महान आश्चर्यकर्म के विषय में देखते हैं। एक प्रकार से यह उसका सबसे महान आश्चर्यकर्म था – एक मृतक का जिलाया जाना। **लाजर . . . बैतनिय्याह** नाम एक छोटे से गाँव में रहता था जो यरूशलेम के पूर्व में दो मील की दूरी पर स्थित था। **बैतनिय्याह** को **मरियम और उसकी बहन मरथा के गाँव** के नाम से भी जाना जाता था। मसीही लेखक पिन्क ने बिशप रायल को उद्धरित करते हुए कहा है:

> यह ध्यान देने योग्य बात है कि परमेश्वर की चुनी हुई सन्तानों की उपस्थिति एक ऐसी चीज़ है जो नगरों और देशों को परमेश्वर की दृष्टि में प्रसिद्ध बना देती है। नया नियम में मरथा और मरियम के गाँव का नाम लिया गया है, परन्तु नोप और अमोन का नाम नहीं आया है।[34]

11:2 यूहन्ना यहाँ पर बताता है कि बैतनिय्याह की **यह वही मरियम है जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोछा था**। भक्ति के इस कार्य को पवित्र आत्मा के द्वारा महत्व दिया गया था। प्रभु अपने लोगों के स्नेह को पसन्द करता है।

11:3 जब लाजर बीमार पड़ा, उस समय प्रभु यीशु यरदन के पूर्वी ओर था। **बहिनों ने** तुरन्त **उसे** यह खबर **भेजा** कि लाजर, **जिससे** वह प्रेम करता है, **बीमार** है। बहनों ने अपनी बात प्रभु के सामने बहुत ही मार्मिक रूप से प्रस्तुत की। उन्होंने उनके भाई के प्रति उसके प्रेम की दोहाई देते हुए उसे अपना प्रमुख तर्क बनाया कि उसे क्यों वहां आ कर उनकी सहायता करनी चाहिए।

11:4 जब प्रभु **यीशु ने कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं,"** तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि लाज़र नहीं मरेगा, परन्तु उसके कहने का अर्थ यह था कि इस **बीमारी** का अन्तिम परिणाम **मृत्यु** नहीं होगा। लाजर मर जाएगा, परन्तु वह मृतकों में से जिला दिया जाएगा। इस बीमारी का वास्तविक उद्‌देश्य **परमेश्वर की महिमा** था **कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो**। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया ताकि प्रभु

यीशु आकर लाजर को मृतकों में से जिलाए, और एक बार फिर से सच्चे मसीह के रूप में सब लोगों के सामने प्रगट हो। मनुष्य इस आश्चर्यकर्म के लिए **परमेश्वर** की महिमा करेंगे।

यहाँ पर किसी भी तरह का कोई संकेत नहीं पाया जाता कि लाज़र की बीमारी उसके जीवन के किसी विशेष पाप का परिणाम थी। बल्कि, वह बाइबल में प्रभु यीशु के एक भक्त चेले और उसके विशेष प्रेम पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

स. यीशु की बैतनिय्याह की ओर यात्रा (11:5-16)

11:5 जब हमारे घरों में कोई बीमार पड़ता है, तो हमें इस निष्कर्ष पर नहीं आ जाना चाहिए कि परमेश्वर हमसे अप्रसन्न है। यहाँ पर बीमारी सीधे सीधे प्रभु के प्रेम से जुड़ी थी, उसके क्रोध से नहीं। ''क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है।''

11:6, 7 हमारे मन में यह बात आ सकती है कि यदि प्रभु सचमुच में इन तीनों से प्रेम रखता था, तो उसे अपना सब काम छोड़ कर फुर्ती से उनके घर के लिए निकल जाना चाहिए था। इसकी बजाए, **जब उसने** यह समाचार **सुना** तो वह **जिस स्थान पर था, वहीं दो दिन और ठहर गया।** परमेश्वर द्वारा विलम्ब करने का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर इंकार कर रहा है। यदि हमारी प्रार्थनाओं का हमें तुरन्त उत्तर नहीं मिलता, तो शायद वह हमें ठहरने के लिए सीखा रहा है, और यदि हम धीरजपूर्वक ठहरते हैं, तो हम पाएंगे कि वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर ऐसी अद्‌भुत रीति से देगा जितना कि हमने अपेक्षा भी नहीं की थी। मरथा, मरियम, और लाजर के प्रति उसका प्रेम भी उसे बाध्य नहीं कर सका कि वह पिता द्वारा ठहराए गए समय से पहले कार्य करे। उसने जो कुछ किया वह पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए किया, और ईश्वरीय समय सारिणी का पालन करते हुए किया।

दो दिन **बाद**, जब कोई भी यही सोचेगा कि समय हाथ से निकल चुका है, प्रभु यीशु ने अपने **चेलों से फिर यहूदिया को** चलने के लिए कहा।

11:8 **चेलों** को यह मालूम था कि जन्म के अन्धे व्यक्ति को दृष्टि प्रदान करने के बाद किस तरह से **यहूदी** प्रभु यीशु को **पत्थरवाह** करना चाहते थे। उन्होंने आश्चर्य जताया कि इतना बड़ा व्यक्तिगत खतरा होने के बाद भी वह यहूदिया जाने का विचार भी कैसे कर सकता है।

11:9 प्रभु **यीशु ने** उन्हें इस प्रकार से **उत्तर दिया:** सामान्यत: **दिन में बारह घण्टे** उजियाला होता है, जिसमें मनुष्य अपना कार्य कर सकता है। जब तक मनुष्य इस तय समय में कार्य करता है, तो उसे ठोकर खाने का या गिर जाने का कोई खतरा नहीं होता **क्योंकि** वह देख सकता है कि वह कहाँ जा रहा है और वह क्या कर रहा है। **इस जगत का उजाला**, या दिन का उजाला उसे ठोकर खा कर दुर्घटनावश मृत्यु से बचाता है।

प्रभु के इन वचनों का आत्मिक अर्थ इस प्रकार से है: प्रभु यीशु परमेश्वर की इच्छा का पूर्ण रूप से पालन करते हुए चल रहा था। इसलिए तय समय से पहले मार डाले जाने का कोई खतरा नहीं है। जब तक उसका कार्य पूरा नहीं होगा तब तक वह सुरक्षित रहेगा।

एक प्रकार से, यह बात हर एक विश्वासी पर लागू होती है। यदि हम प्रभु की संगति में उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करते हुए चल रहे हैं, तो संसार की कोई भी शक्ति हमें परमेश्वर द्वारा तय किए गए समय से पहले मार नहीं सकती।

11:10 जो व्यक्ति **रात को** चलता है वह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है, बल्कि वह अपनी इच्छानुसार जीवन जी रहा है। ऐसा मनुष्य आसानी से **ठोकर खाता** है **क्योंकि** उसके पास ईश्वरीय मार्गदर्शन नहीं है कि उसके मार्ग को प्रकाशमान करे।

11:11 प्रभु यीशु ने लाजर की मृत्यु को *नींद* बताया। किन्तु, यह ध्यान देना आवश्यक है कि नया नियम में नींद को कभी भी प्राण पर लागू नहीं किया गया है, बल्कि शरीर पर लागू किया गया है। पवित्रशास्त्र में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं पाया जाता कि मृत्यु के समय प्राण सोई हुई अवस्था में रहता है। बल्कि, विश्वासी का प्राण मसीह के पास चला जाता है, जो कि बहुत बेहतर है। प्रभु यीशु ने इस वाक्य में अपनी सर्वज्ञता को प्रगट किया। वह जानता था कि लाजर पहले ही मर चुका है, यद्यपि उसे यह खबर मिली थी कि लाजर बीमार है। वह यह इसलिए जानता था क्योंकि वह परमेश्वर है। जबकि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नींद से जगा सकता है, सिर्फ प्रभु ही

लाजर को मृतकों में से जिला सकता था। यहाँ प्रभु यीशु ने यही करने की मंशा प्रगट की।

11:12 उसके **चेलों** को प्रभु द्वारा सोने के विषय में कही गई बात समझ में नहीं आई। वे यह नहीं समझ सके कि वह मृत्यु के बारे में कह रहा है। शायद उन्हें लगा कि सोना स्वास्थलाभ करने का लक्षण है, और वे सोचने लगे कि यदि लाजर चैन से सो पा रहा है, तो इसका अर्थ है कि वह खतरे से बाहर आ गया होगा और वह **बच जाएगा**। इस पद का अर्थ यह भी हो सकता है कि यदि लाज़र की बीमारी सिर्फ शारीरिक नींद से ही सम्बन्धित थी तो फिर उसकी सहायता करने के लिए बैतनिय्याह जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। सम्भव है कि चेले अपनी सुरक्षा को लेकर डरे हुए थे और वे मरियम और मरथा के घर में न जाने के लिए ऐसा बहाना बना रहे थे।

11:13, 14 यहाँ पर यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जब प्रभु **यीशु ने** सोने के विषय में **कहा**, तो वह **मृत्यु** के विषय में कह रहा था, परन्तु उसके चेलों को यह बात समझ में नहीं आई। इस विषय पर कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। प्रभु **यीशु** ने अपने चेलों को **साफ** साफ यह कह दिया था, ''**लाजर मर गया है**।'' चेलों ने कितना शान्त हो कर इस खबर को सुना! उन्होंने प्रभु से यह नहीं पूछा, ''तुझे यह कैसे पता चला?'' उसने पूर्ण अधिकार के साथ यह बात कही, और उन्होंने उसके ज्ञान पर कोई प्रश्न नहीं उठाया।

11:15 प्रभु यीशु इस बात से आनन्दित नहीं था कि लाजर मर गया है, परन्तु इसलिए **आनन्दित** था क्योंकि वह उस समय बैतनिय्याह में **न था**। यदि वह इस समय वहाँ होता, तो लाजर न मरता। चेले अब मृत्यु से बचाए जाने से भी बड़ा आश्चर्यकर्म देखेंगे। वे अब एक मनुष्य को मृतकों में से जी उठते हुए देखेंगे। इस तरह से, उनका विश्वास और दृढ़ हो जाएगा। इसलिए, प्रभु यीशु ने कहा कि वह उनके लिए **आनन्दित** है कि वह बैतनिय्याह को नहीं गया।

उसने आगे कहा, ''**जिस से तुम विश्वास करो**।'' प्रभु यह नहीं कह रहा था कि चेलों ने पहले से उस पर विश्वास नहीं किया है। अवश्य ही, उन्होंने उस पर विश्वास कर लिया था! परन्तु वे बैतनिय्याह में जो आश्चर्यकर्म देखने वाले थे उससे प्रभु पर उनका विश्वास और अधिक दृढ़ हो जाएगा। इसलिए, उसने उन्हें आग्रह किया कि वे उसके साथ **चलें**।

11:16 **थोमा** सोच रहा था कि यदि प्रभु यीशु उस क्षेत्र में जाता है, तो वह यहूदियों के द्वारा मार डाला जाएगा। यदि चेले प्रभु यीशु के साथ जाते हैं, तो निश्चय ही वे भी मार डाले जाएंगे। उसने निराशावादी और उदास होकर सभों से आग्रह किया कि प्रभु यीशु के साथ चलें। उसके वचन किसी महान विश्वास या साहस के नहीं, परन्तु हत्तोत्साह के उदाहरण हैं।

द. प्रभु यीशु: पुनरूत्थान और जीवन (11:17–27)

11:17, 18 लाजर को कब्र में रखे **चार दिन** बीत जाना इस बात का एक और प्रमाण था कि वह मर चुका था। ध्यान दें कि पवित्र आत्मा ने यह दर्शाने के लिए कि लाजर के पुनरूत्थान का आश्चर्यकर्म एक सच्चा आश्चर्यकर्म था, हर प्रकार से सावधानी बरती। सन्देशवाहकों द्वारा प्रभु यीशु को ढूंढ़ने के लिये निकलने के कुछ ही समय बाद लाजर की मृत्यु हो गई होगी। बैतनिय्याह से बेतहबारा, जहाँ प्रभु यीशु ठहरा हुआ था, एक दिन की यात्रा थी। लाजर की बीमारी की खबर सुनकर, प्रभु यीशु दो दिन और ठहर गया था। उसके बाद एक दिन यात्रा में निकल गया। इस तरह से लाजर को कब्र में रखे चार दिन हो गए थे।

जैसा कि पहले भी इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है, **बैतनिय्याह यरूशलेम** के पूर्व की ओर **कोई दो मील** की दूरी पर था।

11:19 बैतनिय्याह की यरूशलेम से नजदीकी के कारण **बहुत से यहूदी** लोगों के लिए सम्भव हो गया कि **मरथा और मरियम के पास** उन्हें **शान्ति** देने के लिए बड़ी संख्या में आ सकें। कुछ ही समय में उन्हें यह समझ में आ जाएगा कि उनकी सांत्वना पूरी तरह से अनावश्यक हो गई और विलाप का यह घर महाआनन्द के घर में बदल गया।

11:20 **सो मरथा** प्रभु **यीशु के आने का समाचार सुन कर उससे** मिलने को निकल पड़ी। उनकी मुलाकात गाँव के बाहर हुई। यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि **मरियम घर** पर क्यों ठहरी **रही**। शायद उसे प्रभु के आने की खबर नहीं मिल पाई हो। शायद वह दु:ख

के कारण शिथिल हो गई हो, या वह प्रार्थना और विश्वास के भाव में उसकी प्रतीक्षा कर रही हो। क्या उसे प्रभु से उसकी निकटता के कारण यह आभास हो चुका था कि आगे क्या होने वाला है? हमें इन सारी बातों के विषय में कुछ भी नहीं मालूम है।

11:21 सच्चे विश्वास के कारण ही **मरथा** यह विश्वास कर पाने में समर्थ थी कि प्रभु यीशु लाजर को मृत्यु से बचा सकता था। उसके बाद भी उसका विश्वास सिद्ध नहीं था। उसका विचार था कि प्रभु यीशु देहरूप में वहाँ उपस्थित हो कर ही ऐसा कर सकता था। वह यह नहीं समझ सकी कि वह एक मनुष्य को दूर से ही चंगाई दे सकता है, बल्कि वह मरे हुए को जिला भी सकता है। अक्सर दु:ख के समय में, हम मरथा के समान बात करते हैं। हम सोचते हैं कि यदि कोई ऐसे दवाई या इंजेक्शन होता, तो मेरा यह प्रिय न मरता। परन्तु ये सारी बातें प्रभु के हाथ में है, और उसके लोगों को उसकी अनुमति के बिना कुछ नहीं हो सकता।

11:22 एक बार फिर से इस बहन का विश्वास ध्यान देने लायक था। वह नहीं जानती थी कि प्रभु यीशु उनकी सहायता *किस प्रकार* से करेगा, परन्तु उसे विश्वास था कि वह उनकी सहायता अवश्य करेगा। उसे भरोसा था कि **परमेश्वर** प्रभु के निवेदन को सुनकर उत्तर देगा और वह उन्हें इस त्रासदी से बाहर निकालेगा। किन्तु, अब तक वह यह विश्वास कर पाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी कि उसका भाई मृतकों में से जी उठेगा। मरथा ने ''मांगेगा'' के लिए (मूल भाषा में) जिस शब्द का प्रयोग किया वह शब्द सामान्यत: एक सृजे गए प्राणी द्वारा अपने सृष्टिकर्ता से याचना या प्रार्थना करते समय उपयोग में लाया जाता है। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अब तक मरथा प्रभु यीशु को ईश्वर के रूप में नहीं पहचान पाई थी। वह समझती थी कि वह कोई असाधारण और महान व्यक्ति है, परन्तु पुराने समय के भविष्यद्वक्ता से बड़ा नहीं है।

11:23 उसके विश्वास को और ऊपर ऊँचाई तक खींचने के लिए, प्रभु यीशु ने एक चौंकाने वाली घोषणा की कि लाज़र फिर से **जी उठेगा**। प्रभु यीशु ने अद्‌भुत रीति से इस दुखी स्त्री से बातचीत की और उसे एक–एक कदम कर के इस विश्वास की ओर बढ़ाया कि वह (यीशु) परमेश्वर का पुत्र है।

11:24 **मरथा** को लगा कि लाजर किसी न किसी दिन **जी उठेगा**, परन्तु उसने यह नहीं सोचा था कि ऐसा उसी दिन हो जाएगा। वह मृतकों के **पुनरूत्थान** पर विश्वास करती थी और उसका मानना था कि मृतकों का पुनरूत्थान (उसके शब्दों में) **''अन्तिम दिन''** होगा।

11:25 प्रभु ने मरथा को मानों कुछ इस प्रकार से कहा, ''मरथा तुम ने मेरी बातों को ठीक से नहीं समझा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि लाजर अन्तिम दिन जी उठेगा। मैं परमेश्वर हूँ, और **पुनरूत्थान** और **जीवन** देने का अधिकार मेरे हाथ में है। मैं अभी इसी समय लाजर को मृतकों में से जिला सकता हूँ, और मैं ऐसा अवश्य करूंगा।''

उसके बाद प्रभु ने उस आने वाले समय के बारे में बताया जब सारे सच्चे विश्वासी जी उठेंगे। यह उस समय होगा जब प्रभु यीशु अपने लोगों को स्वर्ग ले जाने के लिए फिर से आएगा।

उस समय विश्वासियों के दो वर्ग होंगे। एक वर्ग में वे विश्वासी होंगे जो मर गए, और दूसरे वर्ग में वे विश्वासी होंगे जो उसके आने के समय पर जीवित रहेंगे। वह पहले वर्ग के लोगों को *पुनरूत्थान* और दूसरे वर्ग के लोगों को *जीवन* देने आएगा। पहले वर्ग के लोगों के विषय में पद 25 में बताया गया है – **''जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।''** इसका अर्थ यह है कि जो विश्वासी मसीह के आने से पहले मर गए वे मृतकों में से जिलाए जाएंगे।

बुरकिट ने इस पर यह टिप्पणी दी है:

> हे प्रेम, तू मृत्यु से शक्तिशाली है! कब्र मसीह को उसके मित्रों से अलग नहीं कर सकती। अन्य मित्र कब्र के किनारे तक हमारे साथ देते हैं, और वे फिर वहाँ हमें छोड़ देते हैं। न मृत्यु और न जीवन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है।[35]

बेन्गाल भी इस पद पर टिप्पणी देते हुए कहते हैं, ''यह पूरी तरह से संगत और उपयुक्त सच्चाई है कि आज तक किसी भी ऐसे व्यक्ति के बारे में यह सुना नहीं गया है कि वह प्रभु यीशु की उपस्थिति में मरा हो।''

11:26 विश्वासियों के दूसरे झुण्ड का वर्णन पद 26 में किया गया है। जो उद्धारकर्ता के आगमन के समय में जीवित रहेगा, जो उस पर विश्वास करता है, वह **न मरेगा**। वे क्षण भर में, पलक झपकते ही, बदल जाएंगे, और उन लोगों के साथ स्वर्ग में ले लिये जाएंगे जो मृतकों

में से जिलाए जाएंगे। लाजर की मृत्यु के द्वारा कितना अनमोल सत्य हमारे सामने आया है! प्रभु कड़वाहट के बदले मिठास और राख के बदले सुन्दरता देता है। उसके बाद प्रभु ने मरथा के विश्वास को परखने के लिए उससे सीधे-सीधे प्रश्न किया, ''**क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?**''

11:27 मरथा का विश्वास महावैभव के तेज से चमक उठा। उसने अंगीकार किया कि प्रभु यीशु **परमेश्वर का पुत्र मसीह** है, जिसके बारे में भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह **जगत में आने वाला** है। हमें इस बात की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि मरियम ने यह अंगीकार प्रभु यीशु मसीह द्वारा उसके भाई को मृतकों में से जिलाए जाने से *पहले* किया, बाद में नहीं!

इ. प्रभु यीशु लाजर की कब्र में विलाप करता है (11:28-37)

11:28, 29 इस अंगीकार के बाद, मरथा तुरन्त गाँव आई और उत्तेजना में **मरियम** को बताया, ''**गुरू यहीं है, और तुझे बुलाता है**।'' विश्व का सृष्टिकर्ता और जगत का उद्धारकर्ता बैतनिय्याह में आया था और उसे बुला रहा था। आज भी वह ऐसा ही करता है। वही अद्‌भुत व्यक्ति खड़ा होकर अपने लोगों को सुसमाचार के वचनों के माध्यम से बुलाता है। प्रत्येक को आमंत्रित किया जा रहा है कि वह अपने हृदय के द्वार को खोले और उद्धारकर्ता को भीतर आने दे। मरियम ने तुरन्त प्रत्युत्तर दिया। उसने कोई समय नहीं गंवाया, परन्तु **तुरन्त उठकर** प्रभु यीशु के पास चली गई।

11:30, 31 प्रभु **यीशु** की मुलाकात मरथा और मरियम से बैतनिय्याह गाँव के बाहर हुई।

यहूदी यह नहीं जानते थे कि वह निकट ही है क्योंकि मरथा ने मरियम को इस बात की जानकारी चुपके से दी थी। यहूदियों को यही लगा कि **मरियम** बाहर **कब्र पर रोने को जाती है**।

11:32 **मरियम** उद्धारकर्ता के **पाँवों पर गिर** पड़ी। यह या तो आराधना की एक मुद्रा थी, या फिर वह शोक के कारण निढाल हो गई थी। मरथा के समान ही, उसने भी इस बात का पछतावा प्रगट किया कि प्रभु यीशु उस पल बैतनिय्याह में नहीं था, यदि वह होता, तो उनका **भाई न मरता**।

11:33 मरियम और उसके मित्रों को दु:ख में देख कर प्रभु यीशु भी भीतर से कराह उठा और **उदास** हो गया। नि:सन्देह वह इस समय उस उदासी, कष्ट, और मृत्यु के बारे में विचार करने लगा था जो मनुष्य के पाप के कारण इस संसार में आ गए थे। इससे उन्हें भीतरी शोक हो चला।

11:34 अवश्य ही, प्रभु यह जानता था कि लाजर को कहाँ दफनाया गया है, परन्तु उसने यह प्रश्न इसलिए पूछा ताकि लोगों की आशा को जगाए, विश्वास को उत्साहित करे, और मनुष्यों को सहयोग के लिए आव्हान करे। नि:सन्देह, विलाप करने वाले पूरी गम्भीरता से और सच्ची इच्छा के साथ प्रभु को कब्र तक ले गए।

11:35 पद 35 अंग्रेजी व हिन्दी बाइबल का सबसे छोटा पद है।[36] यह नया नियम के उन तीन स्थलों में से एक है जहाँ उद्धारकर्ता के रोने का उल्लेख आया है। (यरूशलेम की दशा देख कर वह रो उठा था, साथ ही, गतसमनी में भी उसने आँसू बहाए थे।) यह तथ्य कि प्रभु **यीशु** रोया इस बात का प्रमाण है कि वह सचमुच में मानव भी था। उसने शोक के असली आँसू बहाए जब उसने मानव जाति पर पाप के भयानक प्रभाव को देखा। यह तथ्य कि प्रभु **यीशु** मृत्यु पर रोया यह दर्शाता है कि मसीहियों के लिए रोना अनुचित नहीं है जब उनके प्रियजनों को परमेश्वर अपने पास बुला लेता है। किन्तु, मसीही उन लोगों के समान शोक नहीं करते, जिनके पास कोई आशा नहीं है।

11:36 **यहूदी** लोग समझ रहे थे कि मनुष्य के पुत्र के आँसुओं का कारण लाजर के प्रति उसका प्रेम था। अवश्य ही, उनका ऐसा विचार सही था। परन्तु *उनके* प्रति भी उसका प्रेम गहरा और अटल था, और उन में से अनेक इसे समझ पाने में असफल रहे।

11:37 एक बार फिर से प्रभु यीशु की उपस्थिति के कारणों लोगों के मध्य आपस में प्रश्न उठने लगे। कुछ ने उसे उसी व्यक्ति के रूप पहचान में लिया जिसने एक **अन्धे** व्यक्ति को आँखे दी थी। वे सोचने लगे कि वह लाजर को मरने से क्यों **न** बचा **सका**। अवश्य ही, वह ऐसा कर सकता था, परन्तु ऐसा करने की बजाए वह अब और बड़ा आश्चर्यकर्म करने वाला था, और यह आश्चर्यकर्म विश्वास करने वाली आत्माओं को और भी बड़ी आशा प्रदान करेगा।

फ.सातवां चिन्ह: लाजर का जिलाया जाना (11:38-44)

11:38 ऐसा लगता है कि लाजर की **कब्र** जमीन के नीचे एक **गुफा** थी, जिसके नीचे उतरने के लिए किसी सीढ़ी का सहारा लेना पड़ता था। गुफा के मुँह पर **एक पत्थर** रखा रहता था। यह प्रभु यीशु की कब्र के समान नहीं थी, जो चट्टानों को खोद कर बनाई गई थी और कोई भी व्यक्ति चल कर उसके भीतर जा सकता था, और उसे चढ़ने या उतरने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

11:39 प्रभु यीशु ने देखने वालों को आदेश दिया कि वे **पत्थर को** कब्र के मुँह से हटा दें। वह यह कार्य सिर्फ अपने मुँह से बोल कर भी कर सकता था। किन्तु, सामान्यत: परमेश्वर मनुष्यों के लिए वह कार्य नहीं करता जो वे स्वयं अपने लिए कर सकते हैं।

मरथा कब्र को खोलने के विचार से ही घबरा गई। वह जानती थी कि उसके भाई की लोथ को वहाँ रखे **चार दिन** हो चुके हैं और उसे आशंका थी कि यह सड़ने लगी होगी। स्पष्टत: लाजर की लोथ पर किसी तरह का सुगन्धित द्रव्य मला नहीं गया होगा। उसे उसकी मृत्यु के दिन ही दफना दिया गया होगा। लाजर का **चार दिन** तक कब्र में होना अपने आप में एक महत्व रखता है। चार दिन कब्र में होने का अर्थ है कि लाजर के सोते रहने या बेहोश पड़े रहने की कोई सम्भावना नहीं थी। सभी यहूदी जानते थे कि वह मर चुका था। उसका पुनरूत्थान सिर्फ एक आश्चर्यकर्म के रूप में ही समझा जा सकता है।

11:40 यह स्पष्ट नहीं है कि प्रभु **यीशु** ने पद 40 में कही गई बातों को कब कहा। पद 23 में, उसने मरथा को बताया था कि उसका भाई जी उठेगा। परन्तु नि:सन्देह उसने यहाँ जो कुछ कहा वह उसी बात का सार था जो वह पहले कह चुका था। इस पद के क्रम की ओर ध्यान दें, "**विश्वास करेगी . . . देखेगी**।" प्रभु यीशु ने मानों कुछ इस तरह से कहा, "यदि तू सिर्फ विश्वास कर लेगी, तो तू मुझे एक ऐसा आश्चर्यकर्म करते हुए देखेगी जिसे सिर्फ परमेश्वर ही कर सकता है। तू परमेश्वर की महिमा को देखेगी जो मुझ में प्रगट होगी। परन्तु पहले तुझे **विश्वास** करना आवश्यक है, तब तू **देखेगी**।"

11:41 तब **उस पत्थर** को कब्र पर से हटाया गया। आश्चर्यकर्म करने से पहले, प्रभु **यीशु** ने अपने **पिता** को उसकी प्रार्थना सुनने के लिए धन्यवाद दिया। इस अध्याय में कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया गया है कि प्रभु यीशु ने इससे पहले कोई प्रार्थना की हो। परन्तु नि:सन्देह वह इस पूरी अवधि के दौरान अपने पिता से बातचीत कर रहा है और उसने प्रार्थना की कि लाजर के जी उठने के द्वारा पिता के नाम की महिमा हो। यहाँ पर उसने लाज़र के जी उठने के प्रति पहले से ही पूरी रीति से आश्वस्त हो कर परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

11:42 प्रभु यीशु ने ऊँचे शब्द से इसलिए प्रार्थना की ताकि **भीड़** यह **विश्वास करे कि** उसे परमेश्वर ने **भेजा** है, और यह भी, कि पिता ने उसे बताया है कि उसे क्या करना और क्या कहना है, और यह, कि वह पूरी तरह से अपने पिता पर निर्भर रहते हुए हर एक कार्य करता है। यहाँ पर एक बार फिर से हम यह देखते हैं कि परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह के बीच की सारभूत एकता पर जोर दिया गया है।

11:43 यह पुराना नियम के उन कुछ स्थलों में से एक है, जहाँ प्रभु यीशु द्वारा **बड़े शब्द से** पुकारने का उल्लेख पाया जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि यदि उसने **लाज़र** का नाम लेकर नहीं पुकारा होता, तो कब्र से सारे मुर्दे बाहर आ जाते!

11:44 लाजर किस प्रकार से बाहर **निकल आया**? कुछ लोगों का विचार है कि वह कब्र से लड़खड़ाते हुए बाहर आया; कुछ अन्य लोगों का विचार है कि उसका शरीर कपड़ों से कसकर लिपटा हुआ था और इसलिए उसके लिए यह असम्भव था कि वह खुद बाहर आ सके। उनका मानना है कि उसका शरीर ऊपर तक हवा में उठ कर आया जब तक कि उसके पैर प्रभु यीशु मसीह के सामने जमीन पर नहीं टिक गए। यह तथ्य, कि उसका **मुँह अंगोछे से लिपटा हुआ था,** इस बात का एक और प्रमाण है कि वह सचमुच में मर चुका था। कोई भी व्यक्ति जिसका **मुँह** इस प्रकार से **अंगोछे** से बंधा हो, चार दिन तक जीवित नहीं रह सकता। एक बार फिर से प्रभु ने लोगों से सहायता ली और उन्हें आदेश दिया कि वे लाजर को **खोलकर जाने दें**। सिर्फ मसीह मृतक को जीवित कर सकता है, परन्तु वह ठोकर खिलाने वाले पत्थर को हटाने, और पूर्वाग्रह तथा अंधविश्वास के अंगोछों को खोलने का कार्य हमें देता है।

ग. विश्वासी और अविश्वासी यहूदी (11:45–57)

11:45, 46 देखने वाले **बहुतों** को इस आश्चर्यकर्म के द्वारा यह समझ में आ गया कि प्रभु यीशु मसीह ईश्वर है, और उन्होंने **उस पर विश्वास किया**। परमेश्वर को छोड़ और कौन चार दिन से कब्र में पड़े हुए मृतक को आवाज दे कर जीवित कर सकता है?

परन्तु किसी भी व्यक्ति पर आश्चर्यकर्म का प्रभाव उसकी नैतिक अवस्था पर निर्भर करता है। यदि एक व्यक्ति का हृदय बुरा, विद्रोही, और अविश्वासी हो, तो वह विश्वास नहीं करेगा, भले ही वह किसी को मृतकों में से जी उठते हुए देख भी ले। ऐसी ही स्थिति यहाँ पर भी थी। इस आश्चर्यकर्म को देखने वाले कुछ विश्वासी इस अकाट्य प्रमाण के बाद भी यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि प्रभु यीशु उनका मसीहा है। और इसलिए उन्होंने **फरीसियों के पास जाकर** यह बताया कि बैतनिय्याह में क्या हुआ है। क्या उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि फरीसी प्रभु यीशु पर विश्वास लाएं? बल्कि, शायद ऐसा उन्होंने इसलिए किया कि फरीसी प्रभु यीशु मसीह के विरूद्ध और अधिक भड़क उठें और उसे मार डालें।

11:47 इस पर महायाजकों और फरीसियों ने अपनी **मुख्य सभा** को बुलाया कि वे आगे कदम उठाने के विषय में चर्चा करें। ''**हम करते क्या हैं?**'' – इस प्रश्न का अर्थ यह है, ''इस विषय पर हम क्या करें? हम कोई कदम उठाने में इतनी देर क्यों कर रहे हैं? **यह मनुष्य** अनेक आश्चर्यकर्म करता जा रहा है, और हमारे पास उसे रोकने का कोई उपाय नहीं है।'' यहूदी अगुवों ने ये बातें स्वयं को दोषी ठहराते हुए कहीं। उन्होंने स्वीकार किया कि प्रभु यीशु **बहुत चिन्ह** दिखा रहा है। तो फिर हम उस पर क्यों विश्वास नहीं करते? वे उस पर इसलिए विश्वास नहीं करना *चाहते* थे क्योंकि वे उद्धारकर्ता से अधिक प्राथमिकता अपने पापों को देते थे।

रायल ने बिल्कुल ठीक कहा है:

> यह एक अद्‌भुत स्वीकारोक्ति है। हमारे प्रभु के बड़े से बड़े शत्रुओं ने भी यह अंगीकार किया कि हमारे प्रभु ने आश्चर्यकर्म किए, और बहुत से आश्चर्यकर्म किए। क्या हम इस बात पर सन्देह कर सकते हैं कि वे प्रभु के इन आश्चर्यकर्मों की सच्चाई का इंकार कर देते, यदि वे ऐसा कर सकते? परन्तु उन्होंने ऐसा करने का प्रयास नहीं किया। उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किए थे, और सार्वजनिक रूप से किए थे, और इतने अधिक लोग इन आश्चर्यकर्मों के गवाह थे कि उन अविश्वासी यहूदियों में इन आश्चर्यकर्मों का इंकार कर पाने की सामर्थ नहीं थी। इस तथ्य के प्रकाश में, आज के आधुनिक सन्देहवादी और अविश्वासी लोग हमारे प्रभु के आश्चर्यकर्मों को छल और भ्रम कैसे कह सकते हैं! यदि हमारे प्रभु के समय के फरीसी जिन्होंने उसे आगे बढ़ने से रोकने के लिए जमीन आसमान एक कर दिया था, इस तथ्य पर विवाद करने का साहस न कर सके कि वह आश्चर्यकर्म करता है, तो फिर अब उन्नीस शताब्दियां बीत जाने के बाद, उसके आश्चर्यकर्मों को इंकार करने की शुरूवात करना एक अटपटी बात है।[37]

11:48 अगुवों को लगा कि अब वह निष्क्रिय हो कर नहीं रह सकते। उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि लोगों की भीड़ आश्चर्यकर्म के कारण प्रभु यीशु की प्रतीति कर सकती थी। यदि लोग प्रभु यीशु को अपने राजा के रूप में स्वीकार कर लें, तो इसका अर्थ था, रोम के लिए संकट। रोमी लोग यह सोचते कि प्रभु यीशु उनका साम्राज्य उखाड़ फेंकने के लिए आया है; तब वे आगे बढ़ कर यहूदियों को दण्ड देते। इस वाक्यांश, ''**हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे**'' का अर्थ है कि रोमी लोग मन्दिर को नाश कर देंगे और यहूदी लोगों को तितर बितर कर देंगे। ये सब कुछ 70 ईस्वी में हुआ – किन्तु, इसलिए नहीं, क्योंकि यहूदियों ने प्रभु को *स्वीकार* कर लिया, बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने उसे *ठुकरा* दिया।

एफ.बी. मेयर ने इसे इस तरह से व्यक्त किया है:

> मसीहत के कारण व्यवसाय खतरे में पड़ जाते हैं, यह लाभ देने वाले, किन्तु दुष्टतापूर्ण तरीके से होने वाले उद्योगों का महत्व कम आंकती है, शैतान की वेदी से ग्राहक को चुरा लेती है, निजी स्वार्थ पर आक्रमण करती है, और संसार को उलट–पुलट कर रख देती है। यह एक थकाऊ, खिजाऊ, और लाभ का नाश करने वाली चीज़ है।[38]

11:49, 50 कैफा 26 ईस्वी से 36 ईस्वी तक का महायाजक था। उसने प्रभु यीशु पर चलाए गए धार्मिक मुकद्‌दमें के समय अध्यक्षता की थी और वह उस समय

भी उपस्थित था जब प्रेरित 4:6 में पतरस और यूहन्ना को यहूदी महासभा में लाया गया था। वह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता था, भले ही यहाँ पर वह जो भी कह रहा हो।

कैफा के अनुसार, महायाजकों और फरीसियों का यह सोचना गलत था कि यहूदी लोग प्रभु यीशु के कारण मरेंगे। बल्कि, उसने भविष्यद्वाणी की थी कि प्रभु यीशु यहूदी जाति के लिए मरेगा। उसने कहा कि यह बेहतर होगा कि प्रभु यीशु **लोगों के लिए . . . मरे** बजाए इसके कि **सारी जाति** को रोमी शासन की ओर से कष्ट उठाना पड़े। ऐसा लगता है मानो कैफा ने प्रभु यीशु के इस संसार में आने के वास्तविक उद्‌देश्य को सचमुच में समझ लिया था। हम शायद यह सोचने लगे हों कि कैफा ने प्रभु यीशु को पापियों के स्थानापन्न के रूप में स्वीकार कर लिया था – जो मसीही विश्वास का केन्द्रीय सिद्धान्त है। परन्तु यह दुखद है कि ऐसा नहीं था। उसने जो कुछ कहा वह सत्य था, परन्तु वह स्वयं प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करता था जिससे उसकी आत्मा का उद्धार हो सके।

11:51, 52 इन पदों में यह स्पष्ट हो जाता है कि कैफा ने ऐसा क्यों कहा था। **यह बात उसने अपनी ओर से नहीं** कही थी, अर्थात्, ये बातें उसके मन से नहीं निकली थीं। उसने यह बात अपनी इच्छा से नहीं कहा था। बल्कि, उसने यह जो बातें कहीं थीं, वे उसे परमेश्वर की ओर से दी गई थीं, और इसमें अधिक गहरा सन्देश पाया जाता है, जिसे वह नहीं समझ पाया था। यह एक ईश्वरीय भविष्यद्वाणी थी **कि** प्रभु **यीशु** इस्राएली **जाति के लिए मरेगा**। यह सन्देश कैफा को इसलिए दिया गया था, क्योंकि वह **उस वर्ष का महायाजक** था। परमेश्वर ने उसके माध्यम से उसके महायाजक पद के कारण बात की थी, उसकी व्यक्तिगत धार्मिकता के कारण नहीं, क्योंकि वह एक पापी मनुष्य था।

कैफा की भविष्यद्वाणी यह नहीं थी कि प्रभु **केवल** इस्राएल **जाति** के लिए मरेगा, **परन्तु** वह **इसलिए** मरेगा कि पृथ्वी पर तितर बितर अन्यजातियों में से अपने चुने हुए लोगों को **एक कर दे**। कुछ लोग समझ रहे थे कि कैफा पृथ्वी भर में तितर बितर यहूदियों के बारे में बात कर रहा है, परन्तु अधिक सम्भावना इस बात की है कि वह उन अन्यजातियों के बारे में बात कर रहा था जो सुसमाचार के प्रचार के द्वारा मसीह पर विश्वास लाएंगे।

11:53, 54 फरीसियों ने बैतनिय्याह के आश्चर्यकर्म को देख कर भी प्रभु यीशु की प्रतीति नहीं की। बल्कि, वे परमेश्वर के पुत्र के प्रति और अधिक द्वेष से भर गए। **सो उसी दिन से वे** उसे **मार डालने** के लिए और भी बढ़-चढ़ कर **सम्मति करने लगे**।

यहूदियों के बढ़ते द्वेष को देख कर, प्रभु यीशु **इफ्राइम नाम एक नगर को** चला गया। हमें यह नहीं मालूम कि इफ्राइम कहाँ पर स्थित था, इस स्थान के बारे में हम सिर्फ इतना ही जानते हैं कि यह **जंगल के निकट** एक शान्त और एकान्त स्थान था।

11:55 यह घोषणा कि **यहूदियों का फसह निकट था** हमें यह स्मरण दिलाती है कि अब प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई का समापन होने पर था। *इसी फसह* के समय उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना था। **फसह से पहले** लोगों के लिए यह अनिवार्य था कि वे **यरूशलेम को** जाएं **कि अपने आप को शुद्ध करें**। उदाहरण के लिए, यदि एक यहूदी ने किसी लोथ को जाने अनजाने में छू लिया हो, तो उसके लिए यह आवश्यक था कि वह इस अशुद्धता से शुद्ध होने के लिए एक नियत संस्कार को पूरा करे। यह शुद्धिकरण विभिन्न प्रकार से धोए जाने और चढ़ावों के द्वारा किया जाता था। दुखद पहलू यह है कि जिस समय यहूदी लोग अपने आप को शुद्ध करने का प्रयास कर रहे थे, उसी समय वे फसह के मेम्ने की मृत्यु का षड़यंत्र रच रहे थे। मनुष्य के हृदय की दुष्टता का यह क्या ही भयानक प्रगटीकरण है!

11:56, 57 जब लोग **मन्दिर में** एकत्रित हुए, तो उन्होंने आश्चर्यकर्म करने वाले प्रभु **यीशु** नामक व्यक्ति के बारे में सोचना आरम्भ किया। एक चर्चा निकल पड़ी कि क्या वह **पर्ब्ब में आएगा**। कुछ लोगों ने जिस कारण से सोचा कि वह नहीं आएगा वह कारण पद 57 में दिया गया है।

महायाजकों और फरीसियों की ओर से यह अधिकारिक आदेश निकाला गया कि प्रभु यीशु को पकड़ लिया जाए। जिस किसी को पता चले कि वह कहाँ है, तो तुरन्त अधिकारियों को इसकी सूचना दी जाए ताकि वे **उसे पकड़ लें** और मार डालें।

VII. परमेश्वर के पुत्र द्वारा अपने अपनों के मध्य में सेवकाई (12–17 अध्यायों में)

अ.प्रभु यीशु का बैतनिय्याह में अभिषेक (12:1–8)

12:1 **बैतनिय्याह** के घर में प्रभु **यीशु** को जाना प्रिय लगता था। वहाँ वह **लाजर**, मरियम, और मरथा के साथ मधुर संगति का आनन्द लेता था। इस समय जब वह **बैतनिय्याह** आ रहा था, तब मानवीय दृष्टि से, वह अपने आप को खतरे में डाल रहा था, क्योंकि पास में ही यरूशलेम था जो उन सारी ताकतों का मुख्यालय बना हुआ था जो उसके विरूद्ध में षड़यंत्र रच रही थीं।

12:2 यद्यपि बहुत से लोग प्रभु यीशु के विरोध में थे, अब भी कुछ ऐसे हृदय थे जो उसके प्रति सच्चाई से धड़कते थे। **लाजर उनमें से एक था जो** प्रभु के **साथ भोजन करने के लिए बैठे थे**, और **मरथा सेवा कर रही** थी। पवित्रशास्त्र में यह नहीं बताया गया है कि लाजर ने अपने जी उठने के बाद से क्या क्या देखा था या क्या क्या सुना था। शायद परमेश्वर ने उसे मना किया कि वह किसी से भी ऐसी जानकारी को प्रगट न करे।

12:3 सुसमाचार में ऐसे अनेक स्थल पाए जाते हैं जिनमें एक स्त्री के द्वारा प्रभु यीशु का अभिषेक किए जाने का वर्णन किया गया है। कोई भी दो स्थल ठीक ठीक एक समान नहीं हैं, परन्तु सामान्यत: यह स्थल मरकुस 14:3–9 का सामानान्तर स्थल माना जाता है। मसीह के प्रति मरियम की भक्ति ने उसे उभारा कि वह **आध सेर बहुमोल इत्र** उसके **पाँवों** पर उण्डेल दे। वह मानों कह रही थी कि कोई भी वस्तु इतनी अनमोल नहीं है कि उसे प्रभु को न दी जा सके। वह हमें और हमारे पास की हर एक वस्तु को पाने के योग्य है।

जितनी बार हम मरियम के बारे में पढ़ते हैं, वह प्रभु यीशु के पाँवों के पास ही पाई गई है। यहाँ पर वह **अपने बालों से उसके पाँव** पोछ रही है। चूंकि स्त्री की महिमा उसके बाल होते हैं, वह अपनी महिमा को उसके चरणों में समर्पित कर रही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मरियम ने इस इत्र की खुशबू को इस घटना के बाद भी अपने साथ फैलाया होगा। इस प्रकार से, जब मसीह की आराधना की जाती है, तो आराधना करने वाले स्वयं उस सुगन्ध को कुछ समय तक फैलाते हैं। जिस घर में प्रभु यीशु को उसका स्थान दिया जाता है उस घर में सबसे अधिक सुखदायक सुगन्ध भर जाती है।

2:4, 5 यहाँ पर शरीर इस अत्यंत पवित्र अवसर पर हस्तक्षेप करता दिखाई देता है। जो व्यक्ति अपने प्रभु को **पकड़वाने पर** था, वह इस बहुमूल्य इत्र को इस तरीके से उपयोग में लाए जाते हुए नहीं देख सका।

यहूदा ने प्रभु यीशु को **तीन सौ दीनार** के लायक भी नहीं समझा। उसका मानना था कि इस इत्र को **बेचकर** उससे मिले पैसे को **कंगालों को** दे **दिया** जाता। परन्तु यह कोरा पाखण्ड था। उसे प्रभु यीशु से अधिक कंगालों की चिन्ता नहीं थी। वह अभी प्रभु को पकड़वाने वाला था, **तीन सौ दीनार** के लिए नहीं, परन्तु उसके दसवें हिस्से के लिए। रायल ने इसे बहुत ही सुन्दर तरीके से व्यक्त किया है:

> जो व्यक्ति तीन वर्ष तक मसीह के चेले के रूप में उसके पीछे पीछे चला, जिसने उसके सारे आश्चर्यकर्मों को देखा,उसकी सारी शिक्षाओं को सुना, उसके हाथों से भलाइयों को प्राप्त किया, जो प्रेरितों में से एक गिना गया, और उसके बाद भी अन्त में उसका हृदय सड़ा हुआ निकला, ये सारी बातें पहले पहले तो अविश्वसनीय और असम्भव लगती हैं! तौभी यहूदा के जीवन को देख कर यह सिद्ध हो जाता है कि यह सम्भव है। कुछ बातें, शायद, मनुष्य के पतन की सीमा के रूप में बहुत ही कम सोची–समझी जाती हैं।[39]

12:6 यूहन्ना ने तुरन्त ही आगे यह जोड़ा कि यहूदा ने **यह बात** इसलिए नहीं कही क्योंकि उसे **कंगालों** के प्रति सच्चा प्रेम था, **परन्तु इसलिए कि वह चोर** और लोभी था। यहूदा के पास पैसे (चंदे) की **थैली रहती थी;** और **उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह** (उसमें से) **निकाल लेता था।**

12:7 प्रभु यीशु ने कुछ इस प्रकार से उत्तर दिया, "उसे ऐसा करने से वंचित मत करो। **उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए रहने दो**।[40] वह स्नेह और आराधना के भाव से इसे मुझ पर बहा देना चाहती है। उसे ऐसा करने दिया जाए।"

12:8 कभी भी ऐसा समय नहीं आएगा जब **कंगाल** इस पृथ्वी पर नहीं पाए जाएंगे कि दूसरे उन पर भलाई

दिखा न पाएं। परन्तु पृथ्वी पर प्रभु की सेवकाई का समय तेजी से समाप्त होता जा रहा था। मरियम के पास यह अवसर **सदा** *नहीं* रहेगा कि वह यह इत्र उस पर उण्डेल सके। इससे हमें यह स्मरण करना चाहिए कि आत्मिक अवसर तेजी से बीतते जा रहे हैं। हम प्रभु के लिए जो कुछ कर सकते हैं, उसे करने में देर न करें।

ब. लाजर के विरूद्ध षड़यंत्र (12:9-11)

12:9 यह खबर तेजी से फैल गई कि प्रभु यीशु यरूशलेम के निकट है। उसकी उपस्थिति को गुप्त रखना अब और अधिक सम्भव नहीं रहा। **यहूदियों में से** अनेक लोग उसे देखने के लिए बैतनिय्याह को आए, और कुछ अन्य लोग **लाजर** को देखने आए, **जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया था।**

12:10, 11 इस पद में मनुष्य के हृदय में घृणा का उन्माद एक बार फिर से चित्रित किया गया है। **महायाजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मत्ति की।** क्या कभी कोई सोचेगा कि उसने जिलाए जाने के द्वारा एक बहुत बड़ा देशद्रोह किया है! इस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था, और तौभी उन्होंने उसे मार डाले जाने के योग्य समझा।

लाजर के कारण **बहुत से यहूदी** लोगों ने प्रभु **यीशु पर विश्वास किया।** इसलिए लाजर यहूदी ''संगठन'' का शत्रु था, और उसे रास्ते से हटाना आवश्यक था। जो दूसरों को प्रभु यीशु के पास ले कर आते हैं वे सताव के पात्र बन जाते हैं और यहाँ तक कि शहीद भी हो जाते हैं।

कुछ टीकाकारों का मानना है कि इसलिए कि महायाजक लोग सदूकी थे, जो पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं रखते थे, वे लाजर को मार डालने के द्वारा पुनरूत्थान के प्रमाण को नष्ट कर देना चाहते थे।

स. विजयी प्रवेश (12:12-19)

12:12, 13 अब हम **यरूशलेम** में प्रभु **यीशु** के विजयी प्रवेश की घटना के विषय में देखते हैं। यह उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले वाला रविवार था। यह ठीक ठीक जान पाना कठिन है कि यह भीड़ प्रभु यीशु के बारे में क्या सोचती थी। क्या वे सचमुच में यह समझ गए थे कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र और इस्राएल का मसीह है? या फिर वे उसे मात्र एक ऐसे राजा के रूप में देखते थे जो उन्हें रोमी अत्याचार से छुटकारा देगा? क्या वे सिर्फ उस समय के लिए भावुक हो गए थे? नि:सन्देह इस भीड़ में से कुछ लोग सच्चे विश्वासी थे, परन्तु आम तौर पर अधिकांश लोगों के हृदय में प्रभु को लेकर कोई वास्तविक रूचि नहीं थी।

खजूर की डालियाँ दु:ख के बाद मिलने वाले चैन और शान्ति का एक चिन्ह मानी गई हैं (प्रका. 7:9)। ''**होशाना**'' शब्द का अर्थ है, ''हमें अभी बचा, हम तुझ से प्रार्थना करते हैं।'' इन दोनों विचारों को एक साथ रख कर देखने पर, ऐसा लगता है कि लोग प्रभु यीशु को परमेश्वर द्वारा भेजे गए एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देख रहे थे जो उन्हें रोमी अत्याचार से बचाएगा और अन्यजातियों के हाथों इतने वर्षों तक उठाए गए उनके दुखों के बाद उन्हें चैन और शान्ति देगा।

12:14, 15 प्रभु यीशु **गदहे के बच्चे** पर सवार हो कर नगर को गया, गदहे का बच्चा उन दिनों में आवागमन का एक सामान्य साधन था। किन्तु, उससे भी अधिक, इस तरह से गदहे के बच्चे पर सवार हो कर, वह भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा था।

यह उद्धरण जकर्याह 9:9 से लिया गया है। इस स्थल में भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि जब इस्राएल का **राजा** आएगा, तो वह **गदहे के बच्चे पर चढ़ा** हुआ आएगा। **सिय्योन की बेटी** यहूदी लोगों के लिए उपयोग में लाया गया एक प्रतीकात्मक शब्द है, क्योंकि **सिय्योन** यरूशलेम नगर की एक पहाड़ी थी।

12:16 चेले यह समझ **न** पाए कि जो कुछ हो रहा है वह वास्तव में जकर्याह की भविष्यद्वाणी की ठीक ठीक पूर्णता है, कि प्रभु यीशु वास्तव में यरूशलेम में इस्राएल के अधिकारिक राजा के रूप में प्रवेश कर रहा है। **परन्तु** जब प्रभु वापस स्वर्ग को चला गया ताकि पिता के दाहिने हाथ पर उसकी **महिमा** हो, तब चेलों पर यह प्रगट हुआ कि ये घटनाएं पवित्रशास्त्र में दी गई भविष्यद्वाणियों को पूरा कर रही थीं।

12:17, 18 जो भीड़ प्रभु यीशु को यरूशलेम में प्रवेश करते हुए देख रही थी, उसमें वे लोग भी थे जिन्होंने **लाजर** को **मरे हुओं में से** जिलाए जाते हुए देखा था। इन लोगों ने दूसरे लोगों का बताया कि जो व्यक्ति गदहे

के बच्चे पर बैठा हुआ है उसी व्यक्ति ने लाजर को मृतकों में से जिलाया था। इस उल्लेखनीय **आश्चर्यकर्म** की खबर जैसे ही फैली, लोगों की एक बड़ी **भीड़** प्रभु यीशु से मिलने के लिए आ गई। परन्तु यह दुखद बात है, कि उनके आने का अभिप्राय सच्चा विश्वास नहीं, परन्तु उनकी आतुरता थी।

12:19 जैसे जैसे भीड़ बढ़ती गई, और उद्धारकर्ता के प्रति रूचि बढ़ती गई, फरीसी अत्यंत भड़क उठे। वे कुछ भी ऐसा न कर सके या कह सके कि उससे जरा भी प्रभाव पड़े। क्रोधित होकर वे अतिश्योक्तिपूर्ण बातें कहते हुए चीख उठे कि सारा **संसार** प्रभु यीशु के **पीछे** चला गया है। वे यह नहीं समझ सके कि लोगों की रूचि बस थोड़े समय के लिए ही थी, और जो प्रभु यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में ग्रहण कर सचमुच उसकी आराधना करना चाहते हैं वे बहुत थोड़े हैं।

द. कुछ यूनानी प्रभु यीशु को देखना चाहते थे (12:20–26)

12:20 जो **यूनानी** प्रभु यीशु को देखने के लिए आए थे वे ऐसे अन्यजाति थे जिन्होंने यहूदी धर्म को अपना लिया था। यह तथ्य कि वे **पर्ब्ब में भजन करने** आए थे यह दर्शाता है कि वे अब अपने पूर्वजों की धार्मिक परम्पराओं का पालन नहीं करते थे। इस समय प्रभु यीशु के पास उनका आना इस तथ्य का चित्रण करता है कि जब यहूदी लोगों ने प्रभु यीशु का तिरिस्कार किया, तो अन्यजाति उसका सुसमाचार सुनेंगे और उनमें से बहुतेरे उस पर विश्वास लाएंगे।

12:21 कोई कारण नहीं बताया गया है कि वे **फिलिप्पुस के पास** क्यों **आए**। शायद उसके यूनानी नाम और **गलील के बैतसैदा** का निवासी होने के कारण यहूदी धर्म को अपनाने वाले यूनानी लोग उसकी ओर आकर्षित हुए हों। उनका निवदेन सचमुच में एक कुलीन निवेदन था, ''**श्रीमान हम** प्रभु **यीशु से भेंट करना चाहते हैं**।'' कोई भी व्यक्ति जिसके हृदय में सच्ची लालसा हो, बिना प्रतिफल के वापस नहीं भेजा जाता।

12:22 शायद फिलिप्पुस को निश्चय नहीं था कि प्रभु इन यूनानियों से भेंट करेगा। मसीह ने पहले चेलों से कहा था कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अन्यजातियों के पास मत जाना, इसलिए **फिलिप्पुस** पहले **अन्द्रिआस** के पास गया, और फिर दोनों ने साथ जाकर प्रभु **यीशु से** यह बात **कही**।

12:23 यूनानी लोग प्रभु यीशु को क्यों देखना चाहते थे? यदि हम इन पंक्तियों को ध्यान से देख कर इसका कारण समझने का प्रयास करेंगे तो सारांश में हम यह कह सकते हैं कि प्रभु यीशु की बुद्धि ने उन्हें आकर्षित किया और वे उसे अपना एक लोकप्रिय दार्शनिक अगुवा बना कर उसकी बड़ाई करना चाहते थे। वे जानते थे कि उसके और यहूदी अगुवों के बीच में तनाव चल रहा है और यूनानी चाहते थे कि प्रभु यीशु अपना जीवन बचा ले, इसलिए शायद वे चाहते थे कि वह उनके साथ यूनान को चले। उनका सिद्धान्त था, ''अपने आप को बचाओ,'' परन्तु प्रभु **यीशु** ने **उन से** कह दिया कि उसका सिद्धान्त कटनी के नियम के बिल्कुल विपरीत है। वह अपना जीवन बलिदान करने के द्वारा **महिमा** पाएगा, आरामदायक जीवन के द्वारा नहीं।

12:24 बीज तब तक अन्न नहीं उपजा सकता जब तक पहले यह **भूमि में पड़कर मर नहीं जाता**। यहाँ पर प्रभु यीशु ने अपने आप को **गेहूँ का दाना** कहा है। यदि वह नहीं मरेगा, तो वह **अकेला** रह जाएगा। यदि वह अकेले ही स्वर्ग की महिमा का आनन्द लेगा, तो उसके साथ उसकी महिमा में सहभागी होने के लिए एक भी उद्धार पाया हुआ पापी नहीं रहेगा। परन्तु यदि वह मर जाएगा, तो वह उद्धार के लिए ऐसा मार्ग खोलेगा जिसके द्वारा बहुत से लोग बचाए जाएंगे।

यही बात हम पर भी लागू होती है, जैसा कि टी.जी. रेगलेण्ड ने कहा है:

> यदि हम गेहूँ का दाना बनने से इंकार कर देते हैं – भूमि पर गिर कर मरने से; यदि मसीह के लिए हम अपने भविष्य को लेकर त्याग नहीं करते, अपना चरित्र, अपनी सम्पत्ति, और अपने स्वास्थ को दांव पर नहीं लगाते; न ही हम बुलाए जाने पर अपना घर छोड़ते, न अपने पारिवारिक बन्धनों को तोड़ते; *तो हम अकेले रह जाएंगे।* परन्तु यदि हम फलवन्त होना चाहते हैं, तो हमें अपने धन्य प्रभु का अनुसरण करना आवश्यक है – गेहूँ का दाना बन कर मरने के द्वारा – *तब हम बहुत सा फल लाएंगे।*[41]

12:25 अनेक लोग समझते हैं कि भोजन, कपड़ा, और सुख–विलास ही जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है। वे

इन्हीं वस्तुओं के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु इस तरह से अपने जीवन से प्रेम रखने के द्वारा, वे यह समझने से चूक जाते हैं कि शरीर से अधिक महत्वपूर्ण आत्मा होती है। अपनी आत्मा के कल्याण को अनदेखा करने के द्वारा, वे अपना जीवन खो देते हैं। दूसरी ओर, ऐसे लोग भी होते हैं जो इन सांसारिक वस्तुओं को मसीह के कार्य के लिए हानि समझते हैं। उसकी सेवा करने के लिए, वे उन वस्तुओं से परहेज करते हैं जिन्हें दूसरे मनुष्य बहुत अधिक महत्व देते हैं। ऐसे ही लोग **अनन्त जीवन** के लिए अपने प्राणों **की रक्षा** करेंगे। अपने जीवन से बैर रखने का अर्थ है, अपने निजी हितों से अधिक प्रभु यीशु से प्रेम रखना।

12:26 मसीह की सेवा करने के लिए, एक व्यक्ति को उसके **पीछे** हो लेना आवश्यक है। वह चाहता है कि उसके सेवक उसकी शिक्षाओं का पालन करें और नैतिक रूप से उसके समान बनें। उन्हें उसकी मृत्यु के आदर्श को अपनाने की आवश्यकता है। सभी सेवकों को यह प्रतिज्ञा दी गई है कि उनका स्वामी लगातार उनके साथ रहेगा और उनकी रक्षा करेगा, और यह बात न सिर्फ वर्तमान के जीवन पर लागू होती है परन्तु अनन्त जीवन पर भी। आज हम जो सेवा करते हैं उसे परमेश्वर भविष्य में एक दिन स्वीकार करेगा। जो भी लज्जा या शर्मिन्दगी हमें आज यहाँ उठानी पड़ रही है वह निश्चय ही उस महिमा के सामने बहुत ही छोटी है जिसे हमें स्वर्ग में परमेश्वर **पिता** सबके सामने देगा!

इ. निकट आ रही मृत्यु से प्रभु यीशु का सामना (12:27–36)

12:27 प्रभु यीशु के विचार अब उन घटनाओं की ओर तेजी से केन्द्रित होते जा रहे थे जो शीघ्र ही उसके साथ घटने वाली थीं। वह क्रूस के बारे में सोच रहा था, और उस समय के विषय में चिन्तन कर रहा था जब वह पाप को अपने ऊपर लेकर, हमारे पापों के विरूद्ध परमेश्वर के क्रोध को झेलेगा। अपने तीव्र दु:ख के समय के बारे में सोचते हुए उसका **जी व्याकुल** हो गया। वह ऐसे क्षण में प्रार्थना कैसे कर सकता था? क्या उसे अपने **पिता** से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उसे इस **घड़ी से बचा** ले? वह ऐसी प्रार्थना नहीं कर सकता था क्योंकि क्रूस पर चढ़ना संसार में उसके आने का उद्देश्य था। उसने मरने के लिए जन्म लिया था।

12:28 यह प्रार्थना करने की बजाए, कि वह क्रूस पर चढ़ने से बचाया जाए, प्रभु यीशु ने यह प्रार्थना की कि उसके पिता के **नाम** की महिमा हो। उसे अपने आराम या सुरक्षा की तुलना में पिता के सम्मान में अधिक रूचि थी। अब परमेश्वर ने स्वर्ग से आकाशवाणी की, और कहा कि उसने उसके नाम की **महिमा** की है और उसकी **फिर** से **महिमा** की जाएगी। परमेश्वर के नाम की महिमा प्रभु यीशु के द्वारा संसार पर रहते हुए की गई सेवकाई के द्वारा हुई थी। उसने तीस वर्ष मौन रहकर नासरत में बिताया था, तीन वर्ष तक लोगों के बीच में सार्वजनिक रूप से सेवकाई की थी, उद्धारकर्ता के अद्भुत वचनों और कार्यों के द्वारा परमेश्वर के नाम की महिमा हुई। परन्तु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, पुनरूत्थान, और स्वर्गारोहण के द्वारा परमेश्वर के नाम की और महान महिमा होगी।

12:29 वहाँ खड़े लोगों में से कुछ लोग परमेश्वर की वाणी को गर्जन समझ बैठे। इस प्रकार के लोग हमेशा आत्मिक बातों को प्राकृतिक रूप देना चाहते थे। जो लोग आश्चर्यकर्मों को एक सच्चाई के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं रहते वे लोग हमेशा आश्चर्यकर्मों को किसी प्राकृतिक शक्ति के द्वारा किया गया बताने का प्रयास करते हैं। अन्य लोग यह जानते थे कि यह गर्जन नहीं था, और वे यह नहीं समझ पाए कि यह परमेश्वर की वाणी है। वे सिर्फ इतना ही समझ पाए कि यह मनुष्य से भी बड़ी शक्ति का शब्द है, वे सिर्फ इस निष्कर्ष तक ही पहुँच पाए कि यह किसी **स्वर्गदूत** की आवाज है। परमेश्वर की वाणी को वे ही लोग सुन और समझ सकते हैं जिनकी सहायता पवित्र आत्मा करता है। हो सकता है कि लोग बार बार सुसमाचार को सुनें, और उसके बाद भी यह उनके लिए तब तक अर्थहीन बना रहता है जब तक पवित्र आत्मा उस सुसमाचार के द्वारा उनसे बातें नहीं करता।

12:30 प्रभु यीशु ने सुनने वालों को समझाया कि **यह शब्द** *प्रभु* को सुनाने के **लिए नहीं** कहा गया था। बल्कि यह इसलिए कहा गया कि वहाँ खड़े हुए लोग इसे सुनें।

12:31 उसने कहा, **"अब इस जगत का न्याय होता है।"** कुछ ही समय के पश्चात् संसार महिमा और जीवन के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने वाला था। ऐसा करने के

द्वारा, संसार अपने आप को दोषी ठहराएगा। मसीह को भयानक रीति से ठुकरा दिए जाने के कारण उस पर दण्ड की आज्ञा सुनाई जाएगी। मसीह यहाँ पर यही कह रहा था। दोषी मानवजाति पर दण्ड की आज्ञा सुनाई जाने पर थी। **इस जगत का सरदार** शैतान है। सचमुच में कलवरी पर शैतान की बुरी तरह से पराजय हुई थी। उसने सोचा था कि एक ही बार में वह हमेशा के लिए प्रभु यीशु को समाप्त कर देगा। बल्कि, उद्धारकर्ता ने मनुष्य के उद्धार के लिए एक मार्ग खोल दिया, और उसी के साथ साथ उसने शैतान और उसकी सारी सेना को भी पराजित कर दिया। शैतान को सुनाया गया दण्ड अभी लागू नहीं किया गया है, परन्तु उसकी नाश पर मुहर लगा दी गई है। वह अब भी संसार भर में घूम घूम कर अपने बुरे कार्यों को कर रहा है, परन्तु यह कुछ ही समय की बात है और उसके बाद वह आग की झील में डाल दिया जाएगा।

12:32 इस पद का पहला भाग क्रूस पर मसीह की मृत्यु के विषय में कह रहा है। उसे लकड़ी के क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया जाएगा और **पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया** जाएगा। प्रभु ने कहा कि यदि वह इस तरह से क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, तो वह **सब को अपने पास** खींचेगा। इस वाक्य की बहुत सी व्याख्याएं की गई हैं। कुछ लोगों का मानना है कि मसीह उद्धार करने या दण्ड देने के लिए लोगों को अपनी ओर खींचेगा। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि यदि मसीह सुसमाचार के प्रचार में ऊँचा उठाया जाएगा, तब उस सन्देश में महान सामर्थ होगी, और लोग उसके पास खिंचे चले आएंगे। परन्तु शायद सही व्याख्या यह है कि **सब** *प्रकार* के लोग उसकी ओर खींचे जाएंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि बिना अपवाद के सब लोग, परन्तु हर जाति, गोत्र, और भाषा के लोग।

12:33 जब प्रभु यीशु ने ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बारे में कहा, तो उसने यह संकेत दिया कि **वह कैसी मृत्यु मरेगा**, अर्थात्, क्रूस पर चढ़ाया जाकर। एक बार फिर से यहाँ पर हमें उसकी सर्वज्ञता का प्रमाण मिलता है। वह पहले से ही यह जानता था कि वह बिस्तर में या दुर्घटना में नहीं मरेगा, परन्तु वह क्रूस पर ठोंक कर मार डाला जाएगा।

12:34 लोग प्रभु को **ऊँचे पर** चढ़ाए जाने की बात को सुनकर उलझन में पड़ गए। वे जानते थे कि वह मसीह होने का दावा करता है, और वे पुराना नियम के द्वारा यह भी जानते थे कि मसीह सर्वदा जीवित रहेगा (यशा. 9:7; भजन 110:4; दानि. 7:14; मीका 4:7)। ध्यान दें कि लोगों ने प्रभु यीशु को यह कहते हुए उद्धरित किया, "**मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है**।" वास्तव में उसने कहा था, "यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा।" यह सत्य है कि प्रभु ने अपने आप को अनेक बार मनुष्य का पुत्र कहा था, और शायद उसने यह भी कहा था कि मनुष्य का पुत्र ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा, इसलिए लोगों के लिए दोनों बातों को एक साथ जोड़ देना कठिन नहीं था।

12:35 जब लोगों ने प्रभु यीशु से पूछा कि मनुष्य का पुत्र कौन है , तो उसने एक बार फिर से अपने आप को जगत की **ज्योति** कहा। उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि **ज्योति** उनके साथ सिर्फ थोड़े समय ही रहेगी। वे ज्योति के पास आकर ज्योति में चलें; अन्यथा **अन्धकार** शीघ्र ही उन्हें **घेर** लेगा, और वे अज्ञानता में ठोकर खा कर गिर पड़ेंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु ने अपने आप को सूर्य और सूर्य द्वारा दिन को देने वाला प्रकाश कहा। सूर्य सुबह के समय उदय होता है, दोपहर को अपनी चरम पर होता है, और संध्या के समय क्षितिज में ढल जाता है। यह हमारे साथ कुछ घण्टों तक ही रहता है। जब यह हमारे लिए उपलब्ध रहता है उस समय हमें इसका सदुपयोग कर लेना चाहिए, क्योंकि जब रात आएगी, तो हमें इससे कोई लाभ नहीं मिलेगा। आत्मिक दृष्टि से, जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह ज्योति में चलता है। जो उसे ठुकरा देता है वह **अन्धकार में चलता है** और **वह नहीं जानता कि किधर जाता है**। उसके पास ईश्वरीय मार्गदर्शन नहीं होता, और वह अपने जीवन भर ठोकर खाता रहता है।

12:36 एक बार फिर से प्रभु यीशु ने अपने श्रोताओं को यह स्मरण दिलाया कि **जब तक** अवसर है उसी दौरान उस पर **विश्वास** कर लें। ऐसा करने के द्वारा, वे **ज्योति के सन्तान** बन जाएंगे। उन्हें जीवन भर और अनन्त काल तक मार्गदर्शन का आश्वासन दिया जाएगा। इन वचनों को कहने के बाद, प्रभु यीशु लोगों के पास से **चला गया** और उसने कुछ देर तक अकेले में समय बिताया।

फ. अधिकांश यहूदियों का विश्वास कर पाने में असफल होना (12:37–43)

12:37 इस समय यूहन्ना कुछ देर के लिए विषय को विराम देकर यह आश्चर्य व्यक्त करता है कि यद्यपि प्रभु यीशु ने **इतने** ढेर सारे महान **चिन्ह दिखाए**, तौभी लोगों ने **उस पर विश्वास न किया**। जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया था, कि उनके अविश्वास का कारण किसी प्रमाण का अभाव नहीं था। प्रभु ने अपने ईश्वरत्व के सबसे अधिक ठोस प्रमाण प्रस्तुत किये, परन्तु लोगों ने विश्वास न करना चाहा। वे अपने ऊपर एक राजा चाहते थे, जो उन पर राज्य करे, परन्तु वे मन फिराना नहीं चाहते थे।

12:38 यहूदियों का अविश्वास यशायाह 53:1 की पूर्णता थी। यह प्रश्न, ''**हे प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है?**'' इस उत्तर की आशा करता है, ''बहुत कम लोगों ने!'' चूंकि बाइबल में भुजा शक्ति या सामर्थ को प्रगट करता है, **प्रभु का भुजबल** परमेश्वर की महान सामर्थ को दर्शाता है। परमेश्वर की सामर्थ सिर्फ उन लोगों पर प्रगट होती है जो प्रभु यीशु मसीह के आगमन के समाचार पर विश्वास लाते हैं। चूंकि बहुत कम लोगों ने मसीह के सम्बन्ध में सुसमाचार पर विश्वास लाया, इसलिए परमेश्वर की सामर्थ बहुत कम लोगों पर प्रगट हुई।

12:39 जब प्रभु यीशु ने अपने आप को इस्राएली जाति के सामने प्रस्तुत किया, तो उन्होंने उसे ठुकरा दिया। बार बार वह उद्धार का प्रस्ताव लेकर उनके पास आया, परन्तु वे उन्हें ''नहीं'' कहते रहे। लोगों ने सुसमाचार का जितना तिरिस्कार किया, उनके लिए इसे स्वीकार करना उतना कठिन होता गया। जब मनुष्य ने ज्योति को देखने से अपनी आँखे बन्द कर ली, तो परमेश्वर ने उनके लिए ज्योति देख पाना और कठिन बना दिया। परमेश्वर उनके जीवन में न्यायिक अंधेपन को आने देता है । यह एक ऐसा अंधापन है जो उनके द्वारा परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करने के परिणामस्वरूप, परमेश्वर के न्याय के रूप में उन पर आता है ।

12:40 यह उद्धरण यशायाह 6:9, 10 से लिया गया है। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों की **आँखे अन्धी** कर दी और **उनका मन कठोर** कर दिया। उसने पहले होकर ऐसा नहीं किया, लेकिन जब उन्होंने अपने आँखे बन्द कर लीं और अपने मन को कठोर कर लिया, उसके बाद ही उसने ऐसा किया। इस्राएल के हठ और मसीह को जानबूझ कर ठुकराने के कारण, उन्होंने अपने आप को दृष्टि, समझ, मनफिराव, और चंगाई से अलग कर लिया।

12:41 यशायाह 6 में भविष्यद्वक्ता के बारे में वर्णन किया गया है कि उसने पिता की **महिमा** को देखा। यूहन्ना यहाँ पर बताता है कि यशायाह ने जिस **महिमा** को देखा वह *मसीह* की महिमा थी, और उसने जिसके विषय में **बातें की** वह मसीह था। इस प्रकार से यह पद प्रमाणों की उस श्रृंखला की एक और महत्वपूर्ण कड़ी है जो यह सिद्ध करते हैं कि प्रभु यीशु परमेश्वर है।

12:42 यहूदियों के बहुत से **सरदारों** (अधिकारियों) को यह विश्वास हो गया कि प्रभु यीशु ही मसीह था। किन्तु, वे अपने इस विश्वास को दूसरों के साथ बांटने का साहस नहीं कर रहे थे, अन्यथा उनका बहिष्कार कर दिया जाता। हम ऐसा सोचना पसन्द करेंगे कि ये लोग प्रभु यीशु मसीह के सच्चे अनुयायी थे, परन्तु इस बात में सन्देह है। जहाँ सच्चा विश्वास होता है, वहाँ मसीह को अंगीकार किया जाता है, आज नहीं तो कल। जब मसीह को सचमुच में उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया जाता है, तो कोई भी व्यक्ति इसे प्रगट करने से हिचकता नहीं है, चाहे इसके लिए उसे कोई भी परिणाम क्यों न भुगतना पड़े।

12:43 यह स्पष्ट है कि ये लोग **परमेश्वर की** ओर से **प्रशंसा** पाने की तुलना में अपने संगी **मनुष्यों की** ओर से **प्रशंसा** पाने में अधिक रूचि रखते थे। वे परमेश्वर की तुलना में मनुष्यों का समर्थन पाने में अधिक रूचि रखते थे। क्या इस प्रकार का व्यक्ति सचमुच में मसीह का एक सच्चा विश्वासी हो सकता है? उत्तर के लिए, अध्याय 5, पद 44 देखें।

ग. अविश्वास का खतरा (12:44–50)

12:44 पद 44 का सारांश इस प्रकार से है: ''**जो मुझ पर विश्वास करता है** वह वास्तव में मुझ पर ही नहीं, **बरन** मेरे पिता जिसने मुझे भेजा है पर भी विश्वास करता है।'' यहाँ पर एक बार फिर से प्रभु ने परमेश्वर

पिता के साथ अपनी पूर्ण एकता के बारे में शिक्षा दी। एक पर विश्वास न कर दूसरे पर विश्वास कर पाना असम्भव है। मसीह पर विश्वास करने का अर्थ है, परमेश्वर पिता पर विश्वास करना। कोई भी पिता पर विश्वास नहीं कर सकता जब तक वह पुत्र को उसी के तुल्य आदर न दे।

12:45 एक अर्थ में, कोई भी परमेश्वर पिता को नहीं देख सकता। वह आत्मा है और इसलिए अदृश्य है। परन्तु प्रभु यीशु इस संसार में आया कि हम जानें कि पिता कैसा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रभु यीशु हमें यह बताता है कि पिता भौतिक रूप से कैसा है, परन्तु यह कि नैतिक रूप से कैसा है। उसने हम पर परमेश्वर के चरित्र को प्रगट किया है। इसलिए, जिसने भी मसीह को देखा है उसने परमेश्वर पिता को देखा है।

12:46 **ज्योति** का उदाहरण देना प्रभु को बहुत प्रिय था। एक बार फिर से उसने अपने आप को **ज्योति** के रूप में प्रस्तुत किया जो **जगत में** इसलिए आई कि जो उस पर विश्वास करते हैं **अन्धकार में न रहें**। मसीह से अलग रह कर, मनुष्य घोर अंधकार में है। उन्हें जीवन, मृत्यु, या अनन्तकाल की सही समझ नहीं है। परन्तु जो मसीह पर विश्वास लाते हैं उन्हें सत्य को अंधेरे में टटोलना नहीं पड़ता, क्योंकि उन्होंने सत्य को उस में पा लिया है।

12:47 मसीह के पहले आगमन का उद्देश्य **जगत को दोषी** ठहराना नहीं **परन्तु जगत का उद्धार** करना था। जिन्होंने उसके वचन को सुनने और उस पर विश्वास लाने से इंकार कर दिया, उस ने उन्हें दण्ड नहीं दिया। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह इन अविश्वासियों को आने वाले दिन में दोषी नहीं ठहराएगा, परन्तु प्रथम आगमन पर वह इस प्रकार का न्याय करने को नहीं आया था।

12:48 अब प्रभु आने वाले उस दिन की ओर संकेत कर रहा है जब वे सब जिन्होंने उसके वचन को ठुकराया है परमेश्वर के न्याय आसन के सामने कटघरे में खड़े होंगे। उस समय, प्रभु यीशु की **बातें** या शिक्षाएं उन्हें दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त होंगी।

12:49 वह जिन बातों की शिक्षा देता था उन बातों को उसने मनुष्यों के किसी स्कूल में नहीं सीखा था और न उसने इन्हें स्वयं गढ़ा था। बल्कि, एक आज्ञाकारी सेवक और पुत्र के रूप में, उसने सिर्फ वे ही बातें कहीं जिसे पिता से उसे कहने के लिए सौंपा था। यही सच्चाई अन्तिम दिन लोगों को दोषी ठहराएगी। प्रभु यीशु ने जिन वचनों को कहा वे परमेश्वर के वचन थे, और मनुष्य ने उसे सुनने से इंकार कर दिया। पिता ने उसे बताया था कि वह **क्या क्या** कहे और यह भी कि वह **क्या क्या** बोले। दोनों के बीच एक अन्तर है। ''**क्या क्या कहूं,**'' सन्देश की विषय-वस्तु से सम्बन्धित है; ''**क्या क्या बोलूं,**'' उन शब्दों से सम्बन्धित है जिनका प्रयोग प्रभु को परमेश्वर के सत्य की शिक्षा देते समय करना था।

12:50 प्रभु यीशु यह जानता था कि पिता ने उसे यह कार्य सौंपा है कि वह उस पर विश्वास करने वालों को **अनन्त जीवन** प्रदान करे। **इसलिए,** मसीह ने सन्देश का प्रचार वैसा ही किया जैसा उसे **पिता** के द्वारा दिया गया था।

यहाँ पर वर्णन में एक विराम आता है। यहाँ तक प्रभु ने अपने आप को इस्राएल के सामने प्रस्तुत किया है। अब तक सात विशिष्ठ चिन्हों या आश्चर्यकर्मों का वर्णन किया गया है, प्रत्येक में एक ऐसे अनुभव का चित्रण किया गया है जो एक पापी द्वारा मसीह पर विश्वास लाने के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है। ये सात चिन्ह निम्नलिखित हैं:

1. गलील के काना में विवाह के दौरान पानी को दाखरस में बदलना (2:1-12)। यह एक ऐसे पापी का चित्रण करता है जो ईश्वरीय आनन्द से अनजान है, और जिसे मसीह के सामर्थ के द्वारा पूरी तरह से बदल दिया जाता है।

2. कर्मचारी के पुत्र की चंगाई (4:46-54)। यह पापी को एक बीमार के रूप में चित्रित करता है जिसे आत्मिक चंगाई की आवश्यकता है।

3. अड़तीस वर्ष के रोगी को बैतसैदा के कुण्ड में चंगाई (अध्याय 5)। बेचारा पापी सामर्थहीन, असहाय, और अपनी अवस्था से निदान पाने में असमर्थ होता है। प्रभु यीशु उसे उसकी निर्बलता से छुटकारा देता है।

4. पाँच हजार लोगों को भोजन कराना (अध्याय 6)। पापी बिना भोजन के भूखा है और उसे बल देने वाले भोजन की आवश्यकता है। प्रभु उसे उसकी आत्मा के लिए भोजन उपलब्ध कराता है ताकि उसे कभी भूखा न होना पड़े।

5. गलील की झील को शान्त करना (6:16-21)। एक पापी खतरे के स्थान में होता है। प्रभु उसे आंधी से बचाता है।

6. जन्म से अन्धे व्यक्ति को चंगा करना (अध्याय 9)। यह मनुष्य के हृदय के अन्धेपन को चित्रित करता है, मसीह की सामर्थ के द्वारा स्पर्श किए जाने के बाद भी उसका यह अन्धापन दूर होता है। मनुष्य अपनी पापमय दशा को, या मसीह की सुन्दरता को देख नहीं पाता, जब तक वह पवित्र आत्मा के द्वारा प्रदीप्त नहीं किया जाता।

7. लाजर को मृतकों में से जिलाया जाना (अध्याय 11)। नि:सन्देह, यह हमें इस बात का स्मरण दिलाता है कि पापी अपने अपराधों और पापों में मरा हुआ होता है और उसे ऊपर से नया जीवन की आवश्यकता होती है।

सारे चिन्हों का उद्देश्य यह प्रमाणित करना था, कि प्रभु यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

ह. प्रभु यीशु अपने चेलों के पाँव धोता है (13:1–11)

अध्याय 13 में, उपरौठी कोठरी में बातचीत आरम्भ होती है। प्रभु यीशु अब बैर करने वाले यहूदियों के बीच में नहीं आ–जा रहा है। वह यरूशलेम में एक उपरौठी कोठरी में अपने चेलों के साथ बैठकर अपने मुकद्दमे और क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले सहभागिता का अन्तिम समय बिता रहा है। यूहन्ना 13 से 17 सम्पूर्ण नया नियम के सबसे लोकप्रिय खण्डों में से एक है।

13:1 क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक दिन पहले प्रभु **यीशु ने जान लिया** कि समय **आ** गया है कि वह मरे, फिर से जी उठे, और वापस स्वर्ग को जाए। वह **अपने लोगों से . . . प्रेम** रखता था, अर्थात्, उनसे जो सच्चे विश्वासी थे। वह पृथ्वी पर की अपनी सेवकाई के **अन्त तक** उनसे प्रेम रखता रहा, और अनन्तकाल तक करता रहेगा। परन्तु वह उनसे असीमित प्रेम भी रखता था, और इसी का अब वह प्रदर्शन करने वाला था।

13:2 यूहन्ना यह नहीं बताता कि यहाँ पर किस **भोजन** के बारे में कहा गया है – फसह का भोजन, प्रभु भोज, या फिर सामान्य भोजन। **शैतान ने यहूदा इस्कारियोति के मन में** यह बीज बो दिया था कि अब प्रभु यीशु को पकड़वाने का समय आ चुका है। यहूदा ने प्रभु के विरूद्ध काफी पहले ही बुरा षड़यंत्र रच लिया था, परन्तु अब उसे अपनी दुष्टतापूर्ण योजना को पूरा करने के लिए संकेत मिल चुका था।

13:3 पद 3 में इस बात पर जोर दिया गया है कि दास का कार्य *कौन* कर रहा था – एक रब्बी या गुरू ही नहीं, परन्तु प्रभु **यीशु**, जो जानता था कि वह ईश्वर है। वह उस कार्य को जानता था कि जिसे उसे सौंपा गया था। वह जानता था कि वह **परमेश्वर के पास से आया** है और अब वह **परमेश्वर के पास** वापस जाने की अपनी यात्रा आरम्भ कर चुका है।

13:4 इस बात की चेतना ने ही, कि वह कौन है, उसका मिशन और लक्ष्य क्या है, उसे समर्थ किया कि वह झुक कर अपने चेलों के पाँव धोए। **भोजन पर से उठ कर** , प्रभु ने **अपने** बाहरी **कपड़े उतार दिए**। और एक **अंगोछे** को एप्रेन के समान लपेट लिया, और एक दास का स्थान ले लिया। हम इस घटना का वर्णन मरकुस में देखने की अधिक अपेक्षा करते, क्योंकि इस सुसमाचार में प्रभु यीशु को एक सिद्ध सेवक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परन्तु यह तथ्य कि यह वर्णन यूहन्ना के सुसमाचार में पाया जाता है इसे अधिक महत्वपूर्ण बनाता है क्योंकि यह सुसमाचार प्रभु यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

यह प्रतीकात्मक कार्य हमें यह स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु ने किस प्रकार से अपने भव्य निवासस्थान को छोड़ा और एक सेवक के रूप में हमारे बीच में रहने के लिए इस संसार में आया, और अपने द्वारा सृजे गए प्राणियों की सेवा की।

13:5 पूर्वी देशों में, खुली हुई जूतियों का उपयोग किया जाता था, और इसलिए बार बार **पाँव** धोना आवश्यक हो जाता था। मेजबान की ओर से यह सामान्य शिष्टाचार की बात थी कि वह अपने मेहमानों के पाँवों को धोने के लिए एक दास का प्रबन्ध करे। यहाँ पर ईश्वरीय मेजबान सेवक बन गया और उसने इस तुच्छ कार्य को पूरा किया। ''प्रभु यीशु विश्वासघाती के पैरों पर था – क्या ही चित्र! यह हमारे लिए एक अद्भुत शिक्षा है!''

13:6, 7 **पतरस** यह सोच कर ही चौंक गया कि प्रभु *उसके* **पांव** धोएगा, और उसने इस बात से इंकार कर दिया कि प्रभु के जैसा इतना महान व्यक्ति उस जैसे एक अयोग्य व्यक्ति के सामने झुके। ''परमेश्वर को एक दास के रूप में देखना विचलित कर देने वाला दृश्य था।'' प्रभु **यीशु** ने अब पतरस को सिखाया कि वह जो कुछ कर रहा है उसके पीछे एक आत्मिक अर्थ छिपा हुआ है। पैर

धोना एक प्रकार का आत्मिक शुद्धिकरण था। पतरस जानता था कि प्रभु यह भौतिक कार्य कर रहा है, परन्तु वह इसके आत्मिक *अर्थ* को **नहीं जानता** था। किन्तु, वह इसे शीघ्र ही जान जाएगा क्योंकि प्रभु उसे यह समझाएगा। और वह इसे अपने अनुभव से **समझेगा** जब बाद में वह प्रभु यीशु का इंकार करने के बाद फिर से उसकी संगति में आएगा।

13:8 **पतरस** मानवीय स्वभाव की चरम प्रवृत्तियों को दर्शाता है। उसने शपथ खा कर कहा था कि प्रभु उसके **पाँव कभी न धोने पाएगा** – और यहाँ पर ''कभी न'' का शब्दश: अर्थ है, ''अनन्त काल तक नहीं।'' प्रभु ने पतरस को उत्तर दिया कि उसके द्वारा धोए जाने को छोड़ कर, उसके साथ और कोई संगति नहीं की जा सकती। अब पैर धोने का अर्थ सामने आ चुका था। जब मसीह लोग इस संसार में चलते हैं, तो उनमें कुछ मात्रा में अशुद्धता आ जाती है। अश्लील बातें सुन कर, अपवित्र वस्तुओं की ओर देख कर, और अधर्मी लोगों के साथ कार्य करने से एक विश्वासी के जीवन में धूल मिट्टी लग ही जाते हैं। इसलिए उसे लगातार शुद्ध किए जाने की आवश्यकता है।

यह शुद्धिकरण वचन के जल के द्वारा होता है। जब हम बाइबल को पढ़ते, उसका अध्ययन करते हैं, और उसका प्रचार सुनते हैं, और जब हम इसके बारे में एक दूसरे के साथ चर्चा करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह हमें हम पर पड़े बुरे प्रभावों से शुद्ध करता है। दूसरी ओर, हम बाइबल को जितना अधिक अनदेखा करते हैं, ये बुरे प्रभाव उतना ही अधिक हमारे दिमाग और जीवन में बस जाते हैं और हमें ऐसा बना देते हैं कि हमें इनमें कोई खास बुराई दिखाई नहीं देती। जब प्रभु यीशु ने कहा, ''**मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं**,'' तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि जब तक वह पतरस के पाँव नहीं धोएगा तब तक पतरस का उद्धार नहीं होगा, परन्तु इसका अर्थ यह था कि प्रभु यीशु के साथ सहभागिता कायम तभी रखी जा सकती है जब पवित्रशास्त्र उसके जीवन को शुद्ध करने के लिए लगातार सक्रिय रहे।

13:9, 10 अब **पतरस** विपरीत चरम पर पहुँच गया। एक मिनट पहले वह कह रहा था, ''कभी न।'' अब वह कहता है, ''मेरे पाँव ही नहीं, बरन हाथ और सिर भी धो दे।''

एक बार स्नान कर लेने के बाद, एक व्यक्ति का पाँव फिर से गन्दा हो जाता है। उसे दूसरी बार स्नान करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसे पाँव धोना आवश्यक है। ''**जो नहा चुका, उसे पाँव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं**।'' स्नान करने और धोने के बीच में एक अन्तर है। *स्नान* उस शुद्धिकरण को कहा जाता है जो उद्धार पाने के समय किया जाता है। मसीह के लोहू के द्वारा पाप के *दण्ड* से शुद्धिकरण सिर्फ एक ही बार होता है। *धोना* पाप की अशुद्धताओं (प्रदूषण) से शुद्धता को दर्शाता है और यह परमेश्वर के वचन के द्वारा लगातार किया जाना आवश्यक है। स्नान सिर्फ एक बार होता है परन्तु पैरों का धोना बार बार होता है। ''**तुम शुद्ध हो . . . चुके हो, परन्तु सब के सब नहीं**'' – इसका अर्थ है कि चेलों ने नया जन्म का स्नान प्राप्त कर लिया था – अर्थात्, यहूदा को छोड़ के सब चेले। यहूदा का उद्धार कभी हुआ ही नहीं था।

13:11 सारी बातों का पूर्ण ज्ञान होने के कारण प्रभु यीशु **जानता** था कि यहूदा उसे **पकड़वाने** वाला है, और इसलिए उसने यह संकेत दिया कि एक व्यक्ति ने छुटकारे का स्नान नहीं किया है।

ई. प्रभु यीशु अपने चेलों को उसके आदर्श का अनुसरण करने की शिक्षा देता है (13:12–20)

13:12 ऐसा लगता है कि मसीह ने *सारे* चेलों के **पाँव** धोए। उसके बाद वह **अपने कपड़े पहन कर फिर बैठ गया** कि वह उस कार्य का आत्मिक अर्थ समझाए जिसे उसने अभी अभी किया था। उसने एक प्रश्न पूछने के द्वारा चर्चा आरम्भ की। उद्धारकर्ता के प्रश्न रोचक अध्ययन का आरम्भ करते हैं। यह शिक्षा देने के उसके सबसे प्रभावशाली तरीकों में से एक था।

13:13, 14 चेलों ने प्रभु यीशु को अपना **गुरू और प्रभु** मान लिया था, और उन्होंने यह बिल्कुल ठीक किया था। परन्तु उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण ने यह दर्शा दिया कि परमेश्वर के राज्य के अधिकार के ढांचे में सेवक का पद सबसे ऊँचा है।

यदि . . . प्रभु और गुरू ने चेलों के **पाँव धोए**, तो फिर **एक दूसरे के पाँव** न धोने का उनके पास क्या बहाना हो सकता था? क्या प्रभु के कहने का अर्थ था कि

उन्हें एक दूसरे के पांव पानी से *शब्दश:* धोना है?[42] क्या यहाँ पर उसने कलीसिया के लिए एक संस्कार विधि की स्थापना की? नहीं, यहाँ पर इसके पीछे आत्मिक अर्थ निहित था। वह उन्हें यह बता रहा था कि उन्हें एक दूसरे को लगातार वचन की सहभागिता के द्वारा शुद्ध रखना है। यदि कोई अपने भाई को ठण्डा या सांसारिक होते देखे, तो वह उसे बाइबल में से स्नेहपूर्वक उपदेश देने के द्वारा उत्साहित करे।

13:15, 16 प्रभु ने उन्हें एक **नमूना दिया दिया** था, आत्मिक रूप से इसका पालन किए जाने की सजीव शिक्षा।

यदि घमण्ड या निजी बैर हमें हमारे भाइयों की सेवा करने के लिए झुकने से रोकते हैं, तो हमें यह स्मरण रखना है कि हम अपने **स्वामी से** बड़े नहीं हैं। उसने अपने आप को इतना दीन किया कि उसने उन लोगों के पाँव धोए जो अयोग्य और कृतघ्न थे, और वह जानता था कि उनमें से एक उसे पकड़वाएगा। क्या हम अपने आप को छोटा करके किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा करेंगे यदि हम जानते हों कि वह हमारे साथ पैसे के लिए विश्वासघात करने वाला है? जिन्हें **भेजा** गया था (चेले) वे अपने आप को उस कार्य को करने के लिए इतना बड़ा न समझें जिसे उनके **भेजनेवाले** (प्रभु यीशु) ने किया है।

13:17 दीनता और नि:स्वार्थ भाव और सेवा के सम्बन्ध में इन सच्चाइयों को जानना एक बात है, परन्तु यह सम्भव है कि हम उन्हें जानने के बाद भी उन्हें अपने जीवन में लागू न करें। इन कार्यों को *करने में* ही सच्चा महत्व और आशीष पाई जाती है!

13:18 प्रभु यीशु सेवा के बारे में जो शिक्षा दे रहा था वह यहूदा पर लागू नहीं होती। वह उन लोगों में से एक नहीं था जिन्हें प्रभु सुसमाचार लेकर के संसार में भेजने वाला था। प्रभु यीशु जानता था कि पवित्रशास्त्र में उसे पकड़वाए जाने के सम्बन्ध में की गई भविष्यद्वाणी का **पूरा** होना अवश्य था – उदाहरण के लिये भजन संहिता 41:9। यहूदा एक ऐसा व्यक्ति था जिसने तीन वर्ष तक प्रभु यीशु के साथ भोजन किया था, तौभी उस ने उस **पर लात उठाई** – एक वाक्यांश जो यह व्यक्त करता है कि उसने प्रभु को पकड़वाया। भजन संहिता 41 में पकड़वाने वाले का वर्णन ''मेरा परम मित्र'' के रूप में किया गया है।

13:19 प्रभु यीशु ने अपने पकड़वाए जाने के सम्बन्ध में पहले से ही चेलों को बता दिया था ताकि जब यह **हो** जाए, तो चेले यह जान लें कि प्रभु यीशु सचमुच में परमेश्वर था। इस पद में से *वही* को हटा कर इसे इस तरह से अनुवाद करना भी सही होगा: ''**तुम विश्वास करो कि मैं हूँ।**'' नया नियम का प्रभु यीशु पुराना नियम का यहोवा है। इस प्रकार से, भविष्यद्वाणी का पूर्ण होना मसीह के ईश्वरत्व का एक महान प्रमाण है, और साथ ही, हम यह भी कह सकते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे जाने का भी प्रमाण है।

13:20 हमारा प्रभु जानता था कि उसका पकड़वाया जाना दूसरे चेलों के लिये ठोकर खाने या सन्देह करने का भी कारण हो सकता है। इसलिए उन्होंने आगे उत्साहवर्धन के इस वचन को जोड़ा। उन्हें यह स्मरण रखना है कि उन्हें एक ईश्वरीय मिशन पर भेजा जा रहा है। उनकी पहचान प्रभु के साथ इतनी निकटता से की जाएगी कि जो *उन्हें* ग्रहण करेगा वह *उसे* ग्रहण करेगा। साथ ही, जो मसीह को ग्रहण करता है वह परमेश्वर पिता को ग्रहण करता है। इस प्रकार से उन्हें परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पिता के साथ अपने निकट सम्बन्धों के कारण शान्ति का अनुभव होगा।

ज.प्रभु यीशु अपने पकड़वाए जाने की भविष्यद्वाणी करता है (13:21–30)

13:21, 22 यह जानने के कारण कि उसके चेलों में से एक उसे पकड़वाएगा प्रभु बहुत **व्याकुल** हो गया था। ऐसा लगता है कि प्रभु यीशु यहाँ पर पकड़वाने वाले को अपने बुरी योजना को त्याग देने का अन्तिम अवसर दे रहा है। उसकी पोल खोले बिना ही प्रभु यीशु ने अपना ज्ञान प्रगट करते हुए कहा कि बारह चेलों **में से एक** उसे **पकड़वाएगा**। तौभी इससे विश्वासघाती का मन नहीं बदला।

शेष चेलों को यहूदा पर सन्देह नहीं हुआ। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि उनमें से एक ऐसा कार्य करेगा और वे इस उलझन में थे कि यह व्यक्ति कौन हो सकता है।

13:23 उन दिनों में, लोग भोजन करने के लिए मेज पर नहीं बैठते थे, परन्तु बेन्चनुमा नीचले पलंग पर लेटा करते थे। वह चेला **जिससे यीशु प्रेम रखता था** यूहन्ना

था – इस सुसमाचार का लेखक। उसने अपना नाम यहाँ पर नहीं लिखा है, परन्तु वह यह उल्लेख करने से नहीं हिचका कि वह उद्धारकर्ता के हृदय में एक विशेष स्नेह का स्थान रखता था। प्रभु सभी चेलों से प्रेम रखता था, परन्तु यूहन्ना उसके साथ एक विशेष निकटता के आनन्द का अनुभव करता था।

13:24, 25 पतरस ने इसलिए मुँह से न बोलते हुए **सैन करके पूछा**। शायद अपना सिर हिला कर, उसने यूहन्ना से कहा कि वह पकड़वाने वाले का नाम पता करे।

प्रभु यीशु की छाती की ओर झुक कर यूहन्ना ने फुसफुसाते हुए प्रभु यीशु से यह बात पूछी और शायद उसे इसका उत्तर भी धीमी आवाज में ही मिला।

13:26 प्रभु यीशु ने उत्तर दिया कि वह पकड़वाने वाले को **रोटी का टुकड़ा** दाखरस में **डूबोकर** देगा। कुछ लोगों का मानना है कि पूर्वी देशों में मेजबान सम्माननीय मेहमान को भोजन के समय रोटी दिया करते थे। **यहूदा** को सम्माननीय अतिथि का आदर देने के द्वारा, प्रभु ने उसे अपने अनुग्रह और प्रेम के द्वारा मन फिराने के लिए जीतना चाहा। दूसरे लोगों का मानना है कि फसह के भोज के समय इस तरह से रोटी एक दूसरे को देना एक सामान्य प्रचलन था। यदि यह बात सत्य है, तब यहूदा फसह के भोज के दौरान और प्रभु भोज की स्थापना किए जाने से पहले ही उठ कर चला गया।

13:27 शैतान यहूदा के मन में पहले से ही यह डाल चुका था कि वह प्रभु यीशु को पकड़वाए। अब **शैतान उस में समा गया**। पहले तो, शैतान ने सिर्फ सुझाव ही दिया था। परन्तु यहूदा ने इस सुझाव की ओर ध्यान दिया, उसे पसन्द किया, और उससे सहमत हो गया। अब शैतान का उस पर पूर्ण नियंत्रण हो गया। यह जानकर कि पकड़वाने वाला अब पूरी तरह से प्रतिबद्ध है, प्रभु ने उससे कहा कि वह यह कार्य **तुरन्त** करे। स्पष्टत: वह उसे बुरा कार्य करने के लिए उत्साहित नहीं कर रहा था परन्तु दुखी होकर उसे सिर्फ उसके हाल पर छोड़ रहा था।

13:28, 29 यह पद इस बात की पुष्टि करता है कि प्रभु यीशु और यूहन्ना के बीच रोटी के विषय में पहले हुई बातचीत को दूसरे चेलों ने नहीं सुना था। वे अब भी यह नहीं जानते थे कि यहूदा उनके प्रभु को पकड़वाने पर है।

किसी किसी ने समझा कि प्रभु यीशु ने यहूदा से यह कहा है कि वह तुरन्त जा कर **पर्ब्ब के लिए** कुछ **मोल ले** ले, या इसलिए कि यहूदा खचांजी था, उद्धारकर्ता ने उसे निर्देश दिया कि वह **कंगालों** को कुछ दान दे दे।

13:30 यहूदा ने विशेष रूप से उसे दिए गए रोटी का **टुकड़ा** ले लिया और प्रभु और उसके चेलों की सहभागिता को छोड़ कर चला गया। पवित्रशास्त्र में ये अर्थपूर्ण शब्द दिए गए हैं **'और रात्रि का समय था।'** यह सिर्फ शाब्दिक अर्थ में **रात्रि** नहीं थी, परन्तु यहूदा के लिए यह आत्मिक **रात्रि** भी थी – उदासी और ग्लानि की रात्रि जो कभी समाप्त नहीं होगी। जब लोग उद्धारकर्ता की ओर पीठ कर लेते हैं तो उनके जीवन में हमेशा के लिए रात्रि आ जाती है।

क. नई आज्ञा दी गई (13:31–35)

13:31–35 जब यहूदा वहाँ से चला गया, तब प्रभु **यीशु** अब और खुलकर और आत्मियता से अपने चेलों से बात करने लगा। उसने कहा, **''अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई,''** प्रभु यीशु छुटकारा के उस कार्य को पूरा होते हुए देख रहा था जो अब सम्पन्न होने पर ही था। उसकी मृत्यु एक पराजय की तरह प्रतीत हुई हो, तौभी यह एक ऐसा उपाय था जिसके द्वारा खोए हुए पापी उद्धार प्राप्त कर सकते थे। इसके बाद उसका पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण होने वाला था, और वह इन सबमें बहुत आदर का अनुभव कर रहा था। और उद्धारकर्ता के इस कार्य से **परमेश्वर की महिमा** हुई। इससे परमेश्वर एक ऐसे *पवित्र* परमेश्वर के रूप में प्रगट हुआ जो पाप को अनदेखा नहीं कर सकता, परन्तु साथ ही वह एक ऐसा *प्रेमी* परमेश्वर भी है जो नहीं चाहता कि पापी लोग नाश हों; इससे यह प्रगट हुआ कि एक *न्यायप्रिय* परमेश्वर हो कर भी वह पापियों को *निर्दोष* ठहरा सकता है। ईश्वरत्व का हर एक गुण अपनी उत्तमता में कलवरी पर बढ़ चढ़ कर प्रगट हुआ।

13:32 यदि **परमेश्वर की महिमा उस में हुई,** और यह निश्चित रूप से हुई है,[43] तो **''परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा।''** परमेश्वर यह सुनिश्चित करेगा कि उसके प्रिय पुत्र को यथोचित आदर प्राप्त हो। और वह उसकी महिमा **तुरन्त करेगा** – बिना

किसी विलम्ब के। परमेश्वर पिता ने प्रभु यीशु की इस भविष्यद्वाणी को प्रभु यीशु को मृतकों में से जिलाने और उसे स्वर्ग में अपनी दाहिनी ओर बैठाने के द्वारा पूरी की। परमेश्वर तब तक नहीं रूकेगा जब तक परमेश्वर का राज्य आ जाए। वह अपने पुत्र की **महिमा . . . तुरन्त करेगा**।

13:33 पहली बार प्रभु यीशु ने अपने चेलों को **'बालको'** कहते हुए सम्बोधित किया – यूनानी भाव में, यह लाड़ प्यार जताने वाला एक शब्द है। और उसने इस शब्द का उपयोग यहूदा के वहाँ से चले जाने के बाद किया। वह अब उनके साथ **थोड़ी देर** और रहने वाला था। उसके बाद वह क्रूस पर मर जाएगा। वे उसे ढूंढ़ेंगे, परन्तु उसके पीछे नहीं आ सकेंगे, क्योंकि वह स्वर्ग को लौट जाएगा। प्रभु ने यही बात **यहूदियों** को भी बताई थी, परन्तु उस समय उसके अर्थ का भाव अलग था। चेलों के लिए, उसकी विदाई अस्थायी होगी। वह उनके लिए फिर से आएगा (अध्याय 14)। परन्तु **यहूदियों** के लिए इसका अर्थ भिन्न था, वह उन्हें हमेशा के लिए छोड़ कर चला जाएगा। वह स्वर्ग को लौट रहा था, और वे अपने अविश्वास के कारण उसके पीछे नहीं आ सकते।

13:34 उसकी अनुपस्थिति के दौरान, उन्हें **प्रेम** की **आज्ञा** के वश में रहना है। यह आज्ञा उनके लिए कोई नई आज्ञा नहीं थी क्योंकि दस आज्ञाओं में परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम रखने की शिक्षा दी गई है। परन्तु यह **आज्ञा** दूसरे अर्थों में **नई** थी। यह इसलिए **नई** थी क्योंकि पवित्र आत्मा इसका पालन करने के लिए उन्हें सामर्थ देगा। यह इस अर्थ में **नई** थी कि यह पुराने से *उत्तम* थी। पुराने में कहा गया था, ''अपने *पड़ोसी* से प्रेम करो,'' परन्तु नई में कहा गया है, ''अपने *शत्रुओं* से प्रेम रखो।''

किसी ने यह बिल्कुल सही कहा है कि दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा को अब एक नई स्पष्टता के साथ समझाया गया है, उसमें नए अभिप्राय और कर्तव्य लागू किए गए हैं, एक नए उदाहरण के द्वारा चित्रित किया गया है और एक नए तरीके से इसका पालन किया जाना है।

यह इसलिए भी नई है, क्योंकि यह प्रेम के *और अधिक ऊँचे* स्तर के लिए आव्हान करती है: **''जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।''**

13:35 मसीही शिष्यता का बैज़ (बिल्ला) वह क्रूस नहीं होता जिसे गले में या सिर में पहना जाता है, न ही कोई विशेष प्रकार का वस्त्र पहन कर मसीही विश्वास को प्रगट किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की वस्तुओं से शिष्य होने का दावा कर सकता है। एक मसीही का सच्चा चिन्ह अपने संगी मनुष्य के प्रति **प्रेम** होता है। इसके लिए ईश्वरीय सामर्थ की आवश्यकता होती है, और यह सामर्थ सिर्फ उन लोगों को दी जाती है जिनमें पवित्र आत्मा निवास करता है।

ल.प्रभु यीशु ने पतरस द्वारा उसका इंकार किए जाने की भविष्यद्वाणी की (13:36–38)

13:36 **शमौन पतरस** यह नहीं समझ सका कि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु के विषय में कहा है। उसने सोचा कि वह इस पृथ्वी पर ही किसी स्थान की यात्रा पर जा रहा है और वह यह नहीं समझ पा रहा था कि वे उसके पीछे वहाँ क्यों नहीं जा सकते। प्रभु ने उन्हें समझाया कि पतरस बाद में भी उसके **पीछे** आ सकता है, अर्थात्, जब उसकी मृत्यु होगी,परन्तु अभी वह उसके पीछे नहीं आ सकता।

13:37 **पतरस** ने अपने स्वभाव के अनुसार भक्ति और अतिउत्साह दिखाते हुए यह इच्छा जताई कि वह प्रभु यीशु की खातिर मरने के लिए भी तैयार है। उसका विचार था कि उसके पास शहीद होने की सामर्थ है। बाद में भी, वास्तव में, वह प्रभु के लिए शहीद हुआ, परन्तु ऐसा इसलिए हो सका कि इसके लिए परमेश्वर ने उसे विशेष रूप से बल और साहस दिया।

13:38 प्रभु **यीशु** ने उसके ''ज्ञानरहित उत्साह'' पर लगाम लगाते हुए पतरस को वह बात बताई जिसे पतरस स्वयं नहीं जानता था – कि रात समाप्त होने से पहले पतरस **तीन बार** प्रभु यीशु का इंकार करेगा। इस प्रकार से पतरस को अपनी सामर्थ से कुछ घण्टे भी प्रभु यीशु के पीछे चल पाने में उसकी निर्बलता, कायरता, और असमर्थता का स्मरण दिलाया गया।

म.प्रभु यीशु: मार्ग, सत्य, और जीवन (14:1–14)

14:1 कुछ लोग पद 1 को अध्याय 13 के अन्तिम पद से जोड़ कर पढ़ते हैं और ऐसा मानते हैं कि यह बात

पतरस को कही गई। यद्यपि वह प्रभु यीशु का इंकार कर देगा, तौभी प्रभु ने उसकी शान्ति के लिए ये वचन कहे। परन्तु यूनानी के मूल शब्द, पुरानी अंग्रेजी के – *यी*, और हिन्दी के – **तुम्हारा,** में बहुवचन रूप यह दर्शाता है कि यह *सब* चेलों को कहा गया था, इसलिए अध्याय 13 के बाद एक विराम है। यहाँ पर प्रभु का विचार कुछ इस प्रकार का हो सकता है, ''**तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो**।'' यहाँ पर परमेश्वर के तुल्य होने का एक और महत्वपूर्ण दावा प्रभु यीशु के द्वारा किया गया है।

14:2 **पिता के घर**, स्वर्ग को कहा गया है, जहाँ बहुत से रहने के स्थान हैं। वहाँ पर सभी छुटकारा पाए हुओं के लिए स्थान है। **यदि** वह स्थान **न** होता, तो प्रभु यीशु उनसे यह **कह** देता; वह उन्हें झूठी आशा नहीं देता। ''**मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं**'' के दो अर्थ हो सकते हैं। प्रभु यीशु कलवरी पर अपने लोगों के लिए जगह तैयार करने के लिए गया। उसकी प्रायश्चितकारी मृत्यु के द्वारा विश्वासी को स्वर्ग में स्थान दिए जाने का आश्वासन मिला है। परन्तु साथ ही प्रभु वापस स्वर्ग में एक जगह तैयार करने के लिए भी गया है। हम इस जगह के बारे में कुछ नहीं जानते, परन्तु हम यह जानते हैं कि परमेश्वर के हर बालक के लिए प्रबन्ध किया गया है – ''तैयार किए गए लोगों के लिए तैयार किया गया स्थान!''

14:3 पद 3 उस समय की ओर संकेत कर रहा है जब प्रभु यीशु मसीह **फिर** आएगा, जब सारे मृतक विश्वासी फिर से जिलाए जाएंगे, जब अविनाशी बदल जाएंगे, और उसके लोहू से मोल लिए गए सारे लोग स्वर्ग को ले जाए जाएंगे (1 कुरि. 4:13–18; 1 कुरि. 15:51–58)। यह मसीह का एक व्यक्तिगत, शब्दश: आगमन होगा। जिस रीति से वह गया है, निश्चय ही वह उसी रीति से **फिर** से वापस आएगा। उसकी अभिलाषा यह है कि अनन्तकाल तक उसके लोग उसके साथ रहें।

14:4, 5 वह स्वर्ग जा रहा था, और वह स्वर्ग का **मार्ग** जानता था, क्योंकि उसने उन्हें अनेक बार यह बताया था।

स्पष्ट है कि **थोमा** प्रभु यीशु के वचनों का अर्थ नहीं समझ सका। पतरस के समान, वह भी शायद पृथ्वी पर के ही किसी स्थान की यात्रा के विषय में सोच रहा था।

14:6 यह सुन्दर पद इस बात को स्पष्ट कर देता है कि प्रभु यीशु मसीह स्वयं ही स्वर्ग का **मार्ग** है। वह सिर्फ मार्ग ही नहीं दिखाता; बल्कि वह स्वयं एकमात्र **मार्ग** है। उद्धार एक व्यक्ति में पाया जाता है। उस व्यक्ति को अपना कर ग्रहण कर लें, और आप को उद्धार मिल जाएगा। मसीह ही मसीहत है। प्रभु यीशु अनेक मार्गों में से एक मार्ग नहीं है। वह *एकमात्र* मार्ग है। **बिना** उसके **द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता**। परमेश्वर की ओर जाने का मार्ग दस आज्ञाओं, सबसे बड़ी आज्ञा, रीतिविधियों, कलीसिया की सदस्यता में नहीं पाया जाता – यह सिर्फ मसीह और मसीह में ही पाया जाता है। वर्तमान में अनेक लोग यह कहते हैं कि यदि आप सच्चे हैं तो यह बात मायने नहीं रखती कि आपका विश्वास क्या है। उनका मानना है कि सभी धर्मों में कुछ न कुछ अच्छाइयाँ पाई जाती हैं और अन्तत: वे सभी स्वर्ग को पहुँचाते हैं। परन्तु प्रभु यीशु ने कहा है, ''**बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता**।''

प्रभु **सच्चाई** भी है। वह सिर्फ सच्चाई की शिक्षा नहीं देता; वही एकमात्र **सच्चाई** है। वह सच्चाई का मूर्त रूप है। जिसके पास मसीह है उनके पास सच्चाई है। यह और कहीं से नहीं पाई जा सकती।

प्रभु यीशु मसीह **जीवन** भी है। वह जीवन का स्त्रोत है, आत्मिक और अनन्त दोनों। जो उसे ग्रहण करते हैं उन्होंने अनन्त जीवन को पा लिया है क्योंकि वह जीवन *है*।

14:7 एक बार फिर से प्रभु ने उस रहस्यमय एकता के बारे में शिक्षा दी जो उसके और परमेश्वर पिता के बीच में है। यदि चेलों ने यह पहचान लिया होता कि प्रभु यीशु वास्तव में कौन है, तो वे **पिता को भी** जान जाते, क्योंकि प्रभु ने मनुष्यों के सामने पिता को प्रगट किया था। **अब** से, और विशेष कर मसीह के पुनरूत्थान के बाद, चेले यह समझ जाएंगे कि प्रभु यीशु परमेश्वर पुत्र है। उसके बाद वे समझ जाएंगे कि मसीह को जानने का अर्थ है, पिता को जानना, और प्रभु यीशु को देखने का अर्थ है, परमेश्वर को देखना। यह पद यह शिक्षा नहीं दे रहा है कि परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह एक ही व्यक्ति हैं। परमेश्वरत्व में तीन अलग अलग *व्यक्ति* हैं, परन्तु सिर्फ *एक परमेश्वर* है।

14:8 **फिलिप्पुस** चाहता था कि **प्रभु** अपने **पिता**

के बारे में कुछ विशेष बातें प्रगट करे, और उसके बाद वह कुछ नहीं पूछेगा। वह यह नहीं समझ सका कि प्रभु यीशु जो कुछ था, उसने जो कुछ किया, और कहा, सब कुछ पिता का प्रगटीकरण था।

14:9 प्रभु **यीशु** ने धीरजपूर्वक उसे सुधारा। फिलिप्पुस प्रभु यीशु के साथ **इतने दिन** रहा। वह उन पहले चेलों में से था जिन्हें प्रभु ने बुलाया था (यूहन्ना 1:43)। तौभी मसीह के ईश्वरत्व और पिता के साथ उसकी एकता का पूर्ण सत्य उस पर प्रगट नहीं हुआ था। वह नहीं जानता था कि जब वह प्रभु यीशु को देख रहा है तो वह उस व्यक्ति को देख रहा है जो पूर्ण रूप से **पिता** को प्रदर्शित करता है।

14:10, 11 ''मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है,'' ये वचन परमेश्वर और पुत्र के बीच की एकता की निकटता का वर्णन करते हैं। वे दोनों अलग अलग व्यक्ति हैं, तौभी अपने गुणों और इच्छा में दोनों एक हैं। यदि हम इसे नहीं समझ पाते हैं तो हमें हताश होने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वरत्व को कोई भी नश्वर मस्तिष्क नहीं समझ पाएगा। हमें परमेश्वर को इस बात का श्रेय देना चाहिए कि जिन बातों को हम नहीं जान पाते, उन बातों को हम जान सके हैं। यदि हम उन्हें पूरी रीति से समझते हैं, तो हम भी उतने ही महान हो जाएंगे जितने कि हम हैं! प्रभु यीशु के पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ है, परन्तु वह इस संसार में यहोवा के सेवक के रूप में आया और उसने पूर्ण रूप से अपने पिता के प्रति आज्ञाकारी हो कर अपनी सब बातें कहीं और अपने सब कार्य किए।

चेलों को यह **प्रतीति** करनी चाहिए थी कि वह और **पिता** एक हैं क्योंकि उसने इस सत्य की गवाही स्वयं दी है। परन्तु यदि वे उसकी गवाही पर विश्वास नहीं करते, तो निश्चय ही उन्हें उसके द्वारा किए गए **कामों** को देख कर **प्रतीति** करना चाहिए था।

14:12 प्रभु ने भविष्यद्वाणी की कि जो उस पर विश्वास करते हैं वे भी उसी के समान आश्चर्यकर्म करेंगे और उससे भी **बड़े काम** करेंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम पढ़ते हैं कि चेलों ने उद्धारकर्ता के ही समान शारीरिक चंगाई देने का आश्चर्यकर्म किया। परन्तु हम और भी बड़े आश्चर्यकर्मों के बारे में भी पढ़ते हैं – जैसे पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार लोगों का मन फिराव। निःसन्देह प्रभु यीशु ने सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रचार, इतनी ढेर सारी आत्माओं के उद्धार, और कलीसिया के निर्माण को **बड़े काम** कहा था। शरीर को चंगा करने से बड़ा काम आत्माओं को बचाना है। जब प्रभु यीशु स्वर्ग को वापस गया, तो उसे महिमा दी गई, और पवित्र आत्मा को जगत में भेजा गया। पवित्र आत्मा की सामर्थ से ही प्रेरितों ने इन **बड़े** कामों को किया।

14:13 चेलों ने सचमुच में राहत महसूस किया होगा जब उन्हें यह बताया गया कि यद्यपि प्रभु यीशु उन्हें छोड़ कर जा रहा है, तौभी वे उसके नाम से पिता से प्रार्थना कर अपने निवेदनों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। इस पद का अर्थ यह नहीं है कि एक विश्वासी जन परमेश्वर पिता से जो चाहे मांग कर पा सकता है। इस प्रतिज्ञा को समझने की कुंजी इन शब्दों में पाई जाती है – **जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे**। प्रभु यीशु के नाम से मांगने का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ प्रार्थना के अन्त में उसके नाम को जोड़ दें। इसका अर्थ यह है कि प्रभु की इच्छा और मन के अनुरूप मांगना। इसका अर्थ यह है कि उन वस्तुओं की मांग करना जिससे पिता के नाम की महिमा होती है, मानवजाति को आशीष मिलती है, और हमारी आत्मिक उन्नति होती है।

प्रभु यीशु के नाम से मांगने के लिए, हमें उसकी निकट संगति में जीवन बिताना आवश्यक है। अन्यथा हम उसके मन को नहीं जान पाएंगे। हम उसके जितने निकट होंगे, उतना ही अधिक हमारी अभिलाषाएं उसकी अभिलाषाओं के अनुरूप होती जाएंगी। **पुत्र के द्वारा पिता की महिमा** होती है क्योंकि पुत्र सिर्फ उन वस्तुओं की इच्छा रखता है जो परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नयोग्य हैं। जब इस तरह से प्रार्थना की जाती है और उनका उत्तर मिलता है, तो यह पिता की महामहिमा का कारण बनता है।

14:14 यह प्रतिज्ञा जोर देने के लिए और परमेश्वर के लोगों को सशक्त उत्साह प्रदान करने के लिए दोहराई गई है। उसकी इच्छा को केन्द्र बना कर जीएं, प्रभु की सहभागिता में चलें, वह सब **कुछ** मांगें जिसकी प्रभु इच्छा रखता है, और हमें हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल जाएगा।

न. एक और सहायक देने की प्रतिज्ञा (14:15–26)

14:15 प्रभु यीशु अपने चेलों को छोड़ कर जाने पर ही था, और अब वे दु:ख से भर जाएंगे। वे उसके प्रति अपना **प्रेम** कैसे व्यक्त कर सकेंगे? इसका उत्तर है, उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा। आँसू बहाने के द्वारा नहीं, परन्तु आज्ञाकारिता के द्वारा। प्रभु की आज्ञाएं वे निर्देश हैं जिन्हें उसने सुसमाचार और शेष नया नियम में हमें दिया है।

14:16 जिस यूनानी शब्द का अनुवाद यहाँ पर **विनती** किया गया है, वह उस 'विनती' के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले यूनानी शब्द से भिन्न है जो विनती एक छोटा व्यक्ति अपने से बड़े व्यक्ति से करता है, बल्कि यहाँ पर इसके लिए जो यूनानी शब्द प्रयोग में लाया गया है वह एक व्यक्ति द्वारा अपने तुल्य व्यक्ति से विनती करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। प्रभु यीशु **पिता से विनती** करेगा कि वह **एक और सहायक** भेज दे। **सहायक** शब्द (*पैराक्लेटे)* का अर्थ होता है, सहायता के लिए पास बुलाया गया हुआ। इसका अनुवाद वकील (पक्ष रखने वाला) भी किया जा सकता है। प्रभु यीशु मसीह हमारा वकील या सहायक है, और पवित्र आत्मा ही वह **एक और सहायक** है – भिन्न प्रकार का एक और नहीं, परन्तु उसी स्वभाव का एक और। पवित्र आत्मा **सर्वदा** विश्वासियों के **साथ** रहेगा। पुराना नियम में, पवित्र आत्मा मनुष्यों पर अनेक बार आता था, परन्तु अक्सर उनके पास से चला भी जाता था। अब वह **सर्वदा** बने रहने के लिए आएगा।

14:17 पवित्र आत्मा को **सत्य का आत्मा** कहा जाता है क्योंकि यह सत्य की शिक्षा देता है और मसीह की, जो सत्य है, महिमा करता है। **संसार** पवित्र आत्मा को **ग्रहण नहीं कर सकता** क्योंकि यह उसे नहीं देख सकता। अविश्वासी लोग उस पर विश्वास लाने से पहले उसे देखना चाहते हैं – यद्यपि वे हवा और बिजली पर विश्वास करते हैं, जबकि वे इन्हें नहीं देख सकते। वह उन्हें उनका पाप स्वीकार करने के लिए राजी कर सकता है, परन्तु वे यह नहीं जानते कि ऐसा करने वाला वही है। चेले पवित्र आत्मा को जानते थे। उन्होंने उसका कार्य अपने जीवन में अनुभव किया था और प्रभु यीशु के माध्यम से कार्य करते हुए देखा था।

''**वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।**'' पिन्तेकुस्त से पहले, पवित्र आत्मा मनुष्यों पर आता था, और उनके साथ निवास करता था। परन्तु पिन्तेकुस्त के समय से, जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु पर विश्वास लाता है, तो पवित्र आत्मा उस मनुष्य के जीवन में अपना स्थायी निवासस्थान बना लेता है। दाऊद की यह प्रार्थना, ''अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर,'' वर्तमान समय के लिए उपयुक्त प्रार्थना नहीं है। पवित्र आत्मा को अब विश्वासियों से कभी अलग नहीं किया जाता, यद्यपि वह विश्वासी द्वारा शोकित किया जा सकता है, बुझाया जा सकता है, या कार्य करने से बाधित किया जा सकता है।

14:18 प्रभु अपने चेलों को **अनाथ** या असहाय नहीं छोड़ेगा। वह उनके पास फिर से आएगा। एक प्रकार से, वह अपने पुनरूत्थान के बाद उनके पास आया था, परन्तु इस बात में सन्देह है कि यहाँ पर वह अपने इस आने के बारे में कह रहा हो। एक अन्य अर्थ में, वह उनके पास पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में होकर पिन्तेकुस्त के दिन आया। आत्मिक आगमन यहां पर इसका सही अर्थ है।''पिन्तेकुस्त में ऐसी कोई बात थी जिसने इसे मसीह का आगमन बना दिया।'' तीसरे अर्थ में, वह अन्तिम समय में शब्दश: फिर से आएगा, जब वह अपने चुने हुओं को स्वर्ग के घर में ले जाएगा।

14:19 किसी भी अविश्वासी ने प्रभु यीशु को उसके गाड़े जाने के बाद नहीं देखा। जब वह जी उठा, तो वह सिर्फ ऐसे लोगों को ही दिखाई दिया जो उससे प्रेम रखते थे। परन्तु उसके स्वर्गारोहण के बाद भी उसके अनुयायी उसे विश्वास के द्वारा देखते हैं। निश्चय ही यही इन वचनों का अर्थ है, ''**परन्तु तुम मुझे देखोगे**।'' जब वह संसार को दिखना बन्द हो जाएगा, तब भी उसके अनुयायी उसे देखना जारी रखेंगे। ''**इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे**।'' यहाँ पर वह अपने पुनरूत्थान के जीवन की ओर देख रहा था। यह उन सब के जीवन के लिए एक धरोहर होगा जो उस पर विश्वास करते हैं। चाहे वे मर भी जाएं, वे फिर से हमेशा तक जीवित रहने के लिए जिलाए जाएंगे।

14:20 ''**उस दिन**'' फिर से शायद पवित्र आत्मा के उतरने की ओर संकेत कर रहा है। वह विश्वासियों को

इस सत्य की शिक्षा देगा कि जिस प्रकार से पुत्र और पिता के बीच में एक अनिवार्य सम्बन्ध है, उसी प्रकार से मसीह और उसके पवित्र लोगों के बीच में जीवन और बोझ को लेकर एक अद्‌भुत एकता है। यह समझ पाना कठिन है कि किस प्रकार से एक ही समय में, मसीह विश्वासियों **में** है, और विश्वासी मसीह **में** हैं। इसके लिए सामान्यत: कुरेदनी (आग सुलगाने/भड़काने के लिए उपयोग में लाया जाने वाली धातु की एक छड़) का उदाहरण दिया जाता है। न सिर्फ कुरेदनी आग में होती है, बल्कि आग भी कुरेदनी में होती है।[44] परन्तु यह उदाहरण इसे पूरी तरह से स्पष्ट नहीं कर पाता। मसीह इस अर्थ में एक विश्वासी में है कि प्रभु का जीवन विश्वासी को बताया जाता है। वह वास्तव में विश्वासी के भीतर पवित्र आत्मा के द्वारा निवास करता है। विश्वासी मसीह में इस अर्थ में है कि वह परमेश्वर के सामने मसीह के कार्य और व्यक्तित्व की सारी योग्यताओं के आधार पर खड़ा होता है।

14:21 प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता का सच्चा प्रमाण है – उसकी **आज्ञा** का पालन करना। उससे प्रेम करने के बारे में बात करना व्यर्थ है यदि हम उसकी आज्ञा का पालन नहीं करना चाहते। एक अर्थ में, पिता सारे संसार से प्रेम रखता है। परन्तु वह उन लोगों से विशेष रीति से प्रेम रखता है जो उसके पुत्र से प्रेम रखते हैं। उनसे मसीह भी प्रेम रखता है, और उन पर अपने आप को विशेष रीति से प्रगट करता है। हम उद्धारकर्ता से जितना अधिक प्रेम रखते हैं, हम उतना ही अधिक उसे जानने लगते हैं।

14:22 यहाँ पर जिस **यहूदा** का उल्लेख किया गया है उसका यह दुर्भाग्य है कि उसका और प्रभु यीशु के साथ विश्वासघात करने वाले का नाम एक ही है। परन्तु परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने भलाई दर्शाते हुए उसे यहूदा **इस्कारियोति** से अलग बताया। वह यह नहीं समझ सका कि प्रभु किस प्रकार से चेलों के सामने प्रगट हो सकता है जबकि उसी समय **संसार** उसे देख भी न पाएगा। नि:सन्देह यहूदा ने उद्धारकर्ता को एक विजेता राजा या लोकप्रिय नायक समझा था। वह यह नहीं समझ पाया था कि प्रभु अपने आप को आत्मिक रीति से **प्रगट** करेगा। वे उसे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के वचन के माध्यम से देख पाएंगे।

परमेश्वर के आत्मा के द्वारा, हम मसीह को उन चेलों से भी बेहतर रीति से वर्तमान में जान सकते हैं जितना कि चेले उस समय उसे जानते थे जब वह पृथ्वी पर था। जब वह इस पृथ्वी पर था, तब जो भीड़ में सामने की पंक्ति में रहते थे वे मसीह के अधिक पास रहते थे जबकि पीछे की पंक्ति वाले मसीह से दूर रहते थे। परन्तु आज, विश्वास के द्वारा हम में से हर एक उसकी निकटतम संगति का आनन्द उठा सकते हैं। यहूदा के प्रश्न का प्रभु यीशु मसीह के द्वारा दिया गया उत्तर यह दर्शाता है कि उसके अनुयायियों को उसने जिस प्रगटीकरण की प्रतिज्ञा की है वह परमेश्वर के वचन से सम्बन्धित है। वचन के प्रति आज्ञाकारिता का परिणाम परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के आने और बने रहने के रूप में होता है।

14:23 यदि कोई व्यक्ति सचमुच में प्रभु से **प्रेम** रखता है, तो **वह** उसकी सारी शिक्षाओं को **मानेगा**, सिर्फ कुछ ही आज्ञाओं को नहीं। पुत्र की आज्ञा का नि:संकोच और पूर्णत: पालन करने वाले से **पिता** प्रेम रखता है। पिता और पुत्र विशेष रूप से इस प्रकार के स्नेही और आज्ञाकारी हृदयों के निकट रहते हैं।

14:24 दूसरी ओर, जो उससे **प्रेम नहीं रखता** वह उसकी शिक्षाओं को नहीं **मानता**। इस तरह से वे न सिर्फ मसीह के वचनों का पालन करने से इंकार करते हैं, परन्तु पिता के वचनों का भी पालन करने से इंकार करते हैं।

14:25 जब वह उनके **साथ** था, तब हमारे प्रभु ने अपने चेलों को एक हद तक ही शिक्षा दी थी। उसने उन पर सारे सत्यों को प्रगट नहीं कर दिया था क्योंकि वे उन सारी बातों को उस समय नहीं समझ सकते थे।

14:26 परन्तु **पवित्र आत्मा** इससे अधिक बातों को उन पर प्रगट करेगा। वह **पिता** के द्वारा मसीह के **नाम** से पिन्तेकुस्त के दिन भेजा गया। आत्मा इस अर्थ में मसीह के **नाम** से आया कि वह पृथ्वी पर मसीह के हितों का प्रतिनिधि हो कर आया। वह अपनी महिमा के लिए नहीं आया परन्तु मनुष्यों को उद्धारकर्ता की ओर ले जाने के लिए आया। प्रभु ने कहा, ''**वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा,**'' पहले उसने यह कार्य प्रेरितों द्वारा मुँह से प्रचार–सेवकाई किए जाने के माध्यम से किया; उसके बाद परमेश्वर के लिखित वचन के माध्यम से किया जो आज हमारे पास पाया जाता है। पवित्र आत्मा हमें वे **सब** बातें **स्मरण** दिलाता है जिनकी शिक्षा उद्धारकर्ता ने दी है। वास्तव में, प्रभु यीशु ने सारी शिक्षाओं को अंकुर के रूप

में प्रस्तुत किया था जिसे पवित्र आत्मा ने शेष नया नियम में विकसित किया।

ओ. प्रभु यीशु अपने चेलों को अपनी शान्ति देता है (14:27–31)

14:27 एक व्यक्ति जो मरने पर होता है वह सामान्यत: अपनी वसीहत लिखता है जिसमें वह अपनी सम्पत्ति अपने प्रियजनों के नाम पर छोड़ जाता है। यहाँ प्रभु यीशु भी ऐसा ही कर रहा है। परन्तु यहाँ पर वह किसी भौतिक वस्तु के लिए वसीहत नहीं लिख रहा है परन्तु एक ऐसी वस्तु के लिए वसीहत लिख रहा है जिसे धन से खरीदा नहीं जा सकता – **शान्ति,** विवेक की भीतरी **शान्ति** जो पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ मेलमिलाप होने के बोध से उत्पन्न होती है। मसीह यह शान्ति दे सकता है क्योंकि उसने स्वयं ही इसे कलवरी पर अपने लोहू के द्वारा खरीदा है। यह वैसे नहीं दी जाती **जैसे संसार देता है** – कंजूसी से, स्वार्थ से, और कुछ समय के लिए। **शान्ति** की उसकी यह भेंट हमेशा के लिए है। तो फिर एक मसीही क्यों **घबराए** और **डरे**?

14:28 प्रभु यीशु ने उन्हें पहले से बता दिया था कि वह उन्हें छोड़कर जा रहा है, और उसके बाद उन्हें अपने साथ स्वर्गीय घर में ले जाने के लिए फिर से आएगा। **यदि** उन्हें उससे **प्रेम** था, तो यह सुनकर वे **आनन्दित** होते। अवश्य ही, एक अर्थ में वे उससे प्रेम रखते थे। परन्तु वे पूरी तरह से यह नहीं जान पाए थे कि वह कौन था, और इसलिए उनका प्रेम उतना महान नहीं था जितना कि इसे होना चाहिए था।

''तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँ, यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझे से बड़ा है।'' पहले तो यह पढ़कर ऐसा लगता है कि इस पद में प्रभु यीशु ने जो कहा वह उन सारी शिक्षाओं के विपरीत है जिनमें उसने यह कहा था कि वह परमेश्वर पिता के तुल्य है। परन्तु यहाँ पर कोई भी विपरीत बात नहीं कही गई है और यह स्थल इसका अर्थ स्पष्ट करता है। जब प्रभु यीशु यहाँ इस पृथ्वी पर था, तो लोग उससे बैर रखते थे, उसे तंग करते थे, उसे सताते थे, और उसका पीछा करते थे। लोग उसकी निन्दा करते थे, उसे गाली देते थे, और उस पर थूकते थे। उसने अपनी ही सृष्टि के हाथों से इन भयानक अपमानों को सहा।

परमेश्वर पिता ने मनुष्यों के हाथ से कभी भी ऐसा बुरा व्यवहार नहीं सहा। वह स्वर्ग में, दुष्ट पापियों से दूर निवास करता है। जब प्रभु यीशु स्वर्ग को लौटा, वह उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ अपमान का कोई स्थान नहीं है। इसलिए, चेलों को आनन्दित होना चाहिए था जब प्रभु यीशु ने कहा कि वह **पिता के पास जाता** है, क्योंकि *इस अर्थ* में **पिता** उससे **बड़ा है**। पिता *परमेश्वर के रूप* में बड़ा नहीं था, परमेश्वर इसलिए बड़ा था क्योंकि वह संसार में मनुष्य के रूप में क्रूर व्यवहार को सहने के लिए नहीं आया। जहाँ तक ईश्वरत्व के सहज गुणों की बात है, पुत्र और पिता बराबर हैं। परन्तु जब हम उस तुच्छ स्थान के बारे में सोचते हैं जिसे प्रभु यीशु ने यहाँ पृथ्वी में स्वीकार किया, तो हम पाते हैं कि *इस अर्थ में* परमेश्वर **पिता** उससे **बड़ा है**। वह *पद* में उससे बड़ा था, *व्यक्तित्व* में नहीं।

14:29 डरे हुए चेलों के प्रति प्रभु ने नि:स्वार्थ चिन्ता में, इन भविष्य की घटनाओं को उन पर प्रगट किया ताकि वे ठोकर न खाएं, हताश न हों, न ही डरें, बल्कि **प्रतीति** करें।

14:30 प्रभु यह जानता था कि उसे पकड़वाए जाने का समय निकट आ रहा है और उसके पास अब अपने लोगों से **बातें** करने के लिए अधिक समय नहीं रहेगा। उसके बाद भी शैतान उसके पास आता जा रहा था, परन्तु उद्धारकर्ता जानता था कि शत्रु को उसमें एक भी छींटा (दाग) नहीं मिलेगा। शैतान की बुरी परीक्षाओं में गिरने की कोई भी प्रवृत्ति प्रभु यीशु में नहीं थी। प्रभु यीशु के छोड़ और किसी दूसरे के लिए यह कह पाना हास्यास्पद होगा कि शैतान उस में **कुछ नहीं** पा सका।

14:31 हम इस पद का सारांश इस तरह से दे सकते हैं: ''मेरे पकड़वाए जाने का समय अब निकट आ चुका है। मैं स्वेच्छा से क्रूस पर जाऊंगा। मेरे लिए पिता की यही इच्छा है। इससे संसार यह जान लेगा कि **मैं पिता से** कितना **प्रेम** रखता हूँ। इसी कारण मैं अपने आप को बिना किसी प्रतिरोध के बलिदान कर रहा हूँ।'' यह कह कर प्रभु यीशु ने अपने चेलों को उसके साथ उठ कर चलने के लिए कहा। यह स्पष्ट नहीं है कि वे उसी समय उपरौठी

कोठरी से चले गए। शायद इस बातचीत का शेष भाग उस समय पूरा हुआ जब वे साथ साथ चल रहे थे।

प.प्रभु यीशु–सच्ची दाखलता (15:1–11)

15:1 पुराना नियम में, इस्राएली जाति को यहोवा के द्वारा लगायी गई दाखलता के रूप में चित्रित किया गया है। परन्तु इस्राएली जाति उसके प्रति अविश्वासयोग्य और फलहीन सिद्ध हुई, इसलिए प्रभु यीशु ने अब *अपने आप* को **सच्ची दाखलता** के रूप में प्रस्तुत किया, शेष अन्य प्रतिरूपों और प्रतिबिम्बों (छाया) की सिद्ध पूर्णता के रूप में। परमेश्वर **पिता किसान है**।

15:2 **डाली** जो उसमें है और **नहीं फलती** वह क्या है, इस बात पर मतभेद है। कुछ लोगों का विचार है कि यह डाली उस व्यक्ति को कहा गया है जो मसीही होने का झूठा दावा करता है। वह मसीही होने का दिखावा करता है परन्तु वास्तव में वह कभी विश्वास के द्वारा मसीह के साथ एक हुआ ही नहीं। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि यह एक सच्चे मसीही के लिए कहा गया है जो फल ला पाने में असफल होने के कारण अपना उद्धार खो देता है। यह पूरी तरह से असम्भव है क्योंकि यह अनेक अन्य स्थलों के विपरीत है जिनमें यह शिक्षा दी गई है कि विश्वासी का उद्धार अनन्त होता है। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि यह एक ऐसे सच्चे मसीही को कहा गया है जो अपने विश्वास से गिर जाता है और सांसारिक बातों में रूचि लेने लगता है। वह आत्मा के फलों को प्रगट करने में असफल रहता है – प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम।

प्रभु फल न लाने वाली डाली के साथ क्या करता है यह यूनानी शब्द *एयरो* के अनुवाद पर निर्भर करता है। इसका अर्थ, "**काट डालता है**" या "उठा ले जाता है" हो सकता है, जैसा कि यूहन्ना 1 :29 में भी अनुवाद किया गया है। इस स्थिति में यह मसीही की शारीरिक मृत्यु की ओर संकेत कर रहा हो (1 कुरि. 11:30)। किन्तु, इसी शब्द का अनुवाद, "उठाता है" भी किया जा सकता है (जैसा कि यूहन्ना 8:59 में किया गया है)। तब इसका अर्थ होगा फलहीन डाली को उत्साहित करने की *सकारात्मक सेवकाई* करना, ऐसा उस डाली को उठाकर उसके लिए प्रबन्ध करने के द्वारा किया जाता है कि उसे सरलता से हवा और प्रकाश मिल सके ताकि यह फले।

जो डाली फलती है वह एक ऐसे मसीही को दर्शाती है जो प्रभु यीशु की समानता में बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार की डाली को भी छांटने या साफ करने की आवश्यकता होती है। जिस तरह से वास्तविक दाखलता में से कीड़े, भुकड़ी, और फफूंदी को साफ किया जाता है, उसी प्रकार से एक मसीही में से भी सांसारिक बातों को साफ किया जाता है जो उससे चिपक जाती हैं।

15:4 यह सफाई प्रभु के **वचन** के माध्यम से होती है। चेलों को आरम्भ में उनके मनफिराव के समय **वचन** से शुद्ध किया गया था। जब उद्धारकर्ता उन से बातें कर रहा था, तब उसका वचन उनके जीवनों में शुद्धिकरण का प्रभाव डाल रहा था। इस प्रकार से, यह पद निर्दोष ठहराए जाने *और* पवित्र किए जाने के विषय में हो सकता है।

15:4 **बने** रहने का अर्थ होता है जहाँ हैं वहीं रहें। एक मसीही को मसीह में रखा जाता है; उसका स्थान वहीं है। प्रतिदिन के जीवन में, उसे प्रभु के साथ आत्मीय संगति में बने रहना है। एक **डाली** दाखलता से अपना जीवन और पोषण प्राप्त करते हुए उस दाखलता में बनी रहती है। उसी तरह से हम प्रार्थना करने, और उसके वचन को पढ़ने और उसका पालन करने, उसके लोगों के साथ संगति करने, और लगातार उसके साथ हमारी एकता के प्रति सचेत रहने के द्वारा उस में बने रहते हैं। जब हम इस प्रकार से उसके साथ लगातार सम्पर्क बनाए रखते हैं, तो हम इस बात के प्रति भी चैतन्य रहते हैं कि वह हम में बना हुआ है और हमें आत्मिक शक्ति और संसाधन उपलब्ध करा रहा है। एक **डाली** तभी **फल सकती** है जब वह **दाखलता में बनी** रहती है। विश्वासी लोग मसीह के समान स्वभाव का फल तभी ला सकते हैं जब वे हर क्षण मसीह के सम्पर्क में रहते हैं।

15:5 मसीह स्वयं **दाखलता** है और विश्वासी **डालियां** हैं। डालियां दाखलता के लिए नहीं जीवित हैं, बल्कि दाखलता का जीवन डालियों में प्रवाहित होता है। कभी कभी हम यह प्रार्थना करते हैं, "हे प्रभु, मेरी सहायता कर, कि मैं तेरे लिए जी सकूं।" बेहतर होगा कि इस तरह से प्रार्थना करें, "प्रभु यीशु, तू मुझ में जीवित रह।" मसीह से **अलग होकर** हम **कुछ भी नहीं कर सकते**। दाखलता की डाली का एक बड़ा उद्देश्य होता

है – फल लाना। यह फर्नीचर बनाने या घर बनाने के कोई काम नहीं आती। यह एक अच्छी जलाऊ लकड़ी भी नहीं है। परन्तु यह फल लाने में अच्छी होती *है* – जब तक यह दाखलता में बनी रहती है।

15:6 पद 6 के बारे में विद्वानों के बीच काफी मतभेद हैं। कुछ का मानना है कि यहाँ पर जिस व्यक्ति को दर्शाया गया है वह एक ऐसा विश्वासी है जो पाप में गिर जाता है और फिर अपना उद्धार खो देता है। इस प्रकार की व्याख्या पवित्रशास्त्र के उन अनेक पदों के विपरीत है जिनमें यह शिक्षा दी गई है कि परमेश्वर की कोई भी सच्ची सन्तान कभी भी नाश न होगी। कुछ अन्य का मानना है कि यह मसीही होने का दावा करने वाला व्यक्ति है – एक ऐसा व्यक्ति जो मसीही होने का दिखावा करता है परन्तु उसका नया जन्म कभी हुआ ही नहीं था। यहूदा को इसके उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

हमारा मानना है कि यह व्यक्ति सच्चा विश्वासी है क्योंकि यह खण्ड सच्चे विश्वासियों के ही सम्बन्ध में है। इस स्थल का विषय उद्धार नहीं, परन्तु बने रहना और *फल लाना* है। परन्तु लापरवाह और प्रार्थनाहीन जीवन जीने के कारण यह विश्वासी प्रभु से दूर हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, वह कुछ पाप करता है, और उसकी गवाही खराब हो जाती है। मसीह में बने रहने में असफल रहने के कारण वह **डाली की नाई फेंक** दिया जाता है – मसीह के द्वारा नहीं, परन्तु अन्य लोगों के द्वारा। डालियों को एकत्रित कर **आग में** फेंक दिया जाता है **और वे जल जाती हैं**। यह कार्य परमेश्वर नहीं, परन्तु लोगों के द्वारा किया जाता है। इसका अर्थ क्या हो सकता है? इसका अर्थ यह है कि लोग विश्वास से गिर जाने वाले लोगों का ठट्ठा करते हैं। वे उसके नाम को मिट्टी में मिला देते हैं। वे मसीही के रूप में उसकी गवाही को आग में झोंक देते हैं। दाऊद का जीवन इसका एक उपयुक्त उदाहरण है। वह एक सच्चा विश्वासी था, परन्तु वह प्रभु के प्रति लापरवाह हो गया और उसने व्यभिचार और हत्या का पाप किया। उसने प्रभु के शत्रुओं को प्रभु की निन्दा करने का अवसर दिया। आज भी, नास्तिक लोग दाऊद (और दाऊद के परमेश्वर) का ठट्ठा करते हैं। वे उसे आग में झोंक देते हैं।

15:7 प्रभु में बने रहना एक सफल प्रार्थनामय जीवन का रहस्य है। हम प्रभु के जितना निकट आते हैं, हम उतना ही उसके विचारों के बारे में सोचना सीखते हैं। हम उसे उसके वचन के माध्यम से जितना अधिक जानते जाते हैं, उतना अधिक हम उसकी इच्छा को समझते जाते हैं। जितना अधिक हमारी इच्छा उसकी इच्छा के साथ सहमत होती जाती है, उतना अधिक हम अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने के लिए निश्चित हो सकते हैं।

15:8 जब परमेश्वर के सन्तान मसीह की समानता को संसार के सामने प्रगट करते हैं, तो **पिता की महिमा** होती है। लोग यह अंगीकार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि वह अवश्य ही महान परमेश्वर होगा जो ऐसे दुष्ट पापियों को ऐसे पवित्र जनों के रूप में बदल सकता है। इस अध्याय की प्रगति की ओर ध्यान दें; फल (पद 2), अधिक फल (पद 2), **बहुत सा फल** (पद 8)।

''तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।'' इसका अर्थ यह है कि जब हम उसमें बने रहते हैं तो हम *सिद्ध (प्रमाणित) करते* हैं कि हम उसके चेले हैं। दूसरे लोग यह देख सकते हैं कि हम सच्चे चेले हैं, और हमारा चाल चलन प्रभु के समान है।

15:9 उद्धारकर्ता हमसे जो प्रेम रखता है वह वही प्रेम है जो **पिता** पुत्र से करता है। जब हम इन शब्दों को पढ़ते हैं तो हमारा हृदय उसकी आराधना में झुक जाता है। यह प्रेम गुण और मात्रा में बिल्कुल वही है। यह ''व्यापक, चौड़ा, गहरा, और अपार प्रेम है, जो हमारी समझ से परे है, और मनुष्य इसे पूरी तरह से कभी समझ नहीं पाएगा।'' इस में इतनी ''गहराई है कि हमारे सारे विचार इसमें डूब जाते हैं।'' हमारे प्रभु ने कहा है, **''मेरे प्रेम में बने रहो।''** इसका अर्थ यह है कि हमें उसके प्रेम का बोध करते रहना है और अपने जीवन में इसका आनन्द लेना है।

15:10 पद 10 का पहला भाग हमें बताता है कि हम उसके प्रेम में किस तरह से बने रह सकते हैं; उसकी **आज्ञाओं** को मानने के द्वारा। ''ख्रीष्ट में आनन्द जो तू चाहे तो जान, यह उपाय कि विश्वास से उसकी आज्ञा को मान।'' उस पर भरोसा रखने और उसकी आज्ञा का पालन करने के सिवाय उसमें आनन्दित रहने का और कोई उपाय नहीं है। इस पद का दूसरा भाग हमारे सामने हमारे सिद्ध आदर्श को प्रस्तुत करता है। प्रभु यीशु ने अपने **पिता की आज्ञाओं को माना**। उसने जो कुछ किया उसे पिता की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होकर किया। वह परमेश्वर पिता के **प्रेम** के आनन्द में लगातार बना रहा।

उस स्नेही संगति के मधुर भाव को विकृत करने के लिए कभी कोई चीज बीच में न आ सकी।

15:11 प्रभु यीशु ने अपना गहरा **आनन्द** परमेश्वर पिता के साथ अपनी संगति में प्राप्त किया। वह चाहता था कि उसके चेले वह आनन्द प्राप्त करें जो उस पर निर्भर रहने के द्वारा प्राप्त होता है। वह चाहता था कि *उसका* आनन्द उनका हो जाए। आनन्द के विषय में मनुष्य का विचार यह है कि वह परमेश्वर से दूर रह कर जितना आनन्दित हो सकता है उतना आनन्दित रहे। ''**कि . . . तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए,**'' या पूर्ण हो जाए। उनका आनन्द प्रभु में बने रहने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा पूर्ण होगा। अनेक लोगों ने यूहन्ना 15 का उपयोग विश्वासियों के उद्धार की अनन्त सुरक्षा के सम्बन्ध में लोगों के मन में सन्देह उत्पन्न करने के लिए किया है। उन्होंने इस अध्याय के आरम्भिक भागों का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया है कि मसीह की भेड़ अन्तत: नाश हो सकती है। परन्तु प्रभु यीशु का उद्देश्य यह नहीं था कि ''तुम्हारा सन्देह पूरा हो जाए,'' परन्तु यह कि ''**तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।**''

क्य. एक दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा (15:12–17)

15:12 प्रभु यीशु अब शीघ्र ही चेलों को छोड़ कर चला जाएगा। वे इस बैरी संसार में अकेले रह जाएंगे। जैसे जैसे तनाव बढ़ता जाएगा, चेलों के बीच में आपसी संघर्ष की सम्भावना बढ़ती जाएगी। इसलिए प्रभु यीशु एक आदेश देता है, ''**जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।**''

15:13 उसके चेलों के प्रेम का यह स्वभाव होना चाहिए कि वे एक दूसरे के लिए मर जाने के लिए भी तैयार रहें। जो लोग ऐसा करने के लिए तैयार रहते हैं वे एक दूसरे के साथ लड़ाई नहीं करते। मानवीय आत्म बलिदान का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि एक मनुष्य **अपने मित्रों के लिए** अपना प्राण दे। मसीह के चेलों को ऐसे ही समर्पण के लिए बुलाया गया है। कुछ अपना प्राण शब्दश: देते हैं; कुछ अन्य अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर के लोगों की अथक सेवा में लगा देते हैं। प्रभु यीशु मसीह इसका एकमात्र उदाहरण है। उसने अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दिया। अवश्य ही, जिस समय वह उनके लिए मरा तब वे उसके शत्रु थे, परन्तु जब उनका उद्धार होता है तो वे उसके मित्र बन जाते हैं। इसलिए यह कहना उचित होगा कि वह अपने मित्रों के साथ साथ अपने शत्रुओं के लिए भी मरा।

15:14 वह **जो कुछ** आज्ञा हमें देता है उसका पालन करने के द्वारा हम यह दर्शाते हैं कि हम उसके **मित्र** हैं। यह वो तरीका नहीं है जिससे हम उसके मित्र बनते हैं, परन्तु यह वो तरीका है जिसके द्वारा हम संसार के समक्ष इस बात को प्रगट करते हैं कि हम उसके मित्र हैं।

15:15 प्रभु ने **दास** और **मित्र** के बीच के अन्तर पर जोर दिया है। **दास** से सिर्फ आशा की जाती है कि उसे जो कार्य सौंपा गया है वह उसे पूरा करे, परन्तु **मित्र** पर भरोसा किया जाता है। मित्रों पर हम भविष्य की अपनी योजनाओं को प्रगट करते हैं। हम उनके साथ गोपनीय जानकारियों को बांटते हैं। एक अर्थ में, चेले सदा प्रभु के दास बने रहेंगे, परन्तु वे दास से बढ़कर होंगे – वे उसके मित्र होंगे। प्रभु अब भी उन पर उन बातों को प्रगट कर रहा है जिन्हें उसने **पिता से सुनी** थी। वह उन्हें अपने प्रस्थान, पवित्र आत्मा के आगमन, स्वयं के दोबारा आगमन, और इस दौरान चेलों की जिम्मेदारियों के बारे में बता रहा था। किसी ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि डालियों के रूप में हम *प्राप्त करते हैं* (पद 5); चेलों के रूप में हम *अनुसरण करते हैं* (पद 8); और मित्रों के रूप में हम *संगति* करते हैं (पद 15)।

15:16 कहीं ऐसा न हो कि वे हताश होने लगें या हार मान लें, प्रभु यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया कि उसी ने उन्हें **चुना** है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि उसने उन्हें अनन्त उद्धार देने, चेला बनाने, या फल लाने के लिए चुना है। उसने चेलों को उस कार्य को करने के लिए नियुक्त किया जिसे वह उनके लिए छोड़ कर जा रहा था। हमें **जाकर फल** लाने की आवश्यकता है। **फल** का अर्थ, मसीही जीवन की मनोहरता हो सकता है, जैसे प्रेम, आनन्द, मेल, इत्यादि। या इसका अर्थ प्रभु यीशु मसीह के लिए जीती जाने वाली आत्माएं हो सकता है। इन दोनों के बीच में एक निकट सम्बन्ध है। जब हम पहले प्रकार का फल प्रगट करेंगे, तभी हम दूसरे प्रकार के फल ला पाने में सफल होंगे।

''**तुम्हारा फल बना रहे,**'' यह वाक्य हमें यह

सोचने के लिए प्रेरित करता है कि यहाँ पर फल का अर्थ आत्माओं का उद्धार है। प्रभु ने चेलों को चुना कि वे जाकर *सदा बने रहने वाले* **फल** लाएं। उस पर मुँह से विश्वास करने वालों में उसकी कोई रूचि नहीं थी, परन्तु वह सचमुच में उद्धार पाए लोगों में रूचि रखता था। एल. एस. शेफर ध्यान दिलाते हैं कि इस अध्याय में प्रभावशाली प्रार्थना (पद 7), स्वर्गीय आनन्द (पद 11) और सर्वदा बने रहने वाले फल (पद 16) के विषय में बताया गया है। ''**जो कुछ** तुम **मांगो** . . .।'' प्रभावशाली सेवकाई का रहस्य प्रार्थना में पाया जाता है। चेलों को इस गारंटी के साथ भेजा गया कि वे **जो कुछ** मसीह के **नाम** से मांगेंगे उसे **पिता** उन्हें देगा।

15:17 प्रभु यीशु अब अपने चेलों को संसार के बैर के विषय में चेतावनी देने वाला था। उसने उन्हें यह बताने के द्वारा आरम्भ किया कि **एक दूसरे से प्रेम रखो**, एक साथ जुड़े रहो, और शत्रुओं के विरूद्ध एक होकर खड़े रहो।

र. प्रभु यीशु संसार के बैर की भविष्यद्वाणी करता है (15:18, 19)

15:18, 19 चेलों को चकित या हताश नहीं होना है **यदि संसार** उनसे **बैर रखता है**। (**'यदि'** इसके प्रति किसी प्रकार का सन्देह व्यक्त नहीं करता कि ऐसा होगा; ऐसा होना निश्चित है)। संसार ने प्रभु यीशु से **बैर** रखा, और उन सब लोगों से भी बैर रखेगा जो अपने प्रभु की सी चाल चलते हैं।

संसार के मनुष्य उन लोगों से प्रेम रखते हैं जो उनकी सी चाल चलते हैं – जो अश्लील भाषा का प्रयोग करते हैं और शरीर की लालसाओं में लिप्त रहते हैं, या ऐसे लोगों को जो सभ्य तो हैं परन्तु सिर्फ अपने लिए जीते हैं। मसीही अपने आप को अपने पवित्र जीवन के द्वारा संसार की दृष्टि में दोषी ठहराते हैं, **इसीलिए संसार** उनसे **बैर रखता है**।

15:20 यहाँ पर **दास** का शाब्दिक अर्थ ''गुलाम'' है। एक चेले को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि संसार ने उसके स्वामी के साथ जैसा बर्ताव किया, एक दास के रूप में उसके साथ उससे बेहतर बर्ताव किया जाएगा। उसे भी मसीह के समान ही सताया जाएगा। उसके वचनों का भी इंकार कर दिया जाएगा जिस प्रकार से उसके स्वामी के वचनों का इंकार किया गया था।

15:21 यह बैर और सताव ''**मेरे नाम के कारण**'' होगा। यह विश्वासी के मसीह के साथ सम्बन्ध के कारण होगा; क्योंकि वह मसीह के द्वारा संसार से अलग किया गया है; और इसलिए भी, क्योंकि वह मसीह का नाम और उसकी समानता को अपने जीवन में प्रगट करता है। संसार परमेश्वर को नहीं जानता। **वे** यह **नहीं जानते** कि पिता ने प्रभु को इस संसार में उद्धारकर्ता के रूप में **भेजा** है। परन्तु अज्ञानता कोई बहाना नहीं है।

15:22 प्रभु यहाँ पर यह शिक्षा नहीं दे रहा है कि यदि वह नहीं आता, तो मनुष्य पापी नहीं होते। आदम के समय से ही, सारे मनुष्य पापी रहे हैं। परन्तु उनका पाप इतना बड़ा नहीं होता जितना कि अब था। इन मनुष्यों ने परमेश्वर के पुत्र को देखा था और उसके अद्भुत वचनों को सुना था। वे उसमें कोई भी गलती नहीं ढूंढ़ सके थे। तौभी उन्होंने उसे ठुकरा दिया था। इसी बात ने उनके पाप को इतना बड़ा कर दिया। और इसलिए यह एक तुलना का विषय था। महिमा के प्रभु को ठुकराने के भयानक पाप की तुलना में, उनके अन्य पाप मानों कुछ भी नहीं थे। अब **उनके पाप के लिए कोई बहाना नहीं** था। उन्होंने जगत की ज्योति को ठुकरा दिया था!

15:23 मसीह से घृणा करके, उन्होंने उसके **पिता से भी** बैर रखा। दोनों एक हैं। वे यह नहीं कह सकते कि वे परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, क्योंकि यदि उन्होंने परमेश्वर से प्रेम रखा होता, तो उससे भी प्रेम रखते जिसे परमेश्वर ने भेजा है।

15:24 उन्होंने न सिर्फ मसीह की शिक्षाओं को सुना था; बल्कि उन्होंने उसके आश्चर्यकर्म को भी देखा था। इससे उन का दोष बढ़ गया। उन्होंने ऐसे ऐसे **काम** देखे **जो और किसी ने** कभी **नहीं** किए। इस प्रमाण के बाद भी मसीह को ठुकराना अक्षम्य था। प्रभु ने अन्य सभी पापों की तुलना इस पाप के साथ की, और कहा कि पहले वाले पापों की तुलना इस बाद वाले पाप से करने पर पहले वाले पाप कुछ भी नहीं हैं। इसलिए कि उन्होंने पुत्र से **बैर किया**, उन्होंने **पिता** से बैर किया, और यह उन पर भयानक दोष लेकर आता है।

15:25 प्रभु यीशु समझ गया कि उसके प्रति मनुष्य का यह रवैया भविष्यद्वाणी की ठीक ठीक पूर्णता है। भजन

69:4 में यह भविष्यद्वाणी की गई थी कि मसीह से **व्यर्थ बैर किया** जाएगा। अब यह **पूरा** हुआ, प्रभु यीशु ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जिस पुराना नियम को ये मनुष्य इतना महत्व देने का दावा करते हैं उसी पुराना नियम में उनके द्वारा मसीह से व्यर्थ में बैर किए जाने के विषय में भविष्यद्वाणी की गई है। इस तथ्य का, कि यह भविष्यद्वाणी की गई है, यह अर्थ नहीं है कि इन मनुष्यों को मसीह से *बैर* रखना आवश्यक था। उन्होंने उससे *अपने स्वयं के हठ में होकर* बैर किया, परन्तु परमेश्वर ने पहले से यह देख लिया था कि ऐसा होने वाला है, और उसने दाऊद को भजन 69 लिखने के लिए उभारा।

15:26 मनुष्य द्वारा ठुकरा दिए जाने के बाद भी मसीह की गवाही जारी रहेगी। यह **सहायक** के द्वारा जारी रखी जाएगी – पवित्र आत्मा के द्वारा। यहाँ पर प्रभु ने कहा कि *वह* **पिता की ओर से** आत्मा को **भेजेगा**। यूहन्ना 14:16 के अनुसार, *पिता* ने पवित्र आत्मा को भेजा। क्या यह इस बात का एक और प्रमाण नहीं है कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर पिता के तुल्य है? परमेश्वर के सिवाय और कौन परमेश्वर को भेज सकता है? **सत्य का आत्मा . . . पिता की ओर से निकलता है**। इसका अर्थ यह है कि वह लगातार परमेश्वर की ओर से भेजा जा रहा है, और पिन्तेकुस्त के दिन उसका आगमन इसका एक विशेष उदाहरण था। आत्मा मसीह के विषय में गवाही देता है। यह उसका महान मिशन है। वह यह प्रयास नहीं करता कि वह स्वयं मनुष्यों में पूरी तरह से समा जाए, यद्यपि वह त्रिएक परमेश्वर के सदस्यों में से एक है। परन्तु वह पापियों और पवित्र लोगों दोनों का ध्यान प्रभु की महिमा की ओर ले जाता है।

15:27 आत्मा सीधे सीधे चेलों के माध्यम से गवाही देगा। वे प्रभु यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के **आरम्भ से** ही उसके **साथ** रहे थे और वे उसके व्यक्तित्व और कार्य के बारे में बताने के लिए विशेष रूप से योग्य बनाए गए थे। यदि कोई व्यक्ति मसीह में कोई असिद्धता पा सकता था, तो वह वही व्यक्ति हो सकता था जिसने उसके साथ सबसे अधिक समय बिताया हो। परन्तु उन्होंने कभी भी उसे कोई भी पाप करते नहीं पाया। वे इस बात की गवाही दे सकते थे कि वह परमेश्वर का निष्पाप पुत्र और जगत का उद्धारकर्ता है।

16:1 शायद चेले भी यहूदियों के समान ही आशा कर रहे थे – कि मसीह अपना राज्य स्थापित करेगा और रोम की सत्ता ध्वस्त की जाएगी। इसकी बजाए प्रभु ने उन्हें बताया कि वह मर जाएगा, फिर से जी उठेगा, और वापस स्वर्ग को चला जाएगा। पवित्र आत्मा आएगा, और चेले मसीह की गवाही देने के लिये उसके गवाह के रूप में जाएंगे। उनसे बैर किया जाएगा और उन्हें सताया जाएगा। प्रभु यीशु ने उन्हें यह सब बातें पहले से ही बता दी ताकि वे भ्रमित न हो जाएं, **ठोकर** न खाएं, न ही उन्हें किसी तरह का सदमा पहुँचे।

16:2, 3 **आराधनालय** से निष्कासित किया जाना अधिकांश यहूदियों की दृष्टि में उनके लिए सबसे बदतर बात थी। तौभी यह उन यहूदियों के साथ होने वाला था जो प्रभु यीशु के चेले थे। मसीही विश्वास से इतना बैर रखा जाएगा कि जो इसको समाप्त करने का प्रयास करेंगे, वे समझेंगे कि वे **परमेश्वर** को प्रसन्न कर रहे हैं। इससे यह प्रगट होता है कि एक व्यक्ति निष्ठावान और अत्यंत उत्साही होने के बाद भी *गलत* हो सकता है।

मसीह के ईश्वरत्व को पहचान पाने में असफलता ही समस्या की जड़ थी। यहूदियों ने उसे ग्रहण नहीं किया, और ऐसा करने के द्वारा, उन्होंने **पिता** को ग्रहण करने से मना कर दिया।

16:4 एक बार फिर से प्रभु यीशु ने चेलों को पहले से सचेत कर दिया ताकि वे इन कष्टों से उनका सामना होने पर भी दृढ़ रहें। वे यह **स्मरण** करेंगे कि प्रभु यीशु ने सताव आने के विषय में भविष्यद्वाणी की थी; वे यह जान लेंगे कि यह सब उनके जीवनों के लिए उसकी योजना का हिस्सा था। प्रभु यीशु ने उन्हें इस विषय में अधिक नहीं बताया था क्योंकि उस समय वह उनके साथ था। उस समय उनमें व्याकुलता उत्पन्न करने की या उनके मन को उसकी शिक्षाओं के सिवाय और दूसरी ओर भटकाने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु अब वह उन्हें छोड़कर जा रहा था, उन्हें उस मार्ग के विषय में बताना आवश्यक था जिस पर भविष्य में उन्हें चलना था।

स.सत्य के आत्मा का आगमन (16:5–15)

16:5 ऐसा लगता है कि पद 5 में इस बात पर निराशा जताई गई है कि भविष्य में प्रभु यीशु के साथ जो

कुछ होने वाला है उसमें चेलों को कोई रूचि नहीं है। यद्यपि उन्होंने सामान्य रीति से यह पूछा था कि वह **कहाँ जाता है**, परन्तु वे इसमें कोई विशेष रूचि दिखाते हुए प्रतीत नहीं होते थे।

16:6 वे उसके भविष्य की तुलना में अपने भविष्य की चिन्ता अधिक कर रहे थे। उसके सामने क्रूस था। उनके सामने सेवकाई करने पर सताव था। वे अपनी ही परेशानियों को लेकर **शोक से भर** गये, और उसकी परेशानियों की ओर उनका कोई ध्यान नहीं था।

16:7 **तौभी**, वे बिना सहायता या शान्ति के अकेले नहीं छोड़े जायेंगे। मसीह उनके **सहायक** के रूप में पवित्र आत्मा को भेजेगा। **सहायक** का आना चेलों के लिए **अच्छा** होगा। वह उन्हें सामर्थ प्रदान करेगा, उन्हें ढ़ाढ़स प्रदान करेगा, उन्हें सिखाएगा, और मसीह को उनके सामने पहले की तुलना में अधिक सच्चाई से प्रगट करेगा। **सहायक** तब तक नहीं आएगा जब तक प्रभु यीशु मसीह वापस स्वर्ग को नहीं जाएगा और महिमा नहीं पाएगा। अवश्य ही, पवित्र आत्मा इससे पहले भी जगत में था, परन्तु अब वह नयी रीति से आने वाला है – (ताकि) संसार को दोषी ठहराए और छुटकारा पाए हुओं की सेवा करे।

16:18 पवित्र आत्मा **संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा**। सामान्यत: इसका अर्थ यह समझा जाता है कि वह इन बातों के प्रति पापी के व्यक्तिगत जीवन में एक भीतरी चेतना उत्पन्न करता है। यद्यपि यह बात सत्य है, परन्तु यह स्थल यहाँ पर यह शिक्षा नहीं दे रहा है। पवित्र आत्मा का इस संसार में होना ही उन्हें दोषी ठहराता है। उसे यहाँ नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रभु यीशु मसीह को यहाँ होना चाहिए था कि वह संसार पर राज्य करे। परन्तु संसार ने उसे ठुकरा दिया, और वह वापस स्वर्ग को चला गया। पवित्र आत्मा इस संसार में ठुकराए हुए प्रभु यीशु मसीह के बदले में है, और यह संसार के दोष को प्रदर्शित करता है।

16:9 आत्मा संसार को इस **पाप के विषय** में दोषी ठहराता है कि उन्होंने प्रभु यीशु पर **विश्वास** नहीं किया। वह **विश्वास** लाए जाने के योग्य था। उसमें कोई भी ऐसी बात नहीं थी जिससे कि मनुष्य के लिए उस पर विश्वास लाना असम्भव हो जाए। परन्तु उन्होंने उस पर विश्वास करने से मना कर दिया। और पवित्र आत्मा की उपस्थिति उनके इस अपराध की गवाह है।

16:10 उद्धारकर्ता का दावा था कि वह धर्मी है, परन्तु मनुष्यों ने कहा कि उसमें दुष्टात्मा है। परमेश्वर ने इस पर अपना निर्णय देते हुए कुछ इस तरह से कहा, ''मेरा पुत्र धर्मी है, और मैं उसे मृतकों में से जिला कर और वापस स्वर्ग में लेने के द्वारा इस बात को प्रमाणित करूंगा।'' पवित्र आत्मा इस बात की गवाही देता है कि मसीह सही था और संसार गलत था।

16:11 पवित्र आत्मा की उपस्थिति संसार को **न्याय** के विषय में भी दोषी ठहराती है। उसकी यहाँ उपस्थिति का अर्थ है कि शैतान क्रूस पर दोषी ठहराया जा चुका है और जितनों ने उसे उद्धारकर्ता के रूप ग्रहण करने से मना कर दिया वे आने वाले दिन में उस भयानक दण्ड के भागी होंगे।

16:12 और भी **बहुत सी** ऐसी **बातें** थीं जो प्रभु द्वारा अपने चेलों को बताई जानी थीं, परन्तु वे उन बातों को समझ नहीं सकते थे। यह शिक्षा देने का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। गूढ़ सच्चाई को समझ पाने के लिए पहले सिखाई गई आधारभूत बातों में प्रगति करना आवश्यक है। प्रभु यीशु ने कभी भी अपने चेलों पर बहुत सारी शिक्षाओं का बोझ नहीं लादा। उसने उन्हें ''नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहां'' (यशा. 28:1) दिया।

16:13 प्रभु ने जिस कार्य को आरम्भ किया था वह **सत्य के आत्मा** के द्वारा जारी किया जाना था। वह उन्हें **सब सत्य का मार्ग** दिखाएगा। प्रेरितों के जीवनकाल में उन्हें एक प्रकार से **सब सत्य** दिया गया था। इसके बाद, उन्होंने इन सत्यों को लिख दिया, और वही हमारे पास नया नियम के रूप में है। इसे पुराना नियम से साथ जोड़ने पर, मनुष्य के लिए परमेश्वर का लिखित प्रकाशन पूर्ण हो गया। परन्तु अवश्य ही, यह सत्य है कि, सब समय आत्मा सब सत्य में परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन करता है। **वह** सिर्फ उन्हीं बातों को **कहेगा** जो पिता और पुत्र के द्वारा उसे कहने के लिए दी गई हैं। ''**आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।**'' अवश्य ही, ऐसा नया नियम में किया गया है, और विशेष कर के प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जहाँ भविष्य की बातों को प्रगट किया गया है।

16:14 उसका प्रमुख कार्य मसीह की **महिमा** करना होगा। इसके द्वारा हम सारी शिक्षाओं और प्रचार

को परख सकते हैं। यदि इन बातों में उद्धारकर्ता को ऊँचा उठाया जा रहा है, तो यह पवित्र आत्मा का कार्य है। ''**वह मेरी बातों में से तुम्हें बताएगा**'' का अर्थ है कि वह मसीह से सम्बन्ध रखने वाली महान सच्चाइयों को ग्रहण करेगा। ये वे ही बातें हैं जिन्हें वह विश्वासियों पर प्रगट करता है। यह विषय कभी समाप्त नहीं होता।

16:15 **पिता** के **सब** सहज गुण पुत्र में भी पाए जाते हैं। पद 14 में मसीह इन्हीं सिद्धताओं की बात कर रहा था। आत्मा ने प्रभु यीशु की महिमामय सिद्धताओं, सेवकाइयों, पदों, मनोहरताओं, और पूर्णता को प्रगट किया है।

ट.शोक आनन्द में बदल जाएगा (16:16–22)

16:16 पद 16 की सही समयसीमा अनिश्चित है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह तीन दिन के लिए उनके पास से जाएगा, और वह फिर अपने पुनरूत्थान के बाद फिर से उनके सामने प्रगट होगा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाएगा, और **थोड़ी देर में** (वर्तमान युग में) वह वापस उनके पास आएगा। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि **थोड़ी देर** वे उसे अपनी भौतिक आँखों से **न** देखेंगे, परन्तु जब पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन दिया जाएगा, तो वह उसे विश्वास के द्वारा इतनी स्पष्ट रीति से देख पाएंगे जैसा कि उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

16:17 **उसके** चेले उलझन में पड़ गए। उनकी उलझन का कारण था कि पद 10 और 11 में, उद्धारकर्ता ने कहा था, ''. . . मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे।'' अब वह कह रहा है, ''**थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।**'' वे इन दोनों वाक्यों के बीच में मेल नहीं बैठा पा रहे थे।

16:18 उन्होंने एक दूसरे से इन शब्दों का अर्थ पूछा, ''**थोड़ी देर में।**'' विचित्र बात है, कि आज भी यह समस्या बनी हुई है। हमें यह नहीं मालूम कि यहाँ पर पुनरूत्थान से पहले के तीन दिनों के बारे में कहा गया है, या पिन्तेकुस्त से पूर्व के चालीस दिनों के बारे में कहा गया है, या फिर उसके दोबारा आने से 2000 वर्ष से ऊपर की अवधि के बारे में कहा गया है!

16:19, 20 परमेश्वर होने के कारण, प्रभु यीशु उनके विचारों को पढ़ सकता था। अपने प्रश्नों के द्वारा, उसने यह प्रगट कर दिया कि उसे उनके उलझनों के विषय में पूरी पूरी जानकारी है।

प्रभु यीशु ने उनके प्रश्नों का उत्तर सीधे सीधे नहीं दिया, परन्तु ''थोड़ी देर में'' के सम्बन्ध में आगे की जानकारी दी। **संसार आनन्द** करेगा क्योंकि वे प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में सफल हो गए, परन्तु चेले **विलाप** और **शोक** करेंगे। परन्तु यह विलाप थोड़ी देर के लिए होगा। उनका **शोक आनन्द में बदल जाएगा** – पहले पुनरूत्थान के द्वारा, और उसके बाद आत्मा के आगमन के द्वारा। तब सब समयों के सब चेलों के लिए, शोक आनन्द में बदल जाएगा जब प्रभु यीशु मसीह फिर से वापस आएगा।

16:21 माता जिस तेजी से **बालक** को **जनने** की पीड़ा को भूलती है उससे उल्लेखनीय बात और कुछ नहीं हो सकती। चेलों के साथ भी ऐसा ही होगा। प्रभु की अनुपस्थिति से जुड़ा हुआ शोक वे शीघ्र ही भुला देंगे जब वे उसे फिर से देखेंगे।

16:22 एक बार फिर से हम इस बात के प्रति अपनी अनभिज्ञता को प्रगट करना आवश्यक समझते हैं कि प्रभु ने इन शब्दों में किस समय की ओर संकेत किया है: ''**मैं तुम से फिर मिलूंगा।**'' क्या यह उसके पुनरूत्थान की ओर संकेत कर रहा है, या पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को भेजे जाने के विषय में कह रहा है, या फिर प्रभु यीशु के दूसरे आगमन से सम्बन्धित है? तीनों मामलों में, परिणाम आनन्द ही होगा, एक ऐसा **आनन्द** जो कभी छिना नहीं जा सकता।

य.प्रभु यीशु के नाम से पिता से प्रार्थना करना (16:23–28)

16:23 अब तक, चेले अपने सारे प्रश्नों और निवेदनों को लेकर प्रभु यीशु के पास आते थे। **उस दिन** (वह युग जो पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के आगमन से आरम्भ होगा) वह शरीर रूप में उनके साथ नहीं रहेगा, और इसलिए तब से उससे कोई प्रश्न नहीं पूछ पाएंगे। परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि उनके पास ऐसा कोई भी

नहीं होगा जिसके पास वे जा सकें? नहीं, **उस दिन** उनके लिए यह सुअवसर होगा कि वे **पिता से** मांग सकें। वह प्रभु यीशु के नाम से उनके निवेदनों का उत्तर देगा, इसलिए नहीं कि हम इसके योग्य हैं, परन्तु इसलिए कि प्रभु यीशु इसके योग्य है।

16:24 इससे पहले, चेलों ने प्रभु के **नाम** से पिता से कभी भी प्रार्थना नहीं की थी। अब उन्हें मांगने का आव्हान किया जा रहा है। प्रार्थनों के उत्तर मिलने के द्वारा उनका **आनन्द** पूरा हो जाएगा।

16:25 प्रभु यीशु की शिक्षाओं का अर्थ हमेशा सीधा सीधा नहीं समझा जा सकता था। वह **दृष्टान्तों** और प्रतीकात्मक भाषा में बातें करता था। इस अध्याय में भी अनेक अवसरों पर हम ठोस अर्थ को लेकर आश्वस्त नहीं हैं। पवित्र आत्मा के आगमन से **पिता के विषय** में दी जाने वाली शिक्षाएं अधिक स्पष्ट हो गईं। प्रेरितों के काम और इफिसियों की पत्री में सच्चाइयों को दृष्टान्तों के माध्यम से नहीं, परन्तु सीधे वाक्यों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

16:26 **''उस दिन''** पवित्र आत्मा के युग को कहा गया है, जिसमें हम रहते हैं। पिता से प्रभु यीशु के **नाम** से प्रार्थना करना हमारा विशेषाधिकार है। **''मैं तुम से नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूंगा,''** अर्थात्, पिता को हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए आग्रह करने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु यीशु को परमेश्वर के सामने विनय-अनुनय करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। परन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रभु यीशु परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मध्यस्थ है, और परमेश्वर के सिहांसन के सामने अपने लोगों की ओर से उससे निवेदन करता है।

16:27 **पिता** चेलों से प्रेम रखता था क्योंकि उन्होंने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया था और उससे **प्रीति** रखते थे और उन्होंने उसके ईश्वरत्व की **प्रतीति** की थी। इसी कारण से प्रभु यीशु को पिता से याचना करने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा के आगमन से, वे पिता के साथ आत्मीयता का आनन्द एक नए भाव से लेंगे। वे हियाव के साथ उनके पास पहुँच पाएंगे, और यह सब इसलिए है क्योंकि उन्होंने उसके पुत्र से **प्रीति** रखी।

16:28 यहाँ पर प्रभु ने एक बार फिर दोहराया कि वह परमेश्वर पिता के तुल्य (बराबर) है। उसने यह नहीं कहा कि ''मैं परमेश्वर से निकल कर आया हूँ'' मानों वह परमेश्वर के द्वारा भेजा गया सिर्फ कोई भविष्यद्वक्ता हो, परन्तु उसने कहा, **''मैं पिता से निकल कर जगत में आया हूँ।''** इसका अर्थ यह है कि वह अनन्त पिता का अनन्त पुत्र है, जो परमेश्वर पिता के बराबर है। वह **जगत में** एक ऐसे व्यक्ति के रूप में आया जो यहाँ आने से पहले कहीं और रहता था। उसके स्वर्गारोहण पर, उसने संसार को छोड़ दिया और **पिता** के पास लौट गया। यह महिमा के प्रभु का संक्षिप्त जीवन परिचय है।

व. क्लेशकाल और शान्ति (16:29-33)

16:29, 30 प्रभु यीशु के **चेलों** ने सोचा कि वे पहली बार उसकी बातों को समझ गए हैं। उन्होंने कहा कि वह इस समय दृष्टान्त में बातें नहीं कर रहा है।

वे सोच रहे थे कि अब वे उसके व्यक्तित्व के रहस्य को समझ चुके हैं। **अब** वे **जान गए** हैं कि उसके पास सारी बातों का ज्ञान है और वह *परमेश्वर* **से निकला है।** परन्तु उसने कहा कि वह *पिता* से निकला है। क्या उन्हें इस बात का अर्थ समझ में आया? क्या वे यह समझ पाए कि प्रभु यीशु ईश्वर-शीर्ष के तीन व्यक्तियों में से एक है?

16:31 प्रभु **यीशु** ने इस प्रश्न के माध्यम से यह संकेत दिया कि उनका विश्वास अभी भी कच्चा है। वह जानता था कि वे उससे प्रेम रखते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, परन्तु क्या वे वास्तव में यह जानते थे कि वह देह रूप में प्रगट हुआ परमेश्वर है?

16:32 कुछ ही समय में उसे पकड़ लिया जाएगा, उस पर मुकद्दमा चलाया जाएगा, और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा। सभी चेले उसे छोड़ कर भाग जाएंगे। परन्तु वह अकेला नहीं होगा क्योंकि **पिता** उसके **साथ** होगा। वे परमेश्वर पिता के साथ उसकी इस एकता को ही समझ नहीं पाए थे। यही वह चीज़ थी जो उसे सहारा देगी जब चेले अपनी अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़े होंगे।

16:33 चेलों के साथ उसकी एक चर्चा का उद्देश्य यह था **कि** उन्हें **शान्ति मिले**। जब उनसे बैर किया जाएगा, उसका पीछा किया जाएगा, उन्हें सताया जाएगा, उन पर झूठा दोष लगाया जाएगा, और यहाँ तक कि उन्हें यातना दी जाएगी, तो वे *उसमें होकर* **शान्ति** पा सकेंगे। वह कलवरी के क्रूस पर **संसार** का उद्धार करने के लिए

आया। उनके क्लेश के बाद भी, वे इस आश्वसन के साथ चैन से रह सकते थे कि वे विजयी पक्ष की ओर हैं।

साथ ही, पवित्र आत्मा के आगमन के साथ ही, उन्हें सहने के लिए नई सामर्थ प्राप्त होगी और शत्रुओं का सामना करने के लिए नया साहस प्राप्त होगा।

डब्ल्यू. प्रभु यीशु अपनी सेवकाई के लिए प्रार्थना करता है (17:1–5)

यहाँ पर हम अब प्रभु यीशु की महायाजकीय प्रार्थना को देखते हैं। इस प्रार्थना में, उसने अपने अपनों के लिए मध्यस्थता करते हुए याचना की। यह स्वर्ग में उसकी महान सेवकाई का एक चित्रण है जहाँ कि वह अपने लोगों के लिए इस समय मध्यस्थता की प्रार्थना कर रहा है। मारकस रेनफोर्ड ने इस बात को अच्छी तरह से व्यक्त किया है:

> यह सम्पूर्ण प्रार्थना हमारे प्रभु के द्वारा परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ कर की जाने वाली मध्यस्थता की प्रार्थना का एक सुन्दर चित्रण है। उसने अपने लोगों के विरूद्ध एक भी शब्द नहीं कहा; उसकी असफलताओं या कमियों का कोई भी हवाला नहीं दिया . . .। उसने सिर्फ इस तरह से प्रार्थना की कि वे पिता की योजना का हिस्सा हैं, स्वयं उसके सम्बन्धी हैं, और उस पूर्णता के प्राप्तकर्ता हैं जिसे प्रदान करने के लिए वह स्वर्ग से नीचे आया था . . .। अपने लोगों के लिए प्रभु की सारी विशेष याचनाएं आत्मिक बातों से सम्बन्धित होती हैं। प्रभु उनके लिए धन, आदर, सांसारिक प्रतिष्ठा, या विशेषाधिकार की मांग नहीं करता, परन्तु अवश्य ही, वह अत्यंत यत्न से यह प्रार्थना करता है कि वे बुराई से बचे रहें, संसार से अलग रहें, सेवकाई के योग्य बनाए जाएं, और वापस सुरक्षित स्वर्गीय घर में लाए जाएं। आत्मा की समृद्धि ही सर्वोत्तम समृद्धि है; यह सच्ची समृद्धि का सूचक है।[45]

17:1 वह घड़ी आ पहुँची थी। अनेक बार उसके शत्रु उसे पकड़ पाने में असफल हुए थे क्योंकि वह समय तब तक *नहीं* आया था। परन्तु अब समय आ चुका था कि प्रभु यीशु को मार डाला जाए। उद्धारकर्ता ने प्रार्थना की, "**अपने पुत्र की महिमा कर।**" वह क्रूस पर अपनी मृत्यु के विषय में कह रहा था। यदि वह मरने के बाद कब्र में ही रह जाए, तो संसार समझेगा कि वह सिर्फ एक साधारण मनुष्य ही था। परन्तु यदि परमेश्वर मृतकों में से उसे जिलाने के द्वारा उसकी महिमा करे, तो यह इस बात का प्रमाण होगा कि वह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्ता है। परमेश्वर ने इस निवेदन का उत्तर प्रभु यीशु मसीह को तीसरे दिन जिलाने और उसके बाद उसे स्वर्ग में वापस उठा लेने और उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाने के द्वारा किया।

प्रभु ने अपनी प्रार्थना जारी रखते हुए कहा, "**कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।**" इसका अर्थ अगले दो पदों में समझाया गया है। प्रभु यीशु, परमेश्वर की महिमा उन लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करने के द्वारा करता है जो उस पर विश्वास लाते हैं। परमेश्वर को बहुत महिमा मिलती है जब पापी लोग मन फिराते हैं और इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु मसीह के जीवन को प्रगट करते हैं।

17:2 क्रूस पर पूर्ण किए गए छुटकारे के कार्य के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने अपने पुत्र को **सब** मनुष्यों **पर अधिकार** दिया है। यह **अधिकार** उसे इस योग्य बनाता है कि वह उन लोगों को **अनन्त जीवन** दे जिन्हें **उसको** पिता ने **दिया है।** एक बार फिर से हमें यहाँ पर स्मरण दिलाया जा रहा है कि जगत की उत्पत्ति से पहले ही परमेश्वर ने कुछ लोगों को मसीह के होने के लिए चुन लिया था। तौभी, हम यह स्मरण रखें कि परमेश्वर उस प्रत्येक व्यक्ति को उद्धार का प्रस्ताव देता है जो प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करेगा। उद्धारकर्ता पर विश्वास लाए बिना कोई भी उद्धार नहीं पा सकता।

17:3 यहाँ पर सरल रीति से समझाया गया है कि **अनन्त जीवन** किस प्रकार से पाया जा सकता है। यह **परमेश्वर को और यीशु मसीह** को जानने के द्वारा पाया जा सकता है। **अद्वैत सच्चे परमेश्वर** का भेद देवताओं से किया जा रहा है, जो सच्चे परमेश्वर नहीं हैं। इस पद का अर्थ यह नहीं है कि प्रभु यीशु मसीह सच्चा परमेश्वर नहीं है। इस तथ्य का अर्थ, कि उसके नाम का उल्लेख परमेश्वर पिता के साथ अनन्त जीवन के संयुक्त स्त्रोत के रूप में किया गया है, यह है कि वे दोनों बराबर हैं। यहाँ प्रभु अपने आप को **यीशु मसीह** कहता है। **मसीह** और ख्रीष्ट दोनों एक ही हैं। यह पद इस आरोप को खारिज कर देता है कि प्रभु यीशु ने कभी भी मसीह होने का दावा नहीं किया था।

17:4 जब प्रभु यह वचन कह रहा था, तो वह इस तरह से बातें कर रहा था मानों वह मर चुका हो, गाड़ा जा

चुका हो, और फिर से जी उठा हो। उसने अपने निष्पाप जीवन, अपने आश्चर्यकर्म, अपने दु:खभोग और अपनी मृत्यु, और अपने पुनरूत्थान के द्वारा पिता की **महिमा की**। उसने उद्धार का **काम . . . पूरा कर** दिया जिसे पिता ने उसे **करने को दिया** था। जैसा कि जॉन चार्ल्स रायल ने इस विषय पर कहा है:

> क्रूस पर चढ़ाया जाना पिता की महिमा का कारण बना। इससे उसकी बुद्धि, उसकी विश्वासयोग्यता, उसकी पवित्रता, और उसके प्रेम की महिमा की गई। वह एक ऐसी योजना बनाने में बुद्धिमान सिद्ध हुआ जिसके अन्तर्गत उसने अपनी न्यायप्रियता को कायम रखते हुए भी पापियों को निर्दोष ठहरा दिया। – वह इस बात में विश्वासयोग्य सिद्ध हुआ कि उसने अपनी व्यवस्था की मांगों को हमारे महान स्थानापन्न प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूरा किया जाना अनिवार्य किया। – यह इस बात में प्रेमी सिद्ध हुआ, कि उसने एक ऐसे मध्यस्थ का प्रबन्ध किया, एक ऐसे छुटकारा देनेवाले का प्रबन्ध किया, और पापी मनुष्य के लिए एक ऐसे मित्र का प्रबन्ध किया जो उसके साथ सह-अस्तित्व रखने वाला उसका पुत्र है।
>
> क्रूस पर चढ़ाया जाना पुत्र की महिमा का कारण बना। इससे उसकी दया, उसके धीरज, और उसकी सामर्थ की महिमा हुई। वह हमारे लिए मरने, हमारे बदले में दु:ख उठाने, और हमारे लिए पाप और शाप गिने जाने के द्वारा सबसे अधिक दयालु के रूप में प्रगट किया गया। वह अधिकांश मनुष्य द्वारा सही जाने वाली सामान्य मृत्यु न मर कर, और स्वेच्छा से ऐसी पीड़ाओं और अनजान वेदनाओं को स्वीकार करने के द्वारा सबसे अधिक धीरजवन्त के रूप में प्रगट किया गया गया, जिस पीड़ा और वेदना की कल्पना तक मनुष्य का मस्तिष्क नहीं कर सकता, जबकि वह अपने पिता के स्वर्गदूतों को आदेश दे सकता था और वे उसे इन सारी पीड़ाओं से मुक्त कर सकते थे। – वह संसार के सारे अपराधों के भार को सहने के द्वारा, और शैतान को पराजित करने के द्वारा, और उसे उसके शिकार से वंचित करने के द्वारा सबसे अधिक सामर्थ के रूप में प्रगट किया गया।[46]

इससे पहले कि मसीह संसार में आया, वह स्वर्ग में पिता के साथ निवास करता था। जब स्वर्गदूतों ने प्रभु की ओर देखा, तो उन्होंने ईश्वरत्व की सारी महिमा को देखा। हर एक आँख को वह परमेश्वर के रूप में ही दिखाई देता था। परन्तु जब वह मनुष्यों के बीच में आया, तो ईश्वरत्व की महिमा को ढांक दिया गया। यद्यपि वह अब भी परमेश्वर ही था, यह अधिकांश देखने वालों को दिखाई नहीं देता था। वे उसे सिर्फ एक बढ़ई के बेटे के रूप में देख पाते थे। यहाँ पर उद्धारकर्ता यह प्रार्थना कर रहा है कि स्वर्ग में उसकी महिमा का दृश्य प्रगटीकरण दोबारा ज्यों का त्यों कर दिया जाए। **''अपने साथ मेरी महिमा . . . कर''** का अर्थ है ''स्वर्ग में अपनी उपस्थिति में मेरी महिमा कर। जो मूल महिमा मैं अपने देहधारण से पहले तेरे साथ बांटता था, वही फिर से जारी कर दी जाए।'' इससे यह सिद्ध हो जाता है कि मसीह देहधारण से पहले भी अस्तित्व में था।

एक्स.प्रभु यीशु अपने चेलों के लिए प्रार्थना करता है (17:6-19)

17:6 प्रभु यीशु ने परमेश्वर का **नाम** चेलों के सामने **प्रगट किया** था। पवित्रशास्त्र में ''नाम'' का अर्थ व्यक्ति, उसके सहज गुण, और उसका चरित्र होता है। मसीह ने पिता के सच्चे स्वभाव को पूरी रीति से प्रगट कर दिया है। जे.जी. बेलेट ने लिखा है, ''चेले **जगत में से** अलग कर पुत्र को दिए गए हैं। वे मनुष्यों के अविश्वासी समूह से अलग किए जाकर मसीह के होने के लिए दिए गए हैं। वे संसार की उत्पत्ति से पहले से ही *चुने जाने* के कारण पिता के थे, और पिता द्वारा भेंट दिए जाने पर, और लोहू से खरीदे जाकर मसीह के हो गए।''

प्रभु ने कहा, **''उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।''** उनकी सारी असफलताओं और कमियों के बाद भी, वह उन्हें विश्वास लाने और उसकी शिक्षाओं का पालन करने का श्रेय देता है। रेन्सफोर्ड कहते हैं, ''उसने अपने लोगों के विरुद्ध एक भी बात नहीं कही, उन्होंने उसके साथ जो कुछ किया या करने वाले थे – उन्होंने उसे अकेला छोड़ दिया था – उस विषय पर उसने कोई इशारा तक नहीं किया।''

17:7, 8 उद्धारकर्ता ने अपने पिता का सिद्ध प्रतिनिधित्व किया। उसने चेलों को समझाया कि वह अपने अधिकार से न कुछ बोलता है और न ही कुछ करता है। इसलिए उन्होंने **प्रतीति कर ली कि** पिता ने पुत्र को **भेजा** है।

इसके अतिरिक्त, प्रभु यीशु ने अपने कार्य की *उत्पत्ति* स्वयं नहीं की थी। वह अपने पिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होकर आया था। वह यहोवा का सिद्ध सेवक था।

17:9 एक महायाजक के रूप में, उसने अपने चेलों के लिये प्रार्थना की; उसने **संसार के लिए विनती नहीं** की। इसका अर्थ यह समझा जा सकता है कि प्रभु यीशु ने कभी भी संसार के लिए प्रार्थना नहीं की। क्रूस पर उसने यह प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।''

परन्तु यहाँ पर वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रार्थना कर रहा है जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने विश्वासियों का प्रतिनिधि है। वहाँ पर वह सिर्फ अपने लोगों के लिए ही प्रार्थना कर सकता है।

17:10 पिता और पुत्र के बीच में सिद्ध एकता को यहाँ पर दर्शाया गया है। कोई भी मनुष्यमात्र इन शब्दों को सच्चाई से नहीं कह सकता। हम परमेश्वर से यह तो कह सकते हैं, ''**जो कुछ मेरा है, वह सब तेरा है,**'' परन्तु यह नहीं कह सकते, ''**जो तेरा है, वह मेरा है**।'' इसलिए कि पुत्र पिता के तुल्य है वह ऐसा कह सकता है। इन पदों में (6-19), प्रभु यीशु ने अपने निर्बल और पिछड़े हुए झुण्ड को प्रस्तुत किया है, और, प्रत्येक मेम्ने को रंगबिरंगा वस्त्र पहिना कर घोषणा करता है, ''इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है।''

17:11 एक बार फिर से प्रभु यीशु अपने स्वर्ग वापसी का पहले से ही अनुभव करने लगता है। वह इस प्रकार से प्रार्थना करता है मानों वह वहाँ जा चुका है। **पवित्र पिता** पदनाम की ओर ध्यान दें। **पवित्र** एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जिसकी *ऊँचाई असीमित* है। **पिता** एक ऐसे व्यक्ति को प्रगट करता है जो *घनिष्ठता में अत्यंत समीप* है।

प्रभु यीशु की यह प्रार्थना, ''**कि वे . . . एक हों**'' मसीही चालचलन की एकता के विषय में है। जैसे कि पिता और पुत्र नैतिक समानता में एक हैं – इसलिए विश्वासियों को भी इस बात में एक होने की आवश्यकता है – ताकि वे प्रभु यीशु के समान बनें।

17:12 **जब** वह चेलों के **साथ था**, तब उद्धारकर्ता ने पिता के नाम से **उनकी रक्षा की**, अर्थात्, अपनी सामर्थ और अपने अधिकार के द्वारा, और उसके प्रति सत्यता पूर्वक। प्रभु यीशु ने कहा, ''**उन में से कोई नाश न हुआ**'' ''**विनाश के पुत्र को छोड़कर**'' अर्थात्, यहूदा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यहूदा को पिता के द्वारा पुत्र को दिया गया था या यह कि वह एक समय सच्चा विश्वासी था। इस वाक्य का अर्थ है: ''तूने मुझे जिन लोगों को दिया मैंने उनकी रक्षा की, परन्तु विनाश का पुत्र नाश हो गया, ताकि पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हो।'' ''**विनाश के पुत्र**'' का अर्थ है कि यहूदा को अनन्त विनाश या दण्ड के लिए सौंप दिया गया था। यहूदा भविष्यद्वाणी को पूर्ण करने के लिए मसीह को पकड़वाने के लिए बाध्य नहीं था, परन्तु उसने उद्धारकर्ता को अपनी इच्छा से पकड़वाया और ऐसा करने से **पवित्रशास्त्र** का वचन पूरा हुआ।

17:13 प्रभु यीशु ने यह स्पष्ट किया कि वह अपने चेलों की उपस्थिति में क्यों प्रार्थना कर रहा था। वह मानों उनसे कह रहा था, ''ये वे विनतियां है जिन्हें मैं स्वर्ग में परमेश्वर के सामने करने से कभी नहीं रूकूंगा। परन्तु अभी मैं यह विनती **संसार** में कर रहा हूँ, कि तुम सुनो, ताकि तुम और अच्छे से यह समझ सको कि मैं वहाँ पर किस प्रकार से तुम्हारे कल्याण में लगा रहूंगा, ताकि तुम मेरे **आनन्द** में बहुतायत से सहभागी हो सको।''

17:14 प्रभु यीशु ने चेलों को परमेश्वर का **वचन** दिया, और उन्होंने इसे ग्रहण किया। इसके परिणामस्वरूप, **संसार** उनके विरूद्ध हो गया और **उन से बैर** रखने लगा। उनमें प्रभु यीशु का चरित्र था, और इसलिए **संसार** ने उन्हें तुच्छ जाना। वे संसार की युक्तियों में उपयुक्त नहीं थे।

17:15 प्रभु यीशु ने यह **विनती नहीं** की कि पिता तुरन्त ही विश्वासियों को स्वर्गीय घर में **उठा ले**। उन्हें यहाँ पर इसलिए छोड़ा जाना आवश्यक है कि वह अनुग्रह में बढ़ते जाएं और मसीह के लिए गवाही दें। **परन्तु** मसीह की प्रार्थना यह थी कि वे **उस दुष्ट से** बचाए जाएं। बच कर निकल जाने के लिए नहीं, परन्तु सुरक्षित रखे जाने के लिए।

17:16 **जैसे** प्रभु यीशु मसीह इस **संसार का नहीं**, **वैसे ही** मसीही लोग भी **संसार के नहीं** हैं। जब हमें संसार की किसी ऐसी संस्था या समूह के साथ सम्बन्ध बनाने की परीक्षा आती है, जहाँ मसीह का नाम लेना

सराहनीय नहीं है, तब इस बात को हमें जरूर स्मरण करना चाहिये।

17:17 **पवित्र कर** का अर्थ है, अलग कर। परमेश्वर के वचन में वह प्रभाव है कि विश्वासियों को पवित्र करे। जब वे इसे पढ़ते हैं और इसका पालन करते हैं, तो वे एक ऐसे पात्र के रूप में अलग किए जाते हैं जो पिता के काम के योग्य हो। प्रभु यीशु मसीह बिल्कुल इसी विषय के लिए यहाँ पर प्रार्थना कर रहा था। वह ऐसे लोगों को चाहता है जो संसार से परमेश्वर के लिए अलग किए गए हैं, और परमेश्वर के कार्य में उपयोग में लाए जाने योग्य हैं। प्रभु यीशु ने कहा, "**तेरा वचन सत्य है**।" उसने यह नहीं कहा, जैसा कि आज बहुत से लोग कहते हैं, "तेरे वचन में सत्य *पाया जाता है*," परन्तु यह कि "**तेरा वचन सत्य है**।"

17:18 पिता ने प्रभु यीशु को **जगत में भेजा** कि वह परमेश्वर के चरित्र को मनुष्यों के सामने प्रगट करे। जब प्रभु प्रार्थना कर रहा था, तब उसे बोध हुआ कि वह शीघ्र ही स्वर्ग को वापस जाने वाला है। परन्तु आने वाली पीढ़ी को भी परमेश्वर के विषय में किसी गवाही देनेवाले की आवश्यकता होगी। यह कार्य विश्वासियों के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ में किया जाना आवश्यक है। अवश्य ही, मसीही लोग परमेश्वर को हूबहू वैसा प्रगट नहीं कर सकते जैसा कि मसीह ने किया था क्योंकि वे कभी भी परमेश्वर के तुल्य नहीं हो सकते। परन्तु विश्वासी इस पृथ्वी पर इसीलिए हैं कि वे संसार के सामने परमेश्वर को प्रगट करें। इसी कारण से प्रभु यीशु ने **उन्हें जगत में भेजा**।

17:19 आवश्यक नहीं है कि *पवित्र करने* का अर्थ पवित्र बनाना हो। प्रभु यीशु अपने व्यक्तिगत चरित्र में *पवित्र* है। यहाँ पर यह विचार दिया गया है कि प्रभु यीशु ने स्वयं को उस कार्य के लिए अलग किया जिसे पूरा करने के लिए उसके पिता ने उसे *अलग किया था* – अर्थात्, उसकी बलिदानी मृत्यु के लिए। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह संसार के बाहर अपना स्थान लेने और महिमा में प्रवेश करने के द्वारा अपने आप को अलग करता है। डब्ल्यू.ई. वाइन का कहना है कि "उसका पवित्र किया जाना, हमारे लिए एक नमूना (पैटर्न), और हमारी सामर्थ के लिये है।" हमें संसार से अलग होना चाहिए और प्रभु के साथ अपना भाग पाना चाहिए।

वाय. प्रभु यीशु सब विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता है (17:20–26)

17:20, 21 अब हमारा महायाजक अपने चेलों के अलावा और दूसरों को भी अपनी प्रार्थना में शामिल करता है। वह उन पीढ़ियों के लिए प्रार्थना करता है जिन्होंने उस समय जन्म नहीं लिया था। बल्कि, इस पद को पढ़ने वाला प्रत्येक विश्वासी कह सकता है, "प्रभु यीशु ने 2000 वर्ष पहले मेरे लिए प्रार्थना की थी।" यह प्रार्थना विश्वासियों के बीच में एकता के लिए की गई प्रार्थना थी, परन्तु इस बार उसने पापियों के उद्धार को ध्यान में रखते हुए प्रार्थना की थी। मसीह ने जिस एकता के लिए प्रार्थना की, वह कलीसिया से बाहर की एकता से सम्बन्धित नहीं थी। बल्कि, यह एक ऐसी एकता थी जो आम नैतिक समानता पर आधारित थी। वह प्रार्थना कर रहा था कि विश्वासी लोग परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के चरित्र को प्रदर्शित करने में **एक हों**। इसी से **जगत प्रतीति** करेगा **कि** परमेश्वर ने उसे **भेजा** है। यह वह एकता है जो संसार को यह कहने के लिए बाध्य कर देती है, "मैं मसीह को इन मसीहियों में देखता हूँ जैसा कि पिता मसीह में देखा गया था।"

17:22 पद 11 में, प्रभु यीशु ने संगति में एकता के लिए प्रार्थना की। इन पदों में, गवाही देने में एकता के विषय में कहा गया था। अब **महिमा** में एकता के बारे में कहा गया है। यह उस समय के विषय में है जब सन्त लोग अपनी महिमा की देह को प्राप्त करेंगे। "**वह महिमा जो तू ने मुझे दी**" पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण की महिमा है।

अब तक हमें यह महिमा नहीं दी गई है। परमेश्वर के उद्देश्यों के संबंध में यह महिमा हमें **दी** गई है, परन्तु हम इसे तब तक प्राप्त नहीं कर पाएंगे जब तक उद्धारकर्ता हमें स्वर्ग ले जाने को वापस नहीं आएगा। जब मसीह अपना राज्य पृथ्वी पर स्थापित करने को आएगा तो यह सारे संसार के सामने प्रगट होगा। उस समय, संसार पिता और पुत्र, तथा पुत्र और उसके लोगों के बीच की अनिवार्य एकता को जान लेगा, और विश्वास कर लेगा (बहुत देर हो चुकी होगी) कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का भेजा हुआ था।

17:23 **जगत** न सिर्फ यह जान लेगा कि प्रभु यीशु

परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु वह यह भी जान लेगा कि विश्वासी लोगों से परमेश्वर वैसा ही प्रेम रखता है जैसे परमेश्वर मसीह से प्रेम रखता है। यह बात अविश्वसनीय लगती है कि वह हमसे इतना प्रेम रखता है, परन्तु यह सत्य है!

17:24 पिता चाहता है कि उसके लोग उसकी महिमा में उसके साथ शामिल हों। जब भी किसी विश्वासी की मृत्यु होती है, यह एक प्रकार से, इस प्रार्थना का उत्तर होता है। यदि हम इस बात को समझ जाएं, यह हमारे दुखों में हमारे लिए एक शान्ति की बात होगी। मरने का अर्थ है, मसीह के पास होना और उसकी **महिमा** को देखना। यह **महिमा** न सिर्फ ईश्वरत्व की महिमा है जो जगत की उत्पत्ति से पहले उसके पास परमेश्वर के साथ थी। यह वह महिमा भी है जिसे उसने उद्धारकर्ता और छुटकारा देनेवाले के रूप में प्राप्त किया था। यह **महिमा** इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने **जगत की उत्पत्ति से पहले** से मसीह से **प्रेम रखा**।

17:25 **संसार** प्रभु यीशु मसीह में प्रगट हुए परमेश्वर को देख पाने में असफल रहा। परन्तु कुछ चेले यह देख पाने में सफल रहे, और उन्होंने विश्वास किया **कि** परमेश्वर ने प्रभु **यीशु** को **भेजा** है। उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने की संध्या को, सारी मानवजाति में सिर्फ कुछ ही विश्वासयोग्य लोग थे – और वे भी उसे छोड़ कर भागने वाले थे!

17:26 प्रभु यीशु ने परमेश्वर का **नाम** अपने चेलों को **बताया** था जब वह उनके साथ था। इसका अर्थ यह है कि उसने उन पर पिता को प्रगट किया था। उसके वचन और उसके कार्य पिता के वचन और कार्य थे। उन्होंने मसीह में पिता की एक सिद्ध अभिव्यक्ति को देखा। प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा की सेवकाई के माध्यम से पिता के नाम को बताना जारी रखा। पिन्तेकुस्त के दिन से, पवित्र आत्मा विश्वासियों को पिता के विषय में शिक्षा दे रहा है। विशेष कर परमेश्वर के वचन के माध्यम से, हम यह जान सकते हैं कि परमेश्वर किस के समान है। जब मनुष्य पिता को उस रूप में ग्रहण करते हैं जिस रूप में प्रभु यीशु मसीह ने उसे प्रगट किया है, तो वे पिता के **प्रेम** के विशेष पात्र बन जाते हैं। चूंकि प्रभु यीशु मसीह सभी विश्वासियों में निवास करता है, पिता उनकी ओर वैसे ही देख सकता है और उन के साथ वैसा ही व्यवहार कर सकता है, जैसे कि वह अपने एकलौते पुत्र के साथ करता है। रिय्यूस ने इस पर यह टिप्पणी की है:

> भौतिक संसार की उत्पत्ति से पहले परमेश्वर के प्रेम का पूर्ण पात्र उसके पुत्र का व्यक्तित्व था (पद 24), नए आत्मिक संसार की सृष्टि के बाद से उसके प्रेम के पात्र वे सब लोग हैं जो उसके पुत्र के साथ एक हैं।[47]

इसी विषय पर एफ.एल. गोडेट ने कहा है:

> परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को पृथ्वी पर भेजने का ठोस कारण यह था कि वह अपने लिए मनुष्यों के बीच में अपने पुत्र की समानता रखने वाले सन्तानों का एक परिवार तैयार कर सके।[47]

चूंकि प्रभु यीशु एक विश्वासी में है इसलिए परमेश्वर उस विश्वासी से वैसा ही प्रेम रख सकता है जिस प्रकार से वह प्रभु यीशु मसीह से रखता है।

> परमेश्वर को अति प्रिय, अत्यंत प्रिय, इतना
> कि इससे अधिक प्रिय होना सम्भव नहीं है,
> वह जैसा प्रेम अपने पुत्र से करता है, वैसा ही
> वह मुझ से भी प्रेम रखता है!
> – *केटेस्बी पागेट*

मसीह द्वारा अपने लोगों के लिए की जाने वाली याचनाओं के विषय में रेन्सफोर्ड ने यह कहा है:

> . . . मसीह के द्वारा अपने लोगों के लिए की जाने वाली याचनाएं आत्मिक बातों और स्वर्गीय आशीषों से सम्बन्धित हैं। धन के लिए नहीं, आदर के लिए नहीं, या सांसारिक प्रभाव के लिए नहीं, परन्तु बुराई से छुटकारा के लिए, संसार से अलगाव के लिए, कर्तव्यपालन के योग्य बनाने के लिए, और स्वर्ग में सुरक्षित पहुँचाए जाने के लिए वह हमारे लिए याचना करता है।[48]

VIII. परमेश्वर के पुत्र का दु:खभोग और उसकी मृत्यु (18–19 अध्यायों में)

अ.यहूदा इस्कारियोति प्रभु यीशु को पकड़वाता है (18:1–11)

18:1 अध्याय 13–17 के वचनों को यरूशलेम में कहा गया था। अब प्रभु **यीशु** यरूशलेम को छोड़ कर जैतून पहाड़ की ओर पूर्वी ओर बढ़ता है। ऐसा करने के लिए, वह **किद्रोन के नाले** को पार करता है और गतसमनी के बगीचे में आता है, जो कि जैतून पर्वत की पश्चिमी ढलान पर था।

18:2, 3 **यहूदा** यह जानता था कि प्रभु यीशु बगीचे में प्रार्थना करने में काफी समय बिताएगा। वह **जानता** था कि प्रभु यीशु मसीह को पाने की सबसे अधिक सम्भावित **जगह** प्रार्थना का स्थान ही हो सकता है।

पलटन में शायद रोमी सिपाही थे; जबकि **प्यादों** के रूप में यहूदी अधिकारी थे, जिसमें महायाजक और फरीसी लोग शामिल थे। वे **दीपकों, और मशालों को लिए वहाँ** आए। ''वे जगत की ज्योति को ढूंढ़ने के लिए दीपक लेकर आए थे।''

18:4 प्रभु यीशु उनके लिए रूकने की बजाए उनसे मिलने के लिए **निकला**। यह क्रूस पर चढ़ने की उसकी इच्छा को प्रगट करता है। सिपाहियों को अपने हथियार घरों पर छोड़ कर आना चाहिए था; प्रभु यीशु उनका प्रतिरोध नहीं करता। यह प्रश्न, ''**किसे ढूंढ़ते हो**?'' इसलिए पूछा गया कि वे उनके इस मिशन की प्रवृत्ति को अपने मुँह से बताएं।

18:5 वे **यीशु नासरी** को ढूंढ़ रहे थे, और वे शायद ही यह जानते थे कि वह उनका सृष्टिकर्ता और पालनहार है – उनका अब तक का सर्वोत्तम मित्र। प्रभु यीशु ने कहा, ''**मैं ही हूँ।**'' ''ही'' मूल पाठ में नहीं पाया जाता है, हिन्दी में स्पष्ट करने के लिए जोड़ा गया है, इसलिए इसे ''मैं हूँ'' पढ़ना चाहिए। इसलिए वह यह कह रहा था कि वह न सिर्फ यीशु नासरी है परन्तु वह यहोवा भी है। जैसा कि हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि ''मैं हूँ'' पुराना नियम में यहोवा के नामों में से एक है। क्या यह सुनकर **यहूदा** फिर से कुछ सोचने लगा, जब वह दूसरों के **साथ** भीड़ में **खड़ा** था?

18:6 कुछ समय के लिए, प्रभु यीशु ने अपने आप को सर्वशक्तिमान परमेश्वर ''मैं हूँ'' के रूप में प्रगट किया। यह प्रगटीकरण इतना अतिसामर्थी था कि वे **पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े**।

18:7 प्रभु ने **फिर उनसे पूछा** कि वे **किसको** ढूँढ़ते हैं। और इस बार भी उन्होंने वही उत्तर दिया – उस प्रभाव के बाद भी जो प्रभु द्वारा कहे गए दो शब्दों के कारण उन पर हुआ था।

18:8, 9 फिर से प्रभु **यीशु ने उत्तर दिया** कि वह वही है, और वह यहोवा है। ''**मैं तो तुम से कह चुका कि मैं . . . हूँ।**'' इसलिए कि वे उसी को ढूंढ़ रहे थे उसने उनसे कहा कि वे उसके चेलों को **जाने दें**। यह देखना रोचक है कि जब उसके स्वयं का जीवन संकट में था तब भी वह नि:स्वार्थ होकर दूसरों की भलाई के बारे में सोचता है। इस प्रकार से, यूहन्ना 17:12 की बातें भी पूरी हुईं।

18:10 **शमौन पतरस** ने सोचा कि वह समय आ चुका है कि भीड़ से अपने स्वामी की रक्षा करने के लिए हिंसा का प्रयोग करना आवश्यक है। प्रभु यीशु से निर्देश प्राप्त किए बिना ही, उसने अपनी **तलवार** खींची और **महायाजक के दास पर चला** दिया। नि:सन्देह वह उसे मार डालना चाहता था, परन्तु एक अदृश्य हाथ के द्वारा तलवार के वार को खसका दिया गया, इसलिए सिर्फ **उसका दाहिना कान** कटा।

18:11 प्रभु **यीशु** ने **पतरस** के कुविचारित उत्साह को फटकार लगाई। दु:ख और मृत्यु का **कटोरा** उसे **पिता** के द्वारा **दिया** गया था, और पिता चाहता था कि वह उसे पीए। लूका वैद्य ने इस बात का उल्लेख किया है कि किस प्रकार से प्रभु यीशु ने मलखुस के कान को इस समय छूकर चंगा किया था (लूका 22:51)।

ब.प्रभु यीशु का पकड़ कर बान्धा गया (18:12–14)

18:12, 13 यह पहला मौका था जब दुष्ट लोग प्रभु **यीशु** को पकड़ कर बान्ध पाने में सफल हुए थे।

हन्ना पूर्व में महायाजक रह चुका था। यह स्पष्ट नहीं है कि प्रभु यीशु को **पहिले** उसके पास क्यों लाया गया,

उसके दामाद **काइफा** के पास क्यों नहीं ले जाया गया जो उस समय का **महायाजक** था। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पहले प्रभु यीशु को यहूदियों के सामने मुकद्दमा चलाने के लिए लाया गया ताकि उस पर परमेश्वर की निन्दा और झूठी शिक्षा देने के आरोप को सिद्ध किया जा सके। इसे हम *धार्मिक मुकद्दमा* कह सकते हैं। उसके बाद उसे रोमी अधिकारियों के सामने मुकद्दमा चलाने के लिए ले जाया गया, और यहाँ पर इस आरोप को सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि वह कैसर का शत्रु है। यह *दीवानी मुकद्दमा* था। चूंकि यहूदी लोग रोमियों के शासन के आधीन थे इसलिए उन्हें रोमी कचहरी के माध्यम से कार्य करना पड़ता था। उदाहरण के लिए, उन्हें मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था। यह पीलातुस के द्वारा ही दिया जा सकता था।

18:14 यूहन्ना ने यह स्पष्ट किया कि यह महायाजक वही **काइफा** है जिसने यह भविष्यद्वाणी की थी कि सारी जाति के बदले **एक पुरुष का मरना अच्छा है** (यूहन्ना 11:50 देखें)। अब वह इस भविष्यद्वाणी की पूर्णता में अपनी भूमिका पूरी करने ही वाला था। जेम्स स्टीवर्ट ने इस पर लिखा है:

> यह वह मनुष्य था जो यहूदी प्राणों का अधिकारिक संरक्षक था। उसे परम प्रधान के सर्वोच्च व्याख्याकार और प्रतिनिधि के रूप में अलग किया गया था। उसे वर्ष में एक बार परम पवित्रस्थान में प्रवेश करने का महिमामय विशेषाधिकार दिया गया था। तौभी इसी व्यक्ति ने परमेश्वर के पुत्र को दोषी ठहराया। इतिहास में इससे अधिक चौंकाने वाला और कोई दूसरा उदाहरण नहीं पाया जाता कि सर्वोत्तम धार्मिक विशेषाधिकार और सर्वाधिक आशाजनक वातावरण भी एक मनुष्य के उद्धार की गारंटी नहीं है . . . . । जॉन बनियन कहते हैं, ''उसके बाद मैंने देखा कि नरक के लिए एक रास्ता है, यहाँ तक की स्वर्ग के फाटक से भी।''[49]

स.पतरस अपने प्रभु का इंकार करता है (18:15–18)

18:15 अधिकांश बाइबल विद्वान यह मानते हैं कि यहाँ पर **दूसरा चेला** यूहन्ना था, परन्तु उसने दीनता प्रदर्शित करते हुए यहाँ पर अपने स्वयं का नाम नहीं लिया, विशेष कर पतरस की शर्मनाक असफलता के दृष्टिकोण से। हमें यह नहीं बताया गया है कि यूहन्ना **महायाजक का जाना पहिचाना** कैसे था, परन्तु इसी कारण से वह **आँगन में** प्रवेश कर पाने में सफल हुआ।

18:16, 17 **पतरस** तब तक भीतर घुस पाने में सफल नहीं हुआ जब तक यूहन्ना ने जाकर द्वारपालिन से इसके लिए बात नहीं की। यदि हम यह विचार करें, तो क्या यूहन्ना ने अपने प्रभाव का इस तरह से उपयोग कर सही किया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि पतरस ने प्रभु का इंकार किसी शक्तिशाली भयानक सिपाही के सामने नहीं, परन्तु एक साधारण **द्वारपालिन** के सामने किया। उसने इस बात का इंकार किया कि वह प्रभु यीशु का चेला है।

18:18 पतरस अब प्रभु के शत्रुओं के साथ मिल गया और उसने अपनी पहचान छिपानी चाही। अनेक अन्य चेलों के समान, उसने अपने आप को इस संसार की **आग** से गर्म किया।

द.महायाजक के सामने प्रभु यीशु (18:19–24)

18:19 यह स्पष्ट नहीं है कि यहाँ पर **महायाजक** हन्ना को कहा गया है या फिर कैफा को। यदि यहाँ पर हन्ना को महायाजक कहा गया है, जिसकी सम्भावना अधिक है, तो उसे शिष्टाचारवश महायाजक कहा जा रहा है क्योंकि वह एक समय इस पद पर था। **तब महायाजक ने** प्रभु **यीशु से उसके चेलों के विषय में** और उसकी शिक्षाओं के विषय में पूछा, मानों उसकी ये शिक्षाएं मूसा की व्यवस्था और रोमी शासन के लिए कोई खतरा बन गई हो। यह स्पष्ट है कि इन लोगों के पास प्रभु यीशु मसीह के विरूद्ध कोई मामला नहीं था, और इसलिए वे एक मामला गढ़ने में लगे हुए थे।

18:20 प्रभु **यीशु ने उसको उत्तर** दिया कि उसने **खुलकर** अपनी सेवकाई की है। उसके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। उसने **यहूदी** लोगों की उपस्थिति में **उपदेश** दिया है, **यहूदी सभाओं** में भी और **आराधनालय** में भी। उसकी सेवकाई में कोई भी गुप्त बात नहीं थी।

18:21 यह उन यहूदियों के लिए एक चुनौती थी जिन्होंने उसके उपदेश को सुना था कि वे उसकी शिक्षाओं

में कोई दोष निकाल सकें। यदि उसने कोई गलत काम किया हो या गलत बात कही हो, तो उसके लिए गवाह पेश किए जाएं।

18:22 इस चुनौती से यहूदी प्रत्यक्ष रूप से चिढ़ गए। उनके पास कोई भी मुद्दा नहीं रह गया। और इसलिए वे उसके साथ बुरा व्यवहार करने पर उतारू हो गए। **प्यादों में से एक** ने प्रभु **यीशु को थप्पड़** मारा कि वह **महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है।**

18:23 सधे हुए और सटीक तर्क के साथ, उद्धारकर्ता ने उनकी अनुचित स्थिति को दर्शा दिया। वे उसे बुरी बात बोलने का दोष न लगा सके; तौभी उन्होंने सत्य बोलने पर उसे थप्पड़ मारा।

18:24 पिछले पदों में हन्ना के सामने प्रभु यीशु से पूछताछ के विषय में वर्णन किया गया है। काइफा के समक्ष चलाए गए मुकद्दमें का वर्णन यूहन्ना के द्वारा नहीं किया गया है। यह 18:20 से 18:28 के बीच में आएगा।

इ. पतरस का दूसरा और तीसरा इंकार (18:25–27)

18:25 अब लेखक सारा ध्यान **शमौन पतरस** की ओर ले जाता है। सुबह के ठण्डे समय में, वह आग **ताप** कर अपने आप को गर्म कर रहा था। उसके पहिनावे और उसकी बोली से साफ साफ पता चल रहा था कि वह एक गलीली मछुआरा है। उसके साथ खड़े एक व्यक्ति ने उससे प्रश्न किया कि क्या वह भी प्रभु यीशु का एक चेला नहीं है। परन्तु पतरस ने एक बार फिर से प्रभु यीशु का **इंकार** कर दिया।

18:26 इस बार मलखुस के **कुटुम्ब** के एक व्यक्ति ने पतरस से इस विषय पर बातें की। उसने देखा था कि उसके कुटुम्बी का **कान पतरस ने काट लिया था।** ''**क्या मैंने तुझे उसके साथ बारी में** प्रभु यीशु के साथ **न देखा** था?''

18:27 **पतरस** ने तीसरी बार प्रभु यीशु का **इंकार** कर दिया। **तुरन्त** ही, उसे **मुर्ग** की बांग सुनाई दी और उसे प्रभु यीशु की बात स्मरण में आई। ''मुर्ग बांग न देगा, जब तक तू तीन बार मेरा इंकार नहीं करेगा।'' अन्य सुसमाचारों से हमें यह ज्ञात होता है कि इसके बाद पतरस जा कर फूट फूट कर रोने लगा।

फ. पीलातुस के सामने प्रभु यीशु (18:28–40)

18:28 धार्मिक मुकद्दमा समाप्त हो चुका था, और दीवानी मुकद्दमा आरम्भ होने पर ही था। अब दृश्य न्याय कक्ष में या हाकिम के महल में आकर टिक जाता है। यहूदी लोग एक अन्यजाति के महल में जाना नहीं चाहते थे। उन्हें लगता था कि वे **अशुद्ध** हो जाएंगे, और **फसह** खाने से वंचित हो जाएंगे। उनका इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं था कि वे परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु का षड़यंत्र रच रहे हैं। किसी अन्यजाति के घर में प्रवेश करना उनके लिए एक त्रासदी था, परन्तु हत्या सिर्फ एक छोटी बात थी। अगस्टीन इस पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं:

> हे भक्तिहीन अन्धापन! वे किसी दूसरे के निवासस्थान में प्रवेश कर अशुद्ध हो जाएंगे, परन्तु अपने ही अपराध से अशुद्ध न होंगे। वे एक अन्यजाति न्यायधीश के महल में प्रवेश करने से डरते थे कि वे अशुद्ध हो जाएंगे, और एक निर्दोष भाई का लोहू बहाने के द्वारा अशुद्ध होने से नहीं डरते थे।[50]

बिशप हॉल इस पर यह टिप्पणी करते हैं:

> याजको, शास्त्रियो, पुरनियो, और पाखण्डियो, तुम पर हाय! क्या कोई ऐसी अशुद्ध छत हो सकती है जितनी की तुम्हारी छाती? पीलातुस की महल की दीवालें नहीं, परन्तु तुम्हारे स्वयं का हृदय अशुद्ध है। हत्या तुम्हारे लिए छोटा मोटा कार्य है, और छोटी सी अशुद्धता से तुम बचना चाहते हो? परमेश्वर तुम्हें दण्ड देगा, हे सफेद दीवालो! क्या तुम अपने आप को खून से रंगना चाहते हो – परमेश्वर के खून से? और क्या तुम पीलातुस के फर्श पर पैर रखकर अशुद्ध होने से डरते हो? क्या तुम्हारे गले में टिड्डी अटक जाती है, जबकि जघन्य अपराध के ऊँट को तो तुम निगल जाते हो? तुम यरूशलेम से बाहर चले जाओ, हे झूठे अविश्वासियो, यदि तुम अशुद्ध नहीं होना चाहते! पीलातुस के पास डरने के लिए अधिक कारण थे, कहीं ऐसा न हो कि उसकी दीवारें अधर्म के ऐसे अतिविशाल पिशाच की उपस्थिति से अशुद्ध न हो जाएं।[51]

पूले ने इस पर इस प्रकार से टिप्पणी की है, ''लोगों के लिए रीतिविधियों को लेकर अतिउत्साही हो कर

नैतिकता को पूरा करने से चूक जाना सबसे सामान्य बात है।''[52] ''**वे . . . फसह खा सकें**'' का अर्थ शायद यह है कि वे फसह के *बाद* के भोज में शामिल हो सकें। फसह इसके पहले वाली रात को मनाया जाता था।

18:29 **पीलातुस** जो रोमी हाकिम था, यहूदियों के धार्मिक संकोच के आगे झुक गया और उसके पास स्वयं **बाहर** आया। उसने बन्दी **पर** लगाए गए आरोप पूछते हुए मुकद्दमा को आरम्भ किया।

18:30 उनका उत्तर बेबाक और कठोर था। वे मानों यह कह रहे थे कि उन्होंने पहले से ही उस पर मुकद्दमा चला लिया है और उसे दोषी पाया है। वे पीलातुस से सिर्फ इतना चाहते थे कि वह उसे सजा सुनाए।

18:31 **पीलातुस** ने इस उत्तरदायित्व से बचना चाहा और इसे वापस यहूदियों पर डालना चाहा। यदि उन्होंने प्रभु यीशु पर मुकद्दमा चला लिया है और उसे दोषी पाया है, तो फिर वे ही **व्यवस्था के अनुसार** उसे दण्ड क्यों नहीं देते? यहूदियों का उत्तर बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा, ''हम एक स्वतंत्र राष्ट्र नहीं है। हम रोमी सरकार के द्वारा वश में कर लिए गए हैं। दीवानी प्रशासन हमसे ले लिया गया है, और हमारे पास अधिकार नहीं रहा कि हम **किसी का प्राण लें।**'' उनका उत्तर अन्यजाति सत्ता के आधीन उनकी गुलामी का एक प्रमाण था। साथ ही साथ, वे मसीह की मृत्यु के लांछन को पीलातुस पर डालना चाहते थे।

18:32 पद 32 के दो अर्थ हो सकते हैं: (1) मत्ती 20:19 में, प्रभु यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह मार डाले जाने के लिए अन्यजातियों के हाथ में दे दिया जाएगा। यहाँ पर यहूदी लोग उसके साथ यही कर रहे थे। (2) अनेक अवसरों पर प्रभु ने कहा है कि वह ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा (यूहन्ना 3:14; 8:28; 12:32, 34)। यह क्रूस पर चढ़ा कर मार डाले जाने के सम्बन्ध में कहा गया था। यहूदी लोग मृत्यु दण्ड देने के लिए पत्थरवाह किया करते थे; जबकि क्रूस पर चढ़ाया जाना रोमी तरीका था। इस प्रकार से अपनी ओर से मृत्यु दण्ड देने से इंकार करने के द्वारा, यहूदी लोगों ने अनजाने में ही मसीह के विषय में इन दोनों भविष्यद्वाणियों को पूरा किया (भजन 22:116 देखें)।

18:33 **पीलातुस** अब प्रभु यीशु को निजी तौर पर पूछताछ करने के लिए **किले** में ले गया और उससे सीधे सीधे पूछा, ''**क्या तू यहूदियों का राजा है?**''

18:34 प्रभु **यीशु ने** उसे कुछ इस प्रकार से **उत्तर दिया**, ''एक हाकिम के रूप में क्या तुम ने कभी सुना कि मैंने रोमी सत्ता का तख्ता पलटने का प्रयास किया है? क्या कभी तुम्हें किसी ने यह सूचना दी कि मैं अपने आप को एक ऐसा राजा बताता हूँ जो कैसर को कम आंकता हो? क्या तुम्हें मुझ पर लगाए गए इस आरोप के बारे में व्यक्तिगत रूप से जानकारी है कि यह सच है, या फिर यह बात तुमने यहूदियों से ही सुनी है?''

18:35 पीलातुस के प्रश्न में सचमुच में अवहेलना थी, ''**क्या मैं यहूदी हूँ?**'' उसका आशय था कि वह एक इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति है कि यहूदियों के इस प्रकार की स्थानीय समस्याओं की ओर ध्यान देने के लिए उसके पास समय नहीं है। परन्तु उसके उत्तर में यह स्वीकृति भी थी कि वह प्रभु यीशु के विषय में किसी आरोप की सच्चाई को नहीं जानता। वह सिर्फ उतना ही जानता है जितना कि यहूदियों ने उसे बताया है।

18:36 तब प्रभु यीशु ने यह अंगीकार किया कि वह एक राजा *था*। परन्तु वैसा राजा नहीं जैसा राजा होने का आरोप यहूदियों के द्वारा उस पर लगाया जा रहा था। और वह ऐसा राजा भी नहीं था जो रोमी शासन के लिए कोई खतरा हो। मसीह का **राज्य** मानवीय हथियारों से आगे नहीं बढ़ता। अन्यथा उसके चेले यहूदियों द्वारा प्रभु यीशु को पकड़े जाने पर उसे बचाने के लिए उनसे **लड़ते**। मसीह का **राज्य जगत का नहीं** है। इस राज्य को अपना अधिकार संसार से नहीं मिला है; इस राज्य के लक्ष्य और उद्देश्य सांसारिकया शारीरिक नहीं हैं।

18:37 जब **पीलातुस** ने प्रभु यीशु से पूछा कि क्या वह **राजा** है तो प्रभु **यीशु ने उत्तर दिया कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूँ**। परन्तु प्रभु यीशु का राज्य **सत्य** का राज्य था, तलवार और ढाल का नहीं। इसका उद्देश्य इस **सत्य पर गवाही** देना था कि वह **जगत में** आया है। यहाँ पर **सत्य** का अर्थ परमेश्वर, स्वयं मसीह, पवित्र आत्मा, मनुष्य, पाप, उद्धार, और मसीही विश्वास के अन्य महान सिद्धान्तों के विषय में सत्य है। **जो कोई सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है**, और इसी प्रकार से उसका साम्राज्य बढ़ता जाता है।

18:38 यह बता पाना कठिन है कि जब **पीलातुस ने उससे कहा, ''सत्य क्या है,''** तो वह क्या पूछ

रहा था। क्या वह उलझन में था, या वह कटाक्ष कर रहा था, या फिर उसे यह जानने में रूचि थी? हम सिर्फ इतना जानते हैं कि सत्य देहधारी होकर उसके सामने खड़ा था, और उसने उसे नहीं पहिचाना। अब पीलातुस शीघ्रता से यहूदियों की ओर गया कि यह स्वीकार करे कि वह उसमें **कुछ दोष नहीं पाता।**

18:39 यहूदियों की यह परम्परा थी कि **फसह** के समय वे किसी यहूदी बन्दी को रिहा करने के लिए रोमी शासन से आग्रह करते थे। पीलातुस ने इस परम्परा का लाभ उठाते हुए यहूदियों को प्रसन्न करने और प्रभु यीशु को **छोड़** देने का प्रयास किया।

18:40 परन्तु यह युक्ति निष्फल हो गई। यहूदी लोग प्रभु यीशु की रिहाई नहीं चाहते थे; वे **बरअब्बा** की रिहाई चाहते थे। **बरअब्बा एक डाकू था।** मनुष्य के अधर्मी हृदय ने सृष्टिकर्ता की बजाय एक डाकू को प्राथमिकता दी।

ग.पीलातुस का फैसला: निर्दोष लेकिन दण्ड की आज्ञा दी गई (19:1–16)

19:1 पीलातुस ने इस निर्दोष व्यक्ति को कोड़े मारने की सजा देकर अन्याय किया। शायद वह यह समझता था कि यह दण्ड देने से यहूदी लोग सन्तुष्ट हो जाएंगे और वे प्रभु यीशु को *मृत्युदण्ड* देने की मांग नहीं करेंगे। कोड़े लगाना दण्ड देने का एक रोमी तरीका था। बन्दी को चाबुक या सलाख से मारा जाता था। चाबुक में धातु या हड्डी के टुकड़े जड़े हुए रहते थे, और प्रहार किए जाने पर इनसे शरीर में गहरी चोट लगती थी।

19:2, 3 सिपाहियों ने प्रभु यीशु का ठट्ठा किया कि वह राजा होने का दावा करता है। उन्होंने उसके लिए एक मुकुट तैयार किया! परन्तु यह **कांटों का मुकुट** था। जब इसे उसके माथे पर जोर से दबा कर पहनाया गया तो उसे इससे अत्यंत पीड़ा हुई होगी। कांटा उस शाप का प्रतीक है जो पाप के कारण मनुष्य पर आया। यहाँ हम हमारे पापों का शाप झेलते हुए प्रभु यीशु मसीह का एक चित्रण देखते हैं, ताकि हम महिमा का मुकुट पहन सकें। **बैंजनी वस्त्र** भी उसका उपहास करने के लिए पहनाया गया। **बैंगनी** एक शाही रंग था। परन्तु एक बार फिर से यह हमें स्मरण दिलाता है कि किस प्रकार से हमारे पाप प्रभु यीशु मसीह पर डाल दिए गए ताकि हमें परमेश्वर की धार्मिकता का वस्त्र पहनाया जा सके।

यह सोचना भी कितनी गम्भीर बात है कि परमेश्वर के पुत्र को उसके द्वारा ही सृजे गए प्राणियों के द्वारा **थप्पड़** मारा गया! जिस मुँह को उसने बनाया वही मुँह उसका उपहास कर रहा था!

19:4 पीलातुस . . . फिर बाहर निकलकर भीड़ के सामने यह घोषणा करता है कि वह प्रभु यीशु को अब उनके पास **बाहर** ला रहा है, परन्तु वह निर्दोष है। इस प्रकार से पीलातुस ने अपने ही मुँह से अपने आप को ही दोषी ठहरा दिया। उसने प्रभु यीशु में कोई दोष नहीं पाया; तौभी वह उसे रिहा नहीं कर रहा था।

19:5 जब प्रभु **यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला**, तो पीलातुस ने उसे ''**यह पुरूष**'' कहा। यह कह पाना कठिन है कि उसने ऐसा उपहास करते हुए कहा, या संवेदना जताते हुए कहा, या फिर भावशून्य होकर कहा।

19:6 महायाजकों ने देखा कि पीलातुस डगमगा रहा है, इसलिए उन्होंने चिल्लाकर कहा कि प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए। उद्धारकर्ता को मार डालने में अगुवाई करने वाले लोग *धार्मिक* लोग थे। अक्सर, कलीसिया के इतिहास में यह देखा गया है कि कलीसिया के अगुवे ही सब से अधिक सच्चे विश्वासियों को सताते हैं। ऐसा लगता है कि **पीलातुस** प्रभु यीशु के प्रति उनके बेतुके बैर को देख कर उनसे चिढ़ गया था। उसने कुछ इस प्रकार से कहा, ''यदि तुम्हें ऐसा ही लगता है, तो **तुम ही उसे लेकर क्रूस पर** क्यों नहीं चढ़ा देते? जहाँ तक मेरी बात है, वह निर्दोष है।'' तौभी पीलातुस जानता था कि यहूदी लोग उसे नहीं मारेंगे क्योंकि मृत्यु दण्ड देने का अधिकार उस समय सिर्फ रोमी शासन के पास था।

19:7 जब उन्होंने देखा कि वे यह सिद्ध करने में असफल रहे कि प्रभु यीशु कैसर की सरकार के लिए कोई खतरा है, तो फिर वे प्रभु यीशु के विरूद्ध धार्मिक आरोप लेकर आए। मसीह ने यह कहने के द्वारा परमेश्वर के तुल्य होने का दावा किया कि वह **परमेश्वर का पुत्र** है। यहूदियों के लिए, यह परमेश्वर की निन्दा थी और वे उसे मृत्यु दण्ड देकर दण्डित करना चाहते थे।

19:8, 9 पीलातुस इस सम्भावना के विषय में सोच कर व्याकुल होने लगा कि प्रभु यीशु परमेश्वर का

पुत्र हो सकता है। वह पहले से ही सारे घटनाक्रम को लेकर असहज था, परन्तु इस सम्भावना से **और भी डर गया।**

पीलातुस प्रभु यीशु को **किले के भीतर** या न्याय कक्ष में ले गया और उससे पूछा कि वह **कहाँ** से आया है। इन सारी बातों का अन्त, पीलातुस को लेकर दुखदपूर्ण रहा। उसने अपने ही मुँह से यह अंगीकार किया था कि प्रभु यीशु ने कोई गलत कार्य नहीं किया है; तौभी उसके पास नैतिक साहस नहीं था कि वह उसे रिहा कर दे क्योंकि वह यहूदियों से डरता था। प्रभु यीशु ने **कुछ भी उत्तर** क्यों नहीं **दिया?** शायद इसलिए क्योंकि वह जानता था कि पीलातुस को जितना प्रकाश मिला था वह उसके अनुरूप कार्य करने के लिए इच्छुक नहीं था। पीलातुस को जो सुअवसर मिला था उसे उसने गवां दिया था। उसे और प्रकाश नहीं दिया जाएगा क्योंकि उसने उसे पहले दिए गए प्रकाश की ओर ध्यान नहीं दिया।

19:10 **पीलातुस** ने प्रभु यीशु को धमका कर उत्तर देने के लिए उस पर दबाव डाला। उसने प्रभु यीशु को स्मरण दिलाया कि, एक रोमी हाकिम के रूप में उसके पास उसे **छोड़ देने का** और **क्रूस पर चढ़ाने का भी . . . अधिकार** और शक्ति है।

19:11 यहाँ पर प्रभु यीशु द्वारा दिखाया गया संयम ध्यान देने योग्य है। वह पीलातुस की तुलना में अधिक संयमित था। उसने शान्त होकर उत्तर दिया कि पीलातुस के पास जो भी **अधिकार** है वह उसे परमेश्वर की ओर से **दिया** गया है। सारी सरकारें परमेश्वर के द्वारा ठहराई गई हैं, और सारे अधिकार, चाहे दीवानी हो या फिर आत्मिक, सब परमेश्वर की ओर से दिए गए हैं।

''जिस ने तुझे मेरे हाथ पकड़वाया है'' निम्नलिखित लोगों के लिए कहा गया हो: (1) *काइफा,* महायाजक; (2) *यहूदा,* पकड़वाने वाला; (3) सामान्य रूप से यहूदी *लोग*। यहाँ पर यह विचार पाया जाता है कि इन यहूदियों को इस विषय में बेहतर जानकारी होना चाहिए थी। उनके पास पवित्रशास्त्र है जिसमें मसीह के आने के विषय में भविष्यद्वाणियां की गईं हैं। जब वह आया तो उन्हें उसको पहचान लेना चाहिए था। परन्तु उन्होंने उसे ठुकरा दिया और अब भी वे उसकी जान लेने के लिए चीख पुकार मचा रहे हैं। यह पद उन्हें यह शिक्षा देता है कि दोष के अलग अलग अंश (मात्रा) होते हैं। पीलातुस तो दोषी था ही, परन्तु काइफा और यहूदा, तथा सारे अधर्मी यहूदी *अधिक* दोषी थे।

19:12 जब **पीलातुस** प्रभु यीशु को रिहा करने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देने लगा, तो यहूदियों ने अपना अन्तिम और सबसे तीखा तर्क उसने सामने रखा, **''यदि तू इस व्यक्ति को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं।''** (कैसर रोमी सम्राट का अधिकारिक पदनाम था।) वे ऐसा जता रहे थे मानो उन्हें कैसर की चिन्ता है! वास्तव में वे उससे बैर रखते थे। वे चाहते थे कि उसे नाश कर के अपने आप को उसके नियंत्रण से छुड़ा लें। तौभी वे यह दिखावा कर रहे थे कि वे कैसर के साम्राज्य को प्रभु यीशु के खतरे से बचाना चाहते हैं जो राजा होने का दावा कर रहा है! उन्होंने इस भयानक पाखण्ड का फल तब भुगता जब सन् 70 में रोमी सेना ने यरूशलेम पर आक्रमण किया और नगर को पूरी तरह से नाश करके उसके निवासियों का संहार किया।

19:13 **पीलातुस** यहूदियों द्वारा उस पर कैसर के प्रति निष्ठाहीन होने के आरोप लगाए जाने पर उसे झेल न सका, और भीड़ के आगे कमजोर होकर उसने समर्पण कर दिया। अब वह प्रभु **यीशु को बाहर** एक चबूतरे पर **लाया** जहाँ इस प्रकार के मामलों को अक्सर निपटाया जाता है।

19:14 वास्तव में, फसह का भोज पिछली संध्या को सम्पन्न हो चुका था। **फसह की तैयारी का दिन** उस भोज की तैयारी के दिन को कहा जाता था जिसके अगले दिन भोज आयोजित किया जाता था। **''छठे घण्टे के लगभग''** शायद 6 बजे सुबह को कहा गया है परन्तु सुसमाचारों में समय निर्धारित करने के तरीकों में असुलझी समस्याएं हैं। **''देखो, यही है, तुम्हारा राजा!''** निश्चय ही पीलातुस ने यह बात यहूदियों को चिढ़ाने और भड़काने के लिए कहा था। वह उन पर प्रभु यीशु को दण्ड देने में उसे फँसाने का दोष लगा रहा था।

19:15 यहूदी लोग हठ करते रहे कि प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाना अवश्य है। पीलातुस ने यह प्रश्न पूछ कर उन पर कटाक्ष किया, ''तुम्हारा मतलब है कि तुम अपने ही **राजा को क्रूस पर** चढ़ाओगे?'' उसके बाद यहूदियों ने अत्यंत नीचता दिखाते हुए कहा, **''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं है!''** विश्वासहीन जाति! एक अधर्मी मूर्तिपूजक राजा के लिए उन्होंने अपने परमेश्वर का इंकार कर दिया।

19:16 पीलातुस यहूदियों को प्रसन्न करना चाह रहा था, और इसलिए उसने प्रभु यीशु को सिपाहियों के हाथ में उसे **क्रूस पर** चढ़ाने के लिए सौंप दिया। उसे परमेश्वर की ओर से सराहे जाने की तुलना में मनुष्यों से सराहे जाने में अधिक रूचि थी।

ह. क्रूस पर चढ़ाया जाना (19:17–24)

19:17 जिस शब्द का अनुवाद **क्रूस** किया जाता है उसका अर्थ लकड़ी का एक टुकड़ा हो सकता है (खूंटा), या फिर इसमें दो क्रॉस लकड़ियां भी हो सकती हैं। चाहे जो भी हो, इसका आकार इतना बड़ा था कि एक व्यक्ति सामान्य रूप से इस उठा सके। प्रभु यीशु ने **अपना क्रूस** कुछ दूर तक उठाया था। उसके बाद, अन्य सुसमाचारों के अनुसार, इसे शमौन कुरैनी नामक एक अन्य व्यक्ति को प्रभु यीशु के बदले उठा कर चलने के लिए दिया गया था। **खोपड़ी का स्थान** का ऐसा नाम पड़ने के दो कारण हो सकते हैं: (1) यह स्थान खोपड़ी के आकार का रहा हो, विशेष कर यदि यह गुफाओं वाली पहाड़ी रही हो। ''गोर्डन कलवरी'' नामक ऐसा एक स्थान आज भी इस्राएल में पाया जाता है। (2) यह एक ऐसा स्थान था जहाँ अपराधियों का वध किया जाता था; शायद उस क्षेत्र में खोपड़ियां और हड्डियां पाई जाती थीं, यद्यपि मिट्टी दिए जाने के सम्बन्ध में मूसा की व्यवस्था के प्रकाश में ऐसा सम्भव नहीं लगता।

19:18 प्रभु यीशु के हाथ और पैरों को क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया था। उसके बाद क्रूस को उठाया जाता था और भूमि में खोदे गए एक छेद में डाल कर खड़ा कर दिया जाता था। अब तक के एकमात्र सिद्ध व्यक्ति के साथ उसके अपने अपनों के द्वारा ऐसा ही व्यवहार किया गया! यदि आप ने इससे पहले उस पर अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास नहीं किया है, तो क्या इस समय आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे, जबकि आप एक साधारण से वर्णन को पढ़ रहे हैं कि किस तरह से उसने आप के लिए अपना प्राण दिया? दो डाकुओं को उसके साथ क्रूस पर लटकाया गया था, **एक को इधर और एक को उधर**। यह यशायाह 53:12 की इस भविष्यद्वाणी की पूर्णता में हुआ: ''वह अपराधियों के संग गिना गया।''

19:19 क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति के सिर के ऊपर एक **दोषपत्र** लगाया जाना उस समय की एक परम्परा थी, और इसमें उसके अपराध को बताया जाता था। पीलातुस ने आदेश दिया कि क्रूस के बीच में **यीशु नासरी यहूदियों का राजा** लिख कर टांगा जाए।

19:20 एलेक्ज़ेन्डर ने इसे बहुत ही सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया है:

> इब्रानी भाषा में, कुलपिताओं और नबियों की पवित्र जीभ। यूनानी भाषा में, संगीतमय और स्वर्णीम जीभ जिसने भाव के पात्रों को एक आत्मा दिया और दर्शन के सिद्धान्तों को एक शरीर दिया। लैटिन भाषा में, लोगों की बोली जो मूल रूप से सारे मनुष्य से सशक्त होती थी। ये तीन भाषाएं तीन जातियों और उनके विचारों को दर्शाती हैं – प्रकाशन, कला, साहित्य; प्रगति, युद्ध, और विधिशास्त्र। जहाँ कहीं मनुष्य की ये तीन अभिलाषाएं अस्तित्व में है, जहाँ कहीं मानवीय भाषाओं के माध्यम से बात की जा सकती है, जहाँ कहीं पाप करने वाला हृदय है, बोलने वाली जीभ है, पढ़ने वाली आँख है, उनके लिए क्रूस के पास एक सन्देश है।[53]

वह स्थान . . . नगर के पास था। प्रभु यीशु को नगर की सीमा के बाहर क्रूस पर चढ़ाया गया था। इसकी वास्तविक स्थिति की निश्चित जानकारी अब किसी को नहीं है।

19:21 **महायाजकों** को क्रूस के ऊपर लिखे गए शब्द पसन्द नहीं आए। वे इसे प्रभु यीशु द्वारा किए गए एक *दावे* के रूप में पढ़ना चाहते थे, एक *सच्चाई* (यह एक सच्चाई थी) के रूप में नहीं।

19:22 **पीलातुस** ने इसके शब्दों को बदलने से मना कर दिया। वह यहूदियों को लेकर अपना धीरज खो चुका था और अब वह उनकी बात और सुनने के लिए तैयार नहीं था। परन्तु उसे ऐसी प्रतिबद्धता पहले दिखाना चाहिए था!

19:23 इस प्रकार के वध के समय, सिपाहियों को अनुमति थी कि वे मरने वाले की निजी वस्तुओं को आपस में बांट लें। यहाँ पर हम देखते हैं कि वे मसीह के **कपड़े** आपस में बांट रहे हैं। स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसके कपड़ों के पाँच टुकड़े थे। उन्होंने चार टुकड़ों को तो आपस में बांट लिया, परन्तु अब भी एक **कुरता** रह गया था, जो **बिन सीअन** का था और इसे काटने पर यह बेकार हो जाता।

19:24 उन्होंने उसके कुरते के लिए **चिट्ठी** डाली, और यह जिस अनाम व्यक्ति के नाम निकली उसे सौंप दिया गया। वे शायद ही इस बात को जानते रहे होंगे कि ऐसा करने के द्वारा वे एक हजार वर्ष पहले की गई एक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी को पूरी कर रहे हैं (भजन 22:18)! ये पूरी हुई भविष्यद्वाणियां हमें फिर से यह स्मरण दिलाती हैं कि यह पुस्तक परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया वचन है, और प्रभु यीशु मसीह सचमुच में प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है।

ई. प्रभु यीशु अपनी माता को यूहन्ना के हाथों में सौंपता है (19:25-27)

19:25 बाइबल के अनेक विद्वानों का मानना है कि इस पद में चार स्त्रियों के नाम दिए गए हैं: (1) मरियम, यीशु की **माता**; (2) मरियम की **बहन** सलोमी, जो यूहन्ना की माता थी; (3) **मरियम - क्लोपास की पत्नी**; (4) **मरियम मगदलीनी**।

19: 26, 27 अपने स्वयं के दु:खों के बाद भी, प्रभु यीशु को दूसरों की चिन्ता थी। **अपनी माता**, और **उस चेले** यूहन्ना को देखकर, उसने अपनी माता से यूहन्ना का परिचय एक ऐसे व्यक्ति के रूप में कराया जो उसके बाद उसके पुत्र का स्थान लेगा। अपनी माता को ''**नारी**'' कह कर, प्रभु ने उसके प्रति आदर में कोई कमी नहीं दिखाई। परन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि उसने उसे ''माता'' नहीं कहा। क्या इसमें उन लोगों के लिए कोई शिक्षा पाई जाती है जो मरियम को ऊँचा स्थान देकर उसकी सराहना करते हैं? प्रभु यीशु ने यहाँ पर यूहन्ना को निर्देश दिया कि वह मरियम की देखभाल वैसे ही करे मानो वह उसकी **माता** हो। यूहन्ना ने उसकी आज्ञा का पालन किया, और मरियम को **अपने घर** ले गया।

ज.मसीह का कार्य पूरा हुआ (19:28-30)

19:28 पद 27 और पद 28 के बीच में, नि:सन्देह, तीन घण्टों का अन्तर है - दोपहर से लेकर 3:00 बजे तक का। इसी समय के दौरान प्रभु यीशु परमेश्वर के द्वारा त्याग दिया गया था जब वह हमारे पापों का दण्ड सह रहा था। ''**मैं प्यासा हूँ!**'' उसकी इस वाणी में उसकी वास्तविक, शारीरिक प्यास प्रगट होती है, जो क्रूस पर चढ़ाए जाने के कारण अत्याधिक बढ़ गई थी। परन्तु यह वाणी हमें यह भी स्मरण दिलाती है कि, मनुष्य की आत्माओं के उद्धार के लिए उसकी आत्मिक प्यास उसकी शारीरिक प्यास से बड़ी थी।

19:29 सिपाहियों ने उसे पीने के लिए सिरका दिया। शायद उन्होंने एक लकड़ी के सिरे में एक **स्पंज** को **जूफे** से बांधा और उसे उसके होंठों पर दबाया। (जूफा एक पौधा था, जिसका उपयोग फसह में भी किया जाता था - निर्ग. 12:22 देखें।) यह पित्त मिलाए हुए सिरके से अलग था, जो उसे पहले पीने के लिए दिया गया था (मत्ती 27:34)। उसने इसे नहीं पीया क्योंकि यह एक दर्दनिवारक का कार्य करता। उसे पूरी चेतना में रहकर हमारे पापों का बोझ उठाना आवश्यक था।

19:30 ''**पूरा हुआ!**'' - वह कार्य जिसे पिता ने करने के लिए उसे दिया था! - पाप के बलिदान के रूप में उसके प्राण को उण्डेला जाना! - छुटकारा और प्रायश्चित का कार्य! यह सत्य है कि अब तक उसकी मृत्यु नहीं हुई थी, परन्तु उसकी मृत्यु, उसे गाड़ा जाना, और उसका स्वर्गारोहण इतने सुनिश्चित हो चुके थे मानों वे पूर्ण हो चुके हों। इसलिए प्रभु यीशु यह घोषणा कर सका कि उस मार्ग का प्रबन्ध हो चुका है जिसके द्वारा पापी लोग उद्धार पा सकते हैं। कलवरी के क्रूस पर प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के लिए आज ही परमेश्वर को धन्यवाद दें!

बाइबल के कुछ विद्वान हमें यह बताते हैं कि **सिर** झुकाने का अर्थ यह हो सकता है कि उसने अपना सिर पीछे टिका लिया। डब्ल्यू. ई. वाइन नामक एक विद्वान का कहना है, ''मृत्यु के बाद असहाय होकर सिर को नहीं झुला दिया, परन्तु जानबूझ कर अपने सिर को आराम देने के लिए इस अवस्था में रखा।''

उसने अपने **प्राण त्याग दिए** कहने के द्वारा लेखक इस तथ्य पर जोर दे रहा है कि उसने अपनी इच्छा से प्राण त्यागा। उसने अपनी मृत्यु का समय नियुक्त कर रखा था। अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से नियंत्रण में रखते हुए, उसने अपना **प्राण** *स्वयं बाहर निकाला* - एक ऐसा कार्य जिसे कोई मनुष्यमात्र नहीं कर सकता।

क.उद्धारकर्ता के पंजर को बेधा गया (19:31–37)

19:31 एक बार फिर से हम यह देखते हैं कि इन **यहूदी** धार्मिक अगुवों ने इस नृशंस हत्या को रूप देते समय बारीकियों का कितनी सावधानीपूर्वक ध्यान रखा। उन्होंने ''मच्छर को तो छान लिया परन्तु ऊँट को निगल गए।'' उनका विचार था कि **सब्त के दिन** (शनिवार) शरीरों का **क्रूसों पर** लटके रहना उचित नहीं है। नगर में एक धार्मिक भोज होने वाला था। इसलिए उन्होंने पीलातुस से निवेदन किया गया कि उनकी **टांगे तोड़ी** जाएं ताकि उनके प्राण जल्दी निकल जाएं।

19:32 पवित्रशास्त्र में यह नहीं बताया गया है कि टांगे किस तरह से तोड़ी गईं। किन्तु वे अलग अलग स्थानों से तोड़ी गई होंगी क्योंकि एक ही जगह पर तोड़ने से वे नहीं मरते।

19:33 इन सिपाहियों को इन सब बातों का काफी अनुभव था। वे जानते थे कि प्रभु **यीशु . . . मर चुका है**। उसके बेहोश होने या मूर्छित अवस्था में होने की कोई सम्भावना नहीं है। उन्होंने **उस की टांगे न तोड़ी**।

19:34 यह नहीं बताया गया है कि **सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर** क्यों **बेधा**। शायद यह उनके हृदय की दुष्टता का अन्तिम प्रहार था। ''यह युद्ध के बाद एक पराजित शत्रु का खीज में किया गया प्रहार था, जो परमेश्वर और उसके मसीह के प्रति मनुष्य के हृदय की गहराई में पैठ चुकी घृणा को दर्शा रहा था।'' **लोहू और पानी** के अर्थ पर कोई भी एकमत नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका अर्थ यह है कि मसीह दिल के फट जाने के कारण मरा – परन्तु हम यह पहले ही पढ़ चुके हैं कि उसने स्वेच्छा से अपना प्राण त्यागा था। कुछ अन्य लोग समझते हैं कि यह बपतिस्मा और प्रभु भोज को दर्शाता है, परन्तु यह एक कल्पना ही प्रतीत होती है। **लोहू** पाप के दोष से शुद्ध किए जाने को दर्शाता है; जबकि **पानी** वचन के द्वारा पाप की अशुद्धता से शुद्ध किए जाने को दर्शाता है। इस पद में यह व्यक्त किया गया है:

पानी और लोहू को,
जो तेरे पंजर से बहे थे,
हमारे पाप का दोहरा निदान बना,
मुझे इसके *दोष* और इसकी *सामर्थ* से बचा।
– ऑगस्टुस टोप्लेडी

19:35 पद 35 का संकेत इस तथ्य की ओर हो सकता है कि प्रभु यीशु की टांगे नहीं तोड़ी गईं, प्रभु यीशु के पंजर को बेधा गया, या फिर यह क्रूस पर चढ़ाए जाने के सारे दृश्य की ओर संकेत कर रहा है। **जिसने यह देखा** नि:सन्देह यूहन्ना के लिए कहा गया है, जिसने इस वर्णन को लिखा है।

19:36 स्पष्ट है कि यह पद, पद 33 को निर्गमन 12:46 की पूर्णता के रूप में देख रहा है: ''बलिपशु की हड्डी न तोड़ना'' यह फसह के मेम्ने के लिए कहा गया था। परमेश्वर ने यह ठहराया था कि उसकी हड्डियों को न तोड़ा जाए। मसीह फसह का सच्चा मेम्ना है, जो इस नमूना–चिन्ह (टाइप) को ठीक ठीक पूरा करता है।

19:37 पद 37 में पद 34 के विषय में कहा जा रहा है। यद्यपि सिपाही यह नहीं जानता था, परन्तु उसका यह कार्य **पवित्रशास्त्र** की एक और भविष्यद्वाणी को अद्भुत रीति से पूर्ण कर रहा था (जक. 12:10)। ''मनुष्य अपने आप में दुष्ट है, परन्तु परमेश्वर के कार्य करने का एक अपना ढंग है। '' जकर्याह की भविष्यद्वाणी आने वाले दिन की ओर संकेत करती है जब विश्वासी यहूदी प्रभु यीशु को पृथ्वी पर आते हुए देखेंगे। ''तब वे मुझे ताकेंगे, अर्थात्, जिसे उन्हों ने बेधा है, और उसके लिए ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते पीटते हैं।''

ख.यूसुफ की कब्र में गाड़ा जाना (19:38–42)

19:38 यहाँ से प्रभु यीशु के गाड़े जाने का वर्णन आरम्भ होता है। अब तक, **अरमतिया** का **यूसुफ** एक गुप्त विश्वासी था। **यहूदियों के डर** से उसने खुलकर मसीह का अंगीकार नहीं किया था। अब वह बेधड़क होकर सामने आता है और प्रभु **यीशु की लोथ** की मांग करता है ताकि उसे गाड़े। ऐसा करने के द्वारा उसने अपने आप को निष्कासित किए जाने, सताए जाने, और हिंसा सहने का खतरा उठाया। पछताने वाली बात सिर्फ यह थी कि उसने अपने तिरिस्कृत स्वामी का पक्ष उस समय नहीं लिया जब प्रभु यीशु लोगों के बीच में सेवकाई कर रहा था।

19:39, 40 यूहन्ना रचित सुसमाचार को पढ़ने वाले लोग अब तक **निकुदिमुस** से परिचित हो चुके हैं,

हम नीकुदिमुस के विषय में अध्याय 3 में देख चुके हैं जो प्रभु **यीशु के पास रात को गया** था और तब भी जब उसने यहूदी महासभा से आग्रह किया था कि प्रभु यीशु को महासभा के सामने अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाए (यूहन्ना 7:50, 51)। अब वह यूसुफ के साथ हो लेता है, और उसके साथ मिलकर **पचास सेर . . . गन्धरस और एलवा** लेकर आता है। ये मसाले शायद बुकनी के रूप में थे और उन्हें शरीर पर फैलाकर लगाया गया था। उसके बाद **लोथ** को **कफन में लपेटा** गया था।

19:41 इस स्थल का लगभग प्रत्येक विवरण यशायाह भविष्यद्वक्ता की भविष्यद्वाणियों की पूर्णता है। यशायाह ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि मनुष्य के द्वारा मसीह को दुष्टों के साथ गाड़ा जाएगा परन्तु वह अपनी मृत्यु पर धनवानों का संगी होगा (यशा. 53:9)। एक **बारी में एक नई कब्र** निश्चय ही किसी धनी व्यक्ति की होगी। मत्ती रचित सुसमाचार में हम पाते हैं कि यह कब्र अरमतिया के यूसुफ की थी।

19:42 प्रभु **यीशु** का शरीर कब्र में रखा गया। यहूदी लोग चिन्तित थे कि यह लोथ उनके रास्ते से हट जाए क्योंकि उनका पर्ब्ब सूर्यास्त से आरम्भ होने वाला था। परन्तु यह सब परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया था कि लोथ तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहे। इस सम्बन्ध में यह ध्यान देना आवश्यक है कि यहूदी समझ के अनुसार, दिन के किसी भी हिस्से को पूरा एक दिन गिना जाता था। इसलिए यह तथ्य भी, कि प्रभु यीशु कब्र में तीन दिनों के एक कालखण्ड में था, मत्ती 12:40 में उसके द्वारा की गई भविष्यद्वाणी की पूर्णता है।

IX. परमेश्वर के पुत्र की विजय (अध्याय 20)

अ.खाली कब्र (20:1–10)

20:1 सप्ताह का पहला दिन रविवार था। **मरियम मगदलीनी** सुबह होने से पहले ही **कब्र पर आई**। सम्भव है कि कब्र किसी पहाड़ी पर खोदा गया एक छोटा सा कमरा रहा हो। नि:सन्देह **पत्थर** सिक्के की आकृति का था – गोल और चपटा। यह कब्र के मुँह के बाजू में एक गड्ढे में धंसा रहता था और इसे लुड़का कर दरवाजे को बन्द किया जा सकता था। जब मरियम वहाँ पहुँची तो **पत्थर को कब्र से** पहले ही हटा दिया था। जैसा कि हम मत्ती 28 में पढ़ते हैं, यह प्रभु यीशु के पुनरूत्थान के *बाद* हुआ था।

20:2 मरियम तुरन्त **पतरस** और यूहन्ना के पास **दौड़ी** और उत्तेजित होकर उन्हें बताई कि किसी ने **कब्र में से** प्रभु की लोथ को निकाल लिया है। उसने यह नहीं बताया कि ऐसा किसने किया है, परन्तु उसने **'वे'** कह कर यह संकेत दिया कि वह इतना ही जानती है। हमारे प्रभु को क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसके पुनरूत्थान के समय स्त्रियों की विश्वासयोग्यता और भक्ति की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। चेले प्रभु को छोड़ कर भाग गए थे। स्त्रियां अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना ही वहाँ खड़ी रहीं। इन बातों के पीछे बहुत सा अर्थ छिपा है।

20:3, 4 यह कल्पना कर पाना कठिन है कि **पतरस** और यूहन्ना जब कलवरी के पास के बाग की ओर दौड़ते हुए जा रहे थे उस समय वे क्या सोच रहे थे। यूहन्ना शायद पतरस की तुलना में जवान था इसलिए वह **कब्र पर पहले** पहुँचा।

20:5 ऐसा लगता है कि कब्र के द्वार की ऊँचाई काफी कम थी, जिसके कारण भीतर जाने के लिए या भीतर झांकने के लिए झुकना पड़ता था। यूहन्ना ने वहाँ **कपड़े पड़े देखे**। क्या ये कपड़े शरीर से खोल कर हटाए गए थे या फिर उसी प्रकार से लिपटे हुए थे जैसा कि इन्हें शरीर के चारों ओर लपेटा गया था? हमें लगता था कि बाद वाली बात अधिक सम्भव प्रतीत होती है। **तौभी वह** कब्र के **भीतर न गया**।

20:6, 7 अब तक **पतरस** वहाँ पहुँच चुका था और वह बिना हिचके कब्र के **भीतर** चला **गया**। उसका यह उतावला स्वभाव कुछ हम में भी पाया जाता है। उसने भी **कपड़े पड़े देखे**, परन्तु उद्धारकर्ता का शरीर वहाँ नहीं था।

अंगोछा का वर्णन यहाँ पर यह दर्शाने के लिए किया गया है कि प्रभु वहाँ से व्यवस्थित होकर और बिना हड़बड़ी के गया था। यदि कोई व्यक्ति उसकी देह को चुराया होता, तो वह कपड़े को सावधानीपूर्वक **लपेटा** नहीं होता।

20:8 यूहन्ना कब्र के भीतर गया और उसने लिपटे

हुए कपड़े और अंगोछे को देखा। परन्तु जब हम पढ़ते हैं कि उसने **देखकर विश्वास किया**, तो इसका अर्थ यह है कि उसका यह देखना सिर्फ भौतिक दृष्टि तक सीमित नहीं था। इसका अर्थ यह है कि वह पूरी तरह से समझ गया। उसके सामने मसीह के पुनरूत्थान का प्रमाण था। इन प्रमाणों से यह प्रगट हो रहा था कि क्या हुआ है, और उसने **विश्वास किया**।

20:9 अब तक चेलों ने पुराना नियम **पवित्रशास्त्र** को वास्तव में नहीं समझा था जिसमें यह बताया गया था कि मसीह को **मरे हुओं में से जी उठना** ही **होगा**। स्वयं प्रभु यीशु ने उन्हें यह बात बार बार बताई थी, परन्तु वे इसे समझ न सके थे। यूहन्ना इसे समझने वाला पहला व्यक्ति था।

20:10 **तब ये चेले** अपने ठहरने के स्थान को लौट गए – शायद यरूशलेम में। नि:सन्देह उनका निष्कर्ष यह था कि कब्र के पास ठहरे रहने का कोई औचित्य नहीं है। यह बेहतर होगा कि जा कर वे दूसरे चेलों को बताएं कि उन्होंने क्या पाया है।

ब. मरियम मगदलीनी को प्रभु यीशु दिखाई दिया (20:11–18)

20:11 पहले दो शब्द ध्यान देने योग्य है – **परन्तु मरियम**। अन्य दो चेले घर चले गए, *परन्तु मरियम . . .*। यहाँ पर एक बार फिर से हम एक स्त्री के प्रेम और उसकी भक्ति को देखते हैं। उसे बहुत बड़ी क्षमा मिली थी, इसलिए उसका प्रेम भी बहुत बड़ा था। वह कब्र के बाहर चौकसी करते हुए ठहरी रही, और रोती रही, क्योंकि वह समझ रही थी कि शायद प्रभु के शत्रुओं ने उसकी लोथ को चुरा लिया है।

20:12 इस बार, जब उसने भीतर झांका, तो उसने **दो स्वर्गदूतों को** उसी जगह पर **बैठे देखा जहाँ** प्रभु **यीशु की लोथ** को रखा गया था। यह ध्यान देने योग्य बात है कि किस प्रकार से इन भारी भरकम तथ्यों का बिना तड़क भड़क के सरल शब्दों में वर्णन किया गया है।

20:13 ऐसा नहीं लगता कि मरियम डरी हुई या आश्चर्यचकित थी। उसने उनके प्रश्नों का उत्तर ऐसे दिया मानों यह उसके लिए कोई सामान्य अनुभव हो। उसके उत्तर से यह स्पष्ट हो जाता है कि अब तक वह यह नहीं समझ सकी थी कि प्रभु यीशु जी उठा है और अब फिर से जीवित है।

20:14 इस समय, कुछ ऐसा हुआ कि उसने मुड़ कर देखा। उसने प्रभु **यीशु** को देखा, परन्तु वह उसे पहचान न सकी। उस समय भोर ही था और शायद उजियाला नहीं हुआ था। वह लगातार रो रही थी, और नि:सन्देह उसे धुंधला दिखाई दे रहा था। साथ ही, शायद परमेश्वर ने भी उसे प्रभु यीशु को पहचान पाने से तब तक रोक रखा था जब तक इसके लिए उचित समय न आ जाए।

20:15 प्रभु यीशु इन प्रश्नों का उत्तर जानता था; परन्तु वह इन्हें मरियम के मुँह से ही सुनना चाहता था। मरियम ने उसे **माली** समझ लिया था। यह सम्भव है कि जगत का उद्धारकर्ता मनुष्यों के बहुत पास हो, और तौभी वे उसे पहचान न पाएं। वह सामान्यत: छोटे लोगों का रूप धारण करके आता है, पृथ्वी के बड़े लोगों के रूप में नहीं। अपने उत्तर में, मरियम ने प्रभु का नाम नहीं लिया। तीन बार उसने प्रभु यीशु को **उसे** कहा। मरियम के लिये सिर्फ एक ही व्यक्ति मायने रखता था, और इसलिये उसने यह आवश्यक नहीं समझा कि इससे ज्यादा वह उसकी पहचान प्राप्त करे।

20:16 मरियम ने सुना कि एक जानी पहचानी आवाज उसे नाम लेकर बुला रही है। इसमें कोई शक नहीं था – यह **यीशु** था! उसने उसे **रब्बूनी** कहा, जिसका अर्थ है, ''मेरा महान **गुरू**।'' वास्तव में, वह अब भी उसे एक महान गुरू मान रही थी जिसे वह जानती थी। वह नहीं समझ सकी कि वह अब उसके गुरू से कहीं बढ़कर है – वह उसका प्रभु और उद्धारकर्ता है। इसलिए प्रभु यीशु ने उसे एक नए और पूर्ण तरीके से यह समझ पाने के लिए तैयार किया जिस तरीके से वह अब से उसे जानेगी।

20:17 मरियम प्रभु यीशु को व्यक्तिगत रूप से एक मनुष्य के रूप में जानती थी। जब वह देहरूप में था उस समय मरियम ने आश्चर्यकर्म होते हुए देखा था। इसलिए मरियम ने मान लिया कि यदि वह उसके साथ दृश्य रूप में नहीं है, तो वह उससे आशीष की कोई आशा नहीं कर सकती। प्रभु यीशु को मरियम की सोच में सुधार लाने की आवश्यकता है। उसने कहा, ''**मुझे** सिर्फ एक देहधारी मनुष्य के रूप में **मत छू। मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया** हूँ। जब मैं स्वर्ग को वापस जाऊंगा, तो पवित्र आत्मा जगत में भेजा जाएगा। जब पवित्र आत्मा

आएगा, तो वह मुझे तुम्हारे हृदय पर इस रीति से प्रगट करेगा जिस रीति से अब तक तुमने मुझे नहीं पहचाना है। पृथ्वी पर यहाँ पर रहते हुए मैं तुमसे जितना करीब था, अब मैं तुमसे उससे भी अधिक करीब रहूंगा।''

उसके बाद उसने उससे कहा कि वह **भाइयों के पास जाकर** उन्हें उस नए विधान के बारे में बताए जिसे उसने अभी अभी आरम्भ किया है। यहाँ पर पहली बार प्रभु यीशु ने अपने चेलों को ''**मेरे भाइयों**'' कहा है। उन्हें यह जानना था कि उसका पिता उनका पिता है, और उसका परमेश्वर उनका परमेश्वर है। अब तक विश्वासी लोगों को ''पुत्र'' और ''परमेश्वर के वारिस'' नहीं बनाया गया था।

प्रभु यीशु ने ''हमारे पिता'' नहीं कहा, परन्तु ''**अपने पिता और तुम्हारे पिता**'' कहा। इसका कारण यह है कि परमेश्वर उस अर्थ की तुलना में एक अलग अर्थ में उसका पिता है जिस अर्थ में वह हमारा पिता है। परमेश्वर अनादिकाल से ही प्रभु यीशु मसीह का **पिता** है। पुत्र पिता के तुल्य है। हम लेपालकपन (गोद लिया जाना) के द्वारा परमेश्वर के पुत्र हैं। इस सम्बन्ध का आरम्भ तब होता है जब हम उद्धार पाते हैं और इसका कोई अन्त नहीं है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में हम परमेश्वर के तुल्य नहीं हैं और न कभी हो सकते हैं।

20:18 मरियम मगदलीनी ने उसे दी गई आज्ञा का पालन किया, और, जैसा कि कुछ कहते हैं, वह ''प्रेरितों की प्रेरित'' बन गई। क्या कोई इस बात पर सन्देह कर सकता है कि उसे यह प्रतिफल मसीह के प्रति उसकी भक्ति के बदले में दिया गया था?

स.प्रभु यीशु चेलों को दिखाई दिया (20:19–23)

20:19 यह रविवार की **संध्या** थी। **चेले** एक साथ इकट्ठे थे, शायद वे उस उपरौठी कोठरी में थे जहाँ वे तीन रात पहले मिले थे। **द्वार . . . यहूदियों के डर के मारे बन्द थे**। अचानक उन्होंने प्रभु **यीशु** को **बीच में** खड़ा देखा, और उन्होंने उसे यह कहते हुए सुना, ''**शान्ति**।'' यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रभु ने द्वार खोले बिना ही कमरे में प्रवेश किया। यह एक आश्चर्यकर्म था। यह स्मरण रखना आवश्यक है कि पुनरूत्थान के बाद की उसकी देह भी मांस और हड्डी वाली एक वास्तविक देह थी। तौभी उसमें वह सामर्थ थी कि वह अवरोधों को पार करे या प्राकृतिक नियमों से बन्धे बिना कार्य करे। ''**तुम्हें शान्ति मिले**'' का अब नया अर्थ था क्योंकि मसीह ने क्रूस पर बहाए गए अपने लोहू से शान्ति स्थापित की थी। जो विश्वास से धर्मी ठहराए जाते हैं उनका परमेश्वर के साथ मेल हो जाता (शान्ति हो जाती) है।

20:20 उन पर शान्ति की घोषणा करने के बाद, उसने **उन को** अपने दु:खों के चिन्ह **दिखाए**, जिसके द्वारा से यह शान्ति हासिल की गई थी। उन्होंने उसके हाथ पैर में कीलों के और पंजर में बरछे से लगे घाव के निशान देखे। यह जानकर उनके हृदय में आनन्द भर गया कि वह सचमुच में **प्रभु** यीशु है। उसने जैसा कहा था वैसा उसने कर दिया। वह मृतकों में से जी उठा था। पुनरूत्थित प्रभु यीशु मसीह आनन्द का स्त्रोत है।

20:21 पद 21 बहुत ही सुन्दर पद है। विश्वासियों को उसकी शान्ति का आनन्द स्वार्थी बन कर अकेले नहीं उठाना है। इसे उन्हें दूसरों के साथ बांटना है। इसलिए उसने उन्हें संसार में भेजा, **जैसे पिता** ने उसे **भेजा** था।

मसीह इस संसार में एक निर्धन व्यक्ति के रूप में आया।

वह एक सेवक के रूप में आया।
उसने अपने आप को शून्य किया।
वह पिता की इच्छा को पूरी करने में प्रसन्न होता था।
उसने मनुष्य के साथ अपने आप को आत्मसात किया।
वह भलाई करता फिरा।
उसने सब कुछ पवित्र आत्मा की सामर्थ से किया।
उसका लक्ष्य क्रूस था।

अब वह अपने चेलो को कह रहा है, ''**मैं भी तुम्हें भेजता हूँ**।''

20:22 यह यूहन्ना रचित सुसमाचार का सबसे कठिन पद है। हम यहाँ पर यह पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु ने चेलों **पर फूंका** और कहा, ''**पवित्र आत्मा लो**।'' यहाँ पर समस्या यह है कि पवित्र आत्मा, बाद में, पिन्तेकुस्त के दिन को ही दिया गया। तौभी प्रभु ने यह वचन क्यों कहे जबकि यह घटना तुरन्त नहीं घटी?

इसके लिए अनेक स्पष्टीकरण दिए गए हैं: (1) कुछ लोगों का मानना है कि प्रभु सिर्फ यह प्रतिज्ञा कर रहा था

कि वे पिन्तेकुस्त के दिन क्या पाएंगे। यह एक पर्याप्त उत्तर नहीं हो सकता। (2) कुछ लोगों का कहना है कि उद्धारकर्ता ने वास्तव में ''पवित्र आत्मा लो'' कहा, इस समय चेलों ने पवित्र आत्मा को उसकी परिपूर्णता में नहीं पाया, बल्कि पवित्र आत्मा की कुछ सेवकाइयों को ही पाया, जैसे कि सत्य का और बड़ा ज्ञान, या उनकी सेवकाई के लिए सामर्थ और मार्गदर्शन। उनका कहना है कि चेलों को उस समय पवित्र आत्मा दिए जाने की गारंटी दी गई या पवित्र आत्मा का स्वाद पहले से चखाया गया। (3) कुछ अन्य लोगों का मानना है कि इस समय पवित्र आत्मा पूरी तरह से चेलों पर उण्डेला गया था। लूका 24:49 और प्रेरित 1:4, 5, 8 जैसे स्थलों के प्रकाश में सम्भव नहीं है, जहाँ उस समय भी, पवित्र आत्मा के आगमन को भविष्य का विषय कहा जा रहा था। यूहन्ना 7:39 से यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से तब तक नहीं आ सकता था जब तक प्रभु यीशु को महिमा नहीं मिल जाती, अर्थात्, जब तक वह स्वर्ग वापस नहीं चला जाता।

20:23 यह एक और कठिन पद है, और इस पद को लेकर बहुत से विवाद उभर कर सामने आएं हैं: (1) एक विचारधारा यह है कि प्रभु यीशु ने वास्तव में अपने प्रेरितों (और उनके होने वाले उत्तराधिकारियों) को पाप क्षमा करने या पाप कायम रखने की सामर्थ दी। यह बाइबल की इस शिक्षा के सीधे सीधे विरोध में है, जो सिखाती है कि सिर्फ परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है (लूका 5:21)। (2) मसीही लेखक गाएबेलिन ने एक दूसरी विचारधारा को उद्धरित किया है: ''सामर्थ की प्रतिज्ञा किया जाना और अधिकार दिया जाना सुसमाचार प्रचार के सम्बन्ध में था, जिसमें यह घोषणा की जानी थी कि पाप क्षमा की शर्त क्या है, और यदि इन शर्तों को स्वीकार नहीं किया गया, तो पाप कायम रखा जाएगा।'' (3) एक तीसरा मत (जो दूसरे मत से मिलता जुलता है), और जिसे हम सही मानते हैं, यह है कि चेलों को पाप क्षमा की *घोषणा* करने का अधिकार दिया गया था।

आइये हम इस तीसरे मत को और विस्तार से देखें। चेले सुसमाचार का प्रचार करने के लिए जाएंगे। कुछ लोग अपने पापों से मन फिराएंगे और प्रभु यीशु को ग्रहण करेंगे। चेलों को यह अधिकार दिया गया कि वे इन लोगों को यह बताएं कि उनके **पाप क्षमा** किए गए हैं। अन्य लोग मन फिराने से इंकार कर देंगे और मसीह पर विश्वास नहीं लाएंगे। चेले उन्हें यह बताएंगे कि वे अब भी अपने पापों में पड़े हैं, और यदि वे ऐसे ही मर जाएंगे, तो वे अनन्तकाल के लिए नाश हो जाएंगे।

इस स्पष्टीकरण के अतिरिक्त, हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि चेलों को कुछ प्रकार के पापों से निपटने के लिए विशेष अधिकार दिए गए थे। उदाहरण के लिए, प्रेरित 5:1–11 में, पतरस ने इस अधिकार का प्रयोग किया, और इसके परिणामस्वरूप हनन्याह और सफीरा की मृत्यु हो गई। पौलुस ने एक बुरा कार्य करने वाले व्यक्ति के पाप को 1 कुरिन्थियों 5:3–5, 12, 13 में कायम रखा है, और 2 कुरिन्थियों 2:4–8 में पाप को क्षमा किया है। इन मामलों में, इस जीवन में इन पापों के दण्ड से क्षमा प्रदान की गई है।

ड.सन्देह विश्वास में बदल गया (20:24–29)

20:24 हमें सीधे इस निष्कर्ष पर नहीं आ जाना चाहिए कि **थोमा** पर वहाँ उपस्थित न रहने का दोष लगाएं। उसकी अनुपस्थिति का कोई कारण नहीं दिया गया है।

20:25 थोमा पर उसके अविश्वासी रवैये के लिए *दोष* दिया गया है। वह प्रभु यीशु के पुनरूत्थान का दृश्य और ठोस प्रमाण चाहता था; अन्यथा वह **प्रतीति नहीं** करेगा। आज भी अनेक लोगों का रवैया ऐसा ही होता है, परन्तु यह वाजिब नहीं है। यहाँ तक कि वैज्ञानिक लोग भी अनेक बातों पर विश्वास करते हैं जिन्हें वे न तो देख सकते हैं और न छू सकते हैं।

20:26 एक सप्ताह बाद प्रभु अपने चेलों के सामने फिर से प्रगट हुआ। इस बार **थोमा** भी **उनके साथ** था। फिर से प्रभु यीशु ने आश्चर्यजनक रीति से उस कमरे में प्रवेश किया और फिर से उनका अभिवादन किया, ''**तुम्हें शान्ति मिले!**''

20:27 प्रभु ने इस विश्वासहीन अनुयायी के साथ स्नेह और धीरज से व्यवहार किया। उसने अपने पुनरूत्थान की वास्तविकता को सिद्ध करने के लिए थोमा को अपने पास बुलाया कि वह अपने **हाथों** को

प्रभु के **पंजर** में डाल कर देखे।

20:28 **थोमा** ने अब प्रतीति कर ली। हम नहीं जानते कि उसने प्रभु के पंजर में अपना हाथ डाला या नहीं। परन्तु अन्तत: वह जान गया कि प्रभु यीशु जी उठा है और वह **प्रभु** और **परमेश्वर** दोनों है। जॉन बॉयज़ ने इसे बहुत ही सुन्दर रीति से व्यक्त किया है, ''थोमा ने प्रभु यीशु के घावों को देखकर उसके ईश्वरत्व को स्वीकार कर लिया जिसे उसने नहीं देखा था।''

20:29 ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रभु **यीशु** ने परमेश्वर के रूप में की गई उसकी आराधना को स्वीकार किया। यदि वह मनुष्यमात्र होता तो वह आराधना किए जाने से मना कर देता। परन्तु जिस प्रकार का विश्वास थोमा में था उस प्रकार के विश्वास से परमेश्वर अधिक प्रसन्न नहीं होता। ऐसा विश्वास देख कर किया जाने वाला विश्वास है। अधिक **धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया**।

सबसे निश्चित प्रमाण परमेश्वर का वचन है। यदि परमेश्वर कोई बात कहता है, तो हम उस बात पर विश्वास करने के द्वारा उसका आदर करते हैं; परन्तु उससे अतिरिक्त प्रमाण मांगने के द्वारा हम उसका अनादर करते हैं। हमें उसकी बात पर सिर्फ इस आधार पर विश्वास लाना है कि यह बात उसके द्वारा कही गई है और वह झूठ नहीं बोल सकता या उससे गलती नहीं हो सकती।

इ. यूहन्ना के सुसमाचार का उद्देश्य (20:30, 31)

प्रभु यीशु के द्वारा किए गए सभी के सभी आश्चर्यकर्मों का वर्णन यूहन्ना के सुसमाचार में नहीं किया गया है। पवित्र आत्मा ने सिर्फ उन्हीं आश्चर्यकर्मों को इस पुस्तक में लिखे जाने के लिए चुना जो इस पुस्तक के उद्देश्य से सर्वाधिक मेल खाते हैं।

यहाँ पर यूहन्ना के सुसमाचार को लिखे जाने का उद्देश्य दिया गया है। यह इसलिए लिखा गया ताकि इसे पढ़ने वाले **विश्वास** करें **कि** प्रभु **यीशु ही** सच्चा मसीहा और **परमेश्वर का पुत्र** है। और **विश्वास करके** उसके **नाम से जीवन** पाएं।

क्या आपने विश्वास किया है?

X. उपसंहार: पुनरूत्थित पुत्र अपने अपनों के साथ (अध्याय 21)

अ. प्रभु यीशु अपने चेलों के सामने गलील में प्रगट होता है (21:1-14)

21:1 अब दृश्य बदल कर **तिबिरियास** (गलील) **की झील** की ओर केन्द्रित हो जाता है। चेले उत्तर की ओर यात्रा कर गलील में अपने घर आ गए थे। प्रभु यीशु ने उनसे वहाँ मुलाकात की। **अपने आप को . . . इस रीति से प्रगट किया** का अर्थ यह है कि यूहन्ना अब बताने वाला है कि मसीह किस रीति से उनके सामने प्रगट हुआ।

21:2 सात चेले उस समय वहाँ **इकट्ठे थे** – **पतरस**, **थोमा**, **नतनएल**, याकूब और यूहन्ना (**जब्दी के पुत्र**), और **दो और जन** जिनके नाम हम नहीं जानते।

21:3 **शमौन पतरस** ने झील में **मछली पकड़ने** की योजना बनाई, और दूसरे भी उसके साथ चलने को राजी हो गए। यह बिल्कुल स्वाभाविक निर्णय प्रतीत होता है, यद्यपि बाइबल के कुछ विद्वानों का यह मानना है कि यह यात्रा परमेश्वर की इच्छा में नहीं थी और इसलिए वे पहले प्रार्थना किए बिना ही चले गए। **उस रात** उन्होंने **कुछ न पकड़ा**। वे पहले ऐसे मछुआरे नहीं थे जो रात भर प्रयास करने के बाद भी कुछ न पकड़ पाए! यह परमेश्वर की सहायता के बिना किए जाने वाले मानवीय प्रयास की व्यर्थता को दर्शाता है, विशेष कर आत्मा रूपी मछली पकड़ते समय।

21:4 जब वे भोर को **किनारे** पहुँचे, तो प्रभु **यीशु** उनके लिए वहाँ ठहरा हुआ था, यद्यपि वे उसे नहीं पहचान सके। शायद उस समय अंधेरा ही था, या परमेश्वर की सामर्थ ने उन्हें प्रभु यीशु को पहचान पाने से रोक रखा था।

21:5 प्रभु यीशु ने उनसे पूछा, ''जवानो, क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है?'' निराश हो कर **उन्होंने उत्तर दिया, ''नहीं।''**

21:6 वे इस समय उसके विषय में सिर्फ इतना जानते थे कि वह कोई परदेशी है, जो झील के किनारे चल रहा है। तौभी, उसके सुझाव पर उन्होंने **नाव की दाहिनी ओर जाल डाला** और देखो क्या हुआ। **मछलियों** की भरमार! इतनी ढेर सारी मछलियाँ कि वे जाल को खींच

नहीं पा रहे थे! इससे यह प्रगट होता है कि प्रभु यीशु को इस बात का पूरा पूरा ज्ञान था कि झील में किस स्थान पर मछलियाँ हैं। इससे हमें यह शिक्षा भी मिलती है कि जब प्रभु यीशु हमारी सेवकाई में मार्गदर्शन करता है, तो हमारी जालें कभी खाली नहीं रहतीं। वह जानता है कि किस स्थान पर आत्माएं उद्धार पाने को तैयार हैं, और वह हमें उनकी ओर ले जाना चाहता है – यदि हम उसे ऐसा करने दें।

21:7 यूहन्ना ने सबसे पहले **प्रभु** यीशु को पहचाना और तुरन्त **पतरस** को यह बताया। पतरस ने अपना **अंगरखा कस लिया** और किनारे की ओर कूद पड़ा। यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि वह वहाँ तक तैरते हुए गया, पैदल गया, या पानी पर चल कर गया (जैसा कि कुछ लोगों का मानना है)।

21:8 **परन्तु और चेले** मछली पकड़ने वाली बड़ी नाव में से उतर कर एक छोटी नाव में आ गए और मछलियों से भरे **जाल** को खींचते हुए किनारे लगभग 300 मीटर तक आ गए।

21: 9 उद्धारकर्ता ने उनके लिए नाश्ता तैयार करके रखा था – भूनी हुई **मछली** और **रोटी**। यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि प्रभु ने इन मछलियों को स्वयं पकड़ा था या फिर उन्हें आश्चर्यकर्म के द्वारा प्राप्त किया था। परन्तु हम यहाँ पर यह अवश्य ही सीखते हैं कि वह हमारे तुच्छ प्रयासों पर निर्भर नहीं रहता। नि:सन्देह हम स्वर्ग में यह सीखेंगे कि जबकि अनेक लोग प्रचार और व्यक्तिगत गवाही के माध्यम से उद्धार पाते हैं, अनेक लोग प्रभु के द्वारा ही बिना किसी मानवीय सहायता के उद्धार पाते हैं।

21:10 अब उसने उन्हें निर्देश दिया कि वे **मछलियों** से भरे जाल को किनारे खींच लाएं – उन्हें पकाने के लिए नहीं, परन्तु उन्हें गिनने के लिए। ऐसा करने में, उन्हें यह स्मरण दिलाया जाएगा कि ''सफलता का रहस्य उसके आज्ञा के अनुसार कार्य करने और उसके वचन का तुरन्त पालन करने में है।''

21:11 बाइबल में मछलियों की ठीक ठीक संख्या बताई गई है – **एक सौ तिर्पन**। इस संख्या के सम्बन्ध में अनेक रोचक स्पष्टीकरण दिए गए हैं: (1) संसार में उस समय भाषाओं की संख्या। (2) संसार की जातियों या गोत्रों की संख्या जिन पर सुसमाचार का जाल फेंका जाएगा। (3) गलील की झील में, या संसार में मछलियों की विभिन्न प्रजातियों की संख्या। नि:सन्देह, यह संख्या उन विभिन्न लोगों की ओर संकेत करती है जो सुसमाचार प्रचार के द्वारा उद्धार पाएंगे – हर जाति और गोत्र से कुछ कुछ। मछुवे यह जानते थे कि इतनी बड़ी संख्या में मछलियां आ जाने के बाद भी **जाल** का **न** फटना एक उल्लेखनीय बात है। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि ''परमेश्वर के पास संसाधनों की कोई कमी नहीं रहेगी।'' वह इस बात का ध्यान रखेगा कि जाल न टूटे।

21:12 **भोजन** (नाश्ते) के लिए निमंत्रण को सुनकर, चेले उस अच्छी चीज को खाने के लिए अंगारों के चारों ओर इकठ्ठे हो गए जो प्रभु यीशु उन्हें दे रहा था। जब पतरस ने कोयले की आग को देखा तो वह अवश्य ही मन ही मन कुछ विचार करता रहा होगा। क्या उसे उस आग की याद आई जिससे वह अपने आप को उस समय गरम कर रहा था जब उसने प्रभु यीशु का इंकार किया था? चेलों को प्रभु यीशु की उपस्थिति में विस्मय और गम्भीरता के विचित्र भाव का अनुभव हुआ। वह अपने पुनरूत्थान की देह में खड़ा था। उनके मन में उससे पूछने के लिए अनेक प्रश्न आए होंगे। परन्तु उन्होंने पूछने का साहस नहीं किया। वे जानते थे कि **यह प्रभु** यीशु **ही है** – तौभी उन्हें लगा कि उसके व्यक्तित्व में एक रहस्यमयी परदा ढंपा हुआ है।

21:13 प्रभु **यीशु** ने अब उन्हें नाश्ता परोसा। और शायद उन्हें ऐसा ही एक समय याद आया होगा जब उसने थोड़ी से रोटियों और मछलियों से पाँच हजार लोगों को भोजन कराया था।

21:14 यूहन्ना के सुसमाचार में **यह तीसरी बार** उल्लेख किया गया है कि प्रभु यीशु अपने **चेलों** के सामने प्रगट हुआ। अन्य सुसमाचार से यह स्पष्ट होता है कि वह और भी अवसरों पर अपने चेलों के सामने प्रगट हुआ था, वह चेलों के सामने पुनरूत्थान के दिन की शाम को प्रगट हुआ था, उसके बाद एक सप्ताह बाद, और अब गलील की झील के किनारे।

ब. पतरस का मेलमिलाप (21:15-17)

21:15 प्रभु ने पहले उनकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की। और जब वे गर्म हो गए और भोजन कर चुके, तो वह **पतरस** से आत्मिक विषयों पर बातें करने

लगा। पतरस ने सार्वजनिक रूप से तीन बार प्रभु यीशु का इंकार किया था। तब, उसने पश्चताप किया था और फिर से प्रभु यीशु की संगति में निकट लाया गया था। इन पदों में, पतरस के प्रभु यीशु के साथ इस मेल मिलाप को प्रभु यीशु द्वारा सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया गया।

अक्सर इन पदों में **प्रेम** के लिए उपयोग में लाए गए दो अलग अलग शब्दों की ओर ध्यान ले जाया जाता है। हम पद 15 को सारांश में इस प्रकार से पढ़ सकते हैं: ''**हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू** इन अन्य चेलों **से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता था?'' उस ने उस से कहा, ''हाँ प्रभु, तू तो जानता है, कि मैं तुझ से *प्रीति* रखता हूँ।**'' पतरस अब इस बात पर और घमण्ड नहीं करेगा कि भले ही सब चेले प्रभु यीशु को छोड़ दें परन्तु वह प्रभु यीशु को कभी नहीं छोड़ेगा। उसे अब इसकी सीख मिल चुकी थी।

प्रभु यीशु ने कहा, **''मेरे मेमनों को चरा।''** मसीह के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने का एक बहुत व्यवहारिक तरीका यह है कि हम उसके झुण्ड के मेमने (नए विश्वासियों) को चराएं। यह ध्यान देना रोचक होगा कि अब वार्तालाप मछली पकड़ने से हट कर चरवाही करने में केन्द्रित हो गया है। मछली पकड़ने का कार्य सुसमाचार प्रचार को दर्शाता है; जबकि चरवाही करना शिक्षा देने और पासबानी देखभाल करने को दर्शाता है।

21:16 दूसरी बार, प्रभु ने पतरस से पूछा कि क्या वह उससे प्रेम रखता है। पतरस ने दूसरी बार, अपने ऊपर वास्तव में भरोसा न करते हुए, यह उत्तर दिया, ''**तू जानता है कि मैं तुझ से *प्रीति* रखता हूँ।**'' इस बार प्रभु **ने उससे कहा, ''मेरी भेड़ों की रखवाली कर।''** मसीह के झुण्ड में मेमने और भेड़े हैं, और उन्हें उस व्यक्ति के स्नेही देखभाल की आवश्यकता है जो सच्चे चरवाहे से प्रेम रखता है।

21:17 जिस तरह से पतरस ने तीन बार प्रभु यीशु का इंकार किया था, उसी प्रकार उसे इसका अंगीकार करने के लिए भी तीन बार अवसर दिया गया।

इस बार, पतरस ने इस बात की दोहाई दी कि प्रभु यीशु परमेश्वर है और इसलिए वह **सब कुछ** जानता है। उसने **तीसरी बार** कहा, ''**तू यह जानता है कि मैं तुझ से *प्रीति* रखता हूँ।**'' और अन्तिम बार उसे यह कहा गया कि वह मसीह की **भेड़ों** को चराए। इस स्थल में, यह शिक्षा पाई जाती है कि उसकी सेवा करने के लिए एकमात्र प्रेरणा प्रभु यीशु के प्रति हमारे प्रेम में ही पाई जाती है।

स.प्रभु यीशु पतरस की मृत्यु की भविष्यद्वाणी करता है (21:18-23)

21:18 जब पतरस **जवान** था, तब उसे घूमने फिरने की पूरी स्वतंत्रता थी। वह **जहाँ चाहता** वहाँ जाता था। परन्तु प्रभु यीशु ने यहाँ पर उसे बताया कि उसके जीवन के अन्त में, उसे बन्दी बना लिया जाएगा, उसे बान्धा जाएगा, और उसे मार डाला जाएगा।

21:19 इस पद के द्वारा पद 18 को समझा जा सकता है। पतरस एक शहीद की तरह मरने के द्वारा **परमेश्वर की महिमा करेगा**। जिसने प्रभु यीशु का इंकार कर दिया था उसे इतना साहस दे दिया जाएगा कि वह उसके लिए अपना प्राण भी दे देगा। यह पद हमें यह स्मरण दिलाता है कि हम जीवन के साथ साथ मृत्यु के द्वारा भी परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं। तब प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''**मेरे पीछे हो ले**!'' ऐसा कहते ही प्रभु यीशु अवश्य ही वहाँ से जाने के लिए निकलने लगा होगा।

21:20 ऐसा प्रतीत होता है कि **पतरस** प्रभु यीशु के पीछे आने लगा, और **फिर कर** यूहन्ना को भी **पीछे आता देखा**। यहाँ पर यूहन्ना अपना परिचय उस चेले के रूप में देता है जिसने फसह के **भोजन** के समय प्रभु यीशु की **छाती की ओर झुककर** पकड़वाने वाले का नाम पूछा था।

21:21 जब **पतरस** ने यूहन्ना को देखा, तो उसके दिमाग में यह विचार आया, ''यूहन्ना **का क्या होगा**? क्या वह भी उसकी तरह शहीद हो कर मरेगा? या फिर वह उस समय तक जीवित रहेगा जब तक प्रभु यीशु वापस न आ जाए?'' उसने यूहन्ना के भविष्य के बारे में प्रभु यीशु से पूछा।

21:22 प्रभु यीशु का उत्तर यह था कि पतरस को यूहन्ना के भविष्य को लेकर चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। भले ही यूहन्ना प्रभु यीशु के दोबारा आगमन तक जीवित रह जाए, परन्तु इससे पतरस को कोई लेना देना नहीं होना चाहिए। मसीही सेवकाई में अनेक बार असफलताओं का कारण यह होता है कि सेवक प्रभु यीशु

से अधिक एक दूसरे के बारे में सोचने लगते हैं।

21:23 प्रभु यीशु के वचन को गलत उद्धरित किया गया। उसने **यह नहीं कहा** कि यूहन्ना प्रभु यीशु के दोबारा आगमन तक जीवित बचा रहेगा। उसने सिर्फ यह कहा कि यदि ऐसा हो भी जाए, तो इससे पतरस को क्या लेना देना? अनेक लोग यहाँ पर एक अर्थ देखते हैं कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना का सम्बन्ध अपने दूसरे आगमन के साथ जोड़ा, यूहन्ना को वह विशेषाधिकार मिला कि वह प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य लिखे, जिसमें अन्त के विषय में काफी विस्तार से वर्णन किया गया है।

द. यूहन्ना द्वारा प्रभु यीशु की समापन गवाही (21:24, 25)

21:24 यूहन्ना ने अपने द्वारा लिखी गई बातों की सटीकता की गवाही देने के लिए व्यक्तिगत रूप से कुछ वचन कहे। कुछ अन्य लोग इसे इफिसुस की कलीसिया द्वारा यूहन्ना के सुसमाचार का सत्यापन किया जाना मानते हैं।

21:25 हमें पद 25 को शब्दश: समझने में कोई समस्या नहीं है! प्रभु यीशु परमेश्वर है और इसलिए वह असीमित है। उसके वचनों के अर्थों या उसके द्वारा किए गए कार्यों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। जब वह इस संसार में था, तब भी वह सारी चीजों को सम्भालता था – सूर्य, चन्द्रमा, और तारे। क्या कोई कभी इस बात को समझा सकता है कि विश्व की गति को बनाए रखने के लिए क्या क्या करना पड़ता है। पृथ्वी पर उसके द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों में भी, हमें बहुत ही संक्षिप्त विवरण दिया गया है। चंगाई के एक साधारण से कार्य तक में, नसों, माँसपेशियों, रक्त धमनियों, और अन्य अंगों के बारे में विचार करें जिन्हें वह नियंत्रित करता था। कीटाणुओं, मछलियों, और पशु जीवन के बारे में विचार कीजिए। मनुष्यों की गतिविधियों में उसके मार्गदर्शन के बारे में विचार कीजिए। विश्व के प्रत्येक कण की आणुविक संरचना में उसके नियंत्रण के विषय में विचार कीजिए। इतने सारे असीमित विवरणों का वर्णन करके क्या **जगत में** इतनी सारी **पुस्तकें** समा सकती हैं? इसका उत्तर यही हो सकता है, ''नहीं।''

इस प्रकार से यूहन्ना के सुसमाचार का समापन होता है। शायद हम अब बेहतर रीति से समझ पाए हों कि यह बाइबल के सबसे लोकप्रिय खण्डों में से एक क्यों है। निश्चय ही जो इसे ध्यानपूर्वक मनन करते हुए और प्रार्थना के साथ पढ़ेगा वह उस धन्य व्यक्ति के प्रेम में नए सिरे से पड़ने से शायद ही बच पाएगा, जिसे यह पुस्तक प्रस्तुत करती है।

अन्त्य टिप्पणी

[1](1:18) *क्रिटिकल टेक्स्ट* (*एनकेजेवी* मार्जिन में *नेशले–एलण्ड/यूनाइटेड बाइबल सोसाइटिज़ ग्रीक न्यू टेस्टामेंट*) में भी *एकलौता पुत्र* लिखा हुआ है। पारम्परिक रूप से *एकलौता पुत्र* सभी हस्तलिपियों और यूहन्ना 3:16 में पाया जाता है)।

[2](1:29) जे. सिन्डिलान जोन्स, *स्टडिज़ इन द गॉस्पल ऑफ सेन्ट जॉन,* पृ. 103।

[3](1:45) जेम्स एस. स्टीवर्ट, *द लाइफ एण्ड टिचिंग ऑफ जीज़स ख्राइस्ट,* 66, 67 पृष्ठों में।

[4](1:51) सिर्फ यूहन्ना ने ही ''दोहरा आमीन'' (*सच सच*) का उल्लेख किया है। अन्य सुसमाचारों में हमारे प्रभु की इस अभिव्यक्ति कोछोटे रूप में सिर्फ एक ही बार आमीन (सच) लिखा गया है।

[5](2:4) जॉर्ज विलियम्स, *द स्टूडेन्ट्स कॉमेन्ट्री ऑन द होली स्क्रिप्चर्स,* पृ. 194।

[6](2:11) जोन्स, *स्टडिज़,* पृ. 148।

[7](3:1) यूनानी डे का अर्थ *और, अब, परन्तु,* इत्यादि हो सकता है। आधुनिक अंग्रेजी बाइबलों में इन शब्दों को प्राय: हटा दिया गया है। यह उन स्थलों में से एक है जहाँ से इसे हटाया गया है।

[8](3:5) आत्मिक और शारीरिक जन्म के बीच के भेद के सन्दर्भ से मेल खाने वाली एक अन्य वैध व्याख्या यह है कि जल शारीरिक जन्म को दर्शाता है और आत्मा पवित्र आत्मा को दर्शाता है। रब्बी लोग ''जल'' का प्रयोग शुक्राणु के लिए करते थे, और जल शब्द का उपयोग पानी की उस थैली के लिए भी लाया जा सकता है जो बच्चे के बाहर आने पर फूट जाती है।

[9](3:16) एफ. डब्ल्यू बोरहेम, आगे की जानकारी अनुपलब्ध।

[10](4:41, 42) *क्रिटिकल टेक्स्ट* में *मसीह* को हटा

दिया गया है।

[11](4:48) यूनानी में एक व्यक्ति और एक से अधिक व्यक्तियों को सम्बोधित करने के अलग अलग रूप हैं। यहां पर बहुवचन प्रयोग में लाया गया है।

[12](5:2) *क्रिटिकल टेक्स्ट* में *बेथज़ाथा* लिखा गया है, परन्तु पुरातत्वविज्ञान ने अधिकांश हस्तलिपियों और *केजेवी* परम्परा में प्रयोग में लाए गए पारम्परिक नाम की पुष्टि कर दी है।

[13](5:3) जेम्स गिफ्फोर्ड बेल्लेट, *इवेन्जलिस्ट्स,* पृ. 50।

[14](5:18) जे. सिडलो बक्सटर, *एक्सप्लोर द बुक,* त:309।

[15](5:24) ऐसे अन्य पद भी हैं जो यह शिक्षा देते हैं कि एक विश्वासी एक दिन मसीह के न्याय सिंहासन के सामने खड़ा होगा (रोमी. 14:10; 2 कुरि. 5:10)। किन्तु, उस समय उसे दण्ड देने के लिए उसके पापों को सामने नहीं लाया जाएगा। यह मामला कलवरी में निपटाया जा चुका है। मसीह के न्याय सिंहासन के सामने, विश्वासी का जीवन और उसकी सेवा का आंकलन किया जाएगा, और वह या तो प्रतिफल पाएगा या फिर उसे खोएगा। उस समय उसकी आत्मा के उद्धार के विषय को नहीं लिया जाएगा, परन्तु उसकी जीवन की फलदायकता को देखा जाएगा।

[16](5:29) यदि पुनरूत्थान के विषय पर यह बाइबल का एकमात्र पद होता, तो हम यह सोचते कि सारे मृतक एक ही बार में जिला दिए जाएंगे। किन्तु पवित्रशास्त्र के अन्य भागों से हमें यह पता चलता है, विशेष कर प्रकाशितवाक्य 20 से, कि दो पुनरूत्थान के बीच में कम से कम एक हजार वर्ष का अन्तराल होगा। पहला पुनरूत्थान उन लोगों का होगा जिन लोगों ने विश्वास के द्वारा मसीह में उद्धार पाया है। दूसरे पुनरूत्थान में वे लोग जिलाए जाएंगे जो अविश्वासियों के रूप में ही मर जाएंगे।

[17](5:39) *ढूंढ़ते* के लिए यूनानी क्रिया रूप अस्पष्ट है। यह *आदेशसूचक* (*तुम ढूंढ़ो, केजेवी)* या *निश्चयार्थ* (*तुम . . .ढूढ़ते हो, एनकेजेवी)* में से एक हो सकता है। सन्दर्भ को देखकर *एनकेजेवी* सही लगता है। हिन्दी में भी इसी अनुवाद को आधार माना गया है।

[18](5:47) गाय किंग, *टू माय सन,* पृ. 104।

[19](6:11) डब्ल्यू. एच. ग्रिफ्फिथ थॉमस, *द अपोसल जॉन: हिज़ लाइफ एण्ड टिचिंग एण्ड राइटिंग्स,* 173, 74 पृष्ठों में।

[20](6:15) फेड्रिक ब्रदरटोन मेयर, *ट्राइड बाय फायर,* पृ. 152।

[21](6:31) मन्ना एक छोटे आकार, गोल आकृति और सफेद रंग का भोजन हुआ करता था जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल परिभ्रमण के दौरान आश्चर्यजनक रीति से उपलब्ध करवाया था। उन्हें हर सप्ताह, पहले छ: दिनों में सुबह के समय मन्ना बटोर लेना होता था।

[22](6:55) *एन यू (नेशले–एलण्ड/यूनाइटेड बाइबल सोसाइटिज़ ग्रीक न्यू टेस्टामेंट) टेक्स्ट* में ''*सच में खाने की वस्तु . . . सच में पीने की वस्तु* '' लिखा है, परन्तु इसका अर्थ वही होगा (वास्तव में)।

[23](6:59) आराधनालय यहूदियों के एक स्थानीय धार्मिक सभा स्थल को कहा जाता है, परन्तु यह यरूशलेम के मन्दिर के समान नहीं होता जो बलिदान चढ़ाने का एकमात्र नियुक्त स्थान था।

[24](6:69) *क्रिटिकल टेक्स्ट (एनयू)* में ''परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है'' लिखा है।

[25](7:1) यह जानना हमारे लिए उपयोगी होगा कि ''यहूदी'' के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला यूनानी शब्द *(इयोदायोस)* के निम्नलिखित अर्थ हो सकते हैं: ''*यहूदिया का निवासी* (जैसे गलील के निवासी को गलीली कहा जाता है); (1) यहूदी व्यक्ति (भले ही उसने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया हो); (3) या फिर मसीही विश्वासी का एक विरोधी, विशेष कर कोई धार्मिक अगुवा। यूहन्ना प्राय: यहूदी शब्द का प्रयोग इस तीसरे अर्थ के लिए ही करता है, यद्यपि वह स्वयं दूसरे अर्थ में यहूदी था।''

[26](7:7) मेयर, *ट्राइड,* पृ. 129।

[27](7:8) *क्रिटिकल (एनयू) टेक्स्ट्* में *अभी* को हटा दिया गया है जो उचित नहीं है। इसे हटा दिए जाने से ऐसा लगता है कि प्रभु यीशु यहाँ पर धोखा दे रहा है।

[28](8:5) जे.एन. डार्बी, आगे की जानकारी अनुपलब्ध।

[29](8:11) 7:53 से 8:11 का भाग अधिकांश प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं पाया जाता, परन्तु 900 से भी अधिक यूनानी हस्तलिपियों में यह पाया गया है (अधिकांश में)। यहाँ पर एक प्रश्न उठाया जाता है कि क्या ये पद मूल पुस्तक के अंश थे। हमारा मानना है कि इन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए भाग के रूप में स्वीकार करना उचित होगा। इन पदों में पाई जाने वाली शिक्षा बाइबल के शेष

भाग से पूर्ण रूप से मेल खाती है। अगस्टीन ने लिखा है कि कुछ लोगों ने इस स्थल को बाइबल में इसलिए शामिल नहीं किया क्योंकि उन्हें डर था कि इससे अनैतिकता को बढ़ावा मिलेगा।

[30](8:45) आर. सी. एच. लेन्सकी, *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ कोलोशियन्स, थिस्सलोनियन्स, तिमोथी, टाइटस, फिलेमोन,* पृ. 701, 702।

[31](9:35) *एनयू टेक्स* में यहाँ पर ''मनुष्य का पुत्र'' लिखा गया है, यह आराधना के सन्दर्भ में उपयुक्त नहीं लगता साथ ही अधिकांश संस्करणों में यह नहीं आया है।

[32](10:28) यूनानी में जोर देने के लिए दो नकारात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है (अंग्रेजी और हिन्दी व्याकरण में ऐसा नहीं किया जा सकता)।

[33](10:36) सैमुएल ग्रीन, *''स्क्रिप्चर्स टेस्टेमनी टू द डीएटी ऑफ ख्राइस्ट,''* पृ. 7।

[34](11:1) आर्थर डब्ल्यू पिंक, *एक्पोजिशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ जॉन,* III:12।

[35](11:25) बुरकिट, आगे की जानकारी अनुपलब्ध।

[36](11:35) यूनानी नया नियम का सबसे छोटा पद भावनाओं की दृष्टि से इस पद के बिल्कुल विपरीत है, ''सदा आनन्दित रहो'' *(पानटोटे खाइरेटे)* 1 थिस्स. 5:16)।

[37](11:47) जे. सी. रायल, *एक्पोजिटरी थॉट्स ऑन द गॉस्पल्स, सेन्ट जॉन,* II:295।

[38](11:48) मेयर, *ट्राइड,* पृ. 112।

[39](12:5) रायल, *यूहन्ना,* II: 309, 10।

[40](12:7) ''उसने रखा है'' के बदले क्रिटिकल टेक्स्ट पाठ में ''ताकि वह रख सके'' अनुवाद किया गया है, जो कि इस संदर्भ और ईस्टर की सुबह कब्र में मरियम की अनुपस्थिति के विरोधाभास प्रतीत होता है। पैराफ्रेज़ के द्वारा एन.आई. व्ही. अनुवाद इस समस्या को सुलझाता है।

[41](12:24) टी.जी. रैगलैण्ड, अतिरिक्त जानकारियां अनुपलब्ध।

[42](13:13, 14) यह सत्य है, कि कुछ अवसरों पर पूर्वी देशों में, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पाँव धोता है, परन्तु यह दीनतापूर्वक सेवा करने का एक उदाहरण है।

[43](13:32) यूनानी व्याकरण (प्रथम श्रेणी शर्त और *एई* के साथ निर्देशात्मक) इसे सच मान कर चलता है।

[44](14:20) अन्य उदाहरण हवा में पक्षी और पक्षी में हवा, और पानी में मछली और मछली में पानी हो सकते हैं।

[45](17:1) मारकस रेनफोर्ड, *अवर लॉर्ड प्रेज़ फॉर हिज़ ओन,* पृ. 173।

[46](17:4) रायल, *जॉन,* III:40, 41।

[47](17:26) एफ. एल. गोडेट, *कॉमेन्ट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ जॉन* II:345।

[48](17:26) रेनफोर्ड *अवर लॉर्ड्स प्रेयर,* पृ. 173।

[49](18:14) स्टीवर्ट, *लाइफ एण्ड टिचिंग,* पृ. 157।

[50](18:28) अगस्टीन, रायल के द्वारा उद्धरित, *यूहन्ना,* III: 248।

[51](18:28) बिशप हॉल, *तत्रैव*।

[52](18:28) पूले, *तत्रैव*।

[53](19:20) एलेक्ज़ेन्डर, आगे की जानकारी अनोल्लेखित।

[54](21:15) *क्रिटिकल (एनयू) टेक्स्ट* में भी हिन्दी *ओल्ड वर्शन* की तरह पतरस के पिता का नाम योना के स्थान पर यूहन्ना लिखा हुआ है (16, 17 पदों में भी)।

पुस्तक सूची

गोडेट, एफ.एल. *कॉमेन्ट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ जॉन,* ग्रैण्ड रेपिड्स: जोन्डरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1969 (1893 में पुनर्मुद्रित, एक में दो संस्करण)।

होल, एफ. बी. *द गॉस्पल ऑफ जॉन ब्रिफली एक्सपाऊंडेड.* लंदन: द सेन्ट्रल बाइबल ट्रूथ डिपो, अनोल्लेखित।

आइरनसाइड, एच. ए. *एड्रेसेज़ ऑन द गॉस्पल ऑफ जॉन.* न्यूयार्क: लॉइज़ॉक्स ब्रदर्स, 1956।

जोन्स, जे. सिनडिलान. *स्टडिज़ इन द गॉस्पल एकॉर्डिंग टू सेन्ट जॉन.* टोरन्टो: विलियम ब्रिग्स, 1885।

केली, विलियम. *एन एक्पोज़िशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ जॉन.* लंदन:सी.ए. हैमण्ड ट्रस्ट बाइबल डिपोट, 1996।

लैंस्की, आर. सी.एच, *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ सेन्ट जॉन्स गॉस्पल.* मिनियापोलिस: ऑग्सबर्ग पब्लिशिंग हाऊस, 1942।

मेकाउले, जे. सी. *ओबिडियन्स अनटू डेथ: डिवोशनल*

स्टडीज़ इन जॉन्स गॉस्पल, ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी.इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्प. 1942।

पिंक, आर्थर डब्ल्यू. *एक्सपोज़िशन ऑफ द गॉस्पल ऑफ जॉन. वोल्यूम III*. स्वेंगल, पेन्सिल्वानिया: बाइबल ट्रूथ डिपोट, 1945।

रेन्सफोर्ड, मारकस. *अवर लॉर्ड प्रेज़ फॉर हिज़ ओन.* शिकागो मूडी प्रेस, 1955।

रायल, जे.सी. *एक्सपोज़िटरी थॉट ऑन द गॉस्पल: सेन्ट जॉन.* लंदन: जेम्स क्लार्क एण्ड कम्प. लिमिटेड, 1957।

टास्कर, आर. वी. जी. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेन्ट जॉन.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1968।

टेनी, मेरिल सी. *जॉन: द गॉस्पल ऑफ बिलिफ.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1948।

थॉमस डब्ल्यू. एच. ग्रिफ्फिथ. *द अपोसल जॉन: स्टडीज़ इन हिज़ लाइफ एण्ड राइटिंग्स.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1968।

वेन रायन, ए. *मेडिटेशन्स इन जॉन.* शिकागो:मूडी प्रेस, 1949।

वाइन, डब्ल्यू. इ. *जॉन, हिज़ रिकार्ड ऑफ ख़्राइस्ट.* लंदन:ओलिफेन्ट्स, 1957।

वेस्टकोट, बी.एफ. *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेन्ट जॉन.* ग्रैण्ड रेपिड्स: विलियम बी. इर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1954।

परिशिष्ट

नया नियम के लेखक

नाम	जाति	गृह नगर	व्यवसाय	सम्बन्ध	कितने अध्याय लिखे	कितने पद लिखे	पुस्तके लिखीं
मत्ती	यहूदी	कफरनहूम	चुंगी लेनेवाला	यीशु मसीह का प्रेरित	28	1,071	मत्ती रचित सुसमाचार
मरकुस	यहूदी/रोमी	यरूशलेम	मिशनरी	पतरस का चेला	16	678	मरकुस रचित सुसमाचार
लूका	यूनानी	अन्ताकिया	वैद्य	पौलुस का चेला	52	2158	लूका रचित सुसमाचार, प्रेरितों के काम
यूहन्ना	यहूदी	बैतसैदा या कफरनहूम	मछुआरा	यीशु मसीह का प्रेरित	50	1414	यूहन्ना रचित सुसमाचार 1 यूहन्ना 2 यूहन्ना 3 यूहन्ना प्रकाशितवाक्य
पौलुस	यहूदी	तरसुस	तम्बू बनाने वाला	यीशु मसीह का प्रेरित	87 (100)*	2033 (2336)*	रोमियों 1 कुरिन्थियों 2 कुरिन्थियों गलातियों इफिसियों फिलिप्पियों कुलुस्सियों फिलेमोन 1 थिस्सलुनीकियों 2 थिस्सलुनीकियों 1 तीमुथियुस 2 तीमुथियुस तीतुस (इब्रानियों?)
याकूब	यहूदी	नासरत	बढ़ई?	यीशु मसीह का भाई	5	108	याकूब
पतरस	यहूदी	बैतसैदा	मछुआरा	यीशु मसीह का प्रेरित	8	166	1 पतरस 2 पतरस
यहूदा	यहूदी	नासरत	बढ़ई?	यीशु मसीह का भाई	1	25	यहूदा

* यदि इब्रानियों का लेखक पौलुस को माना जाए।

टॉक थ्रू द बाइबल से लिया गया। मूल संस्करण में अनुमति से मुद्रित।

सुसमाचारों का सुमेल

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	लूका की प्रस्तावना				1:1-4		प्रेरित 1:1
	मसीह के देहधारण पूर्व की अवस्था					1:1-18	इब्रा. 1:1-14
	यीशु मसीह की वंशावली		1:1-17		3:23-38		रूत4:18-22 1 इति1:1-4
	यीशु और यूहन्ना का जन्म, शैशव, और किशोरावस्था की 17 घटनाएं						
7 ई.पू.	(1) यूहन्ना के जन्म की घोषणा	यरूशलेम (मन्दिर)			1:5-25		गिन. 6:3
7 या 6 ई.पू.	(2) कुंवारी के सामने यीशु के जन्म की घोषणा	नासरत			1:26-38		यशा. 7:14
लग. 5 ई.पू.	(3) मरियम के लिए इलीशिबा का गीत	(यहूदिया का पहाड़ी देश)			1:39-45		
	(4) मरियम द्वारा स्तुति का गीत				1:46-56		भजन 103:17
5 ई.पू.	(5) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म, शैशवस्था, और उसके भविष्य के लिए उद्देश्य	यहूदिया			1:57-80		मला. 3:1
	(6) यूसुफ के सामने यीशु के जन्म की घोषणा	नासरत	1:18-25				यशा. 9:6,7
	(7) यीशु मसीह का जन्म	बैतलहम	1:24,25		2:1-7		यशा. 7:14
5-4 ई.पू.	(8) स्वर्गदूतों के द्वारा प्रचार	(बैतलहम के पास)			2:8-14		1 तीमु. 3:16
	(9) श्रद्धा के साथ चरवाहों का आगमन	बैतलहम			2:15-20		
	(10) यीशु का खतना	बैतलहम			2:21		लैव्य. 12:3
4 ई.पू.	(11) मन्दिर में प्रथम आगमन, शमौन और हन्ना द्वारा आभार	यरूशलेम			2:22-38		निर्ग. 13:2 लैव्य. 12
	(12) ज्योतिषियों का आगमन	यरूशलेम व बैतलहम	2:1-12				गिन. 24:17
	(13) मिस्र भागना और निर्दोष बच्चों का संहार	बैतलहम यरूशलेम व मिस्र	2:13-18				यिर्म. 31:15
	(14) यीशु के साथ मिस्र से नासरत		2:19-23		2:39		
	(15) यीशु की बाल्यावस्था	नासरत			2:40,51		
इसके बाद 7-8 ईस्वी	(16) यीशु, 12 वर्ष का, मन्दिर आगमन	यरूशलेम			2:41-50		व्य.वि. 16:1-8
इसके बाद	(17) यीशु की किशोरा-वस्था और वयस्कता के 18 वर्षों का विवरण	नासरत			2:51,52		1 शमू. 2:26

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में सच्चाइयाँ						
लग. 25-27 ईस्वी	यूहन्ना की सेवकाई का आरम्भ	यहूदिया का जंगल	3:1	1:1-4	3:1,2	1:19-28	मला. 3:1
	व्यक्ति और सन्देश		3:2-12	1:2-8	3:3-14		यशा. 40:3
	उसके द्वारा दिखाई गई यीशु की तस्वीर		3:11,12	1:7, 8	3:15-18	1:26,27	प्रेरित 2:38
	उसका साहस		14:4-12		3:19,20		
	यीशु की सेवकाई के आरम्भ की 12 घटनाएं						
लग. 27ईस्वी	(1) यीशु का बपतिस्मा	यरदन नदी	3:13-17	1:9-11	3:21,23	1:29-34	भजन 2:7
	(2) यीशु की परीक्षा	जंगल	4:1-11	1:12,13	4:1-13		भजन 91:11
	(3) प्रथम चेलों को बुलाया	यरदन नदी के पार				1:35-51	
	(4) पहला आश्चर्यकर्म	गलील का काना				2:1-11	
	(5) कफरनहूम में पहली बार ठहरा	(कफरनहूम "उसका" नगर)				2:12	
27 ईस्वी	(6) मन्दिर को पहली बार शुद्ध किया					2:13-22	भजन 69:9
	(7) यरूशलेम में ग्रहण किया गया	यरूशलेम				2:23-25	
	(8) नीकुदिमुस को दूसरे जन्म के बारे में सिखाया	यहूदिया यहूदिया				3:1-21	गिन. 21:8,9
	(9) यूहन्ना के साथ सह-सेवकाई	यहूदिया				3:22-30	
27 ईस्वी	(10) गलील को गया	यहूदिया	4:12	1:14	4:14	4:1-4	
	(11) याकूब के कुंए पर सामरी स्त्री	सामरिया				4:5-42	यहो. 24:32
	(12) गलील को लौटा			1:15	4:15	4:43-45	
ईस्वी 27-29	**गलील में यीशु की सेवकाई की 55 घटनाएं**						
27 ईस्वी	(1) राजा के कर्मचारी को चंगा किया	काना				4:46-54	
	(2) नासरत में ठुकराया गया	नासरत			4:16-30		यशा. 61:1,2
	(3) कफरनहूम चला गया	कफरनहूम	4:13-17				यशा. 9:1,2
	(4) चार व्यक्ति मनुष्यों को पकड़ने वाले बने	गलील की झील	4:18-22	1:16-20	5:1-11		भजन 33:9
	(5) सब्त के दिन दुष्टात्मा-ग्रसित को चंगा किया	कफरनहूम		1:21-28	4:31-37		
	(6) पतरस की सास व अन्य को चंगा किया	कफरनहूम	8:14-17	1:29-34	4:38-41		यशा. 53:4

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
लग.27 ईस्वी	(7) गलील को प्रथम प्रचार यात्रा	गलील	4:23-25	1:35-39	4:42-44		
	(8) कोढ़ी को चंगा किया	गलील	8:1-4	1:40-45	5:12-16		लैव्य. 13:49
	(9) झोले के मारे को चंगाई	कफरनहूम	9:1-8	2:1-12	5:17-26		रोमि. 3:23
	(10) मत्ती की बुलाहट और भोज	कफरनहूम	9:9-13	2:13-17	5:27-32		होशे 6:6
	(11) दृष्टान्त द्वारा चेलों का बचाव	कफरनहूम	9:14-17	2:18-22	5:33-39		
28 ईस्वी	(12) दूसरे फसह के लिए यरूशलेम गया और लगड़े को चंगा किया	यरूशलेम				5:1-47	निर्ग. 20:10
	(13) बालियाँ तोड़ने पर सब्त सम्बन्धी विवाद	गलील के मार्ग पर	12:1-8	2:23-28	6:1-5		व्य.वि. 5:14
	(14)सूखे हाथ वाले को चंगा करने पर सब्त सम्बन्धी एक अन्य विवाद	गलील	12:9-14	3:1-6	6:6-11		
	(15) बहुत से लोगों को चंगाई	गलील झील	12:15-21	3:7-12	6:17-19		
	(16) रात भर प्रार्थना करने के बाद 12 चेलों को चुना	(कफरनहूम के पास,		3:13-19	6:12-16		
	(17) पहाड़ी उपदेश	कफरनहूम के पास)	5:1-7:29		6:20-49		
	(18) सूबेदार के पुत्र को चंगा किया	कफरनहूम	8:5-13		7:1-10		यशा. 49:12,13
	(19)विधवा के बेटे को जिलाया	नाइन			7:11-17		अय्यू. 19:25
	(20) यीशु ने यूहन्ना के सन्देह को दूर किया	गलील	11:2-19		7:18-35		मला.3:1
	(21) सुविधासम्पन्न लोगों पर हाय		11:20-30				उत्प. 19:24
	(22) एक पापिन द्वारा यीशु का अभिषेक	शमौन का घर कफरनहूम			7:36-50		
	(23) गलील को एक और यात्रा	गलील			8:1-3		
	(24) यीशु पर परमेश्वर की निन्दा का आरोप	कफरनहूम	12:22-37	3:20-30	11:14-23		

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	(25) चिन्ह मांगे जाने पर यीशु का उत्तर	कफरनहूम	12:38–45		(11:24–26, 29–36)		
	(26) माता, भाई अपनी बात कहना चाहते हैं	कफरनहूम	12:46–50	3:31–35	8:19–21		
	(27) बोनेवाले, जंगली बीज, राई के दाने, धन, मोती, जाल, दिया के लोकप्रिय दृष्टांत	गलील की झील के पास	13:1–52	4:1–34	8:4–18		योएल 3:13
	(28) समुद्र को शान्त किया	गलील झील	8:23–27	4:35–41	8:22–25		
	(29) गिरासेनी दुष्टात्माग्रस्त चंगा किया गया	गलील का पूर्वी छोर	8:28–34	5:1–20	8:26–39		
	(30) याइर की बेटी जिलाई गई और लोहू बहने की रोगी स्त्री चंगी की गई		9:18–26	5:21–43	8:40–56		
	(31) दो अंधों को दृष्टि मिली		9:27–31				
28 ईस्वी	(32) गूंगी दुष्टात्माग्रसित चंगा किया		9:32–34				
	(33) नासरत द्वारा यीशु का दूसरी बार तिरिस्कार	नासरत	13:53–58	6:1–6			
	(34) बारह चेले भेजे गए		9:35–11:1	6:6–13	9:1–6		1 कुरि. 9:14
	(35) हेरोदेस ने यूहन्ना का सिर कटवा दिया	गलील	14:1–12	6:14–29	9:7–9		
वसन्त 29 ईस्वी	(36) 12 चेले वापस लौटे, यीशु एंकात को गया, 5000 तृप्त हुए	बैतसैदा के पास	14:13–21	6:30–44	9:10–17	6:1–14	
	(37) पानी पर चला	गलील झील	14:22–33	6:45–52		6:15–21	
	(38) गन्नेसरत का बीमार चंगा हुआ	गन्नेसरत	14:34–36	6:53–56			
	(39) गलील में लोकप्रियता का चरम	कफरनहूम				(6:22–71 7:1)	यशा. 54:13
29 ईस्वी	(40) परम्पराओं पर प्रहार		15:1–20	7:1–23			निर्ग. 21:17
	(41) सूर और सैदा में सुरुफिनीकी की बेटी को चंगा किया	सूर सैदा	15:21–28	7:24–30			
	(42) बहरा चंगा हुआ	दिकापोलिस	15:29–31	7:31–37			
	(43) 4000 तृप्त हुए	दिकापोलिस	15:32–39	8:1–9			

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	(44) फरीसियों द्वारा आक्रमण में तेजी	मगदाला	16:1-4	8:10-13			
	(45) चेलों की लापरवाही की निन्दा: अंधा चंगा हुआ		16:5-12	8:14-26			यिर्म. 5:21
	(46) पतरस का अंगीकार: यीशु ही मसीह है	(कैसरिया फिलिप्पी के पास)	16:13-20	8:27-30	9:18-21		
	(47) यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यद्वाणी	(कैसरिया फिलिप्पी)	16:21-26	8:31-37	9:22-25		
	(48) राज्य की प्रतिज्ञा		16:27,28	9:1	9:26,27		नीति. 24:12
	(49) रूपान्तर	अनाम पर्वत	17:1-13	9:2-13	9:28-36		यशा. 42:1
	(50) मिर्गीग्रस्त चंगा हुआ	रूपान्तर का पर्वत	17:14-21	9:14-29	9:37-42		
	(51) फिर से मृत्यु, पुनरुत्थान का उल्लेख	गलील	17:22,23	9:30-32	9:43-45		निर्ग. 30:11-15
	(52) कर चुकाया	कफरनहूम	17:24-27				
	(53) चेलों में बड़ा बनने के विषय में वादविवाद, यीशु द्वारा परिभाषा: धैर्य, निष्ठा, और क्षमा की भी।	कफरनहूम	18:1-35	9:33-50	9:46-62		
	(54) यीशु ने भाइयों की सलाह को ठुकराया	गलील				7:2-9	
लग. सित. 29 ईस्वी	(55) गलील से प्रस्थान और सामरियों द्वारा तिरिस्कार		19:1		9:51-56	7:10	
ईस्वी 29-30	**यहूदिया और पिरिया में यीशु की अन्तिम सेवकाई की 42 घटनाएं**						
अक्टू. ईस्वी 29	(1) झोपड़ियों का पर्व	यरूशलेम				(7:2, 11-52)	
	(2) व्यभिचारिणी को क्षमा	यरूशलेम				(7:53-8:11)	लैव्य. 20:10
ईस्वी 29	(3) मसीह- जगत की ज्योति	यरूशलेम				8:12-20	
	(4) फरीसी भविष्यद्वाणी को समझ न सके इसलिए भविष्यद्वक्ता को नाश करना चाहा	यरूशलेम - मन्दिर				8:12-59	यशा. 6:9
	(5) जन्म का अन्धा चंगा हुआ; इसके परिणाम	यरूशलेम				9:1-41	

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	(6) अच्छा चरवाहा का दृष्टांत	यरूशलेम				10:1-21	
	(7) सत्तर चेलों की सेवकाई	(शायद यहूदिया)			10:1-24		
	(8) व्यवस्थापक ने नेक सामरी की कहानी को सुना	यहूदिया?			10:25-37		
	(9) मार्था और मरियम द्वारा पहुनाई	बैतनिय्याह			10:38-42		
	(10) प्रार्थना के विषय एक और शिक्षा	यहूदिया?			11:1-13		
ईस्वी 29	(11) बालजबूल के साथ सम्बन्ध का आरोप				11:14-36		
	(12) व्यवस्थापकों और फरीसियों पर दोष				11:37-54		मीका 6:8
	(13) कपट, लोभ, चिन्ता, और सचेत रहने के विषय यीशु की शिक्षा				12:1-59		मीका 7:6
	(14) मनफिराव या नाश				13:1-5		
	(15) अंजीर का बांझ पेड़				13:6-9		
	(16) सब्त के दिन कुबड़ी स्त्री चंगी हुई				13:10-17		व्य.वि. 5:12-15
	(17) राई के दाने और खमीर का दृष्टांत	(शायद पिरिया)			13:18-21		
	(18) स्थापन पर्व	यरूशलेम				10:22-39	भजन 82:6
	(19) यरदन के पार एकांत में					10:40-42	
जाड़ा ईस्वी 29	(20) उपदेश करता हुआ यरूशलेम की ओर जाते हुए हेरोदेस के विषय में कुछ शब्दों का प्रयोग	पिरिया			13:22-35		भजन 6:8
	(21) फरीसियों के सरदार के घर भोजन के अवसर पर जलन्धर के रोगी को चंगा किया; बैल, मुख्य, जगहों, और बड़ी जेवनार का दृष्टांत				14:1-24		
	(22) चेलों की मांगे	पिरिया			14:25-35		
	(23) खोए /हुई हुए – भेड़, सिक्के, पुत्र – का दृष्टांत				15:1-32		1 पत. 2:25
	(24) दुष्ट भण्डारी, धनी व्यक्ति और लाजर का दृष्टांत				16:1-31		

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	(25) सेवा, विश्वास, प्रभाव पर शिक्षा	पिरिया से बैतनिय्याह			17:1–10		
	(26) लाज़र का पुनरुत्थान					11:1–44	
	(27) इस पर प्रतिक्रिया: यीशु का चला जाना					11:45–54	
ईस्वी 30	(28) सामरिया और गलील होते हुए यरूशलेम की अन्तिम यात्रा आरम्भ	(सामरिया गलील)			17:11		
	(29) 10 कोढ़ियों को चंगाई				17:12–19		लैव्य.13:45,46
	(30) आने वाले राज्य पर उपदेश				17:20–37		उत्प. 6–7
	(31) दृष्टांत: आग्रही विधवा, फरीसी और चुंगी लेने वाला				18:1–14		
	(32) तलाक का सिद्धान्त		19:1–12	10:1–12			व्य.वि. 24:1–4 उत्प. 2:23,25
	(33) बच्चों को आशीष दिया: आपत्तियाँ	पिरिया	19:13–15	10:13–16	18:15–17		भजन 131:2
	(34) धनी युवा सरदार	पिरिया	19:16–30	10:17–31	18:18–30		निर्ग. 20:1–17
	(35) अन्तिम घण्टे में बुलाए गए मजदूर		20:1–16				
	(36) मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी	(यरदन के पास)	20:17–19	10:32–34	18:31–34		भजन 22
	(37) याकूब और यूहन्ना की महत्वकांक्षा		20:20–28	10:35–45			
	(38) अन्धा बरतुल्मै चंगा हुआ	यरीहो		10:46–52	18:35–43		
	(39) जक्कई के साथ मुलाकात	यरीहो			19:1–10		
	(40) दृष्टांत: मोहरें	यरीहो			19:11–27		
	(41) मरियम और मार्था के घर लौटा	बैतनिय्याह				11:55–12:1)	
	(42) लाजर को मारने का षड्यंत्र	बैतनिय्याह				12:9–11	
बसन्त ईस्वी 30	**यरूशलेम में यीशु के कार्य के अन्तिम सप्ताह की 41 घटनाएं**						
रविवार	(1) विजयी प्रवेश	बैतनिय्याह यरुशलेम बैतनिय्याह	21:1–9	11:1–11	19:28–44	12:12–19	जक. 9:9
सोमवार	(2) अंजीर के पेड़ को शाप दिया और मन्दिर को शुद्ध किया	बैतनिय्याह से यरुशलेम	21:10–19	11:12–18	19:45–48		यिर्म.7:11
	(3) बलिदान की ओर ध्यानाकर्षण	यरुशलेम				12:20–50	यशा. 6:10

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
	(4) अंजीर का सूखा पेड़ एक गवाह	बैतनिय्याह से यरुशलेम	21:20-22	11:19-26			
मंगलवार	(5) यूहदी सभा द्वारा यीशु को चुनौती। दृष्टांत में उत्तर: दो पुत्र, दुष्ट किसान, और विवाह का भोज	यरुशलेम	(21:23-22:14)	(11:27-12:12)	20:1-19		यशा. 5:1,2
	(6) कैसर का नज़राना	यरुशलेम	22:15-22	12:13-17	20:20-26		
गुरुवार	(7) सदूकियों द्वारा पुनरुत्थान पर प्रश्नचिन्ह	यरुशलेम	22:23-33	12:18-27	20:27-40		निर्ग. 3:6
गुरुवार शाम	(8) फरीसियों द्वारा आज्ञाओं पर प्रश्नचिन्ह	यरुशलेम	22:34-40	12:28-34			
	(9) यीशु और दाऊद	यरुशलेम	22:41-46	12:35-37	20:41-44		भजन 110:1
	(10) यीशु का अन्तिम उपदेश	यरुशलेम	23:1-39	12:38-40	20:45-47		
	(11) विधवा की दमड़ी	यरुशलेम		12:41-44	21:1-4		लैव्य. 27:30
	(12) यीशु भविष्य के बारे में बताता है	जैतून पर्वत	24:1-51	13:1-37	21:5-36		दानि. 12:1
	(13) दृष्टांत: दस कुंवारियाँ, तोड़े। न्याय का दिन	जैतून पर्वत	25:1-46				जक. 14:5
	(14) यीशु क्रूस पर चढ़ाए जाने की तिथि बताता है		26:1-5	14:1,2	22:1,2		
	(15) मरियम द्वारा शमौन के भोज के दौरान अभिषेक	बैतनिय्याह	26:6-13	14:3-9		12:2-8	
	(16) यहूदा ने पकड़वाने का सौदा किया		26:14-16	14:10,11	22:3-6		जक.11:12
	(17) फसह के लिए तैयारी	यरुशलेम	26:17-19	14:12-16	22:7-13		निर्ग.12:14-28
	(18) फसह खाया, जलन भड़की	यरुशलेम	26:20	14:17	(22:14-16,24-30)		
	(19) पाँव धोए गए	उपरौठी कोठरी				13:1-20	
	(20) यहूदा का भेद खुला, कमियाँ	उपरौठी कोठरी	26:21-25	14:18-21	22:21-23	13:21-30	भजन 41:9
	(21) यीशु आगे भी त्यागे जाने के विषय सचेत करता है, निष्ठा की मांग	उपरौठी कोठरी	26:31-35	14:27-31	22:31-38	13:31-38	जक.13:7
	(22) प्रभु भोज का आरम्भ	उपरौठी कोठरी	26:26-29	14:22-25	22:17-20		1 कुरि.11:23-34
	(23) प्रेरितों को अन्तिम सम्बोधन और मध्यस्थता की प्रार्थना	यरुशलेम				(14:1-17:26)	भजन 35:19

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
गुरुवार–शुक्रवार	(24) गेतसमनी की वेदना	जैतून पर्वत	(26:30,36–46)	(14:26, 32–42)	22:39–46	18:1	भजन 42:6
शुक्रवार	(25) पकड़वाया गया, बन्दी बनाया गया, त्यागा गया	गेतसमनी	26:47–56	14:43–52	22:47–53	18:2–12	
	(26) पहले हन्ना के आगे पेशी	यरुशलेम				(18:12–14,19–23)	
	(27) कैफा और सभा के सामने मुकद्दमा: झूठी गवाही	यरुशलेम	(26:57,59–68)	(14:53, 55–65)	(22:54,63–65)	18:24	लैव्य. 24:16
	(28) पतरस द्वारा तीन बार इंकार	यरुशलेम	(26:58,69–75)	(14:54,66–72)	22:54–62	(18:15–18, 25–27)	
	(29) सभा द्वारा दोषी ठहराया गया	यरुशलेम	27:1	15:1	22:66–71		भजन 110:1
	(30) यहूदा द्वारा आत्महत्या	यरुशलेम	27:3–10				प्रेरित. 1:18,19
	(31) पीलातुस के सामने पहली पेशी	यरुशलेम	(27:2, 11–14)	15:1–5	23:1–7	18:28–38	
	(32) हेरोदेस के सामने यीशु	यरुशलेम			23:6–12		
	(33) पीलातुस के सामने दूसरी पेशी	यरुशलेम	27:15–26	15:6–15	23:13–25	(18:39–19:16)	व्य.वि. 21:6–9
	(34) रोमी सैनिकों द्वारा ठट्ठा	यरुशलेम	27:27–30	15:16–19			
	(35) गुलगुता ले जाया गया	यरुशलेम	27:31–34	15:20–23	23:26–33	19:16,17	भजन 69:21
	(36) क्रूस पर पहले 3 घण्टे की 6 घटनाएं	कलवरी	27:35–44	15:24–32	23:33–43	19:18–27	भजन 22:18
	(37) क्रूस पर अन्तिम तीन घण्टे	कलवरी	27:45–50	15:33–37	23:44–46	19:28–30	भजन 22:1
	(38) यीशु की मृत्यु के समय की घटनाएं		27:51–56	15:38–41	(23:45,47–49)		
	(39) यीशु को गाड़ा गया	यरुशलेम	27:57–60	15:42–46	23:50–54	19:31–37	निर्ग. 12:46
शुक्रवार–शनिवार	(40) कब्र पर मुहर	यरुशलेम	27:61–66		23:55,56		निर्ग. 20:8–11
	(41) स्त्रियाँ देख रहीं थीं	यरुशलेम		15:47			
ईस्वी 30	**पुनरुत्थान से स्वर्गारोहण तक की 12 घटनाएं**						
पहले दिन का भोर (रविवार, ''प्रभु का दिन'')	(1) स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर आईं	यरुशलेम के पास	28:1–10	16:1–8	24:1–11		
	(2) पतरस और यूहन्ना ने खाली कब्र को देखा				24:12	20:1–10	
	(3) यीशु मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया	यरुशलेम		16:9–11		20:11–18	
	(4) यीशु अन्य स्त्रियों को दिखाई दिया	यरुशलेम	28:9,10				
	(5) पहरेदारों द्वारा पुन–रुत्थान की सूचना		28:11–15				

तिथि	घटना	स्थान	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	सम्बन्धित स्थल
रविवार दोपहर	(6) यीशु इम्माऊस के मार्ग पर दो चेलों को दिखाई दिया			16:12, 13	24:13–35		1 कुरि. 15:5
रविवार का अन्तिम पहर	(7) यीशु थोमा की अनुपस्थिति में दस चेलों को दिखाई दिया	यरुशलेम		16:14	24:36–43	20:19–25	
एक सप्ताह बाद	(8) थोमा की उपस्थिति में चेलों को दिखाई दिया	यरुशलेम				20:26–31	
स्वर्गारोहण तक के 40 दिनों के दौरान	(9) यीशु गलील की झील के किनारे सात चेलों को दिखाई दिया	गलील				21:1–25	
	(10) 500 को दिखाई दिया	गलील में पर्वत					1 कुरि. 15:6
	(11) महान आज्ञा		28:16–20	16:15–18	24:44–49		
	(12) स्वर्गारोहण	जैतून पर्वत		16:19,20	24:50–53		प्रेरित 1:4–11

यहूदी कैलेण्डर

यहूदी लोग दो प्रकार के कैलेण्डरों का प्रयोग करते थे:

दीवानी कैलेण्डर – राजाओं, बच्चों के जन्म, और अनुबन्धों का अधिकारिक कैलेण्डर

धार्मिक कैलेण्डर – इसके आधार पर पर्वों की गणना की जाती थी

महीनों के नाम	समानान्तर	दिनों की संख्या	दीवानी वर्ष का महीना	धार्मिक वर्ष का महीना
तिश्री	सित.–अक्टू.	30 दिन	पहला	सातवां
हेश्वान	अक्टू.–नव.	29 या 30	दूसरा	आठवां
किसलवे	नव.–दिस.	29 या 30	तीसरा	नौवां
तेबेत	दिस.–जन.	29	चौथा	दसवां
शबात	जन.–फर.	30	पाँचवां	ग्यारहवां
अदार	फर.–मार्च	29 या 30	छठवां	बारहवां
नीसान	मार्च–अप्रे.	30	सातवां	पहला
ईय्यार	अप्रे.–मई.	29	आठवां	दूसरा
सीवान	मई–जून	30	नौवां	तीसरा
तम्मूज	जून–जुला.	29	दसवां	चौथा
आब	जुला.–अग.	30	ग्यारहवां	पाँचवां
***एलूल**	अग.–सित.	29	बारहवां	छठवां

यहूदी दिन सूर्यास्त से आरम्भ होकर सूर्यास्त तक रहता था, और 8 बराबर भागों में विभाजित था:

पहला पहर.... सूर्यास्त से शाम 9 बजे
दूसरा पहर.....शाम 9 बजे से मध्यरात्रि
तीसरा पहर....मध्यरात्रि से सुबह 3 बजे
चौथा पहर.....सुबह 3 बजे से सूर्योदय

पहला पहर.....सूर्योदय से सुबह 9 बजे
दूसरा पहर..... सुबह 9 बजे से दोपहर
तीसरा पहर.... दोपहर से 3 बजे
चौथा पहर.....शाम 3 बजे से सूर्यास्त

* इब्री महीनों में एक महीना 30 दिन का और उसके बाद वाला 29 दिन का हुआ करता था। उनका वर्ष, हमारे वर्ष से छोटा था, जिसमें 354 दिन थे। इसलिए, लगभग प्रत्येक 3 वर्ष में (19 वर्षों में 7 बार) **अदार** और **नीसान** के बीच में **वेदार** नाम 29 दिन का एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता था।

मसीह का जीवन
और
उसकी सार्वजनिक सेवकाई

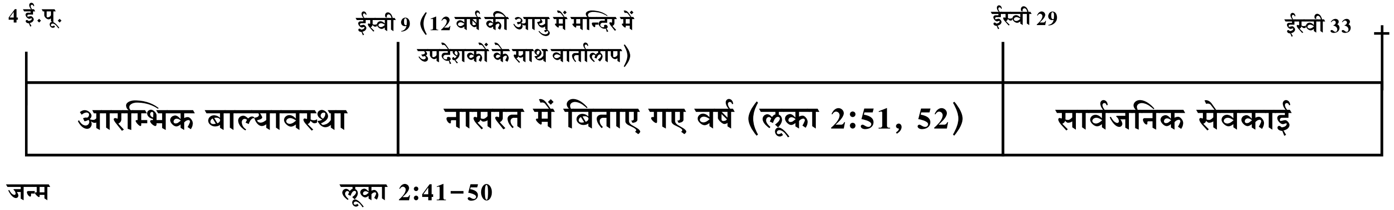

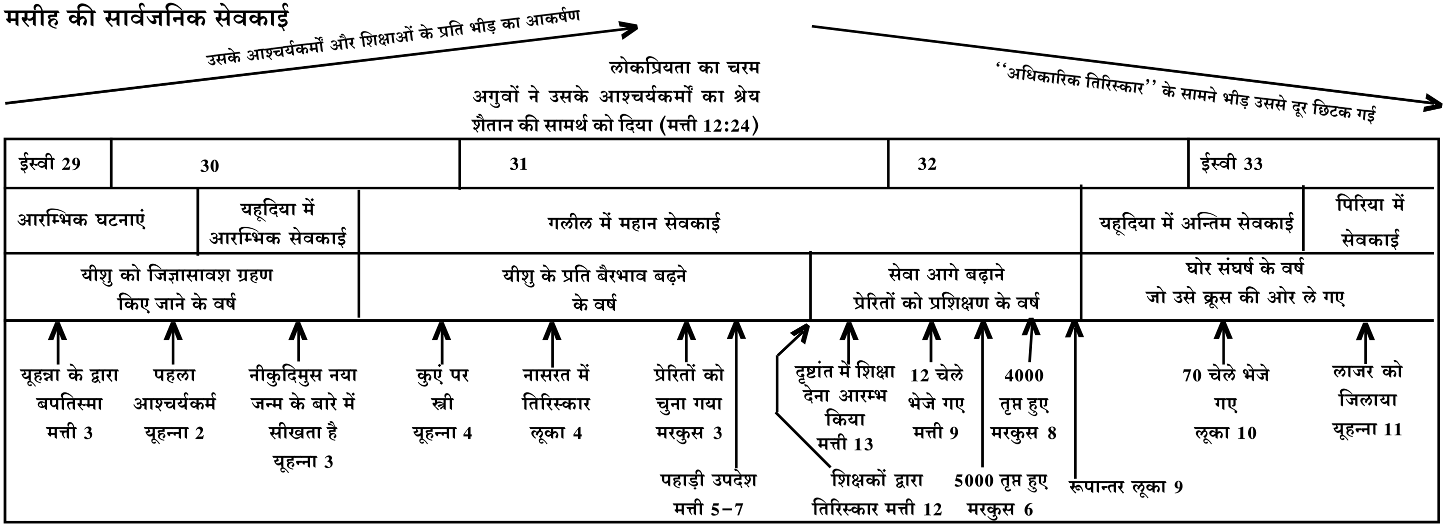

विज़अल सर्वे ऑफ द बाइबल से। लेखक की अनुमति से पुन:मुद्रित।

मसीह के सम्बन्ध में की गई भविष्यद्वाणियाँ यीशु मसीह में पूरी हुईं

पूर्ण होने के क्रम में प्रस्तुत

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
उत्प. 3:15 ''और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।''	स्त्री का वंश	*गला. 4:4* ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ।''
उत्प. 12:3 ''और जो तुझे आशीर्वाद दे, उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा, और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।''	इब्राहीम का वंश	*मत्ती 1:1* ''इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली।''
उत्प. 17:19 ''तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम इसहाक रखना; और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बान्धूगा जो उसके पश्चात उसके वंश के लिए युग युग की वाचा होगी।''	इसहाक का वंश	*लूका 3:34* ''और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह तिरह का, और वह नाहोर का।''
गिन. 24:17 ''मैं उसको देखूंगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहारुंगा तो सही, परन्तु समीप होके नहीं; याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा; जो मोआग की अलंगों को चूर कर देगा, जो सब दंगा करने वालों को गिरा देगा।''	याकूब का वंश	*मत्ती 1:2* ''इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए।''
उत्प. 49:10 ''जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे।''	यहूदा के गोत्र से	*लूका 3:33* ''और वह अम्मीनादाब का, और वह अरनी का, और वह हिस्राने का, और वह फिरिस का, और वह यहूदाह का।''
यशा. 9:7 ''उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।''	दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी	*लूका 1:32,33* ''वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का अन्त न होगा।''
भजन 45:6,7; 102:25-27 ''हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा, तेरा राजदण्ड न्याय का है। तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हाँ तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है।'' आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा, और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र की नाई बदलेगा, और वह तो बदल जाएगा। परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का।	अभिषिक्त और अनन्त	*इब्रा. 1:8-12* ''परन्तु पुत्र से कहता है, कि हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा; तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है। तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा, इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़ कर हर्षरुपी तेल से तुझे अभिषेक किया। और यह कि, हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे तो नाश हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र की नाई पुराने हो जाएंगे। और तू उन्हें चादर की नाई लपेटेगा, और वे वस्त्र की नाई बदल जाएंगे; पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।''

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
मीका 5:2 "हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों मे गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से होता आया है।"	**बैतलेहम में जन्म**	*लूका 2:4,5,7* "सो यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलेहम को गया कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए। और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उन के लिए सराय में जगह न थी।"
दानि. 9:25 "सो यह जान और समझ ले, कि यरुशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।"	**उसके जन्म का समय**	*लूका 2:1,2* "उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं। यह पहिली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था।"
यशा. 7:14 "इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।"	**कुंवारी से जन्म**	*लूका 1:26, 27, 30, 31* "छठवें महीने में परमेश्‍वर की ओर से जिब्राएल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्‍वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है, और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।"
यिर्म. 31:15 "यहोवा यह भी कहता है; सुन, रामा नगर में विलाप और बिलक बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने लड़कों के लिए रो रही है; और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं होगी, क्योंकि वे जाते रहे।"	**नवजात शिशुओं का संहार**	*मत्ती 2:16-18* "जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलेहम और उसके आसपास के सब लड़कों को जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला। तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ, कि *'रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिए रो रही थी, और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं'* "
होशे 11:1 "जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।"	**मिस्र को भागना**	*मत्ती 2:14,15* "वह रात ही को उठकर बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को चल दिया। और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा; इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था कि *'मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया'* पूरा हो।"
यशा. 40:3-5 "किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्‍वर के लिए अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा नीचा है वह चौरस किया जाए। तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे, क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है।"	**मार्ग तैयार किया जाना**	*लूका 3:3-6* "और वह यरदन के आसपास के सारे देश में आकर, पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा, जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा है, कि *'जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी बनाओ, हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा।'* "
मला. 3:1 "देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा, हाँ वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"	**पहले एक अग्रदूत आएगा**	*लूका 7:24,27* "जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? यह वही है, जिसके विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा।"

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
मला. 4:5,6 ''देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। और वह माता पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करुं।''	पहले एलिय्याह आएगा	*मत्ती 11:13,14* ''यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे। और चाहो तो मानों, एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है।''
भजन 2:7 ''मैं उस वचन का प्रचार करुंगा; जो यहोवा ने मुझ से कहा, तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ।''	परमेश्वर का पुत्र घोषित	*मत्ती 3:17* ''और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।''
यशा. 9:1,2 ''तौभी संकट भरा अंधकार जाता रहेगा। पहिले तो उस ने जबूलून और नप्ताली के देशों का अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर यरदन के पार की अन्यजातियों के गलील को महिमा देगा। जो लोग अंधियारे में चल रहे थे, उन्हों ने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।''	गलील में सेवकाई	*मत्ती 4:13-16* ''और नासरत को छोड़कर कफरनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नप्ताली के देश में हैं जाकर रहने लगा। ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। कि जबूलून और नपताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार अन्यजातियों का गलील। जो लोग अन्धकार में बैठे हुए थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।''
भजन 78:2-4 ''मैं अपना मुँह नीतिवचन कहने के लिए खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूँगा, जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया, और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है। उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे।''	दृष्टांतों में बोलता था	*मत्ती 13:34,35* ''ये सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टांत वह उन से कुछ न कहता था। कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो कि मैं दृष्टांत कहने को अपना मुँह खोलूंगा: मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं हैं प्रगट करुंगा।''
व्य.वि. 18:15 ''तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात्, तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना।''	एक भविष्यद्वक्ता	*प्रेरित 3:20,22* ''और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए पहिले ही से ठहराया गया है। जैसा कि मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उस की सुनना।''
यशा. 61:1,2 ''प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिए स्वतंत्रता का और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करुं; कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करुं; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूं।''	कुचले हुओं को छुटकारा	*लूका 4:18,19* ''कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालो को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।''
यशा. 53:3 ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना।''	अपने ही लोगों (यहूदियों) के द्वारा ठुकराया गया	*यूहन्ना 1:11* ''वह अपने घर आया और उसके अपनों से उसे ग्रहण नहीं किया। *लूका 23:18* ''तब सब मिलकर चिल्ला उठे, कि इस का काम तमाम कर, और हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे।''
भजन 110:4 ''यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा का याजक है।''	मलिकिसिदक की रीति का याजक	*इब्रा 5:5,6* ''वैसे ही मसीह ने भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने आप से नहीं ली, पर उस को उसी ने दी, जिस ने उस से कहा था, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। वह दूसरी जगह कहता है, तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है।''

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
जक. 9:9 ''हे सिय्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार कर। क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।''	विजयी प्रवेश	*मर. 11:7,9,11* ''और उन्होंने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया। और जो आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे, पुकार पुकार कर कहते जाते थे, कि होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। और वह यरुशलेम पहुँचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह गया क्योंकि सांझ हो गई थी।''
भजन 8:2 ''तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध पिउवों के द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे।''	दुधपिउवों द्वारा स्तुति	*मत्ती 21:15,16* ''परन्तु जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद की सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं? यीशु ने उन से कहा, हाँ; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूधपीते बच्चों के मुँह से तू ने स्तुति सिद्ध कराई?''
यशा. 53:1 ''जो सुसमाचार हमें दिया, उसका किस ने विश्वास किया; और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?''	विश्वास न किया	*यूहन्ना 12:37, 38* ''और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्हों ने उस पर विश्वास न किया। ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे सुसमाचार की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?''
भजन 41:9 ''मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।''	एक निकट मित्र द्वारा पकड़वाया जाना	*लूका 22:47, 48* ''वह यह कह ही रहा था, कि देखो एक भीड़ आई, और उन बारहों में से एक जिस का नाम यहूदा था उनके आगे आगे जा रहा था, वह यीशु के पास आया, कि उसका चूमा ले। यीशु ने उस से कहा, *'हे यहूदा, क्या तू चूमा ले कर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?*'''
जक. 11:12 ''तब मैं ने उन से कहा, यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो। तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए।''	तीस चाँदी के सिक्कों के लिए पकड़वा दिया जाना	*मत्ती 26:14,15* ''तब यहूदा इस्कारियोति नाम बारह चेलों में से एक ने महायाजकों के पास जा कर कहा। यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने ने उसे तीस चाँदी के सिक्के तौलकर दे दिए।''
भजन 35:11 ''झूठे साक्षी खड़े होते हैं; और जो बात मैं नहीं जानता, वही मुझ से पूछते हैं।''	झूठे गवाहों के द्वारा दोष लगाया गया	*मरकुस 14:57,58* ''तब कितनों ने उठकर उस पर यह झूठी गवाही दी। कि हम ने इसे यह कहते सुना है कि मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूंगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊंगा, जो हाथ से न बना हो।''
यशा. 53:7 ''वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह न खोला।''	दोष लगाए जाने पर चुप रहा	*मरकुस 15:4,5* ''पीलातुस ने उस से फिर पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं? यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पीलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।''
यशा. 50:6 ''मैं ने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और थूकने से मैं ने मुँह न छिपाया।''	उस पर थूका गया और उसे पीटा गया	*मत्ती 26:67* ''तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका, और उसे घूँसे मारे, औरो ने थप्पड़ मार के कहा।''

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
भजन 35:19 "मेरे झूठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्ध आनन्द न करने पाए, जो अकारण मेरे बैरी हैं; वे आपस में नैन से सैन न करने पाएं।"	**बिना कारण बैर का पात्र बना**	*यूहन्ना 15:24,25* "यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। और यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया।"
यशा. 53:5 "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।"	**हमारे बदले दुख सहा**	*रोमि. 5:6,8* "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।"
यशा. 53:12 "इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उस ने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिए विनती करता है।"	**कुकर्मियों के संग क्रूस पर चढ़ाया गया**	*मरकुस 15:27,28* "और उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उस की दाहिनी और एक उस की बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। तब धर्मशास्त्र का वह वचन कि *वह अपराधियों के संग गिना गया* पूरा हुआ।"
जक. 12:10 "और मैं दाऊद के घराने और यरुशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूंगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात्, जिसे उन्हों ने बेधा है, और उसके लिए ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिए करते हैं।"	**हाथों और पैरों को छेदा गया**	*यूहन्ना 20:27* "तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहाँ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।"
भजन 22:7,8 "वह सब जो मुझे देखते हैं, मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है।"	**हँसी और ठट्ठा सहा**	*लूका 23:35* "लोग खड़े देख रहे थे, और सरदार भी ठट्ठा कर करके कहते थे, कि इस ने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले।"
भजन 69:9 "क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म हुआ, और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है।"	**निन्दा सहा**	*रोमि. 15:3* "क्योंकि मसीह ने अपने आप को प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, कि तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी।"
भजन 109:4 "मेरे प्रेम के बदले में वे मुझ से विरोध करते हैं, परन्तु मैं तो प्रार्थना में लवलीन रहता हूँ।"	**शत्रुओं के लिए प्रार्थना**	*लूका 23:34* "तब यीशु ने कहा, हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं? और उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।"
भजन 22:17, 18 "मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ; वे मुझे देखते और निहारते हैं; वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।"	**सैनिकों ने उसके वस्त्र के लिए चिट्ठी डाली**	*मत्ती 27:35, 36* "तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए। और वहाँ बैठकर उसका पहरा देने लगे।"
भजन 22:1 "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है?	**परमेश्वर द्वारा त्यागा गया**	*मत्ती 27:46* "तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी? अर्थात्, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

भविष्यद्वाणी	विषय	पूर्णता
भजन 34:20 ''वह उसकी हड्डी हड्डी की रक्षा करता है; और उन से एक भी टूटने नहीं पाती।''	**उसकी एक भी हड्डी न तोड़ी गई**	***यूहन्ना 19:32,33,36*** ''सो सिपाहियों ने आ कर पहिले की टांगे तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे। परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगे न तोड़ीं। ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।''
जक. 12:10 ''और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूंगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात्, जिसे उन्हों ने बेधा है, और उसके लिए ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिए करते हैं।''	**उसके सीने को बेधा गया**	***यूहन्ना 19:34*** ''परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला।''
यशा. 53:9 ''और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रक़ार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।''	**कब्र धनी के संग ठहराई गई**	***मत्ती 27:57-60*** ''जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया; उस ने पीलातुस के पास जा कर यीशु की लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे उज्जवल चादर में लपेटा। और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।''
भजन 16:10 ''क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।'' ***भजन 49:15*** ''परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर अपनाएगा।''	**पुनरुत्थान**	***मरकुस 16:6,7*** ''उस ने उन से कहा, चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो; वह जी उठा है; यहाँ नहीं है; देखो, यही वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम से पहले गलील को जाएगा; जैसा उस ने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।''
भजन 68:18 ''तू ऊँचे पर चढ़ा, तू लोगों को बन्धुआई में ले गया; तू ने मनुष्यों से, वरन हठीले मनुष्यों से भी भेंटे ली, जिस से याह परमेश्वर उन में वास करे।''	**स्वर्ग पर चढ़ कर परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा**	***मरकुस 16:19*** ''निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया।'' ***1 कुरि. 15:4*** ''और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।'' ***इफि. 4:8*** ''इसलिए वह कहता है, कि वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।''